सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री　　दूरभाष : ३२७४७७१　　वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४६]　　दयानन्दाब्द १७०　　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५　　पौष शु० ७　　सं० २०५१　८ जनवरी १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान

पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् को श्री सोमनाथ मरवाह कार्यवाहक अध्यक्ष के हाथों पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री अश्विनीकुमार द्वारा १२११११रुपये की राशि भेंट

दिल्ली। पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के निमन्त्रण पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय अध्यक्ष श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् तथा सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली तथा साथ में सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जालन्धर पधारे। पश्चिम एक्सप्रेस से उतरने पर सभा के अधिकारीगण एवं स्व० वीरेन्द्र जी के सुपुत्र श्री चन्द्र मोहन जी स्वागतार्थ स्टेशन पर उपस्थित थे।

मान्य अधिकारी गणों के आर्य प्रतिनिधि सभा के गुरुदत्त भवन में ठहरने की समुचित व्यवस्था थी। आज के सभा भवन को लाहौर के गुरुदत्त भवन की तरह साधनों से युक्त बनाया गया है इसका श्रेय दिया जायेगा स्व० श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान व मन्त्री श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट को।

इस विशाल भवन में एक हाल अतिथि कक्ष के ६ कमरे बिस्तर सहित, तथा साथ में शौचालय है।

डा० पसरीचा के दिवंगत पुत्र की शोक सम्वेदना प्रकट करने उसी समय उनके घर गये और सभी से मिलकर दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना की परिवार को सान्त्वना दी। रात्रि में सभा प्रधान पं० हरवंशलाल जी के घर पर भोजन कर गुरुदत्त भवन वापस आ गये।

विशेष यज्ञ

नवीन भवन की नवीन यज्ञशाला में यज्ञ हुआ इसके पश्चात्

श्री स्व० वीरेन्द्र जी का स्मृति दिन

३१ दिसम्बर स्व० श्री वीरेन्द्र जी का अवसान दिन था। आज के दिन श्री चन्द्रमोहन जी व श्री ललित मोहन ने अपने निवास स्थान पर विशाल सभा का आयोजन किया था।

प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ सम्पन्न हुआ इसके पश्चात् श्रद्धाञ्जलि सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ।

१. विशिष्ट अतिथि श्री केवल कृष्ण जी मन्त्री पंजाब सरकार
२. श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् सभा-प्रधान दिल्ली
३. श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट कार्यकारी अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
४. डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री दिल्ली

अन्य स्वतन्त्रता सेनानियों हिन्दू सिखों के नेताओं ने अपने विचार प्रकट कर श्री वीरेन्द्र जी को स्मरण किया।

आज श्री वीरेन्द्र जी का अभाव पंजाब को अखर रहा था। वह संकट कालीन स्थिति में निर्भीक नेता पत्रकार की हैसियत से सदा अग्रणी रहते थे। स्व० म० कृष्ण की लेखनी की भांति श्री वीरेन्द्र जी भी लेखनी के धनी थे।

सभी ने श्री चन्द्रमोहन जी व श्री ललित मोहन जी से प्रार्थना की कि वह भी पैत्रिक परम्परा से इन सबका अनुसरण करें। और अपने पूर्वजों के यश को आगे बढ़ावें।

अन्त में धन्यवाद और शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित की गई।

इस अंक के आकर्षण

प्रान्त के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे महानुभावों के मध्य सभा प्रधान व अन्य अधिकारियों का पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर १२११११) (एक लाख इक्कीस हजार एक सौ ग्यारह रुपये) श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट सभामन्त्री ने श्री सोमनाथ मरवाह को देकर सभा-प्रधान रामचन्द्रराव वन्देमातरम् को गो सम्वर्धन केन्द्र हेतु भेंट किये।

यह राशि श्री अश्विनीकुमार सभा-मन्त्री का निजी पुरुषार्थ था

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अरब की धरती पर भारतीय संस्कृति की हत्या

भारत भूमि को विश्व जननी का सदैव से गौरव प्राप्त रहा है। बिना किसी भेदभाव ममतामय सम्बन्धो के साथ सभी राष्ट्रो और जातियो को समान अधिकार भी रहे। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त हमारा जहा चक्रवर्ती साम्राज्य तथा धर्म प्रसार रहा वहां तक सबने मर्यादा के साथ समान रूप से इसका उपभोग किया। किसी को इस पर कभी आपत्ति नही उठानी पड़ी परन्तु ईश्वर की इच्छा ही थी कि हमारे बहुत टालने पर यह महायुद्ध (महाभारत) हमे आपस में लडना पड़ा। इस युद्ध मे एक अरब से अधिक योद्धा काम आये। इस युद्ध से आर्य राष्ट्र की रीढ़ टूट गई। धर्मवीरों और महान विद्वानो से देश खाली हो गया। देश की जनता युद्धों और विज्ञान से घृणा स्वरूप वैराग्यमय हो धर्म, कर्म तथा अहिंसा की ओर जनता आकर्षित होने लगी। विद्वानो के अभाव से धर्म-कर्म का सही मार्गदर्शन जनता को नही मिल सका, जिसके कारण अनेक मत-मतातर तथा सम्प्रदाय पैदा होने लगे। जिसको जैसा मार्ग मिला वह उसी को अपना आधार मान कर चल पड़ा। राजसत्ता भी छोटे-छोटे भागों मे विभक्त हो गई चक्रवर्ती शासन पद्धति की ओर से शासक वर्ग उदासीन होते चले गये। जिसका यह फल हुआ कि समस्त भूमण्डल के वह देश जिन्हे हमारे शासक वर्ग धर्मपूर्वक न्याय पद्धति के द्वारा चलाते थे वह सबके सब दिशाहीन हो गये। निरकुश बनकर मलेच्छ उदण्ड अत्याचारी और भोग विलासिता के स्वभाव के शिकार हो गये। जिससे आगे चलकर मानव जाति के इतिहास मे यह विनाशकारी नींव के पत्थर बनकर काम आये।

सच्चे मानव धर्म के स्थान पर नकली सम्प्रदाय बन गये। एक केन्द्रीय सत्ता के स्थान पर अनेक छोटे-छोटे राज्यो ने जन्म ले लिया। विश्व मानव धर्म जाति धर्म मे और विश्व साम्राज्य की कल्पना अपने छोटे-छोटे राज्यों की सीमाओं मे कैद हो गई। हम अच्छे हैं, शेष सब गलत की धारणायें पैदा हो गई। दूसरों पर हमे शासन करने और धर्म को थोंपने का अधिकार है। इस प्रेरणा से वशीभूत हो एक-दूसरे पर अत्याचार आक्रमण; हत्यायें, गुलाम बनाने की प्रथा ने जन्म ले लिया जिसका यह परिणाम हुआ कि लाखों निर्दोष लोगो के रक्त से विश्व मे नदिया बहीं। वही नारियो और बच्चों की भयकर दुर्दशा भी हुई। घृणा, द्वेष का साम्राज्य चारो ओर पैदा हो गया। आज इसी का स्वरूप सारे विश्व मे देखने को मिल रहा रहा है। मानव विनाश की इस महामारी को केवल भारतीय सस्कृति ही रोकने मे समर्थ थी। परन्तु इसको स्वार्थी नेताओं और बहुरूपीय धर्माचार्यों के चुगल मे फसे होने के कारण अपने सच्चे स्वरूप को प्रकट करने मे अड़चन आयी। सत्ता सुख और स्वार्थी पेटू धर्माचार्य तथा नेताओं के लक्ष्य बन जाने के कारण देशभक्त नेताओं और सच्चे धर्म मार्ग के पथिक धर्माचार्य आज इसमे अपमानित हो रहे हैं। उनकी उपेक्षा और अपमानित जीवन के कारण हम आज भी विश्व के सामने गर्व से खड़े होने मे शरमाने लगे हैं। यह हमारे पतन की एक पहचान बन कर रह गई है। इसी कारण भारतीयों को आज अनेक देशों मे अपमान सहना पड रहा है। विशेषकर अरब देशों म जहा हमारी संस्कृति का कोई स्थान नही पग-पग पर भारतीयों का अपमान उनकी मान्यताओ के साथ खिलवाड़ और यहा तक कि उन्हें उनके देश मे मरने का भी अधिकार नही है। पूजा पाठ तो दूर की बात है अपने धर्म की बात करना वहा वर्जित है। लेखक, पत्रकार; कलाकार, उनकी जेलों में वर्षों से पड़े अपने जीवन की अन्तिम घड़िया गिन रहे हैं। उनकी कोई सुनने को तैयार नही है। हमारी गलत विदेश नीति का यह फल है कि भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय और प्रधानमत्री भी इन देशों द्वारा अपमानित हो चुके हैं। जिसे बदलना चाहिये था इन देशों से हमें अपने सम्बन्ध विच्छेद करने चाहिये थे। परन्तु ऐसा हुआ नहीं होगा भी नहीं। क्योंकि हिन्दुस्थान की सत्ता पर इस्लाम का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि इनको अपमानजनक जीवन जीने के अलावा अन्य कोई मार्ग अब बचा नहीं। पेट भरने के लिये अरब देशों के तलवे चाटना रहना ही है। यह राष्ट्र के लिये एक कलंक है जिसे राष्ट्रभक्तों को आगे बढ़कर बदलने का संकल्प लेना होगा। यही आज के समय की और राष्ट्र की मांग है।

(धारासिंह चौहान)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से संबंधित विभिन्न संस्थाओं द्वारा सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित "महर्षि दयानन्द गो संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र" हेतु दी गई राशियों का विवरण

संस्था		
१. आर्य कन्या सी. सै. स्कूल बस्ती नौ जालन्धर		१०,०००-००
२. गांधी आर्य सी. सै. स्कूल बरनाला		१०,०००-००
३ श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला		१०,०००-००
४ दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर बरनाला		६,०००-००
५. डी. एन. माडल स्कूल मोगा		११,०००-००
६. आर्य माडल हाई स्कूल मोगा		११,०००-००
७. आर्य कालेज लुधियाना		२०,०००-००
८. बी. एल एम. गर्ल्ज कालेज नवाशहर	५०००-००	
९. आर. के. आर्य कालेज नवाशहर	५०००-००	
१०. डी. ए. एन. कालेज आफ एजुकेशन नवाशहर	२०००-००	२०,०००-००
११. डा आसानन्द आर्य बाल विद्या मन्दिर नवाशहर	५०००-००	
१२ डब्ल्यू. एल आर्य गर्ल्ज सी सै. स्कूल नवाशहर	३०००-००	
१३. आर्य समाज भटिण्डा	१६५०-००	
१४. आर्य माडल स्कूल भटिण्डा	१६५०-००	५,०००-००
१५. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भटिण्डा	१७००-००	
१६. एम एस. एन. आर्य हाई स्कूल रामा		५,००० ००

ड्राफ्ट—१०८,०००-००

नकद—३१११-

जिलाधिकारी फिरोजाबाद द्वारा आर्य वीर पुरस्कृत

दिनाक २ अक्टूबर १९९४ को लोक राष्ट्रीय इण्टर कालिज जसराना (फिरोजाबाद, मे समायोजित स्काउट्स एव गाइड्स की जिला प्रतियोगिता के समापन के शुभावसर पर मुख्य अतिथि जिलाधिकारी श्री पी. के. महान्ति ने आदर्श जनता इण्टर कालेज जसराना (फीरोजाबाद) के छात्र राहुल आर्य, अतुल आर्य सुपुत्र श्री ब्रजपाल सिंह आर्य, सन्दीप कुमार आर्य सुपुत्र श्री चान्द सिंह को योगासनों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के वास्ते पुरस्कृत करते हुए कहा कि शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिए योगासनों का प्रयोग परमावश्यक है। समापन समारोह मे जिला विद्यालय निरीक्षक डा० काशीनाथ खन्ना, पुलिस अधीक्षक हरीशंकर प्रसाद, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रामगोपाल सिंह यादव, एस. डी. एम. जसराना, तहसीलदार, सी. ओ. जसराना, जनपद के समस्त प्रधानाचार्य, भूतपूर्व विधायक श्री विष्णुदयाल वर्मा, आर्यवीर दल के जिला संचालक श्री ब्रजपालसिंह आर्य एवं सम्भ्रान्त नागरिक उपस्थित थे।

(ब्रजपालसिंह आर्य)
जिलासंचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल
जनपद फिरोजाबाद

विज्ञान एवं धर्म एक लक्ष्य दो मार्ग

डा० बी. एम. शर्मा
रीडर एवं विभागाध्यक्ष राजकीय आयुर्वैदिक कालेज गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

विज्ञान और धर्म इस प्रकार का विषय है जिसकी व्याख्या करना एक दुष्कर कार्य है। सामान्यतया विज्ञान का अर्थ १८ वी शताब्दी के पश्चात होने वाली एक यान्त्रिक क्रान्ति को माना जाता है किन्तु भारतीय दर्शन के आधार पर विज्ञान अपने आत्म स्वरूप के साक्षात्कार को कहा जाता है जैसा कि उपनिषदो मे निर्देश है—

आत्मा वारे श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यश्च

इस प्रकार आत्मज्ञान को विज्ञान के नाम से कहा गया है जबकि लौकिक ज्ञान को ज्ञान के नाम से कहा गया है। इसी प्रकार धम की व्याख्या शास्त्रो मे आत्मगत धर्म के रूप मे की है। उसके स्पष्ट स्वरूप का निर्देश-यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्मः। (वै द १/१/२) से किया है। अर्थात जिसके द्वारा लोक का कल्याण एव विकास होता है उसे धम कहते हैं। यदि इन दोनो दृष्टिकोणो को ध्यान मे रखकर इस विषय पर विचार किया जाए तो दोनो ही अभिन्न रूप हैं कोई पृथक नही क्योकि दोना ही लोक का अभ्युदय करने वाले हैं। परन्तु पाश्चात्य सस्कृति के अनुसार विज्ञान शब्द प्रकृति—अन्वेषण के प्रयत्न के रूप मे माना जा सकता है जिसका विकास १८वीं शताब्दी के पश्चात हुआ है। यही विज्ञान जब अपने प्रभाव से धर्म की सकीर्णताए तोड़ता हुआ सीमाए लाघता हुआ जब आगे बढा तो साधारण मनुष्य विज्ञान से इतना प्रभावित हुआ कि उसे विज्ञान की विजय वास्तव मे धम को पराजय प्रतीत हुई।

विद्वानो एव मनीषियो ने विज्ञान की प्रगति से धम के क्षेत्र म कोई विरोधाभास नही माना अपितु धर्म को नई परिमाप का एकरूप दिया। क्या वास्तव मे धर्म एव विज्ञान मे कोई विरोध है? प्रश्न छोटा है परन्तु उत्तर अपने आप म बहुत गहन तथा असीमित है।

वैसे किसी भी वैज्ञानिक से पूछिए तो विज्ञान म दो परिकल्पनाओ का विशिष्ट स्थान है। पहली कल्पना ब्रह्माड की व्यवस्था नियम एव ज्ञानशक्ति (Ratioi at l पर आधारित है और दूसरी कल्पना की नियमितता तथा ज्ञान शक्ति मनुष्य की बुद्धि की समझ सीमा के अन्दर है। ब्रिटेन के प्रसिद्ध विद्वान Eddinb oi के अनुसार धम का मुख्य आधार भी यही माना परिकल्पनाए हैं। Bc f erd Ru e नामक प्रकाण्ड विचारक धर्म मानता है कि प्रत्येक धम, भगवान की मान्यता और उसकी सर्वशक्त-सम्पन्नता का सकेत है। यदि भगवान सब शक्तिमान है तो उसके कार्य नियम तथा ज्ञान शक्ति पर ही आधारित होने चाहिए क्योकि केवल एक मूर्ख ही नियम एव परिमेयता का उल्लंघन करता है। इस प्रकार धम एव विज्ञान की पहली परिकल्पनाए एक समान सिद्ध होती हैं।

प्रत्येक धम यह मानता है कि मनुष्य की शक्ति सीमित है परन्तु भगवान की शक्ति का सहारा लेकर वह ब्रह्माड के प्रत्येक पदार्थ को समझ सकता है। इस प्रकार विज्ञान एव धम की परिकल्पनाए फिर एक बार समान सिद्ध होती हैं।

क्या इससे सिद्ध होता है कि विज्ञान और धम मे कोई भेद नही है? यदि ऐसा होता तो धर्म के प्रचार कर्ताओ एव मठ मन्दिर मस्जिद एव चर्चों के प्रतिष्ठित पण्डे एव पादरियो को विज्ञान के बढते हुए प्रभाव के प्रति शका, भय तथा विरोध की दीवारें बनाने की क्या आवश्यकता थी?

Limitation of science के लेखक सुलीवन के अनुसार प्रत्येक धर्म मे इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति का कारण एक सर्वशक्तिमान सर्वज्ञाता तथा दयामय भगवान है। परन्तु विज्ञान मे इस कल्पना के लिए कोई स्थान नही है।

आइन्स्टीन भगवान की सत्ता मे विश्वास रखता था परन्तु उसके विज्ञान और उसकी Relativity के सिद्धांत में पूर्ण आस्तिकतावाद के दर्शन होते हैं। सी० ई० एम० जोड आस्तिकतावाद के इतने विरुद्ध थे कि उन्होने विज्ञान एव धर्म मे इस परिकल्पना को ही अर्थहीन सिद्ध कर दिया कि संसार एक नियमबद्धता तथा ज्ञान शक्ति पर आधारित है। प्रो० व्हाइटहेड का विचार है कि ब्रह्माड मे कही भी Rationality तथा Ordcininess का बड़े स्तर पर दर्शन नही होता। गणित के फार्मूले तो किसी भी Rational organational प्रक्रिया के रूप मे फिट किए जा सकते हैं। उन्होने कहा था कि Science की परिकल्पनाओ मे ज्ञान शक्ति तथा नियमवाद को ढूढना उस अन्धे आदमी की प्रक्रिया के समान है जो अधेरे कमरे मे उस काली बिल्ली को ढूढ रहा है जो वहा है ही नही।

Chemistery के Nobelprize विजेता J J Thomsan ने स्पष्ट शब्दो मे स्वीकार किया है कि परमाणु के Nucleus के बाहर भ्रमण करते हुए Electrons की गति किसी भी सिद्धात द्वारा नही समझी जा सकती। ब्रह्माड मे विशाल नीहारिकाओ की गति भार तथा भौतिक गुण विज्ञान के सब नियमो का अपवाद है। यह ठीक है कि इन बातो को आज का वैज्ञानिक अच्छी तरह नही समझ सकता और इसीलिये धर्म के पण्डितो ने उसकी इस कमजोरी को अपना अस्त्र मानने की गलती की है।

दक्षिण के शकराचार्य ने इस बात पर जोर दिया कि जहा विज्ञान नहीं जा सकता जहा विज्ञान की सीमाए समाप्त होती हैं वही से धर्म का क्षेत्र प्रारम्भ होता है। परन्तु यह वह चक्र था जिसमे फसकर धर्म की चूली परास्त हुई। विज्ञान अपने ज्ञान क्षेत्र के जिन जिन क्षेत्र स्थलो को नही समझ सका उन परो को धर्म के सिद्धातो पर समझाने का प्रयत्न किया गया परन्तु विज्ञान ने बहुत शीघ्र ही इन पैरो को बड़े सुन्दर ढग से भरना शुरू कर दिया जिससे धर्म के प्रति अनास्था उत्पन्न हुई तथा धर्म एक साधारण विडम्बना बन कर रह गया।

धर्म ने फिर यह कहना प्रारम्भ किया कि भगवान की अनुभूति मनुष्य की साधारण इन्द्रियो की पहुच से बहुत दूर है और उसे विश्वास आस्था तथा अभ्यास के द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। अपने पक्ष मे प्रमाण देते हुए उन्होंने चमत्कारो का सहारा लिया। प्राचीन काल से ही ईसा मसीह तथा भगवान बुद्ध न रोगियो को केवल छूकर उनके रोगो का निवारण किया। केवल अपनी शक्ति के द्वारा ही लोगो के विचार जानना दूर स्थानो पर होने वाली घटनाओ का पता लगा लेना वस्तुओ का लोप कर देना एव प्रकट कर देना भगवान की उपस्थिति के प्रमाण के रूप मे प्रस्तुत किया गया।

धम मतावलम्बियो न भगवान की अनुभूति को अन्ध बहरे एव गूगे के गुण की सज्ञा प्रदान की और विज्ञान ने इस अनुभूति को मानने से अस्वीकार कर दिया।

विज्ञान एव धम के इस सघर्ष मे किसी निश्चित और अन्तिम सत्य का ढूढना यदि असम्भव नही तो अत्यन्त दुष्कर अवश्य है। यदि मनुष्य प्रत्येक पदार्थ का अन्तिम मापदण्ड है तो विज्ञान एव धम उसके अन्वेषण के दो पक्ष हैं जिनमे भले ही भेद हो परन्तु एक दिन उनमे एकता एव समन्वय के सम्बन्ध अवश्य स्थापित हो सकेंगे। उस समय विज्ञान एव धम एक ही सत्य के दो रूप या एक ही लक्ष्य के दो मार्ग प्रतीत होंगे। क्योंकि दोनो का उद्देश्य इस जगत का कल्याण करना है। यदि प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड मनुष्य नही तो धम और विज्ञान की सीमाओ मे गठबन्धन करने वाली उस कड़ी को मनुष्य कब तक ढूढता रहेगा इसे कोई नहीं जान सकता।

देवदासी प्रथा—एक कलंक

विश्वनाथ प्रसाद

भारतवर्ष सदैव से विश्व का गुरु रहा है। विदेशो से हजारों-लाखों की संख्या मे विद्यार्थी आकर यहां शिक्षा ग्रहण करते थे। वहां की सामाजिक व्यवस्था के सादृश्य ही अपने यहा की व्यवस्था मे सुधार करते थे। इधर हजारों वर्षों से भारतवर्ष का सामाजिक रहन-सहन बिगड़ गया है और कुछ वर्षों मे तो वह अधर्म मार्ग पर बहुत आगे जा पहुंचा है।

मनुस्मृति में लिखा है कि :—

तस्मादिता: सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्य सत्कारत्सवेषु च ॥ (मनु० ३ श्लोक ५९)

अर्थात ऐश्वर्य की कामना करने हारे मनुष्यों को योग्य है कि सत्कार और उत्सव के समय में भूषण, वस्त्र और भोजनादि से स्त्रियों का नित्यप्रति सत्कार करें।

उपरोक्त उत्कृष्ट सिद्धांत तो पुस्तकों में बन्द हैं। उनका किसी रूप में अब निर्वाह नहीं होता, किन्तु आदम की निर्दोष, निरपराध बेटियां सरेआम बिकती हैं और आदम के ही पुत्र मूल्यांकन करके मूल्य चुकाते हैं। ऐसी ही घटनाओं का अवलोकन करें :—

भोपाल से लगभग १०० किलोमीटर दूर राजगढ़ जिले के नरसिंहगढ़ तहसील के सांसी समाज बहुल आबादी के तीन गांव, गुलखेड़ी और फूल-खेड़ी मे आधुनिक सभ्यता के इस युग मे भी केवल पांच से पन्द्रह हजार रुपये की मामूली कीमत में कमसिन युवतियों का सौदा उनके मां-बाप ही कर देते हैं।

अब तक इन तीन गांवो की लगभग चालीस लड़कियां बिक चुकी हैं। जिस्मों के खरीददार बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा आदि नगरों से यहा आकर मोलभाव करते हैं।

१-६-१९८३ के दैनिक नवभारत बिलासपुर में प्रकाशित एक समाचार के आधार पर नीमच के मनासा तहसील में बाछड़ा जाति के करीबन चालीस गांव हैं। इन गांवों के बाछड़ा माता-पिता कई वर्षो से अपनी पुत्रियों को वेश्यावृत्ति के लिए प्रोत्साहित करते रहे हैं। इस जाति मे परम्परागत रूप से पिता अपनी लड़की से वेश्यावृत्ति का धंधा करवाता था। इन लड़कियों को बाछड़ा जाति में खिलाड़ी कहा जाता है। खिलाड़ी युवतियों की कमाई का बाप, भाई और परिवार उपयोग करता है।

किसी सच्चरित्र, समझदार व्यक्ति ने बाछड़ा जाति की इस बुराई पर गम्भीरता से विचार किया और उनकी इस गन्दी गाड़ी को सुधार के पथ पर ला खड़ा किया। मनसा तहसील में एकत्रित पंचों द्वारा किए गये निर्णय के अनुसार बाछड़ा जाति का कोई भी पिता अपनी पुत्री से वेश्या-वृत्ति का धन्धा नहीं करायेगा और उसे अब इस धंधे में नहीं लगाएगा।

इसके बाद भी यदि अब कोई दोषी पाया गया तो उस दोषी पिता से समाज दो लाख रुपया वसूला करेगा। उसका सामाजिक बहिष्कार भी किया जायेगा। ऐसे पिता या अभिभावक के खिलाफ पुलिस व अन्य अधिकारी वर्ग से शिकायत करके कार्यवाही करवाने के लिए समाज के नवयुवक आगे आएंगे। सुधार के प्रति लोगों का उत्साह प्रशंसनीय है वैसे बुराई कठिनाई से जाती है।

सरकार कानून पर कानून बनाकर उनका अंबार लगाती रहती और चतुर लोग इन कानूनो को अंगूठा दिखाकर अपना उल्लू सीधा कर ही लेते हैं।

२३-२-१९८९ के दैनिक नवभारत बिलासपुर से प्रकाशित समाचार से ज्ञात हुआ कि देवदासी प्रथा का वश अभी मिटा नहीं है। उत्तरी कर्नाटक के महाराष्ट्र की सीमा से बेलगांव के मन्दिरों के नगर सोदत्ती में सभ्य समाज के सभी मानदंडों को ताक पर रखकर पिछले तीन दिनों में नौ से पन्द्रह वर्ष की करीब तीन हजार लड़कियों को देवी येलम्मा को समर्पित कर देवदासी बनाया जा चुका है।

कानूनी पाबन्दी के कारण यह रस्म मन्दिर में पूरी नहीं की गई बल्कि सभी लड़कियों को वहां से चार किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर ले जाकर देवदासी बनाया गया। तीर्थ यात्रियों के प्रतिबन्ध यहा लगने वाले मेले में हर बार की तरह बम्बई से भारतीय स्वास्थ्य संगठन के डाक्टरों का एक दल भी वहां स्वास्थ्य शिविर लगाने आया। इस दल के साथ आए यूनीवार्ता के संवाददाता ने कानून को ठेंगा दिखाकर देवदासी बनाए जाने की रस्म अदा होती देखी।

देवदासी बनाने की रस्म आमतौर पर हिन्दू कलेन्डर के ग्यारहवें महीने मे पूर्ण चन्द्र दिवस पर आयोजित की जाती है। इस वर्ष चन्द्र ग्रहण के कारण यह रस्म तीन दिन तक चली। भोली-भाली लड़कियों को देवी देवताओं के प्रति समर्पण के नाम पर अन्ततः वेश्यावृत्ति की ओर प्रवृत्त करने वाली यह प्रथा सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में शुरू हुई थी तथा महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र, गोवा, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और राजस्थान में प्रचलित रही।

इस प्रकार दो फरवरी १९८९ के नवभारत बिलासपुर में एक समाचार प्रकाशित हुआ कि "विधाता में ठगी हैं नागा संन्यासिनें" जिसका विवरण संक्षेप में निम्न प्रकार है :—

सामाजिक बंधनों से मुक्त महिला नागा संन्यासियों में से अधिकतर बाल विधवा या धार्मिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण जीवन-यापन के लिए सन्यास लेने पर मजबूर होना पड़ा है। यह बात यहीं कुम्भ के अवसर पर यहां संगम तट पर बने शिविर में रह रही वस्त्रधारी नागा सन्यासियों मे एक लक्ष्मी गिरी ने यूनी वार्ता से एक भेंट में कहा। नेपाल की मूल निवासी लक्ष्मी ने अपने अतीत का पूरा विवरण देने से इन्कार किया, लेकिन उन्होंने कहा कि उनके अखाड़े में मौजूद सन्यासियों में से अधिकतर नेपाल या उत्तर प्रदेश के कुमायूं और गढ़वाल अंचल की हैं।

महाकुंभ पर गंगा जमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर मौनी अमावस्या के दिन शाही स्नान के लिए बाट जोह रही नागा सन्यासियों की संख्या करीब तीन सौ है और वे जूना अखाड़े से जुड़ी हुई हैं।

नेपाल की ४० वर्षीया कैलाशगिरी ने बताया कि उसकी शादी छः वर्ष की उम्र में हुई थी। शादी के तीन माह बाद ही उसका पति काल के गाल मे समा गया था। कैलाशगिरी पहले तो अपने घरवालों के साथ रहीं लेकिन बाद मे लोगों की बुरी नजर से बचने के लिए २० वर्ष की उम्र में वह सन्यासिनी बन गई। यह पूछे जाने पर कि वह सन्यासिन ही क्यों बनीं; कैलाशगिरी ने रोते हुए कहा, यहां पर हम सब इसी तरह सन्यासिन बने हैं। आप हमारे दुःखों को क्यों भड़काते हैं? भगवान के लिये आप यहां से चले जाओ।

विधवा के अलावा कुछ ऐसी नागा सन्यासिने भी हैं जो ससुराल वालों की मारपीट या प्रताड़ना के कारण सन्यासिन बन गई। ऐसी ही नेपाल की ४१ वर्षीया समुद्रगिरी ने बताया कि १४ वर्ष की उम्र में उसकी शादी हुई थी और वह अपने वैवाहिक जीवन से तंग आकर सन्यासिन बन गई।

उत्तरप्रदेश के पिथौरागढ़ की २३ वर्षीया सन्तोषगिरी ने पहले अपने बारे में कुछ बताने से इन्कार किया, लेकिन अन्य नागा सन्यासियों के कहने पर उसने कहा कि उसका विवाह आठ वर्ष की उम्र में हुआ था। शादी के बार साल बाद जब वह ससुराल गई तो उसे लगा कि उसका सारा जीवन चौपट हो गया। उसका पति हमेशा शराब के नशे में धुत्त रहता था और उसके घर में खाने की किल्लत बनी रहती थी। उसने बताया कि घर की कलह से छुटकारा मिलने पर वह अपने गांव के निकट एक मन्दिर में जाने लगी जहां एक नागा बाबा रहते थे। वह पति के विरोध के बावजूद नागा बाबा से मिलती रही और अन्ततः उसने सन्यास ले लिया। एक प्रश्न के उत्तर में संतोषगिरी ने कहा कि वह सन्यास लेकर खुश है क्योंकि उसे यहां दो वक्त की रोटी और वस्त्र मिल जाता है। उसने कहा कि जिन्दगी जीने के लिए मुझे इसके अलावा और किसी चीज की जरूरत महसूस नहीं होती।

(क्रमशः)

मन के बिगड़ने से बिगड़ता है आदमी

यशपाल आर्यबन्धु, मुरादाबाद

मनैव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयो के अनुसार मन ही मनुष्य के बंधन और मुक्ति का कारण हुआ करता है। मन ही मनुष्यो के उत्थान और पतन का कारण बनता है। मानव मन बड़ा चंचल है। बहिर्मुखी इन्द्रियां मन की चंचलता को और बढ़ा देती है। इस पर भी कभी कभी हम मन को दोष न देकर अपनी इन्द्रियों को दोष देने लगते हैं जबकि वास्तविक दोष मन का होता है। भक्त कवि सूरदास के लिए कुछ लोग कहते है कि वे जन्मांध थे। जबकि अन्य लोगों का तर्क है कि वे जन्मांध नहीं हो सकते। कारण कि प्रकृति वर्णन तथा बाल लीला का सजीव वर्णन कोई जन्मांध कर ही नहीं सकता। अतः सूरदास जन्मांध नहीं थे। उनके अनुसार सूरदास ने अपनी आंखें स्वयं फोड़ ली थी। घटना इस प्रकार है—

एक दिन नवयुवक सूरदास कही जा रहे थे। मार्ग में एक युवती पर दृष्टि पड़ी। दृष्टि पड़ते ही आसक्त हो गए और उस बाला के पीछे चल दिये। वह युवती कुएं पर जल भरने जा रही थी। उसने एक ब्रह्मचारी को पीछे आता देख यह समझा कि शायद यह प्यासा है। अत उसने उसे जल के लिए पूछ लिया और जल पिला भी दिया। कामातुर नवयुवक उस निर्दोष बाला को ठीक से समझ नही पाया और वह उसके पीछे-पीछे उसके घर की ओर चल पड़ा। लड़की ने उस युवक कोआते देखा तो मन मे सोचने लगी कि शायद यह भूखा भी है। और घर जाकर अपनी मा से कह दिया कि नवयुवक प्यासा था। मैंने जल पिला दिया। लगता है वह भूखा भी है, बाहर खड़ा है, मा! उसे भोजन करा दो। मा ने भोजन भी करा दिया। भोजन करने पर उसकी मति कुछ ठिकाने लगी और वह सोचने लगा कि निर्दोष बाला के बारे मे मैं क्या सोचता रहा। उसे बड़ी ग्लानि हुई। और घर जाकर उसने गरम-गरम सलाखो से अपनी आखे फोड़ ली।

दोष मन का था, दण्ड आखो को मिला। कसूर किसका, सजा किसे? आखे तो देखने का साधन हैं पर दृष्टिकोण मन का होता है। मन में विकार है तो दोषरहित दृष्टि भी दूषित हो जाती है और यदि मन विकार रहित है तो दृष्टि भी निर्दोष हो जाती है।

स्वामी रामतीर्थ के जीवन का उदहारण हमारे सम्मुख है। एक बार स्वामी रामतीर्थ भी कही जा रहे थे। मार्ग मे एक मकान की छत पर एक नवयुवती नहाकर अपने बाल सुखा रही थी। खिले यौवन पर खुले बालो की छटा सौन्दर्य को चार चांद लगा रही थी। स्वामी रामतीर्थ की दृष्टि पड़ी तो देखते ही रह गये। ऊपर बाला ने देखा कि एक सन्यासी इस तरफ दृष्टि गाड़े देख रहा है तो झुंझला कर बोली कि शर्म नही आती? सन्यासी होकर भी लड़कियों को ताकते फिरते हो। जानते हैं स्वामी रामतीर्थ का क्या उत्तर था? स्वामी जी बोले कि—"बेटी तुझे देखकर तेरे बनाने वाले की याद आ रही है कि जिसकी ऐसी सुन्दर रचना है, वह स्वय कितना सुन्दर होगा?" क्या कमाल है दृष्टिकोण का किसी कवि ने उस नवयुवती और स्वामी जी के कथनोपकथन को निम्न शब्दो मे बाधा है—

लड़की—दुनिया की सूरत पे हैं जो कि शैदा,
वह दुनिया मे रजोअलम देखते हैं।
स्वामी जी—'न सूरत से मतलब न सीरत से तेरी,
मुसव्विर की हम तो कलम देखते हैं।'

अर्थात हमें तेरे रूप और लावण्य से क्या सरोकार हम तो उस चित्रकार की चित्रकारी देख रहे हैं।

यह है दृष्टिकोण का अन्तर। देखने की क्रिया उसमे भी हुई और इसमें भी। पर दोनों में कितना अन्तर है। यह अन्तर किस कारण से हुआ। निश्चय ही मन के कारण से जब मन में विकार था तो रूप कामुकता में बदल गया और जब मन मे विकार नहीं था तो रूप भक्ति में बदल गया। इसलिये कहा गया है कि मन को विषय विकारों से बचाओ क्योंकि—

मन के बिगड़ने से बिगड़ता है आदमी,
सुधरा अगर जो मन तो आदमी सुधर गया।

अत— "मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, वह सूरा कोई एक॥

सन्त कवि कबीर दास ने ठीक ही कहा था कि—

"कैसिन कहा बिगाड़या, जो मूड़ै सौ बार।
मन को क्यों न मूड़िये जा में विषय विकार।'

चंचल मन विषय विकारो में फंसकर क्या-क्या अनर्थ नही करता। कबीर जी का कथन है—

"मन पांचों के बस पड़ा, मन के बस नहीं पांच।
जित देखूं तित लौ लगी, जित देखू तित आंच॥

जब हमारा मन इन पांचों विषयो के बस मे होगा तो फिर परिणाम और हो भी क्या सकता है? अत. आवश्यकता इस बात की है कि हम इन्द्रिय-निग्रह द्वारा अपने मन को बस मे करें। हमारी इन्द्रियां यदि रथ के घोडे हैं तो लगाम मन है, बुद्धि सारथी है और सवार है हमारी आत्मा। यदि सवार को अपने मन्तव्य पर पहुंचना है तो ऐसे सारथी की आवश्यकता है कि जो लगाम को कसके रख सके ताकि घोड़े इधर-उधर न भागने पायें। तभी वह सवार को अपने मन्तव्य पर ठीक-ठीक पहुंचा सकता है। यदि हमारी इन्द्रिया हमारे मन के वश मे हों, मन बुद्धि के वश में और बुद्धि वेदानुगामिनी हो तो निश्चय ही बेडा पार है। पर यह हो कैसे? मन को कैसे वश में रखें? इन्द्रिय निग्रह कैसे करें?

यदि गम्भीरतापूर्वक विचारा जाए तो मन की चंचलता सर्वथा समाप्त हो जाये तो ससार का कोई भी कार्य व्यवहार चल ही नहीं सकता और फिर यह मन ऐसा है भी नही कि जो सर्वथा बस में आ ही न सके। सतत अभ्यास, वैराग्य और विवेक के द्वारा हम अपने मन को वश में कर सकते हैं। विचारों की शुद्धि से मन को शुद्ध किया जा सकता है। गन्दे विचार मन को भी गन्दा कर देते हैं। वस्तुतः दूषित विचार वह काला धुंआ है कि जो मन के आंगन मे प्रकाश की किरन आने ही नहीं देता हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है है कि हम अपने विचारो को शुद्ध करें। विचारो की शुद्धि हमारे मन को ही नही हमारी तक्दीर बदल कर रख सकती है। इसलिए वेद में यही प्रार्थना बार बार की गई है कि हमारा मन शिवसंकल्पों वाला हो।

हम मन की चंचलता को सर्वथा समाप्त करने की सोचें तो यह हमारी भूल होगी। हम मन की चंचलता का सर्वथा समाप्त कर ही नहीं सकते। जैसे नदी के प्रवाह को सर्वथा अवरुद्ध करना असम्भव होता है वैसे ही मन के प्रवाह को रोकना भी सर्वथा असम्भव है। हम नदी पर बांध बांधते हैं तो पानी को सर्वथा रोक नहीं लेते। अगे बांध लगाकर पानी को नहरों की ओर मोड देते हैं। यदि नहरों की ओर पानी को मोड़ा न जाये तो उसे रोक पाना सर्वथा असम्भव होता है। ऐसा ही मन के विषय में भी समझना चाहिए। नदी के प्रवाह की भांति मन के प्रवाह को भी मोडना आवश्यक है, न कि उसके प्रवाह को ही समाप्त कर देने का प्रयत्न करनां। ऐसी ही स्थिति इन्दियों के सम्बन्ध मे भी है। इन्द्रियां जो बहिर्मुखी हैं उनकी वृत्ति अन्तरमुखी करने की आवश्यकता है। मन जो विषयो की ओर भागता है उसे ईश चिन्तन की ओर मोड़ना होगा। मन को मारने का तात्पर्य यही है कि हम अपने मन को विषयों से खींच कर प्रभु चिन्तन में लगायें। इसके लिए सतत अभ्यास, वैराग्य और विवेक के साथ प्रभु की आवश्यकता है। तभी हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! यह हमारा मन शिवसंकल्पों वाला हो, हमारी बुद्धि उज्जवल हो; हमारी वृत्ति शांत और विकार रहित हो। पर यदि हम केवल प्रार्थना ही करते रहें ओर पुरुषार्थ—प्रयत्न कुछ भी न करे तो भी कुछ हाथ नहीं लगने का। क्योंकि प्रार्थना तो अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ही सहाय की इच्छा से की आती है। जिस प्रार्थना में पुरुषार्थ नहीं वह प्रार्थना भी नहीं। यदि हम वासना भरे वातावरण में रहें और चाहें कि हमारा मन वश में हो, तो यह सम्भव नहीं क्योंकि—

(शेष पृष्ट ९ पर)

अश्वमेध यज्ञ परिचय (४)

श्री वेदप्रिय शास्त्री

१२—पारिप्लवाख्यान—

अश्व छोड़ने के पश्चात् कशिपु नामक आसन विशेष दक्षिण वेदी पर बिछाकर होता बैठता है उसके दाहिने ओर यजमान दर्भ के आसन पर बैठता है दक्षिण मे ब्रह्मा और उद्गाता बैठते हैं। अब होता पारिप्लव नामक आख्यान सुनाता है। यह दस दिन तक चलता है। इसमें एक ही राजा के दस भिन्न रूप, अधिकार व कर्तव्यो का बोध कराया गया है तथा दस प्रकार की प्रजा का वर्णन किया गया है।

१३—प्रक्रम होम—

अब दीक्षा ग्रहण के समय प्रकम होम करता है चार उद्ग्रमण की तथा तीन वैश्वदेव कुल सात-मास के क्रम से दक्षिणाग्नि में ४९ आहुतियां दी जाती हैं इनका सम्बन्ध दीक्षा से है सो नहीं इसका रहस्य कहेंगे।

१४—दीक्षा—

दीक्षा का अर्थ है निश्चित अवधि के लिये किसी नैमित्तिक कार्य विशेष के लिए नियुक्त हो जाना और प्रमाद रहित हो उसे समय पर पूरा करने मे प्राणप्रण से लगे रहना। अश्वमेध में वर्ष भर मे २१ दीक्षाएं होती हैं। इसका तात्पर्य है दिनचर्या नियत कर ठीक-ठीक कार्य विभाजन करना तथा विभागों का पुष्टीकरण समय पर करते रहना। बड़े कार्यो मे योजनाहीन, अस्तव्यस्त रहने, दिनचर्या के बिगड़ जाने से स्वास्थ्य खराब होता है। क्षीणता आती है तथा सभी कार्य बिगड़ जाते हैं। अत. दीक्षा से दक्षता प्राप्त करते हैं।

१५—पर्यंग पशु निरूपण—

अश्व के वापस लौट आने पर अहीन सोमयाग का आयोजन किया जाता है इसमें १३ दीक्षा १२ उपसद् और तीन सुत्या होती हैं। इस समय २१ यूप (खूंटा) गाड़े जाते हैं। उनमें पशुओ को बाधा जाता है। बीच बीच में आरण्य पशु पक्षी भी रखे जाते है। पशु पक्षियो को रखने का तात्पर्य यह है कि राष्ट्रोन्नति में पशु पक्षियों का भी महत्व स्वीकार किया जाता है। रात को अन्न होम किया जाता है जो सत्तू, धाना, लाजा और घी से होता है। इसका प्रयोजन देवो और विद्वानों को प्रसन्न करना है। अश्व के सारे शरीर पर रस्सी लपेट देते है। फिर उसमें एक क्रम से पशुओं को बाधते हैं। यही पर्यंग पशु निरूपण है। फिर इक्कीस यूपों मे पन्द्रह-पन्द्रह पशु बाधते हैं और एक मे सत्रह पशु बाधते हैं। आरण्यक पशुओं को अग्नि के चारो ओर घुमाकर छोड़ दिया जाता है। ग्राम्य पशु ही ग्रहण किये जाते हैं।

इस सम्पूर्ण कृत्य के द्वारा राज्य व्यवस्था को सर्वांग पुष्ट और स्वस्थ बनाकर प्रजा को व्यवस्थित बसाने की शिक्षा दी गई है। विस्तार भय से हम उसे यहा नही दे पा रहे हैं। प्रजापति ने कामना की कि दोनों लोकों पर विजय प्राप्त करूं, पृथ्वी लोक पर और देव लोक पर। उसने दो प्रकार के पशुओं को देखा ग्राम्य तथा आरण्य। सो ग्राम्य पशुओं को पृथ्वी के लिए प्राप्त किया और आरण्य पशुओं को देव लोक के लिए। ग्राम्य पशुओं को बांधने का भाव यह है कि लोगमार्गो मे मिलकर चलें तथा ग्राम के समीप ग्राम बसें और लोग मिलकर रहें। परन्तु जो आरण्य हैं वे रीछ, शेर; व्याघ्रादि सब, चोर, तस्कर, डाकू, हत्यारों के प्रतीक हैं। इन्हें तो वन मे ही रहना ठीक है अतः छोड़ देता है। ये ग्रामवासियों के मध्य न आने पायें। जैसे आरण्य पशु ग्राम्य पशुओं की तरह उपयोगी नहीं हैं वैसे ही ये लोग ग्राम्यजनों के शत्रु हैं। परन्तु यदि इन्हें शासित कर उपयोगी बनाया जा सके तो बना सकते हैं। यह कार्य देवों अर्थात् विद्वानों का है इन्हें वे ही वश में करने की युक्ति जानते हैं। आरण्य मे ही हमारे तपस्वी विद्वान् अनुसन्धान, अध्ययन, अध्यापन व तपश्चर्या करते हैं। आरण्य पशुओं और आरण्य मनुष्यो दोनो से ही इनकी रक्षा आवश्यक है। अन्यथा राष्ट्र का ब्रह्म बल समाप्त हो जाएगा इत्यादि उत्तम शिक्षा इस प्रकरण में प्राप्त होती है।

१६—अश्व संज्ञपन—

आज अश्व अर्थात् क्षात्र सगठन दिग्विजय कर, वापस लौटा है। अतः सर्वप्रथम उसका उल्लास पूर्वक स्वागत होगा। वह थका हुआ, घायल और क्षीण प्राण है। पर्याप्त जन धन की हानि उठानी पड़ी है। अतः उसे उपचार व चिकित्सा की आवश्यकता है। पश्चात् परिजनों से स्नेहालाप सम्मिलन भी होता है। तत्पश्चात् राष्ट्र को पुनः व्यवस्थित करने, समृद्ध व सुदृढ़ बनाने, विभागो का वितरण, पारिश्रमिक, पुरस्कारादि प्रदान करना तथा राष्ट्र के उपयोगी भाग को कहां-कहां लगाना इत्यादि प्रशिक्षण कार्य चलेगा। यह सब कार्य प्रतीको के द्वारा किया जाता है।

अतः अश्व को जल से प्रोक्षण कर बेंत की चटाई पर वस्त्र बिछाकर सुवर्ण खण्ड रखकर लिटा देते हैं। अब उसे चार प्रकार की पत्नियां सहलाती हैं तथा पखा करती हैं। पत्नियां सुइयों से उसे खुजलाती हैं। इस प्रकार राष्ट्र को श्री समृद्ध—और प्रजा से समर्थ करती है।

यहा कुछ लोग कहते हैं कि संज्ञपन में घोड़े को जान से मार देते हैं और उसकी मेद से अग्नि मे आहुतियां देते हैं, यह ठीक नहीं है। ब्राह्मण कार के कथन को न समझ कर यह मूर्खता प्रचलित हो गई है। वह कहता है—"घ्नन्ति वा एतत् पशुम् यदेन संज्ञपयन्ति" अर्थात् यह जो इस अश्व का संज्ञपन करते हैं सो यह पशु को मारते हैं। यहां अश्व को मारने की बात नही है किन्तु अश्व मे जो पशु अर्थात् अनुपयोगी अंश हैं उसे मारकर संस्कृत करना है तभी वह राष्ट्र यज्ञ मे आहुति के योग्य होगा। अश्व मर जायेगा तो राष्ट्र मर जायेगा। अतः कहते हैं प्राणाय—स्वाहाऽपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा इत्यादि। यहां पर स्पष्ट लिखा है कि वह अश्व मे प्राणों का आधान करता है यथा—"प्राणानेवास्मिन् एतद्दधाति" (शतपथ १३-२-२-२) अपि च तपो ह्यस्यैतेन जीव तैव पशु नेष्टम्भवति", अर्थात् तथ्य है कि जीवित पशु के द्वारा ही यहां कार्य करना अभीष्ट है। यहां हरिस्वामी ने मूर्खतापूर्ण व्याख्या की है कि उत्क्रान्त प्राण होने के बाद ही तो प्राणो का आधान असम्भव है। हमारा कहना है कि फिर तो मृत अश्व पुनः जीवित हो जाना चाहिए। वास्तव मे उत्क्रान्त प्राण का अर्थ उखड़े प्राण अर्थात् थका, घायल व बेहोश है। अतः अश्वमेध यज्ञ में घोड़ा नही मारा जाता। राजा और राष्ट्र तथा प्रशासन व सैन्यबल सबको राष्ट्र यज्ञ में आहुतियां देने के योग्य मेध्य बनाना ही संज्ञपन है।

१७—चार पत्निया—

अश्वमेध मे चार पत्निया अपनी अनुचरियों के साथ नियुक्त की जाती है तथा पाचवी एक कुमारी होती हैं इनके नाम हैं महिषी, परिवृक्ता, वावाता, तथा पालागली। ये राजा की रानियां नहीं हैं, अपितु राष्ट्र की रक्षिका सस्थाओ की प्रतीक हैं। ये क्रमश भूसंरक्षण एव प्रबन्ध सस्था, महासभा, कार्यकारिणी तथा गुप्तचर संस्था की प्रतीक है। कुमारी शिक्षा विभाग एव एम्पलायमेंट सस्था है। शेष अनुचरिया इन्ही की पूरक व पोषक—उप सस्थाओ की प्रतीक हैं। ये सभी एक स्थान पर बैठकर राजा के साथ व्यवस्था सम्बन्धी वार्तालाप परामर्शादि करती हैं। इसे न समझकर महीधर सायण व हरिस्वामी ने मूर्खतापूर्ण प्रलाप किया है।

१८—वपा होम—

देवों को प्रसन्न करने अर्थात् विद्वानों की राष्ट्र के लिए सहानुभूति सदाशयता व सहायता पाने हेतु स्वयं का अंशदान करना ही वपा होम कहलाता है, सो आज्य अर्थात् घी से ही करना चाहिए, क्योंकि आज्य ही मेध है और देवों का प्रियधाम है। यहां आज्य अश्व की वपा (चर्बी) का प्रतीक है, अतः इसे वपा होम कहा जाता है। अर्थात् राष्ट्र का सार भाग राष्ट्र हित में प्रदान करना। जब राष्ट्र, उत्पादन और संरक्षण हेतु श्रम करता है तब शरीर की वपा (चर्बी) की ही आहुति लगती है। उसे घृतादि खाकर पूरा करते हैं, सो यह वही कृत्य है। विजय के पश्चात् क्षतिपूर्ति करना ही वपा होम है।

१९—ब्रह्मोद्य—

इसके पश्चात् ज्ञान चर्चा होती है। राष्ट्र की शिक्षा संस्थाओं को समुन्नत और विकसित बनाने का परामर्श, योजना निर्माण और तत्व ज्ञान का उप-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

रचयिता की अद्भुत रचना (२)

महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थ, आर्य कुटिया, धूरी

वायुयान को देखकर बनाने वाले के गुण गाने वाले, लोहा और पेट्रोल बनाने वाले को क्यों भूल गया ? कैमरा बनाने वाले को मानना और आंख बनाने वाले को न मानना । नहर खोदने वाले की प्रशंसा और समुद्र खोदने वाले की अवहेलना । नलका लगाने वाले में रुचि और जो वर्षा से जल जंगल भर दे, उसमें अरुचि । पंखा बनाने वाला तो है परन्तु वायु बनाने वाला कोई नही ? हीटर बनाने वाले की स्मृति और सूर्य बनाने वाले की विस्मृति । वाह रे मानव ! हमें तो यह बातें लिखते हुए लज्जा आ रही है, किन्तु कहना पड़ेगा तू नकलची है, तूने जो कुछ बनाया, रचयिता की रचना से ली हुई शिक्षा है ।

फलों को बेचने वाला फलों का बनाने वाला नही होता । जो दस व्यक्तियों को भोजन पकाकर खिलाये उसे भण्डारी कह देते हैं, परन्तु वह तो चींटी से हाथी पर्यन्त नभचर, जलचर और थलचर को यथायोग्य भोजन दे रहा है । दूध वाले को दूध. फल वाले को फल, अन्न वाले को अन्न, औषधि वाले को औषधि, यही तक नहीं, प्राणियों को प्राण भी दे रहा है । पाठको ! इस विज्ञान पूर्वक रचे ब्रह्माण्ड को देखकर भी जो रचना करने वाले को न माने तो रचने वाले का क्या अपराध ? यदि उल्लू को दिन में नहीं दिखाई देता तो इसमें सूर्य का क्या दोष ? यदि बसन्त ऋतु में भी टीट के पौधे पर पत्ते नहीं आते तो इसमें बसन्त का क्या दोष ? यदि वर्षा का जल चेतक के मुख में नहीं पडता तो बादल का क्या अपराध ?

दयालु की व्यवस्था देखो, हम अन्न, फल दूध दही घृत, केला सेब और नासपती आदि सफेद पदार्थ भी खायें, तो सफेद पदार्थों का रस सफेद होना चाहिये, परन्तु खून में लाली क्यों है ? युवा अवस्था में बाल काले होते हैं और वह धीरे-धीरे सफेद हो जाते हैं, क्या कोई ऐसा कारीगर है जो काले रग पर सफेद रंग चढ़ा दे ? और वह भी मनुष्य इच्छा के विपरीत । मानव तू भूला हुआ है, कुछ दूर से देख रहा है, यहां आ जहां से ठीक दिखाई देता है, थोडा पास तो आ, हमारी इतनी बात तो मान जा । जिस दिन हृदय से देखेगा उस दिन ठीक दिखलाई देगा । तू तो आज तक यह नहीं कह सका कि पृथ्वी की पूरी खोज मैं कर चुका हूं सौर मण्डल और तारों की बात तो बहुत दूर है । मानव तू अपनी शक्ति को तोल तू तो एक वृक्ष का पत्ता तोड़कर पुनः वहीं पर नहो लगा सकता । यदि ऐसा होता तो संसार में कोई लंगड़ा-लूला न होता ।

इस पृथ्वी और विशाल द्यौलोक को देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है, क्यों ? क्योंकि इस सौर मण्डल मे असंख्य लोक-लोकान्तर हैं सभी में गति है परन्तु गति मे भारी अन्तर है सभी एक स्तर और प्रोग्राम के अनुसार चक्र लगा रहे हैं । क्या कभी कोई दुर्घटना हुई ? परन्तु मानव अत्यन्त सावधानी से मोटर, रेल और वायुयान चलाता है, चढ़ने, उतरने, ठहरने के स्टेशन बने हैं, तार वायरलैस से चलने की सूचना भेजता है तो भी कितनी दुर्घटनायें होती हैं, हैं कोई अनुमान ? रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है, कभी कोई ग्रह किसी ग्रह से नहीं टकरा सकता ।

पृथ्वी के ऊपर नीचे और मध्य में जल है, तीन भाग समुद्री जल एक भाग पृथ्वी का है । आप मिट्टी का ढेला पानी में डालियेगा पानी में घुल जायेगा, परन्तु पृथ्वी के ऊपर. नीचे. मध्य में तथा चारों ओर जल ही जल है और कितने छोटे-छोटे द्वीप हैं ? यह जल में क्यों नहीं घुलते ? समुद की लहरें इन द्वीपों को हर समय टक्कर मारती रहती हैं तथा सहस्रों (हजारों) ही नदियों का जल समुद्र में हर समय गिरता रहता है परन्तु समुद्र नहीं उछलता । भगवान का ज्ञान महान, बल महान, रचना महान-महान का सब कुछ महान है।

एक सूत्र का बटन भी कर्त्ता के बिना बना हुआ, मानने को कोई तैयार नहीं. परन्तु इस विशाल ब्रह्माण्ड की विज्ञान पूर्वक रचना को देखते हुए भी कई लोग कह देते हैं कि यह सब अपने आप बन गया । आकाश में तारों को देखो कोई बहुत छोटा, कोई बहुत बड़ा है, कोई बहुत समीप कोई बहुत दूर है । सूर्य पृथ्वी से साढे तेरह लाख गुणा बड़ा और उससे भी लाखो गुणा बड़े तारे । कहीं रंग-बिरंगी भूमि को देखो । कहीं बेल-बूटे हैं और कहीं सुगन्धित फूल और कहीं फल सहित वृक्ष झूम रहे हैं । जहां जो फल लगना चाहिये वहीं लगा है. नियामक के बिना नियम कैसे स्थिर रह सकते हैं । पर्वत नदिया प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ा रहे हैं । क्या यह जगत और जगत के महान पदार्थ रचयिता का स्वयं प्रमाण नहीं ? क्या यह जड का खेल है ? नही नहीं यह सारी सृष्टि रचयिता का ज्ञान करा रही है, पत्ता-पत्ता उसकी सत्ता और महत्ता का स्वयं प्रमाण है । सृष्टि का कण-कण उसकी प्रतिभा और प्रतिष्ठा का गान गा रहा है, परन्तु विरले ही उस गान को समझते हैं । बन्धुओ ! रचयिता को मानने में जीवन का एक महान लक्ष्य छुपा है, मान जाओ तो बहुत अच्छा है ।

अश्वमेध यज्ञ परिचय

(पृष्ठ ६ का शेष)

घोष यह सब ब्रह्मघोष है इससे राष्ट्र ब्रह्मवर्चस्वी होता है। युद्ध के पश्चात ही यह सब सम्भव हो पाता है। जब उदर भरा हो और वातावरण शान्त हो। वैज्ञानिक अनुसन्धान भी तभी सम्भव हो पाते हैं। अत इस कृत्य में ऋत्विको और यजमान के प्रश्नोत्तर होते हैं।

२०—अभिमेथन—

यह एक दूषित कृत्य वैदिक धर्म विरोधी लोगो द्वारा बाद म जोड दिया गया है। रानियो से अश्लील हसी मजाक आदि ऋत्विको द्वारा करने का वर्णन है सो सब धूर्तकृत्य है। इसे शतपथ मे परिशिष्ट कहा गया है। अत यह प्रक्षेप है। यथा यथाद्रिगो परिशिष्ट भवनि इत्यादि अत यह अश्वमध का भाग नही है।

२१—अवभृथ स्नान एव दक्षिणा—

अब यज्ञ समाप्त हो रहा है। अवभृथ स्नान क पश्चात अनुबन्ध्याइ‌ष्टि करके उदवसानीया नामक इष्टि करते हैं। पश्चात दक्षिणा प्रदान की जाती है। इस समय चारो पत्निया व अनुचरिया एक निश्चित क्रम मे ऋत्विको के पास खडी की जाती हैं क्योकि ये उन्ही से सम्बधित समस्याओ की प्रतीक होती हैं। अत दक्षिणा क समय ऋत्विको को धनादि देकर उन रानियो व अनुचरियो को भी उन्हे सोपते है। इसका आशय न समझकर सायण व हरिस्वामी और अन्य कई आचार्यो ने इस प्रकरण का अर्थ किया कि यजमान रानियो और अनुचरियों को दक्षिणा के रूप मे ऋत्विजों को दे देता है। यह नासमझी है। देखो उदवसानीय इष्टि मे स्थित चार जाया, पाचवी कुमारी और १०४ अनुचरियो को जैसे जिसके साथ नियुक्त किया था उसी अवस्था मे दक्षिणा स्वरूप द्रव्य प्रदान करता है। यह है इसका वास्तविक अर्थ न कि स्त्रियो को ही दान मे दे देता है।

इस प्रकार अश्वमध कृत्य का सक्षिप्त परिचय कराया गया। बहुत सी क्रियाए छूट गई है। मुख्य मुख्य का ही ग्रहण किया गया है। इस अश्वमेध मे सम्पूर्ण राजनीति सार्वभौम शासन व्यवस्था आदि का उत्तम शिक्षण प्रतीको के माध्यम से किया गया है। अश्वमेध का अर्थ है पृथ्वी के सभी अच्छे मार्गो का प्रजा के सहयोग से विनियोग कर विश्व साम्राज्य (कामन वेल्थ) का गठन करना। सार्वभौम साम्राज्य का एक सर्वसम्मत सम्राट अभिषिक्त करना इत्यादि। वाममार्गी काल मे वैदिक यज्ञो का स्वरूप भ्रष्ट कर दिया गया और उसमे हिंसादि का प्रक्षेप कर दिया गया अश्वमेध मे जो घोडा मारना चर्बी व मास की आहुति देना रानी का मृत अश्व के साथ सहवास कराना तथा रानियो और अनुचरियो को ऋत्विको के लिए दान कर देना लिखा है यह सब धूर्तो का प्रक्षेप ही समझना चाहिए। मध्य कालीन कर्मकाण्डी कर्मकाण्ड का आशय ही नही समझत थे इसमे कोई सन्देह नहीं। अ यथा यह विदूषण हो ही नही पाता। इस युग मे मात्र महर्षि दयानन्द ही एक मात्र विद्वान हुए है। जिन्होने वैदिक कर्म का वास्तविक स्वरूप और रहस्य समझ और सबकी उपयोगिता जानने का मार्ग प्रशस्त किया।

पुस्तक समीक्षा

गोविन्दराम हासानन्द लाहौर वैदिक साहित्य प्रकाशन में सदा ही भारत में यह नाम प्रसिद्ध रहा है। भारत विभाजन के पश्चात् दिल्ली के प्रवासी बने वर्तमान में नई सड़क दिल्ली में प्रसिद्ध संस्थान स्थित है। बड़े से बड़ा साहित्य और छोटे से छोटा साहित्य जनता के हाथों में भेंट कर रहे हैं मेरे हाथों में कुछ साहित्य लघु पुस्तक रूप में प्रस्तुत है। रोचक कथानक शिक्षाप्रद है जो देश-विदेश में पढ़ा जाता है—

(१) कथा पच्चीसी

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

पृ० ७८, मूल्य ८) रुपये

आर्यसमाज के क्षेत्र में यह नाम प्रसिद्ध है इनका सम्पूर्ण साहित्य मर्मस्पर्शी है प्रेरक है इस पुस्तक में केवल २० कथायें हैं बालोपयोगी; लोक कथाओं का रोचक वर्णन, मार्मिक उपदेश कथा के अन्त में, सभी आयु के पाठक पढ़े और ज्ञानार्जन करें—

इसी उद्देश्य से यह प्रकाशन आप तक दे रहे हैं।

(२) आर्यसमाज के बीस बलिदानी

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय

पृष्ठ १५६, मूल्य १५ रुपये

यह पुस्तक बीस आर्य नेताओं के जीवन व्यक्तित्व कृतित्व का परिचय है। आर्य समाज के सभी पक्षों में स्वधर्म स्वराष्ट्र स्वसंस्कृति की सेवा है।

प्रस्तुत पुस्तक निर्विवाद है हमें अपनों का ज्ञान हो, इस उद्देश्य से लेखक ने अपनों का परिचय दिया है प्रकाशक द्वारा समर्पित जीवन की सत्य जानकारी प्राप्त होगी।

(३) त्यागमयी देवियां

लेखक—महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

पृष्ठ ८७, मूल्य ८ रुपये

भारतीय साहित्य में नारी जाति का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत करते हुए तीन देवियों का इतिहास दिया है। सत्य और ज्ञान की पावन गंगा प्रवाहित हो। महात्मा आनन्द स्वामी जी की यह कामना थी। इसे पढ़कर कर्त्तव्य बोध होता हैं, अनुकरणीय है। स्वामी जी का कहने का ढंग अनोखा है बालकों में सत्य का कड़वा घूट दिया जाना ही शैली के महारथी हैं त्याग व सेवा की जीवनियों को जो पढ़ेगा।

जिसकी पूर्ति हेतु यह पुस्तक लिखी गई है। इसी प्रकार की यह अगली पुस्तक भी अनुकरणीय है।

(४) आदर्श महिलायें

लेखक—नीरू शर्मा

पृष्ठ ७२, मूल्य ८ रुपये

भारतीय नारी का पक्ष तप, त्याग, पवित्रता, शौर्य और बलिदान की गाथाओं से ओत-प्रोत है। नारी को सदा ही आदर व प्यार की दृष्टि से देखा गया है। इस संकलन में आदर्श ही महिलाओं का वर्णित है जिसे समय व इतिहास सदा अपने सामने रखें कथानकों का वर्णन ही आनन्ददायक है पढ़ें, फिर मिठास से आनन्द लें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शिक्षित मुस्लिम युवती व ईसाई युवक वैदिक धर्म में

कानपुर—आर्य समाज गोविन्दनगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान देवीदास आर्य ने एक ३० वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती कु० शमीम तथा एक शिक्षित ईसाई युवक रिचर्ड को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म की दीक्षा देकर वैदिकधर्म में प्रवेश कराया। इनके नये नाम मीना कुमारी व रघुवीर प्रसाद रखे।

श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि संस्कार के बाद मीना कुमारी का विवाह शिक्षित व सरकारी कर्मचारी श्री योगेश कुमार तथा श्री रघुवीरप्रसाद का विवाह कु० नेहा से वैदिक रीति से कराये। यह सभी लोग स्नातक तक शिक्षित है।

श्री आर्य ने दोनों हिन्दुओं को साहित्य व सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां स्वाध्याय हेतु दीं जिससे उन्हें वैदिक धर्म की विशषतायें ज्ञात हो सके। —बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

श्री कैलाशप्रसाद आर्य का निधन

आर्यसमाज लल्लापुरा के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री कैलाश प्रसाद आर्य का निधन-१६-१२-९४ को हो गया है। उनका सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के लिये समर्पित रहा। आर्य समाज व आर्य वीर दल के कार्यक्रम में वे बराबर सहयोग देते रहे। उनके निधन से आर्य समाज लल्लापुरा में एक कर्मठ सहयोगी का अभाव हो गया है।

आर्य समाज के ५८वें वार्षिकोत्सव स्थल (बिक्रीकर कार्यालय) चेतगंज पर प्रधान श्री मेवालाल आर्य की अध्यक्षता में उत्सव में उपस्थित सभी महानुभावों ने शोक प्रस्ताव पारित किया। तथा दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार के लिये ईश्वर से प्रार्थना किया।

—नन्दलाल आर्य

मन के बिगड़ने से बिगड़ता है आदमी

(पृष्ठ ५ का शेष)

मन चाहे मैं वश में रहूं पर पड़ा रहूं शृंगारों में।
घी चाहे में जमा रहूं पर पड़ा रहूं अंगारों में॥

यह सम्भव नहीं। जैसे अंगारों में पड़ा घी जमा नहीं रह सकता, वैसे ही शृंगारों में पड़ा मन भी वश में नहीं रह सकता। अब यह हमारे ऊपर है कि हम उसे शृंगारों भरा वातावरण देते हैं या सद्भावनाओं का। इसमें केवल प्रार्थना क्या कर सकती है। प्रार्थना तो उस समय हमारी सहायता करती है कि जब हम मन को बार-बार रोकते हैं फिर भी यह विषयों की ओर भागने लगता है। ऐसे समय में प्रार्थना एक प्रबल सहारा बन जाती है। एकमात्र उपाय उस समय यदि कोई होता है तो वह निश्चय ही प्रार्थना ही होता है। अपने पुरुषार्थ और प्रार्थना द्वारा प्रभु की सहायता पा मानव अपने चंचल मन को वश में कर सकता है। पर तभी जब वह ऐसा करना चाहे। प्रभु करे हमारे भीतर अपने मन को वश में करने की सच्ची लगन एवं अपार क्षमता हो।

कहानी एवं निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम

आर्य समाज नोएडा द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी एवं निबन्ध प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची निम्न प्रकार है। पारितोषिक वितरण समारोह ८ जनवरी १९९५ (रविवार) प्रातः ९ से १२ बजे आयोजित किया जा रहा है। समस्त विजेताओं से विनम्र अनुरोध है कि स्वयं पधार कर पारितोषिक ग्रहण करें और अपने पहुंचने की सूचना भी दें।

(क) अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता:—

१. श्री नन्दकिशोर अवस्थी, गृह संख्या ४०३, नगर क्षेत्र हरदोई २४१००१

२. श्री मोहन उपाध्याय, ३९५/१० विजय कुंज सुन्दर निवास, अजमेर, ३०५००१

३. डा० राकेश आर्य, आर्य गुरुकुल, ऐरवा कटरा (इटावा) २०६२५२

(ख) अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता:—

१. श्री देशबन्धु, विद्या वाचस्पति, डाक० वेदव्यास राऊरकेला ७६९०४१

२. श्री देवेन्द्रकुमार, आर्य समाज रावत भाटा, वाया कोटा (राज०)-३२३३०५

३. श्री रामस्वरूप बेली, नेवी सर्विस स्टेशन, बस स्टैण्ड शाहपुरा (राज०)-३११४०४

निवेदक :
डा० अशोक बन्सल आर्य, प्रधान
आर्य समाज नोएडा
बी-६९ सै० ३३ नोएडा-२०१३०१
दूरभाष : ८९५३४६७

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

१८ दिसम्बर रविवार। वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी क्षेत्र दिल्ली के तत्वा-प्रधान मे आर्य समाज टैगोर गार्डन मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप मे दिल्ली के वित्तमन्त्री प्रो० जगदीश मुखी ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हे शुद्धि आन्दोलन का प्रवर्तक बताया। सभा को वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी क्षेत्र के प्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री, डा० महेश विद्यालंकार, स्वामी जीवनानन्द सरस्वती, आचार्य हरिदत्त शास्त्री एवं स्थानीय विधायक श्री ओमप्रकाश बब्बर ने भी सम्बोधित किया।

विराट जनसभा से पूर्व वैदिक साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री राजपाल शास्त्री ने ध्वजारोहण कर ओ३म् की महत्ता पर सारगर्भित अपने विचार व्यक्त किए।

शान्तिप्रकाश जयन्ती

पचपुरी (गढ़वाल)। प्रसिद्ध समाज सुधारक, देशभक्त, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री शान्तिप्रकाश प्रेम प्रभाकर का ८१ वां जन्मदिवस उन्हीं के स्मृति-भवन स्यू सी मे १५ दिस० ९४ को वैदिक विधि के अनुसार आ. स. पचपुरी गढ़वाल द्वारा सम्पन्न किया गया। प्रेम जी का निधन २८ जून ९२ को हुआ था।

बुद्धिसिंह का निधन

पचपुरी (गढवाल)। प्रसिद्ध समाज सुधारक, आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल के कर्मठ कार्यकर्ता तथा गढ़वाल आर्य उपप्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष श्री बुद्धिसिंह आर्य, ग्राम महादेवसैंण, खाटली, गढ़वाल का ७८ वर्ष की आयु मे अपने ही निवास पर १२ दिसम्बर ९४ को साय निधन हो गया। उनके पुत्र डा० श्री जयदेवसिंह नेगी ने उनके निधन का समाचार आ०स० पचपुरी के कार्यकर्ताओ को भेजा। समाचार पाते ही आ. स पंचपुरी के तत्वावधान मे उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक विधि अनुसार की गई। अन्त्येष्टि घाट पर श्री उमेश चन्द्र सिंह बिष्ट ग्राम-महादेव सैंण खाटली की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन भी किया गया जिसका संचालन आ० स० पंचपुरी के मन्त्री जी ने किया। सभी उपस्थित जनों ने जनता की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—वासुदेव 'विमल'
मन्त्री आ. स. पंचपुरी गढ़वाल

आर्य जगत् के समाचार

४१ परिवारों के १५५ ईसाई वैदिक धर्म में

गत ११ दिसम्बर को सोहेला थाने के खैरपाली कानईबीरा आदि ग्रामो के ४१ परिवारो ने आग्रह पूर्वक वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। ग्राम वासियो के विशेष आग्रह पर तत्काल यह शुद्धि का आयोजन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ एव संस्कार श्री स्वामी सधानन्द जी एव श्री र कमणी देवता ने करवाया। स्वामी परमानन्द जी एवं वानप्रस्थी ओममुनि जी ने आर्शीवाद देकर दीक्षित व्यक्तियो का स्वागत किया।

विशिकेसन शास्त्री, मन्त्री

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज ग्रेटर कैलाश II, श्री डा० ओमप्रकाश प्रधान, श्री रघुनन्दन गुप्त मन्त्री, श्री तेजकुमार टण्डन कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज फजलपुर (सुन्दर नगर) मेरठ, श्री सोहनलाल जी प्रधान, श्री अशोक कुमार मन्त्री, श्री भगवानसिंह कोषा०।

—आर्य समाज चेम्बूर, श्री गुलजारी लाल आर्य प्रधान, श्री चन्द्रभूषण गिरोत्रा मन्त्री, श्री जयगोपाल-विरमानी कोषा।

—आर्य समाज आसन सोल, श्री भृगुनाथ प्रसाद प्रधान, श्रीराम सागर सिंह मन्त्री, श्री सत्यपाल मेहता कोषाध्यक्ष।

—उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, महा० रामविलास खुराना प्रधान, श्री ओमप्रकाश सपरा महामन्त्री, श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज गोनपुरा, श्री रामदास सिंह प्रधान, श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह मन्त्री, श्री धनन्जय कुमार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सनवाड, श्री ख्यालीराम आर्य प्रधान, डा० मोहन प्रकाश सिंह आर्य मन्त्री, श्री शम्भूपुरी गोस्वामी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज आगरा, श्री राधेश्याम सारस्वत प्रधान, श्री गोपालप्रसाद अग्रवाल मन्त्री, श्री ब्रजराज सिंह परमार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मसरफ बाजार, सर्वश्री रमेश गोयल अध्यक्ष, लक्ष्मण आर्य मन्त्री, शत्रुघ्न पाजियार कोषाध्यक्ष।

चित्त की प्रवृतियां ही सब दोषों का मूल है

आर्य समाज मन्दिर, डा० मुखर्जी नगर, दिल्ली के तत्वावधान मे आयोजित यज्ञ प्रवचन समारोह मे प हीराप्रसाद शास्त्री जो वैदिक विद्वान ने कहा कि चित्त की वृतियों का निरोध करना योग कहाता है। आज वातावरण अत्यन्त दूषित है। वस्तुत चित्र की वृत्तियों को वेलगाम छोडने के कारण ही समाज में दोषो की वृद्धि हुई हैं। यदि शिक्षा मे पर्याप्त नैतिक मूल्यो पर बल दिया जाए और टी वी आदि माध्यमो से वातावरण को सुसस्कृत किया जाए तो आशा की किरण दीखती है। अन्यथा नही।'

—ओम प्रकाश

वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस का वार्षिकोत्सव सात से दस अक्तूबर ६४ तक सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण तथा आचार्य महेन्द्र प्रताप शास्त्री द्वारा का उदघाटन प्रो. शेरसिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में संस्कृत अधिवेशन, गुरुकुल सम्मेलन, आर्य भाषा अधिवेशन, राष्ट्रहित सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन, सगीत सम्मेलन कवि सम्मेलन कवि सम्मेलन तथा ब्रह्मचारिणियों द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों ने पधार कर जनता का ज्ञानावर्धन किया।

पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् को १२११११ रुपये की राशि भेंट

(पृष्ठ १ का शेष)

जिन्होंने अपने सहयोगियों-मित्रो से धन एकत्रित किया था तथा सभा के कोष को सुरक्षित रखा।

सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान वन्देमातरम व श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट ने इस समय स्व० श्री वीरेन्द्र जी के अभाव को दुःख के साथ स्मरण किया। नवीन सभा भवन के निर्माण उसकी स्थिति से सभी ने प्रसन्नता प्रकट की। अभी भवन निर्माण का कार्य चल ही रहा है।

सभी आगन्तुक महानुभावों तथा दिल्ली से पधारे मान्य नेताओं का धन्यवाद कर शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित की गई।

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम का वसन्त मेला

गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार भावर मे वसन्त पञ्चमी मेला ४ से ५ जनवरी ६५ तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानो भजनोपदेशको की उपस्थिति मे राष्ट्र मेधयज्ञ, विद्वान सन्त-महात्माओ के प्रवचन गुरुकुल ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन, विभिन्न सम्मेलन तथा भीम आयुर्वेदिक फार्मेसी का उदघाटन आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्मलाभ उठावें।

वार्षिकोत्सव एवं सामवेद महायज्ञ

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २६ दिसम्बर से १ जनवरी ६५ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य उषर्बुध जी के ब्रह्मत्व मे सामवेद महायज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह मे वेद प्रवचन तथा भजनोपदेश के अतिरिक्त महिला सम्मेलन, वेद संगोष्ठी सहित अनेक अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। १ जनवरी ६५ को मुख्य कार्यक्रम मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव श्री बी. एल शर्मा प्रेम, अजय माकन, श्री सूर्यदेव जी, डा० शिवकुमार शास्त्री तथा आर्य जगत के अनेको प्रसिद्ध विद्वानो द्वारा श्रोताओ को धर्मलाभ प्रदान किया गया।

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का १६ वां वार्षिकोत्सव

वेद प्रचार मण्डल दिल्ली देहात का १६ वा वार्षिकोत्सव ८ से १५ जनवरी ६५ तक पालम गाव नरेला नागलोई, नजफगढ, महिपालपुर आदि क्षत्रों मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ, कीर्तन भजन प्रवचन, सास्कृतिक कार्यक्रम विभिन्न सम्मेलन तथा भण्डारा आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नैनी प्रयाग राज का आगामी वार्षिकोत्सव २७ से २९ जनवरी ६५ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर प्रात.काल विशेष यज्ञ एव सायकाल को भजन तथा उपदेश होगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाये।

आर्यवीर दल हांसी का निर्वाचन

दिनाक २७-११-६४ को सायं ४ बजे आर्य समाज मन्दिर जी. टी. रोड वकील कालोनी हासी के वार्षिकोत्सव के पश्चात आर्य वीरो की एक बैठक ब्र० ऋषिपालार्य (प्रधान शिक्षक सा० आर्य वीर दल हरयाणा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक मे निम्न पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान श्री रामसुफल शास्त्री, मन्त्री श्री योगेन्द्र वीर भारती, उपमन्त्री-श्री अजय, उपशाखा नायक श्री कपिल शर्मा।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-१-९५) बिना टिकट भेजने का आदेश नं० U (C) ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O. on 5 6-1-1995

नवनिर्मित यज्ञमन्दिर का उद्घाटन तथा वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज पटनागढ़ जिला बलांगिर (उत्कल) का नवनिर्मित यज्ञ मंदिर का शुभ उद्घाटन तथा १२वां वार्षिक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ १५ दिसम्बर गुरुवार से १० दिसम्बर शनिवार १९९४ तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के हाथ में हुआ और यज्ञ मन्दिर का उद्घाटन उत्कल के प्रसिद्ध कर्मयोगी संन्यासी पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के करकमलों से १५ दिसम्बर ९४ को हुआ। इस अवसर पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती और आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर जनता का ज्ञान वर्धन किया। सभी साधु-संन्यासियों को सम्मानित किया गया। —केशव मेहेर

वेद प्रचार

आर्य समाज पिम्परी (पुना) महाराष्ट्र का सक्रिय आर्यसमाज है जहा सालभर विभिन्न विद्वानों द्वारा वेद प्रचार किया जाता है, इसी शृंखला में दिनांक ६ दिसम्बर १९९४ से ११ दिसम्बर १९९४ तक वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री धर्मपाल जी शास्त्री (मेरठ उत्तर प्रदेश) द्वारा आर्य समाज में विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। पिम्परी नगर की जनता पर प्रवचन का अच्छा असर हुआ। अन्तिम दिन आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णचन्द जी आर्य ने पं० धर्मपाल जी शास्त्री का सत्कार किया। —प्रा० एकनाथ आर्य

पत्नी शोक

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता रामकृष्ण गौतम की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता गौतम अध्यापिका का देहावसान ६-१२-९४ को हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। दिनांक १७-१२-९४ को शान्ति यज्ञ श्री धर्मवीर शास्त्री एवं श्री वेदमित्र जी शास्त्री की देख-रेख में सम्पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ तथा दिवंगत आत्मा की सद्‌गति एवं आत्मिक शान्ति हेतु सामूहिक प्रार्थना की गई।

इस अवसर पर श्री गौतम जी ने आर्य समाज अम्बा को रुपये ११०००) तथा स्कूलों के लिये ५१००) का सात्विक दान भी किया। —वेदमित्र शास्त्री

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक पत्र साप्ताहिक अपने गरीबी के दिन गिनता हुआ आप आर्यजनो को सेवा में वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप मे है। विद्वानों के लेखो, कविताओं, प्रवचनो व सूचनाओं के साथ पहुच रहा है।

सफलता कहू या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक संख्या निर्धन है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमें नहीं देना हतेचाने गांम। पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमें कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु जाता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामत: सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलने से। अब भी वही दशा है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढ़ें और हमारे लिये नहीं अपनी शक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाएं।

तो फिर सकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमें दे दें। किसी भी संस्था को शक्तिशाली बनानेमें पत्रिका व साहित्य उसके जीवनको गति ही नहीं प्रगति भी प्रदान करते हैं?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही ग्राहक राशि का धन तथा अन्य सहयोग देकर सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक सन्देश घर-घर पहुंचायें। —डा सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

नेपाल में आर्य समाज जिला समिति का चुनाव

आर्य समाज गौतमपुर सुनसरी की ओर से पूर्णमासी सत्संग के अवसर पर आर्य समाज चिमड़ी के उपाध्यक्ष श्री शिवलाल मेहता की अध्यक्षता में जिला भर में व्यापक प्रचार-प्रसार के कार्य को देखते हुये एक जिला स्तरीय कार्य समिति के चुनाव में वैधानिक रूप से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

अध्यक्ष श्री जगदेव प्रसाद आर्य, सचिव श्री शिवलाल मेहता, कोषाध्यक्ष श्री मुंगालाल मेहता, सदस्य सर्वश्री १. लाली मेहता, २. रामप्रसाद मेहता, ३. हरिलाल मेहता, ४. हरिशंकर मेहता, ५. जड़ीलाल मेहता, ६. सुढ़िलाल मेहता, ७. जगत प्र० साह ८. सत्यनारायण मण्डल, ९. डा० जितन महतो १०. सदानन्द मेहता ११. राजकमल मेहता।

आर्यवीर दल सिंगोवाल

गाव सिंगोवाल में दिनांक १४ से २३ अक्तूबर ९४ तक आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। शिविर के समापन पर गांव में एक शोभायात्रा निकाली जिसमे आर्य वीरों ने व्यायाम प्रदर्शन किया तथा बैण्डबाजा भी बजाया और यज्ञ की झांकी भी निकाली गई जिसके ब्रह्मा ब्र० ब्रह्मपुत्र जी थे। शिविर के समापन पर बाहर के आर्य पुरुष एकत्र हुए। शिविर के समापन के बाद रात्रि में एक बैठक ब्र० ब्रह्मपुत्र जी की अध्यक्षता में हुई और आर्यवीर दल के कार्य को चालू रखने के लिए निम्न अधिकारी चुने गए—

प्रधान—राजेन्द्र कुमार आर्य, मन्त्री-बलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष—धनराज, शाखानायक—विरेन्द्र आर्य
उपशाखानायक—राजेश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—दलबीर आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष २७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४७]   दयानन्दाब्द ७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   पौष शु० १४   सं० २०५१ १५ जनवरी १९९५

भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा

ऋग्वेद मे तमिल शब्दो का इतिहास खोजने की निन्दा

संस्कृत सारे विश्व में बोली जाने वाली एक मात्र भाषा थी

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा कड़ा पत्र

नई दिल्ली। आठव विश्व तमिल सम्मेलन के उदघाटन के अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति ने अपने उदवोधन म जहा एक ओर यह कहा कि सस्कृत भाषा का तमिल भाषा पर प्रभाव तो सब जानते हैं परन्तु तमिल भाषा क सस्कृत पर प्रभाव अभी स्थापित नही हो पाया वही उपराष्टपति जी का यह भी कहना है कि ऋगवेद मे तमिल शब्द भी पाए गए हैं।

भारत के उपराष्ट्रपति श्री के आर नारायणन द्वारा इस प्रकार के सम्बोधन पर कडी आपत्ति प्रकट करते हुए सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने उनसे यह बयान वापिस लने का सुझाव दिया है। श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने उपराष्ट्रपति को भेज अपने पत्र म कहा है कि उक्त वक्तव्य वैदिक सिद्धान्तो के पूर्णत विरुद्ध हैं।

श्री वन्देमातरम् न एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यात प्राप्त भाषाइ विद्वान वप का एक अग्र जी पुस्तक का हवाला दिया है जिसमे यह कहा गया है कि किसी समय म सस्कृत सारे विश्व म बोली जाने वाली एकमात्र भाषा था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा एक विख्यात तामिल विद्वान श्री अनन्त सयनम अयगर ने भी इस बात को माना था सस्कृत समस्त भारतीय भाषाओ की जननी है।

श्री वन्देमातरम ने ऋग्वेद मण्डल १० के ७१व सूक्त के प्रथम मन्त्र का उदाहरण देते हुए उपराष्ट्रपति को स्पष्ट किया है कि सृष्टि रचना के आरम्भिककाल मे ऋषियो ने अपने आस पास की अज्ञात वस्तुओ की जानकारी के लिए परमात्मा की कृपा से वाणी' प्राप्त की। वह वाणी प्रथम भाषा सस्कृत ही थी तथा उसमे से कई भाषाए उत्पन्न हुई।

ऋग्वेद के इस मन्त्र—

बृहस्पते प्रथम वाचो अग्र यत्प्रैरत नामधेय दधाना'।
यदेषां श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषा निहित गुहाविः ॥

का स्पष्टिकरण देने के बाद अपने पत्र म श्री वन्देमातरम् ने उपराष्ट्रपति जी से पूछा है कि आपने यह कैसे मान लिया कि ऋग्वेद म तमिल शब्द पाए गए है। आप जसे विशिष्ट व्यक्ति से इस प्रकार सत्य मार्ग से हटकर ब्यान देने की उम्मीद नही की जा सकती थी।

श्री वन्देमातरम जी ने पत्र म यह भी लिखा है कि तमिल भी भारतीय सविधान की आठवी अनुसूची मे दर्ज अन्य भाषाओ की तरह एक भाषा है। इसका अति उत्तम साहित्य है। इस कारण और इसी रूप म आय समाज तमिल भाषा का भी सम्मान करता है।

इस अंक के आकर्षण

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्रद्धा सुमन

हरबंस लाल शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब)

गत वर्ष जाते जाते एक कहर बरपा गया जब आर्य जगत के हृदय-सम्राट निर्भीक पत्रकार, सम्पादक, मूर्धन्य लेखक एवं सर्वमान्य आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी हमसे सदा के लिए बिछुड गए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री वीरेन्द्र जी ने कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजाब) के प्रधान पद को सुशोभित किया और आर्य समाज की अतुलनीय सेवा की। समाज एवं राष्ट्र के समक्ष उपस्थित सभी समस्याओ पर उनकी बड़ी ही व्यापक तथा सूक्ष्म दृष्टि रहती थी। उनका दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक हुआ करता था। उनके विचारो की स्पष्टता एवं प्रखरता उनकी तेजस्वी वाणी तथा लेखनी से धारा प्रवाह प्रकट हुआ करती थी। सम्पूर्ण उत्तर भारत में श्री वीरेन्द्र जी उर्दू तथा हिन्दी पत्रकारिता के ज्योति स्तम्भ थे। उनके जाने से इस क्षेत्र में जो रिक्तता पैदा हुई है आज उसे बड़ी गहराई से अनुभव किया जा रहा है। दिवगत श्री वीरेन्द्र जी हम सबके लिये प्रेरणा एव सान्त्वना के प्रतीक थे।

स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र जी एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। स्वतन्त्रता आदोलन के दौरान वे कई बार जेल गए। विदेशी सरकार द्वारा दी गई असंख्य यातनाओं को उन्होंने बडी वीरता के साथ झेला। स्वतन्त्र भारत मे श्री वीरेन्द्र जी ने अपने दशको लम्बे राष्ट्रीय, सामाजिक एव धार्मिक जीवन मे साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता तथा राष्ट्र विरोधी शक्तियो का डट कर मुकाबला किया। वे एक महान राष्ट्रवादी तथा भारत माता के सच्चे सपूत थे। देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए उन्होंने हर सभव प्रयत्न किया। आतंकवाद के भयानक दौर मे उन्होने बडी निर्भीकता के साथ अपनी लेखनी द्वारा आतकवाद को कडी चुनौती दी और पजाब की जनता विशेष रूप से हिन्दू समुदाय को अपने सक्षम नेतृत्व से नैतिक साहस और बल प्रदान किया। राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा देववाणी संस्कृत के वे प्रबल पोषक एवं संरक्षक थे। मृदुभाषी, नमनीय किन्तु अपने सिद्धातो एवं आदर्शों के प्रति दृढ़ रहने वाले श्री वीरेन्द्र जी ने कटिन से कठिन परिस्थितियो मे भी कभी समझौतावाद का आश्रय नहीं लिया। उनकी अदभुत सकल्प शक्ति ही उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी।

श्रद्धेय श्री वीरेन्द्र जी आज हमारे बीच मे नही हैं लेकिन उनकी महान शिक्षाएं एवं उच्च जीवन आदर्श आज भी यथावत हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनकी पावन स्मृति हमारे हृदयो मे सदैव अक्षुण्य बनी रहेगी। आज मैं भारी हृदयसे उस महान पवित्रात्मा को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हू और ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि हमे बलबुद्धि एव सामर्थ्य प्रदान करे ताकि हम उनके छोडे गए कार्यों को पूरा कर सकें। समाज के उज्जवल भविष्य एवं नवनिर्माण के लिए हम निरन्तर आगे बढते रहे। हम आपसी मतभेदो को गौण मानते हुए एकजुट होकर कार्य करें और शिथिल पडे हुए प्रचार कार्य को पूरी तन्मयता के साथ आगे बढायें यही उस दिव्यात्मा को सच्ची श्रद्धाजलि हो सकती है।

धर्म के ध्वजवाहक श्री गुरु गोविन्द सिंह जी

—तिलक राज सूरी

गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज का जन्म दिसम्बर १६६६ मे पटना मे हुआ अपने जन्म के सम्बन्ध मे स्वयं गुरु गोविन्द सिंह जी 'विचित्र नाटक' मे लिखते है कि हेमकुंट पर्वत, जहा पर हमने पूर्व जन्म मे घोर तपस्या की थी

"तात–मात गुर अलख अराधा
बहु बिधि जोग साधना साधा
तिन को करी अलख की सेवा
ताते भए प्रसन्न गुरु देवा।"

तब प्रभु ने मुझे हुक्म दिया और समझाया। कलयुग में मैंने जन्म लिया। गुरु महाराज जहां एक सन्त थे, वहां एक योद्धा, साहित्यकार और दूरदर्शी भी थे। उन्होंने सिख पंथ की बुनियाद ही नहीं डाली बल्कि स्नेह का सृजन भी किया। उनका उद्देश्य एक ऐसा साहित्य तैयार करना था जिसे पढ़कर और सुनकर लोगों के दिलों मे एकता का भाव बना रहे। उन्होने पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमद भागवत गीता और कई वीरों की कहानियों की रचना की। उन्होंने अपने ५२ शायरो से जो उनके साथ थे, कई किताबें लिखवाई। 'दशम ग्रन्थ', 'अकाल स्तुति', 'विचित्र नाटक', 'चण्डी की वार', 'वार श्रीभगवती जी की', २४ अवतार, ब्रह्म अवतार, रुद्र अवतार, हजारे के शब्द और जफरनामा उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। अपने सम्बन्ध में वह लिखते हैं कि वह भगवान श्री रामचन्द्र जी के वंश के थे। श्री राम के पुत्र लव और कुश जिन्होंने लाहौर और कसूर की नींव रखी थी, के कुल में दो महान राजा हुए। कुश के कालकेतू और लव के काल राय। कालकेतू ने कालराय पर हमला करके उसे भगा दिया। काल राय ने सनोढ़ (राजस्थान) देश में शरण ली और बाद में वहां की राजकुमारी से शादी कर ली। उसके घर सोढ़ी राय नामक एक बालक ने जन्म लिया। इसी कुल में गुरु गोविन्द सिंह ने जन्म लिया। सोढ़ी कुल के लोगों ने कालकेतू के खानदान पर कब्जा किया और बाद में काशी चले गए और वहां उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन किया और वेदी कहलाये और इसी वेदी कुल में गुरु नानकदेव जी ने जन्म लिया।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने राम अवतार ८६४ श्लोकों में पूरा कर दिया जिसमें श्रवण कुमार की कथा से लेकर लव कुश का युद्ध और अयोध्या में उनके प्रवेश तक लिखा है। यह 'राम अवतार' ब्रज भाषा मे है। रामायण में गुरु महाराज ने मा सीता के हरण के बाद राम के विरह का जिक्र किया है।

'राम अवतार' गुरु गोविन्द सिंह जी की एक महत्वपूर्ण रचना है। उसमें उन्होंने लिखा है—

"राम कथा जुग-जुग अटल सब कोई भाखत नीति
जो इह कथा सुने अरु गावे,
दुख पाप तिह निकट न आवे
विसन भगति किए फल होई
आधि-व्याधि छवें सके न कोई।"

श्रीमदभगवत गीता का उन्होंने पंजाबी भाषा में अनुवाद किया।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने माछीवाड़ा के स्थान पर तत्कालीन बर्बर शासक औरंगजेब को एक जफरनामा १७०६ में लिखा। जफरनामे के तीसरे श्लोक में उन्होंने कहा, "जिस खुदा ने तुझे हुकूमत दी, राजा बनाया उसने हमें ये बल दिया कि हम धर्म की रक्षा करें और सत्य और धर्म का ध्वज ऊंचा रखें। ऐ औरंगजेब! तुझे ये नाम शोभा नहीं देता। तू इस योग्य नहीं है कि तेरा नाम औरंगजेब रखा जाता क्योंकि तख्तेशाही को यह शोभा नहीं देता कि वह किसी से धोखा करे। तेरी तसबीह (माला) क्या है। औरंगजेब धागे और मनको से ज्यादा हैसियत नहीं रखता। तू इससे अपनी जाल के दाने तैयार करता है और शिकार फांसता है। दुनियां को दिखाने के लिये तू माला हाथ मे लेकर फिरता है। ईश्वर की भक्ति से तेरा कोई वास्ता नहीं है। औरंगजेब तूने अपने बाप को कैद किया, भाइयो को कत्ल करके अपने लिये हुकूमत का कच्चा मकान तैयार किया, मगर इसकी बुनियादें जल्दी गिर जाएंगी।

फिरदौसी, जो कि ईरान का सूफी शायर था, ने कहा कि "शैतान का आत्मा बहुत जल्द हो जाता है। मगर मैं तेरे पास आऊं तो तू तब अपनी आंखो से देख लेना कि ईश्वर हर चीज का मालिक है, उसकी कृपा से मेरी भुजाओ मे ताकत आई हैं और उसने मुझे तलवार दी है। मैंने हिमालय के दामन में फोज तैयार कर ली है और मेरे सिपाही फरिश्तों का सा गुण रखते

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आज का ज्वलन्त प्रश्न—

आर्यसमाज और प्रचलित राजनीति

प्रो० भवानी लाल भारतीय

देश के स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद से ही आर्यसमाज के क्षेत्रो मे, उसके सभा सम्मेलनो, गोष्ठियों तथा चर्चाओ में यह चर्चा उठती रही है कि आर्य समाज को भारत की प्रचलित राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए। १९५१ मे जब मेरठ नगर में स्व० पं० विनायकराव विद्यालकार की अध्यक्षता मे आर्य महा सम्मेलन हुआ तो उसमे प्रथम बार यह विषय उठा। उसके पश्चात तो कलकत्ता, हैदराबाद, दिल्ली तथा अलवर आदि नगरो मे जब जब आर्य महा-सम्मेलन आयोजित हुए इस विषय के पक्ष और विपक्ष मे बहुत ऊहा पोह हुआ किन्तु कोई सर्वसम्मत निष्कर्ष नही निकला और इस ओर कोई प्रगति नही हुई।

आर्य समाज की विचारधारा से ही अनुप्राणित स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश तथा उनके कतिपय साथियो ने भी समय समय पर आर्य समाज के राजनीति मे भाग लेने की जोर शोर से वकालत की। अपने सम्मेलनो मे जोर शोर से प्रस्ताव पास किए। एक बार तो शायद बीस वर्ष पहले उन्होने आर्य सभा के नाम से एक राजनैतिक दल का गठन भी कर लिया और हरयाणा के चुनावो मे इस दल के दो तीन सदस्य विधान सभा मे चुनकर भी आ गए, किन्तु १९७७ मे बनी जनता पार्टी मे उन्होने आर्य सभा का स्वैच्छिक विलय कर दिया। तत्पश्चात जनतापार्टी भी अनक वार टूटी, उसके सगठन का शीराजा बिखरा और आज वह खण्ड खण्ड हो चुकी है। उसकी दुर्दशा पर आसू बहाने वाला कोई नही है।

अब हम अपने प्रकृत विषय पर आते हैं। राजनीति म रुचि रखने वाले आर्यों को प्रथम तो यह बात समझ लेनी चाहिए कि यदि व स्वामी दयानन्द द्वारास्थापित आर्यसमाजके मन्तव्योऔर सिद्धातामे आस्था रखतहैंतो आर्यसमाज आर्यसमाज के रूप मे किसी देश विशष की प्रचलित दैनदिन राजनीति मे एक दल के रूप मे कभी भी भाग नही ले सकती। इस बात को गम्भराइ से समझने का यत्न करे। आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य उसके दस नियमा मे स्पष्ट बताया गया है। यहा आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य ससार का उपकार करना उल्लिखित है। इस उपकार या उन्नति म शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति आ जाती है। सामाजिक उन्नति म राजनैतिक उन्नति भी निहित है, तथापि मै एक बार पुन लिख दू कि आर्य समाज अपन इसी वर्तमान सगठनात्मक ढाचे मे रहत हुए किसी खास देश की राजनीति नही कर सकता। कारण स्पष्ट है आर्य समाज आन्दोलन एक सार्वभौम आन्दोलन है। उसे किसी देश वर्ग जाति या सम्प्रदाय के हित के लिए प्रवर्तित नहीं किया गया। वह मनुष्य मात्र की भलाई के लिए चलाया गया। स्वामी दयानन्द का यही अभीष्ट था कि यदि आर्य समाज [illegible] आर्यावर्त म सवत्र स्थापित हो तो विदेशो म भी आर्य समाज स्थापित हो। जब अमरिका म स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी के स[illegible] (कर्नल अल्काट और मैडम ब्लैवटस्की) ने स्वामी दयानन्द प्रतिपादित [illegible] धर्म [illegible] म आस्था प्रकट की तथा अपनी सोसाइटी को आर्य समाज [illegible] के रूप म चलान का निश्चय किया तो ऋषि की प्रसन्नता का पारावार [illegible] रहा। उन्होन इस घटना को इतिहास का एक स्मरणीय सत्य माना और आशा प्रकट की कि निकट भविष्य मे आर्य समाज के मन्तव्या का सवत्र भूगाल म विस्तार हो जाएगा। हमारी शोध के अनुसार इग्लैण्ड की राजधानी लन्दन म सवप्रथम, ऋषि के निधन के तीन वर्ष पश्चात १८८६ म आर्यसमाज की स्थापना हो गई थी। रोहतक जिले के सापला ग्राम के तहसीलदार श्री [illegible] के पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण इस आर्य समाज के प्रथम मन्त्री थे जो उस समय लदन मे रहकर बैरिस्टरी का अध्ययन कर रहे थे। उन दिनो लन्दन आर्यसमाज मे नियमित सत्सग लगते थे।

इस प्रकार यह एक स्वीकृत तथ्य है कि आर्य समाज की स्थापना किसी देश विशेष के लिए नही हुई। यही कारण है कि आज आर्यसमाज अनेक यूरोपीय, अमरीकी तथा अफ्रीका देशो मे तो कार्यरत है ही, मारीशस तथा फिजी आदि सुदूर वर्ती टापुओ मे भी वह वहा के निवासियो को आर्य संस्कृति का सदेश दे रहा है सत्य यदि कभी कभी कूटस्थ नित्य तथा सार्वभौम होता है तो वह यदा कदा सापेक्षिक भी होता है।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि स्वामी दयानन्द ने ससार के हित के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी किन्तु व इस तथ्य स अनभिज्ञ नही थे कि आर्यावर्त का हित साधन भी आर्य समाज के द्वारा ही होगा। उसी तथ्य को लक्ष्य म रखकर श्री महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के ११व समुल्लास के अन्त मे लिखा इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है है वैसा दूसरा नही हो सकता। किन्तु व स्वदेश के साथ अन्य देशो की उन्नति को अच्छा समझते हैं, इसलिए लिखते है जब लो वर्तमान और भविष्यत मे उन्नतिशील नही होते तब लो आर्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यो की वृद्धि नही होती। ध्यान रहे कि दयानन्द जितने स्वदेश की उन्नति के लिए समर्पित थे उतन ही अन्य देशस्थ मनुष्यो की वृद्धि करना भी अपना कर्तव्य मानते थे।

उपर्युक्त तथ्य के परिप्रेक्ष्य म क्या कोई यह कहने का साहस कर सकता है कि आर्य समाज आर्य समाज के रूप मे किसी देश विशष की राजनीति मे प्रविष्ट हो सकती है। यदि भूमण्डल के आर्य स का सर्वोच्च सगठन(सार्वदेशिक सभा) भारत की राजनीति मे कूद कर इस देश की लोकसभा तथा यहा के राज्यो की विधान सभाओ के चुनाव लडने लगे तो कल ही लदन मौरिशस, नैरोबी आदि की आर्यसमाओ के प्रतिनिधि कहेगे कि क्या हमभी अपन देशों की राजनीति म अपन आर्य समाजो को लिप्त कर दे। प्रत्येक देश के हित पृथक-पृथक होते है इसलिए उन देशो के नागरिको का राजनैतिक आचरण भी भिन्न प्रकार का होता है या हो सकता है। किन्तु एक आर्य समाजी का आर्य रूप मे आचरण तो सवत्र एक सा ही होगा। निश्चय हुआ कि आर्य समाज आर्यसमाज रहते किसी देश विशेष की राजनीति म प्रत्यक्ष दखल नही कर सकता।

तो क्या इसका अर्थ यह लिया जाए कि आर्य समाजी का अपने देश राष्ट्र या जाति के प्रति कोई कर्तव्य नही है। क्या उसे मात्र धार्मिक पूजा पाठ-सध्या हवन सत्सग तक ही स्वय को सीमित कर लेना चाहिए। यदि आर्य समाजी का यही प्रथम और अन्तिम इति कर्तव्य है तब स्वा श्रद्धानन्द भाई परमानन्द लाला लाजपतराय भगतसिह,बिस्मिल श्यामजी कृष्णवर्मा आदि देशभक्तो ने आर्यसमाजी रहते हुए देशहित का चिन्तन क्या किया क्या भारत को स्वाधीन करने के लिए उन्होन अपना सर्वस्व बलिदान किया। यहा तक कि आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने भी स्वमातृभूमि की पराधीनता के पाशो को काटने के लिए प्रभु स प्रार्थना की तथा स्वय भी [illegible] विचारो एव कार्यो के द्वारा सवत्र राष्ट्रभक्ति तथा स्वदेशी भावना का प्रचार किया? क्या यह आर्यसमाज को राजनीति म उतारना [illegible]

हमारा उत्तर है कि [illegible] आर्य दो सकता न आर्य समाज को राजनीति म नही उतारा। स्वामी दयानन्द सर्वोत्कृष्ट देश भक्त तथा [illegible] राष्ट्रभावना सम्पन्न महापुरुष थ। उन्होन व्यक्तिगत राष्ट्रोत्थान के अनेक कार्य किए अपन शिष्यो और भक्तो को भी राष्ट्र के लिए समर्पित होने का उपदेश दिया किन्तु उन्होने आर्यसमाज को अपने वर्तमान रूप म भारत देश की राजनीति म उतरने के लिए कभी नही कहा। यही स्थिति श्रद्धानन्द आदि अन्य महापुरुषो की थी व राजनीति मे गए किन्तु वहा भी उनके मार्ग भिन्न २ रहे। श्रद्धानन्द और लाजपत राय आदि ने कांग्रेस की राजनीति की किन्तु अन्य कांग्रेसियो की भाति हिन्दू हितो की अनदेखी कभी नही की। भाई परमानन्द, चादकरण शारदा, प्रो० रामसिह आदि आर्यसमाजी हिन्दू महासभा से जुडे रहे। भगतसिह और बिस्मिल ने क्रान्तिकारियो का मार्ग अपनाया, जो तात्विक दृष्टि से महात्मा गाधी द्वारा प्रवर्तित और कांग्रेस द्वारा अनुमोदित अहिंसा मार्ग से भिन्न था। तथापि ये सभी आर्य समाजी थे और ऋषि दयानन्द के सिद्धातो मे इन सबकी अटूट आस्था थी।

(क्रमश)

श्री वीरेन्द्र जी की प्रथम पुण्य तिथि पर विशेष—

एक वर्ष बीत गया !

उत्तम चन्द शरर

भाई वीरेन्द्र जी को हमसे जुदा हुए पूरा एक वर्ष बीत गया। दिन-रात अपनी गति से चलते रहे, ऋतुएं भी समय पर आती और जाती रहीं, परन्तु हृदय का अभाव न भरा जा सका। वीरेन्द्र जी का वह मुस्कराता मुखमंडल उनकी राजनैतिक सूझबूझ आर्य समाज के संगठन के लिए वेदना, पंजाब में अकालियो के सद (?) कृत्यों की आलोचना आज भी हृदय पटल पर अंकित है। वे एक प्रभावी स्वाभिमानी, एवं सशक्त योद्धा थे। राष्ट्रहित के लिए वे वर्षों कारागार मे रहे। पंजाब में हिन्दू और हिन्दी के हित के लिए उन्होंने सिरधड़ की बाजी लगा दी थी, अकेले होते हुए भी वे हिन्दी के कठोर पक्षधर रहे। आर्य समाज के तो जुझारू नेता थे ही। ऐसे वीर पुरुष की याद को समय नहीं मिटा सकता। मेरा उनसे विशेष परिचय पटियाला जेल में हुआ। वे हिन्दी आन्दोलन में नजरबन्द थे लाला जगतनारायण जी भी वहीं थे, और संयोगवश मुझे भी कैरों सरकार ने उसी जेल का मेहमान बना दिया था। प्रारम्भ में मैं उनसे अधिक मिलने से कतराता था, क्योंकि वे समाज के नेता थे, प्रताप जैसे सशक्त पत्र के सम्पादक और मैं एक साधारण आर्यसमाजी। परन्तु उनकी सहज भावुकता, एवं संगठन की प्रवृत्ति ने मुझे चुम्बक सा खींच लिया। एक नेता अपने कार्यकर्ता के साथ इतना घुल मिल सकता है, इसका आश्चर्य हुआ। वस्तुतः जिन लोगों ने उन्हें दूर से देखा है वे उनके गुणों से अपरिचित रहे हैं।

लुधियाना मे आर्य वीर दल का प्रांतीय सम्मेलन था। मैं दल का संचालक था। कैरों सरकार ने जलूस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। मुझे याद है कि वीर जी ने मुझे बुलाया और कहा कि यदि दल को सत्याग्रह करना पड़े तो आप पहले जत्थे मे अपने साथ मेरा नाम लिख लो पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे हृदय मे उनके प्रस्ताव से कितना उत्साह बढ़ा। सत्याग्रह की नौबत न आई, परन्तु यदि सत्याग्रह होता तो अब मैं अकेला नहीं था, मेरे साथ वीर जी जैसा प्रभावी व्यक्ति भी था।

जीवन में कई साथी मिलते हैं, कुछ दिनों की मित्रता के पश्चात वे एक दूसरे को भूल जाते हैं परन्तु वीर जी मुझे ऐसे पक्के साथी मिले, कि वे मुझे भूल नहीं पाये और मैं भी उन्हें भुला नहीं सका। हरियाणा में आर्य नेताओं की पंजाबियों के प्रति उदासीनता को वे गहराई से महसूस करते थे। उन्होंने मुझे परामर्श भी दिये, परन्तु मैं नेतागिरि की कशमकश से स्वतन्त्र आर्यसमाज की सेवा को ही प्रमुखता देने के कारण अपने मार्ग पर चलता रहा।

आज पंजाब के आर्य समाज में आर्य बन्धु भी हैं, धनी भी हैं, विद्वान भी, आर्य समाज के लिए सर्वस्व देने वाले भी है परन्तु वीरेन्द्र कोई नहीं।

इतना अवश्य है कि पंजाबी व्यक्ति से उनका प्यार स्वाभाविक था। मैंने अकालियों की धांधली के दिनों में उनसे दिल्ली आ जाने की प्रार्थना की परन्तु वे सदैव दृढ़ निश्चय से उत्तर देते थे कि पंजाब अकालियों की जागीर नहीं, हम पंजाबी हैं, पंजाब हमारा भी है और हम यहां ही रहेंगे, जीवन मरण तो ईश्वर के हाथ में है। उनके जाने से पंजाब के हिन्दू का सजग प्रहरी चला गया आर्य समाज का एक जुझारू नेता चला गया।

आज पंजाब के आर्य समाज मे आर्य बन्धु हैं, धनी भी हैं, विद्वान भी, आर्य समाज के लिए सर्वस्व देने वाले भी हैं परन्तु वीरेन्द्र कोई नहीं। फिराक के शब्दो में—

> 'हर इक के पास हुस्ने जबानों बयां सही,
> लेकिन कहां से लायेंगे वह मेरे फन की बात।

वीरेन्द्र जी का प्रभाव व्यक्तित्व प्रबन्ध शक्ति, कलम व वाणी की सफलता और सबसे बढ़कर 'वक्त की पहचान' यह तो उनके वीर पुरुष के ही जीवन का हिस्सा थें। और यह अभाव पंजाब में न जाने कब भरा जा सके।

"हक मगफरत करे, अजब आजाद मर्द था"!

पुस्तक समीक्षा

गोविन्दराम हासानन्द लाहौर वैदिक साहित्य प्रकाशन सदा ही भारत में यह नाम प्रसिद्ध रहा है। भारत विभाजन के पश्चात दिल्ली के प्रवासी बनें वर्तमान मे नई सड़क दिल्ली में प्रसिद्ध संस्थान स्थित है। बड़े से बड़ा साहित्य और छोटें से छोटा साहित्य जनता के हाथों मे भेंट कर रहे हैं मेरे हाथों में कुछ साहित्य लघु पुस्तक रूप मे प्रस्तुत है रोचक कथानक शिक्षाप्रद है जो देश-विदेश में पढ़ा जाता है—

(१) देश के दुलारे

लेखक—सुनीत वर्मा

पृष्ठ—८७, मूल्य—८ रु०

प्रकाशन—गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली

आज का युवक गन्दा साहित्य पढ़ने में समय खराब करता है। काश! परिवारों में कृष्ण-सुदामा का चरित्र, बादल की वीरता, प्रभु पर विश्वास हेतु जाफो राबे साइबां, भारत के बाल विस्मिल, करतारसिंह के कथानक पढ़ाए जायें तो बच्चो मे उत्साह पैदा होगा बच्चे वीर बनेंगे। जासूसी उपन्यास, हल्के कथायें बच्चो में हीन भावनायें पैदा करती हैं।

देश के दुलारे, नाम सम्बोधन से पुस्तक की विशेषता प्रकट होती है लेखक ने भावना प्रधान कथानक दिए हैं प्रत्येक घर में बालोपयोगी साहित्य होना ही चाहिए।

(२) हमारे कर्णधार

लेखक—सुनीत वर्मा

पृष्ट—७९, मूल्य—आठ रुपये

प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली

आज हम स्वतन्त्र भारत में विचरण कर रहे हैं इसका श्रेय हमारे उन पूर्व बलिदानियों को है जिन्होंने फांसी का फन्दा गले लगाया, क्या-क्या कष्ट नहीं उठाए जिसका परिणाम आज हम भोग रहे हैं।

राष्ट्र बलिदान मांगता है त्याग के सहारे जीता है। ऐसे महापुरुषों के सहारे देश आगे बढ़ा है। जो राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञ है वही देश सक्षम है। आओ उन महापुरुषों के जीवन पढ़ें और भविष्य का निर्माण करें।

(३) हमारे बाल नायक

लेखक—सुनीत वर्मा

पृष्ठ—८८, मूल्य—आठ रुपए

प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क, दिल्ली

नया सन्देश मिले, नया सवेरा हो, प्रकाश मिले अन्धकार दूर हो तो मासूम बच्चों को, वीर धीर बालकों जैसे अभिमन्यु, हकीकतराय, हरिसिंह नलवा, वीरों के कथानक पढ़ाये जावें। लकड़ी जबतक आग में जल पर परत निशान बार-बार उनके संस्कारों से संस्कारवान बनाना ही बालनायकों के जीवन से शिक्षा मिलती है आओ हम बच्चों को शहीदों की गाथाएं सुनाएं फिर बहादुर भी बनायें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

मकर सौर संक्रान्ति

श्री पं० भवानी प्रसाद जी

जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक "सौर वर्ष" कहते हैं और कुछ लम्बी वर्तुलाकर जिस परिधि पर पृथ्वी परिभ्रमण करती है, उसको "क्रांतिवृत्त" कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रांतिवृत्त के १२ भाग कल्पित किये हुये हैं। और उन १२ भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र-पुञ्जों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख दिये गये हैं। यथा—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धन, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति "राशि" कहलाती है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करती है तो उसको "संक्रांति" कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। छ: मास तक सूर्य क्रांतिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहताहै और छ: मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम "अयन" है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को "उत्तरायण" और दक्षिण की अवधि को "दक्षिणायन"-कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्राति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और अयन-चलन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण इस समय संवत् १९९४ वि० में) मकर संक्रान्ति से २२ दिन पूर्व धन राशि के अंश ८.४ कला पर "उत्तरायण" होता है। इस परिवर्तन को लगभग १३५० वर्ष लगे हैं परन्तु पर्व मकर संक्रान्ति के दिन ही होता चला आता है. इससे सर्वसाधारण की ज्योतिष-शास्त्रानभिज्ञता का कुछ परिचय मिलता है, किन्तु पूर्व का चलते रहना उचित मानकर मकर संक्रान्ति के दिन ही पर्व मनाने की रीति चली आती है।

मकर-संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने पूर्ण यौवन पर होता है। जनावास, जगल, धन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक छा जाता है, चराचर जगत् शीतराज का लोहा मान रहा है, हाथ पैर जाड़े से सिकुड़े जाते हैं, "रात्रौ जानु दिवा भानु" रात्रि में चन्दा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दोनों पर आज-कल ही पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्ताचल के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते थे, मानो दिन रात्रि में लीन ही हुआ जाता था। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपना देह बढ़ाती ही चली जाती थी। अन्त को उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थ पर्यन्त विशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको "देवयान" कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगम तक शरशय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय किसी पर्वता पर्व बनने में कैसे वंचित रह सकता था। आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर-संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया।

जैसा कि पूर्व बतलाया जा चुका है कि यह पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रान्तों में प्रचलित है, अत: इसको एक देशी न कह कर सर्वदेशी कहना चाहिए। सब प्रान्तों में इसके मनाने की परिपाटी में भी समानता पाई जाती है। सर्वत्र शीतातिशय के निवारण के उपचार प्रचलित हैं।

वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल (रूई) बतलाए हैं। जिसमें तिल सब से मुख्य हैं। इसलिए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलो के प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और उनको पापनाशक कहा गया है।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ या खाड के लड्डू बनाकर जिनको "तिलवे" कहते हैं, दान किये जाते हैं और इष्ट-मित्रों में बाटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रान्त में इस दिन तिलों का "तीलगूल" नामक हलवा बांटने की प्रथा तथा कन्याए अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उनको हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। प्राचीन रोमन लोगों में भी मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट-मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकरसंक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर-सक्रान्ति पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृत दान करने की प्रथा. सनातनियो में प्रचलित है। "कम्बलवन्तं न बाधते शीतं" यह उक्ति संस्कृत में प्रसिद्ध ही है घृत को भी वैद्यक मे ओज और तेज को बढ़ाने वाला तथा अग्नि, दीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म का एक स्कन्ध है, अवश्यमेव ही कर्तव्य है।

पंजाब में मकर-सक्रान्ति के पहिले दिन लोढ़ी का त्यौहार मनाने की रीति है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नियां प्रज्वलित की जाती हैं और उनमें तपे हुये गन्ने भूमि पर पटका कर आनन्द मनाया जाता है। उससे अगले दिन वहां मकर संक्रान्ति का भी उत्सव होता है, जिसको वहां "माघी" बोलते हैं। ज्ञान होता है कि ये दोनों दिन के लगातार दो उत्सव न होकर दिन-द्वयव्यापी मकर-सक्रान्ति महोत्सव के एक ही पर्व का अपभ्रष्ट रूप है। पंजाब के आर्यसामाजिक पुरुषों को चाहिये कि वे दो दिन त्यौहार न मनाकर मकर-संक्रान्ति की तिथि को ही परिमार्जित रूप में इस पर्व को मनाएं और आर्य सामाजिक जगत् में पर्वों की एकाकारता स्थापित करने में सहायक हों।

देवदासी प्रथा—एक कलंक (२)

विश्वनाथ प्रसाद

समीक्षा —१. भारतवर्ष में हर प्रकार के पतन का बीजारोपण उसी दिन हो गया जिस दिन स्वार्थी व्यक्तियों ने ईश्वर के अनेक गुणों, नामों के आधार पर अनेक देवी-देवताओं की कल्पना की और अपनी कल्पना के आधार पर उनकी मूर्तियां बनाई। अपनी बनाई इन्हीं मूर्तियों में जीवन की सांस फूंककर प्राण प्रतिष्ठा का नाटक किया। मूर्ख जनता ठगी गई। अपना धन-दौलत गंवाने के सिवा उसके हाथ कुछ न लगा किन्तु अन्धविश्वास के दलदल में ऐसी फंसी कि आज तक निकलने का मार्ग ही नहीं पा सकी।

मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है। कबीर जी के शब्दों में—"जो पाथर को कहते देव। ताको वृथा होय सेव।" 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' (यजुर्वेद) जो सब जगत में व्यापक है इस निराकार परमेश्वर की प्रतिमा, परिमाण, सादृश्य वा मूर्ति नहीं है।

पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय अपने लेख 'मूर्तिपूजा' में लिखते हैं कि जितनी मूर्तियां आज तक पूजी जाती रही हैं वह या तो सन्त महात्माओं की हैं जैसे—पारसनाथ आदि की या बड़े-बड़े राजा महाराजाओं की है जैसे—श्रीराम या श्री कृष्ण की या देवताओं की जैसे—शिव, गणेश देवी आदि की। निराकार और निर्विकार ईश्वर की मूर्ति नहीं है और न हो सकती है। बहुत से लोग यह समझते हैं कि निराकार ईश्वर की तो मूर्ति नहीं हो सकती परन्तु ईश्वर अवतार लेकर साकार हो जाता है, इसलिए उसकी मूर्ति हो सकती है।

परन्तु यह लोग समझते हैं कि जिस प्रकार मनुष्य सदा बदलता रहता है उसी प्रकार ईश्वर भी बदलता है। कभी साकार होता है कभी निराकार। कभी जन्म लेता है, कभी मरता है। वस्तुतः ईश्वर को बदलने वाला मानना उसका अपमान करना है। लोगों ने अपनी कमजोरियां ईश्वर में आरोपण कर दी हैं। जैसे वह जन्म लेते, बढ़ते और मर जाते हैं उसी प्रकार वह ईश्वर को जन्म लेने वाला, बढ़ने और मरने वाला समझते हैं। जिस प्रकार उसको भूख, गर्मी, जाड़ा लगता है, उसी प्रकार वह समझते हैं कि ईश्वर को भी भूख, गर्मी, जाड़ा लगता हैं। इसलिए वह मन्दिरों में मूर्ति को भोग लगाते, रजाई उढ़ाते और पंखा झलते हैं। जैसे उनको सोते से उठाने के लिए जगाने की जरूरत होती है, उसी प्रकार मूर्तियों को भी सुलाते और जगाते है। वह बेचारे यह नहीं जानते कि ईश्वर आदमियों की तरह निर्बल नहीं है। वस्तुतः अवतार जीव का होता है ईश्वर का नहीं।

भागवत पुराण मूर्ति पूजा का खण्डन करता है।

> योमासर्वेषुभूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।
> हित्वार्चाभज्ञातेमौढ्याद् भस्मन्ये ज जूहोतिस॥
> भागवत स्क. ३ अ. २९ श्लोक २।

अर्थ—जो भी मुझे सब भूतों में विद्यमान होते हुए परमात्मा का त्याग करके मूर्तिपूजा में लगता है वह मानो राख में आहुति डालता है।

(२) अन्धविश्वासी माता-पिता प्रसन्न होते हैं कि उन्होंने अपनी पुत्री को देवदासी बनाकर बहुत बड़ा धर्म का कार्य किया। वह निरन्तर देवताओं की सेवा करके अपना भावी जीवन सुखमय बनाने के साथ-साथ पूरे कुल को तारेगी, उद्धार करेगी, किन्तु वास्तविकता कुछ और है। आर्या मीरा यति अपनी पुस्तक 'नकली भगवान' में प्रश्न करती हैं कि ये चेलियां (देवदासियां) सोलह-सोलह, अठारह-अठारह वर्ष की अविवाहिता रहकर भगवे वस्त्र पहने हुए हैं क्या ये आयुपर्यन्त इसी प्रकार कुमारी रहकर जीवन व्यतीत कर सकेंगी? यह तो कुछ असम्भव सा लगता है। जब पूर्ण यौवनावस्था में जायेंगी तो फिर विषय वासना का रोकना कठिन होगा।

इन मन्दिरों में मूर्तियों पर अपार धन चढ़ावे के रूप में पुजारियों को मिलता है। जिसका उपयोग प्रायः शराब, मांसाहार और परस्त्रीगमन पर होता है। पुजारियों की कामुक निगाहों से ये देवदासियां बच नहीं पातीं। फिर उनके भ्रष्ट होने में समय नहीं लगता। धीरे-धीरे इनका सम्बन्ध बाहर से आने वाले पुरुषों से भी हो जाता है जो पूजा करने के बहाने मन्दिरों में प्रवेश करते रहते हैं। ऐसी स्त्रियों का स्वभाव इतना बिगड़ जाता है कि इनको कोई आगम्य नहीं, बूढ़े और जवान, कुरूप और सुरूप, धनी और निर्धन, ऊंच और नीच का कोई ख्याल नहीं, ये तो पुरुष मात्र को भजेता है। कुलटायें गाय की तरह होती हैं। जिस तरह गाय नई-नई घास खाना चाहती है, उसी तरह वे नए-नए पुरुषों को चाहती हैं।

यही देवदासियां समय पर बेच दी जाती हैं। ग्यारह अगस्त ९३ के नवभारत बिलासपुर में अरविंद सिंह ने लिखा है कि एक देवदासी का वर्तमान बाजार मूल्य ४ हजार से दस हजार रुपयों के बीच ठहरता है। दक्षिण महाराष्ट्र के वेश्यालयों में ५०प्रतिशत, बम्बई के वैश्यालयों में १५ प्रतिशत तथा दिल्ली के वैश्यालयों में १० प्रतिशत वेश्यायें देवदासी परम्परा से आती हैं। अरविन्द सिंह ने लिखा है कि 'एक बार' साड़ा बांधने का संस्कार सम्पन्न होने के बाद देवदासी के भाग्य में फिर जीवन भर साड़ी उतारना ही नियत हो जाता है। अरविंद सिंह ने इसे विश्व का सबसे पुराना धन्धा बताया है।

पुरावेत्ताओं के एक वर्ग के अनुसार मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त वह प्रतिमा जिसके हाथों में कड़े और गले में कंठा है, वस्तुतः एक देवदासी की ही प्रतिमा है। सरगुजा जिले की रामगिरि की पहाड़ी में स्थित सीतागिरा और जोगीमढ़ा की बौद्धकालीन गुफाओंका संचालन सुतनुका नामक एक देवदासी ही करती थी। देवदासी सुतनुका बाद में देवदीन नामक एक शिल्पकार के प्रेम-पाश में फंस गई थी, जिसके लिये उस समय के बौद्ध भिक्षुओं और सामन्तों ने मिलकर उसे दण्डित किया था। इन गुफाओं का काल ई पू तीसरी से दूसरी शती के बीच निर्धारित किया जा रहा है।

श्री अरविंद सिंह के अनुसार करनाटक के बेलगांव जिले के सौंदात्ती और शिमोगा जिले के चन्द्रागुट्टी में आज भी अल्पवयस्क बालिकायें देवी येलम्माको अर्पित करके देवदासी बनाई जा रही हैं। कर्नाटक और सीमावर्ती महाराष्ट्र के ८ जिलों में प्रतिवर्ष ५ हजार बालिकाओं को देवदासी बनाकर वैश्यावृत्ति के रास्ते पर छोड़ दिया जाता है।

देवदासी प्रथा को रोकने में केरल उच्च न्यायालय ने एक अनुकरणीय कार्य किया है। न्यायालय ने सबरीमला पहाड़ी मन्दिर में १० से ५० वर्ष की आयु वर्ग की महिला श्रद्धालुओं के प्रवेश पर पाबन्दी लगाने के एक सर्वसम्मति विचार को स्वीकार कर लिया है। मन्दिर में महिला प्रवेश पर प्रतिबन्ध के बारे में त्रावणकोर देवासम बोर्ड केरल के पुलिस महानिदेशक तथा अन्य अधिकारियों के बीच गत शनिवार को एक आम राय कायम हुई।

उक्त आयु वर्ग के हाशिये की महिलाओं के प्रवेश के बारे में फैसला महिला डाक्टर करेंगी जिन्हें मन्दिर के प्रवेश मार्ग में दो बिन्दुओं पर तैनात किया जायेगा। डाक्टरों को इस काम में देवासम बोर्ड की महिलाओं से मदद मिलेगी।

(२९-११-९२ के नवभारत बिलासपुर से साभार)

देवदासी प्रथा कैसे समाप्त की जाए?

(१) इस विषय में सरकार द्वारा पारित कानून का कड़ाई से पालन हो। इसके प्रतिकूल जाने वाले जैसे—माता-पिता, अभिभावक, संस्कार कराने वाले पुरोहित और मन्दिरों में प्रवेश कराने वाले मठाधीशों को आजन्म कारावास की सजा।

(२) संस्कार को अवैध घोषित करके उक्त लड़की का उसके समाज में शीघ्रता से विवाह करा दें।

(३) ऐसी लड़की से विवाह करने में गौरव का अनुभव करने वाले लड़कों से ही विवाह हो सरकार और समाज की ओर से उसका स्वागत सत्कार हो और जीवन-यापन के लिए आवश्यक धन भी दिया जाये।

एन ई ५४ म०प्र० वि. म. कोरबा (पूर्व)
बिलासपुर (म० प्र०)

श्री वीरेन्द्र जी की प्रथम पुण्य तिथि पर विशेष—

वह कलम की आबरू थे !

रघुवंश राय

वीर जी ने सच और हक का जो रास्ता अपनाया था उसमें उन्हें कभी-कभी मौत की आंखों में आंखें डालकर भी चलना पड़ा। उनके जीवन में ऐसा भी समय आया जब उनकी गर्दन और फांसी के फंदे के बीच सुई की नोक जितना ही अन्तर रह गया वह फांसी के फंदे से तो बच गए लेकिन जेल की काल कोठरी उनका भाग्य बन गई। जेल के दरवाजे उन पर खुलते और बन्द होते रहे।

सन १९४६ का हगामा पूर्ण वर्ष।

लाहौर में पंजाब विधानसभा का इतना ही हगामा पूर्ण अधिवेशन एक नौजवान सदस्य जो कुछ समय पहले ही स्वतन्त्रता प्रेम के 'जुर्म' मे अंग्रेज की कैद काटकर रिहा हुआ है, उठता है, और भाषण शुरू करता है, आवाज की गर्जना, अन्दाज मे बेबाकी है, जुबान पर सरस्वती का प्रवाह वह शीघ्र ही सबके ध्यान का केन्द्र बन जाता है। सब निगाहे उस पर जम जाती हैं। वह धारा प्रवाह बोलता और मुस्लिम लीग को लताडता जा रहा है और जब उसकी आवाज की गूज बन्द होती है तो सारा हाल तालियो से गूंज उठता है।

यह नौजवान श्री वीरेन्द्र थे जिन्हे सभी लोग वीर जी कहकर पुकारते थे, अगले दिन अंग्रेजी दैनिक "ट्रिब्यून" ने विधान सभा में उनके इस भाषण पर टिप्पणी करते हुए लिखा जिसका भाव था, श्री वीरेन्द्र ने अपने पहले भाषण मे अपने विरोधियो को उनके तर्को का हवाला देते हुए ही लताड़ा।

श्री वीर जी के इस भाषण मे जो स्पष्टवादिता निर्भीकता और बेबाकी थी वह सारा जीवन कायम रही। उन्हे सन १९४६ मे जैसा देखा था वैसे ही आखिरी समय तक कायम रहे। इन गुणो ने जो उन्हें दगौती मे मिले थे उन्होने अपने आपको ऐसी राह पर डाल दिया जो पथरीली भी थी और कटीली थी। उन्होने सच और हक का रास्ता अपनाया था और इस राह पर चलने के लिए हरिश्चन्द्र, सुकरात और मन्सूर जैसा दृढ प्रतिज्ञ बनने की आवश्यकता होती है। इस रास्ते पर चलने वाला तो आहवान करता है—

> चढ़ा मन्सूर सूली पर, पुकारा इश्क वाजों ने,
> यह जीना बाम का उसके लिए है जिसका जी चाहे।

वीर जी ने सच और हक का जो रास्ता अपनाया था उसमें उन्हें कभी-कभी मौत की आखो मे आखें डालकर भी चलना पडा। उनके जीवन मे ऐसा समय भी आया जब उनकी गर्दन और फासी के फन्दे के बीच सुई की नोक जितना ही अन्तर रह गया। वह फासी के फन्दे से तो बच गए लेकिन जेल की काल कोठरी उनका भाग्य बन गई। जेल के दरवाजे उन पर खुलते और बन्द होते रहे। शायद यह भी एक सयोग था कि वह उस ऐतिहासिक दिन भी लाहौर की उसी जेल में बन्द थे जिस दिन वहां सरदार भगतसिह, सुखदेवसिंह और राजगुरू इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाते हुए फासी के तख्ते पर झूल गये और देश के स्वतन्त्रता सग्राम को एक नया मोड दे गये।

वीर जी की गतिविधिया तीन क्षेत्रो मे रही। पत्रकारिता, शिक्षा एव समाज सेवा और राजनीति। जहां तक राजनीति का सम्बन्ध है वह उस युग की उपज थे जब हथकड़िया—जेवर, फासी के तख्ते-झूलने हुआ करते थे और नौजवान अंग्रेज शासको से खून का भाव पूछा करते थे और सगीनो के आगे सीने तान दिया करते थे। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राजनीति का अर्थ बदलता गया और राजनीति ने कुर्सी दौड का रूप धारण कर लिया और जब राजनीति की यह हालत हो गई कि—

> मेरे वतन की सियासत का हाल मत पूछ,
> घिरी हुई है तवायफ तमाशाईयों मे

तो वीर जी राजनीति से किनारा कर गये। वह ऐसी राजनीति के लिये उपयुक्त ही नही थे जिसमे किसी चौखट पर सिजदा करना पडे उनका आजाद माथा यह गुलामी सहन नहीं कर सकता था। वह राजनीति से दूर हट गये परन्तु उनकी कलम आजाद कलम राजनीति पर प्रभावी रही। आदोलन उनकी कलम की नोक पर पलते और मचलते रहे परन्तु जिसके हाथ मे आजाद कलम हो उसे अगणित विपत्तियो के लिए भी तैयार रहना पड़ता है। वीरजी पर भी ऐसी विपत्तियों के पहाड़ टूटे जिन का उन्होने वीरता एवं साहसपूर्वक मुकाबला किया। समय के शासको ने उनकी कलम पर रोक लगाने का प्रयास किया। 'प्रताप' पर पाबन्दियां लगती रहीं, जमानते तलब व जब्त होती रहीं, सैसर बैठता रहा और अखबार का दाखला बन्द होता रहा परन्तु वीर जी अपनी जगह पर सदा अडिग रहे। जब भी प्रताप पर प्रतिबन्ध लगता तो वह कह दिया करते थे।

> जुबा पर मोहर लगी है तो क्या
> रख दी है,
> हर एक हल्क का जजीर में
> जुबा मैंने।

और वह ठीक ही कहा करते थे। 'प्रताप' की आवाज को बन्द कैसे कराया जा सकता था। वह तो जनता की सोच एवं आवाज बन चुका था। वीर जी परतन्त्रता के दौर और स्वतन्त्रता के दौर दोनो मे समय के हाकमो की आंखो मे काटे की तरह खटकते रहे। सच और हक की बात कहना समय

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वह कलम की आबरू थे

(पृष्ठ ७ का शेष)

के शासको की नजर मे प्राय जुर्म बन जाता है। और उसी जुर्म मे सुकरात को जहर का प्याला और मन्सूर को सूली पर चढना पडता है। समय के शासको ने वीर जी पर अपने तरकश के सारे तीर चलाये परन्तु उनका कलम न रुका न झुका। कुछ ऐसे भी कलम हुआ करते हैं जो लिखते नही अपितु सिक्का की झनकार पर मुजरा किया करते है परन्तु वीर जी का कलम आजाद रहा शासकों के लिये ललकार रहा। उन्होंने जहा असत्य को देखा वहा निर्भीक होकर मुकाबले पर आ डटे। उनका एक ही नारा था—

कुराना हो कलम हाथों का रूदाद ए जुनूं लिखकर
तो इस दौरे सितम परवर मे मेरा ही कलम हो जा।

वीर जी स्वयं तो कैद होते रहे किन्तु कलम को कभी कैद न होने दिया जब श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश मे इमरजंसी लगाई और समाचार पत्रों पर सेंसर बिठा दिया तो वीर जी एकमात्र पत्रकार थे जिन्होंने कलम एक ओर रख दी और लिखना ही बन्द कर दिया। इसलिए जैसा कि पूजनीय महाशय कृष्ण कहा करते थे कि प्रताप खबर फरोश नही सिर फरोश है जब उनसे समाचार पत्र के हित मे सम्पादकीय लिखने के लिये कहा गया तो उनका उत्तर था कि पत्रकारिता तो एक मिशन है व्यापार नही। अखबार बन्द होता है तो हो जाए कलम की कैद स्वीकार नही करूंगा। वह अपने निर्णय पर अंगद की भांति जमे रहे और कलम की आबरू बने रहे।

वह जो सही समझते थे लिख देते थे। इस बात की रत्ती भर परवाह न करते थे कि उनके सच से किसी के माथे पर कितनी त्योरियां पड़ेंगी किसकी भौंहे तनेंगी नथुने फूलेंगे और कान सुर्ख हो जायेंगे उनकी कलम की काट तलवार से भी गहरी हुआ करती थी और उनकी कलम तो यह सन्देश दिया करती थी—

कलम से काम तेग का अगर कभी लिया न हो
तो मुझ से सीख ले ये फन और इसमें बेमिसाल बन।

वीर जी आज हमारे मध्य नही रहे संसार में जो आता है उसे एक दिन जाना ही होता है यह प्रकृति का अटल नियम है। एक महा सत्य है किन्तु जिनकी याद जिन्दा रहती हैं जिनकी याद मनाई जाती है वह सदा जीवित रहते है। मरते तो केवल वे लोग है जिनको भुला दिया जाता है।

वीर जी न केवल यादों मे जीवित रहेंगे अपितु उनका जीवन भी जिन्दगी का पैगाम देता रहेगा। तप त्याग और तेज का उनका जीवन युवा पीढी के लिए रोशनी का मीनार बना रहेगा उनका जीवन आन और स्वाभिमान से जीने का सदैव संदेश देता रहेगा और जहा तक पत्रकारिता का सम्बन्ध है वह सदा ही प्रेरणा का स्रोत रहेगा। इसलिए कि—

वह कलम की आबरू थे

विदेश-समाचार

होलैण्ड मे आर्य सामाजिक क्रान्ति

होलैण्ड मे भारतीय समुदाय के लोग बडी सख्या मे हैं तथा धार्मिक क्षेत्र मे सनातन धर्म व आर्यसमाज की गतिविधियो मे निरन्तर प्रगति हो रही है। वर्तमान समय मे आकाशवाणी व दूरदर्शन द्वारा भी भारतीय सस्कृति का नियमित प्रचार किया जाता है। प्रत्येक पर्व, त्यौहार तथा महापुरुषो के जन्मोत्सव भी धूम-धाम से मनाये जाते हैं। पिछले दिनो रोटरडम मे प० सुभधन जी के यहा श्री कृष्णजन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। यज्ञोपरान्त प० एस० सुभधन जी ने श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा "परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृताम् धर्म सस्थापनार्थाय इसकी आवश्यकता आज भी महसूस की गई। और कहा कि महाभारत का युद्ध एक धर्मयुद्ध था, जिसे आज भी लडना होगा, पर आज कोई श्री कृष्ण नहीं कोई पाण्डव नही जो कि अन्याय अधर्म को कुचलने को कटिबद्ध हो। जनता से आह्वान किया गया कि बच्चो में सत्य-असत्य धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय का विवेक पैदा करे, उनमे उत्तम-उत्तम सस्कार भरें, कि जिससे वे कौरव सेना मे भरती होने से बच सके आदि-आदि।

होलैण्ड मे आर्यसमाज के क्षेत्र मे यही महाभारत का अब वातावरण सा बना हुआ है। हमने आर्य समाज के नाम पर हो रहे अन्धविश्वासो, पाखण्डो, अनेतिक कृत्यो का सफाया करने के लिये व उसे महर्षि दयानन्द की विचारधारा पर प्रतिष्ठित करने के लिये तीव्र आन्दोलन छेडा है, और प्रचार साधनो द्वारा प्रेरणादायी उद्बोधनो द्वारा, जनजागरण का अभियान चलाया है। क्योंकि हमने देखा कि प्रगति का मार्ग स्वय हम आर्य समाजियो ने ही रोका हुआ है। नये लोगो तक पहुचने, उन्हे वैदिक धर्म के परिचय देने मे हमारे सब मनमाने कृत्य बाधक बन चुके हैं। स्वार्थ की राजनीति के कारण आकाशवाणी दूरदर्शन आदि साधनो के होते हुये भी आर्य समाज की छवि को सकुचित मत, सम्प्रदाय का स्वरूप प्रदान कर दिया है जो अत्यन्त चिन्तनीय विषय है। मैं सार्वदेशिक सभा से इस सम्बन्ध मे आकाक्षा करता हू कि वह आर्य समाज को कूपमण्डूकता के गर्त से निकालने हेतु अत्यन्त गहराई से कुछ सैद्धान्तिक आधार कायम कर व होलैण्ड जैसे देशो म आर्य समाजो मे मतिहीनता की स्थिति न आने दें। आर्यसमाज के मच से उसी सत्य का उद्घोष होना चाहिये जो दयानन्द ने किया था। आज लोग देशकाल परिस्थिति की आड मे अधर्म को धम, असत्य को सिद्ध करने पर तुले हुँ। पाश्चात्य सभ्यता के तन-मन अन्त करण स गुलाम होकर भारतीय वैदिक सस्कृति का थोथा बखान करने का स्वामी जी का आदेश नहीं है तथा आर्यत्व का लक्षण भी नही हैं। सत्यार्थ प्रकाश का सत्य सस्कारविधि की विधि, गोकरुणानिधि की निधि पचमहायज्ञ विधि, आर्याभिविनय की विनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की भूमिका कौन बतायेगा ? कब इसका प्रचार होगा ?

क्या आज के आर्य समाजियो को इन सबकी जरूरत नहीं है। सदाचरण, व्यवहार, परोपकार, भक्ति भावना आर्य पुरुषो के लिये आवश्यक नहीं रह गये हैं ? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो हमें अपने आपसे पूछने होंगे। आर्य समाज का उद्देश्य विखण्डन, बिगाड, अनेकता नहीं है बल्कि एकता, सुधार, सगठन बनाना है। इसके लिये प्रचलित कल्पित अन्ध परम्पराओ को शीघ्रातिशीघ्र उखाड फेंकने की आवश्यकता मे सक्त जरूरत है। होलेण्ड मे समय-समय पर अनेक प्रचारक आये, जिनमे मुख्यत सैद्धान्तिक, कथावाचक, प्रवचनात्मक थे जिसका परिणाम काफी अनुकूल था। पर वर्तमान मे आर्यसमाज के नाम पर जनता का मनोरजन करने, प्रशसा करके 'धनोपार्जन करने व लोभ के नाम पर खेल तमाशा दिखाने वाले प्रचारक के बहाने यहा के लोगो को हरसम्भव बरगलाते, ठगते, स्वार्थ सिद्धकर, भारत ही नहीं बल्कि आर्यसमाज की छवि को बट्टा लगाये चले जा रहे हैं। इतना ही नही ये भोले लोगो को अपने वाकछल से प्रभावित करके उन्हे परस्पर विरुद्ध भडकाने मे नही चूके।

परिणाम स्वरूप आज समाज मे फूट, वैमनस्य का वातावरण पनप गया है। ऐसी स्थिति मे प्रचार की वास्तविकता को दबाते, सत्य को कुचलने, आर्यत्व को कलकित करनें मे स्वय समाजी समुद्यत हैं। जब कि हमने अपने तन, मन, धन से, ऐसी प्रवृत्तियो को निस्तेज करके प्रचार सुधार, सघटन का शखनाद कर बुझती ज्योति को सीचने का प्रयास किया, तो हमे हर तरह से अपमानित व बदनाम करके जन साधारण के मने मे घृणा उत्पन्न करने का प्रयास किया जा रहा है। आज होलेण्ड मे यही कशमाकश है कि आर्य समाज इस दु शासन से कैसे मुक्त हो। यदि यहा श्रेष्ठ पुरुष एक होकर निस्वार्थभाव से आर्यसमाज के आन्दोलन को अपने हाथो लेकर "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, की सद्वृत्ति से कार्य करने का सकल्प कर लें, तो होलेण्ड ही नही सूरीनाम गयाना, त्रिनिडाड बेल्जियम, पेरिस, आदि देशो मे बसे हिन्दुओं को महर्षि दयानन्द की भावना से प्रभावित कर 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। मैं होलेण्ड के आर्यो से निवेदन करता हू कि आर्यसमाज एक आन्दोलन है, क्रान्ति दूत है, मानवता का सन्देश देने वाला है 'सर्वे भवन्तु सुखिन उसकी आत्मा है इसे इसी भावना से बढाओ, फैलाओ, अपने स्वार्थ तक सीमित न रखो। सघठन मे आई कमी को दूर करने मे न हिचकाओ। मतभूलो कि महर्षि ने सत्य-वेद धर्म रक्षा मे अपनी आहुति दी थी। उसके ही रक्षक आर्यसमाज मे वही बीमारी मत पनपने दो। स्वामी जी व आर्यसमाज के महत्व को कम करना हमारी नादानी होगी। चेतो, उठो, जागो, आओ स्वाध्याय करो, आत्मचिन्तन करो। और अपने तन, मन, धन से ऋषि दयानन्द के ऋणो से उऋण होने का प्रयास करो। ये विश्व तुम्हारी ओर आशा-दृष्टि से देख रहा है। अब तुम्हे अपने कर्त्तव्य से पीछे नही हटना चाहिये। श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त बनकर आओ हम विश्व को आर्यत्व की शिक्षा प्रदान करें। परमात्मा हमे सद्बुद्धि प्रदान करे।

—ओमप्रकाश सामवेदी पौरोहित्याचार्य
उपमन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलेण्ड

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहको से निवेदन

सार्वदेशिक पत्र साप्ताहिक अपने गरीबी क दिन गिनता हुआ आप आर्यजनो की सेवा मैं वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप मे है। विद्वानो के लेखो कविताओ, प्रवचनो व सूचनाओ के साथ पहुच रहा है।

सफलता कहू या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक सख्या निर्बल है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमे नही देना हतेथाने गाम। पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमें कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु जाता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामत सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलन से। अब भी वही दशा है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढें और हमारे लिये नही अपनी शक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाए।

तो फिर सकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमे दे दें। किसी भी सस्था को शक्तिशाली बनानेमे पत्रिका व साहित्य उसके जीवन को गति ही नही प्रगति भी प्रदान करते हैं ?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही ग्राहक राशि का धन तथा अन्य सहयोग देकर सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक सन्देश घर-घर पहुचायें।

—डा सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

ग्राम आडीबाट जिला बूदी में प्रचार व नवीन आर्यसमाज की स्थापना

स्वामी परमानन्द जी पलायथावालो के प्रयास से दिनाक १६, १७ व १८-१२-९४ को ग्राम आडीबाट मे तीन दिन तक खूब आर्य समाज व वैदिक धर्म का प्रचार किया गया जिसमे हाडती सभा के प्रधान श्री राजेन्द्र आर्य लक्ष्मीकान्त गुप्त लालचन्द आर्य व प्रसिद्ध भजनोपदेशक कमलसिंह आर्य ब्रह्मचारी भरतपुर वालो के भजन व उपदेश हुए। तीनो दिन ग्राम वासियो ने जो अधिक तर केवट समुदाय के हैं, बडी ही श्रद्धा से यज्ञ मे भाग लिया तथा हर प्रकार नशा छोडने व मछली, मास खाना त्यागन का प्रण किया। ग्राम के श्री केसरीलाल जी छाकई तथा बडी लाल जी नयाल ने भोजन व ठहरने की व्यवस्था की तथा श्री बडी लाल जी ने ही आर्य समाज व वैदिक छात्रावास हेतु अपनी भूमि दान मे दी।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर ऊनी स्वेटर तथा जुराबों का वितरण

आर्यसमाज पुष्पाञ्जलि एन्कलेव का नवा वार्षिकोत्सव २८ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प० नारायणदत्त शास्त्री के ब्रह्मत्व मे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया समापन समारोह के अवसर पर श्री सूर्यदेव जी, श्री गौरीशकर भारद्वाज, डा० महेश वेदालकार, डा० सत्यकाम, आचार्य अर्जुनदेव वर्णी के अतिरिक्त अनेको विद्वान तथा भजनोपदेशको ने श्रोताओ को धर्म लाभ प्रदान किया। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, बाल प्रतियोगिता सहित अनेको कार्यक्रम सम्पन्न हुये। वैद्य श्री शशि मोहन पथारिया तथा श्री पुन्नूराम के सौजन्य से गरीब विद्यार्थियो मे १ ऊनी स्वेटर तथा जुराबे वितरित की गई।

गुडगाँव में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूम धाम से मनाया गया

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगावा के तत्वावधान मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा मे गुरुकुलो के ब्रह्मचारी, स्कूलो के विद्यार्थी तथा कई भजन मण्डलियो ने भाग लिया, ब्रह्मचारियों के आकर्षक प्रदर्शन ने लोगो का मन मोह लिया। आर्य समाज नई कालोनी से प्रारम्भ हुई यह शोभायात्रा विभिन्न स्थानो से होती हुई कबीर भवन पर एक विशाल जन सभा मे परिवर्तित हो गयी। सभा की अध्यक्षता प्रो० उत्तमचन्द्र शरर ने की। समारोह मे चौ० धर्मवीर गावा, प्रो० जगदीश मुखी, महात्मा सत्यपाल आर्य सहित अनेको विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। मच सचालन श्री लक्ष्मण पाहूजा ने किया तथा धन्यवाद अपण श्री ओम प्रकाश कालडा द्वारा किया गया।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज पीपाड ने अपना वार्षिकोत्सव बडे ही उत्साह व उल्लास के साथ मनाया। जिसमे बाहर से आये उपदेशको म प्रो० भवानीलाल जी भारतीय तथा अमरसिह जी भजनोपदेशक ने अपने सुविचारो से तथा भजनो द्वारा आर्य सस्कृति का प्रचार करते हुये नगर वासियो को आर्य समाज की ओर आकर्षित किया साथ ही विदुषी मनीषा जी द्वारा महिलाओ मे भी वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। यह आयोजन २९-३०-३१ दिसम्बर ९४ को सम्पन्न हुआ। नगरवासियो ने आयोजन को सराहा।

—मन्त्री विजयकुमार आर्य

आर्यसमाज राजौरी गार्डन का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली २७ का वार्षिकोत्सव एवं सामवेद महायज्ञ २६ दिसम्बर से १ जनवरी ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन, वेद संगोष्ठी तथा आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् श्री बी० एल० शर्मा प्रेम, श्री अजय माकन आचार्य उषर्बुध जी श्री सूर्यदेव जी, श्री शिवकुमार शास्त्री, श्रीमती राज खुराना सहित अनेकों प्रतिष्ठित विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर श्रोताओं को सम्बोधित किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का शाल ओढ़ाकर अभिनन्दन किया गया। स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सास्कृतिक कार्यक्रम ने जनता को अत्यन्त प्रभावित किया। ऋषिलगर के उपरान्त कार्यक्रम समाप्त हुआ॥

आर्यसमाज प्रगति के पथ पर

वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए एक सेना तैयार की जा रही है। जिसके लिए १४ जनवरी १९९५ से १०० व्यक्तियों का एक शिविर एक मास के लिए आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली में सीताराम आर्य प्रधान, महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा के संयोजन में होने जा रहा है। जिसमें प्रत्येक प्रान्त से व्यक्ति लिए गये हैं। जो प्रशिक्षण लेकर अपने प्रान्तों मे जाकर अपनी भाषा में आर्य समाज का प्रचार करेंगे। शिविर मे भाग लेने के निमित्त निम्न पते पर सम्पर्क करें। सीताराम आर्य

३११/३६ सी चन्द्रलोक दिल्ली-३५
फोन न० ५३१४११

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के रक्षा सचिव
पं० बालदिवाकर हंस अस्वस्थ

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पूर्व प्रधानसचालक वर्तमान रक्षा-सचिव श्री प० बालदिवाकर हस २५ दिसम्बर से अस्वस्थ हैं उन्हे रक्त की उल्टियां हुई हैं। उनका उपचार दिल्ली के जे०बी० पन्त अस्पताल वार्ड नं० ७ थर्ड फ्लोर में चल रहा है। वैसे स्थिति डाक्टरों के नियन्त्रण में है जिसके लिए डा सरीन भी एव पूरा स्टाफ धन्य-वाद के पात्र हैं। यह पत्र आपके हाथों में पहुंचने तक आशा है कि ईश: कृपा से वह स्वस्थ होकर अपने निवास स्थान पर पहुंच जायेंगे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरु गोविंद सिंह

(पृष्ठ २ का शेष)

है और उनकी शानो-शौकत आसमान के तारो से भी ऊंची है।"

जफरनामा में गुरु गोविन्द सिंह जी आगे लिखते हैं—"तुझे सल्तनत पर गुरूर है और हमें ईश्वर ने पनाह दी हुई है। तू इस दुनिया के अंजाम से बेखबर न हो। कई आलिम इस स्थान से गुजर गए हैं। जाम, जम, दारा, सिकन्दर, शेरशाह सब मर गए, एक भी बाकी न रहा। तेरा भी यही हश्र होने वाला है। जब मुगल शासक तैमूर, हुमायूं और अकबर नही रहे तो ऐ औरंगजेब तू भी नही रहेगा। जमाने की गर्दिश हर घर और हर आदमी पर गुजरती है। अगर तू जुल्म करके कमजोरों को सतायेगा तो निश्चित रूप से अपनी कसम के परखचे उड़ाएगा। याद रख कि दुश्मन मेरा कुछ नही बिगाड़ सकते हैं। मैं हमेशा चढदी कला में रहूगा। मुझे वाहेगुरु ने जुल्म को मिटाने के लिए और धर्म को बचाने के लिए भेजा है।

एक बार गुरु महाराज जी ने एक श्लोक काव्य रुप मे सुनाया—

"जले हरि, थले हरि, पूरे हरि, बने हरि
गिरे हरि, गुफे हरि, छते हरि नभे हरि, यहा
हरि, वहां हरि, जमी हरि, जमा हरि॥"

उनका हरि उनके सामने था तो उनको बार-बार हरि कहने की क्या जरूरत है।

और फिर वह कहने लगे—

"जल तू है, थल तू है, नदी तू है, दरिया तू है, नीचे तू है, ऊपर तू है, मसकी तू है, मसका तू है, गुरू जी ने जितनी भी लडाइया लड़ी, जुल्म और अत्याचार के खिलाफ लडी, चाहे वह हिन्दू के विरुद्ध हो या मुसलमान के। गुरु जी के जीवन का आदर्श वाक्य था कि.

'हे सर्वशक्तिमान मुझे ये वर दो कि मैं नेक काम से कभी पीछे न हटू। दुश्मन से लड़ूं और डरू नही। यकीनी तौर पर फतेह हासिल करू, अपने ही मन की बात मानकर इस इच्छा के साथ तुम्हारा गुण गाता रहू और जब मेरा आखिरी वक्त आए तब मैं धर्म के लिए लड़ता-लडता शहीद हो जाऊ।'

आर्ष गुरुकुल नोएडा

आर्य समाज नोएडा के ही तत्वाधान मे आर्ष गुरुकुल प्रवेश भी प्रारम्भ हो चुका है कम से कम ८ वर्ष की आयु के बच्चे इसमें प्रवेश पा सकते हैं। उत्तम खान-पान, रहन-सहन, आर्ष पद्धति से शिक्षा-दीक्षा, समस्त विषयों का अध्ययन व्यवहारिक ज्ञान, योगाभ्यास आदि की पूर्ण व्यवस्था है। खान-पान आदि का मासिक शुल्क मात्र ३००) रुपये रखा गया है। विशेष परिस्थितियों में इसे कम अथवा नि:शुल्क भी किया जा सकता है इच्छुक बालक अपने अभि-भावकों सहित शीघ्र सम्पर्क करें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-१-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O. on 12-13-1-1995

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह एवं श्री सूर्यदेव जी का अभिनन्दन

शनिवार २४ दिसम्बर को गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर दिल्लीमें दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के तत्वावधानमें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बडे समारोह पूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने की । इस अवसर पर श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय डा० प्रेम चन्द श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली सभा, श्री हरिप्रसाद शास्त्री, आचार्य हरिदेव जी आदि अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे और स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यो पर प्रकाश डाला । श्री सत्यपाल पथिक जी के मनोहर भजन हुये ।

श्री कृष्णलाल सिक्काजी प्रधान दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा ने ग्यारह हजार रुपये वेद विद्यालय गौतमनगर को दान दिया इसी प्रकार दक्षिण दिल्ली की अन्य समाजों ने भी अपना आर्थिक सहयोग दिया ।

अभिनन्दन समारोह

इस अवसर पर श्री सूर्यदेवजी का गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनने पर दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजों की ओर से फूल मालाओं द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया । स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व स्वामी दीक्षानन्द जी ने उन्हे आशीर्वाद दिया ।

—रोशनलाल गुप्ता, महामन्त्री

वानप्रस्थ आश्रम नोएडा

आर्य समाज नोएडा के तत्वावधान में वानप्रस्थ आश्रम निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है । ५०वर्ष से अधिक के पुरुष अथवा महिलायें जो वैदिक धर्म मे आस्था रखती है इसमें आजीवन निवास के लिए कमरा बनवा सकते हैं । अथवा एक लाख रुपये की राशि एक बार में या चार किस्तों मे नकद अथवा देय चैक द्वारा वानप्रस्थ आश्रम, आर्य समाज मन्दिर नोएडा को भेजकर अपना कमरा आरक्षित करवा सकते हैं । प्रातः साय सन्ध्या हवन, भजन, प्रवचन एवं योग साधना का विशेष प्रबन्ध है । समस्त महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कि हमारे इस प्रयास को सफल बनाने मे तन-मन-धन से सहयोग करें ।

आर्य वीर दल शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

गुरुकुल कृष्णपुर जिला फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में आर्य वीर दल का शिविर (२६ दिसम्बर ९४ से १ जनवरी ९५ तक) आचार्य चन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रशिक्षण हरिसिंह आर्य एवं दिनेश आर्य द्वारा किया गया इस शिविर में ५५ आर्य वीरों ने भाग लिया जिसमें ६ आर्य वीरो ने आजीवन आर्य वीर दल का कार्य करने का व्रत लिया । समारोह की अध्यक्षता धर्मवीर आर्य तथा संयोजक श्री लाला जवाहर जी आर्य थे । इस शिविर की भोजन व्यवस्था कायमगज आर्यसमाज की ओर से मंडलपति डा० सर्वेशकुमार आर्य तथा सहयोगियों द्वारा की गयी । उपसचालक आर्य मुनि जी की अध्यक्षता में आर्य वीरों के भव्य प्रदर्शन के साथ शिविर सम्पन्न हुआ सभी ने आर्य वीरों की भूरि-भूरि प्रशंसा की देश का भविष्य आर्य वीर ही उज्ज्वल कर सकते हैं ।

—हरिसिंह आर्य, कार्यालयमन्त्री

आर्य वीर दल गुलबर्गा प्रगति पथ पर

आर्य वीर दल गुलबर्गा तथा आर्य समाज द्वारा योगशिविर का आयोजन १५ से २१ दिसम्बर तक किया गया जिसमें प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य ने ७५ लोगों को ध्यान, योगासन, प्राणायाम तथा विविध रोगों की चिकित्सा योग द्वारा करने का प्रशिक्षण दिया । दीक्षान्त समारोह मे भूतपूर्व स्वास्थ्य मन्त्री कर्नाटक और प्रसिद्ध उद्योगपति एस०एस० पाटिल पधारे । उन्होंने प्रतिवर्ष योग शिविर का आयोजन करने का वचन दिया । डा० आचार्य प्रतिदिन सायकाल को आर्य वीर दल की शाखाओं का निरीक्षण करते रहे । इस समय गुलबर्गा मे चार शाखायें नियमित चल रही हैं ।

गोविन्दराव आर्य, प्रधान
व्यायाम शिक्षक, कर्नाटक

आर्य वीर दल महाराष्ट्र के अधिकारियों की नियुक्ति

लातूर डा० देवव्रत आचार्य प्रधान संचालक द्वारा आर्य समाज के प्रागण में १३ से २० नवम्बर तक योग साधना तथा आर्य वीर दल का स्थानीय शिविर लगाया गया । २६ नवम्बर को महाराष्ट्र आर्य वीर दल की कार्यकारिणी की बैठक डा० आचार्य की अध्यक्षता में हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिये निम्न अधिकारी नियुक्त किये गये ।

प्रान्तीय संचालक—श्री एकनाथ नानेकर

मन्त्री—	प्रा० अरुण मदनसुरे
प्रचार मन्त्री—	श्री यादव भागे
व्यायाम शिक्षक—	श्री रामचन्द्र सेवते
अधिष्ठाता	श्री व्यंकटेश हालिंग
कोषाध्यक्ष—	श्री विजयकुमार आर्य

ग्रीष्म कालीन शिविर धारूर जिला बीड़ में २-३ मई से लगाने का निश्चय किया गया ।

—मन्त्री आर्य वीर दल महाराष्ट्र

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष . ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४८] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ माघ कृ० ६ स० २०५१ २२ जनवरी १९९५

पंजाब के पटियाला जिले मे बूचड़खाना खुलने का विरोध

गत ३ माह से नवयुवकों द्वारा आमरण अनशन जारी

श्री वन्देमातरम् द्वारा धरना स्थल का दौरा तथा आन्दोलन को समर्थन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आज दिल्ली के जन्तर-मन्तर पार्क पर गत ३ माह से धरने पर बैठे पजाब के अनशनकारी नवयुवको से भेंट की। उल्लेखनीय है कि ये अनशनकारी १६ अक्तूबर १९९४ से पजाब के पटियाला जिले मे प्रस्ताविन बूचडखाने की योजना को पूर्णत बन्द करने की माग को लेकर बारी-बारी से भूख हडताल पर है।

अक्तूबर मे बूचडखाने का उद्घाटन एक केन्द्रीय मन्त्री द्वारा किया जाना था परन्तु इन नवयुवको द्वारा सामूहिक आत्मदाह की धमकी के कारण वह उद्घाटन समारोह तो टल गया परन्तु योजना पर कार्य जारी रहा। अब तीन माह से अधिक समय बीतने पर भी सरकार द्वारा इस प्रस्तावित योजना को रद्द नही किए जाने के कारण आगामी २६ जनवरी को कुछ साधु सन्तो ने इन युवको के साथ पुन आत्मदाह की घोषणा की है।

श्री वन्देमातरम्, न्याय सभा सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा आर्यसमाज हनुमान रोड के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा और अन्य पदाधिकारियो के साथ आज अनशन स्थल पर गए तथा अनशनकारी युवको से आग्रह किया कि वे आत्मदाह जैसे अवैदिक मार्ग को न अपनाए क्योकि आन्दोलन के और भी कई अन्य मार्ग उपलब्ध हैं। श्री वन्देमातरम् ने कहा कि नवयुवको को भविष्य मे आने वाले खतरो से भी जूझने के लिए तैयार रहना है अत आत्मदाह से कोई हल नही निकलेगा। दिल्ली मे इन अनशनकारियो को आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा आश्रय दिया गया है।

श्री वन्देमातरम् जी ने पजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह को एक पत्र लिखकर उनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया है, पत्र मे कहा गया है कि भारतीयो की अहिंसात्मक प्रकृति और भारत की सस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने वाली इन योजनाओ से स्वय को दूर रख अन्यथा देश की जनता का आक्रोश आपको झलना पडेगा।

इस अंक के आकर्षण

श्री सोमनाथ मरवाह अधिवक्ता सुप्रीम-कोर्ट की अध्यक्षता मे श्री दरबारीलाल का अभिनन्दन समारोह

नई दिल्ली, १२ जनवरी। आर्यसमाजी नेता श्री दरबारीलाल द्वारा देश व समाज के प्रति की गई निष्ठापूर्ण सेवाओ के लिए आज यहा उनका भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया। वह हाल ही मे डी० ए०वी० कालेज प्रबन्धक समिति के प्रधान चुने गये हैं।

श्री दरबारीलाल के ९२वे जन्मदिवस पर यह समारोह यहा सिरी फोर्ट आडिटोरियम मे आयोजित किया गया। विदेश राज्य-मन्त्री रघुनन्दनलाल भाटिया ने दो पुस्तको आर्य जगत् के भगीरथ दरबारीलाल' और चले देश मे देश की भाषा का लोकार्पण किया। एक अभिनन्दन पत्र पढा गया जिसमे श्री दरबारीलाल को प्रभावशाली शिक्षा शास्त्री योग्य प्रशासक और सर्वजन उपकारी बताया गया। सासद श्री जगमोहन ने डी०ए० वी० का विशाल पुस्तकालय स्थापित करने का सुझाव दिया। श्री सोमनाथ मरवाह ने समारोह की अध्यक्षता की।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भारतीय भाषाओं का उत्थान सख्त कानून से ही होगा

'केन्द्रीय विधि पत्रिका' का विमोचन दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव द्वारा हुआ

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने 'केन्द्रीय विधि पत्रिका' का विमोचन दिल्ली के स्पीकर हाल मे करते हुए कहा कि देश में हिन्दी को वास्तव मे राष्ट्र भाषा का गौरव न्यायालयो मे इसे लागू करके ही दिलवाया जा सकता है। हिन्दी और अन्य समस्त भारतीय भाषाओ का उत्थान तभी सम्भव है जबकि इनके लागू करने के लिए सख्त कानून बनाया जाय तथा उनका पालन न करने वालो पर केवल जुर्माना ही नहीं सजा का भी प्रावधान रखा जाए।

श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव ने कहा कि दक्षिण के लोग हिन्दी-विरोधी नहीं है। केवल मात्र राजनीतिक दलो द्वारा अपने को प्रान्तीय भाषाओ का सर्वोच्च समर्थक साबित करने के उद्देश्य से हिन्दी विरोध का राग अलापा जाता है। जबकि वास्तव मे जब वे हिन्दी के मुकाबले पर अंग्रेजी को स्थापित करने का दुष्प्रयत्न करते हैं तो इससे प्रान्तीय भाषा का ही नही, प्रान्त के लोगो का आर्थिक और सामाजिक अहित होता है। देश के विभिन्न हिस्सों से सामाजिक तथा व्यापारिक सम्पर्क बनाने के लिए हिन्दी ही एकमात्र सम्पर्क भाषा बन सकती है। ऐसा दक्षिण की जनता भी मानती है।

'केन्द्रीय विधी पत्रिका' का प्रकाशन समस्त केन्द्रीय कानूनो, नियमो अधिनियमो, अधिसूचनाओ आदि का हिन्दी अनुवाद वकीलो को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है। सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी इस पत्रिका के मुख्य सम्पादक है।

पत्रिका के विमोचन समारोह की अध्यक्षता मध्यप्रदेश के सेवानिवृत मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शिवदयाल जी ने की। इस समारोह मे भाषा के अध्यक्ष डा० वेदप्रताप वैदिक के अतिरिक्त दिल्ली के कई प्रसिद्ध अधिवक्ताओ ने भी अपने विचार रखे। अन्त मे न्यायमूर्ति श्री महावीरसिंह जी ने आगन्तुको का धन्यवाद किया। मंच सचालन केन्द्रीय विधि मन्त्रालय के सेवानिवृत अवर सचिव श्री ब्रजकिशोर जी ने किया।

मध्यप्रदेश उच्चन्यायालय के ही एक अन्य सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री बघावत के अतिरिक्त ससद सदस्य श्री सोमपाल श्री राजेन्द्र कुमार तथा उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता सर्वश्री बी एल मलिक, विमल वधावन तथा सुश्री कुसुम सिह इस विधि पत्रिका के परामर्श मडल के सदस्य हैं।

सार्वदेशिक सभा प्रधान के कार्यक्रम

१३ जनवरी	श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव आज हैदराबाद के लिए रवाना हो गए। वहा से वे लातूर तथा गुलबर्गा और बगलोर का भी दौरा करेंगे।
	दक्षिण के चार राज्यो का एक सयुक्त सम्मेलन शीघ्र ही बुलाए जाने की तैयारिया की जा रही हैं।
२२ जनवरी	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित विशाल आर्य युवा सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।
	२२ जनवरी के बाद दिल्ली मे प्रवास।
१३ फरवरी	भोपाल मे श्री गौरी शकर कौशल द्वारा आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन मे भाग लेने के लिये १२ फरवरी रात्रि मे प्रस्थान।

आर्य पर्वों की सूची

सन् १९९५ तदनुसार २०५१-५२

क्र०स० नाम पर्व	चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	वार
१—मकर सक्रान्ति	पौष सुदी १३	२०५१	१४-१-९५	शनिवार
२—बसन्त पचमी	माघ सुदी ५	२०५१	४-२-९५	शनिवार
३—सीताष्टमी	फा० वदी ८	२०५१	२२-२-९५	बुधवार
४—महर्षि दयानन्द जन्म दिवस	फा० वदी १०	२०५१	२४-२-९५	शुक्रवार
५—शिवरात्रि (म० दयानन्द बोध दिवस)	फा० वदी १३	२०५१	२७-२-९५	सोमवार
६—लेखराम तृतीया	फा० सुदी ३	२०५१	४-३-९५	शनिवार
७—नवसस्येष्टि (होली)	फा० सुदी १४	२०५१	१६-३-९५	गुरुवार
८—आर्यसमाज स्थापना दिवस(नवसवत्सर)	चैत्र सुदी १	२०५२	१-४-९५	शनिवार
९—रामनवमी	चैत्र सुदी ९	२०५२	९-४-९५	रविवार
१०—हरितृतीया	श्रावण सुदी ३	२०५२	३०-७-९५	रविवार
११—श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन)	श्रावण सुदी १५	२०५२	१०-८-९५	गुरुवार
१२—श्री कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र वदी ८	२०५२	१८-८-९५	शुक्रवार
१३—विजयादशमी	आश्विन सुदी, १०	२०५२	३-१०-९५	मगलवार
१४—गुरु विरजानन्द दिवस	आश्विन सुदी, १२	२०५२	५-१०-९५	गुरुवार
१५—महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिकवदी, १४	२०५२	२३-१०-९५	सोमवार
१६—स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष सुदी, २	२०५२	२३-१२-९५	शनिवार

टिप्पणी —आर्य समाजें इन पर्वो को उत्साह पूर्वक मनावें।

देशी तिथियो मे घटबढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

दर्शनानन्द जयन्ती समारोह

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती की १३३ वी जयन्ती दिनाक २६-१-९५ से २८-१-९५ तक हर्षोल्लास के साथ मनायी जा रही है।

डा० ए कौशिक, सह कुलसचिव न जानकारा देते हुए बताया कि श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने सन १९०८ ई० मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की स्थापना की थी। यह सस्था भारतीय संस्कृति एव उच्चतम सस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार मे अग्रगण्य है। इस जयन्ती समारोह पर छात्रो की विभिन्न प्रकार की जनपदीय स्तरीय क्रीडा प्रतियोगितायें आयोजित की जा रही हैं जो इस जयन्ती समारोह के विशेष आकर्षण हैं।

नामकरण संस्कार

जमानिया कस्बा आर्य समाज के मन्त्री नन्दकिशोर आर्य के द्वितीय पुत्र का नामकरण सस्कार सम्पन्न हुआ बालक का नाम सौरभ कुमार रखा गया। इस अवसर पर आगन्तुक सभी गणमान्य व्यक्तियो ने बालक को आशीर्वाद दिया।

सम्पादकीय

मकर संक्रांति पर्व

सक्राति या सक्रमण का अर्थ है सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना। वस्तुत पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है, पर हमे यही आभास होता है कि आकाश-मार्ग मे सूर्य ही स्थिर पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। सूर्य के इस दिखाऊ आकाश-मार्ग को क्रातिवृत्त का नाम दिया गया है। इस क्रातिवृत्त को १२ समान भागो मे विभक्त करके इन्हे मेष, वृषभ, मिथुन, धनु, मकर, कुभ आदि राशि नाम दिए गये है। साल भर मे इन बारह राशियो मे से सूर्य के बारह सक्रमण होते हैं।

जब सूर्य धनु राशि को छोडकर मकर राशि मे प्रवेश करता है, तब मकर सक्रान्ति होती है। इस सक्राति का सबसे ज्यादा महत्त्व मिला है, तो इसके कुछ कारण हैं। एक समय था जब सूर्य मकर राशि मे प्रवेश करता था, तब सचमुच ही उत्तरायण का आरम्भ होता था। यदि हम सालभर पूर्व दिशा मे सूर्योदय के स्थान का निरीक्षण करें, ता स्पष्ट हो जाता है कि सूर्य छह महीने कुछ उत्तर की ओर से उदित होता है और छह महीने कुछ दक्षिण की ओर से दक्षिण छोर पर पहुचने के बाद सूर्य पुन उत्तर की ओर बढता है। रविमार्ग के उस सबसे दक्षिण छोर या बिन्दु को ही दक्षिणायनत या उत्तरायणारभ कहते है। उस समय रात सबसे बडी और दिन सबसे छोटा होता है। मगर उस दिन के बाद धीरे-धीरे दिन बडे और राते छोटी हाती जाती है।

उत्तर गोलार्ध मे रहने वाले भारतीयो के लिए उत्तरायणारभ का दिन कितना महत्वपूर्ण रहा होगा, यह समझना ज्यादा कठिन नही है। उस दिन के बाद दिन अधिकाधिक बडे होते जाते हैं, अधिकाधिक सूर्य-प्रकाश और सूर्य-ताप मिलता है। इसलिए उत्तरायणारभ का स्वागत एक उत्सव के रूप मे होना एक स्वाभाविक बात थी। जाहिर है कि किसान उत्तरायण प्रारम्भ होने की आतुरता से प्रतीक्षा करते होगे। अधिक ठडे प्रदेश म रहने वाले आर्य भाषियो के पूर्वजो को उत्तरायणारम्भ बहुत ही आनन्ददायक लगता होगा। पता चलता है कि प्राचीन काल मे एक समय ऐसा भी रहा है जब उत्तरायणारम्भ के दिन से ही वर्षारम्भ माना जाता था। इसी समय मे शिशिर ऋतु का आरम्भ होता है और महाभारत के अश्वमेधपर्व मे स्पष्ट कहा गया है कि ऋतुओ म प्रथम शिशिर है (ऋनव शिशिरादय)।

वैदिक साहित्य मे उत्तरायण के लिए उदगयन देवयान आदि शब्द दखन को मिलते ह। उत्तरायण के काल को शुभ समझा जाना था। भीष्म तब तक शरशय्या पर लेटे रहे, जब तक उत्तरायण का आरम्भ नही हुआ। महाभारत काल मे उत्तरायण का आरम्भ श्रवण नक्षत्र (माघ मास) मे होता था।

वेदाग-ज्योतिष मे बताया गया है कि उत्तरायण का आरम्भ धनिष्ठा के प्रारम्भ मे होता है। वैदिक साहित्य यहा तक कि महाभारत मे भी राशिया का उल्लख नही है। उस समय नक्षत्रो के सम्बन्ध म कालो का उल्लेख किया जाता था। ईसा की आरम्भिक सदिया म बेबीलानी-यूनानी राशि नामो के आधार पर भारत मे १२ राशियो का प्रचलन हुआ, तभी उत्तरायणारम्भ के लिये मकर सक्राति शब्द अस्तित्व मे आया और यह एक पवित्र दिन माना जाने लगा। अपने धर्मशास्त्र का इतिहास मे महामहोपाध्याय काणे भी स्पष्ट लिखते हैं कि, 'चाहे जो हो, ईसवी सन के आरम्भकाल से अधिक प्राचीन मकर-सक्राति नही है।'

अब तो उत्तरायण का प्रारम्भ और मकर सक्राति का भी कोई सम्बन्ध नही रह गया है। अब उत्तरायण का प्रारम्भ २१ दिसम्बर को होता है। उसी दिन से राते छोटी और दिन बडे होने लगते है। मगर मकर-सक्राति अब १४ जनवरी को पडती है। इस तरह, वास्तविक उत्तरायणारभ और मकर-सक्राति मे अब २३ दिन का अन्तर है।

यह कैसे हो गया ? यह अयन-चलन के कारण हुआ है। अयन-चलन के कारण विषुव-बिन्दु के साथ-साथ उत्तरायणारम्भ और दक्षिणायनारभ बिन्दु भी क्रान्तिवृत्त पर पूर्व से पश्चिम की ओर सरकते रहते हैं—प्रत्येक ७२ वर्ष मे एक अश। अब ये बिन्दु पिछले करीब सत्रह सौ वर्षों मे लगभग २३ अश पश्चिम की ओर सरक गए हैं। वराहमिहिर के समय (ईसा की छठी सदी) मे उत्तरायण का आरम्भ उत्तराषाढा (मकर राशि) मे ही हाता था, मगर अब तब होता है जब सूर्य मूल नक्षत्र (धनु राशि) मे रहता है। अब उत्तरायणारभ का सम्बन्ध धनु-सक्राति से है।

न केवल उत्तरायणारम्भ से आज की मकर सक्राति का सम्बन्ध टूट गया है, बल्कि इससे सम्बन्धित धार्मिक कृत्य भी काफी बदल गये हैं। सक्राति का देवीकरण हो गया हैं। कथा गढी गई कि इस दिन देवी ने सकरासुर का नाश किया। पचाग मे इस देवी का चित्र दिया जाता है। हर वर्ष इस देवी के वाहन, वस्त्र, अवस्था, अलकार, भक्षण आदि चीजे भिन्न-भिन्न होती है और इन्हे भावी शुभाशुभ घटनाओ का सूचक माना जाता है। उत्तरायणारभ जैसी ज्योतिष की विशुद्ध धारणाए किस प्रकार फलित ज्योतिष या धार्मिक अन्ध-विश्वास बनती गई, इसका यह एक ज्वलत उदाहरण है।

सक्रातिकाल को पुण्यकाल माना जाता है। उस दिन समुद्र या प्रयाग व गगासागर जैसे तीर्थो मे स्नान किया जाता है उस दिन इन स्थानो पर बडे मेले लगते है। सक्राति मे तिल का काफी प्रयोग होता है विशेषकर दक्षिण भारत मे। महाराष्ट्र मे तिल-गुड बाटा जाता है, और कहा जाता है 'तिल-गुड लीजिए और मीठा-मीठा बोलिए।' बगाल मे तिल मिलाकर 'तिलुआ-नामक एक पदार्थ बनाया जाता है, इसलिये मकर सक्राति को तिलुआ-सक्राति भी कहते है। उत्तर भारत मे दाल और भात की खिचडी पकाते है और दान देते हैं, इसलिए सक्राति को खिचडी सक्राति भी कहते हैं। इसी समय दक्षिण भारत मे तीन दिवस चलने वाला पोगल नामक महोत्सव मनाया जाता है। इनमे दूसरे दिन का उत्सव सूर्यपोगल कहलाता है। इसी दिन दूध और चावल की खीर पकाई जाती है। पोगल शब्द का अर्थ ही है पकाना। अर्थात, पोगल एक प्रकार का पाकोत्सव है।

आज मकर सक्रान्ति एक सामाजिक उत्सव मे रूपान्तरित हो गई हैं और इसके साथ कुछ धार्मिक अधविश्वास भी जुड गए है। परन्तु हमे यह सदैव स्मरण रखना चाहिए यह मूलत उत्तरायणारम्भ का उत्सव है भले ही आज मकर सक्राति २३ दिन बाद मनाई जाती है। वैदिक कृषक-समाज ने इस उत्सव का जन्म दिया था। उत्तरायणारभ के जिस दिन से सूर्य-ताप अधिकाधिक मात्रा म मिलने लगता है वह सबके लिये हमेशा ही एक सुखदायी समय रहा है, और इसीलिए प्राचीन काल से एक आनन्दोत्सव के रूप म मनाया जाता रहा है।

भारत मां शेरां वाली है

भारत मा शेरा वाली है हमारी मा शेरा वाली है।
जिसके शेरो की दुनिया मे धाक निराली है॥
एक था शेर प्रताप महाराणा जो कभी हार नही माना।
जिसने सारी उम्र वनो की खाक छानी है॥ भारत मा ॥ १ ॥
एक था शेर शिवाजी अलबेला जो था तलवारो से खेला।
जिसने औरगजेब की, भाईयो नीद चुराली है ॥ भारत मा ॥२॥
एक था शेर कलगीया वाला जिसका नाम गोविन्द प्यारा।
देश धर्म की खातिर जिसने पुत्रो की बलि चढाली है ॥ भारत ॥३॥
एक था शेर ऊधम सिंह मतवाला
जिसने था इगलैण्ड मे डायर मारा
जलिया वाले बाग की जिसने कीमत चुकाली है ॥ भारत मा ॥४॥
एक था शेर सुभाष बोस जिसने उडाए अग्रेजो के होश।
आजादी की खातिर जिसने हिन्द फौज बनाली है ॥भारत मा ॥५॥
एक था शेर दयानन्द स्वामी, जो रहा सदा वेदो का हामी।
छुआछात पाखण्ड की जिसने नीव हिलादी है ॥ भारत मा ॥ ६ ॥
एक थी शेर लक्ष्मीबाई, सीता-सावित्री गार्गी माई।
कहे कहिल नकली शेर पर नकली माता नही हमारी है ॥ ७ ॥

—ओमप्रकाश कहिल

उप प्रधान आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-९२

वेदान् कोउद्धरिष्यति

ब्रह्मदत्त स्नातक

ऋषि दयानन्द का सबसे महत्वपूर्ण कार्य वेदो की रक्षा करना और सर्व साधारण को वेद की शिक्षाओ पर आचरण कराना था। इसी प्रयोजन से उनके जीवन काल में संस्कृत पाठशालाये स्थापित हुई थी। उनके निधन के बाद इसी उद्देश्य से डी०ए०वी० कालेज और गुरुकुलो की स्थापना हुई। यह कर्यक्रम कितना सफल रहा इसको स्पष्ट करने के लिये नीचे लिखा विवरण पर्याप्त है।

गुरुकुलो मे पढकर जो स्नातक निकले उनमे अधिकतर आयुर्वेदालकार, या विद्यालकार बनकर समाज के क्षेत्र मे आये इनमे से जिन्होने आयुर्वेद या अन्य व्यवसाय, सम्पादन लेखन के कार्य किये उनको आर्थिक चिन्ता का सामना नही करना पडा। इसी तरह अध्यापन के कार्य मे जो गये उनकी आजीविका भी कुछ न कुछ चलती रही, परन्तु वेद का अध्ययन ही जिनका आधार था, उनके लिए जीविका की समस्या मु ह बाये रहती थी इसका कारण है वेदो के प्रति आर्य समाजियो की रुचि और अध्ययन की कमी। अपनी बात को उदाहरण सहित देखने का ताजा विवरण प्रस्तुत है।

आर्य समाज का प्रथम गुरुकुल स्वामी दर्शनानन्द जी ने सिकन्दराबाद, (उ०प्र० मे स्थापित किया। वहा से वह गुरुकुल फर्रुखाबाद लाया गया और अन्त मे वृन्दाबन मे राजा महेन्द्र प्रताप के बगीचे मे आ गया। इस लगभग १०० साल के जीवनकाल मे वेदो के अध्ययन अध्यापन मे सक्षम पढ़कर निकले स्नातको की सख्या मुश्किल से १० रही है।

१६३७ मे उक्त गुरुकुल से पढकर दो वेद शिरोमणि स्नातक बनकर निकले इससे पिछले वर्ष मे सिद्धान्त शिरोमणि या आयुर्वेद शिरोमणि बने वे शुद्ध वेद के अध्ययन और अध्यापन मे समर्थ नही रहे। उक्त वर्ष मे उत्तीर्ण होने वालो मे [एक प० आर्येन्द्र मिश्र आज वृद्धावस्था मे असहाय रोगी होकर अपने भाई के सरक्षण मे हापुड आर्यसमाज मे रह रहेहैं। वे निसन्तान हैं और पत्नी दिवगत हो गई। दूसरे वेद शिरोमणि प० भूदेव वेद-शिरोमणि एव शास्त्री हैं। गुरुकुल मे पढने के बाद आजन्म ब्रह्मचारी रहे हैं। और सम्प्रति ८१ वर्ष की अवस्था मे पजाब के फगवाडा नगर के आर्य हाई स्कूल के भीतर एक छोटी सी कोठरी मे जीवन यापन करते हैं। उनके स्वास्थ्य का टेलीफोन मिलने पर मैं वहा पहुचा और उनकी फालिज बेहोशी की दशा को देखकर आखो मे आसू आ गये। उनके परिवार मे कोई भी स्त्री पुरुष नही है। वे हैदराबाद सत्याग्रह मे भी गये थे और इन पक्तियो के लेखक ने सम्मान पेशन केन्द्रीय और राज्य सरकारो से स्वीकृत करा दी थी शिमला और हिमाचल के दुर्गम स्थानो मे और बाद मे पजाब की समाजो मे काम करते रहे हैं। जीवन मे जो कुछ भी उनको दक्षिणा या भेंट स्वरूप मिला उसका विवरण हमे नही मालूम। ज्ञात हुआ है कि ऐसा धन उन्होने इधर-उधर बाट दिया परन्तु फालिज से बीमार होने के बाद अब उनकी चिकित्सा और सेवा सुश्रु षा कौन करें? इसी प्रसग मे मुझे अपने पूर्वाश्रम के पिता का स्मरण होता है जिन्होने स्वामी विश्वेश्वरानन्द के रूप मे अन्तिम क्षणो तक समाज की सेवा करके अपने प्राण अबोहर (जिला—फिरोजपुर, पजाब) मे त्यागे।

उनकी शव यात्रा मे उनका पुत्र या और कोई सम्बन्धी शामिल नहीथा और स्त्री पुरुषो नागरिको ने उनका दाह सस्कारकिया। इसी नगर मे स्वामी जी की पत्नी ने १६०६ मे आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना की थी। जो आज भी भली-भाति चल रही है। स्वामी जी का देहान्त ८२ वर्ष की अवस्था मे केन्सर से हो गया था। वेद के स्नातक की एक करुण कथा आर्य समाज के सामने प्रश्न है कि वेद का पठन-पाठन किस प्रकार और किस व्यवस्था से आर्यसमाज चलाना चाहता है। निश्चय ही इसकी प्रगति मे गहन विचार होना चाहिए।

सी० ४ बी०/१३२ बी० जनकपुरी
दिल्ली-५८

पुस्तक समीक्षा

राजन्ता-वशनाशव
पृ० ६० मू० ५० रु०
लेखक डा० सुद्युम्न आचार्य
प्रकाशक—वेदवाणी वितानम्
कोलगवा सतना (म० प्र०)

"राजन्ता वशनाशव" मे निबन्धो का आकलन सस्कृत के माध्यम से प्रकाशन कर साहित्य परम्परा को शक्ति सम्पन्न किया है। सस्कृत शैली से दर्शन विज्ञान जैसे गूढ विषयो पर रोचक शैली देकर स्तुत्य प्रयास किया है।

"दर्शनशास्त्र गणित भौतिक विज्ञान च, घृताधार पात्र यात्राधार वा घृतम्" जलप्लाविन कथाया आधुनिक विज्ञानम्॥

जैसे माता आयामो का दर्शन कराती है। इन गवेषणा पूर्ण लेखो का प्रभावपूर्ण विवेचन आचार्य सुद्युम्न जी के पाण्डित्य का परिचायक है प्रस्तुत पुस्तक सस्कृत शैली मे लिखकर हिन्दी-भाषा मे अनुदित कर समझने मे सुगम कर दिया है।

ज्ञानधारा को प्रवर्द्धित करने मे विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द लिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अनुसरण करके उत्पत्ति मूलक अर्थ पदार्थो का सूक्ष्म प्रक्षण है ग्रन्थ को रोचक बनाने हेतु आस्तिक-नास्तिक दर्शन, भाषा विज्ञान भौतिक विज्ञान आदि निबन्ध सस्कृतज्ञ पाठको की वैज्ञानिक बु द्ध को प्रबुद्ध करने वाले मूलतत्व हैं। लेखक विद्वान् पण्डित हैं जिनसे इस परम्परा की सवृद्धि हुई है। विद्वान् आचार्य सुद्युम्न को उन्नति पथ पर अग्रसर करने मे पाठक वृन्द रुचि लेंगे और उनको समृद्ध करते रहेगे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वानप्रस्थ आश्रम निर्माण का शुभारम्भ

परम पिता की पावन प्रेरणा से ६ नवम्बर १९९४ को शुभ अवसर उपस्थित हुआ, जब राजधानी के कोलाहल व भीडभाड से परे, दिल्ली महानगरी से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम,लेखराम नगर मे वानप्रस्थ आश्रम का शिलान्यास दयानन्द की विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु सम्पन्न हुआ।

उपस्थित जनो मे समृद्ध परिवारो की आर्य देवियां बडी सख्या मे सम्मिलित थी तो वे ग्रामीण महिलाए भी थीं जिन्होंने कई-कई किलोमीटर की दूरी पैदल चलकर पूरी की थी।

धनी निर्धन और सम्पन्न तथा विपन्न का कोई भेदभाव वहा किसी को भी अनुभूत नही हो रहा था। क्योकि सभी की मन वीणा को वेद के प्रति श्रद्धा की भावना ही झकृत कर रही थी।

शिलान्यास से पूर्व सम्पन्न हुए यज्ञ मे दिल्ली से पहुचे आर्य नर-नारियो के अतिरिक्त ग्रामीण जन भी अच्छी सख्या मे सहभागी बनेथे। विशाल सभा की अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने की। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों ने पधार कर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा वैदिक दर्शन पर प्रकाश डाला।

आज का ज्वलंत प्रश्न—

आर्यसमाज और प्रचलित राजनीति (२)

प्रो० भवानी लाल भारतीय

आज भी स्थिति बदली नही है। देश की राजनीति मे भाग लेने वाला कोई भी आर्यसमाजी स्वरुचि के अनुसार राजनीति करे, इसमे किसी को कोई आपत्ति नही, किन्तु उसे यह तो देखना होगा कि किसी राजनैतिक दल मे जाने से क्या उसके आर्यसमाजी चरित्र का क्षरण तो नही हो रहा है। यह तो प्रत्यक्ष है कि कोई आर्य समाजी मुस्लिम लीग या अकाली दल जैसे किसी साम्प्रदायिक राजनैतिक दल का सदस्य नही बन सकता। तथापि यह मानना होगा कि आर्य समाज का किसी भी राजनैतिक दल से कोई सीधा सम्बन्ध नही रहेगा और न आर्य समाज को आर्यसमाज के रूप में भारत या किसी अन्य देश की राजनीति मे प्रत्यक्ष भाग लेने दिया जायेगा। इसका एक अन्य कारण यह भी है कि आर्यसमाज मे सहस्रो सरकारी कर्मचारी हैं। वे अपने सेवा नियमो के अनुसार शासकीय सेवा मे रहते हुये किसी भी राजनैतिक दल के सदस्य नही बन सकते। तब क्या आप थोडे से राजनैतिक महत्त्वाकाक्षा रखने वाले लोगो के लिये इन हजारो लाखो सरकारी नौकरी से जीविका कमाने वाले आर्य समाजियो की जान को सासत मे डालेंगे। फिर हजारो ऐसे भी आर्यसमाजी हैं जिनकी किसी देश की प्रचलित राजनीति मे कोई दिलचस्पी नही है। आप उन्हे राजनीति मे प्रविष्ट होने के लिये बाध्य कैसे कर सकते हैं।

तथापि इसका यह अर्थ नही कि भारत के आर्यो को आर्यसमाज से अनुप्राणित सिद्धान्तों के आधार पर मात्र इस देश के लिये ही कोई पृथक् राजनैतिक दल गठित करने से कोई रोक सकता है। इस प्रकार की कोई रुकावट नही है। आप चाहे तो इन्द्र विद्यावाचस्पति, अलगूराम शास्त्री तथा चौधरी चरणसिंह की भाति कट्टर काग्रेसी रहकर राजनीति कर। अथवा कतिपय अन्यो की भाति जनता दल समाजवादी पार्टी अथवा समाजवादी जनता दल मे प्रविष्ट होकर राजनीति मे भाग ले। कदाचित आप इनसे सन्तुष्ट न होकर अपना कोई स्वतन्त्र राजनैतिक दल भी गठित करे तो किसी को कोई आपत्ति नही है। विगत मे ऐसे अनेक प्रयास हुए हैं किन्तु वे कितने सफल हुये यह एक भिन्न बात है। देश के आजाद होने के पहले रामगोपाल शास्त्री वैद्य और अजीतसिंह सत्यार्थी ने आर्य स्वराज्य सभा का गठन किया था। जनसघ के सस्थापको मे भी अनेक गण्यमान्य आर्यसमाजी बलराज मधोक आदि थे। प० बुद्धदेव विद्यालकार तथा बालदिवाकर हस ने लोकसघ की स्थापना जनसघ के स्थापित होने के पहले ही की थी। साठ के दशक मे पुन रामगोपाल शास्त्री वैद्य ने भारतीय लोक समिति बनाई। आर्य सभा के जन्म और अन्त की चर्चा हम कर ही चुके हैं। अब कुछ वैसा ही प्रयोग करने का विचार पुन हमारे कुछ मित्रो मे हो रहा है। यह अभी तो प्रसव पीडा के तुल्य ही है। भविष्य ही बतायेगा कि इस राजनैतिक दल रूपी शिशु का स्वरूप तथा चरित्र कैसा होगा। हमे तो उसके जन्म लेने मे भी आशका है।

आर्यसमाज को आर्यसमाज के रूप मे देश-विदेश की प्रचलित राजनीति से अलग रखकर यदि कोई आर्य विचारों के आधार पर भारत या किसी अन्य देश मे पृथक् राजनैतिक दल बनाये तो किसी को कोई आपत्ति नही। मारिशस देश के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री डा० शिवसागर रामगुलाम भी व्यक्तिगत धार्मिक आस्था की दृष्टि से आर्यसमाजी ही थे, किन्तु अपने देश मे उन्होंने लेबर दल का गठन किया। राजनीति मे उतरे और देश का शासन भी किया। यही बात यहा भी लागू होती है। तथापि अब देश के आजाद होने के ४० वर्ष पश्चात् भारतीय आर्यो को अपना राजनैतिक दल गठित करने मे अनेक कठिनाइया आयेंगी। ये कुछ निम्न प्रकार की होंगी—

१—देश के तुरन्त आजाद होते ही यहा के आर्यसमाजी यदि अपना कोई राजनैतिक दल गठित करते तो अब तक वह परिपक्व हो जाता। किन्तु यह भी कोई अनिवार्य शर्त नही है। भारतीय जनता पार्टी को तो स्थापित हुए अभी पूरे १० वर्ष भी नही हुये हैं, तथापि उसने इस देश की राजनीति मे जो अपना स्थान बनाया है, वह छिपा नही है। कोई भी कार्य कठिन नही होता।

२ एक अन्य कठिनाई यह होगी कि जो आर्य समाजी अब काग्रेस जनता दल आदि मे वर्षो से कार्यरत हैं उन्हे अपनी पार्टी से विरत कर आर्य दल मे प्रविष्ट करना कठिन होगा। और यदि सभी राजनैतिक रुचि वाले आर्य एक दल मे नही आते तो इन दलो की परस्पर टक्कर के साथ ये आर्य भी आपस मे सघर्षरत हो जायेंगे। अपने निहित स्वार्थो के कारण कोई आर्य अपने राजनैतिक दल को छोडेगा भी नही।

३—वर्तमान भारत के प्रचलित सविधान के अनुसार आर्यो के राजनैतिक दल को भी अपना धर्म निरपेक्ष रूप रखना ही होगा। एक चुनौती भरा प्रश्न यह होगा कि हिन्दुओ से भिन्न मुसलमान ईसाई आदि अल्प मतो के प्रति इस दल का क्या सम्मान होगा ? क्या यह आर्य पार्टी इन्हे अपनी सदस्यता देगी क्योंकि राजनैतिक दल के किसी धार्मिक या दार्शनिक आस्था से बधने का तो कोई सवाल ही नही है। क्या राजनैतिक दल बनाकर इन राजनीति प्रेमी आर्यों को भी अल्प मतो के तुष्टिकरण की नीति अख्तियार करनी पडेगी जैसा कि आज भी कुछ तथाकथित आर्य राजनेता सैयद शहाबुद्दीन और शबाना आजमी की हा मे हा मिलाने मे गुरेज नही करते। क्या अन्य आर्य इसे सहन करेंगे।

४—क्या आर्यो का राजनैतिक दल भारतीय राजनीति और प्रशासन को मनु याज्ञवल्क्य, शुक्र आदि आर्ष ऋषियो द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्तो पर चलाने की बात करेगा या वह मार्क्स, गाधी, लोहिया और जयप्रकाश नारायण के आदर्शों के प्रति अनुरक्ति दिखायेगा।

५—तमिलनाडु की हिन्दी-सस्कृत विरोधी, ब्राह्मण आर्य विरोधी तथा राम-कृष्ण आदि आर्य पुरुषो के प्रति विरोध वाली राजनीति से वह कैसे तालमेल रख पायेगा, अथवा वह अपनी राजनीति को हिन्दी भाषी प्रान्तो तक ही सीमित रखेगा ?

६—क्या वह इसका साहस जुटा पायेगा कि अविलम्ब मद्य निषेध, अविलम्ब गोहत्या निषेध, अविलम्ब हिन्दी की राष्ट्रभाषा पद पर स्थापना को लेकर अपना स्पष्ट मत व्यक्त करे और इन्हीं मुद्दो के आधार पर जन समर्थन जटाये और क्या इस स्थिति मे उसे व्यापक समर्थन मिल भी सकेगा।

ये और ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिन पर गम्भीरता से विचार करके ही हमारे राजनीति प्रेमी मित्रो को कोई स्वतन्त्र आर्य राजनैतिक दल के गठन की सम्भावना को देखना है। अन्यथा जल्दबाजी में वैसा ही होगा कि कोई आर्य प्रचारक मारीशस मे धर्म प्रचार के लिये गया तो वहा आर्य समाज के मच से डा० फारूख अब्दुल्ला की बुराई तथा जगमोहन की प्रशसा करने लगा—अब मारिशस के आर्य भाई आश्चर्यचकित होकर सोचने लगे कि यह कैसा वैदिक धर्म प्रचार है।

—८।४२३ नन्दनवन, जोधपुर

दक्षिण भारत की वेद प्रचार यात्रा

वेदोपदेशक — ओमप्रकाश शास्त्री, विद्या-वाचस्पति

दिल्ली से २१ अक्टूबर को प्रस्थान करके मैं श्री स्वामी वेदानन्दजी वैदिक सहित २३ ता को आर्य समाज गोपालपुरम् मद्रास पहुचा, और यात्रा समाप्ति पर ८ नवम्बर को दिल्ली आगमन् हुआ। इस यात्रा मे मद्रास के अतिरिक्त पाडिचेरी मदुरै रामेश्वरम कन्या कुमारी त्रिवेन्द्रम् और बैंगलूर मे जाता हुआ मद्रास पहुचा मद्रास आर्य समाज अच्छा काय कर रही है, तमिल भाषा में पर्याप्त सख्या मे वैदिक साहित्य प्रकाशित किया है और बहुत विशाल पैमाने पर बालक और बालिकाओ के कई डी ए वी स्कूल चला रही है। यहा के मुख्य कार्यकर्ता श्री जयदेव जी विद्यालकार, श्री सुधीर कुमार आहूजा तथा श्री भूपेन्द्रपाल जी अभी हैं। इस समाज द्वारा ऋषिनिर्वाण दिवस रविवार ६ नवम्बर को मनाया गया जिसमे हम दोनो ने ऋषि के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए दक्षिण भारत मे वेदप्रचार की आवश्यकता पर बल दिया।

पाण्डिचेरी मे हमे यह देखकर बडा खेद और आश्चर्य हुआ कि जिस महान योगी अरविन्द ने महर्षि दयानन्द और वेद विषयक ट्रैक्ट लिखकर अपनी महानता का परिचय दिया था अब उसकी समाधि बनाकर पूजना आरम्भ हो गया है। ऋषिवर दयानन्द की इच्छा के अनुसार आय समाज इस बीमारी से दूर रहा है। कविवर प्रकाश जी के शब्दो मे—ऋषि की वसीयत—समाधि न मेरी कही तुम बनाना न तुम भूलकर फूल चद्दर चढ़ाना।

न पुष्कर गया अस्थिया लेके जाना न गगा मे तुम मेरी अस्थी बहाना।
मेरी अस्थिया खेत मे डाल देना काम आयें कि जिससे कृषक दीनजन के।

मदुरै मे बहुत पूछताछ करने पर भी आय समाज का पता नही चल सका। सेतु बन्धु रामेश्वरम् मे तो पाखण्ड की लीला के अतिरिक्त कुछ था ही नही, यहा के अधिकाश निवासी तो आर्य समाज के विषय मे कुछ जानते ही नहीं हैं। कन्या कुमारी मे तो स्वामी विवेकानन्द की स्मृति मे समुद्र के मध्य मे स्वामी जी की विशाल काय मूर्ति देखकर मन ही मन मे मेरे बडी भारी कुवेदना सी हुई कि जहा लाखो लोग प्रतिदिन आते हैं वहा आर्य समाज का नामोनिशान तक नहीं है। निस्सदेह दक्षिण मे वेद प्रचार की कमी मे हमारी अपनी ही वेद प्रचार योजना मे बडी भारी त्रुटि रही है जिसका वर्णन मैं अगली कुछ पक्तियो मे करूगा। पुन केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम् मे गये जहा साराभाई इन्स्टीटयुट के डिप्टी डाइरेक्टर श्री रामकृष्ण जी शर्मा के यहा २ दिन के प्रवास मे बडा सुन्दर पारिवारिक सत्सग रहा, जिसमे आय समाज क्या है और आर्य समाज का सुधार कार्य आदि विषयो पर प्रकाश डाला गया जिसका उनके परिवार तथा पडौसियो पर उत्तम प्रभाव पडा।

तत्पश्चात् कर्नाटक की राजधानी आर्य समाज बैंगलोर मे स्वामी श्रद्धानन्द भवन पहुच कर आर्य समाज की गतिविधियों का निरीक्षण किया। इस आर्य समाज का कार्य अत्युत्तम और सन्तोषजनक है। इस आर्य समाज ने बहुत बडी सख्या में वैदिक साहित्य का प्रकाशन कन्नड भाषा में किया है। बडी प्रसन्नता का विषय है कि लाखों रुपये का वैदिक साहित्य का विक्रय प्रति वर्ष यह आर्य समाज करती है। महर्षि निर्वाण उत्सव ६ नवम्बर को बडे उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। श्री ज्येष्ठ वर्मन् जी तथा हम दोनों के भाषण हुए। सभा की समाप्ति पर नगर के मुख्य मार्गों से मशाल जुलूस निकाला गया, जिसमे वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द की जय के नारे गूज रहे थे।

इस सारे भ्रमण काल मे हमने पाया कि दक्षिण भारत में धर्म के प्रति अटूट आस्था है। यज्ञ की वेदी पर केवल एक धोती पहनकर उसी से सारा शरीर ढक कर बडे ही श्रद्धा भाव से बैठते हैं। एक बहुत बड़ी विशेषता है मन्त्रोच्चारण की सुन्दर और शुद्ध शैली की। खेद है कि हम उत्तर भारत मे इस सुन्दर शैली का आज तक भी प्रचलन नहीं कर सके हैं।

काश! हम उत्तर भारत की तरह दक्षिण भारत में भी वेद प्रचार का यत्न करते तो वहां आशातीत सफलता मिलती। हमने अपनी सारी शक्ति उत्तर भारत में ही लगाई। कार्य तो बहुत हुआ, परन्तु हमारे प्रचार शैली मैं बडा भारी दोष यह रहा कि हमने तथा हमारे कतिपय उपदेशकों तथा भजनोपदेशको योग्य और पाखण्डी शब्दो का प्रयोग करके अपने प्रति आदर तथा सम्मान का स्थान उनके हृदयो मे प्राप्त नही किया।

मथुरा जन्मशताब्दी तक तो आर्यो का जीवन आर्य जीवन रहा, जिसका प्रत्यक्ष दर्शन मैंने बाल्यकाल मे स्वयं किया है। वहा के पण्डे पुजारी भी कह रहे थे कि आर्यों के विषय में जैसा सुना था, वैसा ही पाया है। महात्मा नारायण स्वामीजी के प्रबन्ध से वास्तव में मथुरा नगरी मे सतयुग का दृश्य उपस्थित हो गया था। उसके पश्चात् पतन का सिलसिला शुरू। जिसका दिग्दर्शन सन् ३३ की निर्वाण अर्धशताब्दी मे देखने को मिला। यह महोत्सव भी महात्मा नारायण स्वामी जी की सरक्षता मे ही सम्पन्न हुआ, परन्तु वह महात्मा क्या करते। उत्थान काल मे अधिकाश आर्य लोग सन्ध्या हवन तथा स्वाध्याय के द्वारा आय जीवन का निर्माण करते थे। वह आर्य समाज का स्वर्ण युग था, जबकि किसी एक ही आर्य की साक्षी पर न्यायाधीश अपना निर्णय दे दिया करते थे। मेरे सामने ऐसी कई घटनायें घटी हैं, जिनका वर्णन विस्तार भय से मैं यहा नही कर रहा हू। आज हमारा जीवन आर्यत्व से कोसो दूर भागता चला जा रहा है। परिणामस्वरूप ईर्ष्या द्वेष की अग्नि से हमे महर्षि के ऋण से उऋण होने का तनिक भी ध्यान नहीं रहा है। कुछ प्रतिनिधि सभाओ के आपसी कलह ने आर्यसमाज के नाम को जो कलंक लगाया है उससे आय समाज को जो क्षति पहुची है वह तो अवर्णनीय ही है।

मैं आर्य नेताओ तथा आर्य जनता से विनम्र करबद्ध प्रार्थना करता हू कि वह ऋषि के महान उपकारो का स्मरण करके आई हुई त्रुटियों से अपने जीवन को बहिष्कृत करके ब्रह्मयज्ञ आदि उपायो से सच्चे आर्य बनकर ससार को पुन दिखला दें कि यह आर्य समाज अगडाई लेकर पुन जाग उठा है।

अन्त में मेरा सुझाव है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा कोई भी आर्य सस्था दक्षिण भारत मे एक आदर्श उपदेशक विद्यालय खोलकर तमिल मलयालम, कन्नड तेलगू आदि भाषाओ के माध्यम से वैदोपदेशक तैयार करे। जिससे कि दक्षिण भारत में वेद प्रचार के कार्य को प्रगति मिल सके। इत्योम।

शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम आजादनगर
दिल्ली-११००५१

इस्लामवाद : समस्या और समाधान

प्रो॰ बलराज मधोक

मुस्लिम समस्या जिसे हल करने के लिए हिन्दुस्तान ने १९४७ मे देश विभाजन की अति दु खदायी कीमत अदा की थी और जिसके फलस्वरूप अखड हिन्दुस्तान हिन्दू इ डिया-भारत और मुस्लिम इ डिया पाकिस्तान मे बट गया था, ख डित हिन्दुस्तान मे फिर खडी हो गई है और पुन देश की सबसे बडी और खतरनाक समस्या बन गई है। वास्तव में भारत में भारत की मुस्लिम समस्या भी विश्वव्यापी मुस्लिम समस्या का अ ग है। इस समस्या का मूल कारण कुरान की 'मिल्लत' और 'कुफ', 'दार-उल इस्लाम और 'दार-उल-हरब' और 'जिहाद'की परिकल्पनाए और सिद्धात हैं जो इस्लामवादियो के गैर मुसलमानो के साथ बराबरी के आधार पर शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व को नकारते हैं। काश्मीर समस्या समेत खडित भारत की बहुत सी अन्य समस्याए इस मूल समस्या से जुडी हुई है।

साम्यवाद की विफलता और सोवियत साम्राज्य के विघटन ने इस समस्या को नए आयाम दिए हैं। इस्लामवाद ,साम्यवाद का स्थान ले रहा है। और लोक तान्त्रिक मूल्यो और मानववाद के लिए सबसे बडी चुनौती बन गया है।

साम्यवाद और इस्लामवाद की कार्यपद्धति मे बहुत कुछ साझा है। दोनो एकाधिकारवादी राजनैतिक विचारधाराए है जिनका उद्देश्य ससार मे अपना साम्राज्य कायम करना है। इन दोनो मे विचार-स्वतन्त्रता की कोई गु जाइश नही। दोनो हिंसा तथा बल प्रयोग को अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उचित साधन मानते हैं।

परन्तु साम्यवाद और इस्लामवाद मे एक महत्वपूर्ण अन्तर है। साम्यवाद का प्रणेता, कार्ल मार्क्स, एक बुद्धिजीवी व्यक्ति था। उसके द्वारा प्रतिपादित विचारधारा मे बुद्धि और तर्क का कुछ स्थान है। इसलिए साम्यवाद मे शान्तिपूर्ण बदलाव आ सका। परन्तु इस्लामवाद मे बुद्धि और तर्क का कोई स्थान नही क्योकि कुरान मे जिसे इस्लाम के अनुयायी अपने अल्ला का आखिरी सन्देश मानते हैं, कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। इसलिए कुरान पर आधारित इस्लामवाद मे उदारवाद और मानववाद का कोई स्थान नही। इसीलिए ससार मे किसी भी इस्लामी देश मे उदारवादी व्यवस्था चल नही पाती। तुर्की जिसे कमालपाशा ने १९२३ मे इस्लामवाद मे सुधार करके आधुनिकता और सेक्यूलरिज्म के मार्ग पर डाला था, पुन इस्लामी सिद्धातवाद और कट्टरवाद की जकड मे आ गया है।

इस्लामवाद को नकारने वालो के प्रति ससार भर मे इस्लामवादियो का रवैया बर्बरतापूर्ण दमन का रहा है। इस्लाम का १४०० वर्षो का इतिहास इसका साक्षी है।

पाकिस्तान के अणुशक्ति बन जाने और इसके द्वारा इस्लामी अणुबम बना लेने के कारण संसार भर मे इस्लामवादियो मे नये उत्साह और आत्मविश्वास का सचार हुआ है। कुरान के सिद्धातो, विशेष रूप से 'जिहाद' के सिद्धात का जमाते-इस्लामी जैसे सगठनो द्वारा व्यापक प्रचार होने के कारण स्थिति और गम्भीर हो गई है। इस सिद्धात को पाकिस्तानी सेना के बिरगेडियर मलिक द्वारा अपनी पुस्तक 'कौरानिक कन्सेप्ट आफ वार 'अर्थात कुरान द्वारा प्रतिपादित युद्ध या जिहाद की परिकल्पना' मे की गई व्याख्या के अनुसार जब इस्लामवाद के लिये जिहाद करने वाले मुजाहिद किसी गैर इस्लामी देश पर आक्रमण करें तो आक्रान्त देश के मुसलमानों को आक्रान्ता मुजाहिदो का साथ देना चाहिए। १७६१ के पानीपत के तीसरे युद्ध के समय जब हिन्दुस्तान में इस्लाम के वर्चस्व को मराठो ने सफल चुनौती दी थी, मौलानाओ ने जिहाद के नाम पर भारत के सभी मुसलमान नवाबो और लोगों को आक्रान्ता अब्दाली का साथ देने का आह्वान किया था। यही अब्दाली की जीत का मुख्य कारण बना। इस पुस्तक की प्रस्तावना पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति जिया उल-हक ने लिखी और अब यह पुस्तक पाकिस्तानी सशस्त्र सेनाओं और नीति निर्धारकों के लिये एक मार्गदर्शक पुस्तक मानी जाती है।

हिन्दुस्तान में पाकिस्तान की गुप्तचर सस्था 'आई-एस-आई' की बढ़ती गतिविधियो तथा जमाते इस्लामी और इसके साथ सम्बन्धित सगठनो के कार्य कलाप को 'कुरान की जिहाद सम्बन्धी इस परिकल्पना की पृष्ठभूमि मे देखना चाहिए।

अयोध्या मे श्री राम जन्म स्थान मन्दिर पर विदेशी आक्रान्ता बाबर द्वारा बनाए गए मस्जिद नुमा स्मारक को ध्वस्त कर वहा पर पुन राम मन्दिर स्थापित करने के आन्दोलन के प्रति कुछ अपवादो को छोडकर साधारण मुसलमानो के रवैए और उनके द्वारा राष्ट्रीय महापुरुष राम पर विदेशी आक्रान्ता को वरीयता देन की प्रवृत्ति से यह स्पष्ट हो गया कि वे अभी भी इस्लामी सिद्धातवाद पर आधारित दो राष्ट्र की मानसिकता से ग्रस्त हैं। फलस्वरूप ख डित भारत मे फिर १९४७ के विभाजन के समय जैसी स्थिति बन रही है। परन्तु इसमे एक अन्तर आया है। १९४७ से पूर्व इस्लामवादियो का लक्ष्य भारत का विभाजन करके इसकी प्राकृतिक सीमाओ के अन्तर्गत एक अलग इस्लामी राज्य बनाना था। अब उनका उद्देश्य ख डित भारत को और खडित करना नही बल्कि इस सारे देश को पाकिस्तान की तरह 'दार उल-इस्लाम यानी इस्लामी राज्य बनाना है। काश्मीर घाटी से सारे हिन्दुओ को निकाल कर इसका पूर्ण रूपेण इस्लामीकरण करना इस योजना का प्रथम चरण है।

उनका यह प्रयत्न भी है कि भाजपा समेत सभी राजनैतिक दलो मे योजना पूर्वक घुसे इस्लामवादियो की सहायता से खडित भारत की राजनीति को अपने अनुकूल दिशा दी जाय और इस्लामवादियो की विचारधारा और कार्य पद्धति के सम्बन्ध मे आवश्यक जानकारी रखने वाले लोगो को सत्ता के गलियारा और ससद के बाहर रखा जाय।

नवम्बर १९९३ मे हुए विधानसभा के चुनावो मे देश भर मे मुसलमानो द्वारा अपनाई गई समान राजनीति से स्थिति और स्पष्ट हो गई है। जहा एक ओर भाजपा को हराने के लिए उसके उम्मीदवारो को हराने की क्षमता रखने वाले उम्मीदवारो को दल निरपेक्ष होकर सामूहिक रूप से मुस्लिम मत दिलवाये गए वहा साथ ही अ तिम समय तक भाजपा के उम्मीदवारो को आसा दिया जाता रहा कि मुसलमान उन्हे मत देंगे। चुनाव प्रक्रिया शुरु होने तक मुसलमानो के बडी सख्या मे भाजपा मे शामिल होने के समाचार छपते रहे परन्तु चुनावो मे भाजपा के किसी मुस्लिम उम्मीदवार को भी कही किसी इस्लामवादी का कोई मत नही मिला।

खडित भारत मे मुसलमानो की जनसख्या मे तेजी से हुई वृद्धि के कारण यह समस्या दिनोदिन अधिक उग्ररूप धारण करती जा रही है विभाजन के बाद खडित भारत मे लगभग ढाई करोड मुसलमान रह गए थे और लगभग उतने ही हिन्दू पाकिस्तान मे रह गए थे। १९५१ की जनगणना के अनुसार खडित भारत में मुसलमानो की सख्या ३ १ करोड थी, १९६१ में यह ४ २५ करोड १९७१ में ५ ७ करोड, १९८१ मे ७ ५६ करोड हो गई। १९९१ की जनगणना में मुसलमानो की आबादी १२ करोड के लगभग हो गई। इस अप्रत्याशित बढोत्तरी के दो प्रमुख कारण हैं। एक है पाकिस्तान और बगलादेश से मुसलमानो की बडी सख्या में घुसपैठ और दूसरा है बहुविवाह,तथा परिवार नियोजन का विरोध और योजनाबद्ध ढग से मजहबी कर्तव्य के रूप में अधिक बच्चे पैदा करना। बगला देशी घुसपैठियों की सख्या लगभग दो करोड हो चुकी है। ये पूर्वी राज्यो के अतिरिक्त बडी सख्या मे दिल्ली, बम्बई तथा मद्रास आदि बडे नगरो मे बस रहे हैं। क्योकि कानूनी और व्यवहारिक दृष्टि से इस समय भारत मे मुसलमानो को हिन्दुओ से अधिक अधिकार मिले हुए हैं, इनका लाभ घुसपैठियो को भी मिल रहा है।

(क्रमश)

मकर संक्रान्ति पावनपर्व है

आर्यों का ये मकर-सक्रान्ति, पावन पर्व है।
पर्वों का ये तो मूल है, हम सबको इस पर गर्व है॥
राम कृष्ण, ऋषि वृन्द ने, इस पर्व को माना सदा।
पाला सनातन धर्म को, था सत्य को जाना सदा॥

इस दिन घरो मे यज्ञ पावन, आर्य जन करते थे सब।
वैदिक कथा से मानसिक, पीडा सकल हरते थे सब॥
ज्ञान की गंगा विमल, बहती थी प्रजा थी सुखी।
था स्वर्ग का वातावरण कोई नही था तब दुखी॥

शासक थे सब धर्मात्मा, जनता का रखते ध्यान थे।
वीर, व्रतधारी, सदाचारी, महा बलवान थे॥
विश्व हित की योजना इस दिन बनाते थे सुनो।
न्यायकारी थे प्रजा का, दुख मिटाते थे सुनो॥

हम गुरु थे विश्व के, इसका सुखद परिणाम था।
भारतीय सब देवता थे, हर तरह आराम था॥
चोर, डाकू, जार, मद्यप, इस जगत म थे नही।
व्यभिचारिणी नारिया, तब विश्व मे ना थी कही॥

यदि अर्थ इस त्यौहार का ससार सारा जान ले।
गौतम, कपिल दयानन्द की, यदि सीख दुनिया मान ले॥
सद भावना जागे दिलो में, विश्व के कल्याण की।
सब ईर्ष्या [illegible] करें, करें [illegible] अभिमान की॥

वेद के अनुकूल जीवन, ये हमारा हो प्रभो।
सबके जीवन का सहारा, तू ही प्यारा हो प्रभो॥
विश्वास है हमको जगत, के दूर होंगे दुख सभी।
दीन, दुखिया ना रहेंगे, प्राप्त होंगे सुख सभी॥

हे ईश तुम वरदान दो हम कर्म नेकी के करें।
मानव बनें, मानव सभी, ससार की पीडा हरें॥

—प० नन्दलाल "निर्भय"
ग्रा०पो० बहीना जि० फरीदाबाद

आर्यसमाज बागपत मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज बागपत द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर मन्त्री मा० सत्यप्रकाश गौड के नेतृत्व मे शोभायात्रा का आयोजन किया गया। दोपहर को आर्यसमाज मन्दिर मे विभिन्न स्कूलो के छात्रो द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा पारितोषिक वितरित किये गये। समाज के प्रधान श्री जयप्रकाश वर्मा ने १८ निर्धन बच्चो को ऊनी स्वेटर तथा लाला श्यामबिहारी अग्रवाल ने वैदिक साहित्य व पुरस्कार वितरित किये। इस अवसर पर अनेको वक्ताओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि अर्पित की।

सादा जीवन उच्च विचार से अनुप्राणित

श्री फूलचन्द आर्य दिवंगत

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पथ के निष्ठावान पथिक सदा हंसमुख स्वभाव श्री फूलचन्द जी आर्य का देहावसान लम्बी बीमारी के बाद २५ सितम्बर को सुबह कलकत्ता मे उनके निवास 'मंगलदीप' में हो गया।

श्री फूलचन्द जी आर्य का जन्म ६२ वर्ष पूर्व हरियाणा के ग्राम कुरेरा में हुआ था। उनके पिता स्व० रामेश्वरदास खेतीबाड़ी और पशुपालन में संलग्न थे और इसी ग्रामीण वातावरण में बालक फूलचन्द का लालन-पालन और पोषण हुआ और यही उनके कर्ममय जीवन की आधारशिला बना।

समस्त भौतिक सुख-सुविधाओं को पाकर भी वे उनसे असम्पृक्त से रहते थे। व्यवसाय की उन्नति के साथ-साथ उनका उससे भी बड़ा गुण था सामाजिक चेतना और समाज सेवा। उनकी विलक्षण कार्य शक्ति, इच्छा शक्ति एवं अनुपम सूझ-बूझ के चलते उन्होंने कई संस्थाओं के गौरवपूर्ण पदों को सुशोभित किया। आर्य समाज बड़ा बाजार के प्रधान, परोपकारिणी सभा अजमेर के ट्रस्टी एवं उप-प्रधान, हरियाणा नागरिक संघ के सभापति के रूप में उनकी सेवाओं को सदा स्मरण किया जायेगा।

सामाजिक कुरीतियों, आडम्बरों, अन्धविश्वासों, आधारहीन रीति-रिवाजों के प्रबल विरोधी थे। समाजोत्थान, समाज सुधार की हर गतिविधि में तन, मन, धन का अमूल्य सहयोग वे निरन्तर देते रहे।

उनकी चिरविदाई से समाज सेवा के क्षेत्र में जो रिक्तता आयी है उसकी पूर्ति सहज सम्भव नहीं लगती। जगदीश्वर उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति दें, यही परमेश्वर प्रभु से प्रार्थना है।

टंकारा ऋषि मेला २६, २७, २८ फरवरी ९५

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टियों की बैठक दिनांक ६-११-१९९४ को आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल एवं मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकार नाथ की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वसम्मति के साथ निश्चय हुआ कि ऋषि बोधोत्सव (ऋषि मेला) २६, २७, २८ फरवरी ९५ को मनाया जाये।

मेरी समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं आर्य शिक्षण संस्थाओं आर्य संस्थाओं तथा ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि उक्त तिथि अंकित कर लें और अधिक से अधिक संख्या में टंकारा ऋषि बोधोत्सव पर पधारने की कृपा करें। ऋषि बोधोत्सव में पधारे हुए आर्य जनों की आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री
श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार का निधन

स्व नाम धन्य श्री डा० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक थे। अपने जीवन में अत्यन्त कर्मठ कार्यकर्ता के रूप मे जाने जाते हैं। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में रहकर आर्य समाज की अनुपम सेवा की है।

डा० हरिप्रकाश का निधन दिनांक ४ जनवरी १९९५ को अपराह्न १२-४५ बजे यमुना नगर में हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार अम्बाला के राम बाग श्मशान घाट पर ५ जनवरी को प्रातः ११ बजे हुआ। इस अवसर पर श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा० राजकुमार रावत व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुल फार्मेसी तथा हरिद्वार के अनेकों गण्यमान्य महानुभाव, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेको सदस्य अम्बाला की विभिन्न आर्य समाजों के अनेकों सदस्य उपस्थित थे।

डा० हरिप्रकाश संयुक्त आर्य प्रतिनिधि पंजाब के लगभग १५ वर्षों तक मन्त्री रहे। गुरुकुल फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष का कार्य अत्यन्त कुशलता पूर्वक करते रहे। इनका जन्म सन १९१२ मे कमालिया (पाकिस्तान) मे हुआ। गुरुकुल के स्नातक होने के पश्चात वे अनेक क्षेत्रों में कार्यरत रहे। गुरुकुल विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी के सदस्य, स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय के प्रबन्धक कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के मुख्याधिष्ठाता, ज्वाला पुर इन्टर कालेज के अध्यक्ष, आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला के अध्यक्ष तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य के रूप मे सदैव आर्य समाज के कार्यों में अग्रणी रहे। इनका जीवन अत्यन्त सरल एवं सादगी पूर्ण था। इनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई में

नि:शुल्क योग शिविर

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई में २५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक नि:शल्क योग शिविर का आयोजन किया गया। योगा सर्विस हरिनगर पिलानी राजस्थान के निर्देशक श्री ओ०एस० वर्मा जी ने अनेकों प्रशिक्षार्थियों को शिक्षित किया। प्रातः ७ से ८ बजे तक प्रशिक्षण तथा आठ से १० बजे तक तत्सम्बन्धी विचार विमर्श का कार्यक्रम चलता रहा।

आर्य गुरुकुल विद्यार्थी परिषद का वार्षिक सम्मेलन

आगामी दिनांक २८ फरवरी एवं १ मार्च में आर्य गुरुकुल विद्यार्थी परिषद ऐरवा कटरा (इटावा) अपना वार्षिक सम्मेलन मना रही है जिसमें राष्ट्र रक्षा एवं आर्य युवा सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के अनेक संन्यासी विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—ब्र० ओमदेव पुरुषार्थी मन्त्री

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक पत्र साप्ताहिक अपने गरीबी के दिन गिनता हुआ आप आर्यजनों की सेवा में वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप में है। विद्वानों के लेखों, कविताओं, प्रवचनों व सूचनाओं के साथ पहुंच रहा है।

सफलता कहूं या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक संख्या निर्धन है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमें नहीं देता हमारे मांग पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमें कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु आता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामतः सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलने से। अब भी वही दशा है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढ़ें और हमारे लिये नहीं अपनी भक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाएं।

तो फिर संकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमें दे दें। किसी भी संस्था को शक्तिशाली बनानेमें पत्रिका व साहित्य उसके जीवन को गति ही नहीं प्रगति भी प्रदान करते हैं?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही ग्राहक राशि का धन तथा अन्य सहयोग देकर सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक सन्देश घर-घर पहुंचायें।

—डा. सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

जनपदीय प्रचार सम्पन्न

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मऊ के तत्वावधानमें विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गत् १ नवम्बर ९४ से ३० नवम्बर ९४ तक जनपद के कौने-कोने में सत्य-सनातन वैदिक धर्म का सन्देश, युवा वैदिक विद्वानों व पूज्य संन्यासियों द्वारा बड़े ही प्रभावशाली ढंग से पहुंचाया गया जिसकी चतुर्दिक प्रशंसा हो रही है।

आर्य वीर दल पूर्वी उ०प्र०के सहसंचालक व कुशल युवा संगठन कर्त्ता ब्र० श्री नरेन्द्र आर्य 'नैष्ठिक' के नेतृत्व में निर्विघ्न सम्पन्न हुए इस प्रचार अभियान में पूज्यपाद स्वामी श्री केवलानन्द जी सरस्वती, स्वामी श्री आत्मानन्द जी महाराज, ब्र० श्री सुरेश जी 'नैष्ठिक", पं० रामाज्ञा जी 'आर्यपुत्र', पं० वीरेन्द्र आर्य ब्र० अग्निदेव शास्त्री ने भाग लिया।

महाशय भृगुनाथ जी, ढोलक वादक भोलानाथ जी व सुयोग्य सेवक उमाशंकर आर्य का सहयोग भी सराहनीय रहा।

जिला सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रसिंह व युवा मन्त्री श्री द्विजेन्द्र कुमार राय ने इस प्रचार अभियान में भाग लिए समस्त आर्य विद्वानों व सहयोगियों के प्रति आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया है।

—पं० रामाज्ञा 'आर्यपुत्र'
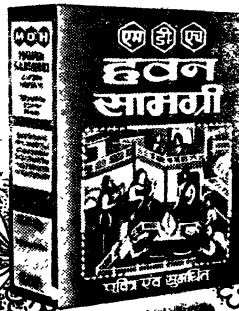
हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए इस्लाम का भारतीयकरण जरूरी

नई दिल्ली, १२ जनवरी। पूर्व सांसद प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि जब तक इस्लाम का भारतीयकरण नहीं हो जाता तब तक हिन्दू-मुस्लिम एकता सम्भव नहीं है।

प्रो० मधोक राष्ट्रीय हिन्दू मंच द्वारा इस्लाम एवं हिन्दू मंच द्वारा इस्लाम एवं हिन्दू मुस्लिम एकता विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस्लाम की विचारधारा मानवतावाद को नहीं मानती। इस्लाम में दूसरे धर्म के मानने वालों को कुफ्र कहा गया है। जब कि हिन्दुत्व का आधार मानवतावाद है और वह सर्व धर्म समभाव की बात करता है।

उन्होंने कहा कि इसलिए हिन्दू-मुस्लिम एकता कभी नहीं हो सकती। इस्लाम का किसी मजहब के साथ तालमेल नहीं हो सकता।

प्रो० मधोक ने कहा कि यदि इस्लाम का भारतीयकरण कर दिया जाए यानि इस्लामवादी सर्वधर्म समभाव को मानने लगे तो हिन्दू मुस्लिम एकता के साथ-साथ मुस्लिम ईसाई एकता और मुस्लिम सिख एकता भी सम्भव हो सकती है।

[illegible]रान के बारे में उन्होंने कहा कि जिहाद गैर मुसलमानों को [illegible] रहने का हक नहीं देता है। कुरान में कहा गया है कि कम से कम [illegible] गैर मुसलमान का गला काटने वाला मुसलमान ही गाजी [illegible] है और गाजी को जन्नत नसीब होता है।

उन्होंने कहा कि इस्लाम के १४ सौ वर्ष का इतिहास साक्षी है कि विश्व के किसी भी देश में इस्लाम का किसी अन्य मजहब के साथ तालमेल नहीं हो सका। क्योंकि कुरान में गैरइस्लामिक राज्यों को इस्लामिक राज्य बनाने की बात की गई है।

सरकार की छद्म धर्मनिरपेक्षता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब तक मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति रहेगी, हिन्दू मुस्लिम एकता नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि भारत का संविधान पन्थ-निरपेक्ष सविधान नहीं है। उन्होंने कहा कि मजहब के आधार पर जो राज्य भेदभाव नहीं करता, सभी नागरिकों को समान अधिकार देता हो और जहां कानून के सामने सभी नागरिक समान हो वह पन्थ निरपेक्ष राज्य है।

श्री मधोक ने कहा कि भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता तभी सम्भव है जब यहां के मुसलमान बाबर की बजाए राम के साथ अपने को जोड़ें।

सम्पादक के नरेन्द्र ने इस अवसर पर कहा कि मुस्लिम वोट के कारण यहां के नेता हिन्दू मुस्लिम एकता नहीं होने देना चाहते हैं। वैसे भी १९२० से हिन्दू मुस्लिम एकता की जा रही है लेकिन इन दोनों के बीच एकता के बजाए दुराव आया है।

वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो० रामप्रसाद मिश्र ने कहा कि इस्लाम और हिन्दुत्व के बीच वैचारिक विभिन्नता है। इस्लाम सभी धर्मों को खत्म कर देना चाहता है। इसलिए वह हिन्दू मुस्लिम एकता का हिमायती नहीं हो सकता।

वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मपाल बजाज, मंच के प्रधान प्रेमनाथ जोशी ने भी संगोष्ठी में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

महर्षि दयानन्द क्रान्तिकारी सुधारक थे

कानपुर आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्दनगर में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के सम्बन्ध में एक सभा कालेज के संस्थापक प्रबन्धक श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई।

सभा में पं० महेन्द्र पाल आर्य (पूर्व इमाम महबूब अली) ने कहा कि महर्षि दयानन्द क्रान्तिकारी सुधारक थे। यह उनकी ही प्रेरणा है कि आज महिलायें न केवल शिक्षा प्राप्त कर रही है। बल्कि हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहीं हैं। और मेरे जैसे लाखों विधर्मियों को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की ओर आकर्षित किया। आज सभी सम्प्रदाय व मजहब अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थों का दयानन्द की समालोचना के कारण अर्थ बदल रहे हैं।

सभा अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में सर्वत्र: क्रान्ति पैदा की। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मनुष्य, देश व समाज और धर्म राजनीति पर विस्तार से क्रान्तिकारी विचार प्रकट किये हैं। जिससे प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

सभामें श्री बालगोविन्द आर्य,श्रीमती वीनस शर्मा (प्रधानाचार्या) राजजीतपाल और कालेज की छात्राओं ने महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धाञ्जलि भाषणों और भजनों द्वारा प्रस्तुत की। सभा से पूर्व छात्राओं अध्यापिकाओं ने हवन यज्ञ का आयोजन किया।

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के बढ़ते कदम

आर्य वीर दल म० प्र० का कार्य वहां के अधिकारियों के सहयोग से दिनों-दिन उन्नति कर रहा है। शरदियावकाश में तीन शिविर तीन सम्भागों में आयोजित किये गये ये शिविर ब्र० जनक राम आर्य शारीरिक शिक्षाध्यक्ष म० प्र०, ब्र० कपिलदेव व्यायाम शिक्षक, ब्र० बसन्त कुमार व्यायाम शिक्षक एवं जितेन्द्र पटनायक उपशिक्षक आदि के नेतृत्व में सम्पन्न हुए जिनमे लगभग तीनों शिविरों में ३५० आर्य वीरों ने शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। पहला शिविर होशंगाबाद संभाग का ग्राम जमानी (इटारसी) में ६ से १३ नवम्बर तक तथा बिलासपुर संभाग का गुरुकुल सिलखिया जिला रायगढ़ में ६ से १५ नवम्बर तक एवं हिवर खेड़ा जिला अकोला में १३ से २३ अक्तूबर तक आयोजित किये गये। इन शिविरों के समापन अवसर पर आर्य वीर दल की स्थानीय शाखा का गठन किया गया।

१—आर्य वीर दल जमानी (इटारसी) का गठन:—

संरक्षक डा० देवीप्रसाद परसाई, शाखा नायक भूपेन्द्र दुबे, मन्त्री राजेशचौरे, कोषाध्यक्ष गोबर्धन सैनी।

इसी अवसर पर वीरांगना दल का भी गठन हुआ।

शाखा नायिका कु० कंचना आठनेरे, मन्त्राणी कु० सुनीता।

२—आर्य वीर दल हिवर खेड़ (रूपराव) जिला अकोला का गठन—

अधिष्ठाता श्री उमेश आर्य, शाखा नायक अनिल गावडे

मन्त्री अनुराग गोपले, कोषाध्यक्ष प्रशान्त नटकट

द्वारा हरिसिंह आर्य कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली-२

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-१-९५) बिना टिकट भेजने की स्वीकृति नं० U (C) ९३
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O. on 19-20-1-1995

श्री सोमनाथ मरवाह के नेतृत्व में आर्य समाज का शिष्टमण्डल मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना से मिला

आर्य समाज का एक उच्च स्तरीय शिष्ट मण्डल सार्वदेशिक सभा के कार्य-वाहक अध्यक्ष बाबू सोमनाथ मरवाह के नेतृत्व में दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना से आज मिला। शिष्टमण्डल ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस २४ फरवरी फाल्गुन वदी दशमी को सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की मांग की। श्री मदनलाल खुराना ने आश्वासन दिया कि भारत सरकार से अनुमति लेकर वे शीघ्र ही अवकाश की घोषणा करेंगे।

२४ फरवरी ९५ को महर्षि का १७१ वां जन्म दिवस समारोह पूर्वक 'महर्षि दयानन्द गो संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र' गाजीपुर दिल्ली में विशाल स्तर पर मनाया जायेगा। मुख्यमन्त्री ने इस अवसर पर पधारने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। शिष्टमंडल में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, विधायक मेवाराम आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री जगदीश आर्य तथा चौ० लक्ष्मीचन्द्र आदि सम्मिलित थे।

संस्कृत व्याकरण सूत्र अब भी सर्वाधिक वैज्ञानिक

नई दिल्ली, १५ जनवरी। संस्कृत व्याकरण सूत्र सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं परिष्कृत है। इसलिये संस्कृत भाषा अपने पुरातन गौरव तथा समग्रता के साथ आज भी अक्षुण्ण हैं। ये विचार पूर्व कार्यकारी पार्षद डा० रामलाल वर्मा ने संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित व्याकरण सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता में व्यक्त किये।

श्री वर्मा ने कहा कि अकादमी द्वारा इस प्रकार की प्रतियोगिता के आयोजन से छात्र व्याकरण सूत्रों का संग्रह करने में समर्थ होंगे और वर्तमान समय में कम्प्यूटर से जुड़े सूत्रो का विशद विश्लेषण व अनुसंधान करने में सक्षम होंगे। —इस अवसर पर विधायक जीतराम सोलंकी ने कहा कि भारतीय व्याकरण परम्परा इस तथ्य की साक्षी है कि यह परम्परा गुरु-शिष्य पद्धति के रूप में लम्बे समय से प्रचलित है। शास्त्रो का ज्ञान प्राप्त करने के लिये ही यह पद्धति प्रचलित हुई थी अतः संस्कृत व्याकरण की परंपरा को जीवन्त बनाये रखने के लिये इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन सराहनीय है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक डा० कमलाकांत मिश्र ने कहा कि संस्कृत भाषा के व्याकरण व पाणिनी के सूत्र आज के कम्प्यूटर में अत्यधिक उपयोगी हैं। अतः महाविद्यालय व विश्वविद्यालयो में इसका समुचित अध्ययन होना चाहिए।

इस प्रतियोगिता में संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मानव संसाधन मन्त्रालय के उपशिक्षा परामर्शदाता गंगाधर पांडा, भारत संस्कृत परिषद के महामन्त्री आचार्य रामनाथ सुमन, डा० सत्यदेव चौधरी डा० महावीर, डा० सुरेश अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

वैदिक धर्म अपनाया

दिनांक ६ दिसम्बर १९९४ को एक ईसाई युवती ने ईसाई पंथ त्यागकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली। श्री पी. ए. दास की पुत्री कु० मैरिन ने ईसाई धर्म त्यागकर वैदिक धर्म को स्वीकार किया उसका नया नाम वर्षा रखा गया, उसके पश्चात आर्य समाज पिम्परी के मन्त्री श्री हरगुनलाल गबेशवाणी जी के सुपुत्र राजेन्द्र कुमार के साथ उसकी सगाई तय की गयी। उनका विवाह २७ दिसम्बर ९४ को सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि का पौरोहित्य आर्य समाज के पुरोहित पं० विश्वनाथ जी आर्य ने किया। इस शुद्धि समारंभ में बड़ी संख्या में आर्य समाज के पदाधिकारी और सदस्यगण उपस्थित थे।

आर्यसमाज लंदन द्वारा पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्रद्धांजलि

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के अकस्मात निधन का समाचार सार्वदेशिक में पढ़कर यहां सभी आर्य जनों को गहरा दुःख हुआ। २७ नवम्बर ९४ के साप्ताहिक सत्संग में आयोजित शोक सभा में स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज, प्रधान आर्य समाज ने बताया कि स्वामी जी को वे बचपन से जानते थे और वे एक निर्भीक स्वतन्त्र सेनानी तथा सच्चे राष्ट्रनिष्ठ थे। भारतीय संस्कृति की गरिमा को बढ़ाने के कार्य में उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है।

श्री राजेन्द्र चोपड़ा, मन्त्री, आर्य समाज लंदन ने कहा कि उनके विवाह के शुभावसर पर पूज्य स्वामी जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया था तथा ... दास आर्य के पारिवारिक कार्यक्रमो में अनेक बार स्वामी जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

डा० ताना जी आचार्य ने स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों की मर्यादा का पालन किया। ब्राह्मत्व, क्षत्रियत्व आदि चारों वर्णों के गुणों का सम्यक विकास उनके जीवन में पाया जाता है। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए किया गया उनका अथक परिश्रम, त्याग और बलिदान स्मरणीय है।

उनकी पवित्रात्मा की शान्ति और सदगति के लिए सामूहिक प्रार्थना की गई।

—ताना जी आचार्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष २७४७० वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४९] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत १९७२९४९ ९५ माघ कृ० १३ सं० २०५१ ८ जनवरी १९९५

आर्य जगत् के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश जी लम्बी बीमारी के पश्चात दिवंगत

स्वामी सत्यप्रकाश जी जो पहले डा० सत्यप्रकाश के नाम से जाने जाते थे आप प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय के योग्य सुपुत्र थे। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे केमिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर एव अध्यक्ष थे। विश्वविद्यालय से अलग होकर आपने अपना जीवन वैदिक धर्म और आर्यसमाज की सेवा मे अर्पित किया हुआ था। आपने अपने विषय की बहुत सी पुस्तके भी लिखी थीं।

योग्य पिता के योग्य पुत्र—

आर्य समाज के क्षेत्र मे गगाप्रसाद जी—पडित गगाप्रसाद एम० ए० उपाध्याय के नाम से प्रसिद्ध व जाने जाते थे। श्री उपाध्याय जी आर्यसमाज के ख्याति प्राप्त विद्वान थे। उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा दिल्ली के सम्मानयोग्य अधिकारी थे। गम्भीर चिन्तक एव लेखक थे।

उसी परम्परा मे—

प० गगाप्रसादजी के डा० सत्यप्रकाश जी सुयोग्य पुत्र थे—आप शिक्षा क्षेत्र से हटकर वैदिक मिशनरी के रूप मे विदेशो मे भी धर्म प्रचारार्थ गये। वेदो का अग्रेजी भाष्य जो प्रादेशिक सभा दिल्ली ने प्रकाशित किया है आपने उसका इगलिश अनुवाद करके जनता के हाथो सौंपा था।

पिता से भी आगे—

पिता योग्य थे या पुत्र इसकी तुलना मैं नही कर रहा हू परन्तु योग्य पिता ने अपना वैदिक उत्तराधिकारी योग्यतम ही बनाया था। परिणामत पिताश्री तो श्वेत वस्त्रो म ही वैदिक धर्म की सेवा मे दीक्षित रहे। परन्तु भावी पीढी ने पिता से भी बढकर आगे कदम रखा। डा० सत्यप्रकाश—पडित सत्यप्रकाश तो बने या नही परन्तु गृहस्थ से हटकर सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर स्वामी सत्यप्रकाश अवश्य बने। यह उनकी पिता से आगे बढने की उपलब्धि थी इसी से स्वामी जी महाराज सन्यास की दीक्षा परम्परा मे उच्च कोटि के चिन्तक विचारक माने जाते थे।

आप स्वभाव से समुद्रवत गम्भीर हिमालय की तरह स्थिर चित्त तत्ववेत्ता थे जीवन मे सदा ही मोटा-पहनना खादी के वस्त्रो मे ही शोभायमान होते थे। सन्यासी बनने पर भी रहन सहन सादा विलक्षण था। दिल्ली मे आर्यसमाज हनुमान रोड प्रथम निवास रहा तदुपरान्त मन्दिर मार्ग आर्य समाज अनारकली दिल्ली मे वास किया।

इधर काफी समय से अस्वस्थ थे और दिल्ली से चलकर अपने प्रिय शिष्य दीनानाथ सिंह जो कोरवा अमेठी म सर्विस मे हैं उनके पास रहते थे। श्री दीनानाथ जी स्वामी जी को पिता तुल्य मानते थे परिणामत बीमारी के समय दीनानाथ जी ने स्वामी जी की अनुपम सेवा की। सेवाभावी दीनानाथसिंह सरल, उदार, योग्य व्यक्ति हैं वह डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के सान्निध्य मे आये और वैदिक प्रवक्ता बने। सस्कार वान दीनानाथ जी ने स्वामी जी की जो सेवा की वह भी अनुकरणीय है। दीनानाथ जी की धर्मपत्नी भी सरल सेवाभावी हैं उन्होने पति की आज्ञा से स्वामी जी की सेवा की।

अन्त मे सेवा समाप्ति का भी दिन आ गया और स्वामी जी ने चिर विदा ली और सेवा से भी मुक्ति पा ली।

स्वामी जी आप महान् थे—

घर परिवार-बिरादरी सभी से मुक्त थे। विरक्ति तो गृहस्थ के

(शेष पष्ठ पर)

इस अंक के आकर्षण

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री सोमनाथ जी मरवाह की अध्यक्षता में सर्वधर्म गौरक्षा महाभियान समिति गठित

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव प्रथम अध्यक्ष चुने गए

१४ जनवरी १९९७ का जनजागृति अभियान की एक बैठक आयसमाज हनुमान रोड मे हुइ जिसकी अध्यक्षता म'व० मभा के कायकारा अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह् ने का। इस बैठक मे इस अभियान का एक विधिवत सगठन का रूप दिया गया है जिसका नान गौरक्षा महाभियान समिति रखने का प्रस्ताव सावदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने किया इस सगठन का अध्यक्ष आय समाज म सर्वोच्च नता श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव तथा मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र गुप्ता का चुना गया है। श्री प्रेमचन्द सनातन धम के प्रमुख वरिष्ठ नेता हैं। इस सगठन मे अन्य समस्त धर्मो एव समू्हो के व्यक्तियो को भी लिया गया।

इस जनजागृति अभियान का एक मात्र मुख्य लक्ष्य भारत स गौहत्या के कलक को पूर्णतया हटाना है। गोरक्षा के समथक कई धार्मिक तथा सामाजिक सगठनो के प्रतिनिधियां ने गत लगभग एक वष से जन जागति अभियान तथा गोरक्षा के लिए प्रत्येक पहल करने क सकल्प को लकर सावदेशिक सभा क पूव प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वता जी के नेतत्व म कुछ बैठक आयाजित की थी।

श्री सोमनाथ मरवाह अधिवक्ता सुप्रीमकोर्ट के बड़े भ्राता का देहावसान

आय जगत का यह् जानकर दुख होगा कि सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष के बड भ्राता जा काफी समय से अस्वस्थ थे का लम्बी बीमारी के बाद देहवसान हो गया। पाकिस्तान विभाजन के बाद वे बाबू सोमनाथ जी से अलग रहत थे। अन्तिम समय मे बाबू सोमनाथ जी का उनसे मिलना न हो पाया। वे आय समाज के यशस्वी परिवार के व्यक्ति थे। उनके निधन से आर्य समाज को महान क्षति हुई है। उनकी आत्मा की सदगति के लिए तथा उनके परिवार जनो को इस बियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रभु से प्राथना की गई।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज अशोक विहार मे आर्य मिलन समारोह में डा० सच्चिदानन्द शास्त्री का विशेष प्रवचन

आर्य समाज अशोक विहार चरण ३ के सदस्यो द्वारा आय मिलन समारोह के नाम से एक नया कायक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस कायक्रम म प्रतिमाह एक सदस्य के घर पर यज्ञ तथा वैदिक प्रवचनो का सत्सग आयोजित किया जायेगा। प्रथम समारोह स्त्री आय समाज की मन्त्रिणी श्रीमता प्रेम सब्बर वाल के निवास पर आयाजित किया गया था इस समाराह म सावदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री न्याय सभा क सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री राजसिह भल्ला तथा माता प्रेमशील महेन्द्रू ने अपने विचार रखे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने सत्सग शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सत्य का सग एक छोटा सा उपदेश है परन्तु इस पर प्रत्येक व्यक्ति को आजीवन आचरण करना चाहिए।

अगले माह यह आय मिलन समारोह १८ फरवरी को साय ४ बजे श्री विमल वधावन एडवोकेट के निवास पर होगा जो कि इसी समाज के सदस्य है।

जालन्धर मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो द्वारा श्री सोमनाथ मरवाह, प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी का भव्य स्वागत समारोह।

पं० राधेश्याम शर्मा महामन्त्री नियुक्त

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के नवनिर्वाचित प्रधान श्री दरबारी लाल ने अपनी नई कार्य समिति म प्रिन्सिपल श्री राधेश्याम शर्मा को डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति का महामन्त्री नियुक्त किया है।

श्री शर्मा एक याग्य व्यक्ति हैं उन्होंने विदेशो की यात्रा भी की है। उनका वर्तमान निवास पता ए-२७, पुरु अपार्टमेन्ट्स फ्लैट न० २२, सेक्टर-१३, रोहिणी नई दिल्ली ११००८५ है। उनके महामन्त्री बनने से सभा का कार्य और प्रगति पर पर्याप्त ऐसी आशा है।

सम्पादकीय

विश्व हिन्दू परिषद् पर पुनः दो वर्ष के लिए प्रतिबन्ध

केन्द्र सरकार ने विश्व हिन्दू परिषद को फिर से प्रतिबन्धित संगठन घोषित कर दिया है। इस सम्बन्ध में गैर कानूनी गतिविधि कानून १९६७ के तहत जारी अधिसूचना तत्काल लागू हो गई।

इससे हिन्दू जनमत में चेतना आयेगी और सत्ता पक्ष ने अपनी मौत का पैगाम दिया है। अब से कुछ दिन पूर्व तुर्कमान गेट से एक मुस्लिम जमात का जलूस १०-१२ ट्रकों मे ५०-५० व्यक्ति बैठे थे निकला था। आगे-आगे पुलिस की गाड़ी चल रहीथी। नारा लगाया जा रहा था।

नाराये तकबीर—अल्ला हो अकबर।

भारत सरकार ने हमारे लिये ५० साल मे क्या किया। हमें बरबाद किया। हम चुप नहीं बैठेंगे। हमारे पीछे ७० करोड़ मुसलमान हैं—हम सरकार से लड़ेंगे।

हमारी सरकार ने यह नारा सुना जो आजादी से पूर्व पाकिस्तान बनने पर लगाये जाते थे। प्रत्येक राजनीतिक पार्टियां तुष्टिकरण की नीति अपना रही है और हिन्दूत्व पर प्रतिबन्ध लगाया जा रहा है।

प्रतिबन्ध का औचित्य

विश्व हिन्दू परिषद पर दो वर्ष के लिए जो पुनः प्रतिबन्ध लगाया गया है, उसका कोई औचित्य समझ में नहीं आता। हां, यह प्रतिबन्ध तब उचित होता, जब इस संस्था के द्वारा ऐसा कोई आह्वान किया जाता, जिससे साम्प्रदायिक उन्माद फैलता अथवा देश की राजनीति या समाज में भारी उथल-पुथल होती, लेकिन जब ऐसी कोई बात नहीं है और न ही ऐसे कोई संकेत हैं, तब विश्व हिन्दू परिषद पर प्रतिबन्ध लगाया जाना एक प्रकार से भारतीय संविधान की अवधारणा पर किया जाने वाला प्रहार ही है। चाहे कोई भी व्यक्ति हो हिन्दू हो, मुस्लिम हो, सिख हो या ईसाई—सभी को अपनी-अपनी मन्यताओं की रक्षा के लिए संगठित होने का अधिकार हैं और यह एक मौलिक अधिकार है, अतः इसका हनन नही किया जा सकता। जाहिर है कि विश्व हिन्दू परिषद पर प्रतिबन्ध का कारण मात्र राजनीतिक ही है। यदि राजनीतिक आग्रह या दुराग्रह से पीड़ित होकर नागरिकों या उनके संगठनों पर प्रतिबन्ध लगाया जाएगा अथवा उनके मौलिक अधिकारों का हनन किया जाएगा तो उसे कतई उचित नहीं कहा जा सकता। कुल प्रतिबन्ध से समस्याएं बढेंगी ही और समाज में कुंठा, बेचैनी और प्रतिशोध की भावना भी उत्पन्न होगी।

यह दुर्भाग्य की बात है कि हिन्दू शब्द से ही कुछ राजनीतिक दलों और विशेष रूप से कांग्रेस को अरुचि सी होती चली जा रही है। यदि कांग्रेस को अरुचि न हुई होती, तो केन्द्र सरकार ऐसा कोई काम नहीं करती, जिससे हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचती। उदाहरण के लिए दूरदर्शन के "चौपाल" कार्यक्रम में अभिवादन के रूप में "राम-राम" शब्द का प्रयोग किया जाता रहा है और "राम-राम" कहकर अभिवादन करने की जो परम्परा उत्तर भारत में है, उसका सम्बन्ध किसी साम्प्रदायिक आग्रह से नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य से भारत सरकार के सूचना प्रसारण मन्त्रालय ने ऐसा माना और जो कार्य वर्षों से होता चला आ रहा था, उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसे राजनीतिक दुराग्रह न कहा जाए तो और क्या कहा जाए? क्या यह कार्य इसलिए नहीं किया गया, क्योंकि इससे मुस्लिम तुष्टीकरण होता है? यदि किसी धारावाहिक में 'आदाब' या 'सलाम' शब्द अभिवादन के रूप में आता है तो क्या उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा? यह दुर्भाग्य की बात है कि देश के अधिकांश राजनीतिक दलों का एक मात्र लक्ष्य यह रह गया है कि किसी भी प्रकार से वोट बैंक पर कब्जा बना रहे। दरअसल, यहीं कारण है कि केन्द्रीय सरकार ने विश्व हिन्दू परिषद पर प्रतिबन्ध लगा दिया। क्या इस प्रतिबन्ध से यही साबित करने की, चेष्टा नहीं की गई है कि कांग्रेस मुस्लिम समाज की संरक्षक है? यह ठीक है कि अयोध्या में बाबरी मस्जिद के नाम से प्रचारित जो विवादास्पद ढांचा था, उसके ध्वंस में विश्व हिन्दू परिषद् की दुर्भाग्यपूर्ण भूमिका रही लेकिन अभी यह नहीं कहा जा सकता कि विश्व हिन्दू परिषद् ने यह काम जानबूझकर किया। वैसे भी यह मामला अभी भी जांच-पड़ताल के दायरे में है।

निश्चित रूप से अयोध्या स्थित विवादित ढांचे का गिराया जाना नितांत अनुचित और निन्दनीय बात थी। ऐसा करके एक प्रकार से भारतीय संविधान का अपमान ही किया गया, लेकिन कभी-कभी कुछ ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं अनचाहे घट जाती हैं,जिन्हें अन्ततः भूलना ही होता है। अयोध्या की इस दुर्घटना को लेकर हिन्दुओं का जान-बूझकर विरोध करना अथवा उनका अपमान करना उचित नहीं है। विश्व हिन्दू परिषद् का ऐसा कोई भी उद्देश्य नहीं है, जो भारतीय संविधान के विरुद्ध हो। इस संस्था का उद्देश्य तो भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना है। अगर इस संस्था का उद्देश्य भारतीय संविधान या मानवाधिकारों के विरुद्ध होता, तो इसे अनेक देशों में जो मान्यता प्राप्त है, वह प्राप्त न होती। चूंकि अमेरिका और ब्रिटेन सरीखे देशों में विश्व हिन्दू परिषद् को मान्यता प्राप्त है, अतः यह नहीं कहा जा सकता कि विश्व हिन्दू परिषद् में सैद्धान्तिक दृष्टि से कहीं कोई कमजोरी है—और अगर विश्व हिन्दू परिषद् में ऐसी कोई कमजोरी है तो सरकार द्वारा इसे स्पष्ट किया जाना चाहिये और साथ ही इस संस्था के जो संयोजक पदाधिकारी हैं, उनके विरुद्ध काननी कार्रवाई की जानी चाहिए। विश्व हिन्दू परिषद् पर प्रतिबन्ध के संदर्भ में यह बात भी विचारणीय है कि सरकार उन संगठनों और संस्थाओं के बारे में क्या कर रही है, जो खलेआम साम्प्रदायिकता और जातिवाद का विष फैला रही हैं। अब तो देश में अनेक ऐसे राजनीतिक दल भी हैं, जो खुलेआम जातीयता और साम्प्रदायिकता के आधार पर अपनी रणनीति बनाते हैं। आज बहुजन समाज पार्टी की जो स्थिति है, आखिर कौन नही जानता? पिछले चुनावों मे "सवर्णो" के विरुद्ध जिस तरह से भद्दे नारे बहुजन समाज पार्टी के नेताओं द्वारा लगाए गए, क्या वह कोई छुपी बात है? सच बात तो यह है कि जिस घृणित स्तर की जातिवादी राजनीति को कुछ राजनीतिक दलों द्वारा प्रश्रय दिया जा रहा है, वह तो साम्प्रदायिकता की तुलना में कही अधिक घातक और एकत्व विरोधी है, पर ऐसे राजनीतिक दलों पर भारत सरकार ने कही कोई प्रहार नहीं किया। आखिर ऐसे राजनीतिक दलों पर प्रतिबन्ध की हिम्मत या 'हिमाकत' क्यों नही की गई?

विश्व हिन्दू परिषद् पर प्रतिबन्ध के पीछे राजनीतिक दुर्भावना ही नजर आती है। इस प्रकार के कार्यो से न तो पन्थनिरपेक्षता की जड़ों को मजबत किया जा सकेगा और न भारतीय संविधान के आदर्शों को। हां, मुस्लिम समाज का तुष्टिकरण अवश्य किया जा सकता है। क्या यह अजीब बात नहीं है कि आज देश में मुस्लिम लीग सरीखी भारतीय संस्कृति विरोधी संस्थाएं हैं, पर उन पर कहीं कोई प्रतिबन्ध नहीं है? इसी तरह मिजोरम, मेघालय,

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का १०९वां चुनाव बुढ़ाना गेट मेरठ में सम्पन्न

पं० इन्द्रराज जी प्रधान तथा श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का १०९ वां चुनाव दिनांक १५ जनवरी १९९५ को आर्य समाज बुढाना गेट, मेरठ में सम्पन्न हुआ जिसके निर्वाचित अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों की सूची निम्न प्रकार है—

क०	नाम	पद	पता	व्यवसाय
१.	श्री पं० इन्द्रराज	प्रधान	१२४५, गोहरी पुरा, मेरठ	समाज सेवा
२.	श्री सच्चिदानन्द शास्त्री	उपप्रधान	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली	समाज सेवा
३.	श्री जयनारायण जी अरुण	उपप्रधान	प्रसाद कुंज, सिविल लाइन, बिजनौर	पत्रकार
४.	श्रीमती सन्तोष कुमारी	उपप्रधान	कमला माहेश्वरी कन्या डिग्री कालेज, मिर्जापुर एक्स. एम. एल. सी.	
५.	श्रीमती आशारानी राय	उपप्रधान	एफ-१, अर्मापुर, स्टेट कानपुर	सर्विस
६.	श्री मनमोहन तिवारी	मन्त्री	९, पुराना गणेश गंज लखनऊ	समाज सेवा
७	श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा	उपमन्त्री	१३९, सुनारगली, बुलन्दशहर	सर्विस
८.	श्री डा० विनय प्रताप	उपमन्त्री	आर्य समाज बख्शीपुर गोरखपुर	व्यापार
९	श्री नगेन्द्र सिंह	उपमन्त्री	आर्य समाज मवाना मेरठ	समाज सेवा
१०	श्री जितेन्द्र जलाली	उपमन्त्री	जलाली, अलीगढ़	समाज सेवा
११.	श्री अरविन्द कुमार	कोषाध्यक्ष	आ० स० बुढ़ाना मुजफ्फर नगर	समाज सेवा
१२.	श्री वीरेन्द्र सिंह	स०कोषाध्यक्ष	आर्य समाज छपरेडी सहारनपुर	समाज सेवा
१३.	श्री दलसिंगार सिंह	पुस्तकाध्यक्ष	आर्यसमाज ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ	राजकीयसेवा
१४.	श्री वेदप्रकाश आर्य	स. पुस्तकाध्यक्ष	आर्य समाज औरेया, इटावा	व्यापार
१५.	श्री विश्वम्भर दत्त	आय-व्यय निरीक्षक	सहारनपुर	व्यापार

प्रतिष्ठित सदस्य :

क०	नाम	पता	व्यवसाय
१६.	चौ० माधव सिंह	विनोद निवास बड़ौत, मेरठ	पेन्शनर
१७.	स्वामी गुरुकुलानन्द जी सरस्वती	आर्य समाज पिथौरागढ़	
१८.	चौ० लक्ष्मीचन्द्र जी	आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली	समाज सेवा

अन्तरंग सदस्य :

क०	नाम	पता
१९.	श्री तेजपाल सिंह आर्य	गाजियाबाद
२०.	,, डा० भानुप्रकाश आर्य	आर्य समाज सिविल लाइन्स बदायूं
२१.	,, विक्रम सिंह आर्य	सम्भल मुरादाबाद
२२.	,, उमेश चन्द्र स्नातक	दिवियापुर, इटावा
२३.	,, श्रीपाल सिंह आर्य	आर्य समाज मऊ रानीपुर, झांसी
२४	,, बसन्त सिंह चौहान	आर्य समाज बहादुराबाद, हरिद्वार
२५.	,, देवेन्द्र कुमार शर्मा	आर्य समाज चौक, बुलन्दशहर
२६.	,, बलराम गोविन्द जी	आर्य समाज राधाकुण्ड गोवर्धा
२७.	,, बहालसिंह आर्य	आर्य समाज छपरौली, मेरठ
२८.	श्री विजय कुमार शर्मा	आर्य समाज सीतापुर
२९.	,, श्रीकृष्ण आर्य	आर्य समाज जलाली, अलीगढ़
३०.	,, राधेश्याम आर्य	आर्य समाज सुभाष नगर, बरेली
३१.	,, वीरेन्द्र सिंह चौहान	सीतापुर
३२.	,, ब्रज कृष्ण आर्य	आर्य समाज गाजीपुर
३३.	,, माताप्रसाद, त्रिपाठी	आर्य समाज जमुनियाबाग, फैजाबाद
३४.	,, रामप्रकाश पान्डे, एडवोकेट	सिविल कोर्ट, मैनपुरी
३५.	,, पूरन सिंह एडवोकेट	आर्य समाज बिजनौर
३६.	,, जयदेव सिंह आर्य	आर्य समाज रहमतगंज, रामपुर
३७.	,, रामपाल सिंह	आर्य समाज छपरेडी, सहारनपुर
३८	,, श्रीरामदेव आर्य	बी-१२९१, इन्दिरानगर, लखनऊ
३९.	,, अशोक अवस्थी	आर्य समाज, फतेहपुर
४०.	,, डा० ईश्वर चन्द्र गुप्ता	एफ-१, अरमापुर स्टेट, कानपुर
४१.	,, विजय बहादुर सिंह	आर्य समाज बख्शीपुर, गोरखपुर
४२.	,, आचार्य रमाकांत चतुर्वेदी	३३०, गुलरियाबावां बाराबंकी
४३.	श्रीमती प्रभावती	आर्यसमाज हरदोई
४४.	श्री हरीशचन्द्र अरोड़ा	आर्य समाज मुजफ्फर नगर
४५.	,, देवेन्द्र शास्त्री	आर्य समाज हरिद्वार
४६.	,, डा० तारा सिंह	आर्य समाज हस्तिनापुर, मेरठ
४७.	,, डा० जयप्रकाश गोयल	प्रधान आर्यसमाज साकेत, मेरठ
४८.	,, जबर सिंह आर्य	आर्य समाज औरंग नगर, मेरठ
४९.	,, कमलाकान्त जी	सुल्तानपुर
५०.	,, मुकेश बाजपेई	उन्नाव
५१.	,, एस० सी० श्रीवास्तव	आर्य समाज सनी की मण्डी, इलाहाबाद
५२.	,, गोविन्द सिंह आर्य	आचार्य नगर करहल रोड, फिरोजाबाद
५३.	,, महिपाल शास्त्री	सिरसागंज, एटा

मनमोहन तिवारी, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक पत्र साप्ताहिक अपने गरीबी के दिन गिनता हुआ आप आर्यजनों की सेवा में वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप में है। विद्वानों के लेखों, कविताओं, प्रवचनों व सूचनाओं के साथ पहुंच रहा है।

सफलता कहूं या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक संख्या निर्धन है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमें नहीं देना चाहते। मांग। पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमें कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु जाता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामत: सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलने से। अब भी यही क्रम है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढ़ें और हमारे लिये यहीं अपनी शक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाएं।

तो फिर संकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमें दे दें। किसी भी संस्था को शक्तिशाली बनानेमें पत्रिका व साहित्य उसके जीवन को गति ही नहीं प्रगति भी प्रदान करते हैं?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही ग्राहक राशि का धन तथा अन्य सहयोग देकर सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक सन्देश घर-घर पहुंचायें।

—डा सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

इस्ला[illegible] : समस्या और समाधान (२)

प्रो० बलराज मधोक

बंगलादेशियों की घुसपैठ के कारण मुस्लिम आबादी के तेजी से बढ़ने की वजह से देश की आर्थिक स्थिति पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। ये घुसपैठिए भारत के निर्धन लोगों के हाथों से काम, मुंह से रोटी और सिर से साया छीन रहे हैं। ये देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए भी संकट बन रहे हैं।

फलस्वरूप मुस्लिम समस्या एक बहुआयामी और विस्फोटक समस्या बन गई है। इसके कारण देश की अन्य समस्याएं भी और अधिक जटिल बनती जा रही हैं और भारत की एकता और सुरक्षा फिर संकट में पड़ गई है। इसलिए भारत का भविष्य उसी नेतृत्व के हाथों में सुरक्षित रह सकता है। जिसको इस समस्या की पुरानी जड़ों और अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप का ठीक ज्ञान हो और जो इसे हल करने के लिए कृत संकल्प हो।

विभाजन के तर्कसंगत फलितार्थ के रूप में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में रह गई मुस्लिम और हिन्दू आबादी की अदला-बदली से खंडित भारत को इस सदियों पुरानी समस्या के अभिशाप से मुक्त किया जा सकता था। परन्तु वह अवसर खो दिया गया।

अब इस समस्या का एकमात्र इलाज भारतीय मुसलमानों का भारतीयकरण करना है। जो इसके लिए तैयार न हो उनके सामने या पाकिस्तान अथवा बंगला देश जाने और या विदेशी के रूप में मत देने के अधिकार से वंचित होकर रहने का विकल्प रखना होगा। क्योंकि ९० प्रतिशत से अधिक भारतीय मुसलमान भारतीय हिन्दुओं की सन्तान हैं और पाकिस्तान गए मुसलमान, जिन्हें वहां मुहाजिर कहा जाता है, के कटु अनुभव का प्रभाव उन पर भी पड़ रहा है, इसलिए यदि भारतीय करण को दृढ़ता से एक राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में अपनाया जाय तो अधिकांश मुसलमान राष्ट्रीय धारा में वापस लौट सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि भारतीयकरण के सही स्वरूप को ठीक ढंग से और दृढ़ता से पेश किया जाए और मुस्लिम वोट बैंक के लिए मुस्लिम तुष्टीकरण बन्द किया जाए। भारत में रह गए मुसलमानों के भारत में समान अधिकार हैं उनपर समान कानून भी लागू होने चाहिए उन्हें स्पष्टरूप से बताना चाहिए कि जिस प्रकार मुसलमान बन जाने के बावजूद ईरान के शिया समुदाय के लोग इस्लाम के पूर्व की संस्कृति और महापुरुषों के साथ जुड़े हुए हैं उसी प्रकार भारत के मुसलमानों को भी भारत की संस्कृति और महापुरुषों के साथ जुड़ना होगा। जो मुसलमान अपने आप को राम के साथ जोड़ेंगे वे भारतीय माने जायेंगे और जो बाबर के साथ जुड़ना चाहते हैं उन्हें विदेशी घोषित करना होगा।

यह तभी सम्भव होगा जब नई दिल्ली में कोई विशुद्ध राष्ट्रवादी सरकार कायम होगी और उसका प्रधानमन्त्री लाल किले की प्राचीर से भारत के मुसलमानों के सामने भारतीय करण या बंगलादेश अथवा पाकिस्तान या अपने किसी अन्य इस्लामी स्वर्ग में जाने या विदेशी के रूप में रहने के तीन विकल्पों में से एक विकल्प चुनने की बात अधिकारवाणी और दृढ़ता से कहेगा।

इस समय भारत की किसी भी राजनैतिक पार्टी के पास ऐसा नेतृत्व नहीं है। इसलिए वे इस समस्या को सुलझाने के स्थान पर और अधिक उलझा रही हैं। पाकिस्तान, बंगला देश तथा अन्य इस्लामी देश और उनके एजेंट इस स्थिति का लाभ उठा रहे हैं और भारत को पाकिस्तान की तरह "दार-उल-इस्लाम" बनाने की अपनी योजना को कार्य रूप देने की ओर बढ़ रहे हैं। यदि स्थिति से समय रहते न निपटा गया तो देश में एक भयानक गृह-युद्ध छिड़ जाएगा जिसमें पाकिस्तान और बंगला देश भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भागीदार होंगे और सारे देश में १९४७ से अधिक भीषण मारकाट और नर-संहार होगा।

इसलिए आवश्यक है कि सभी देशभक्त और राष्ट्रवादी दलगत भावना से ऊपर उठकर इस भयानक समस्या के सही स्वरूप को समझाने और इससे प्रभावी ढंग से निपटने का प्रयत्न करें। यह समस्या राजनैतिक और राष्ट्रीय है, मजहबी अथवा दलीय नहीं। हिन्दुस्तान में इस्लाम को एक पंथ अथवा एक पूजा पद्धति के रूपमें कोई खतरा नहीं है क्योंकि 'सर्वपंथ समभाव' भारतीय संस्कृति का दिशा निर्देशक सिद्धांत है। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मुसलमान भी इस सिद्धांत को मनसा-वाचा-कर्मणा अपनाएं। इस सिद्धांत पर एक तरफा अमल नहीं हो सकता। जो पंथ दूसरे पंथों के प्रति समभाव नहीं रखते उनके अनुयायियों को भी समभाव की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

क्योंकि मुस्लिम समस्या देश की सबसे पुरानी और खतरनाक समस्या है जिसके हल पर भारत का भविष्य निर्भर करता है इसलिए सभी राष्ट्रवादी दलों और तत्वों को इस समस्या के सम्बन्ध में लोगों को शिक्षित करने और उससे निपटने के लिए सम्मिलित रूप में काम करने को अन्य सब बातों पर वरीयता देनी चाहिए।

इस दृष्टि से पहली आवश्यकता इस समस्या पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने की है। हिन्दुस्तान में इस समय सबसे सबल राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ है। इसलिए उचित होगा कि इसके सरसंघ चालक प्रो० राजेन्द्र सिंह ऐसा सम्मेलन बुलाने की पहल करें।

ऐसा हो गणतन्त्र हमारा

नव आशा, अभिलाषाओं के,
भारत में फिर खिले सुमन।
राष्ट्रवाद की प्रखर भावना-
करे पुनः आन्दोलित अभिमन।
वैदिक पथ का अनुगामी हो—
नेतृवर्ग भारत का सारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था,
पुनः यहां स्थापित हो।
छुआ-छूत से जाति-पांति से
मनुज नहीं संतापित हो॥
गूंज उठे सारे भारत में—
वैदिक साम्यवाद का नारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

राजनीति से स्वार्थ हटे सब—
नैतिकवान बने नेता गण।
क्षत-विक्षत अन्याय अनय हो—
शान्ति समन्वित हो कण-कण॥
विश्व गुरु बन गौरवमण्डित—
हो अपना भारत यह प्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

शौर्य शान्ति साहस से पूरित—
हों बलिदानी युवक हमारे।
वीर जयी सेनाएं होवें—
यज्ञ पुनः हो द्वारे द्वारे॥
मनसा वाचा तथा कर्म से—
सत्य निष्ठ हो जन जन प्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

२६ जनवरी : गणतन्त्र दिवस

डा० [illegible]

२६ जनवरी—गणतन्त्र दिवस स्वतन्त्र भारत का सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन समस्त जनता-युक्त भारतीयों का मन आनन्द की तरंगों से उद्वेलित रहता है। जहां एक ओर दिल्ली के लाल किले पर ध्वजारोहण और दिल्ली की आकर्षक परेड देखने के लिए प्रत्येक भारतीय का मन लालायित रहता है, वहीं सम्पूर्ण राष्ट्र इस राष्ट्रीय पर्व को विविध रंगारंग कार्यक्रमों से मनाता है। इस राष्ट्रीय पर्व को मनाने का सौभाग्य दिया हमारे क्रान्तिकारी स्वाधीनता के दीवाने महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपतराय जैसे सैंकड़ों हजारों क्रान्तिकारी नेताओं ने।

यद्यपि हमें स्वतन्त्रता १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त हो गई थी, परन्तु हम पूर्ण स्वतन्त्र २६ जनवरी १९५० को हुए। उस दिन स्वतन्त्र भारत का संविधान लागू हुआ। स्वाधीनता से पूर्व २६ जनवरी स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाता था। ३१ दिसम्बर १९२९ और १ जनवरी १९३० की मध्य-रात्रि में लाहौर में रावी नदी के तट पर श्री जवाहर लाल नेहरू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में तिरंगा ध्वज फहराते हुए कहा था कि स्वतन्त्रता आन्दोलन का मुख्य उद्देश्यपूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति होगी। इस अवसर पर देशभक्तो ने प्रतिज्ञा की थी कि वे तब तक चैन की सांस नहीं लेंगे, जब तक पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो जाती। इस अवसर पर यह निश्चय किया गया था कि २६ जनवरी १९३० स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जायेगा और इस दिन पूरे देश में अधिक से अधिक लोगों तक स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र पहुंचाया जाएगा। इस घोषणा-पत्र ने प्रत्येक भारतीय के मन में स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना जागृत की। तब से स्वाधीनता के पूर्व तक २६ जनवरी को क्रान्तिकारी नेता स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाते रहे। इस दिवस के महत्व के कारण ही १९५० में भारत का नया गणतन्त्रीय संविधान तैयार हो जाने पर २६ जनवरी को ही संविधान लागू करने का फैसला किया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने विविध क्षेत्रों में पर्याप्त उन्नति की है, तथापि व्यक्ति का नैतिक पतन जितना अधिक हुआ है, वह चिन्ता का विषय है। इस नैतिक पतन के कारण ही प्रत्येक नागरिक त्रस्त है। इसका मूलभूत कारण हमारी शिक्षा और धर्म को पृथक-पृथक रखने की नीति है। धर्म ही एकमात्र ऐसा साधन है, जो व्यक्ति को आचार, कर्तव्य, नैतिकता आदि गुणों की शिक्षा प्रदान करता रहे। स्वतन्त्र भारत में आज भी वोटों की राजनीति के कारण हमारे देश की न कोई राष्ट्रभाषा है और न संस्कृति है। इसी प्रकार कुछ अन्य भी मूलभूत कार्य थे जिनका निर्णय स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही हो जाना चाहिए था, परन्तु आज तक नहीं हो सका।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश के स्वतन्त्रता संग्राम में प्राणों की बलि देने वाले, अपने यौवन की उमंगों को राष्ट्र को समर्पित कर देने वाले उन शहीदों के प्रति मात्र श्रद्धांजलि प्रकट कर देने से हमारा कर्तव्य पूर्ण नहीं हो जाता। उन शहीदों के प्रति हमारी सबसे अच्छी श्रद्धांजलि; शहीदों द्वारा देखे गए स्वतन्त्र भारत के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने की प्रतिज्ञा होगी।

सेवक की आवश्यकता

आर्य समाज नोएडा के लिए एक सेवक की आवश्यकता है जो प्रचार रिक्शा चला सके एवं गुरुकुल के कुछ बच्चों का भोजन बना सके। आवास, बिजली, पानी, भोजन निशुल्क आर्यसमाज की ओर से मिलेगा। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। सम्पर्क करें—

डा० एन०बी० आर्य, प्रधान आर्यसमाज नोएडा
बी-९ से० १२, नोएडा-२०१३०१
फोन : ८९५३४५७

नई प्रकाशित पुस्तकें

आदि शंकराचार्य वेदान्ती नहीं थे

लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती। शंकराचार्य मूलतः वेदान्ती या अद्वैतवादी नहीं थे। ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इसका संकेत मिलता है। स्वामी जी ने इस मान्यता की पुष्टि में शंकराचार्य के ग्रन्थों से अनेक प्रमाण उद्धृत किए हैं।
मूल्य : ४०-००

आर्यसमाज के बीस बलिदानी :
लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय। आर्यसमाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाने वाले उन बीस आर्यों की संक्षिप्त बालोपयोगी जीवनियां, जिन्हें पढ़कर बच्चों, नवसाक्षरों तथा प्रौढ़ों को सत्प्रेरणा मिलेगी। पुरस्कार उपहार देने योग्य। मूल्य : रु० ११-००

आचार्य गौरव : लेखक—ब्र० नन्दकिशोर
आचार्य शिष्य सम्बन्धों की मार्मिक झांकी प्रस्तुत की गई है। जहां शिष्यों को कर्तव्य बोध कराया गया है, वहीं आचार्यों की राष्ट्र निर्माण की दिशा भी दर्शायी गई है। मूल्य : रु० ५-००

महात्मा नारायण स्वामी : लेखक—प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु
महात्माजी का जीवन बहुत घटनापूर्ण है। उनके पास कोई ऊंची डिग्री नहीं थी, न ही वे धनवान् थे, परन्तु अपने चरित्र के कारण वे ऊंचे विचारक, सुधारक महात्मा, योगी, लेखक व पूज्य नेता बन गए। इस स्वनिर्मित जीवन चरित से युवक युवतियां बहुत कुछ सीख सकते हैं। मूल्य : रु० ५-५०

बहुत दिनों बाद प्रकाशित पुस्तकें

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार

लेखक—पं०सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार। इस ग्रन्थ में वैदिक विचार-धारा को विज्ञान की कसौटी पर परखने का प्रयत्न किया गया है, ताकि हमारी नई पीढ़ी जिन मान्यताओं को अवैज्ञानिक कह कर छोड़ती जा रही है, उन पर नई दृष्टि से सोचें। मूल्य : रु० १५०-००

षड्दर्शनम् : लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
वैदिक साहित्य में दर्शनों का विशेष महत्व है। वेद में ईश्वर, जीव, प्रकृति, पुनर्जन्म, मोक्ष, योग, कर्मसिद्धान्त, यज्ञ आदि का बीजरूप में वर्णन है, दर्शनों में इन्हीं विचारबिन्दुओं पर विस्तृत विवेचन है। मूल्य : रु० १५०-००

सामाजिक पद्धतियां : लेखक—महाशय मदनजित आर्य
सन्ध्या, हवन-मन्त्र, यज्ञोपवीत, प्रथम वस्त्र-परिधान, जन्म-दिवस, विवाह पद्धति, सगाई पद्धति, सेहरा बन्दी, [illegible], मिलनी, गार्हपत्याग्नि पद्धति, व्यापार-सूत्र, दुकान मुहूर्त, अन्त्येष्टि क्रिया आदि आवश्यक सामाजिक पद्धतियों के संग्रह। मूल्य : रु० १२-००

जीवात्मा : लेखक—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय
जीवात्मा, शरीर, इन्द्रियां, मस्तिष्क, आत्मा, पुनर्जन्म मुक्ति, योनि परिवर्तन, जीव-ब्रह्म-सम्बन्ध आदि महत्वपूर्ण विषयों पर उठने वाले प्रश्नों का समाधान। मूल्य : रु० [illegible]

प्रार्थना-लोक : लेखक—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
इसमें संकलित है लेखक की तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रभात-वन्दन, प्रार्थना-प्रकाश व शिव-संकल्प। मूल्य : रु० [illegible]

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

२६ जनवरी जन्म दिन पर विशेष:—

महान देशभक्त राजकवि—वीर चन्द्र बरदाई

पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री

२६ जनवरी भारत का गणतन्त्र दिवस है। इसको भारत का महापर्व माना जाता है। इस पर्व का हमारे जीवन मे बड़ा भारी महत्व है। इस पर्व से भारत के महान वीरो के बलिदान का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है, उन्ही महान वीरो मे से एक थे महान राजकवि वीर चन्द्र बरदाई।

वीर चन्द्रबरदाई का नाम भारत का बच्चा-बच्चा जानता है। वे उच्च-कोटि के कवि, विद्वान व योद्धा थे। उनका यश गान आज भी सकल विश्व गा रहा है। भारत के इतिहास मे उनका बेजोड़ स्थान है। उनका बलिदान कभी भी भुलाया नही जा सकता। वास्तव मे वे महान पुरुष थे।

चन्द्र बरदायी का वास्तविक नाम पृथ्वीचन्द था। उनका जन्म २६ जनवरी ११४९ ई० को लाहौर मे मन्लह नामक जागती गोत्र के भाट ब्राह्मण के घर मे हुआ था। वे बचपन से ही प्रखर बुद्धि के धनी थे इसलिए उन्हे गुणो के आधार पर चन्द्रबरदाई कहा जाने लगा। वे बाद मे इसी नाम से विश्व विख्यात हो गए। ग्यारहवी शताब्दी के अन्तकाल मे वे सम्राट वीर पृथ्वीराज के दरबार मे राजकवि थे। उनकी पत्नी का नाम कमला देवी तथ" दूसरी का नाम गौरा देवी था। राजकवि के सूर, सुन्दर, सुजान, जल्हन, बल्हा, बलभद्र, केहरी, वीर चन्द, अवधूत व युवराज दस पुत्र तथा राजा-बाई नामक एक पुत्री थी। पुत्रो मे से जल्हन राजकवि को विशेष प्रिय था क्योकि वह अधिक बुद्धिमान व पितृभक्त था। राजकवि ने ने अपनी प्रसिद्ध काव्य रचना "पृथ्वीराज रासो" जल्हन को ही सौंपी थी। कहा था "पुस्तक जल्हन हत्थदे, चल जल्हन नृप काज।"

राज कवि को व्याकरण, गणित, ज्योतिष साहित्य का पूरा ज्ञान था। सभाओ, युद्धों और यात्राओ मे सम्राट पृथ्वीराज चौहान उन्हें अपने संग-संग रखते थे। सम्राट ने नागौर (राजस्थान) मे राजकवि को एक बहुत बड़ी जागीर दी थी। राजकवि के वंशज आज भी नागौर मे रह रहे हैं।

राजकवि द्वारा रचित काव्य रचना पृथ्वी राज रासो" एक अमूल्य काव्य रचना है। उन्होंने इस ग्रन्थ को पुरातन बृज भाषा मे लिखा। भारत के समकालीन गौरवमयी इतिहास को दर्शाता यह २००००पद्याशोका एक विस्तृत काव्य संग्रहहै। कर्नल टाड इतिहास-कार ने इनके काव्य सौन्दर्य पर मुग्ध होकर इसके ३०००० पद्यांशो का अंग्रेजी मे अनुवाद किया था। फ्रेंच विद्वान गर्सांद तासी ने भी इस महा ग्रन्थ को सराहा है।

चन्द्र बरदाई केवल राजकवि ही नही थे अपितु सम्राट पृथ्वी राज चौहान के घनिष्ठ मित्र तथा बहुत बड़े जागीरदार व महा योद्धा थे। सन् ११९१ ईस्वी मे तरावड़ी जिला करनाल के मैदान मे लड़े जाने वाले प्रथम युद्ध मे उन्होने शहाबद्दीन मोहम्मद गौरी को परास्त कराने मे सम्राट पृथ्वीराज को भारी योगदान एवं मदद दी थी। सम्राट पृथ्वीराज को वे अत्यन्त प्रिय थे क्योकि राजकवि एक वफादार साथी व सुयोग्य साथी थे। सम्राट राजकवि से कोई भेद छुपाते नहीं थे इसलिए वे सम्राट के सगे भाई की तरह शान-शोकत से रहते थे। सब प्रजा राजकवि का सम्मान करती थी।

भारत का दुर्भाग्य था जयचन्द व पृथ्वीराज की आपसी फूट के कारण सन् ११९२ मे तरावड़ी के दूसरे महायुद्ध मे भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज युद्ध मे हार गया। गौरी ने जयचन्द को तो दिल्ली में ही मौत के घाट उतार दिया किन्तु पृथ्वीराज को कैद करके अपने साथ गजनी ले गया तथा उसे घोर जेल मे डाल दिया। उसने लोहे की गर्म-गर्म तेज सलाखों से पृथ्वीराज की आखें निकलवा कर उनमें सीसा थोथा भरवा दिया। यह था परस्पर फूट का भयकर परिणाम। जयचन्द और पृथ्वीराज की आपसी फूट ने भारत माता को गुलामी की बेड़ियो में जकड़ दिया।

जो व्यक्ति धैर्यवान होता है वह जीवन मे कभी असफलता का मुह नही देखता। मनु जी महाराज ने धर्म का पहला लक्षण धैर्य ही तो बताया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती नें भी इस पर विशेष प्रकाश अपने ग्रन्थों मे डाला है। राजकवि ने धैर्य का सहारा लिया। उन्होने मोहम्मद गौरी से अपने देश के अपमान का बदला लेने व अपने प्रिय मित्र सम्राट पृथ्वीराज चौहान का सकट मे साथ निभाने की योजना बनाई। राजकवि ने साधू का वेश बनाया तथा लम्बी मंजिल तय करके गजनी मे पहुच गये। उन्होने राज दरबार मे जाकर मोहम्मद गौरी को बताया कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान शब्द बेधि बाण चलाना जानता है। यह अनुपम नामधारी है। मोहम्मद गौरी चन्द्रवरदाई की बातो मे आ गया। उसने पृथ्वीराज की तीरदाजी देखने की ठान ली।

राज दरबार मे लोहे के सात तवे समानान्तर रेखा मे गढवा दिए गए जिनकी ऊचाई पाच फुट के लगभग थी। उनकी ओट मे मोहम्मद गौरी कुर्सी पर बैठ गया। पृथ्वीराज चौहान को बुलवाया गया। उसको भारत मे निर्मित धनुषबाण दिए गए। चन्द्रवरदाई नें सम्राट पृथ्वीराज को पुरातन बृजभाषा मे सारी बात समझा दी। चन्द्रवरदाई ने मोहम्मद गौरी को कहा—"बादशाह आप चौहान को बाण छोड़ने का हुक्म दीजिये"। मोहम्मद गौरी ने जब कहा—'चौहान बाण चलाओ" तो चन्द्रवरदाई ने उस समय यह छन्द कहा—

चार बास चौबीस गज, अगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुलतान है, मत चूकै चौहान॥

यह छन्द सुनते ही महाबली पृथ्वीराज चौहान ने तीक्ष्ण बाण छोड़ा जो सात तवो को बेधता हुआ मुहम्मद शहाबुद्दीन गौरी के मुह को छेदता हुआ पार निकल गया। वह औंधे मुह जमीन पर गिर पड़ा।

यह देखकर सारे दरबार मे भगदड मच गई। मौहम्मद गौरी के अंग रक्षक मोर व खान इन्हे पकड़ने को दौड़े किन्तु भारत मा के प्रिय सपूत महाबली पृथ्वीराज व चन्द्रवरदाई आपस मे कटार मार कर ससार से विदा ले चुके थे।

जब तक ससार रहेगा भारत के महान कवि वीर चन्द्रवरदाई का नाम सदा अमर रहेगा। भारत के कवियो व विद्वानो को चन्द्र-वरदाई की तरह देशभक्ति का परिचय देना चाहिये। यही गणतन्त्र दिवस पर राजकवि को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि मानी जाएगी।

ग्राम पो० बहीन फरीदाबाद

आर्यसमाज की वर्तमान प्रासंगिकता

डा० [illegible], अलीगढ़

आर्य समाज ने १८७५ मे अपनी स्थापना से लेकर अब तक अनेक महत्त्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक शैक्षणिक और देशोत्थान के कार्य किए हैं, जिनसे भारत मे हुए नवोत्थान को देखा जा सकता है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि क्या आर्य समाज की आज भी प्रासंगिकता है।

आर्य समाज एक आन्दोलन है। इसके सतत जारी रहने की आवश्यकता है। आन्दोलन यदि ठण्डा हो जाता है तो फिर मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे नाना प्रकार की बुराइया प्रारम्भ हो सकती है। फिर भारतीय समाज को आज भी पूर्ण बुराई रहित नहीं कहा जा सकता। इसीलिए आर्य समाज की आज भी परमावश्यकता है।

आर्य समाज का मत है कि धर्म एक है ईश्वर एक है तथा धर्म के शाश्वत मूल्य सर्वत्र एक है। क्या यह कहना सही नही है कि भारत मे आज भी धर्म के स्थान पर बाह्य आडम्बरो को धर्म समझ लिया जाता है? क्या कब्र पूजा धर्म है? क्या नर बलि, पशु-बलि पक्षी-बलि आदि धर्म है? क्या शिव के नाम पर भाग पीना धर्म है? इसी प्रकार अन्य नाना प्रकार के अन्धविश्वासो मे श्रद्धा रखना क्या धर्म है? आर्य समाज इनको धर्म नही मानता अपितु मानव जाति के अभ्युत्थान मे इन्हे बाधक मानता है। इसलिए वैदिक धर्म जैसे सत्य धर्म के प्रचार प्रसार के लिए आर्य समाज की परम आवश्यकता है।

सामाजिक क्षेत्र मे भी आर्य समाज की आज भी महती आवश्यकता है। आज भी [illegible], दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या आदि जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों से ग्रसित है। इसलिए समाज मे [illegible] के लिए आज भी आर्य समाज की महती आवश्यकता है।

हालाकि शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। देश मे आर्य समाज ने अनेक गुरुकुल स्थापित किए है। आर्य समाज द्वारा सस्थापित अनेक डी० ए० वी० विद्यालयों और महाविद्यालयों का जाल बिछा हुआ है। लेकिन फिर भी क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति में उन भारतीय नैतिक मूल्यो का ह्रास नही दिखाई देता जिन्हें हमारे प्राचीन वेदादि सत्य शास्त्रों ने प्रतिपादित किया था? क्या आज की शिक्षण सस्थाए सही मायने में सदाचार का केन्द्र है? क्या वर्तमान शिक्षा सस्थाओं में प्रचलित पाश्चात्य सह शिक्षा प्रणाली उचित है? इसलिए भारत को भारत बने रहने की दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र मे भी आर्य समाज की महती आवश्यकता है।

आज जब कि खण्डित हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता पुनः खतरे मे है आर्य समाज की आवश्यकता को राष्ट्रीय दृष्टि से नकारा नहीं जा सकता। आर्य समाज का मत है कि व्यक्ति से सस्था बडी होती है तथा सस्थाओ से बडा देश होता है। अतः लोगो में उत्कृष्ट देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से आर्य समाज की प्रासगिकता सदैव बनी रहेगी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्य समाज का योगदान

—श्रद्धानन्द प्रासाद आर्यसमाज चेम्बूर बम्बई-७४

अंग्रेजों के आधीन पराधीन भारत को स्वतन्त्र कराने में आर्य समाज का अमूल्य और अकथनीय योगदान रहा है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले श्री पट्टाभि सीतारमैया ने कांग्रेस के इतिहास में लिखा है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने वालों ८० प्रतिशत आर्य समाजी ही आन्दोलनकारी थे। कांग्रेस का इतिहास यह बताता है कि ७० प्रतिशत आर्य समाजी आन्दोलनकारी थे, इसी से आप आर्य समाज का स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु किये गये संघर्ष का सहज अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य समाज को स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा एव स्वसंस्कृति से कितना लगाव था और है। हो भी क्यों न क्योकि आर्यसमाज का जन्म भी इसीलिए हुआ था।

स्वतन्त्रता महामन्त्र के दाता, युग प्रवर्तक तथा 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" को भारत भू पर घोषणा करने वाले तिलक को स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने वाले युग पुरुष आचार्य प्रवर गुरुदेव दयानन्द स्वदेश, स्वतन्त्रता स्वराज्य एवं नागरी भाषा तथा वैदिक संस्कृति के प्रबल एवं सर्वप्रथम समर्थकों में अग्रगण्य है। कांग्रेस के जन्म से पूर्व ही ऋषि ने अपनी अमर रचना "सत्यार्थ प्रकाश" के ६ वें समुल्लास में लिखा कि "कोई कितना ही यत्न करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य माता-पिता के समान कृपा, न्याय दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय इस अभियोग का साक्षी है कि स्वतन्त्रता का शंखनाद करने वाली तथा आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की प्रार्थना करने वाली ऋषि की अमर अक्षय रचना "आर्याभिविनय" से तत्कालीन अंग्रेजों में भय व्याप्त हो गया, अत: कुटिल अंग्रेजो ने इस पुस्तक पर अभियोग चलाया पर ऋषि दयानन्द अपने कण्टकाकीर्ण मार्ग से विचलित नहीं हुए। ऋषि ने पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंगलैण्ड जाकर स्वतन्त्रता हेतु कार्य करने की पावन प्रेरणा दी थी और पं० श्याम जी ने इंगलैण्ड जाकर इण्डिया हाउस की स्थापना की और इसी के माध्यम से भारतीय विद्यार्थियो में स्वतन्त्रता का बीजारोपण किया फलस्वरूप सावरकर, धींगरा जैसे एक नहीं अनेक क्रान्तिकारियों का जन्म हुआ कि जिन्होने पराधीनता के प्रबल पाशों में जकड़ी हुई मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने का आजन्म व्रत धारण कर अपने तुच्छ सुखों का परित्याग कर भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाया।

इधर भारत में ऋषि की अमर रचनाओं का असर कि जिसमें स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा, स्वाधीनता तथा स्वसंस्कृति की सर्वत्र चर्चा थी सम्पूर्ण भारत में बढ़ा, फलस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियो का जन्म हुआ। इन क्रान्तिकारियों के क्रिया-कलापों से अंग्रेज सरकार की जड़ें हिल गयीं। अंग्रेज इनसे अत्यन्त भयभीत हो गए और उन्हें जमे हुए अंगद के पांव उखड़ते नजर आए।

उस समय स्वामी दयानन्द के अकाट्य तर्कों तथा उनकी जादू भरी वाणी से मुन्शीराम जो कि अपने को बड़ा तार्किक मानते थे की वाणी ही न जाने कहां खो गयी। ऋषि का उन पर ऐसा जादू चला कि पंडित मुन्शीराम पहले स्वयं पावन और फिर पतित पावन बन गए और फिर देखते देखते महात्मा से स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। स्वामी दयानन्द सरस्वती से ही प्रेरणा प्राप्त कर मुन्शीराम जी ने गुरुकुल खोला और वहां पर प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली पर आधारित शिक्षा देने लगे इसी शिक्षा के साथ उन विद्यार्थियो में स्वतन्त्रता की भावना भी भरने लगे। स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वय स्वतन्त्रता हेतु कांग्रेस में सम्मिलित हो गए और इसके सक्रिय कार्यकर्ता बन गए।

जलियां वाला बाग के नीरीह निहत्थे, निरपराधियों के प्रमुख हत्यारे जनरल डायर को इस अमानवीयता पूर्ण नरसंहार दुष्कृत्य को देखकर कोई भी कांग्रेसी पंजाब में होने वाले अधिवेशन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर यमराज को आमन्त्रण देना नहीं चाहता था, कांग्रेस का मनोबल पूर्णत. गिर चुका था। ऐसे समय में निर्भीक श्रद्धानन्द ने ही सम्मेलन की अध्यक्षता स्वीकार कर सबको आश्चर्य चकित ही नहीं कर दिया अपितु अपने पौरुषत्व का परिचय दिया था। यह बात अलग है कि मुस्लिमो को पूर्णत: सन्तुष्ट रखने वाली कांग्रेस पार्टी से उनका सम्बन्ध अधिक दिनो तक न बना रह सका, फलस्वरूप स्वामी जी ने हिन्दू महा सभा की स्थापना की अस्तु—तथापि स्वामी जी ने जो अविस्मरणीय कार्य देश की स्वतन्त्रता हेतु किए वह स्वर्णाक्षरों में लेखनीय हैं। गुरुकुल से स्वतन्त्रता की छुट्टी पाने के उपरान्त शिक्षित दीक्षित स्नातको ने स्वतन्त्रता प्राप्ति में अपना अमूल्य एवं अकथनीय योगदान दिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में एक नही अनेको उदाहरण ऐसे मिलते हैं कि जिनमें स्वामी जी ने अंग्रेजो के राज्य का सर्वथा विरोध किया है। निर्भीक दयानन्द परमपिता परमात्मा के सिवा अन्य किसी से न भय खाते थे, तभी तो एक अंग्रेज अधिकारी के यह कहने पर कि "आप अंग्रेजो के अखण्ड राज्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें" स्वामी जी ने जिस निर्भीकता से प्रत्युत्तर दिया था, को सुनकर उस अधिकारी ने उन्हें विद्रोही फकीर की संज्ञा दी थी।

स्वामी जी ने भूमिगत रहकर अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को जो कि सुप्रसिद्ध १८५७ की असफल क्रान्ति के पश्चात अंग्रेजों के दमनचक्र से पूर्णत: हताश निराश हो चुके थे, को प्रोत्साहित कर मातृभूमि को मुक्त कराने की प्रेरणा दी थी। तत्कालीन रजवाडों में जाकर राजाओ को भी इस पुण्य कार्य में सहयोग देने की प्रेरणा की। जहां जहां स्वामी जी गए वहां-वहां सुप्त प्राय: पराधीन देशवासियो में स्वतन्त्रता का अलख जगाया, परिणामस्वरूप चतुर्दिक से अंग्रेजो को उखाड़ फेंकने की प्रतिक्रिया तीव्र हो गई। इधर सुराजप्रिय कांग्रेस पार्टी का उदय हुआ, पश्चात इसकी विचारधारा में परिवर्तन हुआ और यह स्वराज्य के लिए संघर्ष करने लगी।

"कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन, विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार आदि आन्दोलन से, तथा गरम दल के कार्य कर्ताओ द्वारा कार्य किया।" दोनों के क्रिया कलापों से अंग्रेज अत्यधिक भयभीत हो चुके थे। परिणामत: स्वामी जी से कुढ़कर अंग्रेजो ने स्वामीजी को समाप्त करने का षडयन्त्र रचा, और इसमें सफलता भी पाई।

अंग्रेजों की कुटिलता का शिकार स्वामी जी हुए। परन्तु स्वामी जी ने स्वयं की ज्योति बुझाकर अपनी ज्योति से लाखो ज्योतियो प्रज्वलित कर भारत ही नही वरन समग्र भूतल के मनुष्यमात्र को एक नई दिशा प्रदान की। यावत चन्द्र दिवाकर हैं तावत ऋषि का नाम रहेगा। अन्तत: अंग्रेजों को एक दिन भारतभूमि को छोडकर जाना ही पड़ा।

आज इतिहास इन सब तथ्यो को नहीं बताता। स्वतन्त्रता प्राप्ति में कांग्रेस का ही सर्वाधिक योगदान इतिहास में उद्धृत है और यही हमारे नौनिहालो को पढ़ाया भी जाता है कि यदि कांग्रेस, गांधी और नेहरू न होते तो शायद स्वतन्त्रता कभी न मिलती। मेरा अभिप्राय यहां यह लेशमात्र भी नहीं है कि कांग्रेस गान्धी और नेहरू का स्वतन्त्रता प्राप्ति में कुछ भी योगदान नहीं है इनका भी बहुत योगदान है। परन्तु आज आर्य समाज का उल्लेख इतिहास के पृष्ठों में नगण्य है।' जो जाति अपने इतिहास को भुला देती है, वह पूर्णत: नष्ट होती है' अत. अपने इतिहास को कभी भी विस्मृत नहीं करना चाहिए। यही उन ज्ञान-अज्ञात मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने वाले सेनानियों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वास्थ्य चर्चा

गुणों का खजाना है आंवला

आवला एक उपयोगी फल है। प्राचीन ऋषियो से लेकर आज तक चिकित्सा शास्त्रियो ने आवले की उपयोगिता को माना है और सबसे ऊचा स्थान दिया है। आयुर्वेद मे आवले की बहुत प्रशसा है। यह रक्त विकारो को दूर करता है। स्वय ठण्डा है पर साथ-साथ रक्त पित्त से होने वाली गर्मी को शात करता है। विटामिन सी तथा लोहे का भण्डार है। १०० ग्राम आवले मे ६०० मिली ग्राम विटामिन सी होता है। एक ताजे आवले मे नारगी की तुलना मे २० गुना अधिक विटामिन सी होता है। हमारे स्वस्थ रहने मे विटामिन सी की बहुत महत्ता है।

विटामिन सी की कमी से होने वाले रोगो मे त्वचा का शुष्क हो जाना बाल रूखे तथा सफद हाना लोहे की कमी से शरीर मे थकावट होना मसूड फूलना आदि रोग हो जाते हैं। विटामिन सी से शरीर के तन्तुओ को शक्ति मिलती है तथा यह रक्त को शुद्ध करता है। असमय बुढापे से बचाता है। आतो तथा पेट को साफ रखता है और इस प्रकार शरीर के लिए यह बहुत उपयोगी है। आवले की विशेषता यह है कि यह ताजा हरा भी खाया जा सकता है और सुखा कर भी काम मे लाया जा सकता है। ताजे आवले की अपेक्षा सूखा आवला अधिक उपयोगी है। सूखे आवले मे विटामिन ए व बी अम्ल स्टाच प्रोटीन और शकर आदि अधिक मात्रा मे मिलते हैं। इसके पत्तो मे भी १८ प्रतिशत प्राकृतिक लवण आरगैनिक एसिड होता है। इसके पकने पर भी इसके विटामिन नष्ट नही होते। यह अम्लीय एसिड होने के कारण स्वाद मे कसैला होता है। शाकाहारी भोजन करने वाले व्यक्ति केवल एक आवले से ही पौष्टिक तत्वो को प्राप्त कर सकते हैं।

यह युवका को यौवन प्रदान करता है और बूढो को युवा जैसी शक्ति। जिन लोगो को गर्मियो मे चक्कर आते हो उन्हे आवले का शरबत पीने से बहुत लाभ मिलता है। दिल की बीमारी वालो के लिए आवले का मुरब्बा, शहद डाल कर धूप मे पकाया हुआ बहुत उपयोगी है। हर व्यक्ति को प्रति दिन पचास मिली ग्राम विटामिन सी की आवश्यकता पडती है जो केवल १६ ओस आवले के रस से मिल जाती है। गर्भवती स्त्री के लिए आवला तथा उससे बना मुरब्बा बहुत उपयोगी है। हृदय की बेचैनी धडकन मेदा खराब होना तिल्ली बढना रक्तचाप दाद शक्ति का घटना वीर्य की निब लता दातो की चमक मस्तिष्क तन्तुओ का तरावट देना टूटी हड्डी को जल्दी जोडना आदि के लिए आवला विशेष उपयोगी है।

—एस० आर० मित्तल

विश्व हिन्दू परिषद्

(पृष्ठ ३ का शेष)

नागालैंड और कश्मीर मे कई ऐसी सस्थाय हैं जो खुलेआम राष्ट्र विरोधी कार्यो मे सलग्न हैं। इन सस्थाओ पर प्रतिबन्ध लगाने के बजाय भारत सरकार उनके प्रतिनिधियो से बात चीत करती है। जाहिर है कि सरकार के इस तरह के आचरण से भारतीय राजनीति कलह कुठा और वैमनस्य से ही ग्रस्त होगी और देश मे जो रही सही सामाजिक सास्कृतिक सस्थाए हैं वे भी समाप्त हो जायगी। यदि भारत का सामाजिक और सास्कृतिक परिवेश कलह से ग्रस्त होता है तो इससे किसी को लाभ नही मिलेगा बल्कि राष्ट्र के नेताओ और राष्ट्रीय एकत्व का हा भारी क्षति उठानी होगी।

वार्षिक सम्मेलन

गुरुकुल पूठ डा० बहादुरगढ जिला गाजियाबाद का वार्षिक सम्मेलन २४ २५ २६ मार्च १९९५ को मनाना निश्चित हुआ है जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन एव विभिन्न सम्मेलनों का कार्यक्रम है मुख्य आकर्षण व्यायाम प्रदर्शन है अतः आप सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर उत्सव की शोभा बढायें।

—धर्मपाल आचार्य

हम भारत के लोग
हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-
संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज
तारीख 26 नवंबर, 1949 ई (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला
सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस
संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और
आत्मार्पित करते है।
गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी, 1995

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-१-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 26 27-1-1995

स्वामी सत्यप्रकाश जी दिवंगत

(पृष्ठ १ का शेष)

उपरान्त ही स्वभाव में बस चुकी थी । आर्यसमाज हनुमान रोड दिल्ली में रह रहे थे तभी स्वामी जी के पुत्र का निधन दिल्ली में हो गया—वह दिल्ली में सर्विस पर थे।

शरीर-निष्प्राण सामने रखा था, समस्त आर्य परिवार वियोग से युक्त था पर स्वामीजी महाराज निश्चेष्ट निर्मोही की भांति विराजमान थे। लोगों ने स्वामी जी से पुत्र वियोग की चर्चा की । तव स्वामी जी ने उत्तर दिया । कि मुझसे क्या ?

मैं तो कभी का बन्धनों से मुक्त हो चुका हूं । आप लोग जाने इसका क्या करना है। अन्त में अन्तिम संस्कार मे भी स्वामी जी निर्मोही ही बने रहे—

आज स्वयं भी बन्धन मुक्त हो गए—

पूज्य स्वामी जी—हम सार्वदेशिक सभा के भक्तजन आपकी आत्मा को सद्गति मिले ऐसी प्रभु से प्रार्थना करते हैं और हम सभी आर्यजन आपकी जीवनदायी प्रेरणा से प्रेरित हों ऐसी इच्छा है।

आज आप कहा होगे, कैसे होंगे, हमें मालम नहीं, आप गये काया का रूप भस्मात शरीरम्—

और क्या है ?

दक्षिण के चार राज्यों का आर्य सम्मेलन

आज देश की परिस्थिति अत्यन्त भयानक है । हमारे राजनैतिक नेता देश और जाति को मजहब और प्रान्त के नाम पर बिभाजन कराने पर तुले हुए हैं। भारत के संविधान के ४२वें संशोधन के आधार पर १९७६ में धर्म-निरपेक्ष का प्राविधान सूत्र प्राय प्रवेश किया गया, लेकिन उसका कोई विवरण नहीं दिया गया । धारा २९ (१) और ३० के अनुसार भारतीयों को अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के नाम पर मजहब के आधार पर विभाजन किया गया । ये दो अधिकरण, धर्म निरपेक्षता का उलंघन कर रहे हैं। पाकिस्तान के गुप्तचर, आई.ए.एस. के तत्वावधान में देश में चारों ओर फैलकर हिंसा को भड़का रहे हैं। बम्बई के हिंसात्मक दुर्घटना को देश भर में फैलाने की योजना कर रहे हैं । हैदराबाद उनकी योजना का एक केन्द्र है। सरकार, सेना या पोलिस आदि हमारी रक्षा नहीं कर सकेगी। हमें अपने तन और धन की रक्षा स्वयं करनी पड़ेगी।

आर्य समाज ऐसी परिस्थिति में मौन साधे नहीं रह सकता। जन जागृति के लिये, देश के विभिन्न प्रांतों में सम्मेलन करने का आयोजन कर रहा है। इस योजना के अन्तर्गत दक्षिण के चार राज्य-आंध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तामिलनाडू का संयुक्त आर्य सम्मेलन फरवरी मास १९९५ मे हैदराबाद नगर में, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मनाने का निश्चय किया गया है। (निश्चित तिथियां बाद में मालूम की जायेंगी। । कृपया सभी आर्य समाजी बन्धुओं से निवेदन है कि, सब एक जुट होकर इस सम्मेलन को सफल बनाकर देश को आने वाली भयंकर परिस्थितियों से बचाएं। इस भयंकर परिस्थितियों मे केवल आर्यसमाज ही देश को बचा सकता है।

सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि, तन-मन-धन से इस सम्मेलन को सफल बनाएं ।

"अब नहीं तो कभी नहीं"

"अपने को मिटाओ-धर्म को बचाओ"

निवेदक :

कान्तिकुमार कोरटकर

प्रधान आं०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा

जयन्ती

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के . श्री स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती महाराज का १३३ वा जयन्ती समारोह दि० २६ जनवरी से २८ जनवरी १९९५ तक आर्यकिशोर एवं विद्वत्कला परिषद के तत्वावधान में कुलभूमि मे बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर जनपदीय स्तर पर कई प्रतियोगितायें भी सम्पन्न होंगी।

—डा० हरिगोपाल शास्त्री, प्राचार्य

टंकारा में ऋषि मेला

देहली से स्पेशल बसें चलेंगी

महर्षि दयानन्द जी की जन्म भूमि टंकारा में २६-२७-२८ फरवरी १९९५ को ऋषि मेला लग रहा है जिसमें भाग लेने हेतु संन्यासी, महात्मा, आर्य विद्वान तथा ऋषि भक्त टंकारा पहुंच कर स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि देंगे। ऋषि भक्तों को टंकारा ले जाने हेतु आर्य समाज मन्दिर मार्ग, (फोन न० ६१२११०, ३४३७१८), नई दिल्ली से २४-२-९५ दिन के २ बजे बसें चलेगी और ५-३-९५ रात्रि वापिस आयेंगी। यात्री टंकारा के साथ-साथ जयपुर, अजमेर, उदयपुर, माऊंट आबू, नाथ द्वारा, द्वारिका, आखो, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, साबरमति आश्रम आदि देखेंगे। किराया बस १०६५) है। निवास एवं भोजन व्यवस्था आर्य समाजों में होगी। यदि कहीं-कहीं प्रबन्ध नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे, १०६५) बस किराया है। टंकारा चलने वाले अपनी सीटें शीघ्र ही रिजर्व करा लें।

रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक यात्रा

४६६ भीमनगर, गुड़गांवां-१२२००१

(फोन धूर) ३२६४६६

आर्य दैनिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक १] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ फाल्गुन कृ० ४ सं० २०५१ १९ फरवरी १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का शिष्टमंडल श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के नेतृत्व में उपराष्ट्रपति से मिला

नई दिल्ली, ९ फरवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने दिनाक २ जनवरी १९९५ को भारत के उपराष्ट्रपति श्री के०आर० नारायणन को एक पत्र लिखकर उनका ध्यान उनके उस प्रारम्भिक भाषण की ओर दिलाया था, जो उन्होंने आठवें अन्तर्राष्ट्रीय तमिल महासम्मेलन के अवसर पर दिया था। अपने अभि-भाषण में श्री नारायणन ने कहा था, कि यद्यपि तमिल भाषा के ऊपर संस्कृत भाषा के प्रभाव को तो स्वीकार किया गया है, लेकिन संस्कृत भाषा के ऊपर तमिल भाषा के प्रभाव को अच्छी तरह नहीं जाना गया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी कहा था कि "ऋग्वेद में तमिल भाषा के शब्द भी मिलते हैं।

इस अंक के आकर्षण

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने अपने पत्र में स्पष्ट किया कि इस प्रकार का कथन एक प्रकार से "ईश्वर-निन्दा" है। इसलिए यह वक्तव्य उन्हें तुरन्त वापिस ले लेना चाहिए।

इस विषय में एक प्रतिनिधि मंडल, जिसमें सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के अतिरिक्त श्री सोमनाथ मरवाह तथा अन्य लोग भी शामिल थे, दिनांक ८ फरवरी १९९५ को उपराष्ट्रपति से उनके निवास स्थान पर मिला। लगभग एक घण्टे तक विचार-विमर्श चलता रहा।

श्री के०आर० नारायणन ने स्पष्ट किया कि उन्होंने अपने भाषण में केवल उसी कथन को दुहराया था जो कुछ अन्य विद्वानों ने समय-समय पर इस विषय में कहा था। सभा प्रधान ने उप-राष्ट्रपति के समक्ष ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ७१ वें सूक्त के प्रथम मन्त्र को प्रस्तुत किया, जिसका भावार्थ निम्न प्रकार है—

'हे वेदवाणी के पालक प्रभो! पदार्थों के नाम को अपने ज्ञान में धारण करने के लिए ग्रहण-शक्ति से योग्य पवित्र अन्तःकरण वाले ऋषि सृष्टि के आदि में जो प्रेरणा लेते और उच्चारण करते हैं, वह आदि (प्रथमम्) है। समस्त वाणियों का अग्र है इनका जो श्रेष्ठ निर्दोष है वही इन ईश्वर की प्रेरणा से प्राप्त है जो अन्तःकरण में निहित हुई ही प्रकट होती है।"

उपराष्ट्रपति श्री के०आर० नारायणन ने उपरोक्त कथन से सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि वे वेदों के अपौरुषेय (ईश्वर-कृत) होने में विश्वास करते हैं और उनका बड़ा सम्मान करते हैं।

श्री लक्ष्मीचन्द व श्री शिवकुमार शास्त्री ने चारों वेदों का अंग्रेजी भाष्य उपराष्ट्रपति को इस अवसर पर भेंट किया।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज एक संस्था भी है और आन्दोलन भी

आर्यसमाज ने आंदोलन के रूपमें सक्रिय रहकर कई उपलब्धियां हासिल की है। जो देश के हित में अत्यन्त लाभदायक साबित हुईहै। इन उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए आर्य समाज के नेतृत्व में सारा भारत एक होकर लड़ा था।

जब दक्षिण में एक स्वतन्त्र इस्लामी राज्य बनने जा रहा था तब आर्य समाजियों ने उसके विरुद्ध मोर्चा लिया, निजाम और उनके साथियों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। जब भारत स्वतन्त्र हुआ और निजाम ने स्वतन्त्र इस्लामी राज्य के प्रयत्नों को तेज किया तब भारत सरकार द्वारा की गई पुलिस कार्यवाही को सफल बनाने में आर्य समाज का बड़ा योगदान रहा इस तथ्य को भारत सरकार भी मानती है।

भारत आजाद होने के पश्चात् भारतीयों का ध्यान राजनीति की तरफ अधिक बढ़ने लगा। आर्य समाज के नेता भी राजनीति क्षेत्र की ओर आधिक ध्यान देने लगे। ऐसा करना अनुचित तो नहीं था परन्तु इस कारण समाज सुधार की ओर आर्य समाजियों के प्रयत्न उतने सफल नहीं रहे। इसका मूल कारण उनके नेताओं की उदासीनता थी। समाज सुधार को राष्ट्र निर्माण में प्राथमिकता देना जरूरी होता है। जिस राष्ट्र के समाज में सामाजिक बुराइयों का बोलबाला होता है, उस राष्ट्र का पनपना कठिन ही नहीं दुश्कर भी हो जाता है।

आज हमारा राष्ट्र जातिवाद के नाम पर टुकड़े-टुकड़े होता जा रहा है। आर्य समाज उस बिगड़ती दशा को सुधारने के लिए कंकण बद्ध होना चाहिए। आर्य जातिवाद का सूचक नहीं है। जातिवाद की भावना से परे है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि आर्य समाज की शाखायें सारे विश्व में फैली हैं। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि वे भारत के बाहर के देशों में भी वहां की राष्ट्रीयता में घुल-मिल कर आर्यत्व को बरकरार रखते हुए आर्य की हैसियत से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। आर्य समाज इस समय सारे विश्व में एक प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में कार्यरत है परन्तु फिर भी इसमें बहुत से परिवर्तनों एवं सुधारो की आवश्यकता है।

दक्षिण भारत में सुसंगठित आर्य समाज

भारत के सारे प्रान्तो मे भारतीय बनकर आर्य के नाते शान्ति से जीवन बिता रहे हैं। आर्य समाज आसेतु हिमालय पर्यन्त व्याप्त है। दक्षिण भारत मे आर्य समाज फैला हुआ है। तमिलनाडु में मदुराई आर्य समाजियों का केन्द्र कार्यालय है। उसका एक केन्द्रीय कार्यालय भी बन रहा है, बड़े स्तर पर सम्मेलन किये जाते हैं। सामाजिक सुधार और हिन्दी भाषा का प्रचार भी बड़े जोर से चल रहा है। सार्वदेशिक के संगठक महात्मा नारायण सरस्वती की देख-रेख और प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रामगोपाल तथा अन्य नेताओं की देखरेख में संस्था ठीक चल रही है। श्री रामचन्द्रन नाम के एक दानदाता ने दो एकड़ जमीन गुरुकुल स्थापना के लिये भी दी है। स्वर्गीय श्री आनन्दबोध सरस्वती जी ने अपने जीवन काल में मदुरई और तमिलनाड के अन्य स्थानों पर जाकर कई सम्मेलनों में भाग लिया और वहा के कार्यों को देखकर वे सन्तुष्ट थे।

आज देश की परिस्थिति अत्यन्त भयानक है। हमारे राजनैतिक नेता देश और जाति को मजहब और प्रान्त के नाम पर विभाजित कराने पर तुले हुए हैं। भारत के संविधान के ४२वें संशोधन के आधार पर १९७६ मे धर्म-निरपेक्ष का प्रावधान जोड़ा गया, लेकिन उसकी कोई व्याख्या नही की गई धारा २९ (१) और ३० के अनुसार भारतीयोंको अल्पसंख्यक और बहुसंख्यकके नाम पर, मजहबके आधार पर विभाजित किया गया। ये दो अनुच्छेद, धर्म निरपेक्षता का उल्लंघन कर रहे हैं। पाकिस्तान के गुप्तचर, आई.ए.एस. के तत्वावधान

(शेष पृष्ठ १५ पर)

श्यामाप्रसाद मुखर्जी कन्या महाविद्यालय में काव्य गोष्ठी सम्पन्न

डा० आशा जोशी रीडर हिन्दी विभाग के संयोजकत्व में दिनांक ६-२-९५ को एक विशिष्ट काव्य गोष्ठी का आयोजन मुखर्जी कालेज के प्रांगण में किया गया।

अध्यक्षता वरिष्ठ कवि श्री रमानाथ अवस्थी ने की और संचालन श्री अरुण जैमिनी द्वारा किया गया।

काव्य गोष्ठी में—

श्री मधुर शास्त्री ओमप्रकाश आदित्य, महेन्द्र अजनबी डा० प्रेमसिंह श्री गोविन्दव्यास, अरुण जैमिनी श्रीमती अर्चना शर्मा, धर्मचन्द्र अक्षेष, सुनील जोशी ने काव्यपाठ के माध्यम से महाविद्यालय के श्रोत्र वर्ग को आनन्द-विभोर करके दिशाबोध भी कराया।

डा० आशा जोशी के नेतृत्व में इस प्रकार से समय-समय पर सफल आयोजन हिन्दी विभाग द्वारा किये जाते हैं।

महाविद्यालय की प्राचार्या जी का आयोजनों को सफल बनाने में विशेष सहयोग प्राप्त होता है। —विशेष सम्वाददाता द्वारा

ऋषिवर ! तुम्हें प्रणाम

डा० महेश विद्यालंकार

भारत के भाग्योदय के उज्ज्वलतम प्रकाशरूप देवात्मा गुरुवर देव दयानन्द तुम्हें इस नश्वर व निरीह संसार से विदा हुए एक सौ ग्यारह वर्ष हो चुके हैं। प्रतिवर्ष तुम्हारा जन्मोत्सव, बोधोत्सव, निर्वाणोत्सव आदि मनाकर आर्य समाज वार्षिक स्मरण कर लेता है। सदियो के बाद इस धराधाम का सौभाग्य जगा था, जो आप जैसी पुण्यात्मा का आगमन हुआ। आप दैवीय गुणों से युक्त ज्योतिपुंज के रूप मे जीवन-जगत में व्याप्त अविद्या, जड़ता, अन्ध-विश्वास, रूढ़ियों आदि को अपने व्यक्तित्व एव कृतित्व से हटाते व मिटाते गए। आप ब्रह्मनिष्ठ, तपोनिष्ठ सत्य प्रतिष्ठ आदि के साकार रूप थे। तुम महर्षि थे। तुम वीरता, धीरता गम्भीरता, सौम्यता सरलता, दयालुता आदि की जगमगाती प्रतिमूर्ति थे। आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व मे राम की मर्यादा, कृष्ण की नीतिमत्ता, भीष्मपितामह का ब्रह्मचर्य, गौतम की करुणा, महावीर की अहिंसा और शकर के पांडित्य का अपूर्व मणिकांचन संयोग था। तुम्हे जितने भी विशेषणों से भूषित करूं सभी तुम्हारे महान व्यक्तित्व के समक्ष हल्के पड़ जाते हैं।

तुम्हारे स्मरण मात्र से हृदय श्रद्धा भक्ति से भर उठता है। सिर चरणो मे झुकने लगता है। नेत्र सजल होकर तुम्हारी स्मृति पर अर्घ्य चढ़ाने लगते हैं। रोम-रोम तुम्हारी स्मृतियो और उपकारो से सिहर उठता है। ऋषि तुम धन्य थे। प्रभु के मानस पुत्र थे ससार मे व्याप्त त्रिविध दु.खो के संकटत्राता थे। तुम मानवता के गायक और ससार के उद्धारक थे। तुम्हारा महान इतिहास प्रशसनीय है. तुम्हारे उपकार वन्दनीय हैं। तुम्हारी सेवाए और योगदान अवर्णनीय है। तुम्हारा जीवन अनुकरणीय है। तुम्हारा तप-त्याग और बलिदान स्पृहणीय है: तुमने न जाने कितने लोगो को जीवन दिया। तुमने सुप्त भारतीय संस्कृति, सभ्यता और जीवन मूल्यों के प्रति लोगो मे भाव जाग्रत किए। तुमने भारतीय स्वर्णिम, उज्ज्वलतम इतिहास के प्रेरक पृष्ठो को ससार के सामने रखा। जो तुम्हारे सम्पर्क मे आया, वह अमूल्य हीरा बन गया। ऋषिवर ! तुम क्या थे, यह आज तक ससार न जान सका ?

तुम संसार मे सत्य के देवदूत बनकर आए थे। तुम सत्य के शोधक, सत्य के पुजारी, और सत्य पर ही शहीद हुए। तुम्हारी उल्लेखनीय विशेषता रही है। जो सत्य के प्रचार, प्रसार के मार्ग में जो पाखण्ड, आडम्बर, अवतार, पीर, पैगम्बर, महन्त, सन्त महाराज आदि आए। उन्हे तर्क, प्रमाण युक्ति व शास्त्रार्थ से परास्त कर 'सत्यमेव जयते' के अमर वाक्य को जीवित रखा। तुम्हारा संकल्प था 'सत्यं वदिस्यामि' उससे कभी विचलित नहीं हुए। तुमने सत्य के पालन और स्थापना के लिए न जाने कितनी बार जहर पिए, पत्थर खाए, अपमान सहा, भूखे रहे। अन्त मे सत्य के लिए ही जीवन न्यौछावर कर दिया। सचमुच ! तुम आजीवन विषपायी थे। हंस हसकर जहर पीते रहे, ससार की दुर्गति अज्ञानता व जड़ता पर रातो जागकर आंसू बहाते रहे ! तुम्हारा सारा जीवन प्रेरणा का जीवन रहा है।

आर्य समाज तुम्हारा लगाया हुआ बगीचा है। इस बगीचे को पल्लवित व पुष्पित करने के लिए आपने अपार कष्ट उठाए। खून, पसीना और सर्वस्व देकर आपके भक्तों और अनुयायियो ने इसे हरा भरा रखा। इसका मान, सम्मान, चिन्तन, आदर्श मान्यताएं स्वदेश व विदेश सभी जगह फैली। आपने आर्यसमाज को एक प्रकाशस्तम्भ के रूप मे स्थापित किया। जो जीवन जगत को प्रत्येक दिशा मे सत्यप्रकाश प्रदान करे। उसका चिन्तन मानवता का दिया। आपने आर्य समाज को "वैदिक धर्म" का प्रचारक, प्रसारक एव उद्धारक के रूप मे नियुक्त किया। आपने ही सदियो के बाद पहली बार उच्च स्वर मे घोषित किया वेद ईश्वरीय ज्ञान है। सब सत्य विद्याओ का पुस्तक हैं। वेद प्रभु का आदेश है, उपदेश है और सन्देश है। वेद सबके हैं। सबके लिए हैं और सबको पढ़ने का अधिकार है। आपने ही नारी जाति की वकालत करके उसे पुनः मातृशक्ति के पद पर प्रतिष्ठित किया। आपने आर्य समाज के माध्यम से संसार को आत्मा, परमात्मा, धर्म भक्ति जीवन और जगत का सीधा सच्चा व सरल मार्ग दिखाया। आपने इसके चिन्तन में व्यावहारिकता, वैज्ञानिकता, उपयोगिता तथा तर्कबुद्धि प्रदान की। इन समग्र विशेषताओं तथा योगदान के कारण आर्यसमाज को इतिहास व जगत ने रेखांकित किया। लोगो को कहना पड़ा—'जहा जहा आर्य समाज है, वहां वहा जीवन है।

किन्तु ! मेरी श्रद्धा व आस्था के आधार ऋषिवर मर्मान्तिक पीड़ा से लिख रहा हू कि आज तुम्हार लगाया हुआ आर्य समाज रूपी बगीचा, उजड़ रहा है ? सूख रहा है, बिखर रहा है ? काटा जा रहा है ? सार्थक सिद्वातो, विचारो और आदर्श रूपी वृक्षों को हटाकर स्वार्थ-पद: अहंकार तथा भौतिकता के वृक्ष रोपे जा रहे हैं ? इसलिए तेरे बगीचे की रौनक, खुशबू व आकर्षण क्षीण हो रहे हैं ? बगीचे के रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं ?

अब आर्य समाज रूपी बगीचे मे शीतल शान्त सुखद हवाएं नही आ रही है। चारो ओर बिखराव, स्वार्थ व झगड़ो की गर्म हवाए चल रही हैं ? सर्वत्र बिखराव, भटकाव तथा स्वार्थगत, दलगत कुत्सित राजनीति आग की तरह फैल रही है ? इसलिए आज का आर्य समाज शरीर से चाहे लम्बा-चौड़ा व फैला नजर आता हो, किन्तु आत्मा, विचार, प्रभाव एव रचनात्मक कार्यो की दृष्टि से ही सिकुड़ता जा रहा है। यह हम सबके लिए विचारणीय तथा चिंतनीय है। आर्य समाज अपने सत्य स्वरूप, उद्देश्य, कर्तव्य व लक्ष्य से भटक रहा है ? यह वैचारिक चिन्तन है। आज अच्छे, सही व पथ प्रदर्शक विचार कही नहीं मिल पा रहे हैं। आर्य समाज दुनिया की सर्वोत्तम विचार धारा का धनी है। किन्तु . परन्तु लेकिन ..इसकी चारित्रिक गरिमा की साख मे, पहचान में, और विश्वसनीयता मे गिरावट आ रही है। जो सस्थाओ, संगठनो सभाओं मन्दिरो व व्यक्तियो मे आकर्षण तथा विशेषताए होनी चाहिए, वे लुप्त हो रही है ? इसलिए आर्य समाज के क्रिया-कलापो पर लोग प्रश्नचिन्ह लगा रहे है ? मन्दिर व जलसे उपस्थिति के लिए तरस रहे हैं। सस्थाएं सूनी पड़ी हैं ? कुछ खो गई, कुछ सो गई ? कुछ रो रही हैं ? अध्यात्म भक्ति व चरित्र सुधार के लिए किसी के पास फुर्सत ही नही है। नीचे से ऊपर तक सारा ढाचा लड़ खड़ा रहा है। कोई किसी की न सुनता है, न मानता है और न महत्व देता है ? प्राय. व्यापार बुद्धि से ऋषि और आर्य समाज को कैश किया जा रहा है ? मिशनरी भावना तथा सेवा कर्तव्य की भावना समाप्त हो रही हैं। विद्वान वक्ता, उपदेश पुरोहित, संन्यासी आदि दुर्लभ हो रहे हैं, जो हैं--उन्होंने अपनी अलग दुकानें खोल ली हैं ? सस्ता, चमकीला, मनोरंजक व सबको राजी करने का माल धड़ाधड़ बेच रहे है ? सिद्धात कोने मे खड़े रो रहे है। दयानन्द और आर्य समाज, टिकट पाने का, ऊंचा पद हथियाने का, संस्था सगठनो पर कब्जा करने का और हवाई जहाजो पर उड़ने का साधन व माध्यम बन रहे हैं ? यही हमारे पतन की पराकाष्ठा है।

ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव प्रभु के वरदपुत्र देवदयानन्द की गौरव-गाथा स्मरण करने की तिथि है। आत्म चिंतन आत्म-निरीक्षण तथा आत्म-सुधार की मगलवेला है। असत्य से सत्य की ओर, पाप से पुण्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, स्वार्थ से परमार्थ की ओर बढ़ने का प्रेरक अवसर है।

ऋषि भक्तो ! आर्यो ! उठो ! जागो, आखें खोलो। अपने स्वरूप को पहिचानो। शान्त, सात्विक क्षणो मे अपने हृदय की धड़कनो पर हाथ रखकर अपने से पूछो—मैंने ऋषि और उसके मिशन आर्य समाज के लिए क्या किया ? और क्या कर रहे हैं ? नहीं किया तो सच्चे अर्थो में करने कराने का सकल्प व्रत ले लें। तभी ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव मनाने की, उन्हें श्रद्धांजलि देने की सार्थकता तथा व्यवहारिकता होगी।

प्रकाण्ड विद्वान पं० गोपदेव शास्त्री (सिकन्दराबाद) वेद-वेदांग पुरस्कार से सम्मानित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज की ओर से वर्ष १९९५के लिए आर्यजगत् का सर्वोच्च वेद वेदांग पुरस्कार श्री पं० गोपदेव शास्त्री (सिकन्दराबाद) को देने की घोषणा की गयी है।

वेद-वेदांग पुरस्कार से प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान को पुरस्कृत किया जाता है, जिन्होंने आजीवन वेद-वेदांगों पर अनुसंधान एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया हो। पुरस्कृत विद्वान को रुपये २१,००१/- रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र तथा शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाता है। पं० जी को दिनांक २९ जनवरी १९९५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) के ५१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पं० गोपदेव शास्त्री जी का जन्म सन् १९०० में आंध्र प्रदेश के जिला गुंटूर के कुचि पुडि ग्राम में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा के उपरान्त उच्च शिक्षा के लिए शास्त्री जी को काशी विद्यापीठ और पोटोद्वार गुरुकुल में भेजा गया।

स्नातक बनने के उपरान्त अपना जीवन उन्होंने समाज सेवा के लिये समर्पित कर दिया। जो दान-दक्षिणा उन्हें प्राप्त होती रही है उस धन से इन्होंने अपनी जन्म दात्री माता के नाम पर अम्बा दर्शन ग्रन्थमाला की स्थापना की और उसके अन्तर्गत अपने ग्रन्थों का प्रकाशन किया तथा आज भी निरन्तर कर रहेहैं। ये सारे प्रकाशित ग्रन्थ आर्य समाज कुचि पुडी की सम्पत्ति हैं।

शास्त्री जी ने अब तक ५० पुस्तकों का प्रणयन किया है। इनकी कुछ कृतियों के एकाधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। शास्त्री जी ने जहां तेलगू में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र लिखा वहां सभी उपनिषदों और गीता का भाष्य भी किया हैं। आत्म चरित्र लिखने के साथ-साथ उन्होंने ईसा मसीह का रहस्य जीवन भी लिखा है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकाके तेलगू में अनुवाद को विद्वानोंने सराहा है।

आपको आंध्र विश्व विद्यालय की ओर से "मानद डाक्टरेट" की उपाधि प्रदान की गई है।

इस प्रकार शास्त्री जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

पं० आशानन्द जी वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित

आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से वर्ष १९९५ का वेदोपदेशक पुरस्कार पं० आशानन्द जी को देने की घोषणा की गयी है।

वेदोपदेशक पुरस्कार आर्य समाज के ऐसे उपदेशक, भजनोपदेशक तथा कार्यकर्त्ता को दिया जाता है, जिन्होंने आजीवन समर्पित भाव से आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार का कार्य किया हो। पुरस्कृत विद्वान को १५,००१/- रुपये अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी एवं शाल तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाता है।

पं० जी कों दिनांक २९ जनवरी १९९५ को आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) के ५१वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त पुरस्कार से सम्मानित कियागया।

आर्य जगत के वयोवृद्ध व सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक व प्रचारक श्री आशानन्दजी ने अपनी समस्त आयु आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धांतों के प्रचार प्रसार में लगा दी है। जादू के खेल दिखाकर वे वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं जिससे जनता को अन्धविश्वास के खिलाफ जगाकर मनोरंजन के साथ वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया जा सके। आज यद्यपि आप अत्यन्त वृद्ध हैं, लगन और उत्साह तथापि आप में पूर्ववत् है। दिनांक २-११-१९०२ शुजाबाद मुलतान में जन्मे स्वतन्त्रता सेनानी, त्यागमूर्ति एवं दानवीर प० आशानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज एवं वैदिक विचार-धारा के प्रसारण में व्यतीत हुआ। पं० जी द्वारा अपनी सात्विक राशि से धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय की स्थापना असहाय छात्र-छात्राओं, कन्याओं व विधवाओं की सहायता आदि इनके समर्पित जीवन का अंग है।

मृत्यु के उपरान्त भी न केवल नेत्र दान करने की इच्छा, अपितु सम्पूर्ण जीवन को दान करने की सदिच्छा रखने वाले पं० आशानन्द जी वास्तविक सम्माननीय है। ईश्वर इन्हें अपने कार्यों को करने की शक्ति दें एवं दीर्घायु बनाये।

उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार—

पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी को १९९२ के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

ज्ञानपुर (भदोही) प्रसिद्ध वैदिक विद्वन "पद्मश्री" डा० कपिलदेव द्विवेदी को उ०प्र०संस्कृत अकादमी द्वारा १९९२के"विशिष्ट पुरस्कार" से सम्मानित किया जाएगा। इस पुरस्कार के अन्तर्गत पच्चीस हजार रुपये तथा प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार उ० प्र० संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं विकास की २५ वर्ष से अधिक की विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है।

डा० द्विवेदी को संस्कृत साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए भारत सरकार ने १९९१ में "पद्मश्री" से सम्मानित किया था। इसी वर्ष का आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार भी आपको दिया गया। आधा दर्जन ग्रन्थ अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन, संस्कृत व्याकरण, संस्कृत निबन्धशतकम्, राष्ट्रगीताजलि, भक्तिकुसुमाजलि एवं अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन उ०प्र० सरकार द्वारा पहले ही पुरस्कृत किए जा चुकेहैं वैदिक साहित्य और आर्यसमाज की विभिन्न शताब्दी समारोह में आपको सम्मानित किया जा चुका है। आपको लंदन विश्वविद्यालय फ्रेंकफर्ट विश्व विद्यालय टौरन्टो विश्वविद्यालय ईस्टवैस्ट यूनिटी विश्वविद्यालयन्यूयार्क, सूरीनाम विश्वविद्यालय एवं मारीशस तथा सूरीनाम के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

आप देश विदेशी १० भाषाओं के ज्ञाता हैं संस्कृत भाषा की सरलीकरण पद्धति के उन्नायकों में से हैं। आप द्वारा लिखी हुई रचनानुवाद कौमुदी संस्कृत अनुवाद की पुस्तक की ८ लाख प्रतियां बिक चुकी हैं।

डा० कपिलदेव द्विवेदी विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर (भदोही) के निदेशक भी हैं।

डा० आर्येन्द्र द्विवेदी
मन्त्री, विश्वभारती अनुसंधान परिषद

आर्यों के भारत से ही प० एशिया पहुंचने का दावा

नई दिल्ली वा० भारतीय अमरीकी विद्वान के एक वर्ग ने दावा किया है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। परिस्थितिकीय और राजनीतिक कारणों से भारत से ही आर्य पश्चिम एशिया होते हुये यूरोप तक पहुंचे।

शोधकर्ताओं ने यह दावा ताजा पुरातात्विक अनुसंधानों, भूजल-सर्वेक्षणों, उपग्रह से प्राप्त चित्रों, प्राचीन शिल्पों की वैज्ञानिक तिथियों ज्यामिति और वैदिक गणित के सटीक आंकड़ों के आधार पर किया है, उनका मानना है कि महाभारत का समय ईसा से लगभग ३१०२ वर्ष पूर्व था और सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व में सूख गयी थी।

भारतीय यूरोपीय इतिहासकारों का अभी तक यही मत रहा है कि मध्य एशिया से आर्यों ने ईसा से १५०० वर्ष पूर्व भारत पर उत्तर पश्चिम छोर से आक्रमण किया, जहां के मूल निवासी द्रविड़ों को पराजित किया, सिन्धु घाटी में उनके नगरों को तबाह किया और द्रविड़ों को हजारों मील दूर देश के धुर दक्षिणी हिस्से में धकेल दिया। लेकिन जिन तर्कों के आधार पर यह बात कही गयी थी। भारतीय अमरीकी इतिहासकारों ने उन्हें हर ढंग से गलत साबित किया है।

आर्यों को विदेशी आक्रांता बताने वाले इतिहासकारों का मत रहा है कि सभ्यता का उदय मेसोपोटामिया की नदी घाटियों से हुआ कि हड़प्पा के नगर नियोजन पर यूनानी ज्यामिति की छाप है कि भारत से आयरलैंड तक भाषाओं में समानता का कारण भी यही है कि आर्य मध्य एशिया से भारत आये थे, इन सब तर्कों को भारतीय अमरीकी शोधकर्ताओं ने खोखला साबित करने का दावा किया है। इन शोधकर्ताओं में अमरीका की अंतरिक्ष संस्था नासा के सलाहकार डा० राजाराम डेविड फ्रांवले, जार्ज फ्यूरिस्टीन, हैरी हिक्स, जैम्स शेफर और मार्क केनोयर प्रमुख हैं।

सर्वश्री एस०आर० राव, एस०पी० गुप्त, बी०जी० सिद्धार्थ, पी० वी० पठान और भगवानसिंह भी इसी मत के समर्थक हैं।

बेंगलूर के डा० एन०एस० राजाराम गणितज्ञ और कम्प्यूटर विशेषज्ञ भी हैं, इस समय वह अमरीका में टेक्सास के ह्यूस्टन नगर में रह रहे हैं. उन्होंने यहां यूनीवार्ता को बताया कि भारतीय अमरीकी इतिहासकारों ने सच की तह तक पहुंचने के लिये खोज-बीन की चौतरफा रणनीति अपनाई और प्रमाणों के लिये बीसवीं शताब्दी में उपलब्ध अत्याधुनिक संसाधनों का सहारा लिया।

डा० राजाराम का मत है कि १९वीं शताब्दी के भाषा शास्त्र के सिद्धान्त ऐसा ऐतिहासिक परिदृश्य खींचते हैं, पिछले दो हजार वर्ष की भारतीय परम्परा को खारिज करने की सलाह देता है,दूसरी ओर भारत अमरीकी इतिहासज्ञों का दृष्टिकोण यहहै कि परम्पराओं को स्वीकार किया जाना चाहिये और इतिहासों के माडलों को सुधारा जाना चाहिये। यदि नये सबूत उनके विपरीत हों तो उन माडलों को अस्वीकार भी किया जा सकता है।

इस दृष्टिकोण को सामने रखकर उन्होंने भारतीय इतिहास की जड़ों की ओर लौटना शुरू किया तो पाया कि महाभारत का समय ईसा से पूर्व के आस-पास का था। इस काल का निर्धारण कई तरह से किया गया।

महाभारत के इस काल को मिथक नहीं माना जा सकता क्योंकि उपग्रह से प्राप्त चित्रों से पता चलता है कि सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व में सूख गयी थी, महाभारत के वर्णनों में सरस्वती का उल्लेख मिलता है, सूत्र साहित्य में अत्यधिक विकसित ज्यामिति शास्त्र है, लिहाजा यह भी नहीं माना जा सकता कि भारतीयों ने ज्यामिति यूनानियों से उधार ली थी। हड़प्पा के नगरों का नियोजन और वस्तुशिल्प उच्चकोटि के ज्यामिति शास्त्र का प्रतिफल है. जिस प्रमेय को पाइथागोरस की प्रमेय कहा जाता है, उसका उल्लेख पाइथागोरस से दो हजार वर्ष पहले बौधायन ने अपने सुलभसूत्र में कर दिया था।

सुलभसूत्र में हवनकुंड की जो ज्यामिति दी गई है, वह ३०००ईसा पूर्व के हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में पाई जाती है, सूत्रों के रचयिता अश्वालयन ने महाभारत के प्राचीन ऋषियों का उल्लेख किया है और उन्ही सूत्रों को हड़प्पा सभ्यता के समय साकार पाया गया, लिहाजा हड़प्पा के शहर २७०० ईसा पूर्व में जिस समय अपने गौरव के चरम पर थे उससे कहीं पहले महाभारत का युद्ध हुआ था।

इन सब ठोस प्रमाणों के आधार पर इन इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र ३१०२ ईसा पूर्व हुये महाभारत से पकड़ने शुरू किये। इससे यह तर्क स्वतः खारिज हो जाता है कि सभ्यता का अंकुरण ३००० ईसा पूर्व मेसापोटामिया से हुआ, इससे करीब एक हजार वर्ष पहले तो ऋग्वेद पूर्ण हो गया था।

अर्थात ऋग्वेद काल की शुरूवात इससे कहीं पहले हो गयी थी, लोकमान्य तिलक और डेविड फ्रावले जैसे वैदिक विद्वानों ने ऋग्वेद में ५००० ईसा पूर्व की तिथियों का संकेत भी पाया है।

अलबत्ता डा० राजाराम ऋग्वेद काल को ४६०० ईसा पूर्व मानने में कोई कठिनाई महसूस नहीं करते, यह वह समय था जब मान्धात्र नाम के भारतीय सम्राट ने ध्रुयू कहलाने वाले लोगों पर उत्तर पश्चिम में कई आक्रमण किये। इन आक्रमणों के कारण उत्तर पश्चिम में भारी संख्या में पलायन हुआ और ये लोग मध्य एशिया और यूरोप तक गये। मध्य एशिया यूरोप और भारत के बीच भाषाई और मिथकीय समानताओं के लिये इसे प्रमुख कारण माना जा सकता है।

भारत का उत्तर पश्चिमी क्षेत्र प्राचीन काल में भी उथल-पुथल का केन्द्र था, मान्धात्र के बाद राजा सूद को ध्रुयू और अन्य लोगों से जूझना पड़ा, फिर तेन राजाओं की लड़ाइयां भी हुई जिनका ऋग्वेद के सप्तम खण्ड में वशिष्ठ ने भी उल्लेख किया है, प्राचीन इतिहास का यह महत्वपूर्ण दौर था, सूदराजा की लड़ाई ने पृथुपटवा परसू और एलिना लोगों को खदेड़ दिया। बाद में परसू लोग फारसी कहलाये और एलिना लोग यूनानी कहलाये, सूद के अन्य प्रतिद्वन्द्वियों में पक्था और बलहन भी शामिल थे, बाद में उनकी पीढ़ियां पठान या पख्तूनी और बलूची कहलायीं, भाषायी एवं संस्कृति विश्लेषक श्रीकांत तलगरी ने भी इसका उल्लेख किया है।

इससे यह सिद्धान्त एकदम खोखला महसूस होता है कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया था। ये प्रमाण और घटनायें इस सिद्धांत के एकदम विपरीत यह गवाही देती हैं कि आर्य जाति का मूल स्थान भारत था और फिर उनकी जड़ें यूरोप तक फैली वैदिक भूभाग में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण आर्यों का यहां से पलायन हुआ था न कि वे बाहर से आक्रान्ता के रूप में यहाँ आये।

(नवभारत ३ दिसम्बर ९४ से साभार)

मेरा रंग दे वसन्ती चोला—

ऋतुराज वसन्त का महत्त्व

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक

वेदों में अनेक स्थलों पर ऋतुओं का वर्णन आया है जिनमें ऋतुओं का महत्त्व दर्शाया गया है। छह ऋतुएं होती हैं, प्रत्येक ऋतु अपना महत्त्व पृथक् रूप से प्रकट करती है। इस प्रकार षड् ऋतु ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होतीं हैं। अत्यन्त रमणीय होती हैं।

सामवेद के मन्त्र संख्या ६१६ में इनके महत्त्व को यों दर्शाया गया है—

"वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।"

अर्थात्—वसन्त, इत् नु=निश्चय से, रन्त्यः=रमणीय है। ग्रीष्मः=ग्रीष्म ऋतु भी, इत् नु=निश्चय से, रन्त्यः=रमणीय है, आनन्ददायक है। वर्षाणि=वर्षाकाल और अनुशरदः=उसके पश्चात् आने वाली शरद् ऋतु, हेमन्तः=हेमन्त और शिशिर. पतझड़ की ऋतु, नु=निश्चय से, रन्त्यः=रमणीय है, आनन्ददायक है। इसी प्रकार अथर्ववेद ३।११ में भी मनुष्य के लिए शरद् ऋतु में जीने का उपदेश दिया गया है, मन्त्र है—

"शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् शतमु वसन्तान्०।"

अर्थात् हे मनुष्य! तू बढ़ता हुआ सौ शरद् ऋतु तक, सौ हेमन्त और सौ वसन्त ऋतु तक जीता रह। इन ऋतुओं में सौ वर्ष तक जीने के साधनों का भी मन्त्र के पिछले भाग में उपाय बताया गया है—शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् अर्थात्—इन्द्र-विद्युत् चिकित्सा, अग्नि चिकित्सा, सविता सूर्यकिरण चिकित्सा, बृहस्पति मानस रोग चिकित्सा, इसके साथ-साथ हवन-यज्ञ चिकित्सा इन चिकित्साओं से प्रत्येक ऋतु में लाभ होकर अवश्य दीर्घायु प्राप्त होती है। इस प्रकार वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त शिशिरादि छः ऋतुएं वर्ष भर में होती हैं। चैत्र-वैशाख में वसन्त ऋतु, मिथुन व कर्क राशियां होती हैं। ज्येष्ठ-आषाढ़ में ग्रीष्म ऋतु, सिंह व कन्या राशियां होती हैं। श्रावण-भाद्रपद में वर्षा ऋतु, तुला व वृश्चिक राशियां होती हैं। आश्विन-कार्तिक में शरद् ऋतु, धनु व मकर राशियां होती हैं। मार्गशीर्ष-पौषमास में हेमन्त ऋतु, कुम्भ व मीन राशियां होती हैं। माघ-फाल्गुन में शिशिर ऋतु, मेष व वृष राशियां होती हैं।

आहार, विहार की दृष्टि से प्रत्येक ऋतु लाभदायक होती है। फिर भी इन छः ऋतुओं में वसन्त ऋतु का अपना विशेष महत्त्व है। ऐसा लगता है प्रकृति ने अन्य ऋतुओं के साथ पक्षपात-सा किया है। क्योंकि वसन्त को ही सब ऋतुओं का राजा बना दिया है। प्रकृति इस ऋतु में अपने को सजा-संवार कर नववधू समान सुसज्जित होकर सामने उपस्थित हो जाती है।

जैसे कि—जाड़े का अन्त हो जाता है। शिशिर ऋतु का बहिष्कार करते हुए रसभरा वसन्त वन-उपवन में ही नहीं, किन्तु सारी धरती पर अपने आगमन की घोषणा कम से कम चालीस दिन पहले कर देता है। यजुर्वेद अध्याय तेरह, मन्त्र २५ इसकी साक्षी दे रहा है—

"मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू०—अर्थात् वसन्त ऋतु चैत्र और वैशाख में होती है। मधुमाधवौ वसन्तः स्यात्—यह वचन इसका पोषक प्रमाण है। किन्तु प्रकृति देवी का यह सारा समारोह ऋतुराज वसन्त के लिए बहुत पूर्व ही आरम्भ हो जाता है। यह देखो, खेतों में खिली सरसों ने वसन्ती वाना पहन लिया है। चारों तरफ पीला ही पीला रंग दिखाई देता है। भौंरे व मधुमक्खियां अपनी सुन्दर सुमधुर आवाज से वसन्त के गीत गाने लग रहे हैं। ऋतुराज के इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर इतने फूल खिले हैं कि वायु को सुगन्धभार उठाने से शनैः-शनैः सरकना पड़ता है। इस समय खेतों वन जंगलों में खिले रंग-बिरंगे फूल आंखों में आनन्द भर देते हैं। परमात्मा ने प्रकृति के द्वारा सृष्टि यज्ञ रचा रक्खा है। इसनी सुगन्ध भर दी है कि सारा वायुमण्डल सुगन्धित हो उठा है। आयुर्वेद के अनुसार इस वसन्त में वृक्ष-वनस्पतियों में नये रस का संचार होता है। हमारे शरीर में भी नये खून का संचार होता है जो हमारे शरीर में नई उमंग व उल्लास का प्रादुर्भाव करता है। हमें इसके प्रभाव को स्थायी रखने के लिए शारीरिक व्यायाम-योगासनों का अभ्यास जारी रखना चाहिए। विचारों में पवित्रता एवं संयम का भाव भरना चाहिए।

इस ऋतु में दुनिया का अन्नदाता किसान अपनी रात-दिन की मेहनत से फसल को सफल होता देखकर फूला नहीं समाता। खेतों में गेहूं व जौ की लहलहाती नई पैदा हुई बालों को देखकर उसका मन आनन्द से भर जाता है। अतः कृषिप्रधान भारत के किसान को इस समय आमोद-प्रमोद, राग-रंग की सूझती है। माघसुदी पंचमी को वसन्तोत्सव का आरम्भ हो जाता है।

इस दिन बड़ा यज्ञ करके यजुर्वेद के तेरहवें अध्यायमें आये वसन्त-सम्बन्धी मन्त्रों से यज्ञ में आहुति देकर इसको पूरा करें। त्यौहार के दिन हलवा-खीर खाएं—खुशी मनाएं। खुशी मनाने के साथ-साथ दो महान् पुरुषों को स्मरण करते हुए उनके जीवन के विषय में चर्चा अवश्य करें, वे हैं—वीर हकीकतराय और दीनबन्धु छोटूराम।

थोड़ी-सी चर्चा वीर हकीकतराय के विषय में यों करें—धर्म पर बलिदान होने से पहले हकीकतराय ने कहा था—

"मुसव्विर खींच वो नक्शा, जिसमें ये सफाई हो।
कातिल के हाथ में हो खंजर. उधर गर्दन झुकाई हो॥"

हकीकतराय को धर्मपरिवर्तन करने के लिए मुस्लिम नवाब ने कहा था—

"हकीकत है नाम तेरा, नहीं समझा हकीकत को।
सरासर चल रहा उल्टा, छोड़ राहे तरीकत को॥
कुफ्र को छोड़ दे और पाक करले अपनी नीयत को।
गुनाह धुल जायेंगे सारे, मान अहकामे शरीयत को॥
यहां और आकबत दोनों जहां सुर्खरू होगा।
नहीं तो समझ ले ये तलवार होगी और तू होगा।"

वीर हकीकतराय ने उत्तर दिया था—

"तुम्हारे पास खंजर है, यहां है आत्मिक शक्ति।
तुम्हारे पास जन्नत है, यहां हैं ओम की भक्ति॥
ये वो दिल है जिस दिल में ज्योत ईश्वर की है जगती।
करो तुम लाख कोशिश, जोंक पत्थर पर नहीं लगती॥
तुम्हें इतनी तो ताकत है कि सिर मेरे को कटवा दो।
बहादुर तुमको मैं जानूं, धर्म मेरा जो छुड़वा दो।"

इस प्रकार हकीकतराय का स्मरण करते हुए वैदिक धर्म की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। ऐसे ही चौ० दीनबन्धु छोटूराम से भी दीनबन्धुता का पाठ पढ़ना चाहिये। वे गरीब मजदूरों व किसानों के रक्षक थे। वे कहा करते थे—देश की उन्नति का रास्ता किसान के खेत से गुजरता है। उन्होंने किसान के कर्ज माफ किए। खेतों में पानी के लिए भाखड़ा का निर्माण करवाया। अनपढ़ों के लिये शिक्षा का प्रचार किया। किसान मजदूरों को स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया। वे कहा करते थे—

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है॥

यदि आज छोटूराम जीवित होते तो बिजली या पानी की समस्या नहीं होती। वे इसका पूरा प्रबन्ध करते।

आत्मकल्याण एवं विश्वशान्ति हेतु--अनुष्ठान

भगवान देव 'चैतन्य', एम. ए. साहित्यालंकार

एक समय था जब आर्यावर्त मे बड़े-बड़े यज्ञो का अनुष्ठान हुआ करता था और तब यह आर्यवर्त भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धियों से भरपूर था मगर कालान्तर मे ज्यो ज्यों हम यज्ञ संस्कृति से दूर होते चले गए, सुख समृद्धियां भी समाप्त होती चली गई। दयानन्द मठ चम्बा का यह अनुष्ठान अपने आप में बहुत सार्थकता लिए हुए हैं। महाभारत काल के बाद इतना लम्बा यज्ञानुष्ठान शायद ही कोई हुआ हो। रावी नदी के किनारे बनी भव्य यज्ञशाला में प्रतिदिन प्रातः और सायं लगभग सात-आठ घण्टे यह यज्ञ चलता है। यज्ञ में भाग लेने के लिए देश-विदेश से निरन्तर लोगों का आना जाना लगा रहता है। इसी क्रम में विद्वान, भजनोपदेशक और आर्यजगत के नेता एवं सन्यासी गण भी यहां पधारते रहते हैं। इस प्रकार उपदेशो और भजनो का सिलसिला भी निरन्तर चालू है। प्राचीन काल में जंगलों और नदियो के किनारों पर इसी प्रकार के मठ और आध्यात्मिक केन्द्र हुआ करते थे जहां लोग यज्ञों और आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ उठाया करते थे। आज दयानन्द मठ उसी प्रकार का एक तीर्थ बन गया है।

निरन्तर चलने वाले इस यज्ञ में लाखो की सामग्री, घृत और समिधाएं लग रही हैं। जो यज्ञ विज्ञान को जानते हैं वे भली प्रकार इस व्यय के महत्व को जानते हैं मगर जो नहीं जानते उनके मन में शका भी हो सकती है और जिज्ञासा भी कि अन्ततः इस प्रकार अपव्यय करने का लाभ क्या है?

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से भी इसी प्रकार की शका की गई थी तो उस यज्ञ मर्मज्ञ ने साफ शब्दो मे कहा था कि यदि आप पदार्थ विद्या को जानते तो ऐसी शंका कदापि न करते। वैज्ञानिक तथ्य है कि अग्नि का स्पर्श पाकर किसी भी पदार्थ की शक्ति सूक्ष्म होकर कई गुना अधिक बढ़ जाती है। इसके लिए मिर्च का उदाहरण दिया जा सकता है। मिर्च के खाने से केवल एक व्यक्ति को ही उसका तीखापन परेशान करेगा मगर यदि उसे आग में डाल दिया जाए तो उसकी शक्ति कई गुणा बढ़कर कितने ही लोगों के लिये परेशानी पैदा कर सकती है। वेदो के अन्दर यज्ञ को एक महाविज्ञान के रूप में वर्णित किया गया है। इसीलिए धर्म जब अपने व्यवहारिक और अमली रूप मे था तो यज्ञ करना दैनिक कृत्यों में शामिल था। आज यह परिपाटी समाप्त हो रही है और इसके कुपरिणाम भी हमारे समक्ष उपस्थित हों रहे हैं। आज पर्यावरण में आ रहा बिगाड़ एक महान समस्या बन गई है तथा भविष्य मे समस्या और भी अधिक विकट बनती चली जा रही है। यज्ञ विज्ञान पर्यावरण को शुद्ध करने का और बिगड़ने न देने का अचूक नुस्खा है।

यज्ञ मे जली हुई सामग्री और घी सूक्ष्म रूप मे शक्तिशाली होकर पर्यावरण को शुद्ध करती है। ये तत्व केवल पर्यावरण ही शुद्ध नहीं करते हैं बल्कि शारीरिक पुष्टि भी प्रदान करते। है। इस यज्ञ से केवल शारीरिक और पर्यावरण की शुद्धि ही नहीं होती है बल्कि इससे आध्यात्मिक लाभ भी होते है। यज्ञ आत्मिक उत्थान का आधार है। यज्ञ करने से प्राणीमात्र का कल्याण होता है। परोपकार का इससे अच्छा और भला क्या साधन हो सकता है? इसीलिए कहा गया है—

"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" (श० ब्रा०) अर्थात यज्ञ से बढ़कर और कोई कर्म श्रेष्ठतम नहीं है। यही नहीं श्रेष्ठतम कर्म ही सुखदायक भी होता है। अतः कहा गया है "यज्ञो वै सुम्नम (श० ब्रा०) अर्थात यज्ञ सुखद है। यजु० ३१-१६ में भी कहा है—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन। इस उक्ति का भाव है कि देवों ने यज्ञ के द्वारा भगवान का पूजन, भजन किया तथा वे उत्तम धर्म को प्राप्त हुए।

वैदिक संस्कृति है ही यज्ञ संस्कृति। 'अयं यज्ञो वेदेषु प्रतिष्ठितः (गो० ब्रा०)' यह यज्ञ वेदों में प्रतिष्ठित है अर्थात यज्ञ का मूल वेद है। गोपथ में ही अन्यत्र एक स्थान पर लिखा है—

"वेदैर्यज्ञमभिपन्नो ग्रसितः परामृष्टः, तानि ह वा एतानि द्वादश महाभूतानि एवं विधि प्रतिष्ठानि तेषां यज्ञ एव परार्ध्यः"।

इसका भावार्थ है कि ब्रह्म, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, अन्न, आप. मन, वाणी, वेद तथा यज्ञ ये बारह महाभूत उत्तम पदार्थ हैं। इनमें भी यज्ञ सर्वोत्तम है क्योकि यह मानव जीवन का सार है। यजुर्वेद के दूसरे अध्याय में एक मन्त्र है जिसका अर्थ अत्यधिक सारगर्भित है तथा यज्ञ की उत्कृष्टता को सिद्ध करता है। कहा यह गया है कि जो यज्ञ का त्याग करता है उसका क्या होता है? उत्तर दिया गया कि उसे ईश्वर छोड़ देता है। ईश्वर उसे क्यों छोड़ता है? दुःख भोगने के लिए। यज्ञ न करने वालों के लिए यह कितनी बड़ी चेतावनी है। वास्तव मे यज्ञ की परिपाटी का त्याग जब से हुआ तभी से इस आर्यावर्त के दुर्दिन भी प्रारम्भ हो गये हैं। ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, राम कृष्ण, गौतम, कणाद आदि सभी ऋषि मुनि यज्ञ संस्कृति का ही अनुकरण करने वाले थे। इन्हीं ऋषि मुनियो की परम्परा में १९ वीं शताब्दि में महान यज्ञ प्रेमी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आए और उन्होने यज्ञ को पुनः धर्म का आवश्यक अंग बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। आज भी आर्य समाज भवनो मे दैनिक और साप्ताहिक यज्ञ होते हैं। कितने ही आर्य परिवारों में प्रतिदिन दोनो समय या एक समय यज्ञ होते हैं। महर्षि ने साफ शब्दो में कहा कि यज्ञ न करने से पाप लगता है क्योंकि हम अपने शरीर से मल-मूत्र; थूक-पसीने आदि के द्वारा दुर्गन्ध ही तो फैलाते हैं अत कम से कम उतनी मात्रा में सुगन्ध फैलाना भी हमारा नैतिक दायित्व बन जाता है।

वेद पारायण यज्ञ या गायत्री महायज्ञ आदि के अनुष्ठान विशेष रूप से और भी अधिक लाभदायक सिद्ध होते हैं क्योकि इनमें घी और सामग्री आदि अत्युत्तम और प्रचुर मात्रा में प्रयोग लाई जाती है। यही नहीं मन्त्रो के चिन्तन मनन से साधकों को अत्यधिक लाभ होता है। वेद का प्रत्येक मन्त्र महान और अदभुत है क्योंकि समूचा वेद ईश्वरीय ज्ञान है मगर गायत्री महामन्त्र का अपना विशेष ही महत्व है।

गुरु विरजानन्द जी ने गायत्री मन्त्र के माध्यम से ही अपनी ऋतम्भरा बुद्धि को जाग्रत करके अतुलनीय विद्वता प्राप्त की थी। महर्षि दयानन्द जी ने भी इसे गुरुमन्त्र कहा है। सन्ध्या मे इस मन्त्र का तीन स्थानो पर प्रावधान किया गया है। आरम्भ मे तथा समर्पण से पूर्व तो इसका विधान है ही मगर अघमर्षण मन्त्र के पश्चात विशेष रूप से गायत्री के चिन्तन और मनन का निर्देश है। महर्षि दयानन्द जी ने पूना प्रवचन मे कहा था—"गायत्री मन्त्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य सभा मोरिशस को विद्वान चाहिए

आर्य सभा मोरिशस को एक उपयुक्त प्रचारक एवं प्रशिक्षण देने वाले विद्वान की आवश्यकता है जो:—

१. पूर्ण आर्य समाजी हो।
२. हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के स्नातक हों।
३. हिन्दी-अंग्रेजी में अच्छे लेखक और वक्ता हों।
४. आयु ३५-५० वर्ष के हों।
५. सुरीली आवाज में भजन गा और गवा सकते हों। संगीत का साधारण ज्ञान हो।

इच्छुक महानुभाव को अपना आवेदन प्रमाण-पत्र की फोटो कापी सहित आर्य सभा मोरिशस को देर से देर मंगलवार दिनांक २८ फरवरी १९९५ तक निम्न पते पर भेज देना चाहिए:—

श्री मूलशंकर रामधनी, एम.बी.ई. मन्त्री
आर्य सभा मोरिशस १, महर्षि दयानन्द गली
पोर्ट लुई, मोरिशस

आवेदन की एक कापी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२ को भेज देवें।

मूलशंकर रामधनी
सभा-मन्त्री

आत्म-कल्याण

(पृष्ठ ७ का शेष)

दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे किसी मत में प्रार्थना के मन्त्रों की ऐसी गहराई और सच्चाई नहीं है।

गायत्री मन्त्र द्वारा यज्ञ किया जाना भौतिकता और आध्यात्मिकता का सृजन करने के लिए और भी अधिक सार्थक है। महर्षि दयानन्द जी ने देवयज्ञ विधि में लिखा है—"इस प्रकार प्रात. और सायंकाल सन्ध्योपासना के पीछे इन पूर्वोक्त मन्त्रों से होम करके अधिक होम करने की जहां तक इच्छा हो वहां तक स्वाहा अन्त में पढ़कर गायत्रीमन्त्र से होम करें। गौ० ब्रा० में जहां गायत्री के तीन पादों का विवेचन किया गया है वहा संकेत रूप में बताया गया है कि कर्म वेद है, यज्ञुर्विद है, यज्ञानुष्ठान से प्राणीमात्र का उपकार होता है। तीनों पादों की व्याख्या के बाद ब्राह्मण में कहा गया है कि जो इस प्रकार जानकर इस वेद माता सावित्री का अनुष्ठान करता है, वह जीवन मुक्त हो जाता है। यही तो मानव जीवन का चरम लक्ष्य है जो कि गायत्री के यथार्थ अनुष्ठान से साध्य है।

ऋ० ३। ६२। ११--१२ मे कहा है :

देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या गस्य रातिमी महे।

देवं नरं सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवन्तिभिः नमस्यन्ति धियो विता।

अर्थात हम विशाल धारणावति बुद्धि के द्वारा सविता देव के ज्ञान, अन्न बल की कामना करते हुए उस परम एश्वर्यवान देव का दान मांगते हैं। सर्वाग्णी मेधावी नेता बुद्धि से प्रेरित होकर उत्तम त्यागमय यज्ञों के द्वारा सविता देव को नमस्कार करते हैं।

इस प्रकार गायत्री मन्त्र का मनन, चिन्तन तथा इसके द्वारा यज्ञानुष्ठान व्यक्ति को लोक परलोक की सिद्धि देने वाला है। आज जब कि धर्म के नाम पर खून की नदियां बहाई जा रही हैं। व्यक्ति का मानसिक पतन अपनी पराकाष्ठा पर पहुच गया है। पर्यावरण बिगड़ रहा है। तरह तरह के शारीरिक रोग और मानसिक असाध्य रोग पनप रहे। जीओ और जीने दो का सिद्धांत मात्र नारा बन कर रह गया है। मानव से मानवता कहीं दूर बहुत दूर छूटती चली जा रही है। ऐसे समय में दयानन्द मठ चम्बा में श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान किया गया है जो एक आशा की किरण है। इसमें भाग लेने वाले लोग तो आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे ही मगर यह महायज्ञ प्रदेश, राष्ट्र और समूचे विश्व में भी सुख और शान्ति का सृजन करेगा क्योंकि इस महायज्ञ का मूल उद्देश्य ही आत्म कल्याण और विश्व शान्ति है।

२१५/एस-१ सुन्दरनगर, (हि. प्र.)

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सिविल एरिया बंगलूर का वार्षिकोत्सव १४, १५ जनवरी ९५ को उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस उत्सव में आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, पं धर्मपाल शास्त्री तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वृजपाल शर्मा कर्मठ ने भाग लिया।

प्रधाना आ. स बंगलूर

विदेश समाचार

ऋषि निर्वाण दिवस

(आर्य समाज लंदन)

प्रतिवर्ष की भांति ऋषि निर्वाण दिवस का पावन पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। सन्ध्या-हवन के पश्चात प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, प्रधान के कर कमलों से ओ३म का ध्वज लहराया गया। श्रीमती सावित्री छावड़ा कैलाश भसीन आदि महिलाओं ने वेद-पाठ तथा ध्वज-गान किया।

इस अवसर पर कु० मोगिया किरण का 'ऋषि निर्वाण दिवस पर, कु० बेला बहल का 'आर्य समाज की प्रासंगिकता पर' कु० दीप्ति पाल का 'इंगलैंड में भारतीय लोग और भारतीय संस्कृति' पर भाषण हुए तथा नीरजपाल का संस्कृत श्लोकोच्चारण हुआ। आशुतोष, मधुर आर्य और कविता चोपड़ा के मधुर भजन उल्लेखनीय रहे।

हिन्दी कक्षा के छात्रों ने "भारत के महापुरुष यह लघु नाटिका प्रस्तुत की। इसे तैयार किया था श्रीमती सुमन चोपड़ा और श्रीमती कृष्णा तनेजा, तथा बाल सभा के छात्रों ने 'गुरु दक्षिणा" यह लघु नाटिका प्रस्तुत की। इसे श्रीमती कैलाश भसीन, संचालिका बाल-सभा, ने तैयार किया था। दोनों लघु-नाटिकाओं की दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इनके अतिरिक्त भी अनेक युवक-युवतियों के गायन, नृत्यादि हुए।

इसके अतिरिक्त डा० सहाद्र, उच्चायुक्त मौरीशस, श्री राजीव डोगरा (भारतीय उच्चायुक्त के प्रतिनिधि) श्री हेरी ग्रीनवे आदि ने दिवाली की शुभ-कामनाएं दी। हिन्दी G C.S E. उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

ऋषि-गान, शान्तिपाठ और प्रीतिभोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दि० १९ दिसम्बर ९४ को अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस अत्यन्त श्रद्धा और आदरपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, श्रीमती सावित्री छावडा, श्री बलदेव मोहन मेहता, श्री जगदीश कौशल (अमरदीप), श्री अर्जुनलाल शर्मा, (सेवा इन्टरनेशनल) तथा डा० तानाजी आचार्य ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभी वक्ताओ ने उनके जीवन और कार्य पर प्रकाश डाला। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार तथा शुद्धि-आन्दोलन का प्रारम्भ ये दोनों कार्य उनके जीवन की पहचान बने हैं। इसी कारण वे भारतीय इतिहास में अमर हो गये हैं। भारत के इतिहास में स्वामी जी प्रथम महात्मा हुए जिन्होंने बिछड़े हुए हिन्दु भाई बहनो को पुनः शुद्ध कर फिर से उन्हें अपने धर्म और संस्कृति में आने का सुअवसर प्रदान किया। उन्हीं के कारण अब यह शुद्धि का मार्ग सभी के लिए खुला है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के कारण भारतीय प्राचीन संस्कृति, शिक्षा तथा वेदों की रक्षा हो पायी अन्यथा विदेशी संस्कृति के कुप्रभाव से भारतीय युवकों को बचाना संभव नहीं था।

आज भी उनके विचार और कार्य समान रूप से अनुकरणीय हैं।

मन्त्री, (आर्य समाज, लंदन)

वेदप्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज चेम्बूर बम्बई के तत्वावधान में ज्ञान गंगा का कार्यक्रम यजुर्वेद पारायण यज्ञ के साथ दिनांक २-१-९५से दिनांक ८-१-९५ तक आर्यसमाज चेम्बूर के उपमन्त्री श्री युगल किशोर जी अग्रवाल के निवास स्थान १९ सुहागवाटिका वसन्त बिहार कम्पलेक्स में बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया, आर्य जगत के विद्वान एवं उच्च कोटि के वक्ता आचार्य डा० सोमदेव शास्त्री ने एक सप्ताह तक अपने ओजस्विता पूर्ण व्याख्यान देकर उपस्थित जनता को भाव-विभोर कर दिया।

इस समारोह का आयोजन श्री युगल किशोर जी अग्रवाल ने किया था इस यज्ञ का सम्पूर्ण भार इनके परिवार ने वहन किया।

सार्वदेशिक साप्ताहिक का

भव्य विशेषांक

महर्षि के जन्म दिवस पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १७१वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सार्वदेशिक साप्ताहिक-पत्र का एक भव्य विशेषांक निकाला जा रहा है। २८ फरवरी को निकलने वाले इस विशेषांक हेतु महर्षि से सम्बन्धित विशेष जानकारी स्वच्छ लेख में भेजने की कृपा करें। विशेषांक से पहले १९ फरवरी का अंक बन्द रहेगा कृपया पाठक तथा एजेन्ट नोट कर लें। —सम्पादक

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से वेद प्रचार व वन विहार का आयोजन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से रविवार, १५ जनवरी १९९५ को वेद प्रचार व वन विहार का विशेष आयोजन किया गया। दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजो ने इसमें भाग लिया। लगभग १०० सदस्य बसों द्वारा सुल्तानपुर लेक पर पिकनिक के लिए गए। उसके पश्चात गांव हेली मंडी (गुड़गाव) में आर्य समाज के उत्सव में सम्मिलित हुए और वहां की नई आर्य समाज के सत्संग हाल के निर्माण के लिए निम्न प्रकार आर्थिक सहयोग दिया–

श्री रघुनन्दन लाल गुप्ता	११,०००)
श्री रघुनन्दन लाल जी के माता–पिता द्वारा	१०,०००)
श्री रघुनन्दन लाल जी की सुपुत्री द्वारा	११,०००)
दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से	५,१००)

इसी प्रकार आर्य गुरुकुल किशनगढ़ पासडा जिला रेवाडी को भी सभी ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

श्री गुप्ता जी के परिवार की ओर से जलपान तथा भोजन की सुन्दर व्यवस्था थी। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता थे।

रोशनलाल गुप्ता, उपप्रधान

विशाल शिविर का आयोजन

गुरुकुल आश्रम पूठ गाजियाबाद द्वारा कार्तिक मेले के शुभ अवसर पर १५ से १८ नवम्बर ९४ तक एक वेद प्रचार शिविर का विशाल आयोजन किया गया। जिसमें आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान साधु महात्माओ के प्रवचन, उपदेशको के भजन तथा विभिन्न प्रकार के सम्मेलन आयोजित किये गये।

राजीव कुमार आर्य
मन्त्री आ. वीर दल गु० पूठ

केन्द्रीय कानून द्वारा सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए अखिल भारतीय सर्वधर्म परिषद् का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष, सुप्रीम कोर्ट के प्रसिद्ध वकील श्री सोमनाथ मरवाह की अध्यक्षता मे नई दिल्ली स्थित हनुमान रोड, आर्य समाज मन्दिर मे सनातन धर्म, आर्य समाज, जैन समाज, सिख समाज व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख महानुभावों की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक मे केन्द्रीय कानून द्वारा सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने, गोसवर्धन तथा गोवंश विकास के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (आन्ध्रप्रदेश) की अध्यक्षता में भारतीय गोरक्षा अभियान परिषद का गठन किया गया।

परिषद के महासचिव सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता, अर्थसचिव जैन महामण्डल बम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री रमेशचन्द जैन, मन्त्री अकाली नेता बख्शी जगदेवसिंह, दिल्ली हाईकोर्ट के वकील मो० इकबाल कुरेशी व श्री जसबीरसिंह नियुक्त हुए। अन्य गोरक्षा व अहिंसा में विश्वास रखने वाले देशव्यापी संस्थाओं को सम्पर्ककर अखिल भारतीय सगठन के गठन का अधिकार श्री वन्देमातरम् जी को दिया गया।

भवदीय
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा के तीन नये प्रकाशन

१. मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा

पाण्डुरंग आठवले शास्त्री द्वारा प्रवर्तित नये सम्प्रदाय स्वाध्याय की मूर्तिपूजा के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का तार्किक शैली में खण्डन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने किया है। मूल्य ८)५० पैसे।

२. आर्य समाज

(लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक अंग्रेजी पुस्तक (प्रथम बार इंग्लैण्ड से १९१५ में प्रकाशित) का प्रामाणिक अनुवाद। डा० भवानीलाल भारतीय कृत इस अनुवाद के आरम्भ में लेखक का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्यिक कृतियों की समीक्षा। मूल्य १८ रुपये।

३. ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की एक मात्र ९५ वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तक का डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित संस्करण मूल्य ३) ५० पैसे।

प्राप्ति स्थान व बिक्री विभाग।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान. नई दिल्ली-२

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज बिहार शरीफ, श्री कृष्ण प्रसाद आर्य प्रधान, श्री सुरेश प्रसाद आर्य मन्त्री, श्री मथुरा प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अजमेर, श्री दत्तात्रेय जी आर्य प्रधान, श्री वेदरत्न जी मन्त्री श्री किशन लाल शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बेवर, श्री श्रीकृष्ण जी गुप्त प्रधान, श्री कृष्णदत्त जी गुप्त मन्त्री श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज दयानन्द बाजार निजामाबाद, श्री के. एस प्रकाश जी प्रधान, श्री इ० राजन्ना जी मन्त्री, श्री डी रामलिगम जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बांकीपुर पटना, श्री भोला प्रसाद जी प्रधान, श्री ज्ञानेश्वर शर्मा मन्त्री, श्री रामबाबू जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज विभव नगर आगरा, श्री इन्द्रमोहन मेहता प्रधान, श्री शान्तिप्रकाश आर्य मन्त्री श्री नत्थू सिंह आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज न्यु मोती नगर नई दिल्ली, श्री तीर्थराम आर्य प्रधान, श्री कृष्ण गोपाल सेठ मन्त्री, श्री राजेश बधवा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मन्दिर भालकी, डा० बसन्तराव काले प्रधान, श्री डी. जी. पाटिल मन्त्री, केशवराव शिवदे कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सीहोर, श्री राजेन्द्रवीर आर्य प्रधान, श्री सुशील जी मन्त्री, श्री रामभरोस आर्य कोषाध्यक्ष।

ऋषि बोधोत्सव का यथार्थ

—सूर्य देव सिन्हा

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के पुनर्जागरण का युग थी। इस शताब्दी मे भारत को अनेको ऐसी विभूतिया प्राप्त हुई जिन्होंने भारतीयो की चेतना को जाग्रत किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्थान इन विभूतियो में सबसे ऊंचा है। भारत के मानस-क्षितिज पर सूर्य की भाति उनका उदय हुआ। उनके परवर्ती दो अन्य महापुरुष भी उल्लेखनीय है। स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गांधी भी क्रमश चन्द्र और तारे की भाति महर्षि के पश्चात उदित हुए।

महर्षि का प्रभाव अत्यन्त तीव्र तथा व्यापक रूप से भारत की धार्मिक सास्कृतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना पर हुआ। उन्होंने हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप्त अज्ञानान्धकार को सूर्य की भाति विदीर्ण किया और स्वराज्य के प्रथम मन्त्र द्रष्टा भी वही थे। स्वामी विवेकानन्द तथा महात्मा गाधी को महर्षि द्वारा उत्पन्न जन चेतना का लाभ मिला तथा महर्षि द्वारा चलाए गए सुधार कार्य-क्रम भी मिले। इन दोनो को उस घोर सामाजिक विरोध का सामना नही करना पडा जिसे महर्षि न झेला था। महर्षि ने अपने सभी कार्यक्रमो का आधार सकल ज्ञान के आदि स्रोत वेदो को बनाया जबकि स्वामी विवेकानन्द की पहुच उपनिषद तथा महात्मा गांधी की पहुच गीता-रामायण तक सीमित थी। फिर भी इन दोनो ने भी धर्म को ही भारत की उन्नति का आधार माना। स्वामी विवेकानन्द ने १८९३ मे शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन मे हिन्दू दर्शन तथा सस्कृति का शखनाद किया और भारतीय सस्कृति की विश्व मे श्रेष्ठता सिद्ध की। वे मानव की आध्यात्मिक एकता के समर्थक थे तथा उन्होंने भारतीयो मे अपने अतीत के प्रति गर्व उत्पन्न किया।

महात्मा गाधी ने जन सेवा को धर्म मानकर राजनीति को उसका क्षेत्र बनाया और भारत की स्वतन्त्रता का श्रेय भी उन्हे ही दिया गया। खेद है कि भारत के बुद्धिजीवियो का प्रभावशाली वर्ग तथा समाचार पत्र स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गांधी को तो याद कर लेते हैं। परन्तु सूर्य के समान चमकने वाले महर्षि दयानन्द को कदाचित ही कभी याद करते हो। महर्षि को याद करने वाला केवल आर्य समाज है और इसीलिए आर्य समाज शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव का आयोजन करता है।

शिवरात्रि की रात्रि मे १२७ वर्ष पूर्व बालक मूलशकर को जिस छोटी सी घटना द्वारा सच्चे शिव का प्राप्त करने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी वह सर्वविदित है। शिवरात्रि के व्रत मे अत्यन्त निष्ठा पूर्वक वह जाग रहा था। उसका वह जागरण विश्व को जगाने वाला सिद्ध हुआ। बालक मूल शकर ऐसा जागा कि फिर कभी नहीं सोया और अन्त में महर्षि दयानन्द बन कर प्रकट हुआ सहस्रो व्यक्तियो को उसने जगाया। भारत की सुप्त चेतना को जगाया। इस जागरण की वेला मे एक मासाहारी, शराबी मुन्शीराम श्रद्धा तथा त्याग और वीरता की प्रतिमूर्ति बनकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गया। एक युवक हंसराज अपना जीवन शिक्षा को दान करके सर्वस्वत्यागी महात्मा हंसराज बन गया। दुराचारी अमीचन्द भक्त अमीचन्द बन गया तथा नास्तिक गुरुदत्त आस्तिक बन गया।

आर्य समाज जागरण की ज्वाला के रूप में उदय हुआ और अनेको व्यक्तियो को त्याग, सयम तथा देश प्रेम का पाठ पढाने में सफल हुआ। आश्चर्य नहीं कि स्वतन्त्रता की लडाई मे सबसे अधिक योगदान आर्य समाजियो का रहा। खेद है कि धीरे धीरे आर्य समाज की भी निद्रा आती गई और आज हम ऋषि का बोधोत्सव तो मनाते है परन्तु स्वय हम कहा खडे है हमारी गतिविधियों का लक्ष्य क्या है, दिशा क्या है, तथा गति क्या है इसका हमें बोध नहीं है। महर्षि के प्रति हमारी श्रद्धा हमसे उनका गुण गान तो करवाती है परन्तु उनके कार्य को आगे तीव्र गति से बढाने की प्रेरणा हमें नही होती। हम अतीत की प्रशंसा तथा वर्तमान का रोना रोकर बैठ जाते हैं। भविष्य का चिन्तन नहीं करते। दूसरे को वही जगा सकता है जो स्वयं जागता है अतः ऋषि के बोध दिवस पर हम को भी अपना बोध हो सके तभी हमारी ऋषि में तथा वेदों में श्रद्धा की सार्थकता है।

आर्य समाज जागे और उसे भी बोध हो कि क्या कारण है कि समाज पर उसका कोई प्रभाव नही है। धर्म, सस्कृति, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन सभी विकृत हो रहे हैं और आर्य समाज के पास वेदो के आधार पर इन सभी समस्याओ का समाधान होते हुए भी भविष्य की कोई योजना नही है। आर्य समाज के पास व्यापक रूप से जनता तक अपनी बात पहुचाने के साधन भी नही हैं। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के अभियान मे आर्य समाज कहा खडा है? यह विषय विचारणीय है।

आज मतो को सम्प्रदायो को लेबल लगाकर धर्मो का रूप दे दिया गया है। सबसे बडा गुण धर्म निरपेक्षता को माना जा रहा है। धर्म और सम्प्रदाय का भेद केवल आर्य समाज जानता है परन्तु उसकी वाणी कही सुनाई नहीं देती। आर्य समाज के पास वेदोक्त सर्वमान्य, सर्वतन्त्र, सनातन सिद्धातो पर आधारित धर्म है जो समस्त मानव जाति को एक सूत्र मे बाधकर विश्वकल्याण तथा विश्व मैत्री का हेतु बन सकता है परन्तु उसका कितना प्रचार और प्रसार है। आर्य समाज का लक्ष्य किसी का लेबल छुडाना नही अपितु सभी मनुष्यो को सच्चा मानव बनाना है।

वेद के अनुसार "मनुर्भव जनया दैव्य जनम्" का प्रचार करना आर्य समाज का लक्ष्य है और यही 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का अर्थ है। महर्षि दयानन्द के अनुसार 'यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतो मे हैं। वे पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धात अर्थात जो बातें सबके अनुकूल सब मे सत्य है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें है उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानो के विरोध से अविद्वानो में विरोध बढकर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।" इस दिशा मे आर्य समाज कों कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए। धर्म निरपेक्षता के सिद्धात की भ्रामकता को सिद्ध करके धार्मिक ऐक्य का प्रयत्न करना चाहिए। यह कार्य अन्य मतावलम्बियो के प्रति पूर्ण वैरभाव त्याग कर करने से ही प्रभावी हो सकेगा। मनुस्मृति के अनुसार—

अहिंसयैव भूताना कार्यं श्रेयो अनुशासनम्।
वाक चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता॥

आर्यसमाज के पास विश्ववारा सस्कृति है परन्तु उस सस्कृति का लोप हो रहा है। यजुर्वेद के अनुसार

(शेष पृष्ठ १४ पर)

हमें महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज पर गर्व है

—गोपाल आर्य

प्राय: आज जातिवाद की राजनीति जोरों पर है, स्वार्थी तत्व किसी न किसी तरह अपना प्रलोभन सिद्ध करना चाहते हैं । हिन्दू हितों की उन्हें कोई चिन्ता नहीं है आपस में जातिवाद की चालों से उत्पन्न सकट अभी भी हमारे ऊपर मंडरा रहा है जिससे हिन्दू समुदाय को गहन चोट पहुंचेगी तथा पहुंची है । संगठन की जगह विघटन अवश्य है । जहा एक मत अटूट संगठन होना चाहिए वहां अनेक मत मतान्तर, जातिवाद, ऊंच-नीच से विघटन/घृणा-द्वेष उत्पन्न होगा । पाठकगणों से क्षमा क्योंकि सत्य बात कहनी पड़ रही है । हिन्दू-हिन्दू भाई-भाई ने अपने आपस में एक दूसरे का शोषण किया । आज भी ग्रामीण क्षेत्रों पर अभी निसानी बाकी है । पिछड़ों पर घोर संकट ढाये जाते हैं । जन्मना ब्राह्मणवाद ने जाति के नाम पर हिन्दू भाइयों को हिन्दू धर्म पर नहीं चलने दिया । ईश्वर भक्ति, सार्वजनिक स्थानों/जलाशयों, मन्दिरों में प्रवेश के लिए निषेध था, यहा तक मूल जन्मसिद्ध अधिकारों से अपने हिन्दू भाइयों से अलग रखा । छुआछूत, ऊंच-नीच तो साधारण बात थी । जनेऊ, तोड़े जाते और वेद पढ़ना-सुनना तो बहुत दूर की बात है । ईसाई-मुसलमान भाइयों को समानता/स्वतन्त्रता रही परन्तु हिन्दू पिछड़ों पर घोर अत्याचार/यातनाए दी गई । जिससे हिन्दू संगठन को गहरी क्षति होती आ रही है । घर पर बैर तो बाहर वाला उसका फायदा उठाता है । जिसके कारण बहुत से भोले-भाले पिछड़े हिन्दू और मुस्लिम मिशनरी में चले गये । जातीय शोषण होता गया । यह विद्या प्राप्त करने वालों के लिए चिन्तन का विषय है । किसी समुदाय को चोट पहुंचाने की दृष्टि नही । यह भी चिन्तन और मनन करने वाली बात है कि उस समय कौन सा मण्डल एवं कमडल था जिसने हालात में सुधार ही नहीं बल्कि क्रान्ति सजग की ? जेलों जैसी यातनायें हिन्दू-हिन्दू ने आपस में दी । छुआछूत पिछड़ा हिन्दू जनेऊ एवं यज्ञ, वेद नहीं पढ सकता यह जन्म सिद्ध अधिकार भी उनसे छीन लिये गये और आज एक छोटा आरक्षण मण्डल की हवा से आम लोगों को बहुत बुरा लग रहा है वे इसमें खुश नही है । आवश्यकता एव तुलना चिन्तन का विषय है कि एक हिन्दू भाई भाई को जलाशय से जल न लेने दे उससे धार्मिक, आर्थिक सारी स्वन्त्रता छीन ली गई । उसके मूल जन्म सिद्ध अधिकारों से भी वंचित रखा गया और क्या उसका मुकाबला मण्डल कर सकता है । कब तक जातिवाद के ढोल से हिन्दू हितों को नुकसान पहुंचता रहेगा । जाति का समूल ही समाप्त किया जाना चाहिए ।

जाति के नाम पर अपना प्रलोभन सिद्ध करना है, आरक्षण आदि से पिछड़ों का उपकार जताना । असली हितैषी, उपकारक जिसने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति जगाई उस देव दयानन्द का नाम नही लेना चाहते उनके दर्द को नही जान रहे हैं जिस देव दयानन्द ने समस्त हिन्दुओं को ही नही बल्कि समस्त मानव कल्याण के मूल सत्य की सजग क्रान्ति की । समाज में व्याप्त अविद्या, अनाचार, अधर्म एवं पाखण्ड को समाप्त करने के लिए वेदमत (सार्वजनिक धर्म) की पुन: जागृति दी । सारे संसार को महान बनाओ का नारा दिया । ऋषि दयानन्द ने ज्ञान, कर्म तथा भक्ति द्वारा मानव मात्र का कल्याण किया । अछूतोद्धारक महर्षि ने प्रबल क्रान्ति की किन्तु खेद है कि उनकी क्रान्ति को याद नहीं किया जा रहा है । राजनीति स्वार्थी लोग महर्षि के दिव्य ज्ञान से अपरिचित बन रहे हैं और मण्डल को उपकार जताते हैं । महर्षि एक जाति-विहीन समाज चाहते थे जिसमें ऊंच-नीच छुआछूत का कोई स्थान न हो । राजनीति का आधार जाति से घोर अपवाद पैदा होंगे और हिन्दू विघटन पर चला जायेगा ।

ऋषि दयान्द सरस्वती ने वर्ण व्यवस्था जो सदियों से है उस पर पुन: बता दिया कि गुण-कर्म, स्वभाव से जाति/वर्ण है जन्मना से कोई वर्ण नहीं है । यदि एक ब्राह्मण का स्वभाव, गुण-कर्म वेदविरुद्ध, मासहारी, शराब एवं व्यभिचारी हों तो वह मनुष्य भी नहीं राक्षस है और यदि एक शूद्र परोपकारी, बुरे व्यसनों से दूर वैदिक कर्मकांडी है तो वह आचार्य/विद्वान है । ऋषि ने आदर्श समाज की नींव रखकर पिछड़े हिन्दुओं पर सबसे बड़ा उपकार किया । वेद पथ का डका सजग किया । आर्य नियम में सबको बता दिया कि वेद ही सत्य विद्या है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सबका परम कर्तव्य है । संसार का उपकार करना तथा शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की ओर अग्रसरित होना । सत्यमत की आवाज बुलन्द की और कोई नया पन्थ/मजहब नहीं चलाया । समाज में फैसी कुरीतियों को जड से उखाडने में प्रबल योगदान रहा । अपनी पाखण्ड-खण्डनी पताका से कहा दिया केवल वेदमत धर्म है और वेद विरुद्ध जितने तन्त्र-पुराण है सब झूठे होने से नास्तिक है । वर्ण व्यवस्था पर समाज का ध्यान दिलाया । शूद्रों की दशा पर महत्वपूर्ण क्रान्ति देकर जन्मना ब्राह्मणवाद का अत्याचार/अन्याय के खिलाफ केवल देव दयानन्द ने ही आवाज उठाई । जिसका आज आर्य समाज चेतना दे रहा है । पिछड़े वर्ग के लोगों को उनके समस्त अधिकार दिलवाये । वेद पढ़ने-पढाने और आर्य बनाने का जोरदार सफल कार्य किया । इस तरह ऋषि के उपकारों का विवरण कहा तक किया जाय । महर्षि के सत्य का जादू जब क्रान्ति की तरफ चला तो पिछड़े हिन्दूओं पर उसका प्रबल प्रभाव पड़ा । उन्हे उनके मूल जन्मसिद्ध अधिकार आर्य समाज के जरिये प्राप्त होते गये और आज दिशा यहा पहुंच चुकी है कि बड़े-बड़े वैदिक विद्वान, आचार्य आर्यसमाज की झोली में रहकर वेदमन्त्र का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं । आर्य समाज के सजग प्रहरी के रूप से अपनी बुद्धिमता को आम जनता तक पहुंचा रहे हैं । गुरुकुल की शिक्षा को प्राप्त कर चुके हैं । ऋषि का सत्य का जादू कहां सफल नही हुआ । अत्याचार एवं शोषण के शिकार मानवों को अमृत पिलाया । सबसे पहला कदम महत्वपूर्ण उपकार ऋषि ने ही निचले तबके लोगों पर किया जिससे समाज में "बहुत बड़ा परिवर्तन आया । आर्य समाज की नींव डालकर हिन्दुओं को ही मजबूत नहीं बनाया बल्कि विश्व में मानव कल्याण की बात की । किन्तु खेद की बात है कि जहा चहुं ओर उस देव दयानन्द की चहल-पहल होनी चाहिए थी वहां जाति की तानाशाही हिन्दू संगठन को विघटन की ओर ले जा रही है ।

ऋषि दयानन्द से क्रान्ति के हिन्दू शूद्र शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के शिखर पर पहुंचे । नकली पण्डित/विद्वान, आर्य तैयार नहीं किये बल्कि आर्य कर्मकांडी विद्वान/पण्डित पैदा किये । आज जरूरत इस बात की है इन सार्वभौमिक नियमों को जीवन में उतारने की तथा देव दयान्द के आदर्शों पर चलने की जिस देव ने हमें सामाजिक धार्मिक उन्नति के साथ हमें देश प्रेम, विश्वबन्धुत्व की भावना विकसित की । बिना देव दयानन्द के हम कभी सफलता पर नहीं पहुंच पाते/पायेंगे इसलिए ऋषि के आदर्शों के साथ-साथ चलना पुन: उन्नति का मार्ग होगा ।

प्राणी मात्र का शत्रु मूर्तिपूजा

ब्र० ओम देव पुरुषार्थी

न तस्य प्रतिमाऽस्ति ,यस्य नाम महद्यश ।

हिरण्य गर्भं इत्येष मा मा हिं सीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष ॥

उपरोक्त वेद मन्त्र कहता है कि उस परमात्मा की कोई मूर्ति नही है। उसका नाम महान यश वाला है। वह ससार के कण-कण मे व्याप्त है। यदि परमेश्वर का कोई विशेष आकार होता तो निश्चित वह हमारे जैसा मरने जीने वाला होता। मूर्तिपूजा करने से हम उस परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप को भूलकर तरह-तरह के पत्थर, सोने चादी आदि के अनेक देवता बनाकर पूजने लगे जिसके कारण हमारी चिन्तन शक्ति नष्ट हो गई तथा हम विदेशी जनो के पदाक्रान्त होकर गुलाम हो गए।

मूर्ति पूजा के द्वारा भारत को कितनी बडी हानि उठानी पडी है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब सोमनाथ के मन्दिर पर मुहम्मद गजनवीने चढाई की तब वह उस मन्दिर से कई मन सोना तथा सोने की बनी मूर्तिया जिसका वजन २० -३० मन था। उन्हे कई ऊँटो पर लाद ले गया। जो कि भारत की एक बहुत बडी सम्पत्ति थी। यह है मूर्ति पूजा का भीषण अभिशाप। मूर्ति पूजा के विषय मे जगदगुरु महर्षि दयानन्द जी महाराज कहते हैं—

मूर्ति पूजा स्वर्ग पहुचाने की सीढी नही है अपितु एक बडी खाई है। जिसमे गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है। भारत को अविद्या अन्धकार मे ले जाने वाली मूर्तिपूजा है। इस विषय मे देवेन्द्र नाथ जी की लौह लेखनी से लिखी कुछ बाते बताते है।

मूर्तिपूजा ने भारत के अकल्याण की जो सामिग्री एकत्रित की है। उसे लेखनी लिखने म असमर्थ है। मूर्ति पूजा ने भारत वासियो का जो अनिष्ट चिन्तन किया है उसे प्रकट करने मे हमारी अपूर्ण विकसित भाव प्रकाशक शक्ति अशक्त है। जो धर्म सम्पूर्ण भाव से आन्तरिक वा आध्यात्मिक था। उसे सम्पूर्ण रूप से बाह्य किसन बनाया मूर्ति पूजा ने। कामादि शत्रुओ के दमन और वैराग्य के साधन के बदले तिलक और त्रिपुण्ड आदि धारण किसने कराया—मूर्ति पूजा ने। ईश्वर भक्ति, ईश्वर प्रीति परोपकार और स्वार्थ त्याग के बदले अग मे गोपीचन्दन का लेपन। मुख मे ग गा लहरी का उच्चारण, कण्ठ मे अनेक प्रकार की मालाओ का धारण किसने सिखाया मूर्तिपूजा ने। सयम, शुद्धता, चित्त की एकाग्रता आदि के स्थान मे त्रिसीमा (धारणा, ध्यान, समाधि) मे प्रवेश न कर केवल दिन विशेष परखाद्य विशेष का सेवन न करना। प्रात काल मध्यान्ह और सायकाल मे अलग-अलग वस्त्रो का आयोजन और तिथि विशेष पर मनुष्य विशेष का मुख देखना तो दूर उसकी छाया तक का स्पर्श न करना यह सब किसने सिखाया, हिन्दुओ के चित्त से स्वाधीन चिन्तन की शक्ति किसने हरण की, हिन्दुओ के मनोबल उदारता वीर्य और साहस को किसने दूर किया, प्रेम सम्वेदना और दु खानुभूति के बदले घोरतर स्वार्थपरता को हिन्दुओ के चरित्र मे कौन लाई, हिन्दुओं को अमानुष अपितु पशुओं से भी अधम किसने बनाया, आर्य जाति को सैकडो टुकडो मे किसने बाटा, इस देश को पराधीनता की बेडी मे किसने जकडा रखा ? यह सब मूर्तिपूजा के ही अभिशाप का फल है।

कौन सा अनर्थ है, जो मूर्ति पूजा द्वारा सम्पादित नहीं हुआ। सच्ची बात तो यह है कि आप चाहे हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश हो, चाहे लाट साहब के प्रधान सचिव, आप बुद्धि मे बृहस्पति के तुल्य हों, चाहे, वाग्मिता मे सिसरो और पेटे से भी बढकर आप अपने देश मे पूजित हो या विदेश मे आपकी ख्याति का डका बजता हो, आप सरकारी कानून को पढकर सब प्रकार से अकार्य और सुकार्य को आश्रय देने वाले, अटर्नी कुल के उज्ज्वल-तम रत्न हो। चाहे मिथ्या भाषी मिथ्योपजीवी सर्व प्रधान स्मार्ट वकील हो परन्तु यदि किसी भी अ श में आप मूर्ति पूजा का समर्थन करेंगे तो हमे यह कहने में अणु मात्र सकोच नहीं होगा कि आप किसी भी अश मे भारत वर्ष के हितैषी नही हो सकते क्योकि मूर्ति पूजा भारत वर्ष के समस्त अनिष्टो का मूल है।

वेद वैदिक सस्कृति के मूलाधार हैं धर्म के आदि श्रोत और आदि स्तम्भ है। यह डिण्डिम घोष के साथ कहा जा सकता है कि चारो वेदो मे कहीं भी मूर्ति पूजा का वर्णन नही है।

मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध और बहुत अर्वाचीन है भारत वर्ष पराधीनता के पाश मे जकड गया और लगभग ६०० वर्ष पर्यन्त मुसलमानो ने राज्य किया इसका कारण क्या था ? क्या आर्य युद्ध कौशल मे या शारीरिक बल मे किसी से कम थे ? बिल्कुल नही।

प्रसिद्ध इतिहासकार बदाऊनी ने एक स्थान पर लिखा है कि हिन्दुओ के बराबर प्रतापशाली पठान और मुगलो मे एक भी जाति विद्यमान नही है। इतने वीर होते हुए भी हिन्दू पराजित क्यो हुए इसका कारण है मूर्ति पूजा। मूर्ति पूजा करते करते भारत वासियो की बुद्धि ऐसी मलिन पड गई कि लोगो मे मूर्तियो द्वारा रक्षा वरदान और अभिशाप ,का अन्ध विश्वास हो गया था। इतिहास इस बात का साक्षी हैं।

हे अविद्या और अन्धकार की निन्द्रा मे साने वाले भारत वासियो ! बहुत लूट चुके, अब तो होश मे आओ ! इस पाखण्ड को तिलाजलि देकर वेदोक्त विधि से साय प्रात सन्ध्या और यज्ञ करो। उसी से कल्याण होगा और भारत अपने गौरव को प्राप्त करेगा।

आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा, इटावा

आर्ष विद्या बचाओ सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सिद्धात रक्षिणी सभा की ओर से ११ फरवरी को आर्ष विद्या बचाओ सम्मेलन मे प्रात १० बजे से रात्रि ८ बजे तक तीन पारियो मे चलने वाले इस सम्मेलन मे प्रसिद्ध विद्वान पधार रहे। १२ फरवरी को वानप्रस्थ दीक्षा समारोह का आयोजन किया गया है। चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत इस्ट आफ कैलाश दिल्ली ६५ मे होने वाले इस दीक्षा समारोह मे अधिक से अधिक स ख्या मे पहुचे। प्रात १० बजे दीक्षा समारोह प्रारम्भ होगा।

दयानन्द का पथ

जिस डगर को दयानन्द बताकर गये।
वह बडी ही कठिन है डगर आर्यो॥

तीव्र शूलो भरा बहुत दुर्गम ये पथ।
हर कोई चल न सकता डगर आर्यो।

दयानन्द की डगर पर चलेगा वही।
सत्य कहने से जो हिचकिचाये नही॥

विघ्न बाधाओ से घबराये नहीं।
वह कहलायेगा श्रेष्ठ नर आर्यो।१।

पाप पाखड जग मे पनपने न दे।
भीरुता पिशाचनी को फटक न दे।

बेधडक कदम आगे बढाते रहे।
वह हमेशा रहेगा निडर आर्यो।२।

श्रद्धानन्द जी इस डगर पर चले।
आर्य मुसाफिर ने यही पकडी डगर।

वेद प्रचार मे अग्रसर वह रहे।
कर गये नाम जग म अमर आर्यो।३।

राह में खूब काटो की भरमार थी।
आंधी वर्षा व अ गारों की बौछार थी।

डगमगाये नही पग हटाये नही।
कुछ हुआ न किसी का असर आर्यो॥४॥

स्वामी स्वरूपानन्द

ऋषि बोधोत्सव का यथार्थ

(पृष्ठ ११ का शेष)

"अच्छिन्नस्य ते देव सोम, सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा, स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्नि ॥
यजु० ७।१४

वैदिक संस्कृति त्याग की, बांटकर भोगने की, कर्तव्य परायणता की भावना की तथा समस्त मानव जाति के कल्याण की संस्कृति है। सर्वमैत्री की भावना की संस्कृति है। एक शब्द मे मानव संस्कृति है। धन और बल के दान की भावना, विश्व-मैत्री की भावना, ज्ञान के प्रकाश और प्रसार की भावना तथा पाप और असत्य के उन्मूलन की भावना वाली यह वैदिक संस्कृति ही विश्ववारा संस्कृति है। जब तक हमारी यह संस्कृति सुरक्षित थी तब हमारा घोष था—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन ।
स्व स्व चरित्र शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वं मानवा ॥ (मनुस्मृति)

इस वैदिक संस्कृति मे सबकी स्वस्ति की कामना है तथा मिल बांटकर खाने की प्रेरणा है। अथर्ववेद के अनुसार—

"स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु, स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।
विश्व, सुभूत, सुविदत्र नो अस्तु, ज्योगेवदृशेम सूर्यम् ॥
अथर्व० १।३१।४

ऋग्वेद के अनुसार—

"मोघमन्न विन्दते अप्रचेता सत्य ब्रवीमि वध इत स तस्य ।
नार्यमण पुष्यति नो सखाय, केवलाघो भवति केवलादी ॥
(ऋग १०।११७।६)

आज हमारी इस संस्कृति पर सब ओर से हमला हो रहा है। हमारा राजनीतिक तथा सामाजिक नेतृत्व इसको रोकने का कोई प्रयत्न नहीं कर रहा है। विदेशी टी वी तथा समाचार पत्र और पत्रिकायें उदारता का आवरण ओढ़कर इन सम्पूर्ण विकृतियो को संस्कृति मानकर प्रोत्साहित कर रहे हैं। हमारा खाना, पीना, गाने का ढग, शादी-विवाह, जन्मदिन मनाने का ढग, नाच-गाना, वेश-भूषा, सभी दैनिक गतिविधिया पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। अश्लीलता का प्रचार और प्रसार इतना बढ रहा है कि सौन्दर्य प्रतियोगिताओ के बहाने शरीर का नग्न प्रदर्शन हो रहा है और हम इनमे पुरस्कार पाने वाली महिलाओं का ऐसा स्वागत करते हैं जैसे किसी महापुरुष का। शिक्षा इतनी विकृत है कि आज की स्त्री सीता, सावित्री इत्यादि को अपना आदर्श नहीं मानती। फिल्म अभिनेता और अभिनेत्रिया हमारे आदर्श बन रहे हैं। भ्रष्टाचार को सामान्य बात मानकर नजर अन्दाज किया जाता है। ऐसी दशा मे इस विश्ववारा संस्कृति का प्रचार आर्य समाज के अतिरिक्त और कौन करेगा? यह आर्य समाज का ही दायित्व है।

धर्म और संस्कृति राष्ट्र रूपी शरीर के प्राण तथा आत्मा है। इनके विकृत होने से हमारा राष्ट्रीय जीवन भी विकृत हो रहा है और समाज में विघटन हो रहा है। भ्रष्ट राजनीतिज्ञ जो राजनीति का क ख ग भी नहीं जानते धर्म निरपेक्षता को राष्ट्रीय एकता का मूल मन्त्र मानते हैं। आरक्षण व्यवस्था को सामाजिक न्याय और उन्नति का मूल मन्त्र तथा विदेशी धन को आर्थिक उन्नति का साधन मानते हैं। हिन्दुओ और मुसलमानो को एक दूसरे का भय दिखाकर सशंकित करते हैं। सवर्ण और पिछड़ों का आपसी द्वेष बढ़ाकर एक दूसरे के विरुद्ध सगठित करने मे लगे हैं। मिली जुली संस्कृति की बात करते हैं परन्तु यह नही बताते कि मिली जुली संस्कृति क्या है? वास्तव मे उनके लिए संस्कृति का अर्थ केवल नाचना गाना ही है। ऐसी दशा में देश को सही नेतृत्व प्रदान करना आर्य समाज का कर्तव्य है।

यह ठीक है कि कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था पुन स्थापित करना असम्भव सा है परन्तु वेद की यह शिक्षा कि हम सब परमपिता परमात्मा के तथा पृथिवी माता के पुत्र हैं और आपस में भाई भाई है कोई छोटा या बड़ा नहीं है। सभी वर्ग समाज के लिए आवश्यक है अत सभी मिलकर सौहार्द को बढ़ाने मे प्रयत्नशील हो अपने देश वासियो को हृदयगम करनी होगी।

'अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, स भ्रातरो वावृधु सौभगाय ।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषा सुदुघा प्रश्नि सुदिना मरुद्भ्या ॥
॥ ऋग० ५।६०।५

वेद कहता है कि हम एक दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करे जैसे गाय अपने नवजात बछडे के साथ करती है तथा द्वेष की भावना का त्याग करे।

'सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व ।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाघ्न्या ॥ अथर्व० ३।३०

वेद के अनुसार व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र सभी का जीवन श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। वेद की शिक्षा सभी शिक्षण संस्थाओं मे अनिवार्य की जानी चाहिए। वेद साम्प्रदायिक ग्रन्थ नहीं हैं। वेदों मे पक्षपात नहीं है। वेद का ज्ञान भ्रान्ति से सर्वथा रहित तथा तर्क पूर्ण है। वेदों में विज्ञान के विरुद्ध कोई बात नहीं है। विज्ञान में हुई अब तक की सब खोजें वेद के अनुकूल हैं। वेद ही सर्वमान्य ज्ञान का पुस्तक है तथा इसका पढ़ना और पढ़ाना सभी मनुष्यो के लिए हितकारी है। वेद के इस पक्ष को आर्य समाज सारे संसार में प्रचारित करने का प्रबल प्रभावी ढग से करे तो सभी समस्याओं का सर्वमान्य समाधान किया जा सकता है तथा समस्त मानव जाति को सुखी बनाया जा सकता है।

ऋषि बोध दिवस पर सभी आर्य समाजियों को तथा आर्य समाज के सभी अधिकारियों को अपनी वर्तमान दशा का तथा अपनी क्षमता का बोध हो यही ऋषि बोधोत्सव का यथार्थ है यही उत्सव मनाने का तात्पर्य है। आर्य समाज सगठित होकर योजनाबद्ध रूप से इस कार्य में प्रवृत्त हो तभी उसका अस्तित्व सार्थक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।

सी-२/४४ जनकपुरी, नई दिल्ली-५८
फोन-५५००१९४

वीर बालक-हकीकतराय

वीर हकीकतराय का, अमर रहेगा नाम।
महिमा गाएगा सदा, उसकी जगत तमाम॥

उसकी जगत तमाम, हकीकत था बलिदानी।
देश धर्म के लिए, वीर ने दी कुरबानी॥

धन-दौलत के नहीं, वीर लालच में आया।
धर्म की रक्षा करो, सभी को पाठ पढ़ाया॥

बाल उम्र भी नहीं, मौत से भी घबराया।
बसन्त पंचमी महा, पर्व को शीष कटाया॥

धर्म न छोड़ा धन्य बहादुर था बलशाली।
सच्चा ईश्वर भक्त, वेद मर्यादा पाली॥

सब नाहर से बनें, वीर भारत के बच्चे।
देश भक्त, बलवान धर्म के पालक सच्चे॥

प्यारा भारत चमक, सकल जग में जाएगा।
भारत का गुणगान, जगत सारा गाएगा॥

दुष्ट विधर्मी नजर, कहीं भी ना आयेंगे।
राम, कृष्ण के लाल, मान जग में पायेंगे॥

भारत वीरों प्रण, करो मिलकर कदम बढ़ाओ।
वीर बहादुर बनो, विश्व मे नाम कमाओ॥

दया करो जगदीश विनय है यही हमारी।
भारत मे दो भेज, हकीकत से बलधारी॥

—प० नन्दलालनिर्भय सिद्धान्तशास्त्री
बहीन जिला फरीदाबाद

गुरुकुल आमसेना मे आर्य वीर दल का भव्य शिविर सम्पन्न

गुरुकुल की पुण्य भूमि मे आर्य वीर दल का भव्य शिविर गत २५ से ३१ दिसम्बर तक उत्साहमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ इसमे बाहर के दो सौ से अधिक आर्य वीरो ने भाग लिया और उत्साह पूर्वक शिक्षण ग्रहण किया। इसका सचालन श्री व्रतानन्द जी की देख रेख मे प्रान्तीय सचालक श्री ब्र० कृष्णदेव जी व्याकरणाचार्य ने किया। शिक्षण श्री ब्र० कपिलदेव जी ने किया। श्री वैद्य मुरलीधर जी, स्वामी सुधानन्द जी, श्री विशिकेशन शास्त्री, श्री लम्बोदर पटनायक, श्री सोमदत्त शास्त्री आदि ने बौद्धिक शिक्षण दिया। २९ दिसम्बर को खरियार रोड मे भव्य पथ सचलन हुआ उसमे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो सहित लगभग ५०० आर्य वीरो ने भाग लिया। ३१ दिसम्बर को ए डी एम नवापारा, एन ए सी चेयरमैन आदि के सम्बोधन के साथ शिविर समाप्त हुआ। इसकी सारी व्यवस्था उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा एव गुरुकुल की ओर से पूर्ण तया नि शुल्क की गयी।

मन्त्री, उत्कल प्रा आ वी द

सीताष्टमी पर्व

आर्य वीर दल हासी द्वारा सीताष्टमी पव (सीता जन्मोत्सव) २० से २२ फरवरी तक पुराना कमेटी ग्राउन्ड हासी मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश के प्रसिद्ध विद्वान तथा साध्वी पधार रही है। अधिक से अधिक स ख्या म पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाव।

विश्व शांति चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

धर्म धाम सराय रुहेल्ला दिल्ली म १४ १ ९५ से प्रात ९ बजे से विश्व शान्ति चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान आगामी महास क्रान्ति १४ जनवरी १९९६ तक निरन्तर चलेगा। यज्ञ प्रवचन सत्स ग स्वाध्याय से लाभ उठाकर धम अर्थ काम और मोक्ष सुखो को प्राप्त करे।

धर्मवीर आर्य, ब्रह्मचारी

आर्यसमाज एक संस्था भी है

(पृष्ठ २ का शेष)

मे देश मे चारो ओर फैलकर हिंसा को भडका रहे हैं। बम्बई की हिंसात्मक दुर्घटना को देश भर म फैलाने की योजना कर रहे हैं। हैदराबाद उनकी योजना का एक केन्द्र है। सरकार, सेना या पोलिस आदि हमारी रक्षा नहीं कर सकेगी। हमे अपने तन और धन की रक्षा स्वय करनी पडेगी।

आर्य समाज ऐसी परिस्थिति म मान साध नही रह सकता। जन जागृति के लिये, देश के विभिन्न प्रान्तो मे सम्मेलन करने का आयोजन कर रहा है। इस योजना के अन्तर्गत दक्षिण के चार राज्य-आन्ध्र,महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तामिलनाडु का सयुक्त आर्य सम्मेलन १४-१६ अप्रैल १९९५ मे हैदराबाद नगर म मन न का निश्चय किया गया है। कृपया सभी आय समाजी बन्धुओ स निवेदन है कि सब एक जुट होकर इस सम्मेलन को सफल बनाकर देश को आने वाली भयकर परिस्थिति से बचाए। इन भयकर परिस्थितियो मे केवल आर्यसमाज ही देश को बचा सकता है।

सभी आर्य बन्धुओ [illegible] तन मन धन स इस सम्मेलन को सफल बनाए

"अब [illegible]
अपन [illegible]

निवदक
कान्तिकुमार कोरटकर
प्रधान आ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री राजसिंह भल्ला अध्यक्ष निर्वाचित

श्री राजसिंह जी भल्ला आर्यसमाज के दिल्ली के जाने-माने व्यक्ति हैं आर्य समाज दीवानहाल के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं दिल्ली मे रहते हुए बडे-बडे उतार-चढाव देखे हैं अधिकारी भी रहे हैं इस वर्ष आप एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्वाचित किये गये है—

आर्य समाज एजुकेशन ट्रस्ट दिल्ली १९८६ मे गठित किया गया। इस सस्थान के अन्तर्गत दरियागज बालसदन, आर्य कन्या इन्टर कालिज चावडी बाजार सत्प्रावा कालिज आदि सस्थाये चलाई जाती हैं। इस सस्थान के श्री राजसिंह जी भल्ला सेक्रेटरी रहे हैं सम्प्रति ४० सदस्यो की ओर से श्री भल्ला जी अध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए हैं।

इस सस्थान (ट्रस्ट) के पूर्व मान्य अधिकारी लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार प० इन्द्रजी डा० युद्धवीरसिह लाला हसराज गुप्त लाला इन्द्रनारायण जी जैसे व्यक्तित्व अब तक अध्यक्ष बनकर ट्रस्ट का सचालन कर रहे थे। अब इस कार्य को श्री राजसिंह जी भल्ला के सबल हाथो मे सौंपा गया है।

पुराने अनुभवो से ट्रस्ट उन्नतिशील बन कर सस्थाओ की प्रगति हो। आपके सेक्रेटरी काल मे सत्प्रावा विद्यालय प्रथम रहता है शिक्षा सस्थान को ५० हजार रुपया प्रतिवर्ष दिल्ली राज्य से दिये जाते हैं। ऐसे ट्रस्ट के आप अध्यक्ष चुने गये है आप यशस्वी हो। कार्य प्रगति पर हो।

—सम्पादक

विद्यामार्तण्ड पं० रूपराम शास्त्री स्मारक पुस्तकालय

आपको यह सूचित करत हुए हमे अत्यन्त गौरव एव हर्ष हो रहा है कि दिनाक २५-५-१९९२ को 'ग्राम सेवा आश्रम के ट्रस्टी तथा अध्यक्ष सेठ श्री हनुमान प्रसाद चौधरी (उदयपुर) ने पदिमनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौडगढ' के तत्वावधान म जिस विद्यामार्तण्ड प० रूपराम शास्त्री स्मारक पुस्तकालय का उदघाटन किया था वह आज अपनी समृद्धि की ओर अग्रसर है।

स्व० पण्डित रूपराम शास्त्री (जन्म सन १८६४, महाप्रयाण सन १९५०) ने पिलानी राजस्थान को केन्द्र मानकर आजीवन ज्ञान ज्योति प्रकाशित की। सस्कृत और सस्कृति के प्रचार प्रसार मे आर्य सिद्धातो के जीवन-व्यवहार मे तथा खादी और हरिजनोद्धार जैसे अनेक कार्यक्रमो मे आपने अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। शक्ति एव भक्ति के स्थल चित्तौडगढ मे ऐसे ऋषि की स्मृति मे पुस्तकालय की स्थापना अपने आप मे एक ससिद्धि है।

आपसे भी विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तकालय को और अधिक समृद्ध करने के लिए आप द्वारा लिखित, प्रकाशित या सग्रहीत पुस्तको मे से धर्म, सस्कृति, नैतिक शिक्षा या सत्साहित्य की पुस्तकें भेजने की कृपा कर सकें, तो हम आपके अत्यन्त आभारी रहेगे।

स्वामी डा० ओम आनन्द सरस्वती
मैनेजिंग ट्रस्टी ग्राम सेवा आश्रम
मन्त्री, पदिमनी आर्ष कन्या गुरुकुल

१८ दिवसीय विशेष यज्ञ

आर्य समाज सनवाड द्वारा आयोजित १८ दिवसीय यज्ञ २३ जनवरी से प्रारम्भ होकर ९ फरवरी को सम्पन्न हो रहा है।

आर्य समाज के मन्त्री डा० मोहन प्रकाश सिंह आय ने बताया कि इस यज्ञ का उद्देश्य आपसी भा [illegible] एव वैदिक सनातन [illegible] प्रचार प्रसार करना है। जिससे सौहाद [illegible] वातावरण बन सके।

आर्य समाज चन्देना का वार्षिकोत्सव

आय समाज चन्देना सहारनपुर का सतइस वार्षिकोत्सव १३ से १५ फरवरी९५ तक समारोह पूवक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आय जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। अधिक अधिक सख्या मे पधार कर कायक्रम को सफल बनायें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०२४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-२-९५) ... लाइसेंस नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 16,17-2-1995

पुस्तक-समीक्षा

दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह

द्वितीय प्रसून

पृष्ठ १२८ . मूल्य १२ रुपये

लेखक : स्व० स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

प्रकाशक : मधुर-प्रकाशन आर्य समाज
सीताराम बाजार, दिल्ली-६

आर्य समाज के प्रसिद्ध-वाग्मी स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती उपनिषदों और दर्शनों के उत्तम भाष्यकार, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सूत्रधारक थे लघु पुस्तकों की संख्या तो सैकड़ों में हैं। आपकी पुस्तकें सरल-सुबोध एवं उच्चतम सूत्रों की मर्म प्रदर्शक भी हैं। स्वामी दर्शनानन्द के साहित्य की भी विद्वान व साधारण जन में अधिक मांग है। तदनुसार द्वितीय प्रसून में ईश्वर विचार, उसकी प्राप्ति, ज्ञान की आवश्यकता आत्मशिक्षा जैसे विषयों पर उल्लेख किया है।

मधुर-प्रकाशन ने स्वामी जी महाराज के ग्रन्थों का प्रकाशन किया है। प्रकाशन का कार्य अर्थ प्रधान है फिर भी पं० राजपाल शास्त्री इसमें लगे हुए हैं।

धर्म-प्रचार, विद्या प्रेमी, मानवता हितैषी जनों से सहयोग की विशेष इच्छा है प्रकाशक तभी अपने को धन्य मानेगा। जब स्वामी दर्शनानन्द के भक्त भी साहित्य में अभिरुचि लेंगे। धन्यवाद

—सम्पादक

ऋषि बोधोत्सव

(ऋषि मेला)

२७ फरवरी ९५, सोमवार,
प्रातः ८ से सायं ४ बजे तक

लालकिला मैदान, दिल्ली-६

समारोह में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पधारने की कृपा करें।

निवेदक :—

महाशय धर्मपाल, प्रधान · डा० शिवकुमार शास्त्री, महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

शोक सन्देश

आर्य समाज लातूर स्वामी सत्यप्रकाश जी के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करता है स्वामी जी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करे।

—२६ दिसम्बर दार्जीलिंग जिला पदेड बस्ती के आर्य समाज के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश वैश्य जी के हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वे ५८ वर्ष के थे।

आर्य समाज के प्रचार के लिए हमेशा तैयार रहते थे, उन्होंने अपने जीवन में लगभग ४०० लोगों को ईसाई बनने से बचाया वे नेपाली एवं हिन्दी भाषा में प्रचार किया करते थे।

जब उनके देहान्त की खबर नेपाली पत्रिका 'सुनचरी' द्वारा सुनी तो हजारों लोग श्रद्धामयी आंसुओं से श्रद्धांजलि देने उनके निवास स्थान पर गये। उनका पार्थिव शरीर दर्शनार्थ एक दिन के लिए रखा गया। ३१ दिसम्बर को दोपहर १२ बजे उनका संस्कार वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ किया गया।

श्री सूर्यदेव जी का अभिनन्दन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलाधिपति का पदभार ग्रहण करने पर क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा पटपड़गंज दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से १२ फरवरी १९९५ को प्रातः १०-३० बजे आर्य समाज मन्दिर सी ब्लाक प्रीत विहार दिल्ली-९२ में हार्दिक अभिनन्दन किया जा रहा है। समारोह के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार रैली होंगे।

—सतराम त्यागी, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज,नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ३] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ फाल्गुन शु० ४ सं० २०५१ ५ मार्च १९९५

आर्य जाति के (हिन्दू) धर्म का आधार वेद है

आर्य समाज ने देश हित को ही मानव कल्याण के रूप में प्रचारित किया । —अर्जुनसिंह

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली । आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में दिल्ली एवं उसके आस-पास की समस्त आर्य समाजों के हजारों सदस्यों ने ऐतिहासिक लालकिला मैदान में महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर युगदृष्टा एवं वेदों के प्रकाण्ड विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस को समारोह पूर्वक मनाया ।

समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामन्त्री एवं वैदिक विद्वान डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द ने सृष्टि को अन्धकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान, अन्याय से न्याय, की ओर बढ़ने का मार्ग दिखाया और विलुप्त होती वैदिक संस्कृति को समाज के सम्मुख वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया ।

समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्री अर्जुनसिंह ने भाव विभोर होकर कहा कि मैं यहां राजनीति की चर्चा करने नहीं आया हूं, और न मैं कोई विद्वान हूं मैं तो भारत के एक महान सपूत, विद्वान, सन्त और समाज उद्धारक पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि उनके चरणों में अर्पित करने आया हूं । उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति विलक्षण है जो समूची मानव जाति के कल्याण की कामना करती है । हिन्दू धर्म का आधार वेद है जो व्यक्ति आधारित नहीं है, अपितु बोध आधारित है । उन्होंने कहा कि आज तक जितनी हिंसा धर्म के नाम पर हुई है उतनी हिंसा किसी क्षेत्र में नहीं हुई, जब कि कोई भी धर्म हिंसा की बात नहीं करता । आज जो यह हिंसा है यह बोध के अभाव में है, यदि बोध के सही रूप को पहचान लिया जाये तो इस वातावरण को समाप्त किया जा सकता है तथा बोध का वास्तविक स्वरूप वेद में प्रतिपादित है जो हमें महर्षि दयानन्द के द्वारा बताया गया है । आज शिवरात्रि के पुण्य पर्व पर समस्त नागरिक बोध के वास्तविक रूप को समझकर मानव जाति तथा देश के कल्याण हेतु कार्य करें जिसकी आज नितान्त आवश्यकता है ।

समारोह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने विदेशी शासन में दृढ़ता पूर्वक कहा कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है बिना स्वराज्य के व्यक्ति पूर्ण रूप से अपने कार्यों का सम्पादन करने में असमर्थ है । समारोह का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया तथा समारोह की व्यवस्था चौ० लक्ष्मीचन्द ने की ।

इस अंक के आकर्षण

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक आगामी १२-३-९५ (रविवार) को प्रातः १०.३० बजे से आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल में होगी । सभी अन्तरंग सदस्यों से निवेदन है कि वे समय पर उपस्थित होकर बैठक में भाग लेवें । सदस्यों के आवास एवं भोजन आदि की व्यवस्था आर्य समाज दीवान हाल में रहेगी । —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, सभा मन्त्री

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७२वां जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

नई दिल्ली २४ फरवरी। १९वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का १७२वां जन्म दिवस समारोह विशाल स्तर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में "महर्षि दयानन्द गो संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र, गाजीपुर दिल्ली में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पण्डित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने की। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में अपने संक्षिप्त विचार प्रकट करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन सिद्धान्तों के आधार पर आर्य समाज की स्थापना की थी और वेदों मे जिस विज्ञान को उन्होंने दर्शाया था आज के वैज्ञानिकों को उनसे प्रेरणा आज भी मिल रही है।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए लोक सभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का जो सत्य सन्देश जन मानस को देकर आर्य समाज की स्थापना की थी उसमें उन्हें बहुत सफलता मिली और आर्य समाज इतना बड़ा संगठन संसार में बना है। परन्तु अभी उनका काम पूरा नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने समूचे जन मानस को आर्य बनाने का संकल्प लिया था, इसलिए हम सबको उनके सन्देश को जन मानस तक पहुचाने का प्रयास निरन्तर जारी रखना होगा।

इस अवसर पर दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने विशिष्ट अतिथि के रूप में जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज को एक ऐसा मार्ग आर्यसमाज की स्थापना करके दिखाया था जिससे समाज को एक नई दिशा मिली। ऐसे महापुरुषों के जन्म दिन सदियों तक ही नही बल्कि जब तक चांद-सूरज रहेंगे तब तक मनाये जाते रहेंगे। आज हम सबको उनके द्वारा बताये गये अधूरे कार्यो को उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलकर पूरा करना है। उन्होंने इस अवसर पर दिल्ली में महर्षि दयानन्द के नाम से एक कालेज खोलने तथा जिस सड़क पर महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र स्थित है उसका नाम महर्षि दयानन्द मार्ग रखे जाने की घोषणा की और इसके साथ ही उन्होंने मुख्यमन्त्री राहत कोष से दुग्ध केन्द्र को १० हजार रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि मैंने दिल्ली विधान सभा में सबसे पहला विधेयक दिल्ली में गोहत्या बन्द करने का पास कराया है।

समारोह में इनके अतिरिक्त पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री एच०के०एल० भगत, सासद श्री बी०एल० शर्मा (प्रेम) तथा दैनिक जागरण के प्रधान सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन ने भी महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। श्री नरेन्द्र मोहन ने कहा कि स्वामीजी ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके समस्त मजहबों के उस पक्ष पर प्रहार किया है जो मनुष्यों को बांटने और द्वेष फैलाने जैसी बातों का प्रचार करते हैं। समारोह को वरिष्ठ अधिवक्ता एवं सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह ने भी सम्बोधित किया और अपनी ओर से महर्षि दयानन्द दुग्ध केन्द्र को ३१ हजार रुपये देने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त श्री गंगासागर सूरी जी ने भी ५१ हजार रुपये दुग्ध केन्द्र को देने की घोषणा की। समारोह का सयोजन डा० शिवकुमार शास्त्री महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा ने किया।

स्वामी अभेदानन्द सरस्वती का जन्मदिवस समारोह

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान भाषाविद स्वामी अभेदानन्द सरस्वती का जन्म-दिवस समारोह उनके पैतृक निवास स्थान ग्राम धपोखोरा जिला बस्ती उ०प्र० मे १ से ५ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

स्वामी अभेदानन्द जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रह चुके हैं तथा हैदराबाद सत्याग्रह में उनकी प्रमुख भूमिका रही थी यद्यपि वे उत्तर प्रदेश के निवासी थे परन्तु उनका कार्य क्षेत्र बिहार था।

श्रीमती दयावन्ती स्मारक स्थिर निधि

यह निधि श्री विद्या प्रकाश, ४८ चन्द्रलोक इन्कलेव, नई दिल्ली-३४ ने अपनी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती दयावन्ती के नाम से ५० हजार रुपए से सन १९८७ मे सार्वदेशिक सभा मे स्थापित की थी। उनकी शर्त के अनुसार इस निधि का ब्याज वनवासी आदिवासियों के कल्याणार्थ आदिवासी क्षेत्रों में सभा द्वारा खर्च किया जाता हैं। अब श्री विद्या प्रकाश जी ने इस निधि में १० हजार रुपए की राशि मई १९९४ तथा १० हजार रुपए की राशि १७ फरवरी १९९५ को और जमा करा दी हैं, इस प्रकार अब यह निधि कुल मिलाकर ७० हजार रुपए की हों गई।

श्री सत्येन्द्रनाथ जी द्वारा ७६०००) का सात्विक दान

आर्य समाज शामली में एक भव्य यज्ञशाला बनाने हेतु शामली निवासी स्वतन्त्रता सेनानी श्री सत्येन्द्रनाथ शास्त्री ने अपनी ७६ वीं वर्षगांठ के अवसर पर ७६००० रुपए का सात्विक दान प्रदान किया है। आर्य समाज शामली में अब यज्ञशाला निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो गया है। हम आर्य समाज की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

अरविन्द कुमार, मन्त्री

अमर हुतात्मा पंडित लेखराम

देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

अमर हुतात्मा धर्मवीर, आर्य पथिक श्री पं० लेखराम जी आर्य समाज के महान नेता. उच्चकोटि के विद्वान, सुप्रसिद्ध प्रचारक एव शास्त्रार्थ महारथी थे। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज के बाद वह प्रथम महापुरुष थे जो धर्म की पवित्र वेदि पर बलिदान होकर अमर हो गए। श्री पंडित जी का जन्म ८ चैत्र सम्वत १९१५ विक्रमी शुक्रवार के दिन श्री पण्डित तारासिंह जी के घर सैयदपुर ग्राम, तहसील चकवाल जिला जेहलम (पश्चिमी पंजाब) में हुआ था।

श्री पण्डित जी में एक दो गुण नही, अपितु बीसियो ऐसी विशेषतायें थी जिन्होने आपके नाम व काम को चार चाद लगा दिये। यदि सक्षेप मे आपकी महत्ता का वर्णन करना हो तो यू निवेदन किया जा सकता है कि वे साधारण मानव नहीं, अपितु देवता थे। अपने गुणों के कारण ही जहा आप स्वयं उन्नति के शिखर पर पहुंच गए वहां आर्य समाज की जडें भी पाताल तक पहुचा दी। आपके कुछ गुण निम्न लिखित हैं—

विद्वता एवं योग्यता

पण्डित जी ने छोटी-बड़ी ३३ पुस्तकें लिखी। इन्हे छ भाषाओ अर्थात हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी और गुरुमुखी का ज्ञान तो था, किन्तु वे अंग्रेजी नही जानते थे। स्वर्गीय महता जैमिनी जी के कथनानुसार अंग्रेजी न जानते हुए भी आपने अपनी पुस्तको मे २१३ अंग्रेजी पुस्तकों के प्रमाण दिए। आप प्राय: किसी अंग्रेजी पढ़े लिखे व्यक्ति को अपने पास बिठा लेते और उन्हें अंग्रेजी की पुस्तकें देकर उनका अनुवाद सुना करते थे। जहां कहीं अपने काम की बात देखते उसे लिख लेते थे।

"पण्डित लेखराम की पहली पुस्तक ऐसी जबरदस्त समझी गयी कि बहुत लोगों ने इसकी हस्तलिखित प्रतिया बडा व्यय करके प्राप्त की।"

निर्भयता के अवतार

श्री पण्डित जी निर्भयता के अवतार थे। एक बार जब पेशावर आर्य समाज के सदस्य वहां के एक तहसीलदार को आर्य समाज का प्रधान बनाने लगे तो आपने उनकी उपस्थिति में कहा था कि "यह मास खाते और शराब पीते हैं ऐसा व्यक्ति प्रधान नही होना चाहिए।"

मिर्जापुर मे एक दिन उपद्रव के भय से आर्य सज्जनो ने श्री पण्डित जी को बाहर जाने से रोका, किन्तु उन सबने आश्चर्य के साथ देखा कि आ अकेले डंडा हाथ मे लिए घूमने जा रहे हैं।

४ अगस्त सन १८९३ ई० को पण्डित भीमसेन जी ने (जो महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी के शिष्य समझे जाते थे) जोधपुर के महाराजा प्रतापसिंह जी से भेंट की और उन्हे प्रसन्न करने के लिए पशुओ के मांस भक्षण का समर्थन कर आए। जब अगले दिन श्री पण्डित लेखराम जी को यह समाचार मिला तो अपने महाराजा की अप्रसन्नता का विचार किए बिना पण्डित भीमसेन जी को स्पष्ट शब्दो मे यह कहा—"ईश्वर जानता है यदि आपने महाराजा के पास जाकर स्पष्ट न कहा कि वेदो मे माम भक्षण का सर्वथा निषेध है तो आपको किसी धार्मिक सस्था मे पैर रखने योग्य नही छोडूगा।" इस पर पण्डित भीमसेन दूसरे दिन महाराजा के पास गए और स्पष्ट शब्दो मे कह दिया, "मांस भक्षण पाप है और वेदो मे हानिकारक पशुओ को दण्ड देने और आर्थिक हानि पहुचाने पर मार डालने की तो आज्ञा है, परन्तु मांस उनका भी अभक्ष्य ही है।"

मुसलमान प्राय. पण्डित जी को हत्या की धमकियां दिया करते थे। कई स्थानों के आर्य सज्जन उन्हें सचेत कर चुके थे कि मुसलमान उन्हे मरवा डालने की तैयारी में लगे हुए है, परन्तु वह उनसे भयभीत नहीं होते थे और ऐसी चेतावनियों का पण्डित जी पर उल्टा प्रभाव हुआ करता था। १-७-१८९३ ई० के "आर्य गजट" के पृष्ठ ४ पर श्री पण्डित जी ने मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी की धमकियों के सम्बन्ध में स्वयं लिखा था 'पाठक गण! क्या यह स्पष्ट रूपेण हमारी हत्या या विष देने के षडयन्त्र नहीं है?" पंजाब पुलिस के सुपरिटेन्डेन्ट किस्टी साहब ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को बतलाया था कि जहां उन्हें विदित था कि पंडित लेखराम अपनी निर्भयता तथा स्पष्टवादिता के कारण कभी न कभी मारे जाएंगे, वहां उनकी दृढ़ता के लिए उनके हृदय में सदा आदर का भाव रहा करता था।"

सहनशीलता की पराकाष्ठा

६ मार्च सन १८९७ ई० को जब श्री पण्डित जी मुलतान आर्य समाज के उत्सव से वापिस आकर लाहौर पहुचे तो एक नीच, पतित एवं अन्धविश्वासी व्यक्ति ने (जो शुद्धि के बहाने आपके पास आया था और पहिले भी कई बार आपके घर रोटी खाता हुआ देखा गया) छल कपट से आपके निवास स्थान पर आपके पेट में छुरा घोप दिया जिसके कारण आपकी अंतड़िया बाहर निकल आई। आपने बांए हाथ से अंतडियों को सम्भाला और दाए हाथ से हत्यारे को पकड लिया। और उसके हाथ से छुरा छीन लिया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी जी ने इस भय से कि घातक पुन: आक्रमण न करे आपको रसोई की ओर खीच लिया। तब आपकी वृद्धा माता जी ने दोनों हाथों से घातक को पकड लिया. किन्तु उस पिशाच ने पास में पडा बेलना उठाकर उन्हे पीटा जिसके कारण वे अचेत होकर गिर पडी और हत्यारा बचकर निकल गया।

श्री पण्डित जी को हस्पताल ले जाया गया। छुरा लगने के पौने दो घण्टे पश्चात डा० पैरी साहब आए और निरन्तर दो घण्टे तक पण्डित जी की कटी हुई आंतो को सीते रहे। डा० पैरी आश्चर्य चकित थे कि दो घण्टो तक जिसके अन्दर से रक्त खुला बहता रहा हो—वह कैसे जीवित रह सकता है। डेढ़ बजे रात्रि तक श्री पण्डित जी सचेत रहे और वेद मन्त्र उच्चारण करते रहे। उस समय आपकी वृद्धा माता, युवती पत्नी तथा अन्य आर्य सज्जन फूट-फूट कर रो रहे थे किन्तु मृत्यु शय्या पर पड़े हुए आपने यह नहीं कहा कि मेरे पीछे मेरे माता व धर्मपत्नी को दु:खी न होने देना। यदि कोई अन्तिम आदेश दिया तो यही और केवल यही कि "आर्य समाज से लेख का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए।"

परम पिता प्रभु हम सबको श्री पण्डित जी के पद चिन्हो पर चलने और उनके अन्तिम आदेश का पालन करने की शक्ति प्रदान करें जिससे कि हमारा प्यारा समाज पूर्ववत् दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करता हुआ दृष्टि-गोचर हो

वेदों के विद्वान् एवं वैज्ञानिक संन्यासी : स्व० स्वामी सत्यप्रकाश

—डा० भवानी लाल भारतीय

वेदों मे वैज्ञानिक तत्वों के अनुसंधाता स्वामी सत्यप्रकाश का नब्बे वर्ष की आयु में गत १६ जनवरी को निधन हो गया। वे वेदों के उत्कृष्ट विद्वान, दार्शनिक, परिव्राजक तथा विज्ञान एवं वेद विषयक साहित्य के सुगम्भीर लेखक थे। डा० सत्यप्रकाश का जन्म १९०५ में हिन्दी के विख्यात दार्शनिक लेखक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के यहां हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रसायन विषय लेकर १९२७ में एम.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की और वहीं प्रथम डिमान्स्ट्रेटर, फिर प्राध्यापक और अन्त में विभागाध्यक्ष के पदों पर कार्य किया। १९३२ में उन्होंने डी. एस. सी. की उपाधि प्राप्त की और वे देश के सम्मानित रसायन विज्ञान के पण्डित बने। विज्ञान की ही भांति उनकी रुचि वैदिक अध्ययन में भी रही। विश्व विद्यालय की सेवा से निवृत्त होने के बाद उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय वैदिक अध्ययन को समर्पित कर दिया। मोहन मीकिन्स के आर्थिक सहयोग से उन्होंने वेद प्रतिष्ठान की स्थापना कर और चारों वेदों का सुगम अंग्रेजी में अनुवाद किया। वेदों के उदात्त उपदेशों को विदेशी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने का उनका यह प्रयास अपने आप में महत्वपूर्ण था।

डा० सत्यप्रकाश ने १९७१ में संन्यासी का बाना धारण कर लिया। अब वे देश विदेश में सर्वत्र भ्रमण कर वैदिक ज्ञान से जिज्ञासु जनों को कृतार्थ करने लगे। इंग्लैण्ड तथा यूरोपीय देशों के अतिरिक्त अफ्रीका, अमेरिका तथा सुदूर मारिशस देश में भी उन्होंने धर्म प्रचारार्थ अनेक यात्राएं कीं। वेदों के अध्ययन में ब्राह्मण ग्रन्थो की सहायता अपरिहार्य होती है। हिन्दी में ऐतरेय तथा शतपथ ब्राह्मण का शाब्दिक अनुवाद स्वामी जी के पिता पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने किया था। शतपथ के इस अनुवाद को जब प्रकाशित करने का अवसर आया तो स्वामी सत्यप्रकाश ने इस ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका लिखकर यजुर्वेदीय शतपथ के विषय, कथा और शैली पर आलोचनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला। उपनिषदों में आए उपाख्यानों का उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद पैरेबल्स एण्ड डायलोग्स फ्राम दि उपनिषदस शीर्षक से किया।

वेदों के कल्प साहित्य में जहां श्रौत, धर्म तथा गृह्य सूत्रो पर विविध रूप से टीका, भाष्य आदि लिखे गए हैं, वहां इसी वेदांग में परिगणित होने वाले शुल्व सूत्रो पर लेखनी चलाने का साहस बहुत कम विद्वानो ने किया है। स्वयं वैज्ञानिक होने के कारण स्वामी जी शुल्व सूत्रों के वैज्ञानिक आधार से सुपरिचित थे। फलतः उन्होने आपस्तम्ब तथा बोधायन शुल्व सूत्रों को संस्कृत भाष्य तथा अंग्रेजी टीका सहित सम्पादित किया। भारत के प्राचीन वैज्ञानिको और विज्ञान विषयक उनकी उपलब्धियो को प्रकाश में लाने का उनका कार्य भी महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से उनकी कृतियां प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार प्राचीन भारत में रसायन का विकास, कोइनेज इन एन्शियेंट इण्डिया, ब्रह्मगुप्त के ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा प्राचीन भारत में रेखागणित आदि विशेषतया चर्चित रही। स्वामी सत्यप्रकाश का योग विषयक अध्ययन गहन तथा तलस्पर्शी था। उन्होने पातञ्जल योग सूत्रों की अंग्रेजी मे व्याख्या लिखी तथा योगांगों को स्पष्ट करने के लिए अनेक लघु ग्रन्थ लिखे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को वैज्ञानिक साहित्य से समृद्ध करने के लिए स्वामी जी ने इलाहाबाद की विज्ञान परिषद को पूर्ण सहयोग दिया। स्मरणीय है कि हिन्दी के माध्यम से वैज्ञानिक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए १९१३ में विज्ञान परिषद की स्थापना की गई थी। श्रीमती एनीबेसेन्ट, सर सी. वाई. चिन्तामणि, बाबू शिवप्रसाद गुप्त, डा० गंगानाथ झा, डा० नील रतन धर, गणिताचार्य डा० गोरखप्रसाद आदि अनेक गण्यमान्य देश भक्त नेता तथा विज्ञान परिषद के सभापति रह चुके थे। स्वामी सत्यप्रकाश भी १९६१ से ६७ तक इसके अध्यक्ष रहे। इनके प्रयास से ही परिषद की विज्ञान नामक शोध पत्रिका प्रकाशित हुई और हिन्दी मे वैज्ञानिक विषयों पर लिखने के लिए लेखको को प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के जो प्रयास केन्द्रीय सरकार द्वारा हुए और वैज्ञानिक कोश बने उन सबमें स्वामी जी का पूर्ण सहयोग रहा। स्वामी जी के लेखन और विज्ञान एवं वेद विषयक उनके अवदान को उत्तरप्रदेश सरकार, केन्द्रीय सरकार तथा आर्य-समाज सान्ताक्रूज बम्बई द्वारा समय समय पर सम्मानित किया गया। निश्चय है कि उनके निधन से वैदिक और वैज्ञानिक जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

८/४२३ नन्दन वन, जोधपुर

सार्वदेशिक सभा के तीन नये प्रकाशन

१. मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा

पाण्डुरग आठवले शास्त्री द्वारा प्रवर्तित नये सम्प्रदाय स्वाध्याय की मूर्तिपूजा के समर्थन मे दी जाने वाली युक्तियों का तार्किक शैली में खण्डन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने किया है। मूल्य)५० पैसे।

२. आर्य समाज

(लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक अंग्रेजी पुस्तक (प्रथम बार इंग्लैण्ड से १९१५ मे प्रकाशित) का प्रामाणिक अनुवाद। डा० भवानीलाल भारतीय कृत इस अनुवाद के आरम्भ में लेखक का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्यिक कृतियों की समीक्षा। मूल्य १८ रुपये।

३. ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की एक मात्र ९५ वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तक का डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित संस्करण मूल्य ९) ५० पैसे।

प्राप्ति स्थान व बिक्री विभाग।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

वैदिक यति मण्डल के साधुओं की राजस्थान में प्रचार यात्रा

जयपुर। आर्य जगत् के शिरोमणि संन्यासी वैदिक मण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक ३ मार्च से १८ मार्च तक राजस्थान में एक वाहन यात्रा का आयोजन किया गया है।

यह यात्रा जयपुर से ३ मार्च को प्रारम्भ होकर चुरु, नागौर, जोधपुर, सिरोही, जालौर, पाली व अजमेर जिले से होती हुई वापिस जयपुर में समाप्त होगी। इस यात्रा में स्वामी जी महाराज के साथ अन्य प्रमुख संन्यासियों में श्री स्वामी धर्मानन्द जी. उड़ीसा, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी, ज्वालापुर, श्री स्वामी धर्मानन्द जी, आबू पर्वत के अतिरिक्त लगभग बीस-पच्चीस अन्य सन्यासी, वानप्रस्थी व ब्रह्मचारी होंगे। सभा की दो भजनमण्डलियां यात्रा में साथ रहेंगी। इस यात्रा में न्यूनतम पांच वाहन होंगे। वाहनों में प्रचार सामग्री साहित्य आदि भी उपलब्ध होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री व वैदिक यति मण्डल के संयुक्त मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने यति मन्डल के सभी सदस्यों से अपील की है कि वे इस यात्रा में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वे दो मार्च की सायंकाल तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क (आर्य समाज, आदर्श नगर) जयपुर पहुंचे।

उक्त यात्रा की व्यवस्था एवं प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से किया गया है।

चिन्तन पर्व

विश्वम्भर देव शास्त्री

विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव ।

आदि सृष्टि में मानव के लिये वेदज्ञान श्री परमपिता ने दिया। जब तक वैदिक परम्परा रही तब तक धर्म, अर्थ, काम का क्रम पूर्वक चलन होने से आनन्दमय जीवन चलता रहा। सतोगुण का विकास रहा। इस देवभूमि भारत में ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि रही सारे वैदिक साहित्य की रचना हुई जिसके कारण हमारा आर्यावर्त जगत् गुरु रहा। दुरितों को दूर करते रहे। समय परिवर्तनशील है, घटनायें सबके सम्मुख घटती रहती हैं परन्तु ईश्वरीय देन से कोई-कोई उनमें प्रभावित होता है। महात्मा बुद्ध और बालक मूलशंकर ने इन पर मनन किया और दिव्य देव बन गये। मूलशंकर दयानन्द बन गये निरन्तर चिन्तन करने से बोधरात्रि प्रतिवर्ष आती हैं अतः हमें भी उनके दिखाए मार्ग का निरन्तर चिन्तन कर सुपथ गामी बनना चाहिये। "सत्यमेव जयते" हमारा घोष है। भारत की ख्याति विदेशों में इसके आध्यात्म ज्ञान के कारण थी।

अरस्तु—सिकन्दर जब भारत की धन सम्पत्ति को लूटने निकला तब उसके गुरु ने उससे कहा—"भारत विचित्र देश है, धन, धान्य और शौर्य से परिपूर्ण हैं। वहां वैभव माना जाता है त्याग में, भोग में नहीं। तुम देखोगे वहां के लोग आध्यात्म चिन्तन में अतुलनीय हैं। ३३ वर्ष की आयु वाले उस लोभी को जब वह रावी के किनारे एक साधु के पास कुछ भेंट के रूप में धन देने गया और प्रार्थना की महाराज इतनी विजय कर ली तथा धन सम्पत्ति एकत्रित कर ली किन्तु शान्ति नहीं मिलती।

साधु ने कहा मुझे तेरे धन दौलत की तो आवश्यकता नहीं इनको अपने पास रख। मुझे भगवान के दिये मीठे फल इन पेड़ों से खाने को मिल जाते हैं, पीने के लिये रावी मां का दूध समान जल मिल जाता है, दिन में भगवान सूर्य की गर्मी रात्रि को गुफा में एक कम्बल से विश्राम। परमात्मा के ध्यान में समय बीतता है।

रही तेरी अशान्ति का कारण तू महान् दरिद्र है स हि भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला" लोभी है तैंने हजारों नारियों को विधवा बनाया बच्चों को अनाथ बनाया तेरी प्यास नहीं बुझी जा अपनी सम्पत्ति को दान कर और सुन १२० दिन तक तू जीवित रहेगा अपने यूनान पहुंचने से पूर्व तेरे आयु समाप्त हो जायेगी। सिकन्दर लौटा और बीच में ही उसकी मृत्यु हो गई।

डेन्मार्क की श्रीमती जटरकू ने सर्व धर्म सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था ओ भूनण्डल के विद्वानों! यदि तुम संसार के वायुमण्डल को शान्त और सुखद बनाना चाहते हो तो भारत के सन्तों के चरणों में उनको गुफाओ और जंगलों में जाकर उनसे ब्रह्मज्ञान सीखो और उसे यूरोप तथा अमेरिका में फैलाकर शान्ति का राज्य स्थापित करो।

पेरिस के विद्वान् बर्नूफ ने वहां संस्कृत विद्यालय खोलते हुये कहा—हम भारत से मिल रही दिव्य ज्योति की उपेक्षा नहीं कर सकते।

भारतीय दर्शन शास्त्र के चिन्तन बिना वास्तविक दर्शन शास्त्र नहीं समझ सकते। हमें भारतीय धर्म, साहित्य, आचार संहिता और दर्शनशास्त्र का अवगाहन अवश्य करना चाहिये वह होगा संस्कृत अध्ययन से ही। भारत के विषय में विदेशियों का इस प्रकार का चिन्तन था।

समय बदला और उपरोक्त देशों ने अपनी दरिद्रता को दूर करने के लिये भारत पर आक्रमण कर तथा व्यापार का बहाना कर इसको सब प्रकार निर्बल कर स्वयं सम्पन्न बन गये।

आचार्य चाणक्यने एक बार इनको निकाला किन्तु अत्याचारियों के आक्रमणों को रोकने की शक्ति किसी में नहीं रही अंग्रेजों ने तो और भी छलकपट किये और रही सही को भी नष्ट करने में लग गये।

चेतना युग आया और एक महान् युग पुरुष प्रकट हुआ। जिसकी चिन्तन शक्ति का उदय इसी शिवरात्रि को हुआ। सत्य की खोज में निकल पड़ा और नाना प्रकार के पाखण्ड, अन्ध-विश्वासों, मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, मायावाद आदि वेद विरुद्ध मत-मतान्तरों का विरोध करते हुये निर्भयता से कर्म क्षेत्र में उतर गये। कर्म और योग दोनों का सामजस्य यदि देखा जाय तो महर्षि दयानन्द में ही है।

प्राचीन वैदिक ज्योति को हाथ में लेकर पाखण्ड-खण्डन, मत-मतान्तरों के अन्धविश्वासों का अन्धकार दूर करने में लीन हो गये।

उस समय भारत की संस्कृति की रक्षा के लिये ब्रह्म-समाज प्रार्थना समाज का जोर बंगालियों में चल रहा था। राजा राममोहन-राय मूर्ति पूजा तथा अन्य पाखण्डों को दूर करने का प्रचार कर रहे थे। परन्तु उस समय के बड़े-बड़े विद्वान् ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्रसेन आदि ये लोग विशेष रूप से अंग्रेजी पक्षधर थे। स्वामी जी के सिद्धान्तों से सहमत तो थे किन्तु सर्व प्रकार से नहीं।

सब कुछ विचार कर स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना की। एकेश्वर तथा वैदिक धर्म के आधार पर वर्ण आश्रम व्यवस्था से आर्य राष्ट्र ही नहीं अपितु "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का ध्येय बना लिया।

सत्य प्रचार के लिये समझौता किसी से नहीं किया। आचार्य चाणक्य का सिद्धान्त अपनाया जो वर्तमान समय के लिये बहुत उपयोगी है।

चन्द्रगुप्त स्वतन्त्रता की रक्षा सन्धि और विरोध पत्रों से नहीं होती। देशद्रोहियों की षड्यन्त्र की आग उन्हें क्षणभर में भस्म कर देती है। जो राष्ट्र स्वतन्त्रता को कागज पर लिखकर सावधान नहीं रहता और सो जाता है उसकी आजादी को रात्रि के स्वप्न के समान प्रभात धो देता है।

स्वामी जी ने जोशी मठ के महन्त की बात कि मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दो तो सारे मठ के स्वामी बन जाओ। यह कहकर ठुकरा दी कि मुझे सम्पत्ति की चाह होती तो अपने पिता की सम्पत्ति छोड़ न आता मुझे तो सत्य का प्रचार करना है।

ब्रह्मसमाजी केशवचन्द्र के कहा था कि अपने नियमों में तीसरे नियम से शब्द निकाल दो ब्रह्मसमाज आपके साथ मिल जायेगा। स्वामी जी ने कहा ये दृढ़ नियम है—इनमें घटा-बढ़ी नही हो सकती।

निर्भयता इतनी थी कि जनरल बुक ने कहा था। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की दृढ़ता के लिये भगवान से प्रार्थना कर लिया करे तो अच्छा होगा।

स्वामी जी ने कहा यह मेरे सामर्थ्य के विपरीत है। मैं तो नित्य प्रति भगवान से प्रार्थना करता हूं कि हमारे देश से विदेशी राज शीघ्र समाप्त हो जाये। बस तभी से बागी-साधु अंग्रेज मानने लगे।

यह है सबसे पहले स्वतन्त्रता की घोषणा प्रायः इस घोषणा का प्रभाव सभी क्रान्तिकारियों और नेताओं पर पड़ा।

बालगंगाधर तिलक ने कहा—विदेशी शासन हमारा शोषण ही नहीं करता अपनी निकम्मी संस्कृति और सभ्यता हम पर थोप भी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियां

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ५ फरवरी ९५ के अंक में पृष्ठ १२ पर पाठकों ने "ग्राम बलवन में नारी जागृति शिविर सम्पन्न" के शीर्षक से समाचार पढ़ा होगा, उस सम्बन्ध में निवेदन करना चाहूंगा कि इस गांव में साक्षरता का नितान्त अभाव है। गांव के वृद्ध जनों की इच्छा को ध्यान में रखते हुए वहां पर महर्षि दयानन्द संजीव विद्यालय के नाम से एक विद्यालय की स्थापना की गई। विद्यालय के लिए भूमि व दीवारों तक की व्यवस्था ग्रामवासियों ने की तथा छत की व्यवस्था दिल्ली के एक महानुभाव श्री संजीव द्वारा प्रदत्त १०००० (दस हजार रुपये) के दान से संघ के अधिकारियों ने करा दी। यह विद्यालय चतुर्थ श्रेणी तक ही होगा। प्रसन्नता का विषय है कि ग्रामवासियों ने अपने बालक व बालिकाओं को विधिवत् विद्यालय में प्रवेश करा दिया है और विद्यालय में पठन-पाठन का कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस विद्यालय के संचालन का भार श्री अमरसिंह जी आर्य जो कि स्व० पृथ्वीराज जी शास्त्री के शिष्य व रानी बाग आर्य समाज से प्रशिक्षण प्राप्त हैं ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है, इस विद्यालय में साक्षरता के साथ-साथ नैतिक शिक्षा देने का भी प्रयास जारी है।

विद्यालय में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों को वर्दियां, स्लेटें, पुस्तकें व अन्य सामग्री वितरित की गई। गांव के कुछ वृद्धजनों को पात्रता के आधार पर कम्बल आदि भी दिये गये।

गांव की अशिक्षित नारियों में रूढ़िवादिता को समूल नष्ट करने के लिए श्रीमती प्रेमलता जी, मन्त्री अ०भा०द०से० संघ ने अकथनीय प्रयत्न किया, जिसका शनैः शनैः प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। ऐसा प्रतीत हुआ कि मानसिक स्थिति में परिवर्तन शुरू हो गया है, इस दिशा में प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है जो यथा समय करने का प्रयत्न किया जायेगा।

इसी सन्दर्भ में मैं यदि एक कर्मठ कार्यकर्ता का आभार व्यक्त न करूं तो कृतघ्नता होगी। यह हैं श्री भंवरसिंह जी कटारा जो संघ के बांदला आश्रम के व्यवस्थापक हैं इन्होंने बड़ी कर्तव्यपारायणता से १८-१२-९४ से १५-१-९५ तक संघ के अधिकारियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्यक्रम को सुचारु रूप से संचालन करने में योगदान दिया मैं उनकी दीर्घायु व सुख समृद्धि की कामना करता हूं। (क्रमशः)

—देवव्रत मेहता, महामन्त्री,

मनुष्य जन्म से शूद्र पैदा होता है संस्कार के पश्चात् द्विज कहलाता है

के०पी० त्रिपाठी एम०ए० शास्त्री

मनुष्य रूप में संसार का सर्वोत्कृष्ट प्राणी यदि संस्कारों से वंचित है, तो उसे सर्वथा वैदिक आधार पर शूद्र शब्द से ही सम्मानित किया जायेगा। ये विचार अब तक की सबसे ज्यादा विवादित पुस्तक, मनुस्मृति के हैं। एवं मनुस्मृति के विवादों में फंसने का मुख्य कारण मेरे विचार से इसकी स्पष्टवादिता रही है। जो रूढ़िवादियों के लिए, धर्म निरपेक्षता की नंगी तलवार के रूप मे हमेशा चुभती रही इसका निदान रूढ़िवादियों के द्वारा प्रक्षेपों को आवरण बनाकर मनुस्मृति जैसे स्पष्ट एवं धर्म निरपेक्ष ग्रन्थ को विवादित बना दिया। उस समय यह वर्ग समाज में अपनी प्रभुता कायम रखने के लिए वर्ण व्यवस्था को "जन्मता" बतलाता था। चूंकि उस समय संस्कृत भाषा का पढ़ना-पढ़ाना इतना जटिल नही था जितना आज का समाज अनुभव करता है और इसी का फायदा उठाकर, इन्होंने समाज में इतना भय पैदा कर दिया, कि दूसरे वहीं के लोग, जिन्हें वास्तविकता से दूर रखा गया था, इनके पदचिह्नों पर चलने के लिए विवश हो गये।

इसके परिणाम स्वरूप आगे चलकर बड़ी व्यवस्था के रूप में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जन्म के द्वारा, समाज में पहचाने जाने लगे और इन्हीं चारों में से शूद्र जिन्हें हमेशा अपमानित होना पड़ता था, ये असन्तुष्ट लोग जो जन्मनावादी व्यवस्था के सबसे ज्यादा शिकार हुये ये शूद्र बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के साथ हो लिए। और देश के इतिहास में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर द्वारा निर्मित हिन्दुस्तान के संविधान में अपना स्थान भी स्थापित किया।

यहां एक बात का उल्लेख करना मैं ज्यादा उचित समझता हूं

(शेष पृष्ठ ९ पर)

चिन्तन पर्व

(पृष्ठ ५ का शेष)

रहा है। सत्ता और धन के बल पर हमारी बुद्धि तक खरीद लेता है। वास्तव में इतने वर्ष बीतने पर भी हमारे पर अंग्रेजी छाप पड़ी है जिससे अपना चिन्तन तो दूर ही होता जा रहा है।

१८३४ में मैकाले भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया वह शिक्षा बोर्ड का प्रधान बना और आते ही अंग्रेजी का पढ़ना अनिवार्य और संस्कृत की पाठशालाओं को मिलने वाली सहायता बन्द कर दी।

१८५४ में विद्वान् मैक्समूलर जो वेदों का स्वाध्याय कर रहा था उनसे मिला और कहा—वेदों का ऐसा अर्थ करो कि जिससे लिखे-पढ़े भारतीय उससे घृणा करने लगे यही किया और सोमरस, पान का विपरीत अर्थ कर दिया घोषणा की आर्यों की कोई संस्कृति नहीं, आर्य शब्द को जातिवाचक माना जब कि आर्य शब्द एक उच्च संस्कृति का वाचक है।

अरविन्द जी ने अपने आर्य पत्रिका में इस शब्द की सुन्दर व्याख्या की एक सदाचारी परोपकारी, जितेन्द्रिय गुणों से युक्त व्यक्ति आर्य है इसके विपरीत अनार्य।

आर्य समाज के कार्यों को सभी ने सराहा गान्धी जी ने उन्हीं सिद्धान्तों को अपनाया जो उनसे ५० वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द ने अपनाया था।

किन्तु गांधी जी तुष्टिकरण के चक्कर में पड़ गये। जिससे स्वामी श्रद्धानन्द जिनको गांधी बड़ा भाई मानते या गुरु मानते थे थे जिन्होंने मिस्टर गांधी को महात्मा बनाया को त्यागना पड़ा।

अब हमें स्वामी जी की बात का चिन्तन करना है जो उन्होंने कहा था—मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है। मेरी अवस्था एक माली के समान है। पौधों में खाद डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाती है मुझ पर राख और धूल चाहे जितनी पड़े मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी भरी रहे और निर्विघ्न फूले फले।

मेरे प्यारे आर्य बन्धुओं स्वयं का चिन्तन तो करो आर्यसमाज के पहरेदार बनो उसको लूटने वाले नही। स्वतन्त्रता में अग्रणी आर्य समाज के संगठन को दुर्बल न बनाओ केवल धन के प्रति रागी न बनो। परोपकार और संसार को आर्य बनाने के स्वप्न से स्वयं पहले आर्य बनो।

पारस्परिक कमियों से दूर रहें यही चिन्तन करना है। आज ईश्वर से प्रार्थना है।

यां मेधा देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु॥

स्वास्थ्य चर्चा—

बच्चों के लिए जान लेवा है खूनी पेचिश

खूनी पेचिश यानी बैसिलियारी डिसेन्ट्री बच्चों, खासकर छोटे बच्चों में होने वाला एक प्रमुख संक्रामक रोग है। कई बार रोग के बारे में सही जानकारी न होने पर यह गम्भीर रूप धारण कर लेता है। खूनी पेचिश है क्या, इसके क्या-क्या लक्षण हैं, इसका निदान क्या है इसी तरह के तमाम सवालों का जवाब दे रहे हैं डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल के वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ—डा० य० सतैया—

खूनी पेचिश क्या है

खूनी पेचिश डायरिया की तरह एक बीमारी है, जिसे बैसिलियरी डिसेन्ट्री या ब्लडी डिसेन्ट्री भी कहते हैं। डायरिया के समान होते हुए भी यह उससे थोड़ी अलग है। जहां डायरिया में पीड़ित व्यक्ति को बार-बार पानीयुक्त शौच (पतला दस्त) होता है, वहीं खूनी पेचिश में मल के साथ खून व म्यूकस (आंव, लिजलिजा पदार्थ) भी निकलता है। खूनी पेचिश कई तरह का होता है—एमिबायसिस, बैसिलियरी, बैक्टियल, प्रोटोजोअल, हैलमिन्थिअल, वायरल आदि।

बच्चों में इसके फैलने का क्या कारण है ?

इसके कई कारण हैं, लेकिन मुख्यतः संक्रमण के कारण होता है। चूंकि बच्चों में इतनी समझ नहीं होती कि वे संक्रमण से कैसे बचें और क्यों बचें—इसलिए वे ही इससे ज्यादा प्रभावित होते हैं। बैक्टिरिया व वायरस खूनी पेचिश के मुख्य वाहक हैं। टायफायड होने की स्थिति में भी बच्चे डिसेन्ट्री की चपेट में आ जाते हैं। शारीरिक रूप से कमजोर बच्चों को यह बीमारी ज्यादा होती है, क्योंकि ऐसे बच्चों में रोगों से लड़ने की क्षमता कम होती है। झोपड़पट्टी इलाकों में या पुनर्वास बस्तियों में, जहा लोग खुले में शौच करते हैं, वहां यह बीमारी ज्यादा फैलती है।

खूनी पेचिश के लक्षण क्या-क्या हैं ?

बच्चे को जब दिन भर में पांच से दस बार शौच जाना पड़े और मल अपने स्वाभाविक रूप में न हो, तो यह डिसेन्ट्री का लक्षण है। बच्चा पेट-दर्द की शिकायत करे, शौच के साथ खून व लिजलिजे द्रव (म्यूकस) निकले, यह पेचिश है। कभी-कभी पतले दस्त के साथ बच्चों को उलटी भी होती है। शरीर में पानी की कमी हो जाती है। पेशाब रुक जाता है। कभी-कभी बच्चे को तेज बुखार भी हो जाता है। उसे भूख नहीं लगती है और वह चिड़चिड़ा हो जाता है।

रोग के लक्षण प्रकट होने पर डाक्टर के पास जाने के पहले बच्चे को घर पर क्या उपचार देना चाहिए ?

डाक्टर के पास जाने के पहले सबसे पहले यह ध्यान देना चाहिए कि बच्चे को पेशाब हो रहा है या नहीं। पेशाब होना अच्छा लक्षण है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे के शरीर में पानी की कमी न होने पाए। उसे रोज का खाना समय पर देते रहना चाहिए तथा उसे पानी भी सामान्य की अपेक्षा अधिक देना चाहिए। डिसेन्ट्री के कारण अधिक पानी निकल जाने से बच्चे को डिहाइड्रेशन हो सकता है। अगर डिहाइड्रेशन हो ही जाए, तो बच्चे को नमक, चीनी व पानी का घोल थोड़ी-थोड़ी देर पर पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए, ताकि बच्चे के शरीर में पानी की कमी न होने पाए।

इसका उपचार क्या है ?

रोग के लक्षण प्रकट होने पर घरेलू उपचार के बाद तुरन्त बच्चे को अच्छे डाक्टर को दिखाएं। डाक्टर बच्चे की उम्र के अनुसार दवाइयां देता है। आमतौर पर एक साल से छोटे बच्चे को इस बीमारी की प्रारम्भिक अवस्था में एण्टीबायटिक दवाइयां नहीं दी जाती, लेकिन स्थिति गम्भीर होने पर छोटे बच्चों को भी एन्टीबायटिक एवं एन्टी डायरिकल दवाइयां दी जाती हैं। इस दौरान बच्चे के स्टूल काकलचर कराना भी आवश्यक है ताकि बीमारी का कारण पता चल सके।

खूनी पेचिश से बच्चों को बचाने के लिए क्या सावधानियां बरतनी चाहिए ?

सबसे पहले इस बात का ध्यान रखें कि बच्चों को दिया जाने वाला भोजन (चाहे वह दूध हो या ठोस पदार्थ) बिलकुल साफ-सुथरा हो। देर तक खुला या बासी भोजन बच्चों को न देना बेहतर है। बच्चे के दूध और पानी की बोतल, उसके कपड़े की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। छोटे बच्चों को सम्भालने वाले व्यक्ति भी बच्चे को उठाने से पहले हाथ पेर अच्छी तरह धो लें। गन्दी जगहों पर बच्चों को लिटाना या बिठाना नहीं चाहिए। रोगग्रस्त व्यक्ति को तब तक बच्चे को गोद में नही लेना चाहिए. जब तक कि वह स्वयं स्वस्थ न हो जाए। बच्चे को पानी हमेशा उबाल कर ठंडा कर पिलाना चाहिए।

—कुमारी कंचना

मनुष्य जन्म से शूद्र पैदा होता है

(पृष्ठ ७ का शेष)

कि बाबा साहब ने मनुस्मृति की स्पष्ट वाणी से उस समय परिचित क्यों नहीं कराया। जब कि बाबा साहब को मनुस्मृति का अच्छा ज्ञान था। भले ही मनुस्मृति उस समय प्रक्षेपों से भरी पड़ी थी। लेकिन बाबा साहब यदि उस समय चाहते तो मनुस्मृति के प्रक्षेपों को अलग कर उसकी वास्तविकता समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते थे। क्योंकि बाबा साहब में नीर क्षीर विवेक था। लेकिन उन्होंने ऐसा न करके दलितों के लिए संविधान में स्थान देना ज्यादा उचित समझा। जिसके परिणाम स्वरूप जन्मना वर्णव्यवस्था समाप्त होने के बजाय और फलती-फूलती चली गयी।

इस क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा काफी कदम उठाये गये, जो काफी प्रभावशाली थे, लेकिन इनकी पावन्न यश्किनी पताका फहराते-फहराते उस समय रुक गयी।

जब स्वामी जी विश्वासघात के शिकार हुये। और उस समय सब से ज्यादा नुकसान दलितों एवं पिछड़े लोगो का हुआ, जिन्हें स्वामी जी यह बतलाना चाहते थे कि मनुस्मृति को आवरण बना कैसे जी व्यवस्था "जन्मना" समाज में व्याप्त है। वह 'जन्मना' न होकर कर्मणा है। जो महाराज मनु के द्वारा स्पष्ट लिखा है कि "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज: उच्यते।

खुलेपन के दौर से देश की सांस्कृतिक विरासत को खतरा : कु० शैलजा

अलवर, १६ जनवरी। केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति उपमन्त्री कु० शैलजा ने कहा कि लोगों के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है लेकिन वह ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को नैतिक सम्बल प्रदान कर सके तथा अच्छे संस्कारों से देश को अच्छे नागरिक दे पाने में समर्थ हो सके।

शिक्षा उपमन्त्री ने सोमवार को आर्य कन्या महाविद्यालय के सभागार में आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में चल रहे खुलेपन के दौर में टेलीविजन व फिल्मों के जरिये सांस्कृतिक विरासत पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इसका किशोर पीढ़ी पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसका सही अहसास बीस वर्ष बाद होगा जब कि आज का किशोर कल के देश का उत्तरदायी नागरिक बनेगा। इसलिए ऐसे समय में हमें गम्भीर विचार मंथन करके ही हमारी संतति को शिक्षा देनी है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक देश आधुनिकता में बहुत आगे कहे जाते हैं लेकिन उनके पास अपनी सांस्कृतिक धरोहर की पहचान बताने वाले कोई चिह्न नहीं हैं और भारत एक ऐसा देश है जिसने अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखा है। अब हम उचित शिक्षा के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को कायम रख सकते हैं।

कु० शैलजा ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत महिला शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है और आजकल स्वयं प्रधानमन्त्री इस मन्त्रालय को देख रहे हैं जो कि महिलाओं को श्रेष्ठतम शिक्षा दिलाने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने कहा कि महिला उत्थान के लिए आर्यसमाज का योगदान अत्यन्त सराहनीय है। जिसने विषम परिस्थितियों में भी महिला उत्थान के लिए कार्य किया और जिसे तत्कालीन समय में सुषुप्त क्रान्ति का नाम दिया गया। उन्होंने महिला शिक्षण संस्थाओं के संचालन के लिए स्वयं सेवियों से आगे आने का भी आह्वान किया।

प्रारम्भ में समारोह को आर्य कन्या शिक्षा समिति के प्रधान छोटूसिंह आर्य ने भी सम्बोधित किया। समारोह में जिला कलक्टर मनोहरकांत सहित बड़ी संख्या में नागरिक एवं अधिकारी उपस्थित थे।
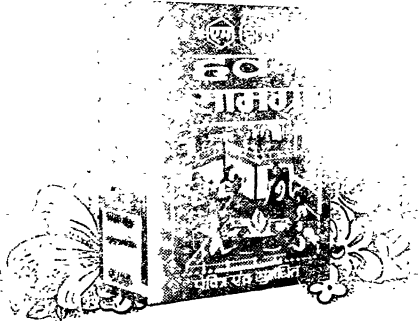
आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज सुलतानपुर पट्टी में श्री रामप्रसाद आर्य प्रधान श्री दर्शनसिंह आर्य मन्त्री श्री देवदत्त आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मदनगंज किशनगढ़ में श्री प्रभुलाल लड्ढा प्रधान, डा० वीर रत्न आर्य मन्त्री श्री रामदत्त भूतड़ा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मुंगेर में श्री यदुनन्दनप्रसाद प्रधान, श्री धीरेन्द्रकुमार शास्त्री, मन्त्री श्री डा० शम्भूचन्द्रपाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज आवास विकास कालोनी काशीपुर में श्री शान्तिप्रसाद गोयल प्रधान, श्री गोपाल दास जी मन्त्री, श्री वागेश्वरीसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य वीर दल नागौर में श्री पन्नालाल आर्य प्रधान श्री नन्दकिशोर कड़ेल मन्त्री श्री सजय आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज आर्यनगर में श्री कपिलदेव जी प्रधान, श्री राजीवकुमार आर्य मन्त्री, श्री श्रीचन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा उन्नाव में श्री रविशंकर वर्मा प्रधान, राधेश्याम मन्त्री श्री वरुणमित्र शास्त्री कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज छिन्दवाड़ा में श्री राजाराम तिवारी प्रधान, श्री रवीन्द्रसिंह मन्त्री श्री अजय वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

पुस्तक समीक्षा

विदुर नीति अथवा विदुर प्रजागर

अनुवादक : स्व० स्वामी वेदानन्द तीर्थ

पृष्ठ १६०, मूल्य १८ रुपए

प्रकाशक--मधुर प्रकाशन, आर्य समाज सीताराम बाजार, दिल्ली-६

घर-परिवार देश समाज को चलाने की जो पद्धति अपनाई जाती है उसकी रीति व नीति क्या हो, वह धर्मनीति हो या राजनीति, राज्य व्यवस्था के साथ धर्म की नीति लगी रहने से राजनीति शुद्ध बनी रहती है परन्तु धर्म व राज व्यवस्था में वक्रता आ जाय तो उसे कूटनीति कहते हैं। समय समय पर जिन राजनेताओं द्वारा जो नीति अपनाई गई है उसे ही उसके नाम पर नीति प्रसिद्ध की है। विदुर प्रजागर, नीति महाभारत काल में विदुर की नीति ने काफी लाभ दिया है।

इसके अलावा मनु की नीति, चाणक्य की नीति, विदुर की नीति भी है।

भारतीय राजनीति के ६ अंग और चार उपायों का विस्तृत विवरण मिलता है। राजनीति के ६ अंग--सन्धि, विग्रह, मान, आसन, संश्रय, द्वैधि-भाव इन्हे ही नीति के छ गुण भी कहा जाता है, इनके चार उपाय भी हैं—साम, दाम, दण्ड, भेद। नीति शास्त्र विषयक स्वतन्त्र ग्रन्थो के अतिरिक्त बहुत ऐसा साहित्य है जो महान ग्रन्थो में विकीर्ण है। निश्चित ही—

इस विदुर नीति मे भी प्रतिपादित सिद्धात राजा और प्रजाजन दोनो के लिए समान रूप से उपयोगी है।

मधुर-प्रकाशन अच्छे साहित्यको जन साधारण पहुचाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहा है। विवेकी जन इससे लाभ उठाये और उचित परामर्श से प्रकाशन विभाग को मार्ग दर्शन भी दें। धन्यवाद

—डा०, सच्चिदानन्द शास्त्री

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

छोटानागपुर के गढ़वा जिले में भवनाथपुर से दस किलोमीटर दूर रोहनियां ग्राम स्थित आर्यसमाज के तत्वावधान में सामवेद पारायण महायज्ञ गत १५ से १७ जनवरी तक काफी धूमधाम से समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के दौरान समीपवर्ती ग्रामों के नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची के प्रचार मन्त्री पं० गोविन्दप्रसाद आर्य "विद्यावारिधि" ने यज्ञ मे ब्रह्मा का कार्य किया और रामस्वरूप शास्त्री "वानप्रस्थी" ने उन्हें इस कार्य में सहयोग प्रदान किया।

उक्त आयोजन में चतरा के प० महावीरप्रसाद तार्किक, चम्पारण जिला प्रचारक पं० ध्रुव जी एव डाल्टेनगज के पं० रामदेव शास्त्री ने उपदेश दिया। —दयाराम पोद्दार

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई का निर्वाचन

प्रधान—श्री ओंकार नाथ आर्य

उप प्रधान—श्री भगवती प्रसाद गुप्त

„ —श्री झाऊलाल शर्मा

„ —श्री धर्मवीर गुलाटी

महामन्त्री—श्री मिठाई लाल सिंह

मन्त्री—श्री शिववीर शास्त्री

„ —श्री मेघराज गुप्ता

„ —श्री दिलीप वेलाणी

कोषाध्यक्ष—श्री के० एल० मदान

प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के लिए

१—श्री भगवती प्रसाद गुप्ता

२—श्री स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती

३ श्री के० देवरत्न आर्य

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वेद संगोष्ठी

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ स्वामी समर्पणानन्द जी की जन्म-शती ९ मार्च से १२ मार्च तक समारोह पूर्वक मना रहा है। इस अवसर पर स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान की ओर से ९ मार्च को प्रातः ११ बजे शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस शोध संगोष्ठी का विषय रहेगा "वेदों में विविध विज्ञान"। इस शोध संगोष्ठी में अपने लेख प्रस्तुत करें तथा अधिक से अधिक सख्या में भाग लेकर संगोष्ठी को सफल बनावें।

राष्ट्रकल्याण चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

५ मार्च से १२ मार्च तक

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को सूच्य है कि श्री महानन्द सस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह बरनावा (मेरठ) अन्तर्गत श्री गांधीधाम समिति के तत्वावधान में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी ५ से १२ मार्च तक पाच यज्ञशालाओ पर सैंतीसवां (३७ वा) चतुर्वेद पारायण यज्ञ अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होगा।

सभी श्रद्धालुओ से प्रार्थना है कि यज्ञ मे सम्मिलित होकर धार्मिक लाभ प्राप्त करें।

नोट भोजन तथा आवास का पूर्ण प्रबन्ध है।

नगर आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव

नगर आर्य समाज जौनपुर का २१ वा वार्षिकोत्सव २७ फरवरी से १ मार्च तक जौनपुर नगर परिषद के प्रागण में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा तथा विभिन्न सम्मेलन आयोजित किये गये। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत जिला रोहतक का चतुर्थ वार्षिकोत्सव ४ तथा ५ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने पधार कर श्रोताओ को लाभान्वित किया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा आकर्षक व्यायाम का प्रदर्शन भी किया गया।

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र अपने गरीबी के दिन गिनता हुआ आप आर्यजनो की सेवा मैं वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप मे है। विद्वानो के लेखो, कविताओ, प्रवचनो व सूचनाओ के साथ पहुच रहा है।

सफलता कहू या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक संख्या निर्धन है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमें नही देना चाहते। मागने पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमे कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु जाता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामतः सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलने से। अब भी वही दशा है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढ़ें और हमारे लिये नहीं अपनी शक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाएं।

तो फिर सकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमें दें। किसी भी संस्था को शक्तिशाली बनानेमें पत्रिका व साहित्य उसके जीवन को गति ही नहीं प्रगति भी प्रदान करते हैं?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही ग्राहक राशि का धन तथा अन्य सहयोग देकर सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक सन्देश घर-घर पहुंचायें।

—डा. सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

32

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/८१ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५-३-८१) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G) ९३/८१
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (G) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 2,3-3-1981

भक्ति संगीत

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सभा भवन में दिनांक २५-२-८१ को भक्ति संगीत का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। इस संगीत सन्ध्या में भाग लेने के लिये पूर्व आमन्त्रित संगीतज्ञों में श्री दीन दयाल, श्री सत्यपाल मधुर, श्री मनोहर लाल ऋषि, श्रीमती यशोदी देवी (हालेन्ड निवासी) श्री स्वामी स्वरूपानन्द, श्री मोहन लाल "चमन", श्रीमती सरला, श्री आचार्य रविदत्त गौतम, श्री इन्द्र सेन "विश्व प्रेमी" श्री प० वेद व्यास उपस्थित थे।

सभा के अध्यक्ष का माल्यार्पण करके दिल्ली की समाजों के प्रतिनिधियों ने तथा श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वागत किया। सभा विसर्जन से पूर्व आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से सभापति का शाल उढ़ाकर श्री राममूर्ति कैला ने अभिनन्दन किया श्री सूर्यदेव ने माला पहनाई।

श्री विजय मनोचा का शाल भेंट करके स्वागत किया गया यह स्वागत उनकी पारिवारिक परम्परा के निर्वाह के कारण किया गया। उनकी माता श्रीमती स्नेह प्रभा का इस आर्य समाज से घनिष्ट सम्बन्ध रहा था अब उस परिपाटी को उनका परिवार निबाह रहा है।

सभा मे विगत विजेताओ को पुरस्कार बांटे गये जिनमें प्रथम पुरस्कार श्री सत्यपाल "मधुर" ने प्राप्त किया, तृतीय पुरस्कार श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी ने ग्रहण किया। कुछ विजेता सभा में अनुपस्थित थे।

सभा समापन से पूर्व सभाध्यक्ष श्री वन्देमातरम ने अपने उद्गार प्रकट करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द का कार्य अद्भुत था वे वीतराग महापुरुष थे जीवन की अन्तिम वेला भी अनेकों विद्वानों को स्फूर्ति प्रदान कर गई। कैसा विचित्र समय था जब मृत्यु सम्मुख आ रही है और ऋषि आसन पर बैठकर अत्यन्त आह्लाद के साथ वेद मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे। महान उल्लास की आभा बिखेर कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। महर्षि ने देह और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझ लिया था। साथ ही उन्होंने उपराष्ट्रपति के एक कथन की चर्चा भी की जिसमे उन्होंने अपने भाषण मे यह कह दिया था कि ऋग्वेद में तमिल भाषा के शब्द हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से इसका विरोध किया गया उपराष्ट्रपति ने अपने कथन का परिमार्जन कर कहा कि वास्तव में वैदिक भाषा सर्व प्रथम भाषा है जो ईश्वरीय ज्ञान से परिपूर्ण है।

सभा का सुरुचि पूर्ण सचालन समाज के कर्मठ मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा किया गया उन्होने नेत्र रोग परीक्षण शिविर के आयोजन की घोषणा की और कहा कि समाज की ओर से नि:शुल्क परीक्षण की व्यवस्था है तथा चश्मे भी समाज की ओर से प्रदान किये जायेंगे। अन्त मे शान्ति पाठ व जय घोषों के साथ सभा समाप्त हुई। उपस्थित महानुभावों को भोजन कराया गया, यह प्रबन्ध भी आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से किया गया।

कलंगापाली, बर०गढ़ ... ाई वैदिक धर्म में

ईसाई बहुल मधुपुर (सोहेला) क्षेत्र के ५-६ गांव के २५० से अधिक परिवारों के ७०० से अधिक ईसाईयों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। गत एक वर्ष से उनकी कामना वैदिक धर्म ग्रहण करने की थी परन्तु अब तक यह सुविधा नहीं हो पाई थी। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा पर ५ फरवरी को वैदिक मति मण्डल के मन्त्री एवं गुरुकुल आमसेना के उपाचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में इस समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० प्रियोकेशन जी शास्त्री ने किया श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी एवं श्री कर्मवीर शास्त्री ने संस्कार करवाया सारा आयोजन बहुत आकर्षक एवं प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर इस क्षेत्र के अनेक आर्य बन्धु भी उपस्थित थे।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

झाड़ौदा कलां (दिल्ली) श्री नरेशकुमार जी आर्य व श्री रमेश कुमार जी आर्य सुपुत्र श्री जागेराम जी ने १ से १७ जनवरी १९८१ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया। यह यज्ञ आचार्य चेतनदेव जी नैष्ठिक वैदिक साधना आश्रम चाकड़, भैया (अलीगढ़) और स्वामी वेद रक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जींद) द्वारा विधि-वि[illegible] सम्पन्न हुआ। इस परिवार ने पहले यजुर्वेद तथा साम[illegible] यज्ञ कर[illegible] है। आगे अथर्ववेद पारायण यज्ञ भी क[illegible]। यह परिवार अत्यन्त धार्मिक व यज्ञप्रेमी है। इस ऋग्वेद पारायण यज्ञ व्यवस्था में श्री रामधन जी आर्य पं० ताराचन्द जी आर्य, पं० [illegible]कुमार जी आर्य, पं० सतीशकुमार जी आर्य श्री गजानसिंह जी आर्य आदि महानुभावों ने अपना अमूल्य समय देकर सहयोग प्रदान किया एतदर्थ ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र　　दूरभाष : ३२७४७७१　　वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ४]　　दयानन्दाब्द १७०　　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५　　फाल्गुन शु० १०　　सं० २०५१ १२ मार्च १९९५

बाबरी मस्जिद विध्वंस के तीन दिन पूर्व मैंने प्रधानमन्त्री राव को चेताया था

रज्जू भैया का दावा

भोपाल ४ मार्च। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) ने आज दावा किया कि मैंने प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिंह राव को ३ दिसम्बर, १९९२ को ही चेतावनी दे दी थी कि ६ दिसम्बर १९९२ को अयोध्या में कुछ भी हो सकता है क्योंकि तब वहां दो लाख कारसेवक एकत्र होंगे।

प्रो० रज्जू भैया ने आज यहां हिन्दी भवन में संवाददाता सम्मेलन में यह बात कही। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि काशी और मथुरा के मुद्दों पर कार्रवाई करना विश्व हिन्दू परिषद का मामला है। लेकिन अयोध्या, काशी, मथुरा तीनों हिन्दुओं के लिए धार्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। इस बात पर हम सब (संघ, विहिप, बजरंग दल) एकमत हैं। वैसे काशी और मथुरा संघ के एजेंडे में नहीं हैं।

रज्जू भैया ने कहा कि अयोध्या को विहिप ने १९८८ में अपने एजेंडे में शामिल किया था लेकिन आर०एस०एस० ने इसे अपने एजेंडे में १९८९ में शिलान्यास हो जाने के बाद ही प्रस्ताव पारित कर शामिल किया था। उन्होंने कहा कि काशी और मथुरा मुद्दे पर कार्रवाई व समयावधि तय करना विश्व हिन्दू परिषद का काम है।

इसी तरह उन्होंने अपने लखनऊ संवाददाता सम्मेलन के बारे में प्रकाशित समाचारों की सफाई देते हुए कहा कि "राजनीति में किसका साथ देना है किसका नहीं यह भारतीय जनता पार्टी तय करेगी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नहीं।

बाबरी ढांचा ढहने के बाद अयोध्या में मन्दिर निर्माण को लेकर विहिप और आर०एस०एस० खामोश क्यों बैठे हैं, इसका जवाब देते हुए रज्जू भैया ने कहा कि बाबरी ढाचे के ढहने में केन्द्र सरकार का हाथ था, अब निर्माण भी सरकार के हाथ में है क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने जहां मन्दिर निर्माण होना है, वहां की पूरी जमीन सरकार के कब्जे में दे दी है। सरकार को चाहिए कि अब वह वहां मन्दिर बनवाए।

जब उनसे पूछा गया कि दिसम्बर ९२ में आपने ढाचा ढहाने में पांच दिन का इन्तजार नहीं किया था अब ढाई वर्ष हो गए फिर भी मन्दिर का निर्माण क्यों नहीं कर रहे हैं, इसके जवाब में रज्जू भैया ने कहा कि अगर वहां जाकर निर्माण करना है तो मुलायम सिंह सरकार की लाठी गोली खानी पड़ेगी, हिंसा होगी। इस समय केन्द्र सरकार के हाथ में सब कुछ है, वह चाहे तो राम मन्दिर ट्रस्ट से निर्माण कराए या अपने रामालय ट्रस्ट से कराए।

सरसंघचालक से जब यह पूछा गया कि क्या काशी और मथुरा का मामला लोकसभा चुनाव के मद्देनजर उठाया जा रहा है तो उन्होंने कहा कि इसका चुनाव से कोई मतलब नहीं है। ८५ में जब अयोध्या का मुद्दा उठाया गया था तो चुनाव हो चुके थे।

रज्जू भैया से जब पूछा गया कि आप भारत के अब तक हुए प्रधानमन्त्रियों में श्री राव को कौन सा स्थान देते हैं, इसके उत्तर में

शेष पृष्ठ १२ पर)

इस अंक के आकर्षण

संपादक : डा०सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

आर्य समाज के मूर्धन्य नेता—
स्व० श्री स्वामी अभेदानन्द सरस्वती का जन्मशती समारोह

आर्य समाज ने देश की बिगड़ी परिस्थितियों को सम्हाला और गुलाम भारत को स्वतन्त्रा का नेतृत्व प्रदान किया। उनमे प्रमुख थे सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्व० श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज—

बस्ती जिले के पूर्वी छोर पर घपोखोरा ग्राम जिला बस्ती उ० प्र० में रामसुन्दर नाम के बालक का जन्म हुआ था। युवावस्था को प्राप्त होने तक आर्य समाज और राजनीति की छाप भी रामसुन्दर के जीवन पर पड़ चुकी थी आर्य समाज की छाप पडने पर रामसुन्दर ने अपना नाम बदलकर वेदव्रत रख लिया। १९२० से १९४२ तक स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेकर कारा के बन्दी बने।

१९३८ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में डिक्टेटर बने और आर्य सत्याग्रह मे जेल गए, सत्याग्रह की पूर्णता पर ही जेल से मुक्त हुए।

आप अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी के विद्वान वक्ता थे। उत्तर प्रदेश से चलकर सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र बिहार प्रान्त को चयन किया। बिहार राज्य आर्य समाज के प्रधान रहे और फिर सार्वदेशिक सभा के भी प्रधान पद पर सुशोभित हुए।

आपके ओजस्वी भाषणों को सुनकर—प्रज्ञाचक्षु धनराज शास्त्री बेलहर, प्रभाकर शुक्ला भरवलिया निवासी, रामासरे शुक्ल सिकटा निवासी, हरैय्या के मनवर ततवर्त्ती जगदीशपुर निवासी बा० रामदवन सिंह आपके प्रभाव मे आकर देश जाति का कार्य करने निकल पड़े।

श्री स्वामी जी के प्रभाव में ही राजाराम शास्त्री, रामदास शास्त्री भी कार्यक्षेत्र में उतरे। लालबिहारी शर्मा, आ. स. के सदस्य बने जो अभी तक कार्य कर रहे हैं।

श्री वेदव्रत जी वानप्रस्थी के जो भी ओजस्वी व्याख्यान सुनता वह ही आपका अनुयायी हो जाता था। मन्नन द्विवेदी ने तहसीलदार का पद छोडकर देश के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। गोरखपुर के दशरथ प्रसाद द्विवेदी समाचार सम्पादक संस्थापको मे से थे, आप भी स्वामी अभेदानन्द जी से प्रभावित थे।

स्वामी अभेदानन्द जी ने पूर्वी तलहटी उ० प्र०, बिहार, बगाल मे संन्यासी वेश मे राष्ट्र प्रेम की मशाल को प्रज्वलित किया था। उत्तर प्रदेश से हटकर म० गान्धी के निर्देश पर बिहार राज्य कर्मस्थली बन चुकी थी।

स्वामी जी सन्यासी बनकर घर-बार से मुक्त होकर आर्य समाज का कार्य करने लगे। आपके सुपुत्र श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री जो आज भी जीवित हैं वह समाज व राजनीति से सदा जुड़े रहे। वेदव्रत वानप्रस्थी के रूप में ही आप हैदराबाद के आन्दोलन मे जो १९३८ मे किया गया था, में सत्याग्रह के संचालन मे प्रमुख थे सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी रहे संन्यासी बनने पर आप स्वामी अभेदानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आप अन्तिम समय में भारत से बाहर मारीशस देश मे प्रचारार्थ गए। कई वर्ष रहने पर वही आप बीमार हो गए। धर्म प्रचार में देश धर्म की गौरव गरिमा को प्रसारित किया।

जीवन का अन्त—श्री स्वामी जी का अवसान बीमारी के कारण ही हुआ मारीशस की आर्य जनता ने उन्हें स्वास्थ्य लाभ दिलाने का भरसक प्रयास किया पर वह जीवन दायक सिद्ध न हुए और अन्त में वही हुआ जो प्रभु की लीला का दिग्दर्शन होता है आपका अवसान मारीशस में ही हुआ।

मौरीशस के आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित ने सार्वदेशिक सभा से पूछा कि स्वामी जी की अर्थी (शव) को भारत भिजवाने की व्यवस्था करें या जैसा आदेश हो। सार्वदेशिक सभा के आदेश पर पूज्य स्वामी जी का पार्थिव शरीर मारीशस मे ही "भस्मातं शरीरम्" अग्नि को समर्पित कर जीवन अध्याय समाप्त किया।

ऐसे वीतराग तपस्वी विद्वान नेता की शती बस्ती जनपद के आर्यो ने मनाकर अपने दायित्व की पूर्ति की।

आर्यसमाज को अपने नेतृत्व में सबल सक्षम होकर जयन्ती मनानी चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ी जान सके कि हम किनके सहारे आगे बढ़ रहे हैं। बस्ती से जो व्यक्ति सभा में आए थे वह बधाई के पात्र हैं। हमें उनसे यह शिक्षा लेनी चाहिए। यह कार्य सभा दिल्ली व प्रान्तीय सभा बिहार को उच्च स्तर पर मनाना चाहिए था।

पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी स्वर्गवासी हो गये परन्तु अपने जीवन की जो स्मृतियां छोड़ गए हैं उनसे हमे प्रेरणा लेनी है जिससे हम आगे बढ़ सकें।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा —

नारी जागृति निमित्त एक मास के कार्य-क्रम का वृतान्त

(१७-१२-९४ से १५-१-९५)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ५-३-९५ के अंक में पृष्ठ ९ पर छपे "अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ की गतिविधियां" के शीर्षक से गतिविधि जारी रखते हुए अब मैं राजस्थान के कुशलगढ़ (बांसवाड़ा) में २२-१२-९४ से २५-१२-९४ तक हुए कार्यक्रम का विवरण पाठकों की सूचनार्थ दे रहा हूं।

दिनांक २३-१२-९४ की प्रातः स्व० श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री का जन्म दिन महर्षि दयानन्द सेवाश्रम कुशलगढ़ (राजस्थान) में मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया तथा बस्ती में रह रहे सब हरिजन भाई-बहनों को आमन्त्रित करके वैदिक मान्यताओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यज्ञोपवीत धारण कराया गया। श्रीमती प्रेमलता जी ने सविस्तार यज्ञोपवीत धारण करने का अभिप्राय समझाया, जिसे सबने ध्यान पूर्वक सुनकर वैदिक आदर्शों के पालन का वचन दिया। सभी हरिजन पुरुष व देवियां यज्ञ में भाग लेकर भाव-विभोर हो उठे और अपने को धन्य मानते हुए यज्ञ शेष (प्रसाद) का वितरण भी स्वय अपने कर कमलों द्वारा किया। यह सिलसिला लगातार तीन दिन तक चलता रहा और हरिजन बस्ती मे प्रसन्नता व उत्साह का वातावरण बना रहा। श्रीमती प्रेमलता जी अपने सहयोगियों सहित हरिजनों की बस्तियों के घर-घर में गई जिससे सब भाई-बहिन अति हर्षित हुए और आर्य समाज के कार्यों की सराहना करने लगे। इस प्रकार प्रेम का वातावरण बना रहा।

दिनाक २५-१२-९४ को मध्याह्न उसी हरिजन बस्ती के लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में शोभा यात्रा में भाग लेकर आयोजन को सफल बनाया। नवयुवक वर्ग ने, रानी बाग आर्य समाज दिल्ली मे प्रति वर्ष मई में लगने वाले शिविर (वैचारिक क्रान्ति शिविर) में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें १९९५ में आयोजित होने वाले शिविर के लिए आमन्त्रित किया गया। सब बन्धु वर्ग इस अलगाव वाली स्थिति को समाप्त करने के प्रयास पर अति प्रभावित व प्रसन्न हुए। आर्य सज्जनों का यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि इस प्रकार के प्रयासों को तन-मन-धन से पोषित करें और युग निर्माता जगदगुरु दयानन्द के ऋण को उतारने में भागीदार बनें।

२६-१२-९५ को दिल्ली से गये संघ के अधिकारियों को आश्रमवासियों व बस्ती वासी हरिजन बन्धुओं ने "महर्षि दयानन्द के जय-घोष के साथ भावभीनी विदाई दी। कार्यकर्ता दल इसी सायं अगले कार्यक्रम के लिए ग्राम भामल पहुंचे, जिसका विवरण आगामी लेख में देने का प्रयत्न करूंगा।

—वेदव्रत महता महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, दिल्ली

सुख और शान्ति के लिए 'स्व' का विस्तार करें

— डा० कृष्ण लाल आचार्य संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

मनुष्य जीवन मे जिस वस्तु की सबसे अधिक अभिलाषा करता है वह है सुख और शान्ति। परन्तु यह सुख है क्या ? जिसको हम सुख समझते हैं वह इन्द्रियों का सुख है और वह चिर स्थाई नही हो सकता। इसीलिए देखने में आता है कि भौतिक सुख-सुविधाएं होने पर भी मनुष्य को शाति नहीं मिलती वह शान्ति के लिए उद्विग्न रहता है और भटकता है। वह भौतिक सुख होने पर भी कही कुछ कमी का अनुभव करता है और यदि उसे थोडा कष्ट हो तो वह यह समझने लगता है कि इस संसार मे मुझसे अधिक दुखी और कोई नहीं है। इसीलिए गीता मे कहा गया है कि इन्द्रिया जिन सुखों और दुखो का अनुभव करती हैं, वे आने और जाने वाले हैं और अस्थायी हैं। और इसीलिये मनुष्य को उन्हे सहन करना चाहिए। उनसे प्रभावित होकर बहुत प्रसन्न या बहुत निराश नही होना चाहिए। वास्तविक शान्ति और सुख या आनन्द इन्द्रियो से परे की वस्तु है। वह मनुष्य अपने अन्तर में ही अनुभव करता है।

यह स्थिति केवल तभी प्राप्त होती है जब हम अपने "स्व" का विस्तार कर लेते है। अर्थात जब हम अपनी और दूसरो की आत्मा में अन्तर नही करते, जब हम यह समझ लेते हैं कि जो मेरी आत्मा है वही दूसरे की आत्मा है। जैसे मुझे दु.ख का अनुभव होता है वैसे ही दूसरे को भी दु.ख का अनुभव होता है। सुख में जैसी प्रसन्नता मुझे मिलती है वैसी ही दूसरे को मिलती है। क्यो न मैं अपना विस्तार कर लूं। क्यो न मैं यह समझूं कि मेरे समान या मुझसे अधिक दु.खी लोग इस संसार मे बहुत से हैं।

इस प्रकार यदि मैं अपने सुखो को बांटता हूं और दूसरों के दु.खों में भागीदार बनता हूं तो मुझे सबमें एक अन्तरात्मा का अनुभव हो सकता है और अपने दु.खो से मुक्त होकर मैं शान्ति की ओर अग्रसर हो सकता हू। स्वामी दयानन्द ने, स्वामी विवेकानन्द ने और अन्य महान पुरुषो ने यदि अपने जीवन मे शान्ति का अनुभव किया तो उसका मूल कारण यही था कि उन्होंने "स्व" को अपने तक सीमित न करके उसका विस्तार किया था। और यह समझा था कि प्रत्येक मनुष्य मे ही नही अपितु प्रत्येक प्राणी मे एक ही अन्तरात्मा निवास करता है।

वास्तव में अन्तरात्मा एक ही है। और वह किसी सुख या दु.ख से प्रभावित नही होता। उसके विषय मे "कठोपनिषद" मे कहा गया है—

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षु र्न लिप्यते चाक्षुर्वैर्बाह्यदोषैः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोक दु.खेन बाह्य।

सूर्य सारे ससार का नेत्र है। सूर्य का प्रकाश न हो तो हम कुछ भी नही देख सकते। उसी से सब प्राणियो की क्रियाएं संचालित होती हैं। यहा सब प्राणियो में स्थित एक अन्तरात्मा की उपमा सूर्य से देकर स्पष्ट किया गया है कि भिन्न भिन्न प्राणियो द्वारा अपनी अपनी दृष्टि से देखे जाने पर कितने ही युगो से अरबों खरबो प्राणियो की आंखो से सूर्य के प्रकाश मे कोई अन्तर नही पड़ता। वह इतने प्राणियो द्वारा देखे जाने से प्रभावित नही होता। सूर्य एक है और जिस प्रकार युगो पहले चमकता था उसी प्रकार आज भी अपार ऊर्जा का स्रोत बनकर चमक रहा है। वह चमक रहा है चारो दिशाओ मे, पर्वतो पर, घाटियो मे, वनो उपवनो मे, नगरो मे, ग्रामो मे, अट्टालिकाओ पर, झोंपडियो पर—सब स्थानो पर वह चमक रहा है। उसी प्रकार सब प्राणियो के भीतर बसा यह अन्तरात्मा निर्विकार रूप से एक ही था. एक ही है और एक ही रहेगा। प्राणियो की क्रियाएं किसी प्रकार की अथवा कितनी भी दूषित क्यो न हो वह अन्तरात्मा किसी से प्रभावित नही होता। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि वह ससार के सभी दु.खो से बाहर अथवा ऊपर है और अपनी विकार रहित स्थिति मे विद्यमान है। वही सर्वभूतान्तरात्मा निर्विकार, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप है। वही सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है और छोटे से छोटे प्राणी में भी अन्तर्यामी होकर रहता है। इसीलिए उसको 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' कहा गया है वह अणु से भी छोटा है और बड़े से भी बड़ा है। इसीलिए यह भी कहा गया है कि वह इस सब संसार के कण कण के भीतर है और वह इस सबके बाहर भी व्याप्त है।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः

ऐसे सर्वभूतान्तरात्मा परमेश्वर को कोई अपनी सीमित इन्द्रियो द्वारा कैसे ग्रहण कर सकता है। जो व्यक्ति केवल एक स्थान या एक पदार्थ में करके उसे देखते हैं वे उस स्थान या पदार्थ से बाहर उसकी निस्सीमता को भूल जाते हैं। वे उसका अनुभव प्रतिक्षण प्रत्येक स्थान पर कैसे कर सकते हैं। यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि सब प्राणियो का अन्तरात्मा एक ही है और वह किसी बात से प्रभावित नही होता। वह सदा अपनी अपरिवर्तित, विकार रहित स्थिति में रहता है। वस्तुत सुख दु.ख तो जीव अपने पूर्व जन्म के कार्यो के अनुसार प्राप्त करता है।

इस सब ज्ञान के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम प्रत्येक प्राणी मे उस एक सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी अन्तरात्मा का अनुभव करते हैं तो हमारे लिए "स्व" का विस्तार करना बहुत सरल हो जाता है। फिर हम जिसकी सहायता करते हैं, जिसके सुख-दु ख मे भागीदार होते हैं उससे अपने किये के उसी प्रकार के बदले की कामना नही रखते। मा जब अपनी सन्तान के लिए अनेको कष्ट झेलती है तो वह उसे अपना अभिन्न और अपना आप समझ कर वह सब करती है। उस समय बदले मे उससे प्राप्त होने वाले सुख की भावना से प्रेरित होकर वह सब कुछ नही करती। अपितु जैसे कोई अपने शरीर के किसी अंग के लिए सब कुछ करता है उसी प्रकार वह मां भी अपनी सन्तति के लिए सब कुछ करती है। मां और सन्तति के इस दृष्टान्त का थोड़ा और विस्तार करें तो पिता और सन्तान, भाई बहिन आदि को ले सकते हैं जहा मनुष्य उन सम्बन्धो को स्व समझकर उनके लिए सब कुछ करता है। इसी का और विस्तार करें तो यह भावना अपने निकट पड़ोसी तक पहुचती है और उससे आगे अपने मोहल्ले तथा अपने गांव के प्रत्येक बन्धु तक इस भावना का विस्तार हो जाता है। और जिस व्यक्ति ने अपने स्व का इससे भी अधिक विस्तार कर लिया है उसके लिए ससार के परिचित--अपरिचित प्रत्येक प्राणी का सहयोग करना ही धर्म हो जाता है।

उस व्यक्ति के लिए, अपने आप के सीमित स्व के लिए कोई परिस्थिति कष्टदायक नही रह जाती क्योकि वह अपने से अधिक कष्ट मे पड़े हुए दूसरे व्यक्तियो के कष्ट को जानता है, अनुभव करता है। उसका स्व इतना विस्तृत हो जाता है कि क्षुद्र स्व उसमें वैसे ही विलीन हो जाता है जैसे सागर मे एक बूंद। तब सभी अपने हो जाते हैं। यही "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना है।

कभी हम अपने स्व का विस्तार करते हुए अन्तरात्मा को एक समझते हुए किसी की सहायता करके तो देखें, उसमें जो सन्तोष की अनुभूति होगी, उसकी कोई तुलना नही है। उसमे हमे वह सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त होगा। जो अपने लिए, अपने शरीर के लिए कुछ करने पर होता है। मा सन्तान के लिए कुछ भी करती है तो उसमे उसे सुख होता है—ऐसा सुख जो क्षणिक नही है।

स्व का विस्तार करें तो कही कोई भेद रह ही नही जाता। गीता मे इसी प्रकार के दान को सात्विक बताया गया है जिसमे प्रत्युपकार या प्रतिदान प्राप्त करने की भावना नही रहती। परन्तु इस दान मे भी (स्थान), काल (उचित समय) और पात्र (प्राप्त करने वालो की योग्यता और चरित्र) के प्रति गीता सावधान करती है—

दातव्यमिति यद्दान दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद् दान सात्विकं स्मृतम्॥

मा तो भावुकता और ममता के कारण सुपात्र—कुपात्र का विचार नही कर पाती, किन्तु सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्व का विस्तार करते हुए ही यह विचार आवश्यक है क्योंकि इसका फल समाज के असंख्य लोगों पर पड़ता है। वहां पर यह सोचना भी आवश्यक है कि हम स्व का विस्तार सज्जनो तक करते हैं या दुर्जनों तक। जिसको हम उसके कार्यो और आचरण से दुर्जन के रूप में जानते हैं उसकी सहायता केवल दुर्जनता, सामाजिक अन्याय और

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्रद्धाञ्जलि

डा० सरोज दीक्षा विद्यालंकार

महर्षि दयानन्द जीवन-दर्शन के जीवन-खण्ड के पृ० ४७ पर सप्ताष्टक और सत्याष्टक का वर्णन किया गया है, सत्याष्टक के अन्तिम तीन बिन्दुओं को उद्धृत करती हूं—

अ - विचार, वितर्क, वैराग्य और पराविद्या का अभ्यास, संन्यास ग्रहण करके सब कर्मो के फल की इच्छा का त्याग।

ब—जन्म, मरण, हर्ष, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह और संग दोष ये सब अनर्थकारी हैं अतः इनका त्याग शुभ है।

स—अविद्या. अस्मिता, राग-द्वेष, अभिनिवेश रूप क्लेशों में निवृति पाकर, पंच महाभूतों से अतीत होकर मोक्ष के स्वरूप और स्वराज्य को प्राप्त करना परम लक्ष्य है।

इस विज्ञापन के प्रकाशित होते ही कानपुर के सभी नागरिकों में सनसनी फैल गई थी।

हम आर्यसमाज के छोटे-बड़े कार्यकर्ता स्वामी जी के ग्रन्थों को उनके जीवन प्रसंगों को अनेक बार पढ़ते हैं पर क्या पढ़ लेना ही काफी है, जीवन में लाने के लिए किसी और को कहेंगे ? आज लगभग बीस-पच्चीस दिनों के अन्तर्द्वन्द के बाद लेखनी उठायी है।

स्वामी आनन्दबोध जी (श्री रामगोपाल शालवाले) का जीवन व्यक्तिगत जीवन नही था। वे आर्यसमाज के बहुत बड़े काल खण्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी भी मत या सम्प्रदाय के सिद्धान्त कितने ही अच्छे हों यदि उनको ठीक से क्रियान्वित नहीं किया जाता या करवाया जाता तो वे किसी अच्छे परिणाम को नहीं ला सकते, किसी अच्छे सामाजिक परिवर्तन को भी नहीं ला सकते।

दिल्ली में आने के बाद पच्चीस वर्षो से मैंने श्री रामगोपाल शालवाले को स्वामी आनन्दबोध बनते देखा। कभी दूर से, कभी पास से देखा। वे गुणों के पारखी थे। कुछ को चुन-चुन कर उन्होंने अपने आस-पास कृपापात्र रखा, कुछ के प्रति उदासीनता और उपेक्षा भाव भी बरता, लेकिन उनके इस कार्य से आर्य समाज का काम बढ़ा ही है। उन्होने उपेक्षित मशालों में अपना कार्यक्षेत्र स्वयं ढूंढ़ा है। उन्हें अधिक आकाश और अवकाश मिला है पर जो वायु उन्हें जलने को मिली है उसमे कार्बनडाइआक्साइड के झोके आसफअली रोड से आते रहे हैं। इस प्रकार स्वामी जी ने अनगिनत कार्यकर्त्ताओं को आत्मदीप बनने का सुअवसर दिया है।

स्वामी जी अक्सर अपने जेल जीवन का एक रोचक एवं प्रेरक संस्मरण सुनाया करते थे कि वे जेल जीवन में दौड़ नही लगा सकते थे। वे सन्तुष्टि लायक व्यायाम करने के बाद एक ही स्थान पर यथेष्ठ समय कूदते रहते थे। अतः आज पता नहो क्यों यह उपमा उनके पूरे जीवन पर सटीक सी दिखती है।

मुझे पाठक क्षमा करेंगे स्वामी जी मेरे पिता से भी बड़े थे। मैं स्वामी जी की शान के खिलाफ एक शब्द भी नही कहना चाहती। पुत्रियों को प्रभु ने एक अलग ही हृदय दिया है।

आर्यसमाज के सगठन में यह सक्रान्ति काल है यदि इस समय भी हम नही चेते तो महति विनष्टि होगी, आर्यसमाज का बिखराव इस समय चरम सीमा पर है, घासपार्टी, मासपार्टी, वेष पार्टी, आर्यसमाज से निकलकर पौराणिकों को सन्तुष्ट करते पुरोहित, क्या-क्या कहा जाए सचमुच गहरायी से सोचें तो सिर चकराने लगता है। यदि आर्यसमाज के पास इस समय त्यागी, तपस्वी, क्रान्तदर्शी व्यक्ति न दिखता हो तो कुछ पदों को कुछ समय के लिए रिक्त छोड़ा जाए।

एक समिति हो जो आर्यसमाज के सभी प्रकारों और विधाओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयत्न करे। स्वामी आनन्दबोध जी ने सार्वजनिक भाषणों में व्यक्तिगत वार्ता में अनेक बार अपनी उपलब्धियों में गिनाया है कि उनसे पहले सार्वदेशिक के कोष में कितना पैसा था अब संख्या तो मुझे मालूम नहीं। उन्होंने अपने द्वारा जुटाया गया असंख्य सुरक्षित-निधियों का उल्लेख किया है। पर हम सभी लोग अपने भाषणों में कहते हैं सौ हाथों से धन कमाओ, हजार हाथों से बांटो (अर्थात् शुभ कर्मो में लगाओ) हे इन्द्र ! तू हमारे धन को पैना बना। निश्चित रूप से बैंक में धन रखने से बढ़ता नहीं, मुद्रास्फीति से घटता ही है

जयप्रकाश नारायण से पहले यदि किसी ने समग्रक्रांति का सपना देखा था तो वह महर्षि दयानन्द ने। पर उसको साकार कौन करेगा? आर्यसमाज के कार्यों और योजनाओं को दूरदर्शिता से बनाना होगा।

देश में चल रहे रचनात्मक कार्यो में आर्य समाज के सिद्धान्तों को मानने वाले व्यक्ति कार्य कर रहे हैं पर वे आर्यसमाज के झण्डे के नीचे नहीं, जो संस्थाएं उनको कार्य में लगाए हुए हैं, वे व्याख्यात ही है और व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। ऐसा, योजना की कमी स्वस्थ नेतृत्व के अभाव में हो रहा है।

स्वामी आनन्दबोध अत्यन्त लोकप्रिय नेता थे। तभी वे इतनी लम्बी अवधि तक आर्यसमाज के सर्वोच्च पद पर आसीन रहे।

कुछ को छोड़कर शेष आर्य समाजों में केवल रविवार को साप्ताहिक सत्संग ही होता है। सप्ताह के शेष ६ दिन आर्य भवन सायं सायं ही करते रहते हैं। कही बच्चे नही, कहीं भण्डारा नहीं, कहीं आतिथ्य सत्कार नही, इसका कटु अनुभव मुझे भी प्राप्त है। पर इसे कहू तो अलग से लेख हो जायेगा।

इन सब स्थितियों पर अभी भी मुझे विचार करने की अपने नेताओं की नीयत नही दिख रही है। क्योकि मूर्धन्य नेताओं के स्वागत पर जो नेताओं ने भाषण दिये हैं उनके विचार ही स्पष्ट नहीं हैं. कृत्य कैसे होगा। हमें नही मतलब—"वसुधैव कुटुम्बकम् से। हमें नही मतलब "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" से हम अल्पसंख्यक होकर माइनोरिटीज की सुविधाएं लेंगे, ऐसा उनका चिन्तन है।

वयोवृद्ध नेताओं से सुना है जब कोई आर्य समाजी न्यायालय में गवाही देता था तो उस पर प्रश्नचिह्न लगने की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती थी। परन्तु आज आर्य समाज प्रत्यक्ष राजनीति में तो नहीं जाना चाहता परन्तु लोगों के दान को अपनी आर्यसमाजी राजनीति के लिए न्यायालय में अवश्य फूंकने में हानि नहीं समझता।

प्रस्तुत लेख में जिन बिन्दुओं पर मैंने अपनी व्यथा व्यक्त की है यह मेरी ही नहीं अनेक कार्यकर्त्ताओं, शुभचिन्तकों और विचारकों की भी है।

यदि हम आर्यसमाज को अनेक योजनाओं से गतिशील बना सकें, सगठन सूक्त को अपना आदर्श सन्देश समझ लें तो न केवल स्वामी आनन्दबोध जी को, बल्कि निकट भूत में जो भी आर्यसमाज के नेता एवं कार्यकर्त्ता दिवंगत हुए हैं उनके प्रति भी हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

७/२, रूपनगर, दिल्ली-११०००७

यज्ञ–वैज्ञानिकों की दृष्टि में

आचार्य डा० सत्यव्रत राजेश

वैदिक ऋषियों ने अपने प्रतिभा-चक्षुओ से वेद के आधार पर जिन जीवन पद्धतियो को खोजा था पहले तो वैज्ञानिको ने उन्हे स्वीकारने में अधिक रूचि नही दिखाई थी किन्तु जब वे थोड़ा-बहुत ध्यान देने लगे तो उनको वे विधियां विज्ञान सम्मत लगी तथा वे उनकी ओर आकृष्ट हुए। यह विश्व का सौभाग्य है। हमें यह मानने में संकोच नहीं होना चाहिए कि प्राचीन ऋषियो जैसी प्रतिभा अब संसार के पास नही है चाहे वह संसार को अपने नूतन आविष्कारो से कितना ही चमत्कृत कर दे। अणुबम मे प्रयुक्त शक्ति को यदि चूल्हे, वाहन, कारखानो आदि के साथ जोड़ा जाता तो विश्व अधिक आत्म-निर्भर, निर्भय तथा सुखी हो सकता था, जबकि अस्त्र के साथ जुड़ी वह शक्ति संहारक तथा अशान्ति को जन्म देने वाली बनी तथा जहा उसका प्रयोग हुआ वही धरती कराही। विज्ञान ने अनेक सुखद आविष्कार भी किए हैं जिनके लिए विश्व उनका ऋणी रहेगा।

आज हम यज्ञ को लेते हैं जिसे होम, हवन आदि भी कहा जाता है। लगभग दो दशाब्दी पूर्व प्रि. भगवान दास जी ने, जो डी ए वी कालेज अम्बाला के प्राचार्य थे, मुझे अपने कालेज तथा सोहन लाल प्रशिक्षण कालेज मे भाषण के लिए बुलाया था। सोहन लाल प्रशिक्षण महा-विद्यालय मे कन्याओ की अधिकता थी अतः उन्होने तो मेरे व्याख्यान को रूचि पूर्वक सुना किन्तु अगले दिन जब यज्ञ के पश्चात डी ए वी कालिज मे मेरा व्याख्यान समाप्त हुआ तो एक युवक, जो वहा व्याख्याता थे, मेरे पास आए और पूछने लगे कि यदि आप बुरा न मानें तो मैं कुछ पूछना चाहूगा। मेरी स्वीकृति मिलने पर उन्होने कहा कि मैं तो आर्य समाजी परिवार से सम्बन्ध रखने के कारण यज्ञादि को मानता हू किन्तु मेरे साथी यह कहते हैं कि आर्य समाज की अन्य बातें तो ठीक लगती हैं किन्तु हवन के नाम से घी फूकना ठीक नही है। इससे तो अच्छा है कि किसी गरीब को खाने को दे दिया जाए।

मैंने उनसे पूछा कि आप क्या विषय पढ़ाते हैं तो उन्होने विज्ञान बतलाया। मैंने पूछा कि क्या विज्ञान किसी वस्तु के, जो भाव रूप मे हो, अस्तित्व की समाप्ति स्वीकार करता है? वस्तु का कार्य कारण भाव तो माना जा सकता है। पहले वस्तु कार्य रूप में हो तथा फिर वह कारण रूप में होने पर आखो से दिखाई न पड़े किन्तु यह नहीं हो सकता कि वस्तु पहले हो और फिर उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। उन्होने भी इसे स्वीकार किया। संस्कृत मे भी नष्ट होने का अर्थ अदर्शन होना अर्थात आखो के सामने न रहना हैं। णश् धातु, जिससे प्रत्यय लग कर नष्ट शब्द बना है, अदर्शन अर्थ में ही आती है। दूसरे, मैंने उनसे पूछा कि यदि उनके अनुसार किसी को घी खाने का दे दिया जाए और उसे न पचे तो क्या उससे लाभ होगा? 'नहीं', उन्होने उत्तर दिया। मैंने पूछा कि पचने मे प्रक्रिया क्या होती है? उन्होने कहा कि हजम हो जाता है। मैंने कहा कि यह तो पर्यायवाची वाक्य हुआ, उसमे प्रक्रिया क्या होती है? उनके अनभिज्ञता प्रकट करने पर मैंने बताया आयुर्वेद के विद्वान इस प्रक्रिया को भोजन का जठराग्नि द्वारा फूका जाना बतलाते है। अत वे अग्निमान्द्य (जठराग्नि के मद) होने पर जठराग्नि को तीव्र करने की औषध देते हैं।

वैज्ञानिक नियम भी यही है कि वस्तु ऊर्जा तभी बनती है जब वही फूकी जाए। स्कूटर कार, बस, ट्रक, वायुयान आदि तभी तक दौड़ते है जब तक उनमे ईधन फूंकता रहे। ईंधन फूकने से ऊर्जा बनती है वैसे ही यज्ञ मे फूका घी पर्यावरण के शोधन के लिए ऊर्जा उत्पन्न करता है तथा उससे विश्व मे अनेक रोगो से बचा जा सकता है। व्यक्ति भी घी खाए, उससे भी पचकर ऊर्जा बन कर खाने वाले को शक्तिशाली बनाएगा किन्तु यज्ञ भी अवश्य करना चाहिए जिससे पर्यावरण भी ऊर्जित तथा स्वच्छ बन सके।

उपर्युक्त घटना मैंने दो दशाब्दी पूर्व के वैज्ञानिको की यज्ञविषयक मनोभावना दिखलाने के लिए प्रदर्शित की है। किन्तु मेरे हर्ष का पारावार न रहा जब मैंने चण्डीगढ़ में एक वैज्ञानिक प्राचार्य को वैज्ञानिक आधार पर यज्ञ का समर्थन करते देखा।

उन्होंने यज्ञ को निम्न भागों में विभक्त करके उसका विवेचन किया। मन्त्रोच्चारण, समिधा, यज्ञकुण्ड, घी तथा सामग्री। १–मन्त्रोच्चारण के विषय मे उनका कहना था कि हिंसक लोग जो निरीह पशुओ को मारते है उनकी आह वातावरण को विक्षुब्ध कर देती है। शब्द नष्ट नही होता। वह जैसे हृदयाकाश को विक्षुब्ध करता है, वैसे ही वातावरण को भी विक्षुब्ध करता है। जहा हाहाकार मचा हो वहां सुख से सोया नहीं जा सकता। यही स्थिति वातावरण के साथ भी घटित होती है। सस्वर उच्चरित वेदमन्त्र वातावरण के ध्वनि-प्रदूषण को नष्ट करके उसे विशुद्ध बनाते हैं।

२–समिधा के विषय मे उन्होने बतलाया कि वे प्राय दो प्रकार की होती हैं—कम कार्बन वाली तथा अधिक कार्बन वाली। इनकी पहचान यह है कि जिस मे कीडे शीघ्र लगें उनमे कार्बन डायो आक्साइड कम होती है और जिनमें कीडा देर से लगे उनमे कार्बनडाई आक्साइड अधिक होती है यज्ञ में आम, ढाक, पीपल, बरगद, बेल आदि की समिधाए प्रयुक्त होती हैं। इनमे कीडा शीघ्र लगता है। अतः स्पष्ट है कि इनमे कार्बन कम होती हैं। गैसो मे सार्वाधिक मारक मोनो कार्बन डाई आक्साइड होती है। यह पत्थर के कोयले मे अधिक होती है। इसकी लौ नीली होती है। यह इतनी हानिकारक होती है कि यदि शीत की रात मे पत्थर के कोयलो की अंगीठी अन्दर रखकर सोया जाए तो प्रात शायद कोयले तो जगते मिले किन्तु जिन्होंने अपना शीत मिटाने के लिए कोयले जलाये थे वे कदाचित सदा की नींद सो चुके हो। किन्तु एक ईश्वरीय कृपा है कि यदि इस मारक मोनो कार्बन डाइआक्साइड को खुले मे आक्सीजन मिल जाए तो यह कार्बन के रूप मे परिणत हो जाती है तथा इतनी हानिकारक नही रहती। उपर्युक्त समिधाओं मे मोनो कार्बन डाई आक्साइड तो होती ही नही, कार्बन भी कम मात्रा मे होती है तथा आक्सीजन के अधिक होने के कारण वह नाममात्र की भी हानि नही करती। यज्ञ के पास बैठने वाले रोग मुक्त तो होते देखे गए किसी को कार्बन के कारण मरता नही सुना। भोपाल गैस कांड मे कुछ परिवार यज्ञ के कारण ही मारक गैस से त्राण पा सके थे।

३–यज्ञकुण्ड भी यज्ञ का एक महत्वपूर्ण अंग है। ऋषियो ने उसकी बनावट ऐसी रखी है कि वह नीचे जितना चौडा है ऊपर उससे चार गुणा चौकोर होता है। इस रचना का प्रयोजन है कुण्ड मे अधिक से अधिक ताप उत्पन्न होना। कुण्ड में ताप की जितनी तीव्रता होगी हुत द्रव्य उतना ही तीव्रता से फैलकर पर्यावरण का शोधन करेगा। यज्ञ में समिधाएं फैंकी नही जाती अपितु क्रमश. एक के ऊपर एक करके लगाई जाती हैं। इनमें आक्सीजन के जाने में सहायता होती है। लोहे के यज्ञ कुण्डो मे छेद करने का भी यही प्रयोजन है। यज्ञकुण्ड के ऊपर जो जल के डालने की नाली बनाई जाती है उसका प्रयोजन यह है कि कुण्ड से निकली कार्बन को पानी अपने मे समाहित कर लेता है। कार्बन जल के साथ मिलकर ग्लूकोज का काम करती है। शीतल पेयो मे कार्बन ही तो मिली होती है। सोडा वाटर शरीर को हानि नही पहुचाता अपितु पाचन-क्रिया को ठीक करता है। शेष बची कार्बन वृक्षादि का भोजन बन जाती है।

४–चौथी वस्तु घी है। यह प्रश्न होता है कि थोड़ा सा घी पर्यावरण शोधन या अन्य लाभ कैसे कर सकता है? इस विषय मे यह ज्ञातव्य है कि अग्नि मे डाली घी की एक शीशी वाष्पीकरण होने पर १७०० शीशी बन जाती है वह पर्यावरण मे भर जाता है तथा जहा उसका शोधन करता है वहा हमारे द्वारा नासिका द्वारा पिया जाता है। विज्ञजन कहते हैं कि नाक से पिया जल दूध का काम करता है, दूध घी का तथा घी अमृत का। अत यज्ञ में डाला घी कितना लाभप्रद हो जाता है यह इससे स्पष्ट है। जिन रोगियो को डाक्टर घी न खाने की सम्मति देते हैं तथा जिन्हें खाने पर ही घी हानि पहुचाता है वे भी यज्ञविधि से घृत का भरपूर सेवन कर सकते हैं एवं घी उन्हें किन्चित भी हानि नहीं करता।

५–पांचवी वस्तु सामग्री है। सामग्री में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रार्थना और जीवन

पं० धर्मवीर आर्य भंडारी

प्रार्थना प्राण है। प्रार्थना में अनन्त दिव्य शक्तियां निहित है। प्रार्थना में अनन्त बल है। प्रार्थना से मनुष्य निहाल हो जाता है। विवेक और मेधाबुद्धि प्राप्त होती है। प्रार्थना से मनुष्य पापों से बचकर अपना जीवन पवित्र बनाकर अक्षय सुखों को प्राप्त करने में सफलीभूत हो जाता है।

प्रार्थना करने से जीवन प्रार्थनीय अभिनन्दनीय,पूजनीय वन्दनीय, दर्शनीय तथा आत्मिक उन्नति तो होती है। मनुष्य को मनोवांछित फल भी प्राप्त होता है।

प्रार्थना करने वाले महापुरुष का सुयश कीर्ति गुणगान विश्व गगन में गूंज जाता है। ऐसे महापुरुष के दर्शन करने से बड़े-बड़े पापी भी पवित्र आत्मा बन जाते हैं।

प्रार्थना करने वाले महापुरुष की वाणी में अमोघ शक्ति आ जाती है। उसकी दिव्य भावना, दिव्य दृष्टि पवित्र हो जाती है। जिसके आशीर्वाद व स्नेह से हृदय पुलकित हो जाता है। रोम-रोम में प्रभु प्रेम का खुमार छा जाता है। आओ आज हम यज्ञ वेदी पर बैठकर परमात्मा से वार्त्तालाप करना सीख ले। प्रार्थना करने वाला व्यक्ति समाधि अवस्था में समाहित होकर परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है। परमात्मा की आज्ञा के पालन करने का स्वभाव बना लेता है। प्रार्थना करने वाला विश्व प्रेम के अनुपम रग में रग जाता है। प्रार्थना से असाध्य रोग दु.ख दर्द व दरिद्रता दूर हो जाते हैं। प्रार्थना में बहुत बड़ी विलक्षण शक्ति हैं। जिसका वर्णन लेखनी नहीं कर सकती।

प्रार्थना करने से मनुष्य आनन्द के महासागर में गोता लगाकर विचारों के अलभ्य रत्न कोष को प्राप्त कर लेता है। स्वर्णिम जीवन की अनुपम झंकार उसके रोम-रोम से प्रवाहित होने लगती है। प्रार्थना की महिमा का बखान किन शब्दों में किया जावे। इसकी महत्ता के मूल्य को बतलाना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

बड़े-बड़े तत्वदर्शी योगियों का दिव्य दर्शन करने के लिए हजारों मील दूर से देश व विदेशों के श्रद्धालुजन हजारों रुपये खर्च करके अपने बहुमूल्य समय को लगाकर श्रद्धा सहित आते हैं। यदि देखा जाय तो जिनके दर्शन के लिए हम लालायित होते हैं। वे भी पंच-तत्वों के पुतले होते हैं। उनमें विशेषता केवल यह होती है कि वे नियमित रूप से परमात्मा के चरण कमल में बैठकर दिव्य गुणों को धारण करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करना भोजन और शयन से भी बढ़कर आवश्यक समझते हैं। अध्यात्म उन्नति में विश्व के इतिहास में भारतवर्ष का नाम सर्वोपरि है प्रार्थना के ही प्रताप से मनुष्य इसी जीवन में मुमुक्षु बनकर मोक्ष सुखों का आनन्द अनुभव करने लगता है। ऐ विश्व के तनधारियों ! आओ प्रार्थना के महत्व को समझो। अपने जीवन को प्रार्थनीय निर्मल बनाओ प्रार्थना उपासना ध्यान आसन और समाधि साक्षात्कार के लिए अपना समय निकालो। जीवन का सूर्य प्रतिक्षण अस्ताचल की ओर जा रहा है। आओ इन्हीं क्षणों में हम प्रभु की प्रार्थना करके बन्धनों से मुक्त हो जावे। विश्व के प्राणी मात्र की सेवा में लग जावे। इसी में स्वर्णिम सुखों कीअनुभूति हमें प्राप्त होगी।

प्रार्थना करने वाले साधकों को निम्न बातों का ध्यान आवश्यक है।

१—परमात्मा की प्रार्थना हम सच्चे हृदय से करें वह अवश्य सुनेगा।
२—प्रार्थना करने वाले साधक को आहार-शुद्धि का पूर्ण ध्यान रखना होगा।
३—प्रतिदिन सोते-जागते उठते बैठते मन को शुद्ध और पवित्र रखना होगा।
४—अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ के कार्यों में नहीं गवाना होगा।
५—मांस-शराब, व्यभिचार से मृत्यु के समान बचना होगा।
६—पराई स्त्रियों को माता-बहिन, पुत्री की भावना से देखने का स्वभाव बनाना होगा।
७—लक्ष्य सिद्धि के लिए घोर परिश्रम और पुरुषार्थ करना होगा।
८ अपने मन मे शुभ सकल्पों को ही स्थान देना होगा।
९—आश्रम मर्यादा का पालन करना होगा।
१०—नित्य वेद का स्वाध्याय श्रवण मनन करना होगा।
११—यज्ञ के साथ-साथ प्रभु से प्रार्थना करने पर बड़ी शान्ति मिलेगी तथा मन में अपार आनन्द की अनुभूति होगी। इसलिए यज्ञ के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना के मर्म को जो जन जान जाते हैं वे अपना सर्वस्व लुटाकर भी प्रार्थना का त्याग कभी नहीं करते हैं। वे प्रार्थना के द्वारा अपना जीवन धन्य बना लेते हैं।

आओ आज से हम भी प्रार्थना में अपने मन को लगाना सीख जाये। इसी मे ही अपना और विश्व का कल्याण निहित है। सामूहिक प्रार्थना मे वह दिव्य शक्ति है कि विश्व की काया-पलट सकती है। प्रभु प्रार्थना सर्व सुखों का मूल है। विश्व कल्याण के लिए रोम-रोम से प्रतिक्षण मृदु झकार उठे। विश्व प्रेम की ज्योति जगे। जीवन के भाग्य जगे। यह प्रार्थना का अमृत आनन्द का प्रकाश पुंज है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

यज्ञ—वैज्ञानिकों की दृष्टि में

(पृष्ठ ५ का शेष)

पुष्टिकारक, मिष्ट, सुगन्धित तथा रोगनाशक। ये पर्यावरण में पुष्टि, माधुर्य, सुगन्ध भरते तथा उसे रोग के कीटाणुओ से रहित करते हैं। इससे सब प्राणियो के शरीर तथा अन्न, जल आदि पुष्ट, मधुर, सुगन्धित तथा रोग-रहित होते हैं। यही ससार मे सुख फैलाने का मार्ग है। रोगनाश के लिए यज्ञ चिकित्सा अत्यन्त उपयोगी है। यज्ञ मे डालने से घी की भांति औषधि भी अनेक गुणा लाभ करती है। चिकित्सा पद्धति मे इंजेक्शन को सर्व. लाभकारी माना जाता है क्योंकि वह तुरन्त औषधि को रक्त मे मिला देता है। खायी औषधि का रस पचने पर रक्त मे मिलकर लाभ करता है। इंजेक्शन के लगने मे कष्ट तो होता ही है किन्तु कभी-कभी तो वह पक कर बहुत अधिक कष्ट का कारण बन जाता है। इसके विपरीत यज्ञ से निकला वाष्प श्वास के साथ तुरन्त रक्त मे मिल कर वही लाभ पहुचाता है। जो सूचिकायन्त्र से होता है तथा कष्ट होने का तो प्रश्न ही नही उठता। क्योंकि शिराएं शरीर में काम आने पर मैले हुए रक्त को हृदय मे ल.ती हैं। श्वांस लेने पर उसकी ओषजन रक्त में मिल जाती है जिससे रक्त का रंग चटकीला लाल हो जाता है तथा रक्त की कार्बन प्रश्वास के द्वारा बाहर आ जाती है। सामग्री मे अनेक ओषधतत्व होते हैं। यज्ञभावित वायु श्वास द्वारा रक्त मे मिलकर अनेक रोगों का शमन करती है। विदेश मे इसके अनेक परीक्षण हुए हैं।

इस प्रकार यज्ञ एक सुखद जीवनीय पद्धति है जिससे व्यक्ति, समाज तथा पूर्ण पर्यावरण प्रभावित होकर सुख, आरोग्य तथा बल आदि की प्राप्ति होती है।

और में सोच रहा था दो शताब्दी पूर्व के तथा वर्तमानकाल के वैज्ञानिकों के चिन्तन के विषय मे क्यो प्रसन्न हो रहा था देव दयानन्द द्वारा प्रदर्शित ऋषि-मुनियो की यज्ञपद्धति की वैज्ञानिक व्याख्या सुनकर, जिसमें ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना की व्याख्या भी सम्मिलित करनी थी।

दयानन्द नगरी, ज्वालापुर (हरिद्वार)

विश्व भ्रातृत्व का वैदिक आदर्श

* डा० विनोदचन्द्र विद्यालंकार, नैनीताल

वेदों में स्थान-स्थान पर मनुष्यों को शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई है और उनमें संग्राम के हृदय को कंपा देने वाले वर्णन मिलते हैं, जिस कारण पाठक पर यह प्रभाव पड़ता है कि वेद परस्पर कलह और युद्ध की शिक्षा देने वाली पुस्तक है। किन्तु वेदों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि वेदों की वास्तविक प्रेरणा विश्व में शान्ति स्थापित करने और परस्पर भ्रातृत्व-भावना को बढ़ावा देने की है। यही कारण है कि वेदों के अंक में पली भारतीय संस्कृति सदा से विश्वशान्ति की उपासक रही है।

वेद की भावना है कि व्यक्तियों में, समाज में और राष्ट्रों के बीच सर्वत्र भ्रातृभाव तथा मैत्रीभाव का उदय हो। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति द्वेष की भावना न रखे। वेद सर्वभूतमैत्री का सन्देश देता हुआ कहता है:—

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि,
भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि,
भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥

यजु० ३६, १८

"सब व्यक्ति मुझे मित्र की दृष्टि से देखें, मैं भी सब व्यक्तियों को मित्र-दृष्टि से देखूं, एवं समाज में हम सब मित्र-दृष्टि रखें।

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्।
इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि॥

अथर्व० ६, ४०, ३

'दक्षिण दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, उत्तर दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, पश्चिम दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो, पूर्व दिशा में हमारा कोई शत्रु न हो।"

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि व.।

"हे मनुष्यो! तुम सहृदय और अनुकूल मन वाले बनो, परस्पर द्वेष न करो, एक दूसरे पर ऐसी प्रीति रखो जैसे गौ अपने नवजात बछड़े के प्रति रखती है।"

वेद की दृष्टि में कोई मनुष्य चाहे किसी भी राष्ट्र का वासी हो, उसे सारी भूमि को अपनी माता समझना होता है—

"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः" ॥ अथर्व० १२, १, १२
"नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्यै" ॥ यजु० ९, २२

इस पृथिवी पर सुख और शान्ति कैसे रह सकती है, इसके उपाय बताते हुए अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में कहा गया है—

"सत्यं बृहद् ऋतम् उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ. पृथिवीं धारयन्ति" अर्थात् सदाचरण, सत्य ज्ञान, व्रतग्रहण तप, आस्तिकता और यज्ञ-भावना के होने पर ही यह धरती धृत रह सकती है। अन्यथा वह नित्य कलह और अशान्ति के थपेड़ों से विध्वस्त होती रहेगी। पृथिवीधारक इन गुणों में एक गुण यज्ञभावना है, यज्ञभावना का अभिप्राय है पारस्परिक सहयोग की भावना। जैसे शरीर के एक अंग का दूसरे अंग के साथ सहयोग रहता है तभी शरीर चलता है, वैसे ही पृथिवी पर एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ सहयोग रहना चाहिए।

भूमि की पश्चिम एवं पूर्व उत्तर दक्षिण किसी भी दिशा में हम चले जाएं वहां हमारा अपमान न हो, धक्के न मिलें, ऐसी पारस्परिक प्रीति की भावना राष्ट्रों में होनी चाहिए। साथ ही यह भूमि सबके लिए मंगलमयी होनी चाहिए :

मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम॥

अथर्व० १२, १, ३२

भूमि पर विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले और विभिन्न धर्मों को मानने वाले भी लोगों को आपस में एक घर के समान भ्रातृभाव से रहना चाहिए :

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अथर्व० १२, १, ४५

आज अवस्था यह है कि प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचा दिखाना चाहता है, शस्त्रास्त्रों की होड़ रही है। ऐसे-ऐसे संहारक अणुबमों का अविष्कार हुआ है कि एक ही बम से देश के देश नष्ट हो जाएं। परन्तु वेद की दृष्टि में यह स्थिति वांछनीय नहीं है। वेद कहता है :

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्॥ यजु० १६, ३

हे रुद्र! शक्तिधर! तुझे तो गिरिशन्त और गिरित्र अर्थात् लोक-रक्षक होना चाहिए : "गिरीषु राष्ट्रेषु शं तनोति इति गिरिशन्तः। गिरीन राष्ट्राणि त्रायते इति गिरित्रः।" तूने अपनी शक्ति के मद में आकर फेंकने के लिए जो इषु—जो ऐटम शक्ति—हाथ में पकड़ी हुई है उसे शिव बना. उसका संसार के हित के लिए उपयोग कर। उससे तू निरीह पुरुषों का और जगत् का संहार मत कर।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ यजु० १६, ९

"तूने जो धनुष की दोनों कोटियों पर डोरी चढ़ाई हुई है उसे खोल दे, और चलाने के लिए हाथ मे जो बाण पकड़े हुए हैं उन्हें रख दे—अर्थात् तूने जो युद्ध की तैयारी कर ली है उससे उपरत हो जा।"

आज जब एक देश दूसरे देश की सीमा में घुसने तथा उस पर आक्रमण करने की बात सोच रहा है, इस वैदिक सन्देश के प्रचार-प्रसार की नितान्त आवश्यकता है। परस्पर विद्वेष की भावना से भरे हुए राष्ट्रों को एक दूसरे के प्रति भ्रातृभाव का हाथ बढ़ाते हुए कहना चाहिए।

इदमुत् श्रेयो अवसानमागाम्, शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु, न वै त्वा द्विष्मः अभयं नो अस्तु॥

आओ आज हम परस्पर गले मिल लें। अब तक जो कुछ ईर्ष्या, द्वेष, कलह, विध्वंस हमने किया उसकी परम्परा को समाप्त कर दें। अब तक भूमि में, आकाश में, समुद्र मे कहीं भी जाते हुए हमारे मनों में एक भय और सन्देह विद्यमान रहता था कि कहीं यहां शत्रु की सुरंगें न बिछी हों, कहीं शत्रु की पनडुब्बियां हमारे जलपोत को नष्ट न कर दें, कहीं शत्रु के हवाई जहाज हमारे ऊपर बम वर्षा न कर दें। पर आज से इस प्रकार की आशंका का हम अवसान कर दें अपने मन से द्वेष व भय को निकाल दें। द्यावापृथिवी हमारे लिए उद्वेजक न रह कर कल्याणकर हो जाएं।

अव ज्यामिव धन्वनो मन्युं तनोमि ते हृदः।
यथा समनसौ भूत्वा सखायाविव सचावहै॥
सखायाविव सचावहै अव मन्युं तनोमि ते।
अधस्ते अश्मनो मन्युमुपास्यामसि यो गुरुः॥

अथर्व० ६, ४२, १, २

हे भाई! आ आज हम दोनों गले मिल लें। एक दिन मेरे और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विश्व भ्रातृत्व का वैदिक आदर्श

(पृष्ठ ७ का शेष)

तेरे बीच में कलह हो गया था। तब से हम दोनों एक दूसरे के जानी दुश्मन-से बन गए थे। मेरी समृद्धि तुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती थी, और तेरी समृद्धि को मैं नहीं देख सकता था। किन्तु आज मुझे प्रत्यक्ष दीख रहा है कि वह सब हम दोनों की निरी नादानी और कोरा पागलपन था। हा. उस दिन जरा सी बात के कारण हम दोनों लड़ पड़े थे, और तब से आज तक दूसरे से कितने अधिक दूर हो चुके हैं। आ, मेरे भाई, आ, आज से हम दोनों फिर एक-मन हो जाएं।

अरे यह क्या! यद्यपि मेरा क्रोध शान्त हो गया है तो भी तेरी क्रोधाग्नि शान्त नहीं तेरी कमान तनी ही हुई है। किन्तु, प्यारे भाई आज तो मैं निश्चय करके आया हूं कि तुझे अपना करके ही रहूंगा, क्योंकि मैंने साफ-साफ देख लिया है कि इस कलह के कारण हम दोनों ही का सर्वनाश हुआ है। अभी तेरे हृदय की कमान क्रोध की डोरी से तनी हुई है, किन्तु निश्चय है कि मैं अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार द्वारा तेरे हृदय पर चढ़ी इस क्रोध की डोरी को उतार दूंगा। तब तेरा हृदय स्वमेव मेरे प्रति सरल हो जाएगा, जैसे कि धनुष की डोरी उतार डालने पर धनुर्दण्ड सीधा हो जाता है। आ, मेरे भाई! आ, हम दोनों प्रेमपूर्ण मन वाले होकर दो मित्रों की तरह आपस में मिलें।

अभितिष्ठामि ते मन्युं पार्ष्ण्या प्रपदेन च।
यथाऽवशो न वादिषो मम चित्तम् उपायसि॥

अथर्व० ६,४२,३

हे भाई! बीती बातों को भूल जा, आ हम दोनों मित्र होकर एक दूसरे से मिलें। तेरे अन्दर जो मेरे प्रति क्रोध या द्वेष का भाव बाकी है उसे मैं अपने प्रेत से जीग लूंगा। आज तक हम दोनों ने क्रोध के वशीभूत होकर न जाने एक दूसरे को क्या-क्या नुकसान पहुंचाए हैं। किन्तु आज मुझे उल्टा इस क्रोध पर ही क्रोध आ रहा है। तेरे प्रति मेरे मन में जो क्रोध था उसे तो मैंने दूर कर ही दिया है, मेरे प्रति तेरे मन में जो क्रोध बाकी है उसे भी नष्ट किए देता हूं। मेरे प्यारे भाई, देखना जिस क्रोध ने अब तक हम दोनों को परस्पर शत्रु बना रखा था उसकी मैं कैसी दुर्गति बनाता हू।

आ मेरे भाई, आज से हम इस पारस्परिक द्वेष-परम्परा को समाप्त करते हैं, हम दोनों एक दूसरे के समीप होते हैं, एक दूसरे के अन्तरग मित्र बनते हैं और इस सुखद वेला मे एक दूसरे के गले मिलकर यह मगल कामना करते हैं।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमुसन्त्वापः॥

अथर्व० १९,१०,८

यह तेज का गोला सूर्य, यह दूर-दूर तक ज्योति देने वाला आदित्य हमारे मानस में शान्ति के प्रकाश को बिखेरता हुआ उदित होवे। ये चारों दिशाएं हमारे हृदयों में शान्ति को मुखरित करती रहें। ये गगनचुम्बी पर्वतों के हिमाच्छादित धवल-शिखर हमे शान्ति का सन्देश देते रहें। ये गम्भीर समुद्र, कल-कल करके बहती हुई ये नदियों की धाराएं और ये शान्ति के मूर्तरूप जल हमारे हृदमें सदा शान्ति का स्रोत बढ़ाते रहें।

शं नो वातः पवतां शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद् देव पर्जन्यो अभिवर्षतु॥

यजु० ३६, १०

यह शीतलमन्द झकोरों के साथ बहने वाला सरस पवन हमारे लिए शान्ति-रस को बहा कर लाए। यह भगवान् मरीचिमाली अपनी मरीचियों में हमारे लिए शान्ति का प्रकाश भर कर लाए। यह गर्जना करने वाला दिव्य पर्जन्य हम पर शान्ति की अमृत वर्षा करता रहे।

प्रार्थना और जीवन

(पृष्ठ ६ का शेष)

प्रार्थना द्वारा विश्व मानव समाज का चरित्र निर्माण हो सकता है। इसके द्वारा हम परमात्मा को प्राप्त करके जीवन को परम सुखी और शान्ति बना सकते हैं। इसके द्वारा हम काम, क्रोध, लोभ मोह जैसे महाबली शत्रुओं पर विजय पा सकते हैं।

प्रार्थना से अकल्पनीय परमानन्द की अनुभूति होती है। हे विश्व के नर तनधारियो! आओ आज से प्रार्थना में मन लगाकर अपने इस मानव जीवन को सफल बना लो। जीवन के इन सुनहरे क्षणों को व्यर्थ न गवाओ। जीवन के एक क्षण का भी मूल्य अरबों से बढ़कर है। आओ इस प्रार्थना के महत्व को तथा जीवन की महत्ता के मूल्य को हम आज इन्हीं क्षणों में जानकर जीवन को सफल बना ले। हर हालत में प्रसन्न रहने का स्वभाव बना लो अपना जीवन सफल व दिव्य बना लो। अपने मन मन्दिर में दिव्य भावनाओं को बसा लो। दिव्य जीवन की अनन्तों सूर्य सम ज्योति जला लो। देखो ज्ञान का उदय प्रार्थना के प्रताप से अवश्य हो जाता है। निर्मल ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त करो। अपने आपको पहचानो। प्रार्थना के द्वारा सर्व सिद्धियों को प्राप्त क्यों नही करते हो। माया की मदिरा का त्याग करो। सत्संग में आगे आओ। महात्माओं, योगियों, महर्षियों परम तत्वदर्शी आत्म उन्नति के परम लक्ष्य को अपनाने वाले वेद पथ पर चलने वाले भारत वसुन्धरा के सपूतों के मार्ग पर चलकर भारत माता का सुयश घर-घर में फैलाये।

विश्व का मानव समाज भारत माता के चरणों मे अपना सर झुका कर आत्म उन्नति को प्राप्त करे। यही प्रभुदेव से आज के उषा काल में कोटि-कोटि प्रार्थना है कि विश्व के मानव समाज का जीवन प्रार्थनामय बने। सभी वेद-मार्ग को अपनावे। सभी विश्व की कल्याण की भव्य भावनाओं से ओत-प्रोत हो। प्रार्थना के द्वारा मानव समाज सुखी बने। यह प्रार्थना है। यह याचना है प्रभु! सुनो हमारी टेर। हमें अपनी भक्ति और प्रार्थना में लगाओ। प्रभु तेरी कृपा के बिना हम असंख्य योनियों में भटकते रहेंगे। हमें सुमति प्रदान करो कि हम तेरी प्रार्थना से अपने जीवन को सफल बना लें।'

जीवन की सुरम्य वाटिकायें परमदेव परमात्मा की गोद में बैठकर प्रार्थना करने मे जो अकल्पनीय आनन्द एक प्रभु भक्त योगी को प्राप्त होता है। उस अलौकिक सुख और आनन्द का दिव्य अनुभव चक्रवर्ती सम्राट को भी प्राप्त नही होता है इसलिए महर्षियों और योगियो का स्थान विश्व में चक्रवर्ती सम्राट से बड़ा है।

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास पढ़ने से यह ज्ञात होता है। कि ऋषि, महर्षियो के आश्रमों मे चक्रवर्ती सम्राट भी आकर आत्म, उन्नति की शिक्षा को शिष्य बनकर ग्रहण करते थे। आज विश्व के मानव समाज का पथ-प्रदर्शन भी वेद विद्या के प्रकाश पुंज से ही किया जा सकता है। ब्रह्म विद्या आध्यात्म विद्या योग. विद्या के रहस्य को प्रार्थना द्वारा हम जान सकते हैं।

आओ हम सब मिलकर प्रार्थना के गीत गायें:—

प्रभु मेरी वाणी में ऐसा अनुपम बल भर दे।
मेरा कीर्तन सकल विश्व को तेरा भक्त प्रवर कर दे॥
तेरी स्तुतियों से मुखरित कर दे हम नभ का वक्षस्थल।
तेरी महिमा गा-गाकर मक विश्व कर दे चचल॥
मेरे गानों मे, गीतो में, तानों में ध्वनि बन जाओ।
मेरे प्राणों में आत्मा मे बन विश्वास समा जाओ॥
मेरे रोम-रोम से प्रतिपल ऐसी मृदु झंकार उठे।
सारा जग प्रेमाकुल होकर तेरा नाम पुकार उठे॥

(काव्य की पंक्तियां वेद गीताञ्जलि से उद्धृत की गई है)

स्वास्थ्य चर्चा—

घातक हो सकती हैं मूंगफली और सुपारी

*** डा० सुरेन्द्रकुमार 'महाचन्द्र'**

जाड़े के दिनों में प्रायः सभी लोग मूंगफली खाते हैं। मूंगफली खाते-खाते कभी-कभी अनजाने ही मुंह में ऐसे दाने पहुंच जाते हैं कि मुंह कड़वा हो जाता है और फिर थूकने के अलावा कोई रास्ता नहीं रहता। इसके बाद हम पुनः पूर्ववत् मूंगफली खाने लग जाते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि मूंगफली के दानों में उत्पन्न इस तीव्र कड़वाहट का कारण क्या होता है।

वास्तव में मूंगफली में कड़वाहट होने का कारण एल्फाटाक्सिन नामक विषैले पदार्थ होते हैं। ये विषैले पदार्थ एस्परजिलस फंगस समूह द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं। एल्फाटाक्सिन वास्तव में फंगस द्वारा उत्पन्न रसायनों का समूह होता है जिसमें कई घातक विष मिले होते हैं।

वैज्ञानिक शोधों से पता चला है कि मूंगफली के जिन दानों पर एस्परिजिलस कुल की फंगस उग आती है उन्हें छीलने पर उनमें से एक पीला पाउडर सदृश चूर्ण-सा निकलता है जो स्वाद में काफी कड़वा होता है।

विभिन्न संस्थानों द्वारा किये गए शोध कार्यों से ज्ञात हुआ है कि एल्फाटाक्सिन यकृत में कैंसर पैदा करने में सक्षम है। एल्फाटाक्सिन-बी १-१ अत्यन्त कैंसरकारक रसायन सिद्ध हुआ है। जब इस रसायन का चूहों एवं बन्दरों पर परीक्षण किया गया तो पाया कि वास्तव में एल्फाटाक्सिन यकृत कैंसर के लिए उत्तरदायी है। अब वैज्ञानिक मानव में होने वाले याकृत कैंसर के लिए भी इसे उत्तरदायी मानने लगे हैं।

अध्ययनों से यह भी पता चला है कि अपरिष्कृत मूंगफली के तेल में एल्फाटाक्सिन की मात्रा .०२ पी पी०एम०से० २ पी०पी०एम० तक रहती है। (१ पी०पी०एम० का अर्थ होता है १० लाख भाग में से एक भाग) मूंगफली के तेल से एल्फाटाक्सिन विष उस समय नष्ट हो जाता है जब उसका शोधन किया जाता है। शोधन के दौरान ये विष क्षार के कारण नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार मूंगफली का परिष्कृत तेल एल्फाटक्सिन से मुक्त होता है।

शोधकार्यों से यह भी पता चला है कि एस्परजिलस कुल के फंगस का संक्रमण सुपारी में भी पाया जाता है। फंगस ग्रस्त सुपारी में माइकोटाक्सिन तथा एल्फाटाक्सिन समूह के रसायन उत्पन्न होते हैं लेकिन सुपारी में उत्पन्न होने वाले फंगस के रसायन अधिक कैंसर कारी होते हैं।

सुपारी के पौधों पर फंगस (फफूंद) का आक्रमण फलों के बनने के समय होता है। इसके अतिरिक्त उचित ढंग से न सुखाने व संग्रह की उपयुक्त परिस्थितियां न होने पर भी सुपारी में फंगस का आक्रमण हो जाता है। वैज्ञानिकों का मत है कि फंगस ग्रस्त सुपारी खाने से मुंह का कैंसर होने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है।

यद्यपि फंगस ग्रस्त सुपारी को पहचानना काफी कठिन है तथापि अरुचिकर गन्ध व उसके पीले, हरे, काले, भूरे रंग के कारण इसे पहचाना जा सकता है। कुछ लोग सुपारी के फंगस ग्रस्त भाग को काटकर फेंक देते हैं व शेष भाग को प्रयोग में ले आते हैं मगर वास्तव में यह भी गलत ही है क्योंकि फंगस द्वारा उत्पन्न एल्फाटाक्सिन रसायन सुपारी के सामान्य लग रहे भाग में भी उपस्थित रहते हैं।

फंगस ग्रस्त सुपारी का सर्वोत्तम उपयोग पान मसाले में किया जाता है। इसमें उसकी अरुचिकर गन्ध व रंग सभी छिप जाते हैं। कत्थे के रंग व अन्य सुगन्धित पदार्थों के कारण फंगस ग्रस्त सुपारी का पता ही नहीं चलता और व्यक्ति बड़े चाव से उसे खा जाता है। पान मसाले में सड़ी गली सभी प्रकार की सुपारियां इस्तेमाल की जाती हैं। इसीलिए अनेक विशेषज्ञों ने पान मसाले को न खाने की सलाह दी है। पान के शौकीनों को चाहिए कि पान में पान मसाला न डलवाए और न ही किसी अन्य रूप में उपयोग करें।

सन् १९६० मे इंग्लैंड में एस्परजिलस फंगस ग्रस्त खाद्य खाने के कारण लगभग दस लाख टर्की नागरिक मर गये थे। इसकी जांच की गई तब पता चला था कि इस घटनाक्रम के पीछे एस्परजिलस फंगस द्वारा उत्पन्न रसायन एल्फाटाक्सिन ही था।

एल्फाटाक्सिन की समस्या पूरे विश्व की समस्या है मगर भारत में खाद्य भडारण की विधियां, अधिक ताप, अधिक आर्द्रता, बेमौसम बरसात आदि के कारण खाद्य पदार्थ फंगस ग्रस्त हो जाते हैं। यदि उचित तरीके अपनाए जाएं तथा फंगस नाशक रसायनों का उचित समय पर व उचित मात्रा मे उपयोग किया जाए तो फंगस संक्रमण को काफी कम किया जा सकता है।

यदि फंगस ग्रस्त मूंगफली या सुपारी खा ली हो तथा मुंह में कड़वाहट पैदा हो गई हो तो मुंह को भली भांति कुल्ला करके साफ कर लेना चाहिए।

एल्फाटाक्सिन विष पित्त की थैली, यकृत, गुर्दे एवं दिल की अनेक प्राणघातक बीमारियों एवं कैंसर के लिए दोषी ठहराए जा चुके हैं। अमीरीका तथा इंग्लैंड के वैज्ञानिकों ने इन विषय पर पर्याप्त अध्ययन किए हैं। एल्फाटाक्सिन सफेद चुहियों, खरगोशों तथा पिल्लों मे प्राणघातक सिद्ध हुए हैं।

भ्रम निवारण

मदुरै आर्य समाज

पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री दक्षिण भारत प्रचार यात्रा पर गए थे परन्तु मदुरै मे उन्हें आर्य समाज नहीं मिला। इस कारण पत्र मे छपा कि आर्य समाज को कोई नहीं जानता।

सबसे बड़ा दुर्भाग्य और खेद की बात यह है कि श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री जैसे विद्वान प्रचारार्थ निकले, तो समाजो को सूचना तक नहीं दी, और आर्य समाज का पता तक नहीं लिया। दिल्ली से चलते समय आर्य समाजों के पते ही प्राप्त कर लेना चाहिए था। आप मद्रास आर्य समाज गये वहां से पता मिल सकता था यदि थोड़ा सा विवेक से काम ले लेते तो आर्य समाज को कोई नही जानता, ऐसा नहीं लिखते। आर्य समाज की डाइरेक्टरी में भी मदुरै आर्य समाज का पता दिया है। मदुरै बड़ा नगर है बिना पते के गन्तव्य स्थान पर पहुंचना कठिन है।

आर्य समाज मदुरै मे डी. ए. वी. स्कूल है। आर्य समाज मदुरै—यहा पंजाबी एवं उत्तर भारतीय लोगो की आर्य समाज हैं वैसे आर्य स. मदुरै आर्थिक दृष्टि से गरीब समाज हैं।

पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री मदुरै गए और इतने बड़े शहर मे आपने पूछा तो आर्य समाज संस्था को कोई न बता सका इसके माने यहतो नही कि वहां आर्य समाज है ही नही।

दिल्ली मे सार्व. आ प्र नि सभा है पर जब बाहर से कोई अतिथि आगन्तुक महानुभाव सभा को पूछते हैं तो सभा को हर व्यक्ति नहीं बता पाता और दीवान हाल या सीताराम बाजार की आर्य समाज में ले जाते हैं वहां से पता लेकर सार्व. सभा में आते हैं इसके माने यह नहीं कि सार्वदेशिक सभा है ही नहीं।

दक्षिण भारत मे वेद मन्त्रो का स्वर पाठ कर्मकाण्ड विधि सीखने योग्य है यह बात ठीक है दक्षिण में आ स. उत्तर से पीछे है पर यहनहीं कहा जा सकता है कि है ही नही—

लेखक महोदय अनुभवी व्यक्ति है पर वह ध्यान नही रहा कि इतने बड़े शहर मे सभी आर्य समाज को जानें।

फिर भी आर्य समाज अपनी गति से प्रगति पथ पर चल रहा है। विगत वर्षों में मीनाक्षी पुरम का आन्दोलन जोरो पर चला था। सारी दुनियां ने जाना दक्षिण भारत में आर्य समाज है और सजग है।

अत पाठको को भ्रम हो सकता है कि पं० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री को जानकारी न हो सकी होगी।

—सम्पादक

आर्य समाज खगड़िया का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज खगडिया बिहार का वार्षिकोत्सव ५ से ८ जनवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलन आयोजित किए गये। समारोह में प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

१८ दिवसीय यज्ञ सम्पन्न

सनवाड़, ९ फरवरी। आर्य समाज मन्दिर सनवाड़ द्वारा आयोजित १८ दिवसीय यज्ञ नरते प्राथमिक विद्यालय में समापन समारोह के साथ सम्पन्न हो गया।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी लाल आर्य मुनि थे। यज्ञ के पुरोहित डा० मोहन प्रकाश सिंह आर्य व मन्त्र पाठी दिलीप कुमार राधेश्याम थे। कार्यक्रम का सचालन शम्भुपुरी गोस्वामी ने किया कार्यक्रम मे विशिष्ट अतिथियों के अलावा स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती चित्तौड गढ़ ने भी भाग लिया।

सुख और शान्ति

(पृष्ठ ३ का शेष)

शोषण को ही बढ़ावा देगी। यह ठीक उसी प्रकार का कार्य होगा जैसे कोई मनुष्य अपनी कुमार्गगामी इन्द्रियो का पोषण करे और वे उसे कुमार्ग की ओर धकेलती हुई विनाश के गर्त में पहुचा दें। सावधानी से "स्व" का विस्तार करते हुए हम जैसे जैसे अपने बन्धुओ और किसी अन्य की भी सहायता में आगे बढ़ते हैं तो हमें परम सन्तोष और आनन्द की अधिकाधिक अनुभूति होती जाती है। हम फिर अपनी सहायता के प्रतिकार की इच्छा नही करते। दूसरे शब्दो में इसे ही परमेश्वर का साक्षात्कार या सर्वभूतान्तरात्मा तथा परमात्मा का सान्निध्य कहा जा सकता है।

यज्ञ एवं धर्मोपदेश का आयोजन

आर्य समाज, अल्मोड़ा द्वारा विश्वनाथ के निकट ग्राम चौराकसेत में दि० १-१-९५ को तथा ग्राम सेंज तथा ग्राम खोससीर, पट्टी मल्ला रीठागाड़ में दिनांक १८, १९ फरवरी ९५ को यज्ञ एवं वैदिक धर्म-प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। लोगों को जुआ, शराब तथा मांस के सेवन से होने वाली हानियो से अवगत कराते हुए इनका परित्याग करने की प्रेरणा दी गई। इन उत्सवों में डा० जयदत्त शास्त्री के प्रवचन तथा श्री हरिश्चन्द्र होरवी के भजन विशेष प्रभावकारी रहे। श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, केशवदत्त तथा मनोज जोशी ने कार्यक्रमो के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया।

मन्त्री, आर्य समाज, अल्मोड़ा, उ० प्र०

वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

हरिद्वार। प्रादेशिक सस्कृत विद्यालय अध्यापक समिति जनपद हरिद्वार/सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन डा० हरिगोपाल शास्त्री (प्राचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय, की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ, जिसमें १९९५ एवं १९९६ के लिए डा० हरिगोपाल शास्त्री (अध्यक्ष), श्री पदम प्रसाद सुवेदी एवं श्री रामेश्वर प्रसाद (उपाध्यक्ष), श्री चण्डी प्रसाद उनियाल (मन्त्री), श्री ब्रह्मानन्द बिडालिया (उप मन्त्री), श्री मृत्युंजय पाण्डेय (कोषाध्यक्ष) निर्वाचित किए गए।

वेद प्रचार

आर्य समाज कठुआ ने अपना वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १२-२-९५ से १९-२-९५ तक धूमधाम से मनाया। प्रातःकाल गायत्री महायज्ञ पं० विनोदकुमार शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। सायंकाल तीन घण्टे श्री नरेन्द्र आर्य दिल्ली के भजन संगीत, आचार्य अखिलेश्वर जी वैदिक प्रवक्ता दिल्ली की भगवद् गीता पर विवेचनात्मक कथा तथा महात्मा गोपाल भिक्षु जी वैदिक गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम आनन्दधाम उधमपुर (जम्मू) के प्रवचन हुए जिसकी सभी धर्मप्रेमी जनता ने अति प्रशसा की। अन्तिम दिन ऋषि लगर के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महर्षि जन्मोत्सव पर गायत्री महायज्ञ एवम् ऋषिलंगर

युग प्रवंतक, महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७१वां जन्म दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया यह उत्सव २६ फरवरी १९९५ को सैक्टर १६, लेबर चौक पर 'गायत्री यज्ञ' के साथ प्रारम्भ हुआ।

इसके ब्रह्मा आचार्य नरेश जी थे। इस उत्सव में प्रवचन, मधुर भजन एवम् ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया यहां हजारों व्यक्तियों ने इस उत्सव में अपने परिवार एवम् इष्ट-मित्रों सहित सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठाया

आर्य वीर दल

आर्यसमाज सैक्टर ९, पचकूला

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०२४/९३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१९-३-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (G) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (G) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 9,10-3-1995

आर्य वीर ने २८ गऊओं के प्राण बचाए

आर्य वीर उसी को कहते हैं जो दृढ़ता पूर्वक वैदिक मार्ग पर चलता है जिसका आचार, विचार, व्यवहार, आहार उत्तम होता है। उसका विश्व में यशोगान होता है। इसका पूर्ण प्रमाण दिया है पं० नन्दलाल निर्भय महामन्त्री वैदिक धर्म सेवा समिति मेवात ने।

गत सप्ताह श्री निर्भय जी ने श्रीराम निवास ए०एस०आई० इन्चार्ज, पुलिस चौकी ब्यवड़ तथा श्री कृष्णचन्द्र थानेदार थाना हथीन से सम्पर्क स्थापित करके उटावड़, ग्राम आली मेव, ग्राम खाईका, ग्राम रैपुआ का (मेवात) से २८ गाय जीवित तथा ६ गाय कटी हुई बरामद कराके याकूफ, मम्मन, सुलतान, सौसन, फजरू आदि आठ कसाइयों को गिरफ्तार करवाया है। जीवित गऊओं को दादा कान्हा गऊशाला बहीन (मेवात) में भिजवा दिया गया है।

श्री नन्दलाल निर्भय पहले भी सैकड़ों गऊओं के प्राण बचा चुके हैं। श्री निर्भय जी के साहस तथा सूझ-बूझ की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

नारायण आर्य उपमन्त्री
वैदिक धर्म सेवा समिति मेवात
केन्द्र बहीन, जिला फरीदाबाद (हरि०)

बाबरी मस्जिद विध्वंस

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होंने कहा कि मैं श्री राव को बहुत ऊंचे स्थान पर नहीं रखता। मैं प्रधानमन्त्रियों में लाल बहादुर शास्त्री और मोरारजी दिसाई की इज्जत करता हूं। रज्जू भैया ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू के त्याग और विद्वता की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने ही गलतियों की शुरुआत की।

अर्जुनसिंह के बारे में पूछे गए सवाल के उत्तर में रज्जू भैया ने कहा कि अर्जुनसिंह तो कहीं नहीं हैं। मैं उनको बहुत महत्व नहीं देता। उन्होंने कहा कि नारायणदत्त तिवारी का नाम भी इतना अच्छा नहीं है।

रज्जू भैया ने एक प्रश्न के उत्तर में यह स्वीकार किया कि विहिप और आर.एस.एस. के प्रतिबन्ध से कुछ फायदा हुआ है। संघ की शाखाओं की सख्या २५ हजार से बढ़कर तीस हजार हो गई थी। लेकिन अब शाखाओं की वृद्धि की अपेक्षा उनकी गुणवत्ता बढ़ाने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

(दैनिक जागरण ५ मार्च से साभार)

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

झाड़ौदा कलां (दिल्ली) श्री पं० अनिल कुमार जी आर्य सुपुत्र श्री दशरथ जी ने अपने एक वर्ष के पुत्र के जन्म दिवस पर २१ व २२ जनवरी ९५ को सामवेद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्य गुरुकुल कालवा (जीन्द) हरयाणा और आचार्य चेतनदेव जी नैष्ठिक वैदिक साधना आश्रम, चामड़-मैया (अलीगढ़) उत्तरप्रदेश द्वारा विधि विधान से सम्पन्न कराया। इस यज्ञ व्यवस्था में सर्वश्री रमेश कुमार, सतोश कुमार, रामधन, बजान सिंह, ताराचन्द जी आदि आर्य महानुभावो ने सहयोग प्रदान किया अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

शीशराम भक्त, नई दिल्ली

आर्य वीरों द्वारा बसन्तोत्सव सम्पन्न

सनवाड, ४ फरवरी। आर्य समाज एवं आर्य वीर दल द्वारा बसन्तोत्सव आर्य मुनि जी के कुएं पर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

आर्य वीर दल की शाखा ध्वज गान के साथ लगायी गयी जिसमें ३२ युवा आर्य वीरों ने भाग लिया। बाद मे प्रश्नोत्तरी शंका समाधान इत्यादि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कार्यक्रम का संचालन डा० एम. पी. सिंह आर्य ने किया।

विशेष सूचना —

"कुलियात आर्य मुसाफिर"

(छपकर तैयार है)

ग्राहकों को डाक द्वारा भेजी जा रही है वह प्राप्त करें और जिन्हें सभा कार्यालय से लेनी हो वह यहां आकर प्राप्त करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पहासू का वार्षिकोत्सव दि० १९, २०, २१ मार्च १९९५ को मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान संन्यासी व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अतः आप सभी से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में आकर उत्सव की शोभा बढ़ाते हुए धर्म लाभ उठावें।

मन्त्री, आ. स. पहासू बुलन्दशहर

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ५]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   चैत्र कृ० ३   सं० २०५१ १९ मार्च १९९५

साधारण सभा का निर्वाचन २०-२१ मई १९९५ को हैदराबाद में होना निश्चय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

नई दिल्ली १९ मार्च। सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक दिनाक १९ मार्च (रविवार) को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे सभा प्रधान श्री प०वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई।

मारीशस तथा भारत के सभी प्रान्तो से पधारे प्रतिनिधियों ने बैठक मे भाग लिया और वार्षिक आय व्यय बजट की स्वीकृति देकरआगामी वर्ष के बजट की स्वीकृति प्रदान की।

आर्य महासम्मेलन तथा प्रान्तीय आर्य सम्मेलनो को करने व आर्य समाज के सगठन को सुदृढ करने पर गम्भीरता पूर्वक विचार भी किया गया। देश मे बढती हुई अराजकता, अखण्डता के लिए आने वाले खतरो से भी आर्य जनो को सावधान किया गया।

आगामी वर्षो के लिए निर्वाचन हेतु श्री बाबू सोमनाथ जी मरवाह ने प्रस्ताव किया कि सभा का वृहदाधिवेशन जो एक वर्ष के लिए स्थगित किया गया था उसे शीघ्र ही सम्पन्न कराया जाये। इस प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा का अधिवेशन आगामी २०,२१ मई १९९५ को हैदराबाद मे किया जाये और प्रातीय सभाओं के सभी प्रतिनिधियो को उक्त समय पर हैदराबाद पहुचने के लिए निर्देश भी दिये जायें। बैठक बडे ही सद्भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

गौरक्षा समिति की बैठक

उपरोक्त बैठक के पश्चात गोरक्षा समिति की एक आवश्यक बैठक सभा प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमे प्रख्यात् सिख नेता सरदार रक्षपालसिह जी, नामधारी सिखो के गुरु सरदार दिलीपसिह जी, समर्पित कृषक नेता और पूर्व सासद श्री रामचन्द्र विकल, उद्योगपति श्री धर्मवीर तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० धर्मपाल जी और सनातन धर्म सभा के प्रमुख अधिकारी श्री प्रेमचन्द्र गुप्त सहित अन्य प्रान्तो से आये हुए आर्य प्रतिनिधियो न बडी सख्या म भाग लिया। सभा मे देश म बढती गोवध हत्या क प्रति रोप व्यक्त किया गया और उस पर यथाशीघ्र पूण प्रतिबन्ध की माग की गई। भारत जैसे कृषि प्रधान और आध्यात्मवादी देश मे गोवध की हत्या एक कलक है अत समिति द्वारा यथा शीघ्र इस पुण्य कार्य की पूर्ति हेतु एक अभियान चलाने और बृहद् स्तर पर आन्दोलन आयोजित करने का निश्चय किया गया, जिसकी रूपरेखा उक्त समिति द्वारा शीघ्र घोषित की जाएगी।

मारीशस के प्रधान श्री मोहित जी का अभिनन्दन

सार्वदेशिक सभा की दिनाक १९ मार्च को हुई इस बैठक मे मारीशस से पधारे हुए प्रसिद्ध उद्योगपति विद्वान और आर्य नेता श्री मोहनलाल जी मोहित का सभा की ओर से स्वागत एव अभिनन्दन किया गया। श्री मोहित जी के साथ आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता एव गुरुकुल के स्नातक श्री देवव्रत जी विद्याभास्कर और वैदिक विद्वान सन्यासी श्री स्वामी ओ३म् चैतन्य जी का भी विभिन्न प्रतिनिधियो द्वारा माल्यार्पण करके अभिनन्दन किया गया और उनके दीर्घायु जीवन की कामना की गई। श्री मोहित जी ने अपने स्वागत के प्रत्युत्तर मे विश्व की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य समाज की प्रासगिकता पर बल दिया।

उन्होंने आर्य बन्धुओं को और अधिक उत्साह के साथ वेद के सन्देश को विश्व के कोने कोने मे मिशनरी भावना से जुटे रहकर प्रसारित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कैलाशनाथ यादव आदि तीन तथाकथित नेता आर्यसमाज से निष्कासित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक १२ मार्च १९९५ को आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली के सभागार में सभा प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग द्वारा पारित प्रस्ताव की संस्तुति के आधार पर श्री कैलाशनाथ सिंह यादव, स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी इन्द्रवेश द्वारा फर्जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन करने आदि का विषय प्रस्तुत हुआ। जिस पर सभा में उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा श्री कैलाशनाथसिंह आदि की इन आर्य समाज विरोधी गतिविधियों और सिद्धांत विपरीत आचरण के सम्बन्ध में सप्रमाण शिकायतें प्रस्तुत की गई। विचार-विमर्श के उपरान्त उक्त प्रस्तुत तथ्यों के आधार पर सभा द्वारा श्री कैलाशनाथ सिंह, स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी इन्द्रवेश को सर्वसम्मति से आगामी १० (दस) वर्षों के लिए तत्कालिक प्रभाव से आर्य समाज की प्रारम्भिक सदस्यता से निष्कासित किया गया।

कर्नाटक के आर्य युवकों ने राष्ट्रीय एकता के लिए दो हजार किलोमीटर की साईकिल यात्रा की

नई दिल्ली, १ मार्च। कर्नाटक के दो आर्य युवक सर्व श्री नरेन्द्र आर्य तथा अमर गुरुप्पा, ने २६ जनवरी १९९५ को रायपुर जिले से साईकिल यात्रा प्रारम्भ की और वे लगभग २००० किलोमीटर का सफर तय करने के पश्चात आज दिल्ली पहुंचे और उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव से भेंट करके इस यात्रा का समापन किया। इस यात्रा के दौरान आर्य युवकों ने देश के हजारों ग्रामों और शहरों से गुजरते हुए राष्ट्रीय एकता तथा साक्षरता अभियान के साथ साथ वैदिक विचारधारा का भी प्रचार किया, इस यात्रामें अधिकतर रात्रि निवास विभिन्न आर्य समाज मन्दिरों में ही किया गया।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने इनके प्रयास को राष्ट्रीय सेवा का एक प्रयत्न बताते हुए कहा कि युवकों को इस यात्रा से विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि साईकिल यात्रा हो या पद यात्रा अथवा सड़कों पर निकाली जाने वाली छोटी-छोटी शोभा यात्रायें, इनका साधारण जनता पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

श्री वन्देमातरम् के नेतृत्व मे इन आर्य युवकों ने केन्द्रीय कपड़ा मन्त्री श्री जी० वेंकट स्वामी से भी भेंट की। इस अवसर पर सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल बधावन भी उपस्थित थे।

श्री वेंकट स्वामी ने भी इनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि समाज में जाति-धर्म, भाषा और प्रान्तीयता के नाम पर बढ़ते हुए विघटन को रोकने का यही एक मात्र उपाय है।

साइकिल यात्रियों के साथ केन्द्रीय कपड़ा मन्त्री श्री जी.वेंकट स्वामी सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा रवीन्द्र

गुरुकुल ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव दिनांक १३ से १४ अप्रैल ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर वेद-आयुर्वेद, शिक्षा, सहित अनेकों अन्य सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा नेता पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। वार्षिकोत्सव के अवसर पर ब्रह्मचारी छात्रों द्वारा आकर्षक शक्ति प्रदर्शन एवं योगासनों के अद्भुत क्रिया कलाप भी देखने को मिलेंगे।

वैदिक धर्म चर्चा सम्मेलन एवं अध्यापक अध्ययन गोष्ठी

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल विकासपुरी के प्रांगण में आर्य समाज विग द्वारा वैदिक धर्म चर्चा सम्मेलन एवं अध्यापक अध्ययन गोष्ठी का आयोजन दि० १८ मार्च तथा २० से २४ मार्च को प्रातः ८ बजेसे ९.३० तक किया गया है। कार्यक्रम में विद्वान आचार्य अपने आध्यात्मिक विषय पर विचार प्रस्तुत करेंगे। जिससे आप लोग अपने वैदिक ज्ञान में और अधिक वृद्धि करेंगे। कार्यक्रम का समापन २४-३-९५ को श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता में होगा। अधिक से अधिक संख्या में पहुंचा कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य अमृतमहोत्सव गौरव समारोह

आर्य समाज पिंपरी. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व पिंपरी चिंचवड नगर के सम्माननीय नागरिकों महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महाराष्ट्र के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य के ७५वर्ष आयु के पूर्ण होनेके उपलक्षमें अमृत महोत्सव २१, २२ व २३ अप्रैल ९५ को मनाने का संनिश्चय किया है। इस शुभ अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ व रुपये पांच लाख की थैली देना निश्चित हुआ है। अतः आपसे सविनय प्रार्थना है कि इस कार्य में आप श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य के विषयमें अपने विचार, लेख,सविता इत्यादि व अपना पासपोर्ट साईज तुरन्त भेजें।

श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य को इस अवसर पर अर्पण करने हेतु पांच लाख रुपये की थैली में आपके योगदान के रूप में आपसे अधिक से अधिक राशि अपेक्षित है। आप से सविनय प्रार्थना है कि उक्त राशि चैक अथवा ड्राफ्ट आर्य समाज पिंपरी के नाम से भेजकर हमारा उत्साह बढ़ायें।

—जगदीश वासवानी

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज फर्रुखाबाद का दि० २९-१-९५ का यह साप्ताहिक सत्संग आर्य जगत के प्रमुख विद्वान स्वामी (डा०) सत्यप्रकाश जी के निधन पर हार्दिक दुख व शोक प्रकट करते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें।

सम्पादकीय

होली के पर्व की सार्थकता

जिस समय यह अंक पाठकों के हाथ में पहुंचेगा उस समय होली मनाने की तैयारी कर रहे होंगे । होली का पर्व क्या है—राग-रंग और उल्लास तथा उमंग का यह निर्झर है । चारों ओर रंग और रसमयता वातावरण में छा जाती है ।

परन्तु जिस प्रकार देशवासियों ने अन्य पर्वों की दुर्गति कर डाली है, वैसे ही इस पर्व की भी । सच तो यह है कि जितनी दुर्गति इस पर्व की हुई है उतनी और किसी पर्व की नहीं । "आइयो लला फिर खेलन होरी" की भावना से ओत प्रोत और अपनी मानसिक कलुषता को राधा-कृष्ण के नाम से विभिन्न अश्लील प्रवृत्तियों में प्रकट करने वाले लोगों ने इस पर्व को इतना जघन्य रूप दे दिया है कि भद्र नागरिक वर्ष भर के इस त्यौहार की मंगल बेला में भी अपने घर का द्वार बन्द करके अन्दर बैठे रहना अधिक श्रेयस्कर समझते हैं ।

गलियों और बाजारों में कितना गन्द उछलता है । धूल-मिट्टी कीचड़, गोबर-मैला सब कुछ तो फेंका जाता है राह चलतों पर । छोकरों की उद्दण्डता तो चरम सीमा पर होती ही है, कई बड़े बुजुर्ग लोग भी अपनी चेतना के निम्नतम स्तर को इस अवसर पर बेलगाम छोड़ देते हैं । जीवन में शृंगार रस की आवश्यकता से हम इन्कार नहीं करते, परन्तु वह शृंगार रस सत्य के उद्रेक के लिए नहीं ।

कई पत्र-पत्रिकाएं और सभा सोसायटियां भी होली के नाम से अश्लील प्रकाशन करती हैं—बहुत बार तो ऐसे साहित्य को गुप्त रूप से इष्ट-मित्रों और परिचित जनों में 'सर्कुलेट' किया जाता है । यह विकृत समाज के विकृत मस्तिष्क की निशानी है ।

होली के साथ हिरण्यकश्यप द्वारा अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी बहन होलिका के प्रयोग की कपोल कल्पित कहानी पता नहीं कब से जोड़ दी गई है । वास्तव में तो शिशिर की समाप्ति पर और बसन्त के आगमन पर प्रकृति में जो पट-परिवर्तन होता है "बनन में बीथिन में नगरों में बसन्त है" के साक्षात् दर्शन होने लगते हैं, लहलहाती फसलों में नए अनाज के दाने आने लगते हैं, उस सबसे जन-मानस में उत्साहकी जो उद्वेलित उमंग उमड़ती है,उसका प्रतीक है यह पर्व । नवसस्येष्टि यज्ञ का प्रतिरूप है यह पर्व होला या होलक उस अनाज को कहते हैं जिसे तिनकों की आग में भूनकर खाया जाता है । गेहूं, जौ, चना आदि जो इस देश की मुख्य जीवनीय फसल हैं उनकी नई-नई बालें तोड़कर यज्ञ में डाली जाती थीं और उन्हें होला बनाकर खाया जाता था । किसान और व्यापारी फूले नही समाते थे । नए अनाज के आगमन पर साल भर के लिए सुख-समृद्धि की जो कल्पनाएं उनके मन में आती होंगी, उनका शब्दों द्वारा वर्णन थोड़े ही किया जा सकता है।

पर हाय, आज यह देश अनाज की दृष्टि से भी अन्य देशों का मोहताज है । इस स्थिति को लाने में सरकार की नीतियों का कितना हाथ है प्रकृति के प्रकोप का और कितना हाथ है दूषित वितरण प्रणाली का एवं व्यक्तिगत जमाखोरी का, इस विवाद में हम नहीं पड़ते—शायद सभी चीजों का हाथ हो—परन्तु हम तो एक बात जनता से निवेदन करना चाहते हैं और वह यह कि होली का यह पर्व राग-रंग और आमोद-प्रमोद का जितना नहीं जितना नए संकल्प को धारण करने का है ।

राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री अपने-अपने भाषणों में यह घोषणा करते हैं कि देश खाद्यान्न की दृष्टि में आत्म निर्भर हो गया है । हम जानते हैं कि उनकी गलत नीतियों के रहते यह सम्भव नहीं है कृषि का मुख्य आधार गोवंश है जब तक उसका ह्रास नहीं रोका जाता तब तक कृषि की उन्नति की बात नहीं सोची जा सकती । पाश्चात्य ढंग से सोचने वाली सरकार सारे संसार के साधन जुटाकर भी अगले सौ सालों तक प्रत्येक खेत की मेड़ तक ट्रैक्टर और बिजली का खम्भा नहीं पहुंचा सकती । इसलिए सरकारी घोषणाओं पर नहीं, जनता को अपने संकल्प पर भरोसा करना होगा ।

नवसस्येष्टि यज्ञ की प्रत्येक आहुति के साथ हम कहें—"इदं राष्ट्राय इदन्नमम्"—मेरा सर्वस्व राष्ट्र के लिए है, अपने लिए नहीं । हमारी सारी शक्तियां राष्ट्र को खाद्यान्न की दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने में ही लगें, तभी यह समस्या हल हो सकती है अन्यथा नही ।

'अन्न की दृष्टि से देश को स्वावलम्बी बनायेंगे" यह प्रतिज्ञा ही है होली का सन्देश । यही है इस पर्व की सार्थकता ।

जो सरकार जनता के चरित्र को सुधारने पर ध्यान नही देती और अनैतिकता के प्रसार को खुली छूट देती है, उस सरकार का पतन अवश्यम्भावी है ।

होली का यह पर्व हमें वैदिक काल से लेकर अब तक अज्ञान. अविद्या, अन्याय तथा शोषण के विरुद्ध क्रान्ति करने की प्रेरणा देता है । इसका सामाजिक रूप बड़ा ही विशाल है इस पर्व को सामाजिक भेद-भाव को भुलाकर एकता के रूप में मनाया जाता है । होली का वैदिक स्वरूप हमें बुराई से निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देता है । बस यही होली का उत्साही एवं पवित्र सन्देश है ।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

हिमाचल भवन, नई दिल्ली

१ अप्रैल ९५, शनिवार मध्याह्नोत्तर

२ से ५ बजे तक

आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं ।

—: निवेदक :—

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक उत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १४ अप्रैल १९९५ तक होगा । उत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन, सांस्कृतिक सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलनों में उच्चकोटि के विद्वान्, व्याख्याता, भजनीक, उपदेशक, विचारक, संन्यासी, वैज्ञानिक मार्गदर्शन करेंगे ।

—[illegible]कुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता

विदेशी मुद्रा का लालच

इराक, ईरान, अफगानिस्तान, सऊदी अरब आदि मुस्लिम देशों के लोग गो मांस, ज्यादा पसन्द करते हैं, क्योंकि इससे उनकी पसन्द भी पूरी होगी तथा विदेशी मुद्रा भी काफी प्राप्त होगी इसलिए दिलीप हिम्मतलाल, कोठारी, सबरवाल, गुलाम मोहम्मद शेख तथा बी० एन० रमण नामक हिन्दुस्तान की इन चार बड़ी हस्तियों ने जानवरों को काट कर 'बीफ' का कारोबार शुरू करने के लिए 'अल कबीर' नामक कसाईखाना शुरू करने की १९८१ ई० में अनुमति ली, फिलहाल देश में कम से कम ३८०० से ४००० छोटे-बड़े कसाईखाने बाकायदा दर्ज कराये गये है, अब इनमें 'अल कबीर' नामक आधुनिक यन्त्रों से परिपूर्ण क्रूरतापूर्वक गाय-भैंसों की हत्या करने वाला कसाईखाना भी शामिल हो गया।

विदेशों में गोमांस की बढ़ती मांग को देखकर भारत सरकार ने इस कसाई खाने को खोलने की इजाजत देकर उसे अपनी राष्ट्रीय अस्मिता और संस्कृति का कितना ध्यान है यह प्रत्यक्ष बता दिया। 'अल कबीर' कसाईखाने को हरी झंडी मिलने से हर दिन ढाई लाख जानवरों को मारने का काम अबाध रूप से वहां शुरू हुआ, जिनमें प्रायः पचास हजार से ऊपर तंदुरुस्त गायों का क्रूरतापूर्वक कत्ल किया जाता है।

जैन साध्वी वाणीभूषण पू० प्रीतिसुधाजी आदि ठाणा १२ ने अपनी मधुर तथा सरल वाणी से विदर्भ की जनता को शाकाहारी बनो, गाय बचाओ, देश बचाओ के अभियान का आह्वान किया, तथा लोगों के विचारों में परिवर्तन करने में सफलता हासिल की।

पू० प्रीतिसुधाजी की बढ़ती लोकप्रियता तथा उनकी वाणी से लोगों के विचारों पर बढ़ता हुआ प्रभाव देखकर जैन समाज के तथाकथित साधु, पण्डित तथा कुछ कार्यकर्ताओं ने साध्वियों के परदेश गमन के समय 'ओघा तथा मुहपत्तीचे' जैसे ही जैन धर्मों के नियमों का निर्वाह न करने का इल्जाम लगाया, इसी से उन तथाकथित कूपमंडूकों का सहज दर्शन हुआ, फिर देश में खुले आम होने वाली गोहत्या देखकर भी वे 'अहिंसा परमोधर्म' कहकर केवल शब्दछल करते रहें, तो इसमें आश्चर्य क्या है? उद्योगपति दिलीप कोठारी इन्हीं तथाकथित अहिंसावादियों के प्रतिनिधि है, यह मानने में कोई हर्ज नहीं।

हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) से ५० किलोमीटर की दूरी पर कसाईखाना लगवाने हेतु करार अल कबीर ने किया, किन्तु सरकार ने इस करार को नजरअन्दाज करके १३ किलोमीटर की दूरी पर रुद्रारम नामक जगह 'अल कबीर एक्सपोर्ट' नाम से यह विशाल यांत्रिक कसाईखाना ४०० एकड़ की जगह में बनाया गया। खास बात यह है कि इस कसाई खाने से गणेश मन्दिर कुल २०० गज पर स्थित है।

इस कसाईखाने में निजामाबाद, आदिलाबाद वारंगल, नालगोंडा, देवरकोंडा, महाभुवनेश्वर, मेडक तथा तेलंगाना की अन्य तहसीलों से तथा बाहर के राज्यों (महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब) से बड़ी मात्रा मे स्वस्थ गाय-भैंस वध के लिए लायी जाती हैं, कानून से इन गाय-भैंसों को दूध न देने वाली सिद्ध करने की भी कोशिशें की जाती हैं ताकि व्यापार के लिए ज्यादा बीफ एवं खून मिल सके, इस कसाईखाने के कारण जानवरों की चोरिया भी देश में ज्यादा होने लगीं हैं, १९९' में लगभग ४००टन मांस अवैधरूप से विदेश भेजा गया, मुख्यतः यहां के मास की विशेष मांग है। अभी-अभी २० हजार टन मास निर्यात करने हेतु ईरान तथा कुवैत से करार हुआ है. इस मांग को ध्यान में रखकर विदेशी मुद्रा के मोह में भारत सरकार ने अल कबीर के विस्तार के लिए अत्याधुनिक यन्त्रों को लगाने की इजाजत दी तथा आंध्रप्रदेश में अन्य पाच कसाईखाने शुरू करने की योजना को भी हरी झंडी दिखाई गई है।

देशभर के विभिन्न राज्यो से ट्रकों तथा अन्य माध्यमों द्वारा लायी हुई स्वस्थ गाय-भैंस (भैंसों की संख्या कम होती है) अल कबीर में लायी जाती है, बाहर से लाई गई गाय-भैंसों को चार दिन तक भूखा रखा जाता है, इस बीच उनके शरीर में हिमोग्लोबीन की मात्रा कम हो जाने से वे अशक्त हो जाती है, उसके बाद उन्हें जमीन पर घसीटतेहुए उन राक्षसी यन्त्रों तक ले जाया जाता है, उनके पिछले दो पैर इस मशीन के हुक में लटकाये जाते हैं, मशीन के कारण वह अधमरा प्राणी असहाय हो जाता है।

उसके बाद इस जानवर पर २०० डिग्री सेंटीग्रेड गर्म पानी का फव्वारा मारा जाता है जीने के लिए यह जानवर बहुत संघर्ष करता है, किन्तु बेकार! उसके बाद इस अधबेहोश जानवर पर एक इन्च का घाव करने हेतु गर्दन पर छुरा घुमाया जाता है, टप-टप खून की बूंदें गिरकर गाय, भैंस अन्तिम सांस लेती और असहाय होकर चिल्लाती है, यह हृदय विदारक दृश्य शायद पत्थर को भी पिघला देने के लिए काफी है. जख्म की हुई गर्दन से पेट तक एक नली आर-पार डाली जाती है, उसमें पम्प द्वारा हवा भरी जाती है, इससे मांस ज्यादा फूलता है, उसके बाद यन्त्र द्वारा इस मांस को छीलकर डिब्बों में बन्द किया जाता है, जमा हुआ खून रासायनिक प्रक्रिया के लिए दूसरे विभाग में भेजा जाता है।

देश के विकास में गाय, भैंस, भेड़ बकरी आदि का असाधारण महत्व है. इन जानवरों द्वारा मिलने वाली खाद से जमीन की गुणवत्ता कायम रखी जाती है. धरती पर के कुल पशुधन में कुल १५. से २० प्रतिशत गाय हिन्दुस्तान में हैं, सर्वेक्षण द्वारा पता चला है कि इनके द्वारा प्रतिवर्ष भारत को कम-से-कम १३.९९६ करोड़ रुपये की आमदनी होती है।

गोधन से हमारे वैज्ञानिक प्रतिवर्ष १० हजार मेगावाट अश्वशक्ति निर्मित करते हैं, फिलहाल पूरे भारत को गाय-भैंस द्वारा मिलने वाला दूध ७ करोड़ टन है, इस वर्ष महाराष्ट्र में सर्वाधिक दूध का उत्पादन हुआ है।

गाय द्वारा मिलने वाला गोबर भविष्य की बड़ी पूंजी है. उसके कारण जमीन की गुणवत्ता बनी रहती है, उससे मिलने वाला अनाज भी बढ़िया होता है, यह सब जानते हैं।

फिलहाल देश में गोबर की खाद की कमी होने से इस वर्ष भारत एक करोड़ टन गोबर खाद हालैंड से आयात करेगा। ऐसी घोषणा लोकसभा में हुई थी।

कसाईखानों से पशुधन में कमी होकर भारतीय खेतों तथा किसानों को परावलम्बी करने का विदेशी षडयन्त्र न पहचानते हुए यह भार-

(शेष पृष्ठ १० पर)

नवान्नेष्टि या होली

होली का वैदिक रूप

होली का वैदिक नाम नवसस्येष्टि है। नवीन अन्न प्राप्त होने पर आर्य पुरुष उस अन्न को पहले परमात्मा को अर्पण किया करते थे। उन्होंने इस का नियम कर लिया था कि कोई मनुष्य बिना यज्ञ किए अन्न को न खाए— यथा :—

नानिष्ट्वाग्रयणेन नवसस्यमश्नीयात्, नवसस्योत्पत्ती नवसस्येष्ट्या यजेत ॥

मानव गृ० सूत्र ॥

अर्थात नया अन्न उत्पन्न होने पर नवसस्येष्टि नामक यज्ञ करे और जब तक कि अन्न अर्थात पहले उत्पन्न हुए अन्न से होम न करे, उसे न खाए। इसका निम्नलिखित विधान है :

पर्वण्याग्रयणं कुर्वीत। वसन्ते यवानां शरदि व्रीहीणाम्।
अग्रपाकस्त पयसि स्थालीपाकं श्रपयित्वा। तम्म जुहोति ॥
सजूरग्नीन्द्राभ्यां स्वाहा ॥ १ ॥
सजूर्विश्वेभ्यो: देवेभ्य: स्वाहा ॥ २ ॥
सजूर्द्यावा पृथिवीभ्यां स्वाहा ॥ ३ ॥
सजू: सोमाय स्वाहा ॥ ४ ॥

अर्थात पर्व में नवीन अन्न से होम करे, बसन्त ऋतु में यवों से और शरद ऋतु में चावलों से। नवीन अन्न को दूध में पकाकर स्थाली पाक बनावे और पाक के ऊपर लिखे हुए चार मन्त्रों से चार आहुतियां दे। यह प्रधान होम है। स्वस्तिवाचन शान्तिपाठ और नित्य हवन करने के पश्चात अन्त में ये आहुतियां देनी चाहिएं। इसके पश्चात नवीन अन्न का सेवन करें।

कैसा पवित्र भाव है। शास्त्र में लिखा है :—

यज्ञाद् भवति पर्जन्य: पर्जन्यादन्नसंभव.।

यज्ञ के द्वारा वृष्टि होती है और वृष्टि से अन्न पैदा होता है। पुन: यज्ञ ही परमात्मा है। यथा—

यज्ञो वै विष्णु: (शतपथ)

अत: आर्य पुरुष पहले नवीन अन्न उसके देवता यज्ञ को समर्पण करते और तब स्वयं उसका भोग करते थे।

अब प्रश्न यह होता है कि इस वैदिक नवसस्येष्टि का नाम होली कैसे पड़ गया? इसका उत्तर यह होता है कि उस अवसर पर अन्न अर्ध परिपक्व अवस्था में होता है और इसे जब भूनते हैं तो इसकी संज्ञा लोक में होला होती है, जैसा कि शब्द कल्पद्रुम में लिखा है—

तृणाग्निभ्रष्टार्द्ध पक्वशमी धान्यं होलक:।

होला इति हिन्दी भाषा।

अर्थात जो अधपका अन्न, फूंस की आग में भूना जाता है, उसे संस्कृत भाषा में होलक: और हिन्दी भाषा में होला कहते हैं। ऐसे अन्न के द्वारा जो यज्ञ किया जाता था उसे लोग होलक: यज्ञ कहने लगे और वही बिगड़ कर होलिका और अन्त में होली हो गया।

वर्तमान होली के देखने से भी इस बात का निश्चय अवश्य हो जाता है कि वह यज्ञ ही का विकृत रूप है। अब भी लोग नए अन्न चना, जो, गेहूं आदि की बालें लेकर होली पर जाते हैं। वहां सबसे पहले एक पुरोहित जिसे कि आजकल खेड़ापति कहते हैं, घी, शक्कर से होली का पूजन करता है और पुन: होली की प्रदक्षिणा कर उसमें अग्न्याधान करता है। इसके पश्चात लोग नया अन्न होली में भूनते हैं। इसमें से कुछ तो प्रदक्षिणा करते हुए अग्नि को समर्पण कर देते हैं और शेष अपने घर ले जाते हैं। घरों पर भी एक छोटा सा हवन किया जाता है और उसमें स्त्री-बच्चों सहित सब भाग लेते हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि होली एक सार्वजनिक बृहद यज्ञ है।

विद्वानों को चाहिए कि वे इस शुद्ध रूप का प्रचार करें। नगर के शिक्षित और शिष्ट लोगों को चाहिए कि फाल्गुन की पूर्णमासी के दिन प्रात:काल के समय प्रत्येक मोहल्ले के सार्वजनिक स्थानों में एक बड़ा यज्ञ करने का आयोजन करें। इसके लिए प्रत्येक घर से चन्दा किया जाय और विधिपूर्वक यज्ञ किया जावे, हमारा विश्वास है कि यदि इस प्राचीन प्रथा का उद्धार हो जाए तो फिर देश में [illegible] आदि अनेक रोग कभी न हो और जनता का बड़ा कल्याण हो। इस यज्ञ के प्रताप से नवीन, अन्न पुष्ट तथा रोग रहित हो और उसे सेवन करके हम बलवान तथा वीर्यवान हुआ करें। आप यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि हमारे इस वैदिक यज्ञ की महत्ता को विदेशियों ने भी अनुभव किया था और उन्होंने अपने देशो मे इसका प्रचार किया टाड राजस्थान को देखने से पता लगता है कि अन्न तैयार होने पर रोम के लोग, सैटर्न अर्थात कृषि के देवता की पूजा करते थे और इस अवसर पर वे आमोद-प्रमोद भी मनाते थे।

यह भाग रोमनगर के आधुनिक सेटरलेनिया नामक पर्व से बहुत कुछ मिलता है जबकि इसी प्रकार के कुमकुमे आमोद प्रमोद के अवसर पर फेंके जाते हैं। सेटर्न के विषय मे अंग्रेजी कोष का लेख है—

सेटर्न रोमन, कृषि का प्रवीण देवता है और सेटरनेलिया का एक पर्व है जो कि कृषि के देवता सेटर्न की स्मृति में मनाया जाता है, कितने गौरव की बात है कि हमारे इस पर्व की श्रेष्ठता और पवित्रता से प्रभावित होकर विदेशियों ने हमारी नकल की, किन्तु दु:ख की बात है कि आज हमने उसका रूप इतना बिगाड़ दिया है कि आज लोग उसे देखकर हमसे घृणा करने लगे हैं और हमें असभ्य और जंगली की उपाधि देने लगे हैं।

दुर्भाग्य से इस पर्व के सम्बन्ध में अनेक ऊल जलूल धारणाएं पैदा की गयीं तथा इसका वास्तविक ध्येय व महत्व मिटाया और इसके मनाए जाने की विविध प्रक्रियाएं अपनाई गयीं। किसी ने इसका सम्बन्ध प्रहलाद की बुआ होली के अग्नि दहन के साथ जोड़कर अन्ध विश्वास से इसे आवेष्टित किया और किसी ने इस पर्व को शूद्रों का पर्व इंगित करके इसके महत्व पर पानी फेरा। प्रसन्नता है कि लोग इस रूढ़िगत परम्परा से उपराम हो रहे हैं और इस पर्व के वास्तविक महत्व को समझने लग गए हैं परन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है। आवश्यकता इस बात की है कि इसके वास्तविक ध्येय को अधिकाधिक जन समझें और ऐसा प्रचार और उदाहरण से अधिक संभव हो सकता है। इसके साथ ही इस पर्व पर होने वाली बेहूदियों का डटकर विरोध एवं निराकरण किया जाय।

होली का त्योहार मनाओ

नर-नारी सब प्रेम पूर्वक, होली का त्योहार मनाओ।
करो मेल आपस में प्यारो, दूर फूट का रोग भगाओ ॥

नव सस्येष्टी यज्ञ होलिका है जिसको होली कहते हैं।
महापर्व है फिर क्यों इस दिन, मदिरा के दरिया बहते हैं ॥
जुआ खेलते हैं इस दिन क्यों, मूढ व्यक्ति क्यों दुख सहते हैं।
चोरी जारी क्यो करते हैं, नर-नारी व्याकुल रहते हैं ॥

नव सस्येष्ठी यज्ञ पर्व का, सकल विश्व को अर्थ बताओ।
करो मेल आपस में प्यारो दूर फूट का रोग भगाओ ॥

फाल्गुन सुदी पूर्णिमा को यह त्योहार मनाया जाता है।
वर्ष बीत जाता है पिछला, अगला वर्ष निकट आता है ॥
भारत का हर नर-नारी तब खुश होकर रसिया गाता है।
पक आती है फसल देश में, देख देख मन हर्षाता है।

नए अन्न से यज्ञ करो अब, दुनियां के नर-नारी आओ।
करो मेल आपस में·········

अच्छी तरह समझ लो इसकी, पर्व आर्यों का है होली।
अब तक होली है जो होली, सबसे बोलो मीठी बोली ॥
प्रेम प्यार का रंग बिखेरो, युवक युवतियों की अब टोली।
मिलो परस्पर गले साथियो, बात मान लो यह अनमोली ॥

अपना जीवन श्रेष्ठ बनाओ, सच्चे मानव बन दिखलाओ।
करो मेल आपस में प्यारो, दूर फूट का रोग भगाओ ॥

आए हो क्यों आप जगत में अपने दिल में बैठ विचारो।
ऋषियों के वंशज हो जागो, पुत्र राम के हो तुम प्यारो ॥
तजो बुराई, करो भलाई, बुरी भावनाओ को मारो।
मानव चोला है अनमोला, अपना जीवन आप सुधारो ॥

योगीराज कृष्ण बन जाओ, दुखी जनो के कष्ट मिटाओ।
करो मेल आपस में प्यारो, दूर फूट का रोग भगाओ ॥

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धांतशास्त्री,
ग्राम व पो० बहीन, जिला फरीदाबाद (हरि.)

प्रजातन्त्र की विडम्बना (भ्रष्टाचार)

डा० सत्यदेव

मानव सृष्टि के इतिहास में समाज, देश, राष्ट्र और समुदाय को सुव्यवस्थित रूप से चलाए रखने के प्रयासों में अनेकानेक तन्त्रों की मंजिलें तय करते हुए सर्वप्रिय एवं सर्वाधिक विकसित स्वरूप 'प्रजातन्त्र' का उभर कर आया है। यह प्रणाली By the people, for the people and of the people की पावन भावना को लेकर उत्पन्न हुई किन्तु कालान्तर में और तन्त्रों की भांति यह भी विकृति को प्राप्त होता जा रहा है। आज यह Buy the people for the people and off the people का रूप लेता जा रहा है। कतिपय अनेक समस्याओं में से इसकी सबसे बड़ी विडम्बना वोटों को अपने हक में करने के लिये निम्न स्तरों के हथकन्डों का अपनाना है। कोई गुण्डा गर्दी का बल प्रयोग कर जनता से जबरन अपनी लोकप्रियता मनवाना चाहता है तो दूसरा जाति और सम्प्रदाय के नाम पर। और तो और भाषा, प्रान्त, स्वायत्तता जैसे घिनौने संकीर्ण हथियारों के माध्यम से वोट बटोरने की कला सीखना मानो अनिवार्य हो गया है। इस सबके लिये विज्ञापन अपरिहार्य हो गया है और उसके लिये धन बल का होना नितान्त आवश्यक है: यहीं से होता है भ्रष्टाचार का सूत्रपात। यहीं से मिलता है उद्योगपतियों, जमींदारों, बड़े व्यापारियों, करवंचको, डकैतों तथा तस्करों को आम जनता को लूटने का लाइसेंस प्राप्त करने का स्वर्णावसर।

वर्तमान प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में यह विडम्बनाएं सार्वभौमिक रूप लेती जा रही है। इटली हो या जापान, इग्लैंड हो या अमेरिका, भारत हो अथवा पाकिस्तान जहां-जहां भी वोटों की राजनीति है वहीं-वहीं यह भ्रष्टाचार रूपी भस्मासुर अपना विकराल फन लेकर न्याय, समानता, समता, प्रेम सद्भाव को भस्म करने में संलग्न है।

यह महंगे चुनावों की प्रक्रिया जिसमें पंचायत के चुनावों तक में प्रत्याशी को लाखों खर्च करना पड़ता हो, जहां-जहां एक-एक विधायक और सांसद को करोड़ों की बाजी लगानी पड़ती है वहां ऐसा होना स्वाभाविक है।

भ्रष्टाचार मानो शिष्टाचार बनता चला जा रहा है। जो कुछ दिए बिना कार्य करने की दुराशा लेकर आता है उसे स्पष्ट ताड़ना दी जाती है कि आप तो कार्य कराने की शिष्टता भी नहीं जानते। ईमानदारी की परिभाषा अब कुछ लेकर यथावचन काम कर देना ही है। बेईमानी केवल वहीं मानी जाती है जो लेकर भी कार्य न करें।

किसी भी पार्टी की एक रैली अथवा अधिवेशन पर अरबों रुपयों को पानी की तरह बहाना पड़ता है और यही सब घोटालों को जन्म देता है। समाज सेवी देश भक्त, ईमानदार, सुचरित्र, विनम्र, चिन्तनशील, अहिंसावादी के लिये अब स्थान रहा ही कहां है? न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी। जो भी संस्था अथवा व्यक्ति किसी भी रूप में किसी भी दल अथवा व्यक्ति को देता है। सत्ता में आने के पश्चात् उनके अनुचित से अनुचित कार्मो को नकारने का साहस उन बैसाखियों के बल चलने वाले नेतृत्व को नहीं जुटाने देता। राजनीति तो अब व्यवसाय है। येन केन प्रकारेण सत्ता में आएं और जो (Inbestment) की है उससे कई गुणा एकत्रित करें, यही वस्तु स्थिति है। दुगुना इकट्ठा करने तक तो वह ईमानदार है। क्योंकि पांच वर्ष में तो बैंक भी दुगुना दे देता है।

अतः प्रजातन्त्र के इस विकृत स्वरूप को नई दिशा देने तथा आमूल चूल परिवर्तन किए बिना यह रोग बढ़ता ही चला जाएगा। इसके लिये चुनाव प्रणाली में धन तथा बल के प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। भोगवादी दुष्प्रवृति से भावी पीढ़ियों को तिलांजली दिलानी होगी। नैतिक रूप से उन्नत सच्चरित्र, परमार्थी भावी नागरिकों के निर्माणार्थ शिक्षा पद्धति को परिष्कृत करना होगा। धनवान की अपेक्षा गुणवान और चरित्रवानों को सम्मानित करना होगा तथा प्रजातन्त्र को नया आयाम देना होगा। अन्यथा भ्रष्टाचार हम सबको निगल जाएगा।

अन्त में देश ही नहीं विश्व के राजनीतिज्ञों, समाजशास्त्रियों, बुद्धिजीवियों से प्रार्थना है कि इस ओर यथाशीघ्र ध्यान देकर अपनी अपनी रचनात्मक सक्रिय भूमिका निभाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। नई व्यवस्था बनाने पर सामूहिक प्रयास करके ही भविष्य को सार्थक बनाया जा सकेगा।

सार्वदेशिक सभा के तीन नये प्रकाशन

१. मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा

पाण्डुरंग आठवले शास्त्री द्वारा प्रवर्तित नये सम्प्रदाय स्वाध्याय की मूर्तिपूजा के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का तार्किक शैली में खण्डन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने किया है। मूल्य २)५० पैसे।

२. आर्य समाज

(लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक अंग्रेजी पुस्तक (प्रथम बार इंग्लैण्ड से १९१५ में प्रकाशित) का प्रामाणिक अनुवाद। डा० भवानीलाल भारतीय कृत इस अनुवाद के आरम्भ में लेखक का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्यिक कृतियों की समीक्षा। मूल्य १८ रुपये।

३. ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की एक मात्र ९५ वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तक का डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित संस्करण मूल्य ३) ५० पैसे।

प्राप्ति स्थान व बिक्री विभाग।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक पत्र के ग्राहकों से निवेदन

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र अपने गरीबी के दिन गिनता हुआ आप आर्य-जनों की सेवा में वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द का सन्देश दे रहा है। पहले मासिक पत्र था अब साप्ताहिक के रूप में है। विद्वानों के लेखों, कविताओं, प्रवचनों व सूचनाओं के साथ पहुंच रहा है।

सफलता कहूं या असफलता—असफलता इसलिए है कि हमारी ग्राहक संख्या निर्धन है वह दस-दस साल का चन्दा भी हमें नहीं देना चाहते। मांगने पर उत्तर मिलता है—पत्र बन्द कर दीजिये। सफलता इसलिए है कि आपकी ऋषि भक्ति हमें कुछ सहारा देती है जिससे यह पत्र प्राणवान होकर सेवा कर ही रहा है। सभा से पत्र धन हेतु जाता है कुछ धन भेज देते हैं परिणामतः सभा ने १ हजार ग्राहक बन्द किए धन न मिलने से। अब भी वही दशा है। लोग कहते हैं क्या पत्र निकल रहा है। आप पत्र को पढ़ें और हमारे लिये नहीं अपनी शक्ति सम्वर्धन हेतु—पत्र को प्राणवान बनाएं।

तो फिर संकल्प लें, शेष राशि शीघ्र ही सभा को प्राप्त होनी चाहिए और आप अपनी आर्य समाज से कम से कम दस ग्राहक भी हमें दें। किसी भी संस्था को शक्तिशाली बनानेमें पत्रिका व साहित्य उसके जीवन को वृद्धि ही नहीं प्रगति भी प्रदान करते है?

आइये, सभा की मदद कीजिए—साथ ही [illegible] सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से वैदिक [illegible]।

—डा. [illegible] शास्त्री, सम्पादक

रक्ष्यतां सुरभारत्या रिक्थं यत्नेन भूयसा

धर्मवीर शास्त्री

(१)

आचार्योऽयं च साहित्ये रघुवंश-गुरुः क्वचित् ।
वागर्थौ नैव जानाति कुतो वागर्थ वेदिता ??

(२)

सांख्यशास्त्रेऽप्यमाचार्यः साक्षात्कारार्थमागतः ।
बहुनोक्तेन किं मुग्धो ज्ञातलिंगो न वर्त्तते ॥

(३)

विहृस्य रामस्य न यस्यभिन्ने विहाय रामाय च तुल्यरूपे ।
पदे पदं व्याकरणस्य शास्त्रे लब्ध्वाऽन्तिमं तिष्ठति सोऽयमत्र ॥

(४)

प्रकृत्या प्रत्ययैस्तस्य समासैः सन्धिभिश्च किम् ।
व्याख्यया सान्वयं किम्वा यस्य रामेऽपि संशयः ॥

(५)

'गच्छसीत्यस्य कर्त्ता कः' प्रश्नमेतं समुत्तरन् ।
संशये निपतेद् योऽसौ किमाचार्योऽवधार्यताम् ॥

(६)

'कालस्तु जात' इत्यस्य 'गतेऽह्नि गत एव सः ।'
योऽर्थं करोति बालेनं प्राप्तो हा ! सुरगीर्गुरुः ॥

(७)

नमो योगे चतुर्थ्यास्ते युष्मदो न च ते तदः ।
एतज्जानन्ति दौर्भाग्यान्नालंकारा न भास्कराः ॥

(८)

त्रयी गतार्था स्वतयोऽस्मृतार्थाः काव्यानि नाट्यान्यथदर्शनानि ।
अदृश्य तत्त्वानि यतोऽत्र तेषां परम्परैवाध्ययनस्य नष्टा ॥

(९)

किं वास्यन्ति स्व सन्तत्यै ज्ञानरिक्थेन वञ्चिताः ।
डिग्रीमात्र धरा ह्येते मूर्खाः पण्डितमानिनः ॥

(१०)

कथैव का संस्कृत बोधशक्तेर्हिन्दी मपि प्राञ्जलशब्दयुक्ताम् ।
न तेऽवगन्तुं सफला दशेयं जाताऽद्य हा ! संस्कृत शिक्षितानाम् ॥

(११)

ज्ञानेन सर्वथा शून्याः फल्गूपाधिकुभूषिताः ।
शिष्या येषामधन्यास्ते गुरवो गुरवः कथम् ??

(१२)

ह्रासेऽस्मिश्चरमे दोषो नाऽस्ति राज्यस्य कश्चन ।
न जनस्य त्रुटिः काचित् सदोषः पुनरत्र कः ॥

(१३)

विश्व विद्यालया नैके संस्कृतस्य विशेषतः ।
सन्ति ये सर्वसौविध्यं लभन्ते सर्वकारतः ॥

(१४)

किन्ते ददति देशाय किमस्याश्चोपकुर्वते ।
वराकया देवभाषाया विमुञ्चन्त्याः शनैरसून् ॥

(१५)

हन्यते सुरभाषेयं नून संस्कृत जीविभिः ।
सुतैरस्याः श्रितैरेवाऽन्वैतत्स्तन्य निपायिभिः ॥

(१६)

कोऽविता, ब्रूत विद्वांसस्तामिमां देवभारतीम् ।
वञ्च्यते चेत् स्वकैरेषा हन्यते चेद्धितैषिभिः ॥

(१७)

मन्ये, कर्त्तव्यनिर्वाहः क्रियेत यदि शिक्षकैः ।
न स्यादेतावती चिन्त्या देववाणी स्तर स्थितिः ॥

(१८)

रक्ष्यतां सुरभारत्या रिक्थं यत्नेन भूयसा ।
मा स्म लोपं व्रजत् [illegible]-स्रोतस्विनी [illegible] ॥

हिन्दी में संक्षिप्तार्थ

संस्कृत के परम्परागत ज्ञान की रक्षा की जाय

आजकल के संस्कृत शिक्षितों की स्थिति का वर्णन एक साक्षात्कार के आधार पर—

यह सज्जन साहित्याचार्य हैं, एक कालेज में पाठ्यक्रममें निर्धारित रघुवंश महाकाव्य पढ़ाते हैं, किन्तु इन्हें प्रारम्भ का श्लोक वागर्था विव० स्मरण नहीं, वाणी और अर्थ के सम्बन्ध के ज्ञान की तो बात ही क्या?

यह सांख्य शास्त्राचार्य हैं। इन्हें लिंग (सप्तदशैकं लिंगम् सूक्ष्म शरीर) का ही बोध नहीं। और यह व्याकरणाचार्य हैं, पी०एच०डी० भी। इनके लिये विहृस्य (वि+हृस्+ल्यप्) और रामस्य में अन्तर नहीं, विहाय (वि+हा+ल्यप्) रामाय भी समान हैं।

यह चौथे महानुभाव भी साहित्याचार्य हैं। इनका हाल तो यह है कि प्रकृति (धातु) प्रत्यय, सन्धि-समास, अन्वय सहित व्याख्या की तो बात ही क्या? इन्हें तो राम के रूपों में भी संशय है। और तो और, गच्छसि का कर्त्ता बताने में जो सन्देह का शिकार है, क्या उसे आचार्य माना जाय। एक अन्य सज्जन ने 'कालस्तु जातः' का अर्थ किया—वह कल तो गया ही था। खेद है कि हमारे बालकों को ऐसे संस्कृत गुरु मिले हैं।

नमस् के योग में ते युष्मद् का चतुर्थी एक वचन है या तद् का प्रथमा बहुवचन। इसका उत्तर न आधुनिक अलंकारों के पास है और न भास्करों के। अध्ययन की परम्परा ही नष्ट हो गई है, अतः वेद प्रयोजन-हीन, स्मृतियां विस्मृत तथा काव्य-नाटक दर्शनादि भी नाम शेष हो गये हैं।

ज्ञानमय उत्तराधिकार से वंचित, मात्र डिग्री लिये पंडितमानी ये मूर्ख अगली पीढ़ी को क्या देंगे? नव संस्कृत-शिक्षितों की दशा तो यह है कि संस्कृत की तो बात ही क्या, परिमार्जित हिन्दी भी ये नहीं समझते। ज्ञान-शून्य, व्यर्थ की उपाधियां धारण किये इन नव-शिक्षितों के गुरु अधन्य हैं और गुरु कहलाने के हकदार नहीं। क्या संस्कृत शिक्षा के चरम पतन का दोषी राज्य है? नहीं। जनता है? नहीं? फिर दोषी कौन है? राज्य इसलिये दोषी नहीं, क्योंकि विश्व-विद्यालयों के माध्यम से सरकार संस्कृत वालों को सब सुविधा देती है। किन्तु इसके बदले ये विश्वविद्यालय/संस्कृत विश्व विद्यालय देश को क्या देते हैं? निरन्तर निर्जीव होती बेचारी संस्कृत का क्या उपकार करते हैं?

यह निश्चित है कि संस्कृत रूपी माता का स्तन्य-पान करने वाले, इसके पुत्र, इसी पर आश्रित अर्थात् संस्कृत जीवियों के द्वारा ही संस्कृत का वध किया जा रहा है।

अरे विद्वानो, बोलो ! संस्कृत की रक्षा कौन करेगा? यह अपनों से ठगी जा रही है और अपने हितैषियों से मारी जा रही है।

मैं समझता हूं (और प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति इस बात का समर्थन करेगा कि यदि शिक्षक अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करें तो संस्कृत के स्तर की इतनी चिन्तनीय स्थिति न रहे।

अस्तु, महान् प्रयत्न और परिश्रम के द्वारा संस्कृत की परम्परा-प्राप्त ज्ञानसम्पत्ति की रक्षा की जाय। यह कल्याणी रस की जीवन[illegible] की, [illegible] की नदी सूख न जाय।

बी० १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

पुस्तक समीक्षा

निजामशाही पर पहली चोट

पृ० १४४ मूल्य ४०) रुपये

लेखक विराज

होमगंगा प्रकाशन

२७ राजपुर रोड, दिल्ली-५४

ब्रिटिश साम्राज्य के झण्डे के नीचे रहकर शासन करने वाली छोटी-बड़ी ५६५ रियासतों में "निजाम राज्य" महान् शक्तिशाली रजवाड़ा था। शासक मुसलमान था और अत्याचारी व कम निरंकुश नहीं था।

प्रजा ८८ प्रतिशत हिन्दू थी, धर्मान्धता प्रशासन का मुख्य अंग था, अतः कहीं सन्ध्या बन्द, कहीं हवन बन्द, कहीं विद्या और विद्या-भवन बन्द, इस प्रकार प्रपीड़ित हिन्दू जनता के हितार्थ आर्यसमाज ने १९३८ ई० में आर्य सत्याग्रह स्वाधीनता संग्राम का श्रीगणेश किया जो एक बड़ा निर्णायक अध्याय था।

काश ! इस सत्याग्रह ने राजनैतिक चेतना न जगाई होती तो पाकिस्तान के बनने पर निजामशाही भी पाकिस्तान बन गया होता।

आर्यसमाज का जन आन्दोलन पाखण्ड अन्धविश्वास अश्रद्धा अन्याय के विपरीत एक मोर्चा था। आजादी का उद्घोष पाखण्ड-खण्डिनी पताका के नीचे किया जा रहा था।

आजादी मिली पर निजाम का तेवर वैसा ही रहा जैसा आजादी से पूर्व था। आर्यसमाज ने एक करारी चोट दी, इससे धर्म की आजादी तो मिली पर पूर्ण स्वराज्य न मिला। जिसे सरदार पटेल ने पूरा किया। आज निजाम राज्य स्वतन्त्र है गणराज्य का अभिन्न अंग है।

धर्म की आजादी में कितना बलिदान देना पड़ा। यह इतिहास के पन्नों पर अंकित है पर सरदार पटेल के पुलिस एक्शन ने पूर्ण स्वराज्य का दर्जा प्राप्त किया।

आज न निजाम है न निजामशाही है पहली चोट पड़ी निजाम-धराशाही हो गया।

प्रस्तुत पुस्तक में सत्याग्रह की तैयारी, बड़ा दरबार, जेलवास का विपरिणाम और सत्याग्रह की झांकी पढ़ने को लेखक की कहानी भी मिलेगी।

लेखक महोदय श्री विराज जो गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातक है सत्याग्रह की कड़ी के वह भी एक कड़ी बने थे। प्रस्तुत पुस्तक रोचक है स्वाध्यायशील जनों को इतिहास की पृष्ठभूमि मिलेगी।

प्रकाशक बधाई के पात्र हैं जिनकी कृपा का ही यह पुस्तक परिणाम रूप में प्रस्तुत है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा

नारी जागृति निमित्त एक मास के कार्यक्रम का वृत्तान्त

(१७-१२-९४ से १६-१-९५)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के १२-३-९५ में पृष्ठ ३ पर छपे विवरण के आगे

इस १ मास के आयोजन में कुछ खट्टे व मीठे अनुभव हुए। २६-१२-९४ को जब ग्राम भामल (जि० झाबुआ म० प्र०) में संघ के कार्यकर्ता पहुचे, वहां के व्यवस्थापक श्री चन्द्रसिंह जी जो तीन वर्ष से अ०भा०द०से० संघ द्वारा स्थापित छात्रावास का संचालन कर रहे हैं, ने स्वागतोपरान्त एक कमरे में बैठाया, उसकी उदास आकृति को देखकर श्रीमती प्रेमलता जी ने घबराहट का कारण पूछा। पसीने से लथपथ उसने बताया कि क्वासा ग्राम के डाक्टर महोदय जिन्होंने आश्रम निर्माण में सहयोग दिया, उन्हीं की अध्यक्षता में भामल शिविर का आयोजन निश्चित था, परन्तु किसी कारणवश वे बाहर चले गए हैं तथा वह अपने आपको अकेला समझते हुए भोजनादि की व्यवस्था न कर सका। श्रीमती प्रेमलता जी ने ढाढस बंधाते हुए कहा कि आर्य कार्यकर्ता इन बातों की परवाह न करते हुए अपने कार्य करते रहते हैं। उसी समय उसे ५००) रु० की धनराशि दी गई और दल के सहयोगी श्री जीववर्धन, ब्रह्मचारी (व्यवस्थापक) बांसवाड़ा (राज०) आश्रम को साथ भेजकर सबके लिए भोजन-आदि की व्यवस्था कराई और रात्रि को एक मन्दिर में विधिवत शिविर का श्रीगणेश किया।

तदोपरान्त दल के सहयोगी उपदेशकों व भजनीकों ने ग्राम के घर-घर में जाकर २७-१२-९४ की प्रातः बेला में यज्ञादि में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। परिणामतः २७-१२-९४ की प्रात. लगभग सारे ग्राम के निवासी उपस्थित हुए तथा दो घण्टे यज्ञ का कार्यक्रम चलता रहा, जिसमे श्रीमती प्रेमलता जी ने यज्ञोपवीत धारण कराते हुए बताया कि अपना चिन्ह न अपनाने के कारण जाति का ह्रास हुआ है। लोगो ने यज्ञोपवीत श्रद्धापूर्वक धारण किया और जाना कि अशिक्षा के कारण ही उस क्षेत्र के निवासी पिछड़े हुए हैं, और विदेशियों के चंगुल मे फंसे हैं। उस ग्राम मे कन्यायें बहुत थी। पूछने पर पता चला कि सभी अशिक्षित हैं। मध्यान्ह नारी जागरण के सम्बन्ध में बैठक का आयोजन था। यज्ञ से बन्धु वर्ग इतना प्रभावित हुए और उन्हीं लोगो ने घर-घर जाकर नारियों को बैठक में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और निश्चित स्थान पर इकट्ठा किया। इस प्रकार ग्राम की नारियो में शिक्षा के महत्व तथा घरेलू व्यवहार सम्बन्धी नैतिकता की ओर ध्यान दिलाया। ग्राम की महिलाओ ने भी अनुभव किया कि ग्राम मे ही कन्याओं के लिए एक विद्यालय होना चाहिए। इस भावना को मूर्तरूप देने के लिए ग्राम के श्री सेवक जी व श्री कैलाश जी, जो कि बड़े उत्साही व्यक्ति हैं ने अन्य व्यक्तियों के सहयोग से कन्याओ के लिए एक कन्या विद्यालय की स्थापना "महर्षि दयानन्द माडल टाउन (दिल्ली)" विद्यालय के नाम से की गई। श्री सेवक जी ने ही इस विद्यालय मे चल रहे दयानन्द निहाल आश्रम की देखभाल का दायित्व अपने ऊपर लिया। इसी प्रकार यज्ञादि व अन्य कार्यक्रम चलते रहे।

२८-१२-९४ को भामल ग्राम से कुछ दूरी पर एक ग्राम के सज्जन यज्ञ में उपस्थित थे और कार्यक्रम को देखकर अति प्रभावित हुए और दल के सदस्यो को अपने ग्राम में चलकर ज्ञान विहीन लोगों को जागृत करने व यज्ञोपवीत धारण कराने का आग्रह किया। पता चला कि उस ग्राम में जाने के लिए मार्ग कठिन था। जीप आदि की व्यवस्था न थी।

भामल के श्री सेवक जी व अन्य बन्धुओं ने मोटर साईकिलों द्वारा दल के सदस्यों को ले जाने का विचार किया। श्रीमती प्रेमलता जी व स्वामी परमानन्द जी तो मोटर साईकिलों द्वारा निश्चित ग्राम में पहुंच गए। परन्तु संघ की उपमन्त्री श्रीमती ईश्वर रानी जी व मोटर साईकिल चालक थोड़ी दूरी पर गिर गए व दोनों को चोटें आईं। श्रीमती ईश्वर रानी जी के दायें बाजू की हड्डी टूट गई।

कार्यक्रम में व्यवधान आने की सम्भावना उत्पन्न होने लगी। दल के अन्य सदस्य पैदल ही पगडडियो के रास्ते उस ग्राम में पहुच गये। श्रीमती प्रेमलता जी श्रीमती ईश्वररानी के दुर्घटना ग्रस्त हो जाने का समाचार सुनकर ग्राम भामल लौट आई उस ग्राम में कार्यक्रम स्वामी परमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उस ग्राम के बहुत से लोगो ने श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया और एक बार फिर उस ग्राम में कार्यक्रम करने के लिए आमन्त्रित किया।

श्री परमानन्द जी सोलंकी, अध्यक्ष थान्दला आश्रम व श्री भवरसिंह जी व्यवस्थापक थांदला आश्रम ने तत्परता से जीप की व्यवस्था की और श्रीमती ईश्वर रानी को कम से कम समय में थांदला सिविल अस्पताल पहुंचाकर उपचार की व्यवस्था की। अस्पताल के डाक्टर श्री चक्रवर्ती जी ने कुशलता पूर्वक हड्डी को यथा स्थान जोडकर प्लास्टर लगा दिया। इसके लिए संघ उनका आभारी है।

भामल का शेष कार्यक्रम २९-१२-९४ तक श्री स्वामी परमानन्द जी की अध्यक्षता में सुचारू रूप से चलता रहा।

पता चला कि ग्राम भामल के निवासी २७-१२-९४ को भोजन आदि की व्यवस्था न कर पाने के कारण अपने आपको दोषी महसूस कर लज्जा अनुभव करते रहे थे, और श्रीमती प्रेमलता जी को भामल रोक कर २९-१२-९४ को प्रीति भोज का आयोजन कर दल के सदस्यों को सम्मान पूर्वक विदा करने का आग्रह किया। परन्तु श्रीमती प्रेमलता जी श्रीमती ईश्वर रानी के साथ रहने के कारण न रूक सकी। गांव वालों ने २९-१२-९४ को प्रीतिभोज का आयोजन कर दल के सदस्यों को भावभीनी विदाई दी।

दल आगामी कार्यक्रम के लिए ग्राम शुजापुरा के लिए चल पडा जिसका वर्णन अगले लेख में करने का प्रयास किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में भजनीक श्री हीरालाल जी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी जी, श्री खेमचन्द जी व श्री ओंकार जी ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया और श्रोताओ का स्थानीय भाषा के माध्यम से भी मनोरंजन किया।

—वेदव्रत महता, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, दिल्ली

विदेशी मुद्रा का लालच (पृष्ठ ४ का शेष)

तीय लोग इस कसाईखाने को गाय भैंस देकर इसे बढ़ावा दे रहे हैं, केन्द्र सरकार ने तो इस कसाईखाने के विरोध में की गई शिकायत की ओर ध्यान न देते हुए १९९२ ई० में इस कत्लखाने को 'सेकंड आब्जेक्शन' सर्टिफिकेट देकर जख्मों पर नमक डालने का काम किया। अल कबीर के कारण जब हाहाकार हुआ, तो पता चला कि १९५१ में हुई पशुगणना में भारत में एक हजार मनुष्य के पीछे ४२६ जानवर थे। ४० साल बाद यह आंकड़ा २१६ पर आ गया। किन्तु १९९३ में तो हद हो गई, जब यह पशुसंख्या १७५ पर पहुंच गयी।

पशुधन का बड़े पैमाने पर हो रहा यह बर्बर कत्लेआम भारत जैसे कृषिप्रधान और शान्तिप्रिय राष्ट्र को निश्चित ही महंगा पड़ रहा है, आर्य समाज श्री राधागोपाल गौ सेवा समाज, हाजीपेठ अ०भा० क्रान्तिदल, हैदराबाद, अ०भा० सकल जैन समाज तथा विश्वहिन्दू परिषद ने इस नृशंस कृत्य से आम लोगों को अवगत कराने हेतु लोकजागरण शुरू किया किसी भी बात को न मानते हुए भारतवासियों को पशुधन की रक्षा का संकल्प करना चाहिए इसमें प्रत्यक्ष आचरण ही महत्वपूर्ण निर्णायक सिद्ध होगा, राष्ट्रीय अस्मिता, भारतीय संस्कृति को कायम रखना उसे समृद्ध करना सरकार की जिम्मेदारी है ही।

—विनोद चोरडिया
"लोकमत" समाचार ४-८-९४

सम्पर्क करें—

मैं उन महानुभावों की एक सूची तैयार करना चाहता हूं जिन्होंने परावर्तन (शुद्धि) कार्य किया हो और जिनकी इस कार्य को बढ़ावा देने में विशेष रुचि हो, वे महानुभाव अपना अथवा ऐसे जानकार बन्धुओं का पूरा पता और सम्पर्क टेलीफोन नम्बर यदि हो, निम्न पते पर ३०-४-९५ तक अवश्य भेजने की कृपा करें।

—चमन लाल रामपाल,
मन्त्री, आर्य समाज सीमेन्ट रोड,
कर्णपुर, देहरादून—२४८००१ (उ० प्र०)

वैदिक ग्राम समारोह

दि० १२, १३ व १४ फरवरी ९५ को आर्य समाज अटवा मदीनपुर हरदोई के तत्वावधान में वैदिक धर्म के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार व प्रसार को देखते हुए तीन दिवस का आयोजन किया गया था, जिसमें दर्शनाचार्य महावीर मुमुक्षु मुरादाबाद, किशनलाल आर्य 'बेधड़क' भजनोपदेशक बरेली, कुलभूषण जी एटा ने अपने विचारों से तीन दिनों तक प्रचार कार्य किया साथ ही दि० ११ फरवरी को स्थानीय दयानन्द बाल विद्या मन्दिर के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। ग्रामीण क्षेत्र की जनता द्वारा इस मौके पर वैदिक साहित्य भी खरीदा गया।

रमेश चन्द्र वर्मा आर्य

दहेज रहित विवाह सम्मेलन

सर्व साधारण को सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्यसमाज शास्त्रीनगर (पंजी०) मेरठ अपने प्रांगण डी० ब्लाक शास्त्रीनगर में ही ८-९ अप्रैल को हिन्दू युवक युवती परिचय एवं दहेज रहित विवाह सम्मेलन का आयोजन कर रहा है उसमें २५-३-९५ तक रजिस्ट्रेशन हो रहे हैं अपने बच्चों का बायडाटा उसमें शामिल होने के लिये आवश्यक नियमावली एवं फार्म आदि लेनेके लिये २५-३-९५ तक श्री राजेन्द्रप्रकाश जी डी० १४ शास्त्रीनगर मेरठ में सम्पर्क करें। (५५) पचपन रुपये का पौस्टेल सर्टिफिकेट अथवा M.O. द्वारा भेजकर आवश्यक फार्म आदि मंगवायें :

(राजेन्द्र प्रकाश) सचिव

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्यसमाज जलाली अलीगढ़ में श्री जितेन्द्रकुमार एडवोकेट प्रधान, श्री भगवान स्वरूप आर्य मन्त्री श्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मन्दिर सिंगरौली में श्री गणेशप्रसाद गुप्ता प्रधान, डा० नन्दलाल मन्त्री, श्री सेठ विनयकुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—महिला आर्यसमाज आवास-विकास कालोनी काशीपुर में श्रीमती सुदेशकुमारी प्रधाना, श्रीमती परमेश्वरी देवी आहूजा मन्त्राणी, श्री सन्तोष माहेश्वरी कोषाध्यक्षा चुनी गई,

होली का यह पर्व महान

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

समता – समरसता संदेशा
लेकर आया यह त्यौहार
आपस के सब भेद-भाव तज-
करें परस्पर शुभ व्यवहार।
प्रेम दया का, सद्भावों का
चले धरा पर नव अभियान।
होली का यह पर्व महान॥

आज होलिका के संग आओ!
मन की दानव-वृत्ति जलाएं।
मनु के पुत्र! मनुज सब आओ
मानवता का पथ अपनाएं।
जगे हृदय में आज हमारे—
त्याग तपस्या व बलिदान।
होली का यह पर्व महान॥

जिसके स्वागत में हर्षित हो,
आया भू पर है ऋतुराज।
प्रकृति लुटाती निधियां सारी,
सजा रही है भू का साज।
ऊंच नीच के भाव छोड़ कर--
छोड़ें हम कलुषित अभिमान।
होली का यह पर्व महान॥

निर्वाचन

—आर्य समाज दीनदयाल नगर मुगल सराय, श्री शंकरलाल पोद्दार प्रधान, श्री जयप्रकाश वैद्य मन्त्री, श्री मुन्नालाल कुशवाहा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद, श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा प्रधान, श्री प्रदीप आर्य मन्त्री, श्री रामानन्द जायसवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज कर्णपुरदत्त, श्री उदयपाल सिंह प्रधान, श्री क्षेत्रपाल सिंह, मन्त्री श्री धर्मपाल सिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रेलवे कालोनी रतलाम, श्री ब्रह्मप्रकाश वर्मा प्रधान, श्री रामकुमार यादव मन्त्री, गुरुदीन चौरसिया कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा, श्रीमती विजय जी छाबड़ा प्रधान, श्री ब्योराम जी वशिष्ठ मन्त्री, श्री जे० एस० दूबे कोषाध्यक्ष।

नवसम्वत् शोभायात्रा

१ अप्रैल मध्याह्न १ बजे, गांधी मैदान, दिल्ली से गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी एक विशाल नव सम्वत शोभा यात्रा प्रारम्भ होकर फव्वारा, दीवान हाल, मन्दिर गौरी शंकर, साइकिल मार्कीट, दरीबा, चांदनी चौक, फतेहपुरी, खारी बावली, श्रद्धानन्द मार्ग, अजमेरी गेट बाजार, हौज काजी, चावड़ी बाजार, नई सड़क से पुनः चांदनी चौक होती हुई गांधी मैदान में सायंकाल ७ बजे पूर्ण होगी।

अधिकाधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

२६ वां वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद (उ० प्र०) का वार्षिक उत्सव दि० २५, २६, २७ मार्च ९५ को सोत्साह मनाया जा रहा है।

कृपया परिवार, इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें। और तन मन धन से सहयोग देकर ऋषि ऋण से उऋण होवें।

लतिका हर्षकुमार का विवाह सम्पन्न

दि० १० फरवरी शुक्रवार रात्रि में ठीक ९.३० बजे आर्य समाज के महर्षि दयानन्द भवन में श्री हर्षकुमार अमरनाथ सलरीया का विवाह कु० लतिका प्रकाश महतोले के साथ वैदिक पद्धति से अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुआ है। इस विवाह का पौरोहित्य पं० दयाराम रा. बसैये ने किया इस विवाह में कई आर्य समाजों के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी ने नव दम्पत्ति के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्त की पुष्टि

अंग्रेजी दैनिक "टाईम्स आफ इण्डिया" के १९ जनवरी १९९५ के अंक में एक वार्ता पढ़ने को मिली। अन्तर्राष्ट्रीय भूगर्भ वैज्ञानिकों के एक गुट ने हाल ही में अपने हिमालय और तिब्बेट के फासिल्स, स्ट्रान्टीयम धातु के पानी में मिले कण, और भूगर्भिय स्तर के निरीक्षण के पश्चात एक वक्तव्य) में B.B.C. से प्रसारित) कहा कि "हो सकता है, मानव का प्रथम जन्म तिबेट में हुआ।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास अन्तर्गत पृष्ठ १३१ पर लिखते हैं—

प्रश्न—मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई?

उत्तर—त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

यह महर्षि ने वेदों के आधार पर कहा है और वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है "इसी की पुष्टि विश्व के वैज्ञानिक कर रहे हैं। धन्य है ऋषि! और उनकी एक अद्वितीय अमर कृति "सत्यार्थ प्रकाश"

उपरोक्त वक्तव्य में सृष्टि उत्पत्ति विषयक और भी सत्यान्वेषण की चर्चा है। आवश्यकता है कि उपरोक्त वैज्ञानिकों का उक्त हवाला पी०टी० आई० से प्राप्त करें। और इसे आर्य समाज के वैज्ञानिक भी अभ्यास कर कुछ निष्कर्ष निकालें।

—माधव के० देशपांडे

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज रानी की सराय आजमगढ़ का ५२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २४ मार्च ९५ तक मनाया जायेगा, इस उत्सव में आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक आ रहे हैं।

अतः आप सभी सज्जनों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

—दिनांक २१, २२, वा २३ फरवरी तदर्थ फा० बदी ६, ७, ८ को आर्य समाज लखनपुर बदायूं का २१ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में "आर्ष-विद्या-निकेतनम्' के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल के आचार्य पं० चन्द्रदत्त शर्मा जी थे।

गुरुकुल के संस्थापक श्री ब्रह्मदत्त शर्मा, आ. स. आम गांव बदायू के मंत्री श्री गंगासिंह, आ. स. लखनपुर से सभी अधिकारी गण व प्रखर आर्य समाजी नेता श्री बुध सेन कटियार आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

—आर्य समाज भटौली (बदायूं) का वार्षिक महोत्सव दिनांक १०. ११ १२ फरवरी को समारोह पूर्वक मनायो गया।

नशा बन्दी, शाकाहार महिला राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुए, सत्येन्द्र शास्त्री जी ने बढ़ती हुई लाटरी (जुआ) से बहुत से परिवार बरबाद हो गए हैं सरकार से तुरन्त लाटरी बन्द करने की मांग की, नशा से स्वास्थ्य को हानिकारक बताते हुए तम्बाकू से बने गुटकों को मीठा विष बताया और नवयुवकों तथा महिलाओं को कुरीति छोड़ने को कहा और वैदिक धर्म को अपनाकर जीवन सफल बनाने को कहा।

ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

पातंजल योग धाम आर्य नगर ज्वालापुर (हरिद्वार) में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में दिनांक ३ अप्रैल १९९५ से ९ अप्रैल १९९५ तक ध्यान योग शिविर तथा १० अप्रैल से १४ अप्रैल तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। योग शिविर में यम, नियम, धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग तथा शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अतः शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभार्थ पधारने का कष्ट करें। —स्वामी योगानन्द महामन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४१/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (...) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. ... in N.D.P.S.O. on 16,17-3-1995
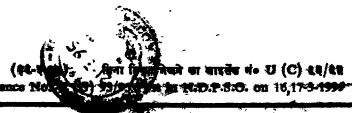
वैदिक विद्वान डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री का अभिनन्दन

महर्षि सान्दीपनि वेद प्रतिष्ठानम् उज्जैन की तरफ से जम्मू-काश्मीर प्रदेश के विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ वैदिक विद्वान् का चुनाव करके २६-२-९५ को डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी का विशेष अभिनन्दन किया गया। शास्त्री जी ने एक दर्जन ग्रन्थों का निर्माण किया है। गुरुकुल बदायूं से तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से स्नातक बनने के बाद हिन्दी, संस्कृत से एम०ए० किया, बनारस से व्याकरण शास्त्री करने के बाद त्रैतवाद विषय पर पी०एच०डी० प्राप्त की व सम्पूर्ण भारत में वेद का प्रचार कर रहे हैं। वेद सुरभि एवं वेद में आलंकारिक कथाएं ये नये दो ग्रन्थ उनके प्रकाशित हो रहे हैं। धर्मार्थ ट्रस्ट सनातन धर्म सभा एवं आर्य समाज के अधिकारियों ने उनके सम्मान में समारोह किया उन्हें अभिनन्दन पत्र, शाल, स्वर्ण शील्ड तथा राशि भेंट की गई।

डा० वेदकुमारी संयोजिका एवं प्रधाना
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर

निःशुल्क बवासीर उपचार शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज मल्हारगंज के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य "अमर भूषण" ने प्रैस विज्ञप्तिद्वारा सूचित किया है कि गत दिनांक १०, ११ एवं १२ फरवरी को आर्य समाज, मल्हारगंज में निःशुल्क बवासीर उपचार के शिविर का विशाल आयोजन किया गया। गांधी नगर गुजरात के विख्यात बवासीर विशेषज्ञ डा० के०एम० चितानिया, एफ०आर०सी०एस० (इंग्लैण्ड) एफ०आई०ए०एस० एवं एफ०ए० एस० (अमेरिका) ने अपने सहयोगीगण सर्वश्री डा० ब्रह्मानन्द चितानिया कांतिलाल उपाध्याय, चन्द्रसिंह रावत आदि के सहयोग से १२८ बवासीर पीड़ित रोगियों का आधुनिक रिंग पद्धति से सफलता पूर्वक उपचार किया।

शिविर का उद्घाटन युनियन बैंक आफ इण्डिया के प्रबन्धक श्री रमेश बिड़वई द्वारा किया गया तथा मुख्य अतिथि महाराज यशवंतराव हास्पिटल के डीन श्री के०डी० शर्मा थे :

महर्षि दयानन्दसरस्वती चेरिटेबल ट्रस्ट इन्दौर द्वारा आर्यसमाज मल्हारगंज के सहयोग से "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" की भावना से यह आदर्श आयोजन किया था, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। ट्रस्ट के चेयरमेन श्री सत्यनारायण जी लाहोटी द्वारा शिविर के समापन के समय सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

भवदीय
नरेन्द्र आर्य "अमरभूषण" प्रधान
आर्य समाज, मल्हारगंज, इन्दौर

नई आर्य समाज शाखा की स्थापना

हरियाणा के मेवात (जि० गुड़गांवां) क्षेत्र के प्रसिद्ध मेव बहुल ग्राम जुहीणा कला (निकट पुन्हाना में दि० २६-२-९५ को आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात" के तत्वावधान में आर्य समाज की स्थापना तथा आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि यह गांव पूर्णतः मेव बहुल है। यहा हिन्दु जन संख्या का अनुपात मात्र ६, ७ प्रतिशत है। इस कार्यक्रम में गांव के मुस्लिम समुदाय की सहभागीता तथा आर्थिक व नैतिक सहयोग प्रशंसनीय रहा।

इस आयोजन मे गुड़गांवा, नगीना, फिरोजपुर झिरका, पिनगवां, पुन्हाना, जुरैहरा आदि के आर्य बन्धुओ का पूर्ण सहयोग रहा।

स्थानीय नव स्थापित आर्य समाज का चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री डालचन्द आर्य, उपप्रधान श्री किरणपाल शर्मा, मन्त्री श्री रघुवीर सिंह, कोषाध्यक्ष श्री गोपाल प्रसाद।

दीवानचन्द आर्य, पुन्हाना

सृष्टि-विद्या पर गोष्ठी

नई दिल्ली १ मार्च। ऋग्वेद के "भाव-वृत्त" सूक्तों पर एक वेद-गोष्ठी ८-९ अप्रैल को नई दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था, वेद-संस्थान में होगी। भाव-वृत्त सृष्टि-विद्या का वैदिक नाम है। गोष्ठी का विषय वेद के अलावा दर्शन, काव्य और विज्ञान को भी स्पर्श करता है। वेद-संस्थान प्रति-वर्ष वेद-गोष्ठी का आयोजन करता है। इस क्रम में यह ग्यारहवीं वेद-गोष्ठी है।

गोष्ठी में, पांच सत्रों में कुल पन्द्रह शोधनिबन्ध प्रस्तुत किए जायेंगे। निबन्ध-लेखक विद्वान् दिल्ली के अलावा हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश और राजस्थान के हैं। इनमें कुछ उल्लेखनीय नाम हैं—डा० फतहसिंह, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा, डा० कृष्णलाल, डा० मानसिंह अनन्त शर्मा विष्णुकांत वर्मा, डा० सत्यकाम वर्मा।

संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने की मांग

हिसार, १६ फरवरी (नांदवाल) : हरयाणा संस्कृत अध्यापक संघ की जिला शाखा ने राज्य में आगामी शैक्षणिक सत्र से संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने की मांग की है।

संघ [illegible] बयान में कहा गया है कि त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने से सरकार को नैतिक शिक्षा का अतिरिक्त विषय लागू करने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि संस्कृत शिक्षा ही नैतिक शिक्षा का एक रूप है।

मुस्लिम समस्या और जातिवाद देश की दो गम्भीर समस्यायें

—प्रो० बलराज मधोक

कानपुर आज आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर के तत्वावधान में किदवई नगर चौराहे पर आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ती समारोह पूर्वक मनायी गयी : इस अवसर पर नगर के सभी आर्य समाजों तथा आर्य विद्यालयों का एक सामूहिक विशाल जलूस किदवई नगर क्षेत्र में निकाला गया। जलूस का नेतृत्व श्री देवीदास आर्य संयोजक, श्री हनुमानप्रसाद आर्य प्रधान, बाल गोविन्द आर्य मन्त्री तथा श्री राधेश्याम आर्य आदि कर रहे थे।

प्रो० बलराज मधोक ने इस अवसर पर कहा कि हिन्दुस्तान के सामने इस समय सबसे बड़ी चुनौतियां दो हैं एक है—मुस्लिम समस्या जिसको हल करने के लिए १९४७ में देश विभाजन की भयानक कीमत दी गई थी का अनमोदन और दूसरी है राष्ट्रीय हिन्दू समाज को अन्दर से तोड़ने के लिए जन्म पर आधारित जातिवाद का बढ़ता प्रभाव। कश्मीर समस्या मुस्लिम समस्या का ही एक अंग है : जातिवाद लोकतन्त्र की जड़ें काट रहा है और सामाजिक न्याय के नाम पर राजनीति का अपराधीकरण हो गया है।

इस अवसर पर श्री देवीदास आर्य श्री हनुमानप्रसाद आर्य आदि अनेकों अन्य व्यक्तियों ने भी महर्षि को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।
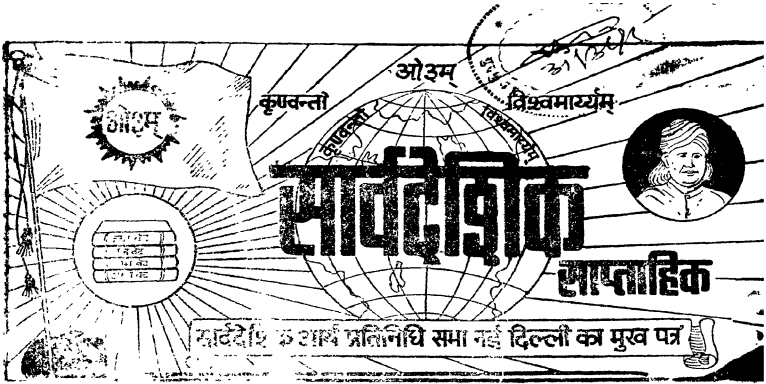
सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र' दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ६] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०५९ चैत्र कृ० ९ सं० २०५१ २६ मार्च १९९५

भारतीय संविधान में व्यापक संशोधन ही देश को बचा सकते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में पूर्व न्यायाधीशों तथा कानूनविदों की गोष्ठी

नई दिल्ली २२ मार्च। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता में कई उच्च न्यायालयों के पूर्व मुख्य न्यायाधीशों तथा वरिष्ठ कानून विदों की एक महत्वपूर्ण गोष्ठी नई दिल्ली के कान्स्टोट्यूशन क्लब स्पीकर हाल में २५ मार्च को आयोजित की जा रही है। इस गोष्ठी में भारतीय संविधान को किस प्रकार एकता और समानता का वाहक बनाया जाए, इस मुद्दे पर विचार होगा।

गोष्ठी से पूर्व संवाददाताओं को सम्बोधित करते हुए श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने कहा कि आने वाले समय में आर्यसमाज भारतीय संविधान के अवाछित प्रावधानों को बदलवाने के लिए जन जागृति अभियान चलाएगा। इस अभियान के तहत देश के समस्त प्रान्तों के अलग-अलग हिस्सों में गोष्ठियों और सम्मेलनों के माध्यम से जनता को आगाह किया जायेगा कि भारतीय संविधान में कई प्रावधान राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के स्थान पर नागरिकों की अलग पहचान, अलग समूह, गुट तथा जातियां आदि बनाए रखने के लिए जिम्मेवार है, इस विभाजित प्रवृत्तियों और प्रावधानों पर यदि आज अंकुश न लगाया गया तो भारत के पुनः विभाजन और गृह-युद्ध की स्थिति को टाला नहीं जा सकेगा।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि भारतीय संविधान की उद्देशिका में की गई समाजवाद, सेक्यूलरवाद तथा लोकतन्त्र की घोषणा का आर्य समाज समर्थन करता है। परन्तु इन सिद्धान्तो को इनके शुद्ध रूप में लागू करवाने के लिए आज भारतीय संविधान पर पुनर्दृष्टि की परम आवश्यकता है।

संविधान के मौजूदा प्रावधानों के चलते हमारा राष्ट्र न तो सच्चा समाजवादी, न सच्चा सेक्यूलरवादी और न ही सच्चा लोकतान्त्रिक देश बन पाया है। इसीलिए आर्यसमाज को विवश होकर राष्ट्र की प्रतिष्ठा और गौरव के लिए इस जन-जागृति अभियान के द्वारा संविधान में व्यापक सुधार और संशोधन का पवित्र संकल्प लेना पड़ा है।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने स्पष्ट कहा कि इन संविधान के प्रावधानों के कारण आज हमारे देश में अन्दर तथा बाहर ऐसे षडयन्त्र रचे जा रहे हैं जिससे इस राष्ट्र की मूल पहचान तथा संस्कृति नष्ट-भ्रष्ट हो जाए :

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि २५ मार्च की गोष्ठी के बाद सरकार को संविधान संशोधनों पर आवश्यक सुझाव उपलब्ध करवाने के लिए संविधान विशेषज्ञों की एक समिति भी गठित की जायेगी।

इस अंक के आकर्षण

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज द्वारा अलवर में शराब कारखाना लगाने का विरोध तेज

अलवर ३ मार्च। जिले के सारेखुर्द गांव में एक निजी समूह द्वारा लगाए जा रहे चौदह अरब के शराब कारखाने के विरोध में समाजसेवी एवं राजनीतिक संगठन उठ खड़े हुए हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने तो इसके विरुद्ध तिजारा में आमसभा की है एवं विधान सभा पर प्रदर्शन करने का निर्णय किया है।

उल्लेखनीय है कि तिजारा तहसील के सारेखुर्द गांव में एक मदिरा कम्पनी द्वारा लगाए जा रहे शराब कारखाने पर आर्य समाज ने इसे शराब के पक्षधर एवं विरोधियों की लड़ाई का सवाल बना दिया। इसी क्रम में सर्वप्रथम आर्य समाज ने शराबबन्दी अभियान चलाकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान छोटूसिंह के नेतृत्व में आन्दोलन शुरू किया। गुरुवार को इसी क्रम में पूर्व में किए गए जनजागरण अभियान के बाद तिजारा में एक हजार से अधिक लोगों की सभा की गई। इसमें वहां के स्थानीय भाजपा नेता एवं अन्य बड़े संगठनों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अभियान के संयोजक छोटूसिंह ने इसी क्रम में २४ मार्च को विधान सभा पर प्रदर्शन की चेतावनी दी है। इस आन्दोलन को लेकर युवा जनता दल, शिवसेना, जैन समाज एवं अन्य संगठन भी सामने आ गए हैं। सभी ने इस कारखाने को जिले से स्थानांतरित करने की मांग करते हुए आन्दोलन की चेतावनी दी है। दूसरी तरफ कारखाने का भूमि पूजन हो चुका है तथा निर्माण कार्य जारी है। गुरुवार को तिजारा में हुई सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष विद्यासागर शास्त्री, वरिष्ठ उपाध्यक्ष केशवदेव वर्मा सहित कई समाजसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों ने सम्बोधित किया।

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंदन में गणतन्त्र दिवस

इस माह के साप्ताहिक सत्संगों में श्री बलवीर और श्रीमती सन्तोष महेन्द्र, श्री भारतभूषण और श्रीमती पुष्पा मायर (ब्रिस्टल) श्री सुभाष अग्रवाल, श्रीमती स्वर्णलता कपूर एवं परिवारों ने यजमान बनकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, डा० तानाजी आचार्य और राजेन्द्र ओबराय ने संध्या-यज्ञादि सम्पन्न कर यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया।'

वेद-सुधा के कार्यक्रम में प्रो० भारद्वाज डा० ताना जी आचार्य, पं० श्री विनयकुमार जी, श्रीमती सन्तोष हांडा (भारत) ने वेद-मन्त्रों की सरस एवं विशद व्याख्या की।

भक्ति संगीत के सत्र में श्री लेखराम, खैरातिलाल शर्मा, श्रीमती सावित्री छावड़ा, स्वर्णलता शर्मा, शकुन्तला कहेड़, सुरक्षा वर्मा, नलिनी गुरदयाल, इन्दुमती अग्रवाल, आदि ने अपने मधुर स्वरों में भजनों का गायन किया।

इसके अतिरिक्त सत्संगों में विभिन्न अवसर पर कुछ कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे। जैसे—

१—हिन्दुत्व एकता और जागरण पर प्रो० भारद्वाज, श्री बालुभाई पटेल (विश्व हिन्दू परिषद) श्री खैरातीलाल शर्मा, श्री विनोद बढेर और श्री नवकेशचन्द्रपाल ने अपने विचार रखे।

२—डा० ताना जी आचार्य ने मकर संक्रान्ति के पर्व का स्वरूप, महत्व और उसकी सामाजिक उपयोगिता को अत्यन्त सरल और रोचक शैली में प्रस्तुत किया।

३—डा० सुरेश शर्मा ने अपने संक्षित भाषण में, वेद में प्रतिपादित अनेक विषयों पर प्रकाश डाला और वेद, कुरान और बाईबल की तुलनात्मक समीक्षा की। सभी को वेद पढ़ने-पढ़ाने, सुनने और सुनाने की प्रेरणा दी।

४—युवक सांस्कृतिक कार्यक्रम में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, विवेकानन्द, आदि महापुरुषों की जयन्ति तथा गणतन्त्र-दिवस उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाए गये। इस अवसर पर भारतीय भवन के श्री अजित डोबल(सहयोग मन्त्री) के करकमलों से तिरंगाध्वज लहराया गया। उन्होंने अपने हिन्दी भाषण में भारतीयों की एकता पर भाषण दिया साथ में महामहिम श्री ल०म० सिंघवी, उच्चायुक्त लंदन की शुभकामनाएं तथा सन्देश सबको दिया।

इसी कार्यक्रम में ३६ युवाओं ने भाग लेकर अपने लघु भाषण भजन, गीत, संगीत नृत्यादि प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री डोवल ने युवाओं को आशीर्वाद और पुरस्कार प्रदान किए। श्रीमती कैलाश भसीन ने इस कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन पूर्वक किया।

लगभग ४०० लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। श्री राजेन्द्र चौपड़ा, मन्त्री ने सबको धन्यवाद दिया।

आरती, शान्तिपाठ, प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—राजेन्द्र चोपड़ा मन्त्री
आर्य समाज लंदन

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रैस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२
प्रकाशन का समय	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ आसफ अली रोड महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२
सम्पादक	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है भागीदार या हिस्सेदार है सम्पूर्ण पूंजी मे १ प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते।	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।

मैं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान एवं विश्वास है सही है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

भारत की समस्याओं का मूल कारण
भारतीय संविधान

विमल वधावन एडवोकेट, संयोजक सार्वदेशिक न्याय सभा

कानूनी पत्रिका के जनवरी १९९५ के अंक में "आर्य समाज भी प्रहरी है—समानता और न्याय का" शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया गया था। आर्यसमाज के महान जिन्दा शहीद श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने जो कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष हैं, एक संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि आर्यसमाज को साधारण अर्थों में धर्म नहीं माना जा सकता, वास्तव में यह धार्मिक नैतिक उच्च सिद्धान्तों पर आधारित एक जीवन पद्धति है जिसका मूल सदाचार और पवित्रता है। आर्यसमाज राज्य संचालन के मामलों में तो पूर्णतः पन्थ निरपेक्ष सिद्धान्तों का समर्थन करता ही है परन्तु राज्य संचालन के लिए भी उसी उच्च नैतिक और धार्मिक आचरण की आवश्यकता है जिसकी अपेक्षा एक नागरिक से की जाती है। यदि कोई कानून या राज्य नागरिकों को तो मिल-जलकर बिना किसी भेद-भाव के पन्थ निरपेक्ष होकर रहने के लिए निर्देश दे परन्तु स्वयं नागरिकों में तरह-तरह के भेद पैदा करके उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में सूचीबद्ध करे तो राष्ट्रीय एकता की कल्पना करना भी मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

यदि किसी परिवार के निवास स्थान वाले भवन को मन्दिर घोषितकर दिया जाए तो क्या केवलमात्र घोषणासे या द्वार पर खुदवा कर वह भवन मन्दिर कहा जा सकेगा जब तक कि उसके अन्दर का वातावरण किसी मन्दिर या आश्रम जैसा न दिखे, घर में फिल्मों के अश्लील गानों के स्थान पर धार्मिक भजनों का स्वर सुनाई देना चाहिए, वेदमन्त्रों की गूंज हो, सफाई पवित्रता तथा धार्मिक आत्माओं का निवास हो, जन-साधारण के प्रवेश पर रोक न हो, उसमें प्रवेश करके धार्मिक प्रवचन सुनने को मिले। तभी उस भवन को मन्दिर या आश्रम कहा जा सकता है, केवल मात्र घोषणा से नहीं।

इसी उदाहरण को अब भारतीय संविधान पर लागू किया जाए। भारतीय संविधान की यात्रा सन् १९५० की २६ जनवरी से प्रारम्भ होती है। यह संविधान वैसे एक तरफ अनुच्छेद १४ में पूर्ण समानता की बहुत बड़ी घोषणा के साथ अनुच्छेद १५ में यह स्पष्ट कहता है कि राज्य नागरिकों में धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान आदि के आधार पर कोई भेद नहीं करेगा। अनुच्छेद १६ में भी यही कहा गया है कि रोजगार के सम्बन्ध में समस्त नागरिकों को समान अवसर दिए जायेंगे। इन मुख्य तीन अनुच्छेदों, जो कि मूल अधिकारों का ही एक हिस्सा है, के पूर्ण विरोध में स्वयं यही संविधान धारा २९ और ३० में यह कहता है कि अल्पसंख्यकों को अपनी शिक्षण संस्थाएं चलाने की विशेष स्वतन्त्रता है क्योंकि उन्हें अपनी अलग भाषा अलग लिपि तथा अलग संस्कृति बचाकर रखनी है, इस अलग-अलग-अलग के बचाव के चक्कर में संविधान यह भूल जाता है कि भारत की मूल वैदिक संस्कृति को बचाने की छूट भी किसी को देनी है या नहीं। राम और कृष्ण की संस्कृति को बचाने की छूट भारतीय संविधान में नहीं दी गई। यदि किसी स्कूल मे इस संस्कृति को बचाने का प्रयास किया जाए तो उसकी सरकार सहायता बन्द भी कर सकती है।

इन सब भेद-भाव पैदा करने वाले सिद्धान्तों/नियमों के दृष्टिगत सन् १९७६ में जब यह संविधान २६ वर्ष की यात्रा पूर्ण कर चुका था, तो एक संशोधन के द्वारा इसकी उद्देशिका मे इसके 'सेक्यूलर' होने की घोषणा कर दी गई, 'सेक्यूलर' का अर्थ स्पष्ट है कि सरकार किसी पन्थ आदि को विशेष प्रोत्साहन या कोई विशेष दर्जा नहीं देगी। वैसे इस शब्द की परिभाषा भारतीय संविधान में या किसी भी भारतीय कानून में नहीं मिलती, इसलिए साधारण अर्थ से ही काम चलाना पड़ेगा। क्या यह मान लिया जाए कि केवल मात्र घोषणा से संविधान और भारत की व्यवस्था 'सेक्यूलर' बन गई। यह तो वैसा ही हुआ जैसे किसी गृहस्थ भवन के केवल द्वार पर मन्दिर या आश्रम लिखकर तदनुसार मान लिया जाए, परन्तु अन्दर जाकर पता लगे कि रसोई में मांस पक रहा है। बैठक में शराब के दौर चल रहे हैं, फिल्मों के अश्लील गाने वातावरण और दीवारों को भी अश्लील बना रहे हैं। (शेष पृष्ठ ११ पर)

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

द्वारा आयोजित

विद्वत गोष्ठी
भारतीय संविधान पर पुनर्दृष्टि

तिथि : २५ मार्च १९९५ (शनिवार)
स्थान : स्पीकर हाल, कान्स्टीट्यूशन क्लब,
विट्ठल भाई पटेल भवन, नई दिल्ली
समय : प्रातः १० बजे से १ बजे तक

—: प्रमुख वक्ता :—

— श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
— न्यायमूर्ति श्री अल्लाड़ी कुप्पु स्वामी (सेवा निवृत्त) आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय
— श्री सुभाष कश्यप, पूर्व महासचिव लोकसभा
— श्री विजयकुमार मल्होत्रा, संसद सदस्य
— श्री ताराسिंह रावत, संसद सदस्य
— श्री रमाकान्त गोस्वामी, महामन्त्री सनातनधर्म सभा
— प्रो० बलराज मधोक, पूर्व संसद सदस्य
— डा० वेदप्रताप वैदिक, प्रधान सम्पादक भाषा
— श्री वेदप्रकाश धवन, प्रधान नई दिल्ली बार एसोसिएशन
— श्री आर०एन० मित्तल, अध्यक्ष दिल्ली राज्य उपभोक्ता आयोग
— श्री आर०के० आनन्द, प्रधान दिल्ली बार काउन्सिल
— श्री पी०एन० लेखी, पूर्व प्रधान, हाईकोर्ट एसोसिएशन
— श्री अनिल नरेन्द्र प्रधान सम्पादक वीर प्रताप
— श्री बृजकिशोर शर्मा, सेवानिवृत्त, विधि अतिरिक्त सचिव

—: निवेदक :—

सोमनाथ मरवाह वरिष्ठ अधिवक्ता कार्यकारी प्रधान	**न्यायमूर्ति महावीर सिंह** वरिष्ठ अधिवक्ता अध्यक्ष, सार्व० न्याय सभा
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री फोन : ३२७४७७१, ३२६०९८५	**विमल वधावन** अधिवक्ता संयोजक, सार्व० न्याय सभा फोन : ३२२४०९०, ३८४०९०

साहित्य शास्त्र में काव्य का लक्षण

डा० नगेन्द्र

सिद्धान्त रूप में विश्व-साहित्यशास्त्र की सत्ता मान लेने के बाद उसके निर्माण का प्रश्न सामने आता है। इसका व्यावहारिक समाधान यह है कि भारतीय और पाश्चात्य साहित्य शास्त्रों के समन्वय से, जो अपने आप में भी अत्यन्त विकसित और समृद्ध है, विश्व-साहित्य शास्त्र का निर्माण सरलता से किया जा सकता है। साहित्य-रूपी त्रिभुज के तीन कोणबिन्दु हैं, कर्ता, कृति और सहृदय। इनमें शीर्ष बिन्दु स्वभावतः कृति है, किन्तु कृति की सत्ता कर्ता और भोक्ता से निरपेक्ष नहीं है। यद्यपि आधुनिक कला-समीक्षा की कुछ एक प्रवृत्तियां उसके निरपेक्ष अस्तित्व को रेखांकित कर रही हैं, परन्तु इस प्रकार के अतिवादी मत एक सीमा से आगे मान्य नहीं है। कृति पर भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्र दोनों ने समान बल दिया है और उसका विवेचन विस्तार से तथा विचित्र दृष्टिकोणों से किया है। कर्ता की भूमिका का—अर्थात् सर्जन-प्रक्रिया आदि का पाश्चात्य साहित्य शास्त्र में और इधर सहृदय की मनः स्थिति का—आस्वादन प्रक्रिया का भारतीय काव्य शास्त्र में अत्यन्त सूक्ष्म-गहन विवेचन हुआ है। कृति या रूपायित काव्य के स्वरूप विश्लेषण में व्याकरण शास्त्र का और कर्ता तथा भोक्ता का सर्जन आस्वादन प्रक्रिया के विश्लेषण में दर्शन तथा मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि भारत में कर्तृत्व पक्ष और यूरोप में भोक्तृत्व पक्ष की सर्वथा उपेक्षा कर दी गई है। भारतीय आचार्यों ने कर्ता की मौलिक भूमिका को प्रारम्भ से ही निभ्रान्त रूप में स्वीकार किया है।

कवेतरंतर्गतं भावं भविष्यून् भाव उच्यते। (भरत)

आधुनिक शब्दावली में इसका अर्थ यह है कि काव्य का सम्पूर्ण रूप-विधान कवि की सर्जक अनुभूति पर निर्भर करता है। भट्टतोत ने काव्य सर्जना के दो अवस्थान माने हैं। दर्शन और वर्णन-दर्शनात् वर्णनाच्चाथ। इनमे दर्शन शब्द आंतरिक संकल्पना का और वर्णन रूप विधान का वाचक है, जिन्हें क्रोचे क्रमशः अन्तदर्शन और मूर्त विधान कहा है। इसी प्रकार, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अन्तर्गत भी अरस्तु में ही काव्यानुभूति के स्वरूप विवेचन के संकेत मिल जाते हैं—और आगे चलकर चिद्वादी दार्शनिकों ने आत्मवादी दृष्टिकोण से तथा मनोवैज्ञानिकों ने भाववादी दृष्टि से उसका अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण किया है। फिर भी काव्यनुभूति का भारतीय काव्यशास्त्र में और सर्जक प्रतिभा का पाश्चात्य काव्यशास्त्र में अधिक व्यवस्थित एवं परिपूर्ण विवेचन मिलता है - इस तथ्य का निषेध नहीं किया जा सकता।

अतएव भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र काफी हद तक एक दूसरे के पूरक माने जा सकते हैं और इनके समन्वय से सार्वभौम साहित्य-शास्त्र का वृत्त पूरा किया जा सकता है। उदाहरण देकर इस संकल्पना को पुष्ट किया जा सकता है।

पहले काव्य (साहित्य) के स्वरूप को ही लिया जाए। भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य की पहली निश्चित परिभाषा भामह ने प्रस्तुत की है।

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। (काव्यालकार) अर्थात सहित शब्दार्थ का नाम काव्य है। इस सूत्र का आशय अस्पष्ट है अतः परवर्ती आचार्यों के लिए इसकी व्याख्या करना आवश्यक हो गया। भामह के लक्षण का सर्वथा प्रामाणिक और तर्क संगत भाष्य किया कुन्तक ने, जिसका सारांश इस प्रकार है काव्य उस रचना या पदबंध का नाम है जिसमें शब्द अर्थ का साहित्य अर्थात् सहभाव हो। सहभाव का अर्थ है अन्यून—अनतिरिक्त प्रयोग अर्थात् शब्द और अर्थ दोनों मे किसी का महत्व एक दूसरे से

डा० नगेन्द्र हिन्दी क्षेत्र में तथा आर्यसमाज में मूर्धन्य स्थान रखते हैं पुरातन आर्य हिन्दी साहित्य सेवियों में भी आप प्रमुख हैं।

प्रस्तुत लेख काव्य परक है भविष्य में महर्षि की देन पर भी लेख मिले तो अच्छा होगा। —सम्पादक

न कम हो न अधिक—जहां शब्द अर्थ एक दूसरे के साथ स्पर्धा करते हों—और स्पष्ट शब्दों में जहां शब्द अर्थ का पूर्ण तादात्म्य या सामंजस्य हो। इसी लक्षण से 'साहित्य' शब्द का आविर्भाव हुआ जो लक्षणा के प्रमाण से (गुण के स्थान पर गुणी के प्रयोग के कारण) काव्य का पर्याय बन गया। पाश्चात्य काव्यशास्त्र से भी इस तथ्य को यथावत रेखांकित किया गया है—वर्तमान युग के एक अंग्रेज आलोचक के शब्दों में—काव्य में शब्द और अर्थ दोनों के बीच कलात्मक प्रासंगिकता—स्पष्ट भाषा में कहें तो कलात्मक तादात्म्य या सामंजस्य होना चाहिए। नयी या संरचनामूलक समीक्षा इसी तथ्य पर बल देती है और शब्दार्थ के पूर्ण एकात्म्य को काव्य का प्राण तत्व मानती है। संस्कृत काव्य शास्त्र की दूसरी प्रतिनिधि काव्य परिभाषा है रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् (पं० जगन्नाथः रस गंगाधर) रमणीय अर्थ की व्यंजना करने वाला शब्द-विधान काव्य है। यह संकल्पना अपेक्षाकृत अधिक मूर्त है और पाश्चात्य काव्यशास्त्र में प्रस्तुत अनेक काव्य परिभाषाओं में इसकी अनुगूंज मिलती है—'काव्य सामान्य रूप में, कल्पना की अभिव्यक्ति है।' कविता सौन्दर्य की लयात्मक अभिव्यक्ति है।' कविता मनोवेग की कल्पना (कल्पना अभिव्यक्ति) है।' इन सभी परिभाषाओं में मूलवर्ती समानता है। सौन्दर्य वस्तुतः रमणीय अर्थ का ही पर्याय है और रमणीय अर्थ से अभिप्रेत है ऐसा कथ्य यानी अनुभव जो चित्त का प्रसादन करता है।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि सभी काव्य-लक्षण सार्वभौम संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। देशकाल के अनुसार सौन्दर्य की परिभाषा मे परिवर्तन हो सकता है, लेकिन सौन्दर्य उस तत्व का नाम है जो प्रमाता के चित्त का अनुरंजन करता है—इस तथ्य का निषेध नहीं किया जा सकता। यहां प्रमाता के रुचि-वैचित्र्य का प्रश्न उठाया जा सकता है, किन्तु शास्त्र में प्रमाता या सहृदय की भी सामान्य परिभाषा कर इस प्रश्न का समाधान कर दिया गया है—सहृदय उस व्यक्ति की संज्ञा है जिसका मन, मुकुर के समान निर्मल होने के कारण, सभी प्रकार के प्रभाव प्रतिबिंबों के ग्रहण करने में समर्थ होता है जो संवेदनशील एवं विदग्ध होता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र मे सहृदयता का समानन्तर शब्द है 'संवेदना' जिसमें भावना और कल्पना का संयोग रहता है। अरस्तू ने ऐसे सामाजिक (दर्शक या पाठक) के लिए प्रबुद्ध या 'व्युत्पन्न' विशेषण का प्रयोग किया है और भारतीय वाङ्मय मे इसे ही 'भावक' कहा गया है।

उपर्युक्त काव्य लक्षण मे भामह का लक्षण रूपवादी और पण्डित राज जगन्नाथ का काव्य-लक्षण भाववादी है, क्योंकि पहले मे जहां भाषिक संरचना को ही काव्य की सिद्धि माना गया है वहां दूसरे में भाषिक संरचना अपने आप में सिद्धि न होकर रमणीय अर्थ को प्रतिपादक या व्यंजक है।

इनके अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्य शास्त्र में काव्य के प्रति अन्यलोकपरक दृष्टिकोण का उन्मेष भी प्रारम्भ से ही मिलता है जिसका सबसे प्रामाणिक प्रनेता है अरस्तू का काव्य शास्त्र काव्य प्रकृति का अनुकरण है। इस लक्षण में, जैसा कि मैंने अन्यत्र स्पष्ट किया है

(शेष पृष्ठ १० पर)

पर्यावरण प्रदूषण

रोक-थाम, नियन्त्रण उपशमन

विश्वंभर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु'

मानव-सभ्यता के विकास का अस्वस्थ एव स्वार्थ पूर्ण प्रयास ही पर्यावरण के प्रदूषण का मूल कारण है। प्रदूषण वृद्धि से आजकल सारा ससार चिंतित है। किन्तु जब तक मूल पर ही कुठाराघात नही होगा, तब तक समाधान तो क्या, समस्या की वृद्धि भी रोकी नही जा सकती। इसके सत्वर-प्रभावी, चिर-प्रभावी एव सुदूरगामी उपाय यहां सुझाए जा रहे हैं।

१—पर्यावरण का प्रदूषण पूर्णतया मानव-सभ्यता के विकास का प्रतिफलन है। भारत की सभ्यता ही ससार मे सबसे पुरानी है। अत पर्यावरण प्रदूषण और उसकी रोक-थाम पर यहा आदि काल से गम्भीरता पूर्वक विचार और सफल उपचार भी होते रहे है। किन्तु इधर अनेक शताब्दियो से ससार मे यह विषय उपेक्षित रहा, और अब प्रदूषण की समस्या सकट का रूप ले चुकी है। इसी सदी में इसकी ओर विश्व का ध्यान गया और अर्थ-काम प्रधान सस्कृतियो की छाया मे इस बहुमुखी समस्या के कुछ एकाध पक्षो पर थोडा-बहुत विचार हुआ। कुछ तात्कालिक उपाय भी हुए, जैसे वन रोपण, यन्त्रो के धुए का नियन्त्रण, कारखानों के अवशिष्ट का शोधन आदि। किन्तु प्रदूषण-वृद्धि की तुलना मे ये सब नितात अपर्याप्त ही सिद्ध हुए।

२—अनेक राजनीतिक कारणो से अपनी सभ्यता का श्रेष्ठ सिद्ध करने और भारतीय सभ्यता को विस्मृति के गर्त मे धकेलने के उद्देश्य से प्राचीन ऋषि-मुनियो द्वारा किए जाने वाले चमत्कारिक उपचारो को मात्र अध-विश्वास कहकर उनका उपहास किया जाता रहा। किन्तु हर्ष की बात है कि अब विश्व का ध्यान उनकी वास्तविकता/वैज्ञानिका की ओर जाने लगा है। जर्मनी मे अग्नि होम की भभूत (राख) से तैयार की हुई औषधिया लाभकारी सिद्ध हुई है और बाइस तथा पोलेड मे इनका व्यापक उपयोग किया जाता है भारत मे पर्यावरण सरक्षण सघ, नासिक महाराष्ट्र) के प्रो० एस वी मुले ने 'मेडिकना एस्टर नेठिया' द्वारा आयोजित विश्व-सम्मेलन मे अग्निहोत्र का प्रदर्शन करके बताया कि वर्तमान प्रदूषित वातावरण होम द्वारा आसानी से अनुकूल बनाया जा सकता है (देखिए, राष्ट्रीय पर्यावरण अभियान्त्रिकी अनु-सधान सस्थान, नेहरू मार्ग, नागपुर-४४००२० द्वारा प्रकाशित 'पर्यावरण पत्रिका" जून १९९३ पृ० १२ पर उद्धृत दहितवाद २-२-१९९३। उन्होने स्पष्ट किया कि अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण मे पोषक तत्व छोडे जाते हैं जो दूषित वायु को शुद्ध करते हैं, आक्सीजन की पुनश्चक्रण प्रणाली मे सतुलन बनाए रखते हैं और जल स्रोतो द्वारा सूर्य-किरणो का अवशोषण करने की क्षमता बढती है जिससे शैवाल और कीटाणुओ की अनचाही वृद्धि मे नियन्त्रण बना रहता है।

३—'होम' या 'यज्ञ' शब्द वैदिक काल के जैव ऊर्जा-विज्ञान का तकनीकी शब्द है, जिसका 'अग्नि के माध्यम से पर्यावरण के विषैले तत्वो को दूर करने की प्रक्रिया' के अर्थ मे प्रयोग किया जाता था। वेद-विज्ञानाचार्य प० वीर-सेन वेदश्रमी अपनी पुस्तक 'यज्ञ-महाविज्ञान' के प्राक्कथन मे लिखते हैं कि "यदि यज्ञ के सुगम विज्ञान को विश्व अगीकार कर ले तो उसकी समस्याओ का समाधान शीघ्र हो सकेगा। इस पुस्तक मे उन्होने व्यापक प्रयोगो और व्यावहारिक अनुभवो के आधार पर विश्व-स्वास्थ्य और विश्व-पर्यावरण के बहुत से पहलुओ पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

४—यज्ञ से बहुमुखी लाभ होता है—वायु तो शुद्ध होती ही है, शुद्ध वायु के सम्पर्क में आकर वर्षा-जल भी शुद्ध होता है। इस पर आधुनिक वैज्ञानिक भी अब विश्वास करने लगे हैं जब उन्होने चिमनियो के विषैले धुए के सम्पर्क में आने के कारण तेजाबी वर्षा होती अपनी आखो से देखली। वर्षा-जल ही किसी न किसी रूप में भूतल के नीचे या ऊपर एकत्र रहता है। यज्ञ द्वारा शुद्ध वायु के सम्पर्क में आकर भूमि भी शुद्ध हो जाती है। यज्ञ की राख (भभूत) है औषधीय एव अनुपम उर्वरक गुण विख्यात है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि रोकने हेतु विशेष वृष्टि-यज्ञ अब भी सफलतापूर्वक किए जाते हैं। इन्स्टीट्यूशन आफ इजीनियर्स (इडिया) के जरनल के पर्यावरण विशेषाक (दिसम्बर ८०) और 'कृषि इजीनियरी विशेषाक' (दिसम्बर ८१) मे वायु, जल और भूमि के शोधन के लिए यज्ञ की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला गया है।

५—पर्यावरण प्रदूषण को रोक थाम, नियन्त्रण और उपशमन के लिए यज्ञ-विज्ञान या यज्ञमय जीवन एक सफल समाधान है। यह सत्वर प्रभावी भी है और-चिरप्रभावी भी है, व आर्थिक दृष्टि से भी व्यावहारिक है। वास्तव मे यज्ञमय जीवन का प्रचार-प्रसार निरन्तर होते रहना चाहिए। यह जीवन का एक मिशन हो जाना चाहिए, जिसका बचपन से ही अभ्यास कराना आवश्यक होगा, क्योंकि बचपन मे पडे हुए सस्कार जीवन भर बने रहते हैं। इस सम्बन्ध में लेखक के विचार 'पर्यावरण सरक्षण के दो पहलू' सगोष्ठी (प्रयाग, ९, १० अप्रैल १९९४) मे पढे गए आलेख मे सविस्तार दिए गए हैं।

६—यज्ञ सम्बन्धी विचारो के कार्यान्वयन मे विशेष ध्यान यह रखना है कि समाधान को सर्वमान्य बनाने के लिए इसका सम्बन्ध किसी मत-मतान्तर या पथ-समुदाय से नही वरन व्यापक मानव-धर्म और विश्व-कल्याण से जोडा जाए और समाज के पूर्वाग्रह ग्रस्त मताध नेताओ के आक्षेपो से सावधानीपूर्वक बचते हुए इसे नैतिक शिक्षा का ही एक अग बनाया जाए जिसे छात्रो के दैनिक कार्य-क्रम म सम्मिलित करने की सिफारिश मानव ससाधन विकास मन्त्रालय द्वारा गठित नैतिक शिक्षा सम्बन्धी स्थायी समिति ने हाल मे ही की है।

७—साथ ही एक और दूरगामी उपाय भी आवश्यक होगा। पर्यावरण-प्रदूषण का सीधा सम्बन्ध जन-वृद्धि से है। जन-सख्या नियन्त्रण के उपाय भारत मे दशाब्दियो से किए जा रहे हैं, किन्तु सफल नही हो रहे। अत देश मे किसी भी मत, पथ, सम्प्रदाय आदि से निरपेक्ष रहते हुए सभी नागरिको के लिए समान नागरिक सहिता बनाकर परिवार-कल्याण योजनाए कठोरता-पूर्वक लागू की जाए और सभी उनमे सहभागी बनने के लिए बाध्य हो, भले ही इसके लिए सविधान मे सशोधन भी करना पडे। परिवारो का समुच्चय ही अन्तत. राष्ट्र बनता है, अत परिवार-कल्याण ही राष्ट्र-कल्याण है और जनसख्या वृद्धि रोकने हेतु एक से अधिक विवाह करने वाले व्यक्तियो एव दो से अधिक बच्चो वाले दम्पत्तियो पर विशेष टैक्स लगाना और उनको मताधिकार से वचित रखना तक राष्ट्र-हित मे आवश्यक होगा।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

हिमाचल भवन, नई दिल्ली

१ अप्रैल ९५, शनिवार मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक मनाया जायेगा

आप सब सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

— निवेदक :—

महाशय धर्मपाल — प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के अवसर पर—

तिहाड़ जेल में मां मीरायति का मधुर प्रवचन

२४ फरवरी, १९६५।

प्रभु कृपा और महर्षि दयानन्द जी महाराज के पुण्य प्रताप से मैं आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर वेद प्रचार का काम ७ अप्रैल १९५४ से करती आ रही हूं। यहां पर मैं आर्य समाजों, स्कूलों, कालेजों आश्रमों में वेद प्रचार करने जाती हूं। वहां पर मैं पाकिस्तान की हद पंजाब के फिरोजपुर फाजिल्का तुर्कनी वाला में भी गई। उस दिन भारत और पाकिस्तान के अधिकारियों की मीटिंग थी, मुझे देखकर बहुत सारे मुसलमान भाई आ गए और मैंने उनको उपदेश दिया वे बड़े प्रसन्न हुए। इसके साथ ही मैं जहां वेदप्रचार के लिए जाती हूं तो वहां की जेल में कैदियों को बैठाकर उपदेश दे देती हूं जिससे कुछ वर्ष हुए तो रुड़की, सहारनपुर, अल्मोड़ा, सूरतगढ़ जेलों में जाना हुआ।

अब २४ फरवरी को महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर देहली की तिहाड़ जेल में मुझे बुलाया गया। इस अवसर पर सर्व श्री अजयकुमार जी सिन्हा सुपरिन्टेंडेन्ट, डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट सुनील जी गुप्ता वहां उपस्थित थे उन्होंने मुझसे कहा आज स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस है आप उनके ऊपर ही बोलना। मेरा परिचय दिया गया और स्टेज पर बिठा दिया। मैंने वेद मन्त्र उच्चारण करने के बाद अपना लैक्चर शुरु किया।

आज वह पवित्र दिवस है जिस दिन महर्षि दयानन्द जी ने जन्म लेकर इस भारत भूमि को पुनीत किया था। महर्षि जी को मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती बनाने का श्रेय इन दो शब्दों को था पहला शिव दूसरा शव बस इन दोनों ने ही एक मामूली से बालक को कहां से लाकर कहां पर खड़ा कर दिया। जिसने आगे जाकर दुनियां के भूले भटके लोगों को वेद ज्ञान देकर आलोकित कर दिया। इतना ही नहीं संसार को झकझोर कर रख दिया। यदि शिवरात्रि की उस रात्रि को महर्षि जी को ज्ञान न होता तो वे मूलशंकर ही रह जाते। परन्तु वे सच्चे अर्थों में युग प्रवर्तक बने। इसके लिये उन्होंने शिव की तलाश में घर परिवार को छोड़ा, हाथ में कमन्डल लेकर वे नंगे पांव चल पड़े।

दूसरा शब्द शव था, जब उनकी प्यारी बहिन और चाचा की मृत्यु हुई तो वे समीप खड़े हुए देखते रहे। बस उन्होंने उसी क्षण यह फैसला कर लिया कि अब मैं मृत्यु से बचने का उपाय करूंगा। ऋषि जी ने बड़ी दृढ़ता से अपना पांव संसार रूपी कर्मक्षेत्र मे रखा और दिन प्रतिदिन अपने पुरुषार्थ से उनका पैर आगे ही बढ़ता गया।

उस समय लड़कियों का विवाह बचपन में कर दिया जाता था। उत्तर प्रदेश के एक ग्राम में पांच वर्ष का लड़का और तीन वर्ष की लड़की का विवाह हो रहा था। पौराणिक पंडित ने लावा का महूर्त प्रातःकाल चार बजे निकाला। लड़का जनवासे में अपने पिता के साथ सोया हुआ था उसने कहा उठ पुत्र फेरे लेले लड़के को क्या मालूम फेरे किसको कहते है उसने समझा कि मावा के बने हुए पेड़े कह रहा हैं कहता है बापू तू ही लेले मैं नहीं। ऋषि ने बचपन की शादी का विरोध किया और बन्द करवा दी। फिर देवियों के लिये विद्या पढ़ने का अधिकार दिलवाया, विधवा का पुर्न विवाह चालू किया।

जो लोग कहते थे तुलसी दास की बात को लेकर—

चौ०—ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी

हम आर्य लोगों ने इसका मुंह तोड़ उत्तर दिया तो अब रामायण में से इस चौपाई को निकाल दिया है हमारा उत्तर यह था—

चौ०—ढोल गंवार पशु नर घोड़ा इस पर चले धड़ाधड़ कोड़ा।

इस तरह से अछूतोद्धार का काम किया। लोग जिन्हें अछूत समझते थे उनको गले लगाया।

एक बार ऋषि जी के पास एक शूद्र आया। उसको सेवक ने मिट्टी के कसौरे में पानी दे दिया। ऋषि जी ने सेवक को कहा आगे से ऐसी भूल मत करना। हमारी दृष्टि में कोई अछूत नहीं है। अजमेर में मृत्यु से पूर्व ऋषि जी ने कहा था कि दरवाजे खोल दो आर्यों ने अपने ऋषि की बात को मानकर उनके लिए दरवाजे खोल दिये। मैं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा लेकर वेद प्रचार करती हूं।

आज इस तिहाड़ जेल में एक सन्यासिनी मां होने के नाते से आई हूं, आप सब मेरे पुत्र हैं आप सब मेरे आगे प्रतिज्ञा करें कि हम इस सजा को भुगतने के बाद बाहर जाकर फिर कोई बुरा काम नहीं करेंगे। लगभग तीन चार हजार कैदी ने सबने हाथ उठा करके ऊंचे २ बोलकर कहा कि हम अब नहीं करेंगे। आपकी बात मानेंगे।

मैंने कहा अब जेलें खाली कर दो जब खाली हो जायेंगी तो यह जो आफीसर और कर्मचारी हैं इनको मैं हरिद्वार में ले जाऊंगी वहां की एक फैक्टरी में लगवा दूंगी। सब अधिकारी वर्ग प्रसन्न हो होकर तालियां बजा रहे थे। मैं जेल से कार में बैठकर बाहर अभी आ ही रही थी तो प्रिया किरनबेदी जी अपनी कार में कहीं जा रही थी उनको ज्ञात था कि हरिद्वार से एक सन्यासिनी माता आज जेल में लैक्चर देने आई हैं वो मुझे देखकर कार रोक कर मेरे पास आ गई। उसने कहा हम आपको हरिद्वार नहीं जाने देंगे। मंगलवार पुनः स्त्रियों को उपदेश देने आना।

मैंने उनको पुस्तकें दीं और कर्मचारियों को अपना साहित्य वितरण किया। श्रद्धेय रवीन्द्र जी महता एक हजार पुस्तक छपवाकर ले गए थे वह भी वितरित की गई तथा श्री वेद प्रकाश जी आर्य जो हमारे साथ थे उन्होंने बड़े ही आकर्षक गायत्री मन्त्र के कार्ड वितरित किए। हमें जेल के भीतर आर्य समाज का प्रथम नियम गायत्री मन्त्र तथा ऋषि जी का चित्र लगा देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।

महर्षि दयानन्द की जय।

होली पर्व

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जो होली सो होली, भुला दीजिये,
प्रेम गंगा बहावो सभी साथियों।
देश रक्षा के हित मिल सभी भारतीय,
कदम अपना बढ़ावो सभी साथियो॥
ना कीचड़ उछालो ना गाली बको,
गीत गन्दे ना गावो मेरे साथियो।
पाप पाखण्ड जग में पनपने न दे,
मिलके होली मनावो सभी साथियों॥
प्रेम परमार्थ का पाठ पढ़ाते रहो,
इन उद्दण्डों का बढ़ने ना दो हौसला।
देश सेवा में तन, मन, लगा दो सभी,
सोती जनता को जगा दो सभी साथियों।
आओ मिलकर बंधेंगे स्नेह सूत्र में,
आज निज देश जाति के उद्धार हित।
मन्त्र स्वाधीनता का पढ़ाया प्रथम,
गीत ऋषिवर के गाओ सभी साथियो।
कर रहे हैं उथल व पुथल धूर्त जन,
जिनकी करतूत से देश भारत विकल।
है अभिन्न अंग भारत का कश्मीर जो,
लाज मिलकर बचाओ सभी साथियों।
आज मिलने मिलाने का त्योहार है,
दिल से नफरत मिटाने का त्योहार है।
ईर्ष्या छल कपट द्वेष कटुता घृणा,
इनकी होली जलाओ सभी साथियों।
ये है होली मिलन, दृढ़ करो संगठन,
स्वरूपानन्द का होगा प्रसन्न मन।
अपना आदर्श जीवन बनायेंगे हम,
ओ३म् ध्वज कर उठाओ सभी साथियों।

मृत्यु से अमृत की ओर

कृष्णअवतार बढ़ापुर (बिजनौर)

ओ३म् असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ॥ बृहदा० १.३.२८

'मृत्यु' का भय सर्वव्यापक है। प्रत्येक प्राणी मृत्यु से डरता है परन्तु वैदिक विचार धारा हमें निर्भय बनाती है। मृत्यु से लेशमात्र भी डरने की आवश्यकता नहीं है।

'मृत्यु' क्या है? मृत+यु=मृत्यु। 'यु' संस्कृत की एक धातु है। जिसका अर्थ है 'यु मिश्रणामिश्रणयोः' अर्थात तोड़ना और जोड़ना। यह तोड़-जोड़ ही मृत्यु है। आत्मा का पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण कर लेना ही मृत्यु और जन्म है। जन्म के पश्चात मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जन्म निश्चित है।

शरीर की बचपन, जवानी, व वृद्धावस्था में आत्मा सदा एक रूप बना रहता है। इस प्रकार जो मनुष्य मृत्यु के रहस्य को समझ लेता है, उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है तथा उसके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है। ऐसा व्यक्ति संसार में अनासक्त भाव से रहते हुए अपने कर्तव्य कर्मों को निष्काम भाव से करते हुए हंसते हुए इस संसार से विदा होता है। उसके विदा होने पर अवशिष्ट परिवार-जनों को जो दुःख होता है, उसका कारण महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस प्रकार लिखा है—"असल में प्राणियों के वियुक्त होने पर जो दुःख अवशिष्ट परिवार को हुआ करता हैं, उसका हेतु यह नहीं होता कि वियुक्त प्राणी उन्हें बहुत प्रिय था, बल्कि असली कारण यह होता है कि वियुक्त प्राणी के साथ अवशिष्ट परिवार के स्वार्थ जुड़े थे और वियोग स्वार्थ-सिद्धि में बाधक होता है। बस असली दुःख इतना ही होता है कि स्वार्थ हानि हुई।'

अपने किसी प्रियजन के वियोग के अवसर पर वेदमाता गये हुओं का शोक न करके अपने कर्तव्यों के पालन करने का उपदेश कर रही है—

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि।
तम एतत्पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्ताद भयं ते अर्वाक ॥

अथर्व—८-१-१०

हे पुरुष! (एतं पन्थाम् मा अनुगा) इस मार्ग के पीछे मत जा, जिससे कि मृत जाते हैं। (एषः भीमः) यह गये हुओं का स्मरण करते रहने का मार्ग भयंकर है। मृतों का शोक करते रहना ठीक नहीं इस मार्ग पर जाने के निषेध के द्वारा मैं तुझे (तं ब्रवीमि) उस मार्ग का उपदेश करती हू (येन पूर्व न इयथ) जिससे मृत्युकाल से पूर्व तू नहीं जाता है। मरों का शोक करता रहेगा तो समय से पहले जावेगा ही। (एतत) यह मरे हुओं का ही शोक करते रहना तो (तमः) अन्धकार है—अज्ञान है। (मा प्र पत्था) इसकी ओर मत जा। (परस्तात् भयम्) परे अर्थात इहलोक के कर्तव्यों में ध्यान न देकर गये हुओं का शोक करते रहने में तो भय ही भय है। अर्वाक् हम सबके सम्मुख आने मेंही (अभयम) निर्भयता है। कल्याण इसी बात में है कि तू शोक को छोड़कर जीवितों के सम्मुख प्राप्त हो और उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर।

कठोपनिषद में ब्रह्मचारी नचिकेता आचार्य यम से पूछता है 'मृत्यु क्या है? आचार्य यम उत्तर देते हैं—संसार में दो मार्ग हैं—'प्रेय' तथा 'श्रेय'। मानव-इन्द्रियों को प्रिय लगने वाले संसार के विषय-भोगों (प्रेय-मार्ग) में डूब जाना मृत्यु है, तथा इन विषयों में न डूबना (श्रेय मार्ग पर चलना) जीवन है, अमृत है।

संसार में दो प्रकार के मनुष्य हैं। एक वे जो शरीर को ही आत्मा मानते हैं और खाओ-पियो मौज करो' को ही जीवन समझते हैं तथा शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा को भी नष्ट हुआ मानते हैं। दूसरे वे हैं जो शरीर को आत्मा नहीं मानते, आत्मा को शरीर से अलग इसका स्वामी मानते हैं। उनकी समझ में शरीर नष्ट हो जाता है, आत्मा नहीं, आत्मा अमर है। जो शरीर को ही सब कुछ मानते हैं, उनका मार्ग 'प्रेय-मार्ग' कहलाता है। जो व्यक्ति श्रेय मार्ग के पथिक बनकर योग-जीवन पद्धति को अपना लेते हैं। वे आजीवन स्वस्थ रहकर सुखद दीर्घायु का उपभोग करते हुए मृत्यु पर विजय प्राप्त करके अमृत की प्राप्ति करते हैं।

मृत्यु से निर्भय तथा अमृत प्राप्त के लिए वेद माता निम्न मन्त्र में मानव मात्र का मार्ग दर्शन कर रही है—

मृत्युरीशे द्विपदा मृत्युरीशे चतुष्पदाम्।
तस्मात् त्वा मृत्योर्गोपतेरुद् भरामि स मा बिभे. ॥

अथर्व० ८-२-२३

मृत्यु दो पैर वाले और चार पैर वाले सभी मानवों व पशु पक्षियो पर शासन करता है। मृत्यु की मार से वही बच पाता है जो मेरी (ब्रह्म की) गोद में समाहित रहता है, अथवा जो मानव योग जीवन-पद्धति पर चलते हुए कर्तव्य कर्म करते हैं, उन्हें मृत्यु से निर्भय कर देता हूं। मृत्यु का शासन भोगियों पर है, योगियों पर नहीं।

विद्या की परिभाषा - अनित्य को अनित्य, नित्य को नित्य, अशुचि को अशुचि, शुचि को शुचि, दुःखकारक पदार्थों को दुःखकारक तथा सुखकारक पदार्थों को सुखकारक, अनात्म को अनात्म तथा आत्मा को आत्मा समझना विद्या है। केवल जान लेना ही विद्या नहीं है, उसे जीवन में उतारना होगा, आचरण में लाना होगा. अन्यथा हम जो कुछ जानते ही हैं—करते नहीं, वह जैसे हमने जाना कि हिंसा करना, चोरी करना, झूठ बोलना, क्रोध करना बुरा है परन्तु करते हैं, यह अविद्या है।

अविद्या से मृत्यु को कैसे तरते हैं—आज के युग में भौतिक विज्ञान को विद्या कहा जाता है। वेद मे उसे अविद्या कहा गया है। इस मन्त्र में कहा है 'भौतिक विज्ञान' अर्थात 'अविद्या' से केवल 'मृत्यु' को तर सकते हैं—अमृत को प्राप्त नहीं कर सकते। विज्ञान के द्वारा मृत्यु (दुःखो-कष्टों) से बचने के ही उपाय निकाले जा सकते हैं, औषधियों का पता लगाया जा सकता है, परन्तु ससार के सम्पूर्ण विज्ञान से 'अमृत' प्राप्त नहीं हो सकता। विज्ञान (अविद्या) से हम केवल भौतिक सुख-वैभव ही प्राप्त कर सकते हैं।

विद्या से अमृत कैसे प्राप्त होता है—वेद की भाषा में 'विद्या' वह है, जिससे मानव को अनुभूति हो जाए कि वह शरीर नहीं आत्मा है। आत्म-ज्ञान होने के बाद ही योगाभ्यास द्वारा अमृत (ब्रह्म) प्राप्ति होती है।

अमृत प्राप्ति का साधन हमारा यह मानव शरीर है। हमारा यह मानव शरीर प्रभु की श्रेष्ठतम रचना हैं यह शरीर सम्पूर्ण सुखों एवं ज्ञान तथा अज्ञात आनन्दों का भंडार है। इसी के द्वारा व्यक्ति ईश्वर, जीव एवं प्रकृति का साक्षात्कार करता है। संसार की सार्थकता स्वस्थ शरीर के ऊपर निर्भर है। 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। अतः अमृत-प्राप्ति की इच्छा करने वालों को सर्वप्रथम अपने शरीर को बलिष्ठ, निरोग और सामर्थ्यवान बनाना चाहिए। शरीर को सामर्थ्यवान एव शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए पवित्र आहार विहार भद्र विचार एव श्रेष्ठ मनोभावों का होना अति जरूरी है। भाव और विचार ही जीवन के संचालक हैं। हमारा जीवन एवं सम्पूर्ण जगत विचार और भावों का ही मूर्त रूप है। कहा भी है 'जैसे विचार वैसा संसार'। श्रेष्ठ विचार एवं पवित्र भावनाये आयु वर्धक एवं अमृत प्रदाता है।

अमृतसे ही मृत्यु का निवारण होता है। पूर्ण आयु सौ वर्ष या और अधिक सुस्वास्थ्य के साथ सुखपूर्वक जीना अमृत है। जो कुछ सुखी करने वाला है, आनन्दित करने वाला है, सुस्वास्थ्य देने वाला है, आयु बढ़ाने वाला है, मोक्ष प्राप्त कराने वाला है, वह सब अमृत है। इससे उल्टा जो कुछ है वह सब मृत्यु है। चरित्र से गिर जाना, धर्म से हीन होना. परिवार, समाज, राष्ट्र से विमुख होना, कायरता, चिन्ताग्रस्त और भयभीत रहना भी मृत्यु के रूप हैं।

मृत्यु से मुक्त और अमृत से युक्त रहने के लिए प्रत्येक साधक को सर्व-द्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक परमात्मा से उपासना एवं आत्मसमर्पण द्वारा संगत होकर निरन्तर ऐसी साधना करनी चाहिए जैसे खरबूजा अपने पूर्ण आकार को प्राप्त होकर पूर्णतया पक जाने पर बिना किसी का हाथ लगाये स्वयमेव

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यवीर दल का अद्वितीय महासम्मेलन

चण्डीगढ़ एव पचकूला के इतिहास मे प्रथम बार आर्य वीर दल आर्यसमाज सैक्टर ९ द्वारा बहुकुण्डीय गायत्री यज्ञ सहित दिनाक २६-२-९५ को आर्य वीर सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सड़कों पर दूर-दूर तक महर्षि दयानन्द के चित्र व ध्वनि विस्तारक यन्त्र नियोजन थे।

यज्ञ की अध्यक्षता आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता सस्थापक उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल ने की। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत जी धनुर्वेदाचार्य थे। जो कि इस वर्तमान युग मे द्रोणाचार्य भी जाने जाते हैं। आचार्य जी द्वारा यहा आर्य वीर दल की विधिवत स्थापना हुई।

सम्मेलन मे आर्य वीरो को राष्ट्र की वतमान मे गिरती हुई गरिमा के प्रति कर्त्तव्य दर्शाया गया और उन्हे ईश्वर भक्ति चरित्र निर्माण सेवा भावना से युक्त होने के लिये आर्य समाज म आय वीर शाखा चलाने एव वर्ष म एक बार आर्य वीर दल शिविर मे भाग लेने की प्ररणा दी गई।

इस उपलक्ष मे वायु प्रदूषण को दूर करने व मानव धर्म वेद की रक्षा हेतु एव तनाव मुक्त जीवन हेतु वैदिक यज्ञ, ध्यान साधना तथा वैदिक सिद्धान्तो का क्रियात्मक प्रदर्शन किया गया। चण्डीगढ व पचकूला के इतिहास मे इतनी बडी सख्या का सम्मेलन यह पहला है।

—निवेदक हितेश आय

मृत्यु से अमृत की ओर

(पृष्ठ ७ का शेष)

बेल से अलग हो जाता है और जिसकी सुगन्धि से वातावरण दूर-दूर तक महक जाता है। इसी प्रकार साधको के जीवन से दुर्गुण, दुष्कर्म और दुर्विचारा की दुर्गन्धि दूर होकर उसके जीवन मे सुगन्धि, सुयश और सुदिव्यता का समावेश हो जाये। यही मत्यु से मुक्त होकर अमृत को प्राप्त करना है।

निम्न प्रार्थना के साथ इस लेख को यही विराम देते हैं—

ओ३म विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्र तन्न आसुव ॥ यजु० ३० ३

हे सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान सर्वान्तर्यामी जगतपिता! हे अजर, अमर, अभय, शुद्ध पवित्र, सृष्टिकर्ता परमात्मन! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण दुर्व्यसन और दुखो को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह हमे प्राप्त कराइए।

हे दयानिधे! आपकी अपार दया से हम असत से सत्य पथ की ओर, अज्ञान-अन्धकार से ज्ञान प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत पथ की ओर बढते हुए, सत्कम करते हुए यज्ञमय जीवन बनाकर आपकी शरण मे आपकी छत्र छाया मे रहे। हम आपके सच्चे पुत्र/पुत्री (अमृत पुत्र) बन कर आपके गुणो को धारण करते हुए हे देव! अपना जीवन धन्य बनाकर आपका आशीर्वाद प्राप्त करे। ज्योतियो की ज्योति हे देव आपसे प्रकाश प्राप्त करके तथा अन्यो को सुपथ पर चलाते हुए सबका कल्याण कर सके। हे ज्ञान के भण्डार प्रभो! हम आपके वेद ज्ञान को प्राप्त कर घर घर मे पवित्र वेद का प्रचार प्रसार कर सकें हमे ऐसी मेधा एव शक्ति प्रदान कीजिए।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत

भगवान देव 'चैतन्य'

आज केवल भारत वर्ष ही नहीं बल्कि समूचा विश्व ही एक अजीब प्रकार के आतंकवाद की छाया में सांसें ले रहा है। एक व्यक्ति को किसी दूसरे पर विश्वास नहीं और एक राष्ट्र को किसी दूसरे राष्ट्र पर वह पहले जैसी विश्वसनीयता नहीं रही है। आज मानव की कथनी और करनी में भिन्नता आ गई है। इसीलिए एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष और वैर वैमनस्य अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका है, अन्यथा मानवता का जो खून गलियों, मुहल्लों और फुटपाथों पर बह रहा है वह इतना सस्ता नहीं। हमारे ऋषि मुनियों का कथन है कि मानव के सुख और शान्ति का आधार केवल मात्र धर्म है। धर्म का मार्ग ही एकमात्र मार्ग है जो हमें परितृप्ति दे सकता है। बिना धर्म के रेगिस्तान में पानी की तलाश में भटकते हुए मृग की तरह इन सांसारिक वासनाओं की तृप्ति की दौड़ में भटक भटक कर मनुष्य दम तोड़ रहा है। उसे कभी भी कहीं भी तृप्ति नहीं मिलती। यह ठीक है कि धर्म ही सुख का आधार है मगर आज तो धर्म भी अपने वास्तविक स्वरूप से हटकर मजहब और सम्प्रदाय की पगडण्डियों में भटक रहा है। लोग मजहब और सम्प्रदाय को ही धर्म मानने की भयंकर भूल कर रहे हैं। इसीलिए आम आदमी को भी लगने लगा है कि वास्तव में यह धर्म ही सभी, प्रकार के आतंक और खून खराबे के लिये उत्तरदायी है। उसका ऐसा सोचना स्वाभाविक भी है। कल्पना कीजिए कि एक चौराहे पर कोई व्यक्ति बार बार रेत को फांक रहा है और झुंझलाते हुए बार बार थूक भी रहा है। किसी भले आदमी ने उसके पास जाकर इसका कारण पूछा तो वह बोला कि मैंने तो सुना था कि चीनी मीठी होती है मगर इसमें तो जरा सी भी मिठास नहीं है। उसकी अज्ञानता पर वह भला आदमी हैरान रह गया। उसने उसे समझाया कि मेरे भाई यह बात तो अक्षरशः सत्य है कि चीनी मीठी होती है मगर तुम जिसे फांक रहे हो, चीनी नहीं रेत है और रेत में मिठास नहीं है। ठीक यही स्थिति उन लोगों की है जो मजहब और सम्प्रदाय के कारण होने वाले अनाचार को देखकर ही धर्म को कोस रहे हैं। ऋषि मुनियों की यह बात अक्षरशः सत्य है कि—सुखस्य मूलम् धर्मः। धर्म ही सुख का आधार है। धर्म के स्वरूप को गहराई से समझने की आवश्यकता है। धर्म तो एक सार्वभौमिक सत्य है। एक व्यवस्था है तथा मानव मात्र के लिए एक है मगर जैसे हमने परमात्मा की दी हुई जमीन को बांट कर अपने लिए अलग अलग देश आदि बना दिए ठीक इसी प्रकार हमने धर्म को बांटने का घातक कार्य भी कर दिया। जब धर्म ही बंट गया तो फिर व्यक्तियों का बंटना भी अनिवार्य हो गया। इस प्रकार सामूहिक मानवता अलग अलग दायरों में सीमित होकर रह गई: धर्म को बांटकर हमने उसकी हत्या कर दी, उसे मार दिया इसलिए जो धर्म हमारी रक्षा करने वाला था आज वही हमें मार रहा है। मरा हुआ धर्म ही मजहब और सम्प्रदाय है जो आज व्यक्ति व्यक्ति को एक दूसरे के सामने हाथों में बन्दूकें तलवारें और बम पकड़ा कर मानवता का ही नहीं बल्कि राष्ट्र और समूचे विश्व को विनष्ट कर रहा है। मनु महाराज ने कितने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

> धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
> तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥
> (मनु० १५-८-१५)

अर्थात मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है इसलिये धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले।

कितने स्पष्ट शब्दों में और कितनी मार्मिक चेतावनी दे दी गई है मगर हाय रे मानव के स्वार्थ अपनी-अपनी डफली अलग बजाने और अपने-अपने दायरे बनाकर दुकानें सजाने की प्रवृति ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा। यदि हम आज भी वास्तविक सुख और शान्ति चाहते हैं, चाहते हैं कि मानव-मानव के खून का प्यासा न बनें, चाहते हैं कि आज भी समूचा विश्व एक परिवार की तरह बनकर जीओ और जीने दो के सिद्धांत पर आरूढ़ हो सके तो इस मरे हुए धर्म को, अलग अलग दायरों में बंटे हुए इस धर्म को एकत्व प्रदान करना होगा। इसी बात को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अनुभव किया था। वे विश्वमित्र थे। हालांकि लोगों ने उनके मन्तव्य को गहराई से नहीं समझा और उनका सहयोग देने के स्थान पर उनका विरोध करने के लिए अपने-अपने खेमे और अधिक सुदृढ़ बना दिए। अपने-अपने स्वार्थों के दायरों को ही परिपुष्टता देने के लिए उनकी अवहेलना करते रहे। यदि उस समय सबने उनका सहयोग देकर पुन. इस मरे हुए धर्म को संजीवनी दे दी होती तो आज स्थिति कदापि ऐसी न होती। अपने-अपने स्वार्थ इतनी प्रबलता लिए हुए थे कि उस महामानव को समाप्त कर देने के लिये ही चारों ओर से षड़यन्त्र होने आरम्भ हो गए और उन्हें जैसे तैसे समाप्त करके ही दम लिया। भले ही उन्हें समाप्त कर दिया मगर इतना तो आज भी निश्चित है कि सच्ची शान्ति और सुख का आधार वही है जिसे वे प्रशस्त कर गए हैं। एक वैदिक धर्म की शरण में आने के अतिरिक्त और कोई मार्ग है ही नहीं। वेद परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है जो मानव मात्र के लिए है। वहां पर हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई आदि के कोई दायरे नहीं है। ईरान, ईराक, रूस, अमेरिका आदि किसी एक राष्ट्र विशेष के लिये भी यह ज्ञान नहीं है। यह तो परमात्मा द्वारा सृष्टि के आरम्भ में दिया गया वह ज्ञान है जिसकी छाया में बैठकर हम व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व के लिए सुख-शान्ति के आधार खोज सकते हैं। कभी न कभी मरे हुए धर्म को त्याग कर इस वैदिक धर्म की शरण में आना ही पड़ेगा। इस बंटे हुए धर्म को सीना ही पड़ेगा तभी प्रत्येक मानव एकता और स्नेह के सूत्र में बंध सकेंगे। अन्यथा जो विस्फोटक वातावरण आज हमारे राष्ट्र और समूचे विश्व में बन रहा है वह समूची मानवता को भस्म कर देगा।

(क्रमशः)

साहित्य शास्त्र में काव्य का लक्षण

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रकृति का अर्थ मूलतः जीवन ही है। अरस्तू के लक्षण में, जो कालान्तर में अनेक रूप धारण करता हुआ आर्नल्ड की प्रसिद्ध अवधारणा 'काव्य जीवन की समीक्षा है'—को पार कर सामाजिक यथार्थवाद तक यात्रा कर चुका है, काव्य को जीवन का आख्यान मान लिया गया है। यों तो भाववादी काव्य-लक्षण में भी काव्य और जीवन के सम्बन्ध की उपेक्षा नहीं की गयी रमणीय अर्थ भी तो वस्तुतः जीवन के रसात्मक बोध पर ही निर्भर करता है। जीवन की उपेक्षा हो भी कैसे सकती है? क्योंकि संस्कृत काव्यशास्त्र के सभी लक्षणों का प्रतिपादन प्रमुख रूप से प्रबन्ध-काव्यों के आधार पर ही किया गया है। फिर भी इनमें जीवन के आख्यान की उपेक्षा उसके फल योग 'प्रीति' या 'चित्त' की चमत्कृति' पर ही अधिक बल दिया गया है, इसमें सन्देह नहीं। उधर अरस्तू तथा उनसे अनुप्रेरित जीवनवादी काव्य-चिंतकों ने भी "प्रीति" अथवा 'चित्त की चमत्कृति' की उपेक्षा नहीं की है, किन्तु उन्होंने इसे परिणाम ही माना है। भारतीय काव्य-शास्त्र में जीवन के आख्यान को वास्तव में काव्य-प्रयोजनों के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है।

काव्य से जीवन में पुरुषार्थ चतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि होती है, नाट्य-कला धर्माचरण तथा लोक-व्यवहार ज्ञान की साधक है—इस तथ्य को भरत से लेकर परवर्ती सभी आचार्यों ने यथावत स्वीकार किया है। तात्विक दृष्टि से प्रकृति और प्रयोजन में भेद है, किन्तु व्यवहार में ये दोनों एक दूसरे से अंतर्मुक्त रहते हैं। प्रयोजन का आविर्भाव प्रकृति से होता है और अन्त में प्रयोजन प्रकृति का अंग बन जाता है। इस दृष्टि से विचार करने पर, काव्य-विषयक ये दोनों दृष्टिकोण यानी भाववादी तथा वस्तुवादी दृष्टिकोण, एक दूसरे से बहुत दूर नहीं रह जाते और इन दोनों के संयोग से जीवन की रसात्मक (भाव कल्पनात्मक) अभिव्यक्ति के रूप में काव्य के स्वत्व की सार्वभौम व्याख्या की जा सकती है।

"होलीकोत्सव" पर बृहद् यज्ञ

बागपत। १६-३-९५ यहां आर्यसमाज बागपत के सौजन्य से मा० सत्यप्रकाश गौड़ के पुरोहित्व में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त मा० राकेशमोहन ने होली पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। यज्ञ समाप्ति पर सत्यार्थप्रकाश, दैनिक यज्ञ पद्धति तथा मा० मुरारीलाल द्वारा लिखित "गायत्री महामन्त्र की महिमा" निःशुल्क जनता में वितरित की गई। प्रधान जयप्रकाश वर्मा व मन्त्री सत्यप्रकाश गौड़ ने होली को भ्रातृभाव वर्धक पर्व बताते हुए देश में पूर्ण मद्य-निषेध का आह्वान किया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रजपुरा (बदायूं) का वार्षिकोत्सव ७,८,९ मार्च ९५ को सम्पन्न हुआ।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी सरस्वती 'वेद-भिक्षु' (चन्दौसी-मुरादाबाद) ने ओजस्वी भाषा एवं शैली में वेद का प्रचार कर समाज में, धर्म के नाम पर व्याप्त अन्ध-विश्वास, कुरीतियां, रूढ़ियों को दूर कर सत्य की ओर उन्मुख कर जनता को आश्वास्त किया।

स्वामी जी ने मौलिक चिन्तन एवं मनन का त्यागमय परिचय देकर आर्य समाज को उज्ज्वल किया।

— शिवकुमार आर्य शास्त्री

आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर, राजनगर, पालम कालोनी पुराना महरौली मार्ग) नई दिल्ली-४५ को एक सुयोग्य वानप्रस्थी अथवा सन्यासी की तुरन्त आवश्यकता है। भोजन व आवास समाज की ओर से होगा। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर सम्पर्क करें।

डा० जसबीर आर्य मन्त्री
C/o आर्य मेडीकल स्टोर
राजनगर (निकट नया गुरुद्वारा)
पालम कालोनी, नई दिल्ली-४५

भारत की समस्याओं का मूल कारण

(पृष्ठ ३ का शेष)

जी हां, भारतीय संविधान एक ऐसा ही मन्दिर या आश्रम है, अर्थात् एक ऐसा ही सेक्यूलरवादी है जिसके अन्दर स्थान-स्थान पर गैर-सेक्यूलर धाराओं की भरमार है।

भारत की संसद का आदेश देश के समस्त राज्यों में नहीं चल सकता क्योंकि जम्मू-काश्मीर और नागालैण्ड जैसे राज्यों को विशेष दर्जा प्राप्त है, दिल्ली या उत्तर प्रदेश में पैदा हुआ व्यक्ति जम्मू-काश्मीर में स्थाई निवास, नौकरी, भूमि विक्रय आदि नहीं कर सकता। क्या यह अनुच्छेद १५ के विपरीत जन्म स्थान के आधार पर भेद-भाव नहीं। जब जम्मू-काश्मीर में जन्मा व्यक्ति अन्य राज्यों में स्वतन्त्र है तो इसके विपरीत क्यों नहीं ?

दूसरी तरफ भारतीय संविधान का भाग चार कुछ ऐसे नीति निर्देशक तत्वों की ओर संकेत करता है जिन्हें संविधान बनाने वाली सभा ने इस उद्देश्य से बनाया था कि ये राज्य संचालन की नीतियों के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण निर्देश है। इस भाग में अनुच्छेद ३६ से ५१ तक कई महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है, जैसे एक समान नागरिक कानून उपलब्ध कराना परन्तु सरकार ने इस ओर आज तक कोई ध्यान नहीं दिया, इसका कारण है अनुच्छेद ३७ में सरकार को प्राप्त अनैतिक छूट, इस अनुच्छेद में जहां एक तरफ यह कहा गया है कि यह नीति निर्देशक तत्व राज्य संचालन के मूल तत्व है तथा कानून बनाते समय इन तत्वों को लागू करना सरकार का कर्तव्य होगा, वहीं साथ में यह छूट भी दे दी गई कि इन तत्वों को लागू करने के लिए कोई अदालत आदेश नहीं जारी कर सकेगी : ये तो वैसा ही हुआ कि परिवार का कोई बुजुर्ग नवयुवक को समझाए कि बेटा महिलाओं के साथ किसी प्रकार का बुरा सलूक नहीं करना चाहिए, यह नीति निर्देशक सिद्धान्त है और साथ ही यह भी कह दे कि यदि तू ऐसा करेगा तो भी हमारी ओर से कोई विरोध या नाराजगी जाहिर नहीं की जाएगी।

इस प्रकार से ये कुछ दृष्टान्त भारतीय संविधान की अनैतिकता के। इनसे साबित होता है कि हमारे राष्ट्र पर जो गृह युद्ध का खतरा हर समय विद्यमान रहता है उसका मूल कारण है यह भारतीय संविधान जो भारत के लोगों को एक जैसी संस्कृति के सदस्य बनाने के स्थान पर अलग-अलग संस्कृतियों में बांट कर रखना चाहता है, जब कि इतिहास गवाह है कि भारत के समस्त नागरिक मूलतः एक ही वैदिक संस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं। यहां के नागरिक चाहें वे अपने को हिन्दू, मुसलमान या ईसाई कुछ भी कहें, उनकी नाड़ियों में राम और कृष्ण की संस्कृति वाला रक्त बह रहा है। राष्ट्रीय एकता का सपना तभी पूरा हो सकता है जब भारतीय संविधान असमानता का राग बन्द कर दे।

आज ४५ वर्ष बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि भारत की समस्त सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का समाधान भारतीय संविधान में आमूल-चूल परिवर्तन लाकर ही सम्भव हो सकता है।

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में २५ मार्च १९९५ को नई दिल्ली के कान्स्टीट्यूशन क्लब में आयोजित की गई एक विद्वत गोष्ठी में कई कानून विदों तथा सेवानिवृत्त न्यायाधीशों ने इस बात पर सहमति जताई है कि वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय संविधान पर पुनर्दृष्टि अत्यन्त आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस मनाया

सुमेरपुर २४, फरवरी।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, सुमेरपुर की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस बड़े जोर-शोर से मनाया गया।

प्रातः ६ बजे करीब प्रभात फेरी का आयोजन किया, जिसमें करीब २०० आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं ने भाग लिया। प्रभात फेरी शहर के अन्दर गलियों में निकाली गई, जिसने आकाश को नारों तथा गीतों से गुंजायमान किया।

प्रभात फेरी के पश्चात हवन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता केशवदेव शर्मा ने की तथा नगर संचालक कुलदीप राजपुरोहित 'आर्यदीप' की उपस्थिति में करीब १०० आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं को दीक्षित किया गया।

हवन के पश्चात आर्य वीर दल का सांस्कृतिक तथा शारिरिक कार्यक्रम हुआ। जिसमें सार्वदेशिक आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक श्री पूनमचन्द शास्त्री द्वारा प्रशिक्षित आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं का शारीरिक प्रदर्शन किया गया। आर्य वीरांगनाओं द्वारा तलवार सचलन काफी प्रभावी रहा है।

श्री केशवदेव शर्मा द्वारा रचित गीतों तथा उनके द्वारा प्रशिक्षित आर्य वीरों व वीरांगनाओं द्वारा महर्षि दयानन्द का सन्देश सुनाया गया तथा सास्कृतिक कार्यक्रम किया गया।

दो दिन पूर्व ली गई परीक्षा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वालों की पुस्तकें तथा विशिष्ट आर्य वीरों तथा वीरांगनाओं को मैडल देकर सम्मानित किया गया।

शाखानायक कमलेश व मन्नाराम तथा शाखानायक, पीमावा के मांगीलाल को भी सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्यअतिथि, सुमेरपुर, नगर पालिका के चैयरमैन श्री लुम्बाराम मेडतिया तथा अध्यक्ष शिवगंज, नगर पालिका के चैयरमैन श्री भीमराज अग्रवाल थे। इस अवसर पर पूज्यपाद स्वामी चेतनानन्द जी तथा साकेत आश्रम के स्वामी रामानन्द जी के प्रवचनों ने आर्य वीरों व वीरांगनाओं तथा नागरिकों को लाभान्वित किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, सुमेरपुर के संरक्षक श्री गणेशमल विश्वकर्मा तथा आर्य वीरांगनाओं की शाखा संचालिका श्रीमति अरुणा नागर का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का नेतृत्व श्री पूनमचन्द शास्त्री ने किया।

कुलदीप राजपुरोहित 'आर्यदीप'
नगर संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, सुमेरपुर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-३-९५) बिना टिकट भेजने का आदेश नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 23,24-3-1995

डी. डी. ए. ने यज्ञवेदी तोड़ने का दुस्साहस किया

डी० डी० ए० ने, आर्य समाज नारंग कालोनी कन्हैय्या नगर त्रिनगर दिल्ली-३५ के मन्दिर का चबूतरा जिस पर कि बैठकर यज्ञ-हवन किया जाता था कतिपय अनार्य लोगो के कहने पर तोड़ दिया है जिससे कि यज्ञ करने में घोर असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। डी० डी० ए० के अधिकारियों की इस कार्यवाही का विरोध तथा रोष प्रकट किया गया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। दिल्ली के विकास मन्त्री चौधरी साहबसिंह वर्मा एव क्षेत्रीय विधायको आदि सभी से मिलकर थक चुके हैं कहीं से कोई सुनवाई नहीं हो रही है। अतः आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों तथा सदस्यो ने सीधे आन्दोलन की चेतावनी दी है। इस आन्दोलन में आवश्यकता पड़ने पर आर्य समाज के पदाधिकारी अपनी जान पर खेलकर भी इस राष्ट्रीय संस्था की रक्षा के लिए तैयार हैं।

—मक्खनसिंह बटाना,
मन्त्री, आर्य समाज नारंग कालोनी
त्रिनगर दिल्ली-३५

नेपाल आर्य समाज द्वारा महर्षि जन्मोत्सव मनाया गया

१२ फरवरी १९९५ दिन रविवार के दिन हम लोगो ने साहरघाटी, जि० मधुबनी (बिहार) और इसी स्थान के श्री सुशीलकुमार और ब्रह्मचारी वेदव्रती तथा मुजफ्फरपुर (बिहार) के श्री कमलेश दिव्यदर्शी द्वारा जिला अध्यक्ष श्री रामेश्वर सिंह "रमाकर" के सभापतित्व में जातिवाद, छुआछूत, दहेज, आत्मज्ञान इत्यादि विषय में गहन प्रवचन हुआ। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शुभ जन्मोत्सव के अवसर पर सवेरे आर्य समाज-अमर रहे, जगत गुरु महर्षि दयानन्द की जय हो, वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा-ऊंचा रहे, वैदिक नाद बजाउने—ऋषि दयानन्द हैं, किरआ दण्डी-अमर रहें इत्यादि नारो के साथ प्रभात फेरी किए। पश्चात् यज्ञ किए और फिर प्रवचन के बाद इसी जिला के लालपुर ग्रा० वि० स०, वा० नं० ३ बस्ती श्री फुलेश्वर ठाकुर के घर के पवित्रीकरण हेतु सबके सब गए। हजारों जनमानिस के बीच सफलतापूर्वक जन्मोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। धन्यवाद।

अध्यक्ष
रामेश्वरसिंह

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज झबरेडा का वार्षिकोत्सव दिनांक १-२ अप्रैल ९५ को बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन होगा जिसका विषय वर्तमान समय मे आर्य समाज की उपयोगिता निश्चित किया है। समारोह मे अनेक उपदेशकों, विद्वानों भजनोपदेशकों को निमन्त्रित किया गया है।

उदयवीर सिंह शास्त्री
मन्त्री

आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा विचार गोष्ठी-का आयोजन-

२६ मार्च, १९९५ रविवार को सायं ४ बजे आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

विषय : प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, अध्यक्ष पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् प्रधान सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा।

उद्घाटन : प्रि० मोहन लाल प्राचार्य पी० जी० डी० ए० वी० कालेज वक्ता प्रो० बलराज मधोक श्री दीपचन्द्र बन्धु श्री वीरेश प्रताप चौधरी प्रो० पी० के० चादला श्रीमती सरोज दीक्षा। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

नेमराज आर्य स्वागताध्यक्ष,	सुधाकर शास्त्री,	नरेश आर्य
(प्रधान आर्य समाज)	(सयोजक)	प्रबन्धक

साहित्य सेवियों से—

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द का महान योगदान है। उसके पश्चात हिन्दी के युग परिवर्तन लाने में प० नाथूराम शंकर शर्मा, पं० हरिशंकर शर्मा, पं० पद्मसिंह शर्मा पर अभिमान है उसके बाद आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन साहित्य के क्षेत्र में आर्य समाज का नाम लेने में गौरव अनुभव करते थे।

वर्तमान में हिन्दी जगत में जाने-माने डा० नगेन्द्र व डा० ब्रजेन्द्र स्नातक अपना प्रमुख स्थान रखते हैं - पर आर्य समाज के क्षेत्र में हिन्दी की सेवा में यदि अपना नाम जोड़ दें तो दोनो का सम्मान बढ़ेगा।

भविष्य में आर्य समाज के क्षेत्र मे यदि हिन्दी के विद्वान अपनी प्रतिभा दिखा सकेंगे तो एक परम्परा आगे भी बढ़ेगी साहित्य सेवियों में। आर्य समाज का भी नाम चलता रहेगा।—सम्पादक

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्य की झलक

अखिल भारतीय सेवाश्रम सघ के कार्यकर्ताओ ने जो वैचारिक क्रान्ति अभियान १७-१२-९४ से १५-१-९५ तक म० प्र० के झाबुआ जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में चलाया था, उसके परिणाम स्वरूप ग्राम खड़ी के करीब १०० व्यक्ति जो कि ईसाई मत स्वीकार कर चुके थे, आर्य समाज के सदस्य बने। इतना ही नहीं उन्होंने ईसाई मिशनरियों को वहां से निकले जाने के लिए नारे आदि भी लगाये। यह सूचना [illegible] समाज के प्रधान श्री देवीलाल जी आर्य ने अपने [illegible] पत्र द्वारा दी है।

मेरी आर्य सज्जनो से प्रार्थना है कि वनवासी क्षेत्रों में जागृति लाने के लिए व आर्य सिद्धातों के प्रचार-प्रसार के लिए संघ का तन, मन, धन से सहयोग करें।

वेदव्रत महता
महामंत्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

आर्य समाज लोधी रोड दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव

५-३-९५ रविवार को आर्यसमाज लोधी रोड नई दिल्ली की तरफ से महाशय कृष्णहाल जोर बाग के विशालहाल में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री का वहां के अधिकारियों तथा अन्य भिन्न-भिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने फूलमालाओ द्वारा हार्दिक स्वागत किया श्री शास्त्री जी ने सबका धन्यवाद करते हुए अपने सारगर्भित भाषण से उपस्थित जनसमूह को लगभग एक घण्टे तक मोहित किया। आपने महर्षि पर अनेक दृष्टांत बताते हुए आर्य समाज की गतिविधियों का वर्णन किया उपस्थित आर्यजनों पर अच्छा प्रभाव पड़ा—अन्त मे शास्त्री जी के करकमलों से भिन्न-भिन्न कार्यकर्ताओं को जिला समाज की तरफ से दी जाने वाली सुन्दर शील्ड प्रदान की गयी।

चन्द्रप्रकाश आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज,नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ७] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ चैत्र शु० २ सं० २०५२ २ अप्रैल १९९५

संविधान के पक्ष-पात पूर्ण प्रावधानों को हटाया जाना आवश्यक है

आर्यसमाज देश भर में जन जागृति अभियान चलाएगा

नई दिल्ली—२५ मार्च, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी की अध्यक्षता में देश के कई पूर्व न्यायविदो अधिवक्ताओ, सासदो, पत्रकारों तथा समाज शास्त्रियो की एक गोष्ठी विठ्ठल भाई पटेल भवन में सम्पन्न हुई। गोष्ठी का विषय था "भारतीय सविधान पर पुनर्दृष्टि"।

अल्पसख्यक वर्ग को शिक्षण सस्थाए चलाने का विशेषाधिकार, जम्मू-कश्मीर जैसे कुछ राज्यों को विशेष दर्जा, सेक्यूलरवाद के नाम पर समाज में भेदभाव पैदा करते सविधान के कई प्रावधानो को बदला जाना चाहिए, यह विचार सर्वसम्मति से इस गोष्ठी मे उजागर हुआ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् जी की पवित्र प्रेरणा से आर्य समाज में एक नए अध्याय का सूत्रपात होने जा रहा है। इन विचारो को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को संविधान के महत्वपूर्ण विषयो की पूर्ण जानकारी रखनी चाहिए।

इस गोष्ठी के अन्त मे दिए अध्यक्षीय भाषण मे श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने कहा कि आने वाले समय मे यदि देश की मूल संस्कृति की रक्षा करनी है तो आर्य समाज को ही यह जिम्मेवारी अपने कन्धो पर लेनी होगी। श्री वन्देमातरम् ने कहा कि आर्य समाज की ताकत जब विदेशी सहायता प्राप्त उस निजामशाही को झुका सकती है जिसके समक्ष भारत की पूरी सरकार भी अपने आपको असहाय महसूस कर रही थी, तो कोई कारण नही कि आज इन प्रावधानो मे परिवर्तन के लिए हम भारतीय नेताओ पर अपना नैतिक दबाव न डाल सके।

गोष्ठी मे न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह, न्यायमूर्ति श्री गुमान मल लोढा; न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र सच्चर, सासद श्री रामा सिंह रावत, विजय कुमार मलहोत्रा, लोक सभा के पूर्व महासचिव श्री सुभाष कश्यप, पूर्व सासद श्री बलराज मधोक वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह, श्री प्राणनाथ लेखी रामफल बसल तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री अनिल नरेन्द्र ने अपने विचार व्यक्त किये।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह ने कहा कि भारतीय सविधान मे व्यापक परिवर्तनों की मांग, आर्य समाज कई वर्षों से करता आ रहा है। परन्तु अब यह माग एक व्यापक आन्दोलन का रूप लेगी। उन्होने देश भर के आर्य समाजियो का आह्वान किया कि आज यदि इस

(शेष पृष्ठ २ पर)

नव सृष्टि सम्वत् की शुभ कामनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त प्राणी मात्र के लिए नवसृष्टि सम्वत् तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर समृद्धि, सुख तथा शान्ति की कामना करती है सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने वैदिक धर्मानुयायियों को आह्वान किया है कि समस्त विश्व से जातिवाद, सम्प्रदायवाद तथा प्रान्तवाद रूपी भेद पैदा करने वाले सिद्धांतो को चुनौती देने के लिए अपने में बल और बुद्धि पैदा करें।

विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि सदस्यों के नाम

सभा-प्रधान श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् के आदेशानुसार वृहत्-साधारण अधिवेशन २०-२१ मई ९५ को हैदराबाद में होने जा रहा था उसकी पूर्व तिथि परिवर्तित कर २७-२८ मई ९५ करने का निश्चय किया है। सभी प्रान्तीय सदस्य गण अपनी यात्रा हेतु रेल रिजर्वेशन सुविधानुसार पूर्व कराने की कृपा करें।

नोट—प्रतिनिधि सभाये अपने प्रतिनिधियों के नाम शीघ्र भेजने की कृपा करें। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री (सभा-मन्त्री)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज देशभर में जन-जागृति अभियान चलाएगा

(पृष्ठ १ का शेष)

दायित्व को न निभाया गया तो आने वाला समय हमारे राष्ट्र तथा संस्कृति के लिये विनाशकारी साबित होगा ।

लोक सभा के पूर्व महा सचिव श्री सुभाष कश्यप ने कहा कि जिन लोगों ने संविधान बनाया वे ब्रिटिश राज्य के निर्देशों से बन्धे थे अतः वे भारतीय जनता की मूल कठिनाइयों को दूर करने के लिये कुछ नही कर पाये । संविधान निर्माताओं ने बेशक संप्रभुता, समाजवाद, एवं पंथ निरपेक्षता जैसे उच्च सिद्धांतों की रचना की थी परन्तु कोई प्रावधान इन सिद्धांतो की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो सका इसलिए संविधान पुनरावलोकन की अत्यन्त आवश्यकता है ।

श्री कश्यप ने कहा कि आर्थिक व राजनैतिक स्तर पर देश को बेचा जा रहा है जबकि भारत में अधिकांश लोग आज भी शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मूल अधिकारों से वंचित है । श्री गुमान मल लोढ़ा तथा श्री विजय कुमार मलहोत्रा ने संविधान के तहत कुछ राज्यो को विशेष दर्जा देने वाले प्रावधानो को राष्ट्र विरोधी बताया । श्री मलहोत्रा ने कहा कि संविधान की इस भेदभाव पूरक तथा अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के प्रावधानो के कारण ही आज जामिया मिलिया तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालय जैसी संस्थायें खुले रूप से पाकिस्तान का प्रचार केन्द्र बन गयी है । जबकि इन्हें सारा धन भारत सरकार द्वारा भारतीयों के कर से दिया जाता है ।

प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि इन पक्षपात पूर्ण प्रावधानो में परिवर्तन की आवश्यकता को चुनावी मुद्दा बनाया जाना चाहिये और यह तभी संभव है जबकि केन्द्र मे हिन्दुत्व में आस्था रखने वाली पूर्ण राष्ट्रवादी सरकार हो उन्होंने श्री बाल ठाकरे को हिन्दूवादी तथा राष्ट्रवादी नेता बताया ।

लोक सभा सदस्य श्री रासासिंह रावत ने कहा कि समाजवाद शब्द भी पश्चिमी दृष्टिकोण का है उन्होंने भी संविधान में भारत की मूल संस्कृति तथा परिवेश के मुताबिक परिवर्तन से सहमति व्यक्त की । दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा पूर्व अध्यक्ष श्री प्राणनाथ लेखी ने कहा कि देश की एकता के साथ किसी भी कीमत पर कोई भी समझौता नही किया जा सकता चाहे हमें राष्ट्रविरोधियों के अन्तिम बीज तक उनका खून बहाना पड़े ।

गोष्ठी के अन्त में सभामंत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसे उपस्थित वक्ताओं तथा श्रोताओं ने सर्वसम्मति से पारित किया ।

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह सम्मेलन, जिसमे न्यायपालिका के पूर्व सदस्य, संसद सदस्य, विधि व्यवसाय के सदस्य, संवैधानिक कानून के प्राध्यापक आदि सम्मिलित हैं, सर्व-सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित करता है ।

(१) भारतीय संविधान के अंगीकृत करने के पश्चात, साढ़े चार दशकों से भी अधिक समय के अनुभव से इसका पुनरावलोकन करने की आवश्यकता प्रतीत होती है ।

(२) ऐसा मालूम होता है कि हम धीरे धीरे "राज्यीय संघ" के स्थान पर एक "विभिन्न तत्वों के संघ" के रूप मे परिवर्तित हो रहे हैं ।

(३) केन्द्र तथा राज्य स्तर की विधान सभायें अब ऐसी संस्थायें नही रह गयी हैं, जहां जन साधारण की इच्छाओं और अपेक्षाओं को मान्यता दी जाती हो ।

(४) 'धर्म-निरपेक्षता' के नाम पर, जिसकी संविधान में कहीं भी व्याख्या नहीं की गयी है, भारत की जनता को धर्म, भाषा और संस्कृति के आधार पर विभाजित किया जा रहा है ।

(५) यह सत्य है कि संविधान का प्रारूप तैयार करते समय अंग्रेजों द्वारा व्यवहारित 'पृथक मताधिकार' की योजना ताक पर रख दी गयी थी, लेकिन अब यह दूसरे रूप मे, समान परिणामों सहित, पुनः प्रकट हो रही है ।

(६) हम यह मानते और जानते है कि हमारे संविधान के सिद्धांतों के अनुसार भारत का प्रत्येक नागरिक "कानून की दृष्टि" में बराबर हैं और उसे रोजगार के समान अवसर प्राप्त हैं, लेकिन उसमें निहित कुछ धारायें इसके सर्वथा विपरीत हैं ।

यह सम्मेलन संविधान के पुनः आलेखन की माग तो नही करता है । लेकिन इतना अवश्य चाहता है कि उसमे निहित उन धाराओं को, जो देश की जनता को विभाजित करने वाली हैं और पृथकता-वाद को प्रोत्साहित करती है, उन्हें पूर्णरूपेण तुरन्त रद्द कर दिया जाय ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक समिति के गठन का भी प्रस्ताव करती है जो इस प्रकार की धाराओं को पूर्णतः रद्द करने के लिए अथवा उनमे अपेक्षित संशोधन करने के लिए, अपनी संस्तुति प्रस्तुत करें ।

संशोधनों के सुझाव के लिये विशेष समिति गठित करने की घोषणा

नई दिल्ली । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने "भारतीय संविधान में पुनर्दृष्टि, पर आयोजित गोष्ठी मे दिये अपने अध्यक्षीय भाषण में यह घोषणा करते हुये कहा कि देश के वरिष्ठ न्यायविदो अधिवक्ताओ पत्रकारो तथा समाज शास्त्रियो को लेकर एक विशेष समिति गठित की जायेगी जो यथाशीघ्र इस आशय का सुझाव देगी कि संविधान के किन प्रावधानों में क्या परिवर्तन किया जाय ।

पंजाब हरियाणा तथा आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीशों ने भी भारतीय संविधान में परिवर्तन को आवश्यक बताया

पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रामा जोअस अपनी पूर्व व्यस्तता के कारण इस गोष्ठी में भाग न ले सके परन्तु उन्होने सार्वदेशिक सभा क इस पवित्र संकल्प का समर्थन किया है कि भारतीय संविधान के कई प्रावधानों में व्यापक फेरबदल किया जाना चाहिये । उन्होने भविष्य में भी सार्वदेशिक सभा के इन उद्देश्यों मे पूर्ण समर्थन तथा सहयोग देने का आश्वासन दिया है ।

इसके अतिरिक्त संविधान निर्माण करने वाली सभा के सदस्य स्व० श्री अल्लाडी कृष्णमूर्ति के सुपुत्र श्री कुप्पू स्वामी ने भी हैदराबाद से सार्वदेशिक सभा के इस अद्वितीय प्रयत्न की प्रशंसा करते हुये इसमें सहयोग का आश्वासन दिया है । श्री कुप्पू स्वामी आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं । ऐसा ही आश्वासन केन्द्र सरकार के सेवा निवृत्त विधि अतिरिक्त सचिव श्री बृजकिशोर शर्मा ने भी दिया है ।

हिन्दू समाज में नव चेतना लाने के लिए निम्न कार्यों की ओर ध्यान दें

आर्य समाज के सदस्य और अधिकारियों से अपील – हम आपको समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओ तथा साहित्य से अवगत कराते रहते हैं कि भारत में हिन्दुओं को किन-किन समस्याओ, षड्यन्त्रो से खतरा उत्पन्न होता जा रहा है । इन खतरो से निपटने के लिए हमने आपको परिपत्र भी भेजे थे । हिन्दू के अस्तित्व को खतरा किन बातों से है जिन पर हमें कार्य करने हैं ।

(१) समाज में व्याप्त छुआछूत को जड़ से उखाड़ फेंकना, पारस्परिक व्यवहार बढ़ाना और सहभोज कार्यक्रमों का आयोजन करना ।

(२) समाज मे जन्मगत जात-पात छुआछूत को हटाना, मद्य-निषेध व गोरक्षा का प्रमुख कार्य उत्साह से करने हैं ।

(३) बढ़ते हुए इस्लाम तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण को रोककर । परावर्तन/शुद्धि कार्य को आन्दोलन का रूप देना ।

(४) अन्तर्जातीय विवाहों का प्रोत्साहन करना ।

हमारी प्रार्थना है कि समस्त समाज कटिबद्ध होकर उक्त कार्यों को करते हुए अपने को सुरक्षित करें ।

—सभा-मन्त्री

आर्य-समाज

रामधारी सिंह दिनकर

स्वाभिमान का उदय

सत्यार्थ-प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने ब्राह्म-समाज और प्रार्थना-समाज के विषय में निम्नलिखित बातें लिखी हैं—

"जो कुछ ब्राह्म-समाज और प्रार्थना-समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाये और कुछ-कुछ पाषणादि मूर्ति-पूजा को हटाया, अन्य जालग्रन्थों के फन्दो से भी बचाये इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु. इन लोगो में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयो के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान, विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशसा और पूर्वजो की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानो में ईसाई आदि अंगरेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी न लेते प्रत्युत, ऐसा कहतेहैं कि बिना अंग्रेजो के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान नहीं हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। वेदादिको की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक नही रहते, ब्राह्म-समाज के उद्देश्य के पुस्तक मे साधुओ की सख्या में ईसा, मूसा, मुहम्मद, नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नही लिखा।

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना में दयानन्द वैसे ही दीखते हैं जैसे गोखले की तुलना में तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र मे हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज, पहले पहल, तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द से निखरा। ब्राह्म-समाज और प्रार्थना समाज के नेता अपने धर्म और समाज में सुधार तो ला रहे थे, किन्तु उन्हें बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जों कुछ कर रहे हैं, यह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा कहीं न कहीं दबी हुई थी। अतएव, कार्य तो प्राय: उनके भी वैसे ही रहे, जैसे स्वामी दयानन्द के, किन्तु, आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द में चमका। रूढ़ियों और गतानुगतिकता से फंस कर अपना विनाश करने के कारण उन्होंने भारतवासियों की कड़ी निंदा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक सस्कारों की धूल में छिप गया है : इन संस्कारों की गंदी पर्तो को तोड़ फेंकों। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म हैं, जिस पर आरूढ़ होने से तुम फिर से विश्व-विजयी हो सकते हो। किन्तु इससे भी कड़ी फटकार उन्होंने ईसाईयो पर और मुसलमानों पर भेजी, जो दिन-दहाड़े हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणों में घुस कर उन्होंने इन धर्मो में वैसे ही दोष दिखला दिये जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बातें निकलीं। एक तो यह है कि अपनी निन्दा सुनकर घबराई हुई हिन्दू जनता को यह जानकर कुछ सन्तोष हुआ कि पौराणिकता के मामले में ईसाई-मत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नही हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओं का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एवं वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामकता की ओर

राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोड़ा-बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश में जहां हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहां उसमें ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु, इस मेधावी एवं योद्धा संन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान में भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है एवं अहिन्दू भी यदि चाहें तो हिन्दू-धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जाग्रत हिन्दुत्व का समर नाद था। और, सत्य है, रणाकड़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई नहीं हुआ।

इतिहास का क्रम कुछ ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द की सरणी में की जाने लगी। किन्तु स्वामी दयानन्द मुसलमानो के विरोधी नहीं थे। स्वामी जी का जब स्वर्गवास हुआ, तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खां ने जो सवेदना और शोक प्रकट किया, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामी जी का यथेष्ट आदर था। स्वामी जी के बाद आर्य समाज और मुस्लिम-सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नही रहा, यह सत्य है, किन्तु स्वामी जी के जीवन काल में ऐसी बात नहीं थी।

सच पूछिये तो स्वामी जी केवल इस्लाम के ही आलोचक नही थे, वे ईसाईयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कड़े आलोचक हुए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवें और बारहवें समुल्लासो में तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अंगों की बखिया उधेड़ी गयी है और कबीर, दादू, नानक, बुद्ध तथा चार्वाक एवं जैनों और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओं में से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतना बरसे हैं कि उनकी आलोचना पढ़कर सहनशील लोगों की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह तब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारत-वर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खंड-खंड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैंकड़ो कमजोरियां लोगों के सामने आ गयी।

किसी का भी पक्षपात नहीं

चूंकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे, इसलिए हिन्दुत्व की ओर से बोलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा दोनो का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु, इस प्रसंग से अलग हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व-मानवता के नेता दीखते हैं। उनका उद्देश्य सभी मनुष्यों को उस दिशा में ले जाना था, जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्वयं लिखा था कि 'जो जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो जो मत-मतान्तरो में मिथ्या बातें हैं, उन उन का खंडन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि जब मत मतान्तरो की गुप्त वा प्रकट बुरी बातो का प्रकाश कर विद्वान अविद्वान सब साधारण मनुष्यो के सामने रखा हैं, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होके एक सत्य मतस्थ होवें। यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरो की झूठी बातों का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही, दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालो के साथ भी वर्तता हूं जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्त्तता हूं वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनों के भी बर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता, तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मंडन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने मे तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।" अन्यत्र चौदहवें समुल्लास के अन्त में भी स्वामी जी ने कहा कि 'मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु, जो सत्य है, उसे मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसे छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त के प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु मैं आर्यावर्त व अन्य देशों मे जो अधर्म-युक्त चाल-चलन है, उनको स्वीकार नहीं करता और जो धर्मयुक्त बातें है, उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है।"

(क्रमश:)

महर्षि देव दयानन्द की अमर देन

आचार्य देवश्रुति प्रियदर्शी

नत-मस्तक आर्य जन करते तुम्हें प्रणाम।
अजर-अमर है विश्व में दयानन्द का नाम॥
दयानन्द का नाम महर्षि पदवी पाई,
गोरे नहीं जाते देश से राजी-राजी॥
अगर देश में नहीं होते आर्य समाजी॥

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती महाराज एक ऐसी महान दिव्य आत्मा, विराट योगी राज, महान समाज सुधारक, इस सदी के महान समालोचक थे। जिनका विरोधी विद्वान जन भी सम्मान करते थे। सर सैयद अली अहमद, डा० रहीम खान साहब मुहम्मद कासम अली मुस्लिम विद्वान एवं, मिस्टर अल्काट साहब, मिस्टर पारमर, मिस्टर गार्टलेन, कर्नल ब्रायली, मिस्टर क्रोम, रैवरेन्ड, डा० मारखेन एवं महान विद्वान महाराज के परममित्र मोनियर विलियम आंग्ल भाषीय पण्डित भी स्वामी जी महाराज का सम्मान करते थे। महर्षि की जीवनी को जो अपने आपको आर्य समाज से किन्चत भी जुड़ा मानते हैं महर्षि ने समस्त विश्व को एक दिशा प्रदान की समाज में एक नई क्रान्ति को जन्म दिया। शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति का पथ प्रदान किया।

एक बार किसी अंग्रेज ने स्वामी जी से पूछा महाराज आपकी हार्दिक अभिलाषा एवं उद्देश्य क्या हैं। ऋषि बोले समस्त विश्व-वेद विद्या द्वारा ब्रह्म को जानकर एवं उसी की उपासना द्वारा स्व कर्त्तव्य रत, सर्व आनन्दमय जीवन यापन करें। उसी से ज्ञात होता है महर्षि का उद्देश्य कितना विशाल एवं महान था। ऋषि के जन्म से पूर्व आर्य जाति की दुर्दशा, दुर्व्यवस्था, ईश्वर व धर्म के नाम पर पाखण्ड, यज्ञों की विकृत प्रथा, विधवा व अनाथों का चीत्कार, वैदिक सभ्यता का तिरस्कार, दासता की बेड़ियों में जकड़ा भारत देश, सदाचार का पतन आदि नाना प्रकार की समस्याओं से आर्यावर्त्त देश ग्रसित था।

परमात्मा की असीम कृपा से धर्म का उत्थान व राष्ट्र को नव जीवन प्रदान करने के लिए महर्षि का प्रादुर्भाव हुआ। गुरुवर विरजानन्द दण्डी जी महाराज से वेद-वेदांग की शिक्षा व देश जाति की उन्नति की प्रेरणा, पाकर ऋषि ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने जीवन को इस महान यज्ञ की आहुति बनाया। इसी यज्ञ की सुगन्ध, कही, अनाथालय, गुरुकुल, संस्कृत पाठशाला, कालेज दलित उद्धार सभा, शुद्धि सभा, मद्य निषेध, स्वराज प्राप्ति सभा आदि का रूप प्रकट हुआ। ऋषि ने लुप्त हुई आर्ष संस्कृति का पुनः प्रचलन किया। पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा जैसे विद्यार्थियों को विज्ञान की शिक्षा हेतु जर्मन लंदन (नन्दनपुरी) में जाने की प्रेरणा दी आर्ष प्रणाली की स्थापना एवं संसार को सरल वेद भाष्य प्रदान किया। महर्षि को समझने में अभी विश्व को बहुत समय लगेगा। जर्मन, अमेरिका, इग्लैण्ड, मारीशस, सिंगापुर, सुरीनाम, फीजी, केनिया गुआना, अफ्रीका, हालैण्ड, फ्रांस, इत्यादि देशों ने ऋषि को जितना जितना समझा, उतनी उतनी उन्नति की है. इन समस्त देशों में ओ३म पताका बड़ी शान से फैहरा कर ऋषि के अनगित उपकारों की याद दिला रही है।

इस महान मानव को हम उसके बताये रास्ते पर चलकर उसके सिद्धान्तों की रक्षा, आर्यसमाज की उन्नति करके इस पावन पर्व पर श्रद्धा सुमन समर्पित करें, समस्त विश्व को वेद सन्देश देकर मानव मात्र का कल्याण करें तभी आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना सार्थक होगा।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर महर्षि के अनुयायियों से

श्याम मोहन आर्य

चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या नवसंवत्सर की प्रतिपदा का सृष्टि संरचना क्रम में काफी महत्व है। इसी प्रतिपदा के दिन सृष्टि का सृजन कार्य प्रारम्भ हुआ। इसी दिन आर्य समाज की स्थापना युग द्रष्टा युग निर्माता स्वाधीनता के उदघोषक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में की। आर्य समाज के नियमों पर विचार करने पर पाते है कि नियम सार्व भौमिक सनातन सर्वग्राही सत्य है। कोई भी विश्व का मानव इन नियमों को स्वीकार करने से मना नहीं करेगा। विस्तृत चर्चा अग्रलेख मानव कल्याण का "सूत्राधार" आर्य घोषणा पत्र में करेंगे।

इस प्रकार नवसंवत्सर की प्रतिपदा के अवसर पर आर्य जगत के विद्वान मनीषी जो कि आज हमारे मध्य नहीं हैं। लेकिन उनके कृतित्व आज भी मार्ग दर्शन करते हैं। मुनि गुरुदत्त, लालाहंसराज स्वामी श्रद्धानन्द पं० रामचन्द्र देहलवी, नारायण स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती प्रकाशवीर शास्त्री, श्री मदनमोहन सेठ, अलगूराय चौधरी, श्री कालीचरन एवं भगवानदीन आर्य एवं श्री रासबिहारी तिवारी आदि अन्य अनगिनत आर्य नेताओं को हृदय से श्रद्धानत नमन करता हूं। तथा लोकेषणा के वशीभूत कार्यरत पदाधिकारीगण तथा अन्य निष्काम कर्मयोगियों की सुख समृद्धि की कामना करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

आज हम विचार करें कि वैदिक सिद्धान्तो का हो रहा प्रचार पर्याप्त है। यदि उत्तर हां मे है तो कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। यदि नहीं तो अवश्य प्रचार को गति प्रदान करनी है कि कोई भी प्रतिनिधि सभा यह घोषणा नहीं कर सकती कि हमारे अन्तर्गत आने वाले कार्य क्षेत्र में प्रत्येक न्याय पंचायत स्तर पर आर्यसमाज स्थापित है। अतः प्रचार कार्य को गतिशीलता प्रदान करनी है। प्रचार कार्य करने से पूर्व हमें अपने मतभेदों को भुलाकर कार्य करना है। आज हम लोगों के सैकड़ों वाद-विवाद न्यायालय में न्याय की प्रतीक्षा में हैं। हजारों रुपया उन वकीलों को देना पड़ रहा है। जो कि विद्वानों की सेवा और प्रचार कार्य में लगना चाहिए और वह विवाद उन पक्षकारों के मध्य में जो आर्य समाज के नियम ९ के पालन की शपथग्रहण करते हैं। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्धृत रहना चाहिए।

उपरोक्त नियम के परिपालन करने से आपसी विवाद स्वमेव समाप्त हो जाते हैं। और यदि फिर भी विवाद का निस्तारण न हो तो उभय पक्ष आम सहमति से विद्वानों को नियुक्त कर निर्णय स्वीकार कर धन के अपव्यय को रोकें।

आपस में विश्वास पैदा करने के लिए स्वार्थ की नीति को त्याग कर त्याग की नीति का अनुसरण करने पर कुछ प्राप्त कर सकेंगे। समस्त आर्य सभासद वैदिक सिद्धान्त के तो जानकार हैं और मंचों पर पद्य-कथा उपदेश भी कर लेते हैं। लेकिन कभी यह विचार किया है कि मेरे द्वारा दिये गये उपदेश को जनमानस क्यों स्वीकार नहीं कर रहा है क्या वैदिक सिद्धान्त सार्व भौमिक नहीं है या फिर मेरे प्रचार की गति दोष पूर्ण है वाणी में वह ओज और तेज है जो आर्यों के मुख मण्डल पर होना चाहिए। यदि नहीं तो आत्म निरीक्षण

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य

डा० महेश विद्यालंकार

आर्य समाज का आविर्भाव वैचारिक-क्रान्ति, जीवन्त चेतना, संस्कार संस्कृत संस्कृति उत्थान व प्रकाशपुंज के रूपमें हुआ। इसका उदय सौभाग्य लेकर आया। इसके संस्थापक देव दयानन्द अपने व्यक्तित्वकृतित्व में अनेकानेक विशेषणों से परिपूर्ण थे। उनका संसार में आगमन निराश-हताश, अज्ञान्धकार, पाखण्ड जड़ता, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वदेश की भावना से विस्मृत भारतीयों के लिए अमृत का वरदान बना। ऋषि श्रेष्ठतम महापुरुषों के गौरव-भाल थे। उन्होंने जगत को जो अमूल्य, स्मरणीय सत्यबोध, आत्मबोध एवं दिशाबोध कराया वह अपने में महनीय व वन्दनीय रहेगा। स्वामी जी प्रचण्ड प्रकाश पुंज थे। वे जिधर से निकले, उसी क्षेत्र में नवजागरण और जीवन्त प्रेरणा की लहर दौड़ उठी।

ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना विशेष कर्त्तव्य व लक्ष्य के लिए की थी। वे आर्यसमाज के माध्यम से संसार को वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप तक पहुंचाना चाहते थे? मानव को मानवता का पाठ पढ़ाकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कराके, मोक्ष द्वार तक का रास्ता दिखाने का स्वप्न लेकर आये थे। इसलिए उन्होंने आर्यसमाज को विचारधारा के रूप में स्थापित किया। जिन उद्देश्यों, मन्तव्यों, विचारों, प्रेरणाओं आदि को लेकर संस्था, संगठन व सभाएं बनाई जाती हैं। उत्सव, सम्मेलन, स्थापना दिवस आदि अवसर कहते हैं, सिंहावलोकन करो, पीछे मुड़कर देखो, क्या खोया? क्या पाया? लक्ष्य व कर्त्तव्य में कितने सफल हुए? कितने असफल हुए? असफल हुए तो क्यों? क्यों का जवाब अपने से पूछो। कारणों पर विचार करना चाहिए? भविष्य की सफलता के लिए व्रत संकल्प श्रद्धा, निष्ठा आदि दुहराना चाहिए। तभी कोई मिशन फलता-फलता आगे बढ़ता है। लोगों में आकर्षण व प्रभाव का केन्द्र बनता है। मात्ररस्म पूर्ति व खानापूर्ति करना प्रदर्शन बनकर रह जाता है। आज ये ही हो रहा है।

आर्यसमाज नाम भवनों, स्कूलों, दुकानों, डिस्पेन्सरियों, बारात घरों आदि का नहीं है? आर्य समाज नाम है—विचारधारा, आदर्शों उद्देश्यों, नैतिकता और क्रियात्मक जीवन का। उसी का प्रभाव पड़ता है। आर्य समाज का आधार है वैदिक चिन्तन। वैदिक चिन्तन कहता है—पहले आर्य बनो। अपने जीवन को आस्तिकता, धार्मिकता, पवित्रता, सदाचार, परोपकार, प्रेम, सेवा, त्याग आदि गुणों से श्रेष्ठ व सुन्दर बनाओ! फिर तभी समाज मे श्रेष्ठता आयेगी। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य था वेद प्रचार करना। वेद की विचार-धारा को जन-जन तक पहुंचाना। प्रत्येक क्षेत्र में ससार को दिशाबोध कराना। जीवन व जगत में व्याप्त बुराइयों, पाप, अधर्म से लोगों को आगाह करना। मानव को सत्य मार्ग का दिग्दर्शन कराके प्रभु की ओर प्रेरित करना। दीन-दुःखी असहाय की वकालत करना। आर्यसमाज प्रत्येक क्षेत्र में सत्य का शोधन, सत्य का स्थापन व सत्य के प्रचार-प्रसार के लिए बना था। जो संसार में महापुरुषों धर्म ग्रन्थों, कर्मकाण्ड, धर्म भक्ति परमात्मा आदि पर ढोंग, पाखण्ड प्रदर्शन चल पड़े थे, उनकी सफाई करना, उनके सत्य स्वरूप को उद्घाटित करके प्रचारित-प्रसारित करना। उदाहरणार्थ लोग वेद विद्या को भूल रहे थे। वेदों को गड़रियों के गीत की संज्ञा दी जाने लगी थी। वेदों के नाम अनर्गल, पाप, हिंसा व मिथ्या बातों का प्रचलन चल पड़ा था। ऋषिवर ने आकर संसार के सामने वेदों का सच्चा व यथार्थ रूप सामने रखा। उनका वेदों के बारे में कार्य अपूर्व व स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा उन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान के पद पर प्रतिष्ठित किया। वेद सबके हैं। सबके लिए हैं, सबको पढ़ने का अधिकार है। जो आज वेद का पठन-पाठन शिक्षण, प्रवचन शोधन आदि हो रहा है। उसके मूल में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वेदों की रक्षा, परम्परा पठन-पाठन व प्रचार-प्रसार के दायित्व की वसीयत आर्यसमाज के नाम है। आज का आर्यसमाजी और उसके ठेकेदार इस वसीयत को भूल रहे हैं? यह भूल में भूल हो रही है? तभी स्कूल, दुकानों, एफडियों, पगड़ियों और कुर्सियों के लिए दौड़ लग रही है?

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" आर्य समाज के अति-रिक्त और कोई नहीं मानता है? आज जब कोई वेद की बात करता है, नारी को वेद पढ़ने की वकालत करता है, तो उसे कहा जाता है वेद पढ़ने हैं तो आर्यसमाज में जाओ? कुछ महन्त, सन्त और हिन्दुत्व के ठेकेदार वेद-ज्ञान को कुछ लोगों तक ही सीमित रखना चाहते हैं, जब कि ऋषि और आर्यसमाज का उद्देश्य था (अब नहीं) वेद ज्ञान का प्रकाश सब तक पहुंचाना। यह ज्वलन्त प्रश्न को वेदानु-द्धरिष्यति? वेदों की कौन रक्षा करेगा? कौन पढ़ेगा? प्रभु आर्य समाज के कर्णधारों को सुबुद्धि दो! इनमें प्रेम, सेवा और त्याग की भावना जाग्रत कर दो। तो शायद ये भवन और गबन से हटकर मानव निर्माण तथा वेद प्रचार की सोचने लगे? जिसकी आजके जीवन व जगत को महती आवश्यकता है। संसार विचारों के कारण, दरिद्र, दुःखी पशु हिंसक व असभ्य हो रहा है। विचार कहीं नहीं मिल पा रहे हैं। आर्य समाज के पास विचार है—किन्तु······परन्तु ······लेकिन ·· हम स्वयं भूले व भटके हुए हैं?

आर्य समाज को ऋषि ने चौकीदार की भूमिका सौंपी थी। जो पुकार-पुकार कर कहता था: सोने वालो जागो। अपने को सम्भालो प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज लोगों को जगाता रहा। देश, धर्म जाति को सावधान करता रहा। मर्मान्तिक पीड़ा तो यह है कि आज आर्य समाज स्वयं पद-स्वार्थ, कुर्सी, विवाद, अधार्मिकता और भ्रष्टाचार के नशे में बेहोश हो रहा है? जब माली ही बाग को खायेगा तो रखवाली कौन करेगा? की कहावत हो रही है? सुनता मेरी कौन है, जिसे सुनाऊं मैं, कोई किसी की न सुनता है, न मानता है? मिशन, संगठन ऋषि व आर्य समाज की किसी को कहीं बेचैनी नहीं है। सब अपने-अपने पद स्वार्थ महत्त्व व सुविधा के लिए भाग-दौड़ रहे हैं।

आर्यो! ऋषिभक्तों! वेद प्रेमियो! आर्यसमाज के कर्णधारों! आर्यसमाज स्थापना दिवस पर कुछ आत्म निरीक्षण, कर लो? कुछ सोचो! स्वार्थों से ऊपर उठो! हमारे ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है। जलते हुए जीवन और जगत को कोई सच्चे सुख-शान्ति व आनन्द का मार्ग दिखा सकता है तो वह आर्य समाज की विचारधारा ही है। इसे बांटो/फैलाओ? यही स्थापना दिवस कह रहा है।

स्वराज्य का प्रतीक—राष्ट्रीय सम्वत्

जगदीशचन्द्र शर्मा, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग पहचान होती है। जिसके लिये कुछ प्रतीको की आवश्यकता होती है। इन प्रतीको मे राष्ट्र धर्म, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रभाषा इत्यादि होते हैं। इन्ही मे राष्ट्रीय सम्वत् की भी गणना होती है। नव वर्ष ससार की प्राय सभी जातियो मे मनाया जाता है। आदि सृष्टि से ही आर्य जाति मे नवसवत्सरारम्भ का पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है। विदेशियो का भारत मे राज्य होने से यद्यपि सनातन धर्म सस्थाओ का अस्तित्व खतरे मे पड गया था और वे त्रस्त त्रस्त हो गई थी तथापि प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी समारोह मनानेकी परम्परा बनी हुई थी। भारतवर्ष मे सौर और चान्द्र मान से वर्षो की गणना की जाती है। सौर सम्वत् का आरम्भ मेष सक्रान्ति के दिन होता है और चान्द्र सवत्सर का आरम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को होता है। आदि सृष्टि मे मेष सक्रान्ति और चैत्र सुदी प्रतिपदा एक साथ ही पडी थी परन्तु कालान्तर मे दो प्रकार की गणना होने से नव वर्ष का आरम्भ पृथक-पृथक तिथियो पर होने लगा। इसका प्रमाण ज्योतिष के ग्रन्थो म मिलता है।

पाश्चात्य देशो मे ईसाई लोग इसे न्यू इयस डे' कहते हैं। जो पहली जनवरी मे आरम्भ होता है। अग्रेज लोगो का दिन आधीरात से शुरु होता है इसलिये ३१ दिसम्बर की आधीरात को पाश्चात्य सभ्यता म रगे कुछ धनाढ्य भारतीय भी शराब मे मस्त होकर उछल कूद करते रहते है। कई होटलो मे तो कई सडको पर ही रात गुजार देते हैं। इस दौड मे दूरदर्शन भी पीछे नही रहता और आधीरात तक हगामा करता रहता है। नववर्ष मनाने की यह परिपाटी भारतीय सभ्यता एव परम्परा के प्रतिकूल है। हमारे सभी पर्व सूर्योदय के बाद ही मनाने की प्रथाहै। न्यू इयस डे की खुशी दिसम्बर के आरम्भ मे ही प्रकट हो जाती है और ग्रीटिंग कार्डो का ताता लग जाता है। डाकघरो मे इनकी बाढ सी आ जाती है जिसके कारण सामान्य डाक का वितरण भी दूभर हो जाता है और समय पर पत्र नही पहुच पाते। कुछ तो ढेर के नीचे ही पडे रहते हैं। सन्देश वहा भेजा जाता हे जहा सन्देश पाने वाला सूचना से अनभिज्ञ हो। जब जनसाधारण को न्यू इयर्स ड का पता है तो इसमे बधाई भेजने का क्या तुक है ये भेजने वाले ही जाने।

सम्वत्सर से एक नये युग का आरम्भ माना जाता है अर्थात् सम्वत्सर इतिहास का साक्षी है। वर्ष ३११८ ई० पू० महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और "युधिष्ठर शक" नाम का सम्वत् आरम्भ हुआ था। उसके बाद भारतवष मे ५७ वर्ष ई० पू सम्राट विक्रमादित्य ने अपना सम्वत चलाया और विक्रम सम्वत् के १३५ वर्ष बाद "शालिवाहन शक" आरम्भ हुआ जो आज राष्ट्रीय सम्वत् के रूप मे स्वीकार किया गया है। महाभारत युद्ध से पूर्व सारे ससार मे आर्यो का राज्य था और समस्त भू मण्डल मे मेष सक्रान्ति अथवा चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही नया वष मनाया जाता था।

रोम के निवासी पहले अपने नव वर्ष का आरम्भ 'मार्च" महीने से मानते थे जसे बदल कर जूलियस सीजर ने 'जनवरी" कर दिया। अग्रेजी महीनो के क्रम से इस बात की पुष्टि होती है कि "मार्च" प्रथम महीना है। सितम्बर का अर्थ सातवा, अक्तूबर का आठवा नवम्बर का नौवा, दिसम्बर का दसवा। इस प्रकार ग्यारहवा जनवरी व फरवरी बारहवा महीना पडता है। फारस देश के पारसी मेष सक्रान्ति पर "जश्न नौरोज' मनाते हैं। वित्त वर्ष का आरम्भ अद्यावधि अप्रैल महीने से होता है। वैद्यक शास्त्र के अनुसार बसन्त ऋतु का आरम्भ भी चैत्र के महीनो मे होता है। इस मास मे वृक्षो मे नई कोपल फूटती हैं तथा मानव व अन्य प्राणियो के शरीरो मे रक्त का सचार होता है।

उपरोक्त तथ्यो से यही निष्कर्ष निकलता है कि हमे विदेशियो का अनुसरण छोडकर परम्परागत नववर्ष शास्त्रीय विधि से मनाना चाहिये। इसी के अनुसार कलेडर व डायरियो का प्रचलन होना चाहिये। सरकार को नव वष पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा करनी चाहिये। राष्ट्रीय सम्मान और अपनी पहचान के लिये ऐसा करना अनिवार्य हैं। अन्त मे कवि के इस कथन कि "वह नही जिसके हृदय मे, देश प्रेम की धार नही। हृदय नही वह पत्थर है, जिसको स्वदेश से प्यार नही।" के साथ लेखनी को विराम देता हू।

आर्य-सन्तान

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

हमारी सस्कृति रही महान।
हम हैं दिव्य आर्य सन्तान॥

हमने ही सारी दुनिया को।
दिया ज्ञान का शुचि सन्देश॥
गूज रहे हैं सारे जग मे।
मेरे ऋषियो के उपदेश॥

हमने दिया मनुजता हित थे।
सदा स्वप्राणो का बलिदान।
हम है दिव्य आर्य सन्तान॥

सत्य-अहिसा तथा प्रेम का,
सब को हमने पाठ पढाया।
राम-कृष्ण-गौतम गाधी ने।
एक नया इतिहास बनाया॥

ऋषि दधीचि के हम वशज हैं।
जो परार्थ मे देते प्राण।
हम हैं दिव्य आर्य सन्तान॥

आओ! आर्य सपूतो! आओ—
मातृभूमि का मान बढाए।
त्याग-तपो से, बलिदानो से,
भारत का सम्मान बढाए।

कर्म करें हम ऐसा पावन—
जिससे बढे राष्ट्र की शान।
हम हैं दिव्य आर्य सन्तान॥

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत (२)

भगवान देव, चैतन्य'

महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के नियम में एक बहुत सुन्दर बात कही है—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि प्रत्येक की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। यह वाक्य मानवता के समूचे इतिहास में अपना एक अलग स्थान रखता है मगर आज के वातावरण में अपने-अपने दायरों में सिमटे हुए इस स्वार्थी मानव के पास इस बात को सुनने और मानने की फुर्सत नहीं। आज तो सब ओर स्वार्थ का बोलबाला है। किसी को चाहे एक दाना भी खाने को न मिले मगर मैं अपनी तिजोरियां भर लूं, बस हर किसी में यही होड़ लगी हुई है। हर कोई हर किसी का सर्वस्व छीनने को तैयार बैठा है। त्याग और परोपकार की भावना विलुप्त होती जा रही है। और इस पर तुर्रा यह कि सब कुछ पा लेने के बाद भी व्यक्ति या राष्ट्र पुनः प्यासे के प्यासे ही दिखाई देते हैं। वे अतृप्ति के एक ऐसे खण्डहर में भटक रहे हैं जहां सैंकड़ों आ जाएं तो करोड़ों की भूख है तथा करोड़ों आ जाएं तो अरबों की भूख है। इस भूख को मिटाने के लिए हर कोई दूसरे का खून बहा रहा है, दूसरे का घर जला रहा है। लेकिन आश्चर्य यह है कि ऐसा नीच व अमानवीय व्यवहार वह औरों के साथ तो करता है मगर स्वयं दूसरों द्वारा जब उसके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता है तो वह रोता और चिल्लाता है—धर्म की दुहाई देता है, दुनियां को कोसता है। ऐसी स्थिति में यदि कोई विवेकशील व्यक्ति अपनी विवेकशीलता को जागृत कर ले तो उसका जीवन ही पलट सकता है। वह असाधारण मानव बन सकता है मगर ऐसा बहुत ही कम लोगों के साथ हो पाता है। जिनके साथ ऐसी विवेकशीलता की घटना घटती है वे इस तथ्य को आत्मसात कर पाते हैं—'आत्मन प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत। अर्थात हम दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं। यदि यह गुरुमन्त्र आज प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र अपने-अपने हृदय में बिठा ले तो यह मार काट, लूट-खसूट और खून की नदियां बहने से बच सकती हैं। तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे घर कोई चोरी करे या डाका डाले तो निश्चित रूप से तुम्हें भी किसी के घर डाका नहीं डालना चाहिए। यह वाक्य वास्तव में ही आज विलुप्त होती जा रही मानवता के लिए संजीवनी का काम कर सकता है। यदि हम धर्म के इस सर्वोत्कृष्ट रूप को अंगीकार कर लें तो समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था एक नया रूप ले सकती है। दुनियां भरके ग्रन्थों और उपदेशों का सार यही एक वाक्य है। जीओ और जीने दो का सिद्धांत यही तो है।

आज व्यक्ति हर वस्तु का सरलीकरण करना चाहता है और धर्म के मामले में भी उसने यही बात अपनाई। इसके कारण ही किये हुए कर्मों के फल से बचने के भी कितने ही उपाय आज के मानव ने खोज लिये हैं। बड़े ही आश्चर्य की बात है आज लोग पाप करना भी चाहते हैं और पाप के फल से बचना भी चाहते है। इसी विचार ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को बिगाड़ने का काम किया है। बुरे कार्य के फल से बचने की होड़ ने व्यक्ति को अधर्म करने की ओर प्रेरित किया है। बुरे कर्मों से बचाने के कई ठेकेदार आज पैदा हो गए हैं। कोई किसी गुरु के पास आकर कर्मफल से मुक्ति चाहता है तो कोई किसी पैगम्बर और पीर के पास। कोई किसी देवता की शरण में जाता है तो कोई किसी नदी या तीर्थ विशेष पर। व्यक्ति की इसी स्वार्थ वृत्ति ने धर्म के समूचे स्वरूप को छिन्न भिन्न करके रख दिया। धर्म तो एक व्यवस्था थी, जीवन पद्धति थी मगर इस पाखण्ड की आंच पर रखकर यह धर्म ही अधर्म का कारण बन गया। धर्म पर चलने के कुछ नियम निर्धारित किए गए थे। व्यक्ति को सुकर्मों की पूंजी एकत्रित करने के लिए कुछ आधार प्रस्तुत किए गये थे मगर इस कर्मफल माफी ने सारे का सारा ढांचा ही गिरा कर रख दिया। अब कोई व्यक्ति इस आस्था को पालकर चल पड़ता है कि चाहे वह कितना ही पाप करे यदि वह पाप करने के बाद किसी गुरु की शरण में, पैगम्बर की शरण में या तीर्थ एवं नदी आदि की शरण में चला जाएगा तो उसके सभी पाप कर्म माफ हो जायेंगे तो भला वह पाप कर्म क्योंकर छोड़ेगा? आज जितने भी मत-मजहब और गुरु-पैगम्बर आदि हैं सभी ने इसी प्रकार की दुकानें खोल रखी हैं इसलिये ये दुकानें चल भी अधिक रही हैं क्योंकि पाप करके उस पाप के फल से बचना हर मानव की कमजोरी है। लेकिन इसके कारण ही आज पापों में वृद्धि हो रही हैं। स्वयं अपने आप से व्यक्ति ही इस प्रकार ठगा जा रहा है।

अपने अपने लिए सभी लोगों ने धर्म के छोटे छोटे रूप गढ़ लिये हैं। ऐसे व्यक्ति तो आपको हर कहीं मिल जायेंगे जो वैसे तो मास और शराब पीना बुरा नहीं समझते मगर धार्मिक कहलाने के लिए वे मंगलवार या अन्य किसी विशेष दिन यह काम नहीं करेंगे। इससे वह व्यक्ति इसी भ्रम में रहता है कि क्योंकि वह अमुक तिथि या दिन को यह कुकृत्य नहीं करता है इसलिए अन्य दिन जो यह बुरा कर्म वह कर रहा है उसका उसे बुरा फल नहीं मिलेगा। कोई किसी आडम्बर में तो कोई किसी में अपने आप को इसी प्रकार उलझाए बैठा है। आपको कोई दुकानदार ऐसा भी मिल सकता है जो कहता है कि देखो शाम का समय है आपसे झूंठ नहीं बोलूंगा। इसका भी यही तो भाव है कि वह अपने मन में एक भाव लेकर चला हुआ है कि केवल शाम के समय झूठ बोलना पाप है शेष दिन वह चाहे जो मर्जी करता रहे। कुछ लोगों इसी प्रकार किन्हीं विशेष तिथियों या दिनों में भोजन आदि न खाने को ही धर्म का अंग मान रहे है। इस प्रकार कितने ही पाखण्डियों ने धर्म के सही स्वरूप पर कुठाराघात करके उसे मार दिया है। कोई चूल्हे चौके तक ही धर्म को सीमित करके बैठ गया तो कोई विशेष मन्दिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे तक ही सीमित हो गया। आज तो और भी पता नहीं कितनी ही दुकानें धर्म के नाम पर चल पड़ी हैं। ज्यों ज्यों ये नए-नए सम्प्रदाय बढ़ते चले जा रहे हैं, धर्म का और भी अधिक ह्रास होता चला जा रहा है।

इन सब दायरों से निकलकर एक वैदिक धर्म की शरण में आने की आवश्यकता है। इसी से मानवता का हित हो सकेगा। वेद ही सच्चा और मानव धर्म है। इस बारे में बहुत कुछ कहा गया है—'वेदोऽखिलो धर्ममूलं। अर्थात वेद ही समस्त धर्म का मूल है। वेदः स्मृति. सदाचार. स्वस्य च प्रियमात्मनः एतच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणः अर्थात स्वयं को अच्छा लगने वाला व्यवहार 'महापुरुषों का आचरण तथा स्मृति और वेद इनमें जो धर्म के लक्षण हैं वही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। आगे चलकर इससे भी बढ़कर एक बात कही गई है कि—धर्मजिज्ञासामानाना प्रमाणं परमं श्रुति। अर्थात धर्म के बारे में सबसे बड़ा प्रमाण वेद ही है। इन वाक्यों से यह भली प्रकार से प्रमाणित हो जाता है कि वेद ही मानव धर्म ग्रन्थ हैं: वेद सृष्टि के आरम्भ में दिया ज्ञान है, वेद विज्ञान सम्मत हैं तथा शाश्वत हैं।

महर्षि दयानन्द जी की यह विशेष विशेषता है कि उन्होंने अपना कोई अलग मत या मजहब नहीं चलाया बल्कि बिखरे हुए मानवता के सूत्रों को जोड़ने के लिए परमात्मा का दिया हुआ वेद ज्ञान हमारे समक्ष रखा। वे एक मात्र ऐसे महापुरुष दिखाई देते हैं जिन्होंने वेद का आधार लेकर धर्म को पुनः व्यवहारिकता के साथ जोड़ा। उन्होंने साफ शब्दों में इस बात की घोषणा की कि व्यक्ति द्वारा किए हुए पाप कभी भी माफ नहीं हो सकते हैं। उन्होंने धर्म को व्यवहार के साथ जोड़ा। उनकी आस्था थी कि धर्म किसी प्रकार के बाह्य आडम्बर का नाम नहीं है और न ही किसी विशेष प्रकार के चिन्ह धारण कर लेना अथवा पहरावा पहन लेने का नाम ही धर्म है। वास्तविकता यह है कि—न लिंग धर्म कारण धर्म तो एक शाश्वत सत्य है जो व्यक्तियों को वैर विरोध के माध्यम से बांटता नहीं बल्कि प्रेम और सौहार्द की रस्सी से बांधता है। मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण माने हैं—

> धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
> धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ (मनु० ६-९२)

अर्थात सदा धैर्य रखना, क्षमाशील होना, मन को सदा सत्य कार्यों की ओर ही लगाए रखना. चोरी त्याग, बाहर भीतर की पवित्रता, इन्द्रियों को सदा पुण्य कार्यों की ओर ही लगाना, बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ही लगाए रखना, विद्या वृद्धि करना, सत्य को कभी न त्यागना और क्रोधादि दोषों से

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत

(पृष्ठ ७ का शेष)

सदा दूर रहना। इन मानवीय गुणो मे विभषित व्यक्ति ही धार्मिक कहलाने का अधिकारी है।

दर्शनकार का कथन है कि—यतोऽभ्युदय नि श्र यस सिद्धि स धम। अर्थात जिससे लोक और परलोक की उन्नति हो वह धम है मनु महाराज के ऊपर दिए लक्षण जिस व्यक्ति मे हैं वह निश्चित रूप से इस लोक और परलोक को सुधार सकेगा। इन गुणो से जो हीन हैं वह अधार्मिक है तथ अपने इस लोक और परलोक को भी बिगाडने वाला है। ऊपर जो धम के लक्षण दिए गए हैं वे सभी व्यक्तियो को उन्नति की ओर ले जाने वाले है। इसीलिये कहा गया है कि धम व्यक्ति की उन्नति और सुख शांति का आधार है। इन नियमो का अपना कर ही व्यक्ति महान से महानतम बन सकता है महान या बडा वह नही जिसने कोइ बाहरी चिन्ह आदि अपना रखे ह बल्कि महान या पण्डित वह है जिसने इन समस्त गुणो को अपने भीतर आत्मसात कर रखा है। माथा छापने से कण्ठी आदि धारण करने से विशेष प्रकार की मूछ दाढी रख लेना टोपी या चोगा पहन लेना आदि पाण्डित्य का स्वरूप नही है बल्कि इसके स्थान पर जिसने अपने आप का भीतर से पवित्र और महान बना लिया है वही पण्डित है ज्ञानी है और महान ह। किसी कवि ने बडा ही सुन्दर कहा है —

मातवत परदारेषु पर द्रव्येष लोष्ठवत।
आत्मवत सवभूतेषु य पश्यति स पण्डित।

अर्थात वही व्यक्ति महान पण्डित है जो दूसरे की पत्नी को अपनी माता के समान दूसरे के धन को मिट्टी के ढले के समान तथा अपनी आत्मा के समान प्राणी मात्र को समझता है वही वास्तव मे विद्वान या धार्मिक व्यक्ति है। ऐसे गुणो को व्यक्ति उपरोक्त धम के लक्षणो को अपना कर ही अपने भीतर पैदा कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति यदि धम के ऐसे ही पवित्र स्वरूप का पहचान कर इससे ओत प्रोत हो जाए तो फिर वैर विरोध और मार-काट तथा आतंकवाद कहा रह जायेगा? फिर मानव ही मानव का खून कैसे बहा सकेगा? फिर तो महा कवि तुलसीदास की ये पक्तियां स्वत ही सार्थक हो जायगी—

परहित सरस धम नहा भाई पर पीडा सम नही अधमाई।

आज यदि कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र अपनी वास्तविक उन्नति चाहता है, वह चाहता है कि विश्व से आतंकवाद एव वैर विरोध समूल नष्ट हो जाए तो धम के इसी वैज्ञानिक स्वरूप को अपनाना होगा। ऐसे दिव्य गुणो से विभूषित व्यक्ति ही जीयो और जीने दो के सिद्धात को अपना कर प्रेम और सौहार्द की गंगा बहा सकता हे। वही वेद के इस अमर सन्देश का समझ सकता है

सगच्छध्व स वदध्व स वो मनासि जानताम।
देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते॥

अर्थात —
प्र म से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूवजो की भांति तुम कतव्य के मानी बनो॥

उसके लिये तो फिर यही वाक्य रामबाण सिद्ध हो जायेगा।

आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत।

२१५/एस ३ सुन्दर नगर
मण्डी (हि प्र) १७४४०२

आर्यसमाज एक प्रकाश पुंज

— रूपचन्द 'दीपक'

मनुष्य अपने विचारो के कारण समुदायो में बटा है। ये समुदाय सैकड़ों की सख्या में है और विश्व भर मे हैं और विश्व भर मे फैले हुए है। इनमे मुख्य हैं – हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, आर्य समाज आदि। किन्तु वास्तव मे आर्य समाज ही धर्म है और शेष सब सम्प्रदाय हैं। इस विवेक के निम्नलिखित आधार है

(१ ईश्वर का स्वरूप—धर्म का प्रथम तत्व है, ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होना। आर्य समाज और सम्प्रदायो के मध्य सबसे प्रमुख भेद ईश्वर के स्वरूप के विषय मे ही है। हिन्दू लोग ईश्वर को निराकार भी मानते हैं और साकार भी, सर्वव्यापक भी मानते हैं और एकदेशी भी, सर्वशक्तिमान भी मानते हैं और अवतार लेने वाला भी, ईश्वर एक है, ऐसा भी मानते हैं। ईश्वर की शक्ति वाले अनेक देवता हैं, ऐसा भी मानते है। इस प्रकार पौराणिक हिन्दू की ईश्वर के विषय मे कोई निश्चित धारणा नही है। इस्लाम यह मानता है कि ईश्वर एक है, जो निराकार है, सर्वशक्तिमान है और अवतार नही लेता। मुस्लिम भाई ईश्वर को सर्वव्यापक भी मानते हैं और सातवें आसमान पर रहने वाला भी। सिख भाई ईश्वर पर विश्वास करते हैं किन्तु उनके विचार भी मिश्रित हैं। ईसाई भाई ईश्वर को निराकार, सर्वशक्तिमान और दयालु तो मानते हैं। किन्तु यह भी मानते हैं कि वह चौथे आसमान पर रहता है और अवतार ले सकता है। जैन और बौद्ध लोग ईश्वर के आस्तित्व मे विश्वास नही करते। आर्य समाज के अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, ईश्वर का यही स्वरूप यथार्थ है।

(२) जीवात्मा का स्वरूप—हिन्दू भाई जीवात्मा को परमात्मा का अश मानते हैं। मुस्लिम इसे ईश्वर द्वारा निर्मित तथा ईसाई भी ईश्वर द्वारा निर्मित मानते हैं। जैन लोग जीवात्मा को नित्य मानते हैं। बौद्ध लोग जीवात्मा जैसी किसी चेतन सत्ता में विश्वास नही करते है।

आर्य समाज के अनुसार जीवात्मा अनादि हैं। यह न ईश्वर द्वारा निर्मित है और न ही इसका अ श। यह मोक्ष मे रहने के पश्चात पुन जन्म-मरण के चक्र में लौटता है जिससे ससार के प्रवाह मे निरन्तरता बनी रहती हैं। जीवात्मा का यथार्थ स्वरूप यही है।

(३) प्रकृति का स्वरूप—हिन्दू मत के अनुसार प्रकृति अर्थात माया ईश्वर से ही उदभूत है। इस्लाम के अनुसार प्रकृति ईश्वर के स्वरूप से उत्पन्न हुई है। ईसाई मत के अनुसार प्रकृति ईश्वर द्वारा शून्य से उत्पन्न हुई है। जैन मत के अनुसार प्रकृति का कोई निर्माता नही है। यह चारों तत्वो यथा पृथिवी, जल, अग्नि और वायु से बनी हैं। इसका न आदि है और न अन्त। बौद्ध मत के अनुसार ये चार तत्व वास्तविक हैं किन्तु ससार क्षणिक है। आप जिस जल मे स्नान कर रहे ह, वह बहकर आगे चला गया, जिस जल को आप पुन देख रहे हैं, वह दूसरा जल है। आर्यसमाज के अनुसार अव्यक्त प्रकृति अर्थात पृथिवी जल, अग्नि, वायु, आकाश की परमाणु रूपा प्रकृति अनादि और अनन्त हैं। ये परमाणु न कभी उत्पन्न होते हैं, न कभी नष्ट होते हैं और न ही इनकी सख्या बदलती है। केवल इनका सयोग और विभाग होता है। इसी अव्यक्त प्रकृति को ईश्वर द्वारा दृश्यमान जगत का रूप दिया जाता है। यही प्रकृति का सत स्वरूप है।

(४) सृष्टि-रचना का काल—सृष्टि रचना के वास्तविक काल का किसी भी सम्प्रदाय को ज्ञान नही है। ये अपने अनुमान के अनुसार ५ हजार या ८ हजार वर्ष अथवा ऐसी ही किसी काल्पनिक अवधि का बखान करते हैं। आर्य समाज के अनुसार सृष्टि की रचना को १९६०८५३०८५ वर्ष हो गये हैं। यही अवधि पुरातत्व विज्ञान द्वारा अनुमोदित है। दूसरे शब्दो मे, यही वास्तविक है।

(५ पृथक पुस्तक—प्रत्येक सम्प्रदाय की एक पृथक पुस्तक है, जैसे इस्लाम की कुरान, ईसाई मत की बाइबिल, सिखो की गुरु ग्रन्थ साहब। जैन और बौद्ध मतो की पृथक पृथक पुस्तकें हैं, जो अनेक है। हिन्दू भाई वेदो, पुराणो, उपनिषदो और गीता आदि मे आस्था रखत है। आर्य समाज वेद को मानता है। इसकी आस्था षडदर्शन और उन उपनिषदो मे भी है जो वेद के अनुरूप हैं किन्तु धर्म ग्रन्थ वेद ही हैं। सत्यार्थ प्रकाश का पठन पाठन और सम्मान आर्य समाज मे अवश्य हैं, किन्तु इसकी मान्यता धर्म-ग्रन्थ के रूप मे नही है।

(६ पृथक मार्ग दर्शक हिन्दू भाई तो बहुदेववाद और अवतारवाद मे आस्था रखते है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, कृष्ण, हनुमान आदि को इसी भाव से पूजते है। मुसलमान भाई हजरत मुहम्मद को, सिख गुरु नानक को, ईसाई ईसा मसीह को, जैन महावीर को और बौद्ध गौतम बुद्ध को विशेष आस्था से देखते है। आर्य समाज अग्नि, वायु, आदित्य, अगिरा, ब्रह्मा, मनु, बाल्मीकि, व्यास, कपिल, कणाद गौतम, पतञ्जलि, जैमिनि, यास्क, पाणिनि दयानन्द आदि ऋषियो तथा राम, कृष्ण, हनुमान आदि देवो को मनुष्य, पथ-प्रदर्शक और योगी मानता है। महर्षि दयानन्द अथवा किसी अन्य को एकमात्र मार्ग दर्शक के रूप मे नही मानता मानव धर्म के लिए ऐसा ही विश्वास उचित हैं।

(७) कर्म-फल सिद्धात—हिन्दू मत कर्म फल में भी विश्वास रखता और ईश्वर की असीम कृपा-अकृपा मे भी। इस्लाम का मत है कि ईश्वर चाहे जैसा फल दे। ईसाई लोग ईसा की साक्षी को आवश्यक मानते हैं। बौद्ध और जैन मत कर्म-फल मे विश्वास रखते हैं किन्तु इसमे ईश्वर को आवश्यक नहीं मानते। आर्य समाज के अनुसार कर्म का यथावत फल मिलता है किन्तु ईश्वर द्वारा मिलता है। जीवात्मा कर्म करने मे स्वतन्त्र किन्तु भोगने मे परतन्त्र हैं। यदि विचार किया जाए तो यही मत विवेकपूर्ण है।

(८ मोक्ष का स्वरूप—हिन्दू लोग मोक्ष मे जीवात्मा का परमात्मा मे लय होना मानते हैं और प्रत्यावर्तन को नही मानते। मुस्लिम लोग मोक्ष मेंनही अपितु बहिश्त और दोजख अर्थात स्वर्ग और नरक मे विश्वास करते हैं। ईसाई लोग मोक्ष को मानते हैं किन्तु ईसा मसीह की साक्षी आवश्यक मानते हैं। जैन लोग मानते हैं कि जीव अनन्त काल तक शुद्ध चैतन्य स्वरूप मे रहता है। बौद्ध लोग मानते है कि मृत्यु के पश्चात कुछ शेष नही रहता। आर्यसमाज के अनुसार जीवात्मा मोक्ष को प्राप्त करता है, परान्त काल (जितन काल मे ३६० बार सृष्टि और प्रलय होती है) के पश्चात उसका प्रत्यावर्तन होता है क्योंकि जीवात्मा अपने असीम कार्यो का फल प्राप्त नही कर सकता।

(९) मानव की समानता—हिन्दू लोग ब्राह्मण की श्रेष्ठता तथा अन्य सम्प्रदाय अपने अपने को श्रेष्ठ तथा अन्य सम्प्रदायो का हीन मानते हैं। कुछ सम्प्रदाय तो अन्य मतस्थ लोगो को जीने का ही अधिकारी नही मानते। केवल आर्य समाज ऐसा है जा मनुष्य मनुष्य मे गुण कर्म स्वभाव के आधार पर भले-बुरे का निर्धारण करता है और मानव मात्र की समानता का हामी है।

(१०) जन्मगत आधार—हिन्दू-मुस्लिम सिख-ईसाई जैन-बौद्ध आदि का जन्मगत आधार है। उदाहरणार्थ मु[illegible] का पुत्र मुसलमान होता है, बिना यह विचारे कि इसे कुरान का ज्ञान एव हजरत मुहम्मद पर आस्था है अथवा नही। अन्य समस्त सम्प्रदाय भी जन्मगत परम्परा पर ही आधारित है। केवल आर्य समाज सब मनुष्यो को जन्म से समान और गुण-कर्म स्वभाव से अच्छा-बुरा मानता है।

इस प्रकार अन्य समस्त समुदाय केवल सम्प्रदाय है। केवल आर्य समाज ही धर्म है जो वैदिक धर्म का वास्तविक रूप है। प्रत्येक मनुष्य प्रेम का अधिकारी है किन्तु विश्वास का अधिकारी है—सत्य एव धर्म। अत हम सत्य को ग्रहण करे असत्य को छोड़ें और धर्म का ही माने एव अपने जीवन का आधार बनायें।

प्रधान, आर्य समाज शृंगारनगर, लखनऊ

आर्यसमाज स्थापना दिवस

(पृष्ठ ४ का शेष)

करे और पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त व्यवहारिक कार्य उस ज्ञान के अनुरूप ही कर रहे हैं। जो कि जन साधारण से करने की आशा करते हैं।

तो आइये हम सभी महर्षि के अनुयायी आर्य समाज स्थापना दिवस के पुनीत पावन पर्व पर आत्म निरीक्षण करें। हम अपने दोषो को स्वीकार कर त्याग करें और आपस मे बैठकर विवादो को समाप्त कर समस्त देशो मे प्रचार कार्य को गति प्रदान करने के लिए वेद प्रचार रथों का निर्माण कर प्रचारकों और उपदेशको के द्वारा प्रचार प्रारम्भ करते पर अवैदिक पन्थो और नये पैदा हुए सम्प्रदायों का पर्दाफाश कर वैदिक ज्ञान से जन साधारण को अवगत कराकर महर्षि को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें।

साहित्य समीक्षा

प्रकाश भजनावली

(पाचों भाग)

लेखक—स्व० प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न

सम्पादक—प० पन्नालाल पीयूष

प्रकाशक—समर्पण शोध सस्थान

४/४२ राजेन्द्रनगर सै० ३ साहिबाबाद उ०प्र०

मूल्य १५ रुपये

आर्य समाज के कवियो एव गीतकारो मे स्व० प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न का उच्च स्थान था। उनकी काव्यकृतियो को एक स्थान पर लाकर ५ भागो मे प्रकाशित किया है। इससे पाठक जनो को इस रसयुक्त काव्य कृतियो का आनन्द मिल सकेगा।

प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न के अनन्य शिष्य प्रिय पन्नालाल पीयष जो अब पडित जी के गीतो को गाते-गाते स्वय वृद्ध हो गये है। प० कविरत्न जी की काव्य कला का बोध आनन्दस्रोत बह रहा फिर तू उदास है। अचरज है जल मे रह के भी मछली को प्यास है। इन पक्तियो मे कबीर की उक्ति व वेद की महिमा का दिग्दर्शन साक्षात होता है। काव्य मे भक्ति-परक गीत नैतिक जीवन में उद्बोधन देने वाले विषयो का प्रतिपादन किया है। कवि रससिद्ध वाणीश्वर है। अलकार पटु हैं। आर्यजन अपने प्रिय रचनाकार को जीवन मे लाकर रख सके तो उनके साहित्य को अधिक से अधिक जनता मे देते रहे।

—सम्पादक

बोध रात्रि दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों का समापन

आर्य समाज जमशेदपुर द्वारा बोध रात्रि दिवस के उपलक्ष्य मे जमशेदपुर नगर के विभिन्न भागो मे उत्सव का आयोजन किया गया। आर्य समाज मन्दिर साक्ची, गदरा, बिरसानगर, टेल्को कालोनी आदि जगहो मे कार्यक्रम २६ फरवरी १९९५ से लगातार २८ फरवरी १९९५ तक हुआ। डी० ए० वी० स्कूल धुर्वा (राची) के पुरोहित पण्डित इन्द्रदेव शास्त्री इस आयोजन के मुख्य वक्ता एव भजनोपदेशक थे। कार्यक्रम के दौरान हुई बैठक मे आर्य वीर दल शिविर सम्मेलन का निश्चय किया गया।

१० दिनो तक चलने वाला, २० बच्चो का यह शिविर जमशेदपुर मे पहली बार होगा। शिविर के दैनिक कार्यक्रमो का विवरण इच्छुक बच्चो के अभिभावकों को मार्च अन्त तक भेज दिया जायेगा।

—विजयकुमार आर्य

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज खबरेडा, जनपद हरिद्वार का २५वा वार्षिकोत्सव १ व २ अप्रैल १९९५ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशेष यज्ञ के अतिरिक्त नशाबन्दी नारी शिक्षा तथा आर्य सम्मेलन भी आयोजित किये गये हैं आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक श्रोताओं का मार्ग दर्शन करेंगे।

—आर्यसमाज नरेला दिल्ली का ६०वा वार्षिकोत्सव ८ तथा ९ अप्रैल १९९५ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये।

—आर्य समाज बड़का (मेरठ) का वार्षिकोत्सव ११ मार्च से २ अप्रैल तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। समारोह में आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। उक्त कार्यक्रम श्री० [illegible] के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है।

मुझको तुम पहचान न पाए

डा० दीनानाथ आर्य
डी ए वी मध्य विद्यालय,
साहेबगंज, छपरा (बिहार)

मैं नव वर्ष हू,
लाया असीम हर्ष हू,
पर पाश्चात्य झोंके मे
तुम मेरे आने जाने का,
अर्थ अभी तक जान न पाये।
मुझको तुम

मैं चेतना का विहान
प्रकृति का वरदान
बसन्त साथ सृष्टि सम्वत,
कृष्ण-सम्वत और विक्रम-सम्वत्,
साथ लेकर आया हू।
पर पाश्चात्य झोंके मे—
तुम मेरे आने जाने का
राज अभी तक जान न पाये।
मुझको तुम

मैं अकेले नही,
माना तो सही
आर्य समाज स्थापना दिवस,
हेडगेवार का भी जन्म दिवस,
साथ लेकर आया हू।
पर पाश्चात्य झोंके मे—
तुम मेरे आने जाने का
अर्थ अभी तक जान न पाए।
मुझको तुम

टूट टूट कर तुम्हे बनाया,
यादो से जीवन बहलाया
पर पाश्चात्य झोंके मे—
तुम मेरे व्याकुल मन का
प्यार अभी तक जान न पाए।
मुझको तुम

शुभकामना
मंगलकामना
करता हू आज मैं
इसलिए—कि
पाश्चात्य सभ्यता के चाले मे
स्वसंस्कृति, स्वसभ्यता का
अस्तित्व कही भूल न जाय।
मुझको तुम पहचान न पाये।

सरदार मगलसिंह आर्य दिवंगत

बड़े दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि उत्तर प्रदेश प्रान्त के महान स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी लाल बहादुर शास्त्री (भूतपूर्व प्रधानमन्त्री) के चहेते एव महर्षि स्वामी दयानन्द के महान सिपाही सरदार मगलसिंह आर्य नही रहे। सरदार जी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के श्री मनमोहन मन्त्री के अन्तरग के सदस्य थे। तराई एव पूर्वांचल के महान स्पष्ट एव आर्य विचारधारा के एक सिपाही ही नही वे महान क्रान्तिकारी भी थे। आदरणीय प्रधानमन्त्री जी इनके देहावसान से आर्य परिवार बहुत शोकाकुल हैं और दुःखी हैं। क्योकि ये वर्ष महा दुःखदायी तरीके से गुजरा।

हम सरदार मगलसिंह आर्य की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना परमपिता परमेश्वर से करते हैं। गोविन्दसिंह

ऐतिहासिक महायज्ञ की पूर्णाहुति

दयानन्द मठ चम्बा मे ११ अप्रैल ९४ से प्रारम्भ हुए गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति वैशाखी के पावन पर्व पर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे १३ अप्रैल ९५ को होगी। १२ अप्रैल को रावी नदी एव पर्वत शृंखलाओ के मध्य बसी इस चम्बा नगरी मे एक भव्य एव विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

इस ऐतिहासिक यज्ञ के समापन पर आप हजारो की सख्या मे पधारने की कृपा करें।

स्वामी सुमेधानन्द
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०)

महर्षि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

महर्षि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव के कार्यक्रम सारे देश मे तथा विदेश मे समारोह पूर्वक आयोजित किए गए। इस अवसर पर प्रभात फेरिया निकाली गयी आर्य समाज मन्दिरो मे दीप मालिका से सजावट की गयी तथा विशेष यज्ञ एव प्रवचन के कार्यक्रमो के साथ साथ प्रतियोगिताओ तथा विविध सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया। सभा कार्यालय मे बहुत बडी सख्या मे उक्त कार्यक्रम मनाए जाने के समाचार प्राप्त हुए है। स्थानाभाव के कारण यहा उनके नाम ही प्रकाशित किए जा रहे है।

श्री सनातन वैदिक धर्म सघटन आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड, आर्य समाज साकोली आर्य समाज रेलवे स्टेशन रोड उझानी आर्य समाज मन्दिर भीनमाल जालौर, आर्य समाज अमरोहा, दयानन्द आर्य समाज कटरा प्रयाग, आर्य समाज फतह नगर आर्य समाज दीन दयाल नगर मुगलसराय आर्यसमाज राऊ इन्दौर, आर्य समाज नेमदार गज नवादा आर्य समाज हुक्मचन्द केमिकल्स अन्तरवेलिया झाबुआ आर्य केन्द्रीय सभा करनाल आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली आर्य समाज मन्दिर खगडिया, आर्य विद्या निकेतन, बदायू आर्य समाज मल्हार गज इन्दौर आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर, आर्य वीरदल इटावा आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश १ दिल्ली। आर्य समाज खगडिया आर्य समाज नेपाल आर्य समाज भटिंडा आर्य समाज बुढलाडा आर्य समाज शकरपुर आर्य समाज निर्माण विहार दिल्ली आर्य समाज बस्ती आर्य समाज फर्रुखाबाद आर्य समाज गुडगाव आर्यसमाज शाहजहापुर आर्यसमाज हापुड आर्यसमाज बम्बई, आर्य समाज इन्दौर आर्य समाज प० चम्पारण दयानन्द बालमन्दिर जू० हा० स्कूल अमरोहा आर्य समाज चोपन सोनभद्र आर्य समाज बुरहानपुर (म० प्र०)।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा अपना ६०वा वार्षिकोत्सव दिनाक ४-२-९५ से महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव के साथ आरम्भ कर दिनाक ७-२-९५ को महर्षि बोधोत्सव तक मनाया गया। सक्षिप्त चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ के साथ-साथ प० श्री वीर कवि वेदालकार, श्री पन्नालाल पीयूष, श्री नरेशपाल निर्मल एव श्री मगलदेव के सारगर्भित उपदेश एव भजनोपदेश हुए। समाज के प्रधान श्रीकृष्ण साधक की अध्यक्षता मे मन्त्री श्री बनवारीलाल सिंहल द्वारा समस्त आगन्तुको को धन्यवाद अर्पितकर अपना वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

इसी अवसर पर दिनाक २४-२-९५ को राजस्थान प्रान्त मे पूर्णरूप से शराब एव लाटरी बन्द किये जाने हेतु मुख्यमन्त्री के नाम जिला कलेक्टर कोटा को ज्ञापन भी प्रेषित किया गया।

—बनवारीलाल सिंहल

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४१/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२-४-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 30,31-3-1995

आर्यसमाज बनाया

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सम्वत् अठारह सौ पिछत्तर का, दिवस सुहाना आया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥
स्वाभिमान राष्ट्र प्रहरी ने ध्रुव सम निभाया।
पावन पथ की खोज लगाने जहां-तहां पता लगाया॥
लक्ष्य पवित्र प्राप्त करने को जीवन सुख बिसराया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥१॥
भव्य भूमि भारत गारत हो रही अविद्या छाई।
ऊंच-नीच और भेद-भाव का चलन महा दुखदाई॥
वातावरण अशान्त वेद का सुखद मार्ग दरशाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥२॥
बाल-विवाह सती प्रथा पर्दा प्रथा को दूर किया।
मत-मतान्तर पाखण्डों के गढ़ को चकनाचूर किया॥
फूंका आर्य जाति में जीवन भीषण कष्ट उठाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्य समाज बनाया॥३॥
रच सत्यार्थ प्रकाश काट दिये मत पन्थों के बाजू।
सत्य असत्य तोल दिखलाया लेकर धर्म तराजू॥
कहें 'स्वरूपानन्द' पिया विष अमृत हमें पिलाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥४॥

श्री भगवानदेव "चैतन्य" सम्मानित

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के पूर्व महामन्त्री, वेद-प्रचार अधिष्ठाता, प्रान्तीय संचालक आर्य वीर दल, सम्पादक आर्य वन्दना एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री भगवान देव "चैतन्य" जी को वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर तथा सनातन धर्म सभा के तत्वावधान में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर दिनांक २५-२-९५ को एक भव्य समारोह में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की ओर से प्रदान किया गया।

—अखिलेश भारतीय

सार्वदेशिक सभा के तीन नये प्रकाशन

१. मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा

पाण्डुरंग आठवले शास्त्री द्वारा प्रवर्तित नये सम्प्रदाय स्वाध्याय की मूर्तिपूजा के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का तार्किक शैली में खण्डन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने किया है। मूल्य २)५० पैसे।

२. आर्य समाज

(लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक अंग्रेजी पुस्तक (प्रथम बार इंग्लैण्ड से १९१५ में प्रकाशित) का प्रामाणिक अनुवाद। डा० भवानीलाल भारतीय कृत इस अनुवाद के आरम्भ में लेखक का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्यिक कृतियों की समीक्षा। मूल्य १८ रुपये।

३. ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की एक मात्र ६५ वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तक का डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित संस्करण मूल्य ३) ५० पैसे।

प्राप्ति स्थान व बिक्री विभाग :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२
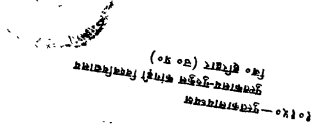
मार्कण्डेय मेला

मथुरा में स्थित ग्राम माल की पुण्य भूमि ऋषि मार्कण्डेय जी महाराज की तपस्थली में प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत वातावरण में सुन्दर व भव्य गुरुकुल महाविद्यालय के विशाल प्रांगण में दि० ३१ मार्च, १, २ अप्रैल को मार्कण्डेय मेला बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है अतः आप लोगों से करबद्ध प्रार्थना है कि अपने इष्ट मित्रों एवं सपरिवार सहित अधिक से अधिक संख्या में पधार कर बच्चों को आशीर्वाद प्रदान कर उत्सव की शोभा बढ़ायें।

इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान-सन्यासी-नेतागण एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। जिनके उपदेश-प्रवचन भजन सुनकर आप धर्म लाभ उठायें। समारोह में अनेकों अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं।

विशेष वेद सप्ताह

आर्य समाज नया नंगल में विशेष वेद सप्ताह आर्य समाज स्थापना दिवस से राम नवमी अर्थात् १-४-९५ से ९-४-९५ तक मनाया जा रहा है जिसमें पूज्य स्वामी मोक्षानन्द "सरस्वती" जी एवं भजनोपदेशक श्री जगतराम, बस्तीराम जी पधार रहे हैं, जो कि अपने ज्ञानवर्धक प्रवचनों एवं भजनों द्वारा नंगल एवं नया नंगल निवासियों को आनन्दित करेंगे। गुमानचन्द तालूजा मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नजफगढ़ नई दिल्ली-४३ का ६२वां वार्षिकोत्सव १४,१५,१६ अप्रेल ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। —प्रधान

आवश्यक सूचना

जो आर्य समाज अपने यहां शास्त्रीय संगीत कक्षाएं चलानी चाहें, पुरोहित या धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय हेतु वैद्य की सेवा चाहें तो निम्न पते पर सूचित करें— आर० डी० शर्मा संगीत प्रभाकर
द्वारा—१३८ डी०डी०ए० फ्लैट
पावर हाउस, बदरपुर नई दिल्ली-४४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ८] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९६ चैत्र शु० ६ स० २०५२ ६ अप्रैल १९९५
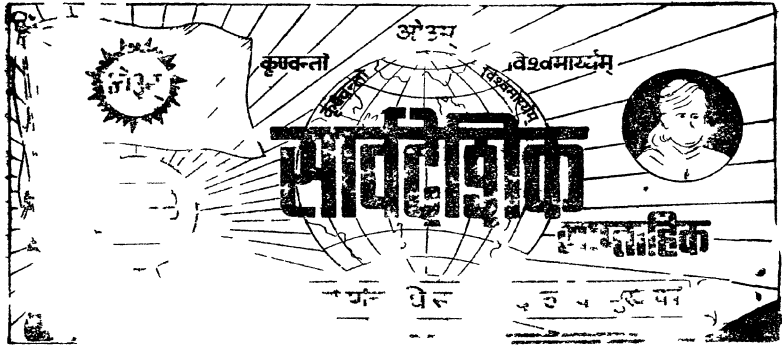
वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करना आर्य संस्थाओं का दायित्व

अनुशासित जीवन से ही सामाजिक उन्नति सम्भव

श्री वन्देमातरम जी ने गुजरात आर्य कुमार महासभा की संस्थाओं का निरीक्षण किया

अहमदाबाद,२८मार्च। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट प्रातःकाल की उडान द्वारा अहमदाबाद हवाई अड्डे पर उतरे दोनो आर्य नेताओ का अगुवाई आर्य कुमार महासभा के मन्त्री श्री गोपाल भाई आर्य तथा गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रतनप्रकाश ने की। श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव अपने तीन दिवसीय गुजरात दौरे के प्रथम चरण मे सोनगढ आर्य शिक्षण सस्थाओ का निरीक्षण करने पहुचें।

सोनगढ मे विद्यालय के छात्रो को सम्बोधित करते हुए श्री वन्देमातरम् ने कहा कि वैदिक सिद्धान्तो तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यताओ की रक्षा करना प्रत्येक आर्य संस्था का आवश्यक दायित्व है, इस दायित्व के साथ साथ समाज और राष्ट्र की सेवा के समस्त कार्य भी जारी रहने चाहिए, श्री वन्देमातरम ने कहा कि भारतीय सविधान किसी भी रूप मे आज भारत की मूल सस्कृति की रक्षा करने मे सक्षम नही रहा। भदभाव, जातिवाद तथा सम्प्रदायवाद की नीतियो को बढावा देने वाले कानून भारतीय सविधान मे जब तक मौजद रहेगे तब तक आर्य समाज का यह राष्ट्रीय दायित्व है कि जन जागृति के द्वारा जनता को इन प्राव धानो के दुष्प्रभावो से अवगत कराया जाए।

विद्यालय के छात्रो द्वारा योग तथा शारीरिक व्यायाम के कई करतब आर्य नेताओ के समक्ष प्रस्तुत किए गए। श्री वन्देमातरम जी ने ३० मिनट तक श्वास रोक कर समाधिस्थ छात्र की सराहना करते हुए उसे २०० रुपये पुरस्कार दिया तथा आशा व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रयत्नो से ही आर्य समाज विश्व के समक्ष यह साबित कर सकता है कि आध्यात्मिक विकास से प्राप्त बल के सहारे हम देश की अधिक सेवा कर सकते हैं।

श्री वन्देमातरम तथा श्री विमल वधावन इसके बाद बडोदा पधारे जहा से लगभग ३० किलोमीटर दूर आर्य कन्या व्यायाम महा विद्यालय मे एक समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री वन्देमातरम ने कहा कि आर्यसमाज द्वारा सचालित सस्थाए वास्तव मे राष्ट सेवा कर रही है। इस विद्यालय मे प्रतिवर्ष ९५ छात्राओ को शारीरिक व्यायाम आसन आदि के साथ साथ अन्य सिद्धान्तो की शिक्षा दी जाती है। यह एक प्रकार का सैनिक प्रशिक्षण विद्यालय है।

विद्यालय की छात्राओ ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा श्री वन्देमातरम जी को परेड रूप मे सलामी दी।

छात्राओ को सम्बोधित करते हुए श्री वन्देमातरम जी ने कहा कि यहा जिस प्रकार से आपको अनुशासित जीवन व्यतीत करना सिखाया जाता है इस प्रकार अनुशासन का पालन जीवन के हर क्षेत्र मे किया जाना चाहिए तभी जीवन को सुख समृद्धि और शान्तिमय बनाया जा सकता है। (शेष पृष्ठ ११ पर)

विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि सदस्यो के नाम

सभा प्रधान श्री प० रामचन्द्र वन्देमातरम के आदेशानुसार वृहत साधारण अधिवेशन २० २१ मई ९५ को हैदराबाद मे होने जा रहा था उसकी पूर्व तिथि परिवर्तित कर २७ २८ मई ९५ करने का निश्चय किया है। सभी प्रान्तीय सदस्य गण अपनी यात्रा हेतु रेल रिजर्वेशन सुविधानुसार पूर्व कराने की कृपा करें।

नोट—प्रतिनिधि सभायें अपने प्रतिनिधियो के नाम शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सयुक्त संघर्ष समिति के संयोजक श्री छोटूसिंह आर्य के नेतृत्व में—

सारेखुर्द शराब कारखाने के खिलाफ विधान सभा के समक्ष प्रदर्शन

जयपुर, २४ मार्च। अलवर जिले के तिजोरी तहसील के सारेखुर्द गांव में करीब १४ सौ करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले शराब कारखाने की अनुमति निरस्त किए जाने की मांग को लेकर शुक्रवार को यहां राज्य विधान सभा के समक्ष हजारों लोगों ने प्रदर्शन किया। इसका आह्वान सारेखुर्द शराब कारखाना विरोधी संयुक्त संघर्ष समिति ने किया था।

प्रदर्शन के बाद संघर्ष समिति का एक प्रतिनिधि मडल मुख्यमन्त्री भैरोसिंह शेखावत से विधानसभा मे उनके कक्ष मे मिला और इस सम्बन्ध मे ज्ञापन दिया। शेखावत ने प्रतिनिधिमंडल से बातचीत में स्पष्ट किया कि सारेखुर्द गाव में लगने वाला कारखाना शराब का निर्माण नहीं करेगा बल्कि 'परिष्कृत स्प्रिंट' बनाएगा। उन्होने कहा, वे भी इस बात के समर्थक हैं कि राज्य में शराब का प्रचलन नहीं बढ़े और नए शराब कारखाने नहीं खुलें। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को भरोसा दिलाया कि राज्य मे शराब का कोई नया कारखाना नहीं खुलेगा। मुख्यमन्त्री ने सारेखुर्द गाव के कारखाने को लेकर चलाये जा रहे आन्दोलन को समाप्त करने की अपील की:

इससे पहले प्रदर्शन के लिये अलवर और अन्य नगरो से जयपुर पहुचे प्रदर्शनकारी रामनिवास बाग के दक्षिणी द्वार के बाहर जमा हुए। यहां से वे जुलूस बनाकर आरोग्य मार्ग अजमेरी गेट, न्यूगेट और त्रिपोलिया होते हुए विधानसभा के जलेब चौक वाले दरवाजे के बाहर पहुंचे। प्रदर्शनकारियों में आर्य समाज सहित विभिन्न राजनीतिक व स्वयंसेवी संगठनों के कार्यकर्ता शामिल थे। प्रदर्शनकारी सारेखुर्द गांव मे शराब कारखाने को नही बनने देने और राज्य मे पूर्ण शराब बन्दी लागू किए जाने के समर्थन में नारे लिखे, बेनर हाथ मे लिए चल रहे थे। प्रदर्शन में काफी संख्या में महिलाएं भी शामिल थी।

जुलूस के जलेब चौक में राज्य विधान सभा के समक्ष पहुचने पर सभा की गई। संघर्ष समिति के संयोजक छोटूसिह आर्य, विधायक डा० चन्द्रभान अरोड़ा, आर्य समाजी नेता सत्यव्रत सामवेदी, पूर्व मन्त्री जगतसिंह दायमा आदि कई नेताओ ने सभा को सम्बोधित किया और शराब कारखाने के विरोध में किये जा रहे आन्दोलन के औचित्य पर प्रकाश डाला। बाद में ग्यारह सदस्यीय शिष्टमंडल संघर्ष समिति के संयोजक छोटूसिह आर्य के नेतृत्व में मुख्यमन्त्री भैरोंसिह शेखावत से मिलने विधानसभा में गया।

दयानन्दं वन्दे

पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर (भदोही)

दयानन्दं वन्दे, गुणगणयुतं शान्ति निलयं,
सदा सत्याधारं परहितरतं वेद-विभवम्।
ऋषिणामाप्तानां, वचनमतिप्रामाण्य-मननाद्,
भवे भव्यां कीर्तिम्, अलभत महर्षिर्जगद्गुरुः॥

मैं महर्षि दयानन्द की वन्दना करता हूं, जो गुणगण से युक्त थे, शान्ति के सदन थे, सदा सत्यनिष्ठ थे, परहित में संलग्न थे और वेद ही जिनका सर्वस्व था। उस जगद्गुरु महर्षि दयानन्द ने आदि-ऋषियों के वचन को प्रमाण मानने के कारण संसार में महान कीर्ति प्राप्त की थी।

अनाथानां नाथः, पतित जनतोद्धार-निरतः,
समाकर्ण्याऽऽक्रन्दं, विहित-विधवोद्वाह-नियमः।
गवां हत्यां निन्द्या, खर-वचन-घोषैरकथयद्,
दयालुर्निर्भीको, जयति वसुधा-क्षेम-प्रवणः॥

वे अनाथों के नाथ थे, दलितों के उद्धार में सदा लगे रहते थे, विधवाओं के करुण क्रन्दन को सुनकर उन्होंने विधवा-विवाह प्रचलित किया था, अति कठोर शब्दों में उन्होंने गोहत्या की निन्दा की थी। ऐसे विश्व-कल्याण के प्रेमी, दयालु और निर्भीक स्वामी दयानन्द की जय हो।

अहिंसाया मार्गं, सततमनुसृत्याऽऽप्तवचनः,
कुरीति पाखण्डं, पतनसृतिरित्येनमवदत्।
सुशिक्षां नारीणां, श्रुतिनिचयपाठं समदिशत्
सदा सत्योद्धता, भवविभवरूपो विजयते॥

वे यथार्थवक्ता थे, उन्होने सदा अहिंसा के मार्ग का अनुसरण किया था। उनका कथन था कि कुरीतियां और पाखण्ड, ये देश को पतन की ओर ले जाने वाले हैं। उन्होंने घोषित किया कि स्त्रियों को उच्च शिक्षा दी जानी चाहिए और उन्हें वेदों के पढ़ने का पूर्ण अधिकार है। वे संसार के लिए ऐश्वर्यरूप थे और सत्य के उद्घाटक थे, ऐसे स्वामी दयानन्द की जय हो।

सुशिक्षायै सत्यं, गुरुकुलविधेर्मार्गमशिषत्,
स्वदेशोन्नत्यै च, सतत-श्रम-निष्टामुपदिशन्।
अहो स्वं सर्वस्वं, दलित-जन-दुःखापचितये,
सतां वन्द्यो योगी, जयति निज-देशाऽऽधि हरणः॥

उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए गुरुकुल पद्धति अपनाने का आदेश दिया और देश की उन्नति के लिए निरन्तर कठोर परिश्रम करने का उपदेश किया। उन्होने दलितों के दुःखों को दूर करने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया, ऐसे सज्जनों के वन्दनीय, योगी और देश के दुःखों को दूर करने वाले स्वामी दयानन्द की जय हो।

विषं पाय पाय, धृतशिवतनुर्लोक-हितकृत्,
स्वराज्यं स्वाराज्यम्, अगणयदयमास्तिक्यधिषणः।
समाजं चाऽऽर्याणां, प्रतिनगरमस्थापयदिह,
श्रुतीना भाष्येण, श्रुति-निवह-सत्यार्थमदिशत्॥

उन्होंने भगवान शिव के तुल्य विष पी पीकर संसार का कल्याण किया। वे आस्तिक बुद्धि वाले थे, उन्होने स्वराज्य को स्वर्ग के राज्य के तुल्य उत्तम बताया। उन्होने प्रत्येक नगर में आर्यसमाज की स्थापना की और वेदों का भाष्य करके वेदों का वास्तविक अर्थ संसार के सामने रखा।

महाशय राजपाल का बलिदान

श्रीकान्त एम० ए०

आज से लगभग १०० वर्ष पहले अमृतसर के एक साधारण परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। बचपन से ही उसके पिता घर-बार छोड़कर साधु हो गए। घर का सारा भार और साथ ही अपनी पढ़ाई—दोनों ही कठिन काम कुमार अवस्था में ही एक साथ करने पड़े। घर का खर्च चलाने के लिए पढ़ाई के साथ ही नौकरी कर ली। इस तरह कठिनाइयों का सामना करना, श्रम करना, हिम्मत न हारना। ये सब गुण विद्यार्थी जीवन से ही इस बालक में आ गए।

यही बालक बड़ा होकर आर्यसमाज के महान पुरुषों में से एक बना। उन्हें हम धर्मवीर महाशय राजपाल के नाम से जानते हैं। उन्होंने ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति बड़े उत्साह और श्रद्धा से अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। इसी सदी के शुरू में आर्यसमाज एक महान आन्दोलन, एक नई जागृति लाने वाली, राष्ट्र-निर्माण करने वाली विचारधारा के रूप में उभर रहा था। उन दिनों आर्य समाज के प्रचार के लिए साहित्य तैयार करने का काम और उसे देश-विदेश में फैलाने का काम उन्होंने बड़ी सूझबूझ और लगन से किया। किसी भी आन्दोलन, किसी भी नई विचारधारा के प्रचार के लिए उसका साहित्य तैयार करना बड़ा महत्वपूर्ण काम होता है। महाशय राजपाल ने आर्यसमाज के सभी विद्वानों, विचारकों, लेखकों, सन्यासियों को प्रेरणा देकर उनसे वेदों के सम्बन्ध में, आर्यसमाज के नियमों और सिद्धान्तों के सम्बन्ध में सैकड़ों पुस्तकें लिखवाईं और प्रकाशित कीं। आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार में उनका योगदान सदा स्मरण किया जाएगा।

उन दिनों पंजाब में लोग प्रायः उर्दू और फारसी पढ़ते थे। पुस्तकें और समाचार पत्र भी उर्दू में छपते थे। हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था। इसलिए अंग्रेजी भाषा का चलन भी बढ़ रहा था। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज द्वारा हिन्दी को अपने राष्ट्र की भाषा बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा था कि देश को आजाद कराने के लिए स्वदेशी और हिन्दी का प्रचार बहुत आवश्यक है। महाशय राजपाल ने उस जमाने में उर्दू के साथ-साथ हिन्दी की पुस्तकों का प्रकाशन बड़े पैमाने पर किया, जिससे आर्यसमाज की विचारधारा न केवल पंजाब में, परन्तु सारे देश में पनप सकी। भारत के बाहर विदेशों में जहां-जहां भी भारत के लोग बसे थे उनकी पुस्तकें बहुत लोक प्रिय थीं। अफ्रीका, मारीशस, फिजी, इंग्लैण्ड सभी देशों में आर्यसमाज के प्रचार के लिए और भारतीय संस्कृति को जानने-समझने के लिए उनका प्रकाशित साहित्य बहुत सहायक सिद्ध हुआ।

महाशय राजपाल जी ने अपना जीवन एक पत्रकार के रूप में शुरू किया था। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी उन दिनों जालन्धर से एक साप्ताहिक पत्र निकालते थे, जिसका नाम "सद्धर्म प्रचारक" था। महाशय राजपाल जी उसमें लेख लिखा करते थे। बाद में वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ सहायक सम्पादक के रूप में काम करने लगे। कुछ वर्षों बाद लाहौर मे महाशय कृष्ण जी के साथ उनके साप्ताहिक पत्र "प्रकाश" में सहायक सम्पादक के रूप में काम सम्भाला। लाहौर उन दिनों पंजाब में आर्यसमाज की गतिविधियों का केन्द्र था। यहां आकर वे आर्यसमाज के रंग में ऐसे रंग गए कि दिन-रात ऋषि दयानन्द के सन्देश को घर-घर पहुंचाने की लगन लग गई। दिन-रात अनथक परिश्रम करना उनका स्वभाव ही बन गया था।

राजपाल जी का हस्तलेख बहुत सुन्दर और स्पष्ट था। वह लिखते भी बहुत तेजी से थे। उन दिनों शार्टहैण्ड का प्रचलन नहीं हुआ था। राजपाल जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासियों एवं विचारकों के विचार उनके भाषण सुनते हुए उसी गति से लिख लेते थे। फिर उन लेखों को संवार-सुधार कर प्रकाशित करते थे। इस तरह से उन्होंने अनेक मूल्यवान पुस्तकें तैयार कर आर्यजगत को दीं। आर्यसमाज इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए उनका ऋणी रहेगा। "भक्ति दर्पण" नाम से उन्होंने एक पुस्तक स्वयं सम्पादित की, जिसकी अब तक लाखों प्रतियां बिक चुकी हैं और आज भी यह उपयोगी पुस्तक उसी तरह लोकप्रिय है। इस पुस्तक के माध्यम से आर्यसमाज के सिद्धान्तों और विचारों का प्रचार संसार के कोने-कोने में हुआ है।

महाशय राजपाल बहुत सरल स्वभाव के थे, बहुत मिलनसार थे और सदा मीठी वाणी बोलते थे। इन्हीं गुणों के कारण वे सबके प्रिय थे और उनके मित्रों की संख्या बहुत अधिक थी। व्यवहार में वे सच्चे थे और अपनी बात के धनी। किसी से कोई वचन दे दिया तो उसे अन्त तक निभाते थे। व्यापार में उनकी सफलता भी इन्हीं गुणों के कारण हुई।

आर्यसमाज के प्रचार में ही उन्होंने अपने गुणों की बलि दी। घटना इस प्रकार हुई। उस जमाने में अलग-अलग धर्मों के लोग परस्पर शास्त्रार्थ किया करते थे, वाद-विवाद भी होते थे। एक-दूसरे के धर्म पर विश्वासों पर आक्षेप लिखकर उन्हें प्रकाशित करते थे। दूसरी ओर से भी उन आक्षेपों का उत्तर तथा साथ ही उनके धर्म पर प्रत्यारोप भी प्रकाशित होते थे। इस प्रकार से वह शास्त्रार्थ और वाद-प्रतिवाद का युग था। उन्हीं दिनों मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें हिन्दू धर्म पर तथा विशेषकर श्री कृष्ण जी महाराज पर बहुत ही भद्दे आक्षेप किए गए। इस पुस्तक के उत्तर में महाशय राजपाल ने एक छोटी-सी पुस्तक प्रकाशित की, जिसका नाम था "रंगीला-रसूल" जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद साहब के जीवन की घटनाओं को चित्रित किया गया था। इसके लेखक वास्तव में, उनके मित्र और आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० चमूपति एम०ए० थे। उन्होंने इस पुस्तक पर अपना नाम न देकर लेखक के स्थान पर "दूध का दूध और पानी का पानी" लिखना उचित समझा। साथ ही महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिया कि वे लेखक का नाम किसी भी हालत में कभी भी किसी को नहीं बतायेंगे। पुस्तक प्रकाशित होने के एक वर्ष बाद तक मुसलमानों ने इस पर कोई आक्षेप नहीं किया। फिर किसी ने इसकी प्रति महात्मा गांधी जी को भिजवा दी। गांधी जी ने अपने पत्र "यंग इण्डिया" में इस पुस्तक के विरुद्ध एकतरफा लेख लिखा। मुसलमानों को भड़क उठने का अवसर हाथ लग गया। वे पुस्तक के लेखक और प्रकाशक की जान के दुश्मन बन गए। इस पुस्तक को उन्होंने अपने पैगम्बर के प्रति अपमानजनक समझा।

दबाव में आकर पंजाब की अंग्रेज सरकार ने महाशय राजपाल पर मुकदमा चलाया जो कई वर्षों तक चला, परन्तु अन्त में हाईकोर्ट ने उन्हें सम्मानपूर्वक निरपराधी घोषित किया और अभियोग से बरी कर दिया। उच्च न्यायालय के इस फैसले से मुसलमान बहुत चिढ़ गए। इस बात पर भी उन्हें रोष था कि महाशय राजपाल इतना कुछ होने पर भी पुस्तक के लेखक का नाम क्यों नहीं बताते। वे राजपाल जी की जान के दुश्मन हो गए। उन पर दो बार कातिलाना हमला किया गया। पहली बार १९२७ में जब उन्हें कई महीने अस्पताल में रहना पड़ा। फिर ६ अप्रैल १९२९ को दोपहर को इल्मदीन नामक मतांध अनपढ़ युवक ने उन पर प्राणघातक आक्रमण किया और इस प्रकार उन्होंने अपने प्राणों की बलि आर्य समाज के लिए दे दी।

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्य में काव्य का प्रयोजन

: डा० नगेन्द्र

काव्यशास्त्र का एक अन्य प्रमुख विषय है काव्य-प्रयोजन। इस सन्दर्भ में एक प्रश्न तो यही उठता है कि काव्य अथवा कला का कोई प्रयोजन होता है या नही. क्योकि सुधी आलोचको का एक वर्ग निश्चय पूर्वक यही मानता है कि काव्य अथवा कला का कोई प्रयोजन नही होता। यूरोप में इसी मत को लेकर 'कला कला के लिए' सिद्धांत का आविर्भाव हुआ है। भारतीय वाङमय में भी कला को लीला के समकक्ष माना गया है। वैष्णव आचार्यो ने 'लोकवत्तु लीला--कैवल्यम्' सूत्र के आधार पर लीला को ब्रह्म की लीला माना है, है, जिसके अनुसार वह केवल आत्मक्रीड़ा के लिए, किसी प्रयोजन के बिना, सृष्टि की रचना करता है। लेकिन वह सिद्धांत एकांगी ही है—काव्य प्रयोजन का भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य-शास्त्र मे आरम्भ से ही विशद रूप में विवेचन किया गया है।

भारतीय काव्य शास्त्र में भारत ने नाट्य-कला और प्रकारान्तर से काव्य-कला के निम्नोक्त प्रयोजनों का उल्लेख किया है—

धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धि-विवर्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति ॥

यहा साहित्य को एक ओर कल्याणप्रद तथा धर्माचरण एव लोक-व्यवहार ज्ञान का साधक और दूसरी ओर यश, आयुष्य तथा बुद्धि का वर्धक माना गया है। भामह ने इनमें एक प्रयोजन जोड़ दिया—'प्रीति' (यद्यपि उसका उल्लेख भरत अनेक प्रसगो मे कर चुके हैं) और उधर धर्म, आयुष्य, यश, बुद्धि विकास आदि के स्थान पर, समस्त रूप मे, 'पुरुषार्थ-चतुष्टय' रूप जीवन के चरम मूल्यो का निर्देश कर दिया है। यह एक पक्ष है—दूसरा पक्ष है आनन्द -

चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम्।
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते ॥
(कुतक--व. जी. १ ५)

काव्य के द्वारा चतुर्वर्गफल-प्राप्ति से भी अधिक काम्य अतश्चमत्कार की उपलब्धि होती है—अथवा काव्य के दो मूल प्रयोजन हैं—(१) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि—दूसरे शब्दो मे ऐहिक और आमुष्मिक जीवन की सफलता और (२) आनन्द। ये दोनो सिद्धिया परस्पर विरोधी न होकर एक दूसरे की पूरक है। चतुवर्ग की परिणति यदि आनन्द मे न हो तो उसका प्रयोजन हो क्या ? और सफल जीवन के बिना आनन्द की भी स्थिति क्या ? इसमे सन्देह नही कि इन दोनो मे रसास्वादजन्य अतिश्चमत्कार को अधिक महत्व दिया गया है उसे ही सकलप्रयोजनमौलिभूत' कहा गया है, परन्तु इसमे नैतिक मूल्यों का तिरस्कार अथवा उपेक्षा नहीं है। रस को काव्य का प्राण मानते हुए भी भारतीय काव्यशास्त्र के अग्रणी आचार्यो ने उसके लिये औचित्य का आधार अनिवार्यत माना है – औचित्योपनिबन्धस्तु रसस्योपनिषत्परा (ध्वन्यालोक) यो तो औचित्य के अनेक रूप हैं परन्तु उन सबमें प्रमुख हैं नैतिक औचित्य, जिसके अभाव मे रस दुष्ट होकर रसाभाव बन जाता है। इस प्रकार, भारतीय मत के अनुसार काव्य के दो मूल प्रयोजन है लोकमगल और आनन्द।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र मे भी काव्य-प्रयोजन का प्रसग इन्ही दो ध्रुवातो के बीच यात्रा करता रहता है। अरस्तु ने काव्य के दो मूल प्रयोजनो का प्रतिपादन किया है – शिक्षा और आनन्द, 'और आरम्भ में वह (मनुष्य) सब कुछ अनुकरण के द्वारा ही सीखता है। अनुकृत वस्तु मे प्राप्त आनन्द भी कम सार्वभौम नहीं। अनुभव इसका प्रमाण है जिन वस्तुओ के प्रत्यक्ष दर्शन से हमें क्लेश होता है उन्हीं की यथावत प्रतिकृति का भावन आह्लादकारी बन जाता है, जैसे किसी अत्यन्त अधन्य पशु अथवा शव की रूप-आकृति का उदाहरण लिया जा सकता है।' काव्यशास्त्र, पृ० ९८ -

अरस्तू के उपरान्त पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इतिहास में इस प्रश्न पर निरन्तर विवाद रहा है। वहा इसके पक्ष-विपक्ष को लेकर आलोचकों के कई वर्ग बन गए हैं। एक वर्ग उन आलोचको का है जो लोकमगल को ही काव्य का आधार मानते हैं। प्राचीनों में होरेस ने सत्रहवी शती में मिल्टन आदि ने, उन्नीसवी शती मे रस्किन जैसे विचारको ने अत्यन्त दृढ़ता के साथ काव्य में नतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा की है और शुभारम्भ की धारणाओं तथा बहुजनहित के आदेशो को काव्य का मानदण्ड घोषित किया है।

किसी राष्ट्र की कला उसकी नैतिक स्थिति की द्योतक है। (रस्किन-लेक्चर्स आन आर्ट) ३/९७/ उन्नीसवी शती के अन्त में, रूसी साहित्यकार तोलस्तोय ने आनन्द और सौन्दर्य का निषेध करते हुए मानव एकता को कला का उद्देश्य घोषित किया—'अन्त मे यह (कला आनन्द नहीं है, वरन मानव एकता का साधन है, जो मानव-मानव की सह अनुभूति के द्वारा परस्पर-संबद्ध करती है।' (कला क्या है ?)

इधर मार्क्स के अनुयायी प्रगतिशील आलोचकों ने भी अपने दृष्टिकोण से 'जनहित' को ही काव्य की अन्तिम कसौटी माना है जनजीवन के लिए उपयोगी तथा सामाजिक चेतना के विकास में सहायक तत्व ही काव्य के सच्चे प्रतिमान है।

वस्तुत इस वर्ग के अन्तर्गत तीन उपवर्ग हैं—

(१) जो काव्य मे, रूढ़ अर्थ में, सदाचार अर्थात धर्माधर्म पर आश्रित नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा करता है—रस्किन आदि। (२) जो मानव के सुख-दुःख, शक्ति और दुर्बलता पर आश्रित करुणामूलक मानवी मूल्यों को ग्रहण करता है, जैसे तोलस्तोय आदि। (३) जो मानव-समाज के भौतिक उत्कर्ष के साधक सामाजिक मूल्यो को प्रमाण मानता है--मार्क्स और उनके अनुयायी। इन तीनों उपवर्गो का मूल आधार एक है—ये सभी आलोचक या तो सौन्दर्य का निषेध करते हैं, या उसको शिव के अधीनस्थ मानते हैं, या फिर सुन्दर को शिव से अभिन्न मानते हैं। प्रतिपक्ष में भी आलोचकों के दो उपसर्ग हैं। एक तो वे हैं जो काव्य मे लोकमगल के साधक नैतिक मूल्यो को सर्वथा अस्वीकार करते हैं। विक्टर ह्यूगो, विनबर्न और 'कला कला के लिए' सिद्धात के प्रतिपादक सभी आलोचक—पेटर, ह्विसलर, आस्कर वाइल्ड, ब्रैडले, क्लाइव बेल आदि इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इनका विश्वास है कि कला की सृष्टि अपने आप मे अपनी सिद्धि है, उसके अतिरिक्त किसी नैतिक प्रयोजन की पूर्ति काव्य के लिए अप्रासगिक है। काव्य का ससार अपने आप मे स्वतन्त्र, एक निराला ससार है, अत: सामान्य लोक-नियम तथा रीति-नीति आदि का उसके साथ कोई सम्बन्ध नही है। कविता का मूल्य उसके नैतिक अर्थ या प्रयोजन पर किसी प्रकार निर्भर नही रहता, वर्जिल द्वारा सीजर का अथवा ड्राइडन द्वारा स्टुअर्ट नृपति का यशोगान देशभक्ति अथवा स्वातन्त्र्य-प्रेम से अनुप्रेरित कवियस या सेटिल द्वारा अत्याचार के प्रति व्यक्त उदात्त से उदात्त आक्रोश की अपेक्षा अधिक काम्य है। (ऐसेज ऐंड एटोडीज)

दूसरा उपवर्ग ऐसे आलोचको का है जो 'आनन्द' को काव्य का एकमात्र या प्रमुख प्रयोजन मानते हैं। शिलर, कोलरिज, शैले आदि रोमानी आलोचक प्राय: इसी वर्ग मे आते हैं। 'समस्त कला का लक्ष्य है आह्लाद, मानव सुख से अधिक उदात्त और गम्भीर कोई समस्या नहीं है। (शिलर)

(क्रमश)

विशेष सूचना —

"कुलियात आर्य मुसाफिर"

(छपकर तैयार है)

ग्राहकों को डाक द्वारा भेजी जा रही है वह प्राप्त करें और जिन्हें सभा कार्यालय से लेनी हो वह यहां आकर प्राप्त करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

भारत भक्त दीनबन्धु एण्ड्रूज और आर्यसमाज

डा० भवानीलाल भारतीय

दीनबन्धु के नाम से विख्यात सी० एफ० एण्ड्रूज का जन्म १२ फरवरी १८७१ को उत्तरी इंगलैण्ड के कार्लाइल नामक स्थान में हुआ। उनके पिता का नाम जान एडविन एण्ड्रूज था जो एक धार्मिक प्रकृति के पुरुष थे। उनकी शिक्षा केम्ब्रिज विश्व विद्यालय में हुई। कुछ काल तक केम्ब्रिज में ही अध्यापन करने के पश्चात् १९०४ में वे भारत आये। यहा वे दिल्ली के सेंट स्टीफन कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हुए और इस कालेज के विख्यात प्रिंसिपल सुशील-कुमार रुद्र के सम्पर्क में आये। शीघ्र ही वे भारतीय जीवन पद्धति तथा संस्कृति से प्रभावित हो गये और ईसाई मत की अनेक आस्थाओ से उनकी पूर्ण विरक्ति हो गई, यद्यपि वे भारत में एक ईसाई प्रचारक के रूप में ही आये थे। यद्यपि वे ईसा को संसार का अद्वितीय महापुरुष तथा पापियों का उद्धारक मानते थे, तथापि ईसाइयत की निम्न धारणाओं में उनका विश्वास समाप्त हो गया।

१—वे बाइबिल को पूर्ण निर्भ्रान्त नही मानते थे।

२—बाइबिल की चमत्कारपूर्ण बातों में उनका विश्वास नहीं था।

३—वे ईसा की अलौकिक उत्पत्ति (कुमारी के गर्भ से उत्पन्न होना) के मत को भी त्याग चुके थे।

४—वे ईसाई त्रैतवाद (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) को भी नहीं मानते थे।

५—वे बाइबिल के इस कथन में विश्वास नहीं रखते थे कि जो व्यक्ति ईसा और ईसाइयत में आस्था नहीं रखता उसका भावी जीवन अन्धकारमय है और वह कभी मुक्ति का अधिकारी नहीं हो सकता।

भारत में आने पर एण्ड्रूज साहब देश के सभी प्रसिद्ध नेताओं के सम्पर्क में आये और इस देश को स्वाधीन कराने के लिये आरम्भ किये गये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया। वे शुद्ध निरामिष भोजी बन गये और धोती कुर्ता पहनने लगे। उज्ज्वल श्मश्रुधारी एण्ड्रूज अपने गौर वर्ण और भारतीय पोशाक में पुराने तपस्वी ऋषि की भांति लगते थे। श्री गोपाल कृष्ण गोखले तथा महात्मा गांधी की प्रेरणा से उन्होंने विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों की समस्याओं का विधिवत् अध्ययन किया। खास तौर से शर्तबन्द कुली प्रथा के विरोध में उन्होंने आवाज उठाई। प्रवासी भारतीयों की स्थिति का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने के लिये वे अफ्रीका और फीजी गये तथा भारत सरकार को कहकर शर्तबन्द कुली प्रथा को बन्द करवाया। एण्ड्रूज का महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से स्नेह सम्बन्ध था और वे कवि की प्रेरणा से वर्षो तक शान्ति निकेतन में रहे थे।

ईसाई प्रचारक के रूप मे भारत में आने पर भी उन्होंने किसी भारतवासी को ईसाई मत की दीक्षा नही दी। भारतीयो का धर्म बदलने वाले तथा इस देश के धर्म, संस्कृति, परम्परा एवं जीवन मूल्यों को घृणा की दृष्टि से देखने वाले मिशनरी समुदाय से उन्हें घृणा हो गई और वे सच्चे अर्थो में मानव धर्म के अनुयायी बन गये। इस बीच वे गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के सम्पर्क में आये। उन्होंने इस गुरुकुल को निकट से देखा तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से अत्यन्त प्रभावित हुए।

महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी पर उन्होने स्वामी जी के जीवन एवं व्यक्तित्व का विवेचन करते हुए एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद दयानन्द शताब्दी का महत्त्व शीर्षक से प्रो० देवकीनन्दन शर्मा ने किया था।

१९०९ में जब अंग्रेज सरकार का संकेत पाकर पटियाला के नाबालिग महाराजा ने आर्यसमाज के सभासदों को राजद्रोह के षड्यन्त्र का दोषी ठहरा कर इन पर मुकद्दमा चलाया तो उस विषम स्थिति में दीनबन्धु ने स्वामी दयानन्द और उनकी विचार-धारा के प्रति अपनी सम्मति व्यक्त करते हुए लिखा—"मैं फौरन ही यह कहूंगा कि स्वामी दयानन्द की शिक्षा पर उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर जो कटाक्ष किये गये हैं, वे अत्यन्त अनुचित हैं। इन कटाक्षों के करने वाले यह अनुभव नहीं करते कि स्वामी जी ने अपनी पुस्तक मे हर प्रकार से वैदिक समय के आदर्श का वर्णन करने की चेष्टा की है उनका उद्देश्य वर्तमान राजनैतिक बातों को बताना नही है। स्वामी दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में जितने ग्रन्थ मुझे मिले हैं, मैंने उन्हें सावधानी से पढा है और मैं उन पुरुषों से भी जो स्वामी जी को जानते और उनके विषय में कुछ बतला सकते थे मिल चुका हू। मैंने उनके आचरण तथा शिक्षा सम्बन्धी विचारों के बारे में अपनी स्पष्ट सम्मति निश्चित कर ली है। वह दिल और दिमाग से धार्मिक तथा सामाजिक सुधारक थे और उन्होंने वर्तमान राजनैतिक विषयों पर उसी सीमा तक लिखा है जितना कि उच्च श्रेणी के और उदार हृदय धार्मिक सुधारकों को समाज के अन्तर्गत राजनैतिक विषयों के सम्बन्ध में लिखना उचित है।"

आगे श्री एण्ड्रूज स्वामी दयानन्द के ईसाइयत विषयक विचारों के बारे में लिखते हैं।" मुझे अत्यन्त दुःख है कि मेरे ईसाई धर्म के सम्बन्ध मे उन्होंने कुछ कटु वचनों का प्रयोग किया है, परन्तु मुझे विश्वास है कि यदि आज वे जिन्दा होते तो उन शब्दों को अवश्य निकाल देते क्योंकि वे सत्य के एक दृढ़ अन्वेषी थे। हरिद्वार के गुरुकुल के लिये मेरे मन में उत्तमोत्तम आदर के भाव हैं और आशा है कि मैं उसे शीघ्र ही देखूंगा और स्वयं सब कुछ अनुभव करूंगा। अपने अंग्रेज तथा अमेरिकन मित्रों से जो गुरुकुल को देख आये हैं. वातचीत करने पर, जो कुछ मैंने गुरुकुल के विषय में सुना है, उससे मुझे विश्वास हो गया है कि गुरुकुल नितान्त धार्मिक नींव पर चलाया जा रहा है और किसी अंश में भी वर्तमान राजनैतिक आन्दोलन से उसका सम्बन्ध नहीं है।"

१९१२ मे इनकी The Renaissance in India शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित हुई। यद्यपि यह एक ईसाई प्रचारक के लिये तैयार की गई पाठ्यपुस्तक के रूप में लिखी गई है, किन्तु इसमें भारत के धार्मिक पुनर्जागरण काल के सभी आन्दोलनों का विश्लेषण किया गया है। दीनबन्धु एण्ड्रूज का निधन १९४० में हुआ।

देववाणी संस्कृत और विज्ञान

सूर्यदेव चौधरी (विज्ञान स्नातक)

संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है। सभी त्रुटियों से रहित होने के कारण इसे संस्कृत कहते हैं। देवों की भाषा होने के कारण यह देववाणी कहलाती है। भारतीयों का अपमान करने के लिए अंग्रेजों ने इसे मृत-भाषा की संज्ञा दे दी। मानसिक रूप से पराधीन और अंग्रेजों के अन्धभक्त कुछ भारतीय भी अपनी आंखों से देखे बिना इसे मृत भाषा कहते हैं। लेकिन जिन भारतीयों और विदेशियों ने इसे अपनी आंखों से देखा है, वे इसे मृत-भाषा कदापि नहीं मान सकते। इसका एकमात्र कारण सभी विद्याओं पर संस्कृत साहित्य का विशाल भंडार है। अध्यात्म और विज्ञान उभय ज्ञान का आकार चारों वेददेववाणी संस्कृत में हैं। अध्यात्म विवेचन के लिए जहां उपनिषदें संस्कृत में हैं,वहीं पूर्णतः तर्क पर आधारितषड्दर्शन भी संस्कृत में हैं,सांख्य दर्शन के सम्बन्धमें मैक्डानल ने कहा है—'संसार के इतिहास में सांख्य ने सबसे पहले मन की पूर्ण स्वतन्त्रता पर आग्रह किया और इसकी समस्याओं का केवल तर्क के आधार पर समाधान करने का यत्न किया।' योग दर्शन समाधि के द्वारा आत्म-साक्षात्कार की युक्ति के साथ मनोविज्ञान के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण करता है तो वैशेषिक दर्शन पदार्थों के साधर्म्य-वैधर्म्य का वैज्ञानिक विवेचन भी प्रस्तुत करता है। प्रमाणों की परीक्षा न्याय दर्शन का प्रतिपाद्य विषय है तो पूर्व मीमांसा वाक्यार्थ का विवेचन सिखाता है। वेदान्त दर्शन अध्यात्म में ब्रह्म का निरूपण करता है। बाल्मीकीय रामायण और महाभारत विश्व-श्रेष्ठ इतिहास के साथ-साथ दैनिक जीवन के सूक्ष्म और श्रेष्ठ व्यवहारों का वर्णन करने वाले श्रेष्ठ काव्य संस्कृत में है। भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में संस्कृत में रचित शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और पाणिनी के अष्टाध्यायी, की विश्व में कोई समता नहीं है। गीता, पुराण, स्मृति आदि संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधिहैं। इसके अतिरिक्त भौतिक विज्ञान पर भी अनेकों ग्रन्थ देववाणी में विद्यमानहैं। 'सूर्य-सिद्धान्त'नामक संस्कृत ग्रन्थ मे खगोल विद्या का उत्तम वर्णन है। आर्य भट्ट का आर्यभट्टीयम्' और भास्कराचार्य का 'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रन्थ सस्कृत भाषा में खगोल-विज्ञान के आधार-स्तम्भ है। महान ज्योतिष वाराहमिहिर की रचनाएं भी देववाणी में सग्रहीत हैं। जिनकी सत्यता की पुष्टि आधुनिक विज्ञान ने कर दी हैं। भारद्वाज मुनि कृत 'यन्त्र सर्वस्वम्' नामक ग्रन्थ भी सस्कृत मे ही है जिसका वैमानिकी अध्याय आजकल 'बृहद् विमान शास्त्र' के नाम से राष्ट्र-भाषा हिन्दी में अर्थ के साथ प्रकाशित है और यह पुस्तक विमान के निर्माण एव चालन आदि की सूक्ष्म जानकारी हमें देती है। चिकित्सा के क्षेत्र में तो सस्कृत भाषा का सानी विश्व में कोई है ही नहीं। 'चरक संहिता' जहां रोग के विभिन्न लक्षण, कारण, निदान और औषधि का अमूल्य कोष है, वहीं 'सुश्रुत' नामक ग्रन्थ शल्य चिकित्सा का वैज्ञानिक एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। इस शल्य-चिकित्सा ग्रन्थ में जहां कृत्रिम अंगों को लगाने का वर्णन है, वहीं बाल को लम्बाई में चीरने वाले उपकरण की भी विद्यमानता का वर्णन है, यही कारण है कि अमेरिकन विदुषी श्रीमती मैनिंग ने कहा—"हिन्दुओं के शल्य-चिकित्सा के औजार इतने बारीक हैं कि वे बाल को लम्बाई में भी चीर सकते हैं।" दूसरे विदेशी विद्वान मैक्डावल ने कहा—यूरोपीय शल्य-चिकित्सक इस वर्त्तमान काल में भी भारत से कुछ सीख सकते हैं। क्योंकि वे पहले ही भारत से कृत्रिम नाक बनाने की विद्या उधार लिए हैं। अंग्रेज भारत में गत शताब्दी (अठारहवीं शताब्दी में इस कला से परिचित हुए थे।

इतना ही नहीं राजा भोज के काल में लिखित 'समरागण सूत्रधार' नामक संस्कृत ग्रन्थमें जहां विमानविद्या का वर्णन है,वहीं शुल्व सूत्र में रेखागणित का आधुनिक विज्ञान सम्मत वर्णन है। वेदों के व्याख्यान परक ब्राह्मण ग्रन्थ देववाणी संस्कृत के वे अनुपम ग्रन्थ हैं जिनमें अध्यात्म और विज्ञान का अपूर्व संगम है। अथर्ववेद का उपवेद अथर्ववेद जहां शिल्प-शास्त्र का वर्णन करता है, वहीं यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद आयुद्ध विज्ञान का ज्ञान देता है। सामवेद का उपवेद गंधर्ववेद में गान-विद्या का सुन्दर संग्रह है तो ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद चिकित्सा की पूर्ण जानकारी देता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये सब ग्रन्थ देववाणी संस्कृत में हैं। संस्कृत में रचित कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी अपने आप में बेजोड़ है। इसके अतिरिक्त छोटे-मोटे ग्रन्थ तो संस्कृत साहित्य में अनेकों हैं। इन्हीं विशिष्टताओं पर मुग्ध होकर पश्चिमी विद्वान विल्सन ने कहा था—

'न जाने किं हि माधुर्यं वर्त्तते अत्र ,सस्कृते।
सर्वदेव समुन्मता ये वैदेशिका वयम्।"

अर्थात 'न जाने सस्कृत में कौन सी ऐसी मिठास है जिसके कारण हम विदेशी सदा ही इसके लिए उन्मत्त हुये रहते हैं।'

जिस भाषा के पास अध्यात्म, विज्ञान, कला, संस्कृति आदि विभिन्न विषयों पर इतने विशाल भंडार हों, उस भाषा को मृत कहना बौद्धिक दिवालिएपन का परिचायक नहीं तो और क्या है? इसके साथ ही साठ-सत्तर करोड़ हिन्दुओं के दैनिक पूजा-पाठ और जन्म से मरण तक सभी संस्कार आज भी देववाणी संस्कृत में ही सम्पन्न होते हैं। फिर यह भाषा मृत कैसे हो सकती है?

ऊपर संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का दिग्दर्शन कराया गया है। अब उनमें आधुनिक विज्ञान सम्मत सिद्धान्तों के उदाहरण प्रस्तुत करना आवश्यक है अन्यथा उपरोक्त बातें सिर्फ गपाष्टक बनकर रह जायेंगी। चूंकि अध्यात्म के क्षेत्र में संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्टता सर्वविदित है, इसलिए सिर्फ वैज्ञानिक सिद्धान्तों का ही वर्णन करना समुचित होगा। सबसे पहले वेदों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

१. चन्द्रमा सूर्य से प्रकाशित होता है

'दिवि सोमो अधिश्रितः। अथर्ववेद १४/१/१

अर्थ 'यह चन्द्रलोक सूर्य से प्रकाशित होता है।

यही बात यजुर्वेद २३/१०/ में दूसरे शब्दों में कही गई है—

'सूर्यः एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।'

२. पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है

'भूर्जज्ञे उत्तानपदः भुवः आशा अजायन्त।' (ऋ० १०/७२/४)

अर्थ-पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है और पृथ्वी से पृथ्वी की दिशा को बताने वाले भेद उत्पन्न होते हैं।"

३. सौर ऊर्जा का वर्णन

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः॥ साम पूर्वा १/२/६

अर्थ मनुष्य मन लगाकर अग्नि को प्रदीप्त करता हुआ कर्म को सम्प्राप्त हो, इसलिए सूर्य की किरणों से अग्नि को प्रदीप्त करे। इस मन्त्र में स्पष्टतः सौर ऊर्जा का वर्णन है। इसकी पुष्टि भारद्वाज मुनिकृत 'यन्त्र सर्वस्वम्' के वैमानिकी प्रकरण अन्तर्गत विमान में सौर ऊर्जा के उपयोग करने के निर्देश द्वारा की गयी है।

'विमानस्योपरि सूर्यस्य शक्त्याकर्षणपञ्जरम्।'

यह उद्धृत श्लोक कोपी संख्या-१ के विमानांग निर्णय में पृष्ठ २४ पर श्लोक सख्या ११ का पूर्वार्द्ध है। इसका अर्थ है कि विमान के ऊपर में सूर्य की शक्ति को आकर्षण करने वाला पञ्जर हो।

शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्य-समाज (२)

रामधारी सिंह दिनकर

सुधार नहीं क्रान्ति

उन्नीसवीं सदी के हिन्दू-नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ-पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोप वाले भारत वर्ष में आये, तब यहां के धर्म और संस्कृति पर रूढ़ि की पर्तें जमी हुई थीं एवं यूरोप के मुकाबले में उठने के लिए यह आवश्यक हो गया कि ये पर्तें एकदम उखाड़ फेंकी जायें और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाय जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी जी के मत से यह हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु, यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओं के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियो की धूल जम गयी थी एवं वेद के बाद सहस्रो वर्षों में हिन्दुओ ने जो रूढ़ियां और अन्ध विश्वास अर्जित किये थे उनके ढूहों के नीचे यह धर्म दबा पड़ा था। राममोहन राय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होंने धीरे-धीरे पपड़ियां तोड़ने का काम न करके, उन्हे एक ही चोट से साफ कर देने का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु, वही जब तीव्र वेग से पहुंच जाता है, तब तो उसे क्रान्ति के वेग ही साध्य हैं, अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिए। छह शास्त्रों और अठारह पुराणों को उन्होंने एक ही झटके में साफ कर दिया। वेदों में मूर्ति पूजा, अवतारवाद, तीर्थों और अनेक पौराणिक अनुष्ठानों का समर्थन नहीं था, अतएव स्वामी जी ने इन सारे कृत्यों और विश्वास को गलत घोषित किया।

वेद को छोड़ कर कोई अन्य ग्रन्थ प्रमाण नही है, इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहां-जहां वे गये, प्राचीन परम्परा के पंडित और विद्वान उनसे हार मानते गये। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धारावाहिक रूप में बोलते थे। साथ ही, वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्म-ग्रन्थों का भी भली भांति मन्थन किया था। अतएव, अकेले ही, उन्होने तीन तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे, किन्तु तीसरा मोर्चा सनातन धर्मी हिन्दुओ का था, जिनसे जूझने में स्वामी जी को अनेक अपमान, कुत्सा, कलंक और कष्ट झेलने पड़े। उनके प्रचण्ड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं, अन्त में, हिन्दुओं के षडयन्त्र से उनका प्राणान्त भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नही था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे, न ईसाई, न पुराणों पर पलने वाले हिन्दू पंडित और विद्वान। हिन्दू-नवोत्थान अब पूरे प्रकाश में आ गया। था और अनेक समझदार लोग, मन-ही-मन, यह अनुभव करने लगे थे कि, सच ही पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है।

आर्यसमाज की स्थापना

सन १८७२ ई० में स्वामी जी कलकत्ते पधारे। वहां देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्राह्मसमाजियों से उनका विचार-विमर्श भी हुआ, किन्तु, ईसाइयत से प्रभावित ब्राह्म-समाजी विद्वान पुनर्जन्म और वेद की प्रमाणिकता के विषय मे स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कहते है कलकत्ते में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप संस्कृत छोड़ कर हिन्दी में बोलना आरम्भ करें तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गयी और हिन्दी-प्रान्तों में उन्हें अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामी जी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल सन १८७५ ई० को उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। बम्बई में उनके साथ प्रार्थना समाज वालों ने भी विचार-विमर्श किया। किन्तु, यह समाज तो ब्राह्म समाज का ही बम्बई संस्करण था। अतएव स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं हो सके।

बम्बई से लौटकर स्वामी जी दिल्ली आये। वहां उन्होंने सत्यानुसन्धान के लिए इसाई, मुसलमान और हिन्दू पंडितों की एक सभा बुलायी। किन्तु, दो दिनों के विचार विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नही आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पंजाब गये। पंजाब में उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रान्त में आर्य समाज की शाखाएं खुलने लगीं। तभी से पंजाब आर्यसमाजियों का प्रधान गढ़ रहा है।

थियोसोफी और स्वामी दयानन्द

जब थियोसोफिस्ट लोग भारत आये, तब थोड़े दिन उन लोगों ने भी आर्य समाज से मिल कर काम किया। किन्तु थियोसोफिस्टों की भी बहुत-सी बातें स्वामी जी के सिद्धातो के विपरीत पड़ती थीं। अतएव, वे लोग भी आर्य समाज से अलग हो गये। किन्तु, अलग होने पर भी स्वामी जी पर थियोसोफिस्टों की भक्ति ज्यों की त्यों बनी रही। स्वामी जी के देहावसान के बाद मादाम ब्लेवात्स्की ने लिखा था कि "जन-समूह के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई संगमर्मर की मूर्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नही हो सकती थी। एक बार हमने उन्हें काम करते देखा था। उन्होंने अपने सभी विश्वासी अनुयायियो को यह कहकर अलग हटा दिया कि तुम्हें हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नही है। भीड़ के सामने वे अकेले ही खड़े हो गए। लोग उतावले हो रहे थे, क्रुद्ध सिंह के समान वे स्वामी जी पर टूट पड़ने को तैयार थे। किन्तु, स्वामी जी की धीरता, ज्यों-की-त्यो बनी रही।—यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियो पर टूट पड़ने में उनसे अधिक निर्भीक रहा हो। स्वामी जी के मृत्यु के बाद थियोसोफिस्ट अखबार ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा था कि "उन्होंने जर्जर हिन्दुत्व के गतिहीन व्यूह पर भारी बम का प्रहार किया और अपने भाषणो से लोगों के हृदयो मे ऋषियों और वेदों के लिए अपरिमित उत्साह की आग जला दी। सारे भारतवर्ष में उनके समान हिन्दी और संस्कृत का वक्ता दूसरा कोई और नही था।"

आर्यसमाज की विशेषता

कहा जाता है कि जैसे सिक्ख-धर्म सनातन-धर्म का अरबी अनुवाद है, वैसे ही, आर्य समाज भी इस्लाम की संस्कृत-टीका है। सिख-धर्म के विषय में यह उक्ति कुछ दूर तक सही समझी जा सकती है, किन्तु आर्य समाज के विषय में यह कहां तक सत्य है, यह बताना कठिन है। स्वामी जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति, तीनो को अनादि माना है, किन्तु यह तो इस्लाम से अधिक भारतीय योग-दर्शन का मत है। भिन्नता यह है कि स्वामी जी यह नही मानते कि भगवान पापियों के पाप को क्षमा करते हैं। बल्कि, भगवान की कृपा के सहारे पाप करने की बात के लिए उन्होने इस्लाम और ईसाइयत की बार बार आलोचना की। हां, जिन बुराइयो के कारण हिन्दू-धर्म का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मो के लोग जिन दुर्बलताओ का लाभ उठाकर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे थे, उन बुराईयों को स्वामी जी ने अवश्य दूर किया, जिससे हिन्दुओं के सामाजिक संगठन में वही दृढता आ गयी जो इस्लाम में थी। स्वामी जी ने छुआ-छूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्रों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर उन्हे हिन्दुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया। आर्य समाज ने नारियों की मर्यादा में वृद्धि की एवं उनकी शिक्षा-संस्कृति का प्रचार करते हुए विधवा विवाह का भी प्रचलन किया। कन्या शिक्षा और ब्रह्मचर्य का आर्य समाज ने इतना अधिक प्रचार किया कि हिन्दी-प्रांतों में साहित्य के भीतर एक प्रकार की पवित्रतावादी भावना भर गयी और हिन्दी के कवि कामिनी-नारी की कल्पना मात्र से घबराने लगे। पुरुष शिक्षित और स्वस्थ हों, नारियां शिक्षिता और सबल हो, लोग संस्कृत पढ़ें और हवन

(शेष पृष्ठ ६ पर

देववाणी संस्कृत और विज्ञान

(पृष्ठ ६ का शेष)

४. सूर्य की किरणे सात रंग की हैं

'अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः।'
साम० पूर्वा० ६/५/१३

अर्थ—'सूर्य अपने रमणीय स्वरूप को न गिराने वाली. शुद्ध करने वाली सात रंग की किरणों को जोड़ता है और उन जुड़ी हुई किरणों से अपनी कक्षा में घूमता है।'

५. यन्त्र-चालित यान और पंखे

घट्येक्या क्रोशदशकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चारुगत्या।
वायु ददाति व्यञ्जनं सुपुष्कल विना मनुष्येण चलत्यज स्रम्॥
—भोज प्रबन्ध

महर्षि दयानन्द 'सत्यार्थ प्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में इसका वर्णन करते हुए लिखते हैं—'राजा भोज के राज्य मे और समीप ऐसे-ऐसे शिल्पी लोग थे जिन्होंने घोड़े के आकार का एक यान यन्त्र कलायुक्त बनाया था, जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोप और एक घण्टे में साढ़े सत्ताइस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाए कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। ये दोनों यन्त्र आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते।'

६. सौर अस्त्र का वर्णन

"सौरं तेजप्रभं नाम परतेजोपकर्षणम्' (वा० रामा० २७/१९)

अर्थ—'दूसरे के तेज को अपने में आकृष्ट करने वाला तेजप्रभ नाम का सौर अस्त्र देता हूं।' यह बालकाण्ड में श्रीराम को अस्त्र प्रदान प्रकरण में है।

७. लौह वेल्डिंग का संकेत-कौटिल्य की प्रसिद्ध कृति अर्थ-शास्त्र में धातु-विज्ञान का वैज्ञानिक वर्णन देखकर आश्चर्य चकित होना पड़ता है।

'न तप्त लोहो लोहेन संधीयते।

यानी ठण्डा लोहा गर्म लोहे से नहीं जुड़ता। अगर लोहे को जोड़ना है तो दोनों को गर्म करना आवश्यक है। सूक्ष्म रूप से विचार करने पर यह स्पष्टतः वेल्डिंग की ओर संकेत करता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संस्कृत मृतवाणी कदापि नहीं है यह एक जीवन्त भाषा है और सबसे बढ़कर देववाणी है जिसमें विज्ञान की प्रचुर सामग्री विद्यमान है।

आर्य समाज

(पृष्ठ ७ का शेष)

करें, कोई भी हिन्दू मूर्ति-पूजा का नाम न ले, न पुरोहितो, देवताओ और पंडो के फेर में पड़े, ये उपदेश उन सभी प्रान्तो मे कोई ५० साल तक गूंजते रहे, जहां आर्य समाज का थोड़ा-बहुत भी प्रचार था।

यह विस्मय की बात है कि स्वामी जी ने संहिताओ को तो प्रमाण माना, किन्तु उपनिषदों पर वही श्रद्धा नहीं दिखाई। वेद से उनका अभिप्राय केवल 'चार वेद' (विद्या धर्म-युक्त, ईश्वरप्रणीत संहिता, मंत्र-भाग) और चारो वेदो के ब्राह्मण, छह अंग, छह उपांग, चार उपवेद और ११२७ वेदो की शाखा से है। इसी प्रकार, युग युग से पूजित गीता को उन्होने कोई महत्व नही दिया और कृष्ण, राम आदि को तो परम पुरुष माना ही नही। वर्णाश्रम का आधार उन्होने गुण-कर्म को माना। उन्होने देव का अर्थ विद्वान, 'असुर' का अविद्वान राक्षस का पापी, और पिशाच का अनाचारी माना। पुरुषार्थ को उन्होने प्रारब्ध से बड़ा बताया तथा सुख-भोग को स्वर्ग तथा दुःख भोग को नरक कहा। यह हिन्दू-धर्म की बुद्धिवादी टीका था। यह विज्ञान की कसौटी पर चढ़े हुए हिन्दुत्व का निखार था।...

आर्यवाद का दुष्परिणाम

उन्नीसवी सदी के नवोत्थान से एक और बात निकाली, जिसका कुफल देश को आज भी भोगना पड़ रहा है। जब इस्लाम और ईसाइयत से हिन्दुत्व संघर्ष कर रहा था, उस समय नेताओं, सुधारकों और पंडितो ने हिन्दुत्व की ओर से जो कुछ प्रमाण दिये, संस्कृत से लेकर दिये और यह ठीक भी था, क्योंकि सारे देश में फैले हुए हिन्दुत्व की भाषा संस्कृत थी। पीछे, जो यूरोपीय इतिहासकार भारत के अतीत का इतिहास तैयार करने लगे, उसमे भी मूल उद्धरण संस्कृत से ही आये। किन्तु, स्वामी दयानन्द ने तो संस्कृत की सभी सामग्रियो को छोड़कर केवल वेदो को पकड़ा और उनके सभी अनुयायी भी वेदो की दुहाई देने लगे परिणाम इसका यह हुआ कि वेद और आर्य, भारत में ये दोनो सर्वप्रमुख हो उठे और इतिहास वालो अर्थात आर्यो की रचना है। भारत में जो अनेक जातियों का समन्वय हुआ था, उसकी ओर उस समय किसी ने देखा भी नही। हिन्दू केवल उत्तर भारत में ही नही बसते थे और न यह कहने का कोई आधार था कि हिन्दुत्व की रचना मे दक्षिण भारत का कोई योगदान नही है। फिर भी, स्वामी जी ने आर्यावर्त की जो सीमा बांधी है, वह विन्ध्याचल पर समाप्त हो जाती है। आर्य-आर्य कहने, वेद-वेद चिल्लाने तथा द्राविड़ भाषाओ मे सन्निहित हिन्दुत्व के उपकरणों से अनभिज्ञ रहने का ही यह परिणाम है कि आज दक्षिण भारत मे आर्य विरोधी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है। हिन्दू सारे भारत में बसते हैं उसकी नसो मे आर्य के साथ द्राविड़ रक्त भी प्रवाहित हैं। हिन्दुत्व के उपकरण केवल संस्कृत मे निहित उपकरणो को एकत्र किये बिना हिन्दुत्व का पूरा चित्र नही बनाया जा सकता। इस सत्य पर यदि उत्तर के हिन्दू ध्यान देते तो दक्षिण के भाइयो को वह कदम उठाना नहीं पड़ता, जिसे वे आज उपेक्षा और क्षोभ से विचलित होकर उठा रहे हैं।

हिन्दुत्व की वीर भुजा

यह दोष चाहे जितना बड़ा हो, किन्तु, आर्य-समाज हिन्दुत्व की खड्गधर बाहु साबित हुआ: स्वामी जी के समय से लेकर अभी हाल तक, इस समाज ने सारे हिन्दी प्रान्त को अपने प्रचार से ओट डाला। आर्य समाज के प्रभाव में आकर बहुत से हिन्दुओ ने मूर्ति पूजा छोड़ दी, बहुतों ने अपने घर के देवी देवताओं की प्रतिमाओ को तोड़कर बाहर फेंक दिया, बहुतो ने श्राद्ध की पद्धति बन्द कर दी और बहुतों ने पुरोहितों को अपने यहा से विदा कर दिया। जो विधिवत् आर्य समाजी नहीं बने, शास्त्रो और पुराणो मे उनका भी विश्वास हिल गया और वे भी, मन-ही-मन शंका करने लगे कि राम और कृष्ण ईश्वर है या नहीं और पाषाणों की पूजा से मनुष्य को कोई लाभ हो सकता या नहीं। आर्य-समाजियो ने जगह-जगह अपने उद्देश्यानुकूल विद्यालय स्थापित किए, जिनमें संस्कृत की विशेष रूप से पढ़ाई होती है और जहा के स्नातक स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों के मूर्तिमान रूप बन कर बाहर आते हैं। इन विद्यालयो में कन्या और युवक ब्रह्मचर्य-वास भी करते हैं।

आगे चलकर आर्य-समाज ने शुद्धि और संगठन का भी प्रचार किया। सन १९२१ ई० में मोपला (मालावार) मुसलमानो ने भयानक विद्रोह किया और उन्होंने पड़ोस के हिन्दुओ को जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया। आर्य समाज ने इस विपत्ति के समय सकट के सामने छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारो को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्य समाजियो ने राजस्थान के मलाकाना-राजपूतो की शुद्धि आरम्भ की, जिससे मुस्लिम सम्प्रदाय में क्षोभ उत्पन्न हुआ और लोग कहने लगे कि आर्य समाजी मुसलमानो से शत्रुता कर रहे हैं। किन्तु शत्रुता की इसमे कोई बात नही है। जब अन्य धर्म वालो को यह अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओं को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते हैं। आर्य समाजियो के इस साहस से मुसलमान बहुत घबराये एवं भारतीय एकता का सकट कुछ पीछे की ओर धुड़क गया।

आर्य समाजियों ने अपने साहस का दूसरा परिचय सन १९३७ ई० में दिया जब हैदराबाद की निजाम-सरकार ने यह फरमान जारी किया कि हैदराबाद राज्य में आर्य समाज का प्रचार नहीं होने दिया जाएगा। इस आज्ञा के विरुद्ध आर्य समाजियो ने सत्याग्रह का शस्त्र निकाला और एक-एक करके, कोई ग्यारह हजार आर्य समाजी सत्याग्रही जेल चले गये।

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणो से हिन्दुत्व की रक्षा करने मे जितनी मुसीबतें आर्य समाज ने झेली हैं, उतनी किसी और सस्था ने नहीं। सच पूछिए तो उत्तर भारत मे हिन्दुओ को जगाकर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य समाज को ही है। पंडित चमूपति ने सत्य ही कहा है कि आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदण्ड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई उसे कोई गाली दे, उसकी हंसी उड़ाये, उसके देवताओ की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियो से मानता आ रहा है, फिर भी, इन सारे अपमानो के सामने वह दांत निपोर कर रह जाता था। लोगों को यह उचित शंका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नही, इसे आवेश भी चढता है या नहीं अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नही। किन्तु, आर्य समाज के उदय के बाद, अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गयी। हिन्दुओ का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नही रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म-रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है।

महाशय राजपाल का बलिदान

(पृष्ठ ३ का शेष)

"रगीला रसूल" के सम्बन्ध मे जो मुकदमा चला था, उसका एक ऐतिहासिक महत्व है क्योकि इस निर्णय के बाद भारतीय दण्ड सहिता मे एक नई धारा जोडनी पडी थी। लाहौर हाईकोर्ट ने मृत्यु-दण्ड के विरुद्ध हत्यारे की अपील की पैरवी के लिए मुसलमानो ने चन्दा इकट्ठा करके बम्बई से उस समय के सफल बैरिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना को बुलाया था परन्तु वे हत्यारे को प्राणदण्ड से बचा नही सके। हाईकोर्ट ने अपील खारिज कर दी थी।

इसी सम्बन्ध मे एक और तथ्य भी महत्वपूर्ण है और विचारणीय भी। महाशय राजपाल के बलिदान पर गाधी जी ने अपने पत्र "यग इण्डिया" मे अपनी मुस्लिम तुष्टिकरण शैली मे कुछ ऐसी टिप्पणिया लिखी, जिनमे बलिदान का महत्व कम करने की कोशिश की गई। प्रत्युत्तर मे वीर सावरकर ने एक लेख शृ खला लिखी। जिसमे गाधी जी की सकीर्णता एव महाशय राजपाल के बलिदान की महत्ता को सशक्त प्रमाणो से उजागर किया।

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने 'महात्मा हसराज जी" पर एक जीवनी लिखी है। उसमे पृष्ठ १९१ पर आपने महाशय राजपाल जी के अन्तिम दिनो का चित्रण किया है —

> "६ अप्रैल, १९२९ को दोपहर के समय महाशय राजपाल जी धर्म-वेदी पर बलिदान हुए। ९ अप्रैल, को प्रातःकाल साढे सात बजे मेयो अस्पताल से उनकी अर्थी बाहर लाई गई। हजारो स्त्री-पुरुष शवयात्रा मे शामिल हुए। लगभग ४ घण्टे श्मशान भूमि तक पहुचने मे लगे। पौने बारह बजे महात्मा हसराज जी ने अपने हाथो से चिता मे अग्नि लगाई। पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सस्कार हुआ। १० अप्रैल, बुधवार को सायकाल ६ बजे के लगभग डी॰ए॰वी॰ मिडल स्कूल के विस्तृत क्षेत्र मे महात्मा जी के सभापतित्व मे महाशय राज-पाल जी के आत्मदान पर हिन्दुओ की एक विशाल शोक-सभा हुई।'

महाशय राजपाल जी का सारा जीवन वैदिक धर्म और आर्य समाजको समर्पित था और उसी के लिए अपने प्राणो की बलि दे दी।

—आर्य समाज चोपन सोनभद्र-श्री सत्य नारायण आर्य प्रधान श्री शम्भूप्रसाद आर्य मन्त्री, श्री विनोद कुमार सिह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मन्दिर जनकपुरी बी॰ ब्लाक नई दिल्ली—श्री वीरेन्द्रकुमार खट्टर प्रधान, श्री केवल कृष्ण कृपानिया मन्त्री श्री सोमराज टुटेजा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बयाना—डा॰ मनमोहनलाल कक्कड प्रधान, श्री रामसिह वर्मा मन्त्री श्री साहबसिह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज जलाली अलीगढ—श्री जितेन्द्र कुमार एड॰ प्रधान, श्री भगवान स्वरूप आर्य मन्त्री, श्री कृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बीसलपुर—श्री डा॰ सत्येन्द्र कुमार प्रधान, श्री भूपराम आर्य मन्त्री, श्री हरस्वरूप कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अल्मोडा—श्री हरीश मल्होत्रा प्रधान, डा॰ जयदत्त उप्रेती मन्त्री श्री रघुवीर सिह मेर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मन्दिर मुरैना—श्री वीरेन्द्र सिह तोमर प्रधान, श्री रामप्रकाश सिह मन्त्री, श्री गनेश राम मालवीय कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज दरियागज दिल्ली—श्री बी बी सिंगल प्रधान, योगेन्द्र मिश्रा महामन्त्री, श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रक्सौल—डा॰ प्रदीप कुमार प्रधान, श्री बन्धुप्रिय जी मन्त्री, श्री ईश्वरदत्त आर्य कोषाध्यक्ष।

स्वास्थ्य चर्चा —

बड़ी उपयोगी है छाछ

दही में एक चौथाई या उसका आधा पानी मिलाकर जब उसे मथ लिया जाता है, तब उसे छाछ या मट्ठा कहते हैं। संस्कृत में इसे तक्र कहते हैं। छाछ में से अगर घी बिलकुल नहीं निकाला जाता तो वह पुष्टिकारक, भारी और कफकारक होती है। यदि उसमें से केवल आधा घी निकालकर आधा उसी में छोड़ दिया जाता है तो भी वह भारी और कफकारक होती है परन्तु यदि छाछ में से उसका पूरा घी निकाल लिया जाता है तो वह हल्की और अत्यन्त हितकारी होती है। सामान्यतः जब हम छाछ की बात करते हैं तो हमारा अभिप्रायः इस घृत रहित छाछ से ही होता है। अन्य पशुओं की तुलना में गाय के दूध की छाछ अधिक उपयोगी होती है।

महर्षि वाग्भट्ट के अनुसार छाछ हल्की, कसैली, अग्निदीपक और कफ तथा वाद को नष्ट करने वाली होती है। इससे सूजन, उदर रोग, बवासीर, ग्रहणीदोष, तिल्ली, अरुचि और पीलिया आदि रोगों का शमन होता है। मदनपाल—निघट में लिखा है कि छाछ पीने से बल प्राप्त होता है तथा यह भगन्दर, प्रमेह अतिसार, शूल, पेट में कीड़े, सफेद कोढ़ तथा कफ आदि को समाप्त करती है। चरबी बढ़ जाने से जिन लोगों का शरीर काफी स्थूल हो गया है, उन्हें भी छाछ पीने से लाभ होता है। 'भावप्रकाश' में लिखा है कि छाछ उदर सम्बन्धी समस्त रोगों को हरने वाली है अधिक घी खाने से उत्पन्न होने वाले रोग में भी छाछ लाभ पहुंचाती है।

छाछ पीने के लिए सबसे अच्छा मौसम सर्दी का है। गर्मियों में छाछ पीने से बचना चाहिए। कार और कातिक में भी यथासम्भव छाछ नहीं पीनी चाहिए। अधिक खट्टी छाछ भी हानिकारक होती है।!

खाना खाने के उपरान्त प्रतिदिन दोपहर को यदि छाछ का सेवन किया जाए तो मनुष्य अनेक रोगों से बच सकता है।

विभिन्न रोगों में छाछ पीने के विशिष्ट योग इस प्रकार है।

—बादी के रोगों को नष्ट करने के लिए छाछ में पीपल, सौंठ और सेंधा नमक मिलाकर पीना चाहिए।

—पित्त की अधिकता को समाप्त करने के लिए छाछ में काली मिर्च, और बूरा मिलाकर पीएं।

—यदि कफ के कारण पेट में कोई रोग हो तो सफेद जीरा, सौंठ, काली मिर्च, अजवायन तथा सेंधा नमक पीसकर छाछ में मिलाएं और उसका सेवन करें।

—अगर छाछ मे जवाखार, सेंधा नमक, सौंठ, पीपल और काली मिर्च के चूर्ण को मिलाकर उसका सेवन किया जाए तो त्रिदोष सम्बन्धी पेट का कोई भी रोग नष्ट हो जाता है।

—कब्ज दूर करने के लिए छाछ मे काला नमक और अजवायन मिलाकर पीयें।

संग्रहणी रोग मे लवणभास्कर चूर्ण की एक मात्रा छाछ में मिलाकर कुछ दिनों तक लगातार पीने से रोग नष्ट हो जाता है।

—कमला शर्मा

ईसाई युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्य समाज के मन्त्री श्री बनवारीलाल सिहल द्वारा दिनांक १२-३-९५ को एक ईसाई युवती सुश्री जोईसदास पुत्री श्रीमती पुष्पादास कटवाडा कोटा जं० कोटा का शुद्धि संस्कार कर वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश कराया। शुद्धि के बाद इनका नाम साधूदेवी रखा गया।

साथ ही इनका पाणिग्रहण संस्कार श्री मंधोर मेहरा पुत्र श्री महेन्द्र सिंह मेहरा, बोराज भवन रंगपुर रोड, कोटा के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

बनवारी लाल सिहल, मन्त्री

वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा

(पृष्ठ १ का शेष)

बड़ोदरा में आर्य कन्या विद्यालय तथा आयुर्वेद कालेज की छात्राओं को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा प्रधान ने कहा कि आर्य सिद्धान्तों की रक्षा सुनिश्चित करना केवल विद्यालय चलाने वालों का ही नहीं अपितु छात्राओं का भी दायित्व है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि उच्च नैतिकता तथा चरित्र की मजबूती से ही समाज की बहने अपनी रक्षा कर सकती हैं। आर्यसमाज किसी भी रूप में समाज की मातृशक्ति को पुरुषों से कम नहीं समझता। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वीरांगनाओं के योगदान को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता।

आर्य कुमार महासभा की ये सभी शिक्षण संस्थाएं स्वर्गीय श्री नारायणलाल पित्ती जी की त्याग, तपस्या और दान का परिणाम हैं जिसे उनके सुपुत्र श्री मधु सूदनलाल पित्ती अपने हर सम्भव प्रयास से आगे बढ़ा रहे हैं। दानवीर मधुसूदनलाल जी के द्वारा प्रति-वर्ष अपनी व्यवसायिक आय का एक बड़ा हिस्सा इन संस्थाओं पर व्यय किया जाता है।

गत माह श्री पित्ती जी ने १००००) रु० असम में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु भी सार्वदेशिक सभा को भेंट किए थे।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एस० ११०२४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-४-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३/९५
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 6,7-4-1995

वैदिक विद्वान आचार्य विद्याभानु शास्त्री सम्मानित

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर लालकिला मैदान दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर के पूर्व महामन्त्री एवं वैदिक विद्वान आचार्य विद्या-भानु शास्त्री का दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों की ओर से भाव-भीना अभिनन्दन किया गया।

समारोह अध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने शाल ओढ़ाकर, पूर्व केन्द्रीयमन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने प्रशस्तिपत्र भेंटकर और सभा-प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने श्रीफल तथा सम्मानराशि समर्पित कर अपने विद्वान अतिथि का स्वागत किया।

आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने श्री विद्याभानु शास्त्री का परिचय देते हुए उन्हें बहु आयामी व्यक्तित्व का धनी बताया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय आर्य महिला सभा एवं अन्य संगठनों की ओर से माननीय विद्याभानु जी को फूलमालाओं से लाद दिया गया।

अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में अभिभूत शास्त्री जी ने महर्षि के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया।

—डा० शिवकुमार शास्त्री

श्री राम को याद करो

वैदिक मर्यादा पुरुषोत्तम, श्री राम को याद करो।
ऋषियों के वंशजों कीमती, समय न तुम बर्बाद करो॥

श्री राम निर्बल, निर्धन, दुखियों के सबल सहारे थे।
मानवता के पूजक थे, सारी प्रजा के प्यारे थे॥
वीर, साहसी, चरित्रवान थे, जीवन में ना हारे थे।
बाली, रावण, कुम्भकरण से दुष्ट, राम ने मारे थे॥

ढूंढ़-ढूंढ़ असुरों को मारो, मन में मत अवसाद करो।
ऋषियों के वंशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो॥

देवों की धरती भारत में पाप बढ़ा है बड़ भारी।
बन्दूकें लेकर हाथों में, फिरते हैं, अत्याचारी॥
उग्रवाद, आतंकवाद की, फैल गई है बीमारी।
सीधे-सच्चे, भोले-भाले मरते हैं नित नर-नारी॥

लव, कुश जैसी वीर, बहादुर पैदा तुम औलाद करो।
ऋषियों के वंशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो॥

याद रखो जो नर जीवन में, चूक समय पर जाता है।
कभी सफलता के दर्शन वह मूढ़ नहीं कर पाता है॥
कर्म हीन है वह पुरुष, धरती पर भार कहाता है।
अपयश का भागी बनता है, जीवन भर पछताता है॥

भला इसी में है जीवन में, कभी नहीं प्रमाद करो।
ऋषियों के, वंशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो॥

आर्य वीर जवानो जागो, श्री राम के गुण धारो।
पावन वैदिक धर्म निभाओ, पुत्र राम के तुम प्यारो॥
लक्ष्मण अंगद, जाम्बवन्त बन, वैरी दल को संहारो।
बनो वीर हनुमान, दुष्ट रावण की सेना को मारो॥

"नन्दलाल" तुम युद्ध क्षेत्र में निर्भय हो सिंह नाद करो।
ऋषियों के वंशजो कीमती, समय न तुम बर्बाद करो॥

—प० नन्दलाल "निर्भय" सिद्धान्तशास्त्री
ग्राम बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

स्थान : तालकटोरा गार्डन, इन्डोर स्टेडियम
(निकट बिरला मन्दिर) नई दिल्ली-११०००१

हर्ष का विषय है कि इस वर्ष महात्मा हंसराज दिवस समारोह २३ अप्रैल १९९५ को प्रातः ९ बजे से दोपहर १.३० बजे तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है।

प्रातः ९ बजे से ९-४५ बजे तक श्री विजय भूषण आर्य एवं श्रीमती सुषमा आर्या के संयोजकत्व मे यज्ञ होगा और प्रातः ९-४५ बजे से १० बजे तक मं० मुन्ना लाल शर्मा, प्रधान आर्य समाज बस्ती हरफूल सिंह, दिल्ली की ओर से प्रसाद वितरण होगा।

प्रातः १० बजे से दोपहर १-३० बजे तक श्री दरबारी लाल, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति की अध्यक्षता मे सार्वजनिक सभा होगी जिसमे लन्दन में भारत के हाई कमीश्नर डा० एल० एम० सिंघवी, दिल्ली प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना जी के आने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त कई मन्त्रीगण, आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और सन्यासी महात्मा हंसराज जी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होने की कृपा करें।

दरबारी लाल — रामनाथ सहगल
प्रधान — मन्त्री

सीताष्टमी पर्व मनाया

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल के तत्वावधान में सीताष्टमी पर्व आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ में अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमें दक्षिण दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अतिरिक्त दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाजो ने हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया। यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती कृष्णा रहेजा एवं ध्वजा रोहण श्रीमती आशा बतरा द्वारा सम्पन्न हुआ।

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल की अध्यक्षा श्री शकुन्तला आर्या ने माता सीता को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि भारतीय नारी समाज की आधार शिला है। नारी से ही समाज का धर्म, सभ्यता, संस्कृति, परम्पराएं, सौन्दर्य समृद्धि और सौष्ठव टिका हुआ है।

सभा को श्रीमती प्रकाश आर्या, सरिता सूद और स्नेहलता ने भी सम्बो-धित किया। सभा की अध्यक्षता श्रीमती सरला महता ने की।

—कृष्णा कुकरेजा, मन्त्रिणी

आवश्यक सूचना

जो आर्य समाज अपने यहां शास्त्रीय संगीत [illegible] कराना चाहें, कुरो-[illegible] हेतु वैद्य की सेवा चाहें तो निम्न पते पर सूचित करें—

आर० डी० शर्मा संगीत प्रभाकर
द्वारा—१६८ डी०डी०ए० फ्लैट
पावर हाउस, बदरपुर नई दिल्ली-४४

सार्वदेशिक प्रेस ... नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नईदिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ७०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ९]   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   वैशाख कृ० १   सं० २०५२ १६ अप्रैल १९९५

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय का दीक्षान्त समारोह

पर्यावरण समस्या का समाधान वेदों-उपनिषदों में उपलब्ध —शिवराज पाटिल

वेद ज्ञान को वैज्ञानिकता की कसौटी पर साबित करने में दक्षता प्राप्त करनी चाहिए —वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

हरिद्वार ९ अप्रैल। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मस्थली गुरुकुल कांगड़ी एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप मे अब विशाल वटवृक्ष बन चुका है। इस विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह को लोकसभा के अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने सम्बोधित किया। अपने लिखित भाषण के अतिरिक्त बोलते हुए श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि जब वे विज्ञान मन्त्री थे तब तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हमें निर्देश दिया था कि पर्यावरण समस्या के समाधान के लिए हमे वेद मन्त्रों और उपनिषदों से मार्गदर्शन लेना चाहिए। श्री पाटिल ने कहा कि वेद मन्त्रों के उपदेश आज केवल श्रवण माध्यम के कारण हम तक पहुंचे है इसलिए उसी माध्यम से इन्हे जन-जन तक पहुंचाना चाहिए। इस अवसर पर श्री पाटिल ने पर्यावरण पर वैदिक विचारो की दो पुस्तकों के अतिरिक्त वेद मन्त्रो पर आधारित एक कैसेट का भी विमोचन किया।

शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि शिक्षा एक बहुत बड़ी शक्ति है क्योंकि इससे प्राप्त ज्ञान के आधार पर मनुष्य न केवल अपने लिए सुख और समृद्धि को प्राप्त करता है अपितु दूसरों की भी सेवा करते हुए, समाज और संस्कृति का संरक्षक भी बन सकता है। इसलिए शिक्षा को जहां आर्थिक उद्देश्यों से जोड़ा जाए वहीं उसे जीवन-निर्माण से भी जोड़ना पड़ेगा।

श्री पाटिल का पूर्ण लिखित भाषण अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप मे बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने भारत की वर्तमान परिस्थितियो मे गुरुकुल के नवस्नातको को उनके कर्त्तव्य स्मरण कराते हुए कहा कि ऐसे समय में भी यदि देश का युवक अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाह नही करता तो वह युवक नही, वह भारतीय नहीं माना जा सकता।

श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द ने जिन उद्देश्यो के लिए अपने समस्त कर्मो को समर्पित किया था, उसी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना हम सब का कर्त्तव्य है।

विदेशो मे वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार हेतु जाने की प्रेरणा करते हुए श्री वन्देमातरम् ने कहा कि विदेशों मे बसे भारतीय इस देश के वैदिक विद्वानों का स्वागत करने को तैयार है बशर्ते भारतीय वैदिक विद्वान वेदों के उपदेशों को वैज्ञानिकता की कसोटी पर खरा साबित करने में सक्षम हो।

इस समारोह मे श्री शिवराज पाटिल को विद्या मार्तण्ड की मानद उपाधि से अलकृत किया गया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव ने शाल ओढ़ा कर श्री पाटिल का अभिनन्दन किया। कुलपति डा० धर्मपाल ने संस्कृत मे श्री पाटिल का अभिनन्दन पत्र पढ़ा।

श्री शिवराज पाटिल कार द्वारा सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के साथ प्रात:काल हरिद्वार पधारे, हरिद्वार सीमा पर न्याय सभा संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट, आर्य समाज हनुमान रोड दिल्ली के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा गुरुकुल फार्मेसी के प्रबन्धक श्री रावत ने दोनों विद्वान नेताओं का स्वागत किया।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अमरोहा तथा मुरादाबाद आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में—

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का सम्बोधन

दिल्ली ३ अप्रैल। आर्य समाज मुरादाबाद एवं आर्य समाज अमरोहा के वार्षिकोत्सवों के समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आर्य जनों को राष्ट्र के ऊपर आये खतरों से सजग रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही देश के सामने आई हर प्रकार की मुसीबतों का सजग प्रहरी के रूप में सामना करता रहा है, चाहे वह आजादी की लड़ाई हो या देश के मध्य में इस्लामी राज्य बनाने के निजाम के प्रयत्न हों। आर्य समाज ने अनेकों बार देश तथा राष्ट्रहित में अपनी आहुतियां दी हैं।

अब अंग्रेजो के जाने के बाद हमारी सरकार के अंग्रेजी शासन की हवा में पलने वाले नेताओ द्वारा बनाया हुआ भारतीय संविधान १९५० में लागू हुआ। इस संविधान में वे कीटाणु अभी भी विद्यमान हैं जो देश के स्वास्थ्य के लिए हानिकर हैं, और कुछ आधुनिक परिवेश में वही बात सामने आ रही है जो अंग्रेजों के सामने थी।

पृथक मतदान पद्धति को हटाकर राष्ट्र को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के नाम से जिन्ना के दोराष्ट्रवाद को पुर्नजीवित करने के प्रयास किये जा रहे हैं। संविधान में ऐसे अनुच्छेद हैं जिनसे अलगाव की प्रवृत्ति बढ़ रही है और मुसलमान तथा क्रिश्चियन अपने पृथक व्यक्तित्व को बनाते जा रहे हैं।

अनुच्छेद ३७० के आधार पर अब हमारा देश भारतीय राज्यों को संघ में बदलकर अलग-अलग राज्यो का "कन्फेडरेसी" में परिणित होने की दिशा में बड़े वेग से बढ़ रहा है।

उत्तर पूर्वी राज्यों को विशेष प्रतिपत्ति दी गई है। संसद में पारित कानून उन राज्यों पर लागू नहीं होता जब तक स्थानीय विधान सभाओं में उस संविधान का अनुमोदन न किया जाए। उन्होंने कहा जहां तक अपराधियों का सवाल है—भारतीय दंड संहिता उसी समय लागू किया जा सकता है जब के स्थानिक रूढ़ियो के अनुरूप रहें।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

११ से २५ जून, १९९५ ई०

स्थान—गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सुरम्य परिसर में ११ से २५ जून तक डा० देवव्रत आचार्य, प्रधान सञ्चालक की अध्यक्षता में लगाया जा रहा है जिसमें शाखा-नायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक और आचार्य श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रवेश शुल्क ८० रुपए। गणवेश, लाठी, नोटबुक तथा अन्य आवश्यक सामान साथ लावें। प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा। शिविर मे आने वाले आर्य वीर स्थानीय आर्य वीर दल के अधिकारियो से परिचय पत्र साथ लेकर आयें।

हरि सिंह आर्य. कार्यालय मन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन का उद्घाटन

वेद मन्दिर बेलगांव में महर्षि दयानन्द सरस्वती नूतन भवन का उद्घाटन १-४-९५ को स्वामी ब्रह्मदेव, विश्व शान्ति निकेतन विलीविरी रंगनबेट्ट मेसूर के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर वेद मन्दिर का वार्षिकोत्सव श्री मुनि वासिष्ठ आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समारोह स्थल पर वृहद यज्ञ वेद महत्व पर विशेष प्रवचन तथा दान दाताओं का सत्कार आदि किया गया।

महर्षि जन्मोत्सव मनाया गया

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में १२-३-९५ को आर्य समाज मालवीय नगर में प्रात: ९ से १-३० बजे तक महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस मनाया गया जिसमें उच्च कोटि के विद्वान/विधायक सर्वश्री साहिबसिंह वर्मा, शिक्षा मन्त्री, दिल्ली सरकार राजेन्द्र गुप्त, विधायक, मेवाराम आर्य विधायक, महेश विद्यालंकार, विश्वमित्र मेधावी आदि पधारे। यह उत्सव श्री राममूर्ति कैला की अध्यक्षता में हुआ। उत्सव की समाप्ति पर ऋषि लंगर का उत्तम प्रबन्ध था। उपस्थिति बहुत थी यह उत्सव हर प्रकारसे सफल रहा।

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव का विशाल कार्यक्रम

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के तत्वावधान में २९-३-९५ को महर्षि दयानन्द बोध उत्सव आर्य समाज महरौली में श्री अशोक कुमार आर्य (पंचशील) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में पं० टेकचन्द विधायक, भिक्षु दिवस्पुत्र भारती, राजेश्वर जी, श्री बनारसीसिंह पत्रकार व अनेक वक्तागण व भजनोपदेशक पधारे। दक्षिण दिल्ली की आर्य समाजों के लिए विशेष निशुल्क ४ बसें चलाई गई। यह उत्सव एक विशाल व शानदार व सजे हुए भवन (हाल) में हुआ। इस उत्सव में ००० आर्य नर-नारी शामिल हुए। उत्सव की समाप्ति पर बहुत सुन्दर ढंग से ऋषि लंगर का प्रबन्ध था। उत्सव में बहुत गहमा-गहमी थी। मंडल के इतिहास में यह सबसे विशाल और रोचक उत्सव था।

—रामसरनदास आर्य

राजस्थान प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

ग्राम अखराना तह० बहरोड़ जिला अलवर में राजस्थान प्रांतीय आर्य महा सम्मेलन तथा आर्य समाज अखराना का ५८वां वार्षिकोत्सव सुप्रसिद्ध कर्मठ नेता श्री छोटूसिंह आर्य की अध्यक्षता में १४ से १६ अप्रैल १९९५ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है इस अवसर पर आर्य महासम्मेलन समाज सुधार सम्मेलन शराबबन्दी सम्मेलन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गौरक्षा सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, पं० विद्यासागर शास्त्री, श्री रासासिंह आर्य, श्री नन्दलाल जी मीणा, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती सहित आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

युद्ध स्तर पर वेद प्रचार

उदगीथ साधना स्थली के संस्थापक युवा हृदय सम्राट आचार्य श्री आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता द्वारा जनवरी फरवरी व मार्च मास में युद्ध स्तर पर देश के विभिन्न प्रदेशो यथा गुजरात,महाराष्ट्र,हिमाचल,हरियाणा आदि भागोंमें आर्य समाज का प्रचार किया तथा भुजकच्छ में लगभग दो लाख रुपए की अचल सम्पत्ति का दान प्राप्त करके उस पर आर्य समाज अमरगढ़ की स्थापना की। यह आचार्य जी की प्रेरणा से उस क्षेत्र में स्थापित भव्य आर्य समाज है।

आर्यवीर दल महासम्मेलन पंचकुला, आर्य समाज चम्बा में वर्षो पश्चात वैदिक सम्मेलन हुआ तथा आर्य समाज फिरोजपुर छावनी में भारत पाक सीमा पर श्री विजयानन्द के देश भक्ति पूर्ण भजन व शिवरात्री पर आचार्य जी का क्रान्तिकारी प्रवचन हुआ तथा सीमा पर तैनात सैनिकों को रेवड़ी व मूंगफली बांटी गई व साहित्य दिया गया।

आर्यसमाज और राजनीति

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की लोकसभा में भूमिका

बलराज मधोक

राजनीति अथवा दण्डनीति अनादि काल से मानव समाज के विकास को प्रभावित करती रही है "राजा कालस्य कारणम्" इसी तथ्य का परिचायक वाक्य है।

वेदों और संस्कृत साहित्य मे राज्य और राजनीति के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा गया है। राजतन्त्र, लोकतन्त्र अथवा गणतन्त्र आदि विभिन्न राज्य पद्धतियों के विकास का आर्यावर्त अथवा भारत में लम्बा इतिहास है।

भारत के महान चिंतक और राजनीतिज्ञ विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपनी महान कृति अर्थशास्त्र में राजनीति को त्रेयी (वेदो का ज्ञान), अन्वीक्षकी (जीवन-दर्शन) और वार्ता (अर्थ सम्बन्धी ज्ञान) के समकक्ष रखकर इसके महत्व को दर्शाया है।

राजनीति और राजनैतिक स्वतन्त्रता का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सार्थक राजनीति के विकास और व्यवहार के लिए राजनैतिक स्वतन्त्रता आवश्यक होती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के नव-जागरण और उत्थान के सबसे महान और प्रभावी पुरोधा थे। उनका चिन्तन सर्वथा मौलिक या वेदमूलक था उस पर विदेशी भाषा, साहित्य और चिंतन का कोई प्रभाव नहीं था। वे सभी भारतीयों का शारीरिक, आत्मिक और आध्यात्मिक विकास करके उन्हें सद्गुणों से परिपूर्ण श्रेष्ठ व्यक्ति-आर्य-बनाना चाहते थे। ऐसे श्रेष्ठ लोगों के समाज को उन्होंने आर्य समाज नाम दिया और संसार भर के लोगों को श्रेष्ठ अथवा आर्य बनाने का प्रयास किया। 'कृण्वन्तो विश्वं आर्यम्' सारे संसार के मानवों को आर्य बनाओ का यही अर्थ है।

खैरात घर से शुरू की जाती है। इसलिए संसार को आर्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उनके अनुयायी पहले अपने आपको आर्य बनाए। स्वय आर्य बनने के बाद ही अपने परिवार सहित अन्य लोगों को आर्य बनाया जा सकता है। देश और ससार को आर्य बनाने के लिए आवश्यक है कि पहले आर्यावर्त, भारत अथवा हिन्दुस्तान को आर्य बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया जावे। इसलिए उन्होंने पहले भारत के राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पतन के कारणों का विश्लेषण किया और उन्हें दूर करने के व्यावहारिक और वेदमूलक उपाय किए।

भारतीय हिन्दू समाज की कोई भी कमजोरी ऐसी नहीं थी जिस पर उनका ध्यान न गया हो। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के साथ-साथ उन्होंने भारत को स्वतन्त्र करने और उसकी राजनीति को भारतीय चिंतन और अनुभव के आधार पर नई दिशा देने का भी प्रयत्न किया। इसके लिए प्रथम आवश्यकता भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए लोगों में भारतीय हिन्दू समाज की मूल एकता के भाव को जगा कर भारत में राष्ट्रवाद की भावना का उद्रेक करना था सस्कृत भाषा और साहित्य भारत की सांस्कृतिक एकता का स्रोत है और सस्कृत से निकली हुई अथवा संस्कृत से प्रभावित भारत की सभी भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने और देश में एक सांझी सम्पर्क भाषा का राष्ट्रभाषा के विकास की दृष्टि से उन्हें हिन्दी और देवनागरी लिपि को राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय लिपि के रूप में स्वयं अपनाया और सभी आर्यों द्वारा उन्हें अपनाने पर बल दिया।

भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने और स्वराज्य स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय अभियान की शुरुआत भी महर्षि दयानन्द ने की और स्वराज्य का उद्घोष भी सर्वप्रथम उन्होंने ही किया। स्वराज्य में राजव्यवस्था कैसी हो और राजनीति का स्वरूप क्या हो, इस विषय पर भी उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में विस्तार से प्रकाश डाला। राजस्थान के प्रमुख देशी राज्यों के शासकों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने और उनको राजधर्म के सम्बन्ध में मार्गदर्शन देने के पीछे उनका प्रमुख उद्देश्य उनमें राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की भावना जगाना था।

स्वामी दयानन्द की सीखों और मार्ग दर्शन के अनुरूप आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही भारत में राष्ट्रीय और राजनैतिक चेतना जगाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी शुरू की। भारत के स्वतन्त्रता आनन्दोलन में आर्य समाजियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसीलिए ब्रिटिश सरकार आर्य समाज को एक क्रान्तिकारी संस्था और सत्यार्थ प्रकाश को विद्रोह फैलाने वाली पुस्तक मानने लगी।

इण्डियन नेशनल कांग्रेस का निर्माण ब्रिटिश नौकरशाह, ए० ओ० ह्यूम, ने १८८५ में ब्रिटिश राज की सहायक सस्था के रूप मे किया था। उसी ने इसके अधिवेशनों के लिए २५ प्रतिशत मुस्लिम डेलीगेटों की अनिवार्यता का विधान करके शुरू मे ही इसके चरित्र को साम्प्रदायिक रूप दिया था। इस "टोडी" अंग्रेज भक्त सगठन को आजादी के आन्दोलन का रुप देने वालों मे लाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल और बाल गगाधर तिलक की भूमिका प्रमुख थी। ये तीनों ही स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। लाला लाजपतराय तो आर्य समाज के सक्रिय सदस्य थे।

१९२० में बालगगाधर की अकाल मृत्यु और कांग्रेस की बागडोर मोहनदास कर्मचन्द गांधी के हाथ में आने के बाद कांग्रेस का स्वरूप बदलने लगा। प्रखर राष्ट्रवाद के स्थान पर इसने मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनाई और मिले-जुले राष्ट्र की बात करने लगी। खिलाफत आन्दोलन को समर्थन देकर उसने खिलाफती मुल्लाओं और मौलानाओं का कांग्रेस के साधनों और सगठन के बल पर भारत के मुसलमानों को राजनैतिक नेता बनाकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता को नई शक्ति और आयाम दिए। इस नीति के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द और लाला लाजपतराय जैसे कांग्रेस के आर्य समाजी नेता स्तब्ध रह गए। उन्होंने कांग्रेस से नाता तोड लिया परन्तु स्वतन्त्रता की ललक के कारण बहुत से आर्य समाजी कांग्रेसी के साथ जुड़े रहे।

१९४५ ४६ मे हैदराबाद रियासत में निजाम उसमान अली के इस्लामी जुनून के विरुद्ध आर्य समाज ने आन्दोलन छेड़ा और इसके कारण वहां जो राजनैतिक चेतना पैदा हुई उसने हैदराबाद को एक अलग पाकिस्तान बनाने की उसकी योजना को विफल करने मे प्रभावी भूमिका अदा की।

१९४७ मे साम्प्रदायिक आधार पर भारत का विभाजन गांधी जी के नेतृत्व मे कांग्रेस द्वारा अपनाई गई मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति का सीधा परिणाम था। देश-विभाजन और इसके बाद के घटनाचक्र तथा स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री के नाते प० नेहरु द्वारा मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को "सेक्युलरिज्म" के नाम पर पुन. चालू करने से राष्ट्रवादियों, विशेषरूप से आर्य समाजियो का कांग्रेस से मोह भग होने लगा। उन्हें कांग्रेस, जो अब सत्तारुढ़ राजनैतिक पार्टी बन चुकी थी, के राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी विकल्प की आवश्यकता महसूस होने लगी।

(क्रमशः)

त्यागी, तपस्वी, दृढ़व्रती महात्मा हंसराज

डा० धर्मपाल

देश धर्म की रक्षा के लिए भारत मां के अनेक सपूतों ने हंसते-हंसते अपने जीवन को राष्ट्र मां की बलिवेदी पर न्योछावर कर दिया। इसी प्रकार जातीय उत्थान, धर्म प्रचार तथा सत्य विद्या के प्रसार हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एव अनुयायी महात्मा हंसराज ने अपना जीवन आर्यसमाज को अर्पण कर दिया था। वह समय था जब हम पराधीन थे, वेद ज्ञान का सूर्य अज्ञानान्धकार से आवृत्त था, भारत मां की सन्तानें भटक कर धर्म परिवर्तन कर रही थी, भारतीय तथा राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा देने वाली शिक्षा का भी अभाव था, उस समय ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ का आलोक फैलाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश और विचारधारा को दिग-दिगन्त तक फैलाने का व्रत लेने वाले आरम्भिक शिष्य थे—स्वामी, श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, प० लेखराम और पं० गुरुदत्त विद्यार्थी। इन मां भारतीय के सपूतो ने अपने त्याग और तपस्या के बल पर वेद प्रचार, शुद्धि, संगठन और शास्त्रार्थों के द्वारा जनता को सन्मार्ग दिखाया। इसके अतिरिक्त इन्होने एक और महान कार्य किया और वह था शिक्षा के माध्यम से देश भक्ति और धर्म के प्रति श्रद्धा आस्था और निष्ठा का संचार। अंग्रेज शासको द्वारा दी जा रही शिक्षा, हमारे नव युवकों को देश और धर्म तथा मानव मूल्यों से दूर ले जा रही थी। उस घृणित एवं विषैली शिक्षा प्रणाली से छुटकारा दिलाने के लिए आर्य समाज के गौरव महात्मा हंसराज ने किसी भी बड़ी नौकरी का प्रलोभन ठुकाराकर डी० ए० वी० आन्दोलन की नींव डाली। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतो के अनुरूप देश और जाति को ऊंचा ऊठाने वाली, धर्म मे आस्था उत्पन्न करने वाली शिक्षा का सूत्रपात किया। जब महात्मा जी ने अपना मन्तव्य व उद्देश्य देवता स्वरूप भाई मुल्खराज के सामने प्रकट किया तो वे भाई की ऐसी त्यागमयी पवित्र भावना को देखकर भावाभिभूत हो गए। उन्होने सहर्ष कहा—'वह अपने वेतन में से आधी राशि उनके निर्वाह के लिए दे दिया करेंगे। धन्य है वह भाई जिसने भाई को ऐसा प्रोत्साहन दिया। धन्य है वह भाई जिसने त्याग और तपस्या का मार्ग चुना! धन्य हैं वे डी० ए० वी० के सचालक जिन्होंने महात्मा जी के लक्ष्यपूर्ति मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

महात्मा जी के साथी अध्यापकों ने भी इसी प्रकार के नि:स्वार्थ, तप और त्याग का परिचय दिया। वह छोटा सा पौधा आज विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। हमारी इन्हीं संस्थाओं ने शहीद भगतसिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवकों का निर्माण किया।

महात्मा हंसराज के सुपुत्र श्री बलराज को देश की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित गतिविधियो के कारण, अंग्रेज सरकार ने मृत्यु दण्ड दिया था। महात्मा हंसराज एक बार गवर्नर को कहते, तो सब माफ हो जाता, पर वह सच्चरित्रता और स्वाभिमान का धनी उस दिन डी० ए० वी० कालेज भी न गया जब गवर्नर स्वयं वहा पधारने वाले थे। उसने सोचा कि मेरे सहज स्वागत को अंग्रेज अफसर कहीं अन्यथा न ले। वाह रे सत्यव्रती महात्मा हंसराज!

महात्मा हंसराज ने शिक्षा जगत मे तो चमत्कार किया ही, वे सामाजिक कार्यों में भी कभी पीछे नहीं रहे। आर्यसमाज के वेद प्रचार के कार्यों मे वे बढ़ चढ़कर स्वय भी भाग लेते थे तथा सहयोगियों को भी सदा प्रेरित किया करते थे। इस वर्ष प्रकृति का प्रकोप उत्तराखण्ड में हुआ और आर्य समाज ने बढ़ चढ़कर पीड़ितों की सहायता की। इसी प्रकार महात्मा हंसराज के समय मे बीकानेर में भयंकर अकाल पड़ा था, उस समय महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, प० बलपत राय वकील तथा अन्य अनेक महानुभावों ने गाव-गाव जाकर धन तथा अन्न का वितरण किया। उस समय मध्य प्रदेश व बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र में भी भयंकर अकाल पड़ा था, महात्मा जी तुरन्त वहा पहुंचे। १८९९ का राजपूताना का अकाल १९०७-०८ का अवध का अकाल तथा १९१८ का गढ़वाल का अकाल—महात्मा हंसराज, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द तथा पं० रलियाराम और महात्मा जी के सुपुत्र लाला बलराज ने रात दिन इन अकाल पीड़ितों की सहायता की। अनाथ बच्चों को लाकर पंजाब और दिल्ली में संचालित अनाथालयों में रखा गया और उनकी ऐसी परवरिश की जैसी शायद उनके मां बाप भी न कर पाते।

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज का शिक्षा जगत में योगदान सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। आज भी सरकार के बाद, शिक्षा में सर्वाधिक बजट आर्य समाज द्वारा सचालित शिक्षा संस्थाओं का है। प्रिंसिपल साईदास, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द, श्री मेहरचन्द महाजन श्री जीवन लाल कपूर, श्री गोवर्धनलाल दत्ता, श्री सूरजभान आदि महानुभावों ने शैक्षिक सामाजिक-प्रशासनिक जगत के विशिष्ट आयामों का सृजन किया।

महात्मा हंसराज ने केरल के मालाबार क्षेत्र में जाकर साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना में विशेष सहयोग दिया था। पंजाब से इतनी दूर जाकर उस समय कार्य करना वास्तव में एक अद्भुत दृढ़ व्रती होने का साक्षात प्रमाण हैं।

महात्मा हंसराज की मृत्यु पर पंजाब असेम्बली के स्पीकर सर शाहबुद्दीन ने कहा था—"आज पंजाब से शिक्षा की ज्योति जगाने वाला एक सन्त उठ गया।" लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'आर्य समाज' में लिखा है--महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा हंसराज और महात्मा मुन्शीराम के बिना आर्य समाज असम्भव था। डी०ए०वी० कालेज तो लाला हंसराज के बिना सर्वथा असम्भव ही था।

महात्मा हंसराज ने समाज सुधार का कंटकाकीर्ण मार्ग, त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग अपने लिए चुना था। उनका रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, भयावना था और बलिदान मांगता था। महात्मा हंसराज ने यह बलिदान दिया। यही कार्य उन्हें 'महात्मा' के नाम से पुकारे जाने की सार्थकता को सिद्ध करता है। उनका कार्य युगों-युगों तक मानव के मार्ग को प्रशस्त व आलोकित करता रहेगा। उनकी स्मृति में मेरी विनत श्रद्धांजलि!

कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

साहित्य में काव्य का प्रयोजन (२)

: डा० नगेन्द्र

इनमें और कलावादियों में अन्तर यह है कि ये कला को निष्प्रयोजन नहीं मानते। सौन्दर्य की सृष्टि में ये भी विश्वास करते हैं किन्तु वह निरुद्देश्य नहीं है—'आनन्द' उसका निश्चित उद्देश्य है। यह आनन्द पार्थिव आनन्द से भिन्न है, इसमें अनिवर्चनीय तत्व का समावेश है, परन्तु यह न तो कोई आकस्मिक घटना है और न आनुषंगिक सिद्धि मात्र है—यह काव्य का चरम प्राप्य है। काव्य का चरम मूल्य यह आह्लाद ही है—नैतिक मूल्य काव्य के सहज मूल्य नहीं हैं। यदि वे आह्लाद के साधक है तो काव्य मे ग्राह्य है और यदि बाधक हैं तो अग्राह्य।

इस प्रकार लोक मगलकारी नैतिक मूल्यों के विषय मे उपर्युक्त दोनों उपवर्गों का दृष्टिकोण समान है—काव्य को ये नीति-विरोधी तो नहीं मानते परन्तु नीति-निरपेक्ष अवश्य मानते हैं। वास्तव मे इन दोनों का आधार प्राय. एक ही है। 'कला कला के लिए' सिद्धात आह्लाद सिद्धात का ही विकास है और इस दृष्टि से कलावादियों को आनन्दवादी आलोचको की ही बौद्धिक संतान माना जा सकता है।

इन दोनों अतिवादाय के बीच एक तीसरा मध्यम मार्ग भी है, जो अधिक संतुलित और विवेकपूर्ण है। प्राचीनो मे रोमी मनीषी सिसरो, यूनानी, आचार्य लोंजाइन्स, अठारहवी शती में ड्राइडन तथा गोइटे और आधुनिको मे मैथ्यू आर्नल्ड आदि ने इसी को ग्रहण किया है। ये आलोचक नैतिकता और आनन्द मे शिव और सुन्दर में कोई विरोध न मानकर नैतिक सौन्दर्य को काव्य का लक्ष्य मानते हैं। कजिन के शब्दो मे कला का उद्देश्य नैतिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति है। ये एक ओर नैतिकता को रूढ़ियो से मुक्त कर उसे जीवन का व्यापक मानवीय आधार प्रदान करते हैं और दूसरी ओर आनन्द को मनोरजन अथवा स्नायविक उत्तेजना से भिन्न परिष्कृत एवं स्वस्थ रूप मे ग्रहण करते हैं। इनका तर्क यह है कि जो जीवन के लिए कल्याणकारी नहीं हैं, वह आनन्द निश्चित रूप से जीवन के लिए हितकर है। अपने चरम रूप में आनन्द वादी मूल्यो और नैतिक मूल्यों में कोई भेद नही रह जाता। सदाचार की साधना आनन्द के लिए ही तो की जाती है और उधर स्थायी आनन्द जीवन के उत्कर्षक मूल्यो के द्वारा ही सम्भव है। मैथ्यू आर्नल्ड ने इस दृष्टिकोण की अत्यन्त मार्मिक व्याख्या की है—'नैतिकता को प्राय. संकीर्ण और अशुद्ध अर्थ में ग्रहण किया जाता है जिसका समय बीत चुका है। वह अब रूढ़िवादियो और व्यावसायिक लोगों के हाथ में पड गई है, जिससे कुछ लोग ऊब उठते हैं। कभी कभी हमें उनके विरुद्ध विद्रोह रुचिकर प्रतीत होने लगता है जो उमर खैयाम के इन शब्दो को सिद्धात वाक्य मानकर चलती है 'जो समय हमने मस्जिद मे नष्ट किया है, उसकी क्षतिपूर्ति, आओ, मदिरालय मे चलकर करें'। अथवा उनकी ऐसी कविता में अभिरुचि हो जाती है जिसमें नैतिक मूल्यों की उपेक्षा रहती है, ऐसी कविता में जिसकी विषय वस्तु चाहे जैसी हो किन्तु रूपाभिव्यंजन कौशलपूर्ण तथा रमणीय होती है। ये दोनो ही आत्मप्रवंचना की स्थितियां हैं—और इस आत्म-प्रवंचन का सबसे सफल उपचार यह है कि हम उस उदात्त एवं अक्षय अर्थवान शब्द 'जीवन' पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उसकी आत्मा का साक्षात्कार करना सीखें।

उपर्युक्त सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि प्रस्तुत प्रसग मे भारतीय तथा पाश्चात्य आचार्यो के विचारों मे मौलिक समानता है जिसके आधार पर काव्य-प्रयोजन के सम्बन्ध मे निम्नोक्त सार्वभौम सिद्धात सूत्रो का निरूपण आसानी से किया जा सकता है—

काव्य के दो मूल प्रयोजन है--लोकमंगल और आनन्द, या श्रेय और प्रेम।

यद्यपि इनको लेकर अतिवादी विचारकों के दो वर्ग बन गए हैं, परन्तु तत्व रूप से ये एक दूसरे के पूरक हैं, क्योकि लोकमगल की चरम परिणति व्यक्ति और समाज के सुख-स्वास्थ्य में हैं--कल्याण का फलयोग आनन्द के अतिरिक्त और क्या हो सकता है और इस प्रकार जीवन के योग क्षेमके अभाव मे आनन्द की भी क्या सार्थकता है?

काव्यजन्य आनन्द के स्वरूप के विषय में काफी विवाद रहा है, किन्तु इसका निर्णय काव्य के स्वरूप के आधार पर सहज ही किया जा सकता है। काव्य यदि जीवन की रसात्मक, भावकल्पनात्मक अभिव्यक्ति है तो काव्यजन्य आनन्द भी भाव-कल्पनाजन्य आनन्द ही हो सकता है और स्पष्ट शब्दों में, वह कल्पना द्वारा विशदीकृत, अर्थात व्यक्तिगत जातीय या राष्ट्रीय आदि भावना से मुक्त, विशुद्ध या निर्वैयक्तिक भाव का भोग या चर्वण है।

ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम्

रविदत्त शर्मा, प्रासन्न विहार, दिल्ली

वेदमाता का सन्देश है, ज्योति को यज्ञ से समन्वित करो। दीपावली का पर्व ज्योति से ही सम्बन्ध रखता है। अखण्ड अन्धकार का उन्मूलन क्षणिक देदीप्यमान दीपक के द्वारा सम्भव नहीं। उसकी बाती और तेल अल्पकालिक हैं। एक वर्ष में एक दिन और वह भी कुछ पलो के लिए हम थोड़ा सा प्रकाश करके अपने को धन्य मान बैठते हैं। महान अन्धकार की तुलना मे हमारे प्रकाश के साधन तुच्छ हैं! इसके अतिरिक्त जन-जन के हृदयो में जो अन्धकार व्याप्त है, उसके निराकरण का क्या उपाय है? आज मनुष्य को एक ऐसे प्रकाश की आवश्यकता है, जिससे सदैव के लिए तिमिरनाश हो सके।

इसके लिए यज्ञ की ज्योति ही उपयोगी हो सकती है। निरन्तर यज्ञ के अनुष्ठान से अन्त:करण में एक ऐसी चेतना जागृत होगी जो प्रमाद और आलस्य को दूर भगाएगी। इस सम्बन्ध मे श्रुति हमारा मार्गदर्शन करती है—

"दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा
मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू
प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥ यजु २९-३२

दिव्यगुण सम्पन्न, अच्छी शिक्षा प्रदान करने वाले, विद्वज्जन उत्तमवाणी के द्वारा मनुष्यो को यज्ञ की प्ररणा देकर, उन्हें संगठित करते हुए, शुभकार्यो मे लगाने वाले, कार्यकुशल, अत्यन्त निपुण लोग प्राचीन ज्योति का उपदेश द्वारा प्रचार प्रसार करें मन्त्र में प्राचीन ज्योति के द्वारा वेदवाणी रूपी प्रकाश का संकेत मिलता है। यह ऐसी ज्योति है जो एक बार हृदय में जब जाए तो फिर कभी बुझती नहीं।

इस ज्योति को जगाने के लिए दिव्यसाधन अपेक्षित है। यज्ञ के अनुष्ठान से यह सदैव प्रज्वलित रहती है। जैसे निरन्तर विद्युत उपलब्धि के लिए विशाल बांध का निर्माण कर, उसमें सयन्त्र लगा कर विद्युत का उत्पादन किया जाता है, फिर अन्धकार की आशका नही रहती। उसी प्रकार बृहद यज्ञ-योजना के द्वारा सनातन ज्योति को चिरस्थायी बनाया जा सकता है। भौतिक यज्ञ से मानस यज्ञ का विकास होता है, अन्तश्चेतना जागृत होती है, फिर निरन्तर चिन्तन करते रहने से मन पर अन्धकार का आवरण नही टिक पाता। वेदवाणी के द्वारा अन्त करण की ग्रन्थियां सदैव के लिए खुल जाती हैं, सभी प्रकार के संशय नष्ट हो जाते हैं, फिर पारमार्थिक सत्ता का भान हो जाता है और उस परम शक्ति का आत्मा मे ही साक्षात्कार प्रतिभासित होता है। फिर कभी भी भटकने का अवसर नही आता। संसार में अनेको उदाहरण प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत हैं।

वेदवाणी के अभाव मे मनुष्य पहले तो झूठा चमत्कार दिखाकर असंख्य अनुयायियो को अपने पीछे लगा लेता है, परन्तु जब वह स्वय भटक जाता है तो स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। बालयोगेश्वर और रजनीश इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इस प्रकार का एक भी उदाहरण नही है जो वेदवाणी का

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सत्य ही धर्म का आधार है

पं० मन्नलाल निर्भय, सिद्धांतशास्त्री

मानव जीवन कोटि जन्मों के संचित सौभाग्य का प्रतिफल है। सुरदुर्लभ इस तन को प्राप्त करके इसकी अनन्त सार्थकता संयोजित कर लेना ही अधिक उपयुक्त है। हमारे यहां सत्यशील साधकों और ऋषि मुनियों तथा आर्य ग्रन्थों की एक व्यापक परम्परा रही है, जहां से हमने दिशा-निर्देश पाया है। जीवन सूत्रों को ढूंढा है। परम प्रेमी प्रभु का मार्ग पकड़ा है। अपनी सार्थकता सिद्ध की है। 'सत्य' इन्हीं सूत्रों में एक अनमोल विभूति है। जीवन सर्वाधिक कल्याणकारी, शुभ और सत्चित है। यह ऐसी पुण्य धर्म की खेती है जहां प्रारम्भिक कठिनाई अवश्य है, पर जिसकी परिणति लौकिक, अलौकिक कृतार्थता में सन्निहित है। सत्य मानव जीवन को श्रेष्ठता और सार्थकता के शिखर तक ले जाने वाला सर्वाधिक निरापद और प्रशस्त राजमार्ग है।

मानव ने सभ्यता एवं संस्कृति के इतिहास में न जाने कितने नियम बनाये और बिगाड़े पर सृष्टि के आदि में सत्य की जो श्रेष्ठता और महत्वता थी वह आज भी उसी रूप में विद्यमान है क्योंकि सत्य सृष्टि मूल है जीवन का आधार है। सत्य सबसे बड़ा तप, सबसे बड़ा कर्म, सबसे पुण्यशाली कर्म, सबसे बड़ी सिद्धि है। सर्व तत्वों ने सम्पूर्ण सत्य को ही स्वीकार किया है। मनुष्य सत्याचरण द्वारा ही संसार में जगत पिता, सत्य के स्वरूप परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है।

सत्य निष्ठा पाप कर्मों से विरक्त रखती है। अपकरम. अवसाद, अपयश, अशांति, असन्तोष और अपमान के शाश्वत सत्यार्थी के पास तक नहीं फटकते। सत्यशोधक तो शांति निर्भयता, आनन्द निर्द्वन्द्वता निष्ठा के चिरस्नाय संगम में रमण करता रहता है। सम्मान, कीर्ति, गौरव और आत्मरक्षा के लिए सत्य ही सबसे बड़ा सूत्र है। मौत के बाद भी सत्यवादी अपने यशरूपी शरीर से जीवित रहता है। उसके सदव्यवहार परोपकारी कृति, निर्भयता समाज मे उसे अजात शत्रु बना देती है। संसार में उन्नति, उत्कर्ष और उत्थान प्राप्ति के लिए सत्य ही सबसे उत्तम रास्ता है। निर्विकार निर्वैर निश्चिन्त जीवन जीने के लिए सत्य से बढ़कर कोई उपाय नहीं। संसार में जितने धर्म ग्रन्थ आप्त वचन, आर्षकथन विद्यमान हैं। उनमें जिन नियमो, गुणो और आचारो की प्रधानता है उनमें सत्य सर्वाधिक प्रमुख है। सारे रास्ते इस सत्य के परमधाम तक जाने के लिए हैं।

मुण्डकोपनिषद मे ऋषि का कथन है :

> सत्यमेव जयते नानृत, सत्येन पन्था विततो देवयान् ।
> येनाक्रमन्त्यषयो ह्याप्तकामा, यत्र तत्सत्यस्य परमनिधानम् ॥

अर्थात जय सत्य की ही होती है असत्य की नही। प्रभु तक ले जाने वाला रास्ता सत्य से निर्मित हुआ है। वह पन्थ देवयान है। आप्तकाम (जिसकी समस्त कामनायें पूरी हो गई हो) ऋषिगण जिस रास्ते से चलकर जहा पहुचते हैं परमधाम ही सत्य है।

सत्य की महिमा विराट है, उसका विश्लेषण सम्भव नहीं है फिर भी शास्त्रकारों ने अपने विचार प्रकट कर सत्य की महिमा का गान किया है। समुद्र में नाव के समान सत्य स्वर्ग का सोपान है। सच बोलने में हमें कुछ खर्च भी नहीं करना मे बस मन वचन करम को एकाकार कर सम्यक समभाव से आत्मा के शाश्वत आनन्द के क्षेत्र में रमण करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करते जाना है।

श्री सोमनाथ मरवाह के प्रति शोक सम्वेदना

सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री० सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट की पुत्रवधू की माता श्रीमती सावित्री देवी का देहावसान विगत मास हो गया है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। आपका क्रियाकर्म वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

शोक सभा

श्रीमती सावित्री देवी जी के देहावसान पर एक शोक सभा ३०-३-८५ को ४ बजे सायं मन्दिर मार्ग आर्य समाज में की गई। जिसमें उनके जीवन पर विशेष चर्चा करके दिवगत आत्मा की सदगति के लिए तथा पारिवारिक जनों को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। ऐसी प्रभु से प्रार्थना की गयी। शान्ति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जिस रूप में जो पदार्थ निश्चित होता है यदि वह रूप सम्यक स्वभाव से विद्यमान रहे तो उसे सच कहते हैं। सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या सत्य ही है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं। असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं। सत्य ही धर्म का आधार है। अतएव सत्य का परित्याग कभी नहीं करना चाहिए। निश्चय ही सत्य समग्र साधनों की आधार शिला है। उपनिषद वाक्य है 'सत्यं वद' सत्य बोलो – कहने योग्य बात प्रमाण जैसी जानी गयी है। उसे उसी प्रकार बिना हेर फेर किए कहो - सत्यान्न प्रमदितव्यम्' सत्य में प्रमाद नहीं करना चाहिए। पदमपुराण में आया है सत्य से पवित्र हुई वाणी बोलो तथा मन से जो पवित्र जान पड़े, उसी का आचरण करो, स्कन्दपुराण मे वर्णित है "सत्य बोले, प्रिय बोलें, अप्रिय सत्य कभी न बोलें, प्रिय भी असत्य हो तो न बोलें यह धर्म वेद शास्त्रों द्वारा निहित है।'

सत्य महत्ता को स्पष्ट करते हुए महात्मा एमर्सन ने बड़ा ही सुन्दर कहा है— जिस सुन्दरतम और श्रेष्ठतम आधार पर मनुष्य को अपना जीवन अवस्थित करना चाहिए, वह है सत्य"।

विनोबा जी का तो कहना है कि 'संसार में बस दो ही महिमाएं काम कर रही है। एक सत्य की महिमा और दूसरी नाम की महिमा।'

सत्य एक समग्र भाव है, सम्पूर्ण तत्व है। विचार-आचार-वाणी में जो सत्य है वही सत्य हैं। मन-वचन और कर्म के एक रूप हो जाने पर ही सिद्धि कामना की जा सकती है। सत्य वही है, जिसमें किसी प्रकार का कष्ट न हो और जो निर्दोष प्राणी का अहित न करता हो, यह मानो सच के साथ सरसता और अहिंसा का प्राण एव जीवन का सा मेल है : एक कवि ने कितना सुन्दर कहा है— साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच हैं, ताके हृदय आप ॥

मनुष्य मात्र का पुनीत कर्तव्य है कि वह अपने सुर दुर्लभ जीवन में सत्य का अखण्ड व्रत धारण कर अपनी कृतार्थता सिद्ध कर ले। सत्य भाषण, सत्य पथ का अनुसरण ही सन्मार्ग है। बस यही निरापद मार्ग हमें पथभ्रष्ट चरित्र भ्रष्ट होने से बचा जा सकता है। 'धरम न दूसर सत्य समाना' सत्य ही सर्वस्व है। सत्य के बराबर कोई दूसरा धर्म नहीं है।

अतः जो व्यक्ति अपना कल्याण चाहते हैं वे सत्य का सदैव पालन करें।

ग्राम-पो० बहीन जिला फरीदाबाद हरि०।

रामो विग्रहवान् धर्मः

लक्ष्य के प्रतीक श्री राम

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

भारतीय जनमानस को वेद और श्रीराम ने जितना प्रभावित किया है सम्भवतः अन्य किसी ग्रन्थ या महापुरुष ने नहीं। जहां वेद अनादि काल से ही इसके धर्म अर्थात् जीवन के ऐहिक पारलौकिक समस्त क्रिया-कलापों के मार्गदर्शन में परम प्रमाण ग्रन्थ रहे हैं, वहां राम इसके अशेष सांसारिक क्रिया-कलापों के आदर्श प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।

राम अपने जीवन और कार्य से प्राणीमात्र में रमे हुए हैं उनका जीवन किसी देश विशेष या समाज विशेष के लिये ही आदर्श का प्रतीक नहीं किन्तु जिस प्रकार सूर्य, वायु, जल सभी राष्ट्र समाज के लिये समान उपकारक हैं उसी प्रकार राम भी सबके हैं और सब राम के हैं। उनका चरित्र सबके लिए हैं।

राम के साथ जुड़ी हुई संस्कृति किसी भी सभ्य मानव समाज के लिए मार्ग प्रदर्शनार्थ पथ-प्रदीप का कार्य करती है। राम का शैशव से लेकर वार्धक्य काल तक का सम्पूर्ण जीवन एक ऐसा धर्म शास्त्र है जिसमें किसी भी व्यक्ति के लिये वह जीवन के किसी भी आयु या वर्ग से सम्बन्ध रखता हो उसे राम के जीवन मे मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है। इसी परिपूर्णता के कारण अन्य श्रेष्ठतम महापुरुषों के होते हुए भी भारतीय जनमानस ने एकमात्र श्रीराम को ही मर्यादा पुरुषोत्तम इस विशेषण से विशेषित किया सम्भवतः उसने किसी व्यक्ति के लिये जिन उदात्त गुणों की आवश्यकता होती है वे सम्पूर्णतः एकमात्र राम के अन्दर ही प्राप्त कर लिए।

आदर्श, त्याग, तप, पिता, पुत्र, शिष्य, पति, राजा-प्रजा, सेवक सेव्य अन्ततः कुछ भी तो शेष नहीं रहता जिसके लिने अन्यत्र जाने की आवश्यकता हो। राम की चिरकाल से आई हुई यह लोकप्रियता उनके श्रेष्ठतम जीवन की साक्षी है। शताब्दियों तक पराधीनता की जंजीरों में जकड़े हुए भारत को जिस एक व्यक्ति ने जीवित रखा वह राम ही हैं। मध्य काल में अनेक सन्तों ने राम के नाम से ही प्रजा को जीवन्त बनाए रखा। गांधी जी ने भी इसी राम नाम का आश्रय लेकर असहयोग आन्दोलन का शुभारम्भ किया। यह बात दूसरी है कि उन्होंने अपने अन्य कूटनीतिक कार्यो के समान बाद में राम को भी राम से पृथक् कर दिया और केवल जन आक्रोश के भय से राम शब्द से जुड़े रहे।

अस्तु! इस तथाकथित स्वतन्त्रता के समय में भी जब कि भारतीयों की समस्त परम्परायें विच्छिन्न हो रही हैं। उन परम्पराओं से पुनः उनको सम्बन्धित करने के लिए राम के नाम और काम की गरिमा का अनुभव कर कुछ जागरूक व्यक्तियों ने राम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन चलाया है। इस आन्दोलन का प्रत्यक्ष परिणाम है कि अब भारतीय जनमानस अपनी तन्द्रा अवस्था परित्याग कर अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करने के लिए उत्कण्ठित हो चुका है। इस आन्दोलन को अधिक जीवन्त बनाने के लिये इसे राममय बनाने का दृष्टिकोण आन्दोलन कर्त्ताओं की सूझबूझ एवं उनकी दूरदर्शिता की पहचान है। समस्त क्रिया-कलाप राम से आवेष्टित हो जायें, इसके लिए राम जन्मभूमि मुक्ति हमारा ध्येय वाक्य हो जाना चाहिए।

कुछ लोग राम जन्म भूमि मन्दिर निर्माण को भारतीय वैदिक परम्पराओं के निर्माण का प्रतीक न मानकर इसे केवल एक मन्दिर मात्र के निर्माण की बात ही समझ पाते हैं, जब कि इस आन्दोलन का वास्तविक लक्ष्य राम के समस्त आदर्शों के मन्दिर के निर्माण की भावना है। जो इस आन्दोलन के साथ अनुस्यूत है। इसी भावना को अभिव्यक्त करने के लिये 'जय श्री राम' इस उद्घोष का सृजन किया गया।

चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते परस्पर में मिलते तथा हास-परिहास में भी भक्त प्रवर महावीर हनुमान की भांति 'जय श्रीराम' ही चतुर्दिक् ध्वनित हो, इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्त्ता 'जय श्रीराम' शब्द का उच्चारण करे जिससे अपना ध्येय उसके समक्ष सतत प्रस्तुत रहे। इसी व्यवहार ने 'जय श्रीराम' इस शब्द को बहुव्यापी बना दिया। अब जब कुछ राम भक्त (राष्ट्रभक्त) इस शब्द का राष्ट्र-भक्तों के अनुशासन के अनुसार व्यवहार करते हैं तो कुछ राष्ट्रद्रोही वृत्ति वालों तथा रूढ़िवादियों के पेट में दर्द होने लगता है और वे इसको साम्प्रदायिक या परम्पराहीन कहकर राष्ट्रभक्त जनता को बरगलाने लगते हैं। आश्चर्य तो तब होता है जब इन व्यक्तियों द्वारा ही शिखा सूत्र का सहर्ष परित्याग कर पेंट-टाई, डैडी-मम्मी की खाई प्रति दिन भारतीय संस्कृति को दबाने के लिये (दफनाने के लिए) खोदी जा रही है। वे यह भूल जाते हैं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जिस प्रकार नेता सुभाषचन्द्र बोस ने 'जयहिन्द' का उद्घोष किया था जिसका अभिप्राय यही था कि प्रत्येक हिन्दुस्तानी (भारतीय) स्वतन्त्रता चाहने वाला व्यक्ति 'जयहिन्द' के घोष से अपने ध्येय को प्रकट कर उसकी प्राप्ति के लिये प्राणप्रण से लग जाये न कि किसी अभिवादन विशेष की परम्परा चलाई जाये।

अभिवादन तो जिन परम्पराओं का जैसा है वह वैसा ही रहे। इसी प्रकार यह 'जय श्रीराम' भी राम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण करने के ध्येय वाले राष्ट्रभक्तों का जय घोष है। जिसके सहारे वे अयोध्या में ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण भारत में (या समस्त विश्व में कहें तो यह सत्य के अधिक निकट होगा) राम जन्म भूमि अर्थात् राम की सस्कृति वैदिक सस्कृति अर्थात् मानवीय सस्कृति के मन्दिर का निर्माण करना चाहते हैं, जिससे समस्त मानवीय सभ्यता का विकास होकर सबका अभ्युदय हो। यही समस्त राष्ट्र भक्त सेना का लक्ष्य है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्राणप्रण से आगे बढ़ना होगा और उन लोगों से जिन्हें इसमें परम्पराहीनता, साम्प्रदायिकता, आदि की गन्ध आ रही है, सावधान रहने की महती आवश्यकता है।

पुस्तक समीक्षा—

सीधा-सच्चा-रास्ता (वैदिक उपासना)

(पृष्ठ १४८ मू० परोपकार)

ले० नन्दलाल पाहुवा

प्रकाशक—आर्य समाज बापर नगर मेरठ।

प्रस्तुत पुस्तक अति सरल,जीवन को उपयोगी बनाने में उपयुक्त सन्ध्या का शब्दार्थ आगे-स्वस्ति शान्ति प्रकरण के मन्त्रों का भावार्थ के साथ संस्कारो का महत्व एवं पर्वों का ज्ञान भक्ति संगीत आदि का ज्ञान इस लघु पुस्तिका में पढ़ने को मिलेगा। मुख पृष्ठ आकर्षक है। पठनीय सामग्री के साथ आसनों का समुचित ज्ञान भी मिलेगा।

लेखक की महत्ता इसी मे है कि वह इस प्रकार की पुस्तिकाओं को प्रकाशित कर जन-कल्याण को चैतन्यता प्रदान करना ही एक मात्र उद्देश्य है। यदि आप एक बार पढ़ेंगे तो यह स्वाध्याय आपको उन्नति पथ पर अग्रसर कर सकेगा।—इसी प्रकार

(२) बना मन मन्दिर-आलीशान

(छोटी पुस्तक)

"बना मन मन्दिर आलीशान" पर विचार गूढ़ हैं। चिन्तन से चिन्ता को मुक्ति मिलेगी। गम्भीरता पूर्वक मनन् करने से यह सिद्ध हो सकेगा कि इसका जीवन में मूल्य क्या है! बस वही जो इस के वितरण का भाव-यश-प्राप्ति है मूल्य-जन-सामान्य का लाभ ही है। उपरोक्त दोनों पुस्तकें जीवन के लिए उपयोगी है आत्म चिन्तन ही आत्मोन्नति का साधन है।

(३) पुण्यधाम "गृहस्थाश्रम"

पुण्यधाम "गृहस्थाश्रम" की मर्यादाओं का पालन और उसका महात्म्य क्या है? अनमोल वचनों का संकलन, सही मार्ग मे उपयोगिता ही मूल्य हैं।

आप इन तीनों लघु पुस्तकों का आस्वादन करें उपयोगिता क्या है अपने आप समझ में आ जाएगी। श्री नन्दलाल जी पाहुवा आपको बधाई हो इसी प्रकार हजार हाथों से एकत्रितकर हजार हाथों से वितरण कर पुण्य लाभ प्राप्त करें और यश के भागी बनें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम्

(पृष्ठ ५ का शेष)

आश्रय लेकर भटक गया हो। स्वामी दयानन्द ने प्रसन्नमुद्रा में प्राण त्यागे जिससे दर्शकों को एक विशेष प्रेरणा मिली और वेदवाणी का प्रकाश सबके हृदयों को आलोकित कर गया। 'देव्या होतारा' मन्त्र का भाव महर्षि के जीवन में अक्षरशः झलकता है। वे दिव्यगुणों से भरपूर उत्तम शिक्षक, मनुष्यों को संगठित करने वाले, यज्ञ को व्यवस्थित करने वाले, स्वस्तिपन्था की प्रेरणा देने वाले और वेदवाणी की अमर ज्योति को जनमानस में जगाने वाले थे। उनका पवित्र जीवन 'ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताम्' की भावना से ओत प्रोत था। अज्ञानान्धकार का मूलोच्छेद करके मोक्ष के अधिकारी बने: प्राण त्याग के समय सात्विकता का बना रहना इसका प्रबल प्रमाण है। महर्षि दयानन्द के जीवन से सबको प्रेरणा मिलती है कि सदैव ज्योतिर्मय रहो, वेदवाणी का दीपक जलाते रहो तथा यज्ञमय जीवन बना कर उस ज्योति को पुष्ट करते रहो।

मेजर डॉ० अश्विनी कण्व वी एस एम औषधालय स्मृति स्मारक काअनावरण

माननीय डा० हर्षवर्धन, स्वास्थ्य मन्त्री, दिल्ली सरकार के कर-कमलों द्वारा २० फरवरी १९९५ को सम्पन्न हुआ। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने समारोह का संयोजन करते हुए अपने स्वागत भाषण में कहा—

स्वागत सुमन समर्पित करने को,
हम सब का मन मचल रहा है।
उर में लिये कोटि आशाएं,
हर्षित हो मन छलक रहा है।
हे कर्मक्षेत्र के सेनानी! चिरजीव हो है मम चिंतन,
स्वर्णिम सपनों को सजाये, हम सब करते अभिनन्दन।

जब पुरुषों द्वारा मन्त्री महोदय का स्वागत किया जाने लगा तो नम्रता की साक्षात् मूर्ति डा० हर्षवर्धन जी ने कहा—"स्वागत तो उस बलिदानी अमर शहीद के माता-पिता का होना चाहिए जिन्होंने अपनी तपस्या से देश को ऐसा कर्मठ देशभक्त डाक्टर प्रदान किया है।" मान्य मन्त्री जी ने उन्हीं सुरभित फूलों के गुलदस्तों से माता-पिता का सम्मान करते हुये उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस अवसर पर डा० अश्विनी के जीजा, श्री युद्धवीर सिंह मलिक (आई ए. एस.) ने पुरानी यादों को ताजा करते हुये दिल्ली सरकार से अनुरोध किया कि ऐसे कर्त्तव्य परायण शहीदों के स्मारक बना कर उनके परिवार को भी सम्मानित करना चाहिये। शहीद की माता श्रीमती सुभाष कुमारी कण्व ने भी "इन्सान बनके रहना, कर्त्तव्य जिन्दगी के हंस-हंस के तुम निभाना" शीर्षक भजन सुना कर वातावरण को भावुक बना दिया। स्मारक समिति के प्रधान जी शिवकुमारजी शास्त्री (महामन्त्री-केन्द्रीय सभा दिल्ली) ने तो यहां तक सुझाव दिया कि नैतिक शिक्षा की पुस्तक में भी अमर शहीद अश्विनी कण्व वी०एस०एम० का जीवन परिचय देना चाहिये ताकि युवा पीढ़ी को देश भक्ति और कर्त्तव्य परायणता की प्रेरणा मिलती रहे। आर्य समाज पश्चिम विहार के प्रधान श्री हीरालाल चावला ने भी डा० अश्विनी की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। मान्य डा० हर्षवर्धन ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शहीद के निवास स्थान(ए-१/३६० पश्चिमी विहार)पर आकर डा० अश्विनी की प्रतिमा एवं चित्रों का अवलोकन कर भूरि भूरि प्रशंसा की तथा शहीद के माता-पिता के दर्शन कर अपने को गौरवान्वित अनुभव किया। ऐसे हैं हमारे सौम्य, कर्मठ व उच्च विचार रखने वाले डा० हर्षवर्द्धन जी, स्वास्थ्य मन्त्री, दिल्ली सरकार।

मेजर-डा० अश्विनी कण्व की स्मृति में?

माता सुभाष कुमारी कण्व तथा पूज्य पिता अमोलकसिंह जी सम्भवतः अपने सुयोग्य वीर सुपुत्र की याद सदा ताजा रखने की इच्छा रखते हैं और वीर दिवंगत पुत्र की स्मृति में समय-समय पर कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।

१—श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर किसी एक विद्वान को सम्मान देकर कृतकृत्य ही नहीं होते हैं अपितु लाख-लाख इन्सानों को वीरपुत्र जैसी सन्तान का निर्माण करने की प्रेरणा देते हैं।

२—आर्य समाज स्थापना दिवस पर हिमाचल भवन नई दिल्ली में जो आयोजन किया गया उस समय पर भी माता जी, पिता जी ने होनहार बच्चों को स्वर्ण पदक देकर जहां बच्चों का उत्साह वर्धन किया, वहां सभी बच्चों में अश्विनी कण्व जैसा बनने की लालसा भी दिलों में जगाई।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० "कण्व" के शहीद होने पर उनकी स्मृति में सदा ही इसी प्रकार कार्यक्रम करके विद्वानों का सम्मान बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए।

कण्व के जीवन की स्मृति सदा बनाये रखें। वस्तुतः सभी कार्यक्रमों की आधार शिला कण्व का अपना व्यक्तित्व ही है। ऐसे व्यक्तित्व के धनी बालक हर घर में उत्पन्न हो, ताकि घर-परिवार, देश-जाति व समाज के गौरव बने।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

कानपुर-दिनांक २-४-९५ को कानपुर शहर की आर्य समाजों द्वारा डा० आशारानी राय प्रधाना जिलासभा की अध्यक्षता में एक विशाल शोभा यात्रा हरजेन्द्र नगर में यज्ञ के उपरान्त प्रारम्भ हुई। जिसमें नगर के पुरुष महिलायें व छात्र छात्राओं ने भाग लिया। शोभायात्रा के पश्चात आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के विशाल हाल में सभा के रूप में परिवर्तित हो गया।

उसमें सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारे। आपने आर्य जनता को अपना सिंहावलोकन करने की प्रेरणा दी और वास्तविक रूप में अपने भविष्य की चिन्ता करनी चाहिये। विश्व महर्षि के बताये मार्ग पर आ रहा है। आज आत्म-चिन्तन का दिन है। डा० हरनामसिंह जी ने भी अपना सन्देश दिया।

सभा अध्यक्षीय भाषण के बाद शान्ति पाठ कर विसर्जित की गई।

आर्यसमाज, मिर्जापुर का १०८वां त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव सुसम्पन्न

मिर्जापुर २७ मार्च। विगत १४ मार्च से २६मार्च तक आयोजित आर्य समाज, मिर्जापुर का १०८वां वार्षिकोत्सव बड़े उल्लास और भक्तिमय वातावरण में सुसम्पन्न हुआ। पहले दिन आर्यजनों की एक विशाल शोभायात्रा (जलूस) निकाली गई।

दूसरे दिन से प्रत्येक दिन पूर्व प्रधाना एवं शिक्षाविदुषी श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर की अध्यक्षता में प्रातः सायं यज्ञ,आरती भजन, उपदेश, दयानन्द तथा आर्य समाज के प्रगति एवं सुधारों की विषद चर्चाएं हुईं। आर्य समाज के प्रमुख वक्ताओं मे श्री पण्डित डा० कपिलदेव द्विवेदी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री कमला माहेश्वरी आर्य कन्या महाविद्यालय के संगीत विभागाध्यक्ष भजनोपदेशक पांडेय ओ३म-प्रकाश 'मलिक' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं प्रसिद्ध विद्वान डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने अपने उपदेश में ऋषिवर के स्तुति कार्यों की समीक्षा करते हुए स्वामी जी क। हिन्दू संस्कृति, आर्य समाज, मानव संस्कृति, ध्यान. धारणा, समाधि आर्य समाज की सार्वभौमिकता. नारी शिक्षा, विधवा विवाह आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों की विस्तृत चर्चा की।

प्रतिदिन प्रातः और सायं की सभाओं में भजन एवं भजनोपदेश प्रस्तुत किये गये। प्रो० मलिक के भजनोपदेश से वातावरण भक्तिमय तथा संगीतमय बन गया। जिसमें प्रमुख रूप से कु०कालिन्दी, संगीता एवं कविता, उर्मिला केशरी, शुभा गुप्ता, रूपा गुप्ता, कु० सात्वना सेन गुप्ता, गोविन्द मिश्र, श्रीमती सुमिता कोहली,ओमप्रकाश पांडेय, लता द्विवेदी, इत्यादि ने भाग लिया जिसमें तबला प्रवक्ता श्री गोविन्दलाल मिश्रा का भजन आकर्षक रहा।

सभा की अध्यक्षा एवं आर्यसमाज की पूर्व प्रधाना श्रीमती संतोष कुमारी कपूर ने अपने भाषण में स्वामी दयानन्द सरस्वती के देश प्रेम आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य आदि की चर्चा करते हुए वेदों के अन्दर छिपे हुए गूढ़ बातों पर भरपूर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त हिन्दू संस्कृति एवं सभ्यता का विश्व समाज में उपयोगिता एवं महत्व को अच्छी तरह से समझाया। अन्त में समारोह में आमन्त्रित भजनोपदेशक, वक्ताओं, संगीत कलाकारों, महाविद्यालय तथा विद्यालयों की प्रधानाचार्यो तथा छात्राओं, अध्यापिकाओं और नगर के सभी सहृदयजनों को जिन्होंने समारोह को सफल बनाया हृदय से आभार व्यक्त किया। इस प्रकार आरती एवं शांति पाठ के साथ यह त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव सुसम्पन्न हुआ। —सन्तोषकुमारी कपूर

गुरुकुल ज्वालापुर का ८८वां वार्षिकोत्सव

हरिद्वार २३ मार्च। भारत में उच्चतम शिक्षा के निःशुल्क केन्द्र—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ८८वां वार्षिक महोत्सव दिनांक १३ एवं १४ अप्रैल ९५ को सोत्साह मनाया जा रहा है जिसके मुख्य आकर्षण हैं—वेद सम्मेलन, आयुर्वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन एवं कवि सम्मेलन।

सस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि उक्त सम्मेलनों में देश के प्रसिद्ध आर्य विद्वान, सन्यासी राजनेता एवं कविगण पधार रहे हैं। उत्सव की तैयारियां जोर-शोर से हो रही हैं।

डा० हरिगोपाल शास्त्री

गुरुकुल प्रवेश सूचना

सर्वसज्जनों को सूचित किया जाता है कि श्रीमद्दयानन्द आर्य विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर व दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा मान्यता प्राप्त आचार्य कुल में अपने लड़कों के उज्ज्वल भविष्य हेतु प्रवेश करायें। कक्षा ५ उत्तीर्ण, स्वस्थ मेधावी होना अनिवार्य। स्थान सीमित। दस रुपये अग्रिम भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

आचार्य एवं संचालक
आचार्य कुल [illegible]
पत्रालय मेघाखेड़ी (मु० नगर)

नेपाल में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज सुनसरी के तत्वावधान में आर्य महासम्मेलन गौतमपुर में १८ मार्च से २१ मार्च तक विभिन्न कार्यक्रमो के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वेद मन्दिर का शिलान्यास पं० मुनेश्वर सिंह शास्त्री समस्तीपुर के द्वारा किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान एव विराटनगर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा आकर्षक सस्वर वेदपाठ एव प्रवचन द्वारा श्रोताओं को लाभान्वित किया।

वेद में सृष्टि-विद्या पर संगोष्ठी

नई दिल्ली, २१ मार्च। ऋग्वेद के भाववृत्त सूक्तो पर जो वेद-संगोष्ठी अप्रैल में होने वाली थी वह अब ६ और ७ मई को होगी। "भाववृत्त" सृष्टि विद्या का वैदिक नाम है। प्रतिवर्ष होने वाली यह ग्यारहवी संगोष्ठी है, जिसका आयोजन दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था, 'वेद-संस्थान' (सी २२ राजौरी गार्डन) करती है। मई की गोष्ठी में पन्द्रह निबन्धो पर विचार होगा जिन्हें हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली प्रदेश के विद्वान प्रस्तुत करेंगे। डा० फतहसिंह, डा० ब्रह्मानन्द शर्मा, डा० कृष्णलाल, डा० मानसिंह, डा० सत्यकाम वर्मा, अनन्त शर्मा, विष्णुकान्त शर्मा, कुछ प्रमुख विद्वान हैं जो संगोष्ठी में भाग लेंगे।

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ५, ६, ७ मई १९९५ को आर्य समाज टिहरी का हीरक जयन्ती समारोह

आपको जानकारी देते हुए प्रसन्नता होती है कि गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ५, ६, ७ मई १९९५ को आर्य समाज टिहरी की हीरक जयन्ती समारोह पूर्वक मनायी जा रही है। इस अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास नव निर्मित टिहरी नगर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् जी के करकमलो से किया जायेगा।

शोक समाचार

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के अग्रणी सेनानी तथा आर्य समाज के नेता श्री एन. एस. होलीकर पाटिल का दीर्घकालीन बीमारी से दुःखद निधन दिनांक १७-२-९५ की सुबह १० बजे लातूर में हो गया। उन्होने आर्य समाज की उन्नति का भरसक प्रयास किया। सामाजिक न्याय तथा जाति निर्मूलन के लिए उन्होने स्वयं अन्तर्जातीय विवाह किया तथा अपने परिवार के सभी पुत्र पौत्रियो का वैदिक अन्तर्जातीय विवाह करके सच्ची भक्ति का परिचय दिया। मृत्यु के समय वे ६५ वर्ष के थे उनके पीछे पत्नी, दो पुत्र तथा चार पुत्रियां सहित बड़ा परिवार है। उनके निधन से आर्य समाज को भारी क्षति पहुंची है।

— पं० विश्वनाथ शास्त्री

अमूल्य शिक्षा

१. सच्चरित्रता दूसरी सभी वस्तुओं से श्रेष्ठ है।

२. तुम अपने चरित्र को इतना पवित्र रखो कि यदि कोई तुम्हारी निन्दा करे तो भी मनुष्य उस पर विश्वास न करें।

३. यदि सुखी रहना चाहो तो सदा निष्पाप रहो।

४. तुम्हारे चरित्र को तुम्हारी कृति के सिवा और कोई भी कलंकित नहीं कर सकता।

५. जब किसी के साथ बातचीत करो तब उसी के मुंह की ओर देखो।

६. कभी आलसी मत बनो, यदि तुम्हारे हाथ किसी कार्य में नहीं लग सकते हो, तो मानसिक विकास की ओर ध्यान दो।

७. अपनी गुप्त बात यदि कोई हो तो कभी किसी से मत कहो।

८. यदि सफलता चाहते हो तो धनी बनने के लिए जल्दी मत करो।

९. बुढ़ापे के लिए जवानी के समय बचाकर जरूर रखो।

१०. अल्प और स्थिर लाभों से चित्त को शान्ति और योग्यता प्राप्त होती है।

नव साल २०५२ वि० की शुभकामनाएं

पावन पर्व प्रकाशमय, शुरू विक्रमी साल।
स्वागत किया सभी ने, उठ कर प्रातःकाल।
उठकर प्रातःकाल किया हार्दिक अभिनन्दन।
सुख सौहार्द समृद्धि में रहे स्वस्थ सभी जन।
देश अखण्ड रहे अपना, दिग-दिगन्त विजय हो।
सब विधि यह नव साल, शान्ति मंगल मय हो।

— स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

शोक समाचार

बड़े दुख के साथ सूचित कर रहा हूं कि श्री रामसरन दास आर्य, महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की छोटी पुत्र वधु श्रीमती ईश्वर देवी आर्या का २८-३-९५ को अमृतसर में भयानक दुर्घटना मे अकस्मात निधन हो गया था। उनका उठाला (अन्तिम क्रिया) शुक्रवार ३१-३-९५ को आर्यसमाज मन्दिर जंगपुरा विस्तार नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेकों प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे। शोकसभा में दिवंगत आत्मा को सदगति तथा परिवार जनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

कंवर पाल सिंह

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख का समाचार है कि भास्करानन्द जी का २ अप्रैल ९५ को दोपहर दो बजे हृदयगति रूक जाने से देहावसान हो गया। वे ८८ वर्ष के थे।

ब्रटिश गयाना तथा वेस्टइंडीज में अनेको वर्ष वे आर्य समाज का प्रचार करते रहे सार्वदेशिक सभा की ओर से वे प्रचारक नियुक्त किए गए वे विदेशों से लौटने पर सार्वदेशिक सभा की ओर से दीवान हाल में उनका स्वागत किया गया था।

गुरुकुल प्रवेश सूचना

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर व दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा मान्यता प्राप्त आचार्य कुल में अपने लड़को के उज्ज्वल भविष्य हेतु प्रवेश करायें। कक्षा ५ उत्तीर्ण, स्वस्थ मेधावी होना अनिवार्य। स्थान सीमित। दस रुपये अग्रिम भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

वार्षिकोत्सव

—आर्यसमाज उन्नाव का ९७वां वार्षिकोत्सव १६ से १८ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। समारोह में आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर होने वाले उपदेशों को सुनकर लाभान्वित हों।

वर एव वधु की आवश्यकता

३५ वर्षीय युवक एम.एस.सी., बी. एड, एम.बी.बी.एस. डाक्टर, राजकीय चिकित्सालय रामपुर में सेवारत, आय ६००० रुपए मासिक बदायू मे अपना क्लीनिक, के लिए सुन्दर गृह कार्य मे दक्ष कन्या की आवश्यकता है।

—सुन्दर सुशील गृहकार्य मे दक्ष गौर वर्ण दो बहनो के लिए सुयोग्य, सर्विस, बिजनेस तथा अच्छी आय वाले युवकों की आवश्यकता है।

योग्यता तथा आयु—(१) ३२ वर्ष, एम. ए. बी. एड. एवं संगीत प्रभाकर।
(२) ३० वर्ष, बी. एड. (संस्कृत)

सम्पर्क करें— वीणा रानी सक्सेना (प्रवक्ता हिन्दी
आर्य कन्या इन्टर कालेज
बिल्सी बदायूं—२४३६०१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७५/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-४-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (G) 93/9' Post in N.D.P.S O. on 13,14-4-1995

विदेश समाचार

नीदरलैंड में आर्य समाज

नीदरलैंड में आर्य समाज पिछले २६ वर्षों से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहा है। सभी वैदिक त्योहारों को यहां मनाते हैं। हिन्दी पठन-पाठन भी होता है, वेद यज्ञ, व्याख्यान तथा वैदिक संस्कार आदि आर्यों में होते रहते है साप्ताहिक सत्संग सभी बड़े शहरों में होता है। कभी-कभी भारत, लन्दन या सूरीनाम से आर्य प्रचारक आकर वेद प्रचार कर जाते हैं। मगर आर्यों की वृद्धि या जाग्रती कम नजर आती है। क्योंकि प्रचारक स्वतन्त्र रूप में नहीं है, प्रचार की सामग्री या वैदिक पुस्तकों की कमी विदेशों में है। मैंने सूरीनाम में भी देखा गुयाना एवं त्रिनिडाट में भी यह कमी पाई जाती है। १९१२ या १९१५ में इन देशों में आर्यसमाज की स्थापना हुई। इन ८१ सालों में यहां के आर्यों में कम तरक्की हुई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को चाहिये कि विदेश प्रचार पर ध्यान दें, क्योंकि आर्यों की वृद्धि में कमी हो रही है। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से अनुरोध करता हूं कि वानप्रस्थी या संन्यासी को विदेश प्रचार के लिये भेजा जाय। अवैतनिक प्रचारक हो भोजन वस्त्र रहने की सुविधा प्रचार कार्य का प्रबन्ध सभी स्थानीय आर्य समाज करेंगे, कम से कम तीन वर्ष या पांच वर्ष विदेशों में रहना होगा। आने-जाने का किराया भी उन आर्य समाज को ही देना होगा। दान या दक्षिणा प्रचारक का रहेगा। आने जाने का खर्च सभा प्रबन्ध करेगी। वेस्टएन्डिस के तीनों मुल्कों के प्रचारकों को तीन देशों में वारी-वारी प्रचार करना होगा। अमेरिका, कनाडा, फीजी, मारीशस, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका, होलेण्ड, इग्लैण्ड आदि देशों में प्रचार कार्य का प्रबन्ध शीघ्र किये जायें। प्रचार के साथ-साथ भारतीय पुस्तकों और सामानों का व्यापार भी चलाया जाय।

भारत के वानप्रस्थी, सन्यासी और भजनीक, उपदेशकों कमर कसो विदेश प्रचार में निकलो, एकता, सम्पर्क कार्यों में कमी है। सार्वदेशिक सभा से निवेदन है कि विदेशों के आर्य समाजों का नाम पूरा पता प्रकाशित कराये जिससे एक दूसरे देशों के आर्यों से सम्पर्क हो सके। मैं पूर्ण आशावान हूं कि समाज अपने भविष्य पर ध्यान दे ऋषि ऋण पर हम अवश्य ध्यान दें आर्यो जागो ओरों को भी जगाओ।

— रामदास किशुन दयाल
नीदरलैण्ड

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज मन्दिर सिकन्दराबाद में श्री रामस्वरूप जी आर्य प्रधान श्री जगदीशप्रसाद जी कौशल मन्त्री श्री दुर्गाप्रसाद जी गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज चन्दौसी में श्री व्योमेशचन्द्र जी अग्रवाल प्रधान श्री संजयकुमार आर्य मन्त्री, श्री नीरजकुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य कुमार सभा बहजोई में मनीषकुमार आर्य प्रधान. श्री सचिन आर्य मन्त्री, श्री सुबोधकुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज पटनागढ़ बालगीर में श्री घनश्याम अग्रवाल प्रधान, श्री केशव मेहेर मन्त्री शेषदेव सिबाबु कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज धर्माबाद में श्री नारायण भूमन्ना चक्कलवार प्रधान श्री सुरेश सीताराम मन्त्री श्री प्रा० शरदचन्द्र डुमड़े कोषाध्यक्ष चुने गये।

गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज इन्द्रप्रस्थ विस्तार विकास मार्ग दिल्ली द्वारा पूषा पार्क में २६-३-९५ को धर्माचार्य जैमिनी शास्त्री के ब्रह्मत्व में २१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुये इस कार्यक्रम में डा० शशि प्रभा कुमार सहित अन्य व्यक्तियों ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का फूल मालाओं द्वारा स्वागत किया गया। यज्ञ के उपरान्त ऋषिलंगर में सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन ग्रहण किया।

दूरदर्शन पर श्री लखोटिया का "शाकाहार" पर साक्षात्कार

भारतीय शाकाहार परिषद उत्तरी भारत के अध्यक्ष श्री रामनिवास लखोटिया का २७-३-१९९५ को दूरदर्शन चैनल-१ पर प्रातः कालीन सभा में "शाकाहार" विषय पर महत्त्वपूर्ण साक्षात्कार हुआ। इस साक्षात्कार के अन्तर्गत श्री लखोटिया ने दूरदर्शन के दर्शकों को बतलाया कि स्वास्थ्य, पर्यावरण, पौष्टिकता, भयंकर रोगों से लड़ने की क्षमता और मानव की संरचना की दृष्टि से "शाकाहार" ही उत्तम आहार है। आपने वैज्ञानिक शोधों के आधार पर प्रोटीन और कैलोरीज, आदि के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए यह साबित किया कि संतुलित शाकाहार में पौष्टिकता के सभी तत्व मौजूद हैं। विश्व की अनेक विभूतियों, जैसे सुकरात, प्लेटो, शेक्सपीयर, डार्विन, जार्ज बरनार्ड शा, टालस्टाय, [illegible], आदि का उल्लेख करते हुए आपने बतलाया कि पाश्चात्य देशों में "शाकाहार" तेजी से बढ़ रहा है, जिसके फलस्वरूप 'शाकाहार जीवन प्रणाली" को अधिक आधुनिक गिना जा रहा है। विश्व विख्यात माइकल जैकसन, मेडोना और मार्टिना नवरतिलोवा भी पूर्णतया शाकाहारी हो गए हैं।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ और वार्षिकोत्सव

वैदिक यज्ञ समिति झाड़ोदा कलां नई दिल्ली-७२ की ओर से बाबा हरिदास के विशाल मन्दिर पर २७ से ३१ मार्च १९९५ तक ब्रह्मचारी चेतनदेव जी "वैश्वानर" वैदिक साधना आश्रम चामड़ भैया (अलीगढ़) उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्य गुरुकुल कालवा (जींद) हरयाणा के ब्रह्मत्व में पांच दिनों तक सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञोपरान्त व रात्रि में अलीगढ़ बुलन्दशहर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महाशय चुन्नीलाल जी तथा उनके ढोलक वादक श्री बाबूराम जी के मनोहर भजन हुये।

ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन

रामनवमी समारोह एवं आर्यसमाज करौल बाग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल से ९ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद गायत्री सम्पुट यज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह में महिला सम्मेलन बाल भाषण प्रतियोगिता सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये। श्री स्वामी सत्यानन्द जी, आचार्य सत्यवीर वाचस्पति, पं० सोहनलाल पथिक, पं० वेद व्यास सहित अनेकों अन्य विद्वानों तथा नेताओं ने पधार कर श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया।
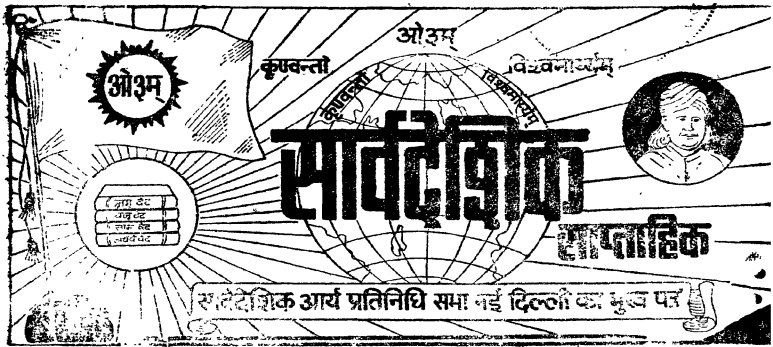
सार्वदेशिक प्रेस दयानन्द भवन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र — दूरभाष : ३२७४७७१ — वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया

वर्ष ३३ अंक १०] — दयानन्दाब्द १७१ — सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ — वैशाख कृ० ९ — सं० २०५२ २३ अप्रैल १९९५

"अशोच्यानन्वशोचस्त्वं"

जिसके लिए सोचना नहीं चाहिए, उसके लिए सोच कैसा?

—भगवान कृष्ण

आर्य जगत् की ओर से—

श्री मोरार जी देसाई को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली १२ अप्रैल। आज सम्पूर्ण भारत एवं विश्व में श्री मोरार जी भाई के शरीरान्त पर शोक के रूप में अवसान दिवस मनाया जा रहा है।

परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वन्दे मातरम् रामचन्द्रराव और महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने प्रसन्नता का सन्देश देते हुए कहा कि श्री मोरार जी भाई ने ऋषियों की परम्परा में जीवन व्यतीत करते हुए मानव मात्र को तप त्याग और अपरिग्रह का जीवन जीने की कला सिखाई।

वैदिक परम्परा में मृत्यु शोक नही प्रसन्नता का सूचक है। यह देश मृत्यु से आतंकित और डरने वालो का देश नहीं। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है—"अशोच्यानन्वशोचस्त्वं · · ·" जिसके लिये सोचना नहीं चाहिए, उसके लिए सोच कैसा।

श्री मोरारजी भाई ने जीवन के जीने की कला "क्रतोस्मर क्लिबेस्मर कृतं स्मर" हे जीव मृत्यु से डर कैसा? उसी प्रकार सिखाई है जैसे भारतीय ऋषियों ने मृत्यु का वरण कर नये जीवन की प्राप्ति का सन्देश दिया है।

मोरार जी भाई का जीवन एक साधु और ऋषि परम्परा का आदर्शमय जीवन था। आपके जीवन ने शोक का सन्देश नहीं अपितु प्रसन्नतामय जीवन जीना सिखाया है। ऐसे सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्ति का व्यक्तित्व हमारी सस्कृति जीवन मुक्ति की कोटि में रखती है।

समस्त आर्य जगत की ओर से हम आर्य जन उस ऋषि भक्त अपरिगृहीसन्त के प्रति जिसने मृत्यु मे भी अपने आदर्श को प्रस्तुत किया हो प्रसन्नता के रूप में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

श्री मोरार जी भाई ने "पश्येम् शरदः शतं जीवेम् शरदः शतम्" का पाठ पढ़ा और हमें सिखाकर संसार मे विदा हुये। पुनः आर्य जगत की ओर से उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। और परमात्मा से प्रार्थना है कि उपरोक्त गीता के श्लोक की शिक्षा के अनुसार ही उनके पारिवारिक एव सम्बन्धी जनों को इस महान वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

भारत रत्न मोरार जी देसाई

पूर्व प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई के निधन से गांधीवादी युग का एक मजबूत और वास्तविक स्तम्भ ढह गया। वैसे गांधी जी का नाम तो लिया ही जाता रहेगा, लेकिन गांधी जी के आदर्शों और सिद्धान्तों पर ईमानदारी के साथ चलने वाले व्यक्ति अब इस देश में लगभग नहीं रहे। मोरार जी भाई उन चन्द व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने गांधी जी के आदर्शों और मान्यताओं को अपने जीवन में हर सम्भव तरीके से उतारा। सत्य के प्रति स्वार्थविहीन आग्रह गांधीवादी दर्शन का प्रमुख आधार है। मोरार जी भाई ने भी अपने राजनैतिक जीवन में स्वार्थ को कभी महत्व नहीं दिया और इसीलिए वह गांधी जी के सिद्धान्तों के समीप पहुंचते चले गए। सच बात तो यह है कि उन्होंने गांधीवादी दर्शन को पूरी निष्ठा से और अधिक निखारा। भारतीय संस्कृति के प्रति मोरार जी भाई की जैसी अटूट निष्ठा थी वैसी निष्ठा आज के राजनीतिकों में देखने को नहीं मिलती। उनकी इसी निष्ठा के कारण देश के एक वर्ग, विशेष रूप से अंग्रेजियत प्रधान वर्ग ने उन्हे हठी कहकर सम्बोधित

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में

लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल का दीक्षान्त भाषण

माननीय श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी, कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा जी, कुलपति जी, आचार्यगण, बन्धुओं, बहनो एव नवस्नातको।

आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आपने मुझे यहां आमन्त्रित कर युगपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की तपःस्थली देखने का जो सुअवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश की स्वाधीनता, अखण्डता, समृद्धि तथा सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए आजीवन संघर्ष किया। वह मानव कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। वह देश के युवकों को एक ऐसे वर्ग के रूप में तैयार करना चाहते थे जो ज्ञान-विज्ञान की भिन्न भिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं मे पारंगत होने के साथ-साथ वैदिक ज्ञान एव विश्व प्रसिद्ध भारतीय संस्कृति से भी भली-भांति परिचित हो तथा राष्ट्र के रचनात्मक विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षा सम्बन्धी अवधारणाओं के अनुरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी भारतके लिए एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षानीति बनाना चाहते थे, जिसमे प्राचीन विद्याओं के साथ-२ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वय हो। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ही स्वामी श्रद्धानन्द ने सन १९०२ में इस गुरुकुल की स्थापना की। उनका दृढ़ विश्वास था कि देश की आजादी और आजाद भारत की बहुमुखी प्रगति तब तक संभव नहीं होगी, जब तक देश में शिक्षा, हमारी राष्ट्रीय संस्कृति एव भारतीय पद्धति के अनुरूप लागू नहीं होती। वस्तुतः शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो जीवन निर्माण करने वाली, इन्सानियत लाने वाली और चरित्र निर्माण करने वाली हो, और जो जीवन में विभिन्न विचारों को आत्मसात कर सके।

यह गुरुकुल, एक विचार और आन्दोलन के रूप मे अस्तित्व मे आया, केवल एक संस्था के रूप में नहीं। वैदिक साहित्य व दर्शन के अध्ययन-अध्यापन के साथ राष्ट्रीयता की रक्षा करना इसका उद्देश्य था इसलिए सरकारी विश्वविद्यालयों द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति से हटकर इस गुरुकुल ने समानता के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा देने की योजना तैयार की थी। शिक्षा का माध्यम राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसकी योजना भी सर्वप्रथम इसी गुरुकुल ने कार्यान्वित की थी। यह संस्था तत्कालीन भारतीय विश्वविद्यालयो से सर्वथा भिन्न थी और किसी प्रकार की सरकारी सहायता नही लेती थी क्योंकि उसका उद्देश्य ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति तैयार करना था जो विदेशी प्रभाव से मुक्त रहकर राष्ट्रीय विचारो से ओत-प्रोत नवयुवक तैयार कर सके। वर्तमान शताब्दी में सरकारी नियन्त्रण से सर्वथा स्वतन्त्र रहते हुए सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए सबसे पहली और सफल क्रांति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने ही की थी। अब इसमे हिन्दी, संस्कृत, वेद, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व एव संस्कृति, मनोविज्ञान और अंग्रेजी साहित्य विषयों में शोध आदि करने की व्यवस्था भी विद्यमान है। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस गुरुकुल का पुस्तकालय उत्तरी भारत का एक महत्वपूर्ण पुस्तकालय है जिसमें प्राचीन साहित्य, धर्म और दर्शन पर न केवल दुर्लभ पुस्तकें हैं बल्कि प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियां भी सुरक्षित हैं। गुरुकुल का एक महत्वपूर्ण दर्शनीय संभाग संग्रहालय है, जिसमे प्राचीन इतिहास अभिलेख, पुरातत्व और उत्खनन से प्राप्त दुर्लभ सामग्री रखी गयी है। इस संग्रहालय में हरिद्वार और कांगड़ी ग्राम तथा जनपद के अन्य स्थानो से प्राप्त प्राचीन मूर्तियां दर्शनीय हैं। इसी संग्रहालय में स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष भी है जिसमे स्वामी जी की पादुकाएं, वस्त्र, कमंडल और दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं। यह और भी गर्व की बात है कि इस विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण कार्य ग्राम विकास योजना है। सड़कों का निर्माण, वृक्षारोपण, बायोगैस प्लांट की स्थापना आर्थिक विकास, परिवार कल्याण, सार्थक ज्ञान आदि विश्वविद्यालय द्वारा ग्रामोत्थान के लिए किए जा रहे प्रमुख कार्य हैं।

स्वामी जी का विलक्षण व्यक्तित्व, उनकी विलक्षण प्रतिभा इस विश्वविद्यालय के विलक्षण स्वरूप का परिचायक है। स्वामी जी मे आध्यात्मिक एवं लौकिक गुणो का अद्भुत संगम था। इसीलिए वह इस शिक्षणालय को एक आधुनिक विश्वविद्यालय और प्राचीन गुरुकुल परम्परा का समन्वित रूप देने में पूर्णतः सफल हुए। वह देश के युवकों को अपने गुरुकुल में शिक्षा देकर एक ओर उन्हें आत्म-साक्षात्कार की शिक्षा देना चाहते थे और दूसरी ओर उन्हें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सुसज्जित कर देशभक्त, भारतीय संस्कृति के रक्षक, दलितों एव जरूरतमंदों के सहायक, अल्पसंख्यकों के हमदर्द, अस्पृश्यता जात-पांत, धार्मिक वैमनस्य एव रूढ़िवादिता के कट्टर विरोधी और पारस्परिक सौहार्द, समानता तथा मेल-मिलाप के प्रबल समर्थक बनाना चाहते थे क्योंकि ये सभी गुण स्वामी जी के अपने व्यक्तित्व मे विद्यमान थे।

शिक्षा ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा अतीत की उपलब्धियों का मूल्याकन होता है, वर्तमान की समस्याओ का समाधान खोजा जाता है और भविष्य के लिए रूपरेखा बनायी जाती है। शिक्षा ही वह त्रिवेणी है जो वास्तव में मन को बल देती है,आत्मा को पवित्र करती है और मनुष्य को सही अर्थो में मनुष्य बनाती है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उस प्रशिक्षण को 'शिक्षा'' कहा जाता है जिसके द्वारा इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियन्त्रण स्थापित होता है। अतः इसे शब्द-समूह की स्मृति के रूप मे न देखकर विभिन्न शक्तियों के विकास के रूप मे देखा जाना चाहिए। सही शिक्षा वह है जो हमें विभिन्न लौकिक विषयो के ज्ञान के साथ-साथ आत्मज्ञान करवाए तथा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की प्रेरणा, शक्ति, सामर्थ्य एवं कौशल प्रदान करे और अन्ततः हमें सत्य व ईश्वर से मिला दे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रणीत शिक्षा पद्धति की सार्थकता, उपयोगिता और सर्वकालिकता इसी बात से सिद्ध होती है कि वर्ष १९८६ में घोषित और १९९२ में संशोधित हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाओ के अध्ययन, अनुसंधान और शोध को बढ़ावा देने के लिए स्वायत्त आयोग के गठन, पूरे देश में सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाने, माध्यमिक स्तर तक मुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने, मुक्त अध्ययन प्रणाली को जीवन पर्यन्त अवसर के रूप में प्रोत्साहित करने और शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने पर विशेष बल दिया गया है।

शिक्षा में हमारा दृष्टिकोण केवल व्यवसायमूलक न होकर जीवनपरक

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

मृत्यु के लिए शोक कैसा?

आश्चर्य क्या है ? प्रतिदिन आने और जाने की क्रिया को हम देखते हैं वैदिक दर्शन हमें मोह से मुक्ति दिलाकर नये जीवन की प्रेरणा देता है।

व्यामोह को प्राप्त अर्जुन को भगवान कृष्ण ने जो सन्देश दिया है वह था—'अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्" हे अर्जुन ! तुम उनका शोक कर रहे हो,जिनके लिये शोक नहीं करना चाहिये। ऐसा,"प्रहसन्निव" हंसते हुए कृष्ण ने कहा था। भारतीय दर्शन किसी भी देश के सांस्कृतिक मर्यादा का परिचय देता है। भारतीय ऋषि "क्रतो-स्मर" जीवन में किये कर्मों का स्मरण कर।

आज जिस महापुरुष का अवसान दिन हम शोक के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर मना रहे हैं अवकाश कर कार्यों को बन्द कर रहे हैं क्या यह शोक की स्थिति मनाने का सही उपाय है । श्री मुरार जी देसाई जैसे प्रखर वैदिक परम्परा से युक्त मानव ने मानवता हेतु जीवन का वर्णन सही रूप में प्रकट किया है। संसार से मुक्ति पाने से पूर्व पश्येम शरदः शतम्" के स्वाप को प्राप्त कर चुके थे । इस अवस्था में मृत्यु का वरण करने वाले व्यक्ति को समाज प्रसन्नता के साथ बैण्ड बाजे के साथ विदा करने की परम्परा अति प्राचीन है। क्योंकि जो व्यक्ति भरा-पूरा परिवार सम्पन्न करके जा रहा हो, वह जीवन से सन्तुष्ट है फिर शोक कैसा।

श्री मुरारजी भाई अपरिग्रही, त्यागी-तप की सही मूर्ति थे उनकी अन्तिम यात्रा शोक सहित मनाने का आदेश नहीं देता है। वे अन्त तक स्वस्थ-विचार शील यम-नियमों के पालक रहे। उनका यह दृढ़ निश्चय मत था कि राजनीति में रहते हुए भी परिग्रह के स्तर पर भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा।

ऐसे कर्मयोगी महापुरुष को जीवनमुक्त माना है।

प्राचीन वैदिक मर्यादानुसार शतायु व्यक्ति का जनाजा धूम से निकले प्रसन्नतामय बाजे-बाजे जयकारों के साथ निकले तो शोक का स्थान न देकर प्रसन्नता के साथ जीवन्मुक्तों की कोटि में रखा जाय। शोक वह भी सात दिन तक सारा काम-काज बन्द। ऐसा न कर उनके चरित्र का विचार होना चाहिये। यह शरीर—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ……।

इस चोले को छोड़कर नया चोला धारण करता है। हमारे राष्ट्रीय वीरों ने हंसकर मृत्यु का वरण किया है उनका हम सदा जय-जयकार करते हैं। शोक का दिवस न मनाकर श्रद्धा के सुमन प्रसन्नता के आंसुओं के साथ यदि याद करें तो जीवन्मुक्त आत्मा के प्रति सही श्रद्धाञ्जलि होगी।

राष्ट्रीय शोक की परम्परा अन्ध परम्परा है उन्होने एक कर्म-योगी की भांति निस्पृह रहकर देश और मानवता की सेवा की।

जब वह भारत के प्रधान मन्त्री थे तो उन्होने मद्य-निषेध का बीड़ा उठाया था। उनके प्रति सही श्रद्धाञ्जलि होगी कि सरकार मद्य निषेध पूरे देश में लागू करें। उस समय देश चाहता था कि नशाबन्दी हो। पर-पतित बुद्धि इन्सान ने नारा लगाया था कि

इन्दिरा गई नस-बन्दी में और मुरार जी गये नशाबन्दी में—पूंजीपतियों ने मद्यपान पर करोड़ों रुपया व्यय किया । मुरार जी कुर्सी से गये पर सिद्धान्त कहता है। कि राष्ट्र के चरित्र को बचाना है तो मद्य निषेध करो।

महापुरुष के निर्वाण पर मातमी धुन बजाना स्कूल-कालिजों की छुट्टी करना। काम को बन्द करना, राष्ट्रीय क्षति है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाने हेतु मर्यादाओं का उल्लंघन न कर जीवेम शरदः शतम् का पाठ पढ़ायें।

दयानन्द मठ चम्बा में गायत्री महायज्ञ

बैसाखी पर्व पर पूर्णाहुति सम्पन्न

यज्ञ को ईश्वर का स्वरूप माना गया है और ईश्वर की उपासना व अराधना के लिए प्राचीन ऋषि-मुनियों ने यज्ञ को प्राथमिकता दी। इस युग में महाभारत काल के बाद पहली बार गायत्री महायज्ञ हो रहा है जो लगातार एक वर्ष तक चलता रहा। वर्ष पर्यन्त चलने वाला गायत्री महायज्ञ विश्व में पहली बार (महाभारत काल के बाद) देव भूमि हिमाचल के चम्बा नगर में रावी नदी के किनारे स्थित दयानन्द मठ में प्रसिद्ध संन्यासी तपस्वी श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती कर रहे हैं। १३ अप्रेल १९९४ को स्वामी श्री सर्वानन्द सरस्वती ने इसका शुभारम्भ किया।

यह यज्ञ प्रति दिन ७ घण्टे होता है प्रातः ६-३० से १०-३० बजे तक और सायं ३-३० बजे से ६.३० बजे तक। अब तक लाखों रुपयों का देसी घी, समिधाएं व सामग्री यज्ञ में लग चुकी है। इस यज्ञ की पूर्णाहुति १३ अप्रैल १९९५ को पड़ेगी।

इससे पूर्व भी एक बार स्वामी श्री सुमेधानन्द जी सरस्वती सवा करोड़ गायत्री महामन्त्र की आहुतियों का यज्ञ कर चुके हैं।

दयानन्द मठ चम्बा में पहुंच कर ऐसा लगता है कि हम किसी प्राचीन काल के तपस्वी महर्षि की कुटिया में आ गए हैं। आहुतियों के बीच-बीच कुछ समय के लिए श्री स्वामी सुमेधानन्द जी प्रवचन करते हैं। हम लोग भी वहां गए और उन्होंने उस दिन जो कहा वह पाठकों की जानकारी के लिए दे रहे हैं। यज्ञ करने से जीवन भी सुगन्धित होता है। यज्ञ से शत्रु को भी लाभ होगा। हम पड़ौसी को दावत पर नहीं बुलाते पर यज्ञ की सुगन्धि को उसके पास जाने से नहीं रोक सकते। "सर्वे भवन्तु सुखिना:" "हे नाथ सब सुखी हों" यही यज्ञ कहताहै कि हम सब सुखी रहें। इसी भाव से जीवन में यज्ञ करना चाहिए और जीवन को यज्ञमय बनाना चाहिए । गीता में यही कहा गया है कि कर्म करने का ही तेरा अधिकार है । अर्जुन जयद्रथ को नहीं मार पाता। कौरवों ने जयद्रथ को छिपा दिया। अर्जुन ने प्रतिज्ञा कर ली। श्री कृष्ण जी ने कहा था कि तू जितनी देर सूर्य को देखता है दो तीर और छोड़ सकता है।

यदि सूर्य अपने रथ को नहीं रोक सकता तो तू क्यों अपने रथ को रोकता है ?

यज्ञ करने के बहुत लाभ हैं। हम यज्ञ द्वारा आहुतियां देते हैं। सूर्य की किरणें एक भाग उठा लेती हैं और लोक-लोकान्तर में बांट देती हैं। बाकी तो सभी पर्यावरण को शुद्ध करती हैं। यज्ञ की समाप्ति पर उसकी सुगन्धि शेष रह जाती है। ऐसे ही काम करें कि हम रहें न रहें पर सुगन्धि रहे। अपने कार्य, संस्था के कार्य सब ऐसे करें, सब सुगन्धि देने वाले हों और यह सुगन्धि सदैव उठती रहे तभी जीवन श्रेयस्कर हैं। गत मार्च ९४ में श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती इस विश्व कीर्तिमान गायत्री महायज्ञ को शुरू करने से पहले एक दिन जालन्धर आए थे और हिन्द समाचार समूह के मुख्य सम्पादक श्री विजय चोपड़ा जी के साथ इस यज्ञ के बारे में विस्तार से चर्चा की थी और यज्ञ का वैज्ञानिक दृष्टिकोण बताया था । इस प्रवास के दौरान वे श्रीमती सुदर्शन चोपड़ा, श्रीमती सुदेश चोपड़ा (हिन्द समाचार), श्रीमती स्वर्ण यश (हिन्दी मिलाप) व श्री चन्द्र-मोहन (वीर प्रताप) से भी मिले थे।

—विपिन शर्मा, भगत मनोहरलाल

धर्म परिवर्तन—एक चिन्तन, एक चिन्ता

स्वतन्त्र लता, शर्मा, एम. ए.

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व महामन्त्री स्वर्गीय ओमप्रकाश त्यागी जी ने बंगलूर मे एक हृदय विदारक घटना सुनायी थी जिसे सुनकर हिन्दू समाज के अभिशप्त, गलित ढांचे के खोखले पन का आभास गहरा हो उठा था। उन्होंने बताया कि वे एक ऐसी महिला से मिलने गए जिसने हाल ही में इस्लाम धर्म की शरण मे जाकर एक मुस्लिम युवक से विवाह कर लिया था। वे उसे समझा बुझा कर पुन. स्वधर्म में लौटने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से उससे मिले थे। उन्होंने जब उससे पूछा कि किस विवशता के कारण उसने ऐसा कदम उठाया, तो लगा किसी ने उसकी दुखती रग को छू लिया हो। वह फूट फूट कर रोयी और अपनी दुखभरी कहानी सुनाने लगी। उसके पिता एक मध्यवर्गी परिवार के व्यक्ति थे। उनकी सीमित आय में मुश्किल से घर के खर्चे पूरे होते थे। ये तीन बहने थी। तीनो को शिक्षित करने के पश्चात उनके पास तीनों के विवाह पर खर्च करने के लिए कुछ बचा न था। जहां भी लड़कियो के रिश्ते की बात चलती, वहीं दहेज की मांग पर उनकी बोलती बन्द हो जाती। वर्षो बीत गए। विवाह के सब प्रयास निष्फल हो गए। दोनो बड़ी लड़कियां युवावस्था को बहुत पीछे छोड़ आयी थीं। बिना दहेज के कोई भी उनका हाथ थामने को तैयार नही था। सबसे छोटी तीसरी कन्या १२ वर्ष की आयु पार कर चुकी थी। उसने अपनी दो बहनों की असहायता देखी जो समाज की क्रूर दहेज प्रथा की शिकार हो चुकी थीं। उसके हृदय मे ऐसे निर्मम समाज के प्रति विद्रोह का भाव पैदा हुआ। उसने अपनी बहनो की तरह दहेज की वेदी पर स्वयं को बलि चढ़ाने से इन्कार कर दिया। उसने जाति, धर्म के बन्धनो को तोड़कर उस मुस्लिम युवक से विवाह कर लिया जिसने उसे अपनी जीवन संगिनी बनाने के लिए दहेज की कोई शर्त नही रखी। इस तरह उस महिला ने धर्म परिवर्तन करके अपने गृहस्थ जीवन की शुरूआत की। अपनी विवशता की दर्द भरी कहानी सुनाने के पश्चात उसने ओमप्रकाश जी से कहा, 'मैं तो लाचारी की अवस्था मे अपना धर्म छोड़ आई हूं। मेरे लिए वापसी का रास्ता बन्द है। आप मेरी जैसी उन असंख्य, बेबस कन्याओं को बचाइए जो विवश होकर धर्म परिवर्तन करने को बाध्य होती हैं।

प्रश्न अहम है, समस्या गम्भीर है, प्रभाव व्यापक है। दहेज का जुगाड़ न कर पाने की स्थिति में न जाने कितने माता पिता मूक दर्शक बन अपनी कन्याओ को विधर्मियो का घर बसाते देखते होंगे और अपनी लाचारी पर खून के आंसू बहाते होंगे। जिस समाज को दहेज की कुप्रथा दीमक बन कर भीतर ही भीतर खोखला कर रही हो, समय रहते, उस समाज के मूल आधार को उखड़ने से पहले सम्हाला न गया तो वही उसके विनाश का कारण बन जाएगी। जहां सम्बन्धो के गठन मे सौदेबाजी होती है, वहा उनकी पवित्रता समाप्त हो जाती है। वहां दो हृदयो को मिलाने वाला सूत्र प्रेम नही, कागज के नोटो का पुलिन्दा है, गृहस्थी की बुनियाद विचारो का सामन्जस्य, परस्पर प्रेम, सद्भाव, एक दूसरे के लिए त्याग की भावना, सुख दुख में सहभागिता नही, चांदी सोने की वजनदार ईटे हैं। ऐसी नीव पर गृहस्थी की इमारत कब तक टिकी रहेगी ? एक न एक दिन विस्फोट तो होगा ही और उसका भीषण परिणाम होगा परिवार का विघटन। इस भयावह परिणाम का व्यापक प्रभाव समूचे समाज पर पड़ता है। आज समाज में दहेज प्रथा कैन्सर के रोग की तरह फैलती जा रही है। जितना ऊंचा सामाजिक स्तर, उतनी ऊंची बोली, उतनी अधिक मागे; गोया वर एक इन्सान न होकर बिकाऊ माल हो गया हो। जिसमें उसे खरीदने की क्षमता हो वह पैसा फेंके और उसे खरीद ले। जो खरीदने की क्षमता न रखता हो उसकी बेटी के सामने तीन ही विकल्प रह जाते हैं—या तो वह आत्महत्या कर ले, या आजीवन कुंआरी रहे, या फिर किसी विधर्मी की जीवन संगिनी बन जाए। इनमें से आत्म हत्या करने का साहस वह सम्भवतः न जुटा सके, आजीवन कुंआरी रहने का संयम शायद उसमे न हों, तब एक ही विकल्प शेष रहता है—ऐसे किसी विधर्मी का दामन थाम ले जो उसके वजूद को कागज के नोटों से न तोलता हो और इस तरह हिन्दू धर्म के वृक्ष की एक और शाखा कटकर अलग हो जाती है। इसके लिए जिम्मेदार है समाज की वह व्यवस्था जिसमें अर्थ सर्वोपरि, मानव गौण। जिस दिन मानव का मूल्यांकन मानवता के आधार पर किया जाएगा, रोकड़ से नहीं, जब कन्याओ का विवाह उनके शील, गुण को परख कर किया जाएगा उनकी दहेज में मोटी रकम लाने की क्षमता से नहीं, तभी धर्मान्तरण की दैत्याकार समस्या के एक पक्ष का समाधान हो सकेगा।

हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहां आर्थिक असमानता चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। एक ओर पंचतारा संस्कृति में लिप्त धनाढ्य, दूसरी ओर दो समय भरपेट रोटी की जुगाड़ में संघर्षरत विपन्न, जिनकी संख्या दुर्भाग्यवश अधिक है। रोटी, कपड़ा, मकान की व्यवस्था कर पाने में असमर्थ, समाज का यह वर्ग जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार रहता है। "बुभुक्षितः किम् न करोति पापम्" भूखे आदमी क्या पाप नहीं करते ? अभावो में पल रहे, जीवन की आवश्यकताओं से वंचित, समाज की उपेक्षा व अवहेलना से त्रस्त इन अभागों को किसी भी प्रलोभन से अपने जाल में फांसना कोई कठिन काम नहीं है। बेरोजगार को नौकरी, भूखे को भोजन, नंगे को कपड़ा, निर्धन के बच्चो को शिक्षा, उपेक्षित को समाज में सम्मान, ये सभी प्रलोभन गरीब को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। यही कारण है कि जब इन प्रलोभनों का दाना डालकर जाल बिछाया जाता है तो सहज भाव से ये अभावग्रस्त लोग धर्म परिवर्तन के लिए तैयार हो जाते हैं।

जब तक जात पात मे हिन्दू समाज जकड़ा रहेगा। ऊंच नीच के भेदभाव से कटता रहेगा तब तक हर तिरस्कृत व्यक्ति धर्म की शरण में जाकर विधर्मी बनता रहेगा। इस एक तरफा प्रवाह को यदि समय रहते रोका न गया तो वह दिन दूर नहीं जब अल्पसंख्यक वर्ग बहुसंख्यक बन सत्तारूढ़ होकर न केवल देश की राजनीति पर हावी हो जाएगा बल्कि इस देश के धर्म, संस्कृति को विनष्ट करने में समुचित साधन व शक्ति से जुट जाएगा। स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। इस विकट स्थिति से उबरने के लिए यह आवश्यक है कि गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार किया जाए। स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में कहें तो इसे इस रूप मे व्यक्त किया जा सकता है—

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी
आओ मिलकर विचारे ये समस्यायें सभी।

मंच पर खड़ होकर दिए गए भाषण समस्या का समाधान नहीं है भाषण का प्रभाव क्षणिक होता है। भाषण देने वाले कार्य क्षेत्र में उतर कर कार्य को आगे बढायें। किसी निश्चित पुरोगम को क्रियात्मक रूप देने के लिए क्रियाशील हों तभी बिगड़ी बात बन सकेगी। अलगाव विघटन का सूत्रपात कर रहा है, संस्थायें जर्जर होती जा रही हैं, संगठन टूटते जा रहे हैं हम कट्टर नहीं 'कटर' (काटने वाले) बनते जा रहे है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक ही नहीं परम-आवश्यक है कि विघटन को रोकने के उपाय सोचें और उन्हें कार्यान्वित करें। एक सुदृढ संगठन हर स्थिति का मुकाबला करने में सक्षम होता है।

अतीत का गौरवशाली आर्यावर्त, जो अब अनेक मतों, पंथों, सम्प्रदायों में विभक्त हो गया है उसे पुन. उसकी खोयी अस्मिता लौटाने के लिए सभी को एकजुट होकर आर्य हिन्दूमात्र को यह सोचना आवश्यक है कि किस तरह इस देश के सनातन वैदिक धर्म एवं विश्ववारा संस्कृति की रक्षा की जा सकती है।

जहां परिवारो में संस्कार नहीं डाले जाते और बच्चे ऐसे वातावरण में पलते हैं जहां धर्म की चर्चा तक नहीं होती, वहां निज धर्म से अनजान, वे उन लोगों से सरलतापूर्वक प्रभावित हो जाते हैं जो उन्हें अपने धर्म की शिक्षा देते हैं। यही कारण है कि हिन्दू परिवारों में जन्मे, पले बच्चे विधर्मी प्रचारकों के चंगुल में आसानी से फंस जाते हैं और धर्म परिवर्तन कर लेते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वैदिक धर्म और हिन्दू संस्कृति के विषय में उन्हें जानकारी देने के लिए ऐसा साहित्य उपलब्ध कराया जाए जो सरल भाषा में हो और जो उनकी समझ मे आसानी से आ सके। ऐसा साहित्य देश की विभिन्न भाषाओं में बड़े पैमाने पर प्रकाशित करके वितरित करना आवश्यक है; इसके अतिरिक्त जातिवाद को जड़ से उखाड़ देने के लिए सामूहिक यज्ञों में तथा-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्यसमाज और राजनीति (२)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की लोकसभा में भूमिका

बलराज मधोक

१९५१ में भारतीय जनसंघ का निर्माण इसी आवश्यकता को पूरा करने की दिशा में एक सार्थक पग था। भारतीय जनसंघ बनाने की प्रक्रिया डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने १९५० में नेहरू मन्त्रिमंडल से त्यागपत्र देने के बाद शुरू की। डा० मुकर्जी प्रखर राष्ट्रवादी थे। वे आर्य समाज के निकट थे और एक अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन की अध्यक्षता कर चुके थे। महात्मा हंसराज के सुपुत्र और पंजाब नेशनल बैंक के अध्यक्ष और प्रबन्ध निदेशक लाला योधराज दैनिक प्रताप के सम्पादक महाशय कृष्ण, आचार्य रामदेव प्रख्यात चिंतक और लेखक तथा लाहौर 'गवर्नमेंट कालेज के भूतपूर्व प्राध्यापक वैद्य गुरुदत्त सरीखे प्रमुख आर्य समाजियों ने डा० मुकर्जी को अपना सक्रिय योगदान दिया। जनसंघ का प्रथम घोषणापत्र मैंने तैयार किया। आर्य समाज के साथ जन्मकाल से सम्बन्धित होनें के कारण मैं आर्य समाज के दृष्टिकोण और राष्ट्रीय नीतियों के सम्बन्ध में उसकी सोच को अच्छी तरह जानता था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सोच से भी पूरी तरह परिचित था। इसलिए विचारधारा और नीतियों की दृष्टि से यह घोषणा पत्र आर्यसमाज और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ जुड़े लोगों की सोच और आकांक्षाओं के अनुकूल था।

भारतीय जनसंघ के निर्माण के बाद देशभर के आर्य समाजियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन भारतीय जनसंघ को मिलने लगा। भारतीय जनसंघ की प्रथम राष्ट्रीय कार्यसमिति में आर्यसमाज से जुड़े सदस्य अधिक थे। आर्य समाज और संघ के समर्थन के कारण ही स्वतन्त्र भारत के प्रथम आम चुनाव में ही भारतीय जनसंघ को इतने मत मिल गए कि चुनाव आयोग ने इसे एक राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता दे दी। इस प्रकार भारतीय जनसंघ आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का सांझा राजनैतिक फ्रंट बन गया।

१९५३ में डा० मुकर्जी की राजनैतिक बन्दी के रूप मे श्रीनगर, काश्मीर में रहस्यमयी मृत्यु से जनसंघ को गहरा आघात लगा। इस नाजुक स्थिति में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से आए कार्यकर्ताओं ने जनसंघ को सम्हाला और आगे बढ़ाया। इस प्रकार जनसंघ को संघ का समर्थन मुख्य और आर्यसमाज का समर्थन गौण हो गया। जनसंघ पर संघ का अप्रत्यक्ष नियन्त्रण भी बढ़ने लगा। परन्तु देश भर के साधारण आर्यसमाजियों का, जिनमें से बहुत से संघ के साथ भी जुड़ चुके थे, समर्थन पूर्ववत ही जनसंघ को मिलता रहा। मेरा निकट सम्बन्ध इन दोनों संस्थाओं से था इसलिए मैं राजनैतिक क्षेत्र में इनके बीच की कड़ी का काम भी करता रहा। उस काल मे मेरा सम्पर्क दिल्ली के कुछ आर्य समाजियों के साथ हुआ इनमें प्रमुख लाला रामगोपाल शालवाले थे।

अपने हिन्दुत्ववादी और जुझारू व्यक्तित्व के कारण रामगोपाल जी शुरू से ही दिल्ली प्रदेश जनसंघ को सक्रिय सहयोग दे रहे थे। उन्होंने सिकन्दर बख्त द्वारा राजशर्मा के अपहरण कांड के विरोध मे चले आन्दोलन में प्रमुख भूमिका अदा की और काश्मीर आन्दोलन मे भी भाग लिया था। १९५४ में जनसंघ के एक राष्ट्रीय मन्त्री के साथ साथ दिल्ली प्रदेश जनसंघ के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी मुझे मिलने के बाद मैंने उनका और आर्यसमाज का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने की दिशा में विशेष प्रयास किया। इसके परिणाम स्वरूप दिल्ली में आर्य समाज और जनसंघ बहुत निकट आ गए।

१९६५ में भारतीय जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने के बाद मैंने जनसंघ के आधार को विस्तृत करने और समान विचार वाले सारे तत्वों और संगठनों को इसके साथ जोड़ने की ओर विशेष ध्यान दिया। इस दृष्टि से १९६७ के आम चुनावों में लाला रामगोपाल शालवाले समेत अनेक प्रमुख आर्य समाजी जनसंघ के टिकट पर या जनसंघ के समर्थन से लोकसभा में पहुंचे। इनमें लाला रामगोपाल जी के अतिरिक्त ओमप्रकाश पुरुषार्थी, प्रकाशवीर शास्त्री और शिवकुमार शास्त्री के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं।

१९६७ से १९७१ तक चली चौथी लोकसभा की कारवाई पर इन आर्य समाजी सांसदों की गहरी छाप है। काश्मीर, पाकिस्तान, शिक्षा, सुरक्षा, ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों सम्बन्धी मुद्दों पर इन्होंने आर्य समाज का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण प्रभावी ढंग से पेश किया आर्यसमाज की शास्त्रार्थों और तर्कमयबुद्धि को अन्धविश्वास व श्रद्धा पर वरीयता देनेकी परम्परा तथा राष्ट्र-भाषा हिन्दी पर इनकी विशेष पकड़ के कारण इन आर्य समाजी सदस्यों के भाषण ध्यान से सुने जाते थे और उनका सत्तापक्ष पर वांछित प्रभाव भी पड़ता था। इस कारण राजनैतिक क्षेत्र में आर्य समाज का प्रभाव बढ़ने लगा और इससे आर्य समाज के संगठन को भी बल मिला।

यही स्थिति दिल्ली नगर निगम और दिल्ली महानगर परिषद जिनमें जनसंघ को स्पष्ट बहुमत प्राप्त था, में भी थी। दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद, (मुख्यमन्त्री) विजय कुमार का आर्य समाज से बाल्यकाल से ही निकट सम्बन्ध रहा था और दिल्ली के प्रथम महापौर लाला हंसराज गुप्ता संघ के अतिरिक्त आर्य समाज के साथ भी जुड़े हुए थे।

इस प्रकार १९६७ के बाद भारतीय जनसंघ व्यावहारिक रूप में फिर से आर्य समाज का भी राजनैतिक फ्रंट माना जाने लगा। इसके बढ़ते प्रभाव का लाभ आर्य समाज को भी मिलने लगा। साधारणतया अन्य सदस्यों की अपेक्षा वैचारिक दृष्टि से अधिक प्रामाणिक होने के कारण आर्य समाजी सांसदों के साथ साथ आर्य समाज की भी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी।

दिसम्बर १९६७ में मैंने जनसंघ का अध्यक्ष पद श्री दीन दयाल उपाध्याय को सौंपा। तब तक वे भारतीय जनसंघ के महामन्त्री थे। उनका चरित्र और चिन्तन भी आर्य समाज के अनुरूप था। परन्तु दुर्भाग्य से अध्यक्ष पद संभालने के छः सप्ताह बाद ही उनकी १० फरवरी १९६८ की रात को हत्या कर दी गई। उस हत्या पर आज भी रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ है।

श्री दीन दयाल उपाध्याय की हत्या के बाद भारतीय जनसंघ की बाग-डोर अटल बिहारी वाजपेयी के हाथ में आ गई। वाजपेयी का चिन्तन संघ और आर्य समाज के चिन्तन की अपेक्षा कम्युनिस्ट और नेहरू के चिन्तन के निकट था और चरित्र के मामले में भी उनका माडल नेहरू था। फलस्वरूप जनसंघ का चिन्तन विकृत होने लगा। १९७१ के चुनाव में इन्दिरा गांधी ने रसायनयुक्त मतपत्रों के प्रयोग से सभी प्रमुख राष्ट्रवादियों को हरा दिया। इसके बाद भारत की राजनीति पर सोवियत रूस और कम्युनिस्टों का प्रभाव बढ़ने लगा। फलस्वरूप समाजवाद के नाम पर सरकारी पूंजीवाद, तानाशाही प्रवृत्तिया और सभी क्षेत्रो में भ्रष्टाचार पनपने लगा और प्रामाणिक व्यक्तियों को चुनकर राजनैतिक क्षेत्र से खदेड़ा जाने लगा। (क्रमशः)

लोकतन्त्र में हिन्दी हटाकर अंग्रेजी थोपने का दुस्साहस क्यों ?

विश्वम्भर प्रसाद 'गुप्त बन्धु'

देश को आजादी मिले दो-तीन पीढ़ियां बीत गई, बहुत कम लोग ऐसे होंगे जिन्हें अंग्रेजी शासन की आंखों देखी घटनाएं याद हों। नई पीढ़ी को स्कूलों में भी पूरी तरह यह नहीं बताया जाता कि आजादी के लिए देश ने कैसे कैसे और कितने बलिदान दिए हैं। अंग्रेजो ने बाकायदा न्यायपालिका का ताम-झाम खड़ा किया था। किन्तु कभी-कभी तो न्याय केवल एक स्वांग ही होता था जिससे उस प्राचीन दास-प्रथा की-बर्बरता याद आ जाती थी जब न्याय करने से पहले आरोपी से कुछ पूछने की जरूरत ही नहीं समझी जाती थी। किन्तु देश भक्तों को न्याय का ढोंग रचाकर फांसी या फिर काला-पानी, दिए जाने के चश्मदीद कुछ गवाह अभी भी मिल जायेंगे।

ऐसी दासता में जकड़ने के लिए अंग्रेजों ने देश में अंग्रेजी की विष-बेलि बोई और मैकाले का अंग्रेजी को शिक्षा, प्रशासन और न्यायपालिका का माध्यम बनाने का प्रस्ताव, भारी विरोध होने के बावजूद मंजूर कर लिया, क्योंकि—

"आक्रान्ता करता सदा जन-संस्कृति का नाश।
शिक्षा पर अधिकार कर कसे दासता—पाश॥

१९४७ में अंग्रेज चले गये तो अंग्रेजी की गुलामी की जंजीर तोड़ने के प्रयास शुरू हुए। इसमें भी एड़ी चोटी का जोर लगाने के बाद आंशिक सफलता मिली। एक उत्तर प्रदेश में ही २७ वर्ष के कठोर संघर्ष के बाद ३० मार्च १९७४ को एक अधिसूचना द्वारा सभी जिला न्यायालयोमें हिन्दी में काम करने की अनुमति दी गई और फिर इसको कार्यान्वयन कराने के लिए अंग्रेजी की टाइप-मशीनें बदलने और टाइपिस्टों—स्टेनोग्राफरो को हिन्दी टंकण/आशुलिपि कला सिखाने में करोड़ो रुपए खर्च किए गए। तब कही न्याय की भाषा हिन्दी हो पाई और पिछले दो दशक से जनता की भाषायी आजादी की नींव दृढ़ होती जा रही थी। वादी और प्रतिवादी समझने लगे थे कि उनके बारे में वकीलों और जजों के द्वारा जो कुछ कहा जा रहा है वह क्या है और स्वयं भी अपना पक्ष स्पष्ट कर सकने की स्थिति में आ गए। उनकी न्यायपालिका पर आस्था बढ़ी थी।

किन्तु जिस प्रकार एक वर्ग अंग्रेजों की गुलामी मिटाने को तैयार नहीं था, उसी प्रकार यह भाषायी आजादी भी निहित स्वार्थ वाले एक वर्ग की आंखो की किरकिरी बनी। यहां तक कि एक कट्टर अंग्रेजी विरोधी नेता के हाथों ही इसकी नींव उखाड़ने का षड्यन्त्र रचा गया। जल्दी जल्दी एक समिति गठित करके ढाई पृष्ठ की उसकी तथाकथित रिपोर्ट के आधार पर मुख्यमन्त्री महोदय से इस योजना की स्वीकृति भी ले ली गई कि १-७ ९५ से सभी जिला न्यायालयो का काम हिन्दी मे नहीं, अंग्रेजी मे ही होगा और यह परिवर्तन लागू करने के लिए करोड़ो रुपए के खर्च की भी मंजूरी प्राप्त कर ली गई। न्याय मांगने वाली जनता पर होने वाले इस अन्याय को नवभारत टाइम्स के सम्पादक ने "उत्तर प्रदेश में उल्टी गंगा" कहकर विरोध किया है। यह निर्णय स्पष्ट ही हिन्दी के सर्वनाश की दिशा मे एक कदम है। यह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रभृति राष्ट्र नेताओं के विचारों एवं संविधान की भावना एवं उसकी उपेक्षा के प्रतिकूल तथा राजभाषा आयोग और संसदीय राजभाषा समिति की विभिन्न सिफारिशो के भी विरुद्ध है।

प्रसंगवश, संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों में १० राज्य सभा के और २० लोक सभा के सांसद हैं जिनमें सभी राष्ट्रीय दलों के और पूर्वांचल तथा दक्षिण राज्यों की मातृभाषा वाले भी हैं। गृहमन्त्री स्वयं इसके अध्यक्ष हैं। इस समिति ने उच्च प्रशासनिक अधिकारियो, न्यायाधीशो और विधि-विशेषज्ञों तथा राज्य सरकारों से राय लेकर विधि के सभी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपनी सिफारिशें बृहदाकार मे अपने पांचवे प्रतिवेदन में राष्ट्रपति जी को दे दी थी। इनके कार्यान्वयन पर अब केन्द्रीय विधि मन्त्रालय और राजभाषा विभाग विचार कर रहे हैं। रेल मन्त्रालय के अन्तर्गत रेल दावा अधिकरण में जिसकी दर्जा उच्च न्यायालय के समकक्ष है) पार्टियों को यह विकल्प है कि वे अपने कागजों में और अन्य कार्यवाहियों में हिन्दी का प्रयोग कर सके और न्यायाधीश भी अपने आदेश और निर्णय हिन्दी में दे सकते हैं। यह विकल्प देश के सभी भागों में है। फिर हिन्दी भाषी उत्तर प्रदेश को ऐसी क्या उतावली पड़ी थी कि केवल दो विधि-वेत्ताओ की राय लेकर हिन्दी को हटाने का आदेश दे दिया गया? इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला उत्तर प्रदेश के राजकाज में हिन्दी द्वारा की गई प्रगति को रोककर मुख विपरीत दिशा में कर देगा। यह अनेक कानूनी उपबन्धों से भी असंगत है।

लोकतन्त्र को उन्नत करने के बजाय इस प्रकार अवनत करने का यह कदम अलोकतांत्रिक और चुने हुए नेताओं द्वारा जनता के प्रति विश्वासघात ही होगा। भाषायी आजादी की दिशा में हुई प्रगति रोककर और अंग्रेजी की गुलामी का फंदा फिर से गले लगाने के लिए तीन दलीलें दी गई हैं। ये भी बिल्कुल थोथी और लचर हैं। जैसे—

(१) कुछ विद्वान न्यायाधीश अन्य राज्यो से स्थानांतरित होकर आते हैं। उनको हिन्दी नहीं आती, या वे थोड़े प्रयास से हिन्दी नहीं सीखलेंगे, यह मान लेनाउनकी विद्वता और क्षमता पर ही उंगली उठाने जैसा है। जब पूर्वी या दक्षिणी राज्यों के हिन्दीतर भाषा भाषी आई ए एस और आई पी एस अधिकारी हिन्दी राज्यों में हिन्दी सीखकर प्रशासनिक और तकनीकी सभी काम कुशलता पूर्वक कर सकते है तो न्यायाधीशो के बारे में ही सन्देह क्यो किया जा रहा है?

(२) हिन्दी दस्तावेजो का अनुवाद करने वाला विभाग कुशल और पर्याप्त नही है। यह एक प्रशासनिक कमजोरी है, जिसे दूर करने के बजाय हिन्दी का प्रयोग रोककर विदेशी भाषा थोपना हिन्दी भाषी राज्य की सरकार का जनता पर अन्याय होगा।

(३) हिन्दी में काम करने के कारण विद्वान न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय के निर्णयों को समझ नहीं पाएंगे, ऐसा कहना उनका उपहास ही नहीं घोर अपमान है। क्या पिछले बीस वर्षों मे कोई भी ऐसे मौके आए हैं जब किसी विद्वान न्यायाधीश द्वारा उच्चतम न्यायालय का निर्णय न समझ पाने की शिकायत किसी ने की हो?

लोकतन्त्र की यह मांग है कि न्याय भी जनता की भाषा में ही हो ताकि यह सबकी समझ मे आ सके। अतः यह आवश्यक है कि यथास्थिति बनाए रखी जाए और हिन्दी के बजाय अंग्रेजी का प्रयोग आरोपित करने के आदेश तत्काल रद्द किए जाएं। इस सम्बन्ध में कुछ समय पूर्व हुई प्रधान मन्त्री जी की अध्यक्षता मे केन्द्रीय हिन्दी समिति की बैठक की सिफारिशो पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है जिसमें उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए कहा गया है। इस समिति में कई केन्द्रीय मन्त्रियो और सचिवों के अतिरिक्त कई राज्यो के मुख्य मन्त्री भी सदस्य है। यह कितना बडा विरोधाभास है कि इतने ऊंचे स्तर पर की गई उक्त सिफारिशों के बावजूद भी उत्तर प्रदेश सरीखे हिन्दी भाषा भाषी राज्य की जनता को जिला स्तर भी अपनी भाषा में न्याय पाने के अधिकार से वंचित रखा जा रहा है, और वह भी तब जबकि देश महात्मागांधी की १२५ वीं जयन्ती और सन्त विनोबा भावे की जन्म शताब्दी मना रहा है। अतः यह आवश्यक है कि हिन्दी को हटा कर अंग्रेजी लाए जाने के विरोध में संगठित रूप से तत्काल प्रयत्न किए जाएं और जनता के प्रतिनिधियों और समाज सेवी संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओ का सहयोग लेकर उक्त निर्णय का सर्वतोमुखी विरोध किया जाए। इस विषय में निम्न लिखित को तत्काल विरोध-पत्र लिखवाए जाएं जिससे कि उक्त निर्णय रद्द हो सके—(१) माननीय न्यायमूर्ति ए. एम. अहमदी, मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली। (२) माननीय महामहिम मोती लाल वोरा, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ। (३) माननीय श्री हंसराज भारद्वाज, मन्त्री, न्याय विभाग, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली। (४) माननीय न्यायमूर्ति एस. एस. सोढ़ी, मुख्य न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद। अन्यथा बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश के अन्य राज्यों में भी हिन्दी को हटाकर अंग्रेजी को थोपने का षड्यन्त्र किया जाएगा।

बी-१५४, लोक विहार, दिल्ली-३४

त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज की जीवन झलकी

अमर लाल

सुनो तो जानें ! आज से १३१ वर्ष पूर्व पंजाब जिला होशियारपुर के बजवाड़ा नामक एक छोटे से ग्राम के एक सामान्य साधारण स्थिति के परिवार में श्री चुन्नी लाल जी के घर सन् १८६४ में जन्मे २२ वर्षीय नवयुवक ने सन् १८८६ में एक अदभुत घोर प्रतिज्ञा करके आर्य जगत में फैली निराशा के बादलों को छिन्न-भिन्न करके खुशी की लहर बहा दी थी वह था महान प्रतिभाशाली "नवयुवक हंसराज बी०ए०" ।

आज से पांच सहस्र वर्ष पूर्व, महाभारत काल मे भीष्म प्रतिज्ञा तो गंगा पुत्र देवव्रत नामक महा तेजस्वी वीर नवयुवक ने की थी, जो बाद में इस प्रतिज्ञा के कारण ही भीष्मपितामह के नाम से जाने गए । परन्तु, इन दोनों प्रतिज्ञाओं में एक बड़ा भेद यह है कि गंगा पुत्र देवव्रत की प्रतिज्ञा तो केवल अपने परिवार की वृद्धि समृद्धि और अपने पिता की प्रसन्नता तक ही सीमित थी, जबकि हमारे चरित्र नायक नवयुवक हंसराज की प्रतिज्ञा तो परिवार के हितों की सभी सीमाओं को लांघ कर और धन दौलत राजपाट के प्रलोभनों से दूर मानव जाति के कल्याण के लिए थी या यूं कहिए कि मानव जाति के अज्ञान-अंधकार को शिक्षा प्रसारण द्वारा सारा जीवन अवैतनिक सेवाओं को अर्पण करने का व्रत, ऐसी अनोखी प्रतिज्ञा का करना साधारण आदमी के वश की बात नही होती ।

दान की महिमा—

दान की महिमा का वर्णन हमारे धर्मग्रन्थो मे स्थान स्थान पर उपलब्ध है ।

"जुहाते प्र च ति तिष्ठति ।" "मान्त स्थूर्ना अरातय:"—वेद
"दान एकं कलौयुगे"—मनु
"दान जीवन का सार है"

महाभारत यक्ष युधिष्ठर सवाद
"श्रिया देय अश्रिया देय, भिया देय इत्यादि"—उपनिषद

परन्तु यह भौतिक द्रव्य दान रुपये पैसे आदि का दान कोई भी किसी समय भी कर सकता है परन्तु ज्ञान, विद्या दान का महत्व ही कुछ निराला है । साधारण सांसारिक लोगों की सामर्थ से यह दूर की वस्तु है । आज से १३० वर्ष पूर्व सन् १८६३ में महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने गुरु ज्ञान पालन मे सारा जीवन लोगों के अज्ञान अन्धकार को दूर करने और ज्ञान देने मे ही लगा दिया था । और तब २३ वर्ष पश्चात सन १८८६ में ऋषि के अनन्त भक्त हंसराज ने अपने गुरु की पुण्य स्मृति में बनाये जा रहे स्मारक को भव्य रूप देने के निमित्त यह विद्या दान का दृढ़ संकल्प किया था ।

भीष्म प्रतिज्ञा का अवसर—

किन्ही दुष्षडयन्त्र के कारण ३० अक्तूबर १८८३ मे अजमेर नगर मे आर्य समाज के संस्थापक प्रहरी युगपुरुष युगप्रवर्तक, महान क्रान्तिकारी बीसवी शताब्दि के नव जागृति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के देहान्त होने का शोक पूर्ण समाचार सारे भारत में फैल गया । लाहौर के अनुयाईयों ने उनकी पुण्य स्मृति में एक भव्य शिक्षा सस्था डी० ए० वी० (एंग्लोवैदिक कालेज) के रूप में एक चिरस्थाई स्मारक बनाने का निश्चय किया । परन्तु धनाभाव के कारण इस पवित्र योजना के मूर्तिमान न होने के कारण आर्य जगत मे निराशा और मायूसी के बादल छाये हुए थे । ऐसे विकट समय में एक २२ वर्षीय नवयुवक हंसराज में एक अलौकिक ज्योति जली और अन्तर आत्मा की आवाज को सुनकर अपने बड़े भाई मुलकराज जी की सहमति से महर्षि की पुण्य स्मृति मे स्थापना किये जाने वाली डी०ए०वी० कालेज जैसी शिक्षा सस्था के लिए आजीवन अवैतनिक सेवाओं के करने का दृढ़ निश्चय करके आर्य जगत में खुशी की लहर बहा दी ।

हंसराज जी ने बी० ए० की परीक्षा सन १८८५ मे पास कर ली थी । तब का ग्रेजुएट होना आज के आई०ए०एस० होने के बराबर था । उन दिनो किसी ग्रेजुएट के लिए किसी भी सरकारी बड़े से बड़े पद का पाना कदाचित कठिन नहीं था । यदि हंसराज जी चाहते तो अपने मित्र राजा नरेन्द्रराय की तरह डिप्टी कमिश्नर और फिर कमिश्नर बनकर अपनी निर्धनता मिटा डालते, औरऐशोआराम का जीवन बिताते परन्तु उन्होने सांसारिक सुख भोगों को लात मारके अपने गुरु स्वामी दयानन्द के स्मारक को भव्य रूप देने में ही जीवन लगाना श्रेष्ठ समझा ।

वास्तव में ससार में कार्य करते हुए हर मनुष्य के सामने दो मार्ग आते हैं ।

"द्वे सृती अशृणवम् पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ।"

यजुर्वेद १९/४७

इन्हीं दो मार्गों का उपदेश कठोपनिषद में यमाचार्य ने नचिकेता को इस प्रकार दिया है—

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ, सम्परीत्य विविनक्ति धीर: ।
श्रेयोहि धीरोऽभि प्रेयसोवृणोति, प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ।।

इन दो श्रेय, प्रेय मार्गों में से प्रेय को सभी सर्वसाधारण लोग अपनाते ही हैं परन्तु श्रेय मार्ग को तो हंसराज जैसे त्यागी तपस्वी लोग ही अपनाना जीवन की सफलता समझते हैं ।

अवैतनिक जीवन दान के इस अलौकिक विषय के सम्बन्ध में महात्मा हंसराज जी ने एक प्रसग में एक बार लाला खुशहाल चन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) को बताया था कि जिस दिन जीवन अर्पण का मन मे निश्चय किया और भाई ने स्वीकृति भी दे दी तो उस रात मुझे देर तक नींद नहीं आयी । आसन लगाकर मैं प्रभु भजन मे लगा रहा । गायत्री का जाप करते-करते ऐसी ज्योति मेरी मुंदी आखों ने देखी कि जिसका वर्णन नही हो सकता । मैंने अनुभव किया कि मेरा आत्मा ऊपर उठ रहा है । वैसा आनन्द प्राप्त करने के लिए जीवन बार-बार आग्रह करता है ।

कालेज और महात्मा हंसराज—

हा, तो जून सन १८८६ में एक छोटे से स्कूल के रूप मे भव्य डी०ए०वी० कालेज की स्थापना हो ही गई । महात्मा हंसराज जी की निष्काम सेवाओं त्याग और अनथक परिश्रम के फलस्वरूप यह छोटा सा स्कूल रूपी पौधा तीस वर्ष के अल्प काल मे ही कलकत्ता के विशाल वट वृक्ष की तरह चहुं ओर फैल गया । आज देश के कौने-कौने मे ही नही, अपितु कहीं-कहीं विदेशों मे भी डी० ए० वी० स्कूलों की मानो बाढ़ सी आई दीख पड़ती है ।

महात्मा जी जिस सस्था के अधिष्ठाता, प्रहरी और कर्णधार थे । उसके साथ उनका मानसिक एकीकरण था । वे सस्था के और सस्था उनकी थी । उन्होंने अपने आपको इस शिक्षा सस्था के साथ इस प्रकार मिला लिया था, जिस प्रकार नदी के तट नदी की धारा से मिला रहता है । निस्सन्देह इस प्रकार किसी सस्था अथवा किसी सामाजिक आदर्श के साथ अपने आप को एकीकरण करना नैतिक उन्नति का चिह्न है अवश्य परन्तु स्वार्थ, मानसिक स्वार्थों इच्छाओं, भावनाओं को त्याग कर सस्थाओं के साथ अपने आप को विलीन करना ऐकीकरण करना साधारण लोगों का काम न होकर महात्मा हंसराज जी जैसे तपस्वी, त्यागमूर्ति देवता स्वरूप व्यक्तियों का ही काम है । सोते-जागते, उठते बैठते, खाते-पीते कालेज को वृद्धि, उन्नति और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की चिन्ता मे ही मग्न रहते थे । वह प्राय: कहा करते थे कि मनुष्य के जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र, जहा पहुचकर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके । अपनी धन-दौलत और बाल बच्चों को भी आसानी से छोड़ सके । एक स्थान होना चाहिए, जहां पहुंच कर गर्व के साथ वह कह सके कि चाहे प्राण चले जायें चाहे सब ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले, पर वह उस स्थान में लौटेगा नहीं, पीछे नहीं हटेगा । ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका वास्तविक मोल मालूम होता है ।

कालेज ही महात्मा जी का ऐसा ध्येय था, जिसकी वृद्धि, समृद्धि के लिए अपने जीवन की आहुति दी और जिसके लिए जीए और मरे ।

"ईश्वर पर विश्वास रखो और निष्ठापूर्वक अपने ध्येय की पूर्ति में लगे रहो" को अपने जीवन का सिद्धांत बनाकर महात्मा जी अग्रसर रहे । इस कार्यपूर्ति मे वे लोगो की उपेक्षा का विषय भी बने और हंसी, उपहास के पात्र बने । उनके साथी, सह कार्यकर्ता, लाला लाजपतराय जी जैसे कुछ नेता चाहते थे कि कालेज स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रत्यक्ष रूप में एक अंग बन जाय परन्तु महात्मा जी का

(शेष पेज ९ पर)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमानरोड
नई दिल्ली का

आर्य समाजों के अधिकारियों को
आवश्यक परिपत्र

आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९५ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्य समाज के नियमो उपनियमो के अनुसार ३१ मई १९९५ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियो आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो, तो कर लें। आपकी आर्य समाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

१५ मई १९९५ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें —

१ १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का वार्षिक विवरण

(अ) यज्ञ सस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह दिन के समय साधारण रीति व बिना दहेज कराये गये विवाहो का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही संस्थाओं, विद्यालयों, चिकित्सालय, पुस्तकालय सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२ १ अप्रैल १९९४ से ३१ मार्च १९९५ तक का आय-व्यय विवरण।

३ सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना लें

क्रमसंख्या। सदस्य का नाम। पिता का नाम। पता। वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४ सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ३५ रुपए अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क ३५० रुपए।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्य समाज का सहयोग प्रदान करें।

सूर्यदेव, प्रधान

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक यथानुसार डाक से पुस्तक मंगा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शाखा कार्यालय ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

टेलीफोन : २६१४३८

महात्मा हंसराज

(पेज २ का शेष)

विचार था कि शिक्षण कार्य और राजनीति को एक सूत्र मे बांध देना सर्वथा हानिकारक है अत: कालेज को राजनीति मे भाग लेने के विचार का कड़ा विरोध किया परन्तु किसी प्रकार की निन्दा, उपहास उनको अपने इस उद्देश्य से विचलित न कर सकी और अपनी बात पर एक चट्टान की तरह खड़े रहे और कालेज को किसी प्रकार की भी हानि का विषय नही होने दिया। ऐसे थे महात्मा जी अपने ध्येय के पक्के।

महात्मा जी का व्यक्तित्व और कार्यकुशलता—

महात्मा जी का जीवन यज्ञमय था। वे बाहरी दिखावा और आडम्बर से दूर रहते थे। वे सादगी और सरलता के पुजारी ही नही थे, अपितु साक्षात मूर्ति भी थे। "सादा जीवन और ऊंचे विचार" के सिद्धांत को उन्होने जीवन का अंग बनाया था। उनके विचार, आचार और व्यवहार मे महानता, विशालता और उदारता की झलक पायी जाती थी और उनके मन, वचन और कर्म मे एकता पाई जाती थी, जो महात्माओं का एक विशेष गुण होता है।

जब कोई उपदेशक, प्रचारक तथा कोई कार्यकर्ता सेवकजन महात्मा जी के पास अपनी समस्याओं और कठिनाई को लेकर आता तो महात्मा जी बड़े ध्यान पूर्वक उनकी बात सुनते थे और संस्था के हितो को ध्यान मे रखकर किसी पक्षपात बिना ऐसा कुछ कर निकालते थे कि किसी को कोई आपत्ति न होती थी। कौन नही जानता कि जब आर्य जगत के दो मूर्धन्य विद्वानों—प० भगवत दत्त जी और प० विश्व बन्धु जी के बीच किन्ही वैदिक सिद्धांतो के विषय मे कुछ ऐसा मतभेद हुआ कि वे एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करना पसन्द न करते थे, जिस कारण सारे आर्य परिवार मे एक बड़ी हल-चल पैदा हो गई थी, और आर्य समाज जैसी जनहितकारी संस्था को भारी क्षति की आशंका हो रही थी। दो विद्वानों का भी संस्था से पृथक करना कुछ कम हानिकारक नही। ऐसी विषम परिस्थित में महात्मा हंसराज जी ने जिस सुन्दर ढंग से दोनों विद्वानो को संस्था मे रखकर भी अलग-अलग स्थानों पर नियुक्त करके स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करने पर सहमत किया, यह उनकी दूरदर्शिता और प्रतिभा का चित्र है। दोनो विद्वानो ने प० भगवत दत्त ने कालेज में ही रहकर और प० विश्वबन्धु ने विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान होशियारपुर मे वह महत्त्वपूर्ण कार्य किया कि जिसने आर्य जगत के गौरव को चार चांद लगा दिए।

आदर्शों से समझौता नही—

महात्मा जी सच्चे आदर्शवादी थे और महर्षि के अनन्य भक्त भी थे। बड़ी से बड़े धन सम्पत्ति और सत्ता के प्रलोभनो के सामने अपने सिद्धातो और आदर्शों के साथ समझौता नही किया। किसी की इतिहास की पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिए पचास सहस्र रुपये के प्रस्ताव को भी ठोकर मार दी और पंजाब के शिक्षा मन्त्री के पद के लोभ ने भी उनको लेशमात्र भी विचलित नही किया, क्योंकि ऐसा करने पर उनको कुछ अपने सिद्धातों के प्रतिकूल करना पड़ता था।

सारा जीवन ज्ञानदान—

जीवन के पहले २२ वर्षों में विद्या प्राप्त कर अगले २५ वर्ष (सन् १८८६ १९११) कालेज के अधिष्ठाता के रूप मे, फिर अगले २७ वर्ष स्वतन्त्रता पूर्वक आर्य समाज के प्रचार-प्रसार द्वारा ज्ञान प्रसार करते रहे। घर मे रहते हुए स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन कर और देश के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए मानो वह क्रमश: ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी तथा सन्यासी का जीवन व्यतीत करते रहे अर्थात वह युवावस्था से मृत्यु पर्यन्त श्वेत वस्त्रो में सन्यासी बने रहे।

नित्य कर्म—

महात्मा जी हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियो के बताये मार्ग के सच्चे अनुयायी थे। वह सन्ध्या, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा के व्रतों के पालन करने वाले थे। इस कार्य मे किसी प्रकार की कठिनाई भी उनको कोई बाधा न होती थी। समय-समय पर दैविक प्रकोपों के फलस्वरूप देश के भिन्न स्थानों पर भूकम्पों बाढ़ों, अतिवृष्टि-अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ने के कारण पीड़ा ग्रस्त लोगों के दुख-दर्द दूर करने मे कभी पीछे नहीं रहे।

अपने धर्म और कर्त्तव्य के पालन के लिये निरन्तर कष्ट क्लेश सहन करते हुए जो कभी किसी के दबाव मे नही आए जिन्होने अपने त्याग और तपस्या से न केवल स्वयं उत्तम लोक प्राप्त किया, किन्तु अन्य लोगो को भी उत्तम स्थिति तक पहुंचा दिया, जिन्होने इतना महान तप किया ऐसे महामानव महात्मा हंसराज को शत्-शत् प्रणाम्।

आओ आर्य बन्धुओ। इस वर्ष ऐसे दिव्य गुण युक्त महामानव के जन्म दिवस पर कुछ ऐसे ही कार्यक्रम की योजना बनाकर चलें जिससे वर्तमान मे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे आई शिथिलता को दूर करके ऋषि स्वप्न को साकार कर सकें।

अशोक विहार, दिल्ली

सार्वदेशिक सभा के तीन नये प्रकाशन

१. मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा

पाण्डुरंग आठवले शास्त्री द्वारा प्रवर्तित नये सम्प्रदाय स्वाध्याय की मूर्तिपूजा के समर्थन में दी जाने वाली युक्तियों का तार्किक शैली में खण्डन आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय ने किया है। मूल्य २)५० पैसे।

२. आर्य समाज

(लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक अंग्रेजी पुस्तक (प्रथम बार इंग्लैण्ड से १९१५ में प्रकाशित) का प्रामाणिक अनुवाद। डा० भवानीलाल भारतीय कृत इस अनुवाद के आरम्भ में लेखक का जीवन परिचय तथा उनकी साहित्यिक कृतियों की समीक्षा। मूल्य १८ रुपये।

३. ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान

आर्य समाज के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की एक मात्र ९५ वर्ष पूर्व प्रकाशित पुस्तक का डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित संस्करण मूल्य ३) ५० पैसे।

प्राप्ति स्थान व बिक्री विभाग।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान. नई दिल्ली-२

आर्य राष्ट्रीय मन्च द्वारा आयोजित संगोष्ठी में सर्व-सम्मति से पारित प्रस्ताव

आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा "प्रथमिक शिक्षा का माध्यम : मातृभाषा" विषय पर आयोजित तथा दिल्ली के मुख्य राजनैतिक दलो के शीर्ष प्रतिनिधियों द्वारा सम्बोधित, गोष्ठी का यह दृढ़ मत है कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। इससे विद्यार्थियो मे मौलिक प्रतिभा का विकास होना है। उनके व्यक्तित्व का विकास होता है और वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे चुनौतियो का सामना कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में राष्ट्रीय चेतना और संस्कृति के प्रति प्रेम पैदा होता है।

इस विषय मे सर्वोच्च न्यायालय के ८ दिसम्बर १९९३ के ऐतिहासिक निर्णय से यह विवाद सदा के लिए समाप्त हो गया है कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम कोई अन्य भाषा हो सकती है। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री एम० एन० वेंकटचलैया तथा न्यायमूर्ति एस० मो खकीहनण्डपीठ ने, कर्नाटक के अंग्रेजी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावको के कर्नाटक सरकार के आदेश पर दिये गये, कर्नाटक उच्च न्यायालय के आदेश के विरुद्ध याचिको को खारिज करते हुए निर्णय दिया है कि मातृभाषा द्वारा शिक्षा पाना बालक-बालिकाओ का मौलिक अधिकार है तथा उन्हें विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा देना उनके कोमल मस्तिष्क पर अत्याचार।

यह संगोष्ठी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार से इस विषय पर अपनी नीति को स्पष्ट रूप से घोषित करने की मांग करती है। सरकार द्वारा अपने संयुक्त (सरकारी) स्कूलो में अंग्रेजी माध्यम की कक्षाओं को चलाए जाने का भी विरोध करती है।

यह गोष्ठी सरकार से मांग करती है कि सरकार सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करते हुए, जन भावनाओ का आदर करते हुए तथा मूक नन्हें शिशु के हित का ध्यान करते हुए, सरकारी, मान्यता प्राप्त और नगर निगम के सभी विद्यालयों को प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने का निर्देश देकर इस पवित्र कार्य में पहल करें। अपनी इस नीति को लागू करने तथा इस कार्य की प्रगति पर निगरानी रखने के लिए एक उच्चाधिकार प्राप्त उच्चस्तरीय समिति का गठन हो।

अध्यक्ष संगोष्ठी

विदेश समाचार

आर्यसमाज (वैस्ट मिडलैन्ड्स) बरमिंघम, इंग्लैंड अपने भवन में

बीस वर्ष के सतत् प्रयास के बाद आर्यसमाज,बरमिंघम ने अपना भवन निर्माण करने में सफलता प्राप्त कर ली है। १७ मार्च १९९५ आर्यसमाज ने अपने भवन पर अधिकार किया तथा १९ मार्च १९९५ को हवन-यज्ञ द्वारा भवन में प्रवेश किया गया।

अब तक आर्यसमाज का कार्यक्रम स्कूल का हाल किराये पर लेकर प्रतिमास किया जाता था, परन्तु अब नये भवन की उचित साज-सज्जा के पश्चात् आर्यसमाज के साप्ताहिक कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया है।

आर्यसमाज के सदस्यों की सम्मति है कि भवन का उद्घाटन एक सप्ताह के यजुर्वेद परायण यज्ञ से द्वारा किया जाए जिसमें नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो को निमन्त्रित किया जाए।

इस भवन में एक बड़ा कक्ष. ४८'×२०' तथा तीन छोटे कक्ष हैं, एक कक्ष में पुस्तकालय तथा वाचनालय की व्यवस्था की जायेगी। दूसरे कक्ष में बच्चों के लिए धार्मिक तथा सांस्कृतिक शिक्षा की व्यवस्था तथा तीसरे कक्ष में प्रीतिभोज इत्यादि का प्रबन्ध किया जाएगा।

आर्यसमाज बरमिंघम लगभग बीस वर्ष से आर्य समाज के प्रचार एवम् प्रसार में कार्यरत है। यहां समय-समय पर सामूहिक रूप में त्योहार मनाए जाते हैं तथा वैदिक विधि विधान से संस्कार और यज्ञादि कराने का प्रबन्ध किया जाता है। आर्य समाज का प्रमुख पत्र 'आर्यन् वायज' (Aryan Voice) प्रकाशित हो रहा है। जो कि आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रतिबिम्बित करता है।

—गोपालचन्द्र

श्रद्धाञ्जलि

महाशय मंगलसिंह का जीवन आर्यसमाज और समाज सेवा को अर्पित रहा। वे निष्काम सेवी तथा गरीबों के रक्षक थे। जिला महेन्द्रगढ़ के पिछड़े क्षेत्र मे आर्ष गुरुकुल की स्थापना उनके पुरुषार्थ का फल है।

पंचायत एवं विकास मन्त्री श्री राववंशीसिंह (हरियाणा) ने शोक प्रकट करते हुए कहा कि "महाशय जी का सारा जीवन समाज सेवा व आर्य समाज की उन्नति में लगा रहा उन्होंने किसी का भी अहित नहीं किया।

ज्ञातव्य है कि महाशय मंगलसिंह का ७५ वर्ष की आयु में ५ मार्च को आकस्मिक निधन हो गया।

—चन्द्राहत आर्य, मन्त्री

अखण्ड गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मन्दिर राजपुरा टाउन में रामनवमी के उपलक्ष में अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया है। गायत्री पाठ प्रातः ६-३० से सायं ६ बजे तक पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में हुआ। अनेक धर्म प्रेमी सज्जन अखण्ड गायत्री यज्ञ मे आहुति देकर पुण्य के भागी बने।

—ज्ञानचन्द आर्य

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री की धर्मशीला पत्नी श्रीमती सरलादेवी शर्मा का दिनांक ७-४-९५ को प्रातः काल देहावसान हो गया अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधान से निगमबोध घाट पर किया गया। श्रद्धाञ्जलि सभा १६-४-९५ को सायंकाल ३ से ५ बजे तक निज गृह पर सम्पन्न।

अभयदेव शर्मा पुत्र
अशोककुमार भारद्वाज पुत्र
अरुणकुमार शर्मा पुत्र

भारत रत्न मोरार जी देसाई

(पृष्ट १ का शेष)
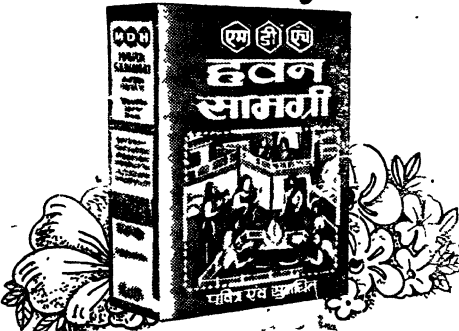
किया पर मोरार जी हठी नही, बल्कि सिद्धान्तनिष्ठ थे और उनका मूल्यो और आदर्शो के प्रति पूर्ण समर्पण था। यह समर्पण ही उनकी सबसे बडी शक्ति थी, लेकिन अंग्रेजियत प्रधान मानसिकता के लोगो ने उनकी इस शक्ति को उनकी कमजोरी कहा और उनका उपहास उडाया।

नि सन्देह राजनीति मे होते हुए भी स्थितप्रज्ञ की तरह से आचरण करने की जो चेष्टा मोरार जी भाई न की उससे भारतीय राजनीति के इतिहास मे वह सदैव आदर्श पुरुष की तरह चमकते रहेगे। भौतिक और दैहिक आकर्षण ने उन्हे कभी प्रभावित नही किया और उन्होने अपने को देश के लिए अर्पित किया और इसीलिए वह राजनीति मे होते हुए भी मौजूदा दौर की राजनीति से कोसो दूर थे। अपने चरित्र की इसी विशेष उत्कर्ष के कारण ही जहा भारत सरकार ने उन्हे 'भारत रत्न' स सम्मानित किया, वहीं पाकिस्तान ने उन्हे अपना सर्वोच्च सम्मान 'निशान ए पाकिस्तान' प्रदान किया। सम्भवत भारतीय उपमहाद्वीप म मोरार जी भाई अकेले ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिन्हे भारत और पाकिस्तान, दोनो राष्ट्रों के सर्वोच्च सम्मान मिले। स्पष्ट है कि मोरार जी भाई न केवल भारत पाक मैत्री के पक्षधर थे बल्कि वह हिन्दू मुस्लिम एकताके भी सच्चे हिमायती थे। काश, उनके इन गुणो को आज के राजनीतिक अपना सकते। आज जाति, क्षत्र, भाषा और सम्प्रदाय के आधार पर जिस तरह की राजनीति को बढावा दिया जा रहा है, उससे राष्ट्र के समक्ष समस्याए बढती चली जा रहा हैं। हमारा राष्ट्र नित नई गम्भीर समस्याओ से घिरता चला जा रहा है। राष्ट्र को इन समस्याओ से मुक्ति मिल सकती है, यदि वर्तमान राजनीतिक मोरार जी भाई के आदर्शो का अनुसरण कर सके।

भारत रत्न मोरार जी भाई के निधन पर जो राष्ट्रीय शोक मनाया जा रहा है, उस शोक के दौरान उनकी राजनैतिक चारित्रिक प्रतिभा का गुणगान होना स्वाभाविक ही है, लेकिन केवल गुणगान का तो कोई मूल्यहै नही। किसी महापुरुषका गुणगान वास्तविक गुणगान तभी कहा जा सकता है, जब गुणगान करने वाले लोग उस महापुरुष द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की चेष्टा ईमानदारी के साथ करे। मोरार जी भाई द्वारा बताया गया मार्ग राष्ट्र क लिए अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकता है, पर क्या आज की राजनीति उन श्रेष्ठतम मूल्यो, आदर्शो और मान्यताओ को वास्तव मे अपनायेगी, जिन पर मोरार जी भाई चला करते थे। निश्चित रूप से मोरार जी देसाई के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही होगी कि जिन मूल्यो, सिद्धान्तो और आदर्शो की रक्षा के लिए वह जिए उनका सम्मान किया जाए, और उनके सिद्धान्तो, आदर्शो क प्रति सम्मान भाव का अर्थ यही है कि उन पर अमल किया जाए।

वधु चाहिए ?

गौड ब्राह्मण साडिल गोत्र शाकाहारी दिल्ली मे कोठी, दो कार सम्पन्न परिवार आय पाच अको मे ३८ वर्षीय तलाक शुदा नि-सन्तान युवक हेतु सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित, मधुर भाषी गृह काय मे दक्ष हिन्दी भाषी, वधु चाहिए, दहेज बन्धन नही, शीघ्र विवाह, आर्य समाजी को प्राथमिकता। पूर्ण विवरण सहित लिखे—

पत्र व्यवहार का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

महाराष्ट्र के नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री श्री मनोहर जोशी से महाराष्ट्र विधान सभा में

गोवंश हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए विधेयक लाने का अनुरोध

भारतीय गोरक्षा अभियान के महासचिव, सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्ता ने महाराष्ट्र सरकार के नवनिर्वाचित मुख्यमन्त्री श्री मनोहर जोशी से अनुरोध किया है कि दिल्ली सरकार की तरह महाराष्ट्र विधानसभा के प्रथम अधिवेशन मे महाराष्ट्र मे गोवंश हत्या पर प्रतिबन्ध का विधेयक पारित कर पुण्य व यश के भागी बने।

महेन्द्र कुमार

निर्णा ग्राम मे आर्य वीर दल शिविर

आर्य वीर दल का शिविर कर्नाटक महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश के सीमा पर निर्णा ग्राम मे लग रहा है। ये गाव हुमनाबाद तालूक बिदर जिले मे आता है। शिविर ८-५-९५ से १७-५-९५ तक १० दिन का रहेगा। शिविर शुल्क ४० रुपया रखा गया है। शिविरार्थी लाठी, पेन, कापी, बिस्तर साथ मे लाये। इस शिविर मे युवको को लाठी, कराटे, दण्ड, बैठक, आसन, प्राणायाम, सैनिक शिक्षा सिखायेंगे। और देश धर्म संस्कृति के ऊपर प्रवचन होगे।

गोविन्द आर्य

धर्म परिवर्तन—एक चिंतन

(पृष्ठ ४ का शेष

कथित निम्न व अस्पृश्य जाति के लोगो को यज्ञोपवीत धारण कराकर उन्हें यह अनुभव करने का अवसर प्रदान करना चाहिए कि वे अछूत नही, हिन्दू हैं और उन्हे अन्य हिन्दुओ की भाति समाज मे आदर की दृष्टि से देखा जाएगा।

दहेज जैसी कुप्रथा का विरोध मात्र नारे लगाने से नहीं हो सकता। ऐसे सामूहिक विवाहो का आयोजन किया जाना चाहिए जिनमे दहेज के विरोधी युवक, परम्परागत रूढियो को तोडकर विवाह सूत्र मे बधने के लिए आगे बढे और समाज के सन्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करें। तभी हिन्दुओ की कुआरी बेटिया विधर्मियो की सहगामिनिया बनने से बच जायेंगी।

देश की राष्ट्रीयता धर्म एव संस्कृति की रक्षा करने का दायित्व आर्य समाज पर है। आर्य समाज आगे बढे, औरो को अपने साथ ले अन्यो से मेल बढाये और दूसरो के साथ कदम से कदम मिलाकर एक ऐसा शक्तिशाली संगठन निर्मित करे जिसके सामने कोई भी टिक सकने का साहस न कर सके। तभी इस देश की, राष्ट्र की, धर्म एव संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

२५, बेन्सन रोड बंगलूर ४६

उपदेशक विद्यालय योजना

ग्राम बादली, जिला—रोहतक (हरियाणा) में

एक एकड भूमि उपदेशक विद्यालय की निर्माण योजना हेतु प्राप्त है, भवन तैयार हैं, शुद्ध प्राकृतिक वातावरण, भवन कार्य पूरा होने पर, केवल पाच युवको का वैदिक धर्म प्रचारार्थ प्रवेश। आचार्य व विद्यार्थियो के आवास भोजन आदि की व्यवस्था नि शुल्क होगी। गुरुकुल के स्नातको को वरीयता दी जायेगी। महर्षि दयानन्द की इच्छा पूर्ति हेतु योग्य छात्रो को ही प्रवेश दिया जायेगा।

पत्र-व्यवहार का पता—

श्री जगन्नाथ आर्य, सेवा आश्रम
ग्राम पो० बादली, जिला—रोहतक (हरि०) पिन-१२४१०५

निवेदक :
श्याम सुन्दर आर्य
६९-ई, कमलानगर, दिल्ली-११०००७

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०२४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२३ ४-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (G) ९३/९५
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No U (G) 93/95 Post in N.D P S O. on 20,21-4-1995

दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ २ का शेष

भी होना चाहिए। जीवन की पद्धति वैज्ञानिक दृष्टि से रखते हुए हम राष्ट्र की रचनात्मक धारा के साथ जुडते चलें, सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिये सदैव तत्पर रहे। उपनिषद कहते हैं आत्म ज्ञान सत्य से मिलता है, सत्य त्याग और सहिष्णुता से प्राप्त होता है जिसे तप कहते हैं। सत्य के साक्षात्कार के लिए गुरु ज्ञान है तो श्रद्धा जीवन की आस्था और मार्गदर्शिका है। स्वाध्याय, दान और सयम तप की रक्षा करत हैं इनके बिना ज्ञान तथा शिक्षा की प्राप्ति करना दुष्कर है। ज्ञान की नींव ब्रह्मचर्य है। अत शिक्षा के मूल मे तर्क स्वाध्याय, सयम, त्याग, सहिष्णुता, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य का स्थान अनिवार्य रूप स रखा जाए।

गुरुकुल कागडी मे दी जा रही शिक्षा मे उपरोक्त सभी उद्देश्य और लक्ष्य निहित हैं। इन गुणो से सुसज्जित शिक्षित युवक जिस क्षेत्र मे भी कार्य करते है वही अपने और अपनी शिक्षण सस्था का नाम गौरवान्वित करते हैं। मेरी यह मान्यता है कि एस युवको के हाथो जनकल्याण सुनिश्चित है। मैं चाहता हू कि देश मे एस गुरुकुल विश्वविद्यालय अन्यत्र भी स्थापित किये जाए। मुझे प्रसन्नता है कि इस गुरुकुल के अधिकारीगण तथा आचार्यगण स्वामी जी के आदर्शो का निष्ठापूर्वक अनुसरण कर रहे हैं और अपने शिष्यो को भी उन पर चलने हेतु प्रेरित कर रहे ह

प्रिय स्नातको आप जिस सस्था से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सार्वजनिक जीवन मे पदार्पण कर रहे हैं उसकी परम्परा और इतिहास गौरव शाली है। यह वह सस्था है जहा हमार राष्ट्रपिता महात्मा गाधी को 'महात्मा' की उपाधि स विभूषित किया गया था। आज भी इस सस्था म गणमान्य नेता आकर अपने को धन्य समझते हे। सस्कृति, साहित्य, धर्म, दर्शन, चिकित्सा, पत्रकारिता, राजनीति विज्ञान तथा व्यवसाय के क्षेत्रो मे यहा के स्नातको ने निस्सन्देह नाम अर्जित किया है और आप सभी इस परम्परा को बनाये रखेंगे। मेरी इच्छा है कि आप जीवन के विविध क्षत्रो का चयन करें और राष्ट्र सेवा के लिए स्वय को समर्पित करें, समाज के टूटते हुए रिश्तो और सम्बन्धो को मधुर एव सुदृढ कर और समानता तथा सामाजिक न्याय के लिए विवेकसम्मत वातावरण बनाये। मेरा शुभ कामना है कि आप सभी अपने जीवन म निरन्तर सुख समृद्धि की ओर अग्रसर हो और साथ ही राष्ट्र के रचनात्मक विकास म अपना सक्रिय योगदान दें।

विश्वविद्यालय क अधिकारियो न दीक्षान्त समारोह क निमित्त मुझे आमन्त्रित कर स्वामी श्रद्धानन्द जैस महामानव को श्रद्धाजलि अर्पित करने का जो सुअवसर मुझे दिया इसके लिय मैं उन्ह धन्यवाद देता ह। आचार्यगण और उपस्थित भाई बहनो के लिए मेरी मगल कामनाए।

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

फतहनगर। स्थानीय महर्षि दयानन्द उच्च प्रा० वि० मे दिनाक ३ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। विद्यालय के बालको ने ऋषि के जीवन से सम्बन्धित घटनाओ को सुनाकर सबको लाभान्वित किया।

देश भक्ति गीत गलत मत कदम उठाओ श्री महेन्द्र आर्य ने मधुर स्वर मे सुनाया।

डी०सी०एम० रेलवे कालोनी मे नव वर्ष महोत्सव

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल न नव वर्ष विक्रमी सम्वत् २०५२ के उपलक्ष्य म डी सी एम रेलवे कालोनी मे अप्रेल (रविवार प्रात ९-३० बजे 'नव वर्ष महोत्सव" का आयोजन किया गया।

बच्चो का सुरुचिपूर्ण सास्कृतिक कार्यक्रम, जरूरतमन्द व प्रवीण छात्र छात्राओ को पाठय सामग्री तथा (वैदिक) चरित्र निर्माण साहित्य वितरण किया गया।

सार्वदेशिक सभा प्रधान, महान स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने आर्य समाज मन्दिर डी सी एम रेलवे कालोनी के मुख्यद्वार का उदघाटन किया। —चन्द्रमोहन आर्य

मारीशस के उपराष्ट्रपति श्री रवीन्द्र घरभरन ने सपरिवार यज्ञ किया

मारीशस राष्ट्र के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री रवीन्द्र घरभरन एव उनकी पत्नी श्रीमती पद्मा अपने पुत्र श्री शखनाद एव पुत्री कुमारी यज्ञ समिधा ने दिनाक ३ दिसम्बर १९९४ को प्रात १०-३० बजे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्य समाज, आर्य समाज बम्बई काकडवाडी मे पधार कर अपनी २६वीं विवाह वर्ष गाठ के उपलक्ष म यज्ञ किया।

कैप्टन देवरत्न आर्य एव आर्य समाज के अधिकारियो ने उनका मुख्यद्वार पर वेद मन्त्रो एव पुष्प वर्षा से स्वागत किया।

नि शुल्क हृदयरोग परामर्श एव परीक्षण शिविर सम्पन्न

आज दिनाक २-४- ५ को आर्यसमाज बीसलपुर मे हृदय रोग परामर्श व परीक्षण शिविर का आयोजन किया इस शिविर मे डा० पकज कुमार बसल (M B B S) MD (कार्डियालोजी) शिवानी हार्ट सेन्टर बरेली ने ४० हृदय रोगी परीक्षण किया व परामर्श दिया।

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज भोरवा, श्रीमती आशा जो प्रधाना, श्री अशोक कुमार मन्त्री, श्री बाबूराम शुक्ल काषाध्यक्ष।

—आर्य समाज फतेपुर विश्नोई श्री ओमकार सिंह प्रधान, श्री सुनील कुमार जी विश्नोई मन्त्री श्री निहाल सिंह जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बेलगढा, श्री घनश्याम आर्य प्रधान, श्री सोमदेव आर्य मन्त्री, श्री तेजोप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष।

सार्वदेशिक व सहरिवास्य नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ११] | दयानन्दाब्द १७१ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ | वैशाख शु० १ | सं० २०५२ ३० अप्रैल १९९५

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार महोत्सव पर दीक्षान्त समारोह

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा दीक्षान्त भाषण

हरिद्वार, १३ अप्रैल। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का वार्षिक महोत्सव १३-१४ अप्रैल १९९५ को कुलभूमि में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर ७० नव-स्नातकों को उपाधि वितरण किया गया। मान्यवर श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने शोभायात्रा में भाग लिया तथा नवस्नातकों के साथ मुख्यपण्डाल में बैण्ड-बाजे के साथ पधारे।

प्रमुख-यज्ञ की दीक्षा आहुति देकर यज्ञ किया गया। यज्ञ के उपरान्त नवस्नातकों को विभिन्न संस्थाओं व विशिष्ट महानुभावों द्वारा "भविष्य में आपका जीवन उन्नति पथ पर अग्रसर हो।" ऐसा आशीर्वचन दिया।

दीक्षान्त भाषण से पूर्व उपाधि वितरण समारोह में विद्याभास्कर आयुर्वेद भास्कर तथा सिद्धान्त शास्त्री की उपाधि दी गई।

दीक्षान्त भाषण से पूर्व गुरुकुल महाविद्यालय के आचार्य पं० हरिगोपाल शास्त्री ने सम्मान्य अतिथि पं० वन्देमातरम् को गुरुकुल की सम्मानित उपाधि विद्यावाचस्पति प्रदान की।

अध्यक्षता करते हुये मान्य पं० जी ने नवस्नातकों को चेतावनी दी, कि इस पावन भूमि में आपने तप-त्याग पूर्ण जीवन, जीने की कला सीखी है और परीक्षा उत्तीर्ण की है परन्तु इससे भी महान परीक्षा जनता के समक्ष मैदान में होगी। यदि आपको इस धरातल पर जनता ने उत्तीर्ण किया तो वास्तविक परीक्षा वही होगी।

आप कुलमाता की गोद से विदा लेकर जा रहे हो। इसका मान सम्मान रखना आपका नैतिक दायित्व होगा। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के नाम पर अपमान का दाग लगे। संस्था का गौरव अक्षुण्ण रहे। अपने प्राचीन गौरव को पूर्ववत बनाये रखें ऐसी मेरी कामना है।

आपने आज मुझे भी विद्यावाचस्पति की सम्मानित उपाधि देकर अपनी स्नातक कोटि में एक संख्या और जोड़ दी इसकी मुझे प्रसन्नता है। मैं भी सदा ही इसके गौरव को बनाये रखूंगा।

इस अंक के आकर्षण

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज के सम्मेलन में शराब कारखाना न लगने देने की घोषणा

जखराना १९ अप्रैल। आर्य प्रान्तीय महासम्मेलन एव जखराना के ५०वें वार्षिक उत्सव के दूसरे दिन प्रातः यज्ञ, भजन व उपदेश आदि से कार्य प्रारम्भ हुआ। अपराह्न १ बजे आर्य समाज के वरिष्ठ नेता श्री छोटूसिह आर्य की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें लगभग १० हजार लोगों की उपस्थिति थी। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, हैदराबाद अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली थे।

पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने अपना उद्बोधन करते हुये विश्वास दिलाया कि शराब बन्दी आन्दोलन में पूरे भारत वर्ष की जनता राजस्थान के साथ है। उन्होंने विशेष रूप से स्वय हैदराबाद के होने के नाते उल्लेख किया किस प्रकार हैदराबाद में आर्यसमाज व महिला जागरण की वजह से सरकार को शराब बन्दी किये जाने पर बाध्य किया।

अध्यक्ष श्री छोटूसिह आर्य ने राजस्थान में चल रहे शराब बन्दी आन्दोलन का उल्लेख करते हुए सारे खुर्द ग्राम तहसील तिजारा में जो १४०करोड रुपये की लागतका कारखाना केडिया ग्रुप अमरिकन कम्पनी की साठ-गाठ से लगाने जा रहा है का विस्तृत वर्णन किया। इस कारखाने में गेहू से शराब बनाने की योजना है जिसमें ५० लाख लीटर पानी की दैनिक खपत होगी।

श्री आर्य ने घोषणा की कि अलवर जिले की जनता किसी प्रकार से शराब का कारखाना नही लगने देगी चाहे इसके लिये कुर्बानी देनी पड़े। उन्होंने कहा राजस्थान मे चलाये जा रहे आन्दोलन से शराब के खिलाफ जनमत रहा है, शराब की दुकान जगह-जगह लगाने का विरोध हो रहा है।

इस अवसर पर डा० कर्णसिह यादव सवाईमानसिह होस्पीटल जयपुर, श्री विमल वधावन देहली, श्री ओमप्रकाश झवर ब्यावर, पं० विद्यासागर शास्त्री, प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर तथा अनेक आर्य नेता उपस्थित थे जिन्होंने अपने विचार रखे। इस सम्मेलन का सचालन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर ने किया।

आर्य समाज के बढ़ते कदम

होलेण्ड में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की झलक

१. वैदिक आर्य समाज अमस्टरडम—के तत्वावधान में १२ फरवरी १९९५ रविवार को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। देश के और भी समाजो में यह आयोजन विशेष कर १२ फरवरी को ही सम्पन्न किये गये। जिनकी संक्षिप्त झलक प्रस्तुत हैं—

२. वैदिक ज्योति संघटन व वैदिक सविता संस्थान रोटरडम—दोनों संस्थाओं ने सम्मिलित रूप से नगर के 'हिन्दुस्तान-कल्चरल सेन्टर' में १२-२-९५ को स्वामी जी का जन्मोत्सव मनाया गया। जिसमे पं० शुभधन ने सामाजिक संघटन व एकता पर बल देते हुये कहा कि "महर्षि दयानन्द का जन्म सम्पूर्ण मानव जाति को वैदिक सगठन सूत्र मे बाधने को हुआ था, जबकि उस कार्य को मूर्त रूप देने वाले हम अनुयायी स्वय विघटित होते जा रहे हैं" इसी प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० महेन्द्र स्वरूप ने महर्षि जन्मोत्सव विषयक "सार्वदेशिक सभा" की अपील दोहराते हुये आगामी २४ फरवरी को ही जन्म-दिवस मनाने का औचित्य बताया व पाश्चात्य सस्कृति के अन्धानुकरण से बचने को कहा। इसी शृंखला मे मैंने भी अपने विचार रखे, जिसमे विभिन्न प्रमाण से महर्षि की उदात्त भावना और आर्यसमाज की सार्वभौमिकता का प्रतिपादन किया, एव सम्पूर्ण जीवन चरित्र की संक्षिप्त जानकारी दी व बोध विषयक प्रचार पत्र वितरित किया तत्पश्चात् प० इन्द्रजीत बक्तावर जो कि वैदिक ज्योति सघटन के संचालक हैं, उन्होने भी महर्षि महिमा का गुणगान करते हुये अन्त में सब महत्वपूर्ण अपील की या आवश्यकता महसूस की, कि वैदिक साहित्य को तथा उसके अप्राप्त (अप्रकाशित ग्रन्थो को विश्वस्तर पर प्रसारित किया जाये, और सत्यार्थ प्रकाश के 'संक्षिप्त-संस्करण' विभिन्न भाषाओं में अनूदित कर बांटे जायें। इन्होंने यहां प्रश्नचिह्न लगाया कि १७ वर्षों में, आर्य समाज क्यो इतना भी न कर सका? इसके करोडों—अनुयायी केवल मात्र जय-जयकार किये जा रहे हैं, इससे क्या ऋषि ऋण पूरा होगा? आगे इसी प्रकार अन्त में पं० विशेश्वर ने "कार्ल मार्क्स" यूरोपीय विद्वान की चर्चा करते हुये उसकी तुलना "महर्षि दयानन्द" से की, व आर्थिक प्रोग्राम का विश्लेषण किया। इन्होंने बौखलाहट भरी आवाज मे इतना कहकर अपना भाषण समाप्त किया कि "दयानन्द क्यो घर छोड़ा था? एँ! पर लोग संस्कृत पढ़ लिये, संस्कार विधि भी पढ़ लिये हैं पर संस्कारित नही हुये"। अन्त में प्रसादादि वितरण व कार्य की समाप्ति पर उपर्युक्त महानुभाव को सभा प्रधान ने सार्वदेशिक का पत्र दिखाते हुये कहा आप भी इसका प्रचार करें तो वे बोले "स्वामी जी की सही जन्मतिथि आज तक किसी को ज्ञात नहीं, लेखराम जीवन भर ढूढता रहा था, १२ फरवरी को उचित बताते हुये इन्होने कहा "महात्मा गाधी की भी तो २ अक्तूबर अंग्रेजी तिथि पर ही जयन्ती होती हैं. इतना कहकर बीच मे से अन्यत्र चले गये।

३. आर्यसमाज ड्रोदेक्त - मे विशेषकर महिलाओं द्वारा ऋषिजन्मोत्सव उत्साहपूर्ण ढंग से मनाया गया। यज्ञ की ब्रह्मा पंडित चन्द्रकली सिंह तथा यजमान पं० रामवतार की सुपुत्री श्रीमति कीर्ति अवतार बनीं। यज्ञोपरांत श्रीमति रामवरण ने गीत गाये पडिता सिंह ने ओजस्वी भाषा में (हिन्दी-अंग्रेजी) महर्षि दयानन्द जीवन—वेद तथा स्त्रीशिक्षा आदि विषयों पर विचार प्रकट किये। इस अवसर पर क्रान्तिकारी श्री कुशल भजन मंडली के भजन भी हुये। प० चन्द्रकली सिंह होलेण्ड की जागृत महिला प्रचारिका हैं। इनके कार्यक्रमो मे गोरे लोग भी सम्मिलित होते हैं यह सराहनीय है।

४ हिन्दी सस्कृत पाठशाला लेबार्डन—की ओर से सूरीनाम कल्चरल सेन्टर मे भी ऋषि जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। यह पाठशाला श्रीमति जानकी, श्रीमति रामस्वरूप, व श्रीमति आर्य कुमारी आदि कर्मठ जागृत महिलाओ द्वारा चलाई जाती। ११ फरवरी को अपनी (मासिक) पारी में यह कार्य सम्पन्न हुआ। 'संघटन' पत्रिका के संपादक विजय प्रकाश शास्त्री द्वारा प्रवचन व उपर्युक्त महिलाओं के भजन आदि हुये।

५. विश्व ज्योति हेराफेन - द्वारा भी १२ फरवरी को उत्साहपूर्वक सब संगठनों के सम्मिलित सहयोग से "दयानन्द जन्म-दिन सम्पन्न हुआ। यहा भी मेरे अग्रज श्री विजय प्रकाश शास्त्री का महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की विचारधारा संदर्भित प्रवचन हुआ। इन कार्यक्रमों में विशेषकर "सार्वदेशिक सभा" के निर्णयानुसार लोगो को सही तिथि आदि की जानकारी दी गई और एतद्विषयक प्रचारपत्र भी बांटे।

६. अनाथ बच्चो का सहायक समाज रोटरडम—(जिसे आर्य समाज रोटडम के नाम से भी जानते हैं के माध्यम से प० देवनारायण शुभधन के निवास पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमे अमस्टरडम से डा. महेन्द्र स्वरूप ने तथा मैंने भी भाग लिया। १८-१९ फरवरी के इस अनुष्ठान मे हमने महर्षि दयानन्द, उसके आर्य समाज की जनता को जानकारी देते हुये सत्य-सनातन-वैदिक धर्म की प्राचीनता व सार्वभौमिकता से परिचित कराया। आर्य समाज को अन्य मतमतान्तरों की भांति सीमित-संकुचित रूप में समझने वालो से आग्रह किया कि वे महर्षि के ग्रन्थों को (सत्यार्थ प्रकाश) ठीक से पढ़ें। इस कार्यक्रम के आयोजन और व्यवस्था भोजनादि सत्कार का समग्र भार पं० देवनारायण शुभ धन ने निज नामानुरूप ही श्रद्धा से वहन किया।

कुरान शरीफ में ओ३म्

विश्वनाथ प्रसाद

१८ अक्तूबर १९९२ के सार्वदेशिक साप्ताहिक मे एक समाचार छपा था जिसका विवरण निम्न प्रकार है :—

पिछले एक दशक से भी अधिक समय से अफ्रीका के मुसलमानों द्वारा आध्यात्मिक उत्थान के लिए ओ३म् के उच्चारण को अपनाया गया है। संस्कृत शब्द ओ३म् अब तो इतना प्रसिद्ध हो चुका है कि हाल ही मे अफ्रीका के विज्ञापन पर सबसे ऊपर ओ३म् छपा पाया गया। यह पोस्टर अफ्रीका से मक्का के तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करने के लिए निकाला गया था।

एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम बाहुल्य देशों सेनिगल, माली, जीनिया तथा अफ्रीका आदि देशो मे जितने भी योग प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे हैं, उनकी तरफ से बहुत बड़ी सख्या मे मुस्लिम समुदाय के लोग आकर्षित हो रहे हैं। इन मुसलमानो का कहना है कि बदलती परिस्थितियों में वे अपने आप को परिस्थितिनुसार बदलने को तैयार हैं।

उपरोक्त विवरण से निम्न बातें स्पष्ट होती है —

(१) योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि व्यास ने "योगस्समाधि" कहकर योग को समाधि बतलाया है जिसका भाव यह है कि जीवात्मा इस उपलब्ध समाधि के द्वारा सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म का साक्षात्कार करे। भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने "योग कर्म सुकौशलम्" कहकर कर्म मे कुशलता और दक्षता का नाम योग ठहराया है। योग से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर कोई भी इसकी ओर आकर्षित हो सकता है। यदि कुछ प्रतिशत मुसलमान लाभ प्राप्ति हेतु योग की ओर खिचें तो इसमे आश्चर्य की क्या बात है ?

(२) मुस्लिम समाज के कठमुल्ले लोगों को गुमराह कर दकियानूसी के खूटे से बांधे रहते हैं। इसी मे ये अपनी सफलता समझते हैं किन्तु बुद्धिजीवी मुसलमान इस प्रकार के बधन को कतई स्वीकार नही करता। वह तो अन्य मत, मजहबों की अच्छी-अच्छी ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़के अपने दिल दिमाग को सीमित क्षेत्र से बहुत आगे बढ़ा लेते हैं।

(३) जहां तक ओ३म् का प्रश्न है, यह ईश्वर का निज नाम है। ससार का प्रत्येक व्यक्ति इसका जाप कर लाभ प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार सूरज की गर्मी, चन्द्रमा की शीतलता, जल, हवा परमेश्वर की बनाई वस्तुओं पर सबका समान अधिकार है, उसी प्रकार ईश्वर के नाम ओ३म् का जाप करने का अधिकार भी सबको है।

ओ३म् का अर्थ क्या है ? ओ३म्, यह ओकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमे जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओम्) समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते है जैसे आकार से विराट, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु तैजादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्रज्ञादि नामो का वाचक और ग्राहक है। इसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रो मे स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणनुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं (महर्षि दयानन्द सरस्वती)।

जैसे वेद के हर मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् का उच्चारण किया जाता है, वैसे ही कुरान शरीफ के अनेक पाठो के आरम्भ मे अलिफ, लाम, मीम का प्रयोग हुआ है।

अलिफ-लाम-मीम है क्या ? कुरान के पढ़ने वाले अ, ल, म को मिलाकर "अलम" नही पढ़ते अपितु "अलिफ, लाम, मीम ऐसा पढ़ते हैं। इन अक्षरो को अलग-अलग गिना जाये तो इनकी सख्या १४ होती हैं अर्थात अलिफ, लाम, मीम, स्वाद, रा, काफ, हा, या ऐन, ता, हा, सीन काफ, नून।

प्रश्न यह है कि जिन सूरतो के पहले यह "मुकतियात" अक्षर पढ़े जाते है उन सूरतों में क्या विशेष बात है जिसके कारण इन अक्षरो का पढ़ना आवश्यक समझा गया ? उदाहरणार्थ यह देखना है कि सूरत, यूनस, हूद, युसुफ, इब्राहीम, हुजर में कौन सी विशेषता है कि इनके आरम्भ में अलिफ, लाम, रा पढ़ा जाये अथवा बकर, आल, अमरां, अलिफ, लाम, मीम पढ़ा जावे ?

भारतवर्ष के मतमतान्तरो के धार्मिक ग्रन्थो मे हम इस प्रकार के अक्षरों का प्रयोग देखते हैं। कुछ तो वाम-मार्गीय तन्त्रो मे हैं। वहां ह्री, क्लीं आदि अक्षरों का पाठ होता है। केवल आतक के लिए अर्थ कुछ नही। हमने कुछ साधु-मन्त गुरुओ और शिष्यो से यह कहते सुना है कि बिना अर्थ समझे मन्त्रो का पाठ या जाप करने से आध्यात्मिक लाभ अधिक होता है। अर्थ समझने पर वह लाभ नष्ट हो जाता है। बहुत से गुरु लोग निरर्थक बेजोड़ मन्त्र बनाकर अपने चेलो को देते हैं। हमने कई श्रद्धालु विद्वानो को ऐसे मन्त्रों का जाप करते देखा है। वेदो मे इस प्रकार के जाप को निरर्थक, जघन्य और त्याज्य बताया है। जो मनुष्य वेद मन्त्रो को बेसमझे पढता है वह दूध न देने वाली गाय को पालता है या पत्ते, फल, फूल से रहित वृक्ष को सींचता है। वह उस चौपाये के समान है जिस पर किताबो का बोझ लदा हुआ है (प० गगा प्रसाद उपाध्याय की पुस्तक इस्लाम के दीपक से)।

अलिफ, लाम, मीम पर इस्लाम के विद्वान भी कोई विशेष विचार व्यक्त नही कर पा रहे हैं। ऐसा जान पड़ता है कि जानबूझ कर कोई बात छिपाई जा रही है।

सूरत बकर अलिफ, लाम, मीम इन तीन शब्दो से आरम्भ होती है। तफसीरे हक्कानी ने लिखा है कि इस प्रकार के जितने अक्षर सूरतो के आरम्भ मे आए हैं उनको हरुफे मुकत्तआत कहते हैं। विद्वानों का एक गिरोह इसको मुतशाबिहात के समान कहता है जिसको खुदा व रसूल ही जानते हैं और कोई नही जानता (पृष्ठ ४) इसी भांति पृष्ठ ११ पर जलालैन ने लिखा है तफसीर मजहरी ने बहुत से मुस्लिम विद्वानों के वचनों को लिखा कर सिद्ध किया है कि खुदा ही इनका अर्थ जानता है। सामान्य लोग इसके समझने की क्षमता नही रखते बल्कि स्वय खुदा भी यह चाहता है कि हर एक आदमी इससे परिचित न हो (तफसीरे महजरी पारा। पृष्ठ १६)।

इब्ने कसीर ने लिखा है कि अलिफ, लाम, मीम जैसे अक्षर मुकत्तआत जो सूरतों के आरम्भ में आते हैं, उनकी व्याख्या मे भाष्यकारो मे मतभेद है। कुछ कहते हैं कि इसके अर्थ केवल अल्लाह को ही मालूम है और किसी को नही (इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ४७) आजमुत्तफासीर का कहना है कि अलिफ, लाम, मीम, यद्यपि हरूफे मुकत्त-आत हैं जिनके अर्थो मे भूतकालीन तथा पश्चात्वर्ती विद्वानो मे बहुत मतभेद है। यह सबमे से उन मुतशाबिहात (सदेहास्पद) के समान है जिनकी वास्तविकता को खुदा के अतिरिक्त और कोई नही जानता, इसमे चर्चा करने की हमे कोई भी आवश्यकता नही। हा, उन पर ईमान लाना और उसे सत्य मानना आवश्यक है। (आजमुत्तफासीर भाग। पृष्ठ ५८) इसी प्रकार कादरी ने लिखा है कि हरूफे मुकत्तआत कुरआन के भेद है प्रत्येक उनकी जानकारी नही रखता। (कादरी भाग। पृष्ठ ३ मुआलिम में लिखा .—

"वल्कुल्लिल इल्मेफीहा इलल्लाहे व फायदतजिकरोहातलबल ईमानेबेहा।" (मुआलिमुत्तन्जील भाग। पृष्ठ ११)

इसका प्रत्येक ज्ञान अल्लाह को है और इसका वर्णन खुदा की तलाश के लिए है। इस प्रकार के अक्षर कुरआन मे २९ सूरतो के पहले आए हैं और अलिफ, लाम, मीम सूरते बकर के अतिरिक्त आले इमरान, अनकबूत, रूम, लुकमान तथा सजदा मे आए है।

हमारा विचार है कि ऐसे अक्षर आरम्भ मे इसलिए लिख दिये जाते है कि लोगों का ध्यान आकृष्ट हो। इस प्रकार श्रृखला रहित शब्द देखकर लोग इनकी ओर ध्यान लगायें और यह समझें कि यह बड़े महत्वपूर्ण शब्द होगे क्योकि लोगो पर यह प्रभाव डाला गया है कि सारी कुरआन ही इन शब्दों की व्याख्या है। (मजहरी भाग। पृष्ठ २३) (पण्डित देव प्रकाश की पुस्तक कुरान परिचय से)।

डा० कुवर आनन्द सुमन, वैदिक प्रवक्ता ने अपनी पुस्तक वेद और

(शेष पेज ६ पर)

पाश्चात्य विचारको का वेदाध्ययन

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेद भिक्षु'

अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आए परन्तु यहां के राजाओं की आपसी फूट से लाभ उठाकर वह स्वयं राजा बन बैठे अपनी सत्ता का स्वामित्व बनाए रखने से लिए लार्ड मैकाले की प्रेरणा से यहां की संस्कृति पर आघात करना आरम्भ किया। अनेकों बृहद ग्रन्थो का निर्माण किया गया। यथा—'ऋग्वेद में वरुण देवता का स्थान, ऋग्वेद और वैदिक धर्म" आदि निन्दा सूचक पुस्तकें इसी कोटि मे आती हैं। परन्तु जब विदेशी विद्वानों ने भारतीय साहित्य का गम्भीरता पूर्वक अनुशीलन किया तो उनका विवेक कुछ जागृत हुआ और वे राजनीतिक हथकण्डों को भूलकर, वैदिक साहित्य का मनन पूर्वक अध्ययन करने लगे। परिणामत: उन्होने इतने साहित्य का सृजन किया, जितना पौराणिक विद्वानों के लिए नितान्त असम्भव था। महर्षि दयानन्द के कार्यों के बाद तो पाश्चात्य विद्वानों का और भी शुद्ध दृष्टिकोण बन गया था। वैदिक साहित्य पर उनकी श्रद्धा उनके विचारो में समय-समय पर प्रकट होने लगी। अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच आदि अनेकों भाषाओ मे वेदों के अनुवाद हुए। कुछ पद्यो में तथा कुछ गद्यो में। वेदो के अध्ययन को सुलभ बनाने के लिए व्याकरण भी बनाए गए। वैदिक ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन भी किया, वेदों की नवीन भाष्य विधियों का निर्माण किया, उनका प्रकाशन भी किया। उनके कार्य से ही वेदो की महत्ता स्वयं परिलक्षित होती है।

प्रो० मैक्समूलर ने तो अपना सारा जीवन वेदाध्ययन मे लगा दिया था और ऋग्वेद के सम्पादन में ठीक २० वष व्यय किए। ऋग्वेद का सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद सायण भाष्य के आधार पर एच० विलसन द्वारा हुआ था। ग्रिफिथ ने पद्य में अंग्रेजी अनुवाद किया। अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद ह्विटनी ने, सामवेद का ग्रिफिथ ने, कृष्ण यजुर्वेद का प्रो० कीथ ने और शुक्ल यजुर्वेद का ग्रिफिथ ने किया। ऋग्वेद की गवेषणापूर्ण व्याख्या प्रो० जोल्डेन बर्ग द्वारा की गई। डा० मैग्डानल, ह्विटनी और डा० वाकरनायेल ने वैदिक व्याकरण के ग्रन्थो का प्रणयन किया। प्रो० अर्नाल्ड ने वैदिक छन्दो पर कुछ लिखा था। विदेशियों ने वेदो पर काफी कुछ लिखा है। डा० मैग्डानल का 'माइथालोजी' सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। रुडाल्फ राथ ने सायण भाष्य की नकल न करके हिस्टोरीकल 'मैथड' का आविष्कार किया और वेद से अनभिज्ञ विदेशियो को वेदाध्ययन को सुलभ बनाया।

सर ब्राउन नामक एक अंग्रेज विद्वान ने 'अपनी वैदिक धर्म की श्रेष्ठता' पुस्तक मे वेद की महत्ता समझाते हुए लिखा है—'वैदिक धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है, जहां धर्म और विज्ञान साथ साथ चलते हैं। इसमे धर्म-ज्ञान और दर्शन पर आधारित हैं।" महान दार्शनिक मैटरलिक ने वेदज्ञान के विषय मे लिखा—'वेद ही एकमात्र ज्ञान के कोष हैं, जिनकी समता हो ही नही सकती। वेदो मे बीज रूप से विश्व की सारी विद्याओ का ज्ञान छिपा है।' डा० रसेल ने बड़े साहसिक शब्दो मे कहा कि 'आश्चर्य कि सूक्तों का सग्रह, जिसे वेद कहते हैं, से जो धार्मिक शिक्षायें हैं वह पवित्रता और उच्चता मे बाइबिल से किसी तरह भी कम नहीं है।

इसी विद्वान ने आगे लिखा कि 'पावन वेदो की काव्यशैली--हमारे महा कवियो तथा शिक्षको यथा--मिल्टन, शैक्सपियर और टेनीसन जसे कवियो से कम नही है। एडवर्ड कारपेन्टर, शोपनहार, मोरिस फिलिप, थोरियो, प्रो० हीरेन और अमेरिकन विदुषी महिला मिसेज व्हीलर गिल्लीक्रूस आदि मनीषियो की वेदो के प्रति पवित्र भावनाएं हैं। विस्तारभय से सबका विस्तृत उल्लेख सम्भव नही है।

नेपाल आर्यसमाज का राष्ट्रीय अधिवेशन

नेपाल आर्य समाज का राष्ट्रीय महाधिवेशन ८ से १० अप्रैल तक वीरगंज मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशको ने पधार कर श्रोताओं को महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो को जनमानस तक पहुंचाने मे महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

आर्य समाज दार्जिलिंग
पश्चिम बंगाल

दानी महानुभाव ध्यान दें

आर्य समाज दार्जिलिंग बंगाल में पर्वतीय अंचल में स्थित है। वहां के श्री मन्त्री जी की सूचनानुसार पुराना मकान है १० साल के बाद चुनाव हुआ है। पुराने किरायेदार थोड़े किराये पर रह रहे हैं। ऐसी दशा में आर्थिक स्थिति कमजोर है।

दानी महानुभाव इस पर्वतीय स्थान को महत्त्व दें और धर्म प्रचार के लिये उदारता से दान राशि दें जिससे वह भवन की मरमम्त कराकर प्रचार में प्रगति कर सकें।

आशा है कलकत्ता के आर्यजन वहां जायें और उनसे मिलकर उनका सहयोग करें।

--डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

वेदों के महान विद्वान ऋषि दयानन्द इसी लिए कहते कि—'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। क्या भारत वर्ष के बुद्धिजीवियों ने महर्षि के वैज्ञानिक सत्य को स्वीकार किया है? काश, आर्य सामाजिक क्षेत्र में ही महर्षि के परम सत्य को स्वीकारा जाता तो बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, पाप, पाखण्ड और अन्धविश्वास जड से मिट सकते थे, परन्तु भाषणबाजी, नारेबाजी और गुटबाजियो का शिकार आर्य समाज भी कर्त्तव्य पथ से विचलित हुआ सा लग रहा है।

बन्धुओं! आइए व्रत ले महर्षि के पथ पर चलने का, ज्ञान की मशाल हाथ मे लेकर, बढ़ते हुए अज्ञान तिमिर को तिरोहित करने हेतु!

श्रद्धावान बनो! वेद की ऋचायें कैसी हैं? वेद स्वयं आपको बताता है—

ओ! पावमानी स्वस्त्ययनी सु-दुघा हि घृतश्चुत।
ऋषिभि सभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृत हितम्॥ सामवेद॥

पावमानी=जिन ऋचाओ का पाठ और पाठ के बाद आचरण, मनुष्य मात्र को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। मनुष्य सत्याचरण से पवित्र होता है।

स्वस्त्ययनी=ये ज्ञानपूर्ण ऋचायें मानवमात्र का कल्याण करती हैं। वेद में शोषण के लिए कोई स्थान नही है। शोषक मानव कोटि से गिरा हुआ--दुर्दान्त पशु है।

सु-दुघा=पावन मन्त्र सु-शक्ति सम्पन्न करते हैं। मन्त्रो से आचारवान पुरुषो में उच्च प्राण शक्ति का सचार होता है।

हि घृतश्चुत=निश्चय पूर्वक ये पावन ऋचाए—आचारवान मनुष्यो को तेजस्वी बना देती है। तेजस्विता का सम्बन्ध चरित्र से है। वेद पर श्रद्धावान पुरुष सच्चरित्र होते है।

ऋषिभि संभृतो=ऋषि-महर्षियो द्वारा इन पवित्र मन्त्रों का अनुष्ठान किया जाता है। वही इन ज्ञान चिनगारियो को आत्मसात् करते हैं।

ब्राह्मणेषु रसो अमृतम्=विद्वान महापुरुषो में ये ऋचायें अमृतरस के समान ग्राह्य हैं। "रसो हि स:" ईश्वर रस है। उसका ज्ञान भी अमृतरस है। सन्तमना ही इसका पान करते हैं। हितम्=तभी सब का कल्याण सम्भव है। वेद के पवित्र ज्ञान ही हमारा जीवन अलम्बन बनें—प्रत्येक मनुष्य दयानन्द की सच्चाई को समझे—यही विश्व कल्याण का मूल मन्त्र है।

आर्य समाज, चन्दौसी-२०२४१२ मुरादाबाद (उ०प्र०)

संस्कृति राष्ट्र एवं हिन्दुत्व की धर्म निरपेक्षता

हरिवंश सोमनाथ त्यागी

बहुत से उत्तर-हिन्दुत्ववादी धर्माचार्य महाभारत के गौतम-चिरकारी प्रसंग से धर्म को प्राय. छोटा धर्म एवं बड़ा धर्म करके भी परिभाषित करते रहते हैं। तथा शान्ति पर्व के दुर्भिक्ष वश भूख से व्याकुल विश्वामित्र एव कुत्ते की टाग के प्रसंग से वे यह भी परिभाषित करते रहते हैं कि मानव जीवन का परम-लक्ष्य, मोक्ष, प्राप्ति के उद्देश्य से धर्मलाभ प्राप्त करने के लिए जीवित रहने की अपेक्षा से मजबूरीवश, मासभक्षण भी किया जा सकता है, (सदर्भ पुस्तक, श्री विद्यानिवास मिश्र कृत 'महाभारत के काव्यार्थ' जो एक प्रकार से मलेच्छतावादी औचित्य की ही स्वीकारोक्ति है।

लेकिन, धर्म के विषय में गहराई से परीक्षण करने के लिए जब हम आदि हिन्दुत्ववादी संस्कृति (अर्थात आदि-वैदिक संस्कृति वा वैदिक-संस्कृति) के मूल, न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग दर्शनों जैसे तथ्यगत यहा, आस्थाजनित कतई नहीं), तर्क सम्मत एव प्राथमिक शास्त्रो पर दृष्टिपात करते हैं तो हमे धर्म का अर्थ रामायण, महाभारत इत्यादि उत्तर-हिन्दुत्ववादी (अर्थात उत्तर वैदिक) साहित्य में वर्णित धर्म की व्याख्या से नितान्त भिन्न प्रतीत होता है।

भावनात्मक विचित्रता मे कुछ विषय हमें अवश्य ही जटिल प्रतीत होते हैं। परन्तु वे उससे अधिक जटिल नहीं होते हैं जितना कि नित्यप्रति अनुभव होने वाले अन्य विषय। यथा, आयकर-बिक्रीकर के या रेल के प्रपत्र। वास्तव मे कठिन बातें वे नहीं हैं जो वास्तव मे जटिल है। अपितु, कठिन बातें वे होती हैं जो अप्रत्याशित है। यथा, उन दिनो गैलीलियो द्वारा पाश्चात्यवादी जगत को अप्रत्याशित रूप से यह बताया जाना कि पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है।

यहां, हम केवल उत्तराग न्यायदर्शन, पूर्वांग वैशेषिक दर्शन, साख्य दर्शन एव योगदर्शन, इन चार शास्त्रों पर ही अधिक निर्भर करेंगे। तथ्यात्मक रूप से प्रतीत हो सकने योग्य इस अनन्त जगत मे जीवन-मरण से मोक्ष पर्यन्त हमारे सभी प्रश्नो का समाधान केवल इन चार परस्पर-परिपूरक शास्त्रों से ही पूरा पड जाता है। न्यायदर्शन से, हमे प्रतीत हो सकने योग्य, अध्ययनों के सिद्धात के तथ्यात्मक-तर्कपूर्ण निरूपण से (वैशेषिकि) पदार्थों को समझकर, साख्यिक विश्लेषण से सुनिश्चित हुए जीवन-मरण रूपी दुख अर्थात बन्धन के कर्म-वासना रूपी अविद्या का हिरण्यगर्भा—योगदर्शन के ज्ञानपूर्ण अभ्यास से अत्यन्ताभाव करके मोक्ष की स्थिति का आत्मसाक्षात्कार कर लिया, तो हमे अन्यान्य पचड़ों में पड़ने की कोई प्रासंगिता ही नहीं रह जाती है।

प्राय: प्रत्येक शास्त्र में कुछ शिल्पी शब्द विशेषार्थी होते हैं। वैदिक वैशेषिकि में, प्रतीत हो सकने योग्य इस अनन्त तथ्यगत जगत को अध्ययन की भाषागत सुविधा हेतु, पदार्थ (सत-पदार्थ वा सत, मैटर; कहा गया है तथा, इस सत्-पदार्थ अर्थात मैटर को द्रव्य(सब्सटैंस, मास अथवा व्याकरणार्थ संज्ञा, नाउन). गुण प्रापर्टी, क्वालीटेटिव मैटर, व्याकरणार्थ विशेषण एडजक्टि), कर्म (सत्ता, मोशन, मोड आफ एग्जिस्टैंस, व्याकरणार्थ वर्ब, यहा 'कार्य' अर्थात मूवमैंट नहीं), सामान्य-पदार्थ, विशेष पदार्थ एव समवाय पदार्थ एव असत् पदार्थ (मिथ्या-पदार्थ अर्थात इम्पासिबिलिटी) नामक सात उपवर्गो मे विभाजित किया हुआ है।

इन सात पदार्थ वर्गो मे से द्रव्य (मास, सब्सटैंस) नामक वर्ग के नौ उपवर्ग हैं क्षिति, जल, पावक, समीर आकाश(अर्थात अवकाश वा स्थान, इन्टरवल स्पेसियल वा टैम्पोरल इन्टरवल, यहा स्पेसियल डाइरैक्शन्स नही), दिक् (दिशा स्पेसियल डाइरेक्शन, स्पेसियल फारनैस—नीयरनैस, यहा, स्पेसियल इण्टरवल नहीं), काल टाइम, टैम्पोरल फारनैस- नीयरनैस, यहां, टैम्पोरल इण्टरवल नही), चित्त (मन अर्थात माइण्ड वा साइक, यहां बुद्धि अर्थात इण्टलैक्ट नही) एवं आत्मा (सोल)।

वैदिकि अर्थात आदि-हिन्दुत्व में द्रव्य (मास) के इन नौ उपवर्गो का द्रव्य के मौलिक वर्ग (ऐलीमैंट्री क्लासेज)अर्थात द्रव्यकी मूल इकाइयां वा तत्व, ऐलीमैंट्स कहा जाता है लेकिन ये तत्व इकाइया द्रव्यो की वर्गीकरण विषयक इकाइयां हैं, परिमाण (मात्रा क्वांटिटी, विषयक इकाईयानहीं है। जिस गुण-पदार्थ से हमे द्रव्य-पदार्थों (वस्तुओं) का छोटा या बड़ा होना प्रतीत होता है, उसे परिमाण (मात्रा) गुण कहते हैं। परिमाण कोई द्रव्य (मास) नहीं है, गुण (प्रापर्टी) है। परिमाण (मात्रा) विषयक मूल इकाइयां (प्राइमरी यूनिटस) को अणु-परिमाण अर्थात वह संभावित लघुतम द्रव्य-मात्रा जो एक देशीय हो, यथा वर्तमान मे, आधुनिक भौतिकि के न्यष्टि-कण, तथा विभु-परिमाण अर्थात वह सम्भावित द्रव्य-मात्रा जो सर्वत्र व्यापक (ओमनीप्रीजेण्ट) तो हो लेकिन उप-विभाजन रहित हो यथा दिक्काल, आत्मा एव ईश्वर। यहां वस्तु का रूप (विजिबिलिटी), आकार साइज) एवं मात्रा (क्वांटिटी) तो भिन्न तथ्य हैं कि बहुत सी अदृष्ट वस्तुयें भी परिमाणी हैं और परिमाण वाली ये वस्तुयें छोटे-बड़े आकार की भी होती हैं।

अणु-परिमाण एवं विभु-परिमाण, निराकार होने के कारण हमारी भौतिक इन्द्रियो (फिजिकल सैंसेज) को प्रत्यक्ष नहीं हो पाते हैं। अत: इन्हे अभौतिक-परिमाण नान फिजिकल क्वांटिटीज) भी कहते हैं। लेकिन, हमारी भौतिक इन्द्रियो को प्रत्यक्ष हो सकते योग्य आकारो (शेप्स) को भौतिक परमाण वा त्र्यणु वा त्रिसरेणु अथवा महत परममहत् परिमाण कहते हैं। लेकिन अत्यन्त आश्चर्यजनक वास्तविकता यह है कि महत-परिमाण की साकारता (शेप) अभौतिक परिमाणो की संयुक्त निराकारताओ के बजाय निराकार द्रव्याणु के संख्या नामक गुण का परिमाण अकमान, प्रभाव) है।

आदि-हिन्दुत्व की यहा, यह कोई हानि व ह्रास नहीं है कि जल इत्यादि, पूर्वांग वैदिक द्रव्यों के इन मौलिक इकाई-वर्गीकरणो की मात्रायें (क्वांटिटीज) अपने महत स्वरूप में विभाज्य है या अविभाज्य हैं। आधुनिक भौतिकि मे भी, कभी अविभाज्य समझी जाने वाली मूल-इकाई परमाणु (ऐटम) अब यदि विभिन्न न्यष्टि कणो में विभाज्य सिद्ध हो गई हैं, तो इससे इस आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान के आधारभूत सिद्धात का हनन तो हो नही गया है।

तथा उस अनन्त पदार्थ (मैटर) के तथ्यगत-प्रतीति वाले गुण भी अनन्त हैं। लेकिन अध्ययन की सुविधा हेतु उन अनन्त गुणों को 'रूपरसगन्धस्पर्शा: संख्या: परिमाणानि पृथकत्व संयोगविभागौ परत्वापरत्वे बुद्धय: सुखदु:खे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्च', शब्द, गुरुत्व, सस्कार (आधुनिक भौतिक विज्ञान का मूवमैंट अर्थात वर्क नामक प्रभाव इस सस्कार नामक गुण का गत्यात्मक-सस्कार नामक उपवर्ग है), धर्म (रैलीजन, यहा पंथ वा सैक्ट नहीं एवं कर्मकाण्ड का कार्य वा वर्क तो गत्यात्मक-सस्कार गुण होता है) अधर्म, अविद्या (वह गुण पदार्थ जो हमे ऐसे कार्यो को करने को विवश करता है जिन्हे हम बुद्धिपूर्वक जानते हैं कि वे हमें हानिकर एव न करने योग्य है), तथा ज्ञान (पैराडाइम डायरेक्ट प्रेक्टिकल नालिज, यहा ट्रासफर्ड इनफर्मेशन नही) नामक '२४ उपवर्गो में वर्गीकृत किया हुआ है और इन २४ गुणों मे से कौन कौन सा गुण उपरोक्त नौ मे से किस किस द्रव्य को समवायित है, यह भी इस तर्कसम्मत वैदिकि मे सुनिश्चित है।

उपरोक्त विवरण से निष्कर्षत स्पष्ट है कि वैदिक वैशेषिकि मे पदार्थ (आधुनिक विज्ञान का मैटर शब्द), द्रव्य (मास), गुण (प्रापर्टी) एव कर्म (मोशन) समानार्थी नहीं हैं। सभी पदार्थ द्रव्य नहीं हैं, सभी पदार्थ गुण नहीं है। तथा सभी पदार्थ कर्म नहीं हैं। कुछ पदार्थ द्रव्य हैं कुछ पदार्थ गुण हैं, कुछ पदार्थ कर्म हैं इत्यादि। यहां कर्म (मोशन, मोड आफ ऐग्जिस्टैंस वर्ब) एवं कार्य (वर्क, मूवमैंट अर्थात वैलोसिटी वा गति) भी समानार्थी नहीं हैं, क्योंकि कर्म तो प्रत्येक पदार्थ को समवायित सत्तापक्ष है जबकि आधुनिक भौतिकि का गति-प्रभाव तो वैशेषिकि का गत्यात्मक नामक सस्कार होने से एक गुण (पार्टी) वर्गीय पदार्थ हैं।

यहा, जड-पदार्थ (प्रकृति, नेचर) एव चैतन्य आत्म-द्रव्य के सांख्यिकि वर्ग भेदो से वैशेषिकि का यह कोई विरोधाभास नहीं है कि साख्यिकि मे धर्म को यदि (जड-पदार्थ) का विभाग (अंश) कहा है तो वैशेषिकि मे भी धर्म को जड गुण पदार्थ एव आत्मा को चैतन्य गुण पदार्थ कहा है। सांख्य-सूत्र ६/११ तथा गीताश्लोकों ३/५ एवं १४/५ के अनुसार सतोगुण एव तमोगुण नामक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वदेश गौरव : एक विवेचन

हमारा महान् राष्ट्र भारतवर्ष सब संसार के सम्मुख एक आदर्श रूप में प्रतिष्ठित है। ऐसा कहना सचमुच एक आश्चर्य-सा उत्पन्न करता है। क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों का इस वाक्य से ताल्मेल बिठाना 'कुछ अजीब-सा है। परन्तु इतिहास इस कथन की सत्यता में सबसे बड़ा साक्षी है। प्राचीनकाल से ही हमारा देश सब देशों में शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा, स्वाध्याय आदि क्षेत्रों में अग्रणी रहा है। सम्पूर्ण पृथ्वी से भिन्न-भिन्न देशों के निवासी यहां पर सुख-शान्ति एवं विद्यादि की खोज में आकर अपने-अपने आत्मा को उन्नत करते रहें हैं। इस देश की पावन धरा ने समय-समय पर समस्त संसार को अनेक महापुरुष एवं विदुषी स्त्रियां प्रदान की हैं। जिन्होंने अपने कर्तव्यों से प्राणिमात्र का बड़ा उपकार किया है। जिनकी सन्तानों में आज भी उनकी महानताएं दृष्टिगत होती हैं। सृष्टि के आदि समय से हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं सत्य-शाश्वत मान्यतायें सबके लिए ग्रहणीय रही हैं। इन्हीं कारणों से इसे आर्यो अर्थात् श्रेष्ठ सभ्य योग्य और धार्मिक मनुष्यों का देश 'आर्यावर्त्त' कहते हैं। पूर्व समय की भांति आज भी यहां के नागरिक सब देशों के मनुष्यों की उन्नति में अपनी उन्नति का उज्ज्वल भाव रखते हैं। इसी सम्बन्ध में महान् दार्शनिक एवंयुग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रख्यात ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा है -

"यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि के आदि में श्रेष्ठ लोग इसी देश में आकर बसे। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर जो सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहरूप विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।"

इसी प्रकार विभिन्न संक्रान्ति-कर्त्ताओं ने अपनी-अपनी लोह लेखनी से इसकी विशिष्टताओं को वर्णित किया है। परन्तु फिर भी जितना इस देश पर गर्व किया जावे, न्यून ही है। क्योंकि ईश्वरीय सृष्टि से लेकर पांच हजार वर्षो से पूर्व तक यह सकल ससार का अधिनायक रहा है। इसी समय अन्तराल में यहां के प्रशस्य आर्य राजा-महाराजाओं का एकमात्र सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि राज्य था। जिनमें सत्यवादी हरिश्चद्र पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र आदि प्रमुख हैं। लाखों वर्ष बीत जाने पर भी इनका यश: शरीर जीवित है। महाभारत काल पर्यन्त में हमारे आदर्श रूप रहे। दुर्भाग्य, विनाश काल वश हम घोर अज्ञानअन्धकार से निमग्न हो अपने आदर्श, गौरव हो भूल गये। सो तब से आज तक हम अपनी इस प्राचीन गौरवमयी स्थिति में नहीं आ सके। अपनी सत्य सनातन वेद-व्यवस्था से तटस्थ होकर हमने बहुत दु:ख भोगा है। कालवश में पड़कर हम पर विभिन्न देशी-विदेशी परिपन्थियों, शत्रुओं ने वज्रवत् प्रहार किये हैं। जैसे मुस्लिम शासकों एवं अंग्रेजों ने हमारा क्या-क्या नुकसान नहीं किया? हमारा क्या कुछ नहीं लूटा? इन परिपन्थियों के अत्याचारों एवं दु:खों से उपराम होकर छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह जी, महाराणा प्रतापसिंह, महारानी लक्ष्मी बाई और महर्षि दयानन्द आदि महामानवों ने इनसे महासंग्राम किया। इन उच्चतम आदर्शो से प्रेरित होकर गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय आदि क्रान्तिवीरों ने स्वराष्ट्र-सुरक्षा यज्ञ में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। इस महायज्ञ को हुए सैंतालीस वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। जिसकी पूर्णाहुति में असंख्य प्राणियों की जीवन रूप आहुतियां समर्पित हुई हैं, दान की गई हैं। स्वदेश-विचार करते समय प्रश्न यह उठता है क्या इतना विशाल महायज्ञ होने पर हम स्वच्छ वातावरण में श्वास पर श्वास ले रहे हैं? यदि नहीं तो पुन: ऐसे यज्ञ की आवश्यकता हैं। आज हमारे पास यज्ञ की जो कुछ भी सामग्री, समिधा, घृत आदि है, इन सबकी समाज सुधार में परमावश्यकता है। हमारे राष्ट्र को अब प्रशस्य नागरिकों की आवश्यकता है। आज यह अधिनायक राष्ट्र स्वय अपने में ही खोया हुआ है। परन्तु हमें ही इसका मार्ग दर्शक बनना है। हमारे ऊपर ही इसकी सुरक्षा का समस्त भार है। हमें सुरक्षा-साधनों का अनुसंधान करने की कोई आवश्यकता नहीं है। ईश दया से सुरक्षा-साधनों में सर्वोत्तम साधन 'वेद' हमारे पास हैं। आज केवल सच्चे व अच्छे व्यवस्थापकों को सगठित करना है। महादु:खों, समस्याओं की ओर भागती भोली जनता को अपनी ओर आकर्षित करना हमारा ही धर्म है। इस महत्त कार्य में संसार उपकारक आर्य समाज अवश्य हमारा साथ देगा। इसमे कोई अतिशयोक्ति नही होगी। आज भी हमारे पास सर्व भाषा जननी वैदिक सस्कृति व लौकिक संस्कृतभाषा की उपलब्धि का गौरव प्राप्त है। हमारे पास ज्ञान-विज्ञान का आज भी अक्षय भंडार है। जिनके द्वारा बड़े-बड़े शत्रुओं को जीता जा सकता है। ससार की बड़ी से बड़ी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है, भीषण संकटों को टाला जा सकता है। इतना सब सामान होने पर केवल महामानवों की कमी है। जिनका हम अपने प्रयासों द्वारा आवाहन करते हैं। अत: यह राष्ट्र आज भी समूचे भूमण्डल में प्रशंसनीय है। हम सबको अपने महान देश पर गर्व हो और हम सब मिलकर इसकी सुरक्षा-व्यवस्था करें। इसी में हमारा स्वदेश गौरव है।

संस्कृति राष्ट्र

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रकृति गुण वास्तव मे जड़-प्रकृति के कार्य ही है और कार्य तो सत्यात्मक-संस्कार होने से वैशेषिक में गुण कहलाता है।

और यहा अत्यन्त स्पष्ट है कि धर्म, परिमाण (निराकार-परिमाण या छोटा-बड़ा अर्थात महत् या परममहत् साकार परिमाण) प्रयास (प्रयत्न, विकास, अभ्युदय) एव ज्ञान परस्पर समानार्थी गुण नहीं हैं। अन्यथा शास्त्रों में इनकी पृथक-पृथक प्रस्थापनायें न दी होतीं और क्योंकि कोई भी गुण किसी अन्य गुण का आश्रय नहीं हो सकता है, 'द्रव्याश्रय्यऽगुणवान संयोगविभागेष्व-कारणमऽनपेक्ष इति गुणलक्षम' (वैशे. १/१६), अत: महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में धर्म को छोटा या बड़ा परिमाणयुक्त कहना, धर्म का अभ्युदय (विकास या प्रयत्न, अथवा ज्ञान या परमज्ञान को धर्म कहना अनैयायिक ही है। कदाचित, बुद्धि-गुणजनित मानवीय विवेकपूर्ण सुसंस्कृति के प्रति धनात्मक-दायित्वों (अर्थात कर्त्तव्यो) को ही उत्तरवैदिक सुधीजन 'धर्म' समझ बैठे हैं।

(क्रमश:)

आर्यसमाज और राजनीति (३)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की लोकसभा में भूमिका

बलराज मधोक

१९७५ में आपातकाल की घोषणा के बाद सभी विरोधी दल कुछ समय के लिए अप्रभावी और अप्रासंगिक हो गए। इन्दिरा गांधी की तानाशाही से मुक्ति प्राप्त करने के लिए १९७७ में जनता पार्टी बनी जिसमे जनसंघ और चौधरी चरणसिंह के लोकदल समेत सभी गैर कम्यूनिस्ट विरोधी दल विलीन हो गए।

१९७७ में जनता पार्टी की जीत राष्ट्रवादियों और आर्य समाज के लिए एक अवसर था। जनता संसदीय दल मे ९० सदस्य जनसघ घटक के, ८५ लोकदल घटक के, ४६ मोरार जी देसाई की सगठन कांग्रेस के, ३० समाजवादी दल के और २७ हेमवती नन्दन बहुगुणा की पार्टी के थे। चौधरी चरणसिंह प्रतिबद्ध आर्य समाजी थे। यदि जनसघ और लोकदल के सदस्य मिलकर काम करते तो उन्हें मोरार जी देसाई के संगठन के ४६ सदस्यो का समर्थन भी मिल सकता था और देश की राजनीति को महर्षि दयानन्द, डा० मुकर्जी और सरदार पटेल के चिंतन के अनुरूप राष्ट्रवादी दिशा दी जा सकती थी। परन्तु वाजपेई के नेतृत्व मे जनसंघ गुट की स्थिति 'शुतुर्बेमुहार' जैसी थी। मोरार जी देसाई और चौधरी चरणसिंह का चिन्तन और चरित्र एक जैसा था परन्तु उनमें एक बड़ी भावात्मक खाई थी जिसे जनसघ पाट सकता था परन्तु जनसंघ के नेतृत्व ने विचारधारा की अपेक्षा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और जनता दल को अपने नियन्त्रण मे लाने को वरीयता दी। इसके नेताओ मे मोरार जी देसाई और चौधरी चरणसिंह का मनमुटाव दूर करने के बजाय दो बिल्लियो की लड़ाई में बन्दर की भूमिका अदा करनी शुरू की। जनसघ के पास उपयुक्त विश्वसनीयता वाला ऐसा कोई नेता नहीं था जो प्रधानमन्त्री पद का दावेदार बन सकता और राष्ट्रवादी तत्वों को जोड़ सकता। फलस्वरूप जनता पार्टी का विघटन होने लगा और इन्दिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस के पुन: सत्ता मे आने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

वामपन्थी और साम्प्रदायिक तत्वों के प्रभाव मे आकर जनता सरकार ने १९७८ में अल्पसंख्यक आयोग बनाने का फैसला किया। जनता पार्टी के प्रमुख नेताओं में से केवल चौधरी चरणसिंह ने इसका विरोध किया। परन्तु जनसघ के विचारशील नेताओं ने इसका समर्थन किया। मैं उस समय संसद सदस्य नही था परन्तु जनतादल के स ग था। मैंने इस फैसले का कड़ा विरोध किया। जब मुरार जी देसाई ने सारी स्थिति मुझे बताई तब मैंने जनता पार्टी से त्यागपत्र देकर जनसघ को पुनर्जीवित करने का फैसला किया। इस प्रकार भारतीय जनसघ अलग सगठन के रूप मे १९७९ मे पुन. काम करने लगा।

जब जनसंघ घटक ने मार्च १९८० मे जनता पार्टी छोड़ने का फैसला किया तब मैंने इसके नेताओ को पुन: जनसंघ मे आने का आह्वान किया और जनसंघ के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देकर उन्हें अपनी मर्जी का अध्यक्ष बनाने की पेशकश की परन्तु जनसंघ में आने के बजाय उन्होने सघ के सहयोग से अप्रैल १९८० में भारतीय जनता पार्टी के नाम से एक नई जनतापार्टी बना ली और घोषणा की कि इसका भारतीय जनसंघ के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं। इसने जनसंघ नाम ही नही छोड़ा अपितु इसके केसरिया झण्डे और राष्ट्रवादी, हिन्दुत्ववादी विचारधारा से भी मुंह मोड़ लिया।

इस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में फिर वही स्थिति पैदा हो गई जो १९५१ में थी : भारतीय जनता पार्टी के रूपमें कांग्रेस जैसी एक और पार्टी अस्तित्व में आ गई। इसका कोई प्रभावी राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी विकल्प मैदान में नहीं रहा।

आर्य समाज के लिए यह स्थिति एक अवसर भी थी और चुनौती भी। यदि आर्य समाज उस समय भारतीय जनसघ को उसी प्रकार अपना लेता जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने भारतीय जनता पार्टी को अपना लिया था तो आर्य समाज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तरह अपना अलग अस्तित्व और चरित्र बनाए रखते हुए भारतीय राजनीति को अपने चिन्तन के अनुरूप ढालने के लिए प्रभावी भूमिका अदा कर सकती थी। ऐसा न करके आर्य समाज ने अपना भी अहित किया और जनसंघ का भी।

इस समय आर्य समाज के लोग कांग्रेस, भाजपा, जनसंघ और समाजवादी पार्टी आदि अनेक दलों मे बिखरे हुए हैं। कांग्रेस की नीति रीति पर उनका प्रभाव नगण्य हैं। यही स्थिति समाजवादी पार्टी मे गए आर्य समाजियो की है। भारतीय जनता पार्टी मे भी अनेक आर्य समाजी है परन्तु उनका उस पर भी वैचारिक प्रभाव नगण्य है। भारतीय जनता पार्टी का नेतृत्व यह मानता है कि सत्ता प्राप्ति के लिए इसे कांग्रेस जैसा रूप धारण करना होगा। इसलिए हिन्दुत्व की लहर के बल पर चुनाव जीतने के बावजूद यह व्यवहार मे कांग्रेस की बी. टीम बनती जा रही है।

सगठन और फैलाव की दृष्टि से आर्य समाज का भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनो में आज भी महत्वपूर्ण स्थान है। दिल्ली में ही २५० आर्य समाजें हैं, भवन हैं और हजारो सदस्य है। इसके द्वारा चलाई जाने वाली सस्थाओ की सख्या भी लगातार बढ रही है। बौद्धिक दृष्टि और राष्ट्रवाद के प्रति प्रतिबद्धता के मामले में इसके सदस्य आज भी सबसे आगे हैं परन्तु देश के राजनैतिक जीवन और नीतियों पर इसका प्रभाव लगातार कम होता जा रहा है। विचारवान आर्य समाजियो को यह स्थिति खलने लगी है।

आर्य समाजी बन्धुओ की राजनैतिक आकाक्षाओ का अपने व्यक्तिगत प्रभाव को बढाने के लिए उपयोग करने को दृष्टि से स्वामी अग्निवेश जो अब आर्य समाज से कट चुका है ने आर्य सभा का गठन किया है। अपना चिन्तन आर्य समाज के चिंतन से सर्वथा भिन्न होने के बावजूद आर्य सभा कुछ आर्य समाजियो को अपनी ओर खींचने में सफल हो रही है। इससे वैचारिक दृष्टि से प्रतिबद्ध आर्य समाजियो में विभ्रम व्याप्त हो रहा है।

इन हालात मे आर्य समाज के नेतृत्व को गम्भीरता से भारतीय राजनीति मे आर्य समाज की भूमिका पर विचार करना आवश्यक हो गया है। जन्म पर आधारित जातिवाद के बढते प्रभाव, मुस्लिम समस्या के १९४७ के पहले से भी अधिक उग्र रूप में पुनरोदय, सस्कृत और हिन्दी की कीमत पर अ ग्रेजी के बढते प्रभाव, नैतिक मूल्यो के ह्रास जन साधारण के हितो की कीमत पर जन जीवन और आर्थिक नीतियो पर बढते हुए विदेशी प्रभावों ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जो वैदिक आर्य हिन्दू सस्कृति और खंडित भारत की विशिष्ट हिन्दू पहचान के लिए भी खतरा बनता जा रहा है। वोट बैंक की राजनीति से सभी दल पूरी तरह ग्रस्त हो चुके हैं। सरकारी खर्च पर सभी दलों के नेताओ और मन्त्रियो द्वारा दी जाने वाली इफ्तार दावतें इसका एक छोटा सा प्रमाण है। बसन्त, होली, दशहरा और दीवाली जैसे राष्ट्रीय पर्वो को ईद जैसे मजहबी पर्वो के समकक्ष रखने से राष्ट्रीय और साम्प्रदायिक दृष्टि का भेद ही खत्म हो रहा है। आर्यसमाज इसके सम्बन्ध मे उदासीन नही रह सकता।

राजनीति मे सक्रिय रुचि लेने और अपने चिंतन के अनुरूप एक राजनैतिक दल को आगे बढ़ाकर आर्य समाज इस स्थिति मे बदलाव ला सकता है। इससे आर्यसमाज के सगठन को भी बल मिलेगा। यह युवको को अपनी ओर आकर्षित कर सकेगा और राजनैतिक दृष्टि से प्रबुद्ध और सक्रिय सदस्यो को नया कार्यक्षेत्र भी दे सकेगा। इस मामले में आर्य समाज राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के अनुभव से बहुत कुछ सीख सकता है। अपना सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप कायम रखते हुए संघ अपने कार्यकर्ताओं को विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय करके उनकी शक्ति का सदुपयोग कर रहा है और अपना प्रभाव क्षेत्र भी बढा रहा है। आर्य समाज का प्रभाव क्षेत्र और शक्ति बढने से राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ को भी आर्य समाज के प्रति अपना रुख बदलना पड़ेगा और इन दोनों संगठनों के बीच राष्ट्रहित में सार्थक सहयोग का मार्ग प्रशस्त होगा।

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंडन फरवरी—९५

साप्ताहिक सत्संगो का आयोजन नियमित रूप से किया गया जिसमे डा० सतीश सूद एव श्री सुदर्शना सूद श्री स्नेह शर्मा एव श्रीमती प्रतिभा शर्मा श्री सुरेन्द्र कुमार एव श्रीमती अरुणा कपूर और नवल बाबा एव श्रीमती आशा बाबा सत्संगो मे यजमान बनकर कार्यक्रमो की शोभा बढाई। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज तथा डा० ताना जी आचार्य ने सध्या यज्ञादि सम्पन्न कर यजमानो को आशीर्वाद दिया।

वेद सुधा के अवसर पर प्रो० भारद्वाज डा० तानाजी आचार्य एव डा० यज्ञमित्र अयगर ने वेदमन्त्रो की रोचक व्याख्या की। भक्ति संगीत के कार्यक्रम मे श्री लेखराम श्रीमती सावित्री छाबडा कैलाश भसीन स्वर्ण शर्मा यश वेदी शीशपाल प्रतिमा शर्मा अर्चना शर्मा श्री मोहनशर्मा श्रीमती आशा सब्बू सन्तोष मलहोत्रा पुष्पा गज्जर श्री प्रफुल्ल गज्जर श्रीमती सरोज सूद प्रेशा कहेर सुमन चोहडा और नीरज पाल ने मधुर स्वर मे भक्ति गीत तथा भजनो का गायन किया।

इसके अतिरिक्त विभिन्न अवसरो पर कुछ कार्यक्रम इस प्रकार रहे—

(१) डरबन-वेस्ट विले—साउथ अफ्रीका के विश्व विद्यालय मे अध्ययनार्थ हिन्दू सैन्टर खोला गया है। यह समाचार प्रो० भारद्वाज ने देते हुए भारतीय प्रधान मन्त्री श्री नरसिंह राव के सन्देश की समीक्षा की।

(२) बसन्त पंचमी—के शुभावसर पर डा० ताना जी आचार्य ने बसन्त पंचमी के पर्व के विषय मे जानकारी दी और उसे उल्लास और प्राकृतिक सौन्दर्य का त्योहार बताया।

नीरज पाल ने वीर बलिदानी हकीकत राय के धर्म प्रेम की हार्दिक प्रशंसा की और श्रद्धांजलि अर्पण की।

(३) सीताष्टमी—के उपलक्ष मे वेदपाठ की महिलाओ ने सीता के जीवन सम्बन्धी गीत गाए और कहा कि पतिव्रता सीता का जीवन सभी भारतीय महिलाओ को अनुकरणीय है।

(४) डा० सुरेश शर्मा ने महर्षि दयानन्द के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओ पर प्रकाश डाला।

(५) युवक सांस्कृतिक कार्यक्रम मे ऋषिबोध उत्सव और धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। इसमे अमित केहर वन्दना चोपडा कविता चोपडा सलीना प्रकाश शीना प्रकाश रवि गुलाठी किरण मोंगिया किरण धानी शरद शर्मा कुमुद शर्मा मनीश शर्मा, करण शर्मा तुषार भसीन प्राची भसीन ऋचा कहेर रितेश गांधी अनुकौरा और नकुल सामाने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढाई। श्रीमती कैलाश भसीन ने सफलतापूर्वक कार्यक्रमो का आयोजन और संचालन किया। श्री यशपाल गुप्ता जी ने कविता पाठ किया। श्री राजेन्द्र ओबराय श्री सुमन चोपडा एव श्रीमती कृष्णा तनेजा ने उनको सहयोग दिया। बच्चो को पुरस्कार वितरण, आरती शान्तिपाठ एव प्रीतिभोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

भारतीय उच्चायुक्त द्वारा आयोजित गणतन्त्र दिवस तथा स्व० राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह की श्रद्धांजलि के कार्यक्रम मे श्री भारद्वाज और श्री चोपडा ने भाग लिया।

मन्त्री—राजेन्द्र कुमार चोपडा
आर्य समाज लन्दन

पुस्तक समीक्षा

सामवेद भाष्य

पूर्वार्चिक पृ० ५२४ मूल्य २२५ रुपये
उत्तरार्चिक पृ० ६८६ मूल्य २२५ रुपये
प्रकाशक :
कृष्णलाल वेद प्रकाशन संस्थान सुन्दर नगर
फजलपुर, मेरठ (उ० प्र०)
पद्यमय—गीतकार-भाषान्तरकार
श्री रामनिवास विद्यार्थी

प्रस्तुत पुस्तक सामवेद जो वेद चतुष्टय का तृतीय सोपान है। समय-समय पर भिन्न-भिन्नविद्वानों द्वारा की गई व्याख्या देखी व पढ़ी। परन्तु जो सामवेद गेय गीत हैं—उस पर किसी भी विद्वान ने रुचि नहीं दिखाई। परन्तु प्रिय बन्धु श्री रामनिवास जी विद्यार्थी जो कभी हिन्दी आन्दोलन १९५७ में मेरे साथ फिरोजपुर पंजाब की कारा के बन्दी थे मौन शान्त स्वभाव वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व को मैं उन ६ मास के समय में जान न सका। परन्तु चिर अन्तराल के बाद विद्यार्थी जी एक वैभव पूर्ण व्यक्तित्व लिये "साम-गान" साम की ऋचाओं का हिन्दी पद्य-गेय गीतों में दो भाग मुझे प्रदान किये। मैं आश्चर्य में था कि सरल शान्त स्वभाव में विशाल प्रतिभा का अम्बार छिपा है।

सामवेद का पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दोनों भाग देखें एक विद्वान की प्रतिभा उसकी अपनी शैली से प्रकट होती हैं।

साम स्वय में गान-प्रधान वेद है जिसे हिन्दी पद्यमय करके गीतिका में प्रस्तुत करना गुरुतर कार्य था। परन्तु साहसी विद्यार्थी में विद्या का निवास था फिर पानी की बाढ़ को बांध कैसे रोक सकता है—'कार्यं वा साधयेयम्" कार्य की साधना मुख्य थी।

सफलता सामने देख मैं स्वय हृतप्रद था।

पुस्तक अपने में—

वेद मन्त्र अपने सामगान सहस्रधारा में प्रवाहित अपौरुषेय ज्ञान जो समान ईश्वरीय गुण-कर्म के स्वभाव समान में उपासक भी अपने में अनुभव कर सकूं। उपास्य का गुण उपासक में आना"साम" है।

साम-समन्वय शान्ति-भक्ति उपासना का नाम है जगत जीव जगदीश्वर मे समन्वय देखना साम है विश्वात्मा की विश्वव्यापी शाश्वत संगीत ही साम है। अत: विद्वान कवि ने उपासना परक अर्थ लेकर ही गायन किया है।

साम-वेद के मन्त्रों का पदार्थ तथा ऋषि, देवता, छन्द और स्वरों का विवेचन भी किया है। गीतों को आपने रूपमाला मिताक्षरी, गोपी-प्रणय, पंचचामर, दिकपाल, अरुण वसन्त तिलका, छप्पय, ताटक सुमेरु, हरि, आदि छन्दों मे गीतों को बांधकर साम के मन्त्रों को सुलभ किया है। इसी से वेद का अनुवाद कभी भी सम्भव नहीं है।

इस साम में "साम-सम्मित मृचा सम" मैंने इति नैदानाः (नि० ७। ३) साम-सान्त्व प्रयोगे। ऋग्भिः शंसन्ति यजुर्भिभजन्ति सामभि स्तुवन्ति ऋचाओं से शंसन यजुषो से यजन् तथा साम गायनों से स्तवन किया जाता है।

ऋच्यव्यूट साम गीयते ऋचा-स्तुति में अधिष्ठित साम गान गाया जाता है।

ब्रह्म ज्ञान का जनगण अन्तर में करके दिव्य प्रकाश।
संज्ञापाई विज्ञों से समुचित राम निवास।

लेखक विद्वान् प्रतिभा पूर्ण विज्ञ हैं साथ ही प्रकाशक ने इस वेद की वीथि को प्रकाशित कर कृपा की कृपणता न कर उदारता का परिचय दिया है। साधुवाद के पात्र हैं।

पाठक वृन्द इस काव्यमय ग्रन्थ का आस्वादन करें जिससे मन मस्तिष्क को सही खराक मिले। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कुरान शरीफ में ओ३म्

(पेज ३ का शेष)

कुरआन मे इस अलिफ, लाम, मीम पर प्रकाश डाला है। आप लिखते हैं—

कुरआन मे प्रथम अध्याय है सुरह अलबकद अर्थात गाय का अध्याय। इस अध्याय मे ईश्वर, समाज, स्त्री व गाय पर मिले जुले विचार प्रकट किये गये हैं, इस अध्याय की प्रथम आयत निम्न प्रकार हैं।

अलिफ, लाम, मीम जाले कल किताबों ला रैब। अलिफ, लाम, मीम हमने तुम्हे किताब दी है इसके आसमानी होने मे कोई शका नही।

प्रश्न यह है कि जालेकल किताबो ला रैब का अर्थ है तब अलिफ, लाम, मीम का अर्थ क्यो नही ? यदि है तो लिखा क्यों नही गया। हमारे मौलवी बन्धु कहते है कि यह तो अल्लाह का हुक्म है कि इसका कोई अर्थ ही नही है किन्तु शका का समाधान केवल यह कह देने मात्र से नही हो जाता-कर्म-हुआ इसका अर्थ है कोई कर्ता अवश्य है। ज्ञात होता है कि किसी बात को छिपाया जा रहा है। हमारी मान्यता है कि वैदिक धर्म से बचने के लिए इन शब्दो का अर्थ नही किया गया। देखे —

अलिफ · अ · परमात्मा या अल्लाह
लाम · उ···प्रकाश करने वाला या जीवात्मा
मीम···म्···कल्याण कारक या प्रकृति

लेख की समाप्ति के पूर्व आप लिखते है—कुरआन मे ओ३म् है।

सत्य है कहा जाये या न कहा जाये। खिडकी है चाहे खोली जाये या न खोली जाए किंतु सत्य है तो उसे खोला जाना चाहिए। खिडकी है तो उसे खोला जाना चाहिए।

कोई माने या न माने किंतु वह तो सत्य है कि कुरआन मे ओ३म् है। वास्तव मे सस्कृत समस्त भाषाओ की जननी है। कोई भी भाषा उससे अछूती नही इसलिए कही न कही किसी न किसी रूप मे वह सर चढकर बोल ही जाती है। बुद्धिजीवी वर्ग तो इस बात को स्वीकार करता ही है और कोई करे या न करे उसके करने या न करने मे होना भी क्या है ? यह सत्य है कि कुरआन मे ओ३म् है।

कुरान और ओ३म्

डा० श्रीराम आर्य, अपनी पुस्तक कुरान प्रकाश के पृष्ठ १५० पर इस विषय पर लिखते है.

कुरान शरीफ पारा १० सूरे अन्कबूत आयत। मे लिखा है—अल्लाह के नाम से जो रहमवाला कृपालु है। अलिफ, लाम, मीम।

कुरान के टीकाकार मो० बशीर अहमद एम० ए० ने अपने कुरान के पा० ३ सूरे अल इमरान नं० ७ पर फुटनोट पर लिखा है—मुताबिह वे है जिनको कई पहलुओ मे समझ सकते है या वे अक्षर है जिनका तात्पर्य कोई नही जानता, जैसे अलिफ, लाम, मीम (ऐसा ही नोट सूरे बकर की पहली आयत पर भी लिखा है)।

इसका तात्पर्य यह है कि अलिफ, लाम, मीम इन अक्षरो का अर्थ कुरान के भाष्यकार भी नही समझ पाए है या जान बूझकर वे अर्थ खोलना नही चाहते है।

अरबी के व्याकरण के अनुसार वाउ अक्षर लाम का स्थान ग्रहण कर लेता है अलिफ+वाउ+मीम मिलकर सीधा सा शब्द ओ३म् बन जाता है जो कि परमात्मा का मुख्य नाम है। इस प्रकार कुरान मे ओ३म् के नाम को परमेश्वर के लिए प्रयोग स्पष्ट है।

अत: कुरान शरीफ मे ओ३म् है। विद्वानो को विचार करके छिपी हुई रहस्य को उजागर करना चाहिए।

कोरबा (पूर्व) बिलासपुर (म.प्र)

योग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत, श्री कृष्ण कुमार शास्त्री प्रधान, श्री मोहन लाल आर्य मन्त्री, श्री विश्राम सिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज हल्द्वानी, श्री करनसिंह जी प्रधान, श्री पृथ्वीराज जी बुल्बर मन्त्री, श्री नानकचन्द जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज नगीना, बिजनौर, श्री रामचरण शास्त्री प्रधान, श्री बुद्धसिंह आर्य मन्त्री, श्री शिवकुमार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज डा० मुखर्जीनगर (ईस्ट) दिल्ली, श्री ठाकुर दास सपरा प्रधान, श्री वी० के० चौधरी मन्त्री, श्री वीरेन्द्र नारंग कोषा०।

—आर्य समाज बाडी, श्री प्रतापसिंह आर्य प्रधान, श्री देवेन्द्र कुमार जी आर्य मन्त्री, श्री गुलकन्दीराम आर्य कोषा०।

—आर्य समाज हमीरपुर, श्री ज्ञानचन्द आर्य प्रधान, श्री योगप्रकाश नन्दा मन्त्री, श्री बंशीलाल शर्मा कोषा०।

—आर्य समाज कठुआ, श्री भारत भूषण जी महाजन प्रधान, श्री मदन लाल जी रैना मन्त्री, श्री सुभाष जी उब्बट कोषा०।

—आर्य समाज रेवाड़ी, श्री नाथूराम जी शर्मा प्रधान; श्री रामकुमार शर्मा मन्त्री श्री सुखराम आर्य कोषा०।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर कानपुर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल परिमण्डल कानपुर के तत्वावधान मे २५ जून से २ जुलाई ९५ तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर औरैया मे डा० अजब सिंह यादव प्रधानाचार्य के संयोजकत्व मे किया जा रहा है। इस शिविर मे प्रातः जागरण से लेकर रात्रि शयन तक पूर्ण दिन चर्या सुन्दर ढग से चलाई जाएगी। आसन, प्राणायाम, योग, सध्या, हवन, जूडो, कराटे, लाठी आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा। युवाओ को प्रेरित कर प्रशिक्षण हेतु नामाकन कराए, स्थान सीमित है।

आर्य समाज स्थापना दिवस

जबलपुर नगर की समस्त आर्य समाजो द्वारा आर्य समाज गजीपुरा के तत्वावधान मे दो दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशाल जन सभा श्री रोशन लाल सचदेव की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का सचालन श्री जयसिंह गायकवाड प्रधान आर्य समाज गजीपुरा द्वारा किया गया। समारोह मे नगर की समस्त आर्य समाजो के वरिष्ठ तथा समर्पित कार्यकर्ताओ का अभिनन्दन किया गया।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मुजफ्फरपुर बिहार का ९८ वा वार्षिकोत्सव दि० ७ से १० अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन तथा गोरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्य-क्रमो मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

—आर्य समाज गोसपुरा न० १ ग्वालियर म० प्र० का वार्षिकोत्सव २८ मार्च से १ अप्रैल तक धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह मे अनेको कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्यभिक्षु दिवस्य पुत्र भारती स्वामी यज्ञ मुनि जी तथा श्री प्रेमप्रकाश जी गाधीसहित अनेको विद्वानो ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

श्रीराम जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर सनवाड उदयपुर राजस्थान मे श्रीराम जन्मोत्सव श्री ख्याली लाल आर्य की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा० एस० पी० सिंह सहित अनेको वक्ताओ ने श्री राम के चरित्र से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

आर्यसमाज बांकनेर, दिल्ली का ४४ वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

१ व २ अप्रैल १९९५ को आर्य समाज बाकनेर, दिल्ली का ४४ वां वार्षिकोत्सव धूमधड़ाके तथा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। शनिवार १ अप्रैल को वृहद यज्ञ के पश्चात श्री इन्द्र राज सिंह, विधायक नरेला की अध्यक्षता तथा श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा, प्रेम सांसद पूर्वी दिल्ली के सान्निध्य मे विशाल खेल-मेले का उद्घाटन हुआ जिसमे स्वामी गोरक्षानन्द महाराज ने आर्य युवकों को वीर तथा भारतीय संस्कृति के रक्षक बनने का आह्वान किया मुख्य अतिथि श्री सन्तोष कुमार सभ्रवाल, निदेशक, सामुदायिक सेवा विभाग, दिल्ली नगर निगम ने खिलाडियो को "स्पोर्ट्स कोटे" से विशेष सुविधाएं देने का आश्वासन दिया। उन्होने ग्राम बांकनेर के लिए चालीस लाख रुपये की लागत से तैयार होने वाले सामुदायिक विकास केंद्र तथा केंद्र बाजार निर्मित कराने की भी घोषणा की।

२ अप्रैल रविवार को हुए पारितोषिक वितरण समारोह मे खिलाडियो के लिए ग्राम बांकनेर को आधुनिक तकनीक से सुसज्जित दो लाख रुपये से तैयार होने वाली व्यायामशाला देने का आश्वासन भारतकेसरी पद्मश्री सतपाल ने दिया। इस शुभ अवसर पर अनिल भारद्वाज, बाकनेर तथा उनके गुरु आनन्द प्रकाश एन० आई० एन० कोच का ग्यारह सौ रुपये से शिकागो में ग्राम बांकनेर तथा भारत का नाम ऊंचा करने पर अभिनन्दन किया गया। दिल्ली सरकार के शिक्षा एवं विकास मंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने खिलाडियों को हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा नवयुवकों को सच्चे आर्यवीर बनने की प्रेरणा दी। डा० तुलसीराम, डा० महावीर तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने नवयुवको को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

श्री मांगे राम आर्य प्रधान आर्य समाज बांकनेर ने सभी को उनके भरपूर सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

मेहर लाल पंवार
मंत्री
आर्य समाज बाकनेर, दिल्ली

हीरक जयन्ती समारोह

गढ़वाल आर्योपप्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्यसमाज टिहरी गढ़वाल का हीरक जयन्ती समारोह ५ से ७ मई तक समारोहपूर्वक आयोजित किया जा रहा है समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा नेताओं को आमन्त्रित किया जा रहा है। आप से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर सम्मेलन को सफल बनाये।

सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

समस्त प्रतियोगियों को सूचित किया जाता है कि सत्यार्थप्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले प्रतियोगियों का परिणाम शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। परीक्षा पुस्तक निरीक्षित होकर आ गई है। परिणाम शीघ्र घोषित किया जायेगा।

—डा० ए० वी० आर्य रजिस्ट्रार

वधु चाहिए

प्रेम गंगा की धारा बहाते रहो

रचयिता : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आया पावन समय सुअवसर बड़ा, ज्ञान ज्योति का दीपक दिखाते रहो।
सद्गुणों की सुगन्धि लुटाते रहो, सोई जनता को घर-घर जगाते रहो॥
ओम का ध्वज उठा करके निज हाथ में, सत्य पथ की तरफ बढ़ाओ कदम
सत्य पथ के प्रेरक दयानन्द का शुभ सन्देश चहुंदिश फैलाते रहो॥१
कस कमर ठोक भुजदण्ड चलते रहो, शांतिप्रद वेद वाणी के प्रचार को।
देश परदेश प्रान्त नगर ग्राम में, पाप पाखण्ड जहां हों मिटाते रहो॥२
धूप-छांव सर्दी व बरसात हो, ईश विश्वास लेकर के चलते रहो।
उड़ा दो धज्जियां मतमतांतरों की, ज्ञान ज्योति का दीपक जलाते रहो॥
पुत्र भगवान के जो अलग हो रहे, शुद्ध करके भरो राष्ट्रीय भावना।
बिखरे मोती पिरो संगठन माल में, प्रेम गंगा की धारा बहाते रहो॥४
दो सच्चाई का वेदों का डंका बजा, मिल जयघोष वैदिक धर्म की करो।
है तमन्ना यही स्वरूपानन्द की, यह शुभ कार्य नित अपनाते रहो॥

प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर आर्य वीर दल मध्य प्रदेश

आर्य गुरुकुल होशगाबाद मे १८ से २८ मई तक आर्य वीर दल मध्यप्रदेश द्वारा प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है इस शिविर में सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, अस्त्र शस्त्र प्रशिक्षण, कुंग्फू, मल्लखम्ब तथा बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक प्रवचन आदि के द्वारा सुसंस्कारित, समर्पित, देशभक्त, बलिदानी, चरित्रवान और जुझारू नवयुवकों का निर्माण किया जाएगा। इस शिविर मे देश के कोने कोने से लगभग ३०० से अधिक शिविरार्थी भाग ले रहे हैं अतः आप सब धर्मप्रेमी जनों से तन मन धन से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा है विस्तृत जानकारी के लिए श्री आदित्यपाल सिंह आर्य प्रान्तीय मन्त्री आर्य वीर दल मध्यप्रदेश एफ ५/५२ चार इमली भोपाल म०प्र० से सम्पर्क करें।

आर्य समाज महरौली नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज महरौली नई दिल्ली का वार्षिक उत्सव दिनाक २० से २६ मार्च तक बडी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकाल विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया तथा रात्रि में प० नन्दलाल निर्भय के भजन तथा वैदिक विद्वान भिक्षु दिवस्य पुत्र भारती के प्रवचन हुए। २६ मार्च को मुख्य कार्यक्रम तथा महर्षि बोधोत्सव जगदीश हाल मेहरौली में आयोजित किया गया। जिसमे दक्षिण दिल्ली की ५० आर्य समाजो ने भाग लिया। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किये। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार आर्य तथा मंच संचालन आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के महामन्त्री श्री रामचन्द्र दास आर्य ने कुशलता पूर्वक किया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज दीनदयालनगर का ७७ वां वार्षिकोत्सव दिनाक ४ से ७ मई तक समारोह के रूप मे आर्य समाज के प्रांगण में मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, सन्यासी, वानप्रस्थी आर्य भजनोपदेशक एव उपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेको विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

उत्सव की सफलता हेतु तन-मन-धन से सहयोग देकर हमें कृतार्थ करें एवं कार्यक्रमों में पधार कर आध्यात्मिक लाभ उठावें।

आर्य समाज पाली का निर्वाचन

आर्य समाज पाली जनपद-हरदोई उ० प्र० का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से दिनांक २-४-९५ को सम्पन्न हुवा। जिसमे नीचे लिखे पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान—श्री बाबाराव बाजपेई
मन्त्री—श्री करुणाकान्त मिश्र
कोषाध्यक्ष—श्री जयप्रकाश मिश्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक ११]   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   वैशाख शु० ७   सं० २०५२   ७ मई १९९५

वर्तमान परिस्थितियों में जम्मू कश्मीर के चुनाव देश के लिए घातक

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जम्मू-कश्मीर में विधान सभा चुनाव कराना तय हो गया है। सवाल सिर्फ यह है कि चुनाव किस तारीख को होंगे। क्या ये चुनाव १८ जुलाई को राष्ट्रपति शासन के समाप्त होने से पहले हो जायेंगे या फिर कुछ महीने बाद ? यदि बाद वाला विकल्प चुना गया तो राष्ट्रपति शासन १८ जुलाई से आगे बढ़ाने के लिए संविधान में संशोधन करना पड़ेगा। दूसरा सवाल यह है चुनाव से पहले या उसके बाद किस तरह का राजनैतिक दृश्य उभर कर सामने आने की सम्भावना है ?

चुनाव कराने के केन्द्र के फैसले का विरोध कांग्रेसियों के एक तबके सहित करीब करीब सभी राजनीतिक दल कर रहे हैं। उनकी मुख्य दलील यह है कि राज्य के हालात अभी तक चुनाव के लिए अनुकूल नहीं हुए हैं। डा० फारूख अब्दुल्ला का कहना है कि उनकी नेशनल कान्फ्रेंस चुनाव में इसी शर्त पर भाग लेगी कि सरकार राज्य में "अन्दरूनी स्वायत्तता बहाल करने के बारे में अपनी स्पष्ट घोषणा करे। अलगाववादी इस आधार पर चुनाव का विरोध कर रहे हैं कि यह 'आत्म निर्धारण" के अधिकार का विकल्प नहीं है ? पाकिस्तान भी शांतिपूर्ण चुनाव के रास्ते में हर सम्भव अड़चन डालने की कोशिश करेगा ! खास तौर से कश्मीर घाटी में।

इस बात से कोई इन्कार नहीं किया जा सकता कि यदि कानून व्यवस्था और राजनीतिक माहौल को ही मापदंड माना जाय, तो राज्य में अभी हालात स्वतन्त्र व निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए अनुकूल नहीं है। बन्दूक का आतंक अभी भी शांतिपूर्ण चुनाव के रास्ते में रोड़ा बना हुआ है। राजनीतिक दल अभी भी जन-जन तक पहुंचने की स्थिति में नहीं है।

श्री टी० एन० शेषन आश्वस्त होने के बाद भी राज्य में निष्पक्ष चुनाव नहीं करा पायेंगे'।

राज्यपाल ने घोषणा की है कि चुनाव जून में कराए जायेंगे। वे इस काम के लिए राज्य के लकवा ग्रस्त प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त करने में लगे हैं। यदि केन्द्र सरकार राज्य को किसी तरह की अन्दरूनी स्वायत्तता देने के लिए कदम उठाती है तो इसका मतलब यह होगा कि देश में अनेकों स्वायत्त द्वीप बनने का खतरा पैदा हो जाएगा।

यदि सरकार चुनाव कुछ महीनों के लिए टाल देती है तो उसे राज्य में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने के लिए संविधान में संशोधन कराने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

सार्वदेशिक सभा का साधारण अधिवेशन २७ तथा २८ मई को हैदराबाद में

प्रतिनिधि सदस्य ध्यान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आगामी त्रैवार्षिक अधिवेशन २७, २८ मई १९९५ को भारतीय विद्या भवन, नजदीक एम० एल० ए० क्वाटर्स हैदरगुडा (सूर्यनगर) हैदराबाद में होगा।

समस्त प्रतिनिधियों को एजेन्डा भेजा जा चुका है। समय पर पहुंचने के लिए अपना आरक्षण अभी से करवा लें जिससे बाद में आपको कोई कठिनाई न हो। इस अवसर पर चार राज्यों, आन्ध्र-प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा तमिलनाडु का संयुक्त आर्य महासम्मेलन भी सम्पन्न होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्य समाज लंदन मे ऋषि बोध उत्सव (मार्च–९५)

मार्च मे साप्ताहिक सत्सगो मे श्री सुभाष वर्मा एव श्रीमती राज वर्मा, डा० सुरेश शर्मा एव डा० कल्पना शर्मा और आर्य परिवारो ने यजमान बन्कर कार्यक्रमो की शोभा बढाई। प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज और डा० तानाजी आचार्य ने सन्ध्या-यज्ञादि सम्पन्न कर भक्तजनो को आशीर्वाद दिया तथा पश्चात वेदमन्त्रो की सरस व्याख्या की। भक्ति सगीत के मच म श्री मेघराम दासवय, श्रीमती सावित्री छावडा, यश वेदी, स्वर्णा शर्मा, सन्तोष मल्होत्र नलिनी गुरदयाल, सुरक्षा वर्मा, शैली साभा और व जुप्रकाश ने मधुर भजनो का गायन किया।

(१) ऋषिबोध उत्सव का पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसमे श्री बलदेव मोहन मेहता ने महर्षि दयानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाओ की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि स्वामी जी एक महान युगपुरुष थे। इस अवसर पर श्रीमती छावडा और वेदपाठ की महिलाओ ने महर्षि के गुणगान परक गीतो का गायन किया।

(२) प० सहदेव मलहोत्रा ने भारतीय (आर्य) सस्कृति की श्रेष्ठता का परिचय देते हुए उसके प्रचार और प्रसार के विभिन्न उपायो पर प्रकाश डाला। व्याख्यान के निष्कर्ष के रूप मे उन्होने कहा कि प्रथम अपने को आर्य बनाकर ही दूसरो को आर्य बनाया जा सकता है।

(३) श्री विनोद बढेर ने सभी हिन्दू समाज को सगठित रहने की प्रेरणा दी।

(४) प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने ले० अरुण शौरी की पुस्तक की समीक्षा की और वर्तमान भारतीय शासन की परस्पर विरोधी और अराष्ट्रीय नीतियो को उजागर किया।

(५) श्री गिरीश खोसला, मन्त्री आ प्र स नार्थ अमेरिका ने अमेरिका में स्थित आर्य समाजो के वर्तमान प्रचार कार्यो की गतिविधियो तथा योजनाओ को बताया और श्री चमनलाल गुप्ता, प्रचारमन्त्री न वेद और वैदिक सस्कृति की प्रासगिकता को सक्षेप मे कहा। आर्य समाज लडन मे उनका विशेष सम्मान किया गया।

(६) होली के शुभावसर पर, डा० ताना जी आचार्य न होली के एतिहासिक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक धार्मिक और विभिन्न पक्षो पर सक्षेप मे अपने विचार देते हुए कहा कि इस होली-मिलन के शुभपर्व पर हम परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, अहकार, अज्ञान, दुर्भावनाए, सकुचितता, स्वार्थ आदि बुरितो का परित्याग कर सबका गले लगाए सबको प्यार द और इस ससार को मधुमय और मनोहर बनाने का प्रयत्न करे।

(७) श्री जगदीश कौशल, सम्पादक अमरदीप हिन्दी साप्ताहिक के सम्मान मे विश्व हिन्दू केन्द्र साउथाल मे एक भव्य कार्यक्रम किया गया। तदथ प्रो० भारद्वाज और श्री राजेन्द्र चोपडा वहा पर गए थे। उन्होने मौरीशियस दिन के उपलक्ष्य मे आयोजित कार्यक्रम मे भी जाकर उसकी शोभा बढाई।

(८) टी० वी० दूर दर्शन पर डा० तानाजी आचार्य की होली क शुभावसर पर एक भेंट वार्ता १७ मार्च ९५ को प्रसारित की गई। होली के पर्व के विभिन्न पक्षो पर प्रकाश डालते हुए उन्होने सभी को होली मिलन की शुभकामनाए दी।

(९) युवक सास्कृतिक कार्यक्रम मे अमर बलिदानी श्री भगतसिंह राजगुरु, सुखदेव और प० लेखराम के त्याग और बलिदान का सबको स्मरण दिलाते हुए उन्हे श्रद्धाजलि अर्पण की गई। इसमे निम्न लिखित युवक और युवतियो ने भाग लिया—

अमित कहेर रविगुलाटी, ज्योति शर्मा, हुमा केशव सुजाता शर्मा, शैली कपिला, मनीषा शर्मा, राहुल शर्मा किरण मोंगिया, श्रीनाथ्रकाश सविता प्रकाश, शरद शर्मा और वदना चोपडा।

छात्राओ का होली पर आधारित विशेष भागडा नृत्य हुआ। हिन्दी के विद्यार्थियो का राष्ट्रीय गीत हुआ जिसे श्रीमती सुमन चोपडा और श्रीमती कृष्णा तनजा ने तैयार किया था। इस सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन और सचालन श्रीमती कैलाश मसीन ने सफलता पूवक किया।

अरदास आरती, शान्तिपाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

(राजेन्द्र चोपडा)
मन्त्री
आर्य समाज लडन

श्रीमती सरला देवी दिवंगत

प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री की धर्मपत्नि प्रिय भाई अशोक कुमार आर्य (लन्दन) की माता जी का देहावसान हो गया। अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। अन्तिम समय मे प्रिय अशोक जी लन्दन से आ गए थे। उन्ही के हाथो मे "भस्मान्त शरीरम" की क्रिया सम्पन्न की गई। शान्ति यज्ञ से पूर्व उनके पार्थिव की भस्मी महर्षि दयानन्द गोसम्वर्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर दिल्ली मे बखेर दी गई।

समस्त आर्य जगत की ओर से दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई और पारिवारिक जनो को उनका वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

तपोवन का ग्रीष्मोत्सव सुन्दरता से सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून) मे ग्रीष्मोत्सव के कार्यक्रमो बृहत यज्ञ और योग-साधना शिविर का समापन रविवार १३ अप्रैल को श्रद्धा तथा पवित्रता के वातावरण मे हुआ।

तदनन्तर आश्रम के विशाल प्रागण मे समारोह आरम्भ हुआ। मच पर सन्तो, महात्माओ, विद्वानो व अन्य निष्ठ म आश्रम के स्वामी-गण उपस्थित थे। जिन्होने भजन तथा उपदेशो के माध्यम से श्रोताओ को लाभान्वित किया।

युवा आकाशवाणी कलाकार श्री मुदित कुमार नागर ने श्री रवीन्द्र जैन की रचना 'हम आर्य हम श्रेष्ठ, आर्य समाज हमारा है" को भैरवी के स्वरो मे आबद्ध करके जो गाया तो हजारो श्रोता स्वर-लहरी मे बहते प्रतीत हुए।

कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ कर के हुआ।

देवदत्त बाली, मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा नहीं दी जाएगी

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति का गठन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की गत ६ अप्रैल ९१ की घटनाओं से उद्वलित हुए हरिद्वार क्षेत्र के आर्य समाजियो की एक हंगामी बैठक आर्यसमाज आर्य नगर परिसर मे श्री अर्जुनदेव जी पूर्व प्रिंसीपल ज्वालापुर इण्टर कालेज, एवं अधिष्ठाता तथा पूर्व कुल सचिव गुरुकुल कांगड़ी की अध्यक्षता में हुई। यह बैठक क्षेत्रीय आर्य परिषद हरिद्वार ने बुलाई थी।

समाचार पत्रों में छपी रिपोर्ट बैठक के संयोजक तथा आर्य समाज हरिद्वार के प्रबन्धक डा० वीरेन्द्र कुमार जी पवार ने पढ़कर सुनाई और उपस्थित ग्यारह संस्थाओं के प्रतिनिधियो और सैकड़ो विद्यार्थियो ने अपने मान्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर एवं कुलपति और कुलाधिपतियों के साथ की गयी मारपीट पर तीव्र आक्रोश प्रकट किया गया। बैठक में सीनेट की दृढ़ता पर उन्हें बधाई दी गई कि वहां प्रदर्शित गुण्डागिरि के बावजूद वे गुरुकुल कांगडी में सहशिक्षा की मांग को ठुकराते रहे। वास्तव में गुरुकुल मे नियुक्त कुछ गैर आर्य समाजी और पौराणिक प्राध्यापक योजनाबद्ध रूप से गुरुकुलीय आर्य समाजी इयत्ता को नष्ट करने का सुनियोजित षडयन्त्र बनाए हुए हैं और इस योजना को विफल करने का बैठक में सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया। घोषणा की गयी कि गुरुकुल भूमि में कभी भी सह शिक्षा नहीं होने दी जाएगी। यह दायित्व हरिद्वार के नगर निवासियों का है कि वे अपनी कन्याओं के लिए कालिज बनायें और चलाएं और उसमें हम भी सहयोग देंगे। परन्तु घेराव और गुण्डागर्दी की धौंस में हमें मजबूर नही किया जा सकता कि हम २० करोड़ रुपया अपनी शक्ति से इकट्ठा करके ऐसा कन्या कालिज खोलें।

बैठक मे यह मांग की गई कि शिक्षक संघ इस मुद्दे को जो महज प्रबन्धकों पर सतत दबाव रखने के लिए चलाया जा रहा है और उसके जो चार प्राध्यापक मारपीट की आयोजना में प्रमुख थे, उनकी अविलम्ब सेवा समाप्त की जाए। बैठक मे यह भी विचार उमड़ा कि राजनैतिक पार्टियां गुरुकुल कांगड़ी पर ललचाई दृष्टि न डालें। उनका क्षेत्र अलग है और शिक्षा का क्षेत्र अलग है तथा गुरुकुल की आर्य सामाजिक धारणा पर कोई आघात सहन नही किया जाएगा। आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतो के नष्ट करने हेतु कोई समझौता नही किया जा सकेगा, चाहे हमे कितना ही बलिदान करना पड़े। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए "गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति" का गठन किया गया। जिसमें इक्कीस सदस्य वाली समिति गठित की गयी। जिसके संरक्षक डा० रामेश्वर दयाल पन्त पी. एच. डी. अध्यक्ष आर्य समाज के पुराने महारथी और गुरुकुल कांगड़ी को संकट के दिनों में बचाने वाले श्री अर्जुनदेव जी चुने गए।

अन्ततः आर्य भारत के ही मूल निवासी सिद्ध

भारतीय अमरीकी विद्वानो के एक वर्ग ने दावा किया है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे, परिस्थितिकीय और राजनैतिक कारणो से भारत से ही आर्य पश्चिम एशिया होते हुए यूरोप तक पहुंचे। शोधकर्ताओ ने यह दावा ताजा पुरातात्विक अनुसंधानों, भूजल सर्वेक्षणो उपग्रह से प्राप्त चित्रों, प्राचीन शिल्पों की वैज्ञानिक तिथियो, ज्यामिति और वैदिक गणित के सटीक आंकड़ो के आधार पर किया है। उनका मानना है कि महाभारत का समय ईसा से लगभग ३१०२ वर्ष पूर्व था और सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व मे सूख गयी थी। भारतीय यूरोपीय इतिहासकारों का अभी तक यही मत रहा है कि मध्य एशिया से आर्यो ने ईसा से १५०० वर्ष पूर्व भारत पर उत्तर पश्चिम छोर से आक्रमण किया। यहा के मूलनिवासी दविड़ो को पराजित किया। सिन्धु घाटी मे उनके नगरो को तबाह किया और द्रविड़ो को हजारो मील दूर देश के सुदूर दक्षिणी हिस्से में धकेल दिया। लेकिन जिन तर्को के आधार पर यह बात कही गई थी, भारतीय, अमरीकी इतिहासकारो ने उन्हें हर ढंग से गलत साबित किया है।

इन इतिहासकारों का तो यह भी मानना है कि आर्यावर्त ने मध्य एशिया यूरोप और मिश्र से ज्यामितीय सिद्धांत नही सीखे बल्कि उन्होने ही आर्यावर्त के वैदिक गणित और सूत्रों का सहारा लिया। मिश्र के पिरामिड मुस्तबा कनस्तान चित्त और वैदिक हवन कुंड के आकार पुरस्कार की जबर्दस्त ज्यामितीय समानतायें इसकी प्रमाण हैं। यदि आर्य १५०० ईसा पूर्व में भारत आये होते तो हड़प्पा के नगरों का वास्तुशिल्प वहां बनी, हवन वेदियां, और शहर जो लगभग २७०० ईसा पूर्व में अपने चरम शिखर पर थे उनकी ज्यामिती सुलभसूत्रों के अनुरूप कैसे ढल जाती।

भारतीय अमरीकी इतिहासज्ञो के ये नए प्रमाण वास्तव में भारतीय यूरोपीय इतिहासकारो के कुल मे खलबली मचाने वाले हैं। आर्यो को आक्रांता बताने वाले भारत यूरोपीय इतिहासकारो के लिए गहरी चिंता का कारण यह भी हो सकता है कि इतिहासकारो के इस नए वर्ग के प्रमाण सिर्फ वृत्तात्मक न होकर उपग्रह के चित्रो ज्यामिति शास्त्र, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों जैसे नये संसाधनो के सहारे की गई खोज का नतीजा हैं।

आर्यो को विदेशी आक्रांता बताने वाले इतिहासकारो का मत रहा है कि सभ्यता का उदय मैसोपोटामिया की नदी घाटियों से हुआ कि हड़प्पा के नगर नियोजन पर यूनानी ज्यामिती की छाप है कि भारत से आयरलैंड तक भाषाओं में समानता का कारण भी यहां कि आर्य मध्य एशिया से भारत आये थे। इन सब तर्को को भारतीय अमरीकी शोधकर्ताओं ने खोखला साबित करने का दावा किया है। इन शोधकर्ताओं में अमरीका की अन्तरिक्ष संस्था नासा के सलाहाकार डा० राजाराम डेविड फावले, जार्ज फ्यूरिस्टीन, हैरी हिक्स, जेम्स शेफर और मार्क केनोयर प्रमुख हैं। सर्वश्री एस. आर. राव, एस. पी. गुप्त, बी जी. सिद्धार्थ, पी. बी. पठान और भगवान सिंह भी इसी मत के समर्थक हैं।

डा० राजाराम का मत है कि १९ वीं शताब्दी के भाषाशास्त्र के सिद्धांत ऐसा ऐतिहासिक परिदृश्य खींचते हैं। पिछले दो हजार वर्ष की भारतीय परम्परा को खारिज करने की सलाह देता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखकर उन्होने भारतीय इतिहास की जड़ों की ओर लौटना शुरू किया तो पाया कि महाभारत का समय ईसासे हजारों वर्ष पूर्व के आस पास का था इस काल का निर्णय कई तरह से किया गया। महाभारत के इस काल को मिथक नहीं कहा जा सकता क्योंकि उपग्रह से प्राप्त चित्रों से पता चलता है कि सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व में सूख गई थी महाभारत के वर्णनो में सरस्वती का उल्लेख मिलता है।

सुलभ सूत्र में हवनकुंड की जो ज्यामिति दी गई है। वह ३००० ईसा पूर्व के हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में पाई जाती है। सूत्रों के रचियता अश्वलायन ने महाभारत के प्राचीन ऋषियों का उल्लेख किया है और इन्हीं सूत्रों को हड़प्पा सभ्यता के समय साकार पाया गया। लिहाजा हड़प्पा के शहर २७०० ईसा पूर्व में जिस समय अपने गौरव के चरम पर थे उससे कहीं पहले महाभारत का युद्ध हुआ था।

इन सब ठोस प्रमाणों के आधार पर इन इतिहासकारो ने प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र ३१०२ ईसा पूर्व में हुए महाभारत से पकड़ने शुरू किये। इससे यह तर्क स्वतः खारिज हो जाता है कि सभ्यता का अंकुरण ३००० ईसा पूर्व में मैसापोटामिया से हुआ।

जनक राम आर्य

देश भक्तों ने 'भारत माता' के लिए बलिदान दिया 'इण्डिया माता' के लिए नहीं।

—मांगेराम आर्य

भारतीय संविधान की पहली धारा/अनुच्छेद में देश का नाम "इण्डिया, दैट इज भारत" लिखकर देशभक्तों के बलिदान का अपमान किया गया है आगे संविधान मे कहीं 'भारत' नाम का उल्लेख नहीं किया गया है।

तिरुनेलवेली पोलीगर लीग के प्रधान वीर पण्डया कट्टाबम्मन को १७ अक्तूबर १७९९ को फांसी दे दी गयी। चित्तूर की रानी चानम्मा ने ब्रिटिश जेल में ११ जुलाई १८३० को अन्तिम सांस ली। बुन्देलखण्ड मे फरवरी १७७४ मे मदकोर शाह को फांसी दे दी गई। दक्षिण मे मुबारिजुद्दौला ने ब्रिटिश जेल में १८५४ मे अन्तिम सांस ली।

दिल्ली के राजा बहादुरशाह जफर ने अपील की "हिन्दुस्तान के बेटो, विजय करो—धर्म और देश को मुक्त कराना है" १८५७ में अनेक नगरों की दीवारों पर क्रांति के विज्ञापन लगे हुए थे—अब या कभी नहीं, भारत माता युद्ध करने जा रही है, आगे बढ़ो—आगे बढ़ो।

१८४४ में मेजर बौन्दन ने बैरकपुर की छावनी मे वर्दी और वेतन में ४ रुपये बढ़ाने की मांग करने पर उन सैनिकों को तोपों से उड़ा दिया। ८ अप्रैल १८५७ को मंगलपाण्डे ने फांसी के तख्ते पर झूलकर स्वाधीनता संघर्ष मे आहुति दी। मंगल पांडे का आदेश न मानने वाले जमादार ईश्वरीय पांडे को भी फांसी दी गई। ३४ नं० पलटन के सूबेदार को गुप्त सभाएं करने के अपराध में फांसी दे दी गई।

कश्मीरी गेट दिल्ली शस्त्रागार पर अधिकार करने के प्रयास में ११ मई १८५७ को ३०० के लगभग नागरिक और सैनिक शहीद हुए। १६ मई को दिल्ली मे अंग्रेजी शासन का कोई चिन्ह नहीं था। बादली (दिल्ली) की सराय पर ग्राम घरेला के रामकिशन शहीद हुए। २५ अगस्त १८५७ को नीमचवासी नवाबों और शहजादों की पलटन को नजफगढ़ मे अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया। बहादुरशाह जफर की रंगून कारावास मे ७ नवम्बर १८६२ को मृत्यु हो गई। दिल्ली में अंग्रेजों ने कत्ले आम किया। दिल्ली के अलीपुर गाव के ३६ देशभक्तों को फांसी दी गई, ग्राम बाकनेर के गुलाबसिंह और उसकी बहन को पेड़ों के साथ कीलों से जड़ दिया। वे बलिदान हो गए। उदमीराम (लिबासपुर सोनीपत) को एक वृक्ष से बांध दिया गया। वह भूखा प्यासा ३५ दिन पश्चात बलिदान हो गया।

पंजाब में सैनिकों ने ग्रामवासियों को पंक्ती मे खड़ाकर फांसी पर लटका दिया। होती मरदान की ५५वीं रेजीमेंट के अधिकांश सैनिक बलिदान हो गए। अंग्रेज अधिकारियों ने कश्मीर में नृशंस हत्याकाण्ड किया। क्रान्तिकारी रावतुला-राम (रिवाड़ी) काबुल मे २३ सितम्बर १८६३ में अन्तिम सांस ली। झज्जर के नवाब अब्दुल रहमान और बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह को चांदनी चौक कोतवाली (दिल्ली) मे फांसी दी गई। इस क्षेत्र के अन्य १३१ बलिदानियों की सूची प्राप्त है। नादरी उत्तर प्रदेश) के राव रोशन सिंह के २ पुत्रों बिशन सिंह और भगवन्त सिंह को फांसी पर लटकाया गया। बनारस मे अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों को ८ व ९ के आकार में पेड़ों पर फांसी पर लटकाया, गांव के गांव जलाकर नष्ट कर दिए। भागते हुओं को गोली से उड़ा दिया। इलाहबाद मे अंग्रेजों ने ६ हजार स्वतन्त्रता सेनानियों को फांसी पर लटकाया। २८ जून १८५७ को नाना साहब के लगे दरबार मे 'राजा रामचन्द्र की जय' का नारा लगाया।

कानपुर मे अंग्रेजों ने असंख्य देशभक्तों को फांसी पर लटका दिया। जीवित शहीद नाना साहब १९०२ में स्वर्ग सिधारे। इटावा में अंग्रेजों ने २०-२५ क्रांतिकारियों को बम से उड़ा दिया। क्रान्तिकारी भागते हुए शहीद हुए।

लखनऊ के सिकन्दरा बाग मे देशभक्तों की लाशों के ढेर हो गए। मौलवी अहमदशाह (अवध) को धोखे से कत्ल किया गया। बिहार के पीर अली ने फांसी के तख्ते पर चढ़कर कहा था, "तुम मुझे फांसी दे सकते हो, किन्तु हमारे सिद्धांत और आदर्श नहीं ले सकते। वीर कुंवरसिंह २४ अप्रैल १८५८ को स्वर्ग सिधार गए। कुंवर सिंह ने अन्तिम संदेश में अपने भाई अमर को कहा, जिस वतन के लिए वीरों ने खून बहाया है उसकी रक्षा करना, अमर!" जगदीशपुर मे रहने वाली वीरांगनाओं ने तोप के मुंह के सामने खड़ी होकर देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। १७ जून १८५८ को महारानी झांसी ने रणभूमि में बलिदान दिया। उड़ीसा के सम्बलपुर के राजा सुरेन्द्र साही को १८६२ मे देश से निकाला दिया। कोटा (राजस्थान) के वीर जयदयाल को तोप के मुंह मे बांध कर उड़ा दिया गया। असम के दीवान मनीराम दत्त और उसके साथी प्याली बरुआ को फांसी दी गई।

वीर शिरोमणि तात्या टोपे को फांसी पर लटकाया गया। पेशवा राव साहब को २१ अगस्त १८६२ को फांसी दे दी गई। १८६४ से १८७१ तक अनेक वहाबियों (मुसलमानों का एक सम्प्रदाय) को फांसी पर लटकाया गया। १८६३ से १८७२ तक असंख्य कूके (पंजाब) रणभूमि मे बलिदान हुए। ४८ को तोप से उड़ा दिया गया। अंग्रेजों ने कूका नामधारी एक बच्चे को यह कहा कि तू यह कह दे कि मैं गुरु रामसिंह का चेला नहीं हूं। इस पर उस वीर बालक ने उस अंग्रेज अधिकारी की दाढ़ी खींच ली। अंग्रेज ने अपनी दाढ़ी छुड़ाने के लिए उस देशभक्त गुरु भक्त बालक के हाथ काट दिए, और फिर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। गुरु रामसिंह १८८५ में रंगून की जेल में स्वर्ग सिधार गए।

राजनारायण बोस ने 'हिन्दूमेला' का वार्षिक आयोजन आरम्भ किया। तिलक ने 'गणेश पूजा' 'शिवाजी जयन्ती' और 'महाराणा प्रताप जयन्ती' के आयोजन का शुभारम्भ किया।

कांग्रेस समर्थित पत्र 'तरुण भारत' केवल भारतीयों की मांगे प्रकाशित करता था। १८८२ मे बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा रचित अमर गीत 'वन्देमातरम' के गाने पर अनेक देशभक्तों ने गोलियां खाई।

२८ दिसम्बर १८८५ को ब्रिटिश सरकार के अवकाश प्राप्त आई०सी०एस० अधिकारी सर एलन आक्टेवियन ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की। इस कांग्रेस अधिवेशन का समापन 'महारानी विक्टोरिया की जय' के जयकारों के साथ हुआ। १८८५ से १९०५ तक कांग्रेस ने स्वराज्य की कोई मांग नहीं की।

आधुनिक भारत निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है "जब से विदेशी शासक राजसत्ता सम्भाल बैठे हैं, तब से बराबर भारतवासियों मे दुख की वृद्धि होती जाती है" गुरुवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा कि दयानन्द ने भारत को जागृत किया। लोकमान्य तिलक ने कहा 'स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेश वाहक थे। दादा भाई नौरोजी ने कहा, "मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों मे स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है।" १९०७ में उपराज्यपाल पंजाब ने आर्य समाज को राजद्रोही गतिविधियों का केन्द्र बताया। विपिन चन्द्र पाल का कहना है, आधुनिक राष्ट्रीय चेतना का जन्म आर्य समाज से हुआ।" १८९३ से १९४७ तक अधिकांश देशभक्त आर्य शिक्षण संस्थाओं से प्रभावित रहे।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, "यदि तुम अपने देश का कल्याण करना चाहते हो तो प्रत्येक को गुरु गोविन्द सिंह बनना होगा। सर सैयद अहमद खां ने कहा कि हिन्दू मुसलमान सुन्दर दुल्हन की दो आंखे हैं। इसमें एक आंख को चोट पहुंचे तो चेहरा बदरूप जाएगा। १९१० मे देश से निष्कासित अरविन्द घोष ने कहा, "हमारे राष्ट्रीय जीवन की पूर्ति स्वराज्य है।" जीवित शहीद लोकमान्य तिलक ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिलने पर कोई आंसू नहीं बहाया और कहा, "मैं अपने सारे आंसू अपनी मातृभूमि के लिए बहा चुका हूं।" (क्रमशः)

समाज हित में वानप्रस्थाश्रम

डा० रामेश्वर दयाल गुप्त एम० ए०

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के दस नियमो मे प्राथमिकता तो वैदिक आध्यात्म दर्शन को दी गई है। कुछ नियमो मे आर्यो का परम-धर्म और "मुख्य उद्देश्य" बताया है पर अन्तिम में सम्पूर्ण समाज की व्यवस्था का मूल सिद्धान्त वर्णित है कि—

"सब मनुष्यो को सामाजिक-सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियमो में स्वतन्त्र रहें"।

इसमें व्यक्ति की निजी हितकारी क्रिया-कलाप में अपने ही बनाये नियमों (स्वतन्त्र) से बाध्य रहने की बात है, पर उसे उन नियमों के आधीन किया है जो व्यवस्था ने सार्वजनिक (न कि बहुमत या अल्पमत मात्र) के हित सम्बर्द्धन हेतु बनाये गये हो।

अपने समाज में दोनों प्रकार के नियमो को युगो-युगो से वर्णाश्रम व्यवस्था का नाम दिया गया है। इसे मात्र व्यवस्था ही न कहकर परवर्ती वैदिक साहित्य ने वर्णाश्रम-धर्म तक कहा गया है। वर्ण तो मानव समाज के लिये कार्य विभाजन करके विभिन्न वर्गों में सन्तुलन रखता है ताकि एक वर्ग ही सर्व शक्तिमान न हो जावे और हरेक को सामाजिक क्षेत्र मे कुछ उत्पादन या योगदान करना अनिवार्य हो। कोई निठल्ला रह कर प्रकृति और समाज से भोग पदार्थ पाने का अधिकारी नहीं है। यह उसकी परतंत्रता है।

परन्तु आश्रम-व्यवस्था को सीमित और परिपालन मे वह अपने लिये स्वतन्त्र रूप से निर्णय करने को आजाद है। आश्रम चार हैं, प्रथम ब्रह्मचर्य अर्थात् २५ वर्ष का—शिक्षा-सत्र। द्वितीय अर्थात् अगले २५ वर्ष का वैवाहिक गृहस्थ जीवन ताकि पितृ-ऋण से उऋण हो सके। तृतीय अगले २५ वर्ष हेतु वानप्रस्थ में गृह-त्याग कर पत्नी सहित वन मे या उपवन में या किसी रमणीक स्थान या सार्वजनिक शिक्षण या धार्मिक या—राजनैतिक क्षेत्र मे अवैतनिक सेवा कार्य को ताकि ऋषि (या गुरु) ऋण को चुका सके। और फिर चतुर्थ जिसमें सब कुछ छोड़ (पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा) को त्याग कर या तो परिव्राजक बन चरैवेति-चरैवेति अर्थात धर्मोपदेश करे किम्वा साधना से प्रभु चिन्तन की तपस्या करे। इन आश्रमो मे आध्यात्मिकता नहीं है। मनुष्य जहां तक बने माने या न माने। पूर्ण विद्या पढ़े या थोड़ी या कतई नहीं। विवाह करे या पूर्ण कुंवारा रहे। ब्रह्मचर्याश्रम के बाद ही सन्यासी हो जावे या क्रमश गृहस्थी मे जीवन काट दे या वन की प्राकृतिक।

सुषमा का आनन्द ले अपने स्वार्थ मे लगा रहे या शिक्षक, उपदेशक या चिकित्सक बन कर परमेश्वर के पुत्रों (मानवो और पशुओं) की सेवा करे। और अन्त में संन्यासी बने चाहे न बने।

अपनी आयु १०० वर्ष न मानता हो तो जितनी मानता हो उसका चौथाई भाग क्रमशः चारो हेतु सुनिश्चित कर ले।

मैंने अपने पुत्र के पुत्र (पौत्र) के जन्म पर नामकरण वाले दिन ही वानप्रस्थ की दीक्षा ली थी। तब मैं ५४ वर्ष का था। शास्त्रो मे ये सही कहा गया था।

इसलिये ५० को पार करके लेट होने में मेरा दोष न था। पर रिटायर्ड तो ५८ पर होते हैं। कभी हिन्दू-राज्य में व्यवस्था होगी कि वानप्रस्थियों का पालन राज्य की जिम्मेदारी है। अब तो राज्य "धर्म-निरपेक्ष" है। अभी १९६९ के बजट में बूढ़ो के लिए सरकार ने ६५ से ऊपर के गरीबो को अर्थात् १००० रुपये वार्षिक से कम आय वालो को ३५० रुपया मासिक पेन्शन देने की घोषणा की है। अच्छा है कि बेचारा इतने पैसों से प्रातः-साय चाय राज्य की ओर से पी सकेगा। सो मैंने नौकरी नहीं छोड़ी पर यह व्रत-अवश्य लिया कि उससे बचा समय आर्य-समाज की सेवा और वेद-प्रचार मे लगाऊंगा।

मैंने व्यक्तिगत उदाहरण आश्रम-पालन की अनिवार्यता न होने के प्रमाण में दिया है। यो चारों वेदों में वानप्रस्थ की आश्रम व्यवस्था का कहीं उल्लेख नहीं है, ताकि माप-दण्ड निर्धारित होता। यह व्यवस्था तो महाराज मनु की है। एक और उदाहरण कविवर कालिदास के रघुवंश महाकाव्य से देता है। इस सब कथन का उद्देश्य लोगों द्वारा हम वानप्रस्थियो पर हुए आक्षेपो के उत्तर हेतु है कि हम लोग आयु-परिसीमा नही पालते हैं, या सतत धार्मिक प्रचार या समाज सेवा या शिक्षण-आदि मे क्यो नही लगे रहते और अपनी गृहस्थी से चिपके और सतत धनोपार्जन मे लगे अर्थकामी अब भी हैं।

तो रघुवंश की परम्परा उदभासित कहते हुए कहते हैं कि रघुवंशी शैशव मे विद्या मे अभ्यस्त, यौवन मे सद्गृहस्थ, वार्धक्य मे मुनि-वृत्ति वाले तथा अन्त मे आध्यात्मिक वातावरण में देह त्यागते थे। पर यहां प्रयुक्त शब्द 'मुनि-वृत्ति' ही है। सो, जब महाराज दशरथ वार्धक्य को प्राप्त हुये, तब उन्हें जरठपन ने अन्तर्प्रेरणा दी। रामचरित मानस में भी यह चेतना यो वरणित है—

श्रवन समीप भये सित केसा।
मनहु जरठपन पिस उपदेसा॥
नृप जुवराज राम कहु देऊं।
जीवन जनम लाहु किन लेहूं॥

—अयोध्या काण्ड, दोहा-१ के बाद

और उन्होने राज्य का चार्ज रामचन्द्र जी को देने की घोषणा कर दी। यदि व्यवधान न पड़ा होता और महाराजा दशरथ का जीवन बना रहता तो वे, कालिदास के अनुसार मुनिवृत्ति लेकर जगल को चले गये होते।

३—और यह मुनि-वृत्ति तो स्वय जैन-बौद्ध दर्शन की देन है। ऋषि और मुनि का युग्म तो वैदिक एवं जैन दर्शन के सम्मिलन के बाद निर्मित हुआ है। ऊपर प्रयुक्त वैखानस शब्द ही बौद्ध-वाङ्मय का है आर्य संस्कृति तो ऋषि बनाना चाहते थे। हमारे अन्य महाकाव्यों में ऋषियो के आश्रमो का उल्लेख मुनि-वृत्ति का नहीं। इन आश्रमो में उनके शिष्य ब्रह्मचारी भी ऋषियो के संग में ही निवास करते थे। राजा राम के काल में भी ऐसे अनेक आश्रम देश में बहुत प्रसिद्ध थे। भारतीय जनता वहां महर्षियो के चरणो में बैठ कर अपने जीवनों को सफल बनाया करते थे। अतएव यहां के निवासियो के चरित्र का स्तर बहुत ऊंचा था। ऋषि दुखियों के दर्द की दवा भी देते थे। इस-लिए कई लोग आश्रमों मे रहकर शान्ति लाभ करके लौट जाते थे। राजा-महाराजा भी समित्पाणि होकर महर्षियो के चरणो मे अपने मुकुट मस्तक झुकाया करते थे। वे ऋषि प्रजाओ के लिए आचार मर्यादाओ की स्थापना किया करते थे। आश्रमो मे बैठकर ही आरण्यक, श्रुति, स्मृति शास्त्रो की रचना की गई थी। इन श्रुतियों व स्मृतियों को ही जनता अपना संविधान मानती थी। संक्षिप्त रूप में इतिहास वर्णित कुछेक ऋषियो के आश्रम की रूप रेखा भी यहां प्रस्तुत की जाती है। आश्रम परिवर्तन अनिवार्य नहीं है पर आश्रमो की शृंखला बनाना सामाजिक हितकारी होने से बाध्यकारी है। उस युग मे निम्न आश्रम बनाये गये।

अ. महर्षि भारद्वाज का आश्रम :

इनका आश्रम तीर्थराज प्रयाग के समीप था। इस आश्रम मे हजारो ऋषि-महर्षि-विद्वान-ब्राह्मण ब्रह्मचारी रहते थे। इस आश्रम मे हर्म्य और प्रासाद आदि भी थे। दशरथ पुत्र भरत जब अपनी सेना सहित राम को वापिस लिवाने के लिए जा रहे थे, तो इन्हीं महर्षि ने उनका तथा उनकी सेना का भारी आतिथ्य सत्कार किया था। ये महात्मा प्रचुर विद्वान थे। इन्होने व्याकरण शास्त्र, आयुर्वेद शास्त्र और विमान शास्त्र आदि अनेक शास्त्र रचे थे।

संस्कृति राष्ट्र एवं हिन्दुत्व की धर्म निरपेक्षता

हरिजन सोमनाथ त्यागी, अमरोहा

धर्म को अमरत्व (मोक्ष वा जीवन) तथा अधर्म को मृत्यु कहना भी अवैशेषिक है, विपर्यबुद्धि है, अवैदिक है। धर्मलाभ प्राप्त करने की अपेक्षा से जीवित रहने की अनिवार्यता भी कोई नैयायिक शर्त नहीं है।

अजर अमर आत्मद्रव्य के साथ-साथ उसको समवायित धर्मगुण भी जीवन-मृत्यु निरपेक्ष है। शरीर-क्षेत्र के जीवित या मृत होने से आत्मद्रव्य का आश्रित धर्मगुण का कुछ भी लेना देना नही है कि भूखवश मृत्यु हो जाने से धर्मलाभ अप्राप्य रह जाएगा, जो महाभारत मे विश्वामित्र जी से कहलवा लिया गया है कि मोक्ष प्राप्ति की अपेक्षा से जीवित रहने के लिए मांसाहार का भी सहारा ले लिया जाये। साख्यतर्क भी यही है कि जीवनमरण का कारण धर्म नही, वासना सस्कार-कर्म (कार्य) रूपी अविद्या का बन्धन है। "पापी नरके जायते पुण्यवान स्वर्गे। धर्मात्मा बद्धयते च ज्ञानी मुच्यते॥" ऋग्वेद मन्त्र ७।२८।४ मे झूंठ बोलने वाले को दुष्ट, पापी कहा गया है न कि अधर्मात्मा। पापी एव अधर्मात्मा अथवा पुण्यवान एव धर्मात्मा परस्पर पर्यायवाची शब्द नही है।

तथापि, यदि हम मनुष्यो को धर्मलाभ द्वारा ही आत्ममुक्ति हेतु जीवित रहने का कोई औचित्य है भी, तो हमारी आत्मा की ही भाति कुत्तो आदि जीव-जन्तुओ की आत्माओ को भी आत्ममुक्ति हेंतु जीवित रहने का उतना ही अधिकार क्यो न हो जितना कि हम मनुष्यो को है? "आत्मवत् सर्वभूतेषु"। बहुत से शरीरधारी जीव मासाहारी हैं, बहुत से जीव शाकाहारी भी हैं। लेकिन, मनुष्य-सस्कृति (इनसानियत) एव पशु-संस्कृति (हैवानियत) मे कुछ तो अन्तर है।

धर्म नामक यह विशेष जड़गुण-पदार्थ तो चैतन्य-आत्मद्रव्य नामक पदार्थ के आश्रित हैं, न कि मन, वचन (शब्दाकाश) वा कर्म (कार्यगुण या कर्म नामक पदार्थ) के। रूप, रस, स्पर्श, गंध इत्यादि, पदार्थ तो पावक, जल, वायु, क्षिति इत्यादि, जड़द्रव्य-पदार्थो के गुण हैं न कि उनके धर्म हैं। धर्म तो चैतन्य आत्म-द्रव्य को समवायित एक विशेष गुण है। धर्म एक गुण है, लेकिन प्रत्येक गुण को धर्म कहना अशास्त्रीय है। इस कारण मनसा-वाचा-कर्मणा से प्रसिद्ध 'सत्य वद' इत्यादि सत्य बोलना तो आत्मा के बजाय मन वा आकाश जैसे जड़द्रव्यो व कार्यो जैसे जड़ संस्कारगुण को ही सदर्भित हो सकता है। आदि-वैदिक संस्कृत भाषा मे सत्य (बोलना) को शुभ कहा गया है। लेकिन शुभाशुभ तो सांस्कृतिक प्रसग होते है। कहा जा सकता है कि मनसा-वाचा कर्मणा से प्रसिद्ध सत्य बोलना और धर्म नामक आत्मगुण दो भिन्न तथ्य हैं। सत्यवत, अहिंसा, अस्तेय एवं अपरिग्रह नामक यमों को भी धर्म कहना, वास्तव मे विपर्यय-बुद्धि है।

और जिस प्रकार, सत्य (वा असत्य) बोलना एव सत-पदार्थ पर्यायवाची नही हैं उसी प्रकार सस्कृत भाषा शब्द "धृ" धातु से धारण-करना के सामान्यार्थ से तत्वशास्त्र के केवल एक विशेषगुण "धर्म" को ही प्रस्थापित किया जाना सकीर्ण बुद्धि है। 'धारण करना' अर्थात आश्रयदाता होने के अर्थ से तो धर्म के अतिरिक्त "सख्या परिमाणानि बुद्धयः सुखदुखे इच्छाद्वेषो प्रयत्नाश्च" इत्यादि अन्यान्य आत्मगुण भी तो आत्माद्रव्य को ही धारित हैं। गीता श्लोको १८/३३—३५ से तो मन, प्राण, इन्द्रियो की क्रियायें, अर्थ, काम, निद्रा, भय, चिन्ता, दुख और उन्मात्तता भी मनुष्य मे धर्म के ही समकक्ष धारित हैं।

यहां ऐसा प्रतीत होता है कि सत्य, अहिंसा, अस्तेय एव अपरिग्रह नामक वैदिक यमो (पाश्चात्यवादी पंथो के कमैंडमैंट्स) को धर्म या परम धर्म घोषित करना कदाचित रामायण महाभारत कालीन उत्तर वैदिक युगीन अथवा जैन एव बौद्ध कालीन घपले-घोटाले बाजियां हैं। "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति" से भी यही स्पष्ट है कि रामायण-महाभारत जैसे युगो के पहले भी उत्तर-वैदिक समाज धर्म के विषय में पर्याप्त ग्लानिपूर्ण एव विपर्ययबुद्धि मय हो चला था। अत. तथ्यगत आदि-वैदिक धर्म की प्रमाणित वैदिक व्याख्या खोजने की दिशा में धार्मिक ग्लानियुक्त समाजो से प्रतिबिम्बित रामायण, महाभारत इत्यादि सम्मानीय ग्रन्थो पर बहुत अधिक निर्भर कर जाना अशास्त्रीय भी हो सकता है। शास्त्र एवं ग्रन्थ में अन्तर होता है।

प्रसगवश, उल्लेखनीय है कि कणादमुनि प्रणीत वैशेषिक दर्शन के वर्तमान में उपलब्ध सभी सूत्र प्रमाणित-सूत्र नही हैं। क्योकि, उनके भावार्थ इस शास्त्र में प्रतिपादित सिद्धात के अनुरूप नही हैं। यथा, "अथातो धर्म व्याख्यास्यामः। यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धि स धर्मः॥ (वैशे० १/१ एवं २)। सूत्र १/३ में "धर्मविशेषप्रसूताद" से द्रव्य जैसे उपादान कारण की उत्पत्ति होना बताया जाना प्रक्षिप्त प्रसग हैं। उत्पत्ति का द्रव्य की उत्पत्ति का उपादान कारण तो जड द्रव्य होता है और नैमित्तिक कारण चैतन्य द्रव्यपदार्थ (आत्मद्रव्य) होता है, न कि धर्मादि जड़-गुणपदार्थ।

धर्म का अर्थ अवश्य ही कोई विशिष्ट पूजा पद्धति, पंथवादिता व साम्प्रदायिकता नही है। योगदर्शन ने भी तत्वज्ञान से मोक्षप्राप्ति हेतु किसी विशेष आसन, विशेष पदार्थ या विषय या विशिष्ट इष्टदेव इत्यादि के अभ्यास की अनिवार्यता नही जताई हैं, "स्थिरसुखमासनम", (योगदर्शन २/४६)। यथाभिमतध्यानाद्वा" (योगदर्शन १/३९) से, जिसे जो इष्ट जचे उसका योगसम्मत अभ्यास करके आत्मसाक्षात्कार पूर्वक मुक्तिलाभ किया जा सकता है। साथ ही, आश्चर्यजनक, एव अप्रत्याशित रूप से, धर्म का अर्थ सांस्कृतिक दायित्व वा संस्कृति भी नही है।

धर्म एक व्यक्तिगत विषय है जो सब कुछ त्यागकर मनुष्य को, अन्तत. एकाकी ही बनने का उपदेश करता है, "स्वात्मार्थे पृथिवी त्यजेत"। हम मानुषसर्गीय मनुष्यो को वैदिक देवसर्गीय ऋषियोनि अर्थात ऋषियो का प्रत्यक्ष नहीं होता है जबकि यास्क के अनुसार धर्म का प्रत्यक्ष कर लेने वाले को ऋषि कहते हैं, "साक्षात्कृत धर्माणि ऋषिय"। लेकिन संस्कार गुणजनित सस्कृति एवं सामूहिक विषय है धर्म तो परमात्मा से आत्मा की आध्यात्मिक की लौ लगाने वाला सोलड्रिंग मैटीरियल है। मनुष्य से मनुष्य की जीवगत सजातीयता को जोड़ने हेतु सस्कार नामक गुण एक वैल्डिग मैटीरियल है। सजातीय धातुओं को टाका जोड़ने को वैल्डिग कहते हैं, यथा लोहे को लोहे या तावा को तांबा से जोड़ना। विजातीय धातुओं को टाका जोड़ने को सोल्ड्रिंग करना कहते हैं, यथा लोहे को ताब मे जोड़ना।

किसी सस्कार को ग्रहण करने वाला तथा किसी सस्कार को देने वाला (आदान-प्रदान) के भाव की तथ्यात्मक प्रतीति से सस्कार नामक यह वैशेषिक गुणपदार्थ, कम से कम, दो व्यक्तियो के बीच एक सामूहिक साझा-सम्पत्ति है। जिसकी क्रमगत परम्परा को सस्कृति एवं परम्परागत सामूहिकता को राष्ट्र कहते है तथा, उस राष्ट्र की वैध अधिकृत भौगोलिकता को स्वदेश कहते हैं। यहा सस्कृति, राष्ट्र एव देश का उदगम—स्त्रोत जीवात्मा का संस्कार नामक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मूर्तिपूजा : एक विडम्बना

लेखक : श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य, खामगांव

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

मुम्बई गिरगांव क्षेत्र के विमल ज्योति सदन से सद विचार दर्शन ट्रस्ट द्वारा श्रीमान पांडुरंग शास्त्री आठवले जी के विचारों का साहित्य प्रकाशित होता है। श्री शास्त्री जी ने महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों में अपने स्वाध्याय मंडलों का सुचारु ढंग से विस्तार किया है। इन स्वाध्याय मडलों के मार्गदर्शक पुस्तकों में संस्कृति पूजन मूर्तिपूजा इ हिन्दी/ पुस्तकों द्वारा बहुत विवादास्पद लिखकर सत्य सनातन वैदिक संस्कृति पर मर्माघात किया गया है। इन पुस्तकों से सद् विचार प्रसृत होना तो दूर, परन्तु असद विचारों द्वारा दिशाभूल करने का दुष्ट प्रयास किया जा रहा है। परमपिता परमात्मा की मूर्ति स्थापित करना, उस मूर्ति की पूजा का समर्थन करना और विशेष यह कि ऐसी मूर्तिपूजा को वेद मन्त्र प्रणित लिखना, यह निश्चित ही घोरतम महत्पाप किया गया है। और तो और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के लिए बड़ा हो अनुदारित और पूर्वग्रह दूषित लेखन भी किया गया है। स्वामी जी के लिये सत्य से कोसों दूर, व्यंगात्मक लिखकर गुदगुदी करते हुये तीक्ष्ण नाखूनों से नोचने का अश्लाघ्य, अशिष्ट और अवांछित धाष्टर्य किया गया है। स्वामी दयानन्द जी के जीवन को पलटा देने वाली महाशिवरात्री के पर्व की चूहे की घटना घटी ही नहीं, पश्चात बुद्धि से जोड़ दी गयी, कहानी (मनघडन्त) मात्र है, ऐसा भी लिखा गया है स्वामी जी पर बहुत ही दोष प्रदर्शित करते हुये बहुत कुछ लिखा गया है। ईश्वर की प्रतिमा/मूर्ति और उसकी पूजा का खंडन तो आद्य शकराचर्य जी ने, सन्त कबीर, दादू, रैदास, गुरुनानक संत तुकारामादि महात्माओं ने भी किया है, तो भी केवल स्वामी दयानन्द के लिये इतना आग बबूला होने का क्या कारण है? कहते हैं जब तक लोमड़ी ने सिंह को देखा ही नहीं, तब तक ही उसकी बकवास रहती है। भारत के विख्यात काशी क्षेत्र मे दिग्गज रथी-महारथी शास्त्रीयों को, धर्म धुरन्धर और मार्तण्डो को अपनी तीव्र बुद्धि, वेदाधार एवं तर्क द्वारा चारों कोने चीत करने वाले स्वामी दयानन्द कहा और कहा यह वर्तमान शास्त्री लोग, जो शास्त्रार्थ का आह्वान स्वीकार नही करते। कहा वह नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तपस्वी, वेदोद्धारक संन्यासी और कहां शास्त्री का वेदविषयक वाक् छल। हमारा तो विनम्र निवेदन है कि निरुक्त, निघण्टु के आधार पर वेद-मन्त्रों द्वारा ईश्वरमूर्ति, उसकी पूजा अर्चना वेदानुकूल या वेदविरुद्ध सिद्ध की जाये। उनकी पुस्तकों में लिखा है, मूर्तिपूजा गतानुगतिक है। यह सरासर असत्य और अनृत है। चारों वेदों में मूर्तिपूजा समर्थक एक भी मन्त्र नही, मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है और बहुत अर्वाचीन है। सायणाचार्य, महीधरादि के वेदभाष्य अर्थ का अनर्थ करने वाले है, जो ग्राह्य नहीं हो सकते। स्व० बाल गंगाधर तिलक महोदय को हिन्दी क्षेत्र मे भगवान लोकमान्य तिलक कहते हैं। तो क्या वे भगवान याने ईश्वर हो गये? एक समय की घटना है। ब्रिटिशों का शासन था, तब राजकीय भाषणों का प्रतिवेदन लिखने, भाषण स्थल पर शासकीय अधिकारी उपस्थित रहते थे। लोकमान्य तिलक भाषण दे रहे थे, भाषण में उन्होंने कहा—सम्पूर्ण सत्ता दिल्ली सरकार मे केन्द्रीभूत हुई है। भाषण का प्रतिवेदन एक मुसलमान अधिकारी लिख रहा था उसने सरकार को विवरण देते हुवे कहा कि तिलक जी ने सरकार को भूत कहा। जब उसे पूछा गया कि केन्द्री का क्या अर्थ है, तब वह बोला कि केन्द्री बेन्द्री तो हम जानते नहीं, पर भूत जानते हैं, और तिलक जी ने सरकार को भूत कहा। जहां ऐसे ज्ञानी रिपोर्टर हो, वहां क्या सच्चे अर्थ की अपेक्षा की जा सकती है? इसी प्रकार शास्त्री जी की पुस्तकों में रुद्र, नीलग्रीव, जटाजूटधारी शिवशंकर को परमात्मा प्रतिपादित किया है। परमात्मा क्षीरसागर, बैकुण्ठ और कैलास इन स्थान विशेष में रहता नहीं, इन शब्दों के अर्थ ही लोग समझ नहीं पाते। परमात्मा सर्वव्यापक, जल, स्थल, नभ और सर्वांतर्यामि होने से सर्व प्राणीमात्र के अतः करण में विराजता है, उसे अपनी मर्जी और सुविधानुसार लोग भूल जाते हैं। ईश्वर एकदेशी हो ही नहीं सकता, सर्वव्यापक ईश्वर की स्थानबद्धता मानना माने अपनी बुद्धि का दिवाला काढ/फूंक दिया हो, ऐसा प्रतीत होगा।

ईश्वर मूर्ति की दासता

मूर्तिपूजा एक शुद्ध विडम्बन है: कुछ लोग सुवर्ण की ३ सेंटि-मीटर की, चांदी की २ फीट की, काष्ठ की ३ फीट की, कुछ पाषाण की ४ फीट की, तो कुछ मिट्टी की ५ फीट की ईश्वर प्रतिमा/मूर्ति अपने मर्जी से, मन से, विचार से, शक्ति और अन्धश्रद्धानुसार अपना अपना परिमाण लगाकर बनाते हैं। कुछ लोग १ मुखकी कोई ३ मुखों की, कोई ४-५ मुखों की तथा कोई लोग दो हाथों की, कोई ४-६-८ हाथों की मूर्तिया बनाते हैं। मात्र बड़ी मेहरबानी परमात्मा पर की गयी है कि उसके मुख हाथ कितने ही हो, पर पांव मात्र दो ही रखते हैं, अन्यथा वह भी चतुष्पाद बन जाता। कुछ लोग मूर्ति को लाल रंग, कोई पीला रंग, कोई-कोई नीला काला रंग देकर बनाते हैं। कुछ उसे पिताम्बरधारी, कुछ धोती पहननेवाला बनाते हैं, कुछ शर्टधारी बनाते हैं, कुछ उसे साड़ी पहनाते हैं, बस अपना ही अधिकार, चाहे सो करो—मन के लड्डू, फीके क्यों! कुछ लोग ईश्वर को पुरुष लिंगी मानते हैं, कुछ स्त्रीलिंगी मूर्ति बनाते हैं।

कुछ ने कमाल किया ईश्वर को पुरुष भी मानते हैं और स्त्री भी। जिस परमात्मा ने यह सृष्टि निर्माण की है, उस सृष्टि से ही मृत्तिका पाषाण, काष्ठादि लेकर उस परमात्मा का निर्माण करने वाले, क्या उसके बाप नही बन जाते? मनुष्य-मनुष्य नहीं रहा, वह परमात्मा का निर्माता हो गया। अहो किम् महद आश्चर्यम्। जो परत्मा स्वयं शुद्ध, पवित्र और शिव है उसे मूर्तिपूजक प्रतिदिन या अपनी फुरसत से स्नान कराकर दूध दही से शुद्ध करता है, जो प्राणीमात्र को भोजन देता है, कीड़ो से लगाकर कुंजर तक, जल, स्थल, अन्तरीक्ष के सभी जीवों को खिलाता है, उसे मैं मूर्तिपूजक (उसका बाप) रोटी का एक टुकड़ा देकर भोजन करता हूं। ईश्वर को सेवा कुछ देकर नही की जा सकती। ईश्वर स्वय प्रकाशित है, उसे मैं निराजन दीपप्रकाश बताता हूं। यदि विद्युत खण्डित हो जाय तो मन्दिरों में चारों तरफ घोर अन्धकार छा जाता है, जिसमें आप भी और मूर्ति भी लाचार होती है। वह मूर्ति स्वय प्रकाश प्रदायी कभी होती नहीं, ऐसी महान लाचारी, मनुष्य ईश्वर को खिलाता है। जो स्वयं अन्धेरे में है, वह मनुष्य के अज्ञान का अन्धेरा कैसे दूर करेगी? इतना ही नही तो उसे रात को मैं सुलाता हू, प्रातः मेरे उठने के पश्चात उठता हू, रात्रि मे और दिन में भी मर्जीनुसार उसे तालेबन्द रखता हू। अरेरे शोक, महाशोक, क्या यह विडम्बन किया जा रहा है। मन्दिर या आले में रहने वाला ईश्वर मन्दिर और मकान से छोटा ही होगा। अजी मुसलमानो का खुदा खुदावन्द ताअला है, पर हिन्दुओं का तालाबन्द खुदा है। ध्यान रखिये कि जड़ मूर्तिपूजा यह कार्य वा कारणरूप प्रकृति की उपासना है। वेद कहता है, इस प्रकृति उपासकों को घोर अंधकार वा दुःखों की प्राप्ति होती है।

(क्रमशः)

संस्कृति राष्ट्र एवं हिन्दू

(पृष्ठ ६ का शेष)

गुण है, न कि धर्म नामक गुण है। अत, यहा राष्ट्र एक पूर्ण रूपेण धर्मनिर्पेक्ष तथ्य है। संस्कार एवं धर्म समानार्थी नहीं हैं। और कभी के जिन राष्ट्रों को आज हम अपनी विपर्यय बुद्धि के कारण, धर्म होना समझ रहे हैं, वे अवश्य ही संस्कृति राष्ट्र थे, या फिर मात्र कथित धर्मराष्ट्र हैं।

इस अर्थ में, रामराज्य अवश्य ही कोई रामराष्ट्र या धर्मराष्ट्र नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए धार्मिक स्वतन्त्रता की भी लोकतांत्रिक गारन्टी प्रदान करने वाला महाराज दशरथनन्दन श्रीराम का वह रामराज्य अवश्य ही एक लोकतांत्रिक धर्मनिर्पेक्ष राष्ट्र रहा होगा। धर्म राज्य चाहें कैसी भी प्रजातांत्रिक जम्हूरियत से युक्त हो, कभी भी धर्मनिर्पेक्ष राष्ट्र नहीं हो सकता है, क्योंकि अन्ततः वह अवश्य ही किसी न किसी आस्थाजनित पंथवादिता को ही प्रतिबद्ध हो जाता है।

आधुनिक युग के तथ्यात्मक तर्क सम्मत "विश्व पर्यावरण बचाओ" विज्ञान के प्रति धनात्मक जीवन शैली को संस्कृति व सुसंस्कृति तथा ऋणात्मक जीवनशैली को असंस्कृति या कुसंस्कृति या विकृति कहते हैं। कुसंस्कृति आस्थाजनित स्वेच्छाचारी होती है तथा नानाप्रकार की भी हो सकती है। इस अर्थ में, "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की धनात्मकता ही संसार की एकमात्र श्रेष्ठतम संस्कृति सिद्ध होती है।

वास्तव में, विकसित राष्ट्र की संज्ञा से विभूषित भारत की वर्तमान नकलची पीढ़ियों, आधुनिक विद्वानों एवं छद्म-पंडितों की मनीषा एवं लम्पट धर्मगुरुओ का प्रचारतन्त्र धर्म के विषय में अपनी संकीर्ण-दृष्टि से समाज को अत्यन्त पीड़ित किये हुए हैं। फिर भी, सामान्य समझ जो लोकपथ बनाती है वह कई बार धर्मशून्य होते हुए भी सम्माननीय होती है। कई बार हमारी महत्वपूर्ण धरोहरें उससे हमें वापस मिल जाती हैं। सामान्य समझ के भी जो मनुष्य, सुसंस्कृति के इस धनात्मक पक्ष को अब तक जैसे तैसे भी सुरक्षित रख पाये हैं, वे सब भी सम्माननीय हैं। यही हिन्दुत्ववादी संस्कृतिराष्ट्र का गौरव है, भारतीयता है और जाति-देश-काल के वर्गवाद (साम्प्रदायिकता) से परे का राष्ट्रवाद है, "जाति देशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्" (योगदर्शन, २।३१)। आधुनिक युग में राष्ट्रवाद तो एक बहुत ही खतरनाक चीज है।

सत्यार्थ प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता का परिणाम वर्ष १९९४

सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता १९९४ के परिणाम घोषित कर दिये गए हैं।

उपरोक्त प्रतियोगिता का परिणाम घोषित करने मे कुछ अपरिहार्य कारणो से विलम्ब हुवा है। प्रतियोगियो को जो प्रतीक्षा करनी पड़ी उसके लिए क्षमा चाहते हैं। समस्त विजेताओ को हमारी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नोट—प्रतियोगिता के लिए घोषित पारितोषिक महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह (२३-१०-१९९५ को प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक) सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी द्वारा (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियो को) वितरित किये जायेंगे। समारोह के स्थान की सूचना पत्र द्वारा पारितोषिक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को भेज दी जाएगी।

नाम	अनुक्रमांक	प्राप्तांक
वर्ग "क"		
१. श्री प्राणेश कुमार आर्य, नालन्दा, बिहार	१०१	१६०
२. ब्र० श्रीकाम आर्य, मुजफ्फरनगर, उ० प्र०	१०८	१५५
३. श्रीमती प्रवीण मलहोत्रा, दिल्ली	२१९	१२०
४. श्री मोहन प्रसाद शास्त्री, बिहार	२४१	१५३
५. डा० कैलाश 'आर्य' बिहार	२६१	१५८
६. ब्र० सुधीर कुमार, इटावा, उ० प्र०	१९३	१५१
७ कु० मनीषा आर्या, नीमच म० प्र०	२६०	१२१
८. श्री विरजानन्द देव, दरभगा, बिहार	२४६	१४७
वर्ग "ख"		
९. श्री फूल सिंह आर्य, मेरठ (उ० प्र०)	१४७	१२६
१०. श्री रवीशंकर, धनबाद (बिहार)	२८१	१५६
वर्ग "ग"		
११. शर्मिला मित्तल, सापला मण्डी	१८०	१४७
१२. कु० ममतारानी, सहारनपुर (उ० प्र०)	२५१	१३०
१३. श्री सुदर्शनदेव, उडीसा	२७७	१२१
वर्ग "घ"		
१४. श्री अशोक कुमार, कुरुक्षेत्र (हरि०)	११०	१३५
१५. श्री रजनीश मल्होत्रा, कठुआ (ज० का०)	१११	१४२
१६. श्री सतपाल आर्य, अहमदाबाद (गुज०)	१३१	१३४
१७. ब्र० राजबली आर्य, गुरुदासपुर (पंजाब)	१३५	१४१
१८ श्री रामेन्द्र कुमार, सीतापुर (उ० प्र०)	१४०	१५२
१९. श्री गोपाल आर्य, दिल्ली	१५६	१३४
२०. श्री रेवती कुमार ठाकुर, राजस्थान	१२४	१३५
२१. श्री ओंकार मिश्र, आगरा (उ० प्र०)	१६५	१४२
२२. ब्र० ओमदेव, इटावा (उ० प्र०)	१९२	१६१
२३. श्री कान्तिलाल आर्य, मुरादाबाद (उ० प्र०)	२००	१७६
२४. श्री चन्द्रवली यादव, जौनपुर (उ० प्र०)	२१५	१५८
२५ श्री विद्यारत्न जी, बिजनौर (उ० प्र०)	२०६	१४८
२६. डा० रणसिंह कादयान. रोहतक (हरि०)	२३०	१२०
२७. श्री मोहन उपाध्याय, अजमेर (राज०)	२३४	१३१
२८. श्री सुरेशचन्द्र आर्य, हरदोई (उ० प्र०)	२४७	१४५
२९ श्री रामस्वरूप वेली, भीलवाड़ा (राजस्थान)	२५८	१३६
३० ब्र० विमलेन्द्र, इटावा (उ० प्र०)	२६२	१५८
३१. श्री नन्द किशोर अवस्थी, हरदोई (उ० प्र०)	१५४	१४३
३२. सन्त कालू रामाचार्य, नागौर (राज०)	००८	१३७
३३. सुश्री गायत्री, कोटा (राज०)	२४६	१४४
३४. श्री नरेन्द्र सिंह, सहारनपुर (उ० प्र०)	१२८	१२०

प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
प्रधान

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

डा० ए. बी. आर्य
रजिस्ट्रार

ऋषि दयानन्द वचनामृतम्

१—जिसके आचरण करने से अभ्युदय=संसार में उत्तम सुख और नि:श्रेयस=मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है उसी का नाम धर्म है।

२—अभ्युदय=माता-पिता और आचार्य आदि श्रेष्ठ जनों की भोजनादि मे सेवा करने के पश्चात् स्वय भोजन आदि करना अभ्युदय कहलाता है।

३—नि:श्रेयस्=ब्रह्मचर्य और धर्मानुष्ठान से ही विद्वान लोग जन्म और मृत्यु को जीतकर मोक्ष सुख प्राप्त करते हैं। अतः ब्रह्मचर्य व्रत पालन करके विद्या उपार्जन करना नि:श्रेयस कहलाता है।

४—जो तप, स्वाध्याय, आदि कर्म है वह शुभ कर्म और जो हठ अविद्या, अभिमान, क्रूरतादि कर्म है, वह अशुभ कर्म कहलाता है।

५—युवा अवस्था से ही धर्म का आचरण करना चाहिए। कौन जानता है कि हममें से कौन कब चला जाये, धर्म युक्त जीवन वास्तव मे जीवन है।

"प्रस्तुति करण"
पं० देवश्रुति प्रियदर्शी
फिरोजपुर छावनी, पंजाब

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में अभिनन्दन समारोह

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से वैसाखी पर्व पर १३ अप्रैल १९९५ को एच-२८ जंगपुरा विस्तार नई दिल्ली में एक विशेष अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री आर्य मित्र बजाज प्रचारमन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा व वैदिक सत्संग समिति का ३१ मार्च ९५ को राजकीय सेवा से निवृत्त होने पर विशेष अभिनन्दन किया गया । उन्होंने अपना पूरा समय आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया ।

इस समारोह में श्री रोशनलाल गुप्ता जिन्होंने सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगाया हुआ है जो आर्य समाज सरोजिनी नगर के उपप्रधान हैं, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर के प्रबन्धक हैं, अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति के महामन्त्री हैं और इस सभा के महामन्त्री हैं, उनका भी ७०वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में अभिनन्दन किया गया ।

इस समारोह में श्री सूर्यदेव जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, श्री रामनाथ सहगल, महामन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा व डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी, व श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्ता जो इस सभा के उपप्रधान, आर्य समाज लाजपतनगर के प्रधान और श्रीमती उषा शास्त्री व श्री हरिदेव जी आचार्य श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर का भी अभिनन्दन किया गया ।

इस सभा के प्रधान श्री कृष्णलाल जी सिक्का व श्रीमती कान्ता सिक्का प्रधाना वैदिक सत्संग समिति की ओर से सभी को शाल व स्मृति चिह्न भेंट किए गए और प्रीति भोज का बहुत सुन्दर प्रबन्ध भी उन्हीं की ओर से किया गया ।

इस अवसर पर आचार्य विश्वमित्र मेधावी यज्ञ के अधिष्ठाता थे और स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज यज्ञ के ब्रह्मा थे । जिन्होंने सभा को अपना आशीर्वाद प्रदान किया और श्री पण्डित हुकमचन्द वेदालंकार, आचार्य श्री रविदत्त गौतम, श्रीमती उषा शास्त्री और अनेक विद्वानों व दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने पुष्पमालाओं द्वारा सबका अभिनन्दन किया और श्रीमती सरला पाल इस सभा की उपप्रधाना ने सबको वैदिक साहित्य प्रदान किया । और तथा वैदिक सत्संग समिति ने भी उपहार भेंट किये ।

आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव ६ से ९ अप्रैल तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर विशेष यज्ञ तथा अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुये । दिनांक ८ अप्रैल को आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री तारानाथ जी सिद्धान्त भास्कर द्वारा आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओं तथा कार्यों को ध्यान में रखते हुये उनका अभिनन्दन किया गया । उनको ५०१ रुपये की थैली भेंट की गयी । श्री तारानाथ जी ने उक्त धन वेद-प्रचारार्थ आर्य समाज को वापस कर दिया ।

आर्य समाज बाढ़ का हीरक जयन्ती समारोह

आर्य समाज बाढ़ का हीरक जयन्ती समारोह १३ से १६ अप्रैल तक आर्य महिला महाविद्यालय चौक बाजार बाढ़ में समारोह पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया । समारोह में विशेष यज्ञ भजनोपदेश, महिला सम्मेलन सहित अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुये ।

दिल्ली पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०५६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (७-५-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 4,5 5 1995

कुछ सोचिये

१. हमारी आयु इस तरह घटती जा रही है, जिस तरह कि फूटे घड़े में से पानी टपकता जा रहा है। इस पर भी मनुष्य मैं या अभिमान करता फिर रहा है। अभिमान ही परमात्मा के मिलन में रुकावट पैदा करता है।

२. जब दुनिया के सभी कामों के लिये समय निकाला जा सकता है तो फिर परमात्मा की याद मे सत्-संग, भजन आदि के लिये समय न मिलने की बहाने-बाजी क्यों की जाती है।

३. बुरी संगत, बुरा खान-पान और बुरी पुस्तकों को पढ़ना-यह तीनों ही मानव स्वास्थ्य के दुश्मन हैं। इनसे सदा बचें।

४. शान्ति क्या है। संसारी वस्तुओं-चीजों पर काबू पाना। दिल से काम क्रोध की गहरी जमी हुई मैल को उखाड़कर फेंकना अथवा उसे मिटा डालना ही

५. दुनिया में कौन कितना बड़ा धनवान है, इसकी परवाह न करो। देखना यह है कि आज जिन्दगी कैसे व्यतीत हो रही है? क्योंकि संस्कार पर ही हम सबकी जिन्दगी की बुनियाद पड़ेगी।

६. दुनिया में केवल एक ही सुख है, वह अपना कर्म और धर्म का अच्छी तरह निभाना।

७. परमात्मा के दरबार में जात-पात कोई नहीं देखी जाती, वहां केवल भक्ति देखी जाती है। नीच से नीच भी भक्ति के प्रताप से तर गये और ऊंचे कुल के अभिमानी नष्ट हो गये।

८. परमात्मा को मिलने के लिये एक पग आगे बढ़ो और वह सौ पग तुम्हारी तरफ आगे बढ़ायेगा।

९. परमात्मा दूर नहीं है केवल सच्चे भाव को मन में पैदा करने की जरूरत है। सच्ची भावना पैदा हुई नहीं और परमात्मा के दर्शन हुए नहीं।

१०. सच्चे दिल से दिन में एक बार परमात्मा का नाम लेना फलदायक है। बिना दिल और बिना लगन से घंटों माला फेरते रहना अपने आप को और संसार को धोखा देना है।

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मयूर विहार फेस–२ में गायत्री महायज्ञ का आयोजन आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व मे ७ मई ९५ को प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक सम्पन्न होगा इस अवसर पर श्रीमती अर्चना रेडियो सिंगर द्वारा मधुर संगीत का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न होगा। समारोह में डा सच्चिदानन्द जी शास्त्री श्री प्रभा कुमार आदि विद्वानो के उपदेश होंगे। ऋषि लंगर के साथ कार्य-क्रम सम्पन्न होगा।

चन्द्र प्रकाश आर्य मन्त्री

प्रवेश सूचना

योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय आदि वैदिक दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्ययन करने एवं वैदिक योग प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रवेश प्रारम्भ हैं। भोजन, वस्त्र, पुस्तक आवास आदि सुविधायें निःशुल्क।

विद्यार्थी १८ वर्ष से ऊपर, व्याकरणाचार्य, शास्त्री या समकक्ष योग्यता वाला, यम नियमों का पालन करने और पूर्ण अनुशासन में चलने वाला, वैदिक सिद्धांतों पर श्रद्धा-विश्वास रखने वाला हो। स्थान सीमित हैं। इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय
आर्य वन, रोजड़
पो० सागपुर, जिला–साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

वार्षिकोत्सव एवं मेला प्रचार

आर्य समाज महावीर गंज लखनऊ-२० का वार्षिकोत्सव आगामी १४, १५ व १६ मई ९५ को आयोजित है। इसमें उत्तर प्रदेश व बिहार के प्रख्यात उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद महायज्ञ

आर्य समाज इन्द्रपुरी का द्वितीय वार्षिकोत्सव आप सभी की प्रेरणा और सहयोग से बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ २८ अप्रैल से ७ मई १९९५ तक आयोजित किया जा रहा है।

इस विशाल समारोह के अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी महात्मा, विद्वान और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप इन विद्वानों के धार्मिक आध्यात्मिक एवं भौतिकज्ञान से ओत-प्रोत सरल व सुमधुर उपदेशों से जीवन का असली लाभ प्राप्त करें। इसमें ही इस आयोजन की सफलता है। इस अवसर पर अनेकों अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है।

प्रवेश परीक्षा

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध आर्य विद्या केन्द्र प्रभात आश्रम मेरठ की प्रवेश परीक्षाएं इसी वर्ष की १५, २०, २५, ३० जून को होंगी। प्रवेशार्थी स्वस्थ, मेधावी एवं पंचम कक्षा उत्तीर्ण हों। सुदूर प्रान्त के प्रवेशार्थी को वरीयता दी जाएगी। प्रवेशार्थी की उम्र १०–११ वर्ष से अधिक न हो।

व्यवस्थापक, प्रभात आश्रम
भोला, टीकरी मेरठ, उ० प्र०–२५०५०१

सार्वदेशिक प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा०, सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र — दूरभाष : १२७४७७१ — वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक १४] — दयानन्दाब्द १७१ — सृष्टि सम्वत् १९७२९४९·९५ — ज्येष्ठ कृ ८ — सं० २०५२ २१ मई १९९५
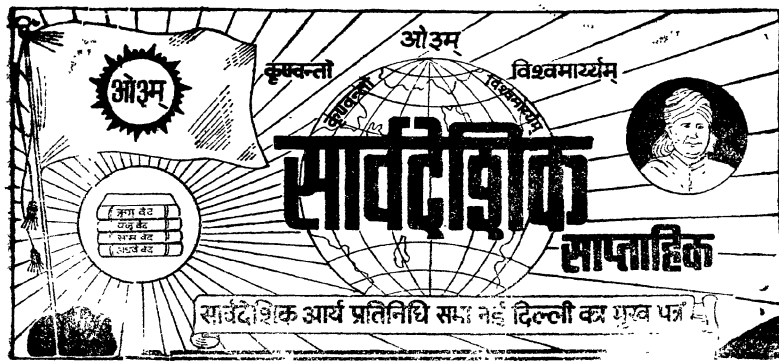
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वृहद अधिवेशन की तैयारियां पूर्णता की ओर

सभा-प्रधान श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् अधिवेशन को पूर्ण करने में तत्पर

दिल्ली। सभा-प्रधान श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् दिल्ली से हैदराबाद (आन्ध्र) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक वृहदअधिवेशन को सम्पन्न कराने के लिये प्रयत्नशील है और हैदराबाद में कार्य को सुचारू रूपेण व्यवस्थित करने के लिये पहुंच चुके हैं।

२७, २८ मई ९५ को होने वाले इस अधिवेशन में भाग लेने हेतु उत्तरप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रादेशिक सभा, हरियाणा, राजस्थान गुजरात, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, म० प्र० विदर्भ, उड़ीसा, मध्य भारत, आसाम, मद्रास, केरल कर्नाटक, गोवा आदि प्रदेशों से सभी प्रतिनिधि गण भाग लेने के लिये उत्साह के साथ पधार रहे हैं।

सभी की आशाओं में पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव केन्द्र बिन्दु बने हैं। नयी योजना, नये उत्साहजनक वातावरण में अधिवेशन सम्पन्न होगा। इस अधिवेशन की धुरी हैं—

श्री डा० सोमनाथजी मरवाह अधिवक्ता सुप्रीमकोर्ट प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष हैं दिल्ली में बैठे-बैठे ही सारी व्यवस्था पर ध्यान लगाये हैं।

सदस्य प्रतिनिधि गणों में अधिवेशन के प्रति उत्साह चाह नई प्रेरणा हैं। अपने आगामी अधिकारियों के चयन की अभिलाषा।

मान्यवर पं० वन्देमातरम् जी हैदराबाद में आवास भोजन की व्यवस्था के साथ सम्मेलन में कुछ नये भावी कार्यक्रमों पर गम्भीरता पूर्वक विचार भी किया जायेगा। सभी प्रतिनिधि गण हैदराबाद स्टेशन पर उतरें-वहां आपको लेने आर्य वीर ओ३म् के झण्डे के साथ मिलेंगे। आपका स्वागत है—दक्षिण में आर्यसमाज आगे बढ़े। ऐसी उत्साहप्रद दिशा बोध कराये।

पता—स्थान भारतीय विद्याभवन निकट एम०एल०ए० क्वार्टर्स हैदराबाद

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक वृहद अधिवेशन आगामी २७, २८ मई १९९५ को, भारतीय विद्या भवन, नजदीक 'एम०'एल० ए० क्वार्टर्स हैदरगुडा (सूर्य नगर) हैदराबाद आ० प्र० में होगा। अधिवेशन में भाग लेने के लिए समय पर हैदराबाद पहुंचे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

देश की एकता और एकजुटता के लिए समान नागरिक संहिता बनाई जाए : सर्वोच्च न्यायलय का निर्णय

नई दिल्ली, १० मई। सर्वोच्च न्यायालय ने आज अपने एक ऐतिहासिक फैसले में कहा कि सरकार को समान नागरिक संहिता बनानी चाहिए, यह दुःख की बात है कि यह मामला अभी तक यों ही लटका हुआ है। न्यायालय ने प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिंहराव से कहा कि वह संविधान के अनुच्छेद ४४ पर नए सिरे से गौर करे। इस अनुच्छेद में कहा गया है कि राज्य पूरे भारत में नागरिकों पर लागू होने वाली समान नागरिक संहिता बनाने का प्रयास करेगा।

न्यायाधीशों कुलदीपसिंह और आर०एस० सहाय की खण्डपीठ ने दूसरी शादी करने के लिए इस्लाम कबूल करने सम्बन्धी एक मामले में अपना ऐतिहासिक फैसला दिया। दोनों फैसले हैं तो अलग-अलग, लेकिन दोनों एक दूसरे से सहमत हैं। फैसले में कहा गया कि राष्ट्रीय एकजुटता और एकता के लिए एवं दलितों के संरक्षण की खातिर समान नागरिक संहिता अपरिहार्य है। फैसले की एक

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

समान संहिता जरूरी

भारतीय संविधान, राष्ट्रीयता और धर्म निरपेक्ष न्याय की तुला पर तोलने के बाद बुधवार को उच्चतम न्यायालय द्वारा समान नागरिक संहिता बनाने का केन्द्र सरकार को निर्देश निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक, महत्वपूर्ण, चिर प्रतीक्षित और स्वागत योग्य निर्णय है, किन्तु विविध धर्मों, मत-मतांतरों वाले भारत की जनता के लिए इसे सुपाच्य बनाना सरल काम नहीं है। इस निर्णय को लेकर मुस्लिम-समुदाय और खासकर उनके कट्टरपन्थी काजियों व मुल्लाओ की प्रतिक्रिया बहुत तीखी हो सकती है, इसलिए न्यायमूर्ति श्री सहाय ने मसले की संवेदनशीलता को नजरअंदाज न करते हुए निर्णय में बहुत साफ लिखा है कि किसी भी धर्म में उसके किसी कानून को जानबूझ कर तोड़ने-मरोड़ने की अनुमति नहीं है। एकाधिक विवाह के मसले पर खुद इस्लाम मे तरह-तरह की आशंकाएं व्यक्त की गई हैं। फिर हमारे समक्ष अनेक इस्लामी देश हैं, जिन्होंने निजी धार्मिक कानूनो का दुरुपयोग रोकने के उद्देश्य से नागरिक-संहिताएं बनाई हैं, मसलन सीरिया, ट्यूनिशिया, मोरक्को, पाकिस्तान, ईरान और इस्लामिक रिपब्लिक आफ सोवियत यूनियन। भारत में भी इनका होना अनिवार्य इसलिए है कि आज बहुत से हिन्दू धर्म-परिवर्तन सिर्फ इसलिये कर लेते हैं कि वे बहुविवाह कर सकें। वे इस्लाम कबूल करते हैं क्योंकि उसमें एक समय में चार पत्नियां रखने की छूट हासिल है, लेकिन यह अनैतिक है। इस्लाम कबूल कर के पहली पत्नी को तलाक दिये बगैर दूसरी शादी कर लेना न केवल गैरकानूनी है, अपितु ऐसे पति पर एकाधिक पत्नी रखने का अपराध बनता है और दूसरी शादी भारतीय दंड संहिता की धारा ४९४ के प्रावधानों के अनुरूप अवैध ही कही जानी चाहिए। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं हो पा रहा है कि देश मे कई वजहों से समान नागरिक संहिता का मामला टलता रहा है। संविधान के अनुच्छेद ४४ को गौर से देखा जाए तो यह कब की बन जानी चाहिए थी।

स्मरणीय है कि शाहबानो प्रकरण में और उसके बाद के ऐसे ही प्रकरणों के बाद भी सन १९५० के बाद केन्द्र में बनी सभी सरकारों ने आज तक संविधान के अनुच्छेद ४४ के आदेश को कार्यान्वित कराने के अपने दायित्व का निर्वहन नहीं किया। इस स्थिति पर सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ के दोनों न्यायाधीशों कुलदीप सिंह और आर. एम सहाय की चिंता सर्वथा गौरतलब है। उन्होंने ठीक कहा है कि राजा राम मोहनराय न होते तो सती प्रथा चलती रहती और पंडित जवाहरलाल न होते तो हिन्दू कोड बिल न होता। न्यायाधीश द्वय यह नही कह रहे हैं कि जनता पर खासकर अल्पसंख्यकों पर कोई संहिता थोप दी जाए अपितु यह सुझाव दे रहे है कि देश की एकता व अखंडता के लिए यह नितांत जरूरी है कि विधि आयोग अल्पसंख्यक आयोग के परामर्श से इस गम्भीर मसले की समीक्षा करे एवं आज की दुनिया में प्रचलित महिलाओं के लिए बने मानवाधिकारो के विचार से मेल खाता एक जैसा व्यापक कानून बनाए। वह यह भी सलाह दे रहे हैं कि सरकार धर्म परिवर्तन कानून बनाने हेतु तत्काल एक समिति गठित करे ताकि कोई भी नागरिक किसी भी धर्म का दुरुपयोग न कर सके। उनका मानना है कि भारत मे रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन और बौद्धों सभी के लिए नई संहिता समान रूप से लागू की जाए ताकि गुजारा भत्ता और उत्तराधिकार नियमो में दिखाई देने वाली विकृतियां नष्ट हों।

आज तो यह सवाल सामाजिक संस्था 'कल्याणी' की अध्यक्षा श्रीमती सरला मुदगल व अन्य ने याचिका के माध्यम से उठाया है। पर समय-समय पर ये सवाल अदालतों में और अदालतो से बाहर भी उठते रहे हैं। संहिताएं सामाजिक विकृतियों को नष्ट करके समरूप समाज के निर्माण के लिए यानि सभी की बेहतरी के लिए बनाई जाती हैं। अगर बकौल पंडित नेहरू के १९५४ में किसी समान नागरिक संहिता लाने का समय नही आया था तो आज तो निश्चित रूप से वह दिन आ चुका है। आज जब स्त्रियों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता भरपूर है स्त्रियों के हकों का संरक्षण करने वाली पुराने ढंग की पंचायतें, बिरादरियां और सयाने भी नहीं बचे हैं, उच्चतम न्यायालय का यह निर्देश सर्वथा कालानुरूप है कि सरकार अगस्त १९९५ तक इस दिशा मे अपनी सोच से, कदमों से न्यायालय को अवगत कराये। प्रतिक्रियाएं तो स्वाभाविक हैं, इस प्रकरण पर राजनीतिक व धार्मिक बवण्डर भी लाजिमी है। माहौल जब बहसो से गर्माएगा तो तवे पर राजनीतिक रोटियां सेंकने वालों की कोई कमी न होगी, लेकिन राष्ट्र के कर्णधारो के सोचने का और आगे आने का वक्त है कि लोगो को समझाएं कि धर्म के दो रूप होते हैं एक निजी धर्म और दूसरा राष्ट्रीय धर्म। न्यायालय राष्ट्रीय धर्म की बात कर रहा है जिसका सीधा सम्बन्ध सार्वजनिक नैतिकता से है।

हरिद्वार आर्यसमाज के प्रबन्धक आचार्य देवेन्द्र शास्त्री एम. ए. विद्याभास्कर

आर्य समाज के क्षेत्र मे यह जानकारी आवश्यक है कि आर्य समाज हरिद्वार के प्रबन्धक लगभग १५ वर्षों से ऊपर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा नियुक्त श्री पं० देवेन्द्र शास्त्री हैं न कि कोई अन्य ?

मूल सुधार

७ मई ९५ के सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र मे पृष्ठ ३ पर किसी ने सूचना "गुरुकुल कांगड़ी में सह शिक्षा" विषयक दी जिसमें डा० वीरेन्द्र कुमार पवार प्रबन्धक हरिद्वार छपा है।

वस्तुत. देवेन्द्र शास्त्री १५ वर्षों से प्रबन्धक हैं ? कई बार देवेन्द्र जी पर हमले हुए, परन्तु वह इतने जनप्रिय मिलनसार हैं कि अपने प्रभाव से आर्य समाज हरिद्वार पर अधिकार बनाए रखा।

सभी सरकारी अधिकारी वर्ग एव आर्यजन ध्यान रखें, श्री देवेन्द्र शास्त्री ही वास्तविक प्रबन्धक हैं।

—सम्पादक

कश्मीर का स्याह दिन

कश्मीर घाटी मे अमन-चैन तथा कश्मीरियों का भला चाहने वालों की यह आशंका दुर्भाग्य से सही निकली कि घाटी के बदनाम जिले की चरारे-शरीफ दरगाह को आतंकवादियों तथा भाड़ेतों के हाथों नष्ट होने से बचाया नहीं जा सकेगा। दरगाह तथा चरार कस्बे के मध्य भाग की इमारतो में घुसे आतंकवादियों को वहां से निकालने और दरगाह को क्षति पहुंचने से बचाने के सुरक्षा बलों तथा कश्मीर प्रशासन के सभी प्रयास असफल रहे। लगता है कि कश्मीर के इतिहास का यह स्याह दिन टाला नहीं जा सकता था, क्योंकि राज्य सरकार ने दरगाह मे घुसे सशस्त्र आतंकवादियों से दो महीने मे कई बार यह प्रस्ताव दुहराया था कि यदि वे सुरक्षा बलों के घेरे से निकलना चाहते हो, तो उन्हें पाकिस्तान जाने के लिए नियन्त्रण रेखा तक सुरक्षित पहुचाने की गारटी दी जा सकती है। प्रत्येक बार जब यह प्रस्ताव किया गया, आतंकवादियों ने न केवल उसे ठुकरा दिया, बल्कि यह धमकी भी दी कि यदि सुरक्षा बलों ने उनकी घेरेबंदी खत्म नहीं की और उन्हें पकड़ने-मारने के लिए कार्रवाई की तो वह दरगाह, उससे लगी खानकाह मस्जिद तथा अन्य इमारतों मे आग लगा देंगे। यह कश्मीरी जनता का और पूरे देश का दुर्भाग्य है कि आतंकवादियों ने अपनी धमकी पर अमल कर डाला और सूफी उदारवाद, सहिष्णुता और सांप्रदायिक प्रेम की प्रतीक लकड़ी की बनी दरगाह को खाक के ढेर में बदल दिया।

होनी, होकर रही। कश्मीर के प्रशासन तथा सुरक्षा बलों को चरारे-शरीफ दरगाह के विनाश के लिए किसी भी तरह जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। चरार कस्बे की घेरेबंदी, सुरक्षा बलों द्वारा प्रदर्शित संयम एवं सावधानी का एक ही उद्देश्य था कि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों की मान्यता के पवित्र स्थल को नष्ट होने से बचाया जाए। प्रशासन को इसलिए भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता कि वह आतंकवादियों को यह मनोवैज्ञानिक लाभ नहीं उठाने दे सकता

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादकीय

सही पर अधूरा फैसला

देश में समान नागरिक संहिता लागू करने के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय ने सम्पूर्ण राष्ट्र और विशेष रूप से पदलोलुप तथा संकीर्ण राजनीतिकों को यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि राष्ट्र की संस्कृति क्या है कि और उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। देश की सर्वोच्च अदालत ने जिस संकल्पबद्धता के साथ भारत सरकार को समान नागरिक संहिता बनाने के निर्देश दिए हैं और संविधान के अनुच्छेद ४४ की अवधारणा को मूर्त रूप देने की आवश्यकता पर बल दिया है, उसके लिए सर्वोच्च न्यायालय की भूरि-भूरि प्रशंसा की जानी चाहिए। वस्तुत: यही न्यायपालिका का धर्म था, धर्म है और धर्म रहेगा। आज न्यायपालिका ही एक मात्र आश्रय है, जिससे भारत की जनता को वास्तव मे न्याय मिल सकता है। समान नागरिक संहिता बनाने के मामले में सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी तनिक भी कठोर नहीं है कि स्वतंत्रा प्राप्त होने के बाद से ही भारत सरकार संविधान के अनुच्छेद ४४ के सन्दर्भ में अपने दायित्व की निरंतर अनदेखी करती चली आ रही है यह अनुच्छेद संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांतों में से है जिनका परिपालन सुनिश्चित करने का दायित्व राज्य पर डाला गया है। अनुच्छेद ४४ में कहा गया है कि "राज्य, भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता प्राप्त कराने का प्रयास करेगा।" संविधान के अनुच्छेद ३७ में नीति निर्देशक सिद्धान्तों के परिपालन का प्रावधान है। इसमें कहा गया है कि "इनमें अधिकथित तत्व देश के शासन में मूलभूत हैं और विधि बनाने में इन तत्वों को लागू करना राज्य का कर्त्तव्य होगा,' परन्तु देश के सत्ताधीशों ने इन प्रावधानों के अदालतों द्वारा प्रवर्तनीय या बंधनकारी न होने के कारण इनकी लगातार अनदेखी की।

दरअसल अनुच्छेद ४४ में उल्लिखित शब्द "प्रयास करेगा" ने राजनीतिकों को विशेष प्रकार की तिकड़मबाजी व गोलबंदी करने के लिए अनेक प्रकार के अवसर प्रदान किए और इन अवसरों का फायदा उठाते हुए उन्होंने समाज को विभिन्न भागों में बांट देने मे कोई कसर नहीं छोड़ी। स्थिति यह है कि न्याय स्तर पर भी समाज विभाजन हो गया। कम से कम इस स्तर पर तो यह बिभाजन समाप्त होना ही चाहिए। भारत मात्र एक भौगोलिक अवधारणा नहीं है। यह एक भावनात्मक अवधारणा भी है। भारत भूमि पर रहने वाले प्रत्येक नागरिक को सपूर्ण सम्मान प्राप्त हो, समान अधिकार प्राप्त हों-यह व्यवस्था करने का दायित्व सरकार का है, परंतु किसी भी सरकार ने इस दायित्व का पालन नहीं किया। यह पालन नही हुआ, क्योंकि ससद ने भी कभी इस बात के लिए गंभीरता से चेष्टा नहीं की कि राष्ट्र की जो सांस्कृतिक या भावनात्मक अस्मिता है, उसकी रक्षा की जाए और प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त हो। प्रकारांतर से इसका अर्थ यह भी है कि इस देश के राजनैतिक दलों ने समान नागरिक संहिता के सदर्भ में अपने दायित्व की घोर उपेक्षा की और यह उपेक्षा इसलिए की, कि उन्हें राष्ट्र और समाज को विभाजित रखने मे ही अपना हित लगा। राजनीतिक इस बात को जानते हैं कि समाज जितना अधिक विभाजित होगा, राजनैतिक दल अपनी तिकड़मे बैठाने में उतना ही सफल हो सकेंगे। उनका यह रवैया अब भी जारी है और कभी मजहब की आड़ में कभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक रक्षा की आड में, कभी भाषा की आड़ में देश के नागरिकों की भावनाओं को भड़काया जाता है। यह स्थिति समाप्त हो जानी चाहिए। जो भी हो, न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह की यह टिप्पणी बिल्कुल उचित है कि विभाजन के बाद जो लोग भारत मे रह गए उन्हे पूरी तरह मालूम था कि भारतीय नेताओं का विश्वास द्विराष्ट्र या त्रिराष्ट्र के सिद्धांत में नहीं है और भारतीय गणतंत्र समग्रता में एक राष्ट्र है। भारतीय राष्ट्र का कोई भी धार्मिक समुदाय धर्म के आधार पर अपनी अलग शख्सियत का दावा नहीं कर सकता। न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह की टिप्पणी के अनुरूप यदि वास्तव में भारत में कोई कानून बनाया जा सके और राजनीतिकों की क्षुद्र मानसिकता में परिवर्तन लाया जा सके तो राष्ट्रीय एकत्व को अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त हो जाएगी।

सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय एकता के लिए जो निर्णय दिया, भले ही उसमें सीधे-सीधे मुस्लिम समाज का नाम न लिया गया हो, लेकिन यह सही है कि इस समय मुस्लिम समाज के नेताओं और उसके कुछ पृष्ठपोषक नेताओं द्वारा बहुत घृणित तरीके से अपने समाज का शोषण और दुरुपयोग किया जा रहा है। 'मुस्लिम समाज की अस्मिता राष्ट्रीय से पृथक है', जो भी राजनैतिक दल या राजनीतिक इस सिद्धांत पर विश्वास रखते हैं और अपनी नीतियों का निर्माण इसी सिद्धात के आधार पर कर रहे हैं, वे राष्ट्रीय एकता के सबसे बडे शत्रु हैं। हिन्दु हो, मुस्लिम हो, सिख हो या ईसाई, किसी की भी अस्मिता राष्ट्रीय अस्मिता से ऊपर नही हो सकती। किसी भी व्यक्ति को इस बात का अधिकार नही दिया जा सकता कि वह भारतीय सस्कृति को पददलित और अपमानित करे तथा उस पर अपनी बौद्धिक संस्कृति को थोपे। कोई भी धार्मिक पुस्तक चाहे वह कुरान शरीफ हो, मनुस्मृति हो या अन्य कोई मजहबी ग्रंथ, उसका महत्व राष्ट्र से ऊपर नही हैं। जो बातें इन धार्मिक पुस्तको में लिखी हैं, जिस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का उल्लेख इनमे है और जिस प्रकार की सामाजिक संहिता का निर्माण करने की व्यवस्था इन पुस्तकों में दी गई है, उसके अनुरूप भारत के नागरिकों का भाग्य नहीं लिखा जाना चाहिए। इस देश के नागरिकों का भाग्य लिखा जाएगा, भारत की जो स्वयं की अस्मिता है उसके अनुरूप।

पिछले लगभग सौ वर्षों में मानव सभ्यता ने अभूतपूर्व प्रगति की है। आज के मानव का भाग्य एक हजार या तीन हजार वर्ष पुरानी पुस्तकों के आधार पर नही लिखा जा सकता। भारत के लोगों को अपना भाग्य लिखने का अवसर प्राप्त होना ही चाहिए। नि:संदेह हजारों वर्ष पुरानी धार्मिक पुस्तकें मनुष्य से उसके अधिकार को छीन लेंगी, जिसके बल पर वह अपने भाग्य का विधाता स्वयं बन सकता है। आज का मानव स्वय अपने भाग्य का विधाता है। यदि कोई पुस्तक यह अधिकार उससे छीनती है तो ऐसी पुस्तक को कम से कम नागरिक संहिता के संदर्भ मे संवैधानिक सरक्षण न तो दिया जा सकता है और न दिया जाना चाहिए। यह अच्छा ही हुआ कि सर्वोच्च न्यायालय ने देश को एक दिशा दी। वैसे यह कोई नहीं जानता कि समान नागरिक संहिता के सदर्भ में उसके द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों का पालन कब और कैसे होगा। ऐसा इसलिए है, क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय दिशा तो देता है, परन्तु आधी-अधूरी। यह फैसला तो ऐसा होना चाहिए था जो कालबद्ध होने के साथ ही केन्द्र तथा राज्य सरकारों को संविधान के अनुच्छेद ४४ का पूरी तरह अनुपालन करने के लिए बाध्य कर सकता। देश के नागरिकों को एक समान अधिकार प्राप्त होने ही चाहिए। मजहब के आधार पर नागरिकों के अधिकारों में परिवर्तन करते जाना किसी भी दृष्टि से न तो न्यायोचित है और न ही तर्क संगत। सरकार के इस रवैए पर जैसे भी हो अंकुश लगना ही चाहिए।

गुरुकुल कांगड़ी और सहशिक्षा

डा० महेश विद्यालंकार

गत दिनों गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में सहशिक्षा करने के लिए हंगामा, वकालत और बहस का मुद्दा खड़ा किया गया। सीनेट का घिराव, गाली गलौज, अशोभनीय व्यवहार व प्रदर्शन किया गया। अखबारों में मिर्च-मसाला लगाकर समाचार छपे। सम्पादकीय व पत्रों द्वारा टीका टिप्पणी लिखीं गई। चर्चा गर्म रही। प्रबन्धक समिति व अधिकारियों पर नाना प्रकार के आरोप लगाए गए। बहुत कुछ हुआ। जो गुरुकुल के इतिहास में पूर्व कभी न हुआ था। इस घटना, सोच तथा व्यवहार से वैदिक विचार-धारा में आस्था व विश्वास रखने वाला हर व्यक्ति चिन्तित, आहत और उद्वे-लित हो रहा है। इस प्रकार के व्यवहार की जितनी निन्दा, भर्त्सना एवं आलोचना की जाय, उतनी थोड़ी है।

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सिद्धांतों व मन्तव्यों में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की एक विशिष्ट पहिचान है। जिसके अपने मूलभूत सिद्धांत मान्यताएं आदर्श, मर्यादाएं, रहन-सहन वातावरण खान-पान, नैतिक सीमाएं आदि आधार हैं। इन्हीं के कारण गुरुकुल का गुरुकुलत्व है ये ही बातें इसकी पहिचान हैं। यदि ये मूल-आधार नहीं हैं तो गुरुकुल और कालेजों में कोई अन्तर नहीं है? वर्तमान में जो गुरुकुल का वातावरण, स्वरूप, स्थिति और सोच है उसमें दयानन्द, आर्य समाज, श्रद्धानन्द व गुरुकुलीयता नजर नहीं आती। यदि वहां ये भावना होती तो ये असंगत, अव्यावहारिक व असैद्धांतिक सहशिक्षा की बात गुरुकुल में न उठती। ये समस्या बाहर से नहीं आई, अन्दर की है, उन लोगों की है, जो वैदिक विचारधारा में तथा गुरुकुलीयता में आस्था, विश्वास एवं भावना नहीं रखते हैं जिनकी दृष्टि में नितान्त भौतिकता और अंग्रेजियत का भूत सवार है जो रहते व खाते गुरुकुल का हैं, गीत गाते हैं—मैकाले और यूरोपीय शिक्षा पद्धति के।

वे तर्क देते हैं कि आर्य समाज प्रगतिशील संस्था है। नारी शिक्षा का हिमायती है। समानता की बात करता है, फिर भेद भाव क्यों? वे भूल जाते हैं कि आर्य समाज सबसे आगे नारी शिक्षा का पक्षधर व समर्थक रहा है और है। सहशिक्षा का विरोध करता है। इनसे जो विकृतियां, समस्याएं और अ-मर्यादित भोग वासना की प्रवृत्तियां उभरती हैं, उनके लिए वैदिक, विचारधारा में निषेध हैं। लड़कों और लड़कियों के अलग अलग गुरुकुल, विद्यालय व महा-विद्यालयों के नियम व व्यवस्था है। इसके पीछे, मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक, सामाजिक, वैयक्तिक आधार तर्क एव प्रमाण हैं। आज जो सहशिक्षा से उत्पन्न चारित्रिक, नैतिक मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पतन हो रहा है: वह सर्वविदित है। सारा संसार इस आग में जल रहा है। गुरुकुल व्यवस्था मे इसीलिए लड़के और लडकियो की शिक्षा की व्यवस्था अलग-अलग रखी गई।

ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के नाम पर जो सहशिक्षा स्कूल व कालेजों में चला रहे हैं, वह नियम और सिद्धात विरुद्ध हैं। सीधा प्रश्न गुरुकुल की मर्यादा, जीवनदृष्टि वातावरण व उद्देश्य नियमादि से है। गुरुकुल का महत्व इसी से है। कार्य, व्यवस्था व कार्यकर्ताओं में दोष और कमियां हो सकती हैं पर जो गुरुकुल शिक्षा पद्धति का उद्देश्य, नियम तथा व्यवस्था है। उसमें कोई त्रुटि व अप्रमाणिकता न होगी। आज देश-विदेशों में लोग आवा-सीय एव लडके लड़कियो के अलग अलग शिक्षणालयों को वरीयता देने लगे हैं। हम स्वयं अपने आचरण, रहन-सहन और सोच में गुरुकुल के संस्कार लुप्त कर दें। ससार की दृष्टि में गुरुकुल शिक्षा पद्धति व गुरुकुलीयता के प्रति आदर व श्रद्धा है। अपनी पहिचान है।

इतने वर्षों से गुरुकुल बना, अभी तक कभी सहशिक्षा की माग नहीं उठी? इतने गुरुकुल चल रहे हैं किसी में लड़कियों को लड़कों के साथ पढ़ने व पढ़ाने की मांग नहीं रखी? गुरुकुल में कुछ ऐसे लोगों का प्रवेश हो गया है, जिनका आर्य समाज की विचारधारा से और गुरुकुलीयता से कोई सरोकार नहीं है। उनका दृष्टिकोण मात्र विश्वविद्यालयों के समान रहन सहन, खान-पान व सोच से है? सहशिक्षा से चहल-पहल होगी। गुरुकुल शब्द की गरिमा व उच्चादर्श में सहशिक्षा कहीं समाहित नहीं होती है। गुरुकुल में कई प्रकार से गिरावट आई है। इससे बड़ी गिरावट क्या होगी, जहां अध्ययन अध्यापन से पूर्व प्रार्थना नहीं होती? वेषभूषा समाप्त हो गई? वातावरण में गुरुकुलीयता नजर नहीं आती। इसके लिए व्यवस्था दोषी है।

गुरुकुल की पहचान वेद, दर्शन, संस्कृत संस्कृति, इतिहास आदि विषयों से है? न कि माइको बायलोजी, कम्प्यूटर, एन० सी० ए० आदि विषयों से। उच्चाधिकारियों ने अपनी वाह वाही लूटने के लिए, अपने को काबिल सिद्ध करने के लिए आधुनिक व अर्थ से जुड़े हुए विषयों को गुरुकुल में खोला। वेद, दर्शन संस्कृति आदि पर ध्यान नहीं दिया। इनके पढ़ने वालों को साधन, सुविधाएं व प्रोत्साहन नहीं मिला। आधुनिक विषयों में प्रवेश तथा नियुक्तियों के लिए भाग दौड़ मच गई? सत्ता में बैठें लोगों और स्थानीय व्यक्तियों की नीयत खराब हो उठी गुरुकुल पर कब्जा करो, अपने लोग मिल बांटकर हिस्सा करें, बाहर के लोग क्यो ले जायें: उस हंगामे के मूल में एक कारण यह भी रहा है। अधिकारियों को सोचना चाहिए कम्प्यूटर शिक्षा दुनिया पढ़ाती है। वेद कोई नही पढ़ाता है। वेद से ही गुरुकुल की पहिचान है। यदि गुरुकुल को गुरुकुल रखना हैं, बचाना है तो आधुनिक विषयों की बीमारी को सख्ती से रोकना होगा। जिसे माइक्रोबायलोजी पढ़नी है, दूसरी जगह चला जाय, इतनी लम्बी दुनिया पड़ी हैं। रहा अनुदान का प्रश्न, सरकार कभी नहीं कहती कि आप अपने मूलभूत आदर्शों, मान्यताओं व विषयों को छोड़ें। विश्व विद्या-लय का दर्जा गुरुकुलीयता व प्राचीन सांस्कृतिक चिन्तन के आधार पर मिला था, न कि आधुनिक विषयों के कारण। रही विद्यार्थियों की उपस्थिति की समस्या यदि साधन, सुविधाएं, वातावरण और गुरु की भावना मिले तो छात्र संख्या की कोई कमी नही है। संस्था को पुनर्मूल्यांकन, आत्मविश्लेषण व सुधार की जरूरत है।

आर्य समाज का उदय संघर्षों, चुनौतियों और विपरीत परिस्थितियो में हुआ। यह सदा से एक जागरूक चौकीदार की भूमिका निभाता आया है। जब संस्कृति, सभ्यता, आदर्शों, परम्पराओं, जीवन मूल्यों आदि पर संकट आया तो आर्य समाज ने सगठित होकर आदर्श मूल्यो की रक्षा की। आज आर्य समाज के सामने ज्वलन्त चुनौती, गुरुकुल में सहशिक्षा एक अहं मुद्दा बनकर सामने आई है। ऋषि के आदर्श और आर्य समाज के सिद्धांत पर प्रश्न चिन्ह लगाया जा रहा है। आर्य जनता की परीक्षा है। श्रद्धानन्द के बलिदान की पुकार है। गुरुकुल की अस्मिता और पहिचान की बाजी लगी है। आर्य जनता के सामने जब भी चुनौती आई, पीछे नहीं हटी। जो लोग गुरुकुल के स्वरूप को विकृत करना चाहते हैं, उनके मनसूबे पूरे न होंगे। आर्य जनता जागी है: इसके लिए सब कुछ करने को तैयार है। कोई भी ऋषि भक्त आर्य समाज की विचारधारा में आस्था रखने वाला व्यक्ति गुरुकुल में सहशिक्षा का समर्थक न होगा।

आर्यो! अपनी विरासत को सभालो! श्रद्धानन्द का बलिदान तुम्हें पुकार रहा है। तुम्हारे ऊपर अन्दर बाहर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं। समूल निगलने के षडयन्त्र चल रहे हैं। अगर न सभले तो ....आने वाली पीढ़ियां हमे माफ न करेंगी?

जिनका वीर जन्म दिवस २४ मई है

हल्दी घाटी धर्मयुद्ध के अमर विजेता

महाराणा प्रतापसिंह

निहालसिंह आर्य, दिल्ली

हमारे भारतवर्ष देश के रणबांकुरों के प्रान्त राजस्थान के मेवाड़ राज्याधिपति वीर शिरोमणि महाराणा प्रतापसिंह से धार्मिक स्वाभिमान अदम्य आत्मबल से सभी सुपरिचित हैं। इनका कुल वल्लभिपुर से आये हुए बलवंश की शाखा गूहिल तथा शिशोदिया कुल के शासक क्षेत्रसिंह (छेता) लक्ष्मसिंह (लाखा) राणा मोकल अतुल वीर राणा कुम्भा के राणा रायमल के सुपुत्र राणा सांगा के पौत्र राणा उदयसिंह की पीढ़ी में था। महाराणा प्रताप प्रसिद्ध देशभक्त शूरवीर, सच्चरित्र, साहसिक योद्धा, दृढ प्रतिज्ञ ऐतिहासिक महापुरुष थे। जिनकी सुकीर्ति भारतवर्ष के गगनमण्डल में समुज्ज्वल नक्षत्र के समान सदा देदीप्यमान रहेगी। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वतन्त्र वातावरण में विदेशी विधर्मी शासको द्वारा हमारे बिगड़े हुए इतिहास की झूठ की पोल अब खुलने लगी हैं। मुगल शासक कामी, लम्पट, अति विलासी चरित्रहीन अकबर के विरुद्ध महाराणा प्रतापसिंह द्वारा लड़े गये, १५७६ ई० मे जीते हुए युद्ध को भी उन धूर्त शासकों ने तोड़-मरोड़कर झूठ लिख दिया था। जिसका भण्डा फोड़ और महाराणा प्रताप की जीत का सत्य वर्णन कृपया नीचे पढ़ें—

महाराणा प्रताप के तत्कालीन महादानी धनपति सेठ भामाशाह (जिसके पिता दादा महेत्वम "महम" जिला रोहतक हरयाणा के निवासी थे) उदारमना भामाशाह ने अपना सारा धन स्वदेश की सुरक्षा में महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया था। जिससे महाराणा ने मिथ्याभिमानी अकबर से बीसों वर्ष तक युद्ध करके अपने तीस दुर्ग वापस छीन लिए और मुगल सेना के छक्के छुड़ाकर सर्वथा भगा दी थी।

हल्दी घाटी युद्ध विजय के सत्य प्रमाण

महान लेखक अलबदायूनी अपने लिखे इतिहास 'मुन्तखबु तवारीख' में लिखते हैं—"मानसिंह और आसफ खाँ" गोगुन्दा से सात कोस पर दर्रे (हल्दी घाटी) के पास सेना सहित पहुंचे तो राणा लड़ने आये—राणा कीका (प्रताप) ने दर्रे के पीछे से तीन हजार राजपूतों सहित आगे बढ़ाकर अपनी सेना के दो भाग किये। एक भाग में, जिसका सेनापति हकीम सूर अफगान था, पहाड़ों से निकलकर हमारी हरावलों (सेना का अग्रिम भाग) पर हमला किया। जमीन ऊंची-नीची रास्ते टेढ़े-मेढ़े और कांटों वाले होने के कारण हमारी हरावलों में हड़बड़ी मच गयी, जिससे हमारी पूरी तरह हार हुई। हमारी सेना के राजपूत जिनका मुखिया राजा लूणकरण था। जिसमें से अधिकर बायें भागमें थे, भेड़ों के झूण्ड की तरह भाग निकले। और हरावल को चीरते हुए दाहिने हाथ की ओर भागे। राणा कीका (प्रताप) के सैन्य के दूसरे भाग ने, जिसका संचालन राणा खुद कर रहे थे, दर्रे से निकल काजी खाँ के सैन्य पर; जो दर्रे के दरवाजे पर था हमला किया और उसकी सेना को चीरते हुए वे उसके मध्य भाग तक पहुंच गये। जिससे सबके-सब सीकरी के शेखजादे से भाग निकले। यहाँ तक कि खुद मान सिंह भी सैनिकों के सहित हरावल की बांयी तरफ भागा, जिससे आसफ खाँ को भी भागना पड़ा अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए दाहिनी तरफ के सय्यदों की शरण ली। महाराणा प्रताप की सेना के थोड़े ही सैनिकों के सामने मुगल सेना डरकर बनास नदी को पारकर १०-१२ मील तक भाग गयीं। मानसिंह को गोगुन्दा में रहते चारमास बीत गये किन्तु वह कुछ भी नहीं कर सका। इस पर वहाँ से चले आने का हुक्म भेजा गया और उनकी गलतियों के कारण मानसिंह और आसफ खां की ड्योढी बन्द कर दी गयी।"

इन दोनों की ड्योढ़ी बन्द करने के प्रमाण 'तबकाते अकबरी' तथा अब्दुल फजल की पुस्तक 'अकबर नामें' में भी मिलते हैं। बदायूनी आगे लिखता है कि दुर्दशा होकर शाही सेना लड़ती-भिड़ती गोगुन्दा को छोड़कर अकबर के स्थान अजमेर में पहुंच गयी, जो गोगुन्दा में चार मास तक बन्दियों की भाँति बन्द रही थी।

(२) अब्बुल फजल ने 'आईने अकबरी' में यह लिखा है—"उस समय सरसरी तौर पर देखने वालों की निगाहों में राणा की जीत नजर आती थी"। यहाँ अन्य बहुत प्रमाणों में से यह केवल ३-४ प्रमाण ही दिये हैं। कृपया पढ़ें = श्री रघुनन्दन त्रिपाठी की पुस्तक तथा श्री हरिसिंह आर्य गाजियाबाद निवासी की पुस्तक 'भारतीय इतिहास की सच्चाई' पृष्ठ ३४ से ४१ सन् १९६८ ई०।

• अपने वीर आर्य पूर्वजों की ख्याति प्राप्त आन-मान और स्वाभिमान की रक्षा करने वाले, भारत राष्ट्र के उन्नायक, वैदिक संस्कृति के संरक्षक अमर सुभट विजयी योद्धा आर्य जनता के हृदय सम्राट महाराणा प्रताप को शतशः प्रणाम है। ज्ञात हो कि अत्याचारी औरंगजेब के दमन कर्त्ता महावीर शिवाजी भी बलि राजा के बलि वंश (पूर्व राज्य वल्लभिपुर) से अरबों के आक्रमण में आये मेवाड़ राज्य के गुहिल और शिशोदिया कुल के ही वंशज थे क्योंकि सन् १३०३ ई० मे धर्मान्ध अलाउद्दीन खिलजी के चित्तोडगढ़ पर आक्रमण से जाकर महाराष्ट्र के भोंसले नामक दुर्ग में शरण ली थी। शिवाजी महाराज के राज्यतिलक के समय काशी के गागाभट ने भी इनके पूर्व वंश की जानकारी दी है।

मूर्तिपूजा : एक विडम्बन (३)

लेखक : श्रीमुनि वसिष्ठ आर्य, सावगांव

सजीव निर्जीव

कक्षा में दोपहर सोये हुये शिक्षक को देख, विद्यार्थी धूम मचा रहे थे। कोई मारामारी करते थे, चिल्लाते थे, कोई गुरुजीको अंगुलीया बताकर अनुमति मिली ऐसा समझ कक्षा के बाहर गये। इतने में हल्ला गुल्ला बढ़ गया। गुरुजी जाग गये, छड़ी टेबल पर पटककर बोले - यह क्या चल रहा? उसी समय बाहर के विद्यार्थी प्रवेश करते भये? गुरुजी संतप्त होकर पूछते कि क्यो बाहर गये? किस ने अनुमति दी? विद्यार्थी गुरु का क्रोध देखकर कांपने लगे, एक बोला, हम आपसे ही परवानगी लेकर बाहर गये थे। गुरुका पारा चढ़ गया, वे डांटकर बोले, मूर्खो! हम सो रहे थे, तब परवानगी कैसे हुई? इस उदाहरण से समझ मे आता कि जो जिन्दा है, पर सोया था, उसकी उपस्थिती में कक्षा में कैसी अनुशासनहीनता निर्माण हुई है, अरे! जो मूर्ति कभी जीवित थी ही नही, ना हो सकती है, तब उस मूर्ति को आपने नहलाया क्या, गंध धूप दीप नैवेद्य दिया क्या, वस्त्र पहनाये क्या या पंखा झलाया क्या? उसे क्या फरक पड़ता है, वह निर्जीव है प्राणप्रतिष्ठा के बाद भी वही हाल रहता है। प्रकृति जन्य और ज्ञानशून्य अचेतन मूर्ति क्या समझेगी? निर्जीव वस्तु को सजीव समझकर या सजीव को निर्जीव समझकर आप थोड़ासा व्यवहार तो कर देखे, तब परिणाम का पता चलेगा। मूर्ति के ऊपर वस्तुयें चढ़ाने से, उसे हाथ जोड़ने से साष्टांग पणिपात करने से, ना ईश्वर की पूजा होती है और न धर्म की रक्षा। जड़ मूर्ति पूजने से तो जड़ता के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नही हो सकता। हे चेतन मनुष्यों! सूक्ष्मतम चेतनकी ओर चलिये।

मूर्ति से एकाग्रता

कुछ लोग कहते हैं कि मन की एकाग्रता के लिये, ध्यान के लिये, कोई मूर्ति सामने रखना आवश्यक है। इस संबंधमें विचार करे कि आंखे बन्द कर के ही ध्यान करते हुये देखा जाता है, चाहे मनुष्य मंदिर मे मूर्ति समक्ष खड़ा हो, या एकान्त में अकेला बैठा हो। प्रश्न आंखो से देखने का रहा नही। ईश्वर का साक्षात इन चर्म चक्षुओं से होता नही। तब स्वयं चिंतन करें कि क्या कोई भी मनुष्य प्राणी ईश्वर की मूर्ति घड सकता है? मूर्ति सामने रहने से ईश्वर का आस्तित्व मानना और मूर्ति न रहने से ईश्वर नही है, ऐसा मानना क्या उचित है? जितनी मूर्तिया भिन्न भिन्न हैं क्या उतने भिन्न-भिन्न ईश्वर है? कहते है, ईश्वर एक है पर उसके रूप अनेक हैं, प्रश्न है कि ईश्वर का क्या रूप है? क्या रंग है? इससे तो आपका विश्वास ईश्वरकी सर्वव्यापकता में रहेगा ही नही। तब ईश्वर को एक देशी मानना, यह बड़ा भारी अन्याय्य होगा। ईश्वर मूर्ति मे भी है, तो बाहर भी है यह क्यों भूल जाते हो? फिर मूर्ति के अन्दर के ही ईश्वर को आप क्यों पूजते हो? बाहर वाले को क्यों नही पूजते? ध्यान रहे ईश्वर दर्शन करना है तो आप और ईश्वर दोनो एक जगह एक समय उपस्थित होने चाहिये। मूर्ति में ईश्वर तो है पर आप नही, ना आप मूर्ति में प्रवेश कर सकते हो, और ना मूर्ति का ईश्वर बाहर आ सकता है तब दर्शन कैसे? अपने अतर्यामिको छोड़कर बाहर भटकना कितना उचित है? मूर्तिमेका ईश्वर, और आपका अंतर्याति ईश्वर भिन्न भिन्न नही है। क्या ईश्वर आता है, ५-१० दिन आपके घर, गाव, नगर में ठहरता है और उसे चले भी जाना पड़ता है, क्या यह सत्य है। आता कहां से और जाता कहां, यह प्रश्न ही है। महाराज! वह तो सर्वव्यापक है। एकाग्रता चितका विषय है चितका काम चिंतन करना है आप मन से मनन, बुध्दि से निर्णय और चित्त से चिंतन करना कब सीखोगे? आपके मन, बुद्धि, चित्त का कोई आकार नही, निराकार से ही निराकार का ध्यान होता है, साकार शरीरकी वहां गौणता है।

ईश्वर स्थानबद्ध

ईश्वर पंढरपुर में विराजता है, फिर बदरीनारायण, काशी, जगन्नाथपुरी, तिरूपति जाना उचित नही है। क्या वहां के ईश्वर इस ईश्वर से भिन्न है? पंढरपुरके ईश्वर को महाराष्ट्रीय के अतिरिक्त क्या सारी दुनिया जानती है? दुनिया के लोगों को छोड़ो, पर महाराष्ट्र के सिंधी, पंजाबी गुजरातीभी क्या इसे जानते हैं? दूसरी बात इतने वर्षो से ईश्वर रहकर भी पंढरपुर के सब निवासी योगी महात्मा, मुक्तात्मा हुये नही हैं। सांप्रत पंढरपुर में अनाचार दुराचार, भ्रष्टाचार, अत्याचार, व्यभिचारादि उस ईश्वर की ही विद्यमानतामें हो रहे हैं। मित्रों! मूर्तिमंत ईश्वर को स्थानबद्ध माननेसे लोगों के मन का भय, पाप भी रूता साफ निकल गयी, चरित्र गिर गया, क्या इसी लिये मूर्ति घड़ली गयी हैं? मूर्ति को ईश्वर माननेवालो - भूलो मत कि अफजलखां के भय से तुलजापुर के जगदम्बा भवानी के और पंढरपुर के ईश्वरों का क्या हाल था? मुहम्मद गजनवी ने सोमनाथ का, बाबर ने अयोध्या का औरंगजेब ने काशी विश्वनाथ का क्या हाल किया हैं? आज पकिस्तान, बांगला देश, काश्मीर में सैकडो मदिर एव मूर्तिया नष्ट भ्रष्ट की गयी हैं या नही? क्या यही ईश्वर हैं? अकल का ताला खोलो, तर्क का द्वार खटखटाओ, और मूर्ति पूजा की वेद विरूद्ध मान्यता बन्द करो।

मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी और मूर्ति पूजा

सब यह जानते हैं की महर्षि वाल्मिकी की मूल रामायण है। तुलसीकृत रामचरित मानस में वर्णित रामचन्द्रजी द्वारा लंका प्रस्थान समय शिव मूर्ति की स्थापना और पूजा करना जो लिखा है, वह मूल रामायण में कहीं भी नहीं है। वह तो मन्घडन्त कविकल्पना है। तनिक यह सच मानले तो इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि, रामचन्द्रजी से ईश्वर भिन्न था, जिसकी उन्हों ने पूजा की, वे स्वय ईश्वर न थे। क्या ईश्वर, ईश्वर की पूजा करता है? वाल्मिकी रामायण मे राम को ईश्वरावतार नही बताया है, इन्हे सच्चा आर्यवीर, महान क्षात्रिय राजा, बताया है। ईश्वर अवतार सिद्धान्त मिथ्या व निराधार है।

मूर्ति पूजकों की एक दलील

मूर्ति पूजक कहते हैं तुम्हारे पिता थे या नही। हमने कहा - थे। तब देखो यह उनकी प्रतिमा / फोटो है या नही? हमने कहा - हां, है। तब प्रश्न करते हैं - बताओ पिता के प्रतिमा को मानते हो तो उस परमपिता के प्रतिमा को, मूर्ति को, क्यो नही मानते? वास्तव में यह दलील अर्थशून्य और व्यर्थ है। कारण (१) मेरे पिता परमात्मा नही थे, उन्हें प्रथम परमात्मा सिद्ध करो। वाद ईश्वर की मूर्ति के लिये चल रहा है, मेरे पिता के संबन्ध में नही। (२) मेरे पिता ने जन्म पाया है, उनकी मृत्यु भी हुई है, वे शरीर धारी थे, उनके शरीर की प्रतिमा, छबि, फोटो उतर सकती है, क्या ईश्वर शरीर धारी है? ईश्वर ना कभी शरीर धारी था, ना है ना आगे होगा। ईश्वर ना जन्मता है, न मरता है। ध्यान रखिये मूर्तिमान की तो मूर्ति हो सकती है। हम उसे मानते भी है, परन्तु जो कदापि मूर्तिमान न था। उसकी गलत मूर्ति को किस प्रकार मानोगे, इस गलत मूर्ति का खडन हम करते हैं? हम मुसलमान नही जो मूर्ति को बनाना गुनाह मानते हैं। मूर्ति मूर्तिमानकोही बन सकती है, अमूर्त निराकार परमेश्वर की नही। मूर्तिमान मनुष्यों की मूर्ति - चित्र बनाना, अपने घरों में लगाना, और उन चित्र वालो के चरित्रों को स्मरण करना कर्तव्य है, चित्रों को देखो और उनके चरित्रों को याद करो। मूर्ति किसी भी मूर्तिमानकी हो परतु वह खाती पीती सोती जागती नही। उसे स्नान वस्त्र गंध धूप दीप नैवेद्य देना किस काम का? यह गलत मूर्तिपूजा है। जीव शरीर नसनाडी सहित रहता है, ईश्वर अकाय, अव्रणम, अस्नाविरम् है।

क्या आप ईश्वर भक्त हैं

हे मूर्तिपूजकों! सच बात तो यह है कि आप लोग ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझते नही, जानते नही और मानते भी नही। परन्तु जिन्हों ने ईश्वर को जाना, उन भक्तो को ही ईश्वर समझ कर उनकी मूर्तियां बनाकर पूजा अर्चा कर रहे हो। और हम ईश्वरकी उपासना कर रहे ऐसा संतोष करते हो। इनके विचार से ओशो रजनीश ईश्वर था, साईबाबा ईश्वर था, सत्य साई-बाबा भी ईश्वर है, जलाराम बापा भी ईश्वर है, बाल ब्रह्मचारी भी ईश्वर है, सारे संत महात्मा ईश्वर है। अरे भोले भाईयों! इन संत महात्माओं ने

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विवाह के मन्त्र और आधुनिक संदर्भ [२]

डा. श्रीमती प्रवेश सक्सेना

गृहस्थ जीवन का आधार 'काम' है। स्त्री पुरुष के पारस्परिक प्रेम और स्वाभाविक आकर्षण को 'काम' कहते हैं। हमारी संस्कृति में कहीं अमर्यादित या उच्छृंखल प्रेम-भावना को महत्व नहीं दिया गया है। अतः दाम्पत्यजीवन में संयम की महत्ता है तभी यहां कहा गया है—'जास्पत्य सुयममस्तु' (ऋग्वेद ८५-२३) अर्थात गार्हस्थ्य नियमबद्ध हो। नियमबद्ध जीवन होने से गृहस्थ का पथ 'कन्टकरहित' और सरल हो जाता है। भोगवादी विलासिता की प्रवृत्ति से आज मनुष्य 'एड्स' जैसे भयंकर रोगों के पाश में फंस गया है। विश्वविद्यालय के बस स्टापों के होर्डिंग्स पर सुरक्षित सम्बन्धों के लिए अमुक साधन अपनाएं जैसे विज्ञापन कितने लज्जाजनक हैं उस देश में जहां शिक्षणकाल 'ब्रह्मचर्याश्रम' होता था। सुनियमित दाम्पत्य से संतति-निरोध के बाह्य साधनों की आवश्यकता ही नहीं पड़ती तथा पति-पत्नी दोनों तन मन से स्वस्थ रहते हैं।

वधु जब अपने पितृकुल के प्रिय सम्बन्धीजनों को छोड़कर पतिगृह में आती है तब पति उसे दृढ़ता से प्रेम बन्धन में बांध लेता है—'सुबद्धामुतस्करम्' (ऋग्वेद ८५-२४) तथा स्वयं भी स्नेह के बन्धनों में बंध जाता है—'पतिबन्धेषु बध्यते' (ऋग्वेद ८५-२८)। इसी अवसर पर निम्न मन्त्र वर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ वधू के सम्बन्धों को मजबूत बनाता है—

सम्राज्ञी श्वशुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञीभव, सम्राज्ञी अधि देवृषु। (ऋग्वेद ८५ ४६)

अर्थात हे वधु ! तुम श्वसुर सास, नन्द तथा देवर सबकी महारानी बनो। यहां पतिकुल में वर्णित स्त्री हीनभावग्रस्त नहीं है अपितु आत्मसम्मान आत्मगौरव से उसका व्यक्तित्व आलोकित है घर में प्रवेश करने वाली नयी सदस्या के इतने सम्मान की व्यवस्था का मनोवैज्ञानिक औचित्य सूर्या-सावित्री जैसी महिला ऋषि ही स्वीकार सकती है। स्त्री की मानसिकता को अपनी गहरी अन्तर्दृष्टि से समझकर सूर्यासावित्री ने ऐसे सिद्धांतों का विधान किया है। गृहस्थ एक प्रकार का साम्राज्य है, सास-ससुर पुत्र-वधु के आने पर स्वयं उसे यह साम्राज्य सौंप दें तो 'सास बहू' के होने वाले झगड़े स्वयं मिट जाएं। आज के युग में यों तो संयुक्त परिवार संस्था विघटित होती जा रही है, फिर भी सास ससुर जहां होते हैं वहां बहू के साथ मन मुटाव या अधिकारों को लेकर तनातनी चलती ही है। बड़ी पीढ़ी के लोग यदि अपने 'साम्राज्य' को नई वधु को 'सौमनस्य' से, प्रेमभाव से सौंप दें तो कोई कारण नहीं कि वधु अपना उत्तरदायित्व समझ प्रेम-सम्मान उन्हें न दे ! आज कल वानप्रस्थ या संन्यास तो कोई नहीं लेता पर फिर भी घर के उत्तरदायित्व सास बहू को सौंप दें तो उसके स्वयं का भार कम होगा जो क्रमश. बढ़ती हुई अवस्था के कारण निबाहना कठिन होता है। उधर वधु भी संतुष्ट रहेगी। पारिवारिक कल्याण के लिए यही सुन्दर व्यवस्था अपेक्षित है।

नई वधु जब नए परिवार में आती है तो उसकी भी कुछ अपेक्षाएं होती है सूर्या सावित्री की दृष्टि से वे भी छिपी नहीं रह सकी है, उन्हें भी अभिव्यक्ति मिली है—

आशासना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् (अथर्ववेद १ ४२)

'मन की अनुकूलता, प्रजा (सन्तति और सेवक जन) सौभाग्य तथा धन ऐश्वर्य को चाहती हुई हे वधु तू आ।' भौतिक ऐश्वर्य और सम्पत्ति गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए आवश्यक तो जरूर है, पर उससे पहले 'मन की अनुकूलता' आती है। हमारी संस्कृति में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं होता है वरन् दो परिवारों का मिलन होता है। पति पत्नी तो 'सौमनस्य' मन की अनुकूलता के बन्धन में बन्धे होने ही चाहिए, और सदस्य भी एक दूसरे के अनुकूल हों। वधु विशेषरूप से सभी के अनुकूलन की कामना करती है! प्रायः पुरुषों द्वारा रचे धर्म शास्त्रों में स्त्री को ही सबके अनुकूल बनने का उपदेश बार-बार दिया गया है। पति कामी हो, क्रोधी हो कैसा भी हो उसे ही सहनशील बनने का आदेश है। पर विचार कर देखें क्या यह सम्भव है ? और यदि वधु या पत्नी को विवश होकर सब सहना भी पड़ता है तो उसकी भीतरी प्रसन्नता लुप्त हो जाती है। तनावों से भरे मन की अभिव्यक्ति कहीं और होती है—बच्चों पर, सेवकों पर वह अपने मन का आक्रोश निकालती है। परिणाम स्वरूप सारा पारिवारिक पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है। स्वाभाविक स्थिति तब ही हो सकती है जब पति पत्नी में सौमनस्य हो, परिवार के हर सदस्य में सौमनस्यभाव हो। पाणिग्रहण में प्रयुक्त ऋग्वेद और अथर्ववेद के मन्त्रों में पति पाणिग्रहण कर पत्नी को जहां एक ओर सुरक्षा का आश्वासन देता है, वहीं मित्रता को, समानता की भावना, भी दर्शाता है—

गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथ मा वदासि (ऋग्वेद ८५-२६) अर्थात 'इस घर में तू घर की स्वामिनी हो तथा सबको वश में रखने वाली हो, पूरे घर को आज्ञा दे।' 'विदथ' शब्द यहां बहुत महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है 'ज्ञानस्थल', 'विवेक धाम' ! ज्ञानियों की वह सभा जहां उपदेश दिया जाता है 'विदथ' कहलाती है। स्त्री के 'विदथ में 'सभा' में उपदेश या भाषण देने पर भी प्रतिबन्ध नहीं है। सुमंगली (ऋग्वेद ८५-३२-३३) वधु को सब देखें तथा आशीर्वाद दे—ऐसी कामना स्वयं पति करता है। अहं भाव युक्त पति पत्नी के सुचरितों की, गुणों की अवहेलना करता है जिसका परिणाम स्त्री के असन्तोष में मुखर होता है। पर जहां पति पत्नी के गुणों का, कार्यों का सम्मान करता है, वहां सदैव स्नेह की पावन गंगा जीवन को आप्लावित करती रहती है।

पति पत्नी विवाह-रथ के दो चक्र है। दोनों समानगति से चलते हैं तभी आनन्द की मन्जिल तक पहुंचना सम्भव होता है। आज के युग में स्त्री पर दोहरा भार पड़ा है। घर-बाहर दोनों को बड़ी कुशलता से वह निभा भी रही है। उसके आर्थिक सहयोग से होने वाली सुविधा का भोग तो सब करते हैं परन्तु घर के कामों में उसकी सहायता कोई नहीं करता। कारण है हमारे समाज में प्रारम्भ से शारीरिक श्रम करने वालों को सदैव हेय दृष्टि से देखा गया है। सूर्यासावित्री ने अपने सूक्तों में इच्छा प्रकट की है कि जैसे योद्धा को कवच रणक्षेत्र में सहायता देता है वैसे ही पति (व अन्य सदस्य) गृहधर्म पालन में सहायक हों—'शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे' (अथर्ववेद २-२१) घर के कार्य विविध प्रकार के होते हैं तथा शक्ति और ऊर्जा की अपेक्षा रखते हैं। स्त्री पुरुष सम्बन्धों में तनाव का कारण आधुनिक युग में यह भी है कि पुरुष घर के कार्यों में सहयोग या सहायता करना तो दूर उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, उन्हें करना अपनी तौहीन समझता है। आज जहां परिवार छोटे होते जा रहे है, नौकरों की समस्या बढ़ती जा रही है, वहां यह विवाद परिवार के सौख्य को ठेस पहुंचाता है तथा स्त्री को अलग-थलग कर देता है। सदियों से पुरुष की एक दुनिया है, स्त्री की एक अलग। दोनों के बीच में दीवार खड़ी है। हम पुरुष हैं-श्रेष्ठ हैं-'तुम बर्तन मलो, खाना बनाओ, बच्चों को पालो पोसो।' इन कामों को करते स्त्री ऊर्जा-हीन हो जाती है, उसका उत्साह मर जाता है। यही कारण है कि आज तक विज्ञान, काव्य या अन्य किसी क्षेत्र में स्त्रियां कम संख्या में ही आगे बढ़ सकी हैं। घर के कार्यों में यदि सहायता न भी की जा सके तो भी उसे 'मोरल सपोर्ट', नैतिक आधार तो मिलना ही चाहिए स्त्री का सारा श्रम सार्थक हो जाता है यदि उसके कार्य को स्वीकृति या मान्यता मिल जाती हैं। वैसे यह भी याद रखना होगा कि शारीरिक और मानसिक श्रम की आखिर एक सीमा होती है। रथ के एक चक्र पर अधिक भार डालने से गृहस्थ कहां जाएगा ? पिछले १०००-१५०० वर्षों के इतिहास को देखें तो स्त्री पुरुष सम्बन्धों में 'असमानता ही दिखाई पड़ती है। सच्चा स्नेहबन्धन दोनों के सम्बन्धों को मानवीय-आधार देता है। सूर्यासावित्री का प्रयत्न यही है कि पति पत्नी दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख में समभागी हों। इस स्नेहबन्धन से ही पत्नी 'सुभगा' होती है तथा 'सुपुत्र' (पुत्र-पुत्री) होती है (ऋग्वेद ८५-२३)। इन्द्र की तरह ऐश्वर्य शाली वर, वीर्य सम्पन्न और स्नेहभावयुत हो तथा उसके सौमनस्य में हो वधु-तभी संतति भी प्रेमभाव से परिपूर्ण होती है। आज जो समाज में आतंकवादी अपराधी, दिनानुदिन बढ़ते जा रहे हैं उसका कारण यही है कि वे 'प्रेम की सन्तानें नहीं हैं, घृणा की, द्वेष की सन्तानें है। जहां पति-पत्नी के मध्य स्वस्थ प्रेम विकसित होता है वहीं आनन्द होता है। (क्रमशः)

मूर्तिपूजा : एक विडम्बन

(पृष्ठ ६ का शेष)

सच्चे निर्मल अंतःकरण से ईश्वर की, सेवा की, ईश्वर उनसे भिन्न हैं, वे स्वयं ईश्वर नही थे, ना वे कभी ईश्वर बन सकते। क्या कोई योगी महात्मा साधु संत ईश्वर का काम कर सकता है? ईश्वर और निसर्ग नियम विरूद्ध चमत्कार विज्ञानतासे ग्राह्य नही हो सकते।

ईश्वर चिंतन ध्यान की वस्तु हैं, ध्यान तो एकाग्र मन से निश्चिन्त एकान्तमे होता हैं। दर्शन तो भौतिक मूर्ति का होता हैं, न कि व्यापक सत्ता का जो कि निराकार हैं। नेत्र भौतिक मूर्ति की आकृति, रूप रंग, वस्त्र, सौदर्य को देख लेते हैं, जिन बातों का परमात्मा से कोई संबन्ध नही हैं। परमात्मा की कोई भी आकृति नही हैं। मूर्ति नेत्रादि इन्द्रियों से देखने के लिये अपेक्षित हैं, न कि आत्मा से परमात्मा की अनुभूति करने के लिए उसकी आवश्यकता हैं। जितने भी योगी महात्मा हुये हैं वे सब ध्यानावस्थित हुवा करते थे, न कि मूर्ति पूजन करते थे।

जड वस्तु चेतनतासे हीन होती हैं और चेतन शक्ति के आधीन रहती हैं, इतनाभी समझ लोगे तो बहुत कुछ आप कर सकोगे। अचेतन जड निर्जीव मूर्तियों को तो पवित्र मानते हो किन्तु परमात्माकी बनायी जीती जागती,

चेतावनी

चलती, फिरती चेतन मूर्तिया अर्थात अपने जैसे ही मनुष्योको नीच, अपवित्र जानते, अछूत कहकर भोजन शालामें या मंदिरोंमें नही जाने देते हो। निर्जीव जड मूर्तियोंसे तो पशुपक्षीभी भय नही खाते। कागजके फूलोंपर भंवरा कभी नही आता, नकली शेर से कोई जानवर भय नही खाता। मिटटी से चूहे की हुबहू मूर्ति बनायी जा सकती हैं, ऐसी मिलभी सकती हैं, परन्तु क्या मृत्तिका से बने चूहे पर बिल्ली झपट्टा मारती है? मृत्तिका से बिल्ली की भी हुबहू मूर्ति तैयार की गयी, तो क्या ऐसे बिल्ली पर कुत्ता झपट्टा मारेगा? महाराज! कुत्ते बिल्लीयों को जो जड चेतन की सूझबूझ है, तो सर्व श्रेष्ठ प्राणी जिसमें चिंतन शक्ति अधिक है, उस मनुष्य को असली नकली की पहचान न रहे यह कितना बडभारी घोरतम दैवदुर्विलास है! वाह रे मनुष्य, तू पत्थर की बनी मूर्तियो को परमात्मा बताता है और इनसे भय खाता हुवा इनके आगे सिर झुकाता है। क्या मूर्तियों में वरदान या शाप देने का सामर्थ्य है? बुद्धि, तर्क, वैदिक शिक्षा का आचार विचार उच्चार और व्यवहार छोडने से अनभ्यासेन वेदानाम् यह दु:स्थिती निर्माण हुई है।

जो धर्म सम्पूर्णभाव से आतरिक वा आध्यात्मिक था, उसे सम्पूर्ण रूप से बाह्य इस मूर्ति पूजा ने बनाया। हिंदुओ के चित्त से स्वाधीन चिंतन की शक्ति इसी मूर्ति पूजा ने हरण की है। हिंदुओ के मनोबल, पराक्रम, उदारता और सत् साहस को इसी मूर्ति पूजा ने दूर किया। आर्यावर्त के सैकडों टुकडे इसी मूर्ति पूजा ने किये। आर्य (हिंदु) जाति को हजारो टुकड़ों में इसी मूर्ति पूजा ने बाट दिया। इतना ही नहीं तो इस राष्ट्र को सैकडों वर्षों के लिये पराधीनता की लोह श्रृंखला में इसी मूर्ति पूजा ने जकड़ दिया। अरे! कौन-सा अनर्थ है जो इस दुष्ट मूर्ति पूजा ने नही संपादित किया?

इसीलिये स्वाध्याय प्रेमी विचारवंत सज्जनो से एव ईश्वर के नाम पर पत्थर पूजने वालो से मेरा विनम्र निवेदन है कि—आप चाहे राष्ट्रपति हो, बुद्धि में बृहस्पति हो, चाहे वाक पटुता मे सिसरो और गेट से बढ़कर हो, आपकी पूजा देश विदेश मे होती हो, आपके प्रसिद्धी का डका चारों ओर बजा हो, परन्तु यदि किसी अंशमे भी आप ईश्वर की मूर्ति पूजा का समर्थन करेंगे तो आप कदापि सच्चे ईश्वर भक्त नही हो सकते कारण यह मूर्ति पूजा अनेकानेक अनिष्टो का मूलकारण है। ऐ अविद्या और अंधकार की निद्रा में सोने वाले हिंदुओ! बहुत लुट चुके, अब होश सम्भालो! मूर्ति पूजा के पाखंड को तिलांजलि देकर पाताल में गाडकर समाप्त कर दो और सत्य सनातन वेदो की ओर लौटो। ध्यान रखिये, ईश्वर प्रतीति के लिये योगाभ्यास जैसा अन्य पर्याय नहीं है। इति शम्।

आइए, अश्वमेध यज्ञ करें

पं० सत्यपाल शर्मा, वेदशिरोमणि, अमेरिका

आइए, अश्वमेध यज्ञ करें। यह यज्ञ शतकुंडी या सहस्रकुंडी यज्ञ नहीं होगा, बल्कि सब मिलकर एक विशाल यज्ञकुंड तैयार करेंगे और उसमें आहुतियां देंगे। आहुति घी की और सामग्री की नहीं, अपनी आहुति। यह यज्ञ लगातार २००१ तक चलेगा और २००१ के फरवरी मास मे शिवरात्रि पर इसकी पूर्णाहुति होगी।

हम काफी सो लिए, काफी आराम कर लिया। संसार में हर जगह उथल-पुथल मची हुई है। देश करवटें बदल रहे हैं। बड़े-बड़े सम्प्रदायों के बीच होड़ लगी है कि कौन संसार के प्रधान धर्म की गद्दी पर आसीन होगा। जापान मे जो कुछ हुआ या अभी-अभी अमेरिका मे जो हुआ वह सब आगे आने वाले बड़े तूफानों की पूर्व सूचना है।

यह तो सत्य है कि हिन्दू समाज कभी नष्ट नहीं होगा, वैदिक धर्म की जड़ें काफी गहरी हैं, यह एक शाश्वत धर्म है जिसका स्रोत भगवान् स्वयं हैं इसलिए इस धर्म का विनाश करने या होने की बात सोचना भी मूर्खता है। पर, प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न तो यह है कि इस शाश्वत मानव धर्म को जो कि संसार की सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है और जिसका अनुकरण न किया जाना ही आज के सारे दुःखो का कारण है, अज्ञान की दलदल मे फसकर छटपटा रही इस मानव जाति को उस अमोघ औषध से परिचित कराने के लिए हमने कितना कुछ किया है? भारत को ही लीजिए। दक्षिण भारत मे बहुत तेजी से न केवल राजनैतिक अपितु वैचारिक परिवर्तन आ रहे हैं। यह बात नहीं कि पुरानी रूढ़िवादी आवाजें अब बिल्कुल ही नही उठती। उठती तो हैं, पर कभी-कभी और वह भी बहुत धीमी।

मैं अभी कुछ दिन पहले जब बंगलौर मे था तो तिरुच्ची स्वामी जी ने, जो दक्षिण भारत के पौराणिक नेता हैं, मुझे बुलाया। जब मैं उनसे मिलने गया तो उनके साथ कुछ वेदपाठी विद्यार्थी बैठे थे। उन्होने अपने उन छात्रों से वेदपाठ करने को कहा। छात्रों ने बहुत ही सुन्दर वेदपाठ किया जो दक्षिण भारत की अपनी विशेषता है। वेदपाठ समाप्त होने के बाद उन्होंने एक छात्र को खड़ा किया और बोले—"सत्यपाल, तुम जानते हो यह कौन है? यह एक चमार का बेटा है, आज यह ब्राह्मणों से भी बढ़िया पाठ करता है।" इसी प्रकार उन्होंने औरों का भी परिचय कराया, कोई मछियारा था, कोई जुलाहा और कोई कुम्हार। आज देश जाग रहा है और वह भी आर्य समाज के प्रयत्नो से नहीं, प्रभु की कृपा और महर्षि के प्रभाव से। यह तो मैंने एक उदाहरण दिया, ऐसे कई प्रसंग मैंने देखे और समझ गया कि दक्षिण भारत की विचारधारा तेजी से बदल रही है।

मेरे पिता प्रभु ने कहा, "विदेशों मे काफी काम कर लिया। तुमने एक संस्था लोगो की प्यास बुझाने के लिए तैयार कर दी है जो अब बहुत प्रसिद्धि भी प्राप्त कर चुकी है। यह काम अब अपने बेटे के सुपुर्द करो ताकि उसे भी कुछ मेरा काम करने का मौका मिले और तुम भारत जाकर दक्षिण में अपना काम शुरू करो। इसीलिए मैंने तुम्हारा गृहस्थ भी समाप्त कर दिया ताकि तुम निश्चिन्त होकर अपना पूरा समय आगे के बचे थोड़े से वर्षों में इस मेरे काम मे लगा सको।"

इस दैवी आदेश ने मुझे जीवन का मार्ग बदलने पर विवश कर दिया। मैंने सोचा कि ("धर्मानुगो गच्छति जीव एकः") जिस जीव ने कुछ ही वर्षों में अकेले धर्म को मार्गदर्शक बनाकर चलना है उसे अभी से उसके पीछे क्यों न डाल दूं, अच्छा है अभी से दोनो आपस में एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हो जाएं ताकि मृत्यु के बाद आसानी हो जाए। मैं अब हमेशा के लिए भारत आ रहा हूं। वहां की व्यवस्था पूरी करके अक्टूबर तक पहुंच जाऊंगा। बंगलौर को मुख्यालय बनाकर सारा काम १ नवम्बर से शुरू कर दूंगा। इसके पीछे एक बहुत सुन्दर घटना है। मैंने १९५४ ५६ मे सार्वदेशिक सभा की ओर से दक्षिण भारत आर्यसमाज ऑर्गनाइजर के रूप में काम किया। बंगलौर आर्यप्रतिनिधि सभा के उद्घाटन के बाद श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी ने मेरे पूज्य पिता जी के सामने मुझसे कहा—"अब सभा तुम्हारी मदद और नहीं कर सकती। बिना वेतन लिए सारा खर्च अपने पास से करके समाज का काम करो तो बड़ी खुशी होगी।" श्री स्वामी जी ने मेरी आंखें खोल दी। बड़ा ही उत्तम सन्देश दिया था उन्होने। प्रभु ने मुझ पर बड़ी ही दया की और मैंने पिता जी से आज्ञा लेकर सभा की सेवा छोड़कर १ नवम्बर १९५६ से दूसरा सरकारी काम शुरू कर दिया। ४० वर्ष के अन्तराल के बाद अब मैं यह व्रत ले रहा हूं—

१—दक्षिण भारत मे फिर से आर्यसमाज का काम शुरू करूंगा।

२—मैं किसी से वेतन या दक्षिणा कुछ नहीं लूंगा।

३—अपनी ओर से पैसा लगाकर काम करूंगा।

४—बिना शुल्क लिए वेद, उपनिषद् आदि ग्रन्थ पढ़ाऊंगा।

५—पौराणिक विद्वानों के बीच जाकर वेद, उपनिषद् व गीता के अर्थ वैदिक आधार पर करके उन्हें महर्षि का हृदय खोलकर दिखाऊंगा।

६—संस्कृत की व्याकरण आदि पुस्तकें आधुनिक शैली पर भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में तैयार करने और प्रकाशित करने की व्यवस्था करूंगा।

७—सभाएं या समाजें प्रवचन, कथा, वेद-कक्षा आदि जो भी काम करने को कहेंगी बिना कोई दक्षिणा आदि लिए करूंगा। जिन समाजों ने मुझे अपना प्यार दिया और देंगे मैं उनकी भरपूर सेवा निःशुल्क करूंगा।

८—वैदिक धर्म की पुस्तकें भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में अधिक से अधिक प्रकाशित करूंगा। पहले की तरह एक नियमित पत्रिका निकालूंगा।

९—अंग्रेजी में बोलने वाले उपदेशक तैयार करने में समाजों की निःशुल्क सेवा करूंगा।

इन सभी व्रतों को बिना किसी विघ्नबाधा के पूरा करने के लिए अगले वर्ष (१९९६ मे) सम्भवतः अगस्त मास में संन्यास ग्रहण करने का मेरा दृढ़ निश्चय है। (शेष पृष्ठ ११ पर)

भुवनेश्वर में स्वामी सत्यप्रकाश ग्रन्थागार का उद्घाटन

पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश १९७८ से १९९० के बीच दस बार प्रव-चन हेतु ओडिसा पदार्पण किये थे। प्रत्येक बार वे ओडिसा के आर्य वेद्वान श्री प्रियव्रत दास जी के आतिथ्य में अवस्थान करते थे। वे ओडिसा के समस्त विश्वविद्यालय, आर्य संस्था तथा कई सांस्कृतिक केन्द्र में भाषण दिये थे।

आगामी जून ३ तारीख को भुवनेश्वर आर्य समाज में स्वामी जी की स्मृति में "स्वामी सत्यप्रकाश स्मारक ग्रन्थगार" का उद्-घाटन हो रहा है। राज्यपाल श्री सत्यनारायण रेड्डी उत्सव में पौरोहित्य करेंगे। ओडिसा "वेदरश्मि" पत्रिका का "स्वामी सत्यप्रकाश विशेषांक" उसी दिन प्रकाशित होगा। स्वामी जी का तैलचित्र उन्मोचित होगा। ओडिसा के सब दैनिक पत्रों में स्वामी जी का जीवन विषयक लेख प्रकाशित होंगे।

आर्यसमाज पिम्परी पुणे का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पिम्परी पुणे का ४२ वां वार्षिकोत्सव एवं श्रीकृष्ण चन्द्र जी आर्य अमृत महोत्सव २१ से २३ अप्रल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पं० विश्वनाथ जी आर्य, प० सुरेन्द्रपाल जी आर्य, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय पं० सुरेन्द्रपाल आर्य सहित अनेकों आर्य विद्वानो ने भाग लिया।

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

चार वर्षीय एवं पांच वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रारम्भ। आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि १५ जून १९९५, पाठ्यक्रम चार वर्षीय हेतु योग्यता हाई स्कूल उत्तीर्ण। पांच वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु योग्यता हाई स्कूल उत्तीर्ण (संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी) आवश्यक। आवास, भोजन, पुस्तक, वस्त्र आदि की व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क। आयु १५ से २५ वर्ष तक अविवाहित तथा आर्य समाज के प्रधान एवं मन्त्री की ओर से चरित्र प्रमाण पत्र लाना आवश्यक। आश्रम के नियमों का पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर पृथक भी किया जा सकता है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

आचार्य विद्यादेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट
टंकारा, राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

आर्य महिला महा सम्मेलन

आर्य स्त्री समाज फलावदा मेरठ में २८ से ३० मई तक पैठ का मैदान में आर्य महिला महा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर विशेष यज्ञ, भव्य शोभा यात्रा (प्रथम दिन) भक्ति संगीत आर्य महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, मद्य निषेध सम्मेलन, धर्म रक्षा, सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किये गये हैं। अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

१०१ कुण्डीय महायज्ञ एवं ग्राम जागृति सम्मेलन

ग्राम कल्याणपुर रिठाणी तहसील सम्भल मुरादाबाद में २७ से २९ मई तक श्री भूदेव साहित्याचार्य (दिल्ली) के ब्रह्मत्व में १०१ कुण्डीय महायज्ञ एवं ग्राम जागृति सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य धार्मिक एकता, राष्ट्रीय अखण्डता एवं भारत की मूल संस्कृति के प्रति चेतना पैदा करना है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों के क्रान्तिकारी विचार सुनने के लिये अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

आइए, अश्वमेध यज्ञ करें

(पृष्ठ ६ का शेष)

आर्यसमाज को २१ वी शताब्दी में नए रूप, नए उत्साह, नई आशा, नई योजना और नए कार्यक्षेत्र के साथ आगे आना होगा। हम सबको उसके लिए अपना तन, मन और धन अर्पित करना होगा। दान आदि की मांग करना बन्द करना होगा और ऐसा काम करना होगा कि जनता बिना मांगे उस काम में अपनी आहुति देने के लिए आगे आए। फूलो की माला और प्रशस्तियां बन्द करनी होंगी। जो प्रशंसा करना चाहे वे तन, मन, धन से महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने में उन कार्यकर्ताओं की सक्रिय सहायता करके कार्यक्रम में उनकी प्रशंसा करें। जो ६० वर्ष से ऊपर हैं और गृहस्थ की जिम्मेदारियों से निश्चिन्त हैं उन्हें अपने अगले जन्म को बनाने के लिए और परमपिता का प्यार प्राप्त करने के लिए महर्षि का यह काम आगे बढाना होगा। ऐसे निःस्पृह, निर्मम और निरहंकारी व्यक्ति पद आदि का लोभ त्याग कर एक धर्मनिष्ठ "वैदिक परिवार" बना लें और संगठित होकर आगे बढ़ें तो बहुत अच्छा काम हो सकता है। हमे बडे-बडे निरर्थक सम्मेलन रूपी मेलों में अपनी शक्ति और धन का अपव्यय न करके सक्रिय ठोस काम करने होंगे। जनता को प्रशिक्षित करने और उनको वैदिक धर्म के उन जीवनोपयोगी तथ्यों से अवगत कराने के लिए कुछ ठोस उपाय ढूंढने होगे। हमे सक्रिय कार्यकर्ताओं की एक धार्मिक सेना तैयार करनी होगी और जगह-जगह शिविर आदि लगाकर नए आयाम और नए विधान ढूंढने होंगे। बच्चों पर अधिक समय लगाना होगा और स्कूलो और कालेजो मे उनकी शैली मे उन्हे धर्म की ऐहिक शिक्षा देनी होगी। संस्थाओं और व्यक्तियो की निन्दा व आलोचना करना बन्द करके जो, जहां, और जितना भी काम कर रहे है उसमें उनकी सहायता करनी होगी और उन्हें प्रोत्साहित करना होगा। आलोचनाओ से दुःखी होना और घबडाना छोड़कर उनसे शिक्षा लेकर आगे बढ़ना होगा।

और मैं ये बातें उपदेश के रूप मे नही लिख रहा अपितु अपने आपको तैयार करने के लिए लिख रहा हूं। जो इन बातों से सहमत या असहमत हों वे निधड़क होकर अपने विचार लिखें। वाद-विवाद और विचार-मंथन समाज की प्रगति के लिए अत्यत आवश्यक है।

यज्ञ और अग्निहोत्र की छोटी-छोटी बातो को लेकर वैमनस्य और विषमताए पैदा करने के बजाए इस धर्मप्रचाररूपी महायज्ञ को सफल बनाने के उपाय कीजिए आपको जीवन जीने का आनन्द आ जाएगा। मैं एक ऐसा ही महायज्ञकुंड तैयार करके अपने जीवन की पूर्णाहुति देना चाहता हू जिससे मेरा अगला जीवन और भी उज्ज्वल हो।

हर व्यक्ति अपने जीवनकाल मे ही कई शरीर बदलता है। उदाहरण के लिए यह मेरा पाचवा और अन्तिम शरीर है, और जैसे आत्मा अपने नए शरीर मे आकर पिछले शरीर मे किए सारे बुरे कामों को भूल जाती है उसी प्रकार एक ही जीवन के पिछले शरीरो मे किए कामो को आदमी भूलकर आगे बढना चाहता है। दूसरे व्यक्तियो को इसमे उनकी मदद करनी चाहिए, तभी समाज आगे बढ़ता है। इस सम्बन्ध मे गीता मे कही श्रीकृष्ण की बात को याद रखना चाहिए।

इन सब बातो के अलावा आर्यसमाज मे भक्ति की मात्रा बढानी होगी, सत्सगो को केवल नियत कार्यक्रम न बनाकर उनके स्तर को ऊंचा करना होगा, शिक्षित वर्ग को आकृष्ट करने के लिए उपाय करने होगे, आर्य विद्वानो को सेमिनार, वर्कशाप इत्यादि करके अपने विचारभेद समाप्त करने होगे।

अन्त मे सबसे मुख्य बात यह कि कुछ ऐसा करना होगा कि सार्वदेशिक सभा, महर्षि द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा तथा शिक्षा के क्षेत्र मे अग्रगण्य आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तीनो मिलकर श्री गुरु विरजानन्द जी के स्वप्न की "सार्वभौम आर्यसभा" की रचना करें, और धर्मप्रचार, प्रकाशन वशिक्षा के रूप मे अपने अलग-अलग विभागो को सम्हालते हुए वैदिक धर्म को सच्चे अर्थो में विश्वधर्म के रूप मे लाने के लिए एकजुट होकर प्रयत्न करें।

यह है अश्वमेध यज्ञ जो हमे करना है। अश्व का अर्थ है समाज, राष्ट्र। जिस यज्ञ के द्वारा समाज को दोषरहित बनाकर उसे आगे बढ़ाने के लिए सब एक दूसरे को सहयोग देते हुए उनको आगे बढाते हुए अपने तन, मन धन की आहुति दें वही वास्तविक अश्वमेध यज्ञ है। यज्ञ की इस भावना को न समझने वाले अन्य जन चाहे कैसे भी यह यज्ञ करें हम महर्षि के भक्तो को इसका सही अर्थ समझकर इसी ढग से यह यज्ञ करना होगा और इसे अभी से प्रारम्भ करना होगा, तभी जाकर हम अपनी आगे आने वाली आर्यसन्तति को २१ वी शताब्दी का आर्य समाज देदीप्यमान यज्ञाग्नि के रूप मे देकर कह सकेंगे कि "बच्चो, यह प्रज्वलित अग्नि भारत के ऋषियो की देन है जिसे महर्षि दयानन्द जी ने तपस्या करके फिर से जलाया था। इस अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए बहुत-सी महान् आत्माओं ने अपनी आहुति इसमे दी है। हम तन, मन, धन की आहुति देकर इसे इस रूप मे ला पाए हैं, इसे जीवित रखना और उज्ज्वल बनाना तुम्हारा काम है।"

अगर हम ऐसा कर पाए तो जीवन धन्य कर लेंगे अन्यथा जैसा कि उपनिषद् कहती है "महती विनष्टिः"। जो इस यज्ञ के सक्रिय यजमान बनना चाहें वे आगे आएं और अपना नाम दें। वे भगवान् का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

समान नागरिक संहिता बनाई जाए

(पृष्ठ १ का शेष)

महत्वपूर्ण बात यह भी है कि कोई भी धार्मिक समुदाय अपने धर्म के आधार पर अलग शख्सियत का दावा नहीं कर सकता।

न्यायाधीशों ने विधि एवं न्याय मन्त्रालय के सचिव को निर्देश दिया कि अगस्त १९९६ तक कोई जिम्मेदार अधिकारी सर्वोच्च न्यायालय में हलफनामा दायर करे। इस हलफनामे में यह बताना होगा कि भारत सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के मद्देनजर समान नागरिक संहिता की दिशा में क्या कदम उठाए।

न्यायाधीश सहाय ने अपने फैसले में कहा कि सरकार एक ऐसी समिति के गठन की सम्भावना पर विचार करे जो धर्म परिवर्तन कानून का मसौदा तैयार कर सके। इस प्रस्तावित कानून में यह प्रावधान हो कि कोई भी नागरिक अगर धर्म परिवर्तन करता है तो पहली पत्नी को तलाक दिए बगैर दूसरी शादी न कर सके। यह कानून हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध सब पर लागू हो और व्यक्ति के मृत्यु के बाद कोई विवाद न उत्पन्न हो, इसके लिए उत्तराधिकार एवं गुजारे का भी प्रावधान हो।

न्यायाधीश सिंह ने अपने फैसले में कहा कि कोई भी धार्मिक समुदाय समान नागरिक संहिता का विरोध नहीं कर सकता।

न्यायाधीश सिंह ने आश्चर्य व्यक्त किया कि संविधानके अनुच्छेद ४४ में सरकार को जो अधिकार प्रदान किया है। उस पर वह अमल कब करेगी। उन्होंने कहा कि परम्परागत हिन्दू कानून जिससे उत्तराधिकार, विरासत और शादी जैसे मसले तय होते थे, १९५५-५६ में समाप्त कर दिया गया और उसकी जगह नया कानून बन गया तो पूरे देशमें समान नागरिक संहिता लागू करने में अनिश्चितकालीन विलम्ब का कोई औचित्य नहीं हो सकता। आखिर इस हिन्दू कानून का भी स्रोत तो धर्म में था। जैसा कि मुसलमानों या ईसाइयों के निजी कानूनों का स्रोता। हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों ने राष्ट्रीय एकता एवं एकीकरण की खातिर अपनी भावनाओं का परित्याग कर दिया, जब कि अन्य समुदाय ऐसा नही कर सके। हालांकि संविधान में पूरे भारत के लिए समान नागरिक संहिता का उल्लेख है।

दोनो न्यायाधीशों ने अपने फैसले मे कहा कि समान नागरिक संहिता की दिशा में पहला कदम यह होगा कि अल्पसंख्यकों के निजी कानूनों को तर्कसगत बनाया जाए ताकि वे धार्मिक और सास्कृतिक समरसता का विकास कर सकें। बेहतर यही होगा कि सरकार इस मामले में जिम्मेदारी विधि आयोग को सौंप दे, विधि आयोग, अल्पसंख्यक आयोग के साथ विचार कर पूरे मामले की जांच करे और महिलाओं के मानवाधिकारों की आधुनिक परिकल्पना के अनुरूप व्यापक कानून का मसौदा तैयार करे।

न्यायाधीशो ने अपने फैसले मे कहा कि समान नागरिक संहिता का वांछनीयता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगाया जा सकता लेकिन इस पर अमल तभी हो सकेगा जब समाज के कुलीन लोग और राजनेता निजी लाभ की भावनाओं से ऊपर उठकर परिवर्तन के लिए जनता को जगाएं और सामाजिक वातावरण तैयार करे।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० (सी०) ११०७३/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१-५-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३/९५
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 18,19 5 1995

कश्मीर का स्याह दिन

(पृष्ठ २ का शेष)

था कि प्रशासन कमजोर है या डर गया है। इस तरह की कमजोरी दिखाकर आतंकवाद से नहीं लड़ा जा सकता। अगर आतंकवादियों को कश्मीर की जनता की भावनाओं का आदर करना होता तो वह ईद के त्योहार पर दरगाह और उससे जुड़ी मस्जिद को आग नही लगाते। उन्होने अपने आका पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई० एस० आई के निर्देशन पर योजनाबद्ध रूप से इस शर्मनाक कांड के लिए ईद की पूर्व रात को चुना। हमें इसमें तनिक भी संदेह नहीं है, क्योंकि आतंकवादी पाकिस्तान के साथ निरतर संपर्क में थे, और कश्मीर में जन-विद्रोह तथा सुरक्षा बलों द्वारा दमन किए जाने का दुष्प्रचार कर कश्मीर विवाद में पाकिस्तान के हाथ मजबूत करना चाहते हैं। इसके लिए ईद के दिन से अच्छा और क्या मौका हो सकता था। उस दिन कश्मीरी लोग मिलने-जुलने सड़कों पर निकलेंगे तथा इस्लामी देशों में भी घटना को ईद से जोड़ा जाएगा। आतंकवादी तत्व दुष्प्रचार के लिए किसी भी सीमा तक गिर सकते हैं।

चरारे-शरीफ को आग लगाने की जितनी भी निंदा की जाए, उतनी कम है। कश्मीर के लोगों की भावनाओं को इस घटना से गहरी ठेस पहुंचना स्वाभाविक है। अब उन्हें समझ लेना चाहिए कि उनका शत्रु कौन है और वे कहीं बाहरी ताकतों के हाथों में तो नहीं खेल रहे हैं। आतंकवादियों की करतूतों के ही कारण चरार कस्बे तथा आसपास के गांवों के निवासियों को परेशानी उठानी पड़ी और सैकड़ों घर भी जल कर राख हो गए। घटना के बाद कश्मीर घाटी में हिंसक घटनाएं होना क्षोभ का विषय है। कश्मीर प्रशासन का पहला काम घाटी में शांति एवं व्यवस्था कायम करना और लोगों को भरोसा दिलाना होना चाहिए।

कुछ पड़ोसी देश तथा पश्चिमी एजेंसियां यह दुष्प्रचार करने से बाज नही आएंगी कि चरारे-शरीफ दरगाह को आग सुरक्षा बलों ने लगाई है, जबकि गत रात आतंकवादियों द्वारा आग लगाई गई तब सुरक्षा सैनिक दरगाह से दो किलोमीटर दूर थे। सत्य को झुठलाया नही जा सकता। भारत सरकार को भी ससार को सत्य बताने के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए। आतंकवादियों की धरपकड़ करने के लिए की गई कार्रवाई में बड़ी संख्या में सैनिकों का हताहत होना, उनकी वीरता का प्रमाण है। इससे यह भी प्रकट होता है कि आतंकवादी गिरोह आधुनिक शस्त्रों तथा गोली-बारूद से लैस थे तथा घाटी के कुछ शरारती तत्व उनको सहायता कर रहे थे।

धर्मेन्द्र धींग्रा नहीं रहे

बड़ोदरा के आर्य स्तम्भ तथा भूतपूर्व प्रोफेसर श्री धर्मेन्द्र धींग्रा का दिनांक २४-४-९५ को सायं ७ बजे स्थानीय भाईलाल अमीन हस्पताल में निधन हो गया। वे पिछले एक माह से रक्त अभाव से पीडित थे। दिनांक २५-४-९५ को १२ बजे कारेली बाग शव दाह गृह में विशाल जनसमुदाय ने मन्त्रोच्चारण कर अन्त्येष्ठि संस्कार मे भाग लिया ६५ वर्षीय स्वर्गीय धींग्रा जी के आर्यसमाज के समर्पण तथा वैदिक प्रचार के अनूठे उदाहरण हैं। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित वैदिक मूल्यों के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, उनके निधन से आर्य परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे अपने पीछे परिवार की एक मात्र सदस्या जीवन संगीनी श्रीमती निर्मला धींग्रा को आर्य पथ के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए छोड़ गये।

विज्ञापन

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुना... स्वामी आत्मानन्द सरस्वती महाराज की इच्छा अनुसार वैदिक धर्म के प्रचारक तैयार करने हेतु नया चार वर्षीय उपदेशक पाठ्यक्रम पुन. आरम्भ किया जा रहा है।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम योग्यता कक्षा दसवी और अधिकतम बी ए या तत समकक्ष दोनो मे हिन्दी और संस्कृत विषय के साथ उत्तीर्ण हो। प्रवेश शुल्क मात्र दो सौ रुपए है। शेष सभी प्रकार का व्यय संस्था व्यय करेगी। प्रवेशार्थी ३० जून से पूर्व श्री प्रधानाचार्य से पत्र-व्यवहार करे।

नोट—यहां से तैयार होने वाले उपदेशकों को आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा उपदेशक रखेगी।

डा० गेन्दाराव आर्य, मन्त्री — वागीश्वर शास्त्री, प्रधानाचार्य

उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर

आर्य समाज मयूर विहार फेस-२ में पांच कुण्डीय महायज्ञ

दिल्ली। देश के राजनैतिक नेताओं तथा पदाधिकारियो का साम्प्रदायिक शक्तियो के आगे झुकने का परिणाम देश के दो प्रान्तों का भारत मे पृथक होना दुर्भाग्य पूर्ण पग होगा। यह उदगार दुःखी हृदय से प्रगट करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी ने आर्य समाज मयूर विहार फेज-२ की विशाल सभा मे कहे--यह समारोह समाज की तरफ से पाचकुण्डों मे गायत्री मन्त्र की आहूतियों के साथ प्रात: ७ से ९ वजे तक प० सत्यदेव जी शर्मा के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात डा० अर्चना ने प्रसिद्ध धार्मिक गीतो को प्रस्तुत किया। भिन्न २ समाजों तथा संस्थाओं से आए महानुभावों द्वारा सर्वश्री वन्देमातरम जी, डा० धर्मपाल जी और डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री का स्वागत किया गया। ऋषिलंगर के लिए दानी महानुभाव श्री नागपाल जी तथा श्री गुगनानी जी का धन्यवाद तथा स्वागत किया गया। ऋषि लंगर में लगभग ४०० व्यक्तियो ने भाग लिया।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक १८] दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ आषाढ कृ० ६ सं० २०५२ १८ जून १९९५

"द वेदाज" नामक टी० वी० धारावाहिक का सार्वदेशिक सभा द्वारा विरोध

हिन्दुओ के धर्म ग्रन्थ वेद पर टी० वी० सीरियल बनाने की घोषणा की गयी है 'द वेदाज' नामक १०४ एपीसोड के टी० वी० सीरियल का निर्माण लुल्ला परिवार कर रहा है। इसके पटकथा और सवाद लेखक श्री भूषण बनमाली हैं। श्री बनमाली के अनुसार वेद और पुराण चार हजार ई० पूर्व के हैं। वेदो पुराणो तथा ३६ उपनिषदो के प्रत्येक व्यक्तित्व, सभी देवी देवताओ ऋषियो-मुनियो तथा सभी सूर्य वशी और चन्द्र वशी शासको को इस धारावाहिक मे स्थान दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने बताया कि वेदो के आधार पर धारावाहिक बनने से महान वैदिक धर्म के बदनाम होने की सम्भावना है उन्होने समस्त आर्य समाजियो तथा वेदो मे श्रद्धा रखने वाले समस्त समुदायो से अपील की कि वे एक स्वर मे वेदो के नाम पर बनने वाले किसी भी सिनेमा या सीरियल का कडा विरोध कर। श्री शास्त्री जी ने बताया कि वेदो और पुराणो मे कोई सम्बन्ध नही है पुराण प्राचीन कथाओ तथा किवदन्तियो के सकलन है इनमे राजा रानियो की कहानिया हैं युद्धो का वर्णन है सम्भव असम्भव विश्वसनीय अविश्वसनीय सभी बातें भरी पडी हैं। वेदो का उल्लेख केवल असत्य पर पर्दा डालने के लिये किया गयाहै। पुराणो मे धारावाहिक बनाने की प्रचुर सामग्री उपलब्ध है उसके आधार पर हजारो कडियो का धारावाहिक बनाया जा सकता है परन्तु वेदो को नाटकीय अन्दाज मे प्रस्तुत करना सम्भव नही है।

भारत का प्रत्येक हिन्दू यह जानता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदो मे जितनी भी बात हैं वे सब वैज्ञानिक, तार्किक और सार्वभौमिक है उसमे कुछ भी ऐसा नही है जिसका खण्डन किया जा सके। वेदो मे कोई लौकिक इतिहास नही है राजा रानियो की कथाय नही हैं किसी युद्ध का वर्णन नही है। वेद मे एकेश्वर वाद का समर्थन है देवी देवताओं का कोई वर्णन नहीं है परमात्मा की विभिन्न शक्तियो तथा गुणो को विभिन्न नामो से सम्बोधित किया गया है, भ्रमवश या अज्ञानता के कारण उन्ही नामो को देवता या देवी समझ लिया जाता है

वेदो की व्याख्या निरुक्त निघण्टु ब्राह्मण ग्रन्थो तथा योग के सहारे ही सम्भव है। यदि इनसे अतिरिक्त आधार पर धारावाहिक बना तो अनर्थ हो जायेगा। अत मैं धारावाहिक के निर्माताओं से कहना चाहता हू कि वे लोग वेदमन्त्रो का नाटक बनाने का दु साहस नही कर, ऐसा करके वे लोग भीषण विवाद तथा विरोध को निमन्त्रित करेंगे।

मध्य प्रदेश में एक दिवसीय शुद्धि कार्यक्रम

नई दिल्ली। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सेवाराम आर्य ने सूचित किया है कि जिला शाजापुर के ग्राम खडी म १४ जून को एक दिवसीय शुद्धि कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस शुद्धि कार्यक्रम म सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव भाग लगे। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री स्वामी सत्यानन्द जी की देख रेख मे यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

श्री सेवाराम आर्य ने मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षक तथा पूर्व प्रधान स्वामी सत्यानन्द जी को सार्वदेशिक सभा का उपप्रधान निर्वाचित किये जाने पर श्री वन्देमातरम जी का आभार व्यक्त किया है।

इस अंक के आकर्षण

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्य समाज लंडन–अप्रैल–९५

साप्ताहिक सत्सगों में प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज और डा० तानाजी आचार्य ने संध्या-यज्ञादि सम्पन्न कर यजमानोंको आशीर्वाद दिया और पश्चात् वेदमन्त्रों की सरस व्याख्या की। इसके अतिरिक्त कुछ समाचार इस प्रकार है -

१--युवक सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिन्दू-पद-पाद-शाही के संस्थापक श्री छत्रपति शिवाजी महाराज, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और महात्मा हंसराज, की जयन्तियां मनाई गई। इसमें लगभग २० युवक और युवतियों ने भाग लिया। श्रीमती कैलाश भसीन ने इस कार्यक्रम का आयोजन और सञ्चालन सफलतापूर्वक किया।

२—गायत्री महायज्ञ—९ अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ विशेष आयोजन किया गया जिसमें ४०० श्रद्धालुओं ने भाग लिया। श्रीमती कैलाश भसीन और उनकी वेदपाठ की सहयोगी महिलाओं ने इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए विशेष परिश्रम किया।

३—हिन्दू-एकता श्री जतिन्द्र शाह, प्रवक्ता, प्लागमथ विश्वविद्यालय ने हिन्दू-एकता की आवश्यकता को बतलाते हुए कहा कि हिन्दू-एकता में ही हिन्दू-राष्ट्र का अस्तित्व और गौरव निहित है।

४—हिन्दू-जागरण श्री हरि जोशी, प्रधान, हिन्दू कांऊसिल यु० के० ने हिन्दू-जागरण इस विषय पर अपने प्रेरक विचार रखे।

५—वैदिक विरासत—श्री बालाप्रसाद गुप्ता ने अपनी कविता के माध्यम से वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता और सुरक्षा के उपायों को बताया।

६—VE Day समारोह में भारतीय उच्चायुक्त की ओर से नीरज पाल वंदना चोपड़ा, शंकर नंगल और भंगम संगवी ने भाग लिया।

७—आंबेडेकर जयन्ति, मर-संचालक प्रो० राजेन्द्रसिंह, के व्याख्यान, तसलिया नसरीन की बैठक ब्रिटिश हिन्दू स्टूण्डट फोरम यु० के० के मार्च आदि में प्रो० भारद्वाज, राजिंदर चोपड़ा आदि आर्य समाज के सदस्यों ने भाग लिया।

आरती शान्तिपाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

मन्त्री

आर्य समाज लंडन

आर्य समाज लंडन के वार्षिक चुनाव

दि० ३० अप्रैल ९५ को आर्य समाज लंडन के वार्षिक चुनाव सर्व-सहमति से और शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुए जिसमें निम्न पदाधिकारी और सदस्य चुने गये—

प्रधान—प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, उपप्रधान—श्री जगदीश शर्मा, श्री त्रिभुवन चोपड़ा, मन्त्री—श्री राजिन्दर चोपडा, उपमन्त्री—श्री मदन आनन्द श्रीमती कैलाश भसीन, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र वेदी, उपकोषाध्यक्ष --श्री सुभाष वर्मा, सम्पर्क अधिकारी—श्री सत्पाल बत्रा, ग्रंथपाल—श्रीमती ओइम् विल्लन।

कार्यकारी सदस्य—

श्रीमती प्रतिभा बहल, श्रीमती सुमन चोपड़ा, श्रीमती सुदर्शना कौशल श्री अरुण कहेर, श्री महेन्द्र पल्लाना, श्री यशदेव मिश्रा, श्री वीरेन्द्रवीर वर्मा श्री रवि खोसला।

भवदीय

तानाजी आचार्य

औरैया में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल अपना प्रथम परिमण्डलीय प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज औरैया में २५ जून से ५ जुलाई ९५ तक लगाने जा रहा है। इसमें प्रातःकाल से लेकर रात्रि समय तक की दिन चर्या सुचारु रूप से चलाई जायेगी। शिविरार्थियों को सन्ध्या यज्ञ' आसन, प्राणायाम, व्यायाम जूडो कराटे (नियुद्ध), लाठी आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा। —डा० अजयसिंह, संयोजक शिविर,

---

वृद्धावस्था से बल और सौन्दर्य का नाश होता है। लालसा से धैर्य का नाश होता है। मृत्यु से शरीर का नाश होता है। द्वेष-भाव से प्रीति का और काम के आवेश से लज्जा का नाश होता है। क्रोध से विवेक का नाश होता है। अभिमान से तो सर्वनाश ही हो जाता है।

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज शाहजहांपुर में डा० शान्तिदेव प्रधान, राजेश-कुमार आर्य मन्त्री, श्री वीरेन्द्र वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सांवली आदि पचपुरी गढ़वाल में श्री दौलत-राम निर्मल प्रधान, श्री गंगाप्रसाद कोहली मन्त्री श्री प्रदीपकुमार खिलासू कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सदर बाजार झांसी में श्री जगदीशप्रसाद वाधवा प्रधान, अरुणकुमार भाटिया मन्त्री, ओमप्रकाश गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज फाजिलका में श्री सुभाषचन्द्र जसूजा प्रधान, श्री मास्टर मूलचन्द वर्मा मन्त्री, श्री मा० रामलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज रामनगर गुड़गांव में श्री भक्त राजेन्द्रप्रसाद प्रधान, श्री ओमप्रकाश चुटानी मन्त्री, श्री ताराचन्द्र जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बिजनोर में श्री हरपालसिंह प्रधान, श्री कुन्दन-सिंह मन्त्री श्री बालेश्वरप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गये।

वर्ष १९९५-९६ को सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता शुरू

नई दिल्ली १० जून, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने वर्ष १९९५-९६ के लिए सत्यार्थ प्रकाश की डाक द्वारा समाचार प्रतियोगिता प्रारम्भ कर दी है। इस प्रतियोगिता में किसी भी आयु के छात्र/छात्राएं अथवा अन्य लोग भाग ले सकते हैं। इसमें भाग लेने के लिए फीस केवल ३० रु० की राशि मनीआर्डर द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ को भेजने होंगे। धनराशि प्राप्त होते ही उस परीक्षार्थी के नाम से परीक्षा प्रश्न पत्र तथा फार्म जारी कर दिया जायेगा और उसका रजिस्ट्रेशन करके रोल नं० भी दे दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए सभा कार्यालय में पत्र भेजकर पता कर सकते हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार दिये जायेंगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित एक ऐसा धर्म ग्रन्थ है जिससे व्यक्ति के जीवन में सत्य के अर्थ का प्रकाश होता है तथा राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति सुनिश्चित होती है। इसलिए श्री वन्देमातरम् जी ने विशेष रूप से युवकों और युवतियों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया है।

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण केवल १० रु० तथा अंग्रेजी संस्करण के लिए ७० रु० में किसी भी आर्य समाज मन्दिर से अथवा सार्वदेशिक सभा कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रचार विभाग, सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

जय वन्देमातरम्

दक्षिण भारत की प्राचीरों से उठा निनाद जयवन्देमातरम् हर जनता की आवाज बन गया और स्वतन्त्र भारत की हर श्वास पर मातरम् वन्दे बन गया।

यही निनाद कारा का बन्दी बना रामचन्द्रराव भी वन्देमातरम् की हर-श्वास पर एक चोट फिर एक चोट पर वन्दे मातरम्।

यही नारा केवल नारा नहीं बल्कि जीवनीय घड़ियों का एक नाद बना। जिसका स्वर बना—

"पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम्"

अंग्रेज और निजाम शाही के अत्याचारों से जूझता हुआ निखरा व्यक्तित्व ही वन्देमातरम् शब्द नाम के साथ ही जुड़ गया। आजादी मिली टूटे-फूटे खण्डहरों में, बिखरी श्रृंखलाओं मे--

टूटा वन्देमातरम् भी आज अजेय बनकर हैदराबाद से भारत की राजधानी दिल्ली की आंख का तारा बना है। आर्य समाज से पोषित परिवर्धित होकर आज इस संस्था के सर्वोच्च गरिमामय पद पर आसीन है वन्देमातरम् जीवन का उद्देश्य है निखार, उद्देश्य है एक राह पर चलना, ध्येय है।

उस पथ की पथिक कुशलता क्या जिस पथ मे बिखरे शूल न हो।

नेता की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

नयी दिशा नयी सूझबूझ के साथ आपने सभा का सर्वोच्च पद सम्हाला है। साथी भी चुने हैं जो जीवन के नए अनुभवों से युक्त है।

कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह उनके भी सभी सहयोगी जैसे आप परिचित अनुभवी है।

आर्य समाज का कार्य सदा ही कण्टकाकीर्ण रहा है और इस पर चलना ही सीखा है हिम्मतवालों ने और प्रतिष्ठा भी ली है।

कार्यं वा साधयेयं जीवन वा पातयेयम्।

अभी कार्य सम्भाला ही है--

समय की कसौटी पर कसकर जीवन में नए मोड़ देंगे, यह हमारे दोनों अनुभवी वृद्ध नेता। प्रभु इन्हें जीवन दे, स्वास्थ्य दे शक्ति दे। जिससे आर्य समाज के कार्य को नई दिशा मिल सके।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज बागपत द्वारा आयोजित

राष्ट्र रक्षा यज्ञ

बागपत। ज्येष्ठ बुदी दशमी दिनांक ०-६-९५ को बागपत नगर के विजय चौक में राष्ट्र रक्षा यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। प्रवचन तथा वैदिक साहित्य का निःशुल्क वितरण कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण थे। 'यज्ञ सर्व समुद्भव यज्ञ मानवीय कर्मठता का प्रतीक है' एक लेख जिसमे यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला गया था। क्षेत्र मे जन जन तक पहुंचाया गया तथा अधिकाधिक यज्ञों का आयोजन करने व कराने का आह्वान किया गया।

मा० सत्यप्रकाश गौड़
मन्त्री आर्य समाज बागपत

ईसाई युवती का वैदिक धर्म में प्रवेश

मन्त्री आर्य समाज रामपुरा कोटा द्वारा दिनाक २३-५-९५ को एक ईसाई युवति सुश्री प्रिना पिल्लई आत्मजा श्री एन० गोपालन पिल्लई को शुद्ध कर वैदिक धर्म में प्रवेश कराया गया। शुद्धि के पश्चात इसका नाम प्रिया मेहरा रखा गया और इसका विवाह श्री अशोक मेहरा ५, आई २१ महावीर नगर तृतीय के साथ सम्पन्न कराया गया।

बनवारी लाल सिंघल, मन्त्री

सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष (अधिवक्ता सुप्रीमकोर्ट)

श्री सोमनाथ मरवाह

"सोमनाथ" एक ऐसा ऐतिहासिक नाम है जिसके नाम पर हर व्यक्ति का ध्यान इतिहास के पन्नो पर जाता है और कहा व पढ़ा जाता है कि—टूट-टूट कर बनता रहा सोमनाथ मन्दिर।

ऐसा ही एक नाम ध्वस्त-भारत की चार दिवारी से पाकिस्तान से टूटकर भारत मे आया और अपने जीवन को ध्वस्त करके पुनर्निर्माण में लग गया और टूटे सोमनाथ मन्दिर की भांति मानव मन्दिर का जीवित सशक्त सोमनाथ मरवाह अधिवक्ता के रूप में भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है।

स्वभाव से सख्त, कार्य में निपुण आर्य समाज के कार्य हेतु जीवन अर्पण किया है। पाकिस्तान से आने के बाद शारीरिक आत्मिक धार्मिक स्थिति को बनाना प्रथम उद्देश्य था आर्थिक पहलू इन तत्वों की पूर्ति में प्रथम तत्व था। आज वह आयु की वृद्धि से कुछ अस्वस्थ अवश्य हैं परन्तु जीवन की उपयोगिता से पूर्ण स्वस्थ हैं। जहां डा० सोमनाथ जी ने अपना जीवन पूर्ण वैभव मय बनाया वहां आर्य समाज की उपयोगिता में अपना हाथ सदा ही उदार मना बनाकर सात्विक दानी ही बनाए रखा।

व्यक्तित्व का प्रभाव—जिस व्यक्ति से जो भी कह देते हैं वह उनकी बात को टाल नहीं सकता। पाक० के बनने पर भारत में आए और सार्वदेशिक सभा के १०वर्षों तक कोषाध्यक्ष रहे और आज वह सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष (वरिष्ठ उपप्रधान) है।

जीवन के उतार-चढ़ावों में सदा एक रस रहने वाले व्यक्ति हैं। स्पष्ट वक्ता हैं कोई असन्तुष्ट होता है तो होने दो। सभा का कार्य सुचारू रूपेण चलना चाहिए।

नव निर्वाचन हैदराबाद मे पूर्ण होने पर पुनः आपको कार्यवाहक अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सभा की आय व्यय की कमी व पूर्णता को देखना, गोसम्वर्धन दुग्ध केन्द्र की भी व्यवस्था उन्हीं के हिस्से मे हैं।

टूटा-ध्वस्त सोमनाथ सदा समुद्र तट पर अध्यात्म की छवि बखेरता रहे और अधिवक्ता टूटा सोमनाथ अपने वैभव से आर्य समाज की छवि को सदा सशक्त बनाकर निखारता रहे।

जय सोमनाथ की ?

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आदर्श विवाह सम्पन्न

अजमेर (रामगंज) निवासी प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य की सुपुत्री डा० आराधना, प्राध्यापिका का शुभ विवाह प्रतापगढ़ निवासी आर्य विद्वान डा० स्वामीनाथ जी, स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष (संस्कृत के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। संस्कारकर्ता आचार्य डा० विश्वमित्र शास्त्री (रुद्रपुर नैनीताल) थे।

इस अवसर पर सर्वश्री दत्तात्रेय आर्य, दीनबन्धु चौधरी शिरीष शिवहरे, डा० श्री गोपाल बाहेती, धर्मसिंह कोठारी आदि गणमान्य हितैषियों, रिश्तेदारों व इष्ट-मित्रों ने वरवधू को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया।

—बुद्धिप्रकाश शर्मा, रामगंज अजमेर

मूर्ति पूजा

—डा० महेन्द्रस्वरूप, आम्सटर्डम

१—ईश्वर और भगवान

सबसे पहले यह बात समझना आवश्यक है कि ईश्वर जिसे अंग्रेजी भाषा में God कहते हैं और भगवान जिसे अंग्रेजी भाषा में Lord कहते हैं क्या अन्तर है।

१—ईश्वर (God) कभी भी मनुष्य या प्राणी के रूप में जन्म नहीं लेता है (स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्—यजु०)। और जितने भी भगवान (Lord) आज तक हुये हैं वे सब मनुष्य की तरह ही जन्म लेते हैं, व मनुष्य की तरह ही भोजन करते हैं तथा मनुष्यों की तरह ही मरने के बाद कोई भी भगवान आज तक कुछ भी नहीं कर पाया और ना ही भविष्य में कुछ भी, कर पायेगा।

२—ईश्वर व प्रकृति दोनों ही पूर्ण हैं इन्हें किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु मनुष्य या भगवान (Lord) जब तक जिन्दा रहते हैं तभी तक इन्हें विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता रहती है और मरने के बाद इन्हें भी किसी चीज की आवश्यकता नहीं रहती।

अभी कुछ समय पहले मैं ईराक गया था। करबला भी गया तथा करबला के प्रमुख-मुल्ला से विचार-विमर्श के समय मैंने पूछा कि मुसलमान ईसाई बौद्धों व हिन्दुओं का ईश्वर (God) एक है या अलग-अलग है तो प्रमुख-मुल्ला ने कहा कि एक है। (बात-चीत मैं अंग्रेजी भाषा में करता था पर सरकार की तरफ से एक दुभाषिया मेरे साथ गया था) मुख्य बात के रूप में एक सवाल उठा कि (God) ईश्वर (Lord) भगवान में अन्तर क्या है? तो मैंने उत्तर दिया (सहज रूप में जिससे कि सभी समझ सकें) मुख्य अन्तर यह है कि ईश्वर (God) ना खाता है, और ना ही टट्टी जाता है, जब कि भगवान (Lord) मनुष्य की ही तरह खाते हैं और यदि ये अधिक खालें तो इनका हाजमा भी खराब हो सकता है, इत्यादि।

२—मूर्ति रखना व मूर्ति-पूजा करना

बहुत से होटलों व कई लोगों के यहां (जिनमें सभी सम्प्रदायों के लोग हैं) महात्मा-बुद्ध की मूर्ति दरवाजे पर होटल के काउन्टर या हाल में रखी देखी है। इसी तरह पार्कों, इमारतों में तरह-तरह की मूर्तियां सर्वत्र ही देखने में आती हैं, जो कि प्राय: लोक-शोभा या लोगों के आकर्षण के लिये लगाई जाती हैं यह मूर्ति रखना है, पर जब कोई इन मूर्तियों की पूजा करे, अथवा फल-फूल चढ़ाये, खिलाये-पिलाये, उन्हें नहलाये-धुलाये व कपड़े पहनाये व उनसे मिन्नतें मांगे यह मूर्ति-पूजा हुई।

३—मूर्ति पूजा की उत्पत्ति

भारत में मूर्तिपूजा का आरम्भ जैन व बौद्धधर्म के मानने वालों ने किया। भारत के बाहर भी (अरब आदि देशों में) मूर्तिपूजा होती थी। जैसा कि यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि मुस्लिम पैगम्बर (Lord) मोहम्मद ने वहां से मूर्तिपूजा को जड़ से समाप्त कर, इस्लाममत की स्थापना की थी। मुस्लिम-शासनकाल में भारत में भी तमाम मूर्तियों व मन्दिरों को तोड़ा गया, वहां मस्जिदें खड़ी की गई। उदाहरण के रूप में आज भी अयोध्या का 'राम-मन्दिर' वाराणसी का 'विश्वनाथ-मन्दिर' मथुरा की 'कृष्णजन्मभूमि' पर बनी मस्जिदें हैं, इत्यादि।

मिश्रदेश (ईजिप्त) के पिरामिडों में भी मूर्तियां मिलती हैं, जिनमें मनुष्य व जानवरों के सिर की कलम है। इनमें से एक मूर्ति ऐसी जिसे स्फिंक्स कहते हैं, जो कि विश्व की ७ अद्भुत वस्तुओं में से एक है। भारत में अभी भी वाराह व नरसिंह भगवान की मूर्तियों के मन्दिर हैं, जहां उनकी पूजा होती है। भारत में जैन लोगों की मूर्तियां नगी होती है, वस्त्र नहीं पहनाये जाते, पर पौराणिक-हिन्दुओं में कलकत्ते के 'काली-मन्दिर' में काठमाण्डू (नेपाल) के 'पशुपतिनाथ-मन्दिर' मे पशुबलि चढ़ाई या दी जाती है तथा मूर्तियों का 'शृंगार व भोग' इत्यादि भी सभी मन्दिरों में लगाया जाता है। यहां तक कि सर्दी-गर्मी के वस्त्रों का भी पूरा ध्यान रखा जाता है।

मूर्तिपूजा की उत्पत्ति के बारे में विचार करने पर हम यह पाते हैं कि मनुष्य सभी प्राणियों में सबसे अधिक समझदार व सामाजिक प्राणी है। वह अपने किसी प्रियजन के मरने पर उसकी यादगार व पहचान के लिये जैसे आजकल फोटो आदि बनाकर रखता है, उसी तरह पहले का मानव पत्थर-मिट्टी आदि की शकलें बनाता था।

अभी हाल ही में फ्रान्स में १० हजार वर्ष पुरानी गुफायें मिली हैं, जिनमें विभिन्न जानवरों के चित्र खुदे हैं। वे चित्र जिन मनुष्यों ने बनाये, उन्होंने उन जानवरों, पक्षियों व मनुष्यों को देखा होगा और याद के रूप में अपनी भावनाओं को चित्रित कर दिया होगा। इसी प्रकार भारत में भी 'अजन्ता ऐलोरा' 'खजुराहो' व 'भीम-बैठका' आदि पहाड़ी गुफाओं में तत्कालीन मनुष्यों की भावनाओं व चित्रकारिता के नमूने देखने में आते हैं।

इसी प्रकार संसार में अभी भी हम देखते हैं कि लोग यादगार हेतु, फोटो बनाते, खींचते व परिवारों, घरों में पूर्वजों के चित्र टांगते हैं, सजाते हैं और इन्हें देख देख अपनी भावनाओं को ताजा करते हैं। इसी प्रकार मूर्तियां भी एक विशेष चिह्न व यादगार हेतु प्रथम बनाई गईं, पुन: उनमें विभिन्न प्रकार की भावनाओं को जोड़कर सार्वजनिक रूप दिया गया और जैसे, छोटे बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते समय, जिन्दा प्राणियों की तरह वर्ताव करते, खिलाते-पिलाते व सुलाते और कपड़े पहिनाते हैं। ठीक इसी प्रकार लोग मूर्ति की पूजा मे करते हैं। इसी प्रकार की विचारधारा के आधार पर मूर्तिपूजा प्रारम्भ हुई। बाद में लोगों के आकर्षण हेतु इन्हें धार्मिक रंग दिया गया व तरह-तरह की कहानियां बनाईं, जैसे कि आजकल बच्चों के लिये काल्पनिक कार्टून-फिल्में बनाई जाती हैं। लोग अज्ञानता-पूर्ण भावनाओं में बह, उनको सत्य ही मानने लग पड़े तथा ईश्वर के स्थान पर इन मूर्तियों की पूजा करने लगे। श्री राम-कृष्ण बुद्ध आदि महापुरुषों को साक्षात ईश्वर के रूप में इसी अन्ध-भक्तियुग प्रतिष्ठित किया गया।

मूर्तिपूजा का दूसरा मुख्य कारण मनुष्य का स्वावलम्बी न होना है। हम देखते हैं कि पशु-पक्षियों के बच्चे मनुष्य के बच्चे की अपेक्षा अधिक स्वावलम्बी होते हैं। माता-पिता आदि के सहारे बिना, मनुष्य का कुछ भी भविष्य नहीं। उनकी मृत्यु पर इन्हें एक कमी सी महसूस होती है, जिसकी पूर्ति हेतु वे मूर्तियों को अपना सहारा बना लेते हैं जैसे कि कहावत है कि "अब्बा-अब्बा कहते थे, बड़े मजे में रहते थे पर जब अब्बा-अब्बा कहलाये, तो बड़ी मुसीबत में आये।" चूंकि मुसीबत में सहारे की बड़ी जरूरत होती है। और मनुष्य की यह प्रवृत्ति है, कि संसार के सहारे छूटने पर वह उनके प्रतीक रूप मूर्तियों को अपना सहारा समझ लेते हैं, दुःख भुलाने में मूर्ति को एक माध्यम बना लेते हैं

(क्रमश:)

महर्षि दयानन्द स्वदेशी के प्रथम प्रणेता थे

हर्ष नारायण प्रसाद, बलिया

आर्य समाज रसड़ा के मन्त्री श्री कमला सिंह ने मुझे १६ अप्रैल, १९९५ के पाञ्चजन्य का एक लेख दिखाया जो "संस्कृति सत्य" स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित है। इसके लेखक राष्ट्रवादी विद्वान श्री बचनेश त्रिपाठी हैं। मैं बचनेश जी को २०-२५ वर्षों से पढ़ रहा हूं। वे सूचना के भण्डार हैं और भारतीय इतिहास में गहरी पैठ रखते हैं। मन्त्री महोदय का आरोप है कि संघ के लोग प्रायः महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज की उपेक्षा करते हैं। मनीषी 'स्व० श्री सतीषचन्द्र मुखोपाध्याय को स्वदेशी व्रत का आदि प्रवर्तक बताना इसका स्पष्ट प्रमाण है। मैंने मन्त्री महोदय को समझाया कि महान से महान विद्वान से भी हम यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह संसार की सभी घटनाओं से अवगत हो। निश्चित ही बचनेश जी जान बूझकर आर्यसमाज अथवा महर्षि श्री दयानन्द की उपेक्षा नहीं कर सकते।

मैं पाञ्चजन्य के माननीय सम्पादक एवं बचनेश जी से विनम्रता पूर्वक निवेदन करता हूं कि वे लोग महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र एव आर्यसमाज के इतिहास का अध्ययन करने का कष्ट करें। वे पायेंगे कि स्वनामधन्य सतीश-चन्द्र मुखोपाध्याय जी से वर्षों पहले महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य एव स्वदेशी का उद्घोष कर दिया था।

लोकमान्य महात्मा तिलक से भी पहले १८७३ में वायसराय लार्डनार्थ ब्रुक के सम्मुख कहा था कि "मेरा यह अडिग विश्वास है कि मेरे देशवासियों के निर्बाध राजनीतिक उन्नति तथा संसार के राष्ट्रों में भारत को समानता का अधिकार प्राप्त कराने के लिये मेरे देश का शीघ्रातिशीघ्रपूर्ण स्वतन्त्र होना आवश्यक है।

महर्षि ने स्वराज, स्वदेशी, स्वभाषा, देशी वेष-भूषा, देशी खान-पान को बहुत महत्व दिया। आर्यसमाजी होने के लिये इन बातों को मानना अनिवार्य था। आर्यसमाज के मन्चों से बराबर इन बातों का प्रचार होता रहा।

स्वामी जी के कार्यकाल में अनेको वस्तुएं इंगलैण्ड से आने लगी थीं। स्वामी जी इनके विरोधी थे। वे चाहते थे कि भारत के धन-कुबेर अपने देश में कल-कारखाने लगाकर उत्तम सामानों का निर्माण प्रारम्भ करें। जिससे लोगों में विदेशी वस्तुओं की ललक कम हो। वे मन्दिरो पर धन खर्च करने की अपेक्षा कल कारखानों के निर्माण को अधिक अच्छा समझते थे। एक बार स्वामी जी पश्चिमी उत्तर प्रदेश का दौरा करते हुए कानपुर पहुंचे। कानपुर के निकट दो भव्य मन्दिरो "कैलाश तथा "बैकुण्ठ" की उन दिनो बड़ी चर्चा थी। क्षेत्र के दो प्रतिष्ठित सज्जन श्री प्रयाग नारायण एव श्री गुरु प्रसाद जी स्वामी जी से मिलने आये थे। प्रसंगवश उन लोगो ने उपर्युक्त दोनो मन्दिरो की चर्चा छेड़ दी। उनकी बात सुनने के बाद स्वामी जी ने कहा कि ईंट पत्थरों पर लाखो रुपयो का व्यय करके उन्हें नष्ट कर दिया। इससे अच्छा होता कि आप इस धन से किसी कल-कारखाने की स्थापना करके स्वदेश कल्याण में सहयोगी बनते।"

अलीगढ मे स्वामी जी का प्रवचन चल रहा था। एक दिन छावली निवासी कुंवर उधो सिंह अपने पिता भूपाल सिंह के साथ महर्षि का दर्शन करने के लिये आये। उधो सिंह विदेशी वस्त्रों मे सजे हुए थे। उनके पिता जी स्वदेशी वस्त्रो मे थे। स्वामी जी ने उधो सिंह से कहा कि "उधव, देखो तुम्हारे पिता जी कितने सादे, मोटे तथा स्वदेशी वस्त्र धारण करते हैं। उनको सबका सम्मान प्राप्त है। क्या तुम विदेशी कपडो से बने इन वस्त्रों को धारण कर अपने पिता से अधिक सुसभ्य एवं सुसस्कृत हो गये हो? भइया, स्वदेश की वस्तु का उपयोग और व्यवहार ही श्रेयस्कर है।" उधव सिंह ने स्वामी जी की बातों से प्रभावित होकर सदा के लिये विदेशी वस्त्रों का त्याग कर दिया। अन्य लोगों पर भी इस घटना का प्रभाव पड़ा।

देशी वेष-भूषा के प्रति स्वामी जी के आग्रह का एक उदाहरण देखें। स्वामी जी एक दिन आगरा स्थित सेन्ट पीटर चर्च देखने गये। जब महर्षि चर्च में प्रवेश करने लगे तो एक ईसाई सज्जन ने कहा कि "महाराज सिर से पगड़ी उतार कर ही आप चर्च में प्रवेश कर सकते हैं।" स्वामी जी रुक गये और बोले "हमारे देश को रीति के अनुसार सिर पर पगड़ी धारण करके ही किसी जगह जाना प्रतिष्ठा का चिन्ह हैं। मैं अपने देश की सभ्यता के प्रतिकूल आचरण नहीं करूंगा।" स्वामी जी वहां से लौट आये।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के सम्बन्ध में महर्षि के विचारो से सभी अवगत हैं। वे इसे स्वभाषा कहा करते थे। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए (प्रारम्भ में वे अपना प्रवचन सरल संस्कृत में करते थे) तथा मूल रूप से गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने अपना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में लिखा। राष्ट्रीय एकता और स्वाभिमान को दृष्टि से उन्होंने सम्पूर्ण भारत में देव-नागरी लिपि एवं हिन्दी भाषा के प्रचार पर बल दिया।

नौ सौ वर्षों की गुलामी के कारण राष्ट्र अपना गौरव गुमान भूल चुका था। हिन्दू हीन भावना से ग्रस्त था। इस निराशा और हताशा की घड़ी में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अंग्रेजी शासन की परवाह किये बिना राष्ट्रवाद, स्वराज्य तथा स्वदेशी का शंखनाद करके हिन्दुओं के सुप्त शौर्य को जागृत किया। थियोसाफिकल सोसायटी की महान नेत्री मिसेज एनीबेसेन्ट के शब्दों में "स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने लिखा कि भारत भारतीयों के लिये है।.........आर्य समाज ने देश और स्वदेशी के प्रति प्रेम का संचार किया।"

स्वामी दयानन्द ने केवल राष्ट्रवाद, स्वराज्य तथा स्वदेशी का मन्त्र ही नहीं दिया उन्होंने वैदिक धर्म और संस्कृति से जोड़कर इन भावनाओं को सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान किया। आर्य समाज के उपदेशको तथा भजनोपदेशकों ने सारे देश में उपर्युक्त विचारों का प्रचार किया।

हमारे सभी प्रमुख राष्ट्रनायक जैसे स्वामी विवेकानन्द क्रान्तिदर्शी दार्शनिक योगी अरविन्द घोष, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, सतीशचन्द्र मुखोपाध्याय, महात्मा गांधी इत्यादि किसी न किसी रूप में महर्षि दयानन्द के विचारो से प्रभावित थे।

यदि महात्मा गांधी ने पूर्ण रूप से महर्षि के विचारो के अनुरूप राष्ट्रीय आन्दोलन का सचालन किया होता तो देश का बटवारा नहीं हुआ होता और अब तक भारत विश्व का सिरमौर बन गया होता।

क्या शूद्र आर्य नहीं हैं ?

मनुस्मृति अध्यांय १० श्लोक ६ पर विचार

आर्यों में चार श्रेष्ठ आश्रम होते हैं ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वान प्रस्थ आश्रम तथा संन्यास आश्रम। आर्यों के गृहस्थ आश्रम में चार श्रेष्ठ वर्ण होते हैं। ये चार वर्ण चार श्रेष्ठ कर्मों के करने के कारण कहलाते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम अर्थात विद्याध्ययन काल के पश्चात गृहस्थ आश्रम का कालारम्भ होता है। गुरु या प्रशिक्षक के प्रमाणपत्र के अनुसार गृहस्थ आश्रम के वर्ण का निर्णय होता है अतः उन्हें द्विजाति कहा जाता है। परन्तु कुछ विद्वानों ने पक्षपात पूर्ण श्लोक का पदार्थ करके तीन वर्ण को ही द्विजाति सिद्ध करने का दुस्साहस किया है।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः। मनु १०। ६

पक्षपात पूर्ण वाक्य—ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः त्रयः वर्णाः द्विजातयः तु चतुर्थः एक जातिः शूद्रः नास्ति तु पंचमः।

अर्थ—आर्यों में ब्राह्मणः क्षत्रिय, वैश्य तीन वर्ण विद्याध्ययन रूपी दूसरा जन्म प्राप्त करने वाले हैं अत. द्विज कहलाते हैं। चौथा एक जन्म वाला शूद्र वर्ण है, पांचवा कोई वर्ण नहीं है। इस प्रकार आर्यों में तीन ही वर्ण सिद्ध होते हैं। विद्या के अभाव में चौथा पतित सिद्ध होता है।

संस्कृत भाषा में श्लोक को सरस तथा सुन्दर बनाने के लिए शब्दों को कहीं से उठाकर कहीं रखकर श्लोक बनाने का विधान आदिकाल से आ रहा है। परन्तु पदार्थ करने के समय शब्दों को विषय के अनुकूल रखकर ही अर्थ करने का विधान है। ठीक इसके विपरीत उपर्युक्त श्लोक में शब्दों को बिना क्रमबद्ध किए अर्थ लगाकर अनर्थ किया गया है।

अब श्लोक का निष्पक्ष वाक्य देखिए—

ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्य. त्रयः तु एकः चतुर्थः शूद्रः वर्णाः द्विजातयः तु पंचमः जातिः न अस्ति।

श्लोक का सत्यार्थ—आर्यों में (ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (त्रय) तीन (तु) और (एकः चतुर्थः शूद्रः) एक चौथा शूद्र (वर्णाः) वर्ण (द्विजातयः) विद्याध्ययन रूपी दूसरा जन्म प्राप्त करने वाले संस्कार युक्त द्विजातियां हैं। ये श्रेष्ठ गुणों श्रेष्ठ कर्मों वाले आर्य हैं (तु) और (पंचमः) पांचवी (जाति. न अस्ति) जाति नहीं है।

इस प्रकार श्लोक के निष्पक्ष अर्थ से सिद्ध होता है कि आर्यों में चार कार्यों के अलावा पांचवा कार्य नहीं है। प्रथम--शिक्षा विभाग है द्वितीय रक्षा विभाग है तृतीय व्यापार विभाग है तथा चतुर्थ निर्माण विभाग है।

(क) ब्राह्मण—ब्रह्मकर्म = पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना—कराना, उपदेश देना, आय करना, उपकार करना, दान देना।

(ख) क्षत्रिय—शिवकर्म—पढ़ना, प्रजा की रक्षा करना, जितेन्द्रिय रहना यज्ञ करना, शासन व्यवस्था करना, आय करना, उपकार करना, दान देना।

(ग)—वैश्य—विष्णु कर्म—पढ़ना. यज्ञ करना, पशु पालन करना, कृषि करना, वाणिज्य करना, आय करना, उपकार करना, दान देना।

(घ) शूद्र—प्रभु कर्म—पढ़ना, रचना कार्य करना, निर्माण कार्य करना शिल्प कार्य करना, आय करना, उपकार करना, दान देना।

इन कार्यों से पृथक अन्य जितने भी कार्य हैं वे व्यभिचार हैं तथा इनको करने वाला आर्य नहीं दस्यु तथा अनार्य कहलाएगा।

अतः शूद्र आर्य का एक पवित्र वर्ण हैं।

चारों वर्णों से पृथक व्यक्ति की संज्ञा दस्यु है।

मुख बाहू रूपज्जानां या लोके जातयो बहिः।
म्लेच्छ वाचश्चार्य वाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः। मनु १०।४५

पदार्थ—आर्यों के लोके) लोक में (मुख-बाहु-उरु-पतजानाम्) शिक्षा विभाग, रक्षा न्याय विभाग, व्यापार विभाग तथा निर्माण विभाग कार्य करने वालों से बहि) बहिष्कृत या पृथक (या जो-जो (जातयः) जन समूहें हैं (ते) वे सर्वे) सब दस्यव स्मृता) दस्यु-अनार्य कहलाते हैं। चाहे वे (म्लेच्छ वाचः च आर्य वाचः म्लेच्छ भाषी हो, चाहे आर्य भाषी हों।

जैसे—चोरी, डकैती, तस्करी, काला-धन्धा, वैश्यावृति आदि।

शूद्र अर्थात निर्माणकर्त्ता को आर्य या द्विजाति से पृथक मानकर, पक्षपातियों ने हिन्दू समाज पर बहुत बड़ा अत्याचार किया है। विद्वानों का कर्तव्य

शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद में विज्ञान (४)

—भगवानदेव चैतन्य

सूर्य की आकर्षण शक्ति से सब ग्रह उपग्रह बन्धे हुए हैं इसका वर्णन यजु० में इस प्रकार है.

हिरण्यपरिणः सविता विचर्षणिकभे द्यावापृथ्वी अन्तरीयते।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणीति। (यजु.१४-२५)

अर्थात जैसे सूर्य अपने समीपवर्ती लोकों का आकर्षण कर धारण करता है वैसे ही अनेक लोगों से शोभायमान सूर्यादि सब जगत···।

यही नहीं वेदों में यन्त्र विज्ञान, गणित विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, सूर्य रश्मि विज्ञान, विद्युत विज्ञान, कृषि विज्ञान, शाल कर्म विज्ञान, विमान विज्ञान; अनुविद्या विज्ञान आदि का वर्णन भी मिलता है। ऐसे जहाजों का वर्णन मिलता है जिनमें यात्रियों के लिए भोजनादि की व्यवस्था विज्ञान में ही की जा सकती है। अथर्व० में तीन प्रकार की सड़कों का वर्णन मिलता है—(अथर्व० १२-१-४७), पैदल चलने वालों के लिए अलग तथा रथ और बैल-गाड़ी आदि के लिए अलग सड़कों का विधान है। तोपों. बन्दूकों, शीशे की गोलियों, अणुबम, टैंक तथा बेहोश करने वाली गैसों का विवरण भी वेदों में मिलता है। वास्तव में वेदो के बारे में जो भी भ्रान्तियां फैली उन सबके पीछे उन भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों का ही हाथ था जिन्होंने पूर्वाग्रहों के आधार पर वेदों का भाष्य किया। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने वेदों का जो भाष्य किया, उससे यह साफ सिद्ध हो गया कि वेदों में सब प्रकार का ज्ञान भरा पड़ा है।

आर्यावर्त में समय-समय पर सब विद्याओं का विकास अपनी चरम सीमा पर रहा है इसके प्रमाणमें बहुत से ऐतिहासिक तथ्य भी हैं। रामायण काल में जिन पुष्पक विमानों का वर्णन मिलता है वे अपने आप में अद्वितीय हैं। यही नहीं उस काल में ऐसे अस्त्र शस्त्रों का उल्लेख भी मिलता है जो अत्यधिक विलक्षण और शक्तिशाली थे। कुछ शस्त्र तो शत्रु पर वार करने के बाद पुनः अपने स्वामी के पास ही लौट आया करते थे। महाभारत काल में ऐसे भवनों का निर्माण भी हुआ करता था जिन्हें देखकर आदमी की आंखें धोखा खा जाती थीं। दुर्योधन जब पांडवों के यहां जाता है तो उसे पानी वाला स्थान जमीन जैसा और जमीन वाला स्थान पानी जैसा दिखता था। अर्जुन द्वारा तेल के कड़ाहे में मछली की आंख को देखकर निशाना साधना अपने आप में विलक्षण है।

निरुक्त के आधार पर वेद का भाष्य करने के बाद यह बात बिल्कुल ही स्पष्ट हो जाती है कि वेद में ऐसे ऐसे वैज्ञानिकता के प्रसंग हैं। जिन पर अभी खोज करने की आवश्यकता है। आज ज्यों ज्यों विज्ञान के कदम आगे से आगे बढ़ रहे हैं त्यों त्यों ही वेदों में मूल रूप में छिपे रहस्य भी सामने आते चले जा रहे हैं। टैस्ट ट्यूब में बच्चे का जन्म क्या इस ओर साफ संकेत नहीं करता कि सृष्टि के आरम्भ में युवा युवक युवतियों का जन्म हुआ होगा? महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे अनुपम विद्वान की सारे संसार के लिए यह एक बड़ी भारी महत्वपूर्ण देन है जो उन्होंने बहुत काल से छिपे या पगडंडियों में भटकते वेद ज्ञान को सर्व सुलभ बनाने की दिशा में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज इस दिशा में और भी अधिक सार्थक कार्य कर रहा है अब तो चारों वेदों का अंग्रेजी में भी अनुवाद कर दिया गया है। इससे पाश्चात्य लोगों को इस बात का पता भली भांति लग सकेगा कि आर्यावर्त और आर्य जाति का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। भारत की वर्तमान सरकार को इस दिशा में अपनी अहम भूमिका निभाने की आवश्यकता है। यदि सरकार इस दिशा में पूरा पूरा सहयोग दे तो आज भी भारत विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है।

आर्य वीर दल

उद्देश्य, आवश्यकता व आदर्श

—डा० देवव्रत आचार्य,

आर्य शब्द का अर्थ 'श्रेष्ठ व्यक्ति' है। निरुक्त में इसका अर्थ 'ईश्वर-पुत्र:' किया है। जो ईश्वर का भक्त हो और उसकी आज्ञा का पालन करे, उसे आर्य कहते हैं। आर्य के आठ लक्षण हैं—

ज्ञानी, तुष्टश्च, दान्तश्च, सत्यवादी, जितेन्द्रिय।
दाता, दयालु, नम्रश्च स्यादार्यो ह्यष्टभिर्गुणैः॥

अर्थात् ज्ञान (विद्या), सन्तोष, मन पर नियन्त्रण, सत्यभाषण, इन्द्रियों को वश में करना, दान, दया और विनम्रता ये आठ गुण आर्य में होने चाहिए। यह शब्द संस्कृत की 'ऋ' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'गति करना' होता है। प्रगतिशील व्यक्ति को ही आर्य कहते हैं।

'वीर' शब्द 'वीर विक्रान्तौ' धातु से बना है। जो व्यक्ति पराक्रमी हो अथवा जिसे सम्मुख देखकर शत्रु की कंपकपी छूट जाए उसे वीर कहा जाता है।

'दल' शब्द संगठन का वाचक है अथवा दलनार्थक 'दल' धातु से इसकी व्युत्पत्ति होती है। इस प्रकार आर्य वीर दल शब्द का अर्थ हुआ 'श्रेष्ठ चरित्रवान् वीरों का संगठन'। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि, पहले आर्य बनना आवश्यक है, अन्यथा केवल वीरता सज्जन लोगों की रक्षा के स्थान पर उन्हें पीड़ित भी कर सकती है। अच्छे और शूरवीर व्यक्ति भी संगठन में नहीं रह सकते तो उनकी ही विजय होगी, ऐसा कहना कठिन है। इसलिए आर्यवीर में बुद्धि एवं बल ब्राह्मण एवं क्षत्रिय के गुणों का समावेश तथा उत्कृष्ट श्रेणी का अनुशासन होना अनिवार्य है।

आर्यवीर दल का उद्देश्य :

(१) वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति एवं आर्य-सभ्यता की रक्षा, प्रचार और प्रसार करना।

(२) समस्त उचित उपायों द्वारा आर्य जाति में क्षात्रधर्म का प्रचार, प्रशिक्षण देकर स्वात्म-रक्षण और राष्ट्र-रक्षार्थ किसी भी विपत्ति का सामना करने के लिए सन्नद्ध रहना।

(३) जनता की सेवा के लिए आर्यवीरों को प्रशिक्षित करना।

संक्षेप में संस्कृति रक्षा, शक्ति सञ्चय और सेवाकार्य, आर्यवीर दल का उद्देश्य है।

आवश्यकता :

यह प्रश्न पूछना वैसा ही है जैसे कोई किसी माता से पूछे कि तुम्हें पुत्र की क्या आवश्यकता है? आर्य समाज हमारी मातृ संस्था है, महर्षि स्वामी दयानन्द गुरु, आचार्य और पितृतुल्य पथ-प्रदर्शक हैं। जिस माता की पवित्र गोद में वेद-मन्त्रों की लोरियां सुनकर हमें शान्ति मिली, स्वामी जी के शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सन्देश ने हम में नव-जीवन का सञ्चार किया; क्या यह उचित है कि उस माता की गोद बिना पुत्र के सूनी ही रह जाए।

प्रत्येक धार्मिक एवं राजनैतिक संगठन की युवा इकाइयां बनी हुई हैं, जिनसे मजे हुए कार्यकर्ता बड़े होकर अगले संगठन का कार्य संभालते हैं, परन्तु सैकड़ों डी० ए० वी० विद्यालयों एवं महाविद्यालयों तथा अनेक गुरुकुलों के होते हुए भी आर्य समाज में सर्वत्र कार्यकर्त्ताओं का अकाल-सा प्रतीत हो रहा है। किसी भी संस्था के जीवित रहने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें नया रक्त, जो उसी वर्ग का हो आता रहे।

अच्छे कार्यकर्त्ताओं के अभाव में अन्य संगठनों के व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से आर्य समाज के पदाधिकारी बन बैठे और ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों के विपरीत अन्य अवैदिक कार्य करने में प्रवृत्त हो रहे हैं।

आर्यवीर दल वह फैक्ट्री है जहां से चरित्रवान्, बलिष्ठ, सुसंस्कृत और अनुशासित युवकों का निर्माण होता है। इन्हीं तपे हुए नवयुवकों के कन्धों पर आर्यसमाज का भविष्य निर्भर है।

आर्यसमाज के अधिकारी एवं सदस्यों के बच्चों को भी आर्यसमाज में आकृष्ट करने एवं उन्हें आर्य बनाने का एक ही उपाय है कि प्रत्येक आर्यसमाज में आर्यवीर-दल की स्थापना अनिवार्य की जाए। आर्यसमाजों की ओर से व्यायामशालाओं, पुस्तकालयों के अतिरिक्त बच्चों की वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, क्रीड़ा-स्पर्धाएं तथा अन्य सेवा के कार्य आर्यवीर-दल के माध्यम से करवाने चाहिएं।

अनेक सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक संगठन अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए युवकों को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। अनेक प्रादेशिक संस्थाओं का गठन हो रहा है। कुछ संगठन देश से पृथक होने एवं निर्दोष लोगों की बलि लेने पर तुले हुए हैं। कुछ सारे देश को ईसा की भेड़ों या इस्लाम के झण्डे के नीचे लाने का स्वप्न देख रहे हैं। कुछ संगठन सामाजिक होते हुए भी राजनीति चला रहे हैं। केवल आर्यसमाज और आर्यवीर-दल ही ऐसा संगठन है जो अज्ञान, अन्याय और अभाव का मुकाबला करने के लिए कृतसंकल्पित है, जो मनुष्यमात्र का हितैषी है, जिसमें राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी हुई है, जाति-पांति, छुआ-छूत का जहर जिसकी रगों में विद्यमान नहीं है, संस्कृति-रक्षा शक्ति सञ्चय एवं मानवमात्र की सेवा करना ही जिसका आदर्श है; जिसका खुला संविधान एवं व्यावहारिक जीवनदर्शन है, "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" 'सारे संसार को श्रेष्ठ बनाओ' ही जिसका उद्घोष है और देव दयानन्द के सपनों का 'आर्यराष्ट्र' निर्माण करने का अरमान है।

क्या शूद्र आर्य नहीं हैं ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

है कि मनुस्मृति के मिथ्या अर्थों को सुधार कर लोक में यश के भागी बनें। भारत का उत्थान, आर्यों के चारों वर्णों के उत्थान पर निर्भर है। एक और बात ध्यान देने योग्य है कि शूद्र तथा वैश्य में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। वस्तु को बनाने वाला शूद्र है उस वस्तु का क्रय-विक्रय करने वाला वैश्य कहलाता है। निर्माण कार्य में कार्य करने वाले सभी शूद्र वर्ण में आते हैं अतः शूद्र नीच नहीं एक पवित्र तथा श्रेष्ठ वर्ण है।

"ओ३म् मा प्रगाम पथो वयम्"

अर्थात् "हे परमात्मा, हम सन्मार्ग से विचलित न हों।

—रघुनाथ आर्य, बेतिया

स्वास्थ्य चर्चा—

गर्मी बहुत है—आंख बचायें

डा० गोविन्द प्रसाद उपाध्याय, एम.डी. (आयुर्वेद)

गर्मियों में जहां चेचक, हैजा जैसे सार्वदेशिक रोग होते हैं, वहीं शरीर के सर्वाधिक उपयोगी एवं सुकुमार अंग नेत्र को भी कई रोग आ घेरते हैं। सहसा आंखों या पलकों में सूजन, लाली, जलन, खुजली होना, आंख का आना, पलकों में छोटी फुन्सियां (बिनावा) सदृश नेत्र-रोग गर्मियो में अधिक होते हैं। इनके विशिष्ट कारणों के साथ-साथ ग्रीष्म ऋतु का वातावरण भी एक प्रमुख कारण है।

इन दिनों सूर्य की किरणें बहुत प्रखर होती हैं। फलत: तापमान बढ़ जाता है, जिसका कुप्रभाव सारे शरीर की अपेक्षा आखो पर अधिक पड़ता है, क्योंकि आंख की नमी उष्णता के कारण भाप्प बनकर शीघ्र उड़ जाती है और नेत्रों में शुष्कता आ जाती है। उष्णता के ही कारण शरीर का रक्त संचार बढ़ जाता है। आंख मे बहुत छोटी छोटी रक्त वाहनिया स्थित हैं। रक्त संचार वृद्धि का उन पर सबसे पहले प्रभाव पड़ता है, जिससे जलन, खुजली या सूजन आदि होने लगती है। ऐसी स्थिति में गुलाब जल एवं फिटकरी का घोल बनाकर दोनों आंखों में डालने से बहुत लाभ होता है।

गर्मी में चलना नेत्र के लिए हानिकारक हैं। आचार्य सुश्रुत ने नेत्र रोगों के कारणों में धूप से आने पर स्नान करना, ज्यादा पसीना निकालना सिरका कांजी एवं अम्ल पदार्थो के सेवन को गिना है, जो इस ऋतु में ज्यादा सम्भव है।

अधिकतर लोग आंखों में कुछ हुंवा नहीं कि तीक्ष्ण सुरमा आदि द्वारा आंसू निकालते हैं। उनके मतानुसार आंसू निकालने से सब दोष निकल जाते हैं। ग्रीष्म में नेत्र स्वत: रुक्ष होते हैं। अत: तीक्ष्णाजन द्वारा आंसू निकालने से वे कमजोर हो जाते हैं। विशेषकर दिन में तो आंसू निकालने वाला अंजन लगाना ही नहीं चाहिए, क्योंकि उससे दुर्बल हुई आंखे सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के संयोग से खराब हो जाती हैं। यदि अति आवश्यक हो तो रात में सोते समय अंजन का प्रयोग करना चाहिए।

रात्रि में प्रयोग किया गया अंजन सोने के कारण तथा सौम्य वातावरण के कारण सम्पूर्ण नेत्र मे फैल कर दृष्टि को बलवान बनाता है। प्रात: काल अंजन लगायी आंखों को अवश्य साफ कर लेना चाहिए। क्योंकि पलको में लगा वह अजन रोगों को पैदा करता है। यदि तीक्ष्ण सुरमा आदि लगाने से नेत्रो में लाली, जलन आदि हो जाए, तो शुद्ध गाय का घी, शुद्ध शहद या ठंडा अंजन लगाना चाहिए। इसे प्रत्यजन कहते हैं। आखो की शुद्धि सुरमा की विपरीतता एवं ग्रीष्म के हानिकर प्रभावो से बचने हेतु नेत्र स्नान बहुत लाभकर है।

नेत्र स्नान

अन्य ऋतुओ की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु मे नेत्र स्नान बहुत ही हितकारी है। जिस तरह प्रात. स्नान से सारे शरीर की थकावट दूर हो जाती है, उसी तरह नेत्र स्नान से आंख की मांसपेशियों और नाडी जाल का तनाव दूर होता है। वाग्भट्ट के मतानुसार प्रति दिन तीन बार मुंह में शीतल जल भर के दोनो आंखो पर पानी का सिंचन करने से नेत्र के रोग नहीं होते और दृष्टि क्षीण नहीं होती—

यों तो हम लोग मुंह धोते समय आंखों पर पानी या पानी से भीगे हाथ फेरते ही हैं, परन्तु यह पर्याप्त नहीं है अपितु दोनों हाथो की अंजुरी में शीतल पानी लेकर आंखों पर दो इंच की दूरी से धीरे-धीरे जिससे चोट न लगे उछालना चाहिए। ठण्डे पानी की जगह त्रिफला के पानी या नमक के घोल का प्रयोग अपेक्षाकृत ज्यादा फायदेमन्द हैं। स्वच्छ नदी या तालाब में नहाते समय आंखे खोलकर डूबने से भी नेत्र स्नान हो जाता है। चौड़े बर्तन में साफ ठण्डा पानी भरकर उसमें मुंह डुबाकर धीरे धीरे पलकें खोलने, बन्द करने से भी नेत्र स्नान हो जाता है। इस हेतु आजकल शीशे के ग्लास (आई कप) भी आते हैं। इसमें एक आंख धोने के उपरान्त दूसरी आंख धोने हेतु दूसरा पानी लेना चाहिए। नेत्र स्नान विधि २-३ मिनट तक करें।

धूप के चश्मे

आजकल लोग हरे, नीले, काले, पीले, विविध रंगो के चश्मे लगाते हैं। इन रंगों की वजह से ये चश्में तीव्र धूप से नेत्र की रक्षा करते हैं। किन्तु ज्यादा गाढ़े रंगों के चश्मों से धूप न रहने पर चश्मा पहने रहने से आंखों पर अनावश्यक जोर पड़ता है। जिससे आंख की पेशी एवं स्नायुओं पर तनाव पड़ता हैं। फलस्वरूप धीरे-धीरे दृष्टि कमजोर हो जाती है। गाढ़े रंग का चश्मा पहनने से एक यह भी खराबी है कि उसे पहने रहने पर आंखे अंधेरे की तरह ठण्डी रहती है और अक्सर लोग बड़े व्यक्तियों के मिलने पर शिष्टता-वश अथवा यो ही तीव्र धूप में चश्मा उतार लेते हैं, जिससे आंखों पर सहसा तीव्र सूर्य किरणो के पड़ने से उन्हें हानि हो सकती है। चारों ओर से बन्द आंखों को हवा नहीं मिल पाती।

फलत: पलको और अक्षिगोलक में जलन होने लगती है। अत: कम गाढ़े धूपरोधी रंग जो चारो ओर से बन्द न हो, ऐसा चश्मा केवल तीव्र धूप में पहनने से हितकर है।

अन्यथा चित्र विचित्र रंगों के खूब गाढे, बन्द चश्में लाभ की बजाय हानि ही पहुंचाते हैं।

आहार विहार

गर्मियों में पाचन शक्ति मन्द पड़ जाती है, जिससे कब्ज रहती है। मलाशय में मल के रुके रहने से दूषित पदार्थ रक्त में मिलने लगते हैं। रक्त परिभ्रमण के माध्यम से जब वह रक्त नेत्र में पहुंचता है तो सहज सुकुमार आंखो की पेशियों और नसो में तनाव आ जाता है। ठीक से पाचन न होने पर शरीर का सामान्य स्वास्थ्य गिर जाता है। रक्ताल्पता के कारण आंखों में रक्त कम पहुंचता है, जिससे नेत्र कमजोर हो जाते हैं। अत: इन दिनों लघु द्रवबहुल, सुपाच्य आहार सामान्य स्वास्थ्य के साथ-साथ आंखों की रक्षार्थ लेना चाहिए। कब्ज से बचने और नेत्र शक्ति बढ़ाने के लिए रात में असमान मात्रा में घी और शहद के साथ त्रिफला (हरड, बहेड, आंवला) चूर्ण लेने का विधान है—अत्रिफला मधुसर्पिभ्या निशि नेत्र बलायच लिहयात—। गर्मियो में ज्यादा चरपरे, खट्ठे, नमकीन, गर्म एव गरिष्ठ भोजन नही करना चाहिए।

धूप मे चलने से बचें। यदि कारणवश चलना पड़े तो पानी पीकर, चश्मा लगा, सिर पर टोप लगा या गमछा बांधकर निकलें। दोपहर में ठण्डे कमरों या घर के निचले भाग मे विश्राम करें। घर के दरवाजों खिड़कियों पर गहरे नीले या हरे रग के पर्दे लटकाये। एकाएक ठण्डे कमरे से धूप में न निकले।

हिन्दी तथा खादी प्रचारकों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों जैसी पेंशन मिलेगी

हिन्दी तथा खादी का प्रचार स्वतन्त्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के दो महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम थे। इसीलिए केरल के स्वतन्त्रता सेनानियों को जो पेंशन दी जाती है, उसी प्रकार की पेंशन केरल सरकार द्वारा हिन्दी तथा खादी के प्रचारकों को भी दिए जाने के आदेश दे दिए गए हैं।

अनुरोध है कि अन्य राज्य सरकारो को भी हिन्दी तथा खादी के प्रचार में जिन सज्जनो ने सक्रिय योगदान दिया था उन्हें केरल सरकार की भांति पेंशन दिए जाने के आदेश शीघ्र ही जारी करने चाहिए। इन राज्यों की संस्थाओ को भी इस विषय में अपने-अपने राज्य की सरकार से पत्राचार करना चाहिए।

जगन्नाथ, संयोजक; राजभाषा कार्य

पुस्तक समीक्षा

जीवात्मा

पृ० ३१५ मूल्य ४० रु०

ले० स्व० पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय

प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द
नई सड़क—दिल्ली

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अनेकवादों मे अपनी सिद्धि-त्रैतवाद के नाम से की है अर्थात ईश्वर जीव-प्रकृति इन तीनों को अनादि माना है।

इसी प्रकरण मे "जीवात्मा" एक अलग सत्ता सम्पन्न तत्व है। आस्तिकवाद ग्रन्थ लिखकर ईश्वर की सत्ता "जीव से भिन्न मानी है, "अद्वैतवाद" ग्रन्थ भी दो नहीं, यानि ईश्वर एक है ग्रन्थों की उपादेयता महर्षि दयानन्द की मान्यताओं पर ही ग्रन्थ लिखकर "जीवात्मा" नामक ग्रन्थ लिखकर ईश्वर तथा शरीर से भिन्न सत्ता सिद्ध की है।

गौतम मुनि ने जीवात्मा के छः लिंग न्याय दर्शन में बताये हैं (१-१-१० न्याय) में सुख-दुःख दोनों भोग के अन्दर आ जाते है प्रयत्न कर्म के, और ज्ञान तो अलग ही दिया है रहे-इच्छा-द्वेष इनका सम्बन्ध भी सुख-दुःख से है क्योंकि जिस वस्तु से सुख होता है उसी को हम इच्छा कहते हैं। और जिससे दुःख होता है उससे द्वेष। इच्छा और द्वेष में ज्ञान, कर्म और भोग तीनों का कुछ समावेश है।

कणाद-मुनि ने नाम की भांति वैशेषिक में ग्यारह लिंग माने हैं दोनों में आत्मा के लिंग बताये है न कि लक्षण।

इस प्रकार "जीव" के विषय में अनुसंधान की इच्छा उत्पन्न होने पर कि मै क्या हूं! दार्शनिको की बात निराली है।

१—प्रत्येक-पुरुष को किसी न किसी अंश में अपनी प्रतीति होती है यह बात दूसरी है कि जिनको वह प्रमाण कहता है उसके द्वारा उनकी सिद्धि न हो सके।

२—वह कर्ता-भोक्ता और ज्ञाता है इसी को लोग जीव कहते है।

"ज्ञातृत्व-कर्तृत्व-भोक्तृत्वानणु:" जीवात्मा वह अणु है जिसमें जानने क्रिया-करने और सुःख-दुःख भोगने की शक्ति हो।

यह लक्षण समस्त संजीव-पदार्थो पर लागू होता है न केवल मनुष्य पर हीं।

"शरीर और शरीरी" "एकआत्मनः शरीरे-भावात्" वेदान्त ३-३-५३ कुछ लोग आत्मा को ही शरीर मानते हैं क्योंकि शरीर के रहने पर जीवात्मा रहता है शरीर के नष्ट होने पर जीवात्मा नहीं रहता।

शंकर भाष्य—देह से पृथक कोई आत्मा नहीं है।

जन्म से पूर्व और मृत्यु से पीछे। जन्म क्या है? जीवात्मा का शरीर प्रारम्भ करना मृत्यु क्या है? जीवात्मा का शरीर को छोड़ना?

जीवात्मा शरीर में कब कैसे आता है—शरीर का बनना कब प्रारम्भ हुआ जन्म से पूर्व जीवात्मा कहां था।

"जीवात्मा" नामक पुस्तक में विद्वान् लेखक स्व० पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने-मैं-मेरा-शरीर-मतभेद-अनुभव-समानान्तरवाद-स्मृति-विस्मृति प्रति-क्रियावाद-जीवन की प्रयोजन वत्ता, पुनर्जन्म, तीन शरीर, अभौतिक आत्मा मुक्ति-एक शरीर में अनेक आत्मा, योनि परिवर्तन जीवन मुक्ति-पुनर्जन्म और-ब्रह्म सम्बन्ध विषयक विचार देकर "जीवात्मा" नामक पुस्तक की रचना की है, लेखक विद्वान् है गम्भीर चिन्तक विचारक है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद समस्तवादों पर त्रैतवाद की मान्यता में जीवात्मा का अपना अस्तित्व है।

विद्वान लेखक की उपयोगिता को मान्य प्रकाशक श्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द ने वैदिक साहित्य का प्रकाशन कर जनता को बौद्धिक लाभ दिया है।

आचार्य डा. कपिलदेव द्विवेदी सम्मानित

ज्ञानपुर (भदोही) संस्कृत व हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान 'पद्म श्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी को उनकी पुस्तक 'वेदों में आयुर्वेद' पर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 'बीरबल पुरस्कार' देने की घोषणा की है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत ११ हजार रुपये तथा प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया जाता है। यह पुरस्कार हिन्दी दिवस पर लखनऊ में एक समारोह में दिया जाएगा।

डा० द्विवेदी संस्कृत साहित्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों में से एक हैं। आपके ७० से अधिक उच्च स्तरीय ग्रन्थ वेद, संस्कृत साहित्य, व्याकरण तथा भाषा विज्ञान आदि पर प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी आधा दर्जन पुस्तकें उ० प्र० शासन द्वारा इससे पूर्व पुरस्कृत की जा चुकी है।

आपकी साहित्यिक-सेवाओं के लिए इस वर्ष उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ने २५ हजार रुपये का 'विशिष्ट पुरस्कार' भी प्रदान किया है। वेद के विद्वान के रूप में लंदन विश्वविद्यालय, फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय, ईस्टवेस्ट यूनिटी विश्वविद्यालय न्यूयार्क, टोरन्टो विश्वविद्यालय, सूरीनाम विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी का नाम 'इण्डिया हूज हू' तथा 'एशिया हूज हू' में शामिल है। 'एशिया हूज हू' में शामिल होने वाले आप प्रथम भारतीय संस्कृत विद्वान हैं। आप निरन्तर ४५ वर्षों से लेखन कार्य कर रहे हैं। प्रथम ग्रन्थ अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन १९५१ में प्रकाशित हुआ था तथा वह ग्रन्थ उ० प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत भी हुआ था।

आपको आर्यसमाज तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा वेद तथा भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान देने हेतु अनेक बार दो दर्जन देशों में आमन्त्रित किया जा चुका है।

(डा० आर्येन्दु) मन्त्री
विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर, (वाराणसी)

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल, मुरादाबाद द्वारा २७ मई ९१ से ३१ मई ९१ तक आर्य समाज मन्दिर स्टेशन रोड मुरादाबाद के प्रांगण में यजुर्वेद पारायण यज्ञ का विशाल आयोजन किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी थीं। वेद पाठ उसी विद्यालय की छात्राओं ने किया। इस अवसर पर श्री योगेश दत्त आर्य के मधुर भजनोपदेश भी हुए। यजमानों और अतिथियों ने भीषण गर्मी में भी बहुत उत्साह से भाग लिया।

यशपाल आर्य बन्धु

गुरुकुल ज्वालापुर में प्रवेश आरम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) म म्त्र १९९५ ९६ हेतु छात्रो का प्रवेश १ जुलाइ ९५ स प्र रम्भ हुगा प्रवेश समित सख्या म होगा। न्यून म प्रवेश योग्यता कक्षा ५ उत्तीर्ण।

डा हरिगोपाल शास्त्री, प्रधानाचार्य

प्रवेश

पूर्ण आवासीय विद्यालय

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ०प्र०)

गगातट सुरम्य वात वरण- वांगीण विकास-सुविधाऐ ल परिसर एव- को ई अ र नी पाठयक्रम कक्षा चार मे अनिवाय कम्प्यूटर क्षा

प्रवस परीक्षा १ जुलाई से १५ जुलाई तक प्रात १० बजे स।

विषय—हिन्दी अ ग्रेजी गणित, सस्कृत विज्ञान।

प जीकरण फाम + निपमावली मूल्य ५० रुपये 'सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कागडी हरिद्वा का भजे।

प जीकरण फाम पहुचने की अन्तिम तिथि २८ जून १९९५।

महेन्द्र कुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

फोन—०१३३/४२६४४७

।। बर्ताव दोस्ताना ।।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

वर्षों से हो रहा था बर्ताव दोस्ताना।
पल मे हुए पराये बदला है क्या जमाना ।।
आये किधर से आई चलकर गर्म हवायें।
सुलझान की जगह पर उलझी हैं समस्यायें ।।
वह आत्मीयता का रिस्ता कहा हो गया रवाना ।।
वर्षो से हो रहा था बर्ताव दोस्ताना ।।१।।
बिगड हैं क्यो पडोसी आता बडा अचम्भा।
खिसयानी हो बिलाई क्यो नोचती है खम्भा ।।
क्यो मधुरतम सगीत का कटु हो गया तराना ।।
वर्षों से हो रहा था बर्ताव दोस्ताना ।।२।।
पतझड न होने पाये गुलशन इसे सभालो।
मझधार मे है नैया मिलकर इसे बचालो ।।
चाहते है तेज आधियो मे दीप तुम जलाना ।।
वर्षो से हो रहा था बर्ताव दोस्ताना ।।३।।
किससे सुनाये जाकर ये दुखभरी कहानी।
सब करने लगे अपनी अपनी खेचतानी ।।
सोचो जरा विचारो इतिहास ये पुराना ।।
वर्षों से हो रहा था बर्ताव दोस्ताना ।।४।।

स्वागत योग्य निर्णय

उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक निर्णय के अन्तर्गत गृह मन्त्रालय को निर्देश दिया है कि देश के समस्त नागरिको हेतु एक समान नागरिक सहिता बनाने की कार्यवाही करें। एक साहसिक तथा समीचीन कदम है जिसका अनुपालन करते हुए भारत सरकार को समान नागरिक सहिता बनाने हेतु कदम उठाना चाहिए। भावात्मक राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से सारे नागरिको हेतु एक समान नागरिक कानून का होना आवश्यक है। यह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है कि एक ही राष्ट्र के नागरिक भिन्न भिन्न व्यक्तिगत कानूनो का पालन करे और वे व्यक्तिगत कानून एक दूसरे के विरोधी हो।

भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय परिप्रेक्ष्य मे, भारतीय सस्कृति के मूलभूत सिद्धातो के अनुरूप नागरिक सहिता बनाये और राष्ट्र के समस्त नागरिको पर वह सहिता कडाई से लागू की जाय तथा समान कानून का सामाजिक एव नागरिक जीवन मे अनुपालन करते हुए राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय सौमनस्यता का परिचय देना चाहिए।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना
सुल्तानपुर (उ० प्र०)

दैनिक जागरण के प्रधान सम्पादक नरेन्द्र मोहन अस्वस्थ

नई दिल्ली। उत्तर भारत के प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक जागरण के प्रधान सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन को पिछले दिनो शारीरिक अस्वस्थता बढ जाने के कारण दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान मे उपचार हेतु भर्ती किया गया। उनसे कुशलक्षेम पूछने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा न्याय सभा सयोजक श्री विमल बधावन हस्पताल गये। श्री वन्देमातरम ने श्री नरेन्द्र के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

दैनिक जागरण समूह का समस्त परिवार आर्य समाजी भावनाओ से ओत-प्रोत है। आज भी श्री मोहन के घर के प्रतिदिन की शुरूआत प्रात कालीन यज्ञ से होती है

योग्य पुरोहित की आवश्यकता है।

वैदिक रीति से सस्कार कराने मे दक्ष वैदिक भावना के एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निवास स्थान नि शुल्क गुरुकुल के स्नातक को वरीयता शिक्षा एव अनुभव आदि के पूर्ण विवरण सहित लिखें अथवा मिले। वीरेन्द्रकुमार मन्त्री

आर्य समाज सरायतरीन, हयातनगर

श्रद्धांजली

आर्य समाज कोठारीया, राजकोट (गुजरात) के महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम भक्त, आर्य धर्म, गौसेवा और जीव दया के परम उपासक, आर्य समाज के मन्त्री श्री विपीन भाई मेहता के निधन से सौराष्ट्र के आर्य समाजी गहरे शोक मे डूब गये।

आर्य समाज कोठारीया के प्रधान श्री रमेश भाई आर्य, सुखलाल भाई गणात्रा श्री लक्ष्मनदेव आर्य, श्री सुशीला बेन आर्य श्री देवशी भाई चावडा और अशोक आर्य ने विगत आत्मा को श्रद्धाजली पुष्प अर्पण किया।

अशोक आर्य सह मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सुघसाईन, समस्तीपुर (बिहार) का ५वा वार्षिकोत्सव दिनाक ५, ६, ७ व ८ मई को बड धमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर क्रमश रक्षा सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आर्य सम्मेलन तथा गौरक्षा सम्मेलन आयोजित हुए।

उपरोक्त कार्यक्रमो मे सर्वश्री डा व्यासनन्द शास्त्री, प्रो० सस्कृत स्नातकोत्तर विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय श्री सत्यप्रकाश आर्य, दानापुर (व्यापुर), श्री सीताराम आर्य रोमडा, श्री रामप्रसाद आर्य, पटना आदि के उपदेश भजन व व्याख्यान हुए। जिसका बडा ही आकर्षक प्रभाव लोगो के ऊपर पडा और अनेक पुरुष एव महिलाए वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७५/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-६ ९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९५
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No 78 (C) 93/95 Post in N.D P S O on 15,16 6-1995

सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये बिना भारत सुखी-समृद्ध कदापि नहीं होगा

नई दिल्ली, २९ मई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री रज्जू भैया ने यहां आशा व्यक्त की कि अब समय नजदीक आता जा रहा है कि धर्म प्राण भारत मे सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए जोरदार आवाज उठाई जायेगी। गोहत्या जारी रहना एवं गोमांस का निर्यात हमारे देश के लिए अमिट कलंक है। सभी अहिंसा प्रेमियो को इस कलंक को मिटाने के लिए आगे आना होगा तथा यही परम गौभक्त लाला हरदेवसहायजी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

रज्जू भैया यहां भारत गौसेवक समाज द्वारा "लाला हरदेवसहाय एक-निर्भीक योद्धा" ग्रन्थ के लोकार्पण समारोह मे भाषण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज हिन्दू समाज अपने मानबिन्दुओ की रक्षा के लिए कृतसंकल्प है। ऐसी स्थिति मे गोहत्या बन्दी का लाला जी का सपना शीघ्र पूरा होगा।

सनातनधर्मी नेता तथा भारत गौसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता ने समारोह का संचालन किया। उन्होंने कहा कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर ही लाला हरदेव सहाय जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

इस अवसर पर अटल जी ने ग्रन्थ के लेखक मदनमोहन जुनेजा को शाल ओढाकर अभिनन्दित किया। इस अवसर पर अटलबिहारी वाजपेई श्री मदनलाल खुराना, सिकन्दर बख्त सहित अनेको गौ भक्तो ने अपने विचार प्रकट किये।

—शिवकुमार गोयल पत्रकार

औषधीय गुणों से भरपूर 'शलगम'

सम्पूर्ण भारत मे गाजर आदि उगाया जाने वाला कन्द शलगम रूस या उत्तरी यूरोप का देशरज है मुख्यत तो इसकी जड ही पका कर खाई जाती है किन्तु पत्तियां भी शाक के रूप मे खाई जाती हैं। यह अचार मुरब्बे आदि रूपों मे भी उपयोग मे लाया जाता है। इसमे विभिन्न अवयव-जल कार्बोहाइड्रेट्स, लोहा प्रोटीन चर्बियां चूना और फास्फोरस का प्रतिशत क्रमश ९११ ६ ६०७ ०५ ०२ ००४ एव ०४ पाया जाता है। यह कैल्शियम विटामिन बी एव सी का तो भण्डार ही है साथ ही मवेशियो के लिए भी पौष्टिक चारा है। यूरोप मे तो इससे चीनी भी बनाई जाती है।

औषधीय उपयोग— यह औषधी के रूप मे उपयोगी है। सुपाच्य होने के कारण इसे बेहिचक किसी भी रोगी को दिया जा सकता है। कच्चा खाने से पेट साफ होता है और मूत्र विकार दूर होते है। इसके कुछ अन्य औषधीय गुण हैं—

—एक एक शलगम एव मूली को चबाना पेशाब खुल कर आने के लिए हितकारी है।

—काली खासी मे सफद मूली एव शलजम का सत्राव तथा बिने छिले और भाप मे पकाई सब्जी खाना फायदेमन्द है। दमा के मरीज के लिये इसका और गाजर सेम व बन्द गोभी का रस मिला कर १० १५ दिनो तक सुबह शाम सेवन करना गुणकारी है। पुरानी खांसी मे इसका रस शक्कर के साथ सेवन करना अचूक दवा है। वात-व्याधि मे भी यह मुफीद है। मधुमेह मे इसकी सब्जी प्रतिदिन सेवन करना अत्यन्त उपकारिणी है। सर्दियो के कारण हाथ पैर मे सूजन होने पर शलजम उबले गुनगुने पानी मे रखना फायदायक हैं जबकि बन्द गले को साफ करने के लिये इसे गुनगुने पानी मे रखकर मिला कर पीना वरदान है।

कच्चे अथवा भुने शलजम का नियमित सेवन दृष्टि की कमजोरी दूर करने का रामबाण है।

—पथरी मे मूली शलजम के बीजो को समान अनुपात मे एक खोखली मूली मे भर कर भूनने के बाद थोडी थोडी मात्रा मे बीजो का सुबह-शाम पानी के साथ सेवन महौषध है।

डा० वीरेन्द्र झा

शोक प्रस्ताव

डी० ए० वी० कालेज के प्रबन्धक समिति और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अध्यक्ष माननीय श्री दरबारीलाल जी शिक्षा विद, आर्य समाजी नेता के असामयिक निधन पर परोपकारिणी सभा केसर गज, अजमेर द्वारा आयोजित शोक सभा में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करने एव इस कठिन घडी मे परिवार के सदस्यो को साहस प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

निर्वाचन

—आर्य समाज नकुड मे श्री शम्भूदयाल आर्य प्रधान, श्री भूपेन्द्र कुमार गोयल मन्त्री, श्री पंकज कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज रसडा मे श्री कमलासिंह प्रधान, श्री सच्चिदानन्द तिवारी मन्त्री, श्री बच्चा बाबू कोषाध्यक्ष चुने गये।
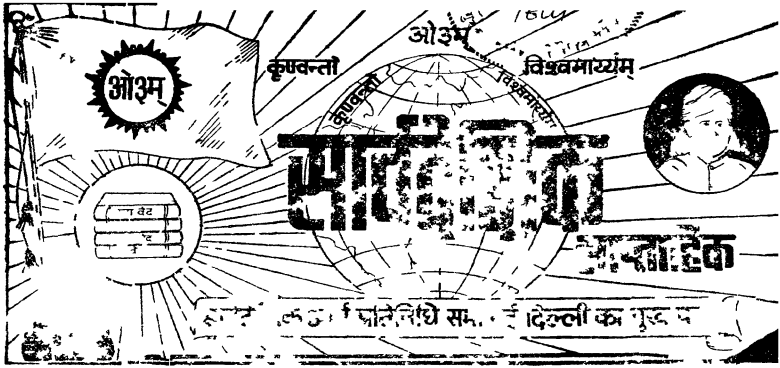
सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष । वार्षिक शुल्क
वर्ष ३४ अंक १६, दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ आषाढ कृ० १३ सं० २०५२ २५ जून १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा विद्वानों की गोष्ठी

ब्राह्मण एवं गृह्य सूत्रों पर विशेष कार्य करने पर विचार

सभा-प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् की घोषणा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव ने आर्य विद्वानो से अपील की है कि वह वेद के महत्त्वपूर्ण अंग और उपांगों पर अपना शोध कार्य कर। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सभा ने अपने हाथ में लिया है। इस समय तक आर्य विद्वानो द्वारा वेदो पर बहुत कुछ लिखा गया है। परन्तु वेद के अगो, आयुर्वेद धनुर्वेदादि तथा उपांगो, शिक्षा, कल्प-निरुक्त, छ द ज्योतिष आदि पर विशेष लेखन कार्य होना शेष है, सभा शीघ्र ही विद्वानो को आमन्त्रित कर उनके सत्परामर्श पर लेखन कार्य करायेगी।

उत्तर ग्रन्थ के तैयार होने पर सार्वदेशिक सभा उन्हें प्रकाशित भी करायेगी।

सभा ने १९७२ से वर्तमान काल तक लाखो रुपयो का वैदिक साहित्य प्रकाशित कर जनता तक पहुचाया है। सम्प्रति सार्वदेशिक सभा की नवीन योजना के अनुसार वैदिक साहित्य के अनुपलब्ध ग्रन्थों को तैयार करवा कर नई कार्य प्रणाली पर कदम उठाने का अनुपम कार्य करने जा रही हैं।

वैदिक विद्वानों से निवेदन है कि इस उपयोगी कार्य मे अपनी सेवा देने हेतु नाम व पता दें। धन्यवाद।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने पर महाराष्ट्र सरकार के निर्णय का स्वागत

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार ने गोवध पर प्रतिबन्ध लगाकर समस्त आर्य हिन्दु जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

राज्य के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर जोशी ने मन्त्रिमण्डल की साप्ताहिक बैठक के बाद सम्वाददाता सम्मेलन मे कहा कि पशु सरक्षण अधिनियम १९७५ मे संशोधन के लिये राज्यविधान सभा के आगामी मानसून सत्र मे एक विधेयक लाया जायेगा।

गोवध पर प्रतिबन्ध इस विधेयक के पारित होने की तिथि से लागू माना जायेगा।

वैदिक विद्वानों से निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी वैदिक विद्वानो की एक गोष्ठी निकट भविष्य मे (दिल्ली में) बुलाने जा रहे हैं विद्वान नाम व पता एवं किस विषय पर अपना योगदान दे सकेंगे, स्पष्ट रूप से लिखें तथा शीघ्र सूचित करें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आत्मिक उन्नति हेतु सत्यार्थप्रकाश पढ़ें !

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य समाज गोहाटी व शीलांग के कार्यक्रम पर

डा० नारायण दास जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आसाम के आमन्त्रण पर डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मन्त्री ९ से १२ जून तक के कार्यक्रम पर ६ तारीख को गोहाटी हवाईअड्डे पर पहुंचे उस समय डाक्टर साहब की धर्मपत्नि पुरोहित आर्यसमाज को लेकर सभामन्त्री को लेने गए और उन्हें अपने घर पर लेकरआए।

रात्रि में आर्य समाज के भवन में विशिष्ट व्यक्तियों की बैठक आहूत की गई। जिसमें सभा मन्त्री का एक वस्त्र कन्धे पर डालकर स्वागत किया और आर्य समाज व आसाम सभा की उन्नति पर विचार विमर्श किया गया। ईसाइयों के बढते चार्य पर तथा आर्यसमाज इसमें क्या करें, विषय पर चर्चा हुई।

अगले दिन प्रातः ११-६-९५ को डा० नारायण दास व श्री हंसराज आर्य के साथ शीलोंग को प्रस्थान किया। चार घण्टे की यात्रा कर आ. स. शीलांग पहुंचे। वहां पर सैंकड़ों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। इस अवसर पर सभा मन्त्री जी ने सामयिक परिस्थिति तथा आर्य समाज का दायित्व पर अपने विचार रखे। फिर चुनाव की प्रक्रिया शुरू हुई। एक समिति गठित कर तदर्थ समिति का कार्यकाल छः मास का आसाम सभा के प्रधान डा० नारायण जी ने बढ़ा दिया।

इस प्रकार दिन भर आसाम, मेघालय में आ० समाज की गतिविधि पर विचार किया। आगन्तुक आर्यो ने भी अपने विचार प्रस्तुतः किए : शाम को वापस गोहाटी आ गए।

आसाम वेद विद्यालय —

अगले दिन प्रातः डाक्टर साहब के साथ आसाम वेद विद्यालय को देखा जिसमें प्रथमावृत्ति से लेकर शास्त्री परीक्षा तक के छात्रों से वेदवाणी का पाठ सुना। यजुर्वेद १२ अ० सस्वर कण्ठ याद है। भवन के कमरे बन रहे हैं। यज्ञ शाला का शिलान्यास हो चुका है शीघ्र ही बनने जा रही है। शीलांग में दो डी० ए० वी० विद्यालय है जो सुचारु रूपेण चल रहे हैं।

१२ तारीख को श्री डाक्टर नारायण दास उनकी धर्मपत्नि श्री हंसराज जी विदा देने को तैयार हैं और हवाई अड्डे पर उन्हें पहुंचाया। इस प्रकार शीलोंग की वेद प्रचार यात्रा सम्पन्न हुई।

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वामी सत्यानन्द जी का पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को लिखा गया पत्र

आर्य जनता के सूचनार्थ निम्न पत्र प्रकाशित करने का उद्देश्य यह है कि तथाकथित संन्यासी विद्यानन्द को सार्वदेशिक सभाका प्रधान घोषित करने वाले स्वार्थी तत्वों ने किस प्रकार देश के कई अन्य आर्यनेताओं के नाम एवं पद का दुरुपयोग करतेहुए किस प्रकार बोगस सार्वदेशिक की कार्यकारिणी को प्रचारित किया है। ऐसा ही एक उदाहरण श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती का है जो पूर्व में मध्य भारतीय आर्य सभा के प्रधान रह चुके हैं तथा वर्तमान में उसी सभा के संरक्षक है। उन्हें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गत साधारण अधिवेशन में श्री वन्देमातरम जी के प्रस्ताव पर वास्तव में उप-प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया था। उन्हीं के नाम को विद्यानन्द वाले अवैधानिक गुट ने भी अपना उप-प्रधान घोषित किया है। इस पर श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री वन्देमातरम् जी को एक पत्र द्वारा बोगस सभा के खण्डन की सूचना भेजी है। यह पत्र अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक

श्री प्रधान जी, श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली,

सादर नमस्ते !

सूचनार्थ निवेदन है कि मैं स्वामी सत्यानन्द मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा टी०टी० नगर भोपाल का भूतपूर्व प्रधान तथा वर्तमान में सभा का संरक्षक हू, मुझे विदित हुआ हैं कि कुछ तथाकथित लोगों ने अवैधानिक सार्वदेशिक सभा का जो गठन किया है, उसे मैं अवैधानिक मानता हूं। मैं अनुशासित आर्य सन्यासी हू, जिन लोगो ने मुझे अवैधानिक सभा का उप-प्रधान चुना है उसे मैं स्वीकार नहीं करता, जिस सभा के प्रधान वन्देमातरम् हैं वही सभा वैधानिक है। उन्हे ही हमारी सभा का पूर्ण समर्थन है।

भवदीय
स्वामी सत्यानन्द
प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

भटकाव

एक आदमी एक बड़े मकान के सामने पहुंचा तो देखा कि मकान के बाहर मुख्य द्वार पर लिखा हुआ था, "अन्दर जाओ"। आदमी अन्दर चला गया तो फिर लिखा मिला कि अब दाहिनी ओर जाओ। जब दाहिनी ओर गया तो आगे जाकर देखा कि एक सूचना बोर्ड पर लिखा था, "अब ऊपर जाओ"। वह ऊपर चला गया। वहां जाकर देखा तो लिखा मिला कि सीधे जाकर फिर बाएं घूम जाओ। बाएं आने पर एक बड़े कमरे में पहुंच गया। वहां लिखा था नीचे जाओ। नीचे गया तो वहां लिखा मिला, "क्यों इधर-उधर भटक रहे हो। यह अमूल्य जीवन इधर-उधर भटक कर समाप्त करने के लिए नहीं है। जीवन की सही दिशा को पहचानो।"

—निशा गुप्ता

राष्ट्र-निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान से

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत श्रीमद्दयानन्द संस्कृत वेद विद्यालय गुरुकुल खोड़ाखुर्द, में आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश की ओर से एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण शिविर २ जून १९९५ तक लगाया गया। समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण में सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि राष्ट्र का निर्माण मनुष्य के चारित्रिक उत्थान के द्वारा ही सम्भव है। यदि राष्ट्र के नागरिक चरित्रवान एवं अनुशासित होंगे तो वह राष्ट्र निश्चय ही उन्नति के शिखिर पर पहुंचेगा। आर्य वीर दल प्रदेश का यह प्रशिक्षण शिविर इन युवाओं को चरित्रवान एवं अनुशासित बनाने पर विशेष बल देता है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस शिविर के संचालकों ने इन दस दिनों में सराहनीय कार्य किया है।

सम्पादकीय–

सच्चाई से मुंह क्यों छिपाते हो

सच्चाई यह है कि सन् ७३-७४ ई०में सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन आ०स० दीवान हाल में डा० दुखनराम की अध्यक्षता में हुआ था वही सभा के प्रधान भी थे। सम्पूर्ण कार्यवाही होने के पश्चात प्रधान पद के लिए दो नाम प्रस्तावित किये गये। श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले और श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री का, वोट पड़े ८८ वोट लाला रामगोपाल जी को मिले थे और ५८ वोट श्री शास्त्री जी को मिले थे। पारस्परिक व्यवहार मृदु थे एक दूसरे ने परस्पर का स्वागत किया और पूर्ण चुनाव का अधिकार नव-निर्वाचित अध्यक्ष को दिया गया। समिति एवं समितियों का गठन हो गया। और इस जुन्डली में प्रो० शेरसिंहजी श्री स्वामी ओमानन्द जी अधिकारी व सदस्य के रूप में रहे।

तत्पश्चात्—पांच-निर्वाचन सार्वदेशिक सभा के लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में हुए और यह निर्वाचन सर्वसम्मति से किये गये। और समिति के गठन का अधिकार प्रधान जी को दिया गया। जिसे उन्होंने विधिवत् पूर्ण किया।

एक निर्वाचन विवादास्पद किया गया जिसमें स्वामी आनन्दबोध जी ने किसीभी उपप्रधानको निर्वाचन करने को कहा। उन्होंने कैप्टन देवरत्न को अधिकृत किया और उनकी देखरेख में स्वामी जी महाराज पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये और उन्हें अपनी समिति के गठन का अधिकार दिया गया इस पुरानी जुन्डली में प्रो० शेरसिंह जी व स्वामी ओमानन्द जी सदा भागीदार रहे। एक और बात भी ?

उस समय हरियाणा-पंजाब में था बाद में विभाजन किया गया वह भी सार्वदेशिक सभा की देखरेख में हुआ। तब हरियाणा में दो ग्रूप थे एक गुरुकुल भैंसवाल का द्वितीय गुरुकुल झज्जर का, मुकाबला पड़ता था। अतः चौ० मांडूसिंह जी भी बाइज्जत इस जुन्डली में थे। उनके जाने के बाद भैंसवाल ग्रूप कमजोर हुआ। तब से स्वामी ओमानन्द जी इस सभा पर जुन्डली मारे बैठे हैं किसी को नजदीक नहीं आने देते हैं।

हरियाणा में एक ग्रूप पंजाब के लोगों का है जिसका नेतृत्व डा० हरिप्रकाश जी करते थे उन्हें भी सदा किनारे रखा गया।

इन २०-२२ वर्षों में सार्वदेशिक सभा का वर्चस्व एक छत्र राज्य का रहा। जिसमें सभी थे किन्तु फिर हरियाणा पंजाब का टकराव प्रारम्भ हुआ वह श्री इन्द्रवेश जी व श्री अग्निवेश जी के आधिपत्य के बाद।

विवाद पहले भी गुरुकुल कांगड़ी में था और आज भी गुरुकुल कांगड़ी ही है तब दिल्ली-पंजाब एक थे बीच में हरियाणा-दिल्ली एक हुए। पुनः अब दिल्ली-पंजाब नजदीक हुए हैं। विवाद गुरुकुल की सम्पत्ति का ही रहा है और आज भी है।

आज की स्थिति क्या है ?

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती यदि आज हमारे सामने होते तो यह जुन्डली एक साथ ही होती और स्वामी आनन्दबोध के सामने सब नतमस्तक थे। १६ अक्टूबर ९४ को अन्तरग बैठक ने एक वर्ष के लिए निर्वाचन स्थगित किया, पूरी जुन्डली साथ थी। अगले दिन १७ अक्टूबर को श्री स्वामी आनन्दबोध जी का प्रयाण काल था। उस समय १७-१८ अन्तरग सदस्यों के मध्य पं० वन्देमातरम जी को वरिष्ठ-उपप्रधान होने के नाते अध्यक्ष घोषित किया गया। उसी समय श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट को वरिष्ठ उपप्रधान बनाया और कार्यवाहक अध्यक्ष भी घोषित कर दिया।

कारण यह था कि स्वामी आनन्दबोध जी के बाद सभा की आर्थिक दशा पर ध्यान सबका गया। अतः वा० सोमनाथ जी मरवाह ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो स्वयं सभा को धन दे सकते थे और दूसरों से धन दिलवा सकते थे। एक बोझ या (दायित्व) पूज्य स्वामी जी और छोड़ गये वह थी उनकी यादगार-महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन दुग्धकेन्द्र 'गाजीपुर' उसे भी सम्हालना था। यह जिम्मेदारी भी वा० सोमनाथ जी पर ही डाली गई। इन सबका उन्होंने बड़ी दृढ़ता से निर्वहन किया।

इस देहावसान व नई अधिकार प्रणाली के मध्य हमारे जुण्डली के कुछ सदस्यों को आपत्ति हुई कि एक दम यह प्रक्रिया क्यों की गई। रात्रि में सार्वदेशिक सभा के कक्ष में एक बैठक हुई। जिसमें निम्न महानुभाव थे।

१ पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज २. प्रो० शेरसिंह जी, ३. कै० देवरत्न जी, ४. श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट, ५. श्री सूर्यदेव जी. ६. पं० विद्यासागर जी, ७. सुमेधानन्द जी, ८. केशवदेव वर्मा।

और एक प्रश्नवाचक चिन्ह इस नये निर्वाचन पर हुआ श्री पं० वन्देमातरम जी ने इसका समाधान किया कि तात्कालिक स्थिति क्या थी। जब यह चर्चा चल रही थी उस समय एक मुखर व्यक्तित्व वाले श्री छोटूसिंह जी ने कहा कि काश-बाबा होते तो यहां कोई नहीं आता उसके सामने सब चुप रहते थे।

खैर बात खत्म हुई और कुछ समय बाद अन्तरंग ने एक वर्ष के बजाए शीघ्र चुनाव सम्पन्न कराने का निश्चय लिया और उसमें दो बैठकों में हैदराबाद में निर्वाचन रखने का निर्णय लिया गया एक सभा में स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा ने अपनी राय दी कि अधिवेशन हैदराबाद में न रखा जाए। पं० वन्देमातरम जी ने अपना स्पष्टीकरण दिया उस समय केवल एक स्वामी धर्मानन्द ने ही अपना मत व्यक्त किया और सम्पूर्ण सभा मौन थी अर्थात् न चाहते हुए भी मौनं स्वीकृतिलक्षणम् अधिवेशन २०-२१ की तिथियों में होना तय हुआ। परिस्थिति वश श्री प्रधानजी के द्वारा २०-२१ के बजाय २७-२८ मई तिथि रखी गई। चुनाव की प्रक्रिया चालू हुई। प्रत्येक प्रान्त से प्रतिनिधियों के नाम मांगे गये और वह देर-सवेर सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुए। सदा ही प्रतिनिधियों के नाम प्राप्त होने में विलम्ब रहता था वह कुछ अबकी बार भी रहा। फिर भी चुनाव प्रक्रिया के तहत (एजेन्डा) चुनाव से एक मास पूर्व सब को कार्यालय से भिजवा दिया।

वार्षिक रिपोर्ट—आय-व्यय-बजट सभी कुछ दिया गया। और चुनाव की तिथि आने पर हैदराबाद पहुंचने की तैयारी भी होने लगी।

एक घटना और—

स्वामी दिव्यानन्द जी को एक पत्र रजिस्टर्ड उनके घर के पते पर भेजा गया उनसे यह जानकारी मांगी गई कि आर्य सभासद की सीमा रेखा क्या है—

१ आपने शालीमार बाग आर्यसमाज की सदस्यता से त्याग पत्र कब दिया और वह आर्य समाज ने कब स्वीकार किया। तथा ब्यावर राजस्थान से विधिवत सदस्य कब व कैसे बने।

२. ब्यावर में दिल्ली रहकर सदस्य क्यों बने।

आपको ज्ञात है कि विगत वर्षों में श्री जी०एल० दत्ता को प्रतिष्ठित सदस्य इसलिये नहीं बनाया कि वह मांस खाते थे आप पर यह आपत्ति है आप सन्यासी होकर अपनी पत्नि के पास या साथ ही रहते हो, क्यों।

आपको आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से भी पृथककर देना चाहिए, सन्यासाश्रम में स्त्री के साथ रहना तो घोर अनर्थ हैं ऐसे व्यक्ति को आर्य समाज की सदस्यता से भी पृथक कर देना चाहिए, सार्वदेशिक सभा तो महान चीज है। (शेष पृष्ठ १० पर)

हिन्दी के नाम पर—विदेश भ्रमण

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

संसदीय राजभाषा समिति के तीस सदस्यों के तीन पृथक-पृथक प्रतिनिधि मण्डल कश्मीर एव आतंकवाद के विषय को भी विदेशों में भारत की नीति को स्पष्ट करेंगे।

विशेष बात यह है कि इन मण्डलो में किसी में भी गृहमन्त्री श्री शंकरराव चव्हाण शामिल नहीं है। जो कि संसदीय राजभाषा की समिति के अध्यक्ष हैं।

लेकिन गृहराज्य मन्त्री श्री पी. एम. सईद जिन्होने कभी भी राजभाषा समिति में भाग नही लिया है अपनी पत्नि को लेकर जा रहे हैं इसमे गृहराज्य उपमन्त्री श्री रामलाल राही भी सम्मिलित हैं।

हिन्दी विरोध के लिए बदनाम द्रमुक तथा अन्नाद्रमुक के सांसद भी विदेशों में राजभाषा की प्रगति का जायजा लेने का मोह सवरण नहीं कर पा रहे हैं। मार्कसवादी पार्टी कम्युनिस्ट व भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने भी अपना विरोध स्थगित कर दिया है। दोनों प्रगतिवादी पार्टी के सदस्य भी विदेश यात्रा पर जा रहे हैं।

आश्चर्य इस बात का है कि इस बहती गंगा में गोता लगाने में कोई भी सदस्य पीछे नहीं है सभी अग्रणी है। इन तीनों प्रतिनिधि मण्डलों का प्रतिनिधित्व—प्रथम का श्री पी. एम. सईद तथा द्वितीय का उपाध्यक्ष शंकरदयाल सिंह व तृतीय का बी०जे०पी० के डा० लक्ष्मी नारायण पांडे कर रहे हैं।

१—प्रथम मण्डल—अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ब्रिटेन रूस मे जाकर देखेगा कि भारतीय दूतावासों केन्द्रीय कार्यालयों में बेंकों में एवं अन्य सार्वजनिक कार्यालयों में हिन्दी की उपयोगिता की स्थिति क्या है।

२—द्वितीय में—शंकर दयाल सिंह का ग्रुप, मोरिशस, द० अफ्रीका, फ्रांस, दुबई जा रहे हैं।

तृतीय में डा० लक्ष्मी नारायण पांडे—थाईलैण्ड, हांगकांग, चीन, जापान, फिलीपीन, इण्डोनेशिया जाकर भाषा के प्रयोग का अध्ययन करेंगे। कुछ सदस्यों की राय यह भी है कि उनकी पार्टी तब तक अपनी राय नहीं दे सकती जब तक वहां की स्थिति का विधिवत जायजा नही ले लेती है यह राय है जो पूर्व में विरोधी दल अपनाये थी वह है मा०का० पा० की राज्य सभा सदस्य श्रीमती चन्द्रकला पाण्डेय ने स्पष्ठ किया है। लेकिन एक अन्यदल के सांसद ने बताया कि वामपन्थी सदस्यों ने अपने पार्टी नेतृत्व को मजबूर किया कि वह उन्हें पार्टी को दौरे पर जाने दें।

वास्तविकता यह है कि इस भाषा सर्वेक्षण के नाम पर एक करोड़ रुपया खर्च की बात प्रचारित करने के बाद व्यय में कमी पर जोर दिया जा रहा है।

यह सांसद "इकोनोमी क्लास" में हवाई यात्रा करेंगे। जबकि सांसद की यात्रा प्रथम श्रेणी से कम नहीं है। सांसदों के खान पान पर खर्च के लिए ११२ डालर दिए गये हैं। आवास आदि की सुविधा भारतीय दूतावास के द्वारा की जाएगी। सम्भवत: दूतावासों में ही रहने की व्यवस्था रहेगी।

१९८० के बाद संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य विदेश जा रहे हैं। १९८९ तथा ९० में भी विदेश यात्रा का कार्यक्रम बना था मगर सार्वजनिक विरोध के बाद अन्तिम समय पर स्थगित कर दिया गया था।

सरकार से पूछो ?

क्या इस भाषा समिति ने घर मे झांक कर देखा कि अपने घर में राष्ट्रभाषा की उपयोगिता का क्या महत्व है प्रत्येक कार्यालय में हिन्दी का क्या महत्व है, लोकसभा में सदस्य गण अंग्रेजी में भाषण देकर अपनी योग्यता का परिचय देते हैं।

लोक सेवा आयोग के बाहर १० वर्षों से ऊपर धरना दिए चार नवयुवकों को सदा ही बड़े नेता लम्बे भाषण देकर आश्वस्त कर रहे हैं।

पंजाब में हिन्दी का क्या स्वरूप है स्व० ज्ञानी जैलसिंह भी घर को न देखकर देश भक्ति का नारा देकर स्वर्गगामी हो गए। सभी दलीय नेता भी अपने वायदों तक ही कर्तव्य पारायण हैं बस !

भारत सरकार विदेश यात्रा कराए, पर दिल पर हाथ रखकर देखे कि क्या वस्तुतः हम राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान दिलाने में सही कदम उठा रहे हैं। पिकनिक भी कराइए पर बाहरी देशों में जो अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति जो मोह है वह हमें भी सीखना चाहिए।

विदेशीय जनों के भारत भ्रमण पर समय समय पर हमें जो भी चेतावनियां मिलती रहीं हैं क्या हमने कभी उन्हें गम्भीरता से लिया है और उस पर आचरण भीं किया है।

आर्य समाज का दृढ़ निश्चय है कि इन सांसदों के विदेश भ्रमण से राष्ट्र भाषा का क्या उत्कर्ष हो सकेगा। किसी भी राष्ट्र प्रेमी जन के दिलों में यह बात उतरने वाली नहीं है।

हमारा अभिमत है कि यह समिति देश मे भाषा की दशा पर विचार क्यों नहीं करती। यह स्थायी समिति सदा गम्भीरता से विचार क्यों नहीं करती।

१४ सितम्बर १९४९ में जिस हिन्दी को राजकीय प्रयोजनों के लिए स्वीकृत किया था तथा २६ जनवरी १९५० से जो लागू किया गया है ? विचार करें हिन्दी की प्रतिष्ठा पर।

पुस्तक समीक्षा

स्वामी श्रद्धानन्द

ले०—पं० सत्यदेव विद्यालंकार

मूल्य—पांच सौ रुपए, पृष्ठ—१६८

प्रकाशक—श्री स्वामी श्रद्धानन्द अनुसन्धान,
प्रकाशन केन्द्र, कनखल हरिद्वार

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन वृत्त पर बड़े लेख लिखे गए हैं परन्तु पं० सत्यदेव विद्यालकार द्वारा रचित जीवनवृत्त उनके बहुआयामी गतिशील व्यक्तित्व की पूरी प्रामाणिकता को उद्भाषित कर सर्व प्रथम प्रणीत ग्रंथ है समसामयिक समस्याओं का निदान ढूढ़ते हुए नवयुवकों के समक्ष आलोक पुंज है। महर्षि दयानन्द को देखा-सुना, फिर जाना समझा, फिर अपने जीवन को बदला और स्वामी दयानन्द के प्रशस्त कार्य को आगे बढ़ाया। स्वयं साधारण पुरुष से महापुरुष बना। व्यष्टि से समष्टि में लीन हो गया।
भारतीय अस्मिता, भारतीय संस्कृति की सुरक्षा व प्राचीन नवीन के जीवन का सार है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली उनकी प्रयोगशाला का अदभुत परीक्षण है। अदभुत राष्ट्रभक्ति व आत्म गौरव तथा प्रबल इच्छा शक्ति से असम्भव को भी सम्भव बना दिया। काश ! हमारी नई पीढ़ी उनके आलोक में अपना जीवन पट बुन सकी तो निस्सन्देह कल का उन्नत भारत उनका होगा और उनका ही रहेगा।

चिरकाल प्रतीक्षित पुस्तक अपने दीक्षा गुरु का विस्तृत जीवन चरित्र जनता को अर्पित किया जाय—प्रयास कछ-२ कर चला—आपदाओ ने मार्ग अवरुद्ध किया। फिर भी गुरुभक्ति मे जिस परिश्रम और तत्परता से प्रकाशित किया है पुस्तक स्वय अपने आप में गवाह है।

पुस्तक के चार भाग हैं—इनमें अलग अलग बिन्दुओं पर लेखक ने कलम चलाई है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

निर्वाचन

—आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली। श्री तेजपाल सिंह प्रधान, श्री विजय कान्त शर्मा मन्त्री, श्री आनन्द प्रकाश कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज भरथना इटावा। श्री सत्यदेव जी आर्य प्रधान, श्री भगवान दास आर्य मन्त्री, श्री मोतीलाल आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांव। श्री चन्दन सिंह आर्य प्रधान, श्री प्रभु दयाल चुटानी मन्त्री; श्री जगदीश चन्द्र बाठुला कोषाध्यक्ष।

मूर्ति पूजा (२)

यह ऐतिहासिक सत्य है कि, अभी तक भारत में २५०० वर्ष से पुराना कोई मन्दिर नहीं मिला, जबकि जैन-बौद्ध मतों के प्रारम्भ से पहले भारत के बाहर मिश्र के पिरामिडों में हम तरह-तरह की मूर्तियां पाते हैं। अभी कुछ समय पहले मैं बेबीलोनिया के 'हैंगिंग-गार्डन' जो संसार की ७ अद्भुत चीजों में एक है, को देखने गया था। वहां सिकन्दर महान की कब्र देखी, वहां दीवारों पर बनी मूर्तियों को देखकर मैंने गाइड से पूछा कि ये मूर्तियां क्यों बनाई गई? तो उसने बताया कि, पहले विभिन्न प्रकार के देवताओं की पूजा होती थी। यहां तक कि पहले पानी के जहाजों मे भी आपत्तियों से बचने के लिये, जहाज के सामने के सिरे पर एक देवता की मूर्ति लगाते थे, जिससे समुद्र में वह देवता तूफान इत्यादि से रक्षा करे या बचाये।

इस प्रकार भारत के बाहर यहां तक कि सिकन्दर महान व उससे भी पहले मिश्र आदि देशों में मूर्तिपूजा अर्थात् किन्हीं विशेष देवताओं की पूजा की जाती थी। बाद में इसी प्रकार विदेशियो द्वारा ये अन्धविश्वास मूर्तिपूजा के रूप में भारत आया, और भारतवासी इस मूर्तिपूजा के चक्कर में ऐसे फंसे, कि अभी तक कोल्हू के बैल की तरह लगे हुये हैं। सत्य के प्रकाश अर्थात् ईश्वरीय-ज्ञान 'वेद' को सही तरीके से समझने के बाद ही ये लोग पुनः सही मार्ग पर आ सकते हैं, अन्यथा इनका उद्धार सम्भव नहीं।

कारण और निवारण-

मूर्तिपूजा के विशेषरूप से मुख्य चार कारण हैं –

१-व्यापार २-मनोरंजन या आनन्द ३-स्वार्थ-सिद्धि ४-अज्ञान। मूर्तिपूजा से मनुष्य निकम्मा व अपने पुरुषार्थ पर आश्रित न रहने की प्रवृत्ति का हो जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार बदांऊनी ने लिखा है कि "हिन्दुओं के बराबर प्रताप-शाली पठान और मुगलों में एक भी जाति विद्यमान नहीं है। इतने वीर होते हुये भी ये हिन्दू पराजित क्यों हुये इसका कारण है मूर्तिपूजा"।

मूर्ति-भंजक इस्लाम का उदय आज से करीब १५०० वर्ष पहले हुआ, और जहां-जहां इस्लाम का प्रचार हुआ, वहां से मूर्तिपूजा का अन्त इस्लाम ने कर दिया।

जैसे कोई झूठ बोले, और उस झूठ को बचाने या अपनी स्थिति को बचाने के लिये, वह तरह-तरह के उपाय खोजता है, बस यही हाल इस मूर्ति-पूजा का है। यहां तक कि कुछ वर्ष पहले हिन्दुओं के किसी शंकराचार्य जी ने कहा था कि "अगर मूर्तिपूजा बन्द हो जाये तो ये लाखों पुजारी बेकार हो जायेंगे" इस कथन का तात्पर्य यही है कि मूर्तिपूजा एक कारोबार या व्यापार है।

मूर्तिपूजा के द्वारा लोग नाचते-गाते व मनोरंजन भी करते-कराते हैं, तथा स्वांग बनाकर नाच गाकर, मूर्तियो का श्रृंगारकर, झांकियां सजाकर, विविध खेल-तमाशे से जनता का आकर्षण व मनोरंजन करते हैं। इस प्रकार ये मूर्तियां लोगों की मनोरंजक बनीं॥

मूर्तियों के लिये बड़े-बड़े मन्दिर बनाये गये। वहां चढ़ावे के रूप में करोड़ों रुपया आने लगा, जिस पर कुछ पुजारियों का ही एकाधिकार रहता था, मन्दिर ऐसी बैंक बन गये जहां अधिकांश जनता का, केवल, धन जमा किया जाता रहा। सेठ-साहूकार अपने काले धन सोना-चांदी का दान करने में पुण्य समझ मन्दिरों का ऐश्वर्य बढ़ाते रहे। इन्हीं मन्दिरों की सम्पत्ति लूटने के लिये विदेशियों ने भारत पर आक्रमण किया और भारी मात्रा में देश की सम्पत्ति लूटकर ले गये।

अवतारवाद और अवतारों की मूर्तियां बनाकर मूर्तिपूजा करना केवल भारत में ही हैं। जैसे पहले मछली के रूप में 'मीनावतार' कछुये के रूप में 'कूर्मावतार' पक्षी के रूप में 'हंसावतार' पशु के रूप में 'वाराहावतार' आधे पशु तथा आधे मनुष्य के रूप मे 'नृसिंहावतार' तथा अन्त मे परिपूर्ण रूप में 'राम-कृष्ण और बुद्धादि' के रूप मे अवतार हुये, ऐसा होना बताया गया, तथा केवल भारत मे वाराह व नृसिंह के मन्दिर भी बने हैं, वहां पशु व मानवाकार वाले भगवान की पूजा भी होती है। इसी प्रकार की मिश्र की स्फिंक्स नाम वाली मूर्ति बहुत बड़ी है।

अंधविश्वास व अज्ञान ईसाई व मुसलमानो मे भी अभी तक प्रचलित है। केथोलिक ईसाइयों में हिन्दुओं की तरह ही मूर्तिपूजा प्रचलित है। भारत में तो मां मरियम 'मेरी व ईसामसीह' का बाकायदा मन्दिर बनाया गया है और वहां के ईसाई लोग उन मूर्तियों की पूजा भी करते हैं। इस्लाम में भी मक्का के काबा स्थित 'संगेअसवद' को चूमना, पीरों की दरगाह पर व कब्रों पर चादर चढ़ाना, धूपबत्ती जलाना, फूल चढ़ाना, तथा मकबरों में गड़े मुर्दों के जड़ स्मारकों के आगे सिजदा करना, सब मूर्तिपूजा की तरह ही है। कर्बला (ईरान) में मुर्दे को दफनाने से पहले, कर्बला के अन्दर परिक्रमा करके तब मुर्दे को गाड़ते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार में इतनी उन्नति व शिक्षा के प्रचार के बाद भी इतना अज्ञान व अंधविश्वास मनुष्यो में है। इसका क्या कारण है? मुझे तो इसका एक ही कारण समझ आता है, कि धर्म की सही शिक्षा का न होना। आज भी संसार में धर्म और ईश्वर के नाम पर लोग बुरी तरह ठगे जा रहे हैं। पूजा के नाम पर पाखण्ड बढ़ता ही जा रहा है। यह सारा अज्ञान अंध-विश्वास व मूर्तिपूजा की कुरीति का निवारण इन दो बातों (जिनका कि मैं स्वयं प्रचारक हूं) को ठीक से समझने पर स्वतः ही हो जाता है। वे बातें निम्न हैं—ईश्वर (God) कभी भी मनुष्य के रूप में जन्म नहीं लेता। २—भगवान (Lord) जो कि मनुष्य की तरह जन्म लेता है, मनुष्य की तरह भोजन करता है, तथा मनुष्य की ही तरह मरता है। और इसमें भी सबसे मुख्य बात यह है कि, मरने के बाद मनुष्य की ही तरह किसी भी भगवान ने कुछ भी नहीं किया, ना ही कर पायेगा।

इस प्रकार इतिहास गवाह है कि जितने भी महापुरुष (भगवान) हुये उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा, कि "मैं ईश्वर हूं।" हां, उनके नाम पर किसी स्वार्थी ने (जैसे कि गीता में) लिख दिया हो, वह बात अलग है। इसीलिये तो हिन्दू-मुसलमान-ईसाई सभी अपने भगवानों को 'लार्ड राम' 'लार्ड क्राइस्ट' व 'पैगम्बर मोहम्मद' ही कहते हैं 'गोड-राम' 'गोड-क्राइस्ट' या 'गोड-मोहम्मद' नहीं कहते।

अतः ईश्वर का अवतार मानना व उसके नाम की मूर्तियां बनाकर पूजना अत्यन्त ना-समझ लोगों का काम है। हमारी इसी नादानी व नासमझी से आज भी हम कमजोर व दलित बने हुये हैं, अपने देश-संस्कृति-सभ्यता को नष्ट करते जा रहे हैं। अतः पाठकों से निवेदन है कि इस तथ्य पर अवश्य गौर करेंगे व अपनी कमजोरियों पर पर्दा डालने के बजाय उनको दूर करने का प्रयास करेंगे॥ ओ३म् शम्॥

डा० महेन्द्र स्वरूप
आम्सटर्डम

सुख क्या, कैसा तथा कहां है ?

—डा० रामावतार अग्रवाल

सुख के लिए संसार भटक रहा है। सुख के लिए मानव जप तप तथा कीर्तन पूजा पाठ तथा अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड करता है। सुख की खोज में कोई मन्दिर, मठ में बैठा है तो कोई मस्जिद, गिरिजाघर में भटक रहा है। कोई साम्प्रदायिक संवादों में संलिप्त है तो कोई धार्मिक प्रवचनों में रत, किन्तु सुख क्या कैसा और कहां हैं, यह कोई भी समझने का प्रयास नहीं कर रहा है? कोई मोक्षानन्द से बंधा है तो कोई स्वर्गीय सुखों के सपनो में खोया हुआ है। ये सभी सुखाभिलाषी सुख भोग के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं, परन्तु वास्तविक सुख इनसे दूर है। सुख काल्पनिक नहीं है, संसार में सुख ही सुख है, सुख के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं जगत में जो दुःख है वह स्वाभाविक नहीं, वरन मानव-कृत है।

वस्तुत: जगत में जितना भी क्रिया कलाप दृष्टिगोचर हो रहा है, वह सुख के लिये है। जीवन के चारों पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सुख की खोज में लगे हुए हैं। भोग व त्याग का आधार भी सुख प्राप्ति है, ज्ञान-विज्ञान कर्म और कर्तव्य भी सुख के पीछे भाग रहा है।

सृष्टि में सुख है, इसीलिए मनुष्य, जीवन-मरण के चक्र में घूम रहा है। किन्तु सुख क्या है यही इसके जीवन चक्र का उद्देश्य है।

ब्रह्माण्ड में ईश्वर, प्रकृति तथा जीव तीन अनादि तत्व है, परमात्मा पूर्ण चेतन, प्रकृति जड़ एव जीव जड़-चेतन का योग है। प्रकृति जड़ता के कारण अक्रिय या निष्क्रिय है। वह अकेली कुछ नहीं कर सकती। उसमें जो गति क्रिया, वेग या शक्ति हैं, अनन्त चेतना के कारण है। इसी के द्वारा वह लोक-लोकान्तरों के रूप में भ्रमणशील है। उसी के कारण प्राकृतिक ऋतु नियम अस्तित्व में हैं। उसी के द्वारा जीवनचक्र चल रहा है। सृष्टिचक्र के चलते रहने से ही अस्तित्व सुरक्षित है। विश्व में अस्तित्व है तो जीवन है, और जीवन है तो सुख है। इसलिए ससार में जीवन अथवा चेतना का नाम ही सुख है। प्रत्यक्षानुभूति के अनुसार जब जब चेतना का ह्रास होता है, तब तब मृत्यु निकट आती है परन्तु जैसे-जैसे चेतना की वृद्धि होती है वैसे-वैसे सुखानुभूति होती है।

वैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार मृत्यु का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। जैसे अमृत का अभाव मृत्यु हैं, वैसे ही सुख का अभाव दुख या दुःख का अभाव सुख है। जैसे-जैसे सुख का हनन होता है, वैसे-वैसे ही जीवन से दुख व्यक्त होता है। सुख दुःख एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु सुख सदैव रहने वाला तत्व है, दुख नहीं फलतः आत्मा जब-जब चेतना का स्पर्श करता है, तब तब वह सुखी रहता है, किन्तु जैसे ही वह उससे विमुख होता है, वैसे ही दुःख पाता है। दार्शनिक भाषा में आत्मा का परमात्मा से प्रतिकूलता का अर्थ है, जीव का भोग्य पदार्थों में आसक्त होना।

ब्रह्म सर्वव्याप्त है अत: उससे कोई भी पृथक नहीं हो सकता। आत्मा उससे अनुकूल और प्रतिकूल ही सकता है। उक्त प्राकृतिक सत्य को व्यक्त करते हुए वेद ने कहा है कि, उसकी छाया ही अनुकूलता अथवा अमृत या सुख है, तथा उसकी अछाया ही प्रतिकूलता अथवा मृत्यु या दुःख है :

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिष यस्य देवाः।
यस्य छायामृत यस्य मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

—ऋग्वेद १०। १२१। २, यजुर्वेद २५। १३

उससे विमुखता तथा सम्मुखता का सम्बन्ध जीव की मानसिक दशा पर निर्भर है, अत: उससे योग-वियोग मन. बुद्धि द्वारा होता है। मन जब-जब उससे स्पर्श करता है. तब-तब वह चेतना, स्फूर्ति, साहस, आशा-विश्वास व ऋतु के रूप में सुखानुभूति करता है। वह जब-जब उससे विमुख होकर पदार्थ में रत रहता है, तब-तब अचेतना, आलस्य, निराशा, अविश्वास, अकर्मण्यता तथा प्रमाद के रूप में दुःखानुभूति करता है। मन यदि एकाग्र है, तो जीव सुख-दुःख की अनुभूति नहीं कर सकता, क्योंकि उसका ज्ञान मानसिक तरंगों पर निर्भर है।

चेतना सर्वव्याप्त है, और वही सुख है। अत: संसार में सुख ही सुख है। सुख, आनन्द और अपार सौन्दर्य-बोध के भाव को व्यक्त करते हुए वेद कहता है कि यह जगत अत्यन्त सुन्दर, सुखद व रमणीय है, अत: आनन्द भोग के लिए संसार में रमण करना चाहिए।

इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा। यजु० ८।५१

जगत नरक द्वार नहीं है। वह स्वर्ग धाम है। वह अत्यन्त सुख कारक या इष्टदिष्ट है।

—यजु:० ११। ११

प्रकृति जड़ है। अत: उसमें सुख दुःख नहीं है। वह जीवन के अनुसार सुख-दुःख में सहायक है। जगत के समस्त भोग्य पदार्थ प्रकृति प्रदत्त होने के कारण सुख-दुःख के प्रति निरपेक्ष हैं। वे संवेग रहित होने से ही किसी के द्वारा कैसे भी उपभोग किए जा सकते हैं। आत्मा जड़-चेतन का योग होने से सुख: दुःख रहित हो सकता है। इसीलिए निद्रा या सुषुप्ति अवस्था में वह चेतन रहता है और न अचेतन। जब उसका चित्त सुख-दुख के दृश्यों या अभोग उपभोग की अवस्था में रमण करता है, तब वह उनकी अनुभूति करता है। इस प्रकार सुख का स्वरूप आत्मा के प्रचलन, प्रगमन, चाल चलन अथवा आचरण पर अवलम्बित है। आचरण का अर्थ है चलना या गति करना।

जगत में जीव तीन प्रकार के मार्गों पर प्रगमन करता है। मनुष्य जिन पथों से यात्रा आरम्भ करता है, वही उसके सुख दुःख के नियामक हैं। जैसे आदित्य, अपनी और अम्बर ऋतु नियमों के अनुकूल गति करके प्राकृतिक जगत में स्थिरता, निश्चितता व्यवस्था बनाए रखते हैं : वैसे ही यदि व्यक्ति देवों के अनुसार सदाचरण करता है, तो जीव जगत मे सुख, स्थिरता, स्थायित्व व शान्ति स्थित रहती है। वेदों में इन्हें इसलिए देव कहा गया है क्योंकि ये प्राकृतिक देवों की भांति ऋताचारी होते हैं। इसके अतिरिक्त ये इसलिए देव कहलाते हैं, क्योंकि ये अहर्निश अपनी वासनाओं का दमन करते हुए पूर्व देवों की भाति परहित में रत रहते हैं। इसके अनुसार परहित ही स्व हित है। अत: इनके आचरण से ही ससार में सुख-वृष्टि होती है। यह इतिहास का निर्विवाद सत्य है कि परहित किये बिना व्यक्ति तथा जगत सुखी नहीं हो सकता।

दूसरा पथ वह है, जिस पर मनुष्य स्वार्थ के अनुसार आचरण करता है। केवल स्वार्थपरता दुःख का कारण है। अत: ऐसे पुरुषो को दान का उपदेश इसलिए दिया जाता है जिससे सुख-दुःख के भावों में समन्वय बना रहे।

उक्त दो प्रकार के मानव संसार को सुख प्रदान करते हैं। तीसरे पथ पर चलने वाले वे व्यक्ति हैं जो स्वार्थसिद्धि के लिए अन्य के हितों का विनाश करते हैं। ये परजीवी होते हैं। अत: इनके द्वारा जगत में दुःख, पीड़ा, क्लेश, कष्ट तथा अशान्ति उत्पन्न होती है। ससार में सदा सुख शान्ति बनी रहे, इसलिये उपनिषदो में उपर्युक्त तीन प्रकार के मनुष्यों के लिए दमन या निग्रह दान और दया के मार्ग निर्मित किए गए हैं।

—बृहदारण्यकोपनिषद् ५। २। १,२,३

उपनिषदो के अनुसार देव, मानव व असुर तीनों प्रजापति के पुत्र हैं। अत: वे तीनों शाश्वत हैं। उपयुक्त मार्गों के कारण ही विश्व में तीन प्रकार के पुरुषों का विकास हुआ है। इन्हीं के आचरण से सुख-दुःख की धाराएं प्रस्फुटित होती हैं। उपनिषदों के अनुसार सुख की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है वह उस अवस्था में उदित होता है, जिसमें विभिन्न मानवीय प्रवृत्तियों में समन्वय उत्पन्न होता है। मानव-जीवन मे समन्वय तब तक उत्पन्न नहीं हो सकता, जब तक वह संयम, दान, दया द्वारा परोपकार में रत नहीं होता। इस प्रकार सुख कभी भी व्यक्तिगत भाव नहीं था और न है। सुख अन्यों या समाज के ऊपर निर्भर है। वह एक दूसरे के सहयोग से नियन्त्रित है।

(क्रमशः)

व्यक्तिगत—जीवन

भूदेव साहित्याचार्य (महोपदेशक)

इससे आपके काम पर क्या फर्क पड़ेगा, मैं आपका काम तो पूरी मेहनत से ईमानदारी पूर्वक करता हूं। फिर मैं चाहे अपने निजी जीवन में जो चाहूं खाऊं, पियूं और जो मेरी इच्छा हो मैं करूं। आपको मैं स्वयं चन्दा देता हूं, अपने घर के सब लोगों से दिलाता हूं इसके साथ ही मैं बाहर से दूसरे अपने अन्य लोगों से दान लाकर देता हूं। आप देख लीजिये आपकी आय पंजिका में सबसे अधिक राशि मेरी है। मैं समय भी आपके अन्य लोगों से अधिक देता हूं— वे कहना चाहते थे कि मैं जो भी कुछ करूं मुझे करने दीजिये, वह मेरा व्यक्तिगत मामला है प्राइवेट लाइफ।

इस समय प्राइवेट लाइफ का यह तकियाकलाम ऐसी आड़ है कि व्यक्ति सब कुछ घटिया से घटिया करके भी चाहता है कि वह मनमानी करता रहे और कोई उसे कुछ बोले नहीं। वह चाहे नंग धड़ंग घूमे या ऐसे कपड़े पहने जो उसे नंगों से भी अधिक नंगे रूप में प्रस्तुत करें, वह चाहे जैसे बाल कटाये रखे या बांधे, चाहे जो सिर और शरीर पर लीपे, चाहे जो खाये, चाहे जो पिये दूध, शराब या अन्य कोई और मादक नशा आदि, इसी तरह चाहे जो वह व्यक्तिगत का नाम लेकर करे। जिस थोड़े भी पढ़े-लिखे व्यक्ति को आप देखिये सबके मुंह पर यही तोता रटन्त सुनने को मिल जायेगी और अब तो अनेकों अल्प पढ़े और अनपढ़ भी ऐसी बात कहने लगे हैं।

संचार के साधन बढ़ रहे हैं। दुनियां छोटी हो रही है। व्यापार भी बढ़ रहे हैं। विज्ञापनों के तरीके भी विकसित हैं। विज्ञापन का काम है जहां आवश्यकता नहीं है, वहां आवश्यकता पैदा करना। इस समूचे परिवेश में आवश्यकता की लय में अनेकों अनावश्यक चीजें और अनावश्यक व्यवहार और कई खतरनाक व्यवहार मनुष्य के जीवन में धुंआधार तीव्रगति से प्रवेश कर रहे हैं, चूंकि अनावश्यक एवं खतरनाक व्यवहार प्रयोगों के शिकार व्यक्तिगत के हामी हैं अतः वे मनमानी जिस तीव्रगति से फैलाते जा रहे हैं, उनके चित्रों से भारत और भारत की जनता बिना मौत मरेगी। यह हमारा विश्वास है।

अब यह आश्चर्य नहीं है कि शादी के अवसर पर दूल्हे की घोड़ी के सामने नाचने की तैयारी के लिये दूल्हे की कुआरी नौजवान बहिनें शराब पियें और नशे में धुत्त होकर 'परसनल लाइफ' की आड़ में उन्मत्त होकर अशिक्षित बैंड वालों की मनचाही ताल पर उन्मत्त हालत में नाचें, बैंड वालों पर गिरें और दूसरे लोगों के ऊपर गिरें। यह भी आश्चर्य नहीं है कि जो शराब वे पी पायें सो पी पायें बाकी शेष बची को समूह के ऊपर सावन-भादों के मेह-सी फेंक दें। यह भी विशेष आश्चर्य के रूप में नहीं देखा जाना चाहिये, कि ऐसे विचित्र अवसरों पर भाई ही बहनों को जी भर कर शराब पिलाने का दायित्व न सम्भाल रहे हों, तमाशा चल रहा है उस नशे में लड़कियां धुत्त और उनके बॉय फ्रेण्ड भी धुत्त अभिजात्यता के नशे में जो फहड़तम हो सकता है उसका प्रदर्शन करें और किसी को कुछ बोलने भी न दें।

परसनल लाइफ या प्राइवेट लाइफके इस महाताण्डव के ये दृश्य ऐसे निराले हैं कि गरीब आदमी का जीवन ही दूभर हो गया है। बाबूजी की कार सब्जी वाले कुंजड़े की दुकान के आगे रुकेगी। हार्न बजायेंगे। कुंजड़ा उधर देखेगा। बाबू जी जरा-सा शीशा खोलेंगे और उसके हाथ में डिग्गी की चाबी थमा देंगे। वह कुंजड़ा भी थोड़ी-थोड़ी जो सब्जी उसके पास है भरकर उनकी डिग्गी में तोलने आदि के नाटक के बाद रख देगा।

यदि कुल सब्जी दस की होगी तो बाबू जी को पचास बतायेगा और बाबू जी कुछ भी बिना पूछे साठ उसके ऊपर फेंककर कार ले, फुर्र जायेंगे पूछने-पाछने का जरा भी कोई मतलब नहीं। जिस व्यक्ति को दस के पचास मांगने पर दस और बिना मांगें मिलें। उसे इससे कौड़ी-कौड़ी भाव करने वाले लोग भले लगेंगे। परिणाम यह होता है कि कुंजड़ा ऐसे ग्राहकों को ठेंगे पर रखता है। केवल कुंजड़ा ही नहीं और भी तमाम हैं, जो इन परसनल लाइफ वालों की कृपा से आम जनता के व्यक्ति को गधे-घोड़े से बढ़कर कुछ नहीं समझते। इन महाशयों के आप घर देखिये या दूसरे स्थान पर लगेगा जैसे कि नुमाइश ग्राउण्ड में नुमाइश सजी हो, समाज, सस्कार बड़े-बड़े इनके लिये सब बेकार हैं।

देश आज बहुत ही दयनीय स्थिति से गुजर रहा है। सब परसनल लाइफ की ताल बजाये जा रहे हैं। किसी भले आदमी का दिमाग काम नहीं कर रहा कि सांझे-समाज में रहकर कोई व्यक्ति कैसे प्राइवेट या निजी लाइफ जी सकता है? क्या हम सब ही मिल मिलाकर समाज नहीं बनते? क्या हम सबका सांझा-आचरण ही समाज का आचरण नहीं होता? क्या हमारी निजी आपाधापी, छल कपट, प्रपंच, ढोंग, पाखण्ड, आडम्बर आदि ही मिल-जुलकर हमारे समाज के आपाधापी आदि या संयम सदाचार, त्याग, श्रम, प्रेम, निष्ठा, मेल-जोल एवं भाईचारा आदि नहीं बनते?

अंग्रेज जानता था, यह देश उसका नहीं। अतः उसने इस देश को बरबाद होने की जो पट्टी पढ़ाई। यह देश उसी को अपनाता चला गया और खेद है कि आज भी उसी की नकल करता जा रहा है। उसने प्राइवेट लाइफ कहा कि हमने मान लिया हम फलदार पेड़ लगाते थे उसने सुझाव दिया यूकिलिप्टिस लगाओ हमने अच्छी भली खेती की जमीन तक में रोप दिये। क्या-क्या बतायें, कि उससे भारत की कितनी-कितनी जमीन कल्लर में बदल गई।

—आर्यसमाज, आनन्द विहार, दिल्ली

महाराष्ट्र सरकार का महत्वपूर्ण कदम

महाराष्ट्र की नई सरकार ने गोवंश-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने तथा राज्य के विधेयक व राज्यपाल के अध्यादेश पहले मराठी भाषा में जारी करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। हालांकि देखने में दोनों ही निर्णय अब तक चल रही प्रक्रिया का विस्तार लगते हैं, लेकिन वस्तु स्थिति यह है कि अपने आप में ये निर्णय नए सोच और नई भावभूमि से उपजे हैं। महाराष्ट्र की राजभाषा आज भी मराठी ही है, लेकिन राज्य सरकार के सभी विधेयक, अध्यादेश, अधिसूचनाएं पहले अंग्रेजी में जारी होते हैं और फिर उनका अधिकृत मराठी अनुवाद जारी होता है। केन्द्र में भी यही होता है। पहले अंग्रेजी में मूल बनता है और फिर राजभाषा हिन्दी में उसका अनुवाद किया जाता है। मानसिक गुलामी की भावना से उपजी यह स्थिति हास्यास्पद ही नहीं, दयनीय भी है। अंग्रेजी को इस रूप में बनाए रखने के लिए देने को कुछ भी तर्क दिए जा सकते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि जब तक हम अपनी भाषाओं को सक्षम नहीं समझेंगे, अंग्रेजी की अनावश्यक गुलामी से उबरने के संकल्प क्रियान्वित नहीं करेंगे, हमारी भाषाएं और हमारी अस्मिता दोनों दूसरे दर्जे के बने रहेंगे। हमने अपना संविधान भी पहले अंग्रेजी में बनाया था और फिर वर्षों बाद उसका अधिकृत हिन्दी अनुवाद तैयार हुआ था। लेकिन आज भी यदि न्यायालय में संविधान के किसी मुद्दे पर विवाद होता है तो अंग्रेजी रूप ही प्रामाणिक माना जाता है। इतना ही क्यों, हमने तो संविधान में अपने देश का नाम भी 'इंडिया दैट इज भारत' लिखा है। जहां अपना नाम समझने-समझाने के लिए भी अंग्रेजी का सहारा लेने की आवश्यकता महसूस होती हो, वहां यदि सरकारी काम-काज में अंग्रेजी को प्रमुखता मिलती है तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हां, दुख जरूर होना चाहिए इस स्थिति पर। और इस स्थिति को बदलने की इच्छा और संकल्प भी जरूरी है। महाराष्ट्र सरकार का नया निर्णय इसी जरूरत को पूरा करने की दिशा में एक कदम है। प्रश्न सिर्फ अपनी भाषा के प्रति प्रेम ही नहीं है, प्रश्न इस बात को समझने का है कि भाषा हमारी अस्मिता का प्रतीक होती है। इसलिए महाराष्ट्र सरकार के इस निर्णय का स्वागत होना चाहिए—और अनुकरण भी। मुख्यमन्त्री जोशी ने इस घोषणा के साथ-साथ यह भी कहा है कि राज्य सरकार बम्बई उच्च न्यायालय से भी आग्रह करेगी कि अदालत की कार्रवाई तथा निर्णय मराठी में हों। उम्मीद की जानी चाहिए कि न्यायालय भी अपनी भाषा के इस तर्क को स्वीकार करेगा और न्याय देने की प्रक्रिया को जनता की भाषा के साथ जोड़ा जाएगा।

जहां तक गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध का प्रश्न है, महाराष्ट्र सरकार की यह कार्रवाई संविधान के दिशा निर्देशक सिद्धान्तों के अनुरूप ही है। हालांकि १९७८ के पशु संरक्षण अधिनियम के अनुसार आज भी राज्य में गाय तथा बछिया-बछड़ों की हत्या पर प्रतिबंध है, लेकिन अब इस कानून को को और व्यापक तथा अधिक धारदार बनाया जा रहा है। पूर्ण गोवंश हत्या पर प्रतिबंध लगाने वाला महाराष्ट्र देश का नौवां राज्य होगा। यह सही है कि गाय के साथ हमारी धार्मिक भावनाएं जुड़ी हैं, लेकिन गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध के सांविधानिक दिशा निर्देशक सिद्धान्त और इस कार्रवाई को मात्र धार्मिक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। गोवंश का रिश्ता हमारे समाज की आर्थिक संरचना से भी है। गांवों में जीने वाला भारत गोवंश और गोधन के बिना अधूरा और पंगु हो जाएगा। अतः जरूरी है कि इस सन्दर्भ में संविधानिक दिशा निर्देशों का अधिक गहराई गंभीरता और सक्रियता से पालन हो। महाराष्ट्र सरकार का यह कदम इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

नवभारत टाइम्स १३ जून से साभार)

मन का सदुपयोग करें

हमारा वर्तमान कैसा हो, भावी जीवन कैसा हो, जिन्दगी का सफर कैसा हो यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम हमारे मन का उपयोग किस ढंग से करते हैं। मन हमें गुलाम बना सकता है या हम मन को अपना गुलाम बना सकते हैं। हम अपने मन को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करते हैं या स्वयं मन के उपकरण बन जाते हैं। मन हमारा कहना मानता है या हम मन के कहने में चलते हैं। सारी बात इस पर निर्भर होती है कि हम मन का सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग करते हैं। मन का सदुपयोग ध्यान बन जाता है और इसका दुरुपयोग पागलपन बन जाता है। मन का सदुपयोग हमें मंजिल तक पहुंचा देता है और मन का दुरुपयोग सही राह से भटका देता है।

हमें मन का उपयोग भी उसी प्रकार करना चाहिए जैसे हम शरीर के अंगो का करते हैं। अगर हम मन से कहें कि रुक जा तो वह रुक जाए। जैसे हम हाथ हिलाना चाहते हैं तो हाथ हिलता है और न हिलाना चाहें तो नहीं हिलता। अगर हम हाथ या पैर न हिलाना चाहें फिर भी हाथ या पैर, हिलने लगे तो यह बीमारी की स्थिति होगी। यदि शरीर में कोई भी गतिविधि हमारी इच्छा के बिना, हमारी चेष्टा के बिना होती है तो यह स्वस्थ्य, स्थिति नहीं, रुग्ण स्थिति होगी इसी प्रकार हमारा मन यदि हमारे कहने से न रुके, हमारी इच्छा के विपरीत गति करे, हमारी इच्छा के अनुसार न चले तो यह स्वस्थ मानसिकता वाली स्थिति नहीं, रुग्ण स्थिति होगी। इसी प्रकार हमारा मन यदि हमारे कहने से न रुके, हमारी इच्छा के विपरीत गति करे, हमारी इच्छा के अनुसार न चले तो स्वस्थ मानसिकता वाली स्थिति नहीं रुग्ण मानसिकता की स्थिति होगी। स्वस्थ मानसिक स्थिति बनी रहे इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि मन हमारे अनुशासन में रहे और हम मन का सदुपयोग करें।

वर्जित कार्य

अपनी दौलत, अपनी कमजोरी, अपने घर के दोष, मित्र के अवगुण, मन की योजना, दिया हुआ दान किया हुआ उपकार और अपने मन की बात अपने विश्वसनीय व्यक्ति को भी न बताएं क्योंकि कौन कब बदल जाए इसका कोई ठिकाना नहीं। कहा भी है हलक से निकला खलक में गया अतः जिस बात को गुप्त रखना चाहें उसे मन में ही रखना चाहिए। जब तक कोई योजना या कार्य सफल न हो जाए तब तक उसकी चर्चा किसी से न करें।

हिन्दी के नाम पर

हमारा मत है कि तीस सांसदों के विदेश भ्रमण से हिन्दी का उत्थान नहीं होने वाला है ।

कम से कम किसी भारतीय के गले यह तर्क उतारना मुश्किल है कि देश की तीस जानी-मानी हस्तियां इसलिए विदेश जाएं कि हिन्दी को उठाया जा सके। ये तीस लोग विदेशों में जाकर क्या करेंगे ? जाहिर है कि वे हमारे दूतावासों में जायेंगे जहां वे पड़ताल करेंगे कि क्या वहां हिन्दी को उसका उचित स्थान मिल रहा है या नहीं ? हमारे दूतावासों में हिन्दी को उसका उचित स्थान मिले, उसमें भला किसको आपत्ति होगी ? बल्कि वैसा हो तो खुशी ही होगी। गर्व का अनुभव भी हो सकता है। पर सवाल दूसरा है। हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है और यहां उसकी जो हालत है उसे देखते हुए हमारी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए ? विदेश जाने से पहले इन हस्तियों को देखना यह चाहिए कि क्या देश के भीतर सरकारी और व्यापारिक कामकाज में हिन्दी को उसका उचित स्थान मिल चुका है ? क्या केन्द्र सरकार का सारा कामकाज हिन्दी में होता है या वहां इसे सिर्फ अनुवाद की भाषा बना दिया गया है ? क्या संसद की कार्रवाई का रिकार्ड मुख्य रूप से हिन्दी में दर्ज होता है ? क्या बड़ी अदालतों ने अपने फैसले हिन्दी में सुनाने शुरू किए हैं और क्या वहां वकीलों की दलीलों की भाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठा मिली है ? क्या बैंकों में कामकाज हिन्दी में होना शुरू हुआ है या कि वहां हिन्दी को एक तख्ती भर मिली है जिस पर लिखा होता है 'यहां हिन्दी में भी चेक स्वीकार किए जाते हैं ?' क्या रेलवे आरक्षणों की भाषा हिन्दी हो चुकी है ? क्या सरकारी, अर्धसरकारी और गैर-सरकारी व्यापारिक प्रतिष्ठानों में हिन्दी को जगह मिल चुकी है ? क्या देश के तमाम स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है ? क्या देश में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी में हो चुका है ? इन तमाम सवालों का जवाब यकीनन एक ही है। नहीं। जब देश में ही हिन्दी की यह हालत है, जब बाहर जाकर हिन्दी को उठाने की मुहिम में जुटे महानुभावों के घरों में ही अभी हिन्दी को सम्मानजनक स्थान मिलना बाकी है तो हमारे दूतावासों में हिन्दी की चिन्ता अभी एजेन्डा में नीचे रखी जा सकती है। तीस-तीस लोगों के विदेश जाने की जरूरत ही क्या है ? अगर देश के राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री हीन भावना छोड़ कर प्रतिज्ञा कर लें कि वे देश और विदेश में अपना हर भाषण सिर्फ हिन्दी में देंगे, विदेशी मेहमानों और मेजबानों के साथ सिर्फ हिन्दी बोलेंगे तो फिर दूतावासों में हिन्दी अपने आप मान-सम्मान पा लेगी। उसके लिए तीस हस्तियों के विदेश भ्रमण से कुछ नहीं होने वाला।

(न०भा०टा० से साभार)

आर्य देश के पथ पर

अपनों को अपनाता चल,
औरों को समझाता चल,
आर्य पथिक तू आर्य देश के पथ पर कदम बढ़ाता चल ॥अपनों॥
आर्य देश एक देश वह होगा,
जिसमें कष्ट-कलेश न होगा,
सुख की वर्षा करके प्यारे, दुख को दूर भगाता चल ॥अपनों॥

नहीं छोड़ना है आशा को,
तुझे बढ़ाना निज भाषा को,
यदि प्रयास में मिलें तो प्यारे पग-पग ठोकर खाता चला ॥ अपनों ॥
पतित मिलें यदि कहीं पे तुझको,
दलित मिलें यदि कहीं पे तुझको,
हृदय खोलकर सब को प्यारे ! अपने गले लगाता चल ॥ अपनों ॥

नीच नहीं कोई दुनिया में,
घृणित नहीं कोई दुनिया में,
एक समान समझ कर सब को, अपना प्यार लुटाता चल ॥अपनों॥
भटक गए हैं कुछ बेचारे,
अटक गए मझधार में प्यारे,
दयानंद का मुक्ति-मार्ग, इन सब को दिखलाता चल॥अपनों॥

घृणा न हो तुझ को मन्दिर से,
द्वेष न हो तुझ को मस्जिद से,
वैदिक धर्म की दीक्षा देकर, सब को साथ लगाता चल ॥ अपनों ॥
दोनों को अपना कर चल तू,
धनिकों को फुसलाकर चल तू,
दोनों को राहत देने को, इनसे दान कराता चल ॥ अपनो ॥

ज्ञान का दीपक लेकर कर में,
अपढ़ों के जाकर घर-घर में,
शिक्षा की ज्योति को प्यारे, घर-घर में जलवाता चल ॥ अपनो ॥
इस प्रकार निज देश बसा ले,
हर प्रकार से इसे सजा ले,
'मानवता' को राज तिलक कर, शांति-सुधा बरसाता चल ॥
अपनो··· ·························बढ़ाता चल ॥

सुरेन्द्र नाथ आर्य मन्त्री
आर्य समाज सौरिख फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

शाकाहारी रक्त

यह प्रसन्नता की बात है कि विश्व के विकासशील देशों में "शाकाहार" का प्रचार-प्रसार बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है और वहां के लोग इस सच्चाई को समझने लगे है कि 'हम वही होते हैं जो हम अपने पेट में डालते हैं।" इस सन्दर्भ में मानव रक्त के गहन अध्ययन करने से रक्त विशेषज्ञों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि मांसाहारियों के रक्त में शाकाहारियों के रक्त की तुलना में मूत्राशय का स्तर (यूरिक लेवल) उच्चतर होता है। उनके खून में कोलेस्टेरोल और ट्रायग्लिसेराइड्स अधिक होने से ये दोनों कई स्नायविक गड़बड़ियों के कारण बनते हैं। ऐसे मांसाहारी खून के दुष्परिणाम धीरे-धीरे शरीर में बीजांकुर के रूप में उभर जाते हैं। इसीलिए जो व्यक्ति पूर्णतः शाकाहारी हैं, वे नैतिक दृष्टि से और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यही चाहेंगे कि उन्हें जब कभी बाहर से रक्त की आवश्यकता पड़े तो उन्हें शाकाहारी (वेजीटेरियन) रक्त ही दिया जाए। इसीलिए हम भारतीय रेडक्रास सोसायटी एवं अन्य ब्लड बैंकों के अधिकारियों से सविनय निवेदन करते हैं कि वे 'शाकाहारी व्यक्तियों' द्वारा दिए गए रक्त दान को 'शाकाहारी रक्त' वर्गीकृत बोतलों में रखे ताकि ऐसा रक्त आवश्यकता पड़ने पर शाकाहारी व्यक्तियों को उपलब्ध हो सके। इस सम्बन्ध में हम शाकाहारियों से यह अपील करेंगे कि वे जब कभी रक्त दान दें, वे इस प्रकार का प्रमाण-पत्र मांगे कि उनके द्वारा प्रदत्त रक्त की थैली पर 'शाकाहारी रक्त' (वेजीटेरियन ब्लड) स्पष्ट अक्षरों में अंकित कर दिया जाएगा ताकि उसे शाकाहारी व्यक्तियों को आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध कराया जा सके। —रामनिवास लखोटिया

सच्चाई से मुंह क्यों छिपाते हो ?

(पृष्ठ १ का शेष)

पतन के कारण ऐसे ही तत्व है जिनसे आ०स० को बचाना है पतन के कारण क्या गिनाओगे। स्व० स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का कार्यकाल एक स्वर्ण युग माना जाएगा। हैदराबाद में जो सभायें सम्मलित थी उनका रूझान क्या था यह समझते तो तथ्य का पता चल जायेगा। कि निर्वाचन की प्रक्रिया का रूप तथा सत्यता क्या थी।

राजनीति में जो पापड़ बेलने पड़ते हैं वह हरियाणा ने किए हैं चुनाव की प्रक्रिया कैसे होनी चाहिए इस पर पानी डाल दिया।

स्वामी विद्यानन्द जी पर आक्षेप नहीं करना है पर वह स्वयं आक्षेप करा रहे हैं। कहां सन्यासाश्रम पवित्र कर्म धर्म और वहगृहस्थ की सीमा में दूसरा सुश्री प्रज्ञा देवी के अनुसारभूमिका भास्कर में एक सौ-दो सौ पृष्ठ नकल करके अपनी पुस्तक लिख डाली। आर्यों का आदि देश में भी पं० भगवद्दत्त जी की पुस्तक की नकल ही है हम उन्हें बुरा नहीं कहते हैं। क्रमशः

आर्य समाज पिपलानी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बी०एच०ई०एल० पिपलानी का ३२वां वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम, चार दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

दिनांक २५ मई ९५ से २८ मई ९५ तक सम्पन्न चार दिवसीय आयोजन में आर्य समाज पिपलानी स्थित वेद मन्दिर में दिल्ली एवं हरिद्वार से पधारे ख्याति प्राप्त विद्वानों के प्रवचन रूपी आध्यात्मिक ज्ञान-गंगा की धारा अनवरत रूप से बहती रही।

गत २५ मई से प्रारम्भ इस समागम में प्रसिद्ध आर्य विद्वान पं० रामप्रसाद वेदालंकार-पं० सत्यपाल 'मधुर'-भजनोपदेशक एवं आर्य विदुषी सरोज (हरिद्वार) ने वेद, उपनिषद, दर्शन, रामायण एवं महाभारत पर अपने सारगर्भित एवं शोधपूर्ण प्रवचन प्रस्तुत किए।

शोक समाचार

आर्य समाज कोसी कलां के सदस्य श्री धर्मप्रकाश जी आर्य की धर्म पत्नी एवं श्री आनन्द प्रकाश जी आर्य की पूज्य माता जी का निधन दिनांक ५-६-९५ को हो गया।

उनके निधन पर एक शोक सभा आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुई उपस्थित लोगों ने दो मिनट मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शान्ति की, एवं शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

यज्ञ कर्म समुद्भव:

(यज्ञ मानवीय कर्मठता का प्रतीक)

विश्व गुरु तथा सोने की चिड़िया कहा जाने वाला हमारा प्यारा आर्यावर्त्त राष्ट्र जो आध्यात्मिक, भौतिक व वैज्ञानिक क्षेत्र में अग्रणी था, आज किस दारुण दशा में पहुंच गया है ? उस पर गम्भीर मनन तथा चिन्तन की आवश्यकता है ऐसा उन्नत राष्ट्र जिसमें सब प्रकार की सुख समृद्धि, ऐश्वर्य समता सद्भाव का प्रभुत्व था, आज जातिवाद, सम्प्रदायवाद, अज्ञानता, अविद्या, निर्धनता जैसे अभिशापों से ग्रस्त हो गया, ऐसा क्यों हुआ ?

इसका मूल कारण है कि हम ईश्वरीय वाणी वेद के बताये शाश्वत सन्मार्ग से भटक कर असत्य स्वार्थ पूर्ण तथा रुढ़िवादी निकृष्ट मार्गों पर चलने लगे। व्यक्तिगत स्वार्थों को राष्ट्र तथा धर्म से ऊपर मानने लगे। हम "त्येन त्यक्तेन भुंजीथा, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" के स्थान पर यावज्जीवेत सुख जीवेत, ऋण कृतवा घृतम् पिबेत के विनाशकारी मार्ग पर चलने लगे। (यज्ञ अग्निहोत्र) जैसे शाश्वत, सर्वहितकारी कर्म को त्याग कर एक व्यक्ति विशेष की पूजा करने लगे।

आज जब हम यज्ञ को त्याग रहे हैं तो विदेशी यज्ञों तथा अग्निहोत्रों पर अनेक परीक्षण कर करके उसको वैज्ञानिक रूप से परमाणु विकिरण तक को समाप्त करने वाला बता रहे हैं। वर्षा में कृषि उपज बढ़ाने में, पशुओं में पशु वृद्धि में, दुग्ध व घृत वृद्धि में यज्ञ का महत्व सिद्ध कर रहे हैं। इन्हीं सब बातों तथा तथ्यों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन ऋषियों के प्रयोगों के आधार पर सही सिद्ध करके विश्व के सामने रखा है। इसीलिए आर्यसमाज यज्ञ को सर्वाधिक महत्व देता है क्योंकि "स्वर्ग कामो यजेत (सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति के लिए यज्ञ करे)। यज्ञ सब दुःखों का विनाशकर्ता तथा सभी सुखों का देने वाला है।

निरन्तर यज्ञ करने से १—वनस्पतियों की विकृत प्रजाति का संशोधन, २—खेतों एवं फूल-पौधों से कीट निवारण ३—मानव तथा गायों के रोगों का विनाश, ४—वृष्टि ५—वायु मण्डल के शुद्धि करण तथा उर्वरकता ६—पर्यावरणीय अनुरक्षण, ७—जल का शुद्धि करण, ८ अनेक गम्भीर तथा असाध्य रोगों का उपचार, ९—मिट्टी में पोषक तत्वों की वृद्धि १०—गऊओं के दूध में वृद्धि आदि तथ्यों को विश्व के अनेक देशों में पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने प्रयोग करके सही सिद्ध किये हैं।

अतः यदि हम भारत के सच्चे नागरिक हैं, इस राष्ट्र को माता मानते हैं तो इसमें प्रादुर्भूत जमाने ईर्ष्या तथा जातिवाद मिटाने आध्यात्मिक भौतिक प्रगति करने तथा विश्व का शिरोमणि राष्ट्र बनाने तथा वेद का आदेश "कृण्वन्तोविश्वमार्यम्" का पालन करने

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७४/९५   सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५-६-९५)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३/९५
R. N. 626/57   Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 22,23-6-1995

यज्ञ कर्म समुद्भवः

(पृष्ठ ११ का शेष)

हेतु अपने प्राचीन ऋषियों की अनुसंधानित पद्धतियों से जो बड़े परिश्रम से महर्षि दयानन्द ने खोजकर हमारे सामने प्रस्तुत की है के आधार पर अधिकाधिक यज्ञों को आयोजन करें। इस संक्रमण काल में यज्ञ जैसे पुनीत तथा सर्वकल्याणकारी कार्य मे भाग लेकर विश्व की सुख-समृद्धि व शान्ति की कामना करे आर्यसमाज का पूर्ण विश्वास है कि यदि हम यज्ञ करें और करावें तो निश्चय ही संसार में सुख शान्ति व समृद्धि हो जाये, भगवान का आदेश है आयुर्यज्ञेन कल्पताम्। ॥ ओ३म् शान्ति ॥

आर्य समाज बागपत द्वारा प्रसारित

—मा० राकेश मोहन गर्ग

हम भारत की नारी हैं। ओ३म् फूल नहीं चिंगारी हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

स्वामी जीवनानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में

आर्य कन्या प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २६ जून से २ जुलाई १९९५ तक

स्थान—डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-१४ फरीदाबाद

शिविर संचालक : श्री रामनाथ सहगल व श्री आर्यवीर भल्ला

नियम व शर्तें—

१. कक्षा छठी व ऊपर की कन्याएं शिविर में प्रवेश की पात्र होंगी।
२. शिविर प्रवेश शुल्क ३०। रुपए प्रति शिविरार्थी होगा।
३. सफेद सलवार, सफेद कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद फ्लीट, कान तक की लाठी अनिवार्य वेशभूषा होगी।
४. कापी, पेन, टार्च, गिलास, थाली, चम्मच, कटोरी साथ लायें।
५. कोई कीमती आभूषण पहनकर न आयें।
६. पूरा समय शिविर में ही रहना होगा।
७. शिविरार्थी २६ जून १९९५ को प्रातः १० बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जाएं।

शिविर का उद्देश्य—

१. बालिकाओं को आत्म रक्षार्थ कराटे, योगासन, लाठी आदि का प्रशिक्षण देना।
२. बालिकाओं को देश के इतिहास, वैदिक संस्कृति का ज्ञान एवं व्यवहारिक चिन्तन देना।

अपील

सभी दानी महानुभावों से विनम्र प्रार्थना है कि कृपया शिविर के सुनिश्चित साफल्य हेतु अधिकाधिक खाद्य सामग्री अथवा आर्थिक रूप में सहयोग दें। क्रास्ड चैक/डी.डी. केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के नाम भेजें।

निवेदक :

अनिल आर्य	सत्यभूषण आर्य	जितेन्द्रसिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष	जिला अध्यक्ष	जिलामन्त्री
७२४३६०४	२८८८८२,२६२७२२	२८४६११.३४६१

मुख्य कार्यालय—आर्य समाज मन्दिर कबीरबस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-७   फोन : ७२११५३६

आर्य सभा मोरीशस का निर्वाचन

लीडर—श्री मोहनलाल मोहित जी, ओ. बी. ई. आर्य रत्न, आर्य भूषण; सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रतिनिधि। प्रधान—श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन जी, सी. एस. के.। उपप्रधान—श्री यशकरण मोहित जी; आर्य भूषण। श्री देवऋषि बुलेल जी, ओ. एम. के, आर्य भूषण। माननीय डा० रूद्रसेन नीऊर जी. एम. पी., पी पी. एस.। मन्त्री—श्री सत्यदेव प्रीतम जी, बी ए., ओ. एस. के.। उपमन्त्री—श्री मूलशंकर रामधनी जी, एम. बी. ई.। श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी, एम. एस: के.। कोषाध्यक्ष—श्री विद्यानन्द देवकरण जी। उप कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रमणि रामधनी जी, एम. बी. ई.। श्री सुधीर चन्द्र कन्हाई जी। पुस्तकाध्यक्ष—श्री डा० हरिदत्त भूरा जी; आर्य भूषण। सदस्य—डा० लक्ष्मी जोखन जी, श्री सन्तोष जगरनाथ जी, श्री जगदीश मकुनलाल जी, श्री शीतलप्रसाद प्रोवाग जी, श्री राजेन्द्र प्रसाद रामजी जी, श्री विनयदत्त रामकिसुन जी, श्री प्रेमहंस श्रीकिसुन जी।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिए—

सभा मन्त्री, आर्य सभा मोरिशस
१, महर्षि दयानन्द गली पोर्टलुई

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर

विगत वर्षों की श्लाघनीय उपलब्धियों के साथ "गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" का नवीन शिक्षा सत्र (१९९५-९६) ८ जुलाई १९९५ से प्रारम्भ होने जा रहा हैं। पुराकालीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देने वाली यह संस्था उत्तर प्रदेश शासन से प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत तथा अनुदानित है।

ज्ञातव्य है कि गुरुकुल की सभी परीक्षाएं राजकीय विभागों में नियुक्ति प्रशिक्षण एवं तकनीकी परीक्षाओं में प्रवेश हेतु मान्य हैं।

बच्चे की आन्तरिक प्रतिभा को उद्दीप्त करके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि, अनुराग, स्वाभिमान एवं स्वावलम्बन की भावना मुखरित करना गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की मौलिक विशेषता है।

प्रथम प्रवेश शुल्क ४००/- तथा प्रतिमास भोजन शुल्क २००/- है। घृत, दुग्ध, तेल, साबुन एवं पाठ्य पुस्तकों पर व्यय बच्चे की निजी आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार पृथक से देय होगा।

विद्युत चालित उपकरणों से युक्त गुरुकुल का एकांत, शांत, सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिए नितांत उपादेय है।

प्रवेशार्थी सद्यः सम्पर्क स्थापित करें।

आचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर शाहजहांपुर (उ०प्र०)
पिन—२४२३०७

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ... वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३४ अंक २० | दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ आषाढ़ शु० ११ सं० २०५२ ९ जोलाई १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तीस वर्षों में किये गये प्रमुख कार्यों का संक्षिप्त विवरण

आर्य जनता की जानकारी हेतु

सार्वदेशिक सभा की स्थापना काल से सन १९७० तक के अधिकारियों का कार्य नींव के पत्थर की तरह रहा जिससे देश और विदेश में आर्य समाज का विस्तार हुआ। १९७१ से आज १९९५ तक आर्यसमाज की जो विशेष उपलब्धियां रहीं समय-समय पर आर्य जनता के सामने उनका विवरण दिया जाता रहा है। विदेशों में प्रचार-प्रसार साहित्यिक उपलब्धि आर्य महा सम्मेलनो का आयोजन शुद्धि कार्य, अछूतोद्धार, भाषा गत आन्दोलन प्रमुख कार्य रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने जो कमजोर नस राष्ट्र की पकड़ी थी उसका उपचार अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में विधिवत अंकित किया है। हमारी मानसिकता है कि हम हमेशा ही निराशा के वातावरण में अपने को देखते हैं। आज विश्व हिन्दू परिषद वाले ओ३म् ध्वज लेकर चल रहे हैं विदेशों में आचार्य गोड़पाद ने करोड़ों विधर्मियों को राम और कृष्ण का भक्त बनाकर एक अनुपम कार्य किया है इसी प्रकार गायत्री परिवार वालों ने करोड़ों परिवारों में गायत्री यज्ञ कराकर सगठनात्मक एवं धार्मिक कृत्य किया है यह महर्षि की अद्भुत देन थी जिसे मानव ने स्वीकार किया। समय-समय पर जो घटनाक्रम सार्वदेशिक सभा द्वारा पिछले ३० वर्षों में किये जाते रहे हैं उनका संक्षिप्त सिंहावलोकन करें तो यह काल निःसन्देह अत्यन्त गौरवपूर्ण है उसे जानकर पढ़कर प्रत्येक मानव का मस्तक ऊंचा होगा। संक्षेपतः इसके भूतकाल पर दृष्टिपात करने के अतिरिक्त वर्तमान को भी देखें तो पता चलेगा कि आर्य समाज इस समय धरातल पर कहां खड़ा है? देखने पर निराशा के बादल छटेंगे और आशा का संचार होगा।

१—शताब्दी समारोह तथा अन्य सम्मेलन : दिल्ली में १९७५ में आर्य समाज स्थापना शताब्दी की धूम। देश-देशान्तर में उत्साह की लहर, अलवर आर्य महासम्मेलन, मारीशस तथा नैरोबी, लन्दन और डरबन आर्य महासम्मेलन। नेपाल, जर्मनी, अमेरिका तथा हालैण्ड और इंग्लैंड में सभा के प्रयत्नो से आर्य प्रतिनिधि सभाओं का गठन। १९९० में दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन। देश भक्त महाराणा प्रताप जयन्ती विशाल स्तर पर मनाना संविधान पर पुनर्दृष्टि विषय पर गोष्ठियों का आयोजन, भारतीय भाषा सम्मेलन देश के विभिन्न भागों मे सभा द्वारा आयोजित किये गये।

२—साहित्य प्रकाशन की ओर बढ़ते कदम। चारों वेदों का हिन्दी भाष्य कई संस्करणों में प्रकाशित, अंग्रेजी भाष्य का प्रकाशन, वेदार्थ परिजात के प्रति उत्तर में वेदार्थ कल्पद्रुम ग्रन्थ का प्रकाशन तथा महर्षि दयानन्दकृत अनेक दुर्लभ ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण सभा की पुस्तकों की वार्षिक बिक्री लगभग ५ लाख रुपये। सभा द्वारा १९७३ से लाखों रुपयों का साहित्य प्रकाशन कर जनता में साहित्य की पूर्ति, सभा द्वारा अभी हाल ही मे संस्कार चन्द्रिका, वैदिक सम्पत्ति, कुलियात आर्य मुसाफिर आदि कई दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन करके आर्य जनता की मांग को पूरा किया गया है।

३— गौशाला भूमि की प्राप्ति व निर्माण कार्य : दिल्ली में गाजीपुर के पास सभा के तत्कालीन प्रधान स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रयासों से भारत सरकार से गौशाला निर्माण के लिये १२.५ एकड़ भूमि सभा को प्राप्त हुई। अब वहां पर गौशाला स्थापित हो चुकी है। अब तक वहां पर २०० गायों के

(शेष पृष्ठ १५ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

भाषा, संस्कृति एवं देश के अस्तित्व को बचाने के लिए

पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा सामूहिक संघर्ष की अपील

सार्वदेशिक सभा द्वारा राष्ट्र रक्षा तथा समस्त प्रकार के प्रदूषणों को दूर करने हेतु अश्वमेघ यज्ञ के आयोजन की तैयारियां प्रारम्भ

प्राचीन काल में यह कहावत थी कि एक सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाला यजमान महाबली इन्द्र को भी हटाकर स्वयं स्वर्ग का राजा बन जाता था। यह तो उस समय का विश्वास था। वर्तमान समय में आर्य समाजियों ने संसार भर की समस्त आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के तत्वावधान में एक अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया है। इसके पीछे स्वर्ग में इन्द्र का पदच्युत करके वहां के राज्य पर अपना अधिकार करने की भावना नहीं है।

यह सत्य है कि "अश्व" का अर्थ घोड़ा भी होता है, लेकिन संस्कृत भाषा में एक ही शब्द के कई अर्थ होते हैं। 'अश्व' शब्द उनमें से एक है।

पौराणिक पडितों ने 'मेध' शब्द का अर्थ लिया है—बलि अर्थात पशु का रक्त निचोड़ना। इस सन्दर्भ में पीड़ित पशु घोड़ा होता था।

आर्य समाज इन शब्दो का भिन्न अर्थ लेता है। 'अश्व' का अर्थ राष्ट्र, समाज, राज्य भी होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में इन अर्थों की पुष्टि की है।

अब हम "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" द्वारा अश्वमेध यज्ञ करने की बात कहते हैं। तो उसका तात्पर्य है दो प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बलि देना अर्थात त्याग करना। वर्तमान संदर्भ में हमारे समक्ष सब प्रकार के प्रदूषणों को दूर करने का सामूहिक अभियान छेड़ना एक उद्देश्य है। दूसरा उद्देश्य है "राष्ट्र की रक्षा"। इस समय देश को बाहरी तथा आन्तरिक, दोनों प्रकार के शत्रुओं से जो खतरा पैदा हो गया है उससे उसकी (राष्ट्र की) रक्षा करना तथा समाज में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अस्थिरता को दूर करना।

स्वामी दयानन्द जी ने जिन आदर्शों से प्रेरित होकर आर्य समाज की स्थापना की उनमें से प्रमुख थे—इड़ा, सरस्वती, महि, अर्थात भाषा, संस्कृति और मातृभूमि की रक्षा करना।

अश्वमेध यज्ञ इसी उद्देश्य को सामने रखकर किया जायेगा और साथ-साथ समाज में जो चारित्रिक प्रदूषण फैल रहा है उसका भी निराकरण करना है।

लगभग सौ वर्ष से अधिक समय पहले भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (१८५७-५८) के सेनानी नाना साहब थे, जो बाजीराव पेशवा द्वितीय के दत्तक पुत्र थे, और उनके भाई बाला साहब, तात्याटोपे अजीमुल्लाह और कुंवर करन सिंह स्वामी दयानन्द सरस्वती से हरिद्वार स्थित नील पर्वत पर मिले थे। वे स्वामी जी से उस समय चल रहे संग्राम के परिणाम के बारे में जानना चाहते थे। स्वामी जी ने कहा था—

प्लासी की लड़ाई के सौ वर्ष बाद हम आजादी के लिए जन चेतना के लक्षण देख रहे हैं। यह संग्राम सौ वर्ष तक चलेगा। जीत तो निश्चित है लेकिन और कई बलिदानों की आवश्यकता है।

जिस संघर्ष को सार्वदेशिक सभा शीघ्र ही आरम्भ करने जा रही है, उसके विषय में भी हम यही आश्वासन देना चाहते हैं।

"जीत तो निश्चित है लेकिन उसके लिए और बलिदान देने पड़ेंगे।

सार्वदेशिक सभा सब आर्य समाजों से अपनी भाषा, संस्कृति एवं देश के अस्तित्व को बचाने के लिए सामूहिक संघर्ष के लिए तैयार रहने की अपील करती है। हमें अपने राष्ट्र, संस्कृति, भाषा और देश को विदेशी प्रभावों से सदा के लिए मुक्त करना है।

हम भारत के समस्त देश भक्त नागरिकों को आमन्त्रित करते हैं कि वे इस अश्वमेध यज्ञ को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

गक्खड़ हरियाणा उच्च शिक्षा समिति के अध्यक्ष बने

हरियाणा सरकार ने चट्टोपाध्याय समिति की रिपोर्ट पर विशेष रूप से गौर करने व उसके आधार पर शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था में व अध्यापकों की गैर-आर्थिक स्थितियों के बारे में सुझाव देनेके लिए एक उच्चस्तरीय समिति गठित की है।

उल्लेखनीयहै कि इस महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय समिति का अध्यक्ष बी० बी० गक्खड़ को बनाया गया है। श्री गक्खड़ हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं और उन्होने ही बोर्ड की परीक्षाओं में नकल रोकने सम्बन्धी अभियान चलाकर एक नयी दिशा दिखायी थी जिसके परिणाम अब सामने आने लगे हैं। इन दिनों श्री गक्खड़ डी०ए०वी० प्रबन्धक समिति के सयोजन-सचिव के पद पर कार्य कर रहे हैं। हरियाणा के सीनियर सेकेंडरी व प्राइमरी शिक्षा के निदेशक समिति के सदस्य होगे।

इस समिति के सचिव शिक्षा के उपनिदेशक (सेवानिवृत्त) डा० सरवण कुमार होंगे। आजकल वे भारत स्काउट्स व गाइड्स की हरियाणा इकाई राज्य के सचिव हैं।
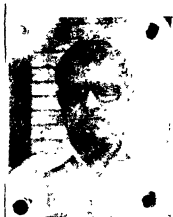
कुरुक्षेत्र के गीता निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसीपल मदनलाल शर्मा, हेमामाजरा के सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक ध्यानसिंह व हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष रामदत्त शर्मा इस समिति के सदस्य बनाये गये हैं।

यह महत्वपूर्ण उच्चस्तरीय समिति अध्यापकों को बेहतर ढंग से कर्तव्य निभाने, व्यावसायिक रूप में कुशल होने के साथ-साथ विशेष रूप से राज्य में लड़कियों की शिक्षा पर बल देने सम्बन्धी अपने सुझाव सरकार को देगी।

सार्वदेशिक के पाठकों से—

सार्वदेशिक पत्रिका के पाठकों की सूचनार्थ निवेदन है कि प्रेस में मशीन खराब हो जाने के कारण सार्वदेशिक पत्रिका का २ जुलाई का अंक प्रकाशित नहीं हो सका। अब २ जुलाई तथा ९ जुलाई का संयुक्तांक आपकी सेवा में प्रेषित है।—सम्पादक

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

—स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक,

बात सन् १९६१ के जनवरी मास की है जबकि मुझे अधिकतर महर्षि दयानन्द की शिक्षा स्थली मथुरा नगरी के विरजानन्द वैदिक साधन आश्रम में रहने का सुयोग प्राप्त हुआ। आश्रम से एक मील की दूरी पर मथुरा-वृन्दावन मार्ग पर भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति बिरला परिवार द्वारा निर्मित 'आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ' के संरक्षण मे एक विशाल गीता मन्दिर है। सांयकाल भ्रमणार्थ जब जाना होता तो इसी मन्दिर में लगभग एक घण्टा बिताया करता। इस मन्दिर का जो मुख्य भाग है और जिसमें योगीराज श्री कृष्णचन्द्र की मूर्ति स्थापना की गई है, उसके पीछे की ओर पांच महापुरुषों के चित्र बने हैं, जिनमें एक चित्र महर्षि दयानन्द का भी है। चित्र पर लिखा है—"जागृति और एकता" इसका तात्पर्य यह है कि आपने जागृति और एकता के लिए कार्य किया।

चित्र के साथ एकता शब्द को पढ़ते ही ऋषि के एकता के लिए किये गये कार्य मस्तिष्क में क्रमशः एक के बाद एक आने लगे और एक बार महर्षि के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास का वह प्रकरण नेत्रों के सम्मुख आकर स्थिर हो गया, जिसमे राष्ट्रीय गठन के लिए ग्राम सभाओं से लेकर महाराज सभा तक का वर्णन किया गया है। प्रकरण क्या है? किसी राष्ट्र की एकता को सुदृढ़ तथा चिरस्थाई बनाने का वास्तविक सूत्र है।

महर्षि लिखते हैं कि "एक-एक ग्राम में एक-एक प्रधान पुरुष को रखे, उन्हीं दस ग्रामों के ऊपर तीसरा उन्हीं सौ ग्रामों के ऊपर चौथा और उन्हीं सहस्र ग्रामों के ऊपर पांचवां पुरुष रखे।"

इस प्रकार के संगठनों को जिनके अध्यक्ष यह प्रधान पुरुष होवे, महर्षि ने "राज सभा" की संज्ञा प्रदान की है। अर्थात् यह ग्राम सभा वह हुई, जो ग्राम पर राज्य करे, ग्राम का शासन चलाये। किन्तु इन ग्राम-सभाओं की सत्ता को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नहीं रखा अपितु दस ग्रामो के ऊपर भी एक प्रधान पुरुष का विधान किया जो उन दशों ग्रामों के प्रतिनिधियों की बनी "राज सभा" का अध्यक्ष होगा। उससे आगे इसी प्रकार बीस ग्रामों की, सौ ग्रामों की तथा सहस्त्र दस सहस्त्र लक्ष ग्रामों आदि की राज सभाओं का भी वर्णन किया है तथा सबसे अन्त में वर्णन किया है महाराज सभा का।

राष्ट्र की छोटी से छोटी इकाई अर्थात् प्रत्येक ग्राम से लेकर ऊपर तक सब को एक सूत्र में बांधने का इतना सुन्दर विधान है कि जिसमें प्रत्येक ग्राम को अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार स्व-शासन चलाते हुए भी ऊपर के संगठनों के अन्तर्गत रहने से राष्ट्रीय हित मे किसी भी प्रकार की बाधा पहुंचने की सम्भावना नहीं रहती।

इन सारी राजसभाओं की जो शिरोमणि अर्थात् सब से ऊपर की सभा होगी, वह वही होगी, जिसे हम वर्तमान में "लोक-सभा" कहते हैं और उसका प्रधान पुरुष होगा 'लोक सभाध्यक्ष' ही महर्षि ने विचार किया हो सो बात भी नहीं वह तो आगे तक गये और इससे आगे उन्होने जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर आये है, "महाराज सभा" का भी निर्देश किया है, जिसे आज कल की परिभाषा में 'राज्य सभा' कहा जाता है और जिसका कार्य लोक सभा द्वारा पारित विधेयकों पर विचार करना होता है। इस 'महाराज सभा' में विचार के पश्चात् ही विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए जाते हैं। इस सभा का अध्यक्ष उपराष्ट्रपति होता है।

अन्तिम राज्य सभा अर्थात् लोक सभा तथा महाराज सभा तो वर्तमान काल में भी है, जैसा कि महर्षि मनु और महर्षि दयानन्द ने विचार प्रस्तुत किये हैं किन्तु इनसे नीचे की स्थिति सर्वथा विपरीत है। आज कल राष्ट्र की सार्वभौम सत्ता के पश्चात् जो इकाईयां हैं, उन्हें राज्य नाम दिया गया है, जिसका परिणाम हमारे सामने राज्य स्तर पर होने वाले झगड़ों के रूप में आने लगा है और ये झगड़े हैं अधिकतर सीमा सम्बन्धी बिहार और बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश तथा मैसूर और महाराष्ट्र आदि के। पंजाब को पंजाबी भाषी प्रदेश अथवा खालिस्तान अथवा खालिस्तान बनाने के लिये तथा बंगाल में गोरखालैंड बनाने के आन्दोलन भी इसी के परिणाम-स्वरूप हुए हैं। कारण पर यदि पक्षरहित पूर्वक निष्पक्षरूपेण विचार करें तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण दिन था, जब भारत के प्रांतों को राज्य तथा भारत को भारतीय संघ नाम दिया गया।

उपरोक्त नामकरण यह स्पष्ट करने को पर्याप्त है कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राज्यों का मिलकर बनाया हुआ संगठन है जिसे 'संयुक्त राज्य' भी कहा जा सकता है। दुर्भाग्य से जिन लोगों के हाथों में राष्ट्र की बाग-डोर है, उन्होंने इस विषय में अमेरिका का अन्धानुकरण किया है। अन्धानुकरण हम इसलिये कहते हैं कि यदि थोड़ा भी बुद्धि का उपयोग किया जाता तो बात बड़ी स्पष्ट है कि अमेरिका कोई स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं अपितु अनेक राष्ट्रों का समूह है इसलिये उसका नाम 'अमेरिकन-यूनियन' ठीक ही है। भारत की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। भारत अनेक राष्ट्रों का समूह नहीं अपितु एक राष्ट्र है। उत्तर प्रदेश, बिहार आदि उसके प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से बनाये गये प्रांत है, राज्य नहीं जब राज्य नाम दिये अधिक समय नहीं व्यतीत हुआ था तभी सीमा सम्बन्धी झगड़े आरम्भ हो गये थे। जिन प्रांतों में यह झगड़े हो रहे हैं उनमें से प्रत्येक प्रांत की जनता दूसरे प्रांत को विदेश तथा वहां के निवासियों को विदेशी समझने लगी है। अधिक समय बीतने पर जो परिणाम हो सकते हैं उपर्युक्त झगड़ों को दृष्टिगत रखते हुए उनका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह असम्भव नहीं कि कुछ समय पश्चात् यह प्रश्न उग्र हो उठे कि प्रत्येक राज्य की स्वतन्त्र सत्ता है, परिस्थितियों वश उस समय एक संघ के रूप मे एकत्र हुए थे किन्तु अब पृथक होना चाहते हैं। पहले तो सीमायी झगड़े थे और अब विघटन की प्रवृत्ति प्रबल हो चुकी है, जिसका प्रमाण खालिस्तान की मांग और उसके लिए विद्रोह है।

इस प्रांतीयता के नाम पर होने वाले झगड़ों तथा उनसे होने वाली भयंकर हानियों से बचाने व भावी विघटन की विनाशकारी प्रवृत्ति को रोकने का एक मात्र उपाय है स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पथ का अनुसरण और वह यह कि प्रान्तों को जिन्हें राज्य का नाम दे रखा है समाप्त कर दिया जाये। इससे प्रथम लाभ तो यह होगा, कि प्रत्येक प्रांतीय सरकार पर होने वाला व्यय बच जायेगा तथा दूसरा यह कि प्रांतीयता की भावना मिटकर केवल मात्र एक भावना राष्ट्रीयता की रह जायेगी।

इस समय कोई बिहारी है तो कोई बंगाली, कोई पंजाबी है तो कोई मद्रासी और कोई महाराष्ट्रीय है तो कोई गुजराती। भारतीय कोई व्यक्ति, कोई नहीं होता। इन प्रान्तो के समाप्त होने पर न कोई बिहारी होगा, न बंगाली, न पंजाबी होगा, न मद्रासी, न महाराष्ट्रीय होगा न गुजराती अपितु केवल भारतीय होंगे। यही संघीयता का वास्तविक रूप होगा, संघ नाम देने से नहीं। नाम के मूल में तो विघटन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने वाला मन्त्र निहित है

आवश्यकता इस बात की है कि भारत का पुनर्गठन किया जाये जिसमें और उनके निचले स्तर के गठन को तो छुआ न जाये अर्थात् उन्हें तो ज्यों का त्यों रखा जाये। जिलों से ऊपर प्रति दस जिलों को मिलाकर एक क्षेत्र या कमिश्नरी बनाई जाये, जिसका अधिकारी क्षेत्राधिकारी या कमिश्नर रहे सारे भारत को पांच भागों में व्यवस्था की दृष्टि से विभक्त किया जाये और इन भागों के नाम भाषा तथा जातीयता नहीं, अपितु दिशाओं के नाम पर उत्तरी भारत, दक्षिण भारत, पूर्वी भारत, पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत रखे जाएं। इनमें से प्रत्येक भाग का अधिकारी प्रधान क्षेत्राधिकारी अथवा चीफ कमिश्नर हो। इन सभी चीफ कमिश्नरों का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय सरकार से हो। इस प्रकार सारा राष्ट्र व्यवस्थित रूपेण एक सूत्र में एक ही राष्ट्रीय सरकार द्वारा शासित होगा।

२. दूसरा सूत्र राष्ट्रीय एकता के लिये ऋषि दयानन्द से जो हमे प्राप्त हुआ है, वह है भाषायी। भारत माता के उस सच्चे सपूत ने एक शताब्दी पूर्व ही यह जान लिया था कि किसी राष्ट्र की एकता परमावश्यक है। यही कारण है कि जन्म के गुजराती तथा संस्कृत के महान् पण्डित होते हुए भी उन्होंने अपने भावों का माध्यम हिन्दी भाषा को बनाया तथा अपने समस्त ग्रन्थ भी वेदाङ्ग प्रकाश (संस्कृत व्याकरण) को छोड़कर देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा में ही लिखे। यदि वह चाहते तो भाषण के माध्यम स्वरूप संस्कृत का प्रयोग कर सकते थे

(शेष पृष्ठ १३ पर)

विदेश समाचार

होलेंड में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड द्वारा आमन्त्रित भारतीय विद्वान डा० धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री द्वारा किये जा रहे प्रचार का क्रमशः (भाग-२) विवरण प्रस्तुत है—श्री सत्य सनातन वैदिकप्रकाश आर्यसमाज अमस्टरडम द्वारा आयोजित द्विदिवसीय (१३-१४ मई) कार्यक्रम में प्रथम दिवस समाज के प्रधान एवं मुख्य पं० एस० सुभधन जी नें यज्ञ कराया व अनेक महानुभावों ने अपनें विचार प्रकट किये। इस कार्यक्रम का संचालन पं० ओमप्रकाश सामवेदी कर रहे थे। डा० धर्मेन्द्र जी नें कर्म पर अपना व्याख्यान देते हुये 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि०' इस मन्त्र की सुन्दर तथा विद्वत्तापूर्ण व्याख्या की, और बताया कि आज मनुष्य को अपने कर्म वैदिक मर्यादानुसार करने की आवश्यकता है, आदि। इसी तरह १४ मई को भी वेद-विषयक प्रवचन में आर्य समाज की मान्यताओं को विश्व-कल्याण में महत्वपूर्ण बताया और लोगों से आर्यसमाज की प्रगति हेतु अपील की। तत्पश्चात् १६ मई को अमस्टरडम गांधी सेन्टर में 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया०' इत्यादि मन्त्र को प्रस्तुत कर ईश्वर जीव की स्थिति को स्पष्ट किया।

१७ मई को एक प्रसिद्ध भारतीय नागरिक श्री महेन्द्रसिंह दहिया ने अपने व्यय से रेडियो पर प्रवचन कराया जो कि अमस्टरडम से फोन द्वारा रोटरडम के रेडियो कृष्णा पर ईश्वर-प्रार्थना विषयक १० मिनट का प्रभावशाली उपदेश था, जिसे सभी ने सराहा।

१८ मई को भी अमस्टडरम के रेडियो पर ईशावास्यमिदं०इत्यादि वेदमन्त्रों का सारगर्भित उपदेश पं० सुभधन जी के प्रयास से सफलता पूर्वक कराया गया।

—१९ मई को अमस्टरडम के कृष्णमन्दिर में श्रीकृष्ण के जीवन पर ४० मिनट तक भाषण किया तथा उन पर पौराणिकों द्वारा लगाये जाने वाले समस्त गन्दे आरोपों को निराधार सिद्ध करते हुये कृष्ण के सच्चे अनुयायी बनने को कहा।

२० मई को प्रातः देनहाग नगर के रेडियो श्रीनगर पर पं० जगदीश विश्वम्भर के सत्प्रयास से पं० ओमप्रकाश सामवेदी तथा धर्मेन्द्र शास्त्री इन दोनों के उद्बोधनों को प्रसारित किया गया। ४५ मिनट के इस कार्यक्रम में वैदिक संस्कृति का मानव मात्र को सन्देश दिया जिसकी स्टुडियो में फोन करके उसी समय लोगों ने काफी सराहना भी की।

उसी दिन सायंकाल लेवार्डन में श्रीमतिरामस्वरूप के यहां यज्ञानुष्ठान हुआ, जिसकी तैयारी पं०विजयप्रकाश शास्त्री ने करायी थी व यज्ञ में ५० के करीब सज्जनों ने आहुतियां डालीं। यहां १ घण्टे के प्रवचन में पारिवारिक वैदिक सद्‌शिक्षाओं भरा महत्वपूर्ण उपदेश हुआ। गृह दम्पति ने श्रद्धानिष्ठा सहित अभ्यागतों का भोजनादि द्वारा उत्तमरूप से सत्कार किया।

२१ मई रविवार प्रातः श्रीमान महेन्द्रसिंह दहिया के गृह पर उनकी भारतीय हिन्दू समाज का सत्सग लगा जहां भारतीय परिवारों ने उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम के उपरान्त स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया तथा सायंकाल पं० ओमप्रकाश सामवेदी डा० धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री सहित दहिया जी कृष्णमन्दिर के सत्संग में पहुंचे वहां रेडियो के संचालक श्री विश्वदास जी से गीताविषयक वार्तालाप हुआ और रेडियो के लिये गोष्ठी हेतु परामर्श किया।

२२ मई को पं० ओमप्रकाश सामवेदी द्वारा रोटरडम के रेडियो मिलन पर १० मिनट का प्रेरणापूर्ण प्रवचन हुआ जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की वैदिक भावना से जन-जन को अवगत कराया।

२३ मई को पं० जीवन गणेश ने डा० धर्मेन्द्र जी को भ्रमण होलेंडदर्शन कराया।

२४ मई को देवीप्रसाद भगवानदत्त के गृह पर डा० धर्मेन्द्र जी का भोजनादि था।

२५ मई को श्री महावीर जी के गृह पर डा० धर्मेन्द्र जी का भोजनादि था।

२६ मई को देवीप्रसाद के घर कुछ लोगों का सम्मेलन जिसमें डा० नन्दकिसुन माड़े, श्रीमति शकुन्तला, श्री तुकुन व अन्य महानुभाव डा० जी से भेंट किये थे।

२७ मई को पूर्ण अवकाश रहा।

२८ मई को प्रातः १२ बजे प्रभाकर आर्यसमाज मन्दिर लगा जिसमें धर्मेन्द्रकुमार जी का निरन्तर १ घण्टे तक आध्यात्मिक व सैद्धान्तिक प्रवचन हुआ। यहीं से श्री मोहनधर्म लेन की गाड़ी में पं० ओमप्रकाश सामवेदी के साथ एक भारतीय हिन्दू समाज के पारिवारिक-सत्संग में पहुंचे। यहाँ पर भारतीयता की पहचान व संस्कृत-सुरक्षा की आवश्यकता पर भारतीयों को प्रेरणा दी।

२९-३० को अवकाश व विश्राम ही रहा। संस्कृत की परीक्षा हेतु योजना की।

३१ मई को पं० देवनारायण सुभधन के घर यज्ञ-प्रवचनादि का मुख्यायोजन था जिसका प्रचार रेडियो द्वारा पहले से ही किया जा रहा था। मुख्य वक्ताओं में प्रथम श्री जयनयराम जी व विश्वेश्वर जी ने भजन सुनाये व देवानन्द-विशुन भगेलू बन्धुओं ने भी सुभधन जी के पोतों के आशीर्वाद में भजन गाया व दो शब्दों में अपनी भावना व्यक्त की। तदनन्तर पं० ओमप्रकाश सामवेदी ने आर्य जगत के दिवंगत नेता स्व० दरबारी लाल जी का परिचय देते हुये डी०ए०वी० के कार्यों में हुई प्रगति का उल्लेख किया तथा श्रद्धांजलिस्वरूप होलैंड के आर्यों से निवेदन किया कि हमें भी उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज को सार्वभौमिक सार्वजनिक बनाने हेतु वैदिक शिक्षा प्रसार में जुटना चाहिये। डा० धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री ने बड़े जोरदार शब्दों में अपना भाषण आरम्भ करते हुये क्षुद्र-विचारों का त्याग कर उदारचरित बनने का आह्वान किया व "यस्तु सर्वाणि भूतादि०" आदि मन्त्रों का अर्थ करते हुए हिन्दुओं में समता एकता आत्मभाव की दृष्टि लाने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के अन्त मे २ मिनट का मौन रखकर दिवंगत आर्य नेता दरबारीलाल जी की आत्मा को सद्‌गति-शान्ति की परमात्मा से याचना की। शान्तिपाठ द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ। सबके लिये स्वादिष्ट भोजन की भी व्यवस्था थी। शेष विवरण अगले पत्र में—॥

डा० महेन्द्र स्वरूप, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैंड

छात्र वृत्तियां

सन जुलाई १९९५ से अप्रैल १९९६

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नए सत्र के लिए गुरुकुलों स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसधान संस्थानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र-छात्राओं और स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियों को छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरु हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मंगवाने के लिए एक टिकट लगा लिफाफा अपना पता लिखकर ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम निम्नलिखित पते पर भेजें।

योगेन्द्रनाथ उप्पल आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट सी १२
अमर कालोनी, लाजपत नगर
नई दिल्ली-२४

सम्पादकीय—

आज विश्व हिन्दू परिषद् से प्रतिबन्ध हटा

जब विश्व हिन्दू परिषद् पर प्रतिबन्ध लगा था तब मैंने सम्पादकीय में लिखा था कि इस प्रकार के दो-चार मूर्खता पूर्ण कार्य और कांग्रेस या अन्य राजनीतिक पार्टियां कर दें तो वह पार्टियां स्वयमेव विनाश को प्राप्त होंगी और विश्व हिन्दू परिषद एक सशक्त संस्था बनकर खड़ी हो जायेगी।

कुछ समय के बाद आज विश्व हिन्दू परिषद परसे प्रतिबन्ध हटा लिया गया। केन्द्रीय सरकार के निर्णय को "गैर कानूनी गतिविधियां (निवारक) न्यायाधिकरण ने अनुचित और आधार हीन बताकर उसके अस्तित्व की रक्षा की है।

सत्तारूढ़ दल ने अपने संकीर्ण राजनीतिक अल्पसंख्यक समुदाय की तुष्टीकरण नीति अपना कर स्वार्थों की रक्षा के निमित्त प्रतिबन्ध लगाया था। बहुमत होना अपराध और अल्पसंख्यक होकर रक्षा करना यह एक व्यवस्था बन गई है जिस व्यवस्था को लेकर केन्द्रीय सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया था वह आपत्तियां कानून के समक्ष-दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सकी।

सिद्ध यह करना था कि विश्व हिन्दू परिषद समाज में तनाव व हिंसा फैलाकर वातावरण दूषित बना सकती है। यह बात सिद्ध करना कठिन हुआ परिणामतः दुर्भावना से ग्रसित पार्टियों की मनोभावनाओं का दूषित परिणाम ही था। इस नीचे स्तर पर गिरकर चलने का परिणाम क्या होगा। यही न कि हिन्दू बहुसंख्या की शक्ति हिन्दू विचारधारा के साथ जुड़ेगी और जो इसकी संहारक-विनाशक शक्ति बनेगा उसका विरोध हिन्दू जनमानस करेगा। परिणामतः विश्वहिन्दू परिषद एक राष्ट्र में वैचारिक दृष्टिसे एक शक्ति सम्पन्न संस्था के रूपमें उभरेगा। हिन्दू मनोवृत्ति पर दूषित दुर्भावना की अभिव्यक्ति तथा स्वतन्त्रता का हनन किया जायेगा। तब श्रेष्ठ सुन्दर परम्परा की स्थापना कैसे को जा सकेगी।

भूल-मूल में ही है -

हिन्दू मानसिकता के विपरीत जितनी भी पार्टियां हैं उनके मूल में विगत इतिहास की परम्पराओं से हटकर नई संरचना करेगी जनता उनसे दूर हटेगी और जो बीती परम्पराओं से जुड़कर चलेगा। भारतीय जनमानस उससे बन्धेगा।

महात्मा गांधी तक देश की मानसिकता धार्मिक आध्यात्मिक ऐतिहासिक विशिष्ट परम्पराओं से जुड़ी थी हर जीवनीय गतिविधियों में एक जीवन पद्धति थी। ईशावस्यमिद से ईश्वर अल्ला तेरे नाम तक एक धार्मिक पद्धति थी। इससे हिन्दू सिख-मुसलमान, ईसाई सभी वर्ग अपनी परम्पराओं से जुड़े रहें। आजादी के बाद हिन्दू पर धार्मिक होना और आध्यात्मिक जीवन दर्शन पाना कुफ्र माना गया। परिणामतः हिन्दू इससे खिन्न होकर कांग्रेस की राजनीति से दूर चला गया।

धार्मिक परम्पराओं को मानना व मनवाना उन पर चलने की प्रेरणा देना हिन्दू की मानसिकता से जुड़कर चलना सिखाया हमारे ऋषियों और महर्षियों ने परिणाम क्या हुआ। जब-जब हमने भूलवश अपनी मान्यताओं से टूटे. और परकीयों से दोस्ती की। परिणाम उल्टा ही हुआ।

कांग्रेस और विश्व हिन्दू परिषद की भावना में यही अन्तर आया आजादी प्राप्त करने तक हमारी स्थिति अपनी मर्यादाओं परम्पराओं से जुड़ी रही स्वतन्त्रता प्राप्ति पर हम धर्म निरपेक्ष हो गये। जनता कांग्रेस से कटी और विश्व हिन्दू परिषद के साथ जुड़ी।

वर्तमान जीवन दर्शन इसी मानसिकता से ग्रसित है आज हिन्दू जन-मानस कांग्रेस से दूर होता जा रहा है क्योंकि कांग्रेस जिसे हिन्दू ने अपने रक्त से सींचा था। अपनी भावनाओं को ठेस लगता देखकर उससे दूर हो गया और कांग्रेस का दिवाला पिट गया। प्रत्येक प्रान्त में हिन्दू कांग्रेस से दूर हो गया है और विश्व हिन्दू परिषद चाहे उसने कुछ भी नहीं किया परन्तु हिन्दू मानसिकता का केवल नारा ही देता रहा। आज हिन्दू जनमानस उसके पीछे है।

बाबरी मस्जिद रामजन्मभूमि काशी विश्वनाथ कृष्णजन्म भूमि ऐसे लुभावने नारे हैं जिनसे हिन्दू मानसिकता पर करारी चोट पड़ी है वह बरबाद हुआ पर विश्व हिन्दू परिषद के साथ जुड़ा। आज अपनी परम्पराओं से हटकर चलने वाली कांग्रेस जमीन पर आ गई और जो जमीन पर भी नहीं थी वही आकाश पर फैल रही है। इतिहास की भूल से सबक सीखना चाहिये।

महाराणा प्रताप की भूमि में अकबर के गीत कौन सुनेगा, कृष्ण की भूमि में कंस की कौन सुनेगा। रामजन्मभूमि में मुगलिया सल्तनत को कौन पूछता है। हमारी मानसिकता इतिहास से सीख न लेकर नीचे गिरी हमारा पतन हुआ। विश्व हिन्दू परिषद ने समय का लाभ उठाया और ऐसा लुभावना नारा दिया, जिससे हिन्दू

(शेष पृष्ठ ९ पर)

अद्भुत प्रतिभा के धनी आचार्य राम शास्त्री का देहावसान

प्रतिभा किसी से छिपी नहीं रहती है जैसे बाढ़ के पानी को बान्ध नहीं रोक पाता है उसीप्रकार विद्वान् विचारक प्रतिभावान् व्यक्ति के व्यक्तित्वके मार्ग को भी कोई रोक नहीं पाता है। संसार में एक से एक विलक्षण व्यक्ति देखने और सुनने को मिलते हैं। उनका देहावसान १५-६-९५ को १०५ वर्ष में आयु होकर हुआ।

महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जो महाराज प्रज्ञाचक्षु थे उनकी प्रतिभा काविद्वान् राजा महाराजाओं ने भी उस प्रज्ञाचक्षु की प्रतिभा विद्वत्ता का उनकी सूझबूझ का लोहा माना था-महर्षि दयानन्द जैसा विलक्षण विद्वान् संसार को देकर कहा था दयानन्द मैंने तुम्हें अन्तर चक्षुओं से देखा है अब संसार में अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर वेदों का प्रकाश फैलाओ/अद्भुत चमत्कार करने वाले यह वाक्य थे उस प्रज्ञाचक्षु महापुरुष के प्रतिभाओं की कमी नहीं ढूढो तो हजार मिलते हैं।

आज एक ऐसे विशिष्ट विद्वान के महाप्रयाण की बात सुनी आत्मा को कष्ट हुआ. उस विद्वान के नाम से तो परिचित था परन्तु दर्शन शरीर के तो नहीं किये थे उनकी निखरी प्रतिभा पूर्ण. संस्कृत वाङ्मय ग्रन्थ को देखकर ही जान सका था कि यह कोई महान् व्यक्ति है जिसका गहन अध्ययन चिन्तनमनन है।

संस्कृत साहित्य पर अच्छा अधिकार था तो शरीर विज्ञान की चिकित्सा पर (आयुर्वेद) भी आपका ज्ञानपूर्ण अधिकार था।

एक बार मेरे परिचित व्यक्ति की धर्म पत्नि लन्दन से आई थी और उन्होंने मेरे से संस्कृत ज्ञान की पोषिका कोई सरल संस्कृत ज्ञान हेतु पुस्तक प्राप्ति की जिज्ञासा रखी। मैंने वह पुस्तक मधुर प्रकाशन के मालिक प० राजपाल शास्त्री के यहां देखी थी उनके पास गया और वह दुर्लभ ग्रन्थ उनसे लेकर उन महिला को दिया। ग्रन्थ को पढ़ने के बाद जो प्रशंसा उन्होंने की वह ग्राह्य थी।

मैं भी उस ग्रन्थ को देखकर ही आचार्य प्रवर-प्रज्ञा चक्षु के दर्शन दूर से ही कर सका था।

आज दिवंगत आचार्य राम शास्त्री के मानस पुत्र चि० सुरेन्द्र शास्त्री जी मेरे पास आये और उनके द्वारा यह दुःखद समाचार जाना।

प्रभु उस दिवंगत-आत्मा को सद्गति प्रदान करे और पारिवारिक जनों को उनके वियोग को सहन करने की शक्ति दें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हमें ही आर्य समाज को बढ़ाना है

—सोहनलाल शारदा शाहपुरा

स्वराज्य प्राप्ति पश्चात् हमारे प्रचार तन्त्र में ढिलाई आई है। हम शनै: शनै: महर्षि की वाणी को भुलाते जा रहे हैं। अब इस आर्यावर्त राष्ट्र एवम् आर्यसमाज में पुन: जागृति लाना है। वह कार्य सिर्फ आर्यसमाजी महर्षि भक्त ही कर सकते हैं। क्योंकि महर्षिकृत ग्रथों में ही उन्नति का मूल मन्त्र है। महर्षि महान तपस्या मे लीन रहते हुए तप्त रेणु में तपे हैं। तो हिमालय में वर्फ में गले भी हैं। अति शीत ऋतु मे गगा की रेती मे रात्री बिताकर योग की अन्तिम सीढी समाधी पाद तक पहुच कर सिद्धि प्राप्त की थी।

इस सिद्धि को गुरुओं के आदेश पर स्वयं के लिए केवल मात्र कैवल्य लाभ ही रखा था। बाकी सम्पूर्ण शक्ति लोकोपकार राष्ट्रोन्नति में सर्म्पण कर दी थी। अब आवश्यकता इसे ही हमे कार्य रूप मे परिणित करने की है महर्षि सप्तम समुल्लास मे कहते हैं कि :—

"जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र को नहीं सुधारता उनका स्तुति करना व्यर्थ है।" और यही कारण है कि कथनी और करनी में भेद होने से देखते ही देखते हजारों तथाकथित भगवान् की प्रतिमायें गंगा में स्व हस्तों से ही प्रवाहित करके सन्ध्या गायत्री यज्ञादि नित्य कर्म प्रतिमा पूजन आदि करने लग गये। और आगे के लिये भी कही भक्त वृन्द भटक नहीं जावे इसी उद्देश्य से पुन: इसी समुल्लास मे ही कहते हैं कि :—

"जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिए। जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये प्रार्थना करे। उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करें।"

अब हमें आर्यसमाज को सुषुप्ति अवस्था से निकालना है। इसके लिए हमारी सभाओं के वरिष्ठ अधिकारी कृतसंकल्पित है। नूतन आर्य समाजें स्थापित की जा रही है। यह एक अच्छी ही नहीं बहुत अच्छी शुरुआत है। गीता में भी भगवान् कृष्ण १८वें के १४ श्लोक में निम्न सन्देश देते हैं कि :—

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥

अर्थात्-किसी भी कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए सर्वप्रथम स्थान का होना अति आवश्यक है। पुन: दूसरे स्थान पर कर्ता सुयोग्य की आवश्यकता है। भगवान् दयानन्द जी महाराज ने भी वैदिक ज्ञान प्रसार हेतु अपने जीवन काल में ही ६ पाठशालाओं का जो फर्रुखाबाद, मिर्जापुर, कासगंज, छलेसर, बनारस, लखनऊ में चलाई थी। वहां अन्य नियमो के साथ-साथ एक नियम यह भी था कि विद्यार्थी प्रथम सन्ध्या पढ़कर ही पाठशाला मे प्रविष्ट हों। इस नियम से विद्यार्थी की बुद्धि का ज्ञान, शिक्षक को हो जाता था।

लेकिन महर्षि की यह योजना उत्तम शिक्षकों के अभाव से कार्यान्वित नहीं हो सकी। क्योंकि उत्तम शिक्षक ही वैदिक वाणी को जिसे महर्षि ने पुनरुद्धार करके ही कहा कि गुरु ही उचित प्रकार से शका समाधान सहित समझा सकता। जैसे चार बजे उठने का महत्व, प्रात:कालीन प्रार्थना। आचमन कहां किस मन्त्र से क्यों? मध्यमा अनामिका से ही जल स्पर्श का कारण। यज्ञ समिधा कैसी। एक मन्त्र ५ आहुतियां तो दो मन्त्र एक समिधा आदि-आदि सभी शकाओं का समाधान उचित प्रकार से योग्य शिक्षक प्राप्त करके ही कर सकता है।

अत: प्रथम शिक्षक तैयार करना पड़ेगा हमें इसके लिये प्रथम तीन दिवसीय अथवा सप्ताह या दश दिवसीय शिविर वह भी मात्र महर्षिकृत ग्रन्थो को ही स्वत प्रमाण मान कर करना है। तभी योग्य शिक्षक तैयार हो सकेंगे। जो भी महर्षि के लेखों में शंका उठाते हैं। उन्हें पूरी तरह से विराम देकर ही हम आगे बढ़कर आर्यसमाज एवम् इस आर्यावर्त राष्ट्र को आगे बढा सकेंगे। ऐसा विश्वास निश्चय करके ही कार्य करने के लिए उद्यत रहना है। तभी हम आर्य समाज की प्रगति में चार चांद लगा सकते हैं।

यह तो निश्चय ही जानिये के इस सन्ध्या यज्ञ तथा विधि उचित समय पर करने को नही सिखाने से आर्यसमाजों मे अवांछनीय मन्त्रों की भरमार, वास्तविक विधि की न्यूनता, आर्यों का महा अशुद्ध उच्चारण, हमें निरन्तर अवनति की ओर लेजा रहा है। महर्षि सामान्य प्रकरण के अन्त में लिखते हैं कि "विशेष कर्म कर्ता, और कर्म कराने वाले शान्ति धीरज और विचार पूर्वक, क्रम से कर्म करे और करावे।"

अत: इसी सामान्य प्रकरणानुसार हमें सम्पूर्ण कर्म कराते व करते ही रहना है। ऐसे ही अभी महर्षि के एकसौ ग्यारहवें ब्रह्म लीन वर्ष के अवसर पर जो मेला परोपकारिणी सभा द्वारा अजमेर में प्रति वर्ष लगाया जाता है। वहा ही महर्षि भक्तो के दो वर्गों मे अयन्त इध्म आत्मा० मन्त्र को लेकर तथा कथित शास्त्रार्थ मारा से चर्चा चली थी। महर्षि ने इस मन्त्र का विनियोग प्रथम सस्करण सस्कार विधि के १४वे संस्कार जिसे गृहाश्रम संस्कार नाम दिया है। यहा प्रथम सायं प्रात: आहुतियों के पश्चात् पूर्ण मासी आदि पूर्व के लिये विधान पूर्वक प्रकान्त बनाकर यज्ञ करने का विधान कहा गया है। आगे निम्न प्रकार से इस मन्त्र का निरूपण किया गया है :—

"शृतानि हवींष्य भिघार्योद गृहास्य बर्हिष्या साधं भिघार्याऽयन्त इध्म आत्मा जात वेदस्तेने ध्यस्व वर्धस्व-चेद्ध वर्धय चस्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म वर्चं से नान्नाद्येन समेधय० इसमंत्र के पश्चात् आघावा० स्विष्टि-कृद् आहुति का वर्णन है। यहां महर्षि ने इस मंत्र का अर्थ भी निम्न प्रकार किया हुआ है।

अच्छी तरह से होम के पदार्थों को शोध और पकाके यज्ञ करे। हे जातवेद: ! परमात्मान् ! ईंधन की नांई हम लोगों को ज्ञान से प्रदीप्त कर और बढाओ हम लोगों को प्रजा पशु ब्रह्मविद्या और अन्नादिक से युक्त कर।"

इसके पश्चात् वहां आघारावाज्या भागा हुति पश्चात् प्रायश्चित आहुति का वर्णन है जिसका अर्थ भी संक्षेप से निम्न प्रकार से है। "अधिक वा न्यून कर्म अज्ञान से मैं करू उसको परमात्मा जाने और सब इष्ट कर्म हम से करावे। सब कामो की सिद्धि और वृद्धि करें।॥इति॥

इस प्रसग को मनन करने पर हम तो इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि महर्षि ने इस मन्त्र की ५ प्रार्थना को लेकर संन्शोधन करते हुए इसे पन्चा-हुति में रख दिया। यहा क्रम भेद भी हुआ है। अर्थात् जैसा कि संस्कार विधि में भूमिका में वर्णन है कि :—

"अबकी वार जो-जो अत्यन्त उपयोगी विषय है वह-वह अधिक भी लिखा। इससे यह न समझा जावे के प्रथमें विषय युक्त न था और युक्त छूट गया था। उसका संशोधन किया है। अब सुगम कर दिया है।"

इस प्रकार सुगम होने से साधारण श्रद्धावान इच्छुक जनभी इस सध्या यज्ञ की विधि को ठीक ढग से समझ सके। क्रम भेद भी महर्षि का ही हुआ है। अत: सर्व मान्य है। पन्चाहुति के पूर्व महर्षि निर्देश करते हैं कि :—
"चमसा कि जिसमे ६ मासा ही घृत आवे ऐसा बनाया हो भर के नीचे लिखे मन्त्र से पाच आहुति देनी।"

छ मासा वर्तमान ६ ग्राम होता है। बड़े यज्ञ जहां २५० ग्राम तक घृत हो तब ही यह व्यवस्था ठीक बैठ सकती है। क्योंकि आगे पूर्णाहुति में भी श्रुवा को घृत से भरके तीन आहुति का विधान किया है। यह विधान नित्य के यज्ञ में लागू नहीं हो सकता है। क्योंकि पन्च महायज्ञ विधि में नित्य यज्ञ के लिए एक छटांक अर्थात् ५८ ग्राम घृत के लिए कहा गया है सो उचित ही है। साधारण आर्यजन के लिए इतना ही उचित ही है। इस ५८ ग्राम घृत में से उपरोक्त ८ आहुतियों में ४८ ग्राम चला जावेगा बाकी रहेगा दश ग्राम जिसमे दीपक समीधाओं को तीन भिजोना बाकी १६ आहुति करना असम्भव है। अत: संस्कार विधि गृहाश्रम प्रकरण में यह पाठ है कि "प्रमाणे अग्न्याधान, समिदाधान और पृष्ठ···में लिखे ओम् अदितेऽनुमन्य स्व से यथाविधि जल प्रोक्षण करके।" इन वाक्यांशो से नित्य यज्ञ में पन्चाहुतियां सिद्ध भी नहीं होती है जो सम्पति युक्त ही है। फिर भी विद्वजन् अपने-अपने विचार देने की कृपा करे। ॥इति॥

योग द्वारा दीर्घ तथा स्वस्थ-जीवन

डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार

दीर्घ जीवन से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि बूढ़ा किसी भी उपाय से जवान हो सकता है, या आसनों अथवा योग के साधन से वृद्ध को युवा किया जा सकता है। कहावत प्रसिद्ध है कि जो जाकर न आये वह जवानी देखी, और जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा। परन्तु इस बात में सन्देह नहीं कि आसनों, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य से जो योग के अभिन्न अंग हैं, बुढ़ापे के कष्टों का निवारण किया जा सकता है। एक युवा का ऐसा जीवन हो सकता है जो बुढ़ापे से भी बदतर हो और योगासनों, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य द्वारा एक वृद्ध का ऐसा जीवन हो सकता है जिसे देखकर युवा व्यक्ति भी आंखें फाड़ते रह जायें।

बुढ़ापा क्या है? बचपन और जवानी में हमारे अंग-प्रत्यंगों में जो लचक (Elasticity) होती है, उसका कम हो जाना या न रहना ही बुढ़ापा है। बूढ़े व्यक्ति के हाथ-पैर-पीठ के जोड़ कड़े पड़ जाते हैं, उनमें लचक नहीं रहती, वह सहारे के बिना उठ बैठ नहीं सकता, लाठी का उसे सहारा लेना पड़ता है, सीधा खड़ा नहीं हो सकता, हाथ-पैर के जोड़ों को, घुटनों को, पीठ को हिलाने से दर्द होने लगता है। हमें समझ लेना चाहिये कि इन सबका इलाज दवाईयों से क्षणिक ही हो सकता है, इनका इलाज जोड़ों का व्यायाम करते रहने से ही हो सकता है। जोड़ों के इन व्यायामों को ऐलापैथी में फिजियो-थेरेपी कहा जाता है। योग की परिभाषा में इन्हें योगासन कहा जाता है, परन्तु फिजियो-थेरेपी और योगासनों में भेद है। फिजियो-थेरेपी तब की जाती है जब कष्ट सामने आ खड़ा हो, योगासन तब किये जाते हैं जब कष्ट का कहीं नाम भी न हो। फिजियो-थेरेपी को उपचारात्मक कहा जा सकता है, योगासनों का उद्देश्य प्रतिरोधात्मक तथा उपचारात्मक दोनों हैं। हमारी संस्कृति में योग के इन आसनों को जीवन का अंग दिया गया है, ठीक इस तरह जैसे नित्य स्नान करना जीवन का अंग है।

जोड़ों के दर्दों का मुख्य कारण जोड़ों में यूरिक ऐसिड का जम जाना है। योगासनों से यह ऐसिड जमा नहीं होता। उदाहरणार्थ, घुटनों के दर्द को लीजिए। पद्मासन करने से घुटनों का दर्द नहीं बन पाता बन जाये तो चला जाता है, जोड़ों के दर्द का इलाज पद्मासन है। एक दूसरे आसन से जिसका नाम सिद्ध पद्मासन है प्रोस्टेट ग्लैंड बढ़ने नहीं पाता। मैं स्वयं पद्मासन, सिद्ध पद्मासन आदि अनेक आसन प्रतिदिन करता हूं और ९१ वर्ष की अवस्था में न मुझे किसी जोड़ के दर्द की शिकायत है, न प्रोस्टेट की। आसनों द्वारा शरीर की लचक को बनाये रखना ही युवा बने रहने का गुर है। आसन तो सैकड़ों हैं, परन्तु सबके करने की जरूरत नहीं, आठ-दस आसनों से ही पूरा काम चल जाता है।

यूरिक ऐसिड के अतिरिक्त जीवन का दूसरा शत्रु कोलेस्टेरोल है। यह हमारे भोजन द्वारा पूरी-परोठा, मांस, अण्डा, तले पदार्थ, घी आदि द्वारा नस-नाड़ियों की दीवारों में चिपक कर उन्हें संकुचित कर देता है जिससे रुधिर के प्रवाह में तेजी आकर ब्लड प्रेशर हो जाता है, या कोलेस्टेरोल का धक्का हृदय-रोग उत्पन्न कर देता है। इसमें यौगिक जीवन बड़ा सहायक है। योगी-व्यक्ति चटोरपन को छोड़ देता है। वह ऐसी वस्तुओं का सेवन करता है जो पौष्टिक तो हो परन्तु वसामय न हो। इसके अतिरिक्त शरीर के सब अंगों का घर्षण या मर्दन कोलेस्टेरोल के निवारण में बहुत सहायक है। जैसे बाल्टी में देर तक पड़ा पानी बाल्टी के भीतर कैलशियम आदि की पपड़ छोड़ देता है उसे घिसा जाए तो वह परत छट जाती है आगे बनने नहीं पाती वैसे ही प्रतिदिन शरीर की मालिश करने से नस नाड़ियों में कोलेस्टेरोल जमने नहीं पाता। हार्ट अटैक की शंका कम हो जाती है। शरीर की लचक बनी रहती है। मैंने जहां मालिश पर बल दिया है वहां भिन्न-भिन्न भोजनों पर भी विस्तार से जानना आवश्यक है जिससे पता चले कि किस भोजन में कोलेस्टेरोल है किस में नहीं है। किस भोजन में कितनी कैलोरी है ताकि जो स्त्री-पुरुष मोटापा दूर करना चाहते हैं पतला होना चाहते हैं वे अपने भोजन पदार्थों तथा उनकी मात्रा का स्वयं निर्णय कर सकें। आयुर्वेद में लिखा है "तक्र शक्रस्य दुर्लभम्" तक्र या छाछ ऐसा दिव्य पदार्थ है जो कोलेस्टेरोल को छांट देता है। आयु को बढ़ाता है। यही कारण है कि पंजाबी लोग जो चाय की जगह लस्सी के शौकीन हैं, भारत में सबसे अधिक तन्दुरुस्त है और दीर्घजीवी है। पंजाबी के डील-डोल को देखकर झट समझ आ जाता है कि इसने या इसके बाप दादा ने खूब लस्सी का प्रयोग किया है। बूलोरिया के लोग सबसे अधिक दीर्घ जीवी पाये गये हैं क्योंकि उनका मुख्य भोजन दही तथा लस्सी है। दही को वहां तथा यूरोप में योगार्ट कहा जाता है।

प्रायः समझा जाता है कि आसन कर लेना योग है। यह भ्रांति है। योग के मुख्य अंग आठ हैं। वे हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि। आसन तो योग का एक बटा आठवा हिस्सा है। शरीर को युवा बनाये रखने के लिये जितना आसनों का महत्व है उससे अधिक महत्व प्राणायाम का है। आसन तथा प्रणायाम भारत के ऋषियों के वृद्धावस्था को दूर करने तथा युवावस्था बनाये रखने के अद्भुत अविष्कार थे। युवावस्था का गुर आसनों तथा प्राणायाम मे निहित है। लोग "डीप ब्रीदिंग" को प्राणायाम समझ लेते हैं। यह भ्रांति है। प्राणायाम तो ऋषियों द्वारा आविष्कृत की हुई अपनी एक विधि है। टैकनीक है। इसमें भस्त्रा पूरक, कुम्भक, रेचक तथा भ्रामरी प्राणायाम गिने जाते हैं। प्राणायाम का प्रभाव श्वास संस्थान तथा रक्त संचरण संस्थान पर पड़ता हैं। जिससे फेफड़े तथा हृदय दोनों को बल मिलता है। कुम्भक प्राणायम का प्रभाव पेट आंतों तिल्ली गुर्दे आदि भीतर के सब अंगों को बलशाली बनाता हैं। इसी सिलसिले में एक आसन है जिसे योग मुद्रा कहते हैं। योग मुद्रा का उद्देश्य मस्तिष्क से लेकर सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक भीतरी अंग को बल देना हैं।

डा० के०के० दाते जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हृदय रोग विशेषज्ञ थे उन्होंने शवासन का विदेशों में इतना प्रचार किया कि बड़े बड़े डाक्टर शवासन के भक्त हो गये। उन्होंने जो परीक्षण किये उससे सिद्ध हो गया कि शवासन से ब्लड प्रेशर में कमी आ जाती हैं। रोगी औषधि लेना छोड़ देते हैं परन्तु शवासन का अर्थ सिर्फ मुर्दे की तरह लेट जाना नहीं मन को ध्यान में लगाते हुए दुनियावी विचारों को दिमाग से निकाल कर लेटना हैं जिसे योग में प्रत्याहार कहा हैं। लेटे-लेटे दुकानदारी करते रहने को शवासन नहीं कहते।

आल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीच्यूट के हृदय रोग विशेषज्ञ डा० भाटिया का कथन हैं कि यूरोप में टान्सेन्डैन्टल मैडिकल द्वारा हाई ब्लड प्रैशर को नियन्त्रित करने के सफल परीक्षण हो रहे हैं।

आसन तथा प्राणायाम के अतिरिक्त भारतीय ऋषियों ने युवावस्था बनाये रखने के लिये एक तीसरा अविष्कार किया था जिसे ब्रह्मचर्य कहा जाता था। वेद में लिखा हैं "ब्रह्मचर्येण तपसा देवा: मृत्युमुपाघ्नत" ब्रह्मचर्य रूपी तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती हैं।

सुख क्या, कैसा तथा कहां है ? (२)

—डा० रामावतार अग्रवाल

सुख किसी एक वस्तु या स्थान में केन्द्रित नहीं है । वह सर्व-व्याप्त है । वह माता-पुत्र, पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भ्रातृ-भगिनी, मित्र-बन्धु, सखा-सखी इत्यादि के मधुर सम्बन्धों एवम् सदाचरण की अन्तर्धाराओं से फटकर प्राप्त होता है । वह गुरु-शिष्य, राजा-प्रजा के अटट रिश्तों तथा पास-पड़ोस के सहयोग से स्रवित होता है। सुख किसी एक के ऊपर निर्भर नहीं है । वह सर्वव्याप्त होने से ही अन्न, औषधि, वनस्पति, पशु, पक्षी, ताप, अग्नि, विद्युत् तथा जल-वायु आदि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होता है । सुख सार्वजनिक व सार्वभौमिक है । अतः वेदों के अनुसार उसे प्राप्त करने के लिए मित्र-अमित्र, सुर-असुर सभी को नमस्कार करके प्रसन्न करने का प्रयत्न किया गया है । प्रत्येक प्राणी को नमस्कार करने से तात्पर्य यह है कि यदि कोई सुख मे साधक नहीं बन सकता तो बाधक भी नहीं बने । सर्वव्याप्त होने के कारण ही वह अनेकताओं विभिन्नताओं, सुन्दरताओं, असुन्दरताओं, प्राचीनताओं,नवीनताओं से निःसृत होकर प्राप्त होता है । वह प्रकृति मे निर्झरित होकर आत्मा का सिंचन करता है । सुख मधुरवाणी, मधुर-संगीत, सुखमय दृश्यों, नृत्य, हास्य परिहास, क्रीड़ा, रतिक्रीड़ा, सुगन्ध, स्पर्श, ज्ञान-विज्ञान व विभिन्न कलाओं से उपलब्ध होता है । उसकी प्राप्ति का कोई निश्चित स्रोत नहीं है । वह विभिन्न रीतियों से ही प्राप्त होता है ।

सुख पहाड़, खेत, खलियान, उद्योग,व्यापार, दूर-पास, रेगिस्तान, एकान्त, अनेकान्त, मौन, शोर-शराबे, हाट-बाजार, स्वप्न-निद्रा व जागृति इत्यादि सभी अवस्थाओं और सभी स्थानों में मिलता है। वह चलने-फिरने काम करने, खाने-पीने और स्वास-प्रश्वास से भी प्राप्त होता है। वह झरने सरोवर व समुद्र में भरा हुआ है। वह प्रकृति के कण-कण से फूट रहा है, तो स्त्री-पुरुषों के प्रणय प्रसव में भी छलक रहा है। वह पुरुष के बल वीर्य में निहित है तो स्त्री के अंग प्रत्यंग की सुन्दरता में अवस्थित है।

सुख किसी एक तत्त्व या व्यक्ति के पास नहीं है । वह सर्वजन के पास है और किसी के पास नहीं है : इसी सत्य को प्रतिपादित करते हुए उपनिषदों में कहा गया है कि सुख अल्प या किसी एक व्यक्ति के पास नहीं है। अल्प जब सर्व या अन्यों में मिलता है। तब वह सुख में बदलता है। वह विशाल, अनन्त या भूमा में निहित है अथवा भूमा या विशाल मानव समाज ही सुख है—

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति ।
भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति ॥
छान्दोग्योपनिषद् । ७ । २३ । १ ॥

अतः सुखोपभोग के लिए भूमा या समाज की कामना करनी चाहिए,क्योंकि समाज के बिना व्यक्तिगत सुख प्राप्त नहीं होसकता । उपनिषत् के अनुसार सुख-भोग में व्यक्ति अपने को और अन्यों को भूलकर सुख या भूमा मे एकाकार हो जाता है । जब वह न तो कुछ और देखता. कुछ और नहीं सुनता तथा कुछ और नहीं जानता तब वही भूमा या सुख है ।—छन्दो० ९ । २ । १

सुखधारा अनन्त से अल्प की ओर प्रवाहित होती है । अतः उसे प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि वह अल्प द्वारा अनन्त की ओर प्रत्यावर्तित कर दी जाये, क्योंकि सुखधारा अवरुद्ध होने से दुःखधारा में बदल जाती है । अतः यदि कोई व्यक्ति प्राप्त सुख भोग को समाज में नहीं बांटता तो वह दुःख में परिवर्तित हो जाता है। सुख दुःख में बदलता है तथा दुःख सुख में । यह ऋत नियम है। जैसे अति भोजन, सुखदायक होने के बाद भी विष या दुःख में बदलता है, वैसे ही अल्पल्प विष औषधि रूप में अमृत या सुख बनता है।

इस प्रकार सुख, व्यक्ति की सयमित भोगावस्था, अथवा नियन्त्रित आहार-विहार पर निर्भर है । अतः वैदिक संस्कृति अति भोग-वाद के विरुद्ध है—अति सर्वत्र वर्जयेत ।

वेदों के अनुसार सुख-पदार्थों में नहीं है । चराचर में जो चेतना या प्राणतत्त्व व्याप्त है, वही सुख है । अतः त्याग पूर्वक भोगों में ही सुख है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां ,जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्यस्विद् धनम् ॥
ईशा० उप० १

आत्मा जड़ चेतना का भोग होने से उनमें व्याप्त चेतन का भोग, उन्हीं के द्वारा कर सकता है । वह जड़ता तथा चेतना का सीधे भोग नहीं कर सकता । पदार्थों में जो चेतन सत्ता व्याप्त है, उसी के भोग से व्यक्ति को सुख मिलता है । वेदों के अनुसार वही कुशल भोक्ता है जो इस रहस्य को समझकर भोग करता है । व्यक्ति ब्रह्म चेतना का भोग करता है, इसी कारण ब्रह्म पीयूष एवं सोम पान का उल्लेख मिलता है ।

मनुष्य जब अचेतन होता है, तब वह चेतना का भोग नहीं कर सकता, क्योंकि तब वह मृत या जड़ होता है। इस प्रकार मृत या जड़ में सुख नहीं है । सुख चेतन द्वारा चेतना का भोग करने में ही है। इसीलिए वेदों में ब्रह्म पीयूष या सोम पान के लिए आग्रह किया गया है। अतः अमत पीयूष अमृत सुख के लिए पीना चाहिए।

--ऋ० २।३०।६, ९।१०९।३, १०।८९।१४, ९।४७।१, १०।११६
—ऋ० ८।४।११ अथवा ४ । १ । ४८, १४।१।३, यजुः० २६।२६

सुख जड़ चेतन के मिलन में है। अचेतना से दूर, चेतना में रहना ही सुख है । कर्म, श्रम, गति, ऊर्जा, शक्ति, चेतना के प्रतीक है। अतः कर्मशील या शक्ति सम्पन्न व्यक्ति सुखी होता है। अकर्मण्यता, आलस्य, गतिहीनता या शक्तिहीनता, अचेतना के द्योतक हैं। फलतः अकर्मण्य और शक्तिहीन पुरुषों को दुःख प्राप्त होता है । जगत् में चेतना ही जीवन, अमृत या सुख है । अचेतना दुःख या मृत्यु है। अतः यदि सुख चाहिए तो चेतना या शक्ति का विकास आवश्यक है । शक्ति या बल के अभाव में सुख प्राप्त होना असम्भव है।

मनुष्य के शुक्राणु, जो जड़ चेतना से मिलकर बने हैं, चेतना के विस्तारक हैं । आत्माएं शुक्राणुओं में रहते हैं। वे जड़ चेतन के संयोग से जीवन प्राप्त करते हैं। आत्मा यदि शुद्ध चेतन होता तो वह जन्म-मरण के चक्र में नहीं फंसता। उसका ह्रास विकास भी नहीं हो सकता था, क्योंकि चेतन में घट-बढ़ नहीं हो सकती । वृद्धि व अवृद्धि का कारण जड़ता है।

आत्मा जड़ चेतन का संयोग है। अतः उसे विकास के लिए अन्यों की आवश्यकता है। उसे जन्म से पूर्व व पश्चात् प्रकृति तथा ब्रह्म दोनों चाहिए। इनमें से किसी के अभाव में जीवन नहीं चल सकता। अतः जीवन नहीं है तो सुख भी नहीं है । ब्रह्माण्ड का सार तत्त्व जीवन या लाइफ है। जीवन या लाइफ ही सुख है । अतः सुख के लिए जीवितों की तरह जीना चाहिए।

जीवन सुख क्या है? कैसा है? इसकी पहचान व परख का माध्यम स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य का अर्थ है नीरोग शरीर और बल-वान् इन्द्रियां अथवा स्वास्थ्य का आत्मिक अर्थ है स्व या चेतना में अवस्थित रहना। व्यक्ति सुखी रहे, इसी के लिए उत्तम स्वास्थ्य के लिए वेदों में अनेक प्रार्थनाएं की गई हैं। (क्रमशः)

उड़िया साहित्यकार पं० प्रियव्रतदास

—प्रो० भवानी लाल भारतीय

उत्कल प्रान्त में आर्यसमाज का प्रचार अभी बहुत व्यापक नहीं है। १८६० में अम्मे श्रीवत्स पाढ़ा नामक एक आर्य विद्वान ने सत्यार्थप्रकाश का उड़िया भाषा में अनुवाद कर उड़ीसा में वैदिक धर्म के प्रचार का शुभारम्भ किया था। इस समय पं० प्रियव्रत दास अपनी वाणी एवं लेखन के द्वारा सुदूर उत्कल प्रान्त में ऋषि दयानन्द की पावन विचार धारा का प्रसार करने में संलग्न है। दास बाबू को फुलेरा आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित महर्षि दयानन्द साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत दस हजार रुपए की नकद राशि के अतिरिक्त अभिनन्दन पत्र, शाल, प्रतीक चिन्हआदि भेंट किए जाते हैं।

उड़िया भाषियों को वेद का सन्देश देने वाले पं० प्रियव्रतदास का जन्म १ जुलाई १९३२ को बलाम (उड़ीसा) जिले के पोलसरा ग्राम में हुआ। इनके पिता लिंगराज शर्मा प्रसिद्ध आर्यसमाजी तथा सुधारक थे। १९४८ में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात श्री दास ने पटना के इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश लिया और वहां से स्नातक (बी० ई०) उपाधि प्राप्त की। पटना में निवास करते समय ही वे पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा स्वामी अभेदानन्द जी (पूर्वाश्रम में पं० वेदव्रत वानप्रस्थ) के सम्पर्क में आए जिससे उनका आर्य समाज से सम्पर्क बढ़ा। अध्ययन समाप्त करके वे उड़ीसा राज्य के लोक कार्य विभाग (पी० डब्ल्यू० डी०) में सहायक अभियन्ता पद पर नियुक्त हुए। स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए वे १९६६ से ६८ तक इग्लैण्ड रहे। १९६१ में उन्हें अधिशाषी अभियन्ता बना दिया गया और १९८२ में वे अधीक्षक अभियन्ता के रूप में पदोन्नत हुए। कुछ काल बाद ही वे मुख्य अभियन्ता भी बने और इसी पद से उन्होंने अपनी प्रशंसनीय सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

प्रायः देखा जाता है कि लोक निर्माण विभाग के कर्मचारी अनेक उचित अनुचित तरीकों से प्रभूत सम्पत्ति का उपार्जन करते हैं और करोड़ों की नकद राशि, कार बंगलों के स्वामी बन जाते हैं, किन्तु कौओं में हंस की भांति कतिपय ऐसे भी होते हैं जो अपनी चरित्र निष्ठा और ईमानदारी को ही प्रधानता देते हैं। कहना नहीं होगा कि ऋषि दयानन्द जैसे महान् आचारवान गुरु के आदर्श को स्वीकार करने वाले दास बाबू ने अपने सुदीर्घ सेवाकाल मे उसी आदर्श और ईमानदारी को अपनाया जिसका चित्रण मुन्शी प्रेमचन्द ने अपनी अमर कहानी "सज्जनता का दण्ड" में चित्रित किया है। उनका यह सौभाग्य रहा कि इस कहानी के नायक सरदार शिवसिंह की भांति वे सज्जनता (ईमानदारी और भलमानसी) का दण्ड नहीं प्राप्त कर सके। अवकाश ग्रहण करने के पश्चात वे अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार हेतु समर्पित कर चुके हैं वाणी और लेखन के द्वारा वे आर्य समाज की वैदिक विचारधारा को विश्व व्यापी बनाने के लिए कृतसंकल्प हैं।

दास बाबू का पारिवारिक जीवन आदर्शमय है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कल्लोदेवी प्रसिद्ध देश भक्त तथा उत्तर प्रदेश के विगत राज्यपाल श्री विश्वनाथदास की सुपुत्री है। दास दम्पति वैदिक कर्मकाण्ड मे कुशल हैं और राजधानी भुवनेश्वर में वैदिक संस्कारों को सम्पन्न कराते हैं। उत्कल प्रान्त में आज आर्यसमाज की जो चर्चा है, उसका मुख्य कारण उनका पुरुषार्थ और प्रयत्न ही है। वे उड़ीसा प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा प्रधान पदों को भी सुशोभित कर चुके हैं।

पं० प्रियव्रत दास ने राजधानी भुवनेश्वर में आर्य-समाज का भव्य मन्दिर बनवाकर उसमे सुन्दर यज्ञशाला सर्वसम्पन्न श्रद्धानन्द भवन तथा पुस्तकालय की स्थापना की है। आर्य समाज का सम्पूर्ण परिसर ही अत्यन्त रम्य, चित्ताकर्षक तथा नितान्त सुन्दर है। उड़िया भाषा में साहित्य के लेखन और प्रकाशन के लिए उन्होंने वैदिक अनुसंधान प्रतिष्ठान की स्थापना की है। उनका स्वरचित साहित्य भी यहीं से प्रकाशित हुआ है। दास बाबू के अद्यतन प्रकाशित साहित्य का विवरण इस प्रकार है—

वेद मनुष्य कृत कि

इसका प्रकाशन १९५८ में हुआ और ओड़िया साहित्य अकादमी ने इसे १९६० में पुरस्कृत किया। इस ग्रन्थ ने सर्वप्रथम उड़िया भाषी जनता को महर्षि दयानन्द और महर्षि यास्क की वेदार्थ प्रणाली से परिचित कराया। वेद के उड़िया अध्येता इस ग्रन्थ का बराबर लाभ उठाते रहे हैं।

ऋग्वेद सौरभ, यजुर्वेद सौरभ, सामवेद सौरभ तथा ऋग्वेद सौरभ

प्रत्येक वेद से मन्त्रों का संकलन कर उनके सुगम अर्थ दिए गये हैं। इनकी लोकप्रियता का ज्ञान इसी तथ्य से होता है कि अब तक इनके तीन तीन संस्करण निकल चुके हैं।

चतुर्वेद सूक्ति सहस्त्रिका

चारों वेदों से एकत्र की गई एक हजार सूक्तियों का संग्रह (१९७६ में प्रकाशित) वेदों का परिचय देने वाले इन ग्रन्थो की लोकप्रियता का ज्ञान इसी बात से होता है कि उड़िया भाषा मे लाखों की संख्या में प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र समाज ने इन ग्रन्थों मे निबद्ध वेद मन्त्रो के अर्थों को अपने प्रथम पृष्ठ पर सूक्ति के रूप में वर्षों तक छापा। अखिल उत्कल संस्कृत संघ ने १९७६ मे इन्हीं ग्रंथों के लिए लेखक को उत्कल विश्वविद्यालय में सम्मानित किया।

वैदिक विवाह, उपनयन और अन्त्येष्टि पद्धति

इन तीनों पद्धतियों का संकलन और सम्पादन कर प० दास ने संस्कार विधि मे प्रतिपादित विधियों को उड़िया लोगों में प्रचारित किया। वैदिक संस्कारों को कराने मे पुरोहितों को इससे सुविधा हुई और ये ग्रन्थ उपहार रूप मे भी दिए जाते हैं।

वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी तथा रामायण प्रश्नोत्तरी

प्रश्नोत्तरी शैली मे लिखे गये ये ग्रन्थ छात्रों की नैतिक शिक्षा में पाठ्यक्रम के रूप मे स्वीकार किये गये हैं तथा पुरस्कार के रूप मे दिए जाते हैं।

महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के उड़िया जीवन चरित तथा आर्य संस्कृति के मूल तत्व

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के इस प्रसिद्ध ग्रन्थ का उड़िया अनुवाद श्री दास ने किया जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। अब तक इसके चार संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

सुप्रसिद्ध आर्य लेखकों की प्रसिद्ध कृतियों को स्वभाषा मे अनुदित करने का श्रेय भी श्री दास को प्राप्त है। ऐसे कुछ ग्रन्थ हैं—

भारतरे मूर्तिपूजार उत्पत्ति ओ परिणाम-प० राजेन्द्र जी लिखित भारत में मूर्तिपूजा का अनुवाद। (शेष पृष्ठ ८ पर)

उड़िया साहित्यकार

(पृष्ठ ७ का शेष)

शाकाहार बो मांसाहार : प० गंगाप्रसाद उपाध्याय के प्रसिद्ध ग्रन्थ हम क्या खायें—घास या मांस का अनुवाद ।

आर्यमाने भारतरे विदेशी कीं—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की पुस्तक का अनुवाद ।

सुरापान और धूम्रपान के दोष बताने वाले दो अन्य ग्रन्थ उनके सुपुत्र श्री ओमप्रकाश द्वारा अनुदित हैं ।

जिस प्रकार पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय के ट्रेक्टों ने किसी समय लोक प्रियता प्राप्त की थी उसी प्रकार उड़िया भाषा में लिखे श्री दास के निम्न ट्रेक्ट भी छपते रहे हैं—आर्यसमाजर परिचय, मनुर्भव ओ विश्वशान्ति, श्री कृष्ण वेदर सोम मदिरा नुहें, वेदरे आत्मार स्थान, दुर्गापुजार विभित्सिका, वेद, वेदांग और वेदान्त समाव नु हन्ति हनुमान मांकड़ न थिले, गोमेध अश्वमेध आदि पशु यज्ञ नु हें, वैदिक देव, स्वर्ग, तीर्थ आदि शब्द, आर्य शब्दांजलि अंग्रेजी में उनकी एक लघु पुस्तिका अपने विषय की रोचक सामग्री प्रस्तुत करती है। उन्होंने डा० ए०एन० खोसला तथा डा० विश्वेश्वरैया के लघु जीवन चरित भी अंग्रेजी में लिखे हैं, उनके द्वारा सम्पादित मनुस्मृति का परिशोधित रूप तथा उनके स्वय के लिये स्फुट निबधों का संग्रह अभी मुद्रणाधीन हैं। विख्यात वैदिक विद्वान् डा० स्वामी सत्यप्रकाश के अंग्रेजी प्रवचनों का संग्रह का सम्पादन कर वे उसे प्रकाशित कर चुके हैं। वैदिक विश्वकर्म विधि तथा आर्यसमाज परिचय भी उनकी लोकप्रिय कृतियां हैं, जिनसे संध्यादि महायज्ञों तथा आर्यसमाज का परिचय उड़िया भाषियों को मिला है।

ग्रन्थ लेखक के साथ-साथ पं० प्रियव्रत ने वेद रश्मि नामक मासिक पत्रिका तथा वैदिक गवेषणा नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन विगत पांच वर्षों से किया है। इनसे उड़िया मे वेद के अध्ययन एवं अनुसंधान का वातावरण बना है। स्वभाषा के दैनिक पत्रों में वे नियमित रूप से लिखते रहते हैं तथा आकाशवाणी एव दूरदर्शन से भी वे वैदिक सन्देश प्रसारित करते हैं। उड़िया के बुद्धिजीवी वर्ग तक आर्यसमाज के सन्देश को पहुंचाने का मुख्य श्रेय उन्ही को है। सरल निराडम्बर तथा स्नेह पूर्ण व्यक्तित्व के धनी श्री दास को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए बहुश: सम्मानित किया गया है। उड़िया साहित्य अकादमी (१९६०), उत्काल संस्कृत अध्यापक परिषद् (१९७६) यदुमणि साहित्य संसद (१९७९) ने उन्हें सम्मानित किया महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर वे विशिष्ट वैदिक विद्वान के रूप में १९८३ मे सम्मानित हुए। गुरुकुल आम सेना ने अपने रजत जयन्ती समारोह पर १९८२ मे उन्हें वेद वागीश की उपाधि से सम्मानित किया। इसी वर्ष वे आर्यसमाज के सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार भी मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई द्वारा सत्कृत हुए और यह अतिरिक्त प्रसन्नता की बात है कि आर्यसमाज फुलेरा (राजस्थान) के यशस्वी मंत्री श्री भवरलाल शर्मा ने इन पंक्तियों के लेखक की सम्मति तथा परामर्श से इस विद्वान को महर्षि दयानन्द साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया।

स्वास्थ्य चर्चा—
अमृत-फल—आंवला

आयुर्वेद में आंवले की एक शक्तिवर्धक रसायन के रूप में बहुत प्रशंसा की गयी है। इसकी जीवन दायिनी शक्ति के कारण इसे अमृत-फल कहा गया है।

आजकल के युग में अनियन्त्रत औद्योगीकरण के कारण मनुष्य का जीवन बहुत व्यस्त एवं तनावपूर्ण हो गया है, जिसके कारण वह तरह तरह की जान लेवा बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। इसमें सबसे प्रमुख हैं उच्च रक्त-चाप और उससे उत्पन्न अन्य प्रकार के हृदय-रोग। बहुत से व्यक्तियों को उच्च रक्त-चाप के कोई बाह्य लक्षण अनुभव नहीं होते, किन्तु जब वे डाक्टर के पास जाकर परीक्षण कराते है तो उनका रक्त-चाप बढ़ा हुआ पाया जाता है? इसे प्रायमिक रक्त चाप कहते हैं। दवाईयों के प्रयोग से रक्त चाप कम तो हो जाता है, लेकिन यह कभी स्थायी नहीं होती। दवाई खाना छोड़ने पर रक्तचाप पुन: बढ़कर अपनी पूर्व-स्थिति पर पहुंच जाता है।

उच्च रक्तचाप को नियन्त्रित करने के लिए योगासन भी उपयोगी सिद्ध होते हैं, विशेषकर शवासन! शवासन के साथ यदि आंवले से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि "चन्द्रावलेह" का प्रयोग किया जाय तो बहुत लाभ होता है। इसकी आधा चम्मच से एक चम्मच तक की मात्रा प्रातःकाल तथा रात्रि में सोते समय लेने से रक्तचाप को सामान्य स्थिति में रखा जा सकता है। यदि 'चन्द्रावलेह' में ४-५ ग्राम शुद्ध हल्दी का चूर्ण मिलाकर सेवन किया जाय तो मधुमेह रोग में भी लाभ होता है।

औषधि के रूप में आंवले के निम्न प्रयोग बहुत लाभकारी सिद्ध होंगे।

१—आंवला चूर्ण (एक छोटा चम्मच) चावल के मांड या दही के साथ लेने से खूनी बवासीर में लाभ होता है।

२—आंवला चूर्ण को शहद अथवा थोड़ी चीनी मिलाकर लेने से स्त्रियों के प्रदर रोग में लाभ होगा।

(३) दो चम्मच आंवले का चूर्ण दो गिलास पानी में डालकर उबालें। एक गिलास रह जाने पर उतार कर ठंडा करलें। इस पानी से गरारे करें तो गले की सूजन तथा पायोरिया रोग में लाभ होगा। इसी पानी से यदि चेहरा धोया जाय तो मुंह की त्वचा के दाग धब्बे दूर हो सकते हैं।

४—आंवले के चूर्ण में थोड़ा बेसन मिलाकर उबटन की तरह चेहरे पर मलने से मुंहासे दूर हो जाते हैं।

५—पीलिया तथा अन्य प्रकार के यकृत रोग में आंवले का चूर्ण नारियल के पानी अथवा गन्ने के रस के साथ सेवन करें।

६—आंवले का चूर्ण २ ग्राम मात्रा में शहद में मिलाकर दिन में दो बार लेने से पेचिस रोग में लाभ होता है।

७—रात को भिगोए आंवले का पानी सुबह छानकर पियें तो दस्तों में आराम पड़ेगा।

८—खांसी होने पर दो ग्राम आंवला चूर्ण सुबह शाम दूध के साथ लें। लाभ होगा।

९—आंखों के चारों तरफ काले गढ्ढे पड़ गए हों (शरीर में लौह की कमी के कारण) तो १-१ चम्मच आंवला चूर्ण सुबह शाम पानी के साथ सेवन करें।

१०—सिर दर्द होने पर आंवले का चूर्ण घी और चीनी मिलाकर सेवन करें। ऊपर से दूध पीलें।

११—आंवले के चूर्ण को शुद्ध घी में भूनकर, उसमें चीनी मिलाकर खाने से पित्त रोग दूर होता है।

१२—शक्ति और स्फूर्ति के लिए आंवले का मुरब्बा प्रयोग करें।

१३—विद्यार्थी यदि एक चम्मच आंवला चूर्ण में एक चम्मच तिल मिलाकर शुद्ध घी अथवा शहद के साथ प्रयोग करें तो उनकी स्मरण शक्ति बढ़ सकती है। चालीस वर्ष से ऊपर के व्यक्ति भी इस मिश्रण का उपयोग कर सकते हैं।

आंवला भूख बढाता है, यकृत तथा प्लीहा को ताकत देता है। सारे पाचन संस्थान को स्वस्थ बनाता है, जिससे बुढ़ापे के रोग, अर्दन तथा कमर का दर्द आदि दूर हो जाते हैं।

विश्व हिन्दू परिषद्

(पृष्ठ ३ का शेष)

खुश हुआ और जन मानस की शक्ति कांग्रेस से टूटकर विश्व हिन्दू परिषद से जुड़ने लगी। आज देश की शक्ति दो धाराओं में बंटी है कांग्रेस और विश्व हिन्दू परिषद के साथ।

अगर संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के पूर्ति के इरादे से किसी भी संगठन पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों का हनन ही होगा।

हिन्दू मानसिकता के सोचने का तरीका ही भिन्न है—

बाबरी मस्जिद पर रामजन्म कराना कांग्रेस की देन थी राम-जन्म भूमि का ताला वीर बहादुरसिंह मुख्यमन्त्री उ०प्र० के द्वारा खुला। भूमि पूजन राजीव गांधी द्वारा हुआ। मन्दिर (मस्जिद) की मीनार कांग्रेस के साये में गिराई परिणामतः सारे भारत का मुसलमान हिन्दू से नाराज था ही, परन्तु कांग्रेस से भी टूट गया। हिन्दू ने सोचा विश्वहिन्दू परिषद् ने धर्म बचाया पर हानि राष्ट्र की हुई।

परन्तु यह कोई अच्छी बात नहीं कि केन्द्रीय सत्ता पर मौलिक अधिकारों के हनन का आरोप लगे। विश्व हिन्दू परिषद पर यह चोट की जाय कि वह हिन्दुओं से इतर लोगों के विपरीत है। हां बहुमत को साथ लेना और उसकी आवाज को ऊंचा उठाना यह बुरी बात नहीं है परन्तु प्रारम्भ का एक स्वर कठोर जरूर था। उससे हिन्दू संघ बदनाम जरूर हुआ। समयानुसार हिन्दू मानसिकता बदली और गांधी आदर्शवाद के पीछे चला। मुसलमानों को प्रसन्न करने की विधा भी अपनायी। आज की परिस्थिति को देखते हुए हिन्दू के स्वर में स्वर मिलाना, गैरों को भी गले लगाना अनुचित नहीं कहा जा सकता है।

जो भी जाति राष्ट्र की धारा से नहीं मिलकर चलेगी। वह बिछुड़ जायेगा कांग्रेस बहुमत की आवाज से दूर रही विश्व हिन्दू परिषद ने धर्म संस्कृति, राष्ट्र क्या है इसकी बुनियाद थी मन्दिर राष्ट्र की राष्ट्रीयता संस्कृत-संस्कृति यह मानवीय धरोहर हैं इन्हें बचाने का प्रयास जो करेगा। राष्ट्र उसके साथ जुड़ जायेगा।

प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी का यह कर्त्तव्य है कि वह मानवता की रक्षा हेतु प्रत्येक बुद्धिजीवी वर्ग को सुरक्षा देनी है। यही नारा यदि कांग्रेस देगी। तो जनमत उधर होगा। सत्ता का काम है बहुमत का सम्मान अल्पमत की सुरक्षा। एक युग था जब विश्व में हिन्दू जनमानस था समय बदला, ईसाई यवन आदि हमारे दोषों के कारण वह हमसे दूर चले गये।

यदि विदेशी आक्रमण कारियों ने विश्व केकिसी देश में वहां के राष्ट्रीय स्वाभिमान और संस्कृति के प्रतीकों को नष्ट किया। तो आजाद होने के बाद अपने स्वाभिमान और संस्कृति की रक्षा का नारा लगाया।

कांग्रेस विशुत गांधीवादी दृष्टिकोण से दूर चली गई तो विश्व हिन्दू परिषद ने ऐतिहासिक कदम उठाकर धार्मिक जाति का नारा देकर उसको अपने साथ चलाया।

जो जनमानस की भावना को ठुकराकर चलेगा उसका बुरा हाल होगा। अतः विश्व हिन्दू परिषद का रवैया भारतीयता का सही पुट देना उचित कदम है। अब प्रतिबन्ध हटा और अपने बढ़ते कदमों को नया आयाम देना हैं। राम के जन्म पर रोशनी आई तो आज भी राम ही का नाम हमारा संकट मोचन बनेगा। जय श्री राम

त्रिफला चूर्ण (एक भाग हरड़, दो भाग बहेड़ा तथा चार भाग आंवले का मिश्रण) भी कई रोगों में बहुत लाभ दायक है। जिनको इसका स्वाद पसन्द न आता हो वे इसे जीरो नम्बर के कैपसूल में ले सकते हैं। इसकी ३ से ६ ग्राम तक की एक मात्रा होती है।

—सुरेश चन्द्र पाठक
भारतीय विदेश सेवा अधिकारी (सेवा-निवृत्त)
६२६, सैक्टर-१२, रामकृष्ण पुरम
नई दिल्ली-११००२२

इन्सान उठो ?

मानव को मानव पुकार रहा है

मानव ने पत्थर पूजे पर, मानव को कब पहचान सका।
यद्यपि इसकी ही काया से, पा रंग रूप भगवान सका ॥ १

मानव फुटपाथों पर सोते, भगवान भवन में झूले पर।
मानव जूठ-पत्तल चाट रहे, नैवेद्य वहां थाली भर-भर ॥ २

जा रही हजारों की लाशें, बे कफन यहां श्मशानों में।
श्रृंगार नहीं पूरा होता, उनके रेशम के थानों में ॥ ३

पत्थर नहलाये जाते हैं, दूध और घी से, जल से।
भूखी-भीख मंगनि का बच्चा दो बूंद दूध न पी पाया कल से ॥

तुम पाखण्डों के पेट भरो, हम तुमको मुक्ति दिला देंगे।
जो ऐसा कहते हैं, सुनलो हम इनमें आग लगा देंगे ॥ ५

सोने चांदी के ढेरों पर, जिसने भगवान सजाये हैं।
जिसने मानव को चूस-चूस, कंकाल समान बनाये हैं ॥ ६

यदि यही धर्म के नेता हैं, धिक्कार रहा उनको यह स्वर।
यदि यही धर्म के नेता हैं, मुरीद, लानत हैं इन पर हैं ठोकर ॥७

इन्सान उठो फैंको पत्थर, मानव का अब पूजन होगा।
पंडों के पेट नहीं होंगे, भूखो का भोग, भोजन होगा ॥८

इंसान न होगा मटरों में, मठ में पाषाण नहीं होगा।
अब स्वर्ग नरक के ठेकों का, सौदा नीलाम नहीं होगा ॥ ९

पूजित होगा इंसान यहां, पूजित पाषाण नहीं होगा।
मानव के शव पर मन्दिर का निर्माण विधान नहीं होगा ॥ १०

सोने चांदी के आभूषण, पत्थर के साज नहीं होंगे।
घंटों शंख निनादों से हम, वे आवाज नही होंगे ॥ ११

मेरी आवाज पुकारेगी, मानव-मानव के कानों में।
हम आग लगा देंगे बढ़कर. इन शोषण के भगवानों में ॥ १२

हम भू पर स्वर्ग उतारेंगे, अपने दो चार इशारों में।
तुम देखो तो कितना बल है इन क्रान्तिपूर्ण उद्गारों में ॥ १३

भेंटकर्ता
—रामेश्वर दयाल, रेवाड़ी

श्री 'नूतन' अ.भा. गौशाला संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष निर्वाचित

अ०भा० गौशाला संघ की एक विशेष बैठक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री बसन्तीलाल छाबड़ा की अध्यक्षता मे कल जयपुर में सम्पन्न हुई, जिसमे बिहार के प्रसिद्ध गोभक्त नेता श्री रामलाल अग्रवाल 'नूतन' को सर्वसम्मति से कार्यवाहक अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। श्री गुलजारी-लाल जी नन्दा पूर्व प्रधान मन्त्री गौशाला संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

बैठक में केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड़ के सान्निध्य में सीकर में आगामी अगस्त के आरम्भ में अखिल भारतीय गौशाला सम्मेलन करने का निश्चय किया गया।

महाराष्ट्र सरकार द्वारा गौवंश हत्या पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के फैसले का स्वागत

भारत गौसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द गुप्ता व कोषाध्यक्ष श्री जयनारायण जी खण्डेलवाल ने महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी द्वारा महाराष्ट्र राज्य में सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध का विधेयक पारित करने के निर्णय का स्वागत करते हुए धन्यवाद प्रगट किया है।

श्री गुप्त ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी व शिवसेना के विधायक धन्यवाद के पात्र हैं। श्री गुप्त ने, कहा कि पूज्य विनोबा भावे के गो-हत्या निषेध के संकल्प को महाराष्ट्र सरकार ने पूर्ण करने का जो निश्चय किया है वे बधाई के पात्र हैं।

संस्कृत को दूसरी भाषा का दर्जा देने की मांग

हरियाणा संस्कृत परिषद ने हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल से यह मांग की है कि वे संस्कृत भाषा को बी०ए० स्तर तक अनिवार्य विषय के रूप में लागू करके उसे द्वितीय भाषा का दर्जा प्रदान करें। हरियाणा प्रदेश में हिन्दी के बाद संस्कृत ही ऐसी भाषा है, जो सर्वाधिक रूप से पढ़ी जाती है।

हरियाणा संस्कृत परिषद के महासचिव डा० रत्ना राम मलिक ने बताया कि इस समय हरियाणा प्रदेश में संस्कृत भाषा की जो दुर्गति हो रही है, वैसी किसी अन्य प्रदेश में नहीं। पड़ौसी राज्य पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में भी संस्कृत की स्थिति हरियाणा प्रदेश से काफी बेहतर है। हरियाणा प्रदेश में विद्यालय स्तर तक संस्कृत को मात्र वैकल्पित विषय बनाकर उसे पशुपालन व ड्राइंग इत्यादि विषयों के साथ जोड़ दिया गया है। जमा दो प्रणाली में संस्कृत अनिवार्य विषय को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया है।

इस समय हरियाणा में मात्र कुछ हजार विद्यार्थी ही संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जब कि इस प्रदेश की सारी विरासत संस्कृत भाषा की ही देन है। प्रो० मलिक ने रोष प्रकट करते हुए बताया कि हरियाणा साहित्य अकादमी तथा हरियाना शिक्षा बोर्ड ने संस्कृत को कोई अभिमान नहीं दिया तथा इन साहित्यिक संस्थाओं में इसके प्रतिनिधि न के बराबर हैं। हरियाणा साहित्य अकादमी ने पिछले दो वर्षों से संस्कृत भाषा के विकास व प्रचार के लिये एक भी समारोह आयोजित नहीं किया।

प्रो० मलिक ने आरोप लगाया कि उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय की अवमानना करते हुए हरियाणा सरकार संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में लागू नहीं कर रही है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में तो संस्कृत अनिवार्य विषय लगभग समाप्त हो गया है।

राष्ट्रीय एकता और ऋषि दयानन्द

(पृष्ठ ११ का शेष)

तथा लेखन के लिये संस्कृत या गुजराती भाषा का। परन्तु महर्षि यह भली-भांति जानते थे कि एक तो हिन्दी भारत मे सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली तथा लिखी जाती है। दूसरे हिन्दी की लिपि तथा वर्णमाला पूर्ण तथा वैज्ञानिक है।

यद्यपि भारत के संविधान में भारत की चौदह भाषाएं स्वीकृत हैं तथापि भारत का हित इसी मे है कि संविधान द्वारा स्वीकृत इन सभी भाषाओं की एक लिपि देवनागिरी हो। इसमें भाषायी उन्माद का मूलोच्छेदन होगा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र की जनता एक दूसरे को समझेगी तथा पारस्परिक निकटता की स्थापना हो सकेगी।

आर्यसमाज का जो सदैव से राष्ट्रहित के कार्यों में अग्रणी रहा है यह अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है, कि एक ऐतद्विषयक प्रचार में पूरी शक्ति के साथ जुट जाये; जिससे जनमत जागृत हो। एक समय था जब विदेशी साम्राज्य भारत पर छाया था, तब आर्यसमाज ने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय जागरण के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। यदि यह कह दिया जावे तो अतिशयोक्ति न होगी कि आर्यसमाज की सारी शक्ति स्वाधीनता के मन्त्र का प्रचार करने में लगी हुई थी। यह ऐक ऐसा सत्य है कि जिसे भारतीय नेताओं ने ही नहीं अपितु भारत से बाहर के विदेशी विद्वानों तथा स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य ने भी स्वीकार किया।

अच्छा हो कि स्वामी दयानन्द के इन दोनों सूत्रों के प्रचार में आर्यजन पूर्णतापूर्वक जुट जावें और ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार करें।

शिक्षाप्रद नीति वचन

आचरण और व्यवहार से कुल का पता चलता है, बोली से मनुष्य के देश का पता चलता है, आदर भाव से प्रीति का पता चलता है, आंखों से मन के भाव का पता चलता है, संकट के समय धैर्य का पता चलता है- संगीत से मनुष्य की प्रकृति का पता चलता है और कोई भी काम कैसा है इसका पता उसके परिणाम से चलता है।

दुष्ट व्यक्ति का साथ किसी भी सूरत में अच्छा नहीं होता। दुष्ट व्यक्ति और सांप इन दोनों में सांप फिर भी अच्छा है क्योंकि सांप तो कालवश सिर्फ एक ही बार काटता है पर दुष्ट तो पग-पग पर हानि पहुंचाता है। कोयला जलता हुआ तो हाथ जला देता है और ठण्डा हो, तो भी हाथ काले कर देता है।

जिसे विद्याध्ययन, साहित्य, संगीत, कला, सांसारिक वैभव, सुखों के भोग. धन-सम्पदा, सुन्दर वस्तुएं, सुन्दर स्त्री और सुख-दुःख का अनुभव इन सबमें रुचि न हो वह या तो कोई सिद्ध महापुरुष है या फिर मानव रूप में मूढ़ पशु है। सामान्य मनुष्य इनसे अवश्य आकर्षित होता है पर जो इनमें सामान्य रुचि लेता है वह बुद्धिमान है।

जो प्राप्त वस्तु से सन्तुष्ट रहता है और अप्राप्त के लिए दुःखी नहीं रहता, जिस हाल में हो उसी में प्रसन्न रहता है और सब कुछ ईश्वर की इच्छा मान कर राजी रहता है वह व्यक्ति दुःख से बचा रहता है और जो व्यक्ति दुःख से बचना जानता है वह बुद्धिमान है क्योंकि बुद्धिमान दुःखी नहीं होता।

जो बात के मर्म को तुरन्त समझ लेता है, सुनने योग्य बातों को एकाग्रचित हो सुनता है और व्यर्थ की बातों में रुचि नहीं रखता खूब सोच-विचार करके ही कोई काम शुरू करता है और हाथ में लिये काम को अधूरा नहीं छोड़ता और जो बिना पूछे किसी को सलाह नहीं देता है, वही बुद्धिमान है।

संस्कृत विद्वान आचार्य राम शास्त्री जी का आकस्मिक निधन

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य जगत व संस्कृत जगत के मूर्धन्य विद्वान प्रज्ञाचक्षु, १०५ वर्षीय, स्वतन्त्रता सेनानी, संस्कृत शिक्षण सरणी के यशस्वी लेखक आचार्य राम शास्त्री वैद्य का आकस्मिक निधन गुरुवार दिनांक २९-६-९५ को हो गया है। गत दो तीन वर्षों से कूल्हे की हड्डी टूट जाने से उनके दो आप्रेशन हो चुके थे। यात्रा में लू लग जाने से उनका आकस्मिक निधन हो गया।

परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए रविवार दिनांक २-७-१९९५ सायं ५ से ६॥ बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग में श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया है आर्य जनता से निवेदन है कि इस सभा में उपस्थित होकर अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजा जा रहा है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,
प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गोहत्या करने वालों को कड़ा से कड़ा दण्ड : शेखावत

मुख्य मन्त्री श्री शेखावत राजस्थान ने कहा कि राजस्थान की धरती पर अब गोहत्या करने वालों को कड़ा से कड़ा दण्ड दिया जाएगा। मुख्यमन्त्री बांसवाड़ा से ६० कि. मी. दूर सरेडी बड़ीगांर में आयोजित समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि राजस्थान में गो संरक्षण एवं गो संवर्धन के लिए हाल ही में राज्य विधान सभा में कानून पास कर दिया गया जिसके तहत राज्य में अब कहीं भी गोहत्या नहीं होगी और गोसंवर्धन के लिए विशेष प्रयास किये जावेंगे।

अ. भा. कृषि गो सेवा संघ के अध्यक्ष मानवमुनि ने मुख्यमन्त्री श्री शेखावत को धन्यवाद पत्र लिखते हुए निवेदन किया कि गोपालकों को आर्थिक अनुदान दिया जावे ताकि गायों का पालन कर सके। नागरिकों को गाय का दूध उपलब्ध हो सके। गाय का दूध व भैंस के दूध के भावों में भी अन्तर नहीं हो। हर जिले में गोसदन स्थापित किए जावे ताकि कतल मे लेने वाले गाय बैल बछड़े जो जप्त किए जावें तो उन्हें सुविधा से रखा जा सके।

—मानवमुनि

विदेशी भाषाओं पर प्रतिबन्ध लगा

कुछ समय पूर्व समाचार पत्रों में छपा था कि फ्रांसीसी भाषा में जो व्यक्ति अंग्रेजी अथवा अन्य विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग करेंगे और आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में फ्रांसीसी कार्यक्रमों में अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ करेंगे तो उन्हें दण्डित किया जाएगा। ईरान सरकार का भी कुछ इसी प्रकार का समाचार अखबारों में छपा था।

अब इण्डोनेशिया जैसे एक छोटे से किन्तु स्वाभिमानी देश का समाचार ५ जून १९९५ को नई दिल्ली के टाइम्स आफ इंडिया में प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार राष्ट्र की "भाषा-इंडोनेशिया" के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए विदेशी शब्दों के प्रयोग पर रेडियो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। कार्यक्रम प्रारम्भ करने अथवा उनका परिचय देने के लिए भी वहां विदेशी भाषाओं का प्रयोग सर्वथा बन्द कर दिया गया है।

—जगन्नाथ, संयोजक राजभाषा कार्य

सदा दानियों, अहिंसकों और ज्ञानियों की संगति करो

देहरादून। जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने ग्राम गणेशपुर (जिला सहारनपुर) में आर्य समाज के नव-निर्मित सत्संग-भवन में यज्ञ कराया। पं० सुगनचन्द जी के भजनों के पश्चात् वेद-प्रवचन करते हुए श्री बाली ने बताया कि सृष्टि के आदि से सत्यज्ञान के स्रोत के रूप में सर्वाधिक प्रामाणिक वेद को ही माना गया है। १२ करोड़ वर्ष पूर्व मनु ने एक करोड़ वर्ष से अधिक पहले श्री राम ने और ५ हजार वर्ष पूर्व श्री कृष्ण ने भी सर्वाधिक महत्व वेद को ही दिया।

ऋग्वेद ५-५१-१५ की व्याख्या करते हुए श्री बाली ने बताया कि कल्याण के अभिलाषियों को सदा दानी, अहिंसक या ज्ञानी व्यक्ति की ही संगति करनी चाहिए। दान की भावना के अभाव में व्यक्ति स्वार्थ में डूब जाता है और स्वार्थ अनेक पापों को जन्म देता है।

— देवदत्त बाली

वधु की आवश्यकता

२९ वर्षीय नवयुवक, बी० काम, एयर फोर्स में कार्यरत, वेतन ४०००) रुपए मासिक, कद ५ फुट १० इंच, रंग गोरा, स्वस्थ नवयुवक (पहली पत्नी की दुर्घटना में मृत्यु—जिससे चार वर्षीय पुत्र है) के लिए अविवाहित, तलाकशुदा, विधवा, सुन्दर, सुशील गृह कार्य में दक्ष वधू की आवश्यकता है। जात-पात बन्धन नहीं। निम्न पते पर फ़ोटो सहित पत्र व्यवहार एवं सम्पर्क करें—

—रामसरन दास आर्य
बी०—१७ बी० जंगपुरा विस्तार
नई दिल्ली—११००१४
टेलीफोन—४६११४०८

कुरसी फुदक रही है

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जिधर देखो उधर प्रगति की राह रुक रही है,
हर बसर के पेट में कुरसी फुदक रही है।
बाहर उजलापन लिए हैं नीयत के खोटे बड़े।
मुख में है राम बगल में छुरी दुबक रही है।
कुरसी फुदक रही है ॥१॥
चाहते हैं बिना पंख के ऊंची उड़ान भरना।
मेंढकी के पैर में टहनाल ठुक रही है।
कुरसी फुदक रही है ॥२॥
पेंदी बगैर लोटा जाता है लुढ़क अक्सर,
है अचम्भा पेंदी वाली लुटिया लुढ़क रही है।
कुरसी फुदक रही है ॥३॥
प्रकाशवान पथ पर चलना नहीं सुहाता,
है जा रहे जहां पर अंधेरी झुक रही है।
कुरसी फुदक रही है ॥४॥
वक्त की धार को समझे नहीं कोई क्यूं कर,
चूल्हा पड़ा है ठण्डा हांडी खदक रही है।
हर बसर के पेट में कुरसी फुदक रही है ॥५॥

प्रवेश प्रारम्भ

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ में १६ जून से प्रवेश प्रारम्भ है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त परीक्षा को मान्यता, शहर से दूर एकान्त स्थान काली नदी का सुरम्य तट. भोजन की उत्तम व्यवस्था, प्राचीन गुरुकुलाधार रहन-सहन, शिक्षा व्यवस्था, कड़ा अनुशासन। इच्छुक अभिभावक अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने हेतु १०) रुपए में नियमावली निम्न पते से प्राप्त करें।

—बुद्धदेव आचार्य
प्राचार्य, श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय
साधु आश्रम, अलीगढ़

सार्वदेशिक सभा की उपलब्धियां

(पृष्ठ १ का शेष)

आवास हेतु २ ब्लॉकों का निर्माण आधुनिक ढग से किया जा चुका है जिस पर कई लाख रुपये की लागत आई है। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों के आवास हेतु क्वार्टर, पूरी १२.५ एकड़ भूमि की चार दीवारी, २ भूसा गोदाम, २ नलकूपों की व्यवस्था गौशाला की पूरी भूमि को समतल कराकर उपजाऊ बनाना तथा अच्छी नस्ल की १०० गायों को क्रय करके वहां पर लाया जा चुका है, जहां पर प्रतिदिन लगभग ५०० किलोग्राम दूध का उत्पादन हो रहा है। इन सभी कार्यों पर सभा द्वारा लाखों रुपये का व्यय अब तक किया जा चुका है और वर्तमान में वहां पर १२ गोपालक कार्यरत है।

४. आर्यसमाज ग्रीनपार्क को दुगनी भूमि दिलाना तथा सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान सेठ प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास की मीसा मे गिरफ्तारी। सभा प्रधान रामगोपाल शालवाले द्वारा प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी से मिलकर उन्हें रिहा कराना। आर्यसमाज ग्रीन पार्क के मन्दिर को डी०डी०ए० द्वारा तोड़ जाने पर सभा प्रधान जी के प्रयत्नों से आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिये नि:शुल्क भूमि प्राप्त करना और उसी स्थान पर दुगुनी भूमि लेकर पुन: मन्दिर निर्माण किया गया।

५. हैदराबाद सत्याग्रहियों को सम्मान पेंशन : १९३८-३९ में निजाम के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाए गये सत्याग्रह आन्दोलन के सत्याग्रहियों को सभा के प्रयत्नों से सरकार द्वारा उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मान पेंशन देने की स्वीकृति। अब तक हजारों लोग पेंशन से लाभान्वित हो चुके हैं। पेंशन अनुदान दिलाकर राजनीति के क्षेत्र में उपयोगी कार्य किया गया।

६. मीनाक्षीपुरम में धर्मान्तरण का आन्दोलन : १९८१-८२ मे अरब पेट्रोडालर के बल पर हुए हरिजनों के इस्लामीकरण को रोकने के लिए पूरे देश में जागृति अभियान प्रारम्भ। मीनाक्षीपुरम में सम्मेलन के अनन्तर सभी मुस्लिम हरिजन पुन: वैदिक धर्म मे प्रविष्ट वहा पर मन्दिर व विद्यालय भवन का निर्माण।

७. विधर्मी विद्वानों द्वारा स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश : पं. जयप्रकाश आर्य, डा० आनन्द सुमन, प० महेन्द्रपाल आर्य तथा डा० अमरेश आदि अनेक मौलवियों और अरबी के विद्वानों द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार।

८. सऊदी अरब से रामकुमार भारद्वाज की रिहाई : १९८६ में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के आरोप में सऊदी अरब सरकार द्वारा हरियाणा के रामकुमार भारद्वाज को देहरान जेल की काल कोठरी में बन्द थे—सभा के प्रयत्नों से उनकी रिहाई और भारत वापसी।

शुद्धि कार्य १९८६ में पोपपाल के भारत आगमन पर एक लाख हिन्दुओ को ईसाई बनाने की योजना विफल। २५०० ईसाइयो की रांची में शुद्धि। सरगुजा और सीतापुर के वनवासी सम्मेलनों द्वारा कई हजार ईसाईयो शुद्धि। लाखों रुपये का सहायता कार्य।

१०. स्थिर निधियां : पिछले १८-२० वर्षों मे सभा के कार्यों से प्रभावित अनेक दानवीरों द्वारा लाखों रुपयों की स्थिर निधियां सभा में स्थापित।

११. सहायता तथा छात्रवृत्तियां : सभा द्वारा आर्य विद्वानों, उपदेशकों विधवाओं, गुरुकुलों के छात्र-छात्राओ आदि को इस समय प्रतिवर्ष लगभग ५ लाख रु० की राशि छात्रवृत्ति तथा सहायता में व्यय की जाती है।

१२ दयानन्द सेवाश्रम संघ : वनवासी और जनजातीय क्षेत्रों में वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिये दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना। नागालैंड, आसाम, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गढ़वाल में अनेक केन्द्रों का संचालन। जिनको लाखों रुपये सभा द्वारा प्रतिवर्ष सहायता राशि दी जाती है।

१३. भारत में हिन्दू मुस्लिम दगा पीड़ित क्षेत्रो मे लाखों रुपए से मुरादाबाद, मेरठ, सम्भल, अलीगढ़, सहारनपुर, आदि मे सहायता कार्य।

१४. जामिया-मिलिया वि. वि. के छात्रों द्वारा वीभत्स काण्ड और करोल बाग आ०स० के कार्य का सरकार से निर्णय कराना।

१५. दिस. १९९० में आर्य महासम्मेलन दिल्ली के शुभावसर पर रेलवे द्वारा आर्य यात्रियों को आधा किराया स्वीकार कराकर आर्य जनता को लाभान्वित करना।

१६. आर्यसमाज शिवाजी वृज की भूमि का अधिग्रहण, यज्ञशाला निर्माण के समय तीन व्यक्तियों की मृत्यु हो जाने पर सुरक्षा व्यवस्था, पुरोहित की नियुक्ति तथा भवन निर्माण।

१७. नयी पीढ़ी योजना के अन्तर्गत आर्यवीर दल के शिविर और नये युवकों में उत्साह भरना।

१८. न्याय सभा का गठन और प्रान्तीय सभाओं व आर्यसमाजों के विवादों का शमन मान्यवर श्री महावीरसिंह जी अध्यक्ष न्याय सभा के द्वारा कराना, न्याय सभा के सदस्यों का नि:शुल्क सेवा कार्य प्रशंसनीय है।

१९. श्री रंगनाथ कमीशन के समक्ष इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद सिक्खों की हत्या होने पर आर्यसमाज पर भी विपत्ति। सभा द्वारा साहसिक कार्य जनता में प्रशंसा।

२०. एक सौ वर्ष व्यतीत होने पर आर्यसमाज का इतिहास डा. सत्यकेतु जी से लिखाकर एक अभाव की पूर्ति तथा प्रशंसनीय कार्य।

२१. श्री करपात्री जी द्वारा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का खण्डन करने पर सभा द्वारा प्रत्युत्तर में आचार्य विशुद्धानन्द जी से तैयार कराकर एक भाग छपवाकर समुचित उत्तर दिया गया।

२२. इन सब कार्यों की पूर्ति में सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का सराहनीय योगदान। संयास दीक्षा ग्रहण कर अनुपम कार्य।

२३. संयास दीक्षा लेने पर घर परिवार छोड़ना धन दौलत माया मोह का त्याग और गैरिक वस्त्र धारण कर लेना।

२४. दिल्ली, के नरेला क्षेत्र में बूचड़खाना बन्द करने में सभा का योगदान।

२५. महर्षि दयानन्द के जन्म-दिवस पर सरकारी अवकाश घोषित कराने में सभा का प्रयास।

२६. महर्षि दयानन्द जन्म-दिवस समारोह राष्ट्रपति भवन में आयोजित कराना।

२७. महाराष्ट्र एव उत्तरकाशी में आये विनाशकारी भूकम्प में सभा द्वारा लाखों रुपये की सहायता करना।

२८. लातूर में अनाथ बच्चों के लिये वैदिक छात्रावास की स्थापना करना। आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य सभा द्वारा किये गये हैं।

सार्वदेशिक सभा के इन उपरोक्त संक्षिप्त कार्य विवेचनों के आधार पर आर्यजन यह स्वय जान सकते हैं कि गत् ३० वर्षों में सार्वदेशिक सभा ने आर्यसमाज सगठन को कितनी गति प्रदान की है, और दयानन्द के मिशन को कितनी सफलता मिली है। सभा की ओर से यह संक्षिप्त विवेचना आर्यजनों की जानकारी हेतु देना इसलिए आवश्यक हो गया है कि कुछ सगठन विरोधी लोग इस समय आर्यजनों को भ्रमित करने के लिए यह प्रचार कर रहे हैं कि विगत वर्षों में सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने आर्यसमाज की प्रगति का कोई कार्य नहीं किया है। अन्धों को समझाया जा सकता है, लेकिन आंख वालों को क्या कहें।' उनकी तो आखें अब आर्यजन ही खोल सकेंगे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-२

''स्ल पंजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९१ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६-७-९१) ... नं० U (C) ९३/९१
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) ... Post in N.D.P.S.O on 6,7-7 1991

सम्पादक के नाम-पत्र

स्वामी ओमानन्द प्रो० शेरसिंह व स्वामी विद्यानन्द आदि का सार्वदेशिक सभा पर कब्जे का प्रयास

श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
मान्यवर,

आपके माध्यम से आर्य जनता को यह सूचित करना आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा में दिनांक २७ को हैदराबाद में स्वामी सुमेधानन्द तथा श्री केशवदेव वर्मा आदि सम्मिलित हुए, इसमें इनकी ओर से देहली के स्वामी विद्यानन्द को भी प्रतिनिधि बनाया गया था, जिसे सार्वदेशिक सभा ने स्वीकार नहीं किया इस पर उपरोक्त व्यक्तियों ने सभा की बैठक स्थगित करने की मांग की और बड़ा हंगामा किया। सार्वदेशिक सभा ने सर्वसम्मति से श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम्, प्रधान, श्री सोमनाथ मरवाह कार्यवाहक प्रधान, श्री छोटूसिंह उपप्रधान, पं० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री, प्रो० पी० गोयल, कोषाध्यक्ष तथा अन्य अधिकारी व अन्तरंग सभासद् निर्वाचित किये।

परन्तु श्री विद्यानन्द, ओमानन्द, प्रो० शेरसिंह तथा श्री सुमेधानन्द ने एक पृथक बैठक करके स्वयं को सार्वदेशिक सभा का मन्त्री तथा स्वामी विद्यानन्द को प्रधान घोषित कर दिया और दिनांक २० व २१ मई को देहली में सार्वदेशिक सभा पर कब्जा करने का प्रयास किया, वहां पुलिस द्वारा मार-पीट की गई। परन्तु पं० वन्देमातरम् जी के प्रयास से इन्हें निकाल दिया गया, पुलिस में रिपोर्ट है कि कुछ लोग वहां से सभा के आवश्यक कागजात तथा नकदी भी ले गये, इनकी ओर से देहली में अब मुकदमे चल रहे हैं, जब कि देहली के रजिस्ट्रार संस्था की ओर से श्री रामचन्द्रराव आदि को मान्यता दे दी गई है। तथा देहली के सिविल न्यायाधीश ने दिनांक ' जून को एक आदेश जारी किया है कि स्वामी विद्यानन्द तथा श्री सुमेधानन्द स्वयं को सार्वदेशिक सभा का अधिकारी न माने और न ही इस रूप में कोई कार्य ही करे।

उपरोक्त सब समाचार सार्वदेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र 'सार्वदेशिक' के दिनांक ११ जून के अंक के अनुसार संक्षेप में ही प्रकाशित किया गया है। इसमें इन व्यक्तियों के विषय में और भी अधिक प्रकाशित होना है।

आपको यह भी ज्ञात होगा कि सुमेधानन्द आदि अनेक व्यक्तियों ने इसी प्रकार दिनांक १ जनवरी, ९१ को आर्यसमाज आदर्शनगर, जयपुर, उसकी शिक्षण संस्थाओं व उसकी करोड़ों की सम्पत्ति पर कब्जा करने का असफल प्रयास किया था, मार-पीट होते-होते बची। इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी इनके कब्जे, सभा व आर्यसमाज के भवन अन्यों को दे देने आदि के अनेक अवैधानिक, अवांछनीय तथा निन्दनीय कार्य चल रहे हैं, जो मेरे द्वारा सप्रमाण प्रकाशित किए जा चुके हैं, जिसका इनकी ओर से आज तक कोई उत्तर नहीं ?

आशा है राजस्थान की विवेकशील आर्य समाजें आर्यसमाज के हित में इनकी उपरोक्त कार्यवाहियों का प्रबल विरोध करे तथा इनके सम्बन्ध में शीघ्र ही निर्णय लेना अपना आवश्यक कर्तव्य समझेंगी।

दिनांक : २२-६-१९९१

भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर, आर्यसमाज
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग,
कृष्णपोल, जयपुर

स्वतन्त्रता सेनानियों को बकाया पेन्शन राशि उच्चतम न्यायालय के आदेश पर मिली

नई दिल्ली। स्वतन्त्रता सेनानियों को बकाया पेन्शन दिलवाने के उद्देश्य से श्री जी. राजबीर आर्य बनाम भारत संघ नामक एक मुकदमा उच्चतम न्यायालय में दाखिल किया गया। इस मुकदमे का निर्णय गत वर्ष १६ अक्तूबर को सुनाया गया था। इस निर्णय के अनुसार गृह मन्त्रालय को यह निर्देश दिया गया कि जिस तिथि को प्रार्थी द्वारा प्रार्थना-पत्र गृह मन्त्रालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया उसी तिथि से आगे पेन्शन राशि का भुगतान किया जाय। जबकि गृह मन्त्रालय अलग अलग बाद की तिथियों से पेन्शन दे रहा है। इस मुकदमे के निर्णय के आधार पर ६१ याचिका कर्ताओं को दो से ९ वर्ष तक की बकाया राशि एक मुश्त अदा की जाएगी।

गृहमन्त्रालय के अधिकारी इस निर्णय के बावजूद भी यह बकाया राशि देने में आना कानी कर रहे थे। अन्ततः गत जून के प्रथम सप्ताह में गृह मन्त्रालय ने उक्त बकाया राशि का भुगतान किए जाने के आदेश जारी कर दिए हैं। इस सारे मुकदमे को सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने अदालत के समक्ष प्रस्तुत किया था।

स्वतन्त्रता सेनानी संघ के नेता श्री राजबीर ने इस सफलता के लिए श्री विमल वधावन का धन्यवाद किया है। श्री राजबीर ने कहा है कि अन्य स्वतन्त्रता सेनानियों को भी अपनी अपनी बकाया पेन्शन राशि अधिकार पूर्वक प्राप्त करने के लिए अदालत में मुकदमा दाखिल करना चाहिए।

मुस्लिम युवती ने वैदिक धर्म अपनाया

सोलापुर आर्य समाज मन्दिर में श्री तुकाराम आर्य के पौरोहित्य में दि० १९-६-९१ को १७ वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती शेख बेगमबी को उसकी इच्छानुसार शुद्धि संस्कार करके वैदिक धर्म में प्रवेश किया। उसका नाम कु० सुरेखा रखा गया तथा उसका विवाह २६-६-९१ को श्री केप्पा बिराजदार (सरकारी कर्मचारी) आयु २५ वर्ष के साथ वैदिक रीति से आर्य समाज के प्रधान श्रीधर नारायण राव कुलकर्णी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आदर्श और नियम

सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल को जिस दिन फांसी लगनी थी उस दिन सवेरे जल्दी उठकर वे व्यायाम कर रहे थे। जेल वार्डन ने पूछा कि आज आपको एक घंटे बाद फांसी लगनी है फिर व्यायाम से क्या लाभ? उन्होंने उत्तर दिया—'जीवन आदर्शों और नियमों से बंधा हुआ है। जब तक शरीर में सांस चल रही है तब तक नियमों में व्यवधान को आने देना कहां तक उचित है ? मैं अपना धर्म निभा रहा हूं, आप अपना कर्तव्य पूरा कीजिए।'

—सुनील कुमार

निःशुल्क व्याकरण पढ़ें

कृपया व्याकरण पढ़ने वाले छात्र निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें। छात्र का पूरा खर्च विद्यालय वहन करेगा।

—ओमानन्द योगाचार्य
देवधर्म, (गोवर्द्ध गिरी) इन्दौर (म०प्र०)
आने का मार्ग—इन्दौर से गांधीनगर, गांधीनगर से देवधर्म।

सार्वदेशिक प्रेस कार्यालय नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक २१]   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   श्रावण कृ० ११   सं० २०५२ २३ जोलाई १९९५
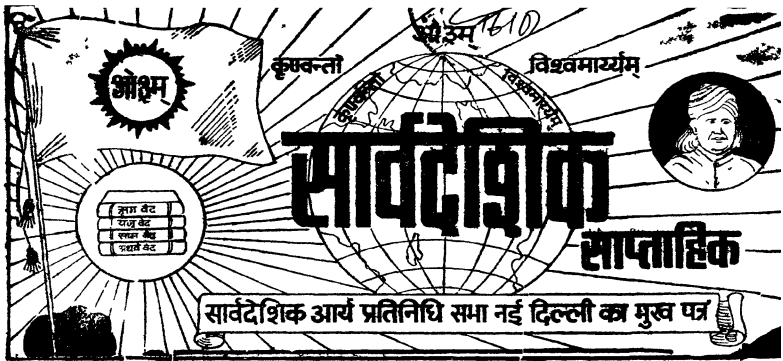
समाज को विभाजित करने के लिए "अनुसूचित जाति" शब्द ब्रिटिश सरकार ने दिया था

"भारत एक है भारतीयों का एक समाज है"

पृथकतावादी ताकतों को समूल नष्ट करना होगा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम द्वारा उपराष्ट्रपति श्री के० आर० नारायणन को लिखा गया पत्र

सेवा में—
श्री के० आर० नारायणन जी
उपराष्ट्रपति भारत गणतन्त्र
नई दिल्ली

महामहिम

नमस्ते।

दिनांक ५ मई १९९५ को बंगलौर स्थित "अम्बेडकर स्मारक" के प्रांगण में "स्मृति धाम" का उद्घाटन करते समय आपने अपने भाषण में कहा था, कि आप हृदय से "अनुसूचित जाति" शब्द का प्रयोग पसन्द नहीं करते हैं। यह नाम तो अंग्रेजों ने भारतीय समाज के निर्धन वर्ग को दिया था।

"अनुसूचित जाति" शब्द के सम्बन्ध में आपके विचारों का आर्य समाज स्वागत करता है। डा० अम्बेडकर के विचारों के बारे में आपने जो कुछ कहा वह काफी जानकारी देने वाला था।

उन्होंने (डा० अम्बेडकर) ने कहा था कि (अनुसूचित जातियां) कोई विशेष जातियां नहीं हैं। बल्कि ये वे लोग हैं, जो जाति से बाहर हैं। इसका स्पष्टीकरण करते हुए आपने बताया था कि यह वह वर्ग है जो जाति-प्रणाली से बाहर है।

परमात्मा हमें शक्ति दें कि हम अनुसूचित जाति की इस परिभाषा को इसी रूप में समझ सकें। आर्य समाज जन्म के आधार पर जाति-वाद को नहीं मानता।

आपने कहा था कि सामाजिक एवं आर्थिक अन्याय एवं विषमताओं का सबसे पिछली कई शताब्दियों से चला आ रहा है। मैं आपके इस विचार से सहमत हूं। कुछ लोगों ने इसे वर्ग-संघर्ष की संज्ञा दी है जिसका अर्थ है "एक वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए पूंजीपतियों और मजदूरों के बीच संघर्ष"। (शेष पृष्ठ ११ पर)

"दि वेदाज" धारावाहिक के विरोध में आर्य समाज का शिष्टमण्डल बम्बई रवाना

नई दिल्ली १६ जुलाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल आज बम्बई रवाना हुआ। यह शिष्ट मण्डल 'दि वेदाज' नामक धारावाहिक के निर्माताओं से मिलकर उन्हें वेदों के बारे में आर्य समाज के दृष्टिकोण तथा स्वामी दयानन्द की वेदों के प्रति भावनाओं से अवगत करायेगा। इस शिष्ट मण्डल में पं० वन्देमातरम् के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, डा० महेश वेदालंकार तथा श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय भी सम्मिलित हैं। ज्ञातव्य है कि बम्बई के कुछ निर्माता 'दि वेदाज' नाम से एक धारावाहिक बना रहे हैं जिसमें वेदों की मान्यताओं को काफी तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। इस धारावाहिक का आर्य समाज के क्षेत्र में कड़ा विरोध प्रकट किया जा रहा है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अमरीका को भेजा गया आर्यसमाज का ज्ञापन

हम, आर्य समाज के सदस्य, अमेरिका की प्राईवेट संस्था सी. एन. एन. केबल न्यूज नेटवर्क के एक अविवेकपूर्ण कार्य के विरोध में यह छोटा सा ज्ञापन प्रस्तुत करना चाहते हैं।

यह अविवेक पूर्ण कार्य सी. एन. एन. द्वारा दिनांक १०-६-९१ को दूरदर्शन के चेनल संख्या १४ पर प्रसारित कार्यक्रम से सम्बन्ध रखता है। इसमें "जम्मू-कश्मीर" को पाकिस्तान का भाग दिखाया गया था। तथा कुछ लावारिस गायों को बम्बई शहर की एक भीड़ भाड़ वाली सड़क पर घूमते हुए दर्शाया गया था।

बाद में सी. एन. एन. के उप-प्रधान ने स्वीकार किया कि वे गायों के बारे में कुछ भारतीयों की संवेदनशीलता को नहीं समझ सके थे, लेकिन उनके सूचना प्रसारण में जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान का अंग नहीं दिखाया गया था।

हमारा कहना है कि उनका यह प्रतिवाद हास्यास्पद है। स्पष्टतः एक बड़े गैर सरकारी प्रतिष्ठान के उप-प्रधान एक स्वयं पैदा की हुई अवांछित स्थिति से अपने आपको बचाकर निकालना चाहते हैं।

यह केवल असावधानी या भूल का मामला नहीं है। लगभग १,९०,००,००० से अधिक टेलीविजन देखने वालों ने इसे देखकर सी०एन०एन० के इस कार्य की निन्दा की और उसे धृष्टता पूर्ण बताया। इस दशा में सी. एन. एन. के उप-प्रधान के प्रतिवाद पर विश्वास करना असम्भव हो जाता है।

सी. एन. एन. ने जान बूझकर तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है।

महामहिम की कश्मीर यात्रा, उसके लिए व्यापक तैयारियां किया जाना, तथा उसे अत्यधिक प्रचारित करना, वह भी उस समय जब भारत सरकार जम्मू-कश्मीर में चुनाव कराने के लिये तैयार थी, हमें यह सोचने के लिये बाध्य करते हैं कि इस सम्पूर्ण नाटक के परोक्ष में कुछ न कुछ ऐसा है जो भारत की अखण्डता और सुरक्षा के लिये अशुभ है।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है पहले यह एक देशी रियासत थी जिसका राजा हिन्दू था, जिसने एक विलय पत्र (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर करके भारत गणराज्य में अपनी रियासत का विलय स्वीकार कर लिया था। यह प्रदेश आज जल रहा है। पाकिस्तानी सेना, अनेक रंगों के मुस्लिम आतंकवादी, भाड़े के अफगान सैनिक तथा पाकिस्तानी खुफिया एजेन्सी आई. एस. आई. यह सभी वहां सक्रिय है।

इस सन्दर्भ में हम लार्ड माउन्टबेटन का वह कथन प्रस्तुत करना उचित समझते हैं जो उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार लेरी कालिन्स तथा डामिनिक लापिआरे के एक प्रश्न के उत्तर में मार्च १९४७ मे दिया था। उन्होंने कहा था—

"वे (पाकिस्तानी) उसी क्षण समाप्त हो जायेंगे, जिस दिन अमेरिका उन्हें सहायता देना बन्द कर देगा।"

और अब आपका देश (अमेरिका) पाकिस्तान का जन्म होने के दिन से ही उसे अपने प्रभाव का क्षेत्र बढ़ाने की दिशा में पैर रखने के पत्थर के रूप में उपयोग कर रहा है।

वर्तमान में, जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान का एक भाग दिखाना, तथा बम्बई की एक भीड़ वाली सड़क पर लावारिस गायों का घूमते हुए दिखाना अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अमेरिका की एक बहुत सोची समझी हुई चाल है।

इस प्रकार की चाल को हम भारत और अमेरिका के बीच एक नये प्रकार के सम्बन्ध के सूत्रपात के रूप में देखते हैं जो आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगा और हमारे लिये हानिकारक।

भारत के लोग इस प्रकार के सम्बन्ध को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

भारत की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है, एक ऐसी संस्कृति जहां मनुष्य को जानवर नहीं बनाया जाता है। आर्य समाज का उद्देश्य ही समस्त विश्व को एक उत्कृष्ट मानव समाज बनाना है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" हमारा नारा है।

आर्य समाज के इतिहास का गौरवमय एक अध्याय

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कांतिकुमार कोरटकर ने हैदराबाद सत्याग्रह की पृष्ठभूमि का विस्तृत विवरण देते हुए एक पुस्तक लिखी है जिसमें यह साबित किया गया है कि आर्य समाज और स्वामी दयानन्द की विचार धारा में निहित राष्ट्रभक्ति के कारण ही इतने बड़े स्तर का सत्याग्रह सफलता पूर्वक संचालित हो सका।

पुस्तक मे बताया गया है कि वैसे तो विश्व में कई अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें हैं परन्तु वे सब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में राजनीतिक गतिविधियों में संलिप्त हैं तथा इसी कारण उनकी विचारधारा भी पक्षपात पूर्ण है चाहे इसे ऊपर से धार्मिक विचारधारा कहा जाता है। पुस्तक में यह कहा गया है कि आर्य समाज अपनी सार्वभौम संस्था "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के माध्यम से काम करने वाला एकमात्र ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक संगठन है जो अपने मूल देश के अतिरिक्त किसी अन्य देश के आन्तरिक मामलों में दखल नहीं देता।

आर्य समाज न्याय और मानवता के उच्च सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव जूझने को तैयार है निजाम की अन्याय और अमानवीय नीतियों का विरोध समूचे आर्य जगत में जिस वातावरण तथा पृष्ठभूमि में किया उसका स्पष्ट चित्रण इस लघु पुस्तक में किया गया है।

यह पुस्तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय से ५) रुपए की एक प्रति तथा ४०० रुपए सैकड़ा में प्रचारार्थ प्राप्त की जा सकती है। इसे अधिक से अधिक संख्या में साधारण जनता तक पहुंचाया जाना चाहिए जिससे आर्य समाज के इतिहास के आधार पर समाज में पुनः जागृति पैदा की जा सके।

यह पुस्तक मूल रूप से अंग्रेजी भाषा में है जिसका हिन्दी भाषानुवाद श्री सुरेशचन्द्र पाठक ने किया है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हम पुनः कहते हैं जम्मू-कश्मीर को पाकिस्तान का एक भाग दिखाना एक अशुभ लक्षण है। इससे भारत का विखंडन हो सकता है।

आपके क्षेत्र-वाद को बढ़ावा देने, ईसाई मिशनरियों को परोक्ष रूप से सहायता करके भारत को एक ईसाई देश बनाने, जिसका प्रभाव हम देश के पूर्वोत्तर प्रदेशो मे देख रहे हैं, अमेरिकन स्कूलो की संख्या बढ़ाने और अंग्रेजी भाषा के प्रयोग और पाश्चात्य संस्कृति को लोकप्रिय बनाने की दिशा मे किए गये प्रयत्न कभी सफल नहीं होंगे। सतर्क भारतवासी आपकी हर चाल का विरोध करेंगे।

हम विदेशी प्रसार-साधनो का, चाहे वे विद्युतीय हो या अन्य प्रकार के, हम अपनी संस्कृति का नाश करने के लिए भारत में संस्थापित नहीं होने देंगे।

प्राचीन भारतीय विधि वेत्ता महाराज मनु ने कहा है, "आग की एक चिन्गारी सारे वन को जला देती है और विष की एक बूंद मनुष्य को मार डालती है।"

हम विदेशी प्रचार माध्यमों द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा और मानवीय मूल्यों को चिन्गारी बनाकर भस्मीभूत नही करने देंगे।

हमें आशा है कि आप भारत वासियों की भावनाओं को समझते हुए, दोनों देशों में मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में उचित कार्य करेंगे।

वन्देमातरम् रामचन्द्र राव	सूर्य देव
प्रधान	प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली-११०००२	नई दिल्ली-११०००१

सम्पादकीय—

गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा आइये इस पुरातन पद्धति पर विचार करें

आषाढ़ मास की पूर्णमासी-आषाढ़ी पूर्णिमा-या गुरु पूर्णिमा के नाम से जाना जाती है। इस दिन छात्र ब्रह्मचारी अपने पूज्य-गुरुवर को भेंट में पत्र-पुष्प देते थे। अतः यह पावन दिवस "गुरुपूजा" का पावन पर्व माना गया है। शिष्य वर्ग अपने गुरु की पूजा करके सामर्थ्यानुसार उन्हें भेंट स्वरूप दक्षिणा दिया करते थे। गुरु शिष्य परम्परानुसार गुरु के कुलों में ब्रह्मचारी गण इस पर्व के महत्व को जानते थे और सदा से ही इसका पालन किया जाता रहा है।

मैं जब गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार में पढ़ता था तो इस पवित्र दिन पर विद्यार्थी वर्ग पुष्प-माला लेकर फलों के साथ आचार्य नरदेव शास्त्री जी की कुटिया पर जाकर अभिवन्दन कर उन्हें अपनी तुच्छ भेंट प्रदान करते थे, आचार्य जी उसमें से थोड़ा रखकर सब बांट देते थे। पुष्प चयन करने में काफी समय लगता था। विद्यार्थी अपना अहोभाग्य मानता था कि आज गुरु चरणों में भेंट अर्पित कर रहा हूं। आज का पावन दिन स्मरण कर विगत गुरुकुलीय जीवन को बीत कर उन १२ वर्षों के काल का तापसी जीवन आचार्य का सान्निध्य जीवन को पावन बनाता था।

पहले गुरु का वर-उसकी कर्तव्य निष्ठा जो विद्यार्थी को विद्या व अविद्या अर्थात् आत्मज्ञान और सांसारिक ज्ञान का तत्व बोध कराता था वस्तुतः वैदिक मर्यादानुसार दो प्रकार का कार्य विभाजन दो पृथक् विद्वानों के हाथों में था।

आचार्य वाचस्पत ये नाम, अंगुष्ठमात्र गर्भस्थपूतः एक आचार्य तथा दूसरा वाचस्पति नामक तत्व अपने अन्तेवासी गर्भस्थ पूतः को मां जैसे गर्भ में तो मास रखकर रक्षा करती है उसी प्रकार आचार्य अपने चरित्रवान् जीवन से ब्रह्मचारी के जीवन को पावन बनाता था, यह कर्तव्य बोध कराना आचार्य का कर्तव्य था। परन्तु आश्रमवासी के अतिरिक्त पारिवारिक जनों को पावन सन्देश देने का काम "वाचस्पति" जो भ्रमण कर सद्गृहस्थों को परिमार्जित करते थे। इस प्रकार आचार्य व वाचस्पति यह दो गुरु मानव में कर्तव्य बोध कराने का श्रेय लेते थे।

आज हमारे विद्यार्थी वर्ग मे गुरु-ज्ञान और गुरु मे शिष्य भाव हस्तान्तरण नहीं है। छात्र के ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः ज्ञान के अभाव में चरित्र और चरित्र के बिना भावी समाज की संरचना मृगमरीचिका मात्र रह गई है। शिक्षा का सम्बन्ध यदि चरित्र के साथ न रहा तो उसका अवश्यम्भावी परिणाम यही होगा। अतः गुरु ज्ञान के मूल प्रश्न की ओर कौन ध्यान दें? आज की दूषित राजनीति में शिक्षा का सम्बन्ध चरित्र के बजाय व्यवसाय से जमा रहे हैं यदि चरित्र नहीं रहा तो व्यवसाय के लिए छल-कपटमय जीवन से अपने राष्ट्र को भी धूल धूसरित करने में नहीं हिचकेंगे।

यदि हमारा चरित्र परिपक्व होगा तो समूचा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा। काश-भारत में या हमारी शिक्षा नीति का प्रचार-प्रसार सारे विश्व में प्रजातान्त्रिक पद्धति आश्रम प्रणाली पर लाया जाये तो चरित्र उसकी पहली पद्धति है और इस पद्धति का संरक्षक है हमारा गुरु—जिसके माध्यम से समाज का सही निर्माण किया जाता रहा है। अतः चरित्रवान व्यक्ति आचार्य और वाचस्पति, पैदा करें।

आज का मार्मिक प्रश्न यह नहीं है कि 'हिरण्य गर्भः' कौन है आज का प्रश्न है भारतीय जन-मानस में चरित्र निर्माण किस प्रकार सम्भव है। आज तो गरिमामय गुरु से ही सम्भव है परन्तु गुरु मिले कहां?

गुरु ज्ञान की अविरल धारा गुरु के प्रति आस्था का वह द्वार है जिससे ज्ञान का हस्तान्तरण सम्भव है आज का गुरु वेतन भोगी है उसे ४-६ घन्टे समय यापन करना है। विद्यार्थी कैसा बन रहा है इससे उसे कोई मतलब नहीं है। इसका निर्वहण भी हमारे हाथों में है और हमें ही भावी जीवन की रूपरेखा बनानी है। ट्यूटर मास्टर टीचर के बजाये आचार्य प्राप्त करना है आज छात्र संघ या यूनियनों का गठन, कर विद्यार्थी वर्ग की शक्ति का दुरुपयोग किया है। इसी पीढ़ी को अपने उचित-अनुचित का ही ज्ञान नहीं है।

गुरुपर्व या व्यास पूर्णिमा जैसे पावन पर्व सच्चे या वाचस्पति की सेवा मे जावें और उसके आचार-विचार से हम अपने जीवन का निर्माण करें। इस पर विचार करना चाहिए।

प्राचीन शिक्षा नीति का परित्याग करके नयी पद्धति मे कुछ हाथ लगने वाला नहीं है। हमारी संस्कृति की यह आन्तरिक अगर टूटकर खतम हो गया तो हमारी पुरातन की चर्चा करना व्यर्थ है।

आइये हम इस गुरु पूर्णिमा की पावन वेला पर गुरु के भारीपन को समझें और उसके महत्वपूर्ण पूर्णिमा से हम अपने को पूर्ण करें।

पुस्तक-समीक्षा

सरल योग से ईश्वर साक्षात्कार

ले० स्वामी सत्यपति परिव्राजक

प्रकाशक—दर्शन योग महाविद्यालय

सागरपुर-साबरकांठा गुजरात-पृ० १०८ मू० १२ रु०

महर्षि दयानन्द ने इस प्राचीन आर्षज्ञान को जो प्रायः लुप्त हो गया था दुर्गम पर्वतीय गिरि-गह्वरों में साधना-रत-समाधिस्थ होकर ऋषियों का सान्निध्य पाकर प्राप्त किया और उसे सिद्ध्यसिद्ध्योः समोभूत्वा समत्व योग उच्यते। सफलता-असफलता लाभ-हानि मान-अपमान में समान वृत्ति रहना ही योग साधक की योग्यता है।

इस प्रकार योग की चरम-सीमा ही समत्व योग कहा है।

स्वामी सत्यपति जी के जीवन का अनुभव योग का फल-उसके साधक बाधक, आठ अंगों का स्वरूप-योग की अनिवार्यता-लौकिक सुख की प्राप्ति उसके बाद भी व्यक्ति की कामनाओं का पूर्ण न होना आदि विषयों पर सरल भाषा में बतलाने का प्रयास किया है।

योग का महत्व क्या है—योग के बिना दुःखों से निवृत्ति नहीं है। मानव जीवन पाकर यदि उस सर्वव्यापक सत्ता को जान पाया तब तो जीवन की सार्थकता है। अन्यथा मानव जीवन व्यर्थ है।

जब तक ऐन्द्रिय क्षमता बनी है आयु का क्षय नहीं हुआ, तो फिर आत्म कल्याण के लिए महान् प्रयत्न करता रहे। अन्यथा आग लगने पर मकान में फिर कुआ खोदना व्यर्थ है, उसी प्रकार मृत्यु का समय आने पर कुछ नहीं कर सकेगा।

लेखक विद्वान् और योग की प्रक्रियासे युक्त है ऐसे अनुभवी विद्वान् ने कहा है-कि जीवन का अनुभव ही योग की सत्य सिद्धि है विद्वज्जन इस पुस्तक को पढ़े व मनन करे तो योग की प्रक्रिया का सत्प्रचार सम्भव है।

प्रकाशन की प्रक्रिया विधिवत् चलती रहे इसके लिये प्रकाशक धन्यवाद के पात्र है।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के लम्बे काल तक प्रधान संचालक के रूप में कार्यरत रहे श्री बालदिवाकर हंस, इन दिनों लम्बी बीमारी के बाद अब अब-नव स्वस्थ होकर अपने निवास पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उनसे सम्बन्धित आर्य जन उनसे पत्र व्यवहार करके निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

पता— श्री बाल दिवाकर हंस
सत्योदय, ४४६, विकास नगर
लोनी स्टेशन, लोनी,
जिला—गाजियाबाद (उ० प्र०)

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

गुरु से ही संभव है चरित्र का निर्माण

आषाढ़ मास की समाप्ति और श्रावण मास के प्रारम्भ की संधि को आषाढ़ी पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा अथवा गुरु पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु की पूजा की जाती है, इसलिए इसे 'गुरुपूजा' दिवस भी कहा जाता है। प्राचीनकाल में इस दिन विद्यार्थियों से शुल्क नहीं लिया जाता था, अतः वे वर्ष में इसी दिन गुरु की पूजा करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हें दक्षिणा दिया करते थे। महाभारत काल से पूर्व यह प्रथा प्रचलित थी, लेकिन धीरे-धीरे गुरु-शिष्य संबंधों में परिवर्तन आया है।

पहले गुरु उसे कहते थे जो विद्यार्थी को विद्या और अविद्या अर्थात् आत्मज्ञान और सांसारिक ज्ञान दोनों का बोध कराता था, लेकिन बाद में आत्मिक ज्ञान के लिए गुरु और सांसारिक ज्ञान के लिए आचार्य ये दो पद अलग हो गए। रजनीश ने जब कहा था कि हमारी शिक्षा संस्थाएं अविद्या का प्रचार कर रही हैं तो लोगों ने नाक-भौं सिकोड़ ली थी। लेकिन वह बात सही कर रहे थे। आज हमारे विद्यालयों में ज्ञान का हस्तान्तरण नहीं, बल्कि सूचनाओं का हस्तान्तरण हो रहा है। छात्र का ज्ञान से कोई वास्ता नहीं है इसलिए आज हमारे पास डाक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक और वास्तुकारों की तो एक बड़ी भीड़ जमा है, लेकिन ज्ञान के अभाव में चरित्र और चरित्र के बिना सुन्दर समाज की कल्पना दिवास्वप्न बनकर रह गई है।

शिक्षा का सम्बन्ध यदि चरित्र के साथ न रहा तो उसका अवश्यम्भावी परिणाम यही होगा। परन्तु इस मूल प्रश्न की ओर कौन ध्यान दे? सत्ताधारी लोग अपने पद को बनाए रखने के लिए शिक्षा का सम्बन्ध चरित्र के बजाय रोजगार से जोड़ना चाहते हैं लेकिन यदि चरित्र नहीं रहा तो रोजगार के लिए लोग झूठ, फरेब, बेईमानी मिलावट और यहां तक कि अपने देश को भी बेचने से बाज नहीं आयेंगे। जब कभी इस प्रकार की बुराई सामने आती है तो हम अपने चरित्र की कमियों को छुपाकर बयान-बाजी करते हैं कि बाहरी ताकतें देश को कमजोर कर रही हैं, सांप्रदायिक ताकतें देश को खोखला कर रही हैं। लेकिन बाहरी ताकतें यहां फौज लेकर तो घुसती नहीं। उनके चन्द एजेंट ही तो हमारे भाइयों को खरीद कर यहां गड़बड़ी पैदा करते हैं। यदि हमारा चरित्र परिपक्व होता, तो सम्भवतः इस प्रकार की घटनाएं न हो पातीं।

जो लोग शिक्षा का सम्बन्ध रोजगार से जोड़ने की वकालत करते हैं, वे वस्तुतः शताब्दियों तक अपने लिए राज करने की भूमिका तैयार कर रहे हैं और उनके तर्क इतने अकाट्य हैं कि सामान्य व्यक्ति को महसूस होता है कि समाज के सबसे अधिक हित चिंतक यही लोग हैं। उनका कहना है कि आप चरित्र की बात करते हैं, आप ज्ञानवान बनने की बात करते हैं। अरे, हम तो सबसे पहले यह चाहते हैं कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति को शुद्ध जल पीने को मिले, दो जून भरपेट रोटी मिले और तन ढकने को कपड़ा मिले, तभी वह चरित्र की बात सोच पाएगा और तभी तो उसको ज्ञान का रास्ता दिखाया जा सकता है।

पिछले पचास वर्षों से आप यही रट लगाए हैं लेकिन न पानी की समस्या सुलझी, न रोजी-रोटी की। चन्द लोगों की भव्य अट्टालिकाएं अवश्य खड़ी हो गई हैं।

आज दिल्ली की सड़कों पर चारआने का एक गिलास जल बिकता है। सरकार २८ रुपए किलो दाल बेचती है और बीस रुपए किलो सब्जी,जबकि न्यूनतम मजदूरी की दर,है बीस रुपए प्रतिदिन। चुनाव आते हैं और हमें नए-नए सब्जबाग दिखाये जाते हैं लेकिन चुनाव समाप्त हुआ और सारे वायदे स्वप्नवत तिरोहित लगातार हमसे वह कुंजी छिपायी जा रही है, जिससे सुन्दर समाज की रचना हो सकती है और वह कुंजी है एकमात्र चरित्र' हमारे देश में किसी चीज की कोई कमी नहीं है बशर्ते हमारे आस-पास चरित्रवान व्यक्ति हों।

यदि हमें भारत में प्रजातांत्रिक पद्धति को सफल बनाना है तो चरित्र उसकी पहली शर्त है। परन्तु आज जिन लोगों के हाथ में समाज की बागडोर है, उन्हें डर है कि यदि चरित्र पैदा हो गया तो यह बागडोर किन्हीं अन्य हाथों में चली जाएगी। इसलिए वे हमें समझाने की चेष्टा करते हैं कि सड़क पर भीड़ है, चलना मुश्किल है। अतः जनसंख्या कम की जाये या सड़क चौड़ी की जाये अथवा सड़क से पत्थर हटाये जाएं या फिर पुलिस खड़ी की जाये ताकि लोगों को चलने में दिक्कत न हो। पर यह कोई नहीं कहता कि हम लोगों को सड़क पर चलना सिखाएं। यदि लोग चलना सीख जायेंगे तो भीड़-भाड़ कितनी भी हो और सड़क कितनी भी संकरी हो, लोगों की गति में कोई व्यवधान नहीं पड़ेगा। अतः महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि हम भारत वर्ष में कौन-सी शासन पद्धति लागू करें, महत्वपूर्ण बात यह है कि हम चरित्रवान व्यक्ति पैदा करें।

आज का नाभिक प्रश्न यह नहीं है कि 'हिरण्य गर्भ कौन है?' आज का नाभिक प्रश्न है—हिन्दुस्तान में चरित्र निर्माण किस प्रकार सम्भव है? पाठ्य पुस्तकों में कुछ नीतिपरक श्लोकों को जोड़ने अथवा बच्चों को तोते की तरह गायत्री मन्त्र रटाने या अंग्रेजी शैली में योग का योगा करने से न तो चरित्र निर्माण होता है और न भावी पीढ़ी को ज्ञान का हस्तांतरण ही सम्भव है। ज्ञान तो गुरु से ही प्राप्त हो सकता है लेकिन गुरु मिले कहां? अब तो ट्यूटर हैं, टीचर हैं, प्रोफेसर हैं, पर गुरु नदारद है।

गुरु के प्रतिअविचल आस्था ही वह द्वार है जिससे ज्ञान का हस्तांतरण सम्भव है। इसका कोई विकल्प नहीं है लेकिन आज स्थिति उल्टी है। आज छात्र महत्वपूर्ण है। अध्यापक तो मात्र वेतनभोगी कर्मचारी हैं और इस स्थिति के लिए जिम्मेवार भी हमी हैं। हमने विद्यार्थियों की ऊर्जा का दुरुपयोग करने के लिए छात्र संघ जैसी संस्थाओं को जन्म दिया है। जो अभी पढ़ ही रहा है, जिनके अभी अपना अध्ययन भी पूर्ण नहीं किया है, वह किस प्रकार उचित-अनुचित का निर्णय कर सकता है। उसके अधिकार का प्रश्न कहां से खड़ा हो गया? अभी तो उसने अपना कर्तव्य भी पूरा नहीं किया, वह अधिकार की मांग कैसे कर सकता है? लेकिन राजनीतिज्ञों ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए विद्यार्थियों को अपना साधन बना लिया है पता नहीं क्यों हमारे शिक्षाशास्त्री इस मामूली-सी बात को नहीं समझ पा रहे हैं?

गुरु पर्व पर हमें इन तथ्यों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। यह सच है कि आज हम जिस सामाजिक और आर्थिक परिवेश मे सांस ले रहे हैं, वहां इन पुरानी व्यवस्थाओं की चर्चा निरर्थक है परन्तु इनके सार्थक और शास्वत अर्थों को तो हम ग्रहण कर ही सकते हैं। अगर हम पुराने से बिल्कुल सम्बन्ध विच्छेद कर लें तो नया कुछ भी हाथ नहीं आएगा। हमारी संस्कृति का वह आंतरिक तन्तु अगर टूट गया तो कौन हमारी हस्ती मनेगा?

(हिन्दुस्तान १२-७-९५)

वैदिक आख्यान-शैली

डा० बद्रीप्रसाद पंचोली

वेद जीवन का संविधान है। उसमें मन्त्र-शैली में तत्त्व निरूपण किया गया है। इसका यह अर्थ है कि मनन करने से बात की तह तक पहुंचा जा सकता है। इसके बिना पाठक सतह पर ही विचरता रहता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ब्रह्म अर्थात् मन्त्र का वितान—विस्तार होता है। इस प्रक्रिया में कुछ मन्त्रों और सूक्तों को लेकर कुछ आख्यानों की कल्पना की गई है। सायण और अन्य परवर्ती भाष्यकारों ने ब्राह्मण ग्रन्थों के संकेतों को विस्तार देकर पूरी कहानियां कह दी हैं जिन पर आये दिन विवाद होता रहा है और आगे भी होता रहेगा।

ऐसी कहानियां रामायण, महाभारत और पुराण ग्रन्थों में भी हैं। इनके विषय में पूर्वजों की स्पष्ट उक्ति है कि—

इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत।

अर्थात इतिहास और पुराण के द्वारा वेद का सम्यक् उपबृंहण करें। स्पष्ट है कि इनमें उल्लिखित कहानियां वेद का उपबृंहण अर्थात् विस्तार करने के लिए हैं। उनसे मन्त्रार्थ तक पहुंचने के सूत्र-संकेत मिल सकते हैं। वे कथाएं वास्तविक नहीं हैं। इतिहाससिद्ध भी नहीं हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उन सूत्र संकेतों को समझें।

ऋग्वेद का एक मन्त्र है—

दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान दशमे युगे।
अपाम अर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः॥

ऋग्वेद १।१५८।६

अर्थात् मामतेय दीर्घतमा दसवें युग में जीर्ण हुए थे। कर्म के लिए यत्नशीलों के सारथि ब्रह्मा होते हैं।

इस मन्त्र से सम्बद्ध आख्यान प्रचलित है कि दीर्घतमा ममता का बेटा था। ममता का बेटा होने से वह अन्धा था। इसी कारण वह शीघ्र बूढ़ा गया था। जब वह औचथ्य (उचथ्य का पुत्र हुआ) तब उसका अन्धत्व दूर हुआ। इसका मर्म बहुत पुराने लोग तो जानते होंगे। पर, परवर्ती भाष्यकार केवल कहानी दुहराते रहे। तत्त्व तक नहीं पहुंचे। नए अध्येता भी इसी तरह की कहानी कहते हैं।

सच यह है कि ऐसा कहने से दीर्घतमा के व्यक्तित्व का भी अपमान होता है, ममता का भी और उचथ्य का भी।

दीर्घतमा शतर्ची ऋषि हैं। दीर्घतमा-द्रष्ट मन्त्रों की संख्या लगभग पौने तीन सौ है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मामतेय होने से दीर्घतमा एक जीवन में पौने तीन जीवन जी लेता है—पौने तीन जीवन जीने के बराबर परिश्रम कर लेता है। इसके लिए दृश्यमान जगत से कटकर केवल लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना होता है।

इतिहास में एक अन्धा हुआ है जो राजसभा में खड़ा था, पर उसको देख नहीं रहा था। वहां उपस्थित गुरुजन और आत्मीयों को भी नहीं देख रहा था। ऊपर चक्र था चक्र में मछली थी। वह किसी कोनहींदेख रहा था। उसकी दृष्टि केवल मछली की आंख पर थी। उसने लक्ष्य-वेध किया और द्रौपदी प्राप्त कर ली।

माता ममता है तो ममतालु होगी ही उसके दिए हुए संस्कारों से दीर्घतमा बचपन में ही कर्मदक्ष हो जाता है और उसकी दृष्टि लक्ष्य-केन्द्रित हो जाती है जिससे सांसारिक व्यवहार में तो वह अन्धा ही होता है, पर एक के बाद एक लक्ष्य साधता हुआ एक जीवन में पौने तीन जीवन के बराबर पुरुषार्थ प्रकट करता है। इससे वह प्रशंसनीय पिता का प्रशंसनीय पुत्र कहलाता है। अपने कर्मक्षेत्र में लीन होकर वह अपना सारथि अन्तरात्मा को ही बनाता है। किसी अन्य सहारे की खोज नहीं करता।

मन्त्र में वीरमाता का चित्रण है। वह ममता भी देती है पुत्र को और सुसंस्कार भी। इससे पुत्र की आयु भी बढ़ती है और कार्यक्षमता भी। ऐसी कोई भी ममतालु माता हो सकती है। हिमाचल की पुत्री उमा वीरमाता थी। कालिदास ने उसे 'मुनियों की भी माननीया' कहा है। कालिदास ने उसके एक-एक अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है। वह अपने उन सब अंगों को कठोर तप की अग्नि में तपाती है। इस तपस्विनी उमा से विवाहोपरान्त स्कन्द पैदा होता है जो सात दिन बाद देवसेनापति बन जाता है। यहां 'सात दिन' का अर्थ है बहुत कम अवस्था में। 'सावन के दिन चार' का अर्थ स्पष्ट समझ में आता है।

वेद की भाषा इसी तरह की है। वह जीवन से जुड़ी है, जीवन में रची-बची है। लोक में माता से सुनी हुई भाषा से परिचित व्यक्ति उसके मर्म को समझता है। जिन आख्यानों को मन्त्रों के साथ जुड़ा हुआ पाते हैं उनका मर्म भी संकेत सूत्रों के आधार पर पकड़ा जा सकता है।

आख्यानपरकता शैली का गुण है। लोक में एक उक्ति प्रचलित है—क्याणी बात बियांण ई। इसका अर्थ है कथा या कहानी उस तरह की बात होती है। उस तरह की कैसी? मूल के अर्थ में प्रकटित तथ्य जैसी। इस कहावत का यह भी अर्थ है कि कहानी व्यर्थ की उक्ति होती है। स्पष्ट है कि वह अर्थ का स्पष्टीकरण करे तो काम की ही है। यदि ऐसा न करे तो उसे व्यर्थ समझ लेना चाहिए।

सायणादि भाष्यकार भी इस बात को जानते थे। पर, यह भी जानते थे कि आख्यानपरक शैली में समझदार लोग अर्थाधिगम कर लेंगे। बुद्धि का भारा अपने सिर पर लेकर नहीं चलते थे। पाठक की बुद्धि पर विश्वास करते थे। वे इस बात से भी सन्तुष्ट हो लेते थे कि बुद्धिहीन व्यक्ति कथा-लता के पत्ते ही गिनता रहेगा। वेदार्थ उसके वश की बात नहीं है।

'वेद की समझ बूझ बहुश्रुत होने पर सम्भव है। अल्पश्रुत से तो वेद भी घबराता है—बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदः।

आख्यानों में इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम भी आ जाते हैं। वे इतिहास की सिद्धि नहीं करते। वे वेद की ही संज्ञाएं हैं जिनके आधार पर-परवर्ती काल में विशिष्ट व्यक्तियों के नाम रखे जाते हैं।

वेद में अगस्त्य-लोपामुद्रा संवादसूक्त है। अगस्त्य के विषय में कहा गया है कि उन्होंने समुद्र-पान कर लिया था। समुद्र-पान करने वाला कोई मनुष्य नहीं हो सकता। 'उगत अगस्त्य पन्थ जल शोषा' तुलसीदास की उक्ति है। पर्याप्त जलवृष्टि होती है तब जनपदीय भाषा में कहा जाता है—सातों समुन्दर बरस पड़े। यह वर्षा का जल नदी-नद-पोखरों में भरा रहता है। अगस्त्य तारे के उदय होने पर वर्षा रुक जाती है और पोखरों में भरा हुआ पानी(सातों समुन्दर कहा जाने वाला) सूख जाता है। यही है अगस्त्य का समुद्रपान।

वैदिक आख्यानों की भाषा रोचक होती है। इन कल्पना-प्रसूत आख्यानों का उद्देश्य अर्थाधिगम के लिए संकेत-सूत्रों को सूचित करना होता है। उपनिषद् के आख्यान में द का अर्थ प्रवृत्ति के अनुकूल देवों ने दमन करना, असुरों ने दया करना और मनुष्यों ने दान करना लिया। इसी तरह से वेद-मन्त्रों का अर्थ मनन-सामर्थ्य से भिन्न-भिन्न हो सकता है। जीवन-दृष्टि उसका निर्धारण करेगी।

यास्क मुनि ने अर्थाधिगम के लिए सुझाव दिए हैं कि जहां प्रकृति प्रत्यय की स्पष्ट प्रतीति होती हो वहां तदनुकूल अर्थ लिया जाए। जहां केवल धातु या प्रकृति ही पकड़ में आए तो उसके आधार पर

(शेष पृष्ठ १० पर)

धर्म निरपेक्षता बनाम साम्प्रदायिकता

हम माने या न माने परन्तु यह कटु सत्य है कि धर्मनिरपेक्षता की कोख से साम्प्रदायिकता का जन्म हुआ है। "जब हम धर्मनिरपेक्ष नहीं थे तब साम्प्रदायिक भी नहीं थे।" आजादी के पहिले का इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वतन्त्रता की लड़ाई हिन्दू मुसलमान दोनों ने मिलकर लड़ी थी। जिन्ना की महत्वाकांक्षा ने विष के बीज बोकर मजहबके आधार पर देश का विभाजन कराया, तभी से दोनों कौमों के बीच नफरत घृणा और संदेह का वातावरण बना हुआ है। इसे दूर करने के बजाए वोट की राजनीति ने गर्म हवा देकर किस्त दर किस्त इसका विस्तार किया। उसी का परिणाम देश भुगत रहा है। नेताओं की कार्य शैली ने ही देश की एकता और अखण्डता को खतरा पैदा किया है। इन्होंने एक दूसरे के प्रति लालच और भय का वातावरण बनाकर वोट के प्रवाह को अपनी ओर मोड़ने मे महारत हासिल की है। धर्म क्या है? इसकी सच्चाई का पता न लगाते हुए, इसकी अन्धी गली में अनपढ़ जनता को ढकेल दिया और पढ़े लिखे चालाक लोग इसकी आड़ में स्वार्थ साधना करते रहे।

धर्मनिरपेक्षता की ठीक और निश्चित परिभाषा आज तक कोई पार्टी नहीं कर सकी क्योंकि 'निरपेक्ष' शब्द अंग्रेजी के 'सेक्यूलर' शब्द से उधार लिया गया है। निरर्थक को सार्थक बनाने की नेताओं ने पुरजोर वकालत की परन्तु देश की जनता ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया बल्कि अपने मजहब सम्प्रदाय के प्रति ज्यादा कट्टर बनती चली गई, आज राजनीति का ध्रुवीकरण इसी बुनियाद पर जाकर दम तोड़ रहा है। ऐसा हो सकता है कि संविधान निर्माताओं ने मजबूरी या हड़बड़ी में धर्म के आधार पर खण्डित भारत में शान्ति और सत्ता कायम करने के लिये धर्म 'निरपेक्ष' शब्द को संविधान में प्रमुखता से स्थान दिया और इसकी परिभाषा सर्व-धर्म सम्भाव बनाकर धर्म के नाम पर परस्पर विरोधी बातों का समर्थन करते रहे। हम उस जनसमूह की नाजायज बात मानने को बाध्य हुए जो मत, सम्प्रदाय या मजहब के नाम पर एक है। अहिंसा धर्म का मूल तत्व है परन्तु बलि या कुर्बानी के नाम पर हिंसा भी धर्म है। सत्य धर्म का अंग है लेकिन झूठ, रिश्वत, वायदा, खिलाफी और पाखण्ड राजनीति में जायज है। धर्म में अधर्म का घाल-मेल हमारी तबाही का कारण बन गया है।

मत, सम्प्रदाय और मजहब, देश, काल, परिस्थिति के अनुसार व्यक्ति विशेष द्वारा चलाये गये मत हैं। इनमें विरोधाभास होना स्वाभाविक है। एक ही तत्व की मान्यता और प्राप्ति का विरोधाभास ही साम्प्रदायिकता की जड़ है और यहीं से टकराहट का बीजअंकुर होता है। आस्तिक वृत्ति और अज्ञानता के कारण, बिना विचारे मनुष्य किसी न किसी धार्मिक, दैविक मान्यता से जुड़ जाता है तथा उसी मे आत्मा की शान्ति और पारिवारिक सुख की कामना करता है। पीढ़ी दर पीढ़ी वह अपनी आस्था के प्रति इतना हठी और दुराग्रही हो जाता है कि अपने झूठ को सत्य और दूसरे के सत्य को झूठ साबित करने की कुत्सित चेष्टा करता है यही चेष्टा साम्प्रदायिकता की जननी है।

साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण लाखों बेगुनाहों के खून से लथपथ आजादी हमने प्राप्त की। सभी सम्प्रदाय के लोगों को खुश करने की नीयत से धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देकर वोटों की राजनीति खेली। सभी धर्मों के प्रति आदर भाव एवं धर्म के आधार पर किसी के साथ भेद भाव नहीं बरता जावेगा। परन्तु अपनी ही मान्यता का गला घोंटा, धर्म जाति के आधार पर लोगों को भारत मे बांटा, जनगणना का कालम, नौकरी मापदण्ड चुनाव में उम्मीदवार का चयन, मजहबी तुष्टीकरण के लिए न्याय प्रक्रिया उपहास, क्या यही हमारी धर्मनिरपेक्षता की कसौटी है। राजनैतिक मंच से भाषण देते रहे, आजिया छोड़ो, धर्म एक है, ईश्वर एक है, आपस में मिल-जुलकर रहो, इसी दोगले पन की नीति ने भारतीय मानस को विकृत कर दिया है। विश्व मे मात्र यहका राष्ट्र है जहां धर्मनिरपेक्षता का ढोल जोर जोर से पीटा गया और उसी अनुपात से देश का धार्मिक सौहार्द बिगड़ता गया, इसी का फल है कि आज देश की एकता और अखंडता को बचाने के लाले पड़ गये हैं। यह शब्द तभी का जन्मा बन गया है, जोन अनुसार के इस देश ने बरबादी का आलम खड़ा कर दिया है।

धर्म निरपेक्षता का सीधा सा अर्थ है अधर्म सापेक्षता अर्थात अधर्म का ग्रहण करना तभी तो अहिंसा के देश मे हिंसा का तांडव हो रहा है। जनता से लेकर नेता तक कोई सुरक्षित नहीं है। युवा पीढ़ी तेजी से अपराध बोध की शिकार हो रही है शिक्षा नीति भी साम्प्रदायिकता के जाल में फंस गई है अलग-अलग विचार धाराओं के नवयुवकों का निर्माण हो रहा है, इनका टकराना नियति बन चुका है, महगाई और बेरोजगारी ने आग और घी का काम किया है। अमीर-गरीब अनपढ़ पढ़े-लिखे सभी भविष्य के प्रति भयभीत हैं। अपने ही बनाये गये जाल में हम बुरी तरह फंस गये हैं। सत्य कहने, सुनने और मानने की हिम्मत हममें नहीं है, झूठ, पाखंड और स्वार्थ को हम छोड़ने को तैयार नही, मानव जाति भयंकर विनाश के कगार पर खड़ी है। इस महा विनाश को रोकना होगा।

जीवन में सुख, शान्ति और पवित्रता लाने वाले धर्म के मूल तत्व अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर विश्वास से मानव विमुख होकर निराशा और पतन की राह पर चल पड़ा है। मानवता की रक्षा के लिए वर्तमान विनाशकारी असमाप्य समस्या का समाधान सही धर्म की पहिचान कराके ही हो सकता है क्योंकि धर्म का मनमाना विकृत रूप ही इसके लिए जिम्मेदार है। सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्य एक स्थान पर मिलकर अपने अपने धर्म ग्रन्थों के आधार पर निर्णय करें जो बातें सब में समान हो जो सभी के लिये कल्याणकारी हों उनको मिलाकर मानव धर्म, घोषित किया जावे। इस कार्य में बुद्धजीवियों और प्रत्येक पार्टी के प्रमुख नेताओं का सहयोग लिया जाये, साथ ही साथ रेडियो, दूरदर्शन एवं पत्र-पत्रिकाओं द्वारा राष्ट्र स्तर पर बहस चलाई जावे तो निश्चित ही सुखद परिणाम सामने आयेंगे। शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन करते हुए उसका स्तर सभी के लिये समान रक्खा जाये। जाति शब्दों पर पाबन्दी लगाई जाये, योग्यता के आधार को मजबूत बनाया जावे इस महानतम कार्य के लिए संसार की लायब्रेरी के प्राचीनतम ग्रन्थ चारों वेदों की कसौटी को परखा जाये। धर्म सनातन और शाश्वत है इसके अभाव में मानव जीवन शून्य है, राजनीति अपंग है इसकी सही जानकारी देकर लोगो को राक्षस से देवता बनाया जा सकता है। धर्मनिरपेक्षता की निरर्थकता साबित करते हुए, धर्म की सही जानकारी से साम्प्रदायिकता की जंग जीती जा सकती है।

ले० ओमप्रकाश आर्य
प्रवक्ता वैदिक समाजवाद समिति
डा० अम्बेडकर रोड आर्यसमाज मंदिर खार (प०) बम्बई-५२

राष्ट्र रक्षा के तीन बृहद यज्ञ

संक्षिप्त परिचय

—डा० कृष्ण कुमार

प्राचीन भारतीय संस्कृति में, वैदिक संस्कृति में यज्ञों का बहुत अधिक महत्व रहा था। जीवन के प्रत्येक अंग में यज्ञ सन्निविष्ट थे। अतः प्राचीन ऋषियों ने राजनीतिक सम्प्रभुता के लिये भी विविध यज्ञों का विधान किया। इन यज्ञों का विधि विधान से आयोजन करने पर राजा को चक्रवर्तित्व के अधिकार प्राप्त होने के साथ अबाध सम्प्रभुता प्राप्त होती है। इस सम्बन्ध में तीन यज्ञों का विधान अधिक महत्वपूर्ण है। ये तीन यज्ञ हैं—राजसूय; वाजपेय और अश्वमेध। वर्तमान प्रशासन के अन्तर्गत देश में विखण्डनवादी प्रवृत्तियां अधिक वृद्धि को निरन्तर प्राप्त हो रही हैं, देश की अखण्डता एवं भावनात्मक एकता को स्थापित करने के परिप्रेक्ष्य में इन यज्ञों की परम्परा पर विचार करना अनिवार्य है। इन यज्ञों का उद्देश्य यही है कि देश की एकता को एवं भावात्मक ऐक्य को सुरक्षित कर सैन्यशक्ति को सुदृढ़ किया जाये। इनका संक्षिप्त परिचय देना उपयोगी होगा।

(१) राजसूय यज्ञ

राजसूय यज्ञ का विधान राज्य के अधिकार तथा प्रभाव के विस्तार के लिये प्राचीन मनीषियों ने किया था। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि राजसूय यज्ञ करने से ही व्यक्ति राजा होता है (शतपथ० ५.१.१.१२. ९.३.४.८)। अर्थात राजा के राज्याभिषेक की प्रक्रिया का ही एक नाम राजसूय यज्ञ है। इस यज्ञ को सम्पन्न करने के लिये राजा दिग्विजय के लिये अपनी सेनाओं को चारों दिशाओं में भेजता है। इन्द्रप्रस्थ में राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के अनन्तर युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था। इसके भाइयों ने चारों दिशाओं के राजाओं को जीतकर युधिष्ठिर के पराक्रम का प्रभाव स्थापित किया। इन राजाओं ने युधिष्ठिर के प्रभुत्व को स्वीकार कर यज्ञ में भाग लेना स्वीकार किया।

राजसूय यज्ञ करने का अधिकार केवल क्षत्रिय राजाओं को ही दिया गया था। यह एक लम्बा और पेचीदा यज्ञ था। इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया दो वर्ष में पूरी होती थी। यह प्रक्रिया संक्षेप में इस प्रकार है—

(१) अग्निष्टोम—फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि में यजमान दीक्षा लेकर अग्निष्टोम करता है। यह विधि एक वर्ष तक चलती रहती है। इसमें निरन्तर हवन-यज्ञ होते रहते हैं। अन्त में रत्नियों के घरों में नित्य राजा जाकर आहुतियां देता है। रत्नियों की संख्या १२ है और वे क्रमशः इस प्रकार हैं—

(१) गणनाथ	(२) सेनापति
(३) पुरोहित	(४) अग्रमहिषी
(५) सूत	(६) ग्रामणी
(७) क्षत्ता-कंचुकी	(८) संग्रहीता-कोषाध्यक्ष
(९) भागदुघ्	(१०) अक्षापाव
(११) गोविकर्त	(१२) दूत।

इन रत्नियों के घरों में क्रमशः निम्न देवताओं के लिये आहुतियां प्रदान की जाती हैं—

इन्द्र, अग्नि, अनीकवान्, बृहस्पति, अदिति, वरुण, मरुत, सविता, अश्विनी, रुद्र, यम और निर्ऋति।

(२) अभिषेचन—राजसूय यज्ञ की यह केन्द्रीय प्रक्रिया है। यह पांच दिन तक चलती है। प्रथम एक दिन दीक्षा का होता है। तदनन्तर तीन दिन तक उपसद् होता है और अन्तिम एक दिन सोमसुवन होता है। घर के रूप में सविता, अग्नि, सोम, बृहस्पति, इन्द्र, रुद्र, मित्र और वरुण इन आठ देवों के लिये आहुतियां दी जाती हैं और अभिषेचन किया जाता है। सत्रह प्रकार के जलों को १७ उदुम्बर पात्रों में भर कर पुरोहित यजमान का अभिषेचन करता है।

(३) दशपेय—अभिषेचन के १० दिनों बाद दशपेय नाम का कृत्य किया जाता है। इस प्रक्रिया में दस ब्राह्मण दस चमसों में सोम का पान करते हैं। ये यजमान के दस-दस पूर्वजों के द्योतक हैं। तदनन्तर अवभृथ स्नान करके यजमान को एक वर्ष की अवधि के लिये विशेष नियमों का पालन करते हुए रहना होता है। इस अवधि में केशों को कटाया नहीं जा सकता।

(४) केशवपनीय—राजसूय यज्ञ को प्रारम्भ किये हुए एक वर्ष की अवधि व्यतीत हो चुकी है। अब तक केशों को कटाया नहीं जा सका था। अब इनको कटाने का कार्य किया जाता है। इसकी विधि अतिरात्र यज्ञ के समान है।

(५) व्युष्टि—यह भी एक प्रकार का अग्निष्टोम ही है। यजमान की समृद्धि के लिये इस प्रक्रिया को किया जाता है। विविध देवताओं के लिये आहुतियां दी जाती हैं।

(६) द्विरात्र—यह भी एक प्रकार का अतिरात्र और अग्निष्टोम ही है। इसमें भी यजमान की समृद्धि के लिये अनेक देवताओं के निमित्त से आहुतियां दी जाती हैं।

(७) क्षत्रधृति—इस प्रक्रिया का सम्बन्ध शक्ति की स्थापना से है। इसको सम्पन्न करने से राजा की शक्ति को सुदृढ़ माना जाता है। इसमें राजा द्वारा विविध देशों को विजय किया जाता है और वह अपनी सम्प्रभुता की स्थापना करता है।

इन सब प्रक्रियाओं को पूरा करके राजा विशिष्ट हवन आदि कार्यों को करता है। विविध देशों के राजा, ऋषि तथा सम्मान्य जन उपस्थित होकर यज्ञ में भाग लेते हैं। शास्त्रों में वर्णन है कि राजसूय यज्ञ को सम्पन्न करने के अनन्तर एक मास के बाद राजा को सौत्रामणि नामक इष्टि को सम्पन्न करना चाहिये।

(२) वाजपेय यज्ञ

वाजपेय यज्ञ की गणना सोमयागों में की गई है। इस यज्ञ का आयोजन भी राजा की शक्ति तथा प्रभुता को स्थापित करने लिये हुआ था। वाजपेय पद का अर्थ है—शक्ति का यज्ञ। शास्त्रों के अनुसार इस यज्ञ को करने का अधिकार ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों वर्णों को दिया गया था। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि वाजपेय यज्ञ करने से सम्राट बनता है, राज्य तो हीन होता है। उससे साम्राज्य श्रेष्ठ है।

(शतपथ० ५.१ १.१२.५.२.१.१३)

प्राचीन कथाओं के अनुसार देवताओं और असुरों में श्रेष्ठत्व की सिद्धि के लिये दौड़ की प्रतियोगिता हुई। इस दौड़ में बृहस्पति विजयी हुए। इससे वाजपेय यज्ञ की उत्पत्ति हुई। वे देवराज इन्द्र के पुरोहित थे। अतः इन्द्र को सर्वश्रेष्ठ माना गया। इन्द्र क्षत्रिय थे और बृहस्पति ब्राह्मण थे। अतः ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों वर्गों को इस यज्ञ के सम्पादन का अधिकार प्राप्त हुआ। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार वाजपेय यज्ञ करने वाले राजा को सम्राट पद का अधिकार प्रदान किया गया।

वाजपेय यज्ञ में प्रथम अग्निष्टोम किया जाता है। यज्ञ में सतरह की संख्या का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें १७ स्तोत्र, १७ शास्त्र, १७ बलिपशु, १७ दक्षिणा की वस्तुएं, १७ अरत्नि लम्बा यूप, १७ प्यालियों में सुरा, १७ प्यालियों में सोमरस, १७ रथदौड़ के रथ और १७ बजाई जाने वाली ढोलकें होती हैं। इस यज्ञ में यज्ञीय प्रक्रियाओं के अतिरिक्त रथदौड़ को प्रमुख स्थान दिया गया है इस रथदौड़ में यज्ञ का यजमान राजा या पुरोहित होता था जो विजयी होकर रथ से नीचे उतर कर बकरी के चर्म पर रखे गये स्वर्ण-खण्डों पर पैर रखकर चलता हुआ सिंहासन पर आरूढ़ होता था। इसके बाद द्यूत का कार्यक्रम होता था। विजय के अभिलाषी राजा को इसमें भी विजय प्राप्त करनी ही होती थी। (क्रमशः)

विदेश समाचार

श्री अटल बिहारी बाजपेयी की मारीशसीय यात्रा

भारतीय लोक सभा के विरोध दल के नेता माननीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी गत जून की ५ तारीख को एक सप्ताह के लिए मारीशस टापू पधारे थे।

यहां पर आपका शानदार स्वागत सब दिशाओं में किया गया। आप इस यात्रा के दौरान आर्य समाज के तीन केन्द्रों में गये। जैसे महेश्वर्य आर्य समाज में तृयोते आर्य समाज और आर्य समाज केन्द्र भवन पोर्टलुई की राजधानी में।

हमारे केन्द्रीय समाज राजधानी में मारीशस के प्रधानमन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने प्रधान आसन को ग्रहण किया था। इस विदाई समारोह में अनेक समाजों के समाज सेवी गण, सरकारी अधिकारीगण, राज नेता गण, हमारे टापू के आर्य नेता श्री मोहनलाल मौहित श्री O.B.E. आर्य रत्न, आर्य भूषण भी इस समारोह में श्री अटल बिहारी बाजपेयी को सम्मान देने के उद्देश्य से पधारे थे। हमारे टापू में यही पर उनका अन्तिम कार्यक्रम किया गया था। वे यहाँ पर भी भाषण देते रहे थे एकता से रहने के लिए सबसे अपील की थी। कहा कि "प्रथम बार की यात्रा" और आज कल की दृष्टि में मारीशस ने अच्छी प्रगति की है।" यह आप की तीसरी यात्रा है मोरिशस में।

अनेक जगहों में आपने बताया कि "महर्षि दयानन्द जी नहीं आये होते इस संसार में तो भारत की दशा अति शोचनीय होती। उन्होंने ही महात्मा गांधी जी से पूर्व 'सु राज्य' की बात की थी। स्वतन्त्रता की बात की थी। मानो कि भारत की स्वतन्त्रता की नींव डालने वाले भारतीय नेताओं में महर्षि दयानन्द सर्वोपरि माने जाते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने हिन्दी भाषा का भी बहुत अच्छा प्रचार किया। महर्षि स्वामी दयानन्द जी और महात्मा गांधी जी गैर भारतीय हिन्दी भाषी होते हुए हिन्दी भाषा का डट कर अध्ययन किया और जन समुदाय के बीच में जाकर इसी भाषा में प्रचार भी किया। साथ हीं अन्य भारतीय नेताओं ने भी हिन्दी का मान सम्मान बढ़ाया है।

> "मैं तो यह विचार रखता हूं कि जिस भाषा में वोट की मांग की जाती है उसी भाषा में फाइल में नोट भी लिखा जाना चाहिए।"

इस बात को आपने महात्मा गांधी संस्थान में कहा तो करतल ध्वनियों से सारा भवन गूंज उठा था। भारत के बहुत से भारतीय परिवार के लोग मौजूद थे।

इस शानदार उत्सव में मोरिशस के प्रधान ने कहा—मैं भारत देश के प्रति सहयोग के लिए आभारी हूं। मुझे श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का स्वागत करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। आपने बताया कि हमारे पूर्वज कितनी कठिनाई से हमारे धर्म और हमारी संस्कृति की रक्षा करते आये हैं। उन्होने बहुत परिश्रम और त्याग के साथ इस देश को हरा-भरा किया। प्रधानमन्त्री जी ने एक आर्य नेता स्व० पण्डित बासुदेव विष्णुदयाल जी की हिन्दी भाषा सेवा का दिल खोलकर, बखान किया। हिन्दी जन आन्दोलन की भाषा आपने बताई।

महात्मा गांधी संस्थान ही में श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने "हिन्दी स्पीकिंग यूनियन" का उद्घाटन किया।

इसी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए श्री बाजपेयी जी मोरिशस विराजे थे।

मौके पर मोरिशस के उपराष्ट्रपति सर रविन्द्र घामरण जी ने श्री अटल बिहारी बाजपेयी के आगमन और इस उद्घाटन विधि के प्रति अपनी सारगर्भित विचारधारा में प्रसन्नता व्यक्त की।

आर्य सभा के भवन में रविवार ता० ११ जून को श्री बाजपेयी की विदाई के सम्बन्ध में एक भावी समारोह का आयोजन किया गया था। आर्य सभा के प्रधान श्री रामखेलावन जी ने सब नेताओं की अगवानी की। सभामन्त्री श्री स० प्रितम जी ने हमारे पूर्वजों के बारे में कहा कि उन्हें असत्य कहा गया था कि चलिये मोरिशस वहा पर पत्थर उठाओगे तो तुम्हें सोना मिलेगा। यहां पर वे दुःख सहकर आये पर पसीना बहाने पर भी सोना मिला, नहीं, इसी माह में आर्य सभा के उपप्रधान श्री देव ऋषि बुलेल जी ने श्री बाजपेयी जी को एक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। यहां पर श्री बाजपेयी जी ने कहा कि—

आर्य सभा को आज और सतर्कता और मजबूती के साथ काम करना चाहिए। हिन्दी भाषा का प्रचार और अधिक करना चाहिए महर्षि दयानन्द जी के द्वारा भारत में किये गये सुधारवादी कार्यों का बखान आपने मन से किया।

हिन्दी संगठन बिल पर यहाँ पर भी भाषणों के दौरान प्रसन्नता प्रगट की गई।

नोट—(१) महात्मा संस्थान में हिन्दी संगठन द्वारा एक स्मारिका बांटी गयी।

(२) इसमें भारत के राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा जी का भी सन्देश है।

पं० सर्ववीर चूरा, शास्त्री. एम० बी० ई०
प्रधान मोरिशस हिन्दी लेखक संघ
उपदेशक आर्य सभा मारिशस
वाक्वा

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक आर्य वीरदल द्वारा देश के विभिन्न प्रांतो में ३५ शिविर ग्रीष्मावकाश मे लगाये गये जिनकी निम्न सूची हैं।

हरियाणा—१. गुरुकुल खानपुर, नारनौल ४०० आर्य वीर
२. रोहतक २ शिविर १५० आर्य वीर
३. फरीदाबाद आर्य वीरांगना शिविर ५० आर्य वीर
४. फिरोजपुर झिरका (मेवात) १०० आर्य वीर
५. गुड़गांव ८० " "
८. भिवानी ७० " "
९. पानीपत ८० " "
१०. करनाल ५० " "
११. कोसली ३० " "
१२. जाडरा (रेवाड़ी) ३० " "
१३. बासधन कलां (रेवाड़ी) ५० " "

मध्य प्रदेश—१. गुरुकुल होशंगाबाद-प्रांतीय शिविर २०० आर्यवीर
२. प० राजगुरु छात्रावास मऊ ३० "
३. गुरुकुल चौधा ३० "
४. जबलपुर आर्य वीरांगना शिविर

कर्नाटक—१. मर्णा जिला बीदर १५० आर्यवीर
उड़ीसा—१. गुरुकुल आमसेना १०० "
पंजाब—१. दयानन्द मठ दीनानगर १०० "
२. अबोहर क्षेत्र सौजन्य से प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु १०० "

उत्तर प्रदेश—१. गुरुकुल पूठ ७० आर्यवीर
२. लिसाड़ (मुजफ्फरनगर) ७५ "
३. मुजफ्फरनगर ७० "
४. बौरम्या ७५ "
५. बलिया "
६. बान्दूखेड़ी (सहारनपुर) ७८ "

राजस्थान—आर्यवीर दल आबूरोड ने श्री गगाराम आर्य के नेतृत्व में ३ मास तक प्याऊ लगाई गई। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाकर निर्धन छात्रों को स्लेट, पैंसिल तथा पुस्तकें प्रदान की गई और अनेक विद्यालयों में जाकर आर्य वीरदल की शाखा लगाने का कार्यक्रम बनाया गया है। श्रावण मास में दल द्वारा विशाल यज्ञ का कार्यक्रम भी रखा गया है।

दिल्ली—१. चन्द्रवती विद्या मन्दिर आर्य वीरागना शिविर
५० आर्य वीरांगना
२. गुरुकुल खेड़ा खुर्द ७० आर्यवीर

महाराष्ट्र—श्री दिनकरराव देश पांडे मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र एव डा० भारती जाधव द्वारा आर्य वीरांगना शिविर मे आर्य कन्या सस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय शिविर—११-२५ जून तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता मे देश भर के चुने हुए १७५ आर्यवीरों का अगली श्रेणी में प्रशिक्षण हेतु शिविर लगाया गया जिसमें ६ प्रान्तों के आर्यवीरों ने भाग लिया।

कार्यकर्ता शिविर—उद्‌गीथ साधना स्थली (हिमाचल) में २७ जून से ३ जुलाई तक कार्यकर्ता शिविर लगाया गया।

आसाम—१४ से २३ जुलाई तक गोहाटी में शिविर का आयोजन होने जा रहा है जिसमें प्रधान सचालक इस क्षेत्र में आर्यवीर दल के कार्य को गति देने हेतु स्वयं जा रहे हैं।

अभी जिन शिविरों की सूचना प्राप्त नही हुई है उनकी पूरी रिपोर्ट आने पर आगे प्रकाशित की जायेगी।

कार्यालय मन्त्री

पुस्तक-समीक्षा

विवाह और विवाहित जीवन

ले० स्व० श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

प्रकाशक—विजयकुमार, गोविन्दराम, हासानन्द
नई सड़क दिल्ली-६ पृ० १७९—मू० १८ रु०

आर्य साहित्य-भवन दिल्ली के यशस्वी अध्यक्ष-गोविन्दराम, हासानन्द जी ने जो आर्य जगत के पुराने अनुभवी यशस्वी प्रकाशक है जिन्होने इस पुस्तक "विवाह और विवाहित जीवन" नामक पुस्तक का भार अपने ऊपर लेकर जनसामान्य को लाभ उठाने का सफल प्रयास किया है।

विवाह जैसे जीवन की भावनाओं मे जो परिवर्तन हो रहा है। यदि समाज को स्वच्छ सुन्दर बनाना है उसे प्रकाश दिखाने और शकाओं के निवारण की अति विवाहित जीवन के जितने पहलू हैं उन सबका इस पुस्तक में समावेश है। सामाजिक-बन्धन आध्यात्मिक उन्नति वैदिक सस्कार एक पत्नि व्रत विवाह का उद्देश्य क्या है इत्यादि प्रश्नो का सुन्दर समाधान विद्वान् ले. स्व. प. गगाप्रसाद जी उपाध्याय ने अपनी लेखनी द्वारा किया है प्रकाशक स्वयं प्रबुद्ध है जिनका यश हो प्रकाशन कर जनता को प्रबुद्ध बनाना है। सद्‌गृहस्थ बनाने में यह पुस्तक अति उपयोगी है।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक आख्यान-शैली

(पृष्ठ ५ का शेष)

अर्थ से। यदि किसी भी तरह से समझ मे न आ रहा हो तो भी शब्द मे से किसी अक्षर विशेष को आधार बना कर अर्थ ग्रहण करे। प्रत्येक दशा मे अर्थग्रहण अवश्य करे क्योकि बिना अर्थ जाने मन्त्रपाठ करना तो भारवाही टट्टू या ठू ठ बन जाना है।

इसी परम्परा को निभाते हुए यदि कहीं कथा-सूत्र मिल रहा हो तो कथा की कल्पना क्यों नही की जा सकती ? बस कल्पना के मूल मे इतना स्पष्ट होना चाहिए कि उससे अर्थ ग्रहण के लिए सूत्र पकड़ना है।

सूर्या-सूक्त मे सूर्या के विवाह का वर्णन है। इसमे आकाश दर्शन का सुन्दर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। कथा-सूत्र भी है। वर्णन का उद्देश्य है दाम्पत्य जीवन का परिचय कराना। इसी के आधार पर परवर्ती काल मे मानव-समाज में विवाह सस्कार का स्वरूप और महत्त्व स्पष्ट हुआ।

लौकिक काव्य-परम्परा में रामायण एक आख्यान काव्य है। काव्यशास्त्रीय व्यवस्था के अनुसार आख्यान और उपाख्यान को पढ़ा जा सकता है, गाया जा सकता है और उसका अभिनय भी किया जा सकता है। आख्यानों के आधार पर अर्थ समझने-समझाने वालों को यास्क मुनि ने ऐतिहासिक कहा है।

आख्यान सज्ञक वर्णनों का स्वरूप ठीक तरह से समझना चाहिए और उनके अर्थ-सूत्रों को समझ लेना चाहिए। बस, इतना ही उद्देश्य है उनका। उनका उद्देश्य तो अर्थ-स्पष्ट करना ही होता है, कोई आख्यान को व्यसन का विषय बना ले तो वह बात अलग है।

—पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

ऋग्वेद पारायण यज्ञ व पंचम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक साधना आश्रम मैया मायक जींद द्वारा समायोजित २० से ३० जून १९९५ तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्य गुरुकुल कालवा (जींद) हरयाणा के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ का संयोजन स्वामी सतानन्द जी महाराज महात्मा निर्मलमुनि जी, महात्मा ध्यानमुनि जी ने सुचारु रूप से किया। इस वार्षिक महोत्सव पर आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वानो ने सारगर्भित प्रवचन दिए। श्री पूर्णसिंह जी पछी वामरा, महाशय चुन्नीलाल जी आर्य पं० किशोरीलाल जी आर्य आदि भजनोपदेशकों ने ईश्वर भक्ति, देशभक्ति, नारी महिमा आदि विषयो पर विचार प्रस्तुत किए।

आश्रम के भूमिदाता श्री सुखबीर जी आर्य सु० राजपाल सिंह के सारे परिवार ने तथा आश्रम के प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष एव सभी सदस्यों ने बड़ी श्रद्धा से सभी महानुभावो की सेवा की।

मुख्याधिष्ठाता—आचार्य चेतनदेव वैश्वानर:

टी० वी० पर वेदों के साथ खिलवाड़ नहीं होने देंगे

कानपुर। आज, 'दि वेदाज" नामक टी०वी० सीरियल के द्वारा वेदों के साथ खिलवाड़ करने का जो कुचक्र रचा जा रहा है उसे आर्य समाज कतई सहन नहीं करेगा। उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य व आर्य समाज गोविन्दनगर में आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने आगे कहा कि समस्त हिन्दू समाज मानता है कि वेद अपौरुषेय हैं। वेद मनुष्यों की रचना नहीं है इसका ज्ञान तो ईश्वर ने एक अरब सतानवें करोड़ वर्ष पूर्व सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों को दिया था। परन्तु दि वेदाज टी वी० सीरियल में अन्य धार्मिक ग्रन्थों की तरह वेदों की रचना भी मनुष्य कृत मानते हुए, मात्र चार हजार ईस्वी पूर्व दिखाकर तथा वेदों को किस्से कहानियों का ग्रन्थ सिद्ध करने का प्रयास कर समस्त हिन्दू समाज की धार्मिक जन भावना को कुचलने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री आर्य जी ने आगे कहा कि एक ओर तो हमारी केन्द्रीय सरकार सलमान रुश्दी के उपन्यास "दि सेटेनिक वर्सेज' को बिना गलत सिद्ध किये, बिना उसका अध्ययन किये हुए मुस्लिम भावनाओं को ध्यान में रखकर उस पर प्रतिबन्ध लगा देती है वहीं दूसरी ओर वेदों को गलत ढंग से प्रस्तुत करने पर भी, बिना हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं की परवाह किये हुए "दि वेदाज" टी०वी० धारावाहिक को प्रदर्शन की अनुमति प्रदान कर रही है। सरकार हिन्दुओं की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने का प्रयास न करे अन्यथा इसके बहुत ही गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पारित करके सूचना एवं प्रसारण मन्त्री से मांग की गई है कि उक्त सीरियल पर शीघ्र प्रतिबन्ध लगा दें।

सभा में श्री देवीदास आर्य के अतिरिक्त डा० जाति भूषण, बाल गोविन्द आर्य, स्वामी प्रज्ञानन्द, राम श्री दास, जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती शीला उप्पल आदि ने प्रमुख रूपसे दि वेदाज नामक टी०वी० धारावाहिक के विरोध में रोष व्यक्त करते हुए विचार प्रस्तुत किये।

सभा का संचालन मन्त्री श्री बाल गोविन्द आर्य ने किया।

—मन्त्री

ग्राम जाडरा में आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

ग्राम जाडरा जिला रेवाड़ी में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में २८ मई १९९५ से पांच जून १९९५ तक चरित्र-निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविरका उद्घाटन स्वामी धर्मवीर जी गुरुकुल घासेड़ा ने किया तथा दिनांक ५-६-९५ को समापन समारोह में हविपा के नेता राजेन्द्रसिंह ठेकेदार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इसका आयोजन श्री महेन्द्रसिंह (संयोजक) व रोशन लाल मन्त्री ने किया। शिविर में श्री देवेन्द्र शास्त्री गुरुकुल झज्जर ने, २५ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया।

शिविर के दौरान मास्टर जयसिंह, श्री दीनदयाल जी (आर्य वीर दल मण्डल नायक) श्री वेद प्रकाश जी सार्वदेशिक आर्य वीर दल महामन्त्री हरयाणा श्री राजकुमार मन्त्री आर्य समाज रेवाड़ी ने छात्रों को अनुशासन ब्रह्मचर्य एवं नैतिक शिक्षा का ज्ञान दिया।

रोशनलाल आर्य
मन्त्री
आर्य समाज जाडरा

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७४/९९ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२१.७-९९) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९९/९९
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 99/95 Post in N.D.P.S.O. on 20,21-7-1999

श्री वन्देमातरम् द्वारा उप-राष्ट्रपति को लिखा गया पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य समाज व्यक्ति की योग्यता और अभिरुचि के आधार पर समाज को संगठित करने के लिए वचन-बद्ध है। हमारे धर्म-शास्त्रों में वर्णित "वर्णाश्रम धर्म" और हमारी सामाजिक पद्धति दोनों का अर्थ समान है।

"योग्यता" और "अभिरुचि" इन दोनों शब्दों का अर्थ है "मूल्य" एवं उपयुक्तता। एक व्यक्ति का मूल्य उसकी शिक्षा और अभ्यास से जाना जाता है। उपयुक्तता का अर्थ है किसी विशेष कार्य को करने की उसकी उपयोगिता संगठित करने का अर्थ है, एक अनुशासित तरीके से प्रयत्न करना जो सबके लिए हितकारी हो।

जहां सब लोग ऐसा काम करने के लिए हाथ में लें जो वे अपनी शारीरिक तथा मानसिक क्षमता द्वारा पूरा कर सकें। एक पढ़ा-लिखा और विद्वान व्यक्ति ऐसे ही काम के लिए उपयुक्त होगा, जहां उसकी विद्वता का उपयोग हो सके। एक सैनिक के लिए साहस और शारीरिक बल आवश्यक है। व्यापार के लिए व्यक्ति को व्यापारिक मामलों में सक्षम होना चाहिए। जो इन कार्यों के लिए अयोग्य हों वे कृषि तथा इसी प्रकार के अन्य कार्य कर सकते हैं।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, केवल जाति के आधार पर वर्ण व्यवस्था ने जन्म ले लिया और समाज में जाति वाद ने अपनी जड़ें जमा लीं।

आप जानते ही हैं कि जो लोग अपने सामाजिक कार्यों और [illegible] विधियों से हट गये उन्हें किस प्रकार से समाज से बहिष्कृत किया गया? इस प्रकार समाज से बाहर निकाले गये आदमियों की संख्या बढ़ती गई। आजकल के तथाकथित "अनुसूचित जाति" के लोग जिन्हें दलित भी कहा जाता है वही समाज से [illegible] लोग हैं।

हम आपके इस विचार की प्रशंसा करते हैं। जब आपने कहा था कि दलितों को चाहिए कि वे गरीब वर्ग के लोगों के साथ बिना किसी धर्म और जाति का भेद-भाव किये, घुल-मिलकर समाज का अभिन्न अंग बन जायें।

आपने दलितों को अलग रहकर अपना विकास करने के विरुद्ध चेतावनी देकर ठीक ही किया है। डा० अम्बेडकर का नारा था "एक भारत और एक ही भारतीय समाज" उनके इस नारे को साकार करना आवश्यक है।

आपके समाज के दलित वर्ग को कोई अन्य नाम देने के विचार से आर्य समाज सहमत नहीं है। परम्परा ने जिस दुर्दशा में हमें डाल दिया है उससे निकलने में केवल नाम परिवर्तन से कोई सहायता नहीं मिलेगी।

महात्मा गांधी ने दलित वर्ग को 'हरिजन' नाम दिया था, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त आरक्षण की मांग भी समाज के किसी भी वर्ग के उत्थान के लिए उपयोगी नहीं है। चाहें वे दलित हों या कोई और। भारतीय संविधान का पिछले ५० वर्षों से प्रयोग हो रहा है, और तब से हम यही तरीका अपना रहे हैं। मुफ्त का हलुआ खाने से उसकी भूख और बढ़ती है। और एक बार आदत पड़ गई तो उसका छूटना फिर मुश्किल हो जाता है।

हम सब भारतीयों को मिलकर अपने समाज से विघटन के बीजों को दूर निकाल फेंकने का सद् प्रयत्न करना चाहिये। "आधार भूत कर्त्तव्यों के अध्याय के अन्दर "भारतीय संविधान में कहा गया है कि "देश में धर्म, जाति क्षेत्र, भाषा आदि की विभिन्नताओं के होते हुए भी हम लोगों में एकता और भाईचारे की भावना की अभिवृद्धि के लिए सदा प्रयत्न करते रहें।

भारत सरकार में आपके उच्च पदासीन होने के कारण आपके शब्द जन साधारण को अवश्य प्रभावित करेंगे।

मुझे आशा है कि इस पत्र में जो विचार मैंने प्रकट किये हैं उन पर ध्यान देंगे। यदि किसी बात पर आप मुझसे सहमत न हों तो कृपया मुझे लिखने का कष्ट करें।

आशा है आप स्वस्थ प्रसन्न होंगे।

भवदीय
वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली।

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि आर्य समाज जेवर के प्रधान बाबू तेजपाल जी गुप्ता का निधन हो गया है प्रधान जी ६८ वर्ष के थे पिछले १ वर्ष से कैंसर रोग से पीड़ित थे। आप आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता होने के साथ साथ शिक्षा प्रेमी समाज सुधारक भी थे प्रधान पद से पहले बाबू जी ने करीब २० वर्षों तक मन्त्री पद पर रहते हुए आर्य समाज की सेवा की। आपके निधन का समाचार सुनकर नगर की अनेक शिक्षण संस्थाओं में अवकाश कर दिया गया उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से श्री धर्मेन्द्र शास्त्री खुर्जा वालों के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। उनकी शव-यात्रा में हजारों गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। —मन्त्री

रिक्त स्थान

आवासीय विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के लिये आर्य समाज के सिद्धांतों नियमों को मानने वाला सात्विक-सदाचारी-कर्मठ-शाकाहारी शिक्षित सेवा निवृत्त मन वानप्रस्थी शिक्षित गृहस्थी की ब्रह्मचर्याश्रम में आश्रमाध्यक्ष कार्य के लिए आवश्यकता है। योग्यतानुसार वेतन के अतिरिक्त भोजन, आवास आवास की सुविधाएं।

प्रार्थना पत्र १० जुलाई ९९ तक "सहायक मुख्याधिष्ठाता" गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार' उ० प्र० के नाम भेजें।

—महेन्द्र कुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

आर्य वर चाहिए

अजमेर स्थित जन्मना कायस्थ उम्र २३ वर्ष ३ माह, शिक्षा एम. ए. बी. एड. (प्रभाव शास्त्र हिन्दी उत्तरार्ध) गौर वर्ण सुन्दर स्वस्थ, गृह कार्य में दक्ष आर्य संस्कार युक्त कन्या के लिए उच्च स्थाई सर्विस या उच्च स्तर के व्यापार में कार्यरत आर्य शाकाहारी वर चाहिए। कायस्थ आर्य को प्राथमिकता दी जाएगी।

सम्पर्क करें— —डा० विश्वमित्र शास्त्री
मित्र क्लीनिक रम्पुरा, किच्छा रोड
रुद्रपुर जिला नैनीताल (उ० प्र०)

[illegible] दिल्ली [illegible] मुद्रित तथा [illegible] सार्वदेशिक [illegible]
[illegible] नई दिल्ली से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष ; ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक २४)   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९९   श्रावण शु० ३   सं० २०५२ ३० जौलाई १९९५

'द वेदाज' धारावाहिक आर्य समाज की मान्यताओं के विरुद्ध नहीं बनेगा

सार्वदेशिक सभा प्रधान के नेतृत्व में ४ सदस्यीय शिष्ट मण्डल का बम्बई दौरा

बम्बई १९ जुलाई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे आर्य समाज का एक चार सदस्यीय शिष्ट मण्डल "द वेदाज" टी० वी० धारावाहिक के सम्बन्ध मे उसके निर्माताओ आदि को आर्य समाज के विरोध की चेतावनी देने के उद्देश्य से आज बम्बई पहुंचा, इस शिष्ट मण्डल मे श्री वन्देमातरम के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री श्री महेश विद्यालंकार तथा वेद प्रकाश श्रोत्री शामिल थे। यह शिष्ट मण्डल सान्ताक्रुज आर्य समाज में पहुंचते ही बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथजी के कार्यालय के लिए रवाना हो गया जहा पर उक्त धारावाहिक के निर्माता तथा निर्देशक आदि अपने दल सहित उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। श्री ओंकार नाथ जी ने शिष्ट मण्डल मे शामिल आर्य विद्वानों से धारावाहिक बनाने वाले दल का परिचय करवाया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम जी ने निर्माताओ को बताया कि वेद ईश्वर द्वारा चार ऋषियो को सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया गया वह ज्ञान है जिसे आर्य समाज पूर्णत अपौरुषेय मानता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की मान्यताओ के अनुसार वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर के सिद्धात को मानता है, वेदो मे धर्म और विज्ञान के सिद्धान्तो का कोई टकराव नहीं है। जबकि पौराणिक ग्रन्थ जिनमें पुराण और कई उपनिषद शामिल है, अवैज्ञानिक बातो से भरे पड़े है, अत वेदो के नाम पर पुराणों और उपनिषदो मे वर्णित कहानिया नहीं प्रचारित की जा सकती, यह वेद की निन्दा मानी जाएगी जिसे हम ईश्वर की ही निन्दा मानेंगे। अतः आर्य समाज इस प्रकार की ईश्वरीय निन्दा स्तुति को किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगा।

श्री वन्देमातरम् जी नें उक्त मान्यताओ को एक उदाहरण की सहायता से निर्माताओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि पौराणिक ग्रन्थों में वृत्तासुर और इन्द्र युद्ध की कथा कही जाती है जिनके अनुसार वृत्तासुर कोई राक्षसी शरीर वाला व्यक्ति इन्द्र के विरुद्ध युद्ध की ललकार करता है, पौराणिक ग्रन्थो म इस सम्बन्ध में कहा है कि इन्द्र महाराज ने अपने वज्रायुध का प्रयोग करते हुए उस राक्षस का वध किया। इस सम्बन्ध मे श्री वन्देमातरम् ने कहा कि एक वैज्ञानिक नियम को सब जानते है कि वृत की शक्ल में बादल जब उमड पड़ते है तो इन्द्र अपने स्वभाव से अपने वज्रायुध का प्रयोग करके उन बादलो को तहस नहस कर देता है।

अत इस वैज्ञानिक सिद्धात के स्थान पर यदि पौराणिक ग्रन्थों में प्रचलित अवैज्ञानिक कथाए प्रचारित करने का प्रयास किया गया तो आर्य समाज हर प्रकार से इसका विरोध करेगा। आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा श्री महेश विद्यालंकार ने भी इस सम्बन्ध मे अपने विचार रखे।

इस चर्चा के बाद निर्माता श्री मुनीश शुक्ला ने यह स्वीकार किया कि वेदों के नाम पर बनाए जाने वाले धारावाहिक का निर्माण सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृति के बिना नही किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि बम्बई तथा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओ के अतिरिक्त समूचे देश के विभिन्न हिस्सो म आर्य नेताओ ने इस प्रकार वेदो के नाम पर अवैज्ञानिक धारावाहिक के प्रति विरोध व्यक्त किया था। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी के विशेष प्रयत्नो से ही इस शिष्ट मण्डल के दौरे का कार्यक्रम बना था।

बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रवक्ता श्री शिववीर शास्त्री ने पहले ही इस धारावाहिक के निर्माताओ को चेतावनी दी थी कि ऐसे किसी भी कार्यक्रम को बनाने से पहले सार्वदेशिक सभा से अनुमति लेनी आवश्यक है।

चाणक्य धारावाहिक के निर्माता श्री चन्द्र प्रकाश का भी यही कहना है कि वेदाज के निर्माताओ को वेदो की सही जानकारी नही है अत गलतिया होने की पूरी सम्भावना है।

श्री वन्देमातरम के नेतृत्व मे इस बैठक से एक बार तो वेदाज धारावाहिक के निर्माण की सम्भावना टल गई है।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री ज्ञानप्रकाश जी चोपड़ा-अध्यक्ष डी.ए.वी. संस्थान दिल्ली

तूफान आने के बाद छोटा बड़ा तिनका भी इधर का उधर चला जाता है। श्री ज्ञान प्रकाश जी चोपड़ा भी भारत पाक विभाजन के तूफानी झोंको से भेरा सरगोधा पाक० से चलकर भारत में आए। तूफानों में किसी को भी पता नहीं चलता कि कौन कहां जायेगा। यह ऐसा ही समय का फेर था। लाखों इन्सान काल कवलित हुआ और लाखों बेघर होकर सम्पत्तियां छोड़कर यत्र-तत्र-सर्वत्र भारतीय अंचल में आ पड़े।

जीवन का माधुर्य आर्य समाज के क्षेत्र से हुआ, क्योंकि माता लज्जावन्ती जी की शिक्षा आर्य समाज के साये में आर्य कन्या विद्यालय में हुई। आर्य समाज का पंजाब में अच्छा प्रभाव था, पिताश्री भी उस प्रभाव से बच नहीं सके। वह कट्टर आर्य विचारों से ओत प्रोत थे। माता-पिता दोनो के संस्कार ज्ञानप्रकाश जी के ज्ञान-वर्धन में सहयोगी बने और श्री ज्ञानप्रकाश जी भी स्यालकोट आ० स० में आने जाने लगे तथा पिताश्री की भांति प्रचार-प्रसार में बढ़ चढ़कर भागीदार बने।

श्री ज्ञानप्रकाश जी चोपड़ा सौम्य-स्वभाव, असाधारण व्यक्तित्व के धनी राजनीति के दांव पेच से परे सरल जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं। खान पान में शुद्ध शाकाहारी भोजन, हिन्सा के स्वभाव से दूर, अहिंसक वृत्ति, सादा जीवन, मृदुस्वभाव, मन से निश्छल संस्कारों के धनी, शिक्षा शास्त्री श्री ज्ञानप्रकाश जी अपने नाम के अनुरूप प्रचार कार्य में लग गए।

आपका जन्म २६ अगस्त १९२० को भेरा जिला सरगोधा (पाक०) में हुआ था लाड़-प्यार में पले बढ़े और प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम में शुरू हुई। बी. ए. आनर्स स्यालकोट कालिज से तथा एम. ए. राजकीय महाविद्यालय लाहौर से उत्तीर्ण किया।

शिक्षा से शिक्षक—

अपनी योग्यता प्रतिभा के कारण स्यालकोट में लेक्चरार के पद पर नियुक्ति हुई और १९४७ तक वहीं अध्यापन कार्य किया।

देश विभाजन की विभीषिका से त्रस्त आप दिल्ली आ गए। यहां आने पर आर्य समाज की गतिविधियों में जीवन लगा रहने से और शिक्षा के धनी योग्यता से श्री जी. एल दत्ता जो आर्य समाज के शिक्षा क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति थे, उनसे साक्षात्कार हुआ। श्री दत्ता जी उन्हीं दिनों हंसराज कालिज की योजना व निर्माण करा रहे थे। १९५४ में इसी विद्यालय की स्थापना कर इसी विद्यालय में प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति की गई। ३९ वर्षों तक शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न पदों पर रहते हुए प्राचार्य पद पर भी कार्य किया। १९८५ में ७० वर्ष की आयु में प्राचार्य पद से सेवामुक्त हुए। प्राचार्य पद पर जी० एल० दत्ता और प्रो० शान्ति नारायण जी हंसराज कालिज के बाद प्राचार्य नियुक्त हुए। जिसे उन्होंने बड़ी तन्मयता से निर्वहन किया और आप के कार्यकाल में कालिज ने बहुमुखी उन्नति की। नए भवन स्टाफ क्वार्टर्स का निर्माण कराया।

विज्ञान के चारों संकाय जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी तथा रसायन में आनर्स की कक्षायें प्रारम्भ की गईं। छात्र संख्या में अभिवृद्धि हुई।

एक बार विद्यार्थी जो श्री डा० रामगोपाल शालवाले के पौत्र हैं श्री संजय कुमार जी। उनका प्रवेश रामजस कालिज में हुआ। उन्होंने इस बात का पता लगाया। विश्वविद्यालय कैम्पस में कौन से कालिज की छवि, अध्ययन स्टाफ अच्छा है पता चला कि वह हंसराज कालिज है जहां के प्राचार्य श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा हैं। श्री संजय जी ने रामजस से नाम कटाकर हंसराज कालिज में प्रवेश लिया। विद्यार्थी वर्ग भी शिक्षा शिक्षक, शासन, अनुशासन तौर-तरीके कहां कैसे हैं—पसन्द कर वहीं पढ़ना चाहता है। आज हंसराज कालिज दिल्ली विश्व विद्यालय में सबसे अग्रणी कालिज माना जाता है।

अंग्रेजी की बोलती ऐसे बन्द हुई

प्रसिद्ध इतिहासकार डा० काशीप्रसाद जायसवाल हिन्दी को राष्ट्र भाषा मानने मे गर्व महसूस करते थे। जहां तक हो सके वह हिन्दी में काम करते थे। एक प्रोफेसर उनसे मिलने आए और विद्वता दिखाने के लिए अंग्रेजी में बोलते रहे। जायसवाल जी ने हिन्दी में अपनी बात-चीत जारी रखी। फिर भी वह विद्वान अंग्रेजी में बोलते रहे। जायसवाल जी को बुरा लगा और वह फ्रेंच भाषा में बोलने लगे। प्रोफेसर हक्का-बक्का रह गए, तो जायसवाल जी ने कहा—"महोदय, जब विदेशी भाषा मे ही बात करनी है तो हम क्यों न फ्रेंच भाषा मे बात करें। यह भाषा अंग्रेजी से मधुर भी है और सुसंस्कृत भी।"

(दैनिक नवभारत टाइम्स के ४ जुलाई १९९१ के अंक मे साभार)

जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य०

यह सारा श्रेय बुनियाद के पत्थरो को रखने वालों का तो है पर बुनियाद पर भवन बनाने वाले का श्रेय श्री चोपड़ा साहब को है।

परिणामत :—

शिक्षा क्षेत्र से निवृत्त के पश्चात आप डी. ए. वी. मैनेजिंग कमेटी में अवैतनिक सचिव पर आपकी नियुक्ति की गई। १९९० में प्रबन्ध कर्तृसभा के प्रधान बने जो १९९४ ई० तक इस पद पर सुशोभित रहे। आपकी सूझ-बूझ का परिणाम ही है कि स्थान-स्थान पर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूलों की स्थापना विशाल भवन संस्कृत विषय की अनिवार्यता, धर्म शिक्षा के पद पर उनके द्वारा स्थापित उपदेशक विद्यालयों से तैयार पुरोहितों की अच्छे वेतन पर नियुक्तियां की। आपकी सूझबूझ का ही परिणाम है।

आपकी यह योग्यता व क्षमता है कि दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालिज तथा प्रादेशिक आर्य प्रति निधि सभा के प्रधान है उनका मुख्य कार्य दोनों में पारस्परिक मेल बैठाकर छात्रो में वैदिक मान्यताओं के आधार पर जीवन बनाना मुख्य उद्देश्य है।

भविष्य को सुन्दर बनाना ही आप जैसे सक्षम व्यक्ति का दायित्व है जहां विद्यार्थी वर्ग अनुशासित रहे वहां अध्यापक अध्यापिकायें भी एक पोशाक, रहन सहन, खान-पान संस्था के ही अनुरूप हो। ऐसी भी व्यवस्था बनाई जाए मेरा विश्वास है जहां आपका जीवन सफलता की सीढ़ियो पर आगे बढ़ा है और भविष्य मे भी महान ही होगा।

आपका त्यागमय जीवन सरल स्वभाव योग्यतम व्यक्तित्व ही आपके गरिमामय दोनों अध्यक्ष पदों के कार्य को उन्नतिशील बनायेगा।

१९९१ वर्ष आपके जीवन में सुख समृद्धि ऐश्वर्य लाए और आपके गरिमामय पदो में भी वृद्धि हो।

नाम के अनुसार ज्ञान के प्रकाश में अभिवृद्धि हो।

अभी १ दिन पूर्व सार्वदेशिक सभा मे सूचना प्राप्त हुई कि श्री चोपड़ा जी सभा में आना चाहते हैं हमने आपको सूचित किया कि आप नहीं आयेंगे सभा के प्रधान जी आपके दर्शनों हेतु आ रहे हैं।

आपने अपने स्वत्व को न समझकर कहला भेजा कि प्रधान जी मेरे से पद व आयु में महान हैं वह नहीं आयेंगे हमी आपके पास आयेंगे और एक दिन प्रिन्सिपल श्री मोहन लाल जी के साथ श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्त के साथ सार्वदेशिक सभा भवन में आप आ ही गये। वस्तुतः जैसा सुना था वैसे ही व्यक्तित्व वाले श्री चोपड़ा नजर आये। दूर से सुना था पर समीप से भी देखा—

दूरेऽपिश्रुत्वा भवदीय कीर्तिम्
आप कीर्ति वाले वस्तुतः ज्ञान प्रकाश ही है—
आपके जीवन में अभिवृद्ध हो ऐसी कामना है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

सारा भारत ही बूचड़खानों का देश बन रहा है

सरकार की नजरों में मुस्लिम क्षेत्रों में पशुवध पनप रहा है?

बीमार पशुओं को भी मारकर खाया जाता है?

दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के शासन में बूचड़खाने पर ५-६ हजार पशु प्रतिदिन काटे जाते थे। दिल्ली सरकार ने प्रतिबन्धित कर, दो ढाई हजार पशुओं के काटने की स्वीकृति दी। इसके जवाब में सरकार दिल्ली के पूर्व और पश्चिम में कट्टीखाना बनाने की योजना बना रही थी परन्तु क्षेत्रीय जनता के विरोध पर सरकार इन्हें बनाने की हिम्मत न जुटा पा रही है। परिणामतः देश में विभिन्न स्थानों पर नये बूचड़खाने बनाये जा रहे हैं।

मुस्लिम मोहल्लों में बूचड़खाने

सरकारी डा० की मुहर लगाकर सकड़ों भस व भसा मोहल्लों में कटने हेतु ले जाते हुए आप देख सकते हैं। दिल्ली व उसके आस-पास महामारी को रोकने हेतु इन बूचड़खानों को सख्ती से बन्द किया जाये। आज की स्थिति यह है कि डिलाइट सिनेमा के पीछे गली में सैकड़ों जानवर प्रतिदिन काटे जाते हैं। सरकार व जनता सभी देखते व जानते हैं।

नगर निगम के उत्तर पूर्वी शाहदरा क्षेत्र में एक मोटे आंकड़े के अनुसार लगभग एक सौ अवैध बूचड़खाने सरकार के शासन के नीचे अधिकतर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में जैसे सीमापुरी, नई सीमापुरी सीलमपुर, जाफराबाद, चौहान बांगर, मुस्तफाबाद, शास्त्री पार्क, चांदबाग, स्थानों पर लगाये जा रहे हैं।

'जाफराबाद, सीलमपुर क्षेत्र की गली-गली में पशुवध शाला है। घरों में जानवर काटने पर गन्दगी नालियों-सड़कों पर फैलती है जिससे बीमारी फैलने का अन्देशा है। प्रदूषण से शहर बिगड़ रहा है। पास पड़ौस के परिवार बदबू गन्दगी से पीड़ित हैं।

परन्तु कसाइयों और मुस्लिम नेताओं के खौफ के कारण निगम पुलिस इन्हें हटाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही है।

इस अवैध पशुवध पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं?

साधनों का अभाव, पुलिस व अफसरों का असहयोग घूस प्राप्ति नगर-निगम के अपर्याप्त कानून चौकन्ने कसाइयों के कारण यमुना पार चल रहे बूचड़खानों पर अंकुश लगाना कठिन है—

[illegible] युक्तियां हैं। फिर भी नगर-निगम के वरिष्ठ अधिकारी चिन्तित हैं अवैध बूचड़खानों पर छापा मारने पर झगड़ा होने का भी खतरा है। झगड़े में बड़े नेताओं से कौन उलझे अतः पुलिस का रवैया भी नजर बचाकर असहयोग ही करता है।

अवैध बूचड़खानों को न हटा पाने के पीछे सबसे बड़ा कारण यह बताते हैं, कि इन अड्डों से नगर-निगम और पुलिस को, बंधी हुई राशि जाती है? खैर—

जिनकी सरकार है उन्हें भी सोचना चाहिए। इस बीमारी के फैलने से सबसे बड़ी महामारी फैलने का भय है यदि इस समस्या या अवैध बूचड़खानों को इन क्षेत्रों से सख्ती से नहीं रोका गया तो महामारी का दुष्परिणाम दिल्ली के नागरिकों को और प्रशासन को भुगतना पड़ेगा।

बम्बई प्रदेश में भी भारतीय जनता ने गोवंश के कटने पर रोक लगा दी है। देखना है कि कितनी सफलता हाथ लगती है। हैदराबाद में अलकबीर बूचड़खाना ने अपना काम शुरू कर दिया है। आजादी के बाद देश में हिंसा कम होनी चाहिये थी। अहिंसा पुजारियों के देश में हिंसा का नग्न नृत्य किया जा रहा है। क्या कोई भी महापुरुष इस हिंसा को रोकने के लिये अपना बलिदान नहीं दे सकता है। प्रश्न गम्भीर है। बलिदान चाहिये?

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

प्रिंसिपल दत्तात्रेय बाव्ले श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

आर्यसमाज सांताक्रुज ने दिनांक ४ जुलाई, १९९५ को एक विशाल समारोह में प्रिन्सिपल दत्तात्रेय बाव्ले अजमेर को श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया। ग्राम नागपुर महाराष्ट्र में जन्मे प्रिन्सिपल बाव्ले को उनके परिवार जनो ने ११ वर्ष की अवस्था में दयानन्द अनाथालय अजमेर में छोड़ दिया। आर्यसमाज की छत्रछाया में ही वह पलकर और पढ़कर बड़े हुए और आर्यसमाज अजमेर, की शिक्षण संस्थाओं के विकास में उनका अद्भुत योगदान रहा। लगभग २५ वर्षों तक वह दयानन्द कालेज अजमेर के प्रिंसिपल रहे और पश्चात आर्य शिक्षा सभा के प्रधान पद पर आज तक सुशोभित हैं। प्रिंसिपल जी के प्रयासों के परिणामस्वरूप आज आर्य शिक्षा सभा के अन्तर्गत २० शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं जिनमें लगभग ७००० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं व लगभग ३० करोड़ की अचल सम्पत्ति है। इस शिक्षा सभा का वार्षिक बजट ढाई करोड़ रुपयों का है व उसमें लगभग ५०० कर्मचारी कार्यरत हैं।

श्री बाव्ले १९५० में लीडर एक्सचेंज नामक सामाजिक व शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में तीन महीने अमेरिका में रहे और ब्रिटिश कौंसिल के निमन्त्रण पर इंग्लैंड व यूरोप गये। वह एक प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाज सुधारक, हैं अजमेर नगर परिषद् के तीन बार सदस्य रहे व तीन वर्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा लगभग ४ वर्ष तक प्रथम श्रेणी के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे।

हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में उन्होंने ४० से अधिक पुस्तकें लिखी हैं उन्होंने राष्ट्र के पुनर्निर्माण व उन्नति का श्रेय स्पष्ट रूप से महर्षि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज को दिया।

भारत का कालातीत संविधान

बुद्धि प्रकाश आर्य, एम, ए. (त्रय) महोपदेशक अजमेर

भारत के संविधान निर्माताओं ने भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के उद्देश्य से संविधान की रचना की थी जिसमें समानता, न्याय, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, धर्म निरपेक्षता तथा अखण्ड राष्ट्र के सम्प्रत्य को प्राथमिकता प्रदान करने की असफल चेष्टा की गई है यद्यपि संविधान को जन-गण-मन अधिनायक बनाने की चेष्टा की गई है किन्तु उसका अधिनायकत्व आज जिस दुर्दशा को प्राप्त हो रहा है उससे समूचा राष्ट्र विचलित हो उठा है। यूं तो इस विशालकाय संविधान को विश्व का सबसे बड़ा संघात्मक स्वरूप वाला संविधान होने का गौरव प्राप्त है किन्तु वह अब पूर्णतया लक्ष्यभ्रष्ट होकर नियमों उपनियमों का पुलन्दा मात्र रह गया है। देश को भटकन की दिशा में धकेलता चला जा रहा है। मूर्ख पंडितों की भांति "महाजनो येन गतः सः पन्थः" का कोरा राग अलापता हुआ यह संविधान देश को श्मशान स्थल की विनाश यात्रा पर लिए जा रहा है। भटकन, विभ्रम, किंकर्त्तव्य विमूढ़ता तथा अविश्वास भरे संशोधनों ने इसे पूर्णतया कालातीत बना दिया है।

आज यह संविधान कतिपय वर्गों के व्यक्तियों के तुष्टीकरण का प्रतीक [illegible] स्वार्थ का पूर्ति हेतु, अब तक, ८० संशोधन किए जा चुके हैं। विश्व का कोई भी संविधान ऐसा नहीं है जिसे इतनी आसानी से तोड़ मरोड़कर रख दिया जाता हो। आस्ट्रेलिया जैसे देश में तो संविधान संशोधन हेतु जनमत संग्रह किया जाता है। अब तक वहां की जनता ने लगभग तीस संशोधनों को नकार दिया है।

भारत में संविधान संशोधनों का यह दुष्परिणाम देखने में आया है कि इनसे पवित्र समाजवाद की संकल्पना एवं उसकी संरचना आर्थिक एकाधिकारवाद एवं सत्तावाद के रूप में उभर कर देश की सम्प्रभुता व समृद्धि को निगलने लग गई है फलत: पूंजीवाद एवं अराजकतावाद पनपने लगा है और समानता न्याय व संवैधानिक वैधता सभी कुछ धूलधूसरित हो चुके हैं जिससे यह भारतीय संविधान अखण्डता और एकता के लिए खतरा बनता जा रहा है। ४२वें संविधान संशोधन ने तो लोकतन्त्र की पवित्रता तक को कलंकित करके रख दिया है जिसमें अधिनायकवाद की दुर्गन्ध भरी पड़ी है। राजीव गांधी के समय में किया गया संविधान संशोधन तानाशाही का ज्वलन्त उदाहरण है आज न्यायपालिका और कार्यपालिका में कोई तालमेल नहीं रह गया है जिससे न्याय, समता और पारस्परिक विश्वास भी बुरी तरह से दुष्प्रभावित हुए है। कार्यपालिका, उच्चतम न्यायालय के निर्णयों को उलट देती है जो भले ही कितना न्यायसंगत एवं सही क्यों न हो कुछ निर्णय जिनमें शाहबानो का चर्चित निर्णय इस निरंकुशता के ज्वलंत उदाहरण हैं: उच्चतम न्यायालय यदि चाहे भी तो वह संविधान में किए गए स्वार्थपूर्ण निर्णयों को अवैध करार नहीं कर सकता है उस पर कई प्रकार के भयों का अंकुश रहता है फलत: स्वार्थवाद खुलकर नृत्य करने लगा है। प्रधान न्यायाधीश को भी ४२ वें संशोधन के समय इस कड़वे सत्य को उगलना पड़ा था कि कार्य पालिका व संविधान को न्याय पालिका मे विश्वास नहीं रह गया है।

सबसे अधिक दुखद बात तो यह है कि संविधान निर्माता संगठन के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद के अतिरिक्त उसमे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो भारतीय संस्कृति एवं भारतीय आत्मा को पूर्ण रूप से जानता हो सभी ने पश्चिमी सभ्यता व शासकों का अंधानुकरण करते हुए मनमानी की है और राजेन्द्र बाबू की वाणी को मूक रखने पर विवश कर दिया था। कितनी हास्यास्पद बात है कि हमारा देश आर्यावर्त था बाद में भारत और हिन्दुस्तान कहा जाने लगा यदि इन्हीं नामों से हमारे अतीत की पहचान को अक्षुण्ण रखा जाता तो कितनी उत्तम बात होती किन्तु नेहरू के आग्रह पर इस देश का नाम "इंडिया" स्वीकार किया गया जो पिछड़ेपन का अर्थ देने वाला है। यह नाम अंग्रेजों ने हमें हीन भावना के कारण प्रदान किया था। अंग्रेजी शब्दकोष में 'इण्डियन' शब्द आदिवासी, काले या पिछड़ी प्रजाति के लिए प्रयुक्त हुआ है जैसे रेड इंडियन वेस्टइंडीज आदि।

भारतीय आत्मा की झलक हमारे संविधान में, आदि से अंत तक कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती है। धर्मनिरपेक्षता अर्थात सेक्यूलरिज्म न तो परस्पर पर्यायवाची शब्द हैं और न धर्म सापेक्षता के विलोमार्थ को ही द्योतित करते हैं अपितु इसमें ऐसी धर्मविहीनता की भावना भरी हुई है जो भारतीय आत्मा से सर्वथा दूर एवं असम्पृक्त है। इसी धर्महीनता की ओट में सत्ताधारी वोटों का शिकार करता रहा है और भारतीय जनता को मूर्ख बनाता रहा है आज की युवापीढ़ी इसी धर्महीनता के ढांचे में ढलकर धर्म व नैतिकता विहीन हो रही है। राजनेताओं ने इसे तुष्टीकरण का हथियार बना रखा है। इसी प्रकार बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक शब्द भी भारतीय आत्मा से सर्वथा दूर हैं जो मोरले मैंटो की संकल्पना का नकलमात्र है। इनमे विदेशी भावना की दुर्गन्ध है जो सत्ता के लोभी राजनेताओं की मानसिकता के अनुकूल सिद्ध होती रही है।

संविधान में समान नागरिक संहिता का उल्लेख भी एक खुला मजाक बनकर रह गया है। शाहबानो के केस का निर्णय यद्यपि संविधान के अनुकूल [illegible] तुष्टीकरण की बदनियती ने शरीयत का सहारा लेकर समानता और धर्मनिरपेक्षता की धज्जियां उड़ाकर रख दी हैं। धारा ३७० एक अखण्ड राष्ट्र की संवैधानिक भावना को खुली चुनौती दे रही है। इस धारा ३७० ने दो राष्ट्र के सिद्धांत को उजागर व लागू करके संविधान की एक अखण्ड राष्ट्रवादी भावना पर करारा तमाचा लगा दिया है। आज कश्मीर भारत से लगभग अलग हो चुका है वहां की अराजकता और आतंकवाद की गुंडागर्दी रोकने में यह संविधान सर्वथा अक्षम हो चुका है। संविधान ने भारत के इस स्वर्ग को लगभग खो दिया है। इस घातक धारा ने वहां धारा ११५, १३६, १३४ व १३९ तक को निष्प्रभावी बनाकर रख दिया है। संसद को यह अधिकार नहीं है कि वह जम्मू कश्मीर में समवर्ती सूची को लेकर कोई कानून बना सके जबकि अन्य राज्यों के लिए बना सकता है। कश्मीर में तिरंगे ध्वज का फाड़ना, जलाना व अपमानित करना किसी प्रकार संवैधानिक अपराध नही माना जाता है। कैसी विडम्बना है कि कश्मीर का नागरिक तो पूरे भारत का नागरिक है किन्तु भारत के नागरिक कश्मीर का नागरिक नहीं ऐसा जंगली कानून तो शायद विश्व के किसी भी संविधान में नहीं होगा। अनुच्छेद १५२ के आधार पर कश्मीर राज्य की परिभाषा के अन्तर्गत आता ही नही है अतः कई आवश्यक मामलो में राष्ट्रपति भी निर्णय लेने में असमर्थ हो जाता है ऐसा शिथिल संविधान वर्तमान परिस्थितियों मे कालातीत नहीं तो और क्या है? संविधान की धारा ३०, २५, ३८ अल्पसंख्यकों के लिए ऐसी धार्मिक शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान कर रही है जिन्होंने समानता का गला घोंट कर रख दिया है और बहुसंख्यक वर्ग को इन सुविधाओं से वंचित कर के संविधान ने समानता के सिद्धांत में पलीता ही लगा दिया है।

संविधान निर्माता ने पश्चिमी संस्कृति, पश्चिमी कार्य शैली तथा पश्चिमी मानसिकता से संविधान पर पश्चिम की काली छाया रोप दी है जिसकी आत्मा में भारतीयता कहीं भी झलक नहीं मार रही है। राष्ट्रहित का राग अलापने वाले इन संविधान निर्माताओं ने कश्मीर जैसे स्वर्ग को मानों तश्तरी में रखकर गद्दारों को सौंप रखा है जो समूची राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के अस्तित्व रक्षा के लिए प्रश्नचिन्ह बन कर रह गया है।

संविधान ने पर्संनल ला की सुविधा देकर उन अल्पसंख्यकों के लिए जनसंख्या वृद्धि का वरदान दे दिया है जो बार-बार विवाह करके और मनमानी सन्तानें पैदा करके वोट शक्ति जुटाने के लिए स्वतन्त्र हैं जिसके बल पर उन्होंने दिल्ली के सत्ताधारियों की नाक में नकेल डाल रखी है। उनसे एक विवाही परिवार बनाने का आग्रह करने में कोई भी शक्ति साहस नहीं कर पा रही है। जबकि हिन्दुओं की जनसंख्या को परिवार नियोजन के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

जीवन मूल्य और शिक्षा

यशपाल गुप्ता, अलीगढ़

आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में जीवन मूल्यों का ह्रास, अनुशासन हीनता, अध्ययन-अध्यापन में अपेक्षित स्तर का अभाव, श्रम के प्रति अनास्था एवं कर्त्तव्य के प्रति उदासीनता आदि विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहे हैं।

शिक्षा से इतर क्षेत्रों में भी वर्तमान पीढ़ी शाश्वत मूल्यों के प्रति संवेदन शील नहीं है। समाज के जागरूक प्रहरी एवं प्रबुद्ध विचारक इस ओर से बड़े चिन्तित हैं और प्रयत्नशील हैं कि नैतिक मूल्यों के प्रति पुनः निष्ठा जाग्रत हो।

मूल्य उन गुणों को कहते हैं जिनकी हम जीवन में कामना करते हैं तथा प्राप्त करना चाहते हैं। वे चाहे भौतिक हों जैसे भोजन प्राप्ति की इच्छा, मकान अथवा वस्त्रों की आवश्यकता पूर्ति और चाहे वे चिरन्तन हों जैसे सत्य की प्राप्ति कल्याणकारी भावना का उदय एवं सौन्दर्य प्रेम। मूल्यों का निर्धारण हमारे चिन्तन का पहलू है और उनको आचरण में उतारना शिक्षा का कार्य है। हम समाज में रहकर जीवन के मूल्यों का निश्चय करते हैं। हमारी सांस्कृतिक विरासत इनके निश्चय करने में सहायक होती है। कौन से मूल्य ऐसे हैं जिन्हें हम आने वाली पीढ़ी में हस्तान्तरित करना चाहते हैं और वे कौन से मूल्य हैं जिनको हमारे पूर्वजों ने हमारे व्यवहार में उतारने की अपेक्षा की थी। इस प्रकार मूल्यों की बनावट पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है। जब भौतिक मूल्य हमारे शाश्वत मूल्यों से ऊपर होने लगते हैं तब हमें लगता है कि हमारे मूल्यों का अवमूल्यन होने लगा है।

कुछ यात्री गंगोत्री का पवित्र जल कुप्पियों में भरकर वापस लौट रहे थे, लगभग आधी चढ़ाई चढ़ने के उपरान्त एक छायादार स्थान पर विश्राम करने के लिये रुके। मौसम में काफी गर्मी हो चली थी कुछ अन्य यात्री भी वहाँ पहिले से विश्राम कर रहे थे। विश्राम कर रही एक महिला को प्यास से व्याकुलता हुई और वह प्यास असह्य हो उठी। गंगोत्री धाम से लौट रहे यात्रियों पर जल देखकर उससे रहा न गया और वह उन यात्रियों से जल की याचना कर बैठी।

'जल कैसे दे दूं, पता है यह पवित्र जल है, इसे मैं अपने परिवारी जनों के लिये संजोये हुये हूं, उन यात्रियों में से एक पुरुष ने कहा।

महिला रुंआसी हो उठी। तभी एक वृद्ध सज्जन उठे और अपनी जल से भरी बोतल महिला के आगे करते हुये बोले, 'बेटी, जल पीकर अपनी प्यास बुझा लो'।

महिला झिझकी और बोली, 'बाबा, यह पवित्र जल है।'

'जल वही पवित्र होता है जो किसी की प्यास बुझाये' वृद्ध बोले और महिला को जल पिलाकर आगे बढ़ गये।

भौतिक लाभ से कहीं बढ़कर वृद्ध को आत्मिक सुख मिला।

आज हम ऐसी ही त्रासद स्थितियों से गुजर रहे हैं जिसमें सदियों से चले आ रहे हमारे स्थापित मूल्यों को खतरा उत्पन्न हो गया है, उनका सन्तुलन बिगड़ने लगा है। हमारे नैतिक आचरण, आध्यात्मिक विकास एवं सामाजिक एकता पर अवमूल्यन का दबाव बढ़ रहा है।

गुण ही ज्ञान है। ज्ञान रूपी वृक्ष पर सद्गुण रूपी फल लगने ही चाहियें। हमारे विद्या मन्दिर गुणों के रोपण के लिये क्यारियां हैं। आज सारा समाज हमारे बुद्धि जीवियों से यह आशा लगाये हुये है। बुद्धिजीवी न केवल हमारे शाश्वत मूल्यों के रखवाले हैं बल्कि उनको ऐसा पर्यावरण तैयार करना है जिसमें शिक्षा विद्यार्थी के व्यवहार में इच्छित परिवर्तन करने में समर्थ हो। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी ऐसे मूल्य तथा आदर्श गढ़े जो मानव की उन सनातन प्रणालियों के अनुरूप हों जिन्हें उसने युगों-युगों के परिश्रम और अनुभवों से विकसित किया है। हमारा यह तात्पर्य कदापि नहीं कि हम आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों को नकार दें, परन्तु यह भी सम्भव है कि विज्ञान और प्रोद्योगिकी का विकास इस दृष्टि से हो कि उनकी गुणवत्ता और उपयोगिता मानव को जीवन और मन के उच्चतर स्तर तक ले जाये। शिक्षण संस्थाओं की संख्यात्मक वृद्धि में गुणात्मकता को नीचे धकेल दिया है। आज मूल्यों को ऊपरी दिखावे की वस्तु मानकर उपदेश देने मात्र से कर्तव्य की इति श्री मान ली जाती है। जैसे रामलीला के पात्र आदर्श की शिक्षा नहीं दे सकते टी०वी० सीरियल के अभिनेता हमारी नई पीढ़ी को अनुकरणीय कैसे बना सकते हैं? क्योंकि वे जानते हैं कि अभिनय करने वालों ने उन शाश्वत मूल्यों को अपने जीवन में नहीं उतारा है। मूल्यों का आदान-प्रदान तो आत्मा से आत्मा का सम्बन्ध है। ईमानदारी और सामाजिक दायित्व जैसे आधार भूत मूल्यों का प्रत्यक्ष शिक्षण आवश्यक नहीं है, बल्कि यह तो छात्रों के सम्पर्क में आते समय अध्यापक के आचरण और व्यक्तित्व पर निर्भर करेगा। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है—

आचार्य आश्रम में बैठे हुये थे। तभी एक व्यक्ति ने आश्रम में प्रवेश किया और कहने लगा, 'मेरा बच्चा गुड़ बहुत खाता है, यदि आप इसे मना कर देंगे तो यह गुड़ नहीं खायेगा।"

आचार्य ने सुना और बोले "आप एक सप्ताह बाद आयें।"

व्यक्ति एक सप्ताह बाद फिर पहुंचा और आचार्य से पुनः याचना की। इस बार आचार्य ने बालक को अपने पास बुलाकर कहा— "बेटे गुड़ मत खाया करो।"

व्यक्ति आश्चर्य चकित था और पूछ ही बैठा, "श्रीमन् आपने इतनी सी बात उसी दिन क्यों नहीं कह दी?

"मैंने गत सप्ताह गुड़ न खाने का स्वयं अभ्यास किया था, तब अपने छात्र से कहने का अधिकारी बना हूं" आचार्य बोले।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सद्गुणों को आचरण में उतारने वाला अध्यापक ही छात्रों को प्रभावित कर सकता है और ऐसा अध्यापक ही छात्रों का आदर्श होता है। व्यवहार में सत्यभाषण, स्वावलम्बन, परोपकारी भावना, सहयोग, राष्ट्र प्रेम, परमात्मा में विश्वास, वैज्ञानिक स्वभाव. पर्यावरण रक्षण, सामाजिक विवेक, लैंगिक समानता, बड़ों का सम्मान, अहिंसा आदि ऐसे मूल्य हैं जिनको हर स्तर की शिक्षा में समुचित स्थान तथा अभ्यास मिलना चाहिये। अध्यापक ये मूल्य छात्रों में तब ही उतारने में सक्षम होगा जब समाज भी उससे सहयोग करे। यदि अध्यापक अपने छात्र का विश्वास नहीं पा सका तो छात्रों द्वारा मूल्यों के अनुकरण का प्रश्न ही नहीं उठता। इस सन्दर्भ मे एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है।

कुलपति महोदय ने अपने पुत्र को घर पर पढ़ाने के लिए एक श्रेष्ठ छात्र को नियुक्त किया। संध्या समय जब वह छात्र पढ़ाने को उपस्थित हुआ तो उसके सम्मान मे कुलपति कुर्सी से उठकर खड़े हो गये और उसका अभिवादन किया। छात्र बेचारा शर्म से गड़ा जा रहा था, धीरे से बोला, "श्रीमन् आप तो स्वयं सम्माननीय हैं, मैं तो मात्र आपका छात्र हूं।"

कुलपति ने स्नेहपूर्वक समझाया, "आप इस समय मेरे पुत्र के शिक्षक के रूप में यहां आये हैं, अतः मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आपका सम्मान करूं। यदि मैं सम्मान नहीं करूंगा तो मेरा पुत्र आपका क्योंकर सम्मान करेगा? मैं अपने कार्यालय में कुलपति हूं परन्तु यहाँ तो मैं अपने बेटे का पिता हूं।"

छात्र ने अध्यापक की गरिमा प्राप्त कर ली थी।

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

राष्ट्र रक्षा के तीन बृहद यज्ञ (२)

संक्षिप्त परिचय

—डा०. कृष्ण कुमार

वाजपेय यज्ञ में दक्षिणा के रूप में विविध वस्तुयें पुरोहितों को दी जाती थीं। आश्वलायन का कथन है कि दक्षिणा के रूप में १७०० गायें, १७ रथ, १७ अश्व, १७ अन्य पशु, १७ बैलगाड़ियां और सुन्दर सजे १७ हाथी पुरोहितों को दिये जाने चाहियें।

(३) अश्वमेध यज्ञ—

अश्वमेध यज्ञ का राष्ट्रीय महत्व था। तैत्तिरीय ब्राह्मण में राष्ट्र को ही अश्वमेध यज्ञ कहा गया है (राष्ट्र का अश्वमेध—तैत्तिरीय ब्राह्मण ३-८-९)। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार यह एक उत्तम यज्ञ है, जो दिग्विजय करने वाले चक्रवर्ती सम्राटों द्वारा किया जाता है। रामायण में कहा गया है कि अश्वमेध यज्ञ पवित्र होता है सारे पापों का प्रक्षालन करता है।

> अश्वमेधो महाराज पावनः सर्वपाप्मनाम्।
> पावनस्तव दुर्धर्षो रोचतां रघुनन्दन॥

तैत्तिरीय संहिता में अश्वमेध यज्ञ के निम्न फल बताये गये हैं:—

१—राज्य में सब प्रकार के धनों की उपस्थिति होती है।
२—राज्य में सभी प्रकार के कल्याणों का अस्तित्व होता है।
३—प्रचुर खाद्य पदार्थ उपस्थित होता है।
४—पशुओं से प्रचुर घी-दूध आदि पदार्थों का उत्पादन होता है।
५—राजा के हितों का निरन्तर प्रवाह होते है।
६—राजा और प्रजा का गौरव बढ़ता है।
७—देश के ब्राह्मणों की ख्याति होती है।
८—पापों को दूर करने की शक्ति प्राप्त होती है।
९—सम्पत्ति का अर्जन होता है।
१०—राजा को चक्रवर्ती पद प्राप्त होता है।

अश्वमेध यज्ञ की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल रही थी। इसको सम्पन्न करने में एक वर्ष तथा १५ दिन का समय व्यतीत होता था। यज्ञ को सम्पादित करने का निश्चय करने के बाद कुछ प्रारम्भिक समारोह किये जाते थे और इसके बाद विभिन्न संस्कारों से सुसज्जित करके दिग्विजय हेतु अश्व को छोड़ा जाता था। वह अनेक दिशाओं में विविध राज्यों मे घूम ११ महीनों मे वापिस आता था। अश्व के साथ राजा के पुत्र, भाई, सेनापति और सैन्य-समूह चलते थे। जिस भी राज्य में अश्व पहुंचता था, यदि वहां का राजा उस अश्व को नहीं रोकता था, स्वागत करता था, वह विजित माना जाता था। यदि वह रोकता था तो दोनो पक्षो मे युद्ध होता था। यदि अश्वरक्षक सेना हार जाती थी तो यज्ञ को खण्डित समझ लिया जाता था। यदि जीत जाती थी तो अश्व और आगे बढ़ जाता था। अश्व के ११ महीनों में वापिस आने और विजयी सेना के लौट आने पर यज्ञ के आगे के संस्कार किये जाते थे। इस अवधि मे अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा अपनी यज्ञशाला में रहता था और हवन आदि कृत्य होते रहते थे। राजा प्रतिदिन सविता देवता को उपलक्ष्य करके तीन यष्टियो को प्रातः मध्याह्न और सायं समय में सम्पन्न करता था।

अश्व के वापिस आ जाने पर उसके निमित्त से विशेष संस्कार किये जाते थे। उसको विशेष यज्ञशाला मे रखा जाता था। शास्त्रों में इस प्रकार का विधान है कि कुछ कर्मकाण्ड करके अश्व की बलि दी जावे। यह बलि पद विशेष अर्थ का वाचक है।

प्राचीन साहित्य में चक्रवर्ती सम्राटों द्वारा अश्वमेध यज्ञ करने के प्रचुर वर्णन किये गये हैं। १०० अश्वमेध यज्ञों को सम्पन्न करने वाला राजा सम्राट होता है तथा इन्द्र के पद को प्राप्त करता है। राजा सगर, दिलीप, दशरथ, राम आदि राजाओं ने अश्वमेध यज्ञ किये थे। महाभारत युद्ध के बाद हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर अधिष्ठित होकर युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया था। इस यज्ञ का विस्तृत वर्णन महाभारत के अश्वमेधिक पर्व में है।

संस्कृत कवियों ने अश्वमेध यज्ञ के विस्तृत रोमाञ्चक वर्णन किये हैं। रघु ने इस यज्ञ में दिग्विजय करते हुए वेणु नदी के तट पर अपनी सेनाओं का शिविर लगाया था। वह नदी ओक्सस कहलाती है, जो अफगानिस्तान के उत्तर में है। ऐतिहासिक कृतियों में भी अश्वमेध यज्ञ करने के विस्तृत विवरण मिलते हैं। पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया था। महाभाष्य में पतञ्जलि ने इसका संकेत दिया है। नन्दिवर्म पल्लवमल्ल के सेनापति उदयचन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ के प्रसंग में नवम शताब्दी ई०में पृथिवी-व्याघ्र को पराजित किया था। चालुक्यराज पुलकेशिन् ने अश्वमेध यज्ञ किया था। १८वीं शताब्दी ई० के प्रथम भाग में आमेर के राजा जयसिंह ने अश्वमेध यज्ञ किया था। देहरादून के समीप विकासनगर से कुछ दूरी पर यमुना नदी के तट पर जगतग्राम है। उसके समीप अश्वमेध यज्ञ के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इनसे विदित होता है कि यहां सातवीं शताब्दी ई० के मध्य भाग राजा लीलवर्मन् चतुर्थ ने अश्वमेध यज्ञ को किया था।

प्राचीन भारत के राजनीतिक परिवेश में इन तीनों यज्ञों—राजसूय, वाजपेय और अश्वमेध का बहुत अधिक महत्व रहा था। इनमे भी अश्वमेध यज्ञ अधिक महत्वपूर्ण था। इन यज्ञों ने भारत वर्ष की शक्ति का विस्तार किया तथा भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित रखने में बहुत अधिक योगदान किया था। उत्तर में हिमालय से दक्षिण में कन्याकुमारी तथा पश्चिम में वर्तमान अफगानिस्तान से पूर्व में अराकन की पर्वत शृंखलायें भारत की सीमायें थीं। इस सम्पूर्ण भारत भूमि की एकता को बनाने में इन यज्ञों की प्रतिष्ठित भूमिका थी। जब तक इन यज्ञों का सम्पादन भारतीय शासकों द्वारा किया गया, भारत की राजनीतिक तथा सैन्य शक्ति के समक्ष किसी आक्रान्ता का साहस इस भूभाग पर आक्रमण करने का नहीं हुआ। परन्तु इन यज्ञों की परम्परा लुप्त होने पर यह देश प्रशासनिक दृष्टि से तथा सैन्य दृष्टि से बिखर सा गया और पश्चिम दिशा से धर्मान्ध एवं उन्मादी आक्रमणकारियों और लुटेरों ने इस देश को आक्रान्त पराजित कर अपना अधिकार जमाया। भारत के राजनीतिक इतिहास में इन यज्ञों को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना अधिक उचित होगा।

कई जैन साध्वियों ने अपने गुरुओं पर दैहिक शोषण के आरोप लगाये

आग और घी जब पास-पास रहेंगें तो यही होगा

मुरैना। भारत के जैन आचार्यों में २३ को तीर्थंकर से ठीक नीचे का दर्जा प्राप्त है, उनमें से एक सन्मति सागर के ऊपर तीन साध्वियों ने बलात्कार के आरोप लगाये हैं। और वे गत तीन अप्रैल से मुरैना के दिगम्बर जैन मंदिर में संघ छोड़कर शरण ले रखी है। जैन संस्कृति और धर्म के सैकड़ों वर्षों के इतिहास में सम्भवत: पहली घटना से पूरा जैन समाज उद्वेलित हो उठा है। ये साध्वियां माता व ब्रह्मचारिणी की उपाधि प्राप्त हैं जिन्हें बार-बार अपने गुरु दिगम्बर सन्मति सागर द्वारा यौन–उत्पीड़न व अत्याचार का शिकार होना पड़ा।

जैन मुनि आचार्य सम्मति सागर के संघ के २१ से २६ वर्ष के आचार्यों सहित साध्वियों ने संघ के अनुशासन की सीमा तोड़, चल रहे घृणित क्रियाकलापों के बारे में जानकारी दी इन लोगों ने आरोप लगाया कि तीर्थंकर के ठीक नीचे का दर्जा प्राप्त गुरु पर लगातार साध्वियों से बलात्कार और प्रताड़ना के आरोप लगाते हुए जैन समाज और जिला प्रशासन से न्याय की गुहार लगाई है,

स्तब्ध जैन समाज के सम्मुख माता की पदवी प्राप्त साम्या भूषण व श्रद्धा भूषण ने गुरु पर आरोप लगाया कि कम उम्र की साध्वियां यौन प्रताड़ना व बलात्कार की शिकार है। २३ वर्षीया साम्या भूषण का ग्वालियर की डाक्टर रजनी जैन द्वारा दो बार गर्भपात करवाया गया, अन्य साध्वी २१ वर्षीया सुचिता के 'उपचार' के लिए सम्पति सागर द्वारा तीन हजार रुपए खर्च किया गया। साध्वी साम्या भूषण ने इसके अलावा कई अनियमितताओं के आरोप भी लगाये हैं। नग्न (दिगम्बर) गुरु को आचार्य पद से बहिष्कृत करने, सन्मति सागर द्वारा एकत्रित रकम की वापसी, उसके चित्रों को सभी स्थान से हटाने और परिपत्र जारी कर इस घृणित बलात्कारी मुनि को कहीं भी स्थान न देने की मांग भी की गई है।

उत्काल जैन धर्म रक्षिणी सभा ने ग्यारह सदस्यीय समिति बनाई जो गर्भपातों का पुष्ट प्रमाण एकत्रित करेगी। सम्भवत: यह कई सौ वर्षों में जैन संस्कृति में इतना बड़ा विकृत यौन शोषण का मामला प्रकाश में आया है। अजमेर, सागर और नैनपुर सहित ग्वालियर जैन सभाओं ने उक्त दुराचारी जैन मुनि सन्मति सागर के बहिष्कार का फैसला लिया है। इस मामले को लेकर जैन समाज के लोग भी अत्यन्त दुविधा में हैं कि ऐसे मामलों का सार्वजनिक निर्णय हो अथवा इसे अन्दर में ही निपटा लिया जाये, अन्यथा सभी जैन मुनियों पर ऊंगलियां उठनी आरम्भ हो जायेंगी। वहीं दो महीने में साध्वी साम्याभूषण ने सार्वजनिक सहानुभूति तो खूब बटोरी परन्तु पुलिस में आचार्य सन्मति सागर के विरुद्ध एफ आई आर दर्ज नहीं करवाया है,

जैन समुदाय के कुछ लोग इस मामले को लेकर उग्र हैं और शीघ्र न्याय चाहते हैं चीफ इन्जीनियर की पत्नी पुष्पलता जैन कहती है—"हमने चम्बल का पानी पिया है और डकैतों का मुकाबला भी किया, यदि हमारी पुत्रियों के साथ ऐसे घृणित काम हुए हैं तो हम खून की नदियां बहा देंगे" कुछ लोग सन्मति सागर को 'प्रायश्चित' कराने के पक्ष में हैं ? चार प्रमुख जैन संस्थाओं, जिसमें अ.भा. दिगम्बर जैन महासमिति, अ.भा. दिगम्बर जैन महापरिषद, अ. भा. दि. जैन तीर्थ क्षेत्र समिति और अ. भा. दि. जैन महासभा में से तीन संस्थाओं ने जांच कर अपनी रिपोर्ट मई में पेश कर दी है, परन्तु सन्मति सागर ने ऐसी किसी जांच होने से अनभिज्ञता जाहिर की है।

साम्या भूषण पर पहला बलात्कार २० वर्ष की उम्र में छिंदवाड़ा में हुआ उस वक्त उसके पेट में दर्द हुआ था, जिसका उपचार करने के बहाने उसे अकेले प्रवचन कक्ष में ले गये साथ में श्रद्धा भूषण थी जिसे बाहर इन्तजार करने को कहा गया। गुरु ने परीक्षण करना चाहा तो साम्या ने धर्म का हवाला देकर छूने से मना किया, परन्तु कामांध आचार्य ने बलात्कार किया और चेतावनी दी कि "मैं सबसे पवित्र और धर्म का उच्च पदासीन व्यक्ति हूं अत: तुम्हारी बातों पर कोई विश्वास नहीं करेगा, उसने अपने कमण्डल के पानी से उसकी साड़ी को साफ किया और साम्या को आश्वस्त किया यह दुबारा नहीं होगा। श्रद्धा भूषण के कारण वह बचती रही, परन्तु सोनगिर धर्मशाला में १९९४ को सन्मत सागर उसके कक्ष में रात ११ बजे पहुंचकर धमकाया और बात नहीं मानने पर संघ से निकाल देने की धमकी दी। इस घटना के बाद साम्या गर्भवती हो गई। साम्या को ग्वालियर की डा० रजनी जैन से गर्भपात कराया गया। इसी वर्ष दुबारा जब वह डा० रजनी जैन के पास पहुंचाई गई तो उसने कारण जाने बगैर गर्भपात से इन्कार किया। साध्वी साम्या ने अपने गुरु का नाम बताया। डा० रजनी जैन ने अपने जैन समुदाय के लोगों को इस बात की खबर दी और बताया कि आज ही तीन अन्य साध्वियों का गर्भपात करा छुट्टी दी है। जिला मजिस्ट्रेट तथा मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मुरैना के डी. एस. जैन तथा ए. के. जैन की पत्नियां साध्वियों के पक्ष में हैं। परन्तु वे दोनों चाहते हैं ये मामला जैन समुदाय के भीतर ही सुलझा लेना चाहिये यही कारण है कि बलात्कार पीड़ित साध्वियों द्वारा पुलिस में एफआईआर दबाव के कारण दर्ज नहीं करवा पा रही हैं। साम्या ने अपने माता-पिता और भाई को खबर कर सहायता मांगी और पुलिस तक जाने का निश्चय किया है।

प्रेषक—हरिकुमार साहू, मन्त्री
आर्यसमाज सुभाष नगर, बिलासपुर (म. प्र.)
नवभारत बिलासपुर २२ जून ९५ से साभार

जीवन मूल्य और शिक्षा

(पृष्ठ ५ का शेष)

शिक्षण संस्थायें नैतिक मूल्यों के प्रतिस्थापन हेतु प्रशिक्षण केन्द्र हैं। वे अपने छात्रों में आस्था का निर्माण करें।

एक बार एक छात्र अपने साथ किसी अन्य छात्र को लेकर आचार्य के सम्मुख पहुंचा और स्वयं चुप खड़ा हो गया। साथी उसका पक्ष प्रस्तुत करने लगा। आचार्य ने छात्र से पूछा—"क्या तुम स्वयं बोल सकते हो?" छात्र ने सकारात्मक उत्तर दिया।

आचार्य साथी छात्र को बाहर जाने को कह उसकी समस्या सुनने लगे। इसके उपरान्त आचार्य ने समझाया, "अपनी बात स्वयं कहना सीखो। परावलम्बी तो अपाहिज व्यक्ति होते हैं। जीवन की कठिनाईयों में प्रत्येक कदम पर दूसरों का सहारा टटोलोगे?"

छात्र में जैसे ऊर्जा का संचार हो गया हो और विद्यालय में उसने स्वावलम्बन का मूल्यवान पाठ पढ़ लिया।

हमारे ज्ञान के ये मन्दिर विविध अनुभवों के माध्यम से विद्यार्थियों में जीवन मूल्य के प्रति आस्था का निर्माण करें जिससे वे उनको जीवन, कार्य एवं व्यवहार में उतारने में समर्थ हों, तब ही हमारे ये विद्या मन्दिर सच्चे रूप में समाज और राष्ट्रीय मूल्यों के वाहक बन सकेंगे।

अमृत कण

जल से अग्नि का, छाते से धूप का, अंकुश से हाथी का, दण्ड से दुष्ट का औषधियों से व्याधि का, मन्त्र से विष का निवारण हो सकता है, परन्तु मूर्ख की कोई औषधि नहीं है, ऐसा नीतिवान् पुरुषों का मन्तव्य है।

भारतीय गो रक्षा अभियान परिषद जम्मू का गठन

प्रधान—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री (आर्य समाज)

उप प्रधान श्री वैद्य विष्णुदत्त जी (सनातन धर्म सभा)

मन्त्री—श्री तिलकराज शर्मा (विश्व हिन्दू परिषद)

कोषाध्यक्ष—श्री अरुण कुमार आर्य

सदस्य सर्वश्री ओमप्रकाश मैंगी, प्रमोद कुमार (जैन सभा), पं० भूपराज शास्त्री (प्रधान गोशाला), के० के० गुप्ता (रि. जज हाईकोर्ट) जगदीश जी (धार्मिक युवक मण्डल जम्मू), श्रीमती रामप्यारी जी (प्रधाना स्त्री आर्य समाज), स्वामी भूमानन्द जी।

ईसाई युवक वैदिक धर्म में दीक्षित

श्री पोर्टन रिचर्ड आइसिक [illegible] आइसिक निवासी सी०सी० १/१२९ ए सी न्यू कोचीन केरल जो कि वायु सैनिक हैं, ने स्वेच्छा से दिनांक ३-७-९५ को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा ली। इनका नाम बदलकर करन कुमार रखा गया। इस कार्य को आर्य समाज के पुरोहित पं० राम जी आर्य ने सम्पन्न कराया। शुद्धि के बाद इस युवक करन कुमार का विवाह आयु० सुनीता पोर्टर सुपुत्री स्व० श्री अर्जुन पोर्टर के साथ हुआ समाज के गणमान्य कार्य कर्ताओं एवं अधिकारियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस समारोह में उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया। एक सत्यार्थ प्रकाश मन्त्री गंगाराम आर्य द्वारा भेंट किया गया। —गंगाराम आर्य

निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

छोटानागपुर का विख्यात रथ यात्रा मेला दिनांक ३०-६-९५ को था। अतः उक्त मेला में आर्य समाज, धुर्वा (रांची) की ओर से मेला में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। डा० पवित्र कुमार (एम.बी.बी.एस.) अपना बहुमूल्य समय दिये। श्री बी.के.शर्मा उप-प्रधान द्वारा शिविर का आयोजन किया गया।

नैपाल यात्रा का आंखों देखा हाल

१२-६-९५ से १७-६-९५

आर्यसमाज चूना मण्डी, पहाड़गंज के मन्त्री शामदास सचदेव द्वारा नेपाल जाने का कार्यक्रम बनाया गया।

११-६-९५ रविवार साय ५ बजे श्री सहगल जी की अध्यक्षता में सदभावना यात्रा को विदाई पार्टी दी गई जिसमे सहगल जी ने श्री प्रधान सूरी जी ने बहिन सन्तोष हान्डा जी ने आर्शीवाद के रूप मे फूलमालाओं और फोटों से सब का स्वागत किया। और शान्ति पाठ के बाद सहगल जी की तरफ से जलपान का आयोजन किया गया। सायं ६ बजे की फ्लाइट से नेपाल भेज दिया। देश के विभिन्न भागों से आर्य नर-नारी नेपाल की यात्रा के लिये आये थे। सबके चेहरे खुशी से झूम रहे थे।

जैसे ही सब बहिन-भाई जहाज में चढ़े और जहाज चलना शुरू हुआ। सबने गायत्री मन्त्र तीन बार उच्चारण किया तथा भगवान का धन्यवाद दिया यह सफर केवल एक घण्टा १५ मिनट का था। इस समय में जहाज वालों की तरफ से जलपान, चाय, भोजन वगैरा सर्व किया गया जिससे समय का पता ही नहीं लगा, और हम नेपाल की धरती पर पहुच गये। वहां पर पहुचते ही काठमान्डु आर्यसमाज के सदस्य पुष्पमाला लेकर सब का स्वागत करने लगे और यात्रियों के पास ओम के झण्डे ८, १०, थे जो कि पहचान हो रही थी स्वागत करने वाले, श्री शंकरलाल कोडिया, बहिन प्रिन्सिपल महता, श्री आचार्य जी और बहुत से लोगों ने स्वागत किया। इसके बाद हम बसों द्वारा तिलची होटल पर चले गये जहा पर प्रबन्ध था, वहां की समाज वालों ने हमारे यज्ञ का प्रबन्ध कर दिया जो कि १३-६-९५ प्रात: ७ बजे से ८ बजे तक यज्ञ हुआ जिसमे सबने भाग लिया। और होटल के मालिक तथा रहने वाले बहुत प्रभावित हुए कि यह पहला मौका है होटल के आंगन को पवित्र करने का बहुत प्रसन्न हुए। यज्ञ के पश्चात नाश्ता वगैरा हुआ और काठमान्डु की सैर के लिए चल पड़े बसों द्वारा।

१. नेपाल की आबादी १,८४,९१०९७ है इसमें सब जाति के लोग रहते हैं।
२. इसका क्षेत्रफल लगभग १४७.१८१ स्क्वयर किलोमीटर है।
३. यहां की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और बाजार में वस्त्रों मे सब जगह सिवाये हिन्दी के कुछ नहीं लिखा हुआ यहा तक कि जो बसों के नम्बर कारों के नम्बर वगैरा हैं सब हिन्दी अक्षरों में हैं जो कि मन बहुत प्रसन्न हुआ।
४. समय वहां का भारत से मिलता जुलता है और १५ मिनट उनका समय भारत से आगे है।
५. यहां का मौसम २०° और २५ डिग्री रहता है जो कि हम भारत से गये थे तब भारत का ४४ डिग्री था सबने भगवान का धन्यवाद किया। और परमात्मा ने वर्षा द्वारा हम सब का स्वागत किया।

सारी दुनिया में केवल नेपाल ही ऐसा छोटा देश है जो कि "हिन्दु राज घोषित किया हुआ है उसके विधान म यह लिखा हुआ है कि जो यहां का राजा होगा सस्कृत का विद्वान हिन्दु विचारों वाला हिन्दु ही होगा।"

इस प्रकार हम सब जो काठमान्डु का प्राचीन मन्दिर पशुपति राज दरबार जो पुराना है वह देखने गये और फिर बाजार का भ्रमण किया वहां की जो सुपर मारकीट है वह देखी। श्री शंकरलाल कोडिया के घर पर हम गये जहा पर विचार विमर्श हुआ और भोजन भी सबने मिलकर किया इस विचार सभा मे सबने अपने-अपने विचार रखे और बहिन जनक शर्मा ने ५ बच्चों को पूरे वर्ष का खर्च जो भी आयेगा वह जम्मू आर्यसमाज से देती रहेंगी। श्री शंकर जी ने अपने विचार रखे और हमें बताया कि इस वक्त हिन्दुओं की क्या दशा होने वाली है भले ही यह हिन्दु राज्य घोषित है। क्योंकि हिन्दुओं की आबादी कम हो रही है और मुसलमान ईसाई की आबादी लगातार बढ़ रही है। और वहा पर ईसाइयों का पैसा बहुत आता है और गरीबों के कपड़े रोटी पढ़ाई वगैरा पर खर्च करके अपना बनाते जा रहे हैं। और मुसलमान भी इसी प्रकार हिन्दुओं में फूट डालकर पैसे का जाल बिछाकर मुसलमान बनाते जा रहे हैं। यहां तक कि साजिश चल रही है, हिन्दुओं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश होते हैं। आप हिन्दु चोढ़े ही हो इस प्रकार बड़ी गहरी चाल के साथ नेपाल में हिन्दु जाति अलग-होती जा रही है, और जो मुसलमान बंगला देश से आता है नेपाल के मुसलमान पहले उससे फार्म भरातें हैं और उसे वोट का अधिकार मिल जाता है। इससे भी हम बहुत चिंतित है केवल आर्य समाज थोड़ा बहुत इस तरफ ध्यान दे रहा है जबकि कोई सहायता हिन्दु जाति को बचाने के लिए नहीं आती हम चाहते हैं कि सार्वदेशिक अपने प्रचारक तथा भजनोपदेशक भेजे जिस से गाव-गांव मे जाकर बचाया जा सके और एक बहुत बड़ा हिन्दी सम्मेलन सार्वदेशिक सभा की तरफ से हो ताकि सब हिन्दु नेपाल आयें इससे भी हिन्दु जाति का प्रभाव पड़ सकता है। इन विचारों के बाद श्री राजसिंह भल्ला ने आश्वासन दिया कि जितनी आपको सहायता चाहिए। सार्वदेशिक से अवश्य पूरी कराऊंगा और उपदेशक तथा भजनोपदेशक भेजने का प्रबन्ध करूंगा आप उन्हें केवल रहने और भोजन का प्रबन्ध कर दें। इसमें लगभग २० बहिन भाई थे जिन्होंने भाग लिया विचार के लिए, प्रोग्राम भी बनाया गया भोजन के पश्चात शान्ति पाठ हुआ।

१४-६-९५ प्रात: यज्ञ और नाश्ते के पश्चात ९ बजे हम बसों द्वारा जो कि लगभग २०० किलोमीटर है पोखरा चल दिये सब लगभग पोखरा होटल में पहुंच गये जहां फिर वर्षा ने हम सब का स्वागत किया रात्रि का विश्राम किया साथ ही वहां पर रात्रि ८ से ९ बजे तक लोकगीत का प्रोग्राम बहुत ही सुन्दर होता है।

१५-६-९५ वीरवार को प्रात: नाश्ते के पश्चात पोखरा के दृश्य देखने गये जो कि नेपाल का सबसे सुन्दर कुदरती नजारा है।

१७-६-९५ प्रात: समाज वालों का निमन्त्रण था उसमें सब तो नहीं गये थे वहां जो आर्यसमाज है वह दूसरी मन्जिल पर है एक व्यक्ति ने बगैर किराये के वह जगह समाज को दी हुई है वहा पर वहां के लोग भी लगभग १०० थे और २५ बहिन-भाई हमारे यज्ञ से कार्य शुरू हुआ और मन अति प्रसन्न हुआ। जैसा कि एक बच्चा अपनी मां की गोद मे बैठकर आराम पाता है इस तरह हमने भी समाज रूपी माता की गोद में बैठकर आनन्द लिया।

सबका स्वागत हुआ और अपने-अपने विचार रखे कि हिन्दु जाति को कैसे बचाया जा सकता है। इस पर राजसिंह भल्ला, आदि ने अपने सुझाव रखे और २५ बहिन-भाइयों ने ८०००।-जो नेपाल के हिसाब से १४८००।-होते हैं इकट्ठे किये। शान्ति पाठ के बाद सबने मिलकर भोजन किया और फिर काठमान्डू एयर पोर्ट पर आ गये, सबने आपस मे मिलकर एक दूसरे को धन्यवाद किया साय ५-१५ पर दिल्ली पहुच गये।

ईश्वर की अपार दया और कृपा से यात्रा अति सुन्दर रही।

—शामदास सचदेव, मन्त्री
आर्यसमाज पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५

किशोर डाक्टर

विश्व के सर्वाधिक अल्पवयस्क चिकित्सक :

बालमुरली कृष्ण अम्बाटी

क्या आप जानते हैं कि सत्रह वर्षीय डा० बालमुरली कृष्ण अम्बाटी विश्व के सर्वाधिक अल्पवयस्क चिकित्सक हैं। पिछले दिनो न्यूयार्क मे निवास करने वाले भारतीय तेलगू किशोर तिरुपति मे दर्शन के लिए जाते हुए मद्रास से गुजरे थे। उन्हें अपने गाव मे भी जाना था। उल्लेखनीय है चार साल पहले तेरह वर्ष की उम्र मे न्यूयार्क विश्वविद्यालय के इतिहास मे सबसे कम उम्र के ग्रेजुएट बनकर इस किशोर ने ख्याति पाई थी।

विगत १९ मई के दिन अम्बाटी को न्यूयार्क के मेडिसिन के माउण्ट सिनाई स्कूल से चिकित्सा की डिग्री मिली थी, उसने १८ वर्ष की उम्र मे ग्रेजुएट बनने वाले एक इजराइली चिकित्सा विद्यार्थी का रिकार्ड तोड दिया था। ११ वर्ष की उम्र मे हाईस्कूल की पढ़ाई खत्म करने वाले इस चमत्कारी किशोर ने पत्रकारो को बतलाया ससार का सबसे कम उम्र का डाक्टर बनने के लिए उन्हे हर पडाव पर सघर्ष करना पड़ा। भारत मे सामान्य धारणा है कि अमेरिकी शिक्षा प्रणाली उदार है। इसके विपरीत उसके पिता को नौकरशाही लाल फीताशाही की रूकावटो से जूझने के लिए अनेक प्रतिवेदन देने पड़े

अम्बाटी ने विद्यालय का दो वर्षो का कार्यकाल एक सत्र मे ही पूरा कर लिया था, फलतः उनके पिता को प्रतिवर्ष महापौर (मेयर) के दफ्तर मे जाना पड़ता था, क्योकि कई बार वे मेरी कड़ी मेहनत को स्वीकार नही करते थे। छह फुट, दो इच ऊचे, प्रतिदिन बालमुरली तीन घण्टा अध्ययन करते थे। उनके अनुसार आप कितने घण्टे पढ़ने मे लगाते हैं, इसकी अपेक्षा उन घण्टो मे क्या करते हैं, उसकी अधिक महत्ता है।

अम्बाटी के पिता मोहनराव भारतीय प्रौद्योगिकी सस्थान मद्रास के प्राध्यापक रहे हैं और उनकी माता गोमती तमिल की विदुषी हैं। बालमुरली जब तीन साल के थे, उनके माता पिता अमेरिका चले गए थे, उनके बड़े भाई डा० जय कृष्ण अम्बाटी ने भी शैक्षणिक क्षेत्र मे अच्छी ख्याति पाई है। अम्बाटी बन्धुओ ने एड्स की रोकथाम के लिए एक पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ का प्रणयन भी किया है।

छात्रवृत्तियां

सत्र—जुलाई १९९५ से अप्रेल १९९६

श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नए सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलो महाविद्यालयो, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयो और अनुसधान सस्थानो के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओ और स्पर्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो और परीक्षार्थिणियो को छात्रवृत्तिया देने का कार्यक्रम शुरु हो गया है।

इन छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मगवाने के लिए एक टिकट लगा लिफाफा अपना पता लिखकर ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम निम्नलिखित पते पर भेजें।

योगेन्द्रनाथ उप्पल, आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-३२ अमर कालोनी लाजपत नगर नई दिल्ली-१४

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का निर्वाचन सम्पन्न

श्री हरबंसलाल जी शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

अश्विनी कुमार एडवोकेट महामन्त्री घोषित

लुधियाना। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन २. जुलाई १९९५ को लुधियाना में सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग २५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जो पंजाब की विभिन्न आर्य समाजों से अधिवेशन स्थल आर्य कालेज लुधियाना पधारे थे।

सर्वप्रथम वृहद यज्ञ को कार्यवाही प्रातः साढ़े ८ बजे आरम्भ की गई। जिसके मुख्य यजमान श्री पण्डित हरबंसलाल जी शर्मा थे। यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् आर्य कालेज लुधियाना के हाल मे अधिवेशन की कार्यवाही ईश प्रार्थना के साथ प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम श्री अश्विनीकुमार जी शर्मा एडवोकेट सभामन्त्री ने भूतपूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी और सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करते हुए दो मिनट को मौन रख कर सभी प्रतिनिधियों ने अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट की।

सभामहामन्त्री श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा ने आये हुए सभी महानुभावों को सम्बोधित करते हुये सभा की गत वर्ष की रिपोर्ट पेश की। उन्होंने वेद प्रचारकों गतिविधियों, सभा के विभिन्न विभागों तथा शिक्षा संस्थाओं के सम्बन्ध मे गत कार्य की सम्पूर्ण रिपोर्ट पेश की। उन्होंने सभा के द्वारा किये जा रहे लोक कल्याण के सभी कार्यो का वर्णन किया। सम्पूर्ण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब स्वामी स्वतन्त्रानन्द मेमोरियल ट्रस्ट मोही, दयानन्दमठ दीनानगर, दयानन्द धर्मार्थ धर्मार्थ औषधालय अम्बाला तथा अन्य धर्मार्थ कार्य करने वाली संस्थाओं की भी सहायता की गई।

सभामहामन्त्री जी ने सभा का गत वर्ष का आय-व्यय व बजट पेश किया जो सर्वसम्मति से सभी ने हाथ उठाकर पारित किया। इसके साथ ही श्री डाक्टर के०के० पसरीचा ने 'दि वेदाज" सीरियल न बनाये जाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पढ़कर सुनाया और स्पष्ट किया कि यदि यह सीरियल बनाया गया तो समूचा आर्य समाज इसके विरोध में आन्दोलन करेगा। यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित हुआ।

चुनाव की प्रक्रिया आरम्भ होने से पूर्व श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा ने कहा कि अब हमने सभा के नये अधिकारियों का निर्वाचन करना है इसलिए इस के लिए हम एक चुनाव अधिकारी नियुक्त कर दें। और उन्होंने इसके लिए डाक्टर के. के पसरीचा का नाम प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। श्री डाक्टर सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की देख-रेख में यह कार्यवाही आरम्भ हुई।

श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा ने प्रधान पद के लिये श्री पण्डित हरबंस लाल जी शर्मा का नाम प्रस्तुत किया और इस का अनुमोदन श्री सरदारी लाल जी श्री रणवीर जी भाटिया, श्री यशपाल जी बाधियां, श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी, श्री आशानन्द जी, श्री मनोहर लाल जी, श्री राधे श्याम जी मोहिल, श्री रामशरण दास जी, श्री जयदेवराज जी, श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ, श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी, श्री कर्मचन्द जी माली तथा दूसरे महानुभावों ने किया।

श्री डा० के० के० पसरीचा चुनाव अधिकारी ने कहा कि यदि कोई और नाम प्रधान पद के लिये पेश करना चाहता है तो वह करे। इस पर किसी ने भी कोई और नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत नहीं किया कि श्री हरबंस लाल जी शर्मा सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चुने गये है. मैं समझता हूं कि उन्हें शेष पदाधिकारी, अन्तरंग सदस्य. सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि, आर्य विद्या परिषद के सदस्य तथा अन्य समितियों के सदस्य चुनने का अधिकार उन्हें दे दिया गया।

श्री हरबंस लाल जी शर्मा ने इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री पद के लिए श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट को मनोनीत करने की घोषणा की। सभी प्रतिनिधियों ने तालियों की गड़गड़ाहट में इस का स्वागत किया। अन्य पदाधिकारियों की घोषणा बाद में करेंगे।

अन्त में श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री हरबंसलाल जी शर्मा सभा प्रधान व श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का शाल इत्यादि भेंट कर के पुष्पमालाओं के द्वारा स्वागत किया। इस अवसर पर श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने सभी प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधियों ने अपने संगठन का परिचय देते हुए अपनी सभा का चुनाव सर्वसम्मति से किया।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री को ५१ हजार रु. की थैली भेंट

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मंत्री सार्वदेशिक सभा के लिए ५१००० हजार रुपये व शाल भेंट किये और पुष्पमालाओं से स्वागत किया गया। इसके उत्तर में डा० सभा मंत्री ने आगन्तुक आर्यजनों को अपने सन्देश में कहा—कि महर्षि दयानन्द का सन्देश मानव मात्र हेतु है उसे आज विश्व अपना रहा है। अतः निराश होने की आवश्यकता नहीं है हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

अन्त में श्री मंत्री जी ने पंजाब सभा के निर्वाचन पर अपनी संस्तुति के साथ मान्यता दी।

भारत का कालातीत संविधान

(पृष्ठ ४ का शेष)

लिए विवश कर रही है, करोड़ों अरबों रुपए उसी षड़यन्त्र पर खर्च करके भारतीय सरकार अपनी सफलता की मूर्खतापूर्ण डींग तो हाक सकती है किन्तु धर्म निरपेक्षता और समानता की हत्या के महापाप से बच नहीं सकती।

सम्प्रदायवाद, जातिवाद, आतंकवाद तथा तुष्टीकरण के विषवृक्ष संविधान ने ही पनपाए हैं जो आज वटवृक्ष का रूप ले चुके हैं. इन्हें समूलोच्छेद कर पाना बहुत कठिन किंवा असम्भव सा प्रतीत होने लगा। संविधान की भाषा में आज वह वर्ग या दल जो राष्ट्र रक्षा की बात कहता है, हिन्दू, हिंदुत्व व हिन्दुस्तान का स्वर बुलन्द करके भारत माता का जयगान करता है, पर्सनल ला जैसे घातक कानून का विरोध करता है, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आन्दोलन चलाता है तथा मठों मन्दिरों व तीर्थ स्थलों के उद्धार की बात करता है वह साम्प्रदायिक है, कट्टरपंथी है और जो आये दिन तिरंगे झंडे को फाड़ते जलाते और पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाकर साम्प्रदायिक दंगो को भड़काते रहते हैं। वोटशक्ति के बल पर मजहबी शिक्षा, हज का अनुदान, हज दुर्घटना बीमा लाभ तथा शरीयत के नाम पर कई प्रकार की सुविधाएं भोग रहे हैं वे शायद संविधान की भाषा में नेशनल है, राष्ट्रीय हैं और गैर सम्प्रदायवादी हैं? ऐसा संविधान देश का क्या भला करेगा? सत्य तो यह है कि वह विशालकाय संविधान हमारी स्वतन्त्रता को अखण्डता एव भारतीयता को लगातार निगलता चला जा रहा है और हम टूटने के कगार पर ला कर खड़े कर दिए गए हैं। अब भी समय है कि हम अपनी उदासीनता का परित्याग करें। संविधान की घातक विसंगतियो का पर्दाफाश करें और उन सभी राष्ट्रघाती नीतियों का प्रबल विरोध करके स्वस्थ भारतीयता से ओत प्रोत राष्ट्रीय संविधान का निर्माण करके देश के विघटन पलीत करण को रोकें, इसे सुदृढ़ व अजेय राष्ट्र बनाने का संकल्प लें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३०-७-१९९५) बिना टिकट भेजने का आदेश नं० U (C)९३/९५
R. N. 626/27 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D P.SO.on 27,28-7-1995

पुस्तक समीक्षा

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर

पृष्ठ १२२ मूल्य ७५ रुपये
ले० प्रेमचन्द्र शास्त्री
प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मण्डल सरस्वती भण्डार
गांधीनगर, दिल्ली-१

ऐसा बर्कर क्रान्ति के अग्रदूत वीर सावरकर का जीवनवृत्त समय-समय पर लेखकों द्वारा लिखा जाता रहा है। इस पुस्तक का लेखक विद्वान् व्यक्ति हैं। उन्होंने भावी पीढ़ी में नये स्फूर्तिय भरवे और सावरकर जैसे क्रान्तिवीर बनने की प्रेरणा दें।

विश्व पटल पर वह प्रथम छात्र थे जिन्हें देशभक्ति के आरोप में कालेज से निष्कासित किया। इंग्लैंड गये और वहां जाकर भारतीयों को संगठित कर भारत की आजादी की मांग की थी। "अभिनव-भारत" नामक संस्था को जन्म दिया जो गुप्त संस्था थी। वीरता की निशानी थे। इतिहास में वह प्रथम व्यक्ति थे कि जिन्हें ब्रिटेन से कैदी के रूप में समुद्री जहाज द्वारा भारत लाये जा रहे थे। परन्तु

किस तरह से तैर गया तू सावरकर तैरना था जिसका आसान नहीं।

ऐसा वरकर जिसकी जीवनी क्रान्तिकार देश धर्म के प्रेम से ओत-प्रोत हो? ऐसे अभाव की पूर्ति हेतु इच्छा प्रकट की और उसी इच्छा का परिणाम यह पुस्तक आपके हाथों में है। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन आपके हाथों में है :

ऐसे वर्कर को पढ़ो, समझो और हिन्दू हितों की रक्षा के भाव यदि नयी पीढ़ी में भर सकें पुस्तक प्रकाशन का परिश्रम फली भूत होगा। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

तपोवन में सन्त-शिविर सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून) में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्देशन में दो सप्ताह का प्रशिक्षण-शिविर लगाया गया। इसके दो उद्देश्य थे—

१. जो साधक नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी बनना चाहते हो उन्हें योग, वैदिक सिद्धान्त, आयुर्वेद तथा वक्तृत्व का प्रशिक्षण देकर समाज-सेवा के लिए तैयार करना।

. जो साधक वानप्रस्थ या सन्यास की दीक्षा ले चुके हैं परन्तु अपने अन्दर समाज-सेवा के लिए आवश्यक विद्या आदि की कमी अनुभव करते हैं, उनकी उस कमी को दूर कराना।

शिविर तपोवन के बाद योगधाम, ज्वालापुर में भी दो सप्ताह चलेगा। १२ जुलाई को योगधाम में इसका समापन होगा और कुछ साधकों को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य/वानप्रस्थी/सन्यासी की दीक्षा दी जायेगी।

देवदत्त बाली, मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसायटी तपोवन

सदा दानियों, अहिंसकों और ज्ञानियों की संगति करो

देहरादून जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने ग्राम भजेमपुर (जिला सहारनपुर) में आर्य समाज के नव-निर्मित सत्संग भवन में यज्ञ कराया। प० सुमनचन्द जी के भजनों के पश्चात वेद-प्रवचन करते हुए श्री बाली ने बताया कि सृष्टि के आदि से सद्ज्ञान के स्रोत के रूप में सर्वाधिक प्रामाणिक वेद को ही माना गया है। १२ करोड वर्ष पूर्व मनु ने एक करोड वर्ष से अधिक पहले श्री राम ने और ५ हजार वर्ष पूर्व श्री कृष्ण ने भी सर्वाधिक महत्व वेद को ही दिया।

ऋग्वेद ५-५१-१५ की व्याख्या करते हुए श्री बाली ने बताया कि कल्याण के अभिलाषियो को सदा दानी, अहिंसक या ज्ञानी व्यक्ति की ही संगति करनी चाहिए। दान की भावना के अभाव में व्यक्ति स्वार्थ में डूब जाता है और स्वार्थ अनेक पापोंको जन्म देता है।

विशेष सूचना

आर्य समाज का इतिहास

लेखक—पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में विगत वर्षों में जो नवीन प्रकाशन संस्कार-चन्द्रिका, वैदिक सम्पत्ति, कुलियात आर्य मुसाफिर आर्य जगत को भेंट किया। उसका आपने हाथों हाथ आदर भाव से स्वीकार कर हमारा सहयोग किया।

अब की बार—

सार्वदेशिक सभा—"आर्य समाज का इतिहास"

प्रथम व द्वितीय भाग मूल्य १२५ रुपये अग्रिम ८० रुपये में"

ले० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रही है।

"आर्य समाज का इतिहास" पं० सत्यकेतु जी ने लिखा व छापा और आपने उसका स्वागत कर उत्साह वर्धन किया था।

आज—

पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति लिखित इतिहास आपकी सेवा में दे रहे हैं। आर्यसमाज में पं० इन्द्र जी का विशेष स्थान था स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक और आर्य समाज में बुनियाद की अग्रिम पंक्ति के विद्वान् लेखक रहे हैं। ऐसे विद्वान व्यक्ति द्वारा लिखित इतिहास सटीक सप्रमाण सिद्ध होगा।

आप से प्रार्थना है कि पूर्व की भांति इस पुस्तक में अग्रिम बुकिंग कृष्ण जन्माष्टमी तक ८० रुपये जमाकर सहयोग प्रदान करेंगे। धन्यवाद ?

मीमांसा और वेदान्त दर्शन पर पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

जुलाई १९९५ में मीमांसा और वेदान्त दर्शन पर मेघजी भाई नैनसी प्रकाशन द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। प्रति मास १६ पृष्ठ की लघु पुस्तिका में मीमांसा और वेदान्त दर्शन में विद्यमान दार्शनिक विषयों का विवेचन किया जायेगा। प्रत्येक पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर पांच प्रश्न होंगे जिनका उत्तर लिखकर संचालक के पास भेजना होगा। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले प्रथम तीन पठनार्थियों को क्रमशः २०१), १५१), १०१) रुपये का पुरस्कार व प्रमाण पत्र तथा ४० प्रतिशत सही उत्तर देने वालों को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। परीक्षा परिणाम जून-९६ में घोषित किया जायेगा। पुस्तक डाक व्यय और प्रमाण पत्रादि के लिये केवल २५) पचीस रुपये वार्षिक सदस्यता शुल्क है, सदस्यता मनीआर्डर (एम० ओ०) द्वारा भेजकर शीघ्र ही निम्न पते पर सदस्यता प्राप्त करें।

सोमदेव शास्त्री
डी० १०१ मिल्टन फ्लाट
आजाद रोड जुहू गोलिवाड़ा, बम्बई-४९

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक २५)   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   श्रावण शु० १०   सं० २०५२ ६ अगस्त १९९५

श्रावणी महापर्व पर हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के शहीदों को आर्य जगत की श्रद्धांजलि

श्रावणी वेद सप्ताह पर वैदिक धर्म प्रचार का संकल्प लें

आज से ५६ वर्ष पूर्व निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध आर्यसमाज ने हैदराबाद में सत्याग्रह आन्दोलन चलाया था जिसमें भारत के कोने-कोने से हजारों सत्याग्रहियों ने भाग लिया था। इस सत्याग्रह में अनेकों आर्य वीर शहीद हुये थे।

श्रावणी महापर्व पर सम्पूर्ण आर्य जगत उन शहीदों को श्रद्धा-पूर्वक अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें। उन शहीदों का बलिदान सदा ही स्मरण किया जायेगा।

श्रावणी पर्व का सन्देश

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है. लोक परलोक तथा साधनों का यथार्थ ज्ञान देता है। वेद का स्वाध्याय, पूर्ण जीवन है और वेदों में यज्ञ का महत्वपूर्ण स्थान है।

श्रावणी के इस महापर्व पर हम पूरे संसार के कल्याण की कामना के लिये घर-घर में यज्ञ करें और समस्त आर्य समाजें पूरे जोर-शोर से वेद प्रचार का आयोजन करें।

इस अंक के आकर्षण

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने।
ऐसे सभी धर्म वीरों के, आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम निज जीवन में लाते हैं॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर, वीर जाति को निश्चय से॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति मे, कोटि-कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणों की आहुति दें वीर॥
जगदीश को साक्षी जानकर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत करते है॥
सर्वशक्ति दें बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बने॥

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी महादेव जो राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाण्डुरंग श्री शान्तिप्रकाश॥
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त अरुडा मातुराम जी नन्हूसिंह जी श्री गोविन्दराव॥
बदनसिंह जी रतीराम जी माण्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द॥
माणिकराव श्री भीमराव जी महादेव श्री अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण वैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह॥
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सब ही वीरों धीरों का॥

द वेदाज सीरियल के बारे में, सार्वदेशिक प्रतिनिधि मण्डल की वार्त्ता

—महेश विद्यालंकार

गत अंक में उक्त धारावाहिक के निर्माताओं से सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मण्डल की चर्चा का विस्तृत समाचार प्रकाशित हो चुका है और अब प्रतिनिधि मण्डल के एक सदस्य द्वारा लिखा गया विवरण प्रस्तुत है।
—सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयानुसार सार्वदेशिक सभा की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल द वेदाज सीरियल की जाच-पड़ताल के लिए बम्बई आये। जिसके निर्माता श्री सुनील लुल्ला और पटकथा व सवाद लेखक श्री भूषण बनमाली है। वहां जाकर, उनसे मिलकर यह ज्ञात किया जाए कि वे इस सीरियल मे वेदो के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं? किन मान्यताओ और धारणाओं को परदे पर लाना चाहते है।

इसी निर्णय के क्रियान्वयन के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी, आर्य जगत के विद्वान शिरोमणि आचार्य विशुद्धानन्द जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी एव मैं १९-७-९५ को बम्बई पहुंचे। जाते ही बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी व श्री शिववीर जी शास्त्री ने हमारी मीटिंग निर्माता लुल्ला जी व भूषण वनमाली से कराई।

उन्होंने इस सीरियल की विस्तार से रूप रेखा व चर्चा रखी। उन्होंने इसका नाम दिया है—वेद और पुराण, उनका कहना था कि हमने तो वेदो के बारे में वही दृष्टि अपनाई है जो भारतीय व पाश्चात्य विद्वानो की है। हम तो वेदो में इतिहास, भूगोल, देवी, देवता, अवतारवाद, मूर्तिपूजा जादू टोना, पशुबलि आदि खोज रहे हैं। जिनके आधार पर कहानियो को अतिरंजित, रोचक और मनोरजक रूप देकर परदे पर उतारा जा सके। उनका कहना था कि वेदो को बने लगभग चार पाच हजार वर्ष हुए हैं। उन्होने वेदो को पुराणो के साथ जोड़ने की कल्पना रखी। उनकी वेदो के बारे मे दृष्टि आम प्रचलित धारणाओं जैसी मिली। उनको वेदो के यथार्थ स्वरूप की जानकारी नही है।

उनके सम्पूर्ण प्रारूप को सुनने के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान व वैदिक विद्वानो ने अपने वैदिक स्वरूप व ऋषि दयानन्द का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया—

इन्होंने बताया कि वेद सृष्टि के आदि मे परमेश्वर ने मनुष्यो के कल्याण के लिए ऋषियो के हृदयो मे प्रकाशित किए। वेदो का काल सृष्टि उत्पत्ति के साथ है। जितनी पुरानी सृष्टि है, उतने ही पुराने वेद है। वेदो मे सृष्टि का इतिहास है, परन्तु मानवीय इतिहास का वर्णन नही है। वेदो का पुराणो के साथ कोई सम्बन्ध नही है। पुराणो जैसे किस्से कहानिया दन्तकथाए, आदि वेदो मे नही है।

वेदो मे आलकारिक वर्णन सृष्टि विज्ञान परक है। जैसे यम-यमी, पुरुखा, उर्वशी, इन्द्र अहल्या आदि। वेदो में मुख्यरूप मे एक ही ईश्वर का प्रतिपादन है। वही आराध्य व उपासनीय है। इसके अतिरिक्त मानवीय कल्पनाओ पर आधारित कोई जड वा मनुष्य देहधारी देवी देवता का वर्णन नही है। वेदो मे अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मांस, मदिरा जादू टोना आदि का चित्रण नही हुआ है। वेदो के सत्य व यथार्थ स्वरूप मे हटकर जो भारतीय व पाश्चात्य विद्वानो ने अर्थ किए है वे अमान्य, अवैदिक और अवैज्ञानिक है। चर्चा मे हमारे विद्वानो ने ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के दृष्टिकोण को बड़े सशक्त प्रमाण तर्क व युक्ति से प्रस्तुत किया। वे प्रतिनिधि मण्डल से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने पूर्ण आश्वासन दिया कि हम जो भी इस सीरियल की स्क्रिप्ट तैयार करेंगे, पहले आपके विद्वानो को दिखायेंगे, उनकी राय लेंगे, जो भी सुझाव होगे उनको यथासभव सम्मलित करेंगे। हमने उनको अपनी मान्यताओ व विचार बिन्दुओ को लिखित रूप में दिया है। कई पुस्तकें अपने सिद्धातों की पुष्टि में दी। बम्बई सभा व सान्ताक्रुज के मन्त्री जी ने उन्हे सभी प्रकार का सहयोग करने का आश्वासन दिया है।

अब देखना है कि वे अपने कथन पर कितना खरे उतरते है। आर्यजनता को जागरुक होना पड़ेगा। अपनी वेद सम्पदा की धरोहर की चौकसी करनी पड़ेगी। क्योकि वेद हमारे चिन्तन का मूलाधार हैं। वेद का यथार्थ स्वरूप बचेगा तो आर्य समाज जिन्दा रह सकेगा? वेदों के स्वरूप को विकृत करने के बड़े भयंकर कुचक्र चल रहे हैं? हमारा कर्त्तव्य है कि हम संगठित होकर वेद ज्ञान को सुरक्षित करें।

आइए, वेदाध्ययन का व्रत लें

प्राचीन परम्परा में वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्त्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है, कि जो वेद नहीं पढ़ता वह इसी जन्म मे शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतंजलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा से छहों अंगों से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये "वेद क्यों पढ़ें"? इसका उत्तर खोजने का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदों की गणना उच्चकोटि के साहित्यों में की जाती है: वेद के ही शब्दों में वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है:—

"देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।"

जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्व अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शब्दालंकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं वे सब वेद काव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की जैसी शक्ति उपस्थित है, वैसी संसार की अन्य किसी भाषा में नहीं है। वेद के अनेक मन्त्र जिस प्रकार अध्यात्म, अधिदेवत, अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते हैं, वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के साहित्य में नहीं है। वेदों के मन्त्र कवीन्द्र रवीन्द्र की गीताञ्जलि के गीतों से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, हर्ष वाणभट्ट, आदि संस्कृत कवियों के साहित्य को पढ़ने मे गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उनसे भी अधिक प्रांजल है। यदि हम ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, पारसी, फ्रेंच, रशियन, जर्मन, तमिल, मराठी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढ़ते समय यह प्रश्न नहः उठाते कि इस साहित्य को क्यों पढ़, तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्न-चिह्न क्यों? साहित्य का अध्ययन स्वान्तः सुखाय होता है। वह स्वान्तः सुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करने वाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है। —रामनाथ वेदालंकार

वेद एवं वैदिक संस्कृति

(पृष्ठ ५ का शेष)

वश हिन्दुओं के उद्धार का मार्ग भी सोचते थे परन्तु किसी ने वेद का मार्ग देखा नहीं। उस समय शास्त्री पण्डित भी थे, परन्तु वे बेचारे वेद को जान भी नहीं सकते थे, फिर वेद के धर्म से मानवो का त्राण होने की बात जानना और वैसा उपदेश करना तो दूर की बात है। केवल अकेले ऋषि दयानन्द जी के पास ही यह ऋषित्व आता है। इन्होने ही यह सच्ची रीति से जाना और कहा कि वेदों को पढ़ो और वेदोपदेश को आचरण में लाओ।

विश्वकोष में लिखा है कि यज्ञ में पशुवध नहीं होता, क्योंकि वेद में वध करने का कोई मन्त्र नहीं है—

'ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन हिंसीः'

'हे औषधि, इसका संरक्षण कर, हे शस्त्र, इसकी हिंसा न कर।' मन्त्र का स्पष्ट भाव पशु का सरक्षण करना ही है। गोमेध में गाय का वध उचित नहीं क्योंकि वेदों में गौ को अघ्न्या (अवध्या) कहा है। अजमेध में बकरे का वध करना अनुचित है, क्योंकि अज एक धान्य का नाम है। कोश में अज के अर्थ अजशृंगि-औषधि-प्रेरक-नेता-सूर्यकिरण-चन्द्रमा-प्रकृति-माया आदि हैं। राष्ट्र सेवा ही अश्वमेध यज्ञ है—

'राष्ट्र वा अश्वमेध.' (श.बा. ३१२८६१३)

वैदिक यज्ञो के बारे में यह स्थापना किस ने की थी ? पाठक स्वयं अनुमान करें।

अथर्ववेद—अथर्ववेद का अर्थ गतिरहितता अर्थात् शाति है। सचमुच अथर्ववेद आत्मज्ञान देकर विश्व में शान्ति स्थापना करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है।

'अथर्वेति गतिकर्मा तत्प्रतिषेधो निपात।' निरुक्त

इससे पहले तो अथर्ववेद जादू टोने चमत्कार का ही पिटारा बन गया था। दयानन्द ने उसे वेदत्व का दर्जा दिलवाया, अन्यथा उसके वेद होने को ही नकारा जाने लगा था।

ये वेद मानव की उन्नति करने का सच्चा धर्म बतलाते हैं। ऋग्वेद (१०।१९१।२) का उपदेश है-'संगच्छध्वं संवदध्वं' (हम मिलकर चलें, मिलकर बोलें, हमारे मन एक हों)। यजुर्वेद (४०।२) कहता है कि यह सारा संसार ईश की सत्ता से व्याप्त है, त्याग भाव से इसका उपभोग करो।

दयानन्द की अगली स्थापना थी-वेद में इतिहास नही। सातवलेकर इस सम्बन्ध मे लिखते हैं कि वेद मे इतिहास-पुराण की कल्पना पृथक् है। भारत के ऋषिमुनि मानवीय शरीरों की हलचल को इतिहास नहीं मानते। शरीर की हलचल मानसिक विचारो से होती है। वेद में दशरथ, दुःशासन गुणबोधक नाम है। अयोध्या नगरी शरीर को कहा है, जिसमें आठ चक्र और नवद्वार हैं। ये मानवीय भावो और विचारों का शाश्वत और सनातन इतिहास है. यूरोप के इतिहासकारों के कथनानुसार मानवों के अशाश्वत इतिहास नही हैं।

दयानन्द का उद्देश्य कोई नवीन सम्प्रदाय अथवा मत-मतान्तर चलाने का नहीं था। उन्होंने उसी प्राचीन वेदमार्ग का पुनरुद्धार (Revival) किया जिसको ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त मानते आए हैं। वेद परमप्रमाण है वेद-विरुद्ध जितनी भी स्मृतियां या ग्रन्थ हैं वे निरर्थक हैं तथा वेद को पढ़ना ही सबसे बड़ा तप या धर्म है। ऋषि दयानन्द ने मनु की इन धारणाओं को अक्षरशः सत्य चरितार्थ कर दिखाया। इसी कारण उन्होंने मतमतान्तरों की आलोचना की, किसी हानि या द्वेष के भाव से नहीं।'

वर्तमान समय में जब हम एक शताब्दी बाद यतिवर दयानन्द के विचारों का मूल्यांकन Estimate) करते हैं, तो वेद एवं वैदिक अथवा आर्य संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति के बारे में उनकी मौलिक स्थापनाएं मान्य एवं सत्य हो चली हैं। परन्तु मतमतान्तरों या विभिन्न धर्मों के बारे में उनके विचारों में संशोधन की आवश्यकता है तथा इसी प्रकार का दृष्टिकोण त्याज्य अथवा अपाठ्य ग्रन्थों के बारे में अपनाने को आवश्यकता है। विचारों की समय-समय पर पुनर्व्याख्या (Review) पुनरालोचना होती रहने से ही विचार वैज्ञानिक एवं तर्कसंमत बने रहते हैं, अन्यथा वे रूढ़िग्रस्त (Traditional, old) पुराने तथा असंगत हो जाते हैं। पुनरालोचन से सारतत्व (मुख्य बातें) छट जाता है तथा गौण बातें त्याग दी जाती हैं। वेद एवं वैदिक संस्कृति का पुनरुद्धार दयानन्द का मुख्य लक्ष्य अथवा साध्य था। मतो की आलोचना तथा त्याज्य ग्रन्थों का उल्लेख यह साधन था। साधन कभी स्थायी नहीं होते, वे देशकालानुसार बदलते रहते हैं। यही दृष्टिकोण (Approach) हमें राग, द्वेष और पक्षपात से रहित होकर अपनाना होगा। विभिन्न भारतीय धर्मों एवं मतो तथा ग्रन्थो में से हम वेदानुकूल को ग्रहण कर लें। दूसरे इन सब में मूलभूत विचार (fundamental ideas) तो उसी वैदिक अथवा आर्य संस्कृति के ही हैं। विभिन्न धर्मों के बारे में विगत एक शताब्दी में काफी शोध-(research) कार्य हुआ है। हम नई खोज तथा नए विचारो से लाभ उठाए।

आज हमें कालिदास, माघ और भारवि के काव्यों को त्यागने की आवश्यकता नही है, न ही, सांख्यतत्वकौमुदी तथा तर्कसंग्रह से डरने की आवश्यकता है। यही दृष्टिकोण तुलसी-रामायण के बारे में अपनाना है। विगत ५० वर्षों मे इस पर काफी अनुसधान हुआ है। हा, हम इन्हें तक की कसौटी पर परख लें। इसी प्रकार पुराणो के बारे में भी अनेक आलोचनात्मक अध्ययन (Critcal studies) या ग्रन्थ प्रकाशित हुई है। स्वय गीता प्रेस गोरखपुर से राधा और कृष्ण की तथा पुराणों मे कृष्णलीला की युक्तिसंगत व्याख्या प्रकाशित हुई है। इसी प्रकार का दृष्टिकोण हमे विभिन्न मतो एव धर्मों के बारे मे अपनाने की आवश्यकता है। सब मतो की अच्छी बातें-जो-जो बाते सबके अनुकूल सत्य है, उनको हम ग्रहण कर लें और जो एक दूसरे से विरुद्ध है उनको हम त्याग दें। हमे सब को अपने साथ लगाना है, समस्त मानव समाज का कल्याण करना है, सबको श्रेष्ठ बनाना है। सबकी उन्नति मे हमारी उन्नति है। भारतोद्भूत जितने भी धर्म हैं हिन्दू, जैन, सिख-इनका मूलस्रोत तो एक ही है। ये सारे एक सनातन वैदिक धर्म या आय धर्म मे विलीन हो जाते हैं। इसी प्रकार ईसाई तथा मुस्लिम धर्मों के प्रति भी हमे अपना दृष्टिकोण उदार तथा विस्तृत करना होगा, क्योकि आज विज्ञान की दुनियां मे समस्त मानव समाज एक इकाई (Unit of family) बन गया है।

धर्मों एवं मतान्तरो की आलोचना से ऋषि दयानन्द का तात्पर्य था कि धर्म मे तर्कसगता (resonability) युक्ति एवं हेतु (argument) की प्रधानता हो, अन्धविश्वास तथा आडम्बर न हो। हम बाबा-वाक्य को प्रमाण न मानें, सत्य-असत्य की स्वय परीक्षा तथा छानबीन करें। यही उनकी धर्म को स्थाई देन है

नैतिक शिक्षा

श्वेतपत्र की सच्चाई

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्वयं अग्निवेश द्वारा गैर-कानूनी रूप से गठित सार्वदेशिक सभा मे भी पदाधिकारी है, इस कथित श्वेत पत्र का लेखक तो मात्र पांच वर्ष के इतिहास की भी जानकारी नही रखता। पाठकों के सूचनार्थ मैं यह बताना चाहता हू कि विट्ठल राव वाली आर्य प्रतिनिधि सभा ने खुद आन्ध्र प्रदेश की एक अदालत मे सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध सम्बन्ध विच्छेद का मुकदमा कर रखा है। आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा के साथ बाकायदा सम्बन्धित है तथा वर्तमान मे इसके प्रधान पद पर श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर कार्य कर रहे हैं जो कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के आठवे डिक्टेटर श्री विनायक राव जी विद्यालकार के सुपुत्र हैं तथा आन्ध्र प्रदेश मे आर्यसमाज के संस्थापक श्री केशवराव जी के सुपौत्र है।

माननीय पाठकगण रात्रि मे विचरण करने वाले एक पक्षी चमगादड के विषय में अवश्य जानते होगे जिसे रोशनी पसन्द ही नही। वह केवल रात के अन्धकार मे ही रहना जानता है। इस कथित श्वेत पत्र के युवक सन्यासी की भी वही अवस्था है।

गुरुकुल घटकेश्वर की ६२७ एकड भूमि के सम्बन्ध मे की गई आपत्तियों के विषय में पाठको की जानकारी हेतु यह बताना चाहता हूं कि बी० किशनलाल नामक व्यक्ति जो विट्ठल राव वाले गुट के नेता हैं, उसके विरुद्ध सरकार ने उच्चस्तरीय अधिकारियों द्वारा पूर्ण छान-बीन कर जांच के बाद अदालत में एक अपराधिक मामला दर्ज किया है जिसमें भारी राशि के गबन का आरोप है, सरकार द्वारा इस राशि की बी० किशनलाल से वसूली करने के लिए अलग मुकदमा किया गया है। आन्ध्र प्रदेश उच्च-न्यायालय ने बी० किशनलाल की अदालत में की गई स्वीकारोक्ति के बाद यह टिप्पणी की है कि बी० किशनलाल ने गुरुकुल की जमीनें बेची हैं तथा उसमें से कुछ राशि अपनी चीनी मिल में निवेश की है।

एक कौवा अपनी आदत को बदल नहीं सकता, उसी प्रकार झूठ बोलने वाला लगातार झूठ पर झूठ बोलता जाता है उसे उसमें कुछ भी बुरा नही लगता और इस पर भी वह आर्यसमाज का नेता बनने का प्रयास करता है। यही नहीं उस कथित श्वेत पत्र में स्वयं को सार्वदेशिक सभा का मन्त्री भी बताता है जो कि श्रेष्ठ व्यक्तियों के समाज की सर्वोच्च सस्था है। यह एक अनाधिकार चेष्टा है जिसे आर्य जनता ही निष्फल कर सकती है।

श्रावणी पर्व

—कविवर "प्रणव" शास्त्री एम.ए. महोपदेशक

श्रावणी आया पावन पर्व वेद की प्रभुता गाने को।
धरा से मिट जावे अज्ञान ज्ञान के दीप जलाने को ॥१॥
बन्द हों सारे वाद-विवाद बजे फिर समता शहनाई।
न होवे ऊंच-नीच के भाव स्वरों में होवे मधुराई॥
दूर हों राग-द्वेष के दोष कि कटुता क्लेश भगाने को॥२॥
दूर हों दुर्गम दुष्टाचार सजे फिर सदाचार का द्वार।
हृदयमें रहे सभी के सत्य समुन्नति सुखकर शुद्ध विचार॥
प्रभाती गाते रहें मनुष्य प्रेम का प्रात पगाने को॥३॥
रूढ़ियों का होवे पतझार बहे सुख दायक शान्ति समीर।
उगे नवकोंपल कर्म विशिष्ट धर्म का बिखरे अमित अबीर॥४॥
हृदय के मिल जावें सबतार एकतारंग रंगाने को॥
परस्पर होवे पुण्य प्रतीति रीति हो आपस में नवनीत।
मिटे छल छन्द द्वन्द्व बधवृन्द मनुजता निश्चित जावे जीत॥
दनुजता बढ़ने नहिं पावे अनुज पर घात लगाने को॥५॥
मनों में उमगे शुचि सौहार्द न होवे कभी कहीं आतंक।
"प्रणव"मिल जावे प्यार मल्हार राव,धनी उमराव रंक।
भिन्नता भागे कोसों दूर एकतारंग गान को॥६॥
सभी के घर-घर होवें यज्ञ मन्त्र भी मोहक मधु गुञ्जार।
मिटें भय ताप पाप अविलम्ब बने सुख सौरभ का संसार।
पर्यावरण-प्रदूषण भूत भूमि पर चढ़ा भगाने को॥७॥
श्रावणी आया पावन पर्व वेप की प्रभुता गाने को।
धरा से मिट जावे अज्ञान ज्ञान के दीप जगाने को॥

—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-१

वेद और श्रावणी (गीतिका)

वेद ही जग में हमारा, ज्योति जीवन सार है।
वेद ही सर्वस्व प्यारा पूज्य प्राणाधार है॥ टेक॥
सत्य विद्या का विधाता, ज्ञान का गुरुमेय है।
मानवों का मुक्तिदाता, धर्मधी का ध्येय है॥
वेद ही परमेश्वर प्रभु का प्रेम-पारावार है॥१॥
ब्रह्मकुल का देवता है, राजकुल रक्षक रहा।
वैश्य वेद विभूषिता है, शूद्रकुल स्वामी महा॥
वेद ही वर्णाधर्मों का आदिमूल आधार है॥२॥
श्रावणी का श्रेष्ठ उत्सव, पुण्य पावन पर्व है।
वेद व्रत स्वाध्याय वैभव, आज ही सुखसर्व है॥
वेदपाठी विप्रगण का, दिव्य दिन दातार है॥३॥
वेद का पाठन-पठन हो, वेद-वाद विचार हो।
वेद हित जीवन-मरण हो,वेद हित आह्लाद हो।
आर्य जनों का आज से व्रत विश्ववेद प्रचार हो॥४॥
विश्वभर को आर्य करना, वेद का सन्देश है।
मृत्यु से किञ्चित् न डरना, ईश का आदेश है॥
सृष्टिसागर मे हमारा, वेद ही पतवार है॥५॥
रोम-रोम सरोज सम,श्रुति 'सूर्य' से खिलते रहें।
वेद चन्द्र चकोर हम, श्रुति मोद से हर्षित रहें॥
वेद ही स्वामी सखा सब, वेद ही परिवार है॥६॥

—स्व० डा० सूर्यदेव शर्मा

वेद मानव मात्र के लिए है

देहरादून। नगर की कालोनी राजेन्द्र नगर मे वेद-प्रचार सप्ताह का उद्घाटन करते हुए आर्य समाज धामावाला, देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने अपने प्रारम्भिक भाषण में वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि आदि सृष्टि में ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान का नाम वेद है। करोड़ों वर्षों से मनीषी, विद्वान, ऋषि-मुनि वेद को अपौरुषेय मानते आये हैं क्योंकि वेद का रचयिता कोई मनुष्य नहीं है।

श्री बाली ने कहा वेद मानव मात्र के लिए है। इसमें किसी देश-विशेष का भूगोल या किसी विशेष समाज की ऐतिहासिक घटना ढूंढना व्यर्थ है।

वाचस्पति ही सकल वैभवों का अधिपति होता है

—डा० सावित्री देवी शर्मा, वेदाचार्य

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" यह आर्य वचन सर्वदा वैदिक स्वाध्याय व्रत धारण करने की प्रेरणा देता है। शतपथ ब्राह्मण में वेदाध्ययन को मानव जीवन का मुख्य कार्य बताते हुए लिखा है—

"स्वाध्यायशील मानव एकाग्र मन होता है। स्वाधीन होकर प्रतिदिन विविध पदार्थों की सिद्धि करता है। रात्रि में सुख पूर्वक सोता है। अपनी आत्मा का परमचिकित्सक बनकर इन्द्रिय संयम एकाग्रता, प्रज्ञा वृद्धि का लाभ प्राप्त करता है। संसार में उसका यश निरन्तर बढ़ता है। उसकी ऋतुम्भरा प्रज्ञा कई प्रकार के ब्राह्मण भाव को उत्पन्न करती है, अध्ययन अध्यापन, यजन और याजन। यह लोक भी इस ब्राह्मण धर्म से लाभान्वित होकर चार प्रकार से उसकी आराधना करता है—पूजा सत्कार, इष्टवस्तु का समर्पण उसकी हानि न करना तथा अवध्यता।"

स्वाध्याय का अर्थ (शत. ११/३/७/१)

"स्वस्याध्ययनम्" स्वाध्याय: अर्थात आत्म निरीक्षण ही स्वाध्याय कहलाता है। अपने गुणों का ज्ञान तो प्राय: सभी को होता है। किन्तु स्वछिद्रान्वेषण वीरों का ही कार्य है इस प्रकार आत्मगुण दोष परीक्षण, धार्मिक पुस्तकों का पठन-पाठन, साधुजनों के सदाचारमय जीवन एवं प्रवचनादि से लाभ उठाना ही स्वाध्याय का वास्तविक अर्थ है।

दुराचार का निवारण केवल स्वाध्याय से

यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि दुराचारी के दोषों का दुःसाध्य उपचार केवल स्वाध्याय से ही सम्भव है। अत: वेदामृत का रसास्वादन अवश्य करें।

ओ३म् पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।

वसोष्टे निरमय मय्येवास्तु मयिश्रुतम्॥ (अथर्व)

मन्त्रार्थ—वेदवाणी के पालक प्रचारक वाचस्पते! प्रकाश युक्त दिव्यज्ञान के साथ बार-बार मुझे प्राप्त होइये। हे वसोष्पते! सकल ऐश्वर्यों के स्वामी, अथवा वसुब्रह्मचारियों के स्वामी, आचार्य! हमें सर्वथा (निरमय) सुख में रमण कराइये। मुझमें (श्रुतम्) सुना हुआ वेद ज्ञान मुझ में ही रहे। अर्थात मैं उसको सरलता से अपने आचरणों द्वारा जीवन में उसको सरलता से अपने आचरणों द्वारा जीवन में आत्मसात कर सकूं। प्रस्तुत वेदमन्त्र में आचार्य उपदेशक तथा विनीत श्रद्धालु शिष्य के गुण तथा श्रुत वेद ज्ञान हमारे मानस की स्थायी निधि कैसे बन सके आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया गया है।

वाचस्पते—श्रद्धास्पद आचार्य को 'वाचस्पति' कहकर सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार परमेश्वर वेदवाणी का स्वामी है उसका ज्ञान पूर्ण एवं निर्भ्रान्त है वह वाक् दोष से मुक्त है।

सूनृता वाणी का प्रयोक्ता

अत: वाचस्पति होकर सृष्टि के आदि में अनन्त सत्यज्ञान का आलोक प्रसारित करता है। उसी प्रकार लोक में भी अनृत वदतोव्याघात पुनरुक्त्यादि दोष रहित सूनृता वाणी का प्रयोग करने वाला वाचस्पति उपदेश ही धर्मोपदेश का अधिकारी है। ऐसी विमला सरस्वती की साधना में समर्पित जीवन वाले विद्वान का वक्तव्य ही प्रभावशाली होता है। अतएव सर्वप्रथम वाणी के दोषों का संक्षिप्त विवेचन आवश्यक है।

वाणी के दोष अनृत दोष

यह वाणी को मलिन करने वाला प्रधान दोष है शेष दोष इसी के पुत्र हैं। किन्तु अपना-अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखते हैं। 'न ऋतम्' अनृतम् अर्थात जो शाश्वत सत्य रहित है वही अनृत है। असत् को चिन्तन करते करते मनुष्य पापाचरण करने लगता है। यही महापातक है। परिणामत: मनसा-वाचा-कर्मणा अपने असत्य व्यवहारों से संसार के समक्ष अनिष्टकारी सिद्ध होता है। मिथ्या आचरण से विश्व का कोना कोना अशान्त हो उठता है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्य ही कहा था "अविद्या (असत्य) का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिए। वस्तुत: वही वाचस्पति है जो सत्य ग्रहण धारण और असत्य के परित्याग में सर्वदा उद्यत रहता है। सभी सामाजिक कुरीतियों का मूल असत्य चिन्तन, असत्य भाषण और असत्याचरण है। गुरुकुलीय विद्या प्राप्ति के अनन्तर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से पूर्व दीक्षित शिष्य को आचार्य सर्वप्रथम यही उपदेश देता है 'सत्यंवद। धर्मंचर अर्थात सत्य के व्यवहार से सदा धर्माचरण करते हुए ही परिवार समाज और राष्ट्र के कल्याण में संलग्न रहना। सत्य ही विश्व की प्रतिष्ठा है। सत्यमेव जयते नानृतम्। सर्वदा सत्य ही विजयी होता है। इस पर विश्वास करने वाले व्यक्ति ही लोक में सम्मानित होकर असत् से सत् की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर और अन्धकार से चिरन्तन प्रकाश की ओर निरन्तर बढ़ते जाते हैं। सत्य के प्रताप से ही मानवता देवत्व को जन्म देती है। "मनुर्भव जनया दैव्यंजनम्"। अत: अनृत दोष सर्वथा परित्याज्य है। कामधेनु वाणी के उपासक सत्यामृत का पान करके ही वस्तुत: वाचस्पति बन जाते हैं। श्रीमद् भगवद् गीता का पवित्र संदेश इसी आशय को प्रकट करता है।

'अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियं हितञ्च यत्।"

प्रिय हितकारी सत्य वचन ही श्रोता के हृदय में कभी उद्वेग उत्पन्न नहीं करता। ऐसी मधुमयी वाणी के प्रयोग से वाचस्पति सर्वत्र प्रतिष्ठित होता है।

वदतो व्याघात दोष

जिस तर्क पूर्ण वाचायुक्ति से किसी सिद्धांत की पुष्टि होती है यदि उसी के प्रयोग से वक्ता का विचार खण्डित भी हो जावे तो यह हेतु वदतोव्याघात दोषयुक्त माना जाता है। यह दोष अनृत के दृढ़ अभ्यास से उत्पन्न होता है। कारण यह है कि सत्य को असत्य सिद्ध करने में प्रथम तो मन की चंचलता बढ़ती है जिससे ऋतम्भरा प्रज्ञा की स्थिरता नष्ट होती है। उस समय अस्थिर मति से वक्ता की वाणी द्वारा जो भी विचार व्यक्त किये जाते हैं वह वदतो व्याघात दोष से युक्त अवश्य हो जाते हैं ऐसा स्थूल दोष साधारण श्रोता भी पकड़ लेता है और उसे उसी के प्रयुक्त शस्त्र से पराजित कर देता है क्योंकि इस दोष से अल्पज्ञ वक्ता तत्काल निग्रह स्थान में आ जाता है। ऐसा वाग्दुष्ट व्यक्ति स्वयं तो अंधकार में रहता ही है साथ ही उपनिषद के शब्दों में अंधेनैव नीयमाना यथा धाः अपने अनुयायियों को भी असत् पथ में ला कर धर्म भ्रष्ट कर देता है।

पुनरुक्ति दोष

विषय के उपक्रम आरम्भ तथा उपसंहार के अनन्तर किसी अन्य प्रकरण में पूर्वोक्त विषय को अप्रासंगिक चर्चा करना पुनरुक्ति दोष कहलाता है। जहां किसी जिज्ञासु के ज्ञानाभ्यास के लिए किसी विषय को बार-बार दोहराया जाता है वहां पर पुनरुक्त दोष, दोष न रहकर गुण में परिवर्तित हो जाता है। प्राय: माता-पिता आचार्य जन बाल बालको के स्थिर ज्ञान के लिए एक-एक शब्द को अनेक बार प्रयोग करते हैं। ऐसी स्थिति में पुनरुक्ति अनुवाद मात्र बन जाती है दोष नहीं। इस दोष से युक्त होकर कामदुघा वाणी की सरसता नष्ट होने लगती है। नीरस वाणी को संसार में कोई श्रोता सुनना नहीं चाहता। उसमें प्रभावोत्पादकता का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

अत: स्पष्ट है त्रिदोष रहित वाग्देवी भारती सत्य शिव संकल्पमय मानस की ध्रुवा स्मृति की परिचायिका है।

आचार्य तथा शिष्य में अपेक्षित गुण

आचारवान वाचस्पति के उत्तम ज्ञान विज्ञान का सुनिश्चित लक्षण है। ऐसे दिव्य मन वाले वाग्मी बृहस्पति का एक-एक शब्द जीवन को सार्थक बनाने में सक्षम होगा। आचार्य का देवत्व भी उसी शिष्य को अपनी चुम्बकीय शक्ति से आकृष्ट कर सकेगा जिसने स्वयं भी गुरुचरण में बैठकर सविनय निष्कपट साधना की है। उपदेशक में यदि निर्दोष वाग्मिता अपेक्षित है तो शिष्य में भी निम्नांकित योग्यता आवश्यक है—

'प्रशान्तचित्ताय जितेन्द्रियाय प्रहीण दोषाय यथोक्तकारिणे

अर्थात जिसका चित्त कठोर तपश्चर्या से प्रशान्त हो चुका है। बुद्धि

(शेष पृष्ठ ८ पर)

क्रान्ति के अग्रदूत देवतास्वरूप भाई परमानन्द

—डा० सुरेन्द्रसिंह लोढ़ा (राज०)

भाई परमानन्द जी का जन्म ४ नवम्बर १८७४ई० को करयाला, जिला झेलहम (प० पाकिस्तान रावल पिण्डी क्षेत्र) में हुआ था। बाल्यायु में ही उनके पिता ताराचन्द जी का देहान्त हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा चकवाल में हुई : प्राइवेट रूप से आपने बी० ए० पास किया। इसके पश्चात् आप एबटाबाद (सीमा प्रान्त) के आर्य हाई स्कूल में मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। तदुपरान्त आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० की डिग्री प्राप्त की।

हृदय में देश सेवा की भावना होने के परिणाम स्वरूप आप डी० ए०वी० कालेज में पचहत्तर रुपए मासिक पर इतिहास और राजनीति के प्राध्यापक बन गये। १९०७ में महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा से आप दक्षिण-पूर्व अफ्रीका में हिन्दू प्रचार कार्य के लिए प्रस्थान कर गए। मोम्बासा, नैरोबी जोहान्सबर्ग और डरबन आदि नगरों में आपने हिन्दू संगठन का व्यापक रूप से कार्य किया। यहां आपने तमिल स्कूल, यंगमैन हिन्दू एसोशिएशन और युवक समाज की स्थापना की। उन्हीं दिनों गांधी जी भी नेटाल में थे। गांधी जी की भाई जी से प्रथम भेंट नेटाल में हुई। भाई जी की इस भेंट से गांधी जी ने उनसे असहयोग आंदोलन का मन्त्र सीखा।

१९०७ में आप अफ्रीका से इंग्लैण्ड पहुंचे। जहां आपने हिन्दुस्तानियों के प्रति घृणा का भाव देखा। यहीं उनके मन में भावना बनी कि भारत और भारत प्रवासियों की शिक्षा का माध्यम इंगलिश न होकर हिन्दी होनी चाहिए और चिकित्सा एलोपैथी के स्थान पर आयुर्वेदिक। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप बर्मा आदि पूर्वीय देशों के भ्रमण पर गये जहां आपने हिन्दू संगठन का व्यापक कार्य किया और धन भी एकत्रित किया। इस धन से आपने लाहौर में एक कालेज की स्थापना की।

आपने अपने इंगलैण्ड प्रवास के समय देश की स्वाधीनता प्राप्ति के लिए लन्दन में एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया जिसके सदस्य थे वीर सावरकर, श्याम जी कृष्ण वर्मा और लाला हरदयाल जी। इन क्रान्तिकारियों के इस सगठन ने इंग्लैण्ड के हिन्दुओं में क्रान्ति की भीषण ज्वाला उत्पन्न कर दी जिसे अंग्रेजों की गोलियां और तोपें भी ठंडी न कर सकीं। आज कांग्रेस हजार दावा करे कि स्वाधीनता का श्रेय उसे है किन्तु यदि वह अपने हृदय को टटोल कर देखे तो उसे कहना ही पड़ेगा कि आजादी का श्रेय इन क्रान्तिवीरों को है।

भाई जी १९०९ में इंग्लेड से भारत आ गये। भारत के कोने-कोने में क्रान्तिकारियों का संगठन बनाया। सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, मदनलाल धींगरा, शिवराम जैसे क्रान्तिकारी उत्पन्न करने का श्रेय भाई परमानन्द जी को ही है। भगतसिंह तो भाई जी के अनन्य शिष्यों में से एक थे। भाई जी भारत के क्रान्तिकारियों के गुरु बन गये। अब भारत की पुलिस और सी०आई०डी० भाई जी के पीछे लग गई। घर की तलाशी में पुलिस ने बम बनाने का नुस्खा और अनेकों उन योजनाओं का साहित्य पकड़ा जिसमें अंग्रेजी शासन उलटने की विधि वर्णित थी।

१९१० में आप धारा ११० में बन्दी बना लिए गये और १५००० रुपये की जमानत पर रिहा कर दिये गये। जेल से छूटते ही आपने यूरोप को प्रस्थान किया पेरिस में लाला हरदयाल जी से भेंट की। वहां से अमेरिका पहुंचे। यहां से भाई जी ब्रिटिश ग्याना, जार्ज टाऊन पोटी डी० फ्रांस के मार्ग से चल दिये। यहां कुछ दिन क्रान्तिकारी संगठन का कार्य करके आप केलोफोर्निया और सान फ्रांसिसको (अमेरिका) पहुंच गए। आप यहां जीवन निर्वाह के लिए फलों के बागों में काम करते थे। यहां से आपने फार्मेसी में डिग्री और साइक्लोजी में डीलिट की उपाधि प्राप्त की। यहां पर आपने एक हिन्दू संस्था की स्थापना की और 'गदर' नाम का समाचार पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। अंग्रेजों के विरुद्ध आग उगलने वाला यह वीर अंग्रेजी शासन का कांटा बन गया। भाई जी के कारण भारत और विदेशों में स्वाधीनता की आग धू-धू जलने लगी। भाई जी एक षड्यन्त्र में बन्दी बना लिए गए। किन्तु प्रमाण अभाव में सरकार को उन्हें जल्दी ही मुक्त करना पड़ा।

ट्रिब्यूनल के फैसले में जो सबसे बड़ा आरोप लगाया गया था, वह यह था, कि आपने एक पञ्जाबी को जो अमेरिका से वापस आया था, अमेरिकन डालरों को रुपयों में बदलने में सहायता दी थी। अंग्रेज जजों ने इस आधार पर आपके लिए मृत्यु दण्ड की सिफारिश की परन्तु जैसा कि कहा जाता है कि खून पानी से गाढ़ा होता है। इसलिए उस भारतीय जज ने न्याय करते हुए काले पानी की सजा तजवीज की।

भाई जी काले पानी की सजा में अण्डमान भेज दिये गये। अण्डमान की जिस जेल में भाई जी रहे वह जेल चार मंजिल का जो आज भी विद्यमान है। जेल के प्रत्येक मंजिल में दो-दो सौ कोठरियां थीं। प्रत्येक कोठरी ९×६ की थी जिसमें हवा का कोई प्रबन्ध नहीं था। इसके भूमिगत मंजिल की ऐसी ही काल कोठरी में भाई परमानन्द जी और वीर सावरकर जी को रखा गया था। अण्डमान की कालेपानी की सजा में भाई परमानन्द जी को कोल्हू में जोता जाता था। मई-जून की धूप में मूंज बटवाई व कुटवाई जाती थी। एक पाव पीने को पानी आधा पेट भोजन दिया जाता था। आवश्यकता की पूर्ति के लिए और पानी मांगने पर या थकावट आने पर जमादार के कोड़े खाने पड़ते थे जिससे लोहू लूहान हो जाता था।

भारत के महान इतिहासवेत्ता, कानून के महापण्डित, तर्क महारथी भाई परमानन्द की ऐसी दयनीय दशा से द्रवित होकर मिस्टर सी०एफ० एण्ड्रूज के जोर देने पर ब्रिटिश सरकार ने भाई जी को अण्डमान से मुक्त करके लाहौर भेज दिया।

जिस समय भाई जी काले पानी की सजा भोग रहे थे तब उनकी चल-अचल समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। जब भाई जी के घर के माल-असबाब को पंजाब पुलिस उठा रही थी—उस समय आपकी धर्मपत्नी श्रीमती भागसुद्धी जिनकी गोद में एक बच्ची थी, सर्दी से बचाने के लिए मां की ममता ने एक रजाई पुलिस की नजर से बचाकर पड़ोसी की दिवार पर रख दी, ताकि पुलिस के चले जाने के पश्चात वह उसको उठा लेगीं, परन्तु कितने कृतघ्न थे वे हिन्दू कि जिसके लिए महर्षि दधीचि की तरह स्वतन्त्रता संग्राम के यज्ञ में अपना सब कुछ स्वाहा कर रहा था उसी का परिवार केवल जीवित ही रह सके ऐसा भी वे देख न सके, उस पड़ोसिन ने जहां भाई जी और उनके परिवार वालों की बुरी-भली बातें सुनाईं वहाँ वह लिहाफ भी पुलिस के हवाले कर दिया। भाई जी का अपराध केवल इतना ही था कि वे अपने परिवार को बलिदान करके देश को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। (क्रमशः)

अध्यापक की आवश्यकता है?

आर्य गुरुकुल नोएडा को एक योग्य समर्पित अध्यापक की आवश्यकता है जो संस्कृत के अतिरिक्त विज्ञान व गणित आदि विषय भी पढ़ा सके। आवास व भोजन निःशुल्क, वेतन योग्यता व अनुभवानुसार। शीघ्र सम्पर्क करें—

डा० एन०बी० आर्य, जी-९, सैक्टर-१२
नोएडा २०१३०१
दूरभाष : ८६-२१२९९७

वेद एवं वैदिक संस्कृति के पुनरूत्थान में महर्षि-दयानन्द का योगदान

—प्रा० चन्द्रप्रकाश आर्य

वेद भारतीय-संस्कृति अथवा आर्य-संस्कृति के आधार-ग्रन्थ हैं। भाषा विज्ञान की शब्दावली मे वेद भारतीय परिवार (Indo-European family) के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। समस्त उत्तरवैदिक साहित्य वेदो के व्याख्या-ग्रन्थ है। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदङ्ग, उपवेद, षड्दर्शन, सूत्रग्रन्थ, स्मृतिया तथा प्रातिशाख्य आदि सबका सम्बन्ध वेद से जोडा गया है। मनुस्मृति वेद को परम प्रमाण मनाती है तथा वेद से भूत, भविष्यत्, वर्तमान सब कुछ सिद्ध हो सकता है। कवि कुलगुरु कालिदास का कहना है कि यह वेदवाणी ओकार से आरम्भ होती है तथा उदात्त, अनुदात्त एव स्वरित तीन भेद से इसका उच्चारण होता है। विभिन्न भारतीय भाषाओं मे भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते है। भारत मे उद्भूत दर्शन एवं सम्प्रदाय या तो वैदिक कोटि मे माने गए हैं या अवैदिक। वैसे प्रत्येक सम्प्रदाय अपने को वैदिक ठहराने का प्रयास करता है। वेद का इतना महत्व है कि इसके ज्ञान को नित्य माना गया है। इसकी शब्दानुपूर्वी (Word order) को भी नित्य माना गया। इसीलिए सम्भवत: वेदमन्त्रो की श्रुतिपरम्परा से जिस तरह रक्षा की गई वैसी, आज तक समस्त वैदिक लौकिक, संस्कृत अथवा भारतीय भाषा-साहित्य मे किसी की भी ग्रन्थ रक्षा नहीं की गई। हजारों वर्षों से वेदमन्त्रों को कण्ठस्थ किया जाता रहा है और आज भी यह परम्परा अपने मूल मे अक्षुण्ण है, यह वेदपाठियों का दावा है। उसका एक भी अक्षर इधर से उधर नही हुआ। विश्व के इतिहास में ऐसा उदाहरण नही मिलता। इस परम्परा को अक्षुण्ण (ज्यो का त्यों) बनाए रखने के लिए ऋषियो ने अनेक उपाय किए। प्रत्येक मन्त्र मे ऋषि, देवता, छन्द और स्वर का विधान किया गया। अष्ट विकृतियो अर्थात् एक मन्त्र का आठ प्रकार से पाठ करने की प्रणाली चालू की गई और उनमे किसी-किसी पाठ के तो आगे २५ भेद हैं। फिर वेदमन्त्रो के अध्यात्म, अधिदैवत, अधिभूत से तीन-तीन अर्थ होते है। वेदार्थ के लिए व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है, क्योकि वेदमन्त्रो मे सभी लिंगो एवं विभक्तियो का उल्लेख नही मिलता। निरुक्त के अनुसार वेदार्थ के लिए ऋषि तपस्वी एव विद्वान होना आवश्यक है। उसका राग और द्वेष तथा पक्षपात से रहित होना भी अपेक्षित है।

ऐसे गम्भीर और जटिल विषय का फल क्या है? महामुनि पतंजलि के शब्दो मे वेद का एक शब्द भी, यदि उसको अच्छी तरह समझकर जीवन में ढाल लिया जाए-लोक और परलोक की सिद्धि करने हारा है। बिना अर्थज्ञान के वेदार्थ को हृदयगम किए बिना वेद को पढ़ना व्यर्थ में भार ढोने के समान है। वेदार्थ को जानने हारा सकल कल्याण को प्राप्त करता है। वेदमन्त्र नारियल के फल के समान बाहर दुर्गम एवं कठोर है, परन्तु भीतर उनमे जीवन रस भरा हुआ है। उसको फाडकर ही-वेदमन्त्रो को समझकर ही वह रस चखा जा सकता है। वह रस चखा कैसे जाए? मन्त्रो का मनन करने से, केवल पढ़ने से नहीं, काम, क्रोध, राग, द्वेष से रहित होकर मनन-चिन्तन करने से।

इस प्रकार का है यह वेद का जगत्-आश्चर्यजनक भी है, सूक्ष्म और गम्भीर भी है। सर्वजनहिताय है, सर्वभूत मैत्रीप्रतिपादनीय है। विश्व के समस्त अमृतपुत्रो-अमर मानवो के लिए है। समस्त पृथिवी इसका क्षेत्र है। वेदान्तदर्शन के शब्दो में जगत् और ब्रह्मा के बीच समन्वय-स्थापक है, जो कुछ जगत् के है, उसका वर्णन वेद मे है। प्राचीन काल से लेकर आज तक वेद को समझने का प्रयास होता रहा है। पाश्चात्य एव पौरसत्य विद्वान् (Indologists or Sanskritists of the East and the West वेद को समझने का यत्न करते रहे हैं, परन्तु वेद अब भी रहस्य बने हुए हैं।

इन्हीं वेदों के लिए यतिवर दयानन्द ने अपना जीवन लगाया तथा उनके द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज ने विगत १२० वर्षों मे इसके प्रचार और प्रसार का यत्न किया। एक वाक्य में आर्यसमाज के पिछले सौ वर्षों की कहानी वेदो के प्रचार की कहानी है। इसमें उसे कितनी सफलता मिली, यह निर्णय करना सुविज्ञ पाठकों पर है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के पुनर्जागरण (Revival) में अनेक महान् आत्माओ ने अपना योगदान दिया परन्तु इसके मूल उत्स-प्रेरणास्रोत वेद की ओर हमारा ध्यान किसने खीचा, इसका निर्णय स्वय पाठक करें। दयानन्द इसलिए महान् नही कि वे आर्यसमाज के सस्थापक थे, अपितु इसलिए कि उन्होने वेद का उद्धार किया, वैदिक सस्कृति का पुनरुत्थान किया। जैसे कभी मण्डनमिश्र के द्वार पर शुकसारिकाओं मे वेद के स्वत प्रमाण अथवा परत प्रमाण होने के बारे मे चर्चा होती थी, वैसे ही विगत ११८ वर्षों में आर्य समाज के मन्च से विभिन्न रूपो में वेदो की चर्चा रही है और आज इसी का परिणाम है कि 'आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया' मे विन्सैण्ट स्मिथ ने आर्यसमाज के वेद-विषयक मत का उचित उल्लेख किया है, अन्य किसी सस्था या सम्प्रदाय को यह श्रेय नही मिला। महर्षि दयानन्द ने वेद मे ही मानव की सब समस्याओ का समाधान ढूढा तथा वेद मे ही सब ज्ञान-विज्ञान को बताया, बर्तानिया ज्ञान का विश्वकोष इस बात को स्वीकार करता है—

वेद के बारे मे दयानन्द और उनके आर्यसमाज ने एक शताब्दी पूर्व जो स्थापनाए रखी थी, वे आज विद्वद्जगत् को मान्य हो चली हैं। इतिहासकार, वेदविद् तथा सस्कृतज्ञ उनके मत को उचित स्थान देने लगे हैं। प्रश्न केवल निष्पक्ष होकर विचार करने का है। आर्यसमाज मानो रथ है और दयादनन्द उस रथके सारथि है और वेद मानो उनका सुदर्शन चक्र था,जिसके द्वारा उन्होने अज्ञान अविद्या तथा अवैदिक विचारो की कौरव सेना का विध्वंस किया। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासो में दयानन्द ने सनातन वैदिक संस्कृति के सिद्धान्तो का विशद् विवेचन सम्मुख प्रस्तुत किया है।

वेद आर्य अथवा भारतीय सस्कृति के उद्गम-स्रोत् हैं। भारतीय विद्या-भवन बम्बई से प्रकाशित History and Culture of Indian people प्रथम खण्ड की भूमिका मे डा० मजुमदार इसको स्वीकार करते हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियो ने तप एव समाधि के द्वारा वेदमन्त्रो का साक्षात् किया, दयानन्द की यह अगली स्थापना थी। डा० राधाकृष्णन जैसे दार्शनिक इस मत को स्वीकार करने लगे हैं। उनका कहना है कि वेद मे वर्णित आध्यात्मिक सत्यो का धर्म एवं तपश्चर्या द्वारा पुन साक्षात् या प्रत्यक्ष किया जा सकता है,

आर्य लोग बाहर से नही आए, दयानन्द की इस मान्यता को कई विद्वान् स्वीकार करने लगे हैं। डा० के० एम० मुन्शी इस मत को मानते हैं तथा स्वतन्त्र लेख को भी इस विषय मे History and Culture of Indian people मे स्थान दिया गया है।

वेद के विषय मे दयानन्द की स्थापनाओं के सन्दर्भ मे मैं अपनी ओर से अधिक कुछ न कहकर हिन्दी विश्वकोष को उदधृत करूंगा, जिसे नागरी-प्रचारणी सभा वाराणसी ने प्रकाशित किया है, इसका समस्त व्यय भारत-सरकार ने वहन किया है। यह भी एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका की तरह हिन्दी मे ज्ञान का विश्वकोष (Encyclopaedia Hindi) है। इस विश्वकोष के खण्ड ११ मे वेद के विषय मे दामोदर सातवलेकर को प्रमाणित मानकर अक्षरश:, उद्धृत किया गया है। इससे बढ़कर दयानन्द की स्थापनाओ की दिग्विजय और क्या हो सकती है? आर्यसमाज के लिए यह गौरव का विषय है कि अन्तत: सुधी विद्वानो ने निष्पक्षभाव से उसकी मान्यताओ का आदर किया है। सातवलेकर के बारे मे पाठको को विदित रहे कि उन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पद्धति का अनुसरण किया है। दयानन्द से पहले आधुनिक समय मे किसी ने वेद की ओर हमारा ध्यान नहीं खींचा। सातवलेकर के शब्दो में जो राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ सन्देश देता है, वही कहलाता है। स्वामी दयानन्द सचमुच ऋषि थे, क्योकि उन्होने हिन्दुओं के पतन का सच्चा कारण देखा और उन्नति का सच्चा मार्ग भी देखा। यह सत्य दृष्टि ही ऋषि की दृष्टि है। उनके समय मे बहुत से नेता थे, वे नेता-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शकल वैभवों का अधिपति

(पृष्ट ५ का शेष)

विषयोन्मुख इन्द्रिय रूपी अश्वों पर उत्तम सारथि के तुल्य नियन्त्रण करती हो शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक दोष क्षीण हो चुके हो तथा जो अपने पूज्य गुरु की सेवा सुश्रूषा में रत रहकर सर्वदा आज्ञाकारी हो वही सुपात्र उपदेश श्रवण का अधिकारी है कुपात्र को दिया गया उपदेश ऊसर भूमि में बोये हुए बीजों के समान सर्वथा निष्फल होता है।

अत: प्रस्तुत वेद मन्त्र में शिक्षक शिष्य दोनो के लिए ही 'देवेन मनसा सह' इन सारगर्भित पदों का अन्वय अपेक्षित है।

सत्संग की निरन्तरता

पुनरेहि वाचस्पति यह सरस पद अतृप्त जिज्ञासु हृदय की सरलता गुरु निष्ठा एवं भाव विह्वलता को प्रकट कर रहा है। वस्तुत: माननीय गुरु की गरिमामयी वाणी सुनकर भक्त को तृप्ति नहीं होती। अत: वह विनीत भाव से प्रार्थना करता है "वाचस्ते ! पुनरेहि" द्वितीय भावना यह भी है कि 'बार-बार श्रवण करने से ही किसी ज्ञान की हृदय दृढ स्थिति होती है। गुरुजनों को पुन: पुन: विषय का अभ्यास कराना चाहिए। यह सरल शिष्य की स्वाभाविक मांग है। ज्ञानवान आचार्य के सत्संग से ही वेदामृत का पान कर मानस ग्रन्थियां शिथिल होती हैं किन्तु यह एक दिन का कार्य नहीं जीवन निर्माण के लिए सर्वदा गुरुसान्निध्य आवश्यक है।

वसोष्पते निरमयं—संयमी वाचस्पति ही वसोष्पति अर्थात सकल वैभवों का अधिपति होता है। वह अपने वात्सल्य से प्रिय जिज्ञासु शिष्य को सकल लौकिक ऐश्वर्यों में रमण करा सकता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में जिस कामधेनु का आलंकारिक वर्णन है। फिर उसका स्वामी वसोष्पति क्यों न होगा।

वेद का सन्देश

वर्तमान प्रचलित अनर्थकारी शिक्षण पद्धति के विरोध में इस वेद मन्त्र का महान संदेश विश्व के शिक्षा शास्त्रियों के समक्ष कड़ी चुनौती है। यह केवल विचारणीय ही नहीं, अपितु निर्विवाद रूप से अनुकरणीय है। तभी निर्दोष व्यवस्था पर मनन करने वाले तपोनिष्ठ आचार्यगण नम्र सुशील ब्रह्मचारियों को पवित्र वैदिक ज्ञान से अलंकृत कर सकेंगे। हमारे विद्यापीठ जब ऐसे गुरु शिष्यों के आवास केन्द्र बनेंगे तभी महाराज मनु की दिव्यवाणी धराधाम पर गूंज उठेगी—

> एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: ।
> स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा: ॥

सावित्री सदन, १०, केसाबाग, बरेली-२४३००१

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर नागल राया के तत्वावधान में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन १ अगस्त से ६ अगस्त तक किया जा रहा है इस अवसर पर विशेष यज्ञ के अतिरिक्त आचार्य नरेन्द्रपाल शास्त्री तथा श्री नरदेव आर्य के उपदेश तथा भजन होंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

शोक समाचार

आर्य समाज रानी की सराय के कर्मठ उत्साही एव लगनशील श्री कृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज रानी की सराय दिनांक १०-७-९५ दिन सोमवार को उपचारार्थ वाराणसी ले जाते समय चन्दवक के पास उनका निधन हो गया। वाराणसी में दशाश्वमेध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से उनका दाह संस्कार किया गया एवं दिनांक १२-७-९५ को दिन मंगलवार सायंकाल आर्य समाज मन्दिर पर दिवंगत आत्मा की शांति एवं दु:खी परिजनों को इस दु:ख को सहने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—सरसचन्द्रार्य

सम्पादकीय—

श्वेत पत्र की सच्चाई क्या है ?

इस लेख के माध्यम से मैं एक ऐसे श्वेत पत्र के सम्बन्ध मे पाठको के समक्ष कुछ निवेदन करना चाहता हू जिसे एक सन्यासी दिखने वाले युवक ने लिखा है। श्वेत पत्र को अंग्रेजी मे व्हाइट पेपर कहा जाता है। श्वेतपत्र सरकार द्वारा किसी विशेष सन्दर्भ मे राजकीय जानकारी जनता को उपलब्ध कराए जाने के लिए जारी किए जाते हैं। इस प्रकाशित पत्र मे किसी भी मुद्रक प्रेस का नाम नहीं छापा गया जो कि प्रकाशन के नियमो और कानूनो का भी उल्लघन है।

इस कथित श्वेत पत्र की शुरुआत महर्षि दयानन्द सरस्वती की पवित्र आत्मा के उस कथन से होती है जिसमें कहा गया है कि "जहा तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सदा किया करें।"

यह वास्तव में एक उच्च आदर्श है। परन्तु इस कथित श्वेत पत्र की शुरुआत ही एक गैर कानूनी और अपराधिक कार्य से होती है। मुद्रक का नाम प्रकाशित न करना वास्तव मे एक अपराधिक कार्य है। इसके अतिरिक्त इस सारे श्वेत पत्र में लेखक ने इतनी अधिक गलत और झूठी बातें लिख दी हैं कि वह कथित संन्यासी स्वय को ही सबसे बडा झूठा व्यक्ति साबित करता है।

प्रारम्भमें इस कथित श्वेतपत्र को प्रस्तुत करने का कारण देते हुए लेखक का कहना है कि गत २० वर्ष से स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और उनके इर्द गिर्द जो लोग थे, उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पर मजबूत कब्जा बनाए रखा। परन्तु इन इर्द गिर्द लोगों के नाम इस कथित श्वेत पत्र के लेखक ने नहीं दिए हैं।

हमारा प्रश्न है कि क्या कोई इस बात से इन्कार कर सकता है कि इन २० वर्षो में स्वामी आनन्दबोध जी के साथ श्री शेरसिंह, ओमानन्द जी तथा श्री देवरत्न बम्बई वाले आदि नहीं रहे।

कथित श्वेत पत्र को प्रकाशित करने का उपरोक्त कारण है। उक्त लेखक का यह भी आरोप है कि सार्वदेशिक सभा मे जिन लोगो ने कभी भी परिवर्तन लाने का प्रयास किया उन्हें निष्कासित कर दिया गया। क्या लेखक किसी ऐसे एक भी व्यक्ति का नाम बता सकता है जिसे भ्रष्टाचार या सिद्धान्तहीनता के अतिरिक्त किसी अन्य आरोप से निष्कासित किया गया। जबकि वास्तव मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्वयं कथित श्वेत पत्र के लेखक ने पिछले कुछ समय से वही कुकृत्य किए हैं जिनका झूठा आरोप उसने स्वर्गीय आनन्द बोध जी पर लगाया है।

राजस्थान में समानान्तर रूप से चल रही आर्य प्रतिनिधि सभा के बारे मे यह लेखक कुछ बता सकता है क्या ? और इसमे उसका क्या सहयोग रहा है ? स्वयं राजस्थान में इस कथित संन्यासी ने षडयन्त्र करके कई पुराने आर्य समाजियो को आर्य समाज से निष्कासित कर दिया था। जिन्हें मजबूरी में समानान्तर आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन करना पडा था। क्या यह युवक इस बात से इन्कार कर सकता है।

इस युवक को यह भी बुरा लगता है कि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अपने जीवन के आखिरी क्षण तक प्रधान पद पर बने रहे। उनकी मृत्यु के बाद उनके भक्तो ने उनकी अन्त्येष्टि से पूर्व ही उनकी गद्दी पर कब्जा कर लिया तथा श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को प्रधान घोषित कर दिया।

यह कथन इस युवक की सार्वदेशिक सभा की नियमावली के प्रति अज्ञानता को स्पष्ट प्रदर्शित करता है। नियमावली के अनुसार जब भी प्रधान पद पर कार्य रत व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो वरिष्ठ उप प्रधान ही प्रधान पद पर कार्य करता है।

मेरी इस युवक से प्रार्थना है कि वह एक दृष्टि सार्वदेशिक सभा के इतिहास पर डाले तथा यह मालूम करे कि कौन-कौन महापुरुष इस सभा के कितने कितने दशक प्रधान बने रहे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी भी इस परम्परा तथा मर्यादा पूर्ण इतिहास के ही अंग रहे हैं। अपवाद नही।

यदि स्वामी जी पर प्रधान पद पर बने रहने के कारण सत्ता के भूखे होने का आरोप लगाया है तो लेखक के नेता शेरसिंह के बारे में क्या कहा जाना चाहिए जो एक तरफ तो सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान पद पर बने रहने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा तथा दूसरी तरफ सरकारी सत्ता की गलियो में भी पदो का लालची बनकर धूल चाटता रहा है। सारी दुनिया जानती है कि शेरसिंह राजनीति का एक ऐसा प्यादा है जो कभी कांग्रेस, कभी जनता दल और यहां तक कि भाजपा मे भी जाने को तैयार हो सकता है।

ओमानन्द भी इसी गुट का एक नेता है जिसे मैं किसी भी सूरत मे संन्यासी मानने को तैयार नही। यह व्यक्ति ब्रह्मचारी नही है जैसा कि अपने आप को कहा करता है। नरेला की महिलाओं एव छात्राओ द्वारा इस कथित सन्यासी के चरित्र के विरुद्ध किया गया आन्दोलन ही ओमानन्द के जीवन पर काला धब्बा है तथा यह युवक भी उसी का चेला है।

कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात को समझ सकता है कि पदो की लालसा में एक ऐसा युवक जो गिने चुने वर्षों से सामाजिक क्षेत्र मे है इन महान व्यक्तियो पर आरोप लगाता है जिनका पूरा इतिहास देश सेवा और तपस्या से भरा पड़ा है। ऐसा युवक आरोप लगाने के लिए कोई भी निराधार कारण ढूंढ सकता है।

इसके बाद कथित श्वेत पत्र में इस युवक ने लिखा है सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के झगडों का निपटारा सर्वप्रथम किया जाना चाहिए। साथ ही यह कहता है कि जो लोग स्वय विवादो के सहारे सार्वदेशिक सभा में बने हुए हो वह कैसे विवादो का निपटारा करें। यह एक शैतान द्वारा धार्मिक उपदेश करने के समान हैं।

इस युवक का कहना है कि गत साधारण अधिवेशन की तिथियो और स्थान (हैदराबाद) के कारण उसके साथियो को न्यायालय की शरण मे जाना पडा।

उत्तर प्रदेश सभा का हवाला देते हुए इस कथित श्वेत पत्र में हिटलर के साथी गोवल को भी मात कर दिया है जिसका सिद्धान्त था कि झूठ को भी बार बार सच कहकर प्रचारित करने से वह सच में बदल जाता है। यह युवक कहता है कि उत्तर प्रदेश में कैलाशनाथ सिंह वाली सभा वास्तविक है, हमारा प्रश्न है कि यदि कैलाश नाथ सिंह को उत्तर प्रदेश मे स्वीकार किया जाता है तो क्या यह युवक उसी की बनाई सार्वदेशिक सभा को भी जानता है जिसका प्रधान एक दूसरा देशद्रोही सन्यासी वेशधारी अग्निवेश है या वह सभा जिसके हैदराबाद चुनाव मे इन्होने भाग लिया ?

इस बात का स्पष्ट उत्तर आर्य जनता को दिया जाना चाहिए।

उल्लेखनीय है कि अग्निवेश और कैलाशनाथ द्वारा दिल्ली के एक होटल मे बैठकर घोषित की गई सार्वदेशिक सभा को तो अदालत ने भी सार्वदेशिक सभा के नाम पर कार्य करने से रोक लगा रखी है। अतः उनका तो कोई कानूनी अस्तित्व ही नहीं रह जाता।

यह युवक तथा इसके कथित नेता अब दिल्ली की गलियो में घूमते हुए सार्वदेशिक सभा के विधिवत निर्वाचित पदाधिकारियो पर कीचड़ उछालते फिर रहे हैं। पाठक स्वयं इस बात का निर्णय ले सकते हैं कि कौन सार्वदेशिक सभा का विधिवत निर्वाचित पदाधिकारी है तथा कौन सा गुट अपने निहित स्वार्थों के कारण मात्र २०-२२ प्रतिनिधियो के बल पर उछल कूद मचा रहा है।

इसी प्रकार आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बन्ध में भी इस अज्ञान युवक की वही तोता रटन्त है कि विट्ठलराव आदि वहां के विधिवत पदाधिकारी है, पाठक इस बात को इन्कार नही कर सकते कि विट्ठल राव

(शेष पृष्ठ ४ पर)

मारिशस में हिन्दी के लिए कानून बना

मारिशस में हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए वहां की नेशनल असेम्बली ने एक कानून पास किया है जिसका उद्देश्य मारिशस में और उसके बाहर हिन्दी के पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन को प्रोत्साहन देना है।

मारिशस की पांच दिवसीय यात्रा से लौटने पर लोकसभा में विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली यह जानकारी दी।

यात्रा के दौरान मारिशस सरकार द्वारा संस्थापित हिन्दीभाषी यूनियन संगठन के उद्घाटन समारोह में भी श्री वाजपेयी ने भाग लिया। यह संगठन, मारिशस की नेशनल असेम्बली ने एक कानून बनाकर कायम किया है। इसका उद्देश्य मारिशस में और उसके बाहर हिन्दी के पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन को प्रोत्साहन देना है। संगठन अन्य देशों के हिन्दीप्रेमी व्यक्तियों तथा संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहेगा और पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को भी प्रोत्साहन देगा।

श्री वाजपेयी ने बताया कि भारत के अलावा मारिशस पहला देश है जहां संसद द्वारा कानून बनाकर हिन्दी को बढ़ावा देने का दायित्व सरकार ने सम्भाला है भारत सरकार हिन्दी संगठन के लिए पहले ही १० लाख रुपये की सहायता की घोषणा कर चुकी है।

(दैनिक हिन्दी मिलाप, हैदराबाद के १४ जून १९९५ के अंक से साभार)

—जगन्नाथ

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज डाक पत्थर (देहरादून) के भूतपूर्व प्रधान श्री विजेन्द्र सिंह सोलंकी का दिनांक ९-७-९५ को प्रातः ६ बजे पल्लवपुरम (मेरठ) में देहान्त हो गया है। इस दुःखद समाचार से समाज के सभी सदस्यों को बहुत ही दुःख हुआ। आप आर्य समाज मन्दिर डाक पत्थर के संस्थापक, कर्मठ एवं सद्गुण सम्पन्न सामाजिक कार्यकर्ता एवं डिप्लोमा इन्जीनियर संघ उ० प्र० के प्रधान थे। आपके गुणों के कारण ही एक शक्तिशाली संगठन ने आपको प्रदेश की बागडोर दी होगी। आर्य समाज मन्दिर डाकपत्थर की स्थापना से लेकर वर्तमान भव्य भवन बनवाने तथा समाज के लिए आजीवन आर्थिक सम्पन्नता का स्रोत पैदा करने में आपका ही मुख्य योगदान रहा।

इस महान आत्मा को श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि शोक संतप्त परिवार को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मन्त्री

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (विशारद शास्त्री) में प्रवेश

दशम (प्राज्ञ, पूर्वमध्यमा) संस्कृत सहित उत्तीर्ण, गुरुकुल कुरुक्षेत्र में, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की विशारद तथा शास्त्री कक्षाओं में प्रवेश ३१ जुलाई तक होगा। पूर्ण आवासीय प्रकृति का सुरम्य वातावरण, सुयोग्य, अनुभवी प्राध्यापकों के सान्निध्य में उत्तम शिक्षा प्रबन्ध। इच्छुक प्रवेशार्थी कार्यालय से सम्पर्क करें।

—आचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की प्रथम पुण्य निधि पर उनके शिष्य डा० सोमदेव शास्त्री ने अपने गुरु को श्रद्धांजलि देते हुए घोषणा की कि प्रतिवर्ष आर्यसमाज सान्ताक्रुज के माध्यम से पूजनीय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की स्मृति में उनके जन्म दिन २२ सितम्बर को ऐसे विद्वान को ११०००) की राशि से सम्मानित किया जाय जो आर्ष पाठ विधि से गुरुकुल में विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत १० वर्षों से किसी निजी या सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सर्विस न करके आर्ष पाठविधि के अध्यापन के लिये गुरुकुल में या स्वतन्त्र रूप से संलग्न है। पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक के समान वैदिक धर्म के प्रति वित्तैषणा और लोकेषणा से दूर रहकर पूरी निष्ठा और आस्था से कार्यरत विद्वानों को सम्मानित किया जाये।

इस पुरस्कार का नाम "पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार" होगा। डा० सोमदेव शास्त्री ने घोषणा की वे इस पुरस्कार के लिये अपनी पवित्र आय से आर्य समाज सान्ताक्रुज के अन्तर्गत एक लाख रुपये का एक स्थाई कोष बनायेंगे ताकि उसके ब्याज से यह पुरस्कार सदा चलता रहे। जब तक स्थाई कोष के रूप में एक लाख रुपये आर्यसमाज में जमा नहीं होते तब तक इस वर्ष २२ सितम्बर से वे प्रति वर्ष ११०००) रुपये देते रहेंगे।

यह पुरस्कार प्रतिवर्ष २ अक्तूबर को आर्य समाज सान्ताक्रुज के स्थापना दिवस पर दिया जायेगा।

सम्माननीय आर्य विद्वानों, सन्यासियों, कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि आर्ष पाठ विधि के पठन-पाठन में संलग्न विद्वानों के नाम भेजने की कृपा करें।

२४ वर्षीय नरेन्द्र की कार दुर्घटना में अकाल मृत्यु

भावी आशा के प्रकाशवान नक्षत्र श्री नरेन्द्र जो स्वामी केवलानन्द सरस्वती अजमेर के पौत्र तथा श्री बी०बी० शर्मा मीरामशीन टूल्स फरीदाबाद के ज्येष्ठ पुत्र थे का २४ वर्ष की अल्पआयु में कार दुर्घटना में नागपुर के समीप स्वर्गवास हो गया। स्वर्गीय नरेन्द्र इसी वर्ष नागपुर इन्जीनियरिंग महाविद्यालय में प्रथम वर्ष में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर फरीदाबाद आये हुये थे। १२-७-९५ को अपने सहपाठियों के साथ वापस नागपुर जा रहे थे कि रास्ते में कार का नियन्त्रण बिगड़ जाने से नरेन्द्र की घटना स्थल पर ही कार के नीचे दब जाने से मृत्यु हो गयी। उनका अन्त्येष्टि संस्कार फरीदाबाद में वैदिक रीति से किया गया। २४-७-९५ को सायंकाल अजमेर स्थित प्रतीक्षा वेद सदन आदर्श नगर में आत्मशान्ति महायज्ञ तथा श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें अश्रुपूरित नेत्रों से श्री नरेन्द्र को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी।

वर की आवश्यकता

बिजनौर जनपदीय चौहान राजपूत प्रसिद्ध आर्य कुलोत्पन्न, हैल्थ केयर एण्ड ब्यूटी कल्चर व योग में डिप्लोमा, बी०ए०, बी० एड० दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत व्यावसायिक शिक्षिका, ३० वर्षीया व १६० से० मी० लम्बी स्वस्थ, सुन्दर। क्रूर व नशासेवी पति से तालक प्राप्त के लिये उपयुक्त वर जो ४० वर्ष का आयु सीमा का स्वस्थ, निरोग, आर्थिक सुदृढ़, दिल्ली में स्थापित हो, अविलम्ब चाहिए।

पत्र-व्यवहार का पता :

सम्पादक 'सार्वदेशिक' दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, दिल्ली-२

मुस्लिम युवक ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने हमीरपुर निवासी एक ३२ वर्षीय एम०ए० तक शिक्षित मुस्लिम युवक श्री अनवर जहीद को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। यह युवक जिला विकास कार्यालय हमीरपुर में लिपिक है। उसका नाम आशीषकुमार रखा गया है। श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि संस्कार के पश्चात एक समारोह में इस युवक आशीष कुमार का विवाह वैदिक रीति से कराया। आशीष कुमार ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की भूरि भूरि प्रशंसा की। उनको श्री देवीदास आर्य ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ भेंट किया :

—बाल गोविन्द आर्य, मन्त्री

१०१ कुण्डीय महायज्ञ एवं धर्म जागृति सम्मेलन

ग्राम नगला नीडर में १६ से २८ नवम्बर ९५ तक १०१ कुण्डीय राष्ट्र कल्याण यज्ञ एवं धर्म जागृति सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में देश के प्रख्यात विद्वान तथा भजनोपदेशक एवं राजनेता पधार रहे हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहयोग की अपेक्षा है। ग्राम नगला नीडर मुरादाबाद दिल्ली रोड में पाकबड़ा के निकट स्थित है।

ध्यान योग का अपूर्व आयोजन

भारत के उच्च कोटि के योगी, महात्मा, पांतजलि योग शास्त्र के विद्वान स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, पांतजल योगधाम ज्वालापुर (हरिद्वार) द्वारा योग शास्त्र पर प्रवचन एवम् उस पर आधारित ध्यान योग शिविर २०-८-९५ से २७-८-९५ तक आर्य समाज रातानाडा, जोधपुर में आयोजित किया जा रहा है।

इसके साथ आसन, व्यायाम का प्रशिक्षण सुयोग्य अनुभवी व्यायामाचार्य पं० धर्मपाल जी वेदालंकार द्वारा तथा मनोहारी संगीतज्ञों द्वारा मधुर संगीत व भजनोपदेश के कार्यक्रम भी होंगे।

सभी धर्म प्रेमी भाई-बहिनों से निवेदन है कि ध्यान योग का अभ्यास, शारीरिक नीरोगता, सुदृढ़ता के लिये उपयोगी आसन, व्यायाम का अभ्यास तथा भजन संगीत लाभ उठाने हेतु इस शिविर में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

आर्य समाजों के निर्वाचन

— आर्य समाज ग्राम गांव में श्री श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य प्रधान, श्री बसंत राय हरगुनाथ मन्त्री, श्रीमती कमलादेवी आर्या कोषाध्यक्ष चुने गये :

—आर्य समाज श्रीनाथ की तलैया जबलपुर में श्री जयसिंह गायकवाड़ प्रधान, श्री त्यम्बक कपले मन्त्री, श्री इन्द्रलाल यादव कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज सम्भल में श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा प्रधान, श्री सत्यवीर अग्रवाल मन्त्री श्री नरेशकुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज कोटला मुबारकपुर, दिल्ली में श्री हरज्ञानसिंह प्रधान, बाल किशनदास आर्य मन्त्री, श्री शिवचरनदास गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज बैल बाजार पानीपत में सेठ रामकिशन जी, प्रधान, श्री बलराज जी मन्त्री, श्री राजेश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मन्दिर संगरूर में श्री वीरेन्द्रकुमार प्रधान, श्री चन्द्रप्रकाश पोपली मन्त्री, श्री राजेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज सावजा आदि पचपुरी गढ़वाल में श्री दौलतराम निर्मल प्रधान, श्री गंगाप्रसाद कोहली मन्त्री, श्री प्रदीपकुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य युवक सभा फिरोजपुर छावनी में श्री डा० रूपेश आर्य प्रधान, श्री देवराज दत्ता मन्त्री श्री राजेन्द्र गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४१/६३ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६-८-६१) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R. N. 626/27 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O. on 3/4-8-1995

पांच आर्य वीर राष्ट्रीय एकता का प्रचार करते हुए कराकोरम के लिए रवाना

नई दिल्ली २० जुलाई। मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना ने आज तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम से कराकोरम दर्रा के लिए स्कूटर-मोटर साइकिल की रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रैली ५१० किलोमीटर की दूरी २७ दिनों में तय करेगी।

कराकोरम दर्रा समुद्र तल से १८ हजार फुट की ऊंचाई पर है। यहां का तापमान शून्य से भी नीचे है। इस रैली का नेतृत्व अवध कुमार बसरा कर रहे हैं। श्री बसरा सीताराम भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक हैं। रैली में विभिन्न राज्यों के नौ सदस्य हैं।

इनमें पांच सदस्य दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल के कर्मठ कार्यकर्ता हैं जिनमें मन्त्री श्री विनय विमल, विजेन्द्र आर्य आदि हैं। ये सभी सदस्य अपनी-अपनी मोटर साईकलों पर रवाना हुए हैं।

इस रैली को मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने झण्डी दिखाई आर्य वीर दल के श्री जयप्रकाश द्वारा दिया गया ओ३म्ध्वज श्री मदनलाल खुराना ने दल के नेता को भेंट किया। दल में भाजपा के एक मुस्लिम नेता भी शामिल हैं।

दुपहिया रैली को हरी झण्डी दिखाने के पूर्व श्री खुराना ने रैली के सदस्यों को पांच हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि दी। इस अवसर पर विधायक कीर्ति आजाद ने कहा कि जब से श्री खुराना यहां के मुख्यमन्त्री हुए हैं तब से यहां के खेलों को बढ़ावा मिला है। रेपिड एक्शन इण्डिया द्वारा आयोजित इस रैली के प्रायोजक बजाज आटो व रैंगलुर हेलमेट्स है।

बम्बई में वृष्टि महायज्ञ सम्पन्न

इस वर्ष बम्बई में मानसून के आने में विलम्ब होने के कारण आर्य सिन्धु संस्कृत गुरुकुल संस्थान, (रजि० ट्रस्ट) बम्बई के प्रबन्धक न्यासी यज्ञप्रेमी श्री अशोक वे किशोराणी की सत्प्रेरणा से बम्बई की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से हिन्दुजा हाल ११वां रास्ता खार बम्बई के विशाल प्रांगण में दिनांक ३-७-९५ से ९-७-९५ तक संस्थान के तत्वावधान में सफल वृष्टि महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा डा० प्रकाशचन्द्र किशोराणी विद्यावाचस्पति, तथा वेदपाठी प० नरेन्द्र किशोराणी वेदालकार, प० अंशुमान द्विवेदी, प० अनिल शास्त्री, पंडिता कान्ति विद्यालकार एवं प० अर्जुनप्रसाद थे। दिनांक ७-७-९५ को यज्ञ के मध्य तथा दिनांक ९-७-९५ को सायं पूर्णाहुति के समय बहुत अच्छी वर्षा हुई, जिससे स्थानीय लोगों में यज्ञ के प्रति आस्था एवं श्रद्धा का संचार हुआ।

चतुस्त्रिंशत्तमः जन्म दिवस महोत्सव

सभी आर्य सज्जनों को कन्या महाविद्यालय लोवा कलां के ३४वें जन्मदिवस महोत्सव पर सादर आमन्त्रित किया जाता है। उत्सव १० अगस्त बृहस्पतिवार सन् १९९५ ई० श्रावणी पर्व के दिन बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। उत्सव में बड़े-बड़े विद्वान, संन्यासी भजनोपदेशक पधारेंगे। सभी सज्जन विद्वानों के सदुपदेशों से लाभ उठावें।

वेद प्रचार का आयोजन

मुजफ्फरपुर आर्य समाज का वेद कथा कार्यक्रम दिनांक १०-८-९५ (रक्षाबन्धन) से १९-८-९५ तक मनाया जायेगा। इसमें राष्ट्र रक्षा युवा सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। इसमें डा० दयाशंकर शास्त्री, डा० श्यामनन्दन शास्त्री भागलपुर). श्री भानुप्रकाश आर्य (बरेली) श्रीमती विजयावती आर्या (मुंगेर) के अतिरिक्त अन्य विद्वान एवं भजनीक भी पधार रहे हैं।

भाषा आन्दो...

भारत वर्ष से अंग्रेजी के वर्चस्व को ता...
भारतीय भाषाओं को शिक्षा परीक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में ... समान शिक्षा, समान स्कूल की मांग को लेकर "अखिल भारतीय ...षा संरक्षण संगठन" (पंजी) के बैनर तले बहुत सारे छात्र, वकील, डाक्टर एवं अन्य उच्च शिक्षित युवक अपना घर आदि सर्वस्व त्याग कर पिछले दस वर्षों से आन्दोलनरत हैं। देश हित से जुड़े इस सवाल को राष्ट्रीय स्तर पर फैलाने एवं जन आन्दोलन खड़ा करने के लिए संगठन को प्रचुर मात्रा में साधनों की आवश्यकता है। सभी देशवासियों से हम अपील करते हैं कि व्यवस्था परिवर्तन के इस दूसरे संग्राम में हमारे भागीदार बनें। यह भागीदारी आन्दोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित होकर, यथाशक्ति, खाद्य एवं अन्य जीवनोपयोगी अनिवार्य सामग्री के रूप में की जा सकती है।

राजकरण सिंह
महासचिव

आहार और अनीमिया

आयरन (लोहा) विटामिन बी-१२

फोलेट, ऐसकारबिक ऐसिड (विटामिन सी) और प्रोटीन आहार का वह भाग हैं जो खून के लाल कोशाणु के बनते रहने के लिए आवश्यक है। एक भी चीज की कमी के कारण लाल कोशाणु के बनने में रुकावट आ जाती है। इन सब में से अधिकतर कमी आयरन की ही पाई जाती है।

आयरन की कमी से हीमोग्लोबिन नहीं बन पाता है जो कि लाल कोशाणु के अन्दर रहता है और आक्सीजन को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाता है। उसकी वजह से मनुष्य सफेद पड़ जाता है व कमजोर हो जाता है और जल्दी थकान महसूस करने लगता है इसकी कुछ वजह हो सकती है।

(१) हम आहार में आयरन कम मात्रा में ले रहे हैं।

(२) हमारे शरीर में किन्हीं कारणों से आयरन की जरूरत बढ़ गई है जैसे—

चोट की वजह से रक्त प्रवाह। मेदे में फोड़ा फट जाना। बवासीर। नाक से खून आना। दांत में लगातार खून आना। औरतों को माहवारी में ज्यादा रक्त बहना।

(३) किसी पेट की बीमारी की वजह से आयरन खून में न जाके वैसे ही निकल जाना। यह कमी ज्यादातर महिलाओं में देखी जाती है या फिर बच्चों के बढ़ने की उमर में। यह भी देखने में आया है कि जिन शिशुओं को बहुत देर तक सिर्फ दूध का आहार दिया जाता है, वे भी इस बिमारी से पीड़ित होते हैं।

क्योंकि दूध में आयरन बहुत कम मात्रा में पाया जाता है। मानसिक और शारीरिक स्वस्थता के लिये संतुलित आहार का बहुत महत्व होता है।

प्रतिदिन आयरन से भरपूर आहार लेने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष · ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक २६) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १६७२६४६०६६ भाद्रपद कृ० ३ सं० २०५२ १३ अगस्त १९९५

स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन समारोह

श्री मदनलाल खुराना मुख्यमन्त्री दिल्ली के करकमलों द्वारा

१४ अगस्त को प्रातः दस बजे

उद्घाटन स्थल—प्रीत विहार निकट कड़कड़डूमा चौक

अध्यक्ष : **पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम्** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

मुख्य अतिथि : डा० हर्षवर्धन जी स्वास्थ्य मन्त्री
सांसद श्री बैकुण्ठलाल शर्मा "प्रेम"
श्री धर्मवीर गाबा विधायक
श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रयास से १४ अगस्त १९९५ को प्रातः १० बजे प्रीत विहार निकट कड़कड़ डूमा चौक में "स्वामी दयानन्द मार्ग" का उद्घाटन दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना के द्वारा सम्पन्न होगा।

उक्त समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता में तथा सार्वदेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष बाबू सोमनाथ मरवाह के सान्निध्य में सम्पन्न होगा।

दिल्ली सरकार इस पवित्र कार्य को विधिवत सम्पन्न कराने में विशेष रुचि ले रही है। वह सभी बधाई के पात्र हैं।

दिल्ली की आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक संख्या में व्यक्तियों को लेकर प्रातः ९॥ बजे प्रीत विहार कड़कड़ डूमा चौक पहुंचे। समारोह एक घण्टे तक चलेगा।

स्वामी दयानन्द मार्ग जी० टी० रोड, श्यामलाल कालिज के पास से प्रारम्भ होकर गाजीपुर गांव तक रहेगा।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सुमेधानन्द के भ्रामक प्रचार से सावधान

सुमेधानन्द एवं केशवदेव बर्मा आर्य समाज से निष्कासित

स्वामी सुमेधानन्द नाम का एक आदमी अपने को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मन्त्री बताकर आर्यसमाजो को भ्रमित करने का प्रयास कर रहा है। हमे ज्ञात हुआ है कि यह व्यक्ति राजस्थान में फेफाना नामक छोटे से गाव के अस्तित्वहीन आर्यसमाज का सदस्य है। इस आदमी ने सार्वदेशिक सभा के हैदराबाद मे २७, २८ मई ९५ को सम्पन्न चुनाव के सम्बन्ध मे एक श्वेत पत्र भी प्रकाशित किया है, जिसमे आर्यसमाजो को गुमराह करने एव भ्रमित करने की अनेक मनगढन्त एव असत्य बातें लिखी है जो सारा झूठ का पुलन्दा है।

हैदराबाद मे सम्पन्न चुनाव के बारे में वास्तविक स्थिति यह है कि समस्त प्रान्तो से १८८ प्रतिनिधि साधारण सभा मे उपस्थित हुए थे साधारण सभा मे सुमेधानन्द एव इसके मुट्ठी भर साथियो ने चुनाव मे व्यवधान डालने का प्रयास किया और अधिवेशन हाल से बाहर निकल गये। इसके बाद हमे ज्ञात हुआ कि सुमेधानन्द ने एक कपाल कल्पित अन्तरंग सभा का गठन कर लिया है और स्वामी विद्यानन्द को प्रधान तथा स्वय को मन्त्री बताता है। जबकि विद्यानन्द के सम्बन्ध मे न्यायालय ने आदेश दिया था कि वह केवल हैदराबाद मे चुनाव मे शामिल होकर बोट ही दे सकते है। जबकि वास्तविकता यह है कि विद्यानन्द अपने घर मे परिवार के साथ रहता है जब कि सन्यासी होने के बाद कोई व्यक्ति घर मे नही रहता है और गृहस्थ जीवन से अलग हो जाता है। विद्यानन्द वर्षो से किसी आर्यसमाज का सदस्य नही रहा तथा १९९४ मे ब्यावर आर्यसमाज का सदस्य बना। आर्यसमाज के नियमानुसार कोई व्यक्ति दो वर्ष तक नियमित आर्यसमाज का सदस्य रहने पर आर्यसमाज का अधिकारी बन सकता है और तीन वर्ष तक नियमित सदस्य रहने के बाद ही सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि बन सकता है।

तथ्य यह है कि सुमेधानन्द ने कुछ अवाछनीय व्यक्तियो की सहायता से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय पर कब्जा करने का कुत्सित एव विफल प्रयास किया। सुमेधानन्द, केशवदेव बर्मा और उनके साथ जो अवाछनीय व्यक्ति आये थे उन्हें धक्के देकर कार्यालय मे बाहर निकाल दिया गया। यह लोग आते समय कार्यालय से कुछ नगदी तथा महत्वपूर्ण दस्तावेज उठाकर ले गये।

सुमेधानन्द आदि ने न्यायालय से निषेधाज्ञा जारी कराने का प्रयास किया परन्तु यह सफल नही हुए, इसके विपरीत न्यायालय ने एक आदेश जारी कर स्वामी विद्यानन्द सुमेधानन्द एव उनके साथियो को सार्वदेशिक सभा का प्रधान और मन्त्री के रूप मे कार्य करने तथा प्रचारित करने पर प्रतिबन्धित कर दिया जिसके उल्लघन करने पर इनके खिलाफ न्यायालय मे अवमानना का मुकदमा दायर किया जा रहा है।

रजिस्ट्रार सोसाइटी दिल्ली ने एक आदेश जारी कर निर्देश दिया कि चुनाव विवाद को दृष्टिगत रखते हुए पूर्व अन्तरग सभा ही कार्य करे। इस आदेश के विरुद्ध भी दिल्ली उच्चन्यायालय ने निषेधाज्ञा जारी कर दी है, क्योकि रजिस्ट्रार सोसाइटी दिल्ली को कोई ऐसा आदेश जारी करने का अधिकार नही है। इस प्रकार हैदराबाद मे निर्वाचित अन्तरग सभा ही वैध अन्तरग सभा है, जिसके प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, उपप्रधान श्री छोटूसिंह तथा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री है।

सार्वदेशिक सभा के इतिहास मे ऐसा बर्बरतापूर्ण कार्य पहली बार हुआ है। राजस्थान से हमे अनेक आर्यसमाजो के पदाधिकारियो से इन लोगो के बारे में गम्भीर शिकायतें मिल रही है, इन लोगो पर लाखो रुपयो के दुरुपयोग एव बोगस सदस्य बनाकर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा पर कब्जा करने के आरोप हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के भवन मे अतिथि कक्ष बनाने के लिए अनेक आर्यसमाजो से लाखो रुपये एकत्र किए और भवन निर्माण के स्थान पर खाने-पीने, यात्रा व्यय एव मुकदमें बाजी में उन रुपयो का दुरुपयोग किया गया।

अतः समस्त आर्यसमाजो को सुमेधानन्द, केशवदेव बर्मा, एवं इनके साथियो से सतर्क रहने की आवश्यकता है। समस्त आर्यसमाजो से अपेक्षा है कि वे उक्त व्यक्तियो को किसी प्रकार का सहयोग न दें, क्योकि इन्हें संगठन विरोधी कार्यों के कारण आर्यसमाज से निष्कासित किया हुआ है। स्वामी विद्यानन्द, सुमेधानन्द तथा उनके तथाकथित साथियों का सार्वदेशिक सभा से कोई सम्बन्ध नही है।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री, मंत्री
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन मे श्री हरवश लाल शर्मा प्रधान तथा श्री अश्वनी कुमार एडवो० के मन्त्री चुने जाने पर भव्य स्वागत। साथ मे पर्यवेक्षक के रूप मे पधारे सार्व० सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री।

वेदों का जयध्वज लहराएं

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

वेद ज्ञान का स्रोत बहे फिर,
इस धरती पर सतत निरन्तर।
मिटे अंधेरा अज्ञानो का,
बिखरे नव आलोक धरा पर।
वैदिक युग का वैभव सारा-
महिमण्डल पर सहसा आए।
वेदो का जय ध्वज लहरायें॥

चलें स्वय हम वेद पथो पर,
तथा उसी पर जगत चलाए।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
स्वप्न चलो साकार कराए
ज्ञान तथा विज्ञान वेद का–
जगतीतल को राह दिखाए।
वेदो का जयध्वज लहराए॥

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक,
ऋषियो ने है मार्ग दिखाया।
ऋषिवर दयानन्द ने उस पर,
नई प्रभा फिर से फैलाया।
उसी प्रभा से प्रभासिक्त हो–
पूर्ण मनुज, मानव बन जाए।
वेदो का जयध्वज लहराएं॥

पांचवां घुड़सवार मैं भी हूं प्रो० रतन सिंह

हरिसिंह

एक फसली नेताजी है जिन्हे कही कोई घास नही डालता, फिर भी जबर्दस्ती घुसडपच हरजगह बनते फिरते है। पाच सवारो मे वह भी जबर्दस्ती सवार बनते हैं।

शिष्टाचार कहें-या व्यावहारिकता

उत्तर प्रदेश-आ. प्र. नि० सभा मे जिले में फसली नेताजी को कोई पूछता नहीं है जबर्दस्ती पच बने फिरते है।

एक बार की बात है नेताजी न्यायसभा मे उत्तर प्रदेश की ओर से श्री महावीर सिंह जी से पच बनकर बात करने आये? उन्होने कहा आप वहा क्या है, बोले, कुछ नहीं? कोई अधिकार पत्र है, बोले कोई नही ? जज साहब ने कुछ बातें पूछीं, नेताजी बोले, मुझे मालूम नही। फिर जजसाहब ने कहा तो आप यहा कैसे आये, नेताजी ने कहा-चलो बेमतलब मे ही नेतागिरी कर लू।

उत्तर प्रदेश सभा मे इन्हे कोई नही पूछता, आप श्री सोमनाथ मरवाह जी के पास इधर से उधर दौडते रहे। पूछा तुम कैसे बात करते हो, श्री कैलाशनाथ सिंह ने अधिकार पत्र दिया है क्या? नही? फिर क्यो भागे फिर रहे हो? नेतागिरी चाहियें-वैसे तो कोई पूछता नही है-

नया बास, आर्यसमाज से कुछ मूर्ख चलें, आनन्दबोध हटाओ, आर्यसमाज बचाओ पुलिस के अफसरो ने कहा, कि स्वामी आनन्दबोध ने कौन-सी गाय मार दी है जो हटाने का नारा दे रहे हो जब पुलिस ने उन्हे भगाया, तो फर्जी नेताजी, चमड़े का बेग लिये दस कदम दूर खड़े थे कही पुलिस धक्के मारकर गिरफ्तार न कर लें। लोग समझे कि कोई पत्रकार खड़े हैं?

नेताजी की विशेषता

जिसका खाते हैं उसी को गाली देते हैं, नया बांस आ०समाज मे, विद्रोहियो की बैठक थी उसमे प्रादेशिक सभा के अधिकारियों के विरुद्ध भी कुछ बकवाद कर रहे थे। फर्जी नेताजी वहा वह गालिया सुन रहे थे। स्व० श्री दरबारीलाल जी को नेताजी के आचारण का जैसे ही पता चला इन्हें धर्मशिक्षा के विद्यार्थियो पर नियुक्त प्राचार्य के पद से निकाल दिया। नेताजी को काटो तो खून नही, २-३ हजार रुपये मुफ्त के मारते थे वह मारे गये।

श्री सोमनाथ जी मरवाह ने जब बताया तो नेताजी बौखलाये, परन्तु श्री दरबारीलाल से पूछने की हिम्मत नही दूसरे के पैसे पर पलने वाले की आत्मा मर जाती है नेताजी!

नेताजी आर्यसमाज जिला गाजियाबाद से भी निष्कासित कर दिये गये, न इधर के रहे न उधर के रहे? नेताजी मे बहुत से गुण हैं-

नेताजी पैसे के यार हैं

एक बार सोहनलाल पथिक से बोले, अरे तुम्हे हरदोई वालो ने क्या दक्षिणा दी, उसने हसी मे नेताजी से कह दिया, फर्स्ट क्लास का किराया, और पाच सौ रुपये दक्षिणा! नेताजी के आग लग गई। कुछ समय बाद मिलने पर नेताजी ने कहा, कि हरदोई वाले उपदेशको का अपमान करते हैं भजनीको को दक्षिणा अधिक देते हैं। नेताजी से कहा, कि आपको मूर्ख बनाया है ऐसा नही है समझने पर नेताजी अपनी करनी पर पछता रहे थे।

नेताजी पैसे के गुलाम हैं

जन्म-कर्म मे नेताजी का पूर्वी अफीका-नैरोबी का कार्यक्रम बन गया। सब बातें हो गई तो एक दिन फर्जी नेताजी बोले कि नैरोबी वाले दक्षिणा क्या दे देंगे। सहज स्वभाव वश कह दिया कि दो हजार तो दे ही देंगे। नेताजी अपना कम मूल्य आककर बोले-यार-इतने तो यहा ही मिल जाते है बस उन नेताजी ने नैरोबी न जाकर उनका सारा कार्यक्रम खराब कर दिया। वह प्रतीक्षा मे ही रहे, मालायें धरी रह गई।

उसके बाद नेताजी ने एक बार क्षमा मागते हुए पिछली भूल को सुधार कर पुनः नैरोबी जाने की उनसे याचना की, उन्होंने साफ मना कर दिया।

पैसे के गुलाम कार्यक्रम को खराब करने वाले को हम पनाह नहीं देगें और उन्होने नेताजी को घास नहीं डाली। अब नेताजी कही के नहीं रहें, तो सोचा, पाच घुडसवारो मे तुम भी पाचवें सवार बन जाओ। राय-मशविरे मे तो कोई बुलाता नही? न उत्तर प्रदेश मे और न दिल्ली सार्वदेशिक सभा मे। तो नेताजी की दाल कैसे गले-बस-लेख लिखो किसी के खिलाफ तो प्रसन्न हो जायेंगे-कुछ कागजी नेता। आपने "सार्वदेशिक साप्ताहिक की शालीनता पर कुछ लाइनें स्याह कर दी।"

विद्वता दिखानी थो तो दार्शनिक लेख लिखते, हा इसके अलावा साहित्य व्याकरण इतिहास-भूगोल-साइन्स-सस्कृत मे तो शून्य है। हा सत्य पर भाषण जरूर दिया जा सकता है वह भी अग्रेजी मिक्स हिन्दी मे।

जब नेताजी को किसी ने बुलाया नही, तो लेख मे क्या लिखें-केवल सुनी सुनाई बातें ही लिखेंगे। बे अकल आदमी बे सिर पैर की ही बात करेगा। हैदराबाद मे १८० व्यक्ति एक तरफ कुछ तटस्थ गिने चुने प्रतिनिधियो ने मिलकर हल्ला मचा कर अपना-अलग चुनाव कर लिया, उसे नेताजी प्रमाण मान रहे हैं। शरारती तत्वो को क्या चाहिये खेल बिगाडो, गडबड करो, वही उन लोगो ने किया। बहुमत मे जो निर्वाचन किया वह प्रत्यक्ष था उसके लिए प्रमाण की जरूरत नही? नेताजी कुछ घूम फिरकर ही लोगो से मालूम कर लेते तो सत्य का सही ज्ञान हो जाता।

रही आनन्दबोध सरस्वती की, उनका इस समय व्यापक प्रभाव था यदि वह होते, तो पुन प्रधान वही बनते, उनके सामने किसी की भी आवाज नही निकलती। आज एक बात सुनी गई कि प्रान्तो के विभाजन को समाप्त करो। क्या प्रान्तो मे पहले विभाजन नही था फिर भी निर्वाचन हुए। वोटर लिस्ट सदा दिन के दिन तक बनी, फिर भी चुनाव हुए, चुनाव रुकवाने के लिए केशवदेव वर्मा ने पहले दिल्ली मे केस दायर किया उसके बाद स्वामी विद्यानन्द जी ने केसदायर किया। चुनाव के दिन हैदराबाद मे चुनाव रुकवाने का प्रयास हुआ परन्तु चुनाव नही रुका।

जब प० प्रकाशवीर जी के समय में सार्वदेशिक सभा का विभाजन हुआ तब भी कोर्ट केस किया गया पर सफलता नही मिली थी। परिणामत. हैदराबाद मे विधि विधान को ताक मे रखकर स्वामी विद्यानन्दजी का नाम प्रो० शेरसिंह जी ने रखा जबकि अभी उपस्थिति ही ली जा रही थी। इसके बाद प्रार्थना शोक प्रस्ताव, ५ प्रतिष्ठित सदस्यों का चयन, आय-व्यय बजट वार्षिक रिपोर्ट की स्वीकृति होनी थी। इस हगामे के बाद विधिवत सारी प्रक्रिया पूरी करके ही प्रधान पद की घोषणा हुई और वह सभी प्रान्तो की स्वीकृति अनुमोदन से किया गया।

प्रोफेसर रामप्यारी नेक्तरर को यह पता कर लेना चाहिए था फिर कलम चलाते। पर नेता जो बनना था लिखास छूट रही थी जो मन मे आया लिख डाला। शिष्टाचार सामञ्जस्य मे होता है अन्धेर गर्दी मे नही।

श्री सोमनाथ मरवाह ने स्वामी विद्यानन्द जी के दायर केस के उत्तर मे लिखित जवाब दायर किया। वह उम्र के लिहाज से उस तरह की भाषा बोल सकते है। रही बात शिष्टाचार की वह तो ताखे मे सन्यास लेकर रख दिया था।

मैंने सुना है कि सभा मन्त्री ने स्वामी विद्यानन्द जी को पाच दिन पूर्व फोन पर बता दिया था कि आपके विरुद्ध नोटिस आ रहा है उसमे कुछ बातें पूछी हैं आप स्पष्ट उत्तर दे दें। पर स्वामी जी महाराज उत्तर न देकर कोर्ट मे पहु च गये।

जहा तक स्वामी सुमेधानन्द जी केएव शास्त्री जी के व्यवहार का प्रश्न है उनके आपसी सम्बन्धो के कारण सुमेधानन्द सभा कार्यालय मे आकर बराबर शास्त्री जी से मिलते रहे और आपसी बातचीत होती रही उस समय यह प्रकट रूप मे ज्ञात न था यह सर्वनाटक विद्रोह के लिये किया जा रहा है।

नेताजी! आर्यसमाजी भयंकर व्यक्ति होता है यदि श्री जी०एल० दत्ता को मासाहारी होने के कारण प्रतिनिधित्व से वर्जित किया जा सकता है तो स्वामी विद्यानन्द जी को कैसे नही निपटा जा सकता है। मैंने कई बार

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पांचवां घुड़सवार मैं भी हूं प्रो० रतनसिंह

(पृष्ठ ३ का शेष)

खुलकर कहा है कि यदि सन्यासी चरित्र हीन हैं तो उससे लाख गुना गृहस्थी अच्छा है।

आपके समकालीन यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती होते तो शायद आप उन्हें भी यही सलाह देते-कि महाराज-किन मूर्ख आर्यसमाजियों के चक्कर में पड़े हो आप घर जाइये। आप जैसा व्यक्ति ऐसे युग का ही पोषक है।

सन्यास आश्रम में जाने के माने किसी पर अहसान नही है, स्वामी जी महाराज ने हर एक को सन्यास लेने का अधिकार भी नही दिया है।

स्वामी सत्यप्रकाश जी की सेवा परिवार ने नही की थी बल्कि एक विद्यार्थी दीनानाथसिंह ने घरपर रखकर सेवा अन्तिम समय तक की। आर्थिक दृष्टि से समाज ने काफी सहायता की। सा० सभा ने दो हजार रुपए मासिक देकर की। लेकिन स्वामी विद्यानन्द जी के जीवन की दुर्बलता स्वामी सत्यप्रकाश जी ने भी थी उन्होने सारी राशि दूसरो पर लुटादी।

आपसे ही पूछता हू कि आपने लाजपतराय को क्यो मारा था उत्तर मे क्या जवाब दोगे। श्री अमर स्वामी जी ने यही कहा था तूने इसे क्यो मारा तू मेरा दामाद नही है छिपे रहस्य से आप परिचित है। किन-किन की बात क्या कहू, इन सन्यासी—अतिथि ब्रह्मचारी वानप्रस्थी उपदेशक प्रचारको की सेवा गृहस्थी जी भर के करता है प उपर लिखित व्यक्ति सोचें, कि आपका अपमान क्यो हुआ या होता है। आक्षेप प्रत्याक्षेप बहुत हो जायेंगे, आप भी आर्यसमाज के मैदान के व्यक्ति हैं सबसे परिचित है ज्यादा खुलवाने की जरूरत नही।

आर्यसमाज में रहकर आर्यसमाजियो पर तिरस्कार करने वाला लाछन लगाकर उन सेवा भावी परिवारो का घोर अपमान करना है।

बाहरे वीतराग सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज—आपको प्रातः द्वार पर सोने के कारण अपरिचित सेवक ने पैर मारकर जगाया, उसे क्या मालूम था यही व्यक्ति है जिनका आज व्याख्यान होना है पता चलने पर अधिकारी दुखी हुए पर वीतराग के मन-मस्तिष्क पर जरा भी बोझा न था अगरस्वामी विद्यानन्द जैसे होतेतो घरको राहलेते। पं०उदयवीर जी की बात करते हो, उन्हें सन्यासाश्रम से निकालने की पूरी योजनाएं बनी थी बनाने वाले कौन थे—आप सब जानते हो। मनुष्य परिस्थितियों का दास नही बनता है परिस्थितिया उस महामानव की दास बनती हैं। महात्मा आनन्द स्वामी जी की बात करते हो, उनका त्याग मय जीवन था सच्चे संन्यासी थे उनके लिए कही भी स्थान की कमी न थी अपनी इच्छानुसार लडकी के पास रहे थे यह नही कि उनके पुत्र उन्हें चाहते नहीं थे।

अन्त मे—तथाकथित प्रोफेसर, जिसे प्रोफेसर पद का भी ज्ञान नही है वह शास्त्री को शिक्षा दे रहा है, मैंने बहुत कुछ सीखा है और अब भी सीख रहा हू, लाखों की तुलना तो नही पर हा तुम्हारे जीवन के मुकाबले शास्त्री का जीवन लाख गुना उच्च है। आप तो पैसे के लिए घूमते हो और वह अर्थ के पीछे न चलकर त्याग वृत्ति का जीवन जी रहे है,घर-बार छोड़कर, चाहते तो नौकरी कर सकते थे आपसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक योग्यता शास्त्री जी कम नही है।

एक बात आपने (प्रोफेसर) और कही, काच के महल में बैठकर दूसरे के घर पत्थर फेंकने की बात। प्रो० साहब उस शास्त्री ने सब कुछ उतार फेंका उस पर क्या पत्थर फेंकोगे। निर्लेप है, बेदाग है, फिर वह यह दावा नही करता हैं कि मैं जीवन मे भूल नही कर सकता हू।

रही बात मित्रता की? आपका मुकाबला उसके साथ किसी बात में नही है जिस बात की तुलना की जाएगी, आप शास्त्री जी के सामने बौने बैठोगे।

अन्त मे—शास्त्री जी पर आपने एक आक्षेप और किया है कि आप (रैल का पास व वार्षिक राशि) जो ले रहे हो, उसे छोड़ दो, क्योंकि आप सत्याग्रह मे नहीं गए थे क्योंकि ५-६-वर्ष की आयु के थे।

प्रो० साहब शास्त्री जी लोअर प्राइमरी व अपर प्राइमरी पास कर म० वि० मे प्रवेष्ठ हुए थे और १९३८-३९ में चतुर्थ कक्षा मे पढ़ते थे। आपने ऐसे दावा दायर किया जैसे पैदा होते समय आप धाई का काम कर रहे थे।

उनके घर के सात व्यक्ति स्वतन्त्रता संग्राम में जूझे थे दो भाई हैदराबाद जेल मे थे एक की मृत्यु हो गई। तीन जत्थे म० वि० से गए थे शास्त्री जी आचार्य नर देव शास्त्री के साथ हैदराबाद सत्याग्रहियो की दशा देखने हेतु गए थे। आज प० नरेन्द्र जी नही हैं वह बताते कि हैदराबाद मे उनका किस रूप में प्रयोग किया गया था। शास्त्री जी भी पारितोषिक नही ले रहे था यह सोचकर कि आर्य समाज के काम मे यदि कुछ सहयोग होता है तो ले लो। हिन्दी सत्याग्रह की मार से पीड़ित शरीर आज भी दुखता है आप जैसे भोगवादी, मायावादी, मोह से ग्रसित, अर्थलोलुप शास्त्री जी का क्या मुकाबला करोगे। आप भी पत्नि वृती हो, शास्त्री जी पत्नि की मृत्यु पर बैरागी बने। उस पर चरित्र व अर्थ चौर्य यह दो लाछन आप क्या कोई भी नहीं लगा सकता है।

निवेदन है नेतागिरी छोड़कर उपदेशकी करो इसी में भलाई है यदि पुनः गलत लिखने की चेष्टा की तो प्रोफेसर साहब आप दूध के धुले नहीं हो, आप दिग्भ्रमित सदा रहे हो, अब भी हो, भविष्य में भ्रमित न हो, ऐसी कामना है।

शहीदों की आरती

—जयप्रकाश शर्मा 'जय'

देश भक्तों की कुर्बानियों से आजाद हुई थी मां भारती,
आओ शहीदों की याद में उतारें शहीदी आरती।

ओ! काकोरी के शहीदो नमन् हिन्दवासी तुम्हारे करेंगे हवन
प्रतिमाओ पर फूल चढ़ाकर केसरी पावन लगायेंगे चन्दन
फिर तेरी ज्योति जलेंगी मशालें जलेंगी, तेरी भावी कलियां
गुलशन में खिलेंगी

जो मातृभूमि की सेवाओं को रहेगी युगों तक स्वीकारती,
जय-जय शहीदों की आरती जय-जय माता-भारती।

ऐ! हिन्दू मुस्लिम-सिक्ख ईसाई सदियों से रहे तुम भाई-भाई
फौलादी वतन की तुम्ही हो दिशायें तुम्हारे ही दम से थो खुशहाली आई
धन्य चन्द्रशेखर वीर भगत सिंह राज गुरु सुखदेव ऊधमसिंह

मां सतलुज नदिया चरणों को तुम्हारे रहेगी हर पल पखारती,
जय-जय शहीदो की आरती जय-जय माता भारती।

अपने सुखों को गर तुम चाहते तो ऐशो आराम कर सकते थे
स्वार्थ की अंधी हांवश मे खोकर ऊंचे महल भी बना सकते थे
वीर बगिया के माली भला तुम गुलशन को कैसे रुला सकते थे

धन्य सपूतों! मां माला पहना तुम्हें रहती हर दिन निहारती,
जय जय शहीदों की आरती जय-जय माता भारती।

तेरी पावन धरा के देवालय से गंगा के ऊंचे हिहिलय से
शहीदी दिवस पर सतलुज के तट से वीरों के शलियां वाले मठ से
बिगुल बजेंगे शंख बजेंगे धूपजलेंगी चवर डुलेंगे।

जय भारत की जनता तड़प-तड़प कर रहेगी तुमको पुकारती,
जय-जय शहीदों की आरती जय-जय माता भारती।

—आदित्य सदन, अशोक रोड, नई दिल्ली-११०००१

प्रजातन्त्र और साक्षरता

—विमला लाल

प्रजातन्त्र अर्थात प्रजा द्वारा संचालित शासन, प्रजातन्त्र के इस साधारण अर्थ से सभी परिचित हैं। जन-सामान्य द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि ही शासन का संचालक होकर देश की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक बागडोर अपने हाथों थाम लेते हैं। दूसरे अर्थों में देश की उन्नति-अवनति विकास अथवा ह्रास सभी उस मस्तिष्क पर निर्भर करता है जिसे जनता अपनी वैचारिकता से चुनकर खड़ा कर देती है अर्थात् चुनाव की सम्पूर्ण प्रक्रिया ही आधारित है जन-सामान्य की बौद्धिकता और सूझ-बूझ पर जिसका एक मात्र आधार है "शिक्षा"। जिस देश में शिक्षा का जितना अधिक विकास होगा, वह देश उतना ही उन्नत, समृद्ध और सम्पन्न होगा। किन्तु कैसी विडम्बना है कि भारत जैसे विशाल प्रजातन्त्र में आधी से अधिक जनता अभी भी निरक्षरता के कगार पर खड़ी है। परिणाम स्वरूप जो दर्दनाक और विस्फोटक परिस्थिति उभर कर सामने आ रही है उसका उत्तर किसी के पास भी नहीं है।

अखबार खोलो या टी॰वी॰ अथवा रेडियो, पहली खबर होती है मौत, खून, लूटमार, डकैती अर्थात सम्पूर्ण अराजकता, अन्याय और असुरक्षा, हृदय से एक हूक-सी उठती है कि जिस भारत की जनता गुलामी के क्षणों में भी "ढाई अक्षर" प्रेम के नहीं भूली थी, उसी के मानस पटल पर यह खून की लकीरें कैसे गहराने लगी हैं? उनकी भावनाएं इतनी हीन और बुद्धि इतनी कुण्ठित कैसे हो गई कि उन्हें खून ही तृप्ति का आखिरी साधन नजर आने लगा, जब कि सभी जानते हैं कि किसी भी प्रजातन्त्र की नींव लहू-लुहान ईंटों से नहीं रखी जा सकती। उसके लिए जरूरत होती है सौम्य और बुद्धिशील नागरिक की। देश का नागरिक बौद्धिक स्तर से जितना विकसित और सुसंस्कृत होगा उसके निर्णय उतने ही तर्क संगत और न्यायिक होंगे और देश तथा समाज की उन्नति के लिए रचनात्मक राहों को प्रशस्त करेंगे।

देश का नागरिक प्रजातन्त्र शासन का मूल आधार होता है। वह देश के लिए लौह स्तम्भ का कार्य करता है और यह लौह स्तम्भ जितना सुदृढ़ होगा देश उतना ही मजबूत होगा, उसकी ख्याति उतनी ही अनुकरणीय होगी। किन्तु दुःख के साथ देखना पड़ रहा है कि अनपढ़ता के कारण हम प्रजातन्त्र के इस मूलभूत सिद्धान्त को ही भूल बैठे हैं। प्रजातन्त्र के वास्तविक अर्थों को जैसे बहुत पीछे छोड़ आए हैं। शायद यही कारण है कि स्वार्थों से आच्छादित अर्थ सम्पूर्ण देश के भविष्य को ही कुछ सिक्कों के बदले तोलने लगे हैं अथवा शराब की बोतलों में बन्द होने लगे हैं या यूं कहो कि सम्पूर्ण प्रजातांत्रिक प्रणाली ही महत्वहीन होने लगी है, निरक्षर भीड़ के सम्मुख कुछ स्वार्थी तत्व जनता के सुनहरे भविष्य के जो स्वर्णिम चित्र पेश करते हैं और जिस ढंग से वह भीड़ बिना सोचे समझे उस आकर्षण में फंसती है। उसे देखकर तो कभी लगने लगता है कि विकास की ऐसी अन्धी गलियां न जाने जनता को किस मन्ज़िल पर ले जाकर खड़ा करेंगी :

एक मजबूत और सफल प्रजातन्त्र के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि देश के नागरिक शिक्षित हों। वह बौद्धिक स्तर से इतने जागरूक हों कि जीवन के हर पहलू को तार्किक ढंग से परख और समझ सकें। मार्गदर्शन के लिए अन्य विद्वानों के विचारों को महत्व के साथ अपना सकें। शिक्षा के माध्यम से वह अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को पहचान सकें क्योंकि कोई भी प्रजातन्त्र अपनी संस्कृति की मजबूत डोरी थामे बिना उन्नति की ऊंचाईयों को छूने में समर्थ नहीं हो सकता। संस्कृति देश की पहचान होती है, उसकी आत्मा होती है। संस्कृति और सभ्यता को सार्थक अर्थों में समझे बिना न तो हम दूसरे देशों में अपनी पहचान बना सकते हैं और न ही आने वाली पीढ़ी को किसी उज्ज्वल भविष्य की रोशनी दिखा सकते हैं। किन्तु भारत जैसे महान प्रजातन्त्र में निरक्षरता ने जो विकराल रूप धारण किया है उसके कारण तो आज हम संस्कृति तो क्या मानवीय सभ्यता से भी कोसों दूर होते जा रहे हैं। एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ रिश्ता क्या है या फिर व्यक्ति समाज के लिए किस कदर महत्वपूर्ण है, जब यही हमारी समझ से बाहर की बात हो गई है तो देश और शासन की बात तो बहुत दूर की हो जाती है। अपनी ही कमजोरियों को छिपाने के लिए एकता और भाईचारे के गठन में ही नारे लगते हैं किन्तु वह भी निरक्षरता रूपी अज्ञानता से ढके कानों के पर्दे को छू नहीं सकते। अपनी-अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए निरक्षरता को ही ढाल के रूप में प्रयोग किया जाता है, परिणाम स्वरूप जिस अनुशासनहीनता का सामना करना पड़ता है वह समाज और देश को दीमक की तरह खोखला कर रही है जिसे देखकर जनतन्त्र प्रजातान्त्रिक सुरक्षा के लिए बहुत ही होशियारी की जरूरत महसूस होने लगती है।

प्रजातन्त्र ऐसी शासन प्रणाली है जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्पूर्ण मानवीय अधिकारों सहित स्वतन्त्रता का उपयोग कर सकता है। संवैधानिक तौर पर प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकार प्राप्त हैं, जिन्हें वह अपनी सुख-सुविधा के लिए समय-असमय प्रयोग करता रहता है किन्तु अनपढ़ता के कारण वह यह समझने का प्रयत्न ही नहीं करता कि इन अधिकारों के साथ-साथ कुछ कर्त्तव्यों का भी प्रावधान है विश्लेषणात्मक एवं समन्वयात्मक बुद्धि के अभाव में वह अधिकार और कर्त्तव्य में कहीं भी तालमेल नहीं बिठा पाते। वह यह समझ ही नहीं पाते कि जिन अधिकारों का वह उपयोग कर रहे हैं उनके पीछे किसी दूसरे द्वारा सम्पन्न किए गए कर्त्तव्य भी हैं। वह यह जानने का प्रयत्न ही नहीं करते कि कर्त्तव्य निभाए बिना अधिकारों को प्राप्ति सम्भव ही नहीं।

स्वाभाविक तौर पर मनुष्य "देने" से अधिक लेने को अधिक महत्व देता है, उस पर यदि अज्ञानता की ढाल का आसार मिल जाए तो समझो मार लिया मोर्चा। कोई पूछे तो सही सीधा-सा जवाब है, जनाब हम तो जानते ही कुछ नहीं कोई क्या कर लेगा भला शायद यही कारण है कि आज कर्त्तव्य की भावना को इतनी उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। हर तरफ अधिकारों का ही बोलबाला नजर आता है। अधिकारों की मांग में आज यहां हड़ताल है तो कल वहां बन्द है। ऊपर से तोड़-फोड़ अलग। हैरानी तो यह होती है कि अधिकारों के नारे लगाने के लिए तो लाखों की भीड़ जमा हो जाती है किन्तु कर्त्तव्य निभाने के लिए लोग ढूंढे नहीं मिलते।

केवल यही नहीं आज का आतंकवाद एक भयानक कल्पना-अधिकारों को लेकर ही तो पनपा है। क्या किसी भी आतंकवादी ने कभी यह सोचा है कि देश और समाज के प्रति उनका कर्त्तव्य क्या है? जिस धरती का अन्न खा-खा कर वह परवान चढ़े हैं और हाथों में बन्दूक थामने लायक बने हैं उस धरती मां के प्रति उनका कुछ कर्त्तव्य भी है? वहां यह वह क्यों और कैसे सोचे! बौद्धिक स्तर तो उनका कुण्ठित है। अज्ञानता ने उनकी बुद्धि को आच्छादित कर रखा है। ठीक क्या है, गलत क्या है यह सोचने की उनमें क्षमता ही नहीं, उन्हें तो बस जिस किसी ने बरगला दिया उसी के स्वार्थों को कंधे पर लाद कर चल दिए। परिणामों को सोचने की जरूरत किसे है।

दूसरी ओर प्रजातन्त्र की नींव को हिला देने वाली राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं को परिपूर्ण करने वाली भी एकमात्र अनपढ़ता

(शेष पृष्ठ ६ पर)

क्रान्ति के अग्रदूत देवतास्वरूप भाई परमानन्द (२)

—डा० सुरेन्द्रसिंह लोढ़ा (राज०)

देवी भागशुद्धि को मकान मालिक ने भी मकान से निकाल दिया। वे तीनों पुत्रियों को लेकर लाहौर में ही शीशमोती इलाके के एक खोखा में अज्ञात स्थिति में रहकर दिन काटने लगीं: आर्य समाज ने भी जिसके भाई जी वर्षों तक सक्रिय कार्यकर्ता रहे थे, उनके परिवार को ऐसी ही दुःखी अवस्था में तड़पते देखा।

भाईजी की वापसी पूर्व ही उनकी लड़की तपेदिक की शिकार हो गई। जीवन निर्वाह के लिए देवी भाग शुद्धि ने एक कन्या पाठशाला में नौकरी कर ली।

अण्डमान से लौटने के पश्चात् भाई जी जैसा ध्येय निष्ठ व्यक्ति कब चुप बैठ सकता था। पुनः भाई जी स्वतन्त्रता संग्राम के कार्य में जुट गये। भाई जी के योजना बद्ध कार्य तथा उद्भट योग्यता, दूरदर्शिता, तन्मयता और ध्येयव्रत से प्रभावित होकर गांधी जी, भाई जी को देवतास्वरूप कहने लगे थे। भाई जी ने लाला लाजपतराय और गांधी जी के सहयोग से नेशनल कालेज की स्थापना की जो शीघ्र ही विश्वविद्यालय के रूप में आ गया जिसके भाई जी उप कुलपति बने। भाई जी ने इस विश्वविद्यालय को बगैर सरकारी सहायता के चलाया और भाई जी स्वयं इतिहास पढ़ाते थे।

इण्डियन नेशनल कांग्रेस मुसलमानों को प्रसन्न करने में लगी रहती थी। इधर भाई जी हिन्दुओं को ही भारत की आत्मा मानते थे। भाई जी का दृढ़ अभिमत था कि ईसाई और मुसलमान केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले हैं वे यहां के राष्ट्रीय नहीं हो सकते।

लखनऊ यूनिटी कान्फ्रेंस में नेहरू ने मुस्लिम बहुल क्षेत्र सिन्ध प्रान्त बम्बई से पृथक करने और मुस्लिम बहुल जनसंख्या प्रान्त को मुस्लिम राज्य बनाने का प्रस्ताव पास किया जिसका भाई जी ने जोरदार शब्दों में घोर विरोध किया। भाई जी ने लाला लाजपतराय जी के इन शब्दों का भी जोरदार विरोध किया कि मैं अंग्रेजों का राज्य नहीं देख सकता चाहे मुसलमान का राज्य आ जाये। यहीं से भाई जी का गांधी, नेहरू एवं लाला लाजपतराय से मतभेद होकर सम्बन्ध विच्छेद हो गया।

भाई जी ने हिन्दू महासभा मंच से हिन्दू संगठन का पृथक से कार्य प्रारम्भ किया। भाई जी अखिल भारत हिन्दू महासभा के अजमेर अधिवेशन में प्रधान निर्वाचित हुए।

इस प्रकार से वह युग पुरुष जिसका स्वतन्त्रता का मन्त्र पढ़कर, मदनलाल धींगरा, सरदार भगतसिंह क्रान्ति के अग्रदूत बने जिसका आदर प० मदन मोहनमालवीय करते रहे, जिसको आता देखकर जवाहरलाल नेहरू अपनी कुर्सी से उठकर खड़े हो जाते थे और स्वयं गांधी जी ने जिस महान आत्मा का बिस्तरा अपने सिर पर उठाकर अपने घर को पवित्र किया था। वह महान व्यक्ति सिद्धांतों में अन्तर आ जाने के कारण उन सबसे पृथक हो अकेला ही हिन्दुओं को संगठित करने में जुट गया।

रावलपिण्डी डिवीजन से भाई ने जी केन्द्रीय असेम्बली का निर्वाचन लड़ा। उनके विरुद्ध कांग्रेस ने दीवान चमनलाल को खड़ा किया जिनकी सहायता सरदार पटेल से लेकर बड़े बड़े चोटी के कांग्रेसी नेताओं ने की। फिर भी भाई जी विजयी हुए। यह था भाई जी का प्रभाव एवं व्यक्तित्व।

भाई जी की बढ़ती प्रतिष्ठा को देखकर कांग्रेस ने भाई जी के चरणों में प्रणाम किया और लाला लाजपतराय की मृत्यु के पश्चात् पंजाब कांग्रेस का नेतृत्व सम्हालने का अनुरोध किया। भाई जी अपने सिद्धान्त पर अडिग रहे। वे कांग्रेस के फांसे में नहीं आये।

भाई जी केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य बन गये। अब अर्थ की समस्या पहले जैसी नहीं रही। फिर भी भाई जी दो जोड़े कपड़ों के व दो जोड़ी जूतों की ही रखते थे। असेम्बली पैदल ही जाते थे। भाई जी जो पैसा बचा पाते उसको अनाथ छात्रों की शिक्षा में और हिन्दू संगठन पर व्यय करते थे! भाई जी के आदर्श जीवन से भारत की जनता गांधी से भी अधिक सम्मान देती थी किन्तु मुसलमान, ईसाई और कांग्रेसी बड़े जलते थे। जिन दिनों भाई जी केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य थे उन्हीं दिनों असेम्बली प्रधान अब्दुल रहीमथे। अब्दुल रहीम ने पन्द्रह मिनट से अधिक किसी भी मेम्बर को न बोलने की रूलिंग दी थी। यह भाई जी पर प्रतिबन्ध था।

भाई जी का कम्युनल अवार्ड पर असेम्बली में दिया गया भाषण एक दस्तावेज है। असेम्बली में हिन्दुस्तान को जिस संगठन व्यवस्था पर भाई जी ने जो भाषण दिये थे यदि आज उन्हें प्रकाशित किया जाये तो इस महान आत्मा के व्यक्तित्व का और अधिक. पता चल जायेगा।

भाई जी कितने समय तक अमेरिका में इतिहासके प्रवक्ता रहे। अफ्रीका, लैटिन अमेरिका आदि देशों में स्वतन्त्रता और हिन्दू संगठन की मशाल लिए घूमते-फिरते रहे। नई दिल्ली मन्दिर मार्ग स्थित विशाल भवन भाई जी का निष्ठा और श्रम का ही फल है। इसी भवन के एक भाग में भाई जी की स्मृति में भाई परमानन्द शिक्षा निकेतन नाम से एक शिक्षा संस्थान चल रहा है।

भाई जी की इच्छा के विरुद्ध देश विभाजन हो गया। भाई जी हिन्दू, हिन्दी और अंग्रेजी दैनिक के सम्पादक रहे।

८ सितम्बर १९४७ को भाई जो ने हम सबसे विदा ली। भाई जी ने अन्त तक यही कहा ओह! कांग्रेसियों तुमने वह कर ही दिया, जिससे मैं डरता था। देश विभाजन भी किया और हिन्दू-मुस्लिम सदा मार-काट करने को उलझा भी दिये।

भाई जी की लिखी पुस्तक जिसमें "मेरे अन्त समय के विचार (२) भारत वर्ष का इतिहास (३) वैरागी वीर (४) हिन्दू संगठन (५) सफलिया नाटक (६) स्वाध्याय संहिता मुख्य है।

प्रजातन्त्र और साक्षरता

(पृष्ठ ५ का शेष)

हो है, उदाहरण के लिए जनसंख्या को ही लें। पिछले कई दशकों से सरकार जी तोड़ परिश्रम कर रही है किन्तु परिणाम क्या है सभी उपाय कुछ बुद्धिजीवी लोगों तक ही सीमित होकर रह गए हैं जिसके कारण जहां बौद्धिक वर्ग सीमित हो रहे हैं वहां निरक्षर परिवारों में वृद्धि के कारण निरक्षरता, अज्ञानता और समाजिक कुरीतियों में भी वृद्धि हो रही है। रूढ़िवादिता एवं हीन भावना के कारण वह कभी भी सामाजिक कल्याण को वरीयता नहीं दे पाते। व्यक्तिगत स्वार्थ उन्हें अन्दर सर्पदंश से ही कचोटते रहते हैं और वह चाह कर भी उनसे उबरने की राह नही ढूंढ पाते।

कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि प्रजातन्त्र की सुदृढ़ता का सम्पूर्ण दायित्व देश के शिक्षित, सभ्य और सुसस्कृत नागरिक के कन्धों पर होता है और उसका मूल आधार है शिक्षा। देश की हर महत्वपूर्ण जरूरत को समझते हुए अब यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने उत्तरदायित्व को पूरी ईमानदारी के साथ समझें। साक्षरता आन्दोलनों से ऊपर उठकर केवल "करने" को महत्व दें। अब हमारे पास समय नहीं कि हम योजनाओं में उलझ कर रह जाएं। समय है "करने या मरने" की नीति को अपनाने का। जिस दिन हमारे कर्त्तव्य बोध ने अपना स्थान ले लिया वही दिन उन्नति का वास्तविक दिन होगा उसके बाद इस महान भारत के विकास को शायद प्रलय भी रोकने में समर्थ न हो सके।

१२३, विकास कुंज, (विकास पुरी,)
नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली

हिन्दू को साम्प्रदायिक किसने बनाया ?

—डा० भवानी लाल भारतीय

राजस्थान पत्रिका इस प्रदेश (राजस्थान) का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पत्र है। इसके १२ जुलाई के अक में श्री क. च. कुलिश का एक लेख 'हिन्दू को साम्प्रदायिक बनाया मठाधीशो ने सुधारकों ने' शीर्षक से छपा है। लेखक के अनुसार हिन्दू देशवाची शब्द है किन्तु इस देश के मठाधीशो (लेखक का आशय सम्प्रदाय प्रवर्तको से है) और सुधारको (मुख्य रूप से इसमे स्वामी दयानन्द को गिनाया गया है) ने इसे मत, पन्थ, मजहब तथा सम्प्रदाय का वाचक बना दिया है। लेख मे अनेक विवादास्पद मुद्दे उठाये गये है जिन पर गम्भीरता तथा निष्पक्षता मे विचार करना आवश्यक हैं।

हमारे विचार से इसदेश के पुराकाल मे अनेक नाम रहे यथा आर्यावर्त, भारत, भारतवर्ष, भरतखण्ड आदि। मुसलमानी जमाने मे इसे हिन्दोस्तान कहकर पुकारा जाने लगा और यूरोपीय जातिया ने इसे इण्डिया नाम दिया। भारत के सविधान ने इस देश के दो नाम स्वीकार किये इण्डिया और भारत। तथैव भारत सरकार के अभिलेखो मे उक्त दोनो नाम प्रयुक्त होते हैं। यह एक इतिहास सम्मत तथ्य है कि इस देश या यहा के धर्म के लिए हिन्दू शब्द का प्रयोग किसी प्राचीन शास्त्र या सस्कृत ग्रन्थ मे नही हुआ है। सस्कृत वाङ्मय की बात जाने दीजिये अभी चार सौ वर्ष पहले लिखे गये तुलसीदास के रामचरित मानस मे भी हिन्दू शब्द का प्रयोग कही नही मिलता, हा आर्य के अपभ्रश 'आरज' का प्रयोग तो बहुश हुआ है। हमारी जानकारी के अनुसार हिन्दू महा सभा के प्रखर नेता विनायक दामोदर सावरकर ने सर्वप्रथम अपने 'हिन्दुत्व' नामक ग्रन्थ मे हिन्दू शब्द को प्राचीन ठहराने का प्रयास किया और मेरुतन्त्र आदि कतिपय नवीन ग्रन्थो के आधार पर इसकी प्राचीनता सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होने भारत को हिन्दू देश बनाया तथा इसके लिये एक कसौटी भी बताई—

> आ सिन्धो सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
> पितृ भू: पुण्य भूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृत ॥

अर्थात सिंधु नदी (अब पाकिस्तान मे) से लेकर सागर पर्यन्त जो विस्तृत भारत भूमि है उसे पितृभूमि तथा पवित्र भूमि मानने वाला 'हिन्दू' कहलाता है।

अब हम आलोच्य लेखक की कतिपय स्थापनाओ की परख करना आवश्यक समझते है। भारत या लेखक के शब्दो मे 'हिन्दू राष्ट्र' के बिखराव के लिए प्रथम जिम्मेदारी सम्प्रदायो और उनके प्रवर्तको की है। इन सम्प्रदायो को गिनाते समय लेखक ने सर्वप्रथम अद्वैत मत प्रवर्तक आद्यशकराचार्य का स्मरण किया है। निश्चय ही अपने दार्शनिक मत के प्रचार के लिए शकर ने चारो दिशाओ मे चार मठो की स्थापना की थी, किन्तु उनके दार्शनिक मत को किसी विशिष्ट पूजा उपासना प्रणाली को प्रश्रय देने वाले सम्प्रदाय का समानार्थक मानना न्यायोचित नही है। शकराचार्य के माधवाचार्य रचित जीवनचरित्र शकर दिग्विजय के एक श्लोक—शाक्तै पाशुपतैरपि क्षपकैः कापालिकैर्वैष्णवै: के अनुसार तो शकर ने शाक्त पाशुपत (शैव) क्षपणक (जैन बौद्ध आदि) वैष्णव आदि सभी सम्प्रदायो का खण्डन किया था और उपनिषदाधारित वेदान्त का प्रचार किया।

आगे चलकर लेखक ने सुधारको को हिन्दू शब्द को प्रदूषित करने के लिए उत्तरदायी ठहराया है। यहा उसकी विवेचना तथा उसकी तटस्थता सर्वथा लड़खड़ा गई है क्योकि वह लिखता है कि सनातन धर्मियों मे हिन्दू शब्द का प्रवेश आर्य समाज के माध्यम से हुआ है। लेखक की यह धारणा सर्वथा मिथ्या है। आर्य समाज अथवा उसके प्रवर्त्तक ने हिन्दू शब्द को कभी स्वीकार नही किया और न सनातन धर्मियो को उसे अपनाने के लिए कहा। इसके विपरीत सनातनधर्मियो ने ही 'आर्य' शब्द का विरोध करते हुए 'हिन्दू' शब्द के समर्थन में अनेक पुस्तकें लिखी। द्रष्टव्य प० कालूराम शास्त्री द्वारा लिखित।

लेखक का यह वाक्य तो सर्वथा निर्मूल तथा अस्पष्ट भी है कि 'आर्य समाज ने मूल मे हिन्दू को धर्म के रूप मे इस्तेमाल किया। लेखक का इससे क्या आशय है यह स्पष्ट नही है। आर्य समाज ने अपनी आस्था के धर्म को वैदिक धर्म या वेद धर्म कहकर पुकारा।

सत्यार्थ प्रकाश मे ऋषि दयानन्द लिखते हैं—

(प्रश्न)—तुम्हारा मत क्या है ?

(उत्तर)—वेद, अर्थात जो जो वेद मे करने और छोडने की शिक्षा लिखी है, हम उसका यथावत करना (या) छोड़ना मानते है। यदि इस वाक्य से लेखक का यह आशय है कि आर्यसमाज(दयानन्द)ने जिस मत की आलोचना की है, उसे उन्होने हिन्दू नाम से पुकारा, तो उसका यह कथन भी सत्य नही है। आर्य समाज ने जिस मतपुज को अपनी आलोचना का विषय बनाया उसे स्वामी दयानन्द ने 'आर्यावर्त्तीय मत मतान्तर' कहा है—(सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास के शीर्षक को देखे) कालान्तर मे आर्य समाज ने उसे पौराणिक मत कहा क्योकि मूर्तिपूजा, अवतार, तीर्थ, आदि के विश्वास पुराणाश्रित है न कि वेदाधारित। आर्य समाज को तो हिन्दू शब्द मे विरक्ति ही रही है, चाहे अन्य लोग उसे किसी अर्थ मे ले।

लेखक आगे लिखता है—'स्वामी दयानन्द ने हिन्दू को मुसलमान के मुकाबले धर्म के रूप मे अस्त्र बनाया। यह वाक्य भी अस्पष्ट है तथा किसी निश्चयार्थ का बोधक नही है। अस्त्रधारण तो लडने के प्रयोजन से किया जाता है। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य किसी से लड़ना तो था ही नही। निश्चय ही उन्होने एतद्देशीय तथा अन्य देशोत्पन्न मतपन्थो की समालोचना की है किन्तु यह सब बौद्धिक स्तर पर ही है। अस्त्र तो लडने के लिए उठाए जाते हैं। यदि समीक्षा या आलोचना की बात करे तो स्वामी दयानन्द ने वेदेतर सभी पौराणिक सम्प्रदायो, जैन, बौद्ध तथा चार्वाक आदि वेदभिन्न दर्शनो तथा ईसाई एव इस्लाम जैसे सैमेटिक मजहबो पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

इसी सन्दर्भ मे लेखक ने शुद्धि आन्दोलन की भी चर्चा की है और लिखा है कि इसे हिन्दू के नाम पर ही चलाया गया। निवेदन है कि जिसे सही अर्थ मे शुद्धि आन्दोलन कहना उचित है वह तो स्वामी दयानन्द के निधन के बहुत बाद मे चलाया गया और उसके लिए तत्कालीन राजनैतिक एव सामाजिक परिस्थितिया ही जिम्मेदार थी। शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानन्द ने तो महात्मा गाधी को यहा तक कह दिया था कि यदि मुसलमान लोग अपनी तबलीग (हिन्दुओ को प्रलोभन देकर मुसलमान बनाना) को बन्द कर दे तो वे भी शुद्धि आन्दोलन को वापिस ले लेंगे। यहा शुद्धि आन्दोलन के मूल कारण को भी जानना चाहिए। जब काकीनाडा कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद अली ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दुओ मे गिने जाने वाले अछूतो को (जिनकी सख्या उस समय छ या सात करोड़ थी) हिन्दू और मुसलमानो मे आधा-आधा बाट लेने की बात कही तो कांग्रेस मे पजाब से प्रतिनिधि बन कर गए स्वामी श्रद्धानन्द ने मौलाना के इस कथन का प्रबल विरोध किया और उसके पश्चात ही उन्होने शुद्धि आन्दोलन चलाया यहा यह भी ध्यान मे रखना है कि प्रारम्भ मे उन अछूतो की ही शुद्धि की गई जो हिन्दुओ मे दलित और अस्पृश्य समझे जाते थे। आर्य समाज का प्रयास यह था कि ये लोग अपने आपको उस प्रकार सुधारे ताकि इनके प्रति उच्च वर्णस्थ लोगो की भावनाए बदले और समाज मे व्याप्त यह विषमता और घृणाभाव दूर हो। शुद्धि के दूसरे चरण मे मलकानो, मेवो आदि उन नौमुस्लिम जातियो को हिन्दुओ मे प्रविष्ट कराया गया जिनके अधिकाश आचार विचार, जीवन-पद्धति मुसलमान बन जाते पर भी हिन्दुओ के तुल्य ही थी। यह शुद्धि भी इन जातियो के मुखियाओ को समझा बुझाकर उनकी सम्मति से ही की गई।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द और स्वतन्त्रता

—डा० शिवकुमार शास्त्री

दादा भाई नौरोजी ने सन् १८९८ में बम्बई के चौपाटी मैदान में स्वराज्य शब्द दोहराया था। लोकमान्य तिलक ने १९०६ में कहा था—"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" ३१ दिसम्बर १९२९ की रात्रि मे लाहौर मे नेहरू जी ने पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की थी परन्तु इन सबसे पहले जबकि कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था, सन् १८७५ में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—

"जो आप चाहे कहें, सत्य यह है कि अपना राज्य सबसे उत्तम है।"

महर्षि दयानन्द ने स्वदेश प्रेम एवं स्वराज्य की भावना जाग्रत करके भारत की जनता को विदेशी शासन से मुक्त होने का पाठ पढ़ाया था। इस देश की प्रशंसा करते हुए स्वामी जी ने कहा—

"यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं। जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है और आगे भी होगा उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।"

महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन से बहुत पहले महर्षि ने देशवासियों मे स्वदेशी भावना भरी थी। शाहपुराधीश को उन्होंने स्वदेशी वस्त्रो तथा वस्तुओ का प्रयोग करने का आदेश दिया था।

स्वराज्य के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जहा स्वराज्य की वकालत की वहा सुदृढ़ गणतन्त्र का भी आदेश दिया। महर्षि द्वारा प्रतिपादित राजनीति का आयाम बहुत विस्तृत है। ग्राम से लेकर विश्व तक की शासन व्यवस्था का वह दृढ स्तम्भ है। उनके द्वारा निर्दिष्ट व्यवस्था से किसी भी व्यक्ति के निरंकुश बन जाने की सम्भावना नही रहती।

"राज्य के लिए एक को राजा कभी नही मानना चाहिए क्योकि अकेला राजा स्वाधीन व उन्मत्त होके प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह राजा प्रजा को खाए जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन नही करना चाहिए।" (सत्यार्थ प्रकाश, षष्ठ समुल्लास।)

"तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए एक मनुष्य को कभी नही। वे तीन सभाए हैं—विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा और राजार्यसभा।" (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

दयानन्द की स्पष्ट घोषणा है कि—

"एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति, तदाधीनसभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे।" (सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समु०)

अकेला राजा ही सब कुछ न हो, इसके लिए तर्क देते हुए वे लिखते हैं—"विशेष सहायक के बिना जो सुगम कर्म है वह भी एक के करने मे कठिन हो जाता है, जब ऐसा है तो महान् राज्यकर्म एक से कैसे हो सकता है, इसलिए एक को राजा और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य का निर्भर रखना बहुत ही बुरा काम है।" (सत्यार्थप्रकाश, षष्ठ समुल्लास)।)

महर्षि दयानन्द का मत है कि राजकार्य मे विविध प्रकार के अध्यक्षो की सभा हो। राजा सभाओ का मात्र एक सदस्य हो। सभा के परामर्श से ही वह राजकार्य सम्पन्न करता है। इन सभाओ का उस पर पूर्ण अकुश रहता है। ये सभाए भी स्वतन्त्र अथवा निरंकुश नही है इन पर प्रजा का अकुश रहता है। इस प्रकार प्रजा पर इन सभाओ का और सभाओ पर प्रजा का अकुश लगाकर इन सभाओं को भी स्वच्छन्द नहीं होने दिया।

यदि स्वतन्त्रता दिवस पर हम स्वराज्य के महान् उद्घोषक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताए हुए वेदमार्ग का अनुसरण करें तो आज हमारे देश में जो निरंकुशता और भ्रष्टाचार व्याप्त है, उससे शीघ्र ही छुटकारा पाया जा सकेगा है। —जे-१८६, विकासपुरी, नई दिल्ली-१८

प्रचार कार्य

आर्य समाज सुल्तानपुर (नैनीताल) के द्वारा पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के प्रवचन व श्री सत्यप्रिय, श्री वक्षनसिंह एवं श्री श्रीकृष्ण आर्य द्वारा चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या की गई। यह कार्यक्रम १० व ११ जुलाई ९५ को हुआ। —श्रीकृष्ण आर्य

नयना साहनी की हत्या का मूल कारण
मांसाहारी प्रवृत्ति

दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने जिस प्रकार अपनी पत्नी का कत्ल करके उसकी लाश के सात टुकड़े किए तथा उनको राख मे परिवर्तित करने के उद्देश्य से अपने ही रेस्टोरेंट के तन्दूर में उन्हें जलाने का असफल प्रयास किया, इस विषय पर देश की जनता अखबारो और पत्रिकाओ के माध्यम से लगभग पूर्ण जानकारी प्राप्त कर चुकी है, हम भी इसे दोहराना नही चाहते।

देश के समस्त अखबारो ने इस घटना को लेकर इस विषय पर भी अपने-अपने विचार प्रकट किए कि यह सारा खेल वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के कारण हुआ है जहा अपराधी प्रवृति के लोगों को महत्व दिया जा रहा है। हमारा इस विषय मे भी वैसे, अलग मत नहीं है परन्तु दोष राजनीतिक व्यवस्था से पहले सामाजिक व्यवस्था तथा समाज के लोगो के खान-पान और सस्कृति मे आए विकार मे ढूढना पड़ेगा।

एक व्यक्ति अपना होटल चलाता है जिसमे प्रतिदिन सैंकडो किलो मास काटकर तन्दूरो मे भूना जाता है तथा लोग जानवरो की उन भुनी लाशो को अपने पेट मे स्थान देते है। होटल के मालिक के लिए यह कार्य प्रतिदिन की दिनचर्या का विषय है, लम्बे समय तक ऐसा करते और देखते हुए उसे या तो कटते जानवरो की चीख पुकार सुनाई देना बन्द हो जाती है या उसका मन छोटी-मोटी दया भावनाओ से दूर होकर पत्थर नुमा हो जाता है।

बस इसी प्रक्रिया को इस कांग्रेसी नेता ने अपनी पत्नी के शरीर पर दोहरा दिया तो इसमे अचम्भा क्यो? शर्मा का मन निर्दयी बनाने में वो सब दोषी क्यो नहीं माने जाते जिनके कारण उसका रेस्टोरेन्ट चल रहा था उसमे रोज सैंकडो किलो मास भूना जाता था? यह मासाहारी प्रवृत्ति केवल मास का व्यापार करने वालो की ही नहीं समस्त उन लोगो की भी बन सकती है जो नियमित मास को अपने पेट मे डालते हैं। जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन-एक प्राचीन और निश्चित मान्यता है।

मासाहारी पतियो से उन की पत्नियो को तथा मासाहारी माता-पिता से उनके बच्चो को सदैव सावधान रहना चाहिए क्योकि किसी भी दिन वह मासाहारी प्रवृत्ति किसी छोटी सी घटना से उत्तेजित होकर किसी को भी नयना साहनी बना देगी।

मांसाहारियों से सावधान!

—विमल वधावन, एडवोकेट

प्रभु भक्ति, देशभक्ति साधना शिविर सम्पन्न

आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में उद्गीथ साधना स्थलो हिमाचल में १० मई १९९५ से १८ जून १९९५ तक चार शिविरों का आयोजन हुआ। जिसमें हिमाचल, हरियाणा उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चण्डीगढ़ व पजाब के लगभग २०० साधकों ने साधना की।

आर्य जगत के मूर्द्धन्य विद्वान संन्यासी पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी प्रभात आश्रम मेरठ डा० कुसुमलता वनस्थली विद्यापीठ जयपुर पूज्य योगीराज स्वामी दिव्यानन्द जी ज्वालापुर मान्य पण्डित जयदेव जी गुड़गांव हरियाणा आदरणीय श्री वेदभानु जी।

वेद विदुषी चन्द्रप्रभा शास्त्री आर्य महिला आश्रम दिल्ली, डा० आशा प्राध्यापिका औरैय्या कानपुर। आर्य वीर व्यायाम शिक्षक श्री रामफल जी हिमाचल ने साधकों की ज्ञानवृद्धि की। श्री पण्डित मामचन्द आर्य, पण्डित हरिश्चन्द्र जी ने मधुर संगीत से वातावरण को सरस बनाया।

आजादी का बीज किसने बोया था ?

रामसुफल शास्त्री आर्योपदेशक बांदा (उ. प्र.)

आजादी का बीज बोने वाले सबसे पहले व्यक्ति स्वामी विरजानन्द सरस्वती थे। आज की कुटिल सरकार माने न माने परन्तु यह बात सच है कि सबसे पहले स्वामी विरजानन्द सरस्वती ने आजादी का बीज बोया था। जिससे स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा विशाल वृक्ष तैयार हुआ। जिसकी शाखाएं भारत मे ही नहीं अपितु अन्य देशो मे भी आजादी का सन्देश दे रही हैं। जिस प्रकार एक बीज मे वृक्ष रूप धारण करने की शक्ति तो निहित होती है, परन्तु सीधे फल देने की नहीं। उसी प्रकार प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती ने सीधे तो नहीं अपितु महर्षि दयानन्द सरस्वती रूपी पौधे के माध्यम से अनेको फल प्रदान किए हैं। जो कि अमर क्रान्तिकारी स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, प० रामप्रसाद बिस्मिल, अमर क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद, अमर हुतात्मा मगल पाडे, अमरशहीद सरदार भगतसिंह, नेता जी सुभाष चन्द बोस, राष्ट्रीय एकता के कर्णधार सरदार बल्लभ भाई पटेल, बाल गगाधर लोकमान्य तिलक आदि, सपूतों जैसे अनेको फल उस विशाल वृक्ष पर लगे। जिन सपूतो को पाकर भारत माता ने आजादी का एहसास किया, जिस विशाल वृक्ष की शीतल छाया को पाकर मेरी भारत माता ने शीतलता का एहसास किया। उस बीज को बोने वाले माली दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती यह चाहते थे कि इस विशाल वृक्ष रूपी शीतलता का एहसास सारे भारत मे हो। तभी तो उन्होने गुरु दक्षिणा के समय लौंग लौटाते हुए स्वामी दयानन्द से कहा था—

ये लोंग नहीं चाहिए यदि तुम दक्षिणा दे सकते हो तो मैं कुछ और ही चाहता हूं। गुरू विरजानन्द की बातें सुनकर स्वामी दयानन्द जी घबराए। स्वामी दयानन्द जी सोचने लगे कि पता नही गुरू जी क्या मागेंगे मेरे पास तो कुछ नहीं हैं। मैं ये लौंग ही किसी से मागकर लाया था। स्वामी दयानन्द जी की इस स्थिति को जानकर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी बोले—दयानन्द मैं वही मांगूगा जो तुम्हारे पास हैं और तुम दे भी सकते हो। स्वामी दयानन्द जी बोले गुरु जी मेरे पास है और मैं दे सकता हूं तो आप अवश्य मागिए मैं दूंगा।

स्वामी विरजानन्द जी ने कहा—दयानन्द ! अपना जीवन इस देश, धर्म और जाति के लिए दे दो। इस देश को गुलामी के बन्धन से छुड़ाओ, अज्ञान अन्धकार को दूर करो, त्राहि-त्राहि करती हुई आर्य जाति की रक्षा करो। मैं तुमसे यही चाहता हूं। इससे तो स्पष्ट होता ही है कि स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती ही एक पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आजादी का बीज बोया था। परन्तु इससे भी स्पष्ट, पुराना एवं मजबूत उदाहरण है। जो कि उत्तर प्रदेश की सर्वखाप पचायत के महामन्त्री चौ० कबूलसिंह ने उसके पुराने रिकार्ड से खोजकर १८५६ ई० में पचायत के कासिम मीर मुश्ताक मिराशी द्वारा लिखित एक सभा का विवरण प्रकाशित करवाया था; जिसके अनुसार स्वामी विरजानन्द जी ने मथुरा के पास के जंगल में हुई एक सभा मे देश की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे ओजस्वी वक्तृता दी थी और बहादुर शाह के शहजादे ने तथा नाना साहब पेशवा आदि ने वहा उपस्थित होकर उनकी वन्दना की थी।

राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री पृथ्वीसिंह मेहता ने अपनी पुस्तक "हमारा राजस्थान" में बताया हैं कि सन १८५७ में मथुरा के समीपस्थ क्षेत्र हाथरस, मुरसान आदि के जिन जमीदारों तथा अलवर, भरतपुर, करोली, ग्वालियर तथा जयपुर आदि के राजाओं ने इस क्रांति के समय अंग्रेजो से जमकर लोहा लिया था, उन सभी से स्वामी विरजानन्द का घनिष्ठ सम्बन्ध था और उनमे से एक-दो को तो उन्होने राजनीति, धर्म आदि का अध्ययन भी करवाया था।

स्वामी विरजानन्द के शिष्य मथुरा निवासी पं० नवनीत जी ने उनके सम्बन्ध मे एक लम्बी कविता की रचना की थी। उनमे दो पंक्तिया विशेष द्रष्टव्य है—

> सम्प्रदाय-वाद-वेद विहित विरोधिन पैं,
> शासन विदेशिन को नाशन प्रचण्डी नैं।
> गोरे के अगारी हो, उदण्ड मे उठाय दण्ड,
> चण्ड है प्रतिज्ञा करी, प्रज्ञाचक्षु दण्डी नैं॥

ऐसा लगता है किसी अंग्रेज के द्वारा दण्डी जी को चोट पहुंची हो और उन्होने नन्द वंश के विनाश की प्रतिज्ञा करते हुए चाणक्य के समान रौद्ररूप धारण कर अंग्रेजो के विनाश की प्रतिज्ञा की हो। वह घटना अन्वेषणीय है।

भारतीय स्वाधीनता के अग्रदूत : महर्षि दयानन्द सरस्वती

यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, मुरादाबाद

प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम अर्थात् सन् १८५७ की क्रान्ति की विफलता के बाद हालात ने कुछ ऐसा पलटा खायाकि भारतीय जनमानस स्वाधीनता की ललक को ही सर्वथा भुला बैठा। और स्थिति यहां तक आन पहुंची कि भारतवासी अंग्रेजी शासन को ही अपने लिये एक वरदान समझने लग गए। इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया ने जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत के शासन की बागडोर अपने हाथ में ली तब, उसकी ओर से एक विज्ञप्ति बांटी गई जिसमें यह कहा गया कि "अब भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी से हमने अपने हाथ में ले लिया है और अब मतमतान्तर के आग्रह से रहित. अपने और पराये के भेद-भाव से शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान दया और न्यायसे युक्त राज्य किया जायेगा।"

महारानी की इस विज्ञप्ति से भारतवासी फूले नहीं समाये। सर्वत्र उत्सव मनाये जाने लगे और महारानी की जय-जयकार होने लगी। उसकी प्रशंसा की बिरुदावलियां गाये जाने लगीं। यहां तक कि उसे त्रिजटा का अवतार बताया जाने लगा। तात्पर्य यह कि सभी प्रसन्न और सन्तुष्ट थे, परन्तु एक हृदय उस समय भी भीतर ही भीतर सुलग रहा था। और वह था क्रान्तिदूत दयानन्द का हृदय। जब उससे नही रहा गया तो उसने सत्यार्थ प्रकाश के सृष्टि-उत्पत्ति प्रकरण (अष्टम समुल्लास) में निम्न शब्दों में उसका प्रतिवाद कर डाला—"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये के पक्ष-पात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

पाठक विचारें क्या इन पंक्तियों को लिखते समय महर्षि के मस्तिष्क में महारानी विक्टोरिया की उक्त विज्ञप्ति नहीं कौंध रही थी ? अत: महर्षि ने उस समय देशवासियों को यह समझाना उचित समझा कि स्वराज्य का स्थान सुराज्य कदापि नहीं ले सकता। जहां तक प्रजा के जान-माल की रक्षा, सुखसमृद्धि तथा प्रजा के रंजन का प्रश्न है, महर्षि की मान्यता थी कि—"राजा प्रजा को अपने सन्तान के सदृश सुख देवे और प्रजा अपने पिता सदृश राजा और राजपुरुषों को जाने।" (स०प्र० छटा समुल्लास) इस कसोटी पर देखें तो भारतवासियों की प्रसन्नता उचित बैठनी है। पर इसका परिणाम

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारतीय स्वाधीनता के अग्रदूत

(पृष्ठ ९ का शेष)

यह हुआ कि देशवासी स्वाधीनता के भाव सर्वथा भूला बैठे। अपनी हालत से बेखबर लोगों की स्थिति यह थी जिसके बारे में किसी कवि ने कहा था कि—

अपनी हालत का तो कुछ अहसास नहीं है तुझको।
मैंने औरों से सुना है कि परेशां हूं मैं।।

महर्षि उत्तम राज्य के प्रबल पक्षपाती थे। सत्यार्थ प्रकाश का सम्पूर्ण छटा समुल्लास इसमें साक्षी है। वे ऐसी राज्य व्यवस्था के पक्षधर थे जिसमें राजा और प्रजा के परस्पर मधुरतम सम्बन्ध हों। राजा प्रजा की रक्षा और पालना करे एवं प्रजा राजा की व्यवस्था का समुचित आदर करे। महारानी की उक्त विज्ञप्ति के पश्चात् भारत में ऐसा वातावरण बनने भी लगा था कि महर्षि दयानन्द ने यह मन्त्र दिया कि—"सुराज्य स्वराज्य की स्थापनापन्न कदापि नहीं हो सकता।" महर्षि दयानन्द और आर्य समाज को इसके लिये बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा था। पर यह वास्तविकता है कि वह महर्षि दयानन्द ही थे जिन्होंने फिर से भारत में प्रसुप्त स्वाधीनता के भावों को उद्दीप्त कर दिखाया। और सत्य तो यह है कि हैनरी कैम्पबेल बेनरमेन से वर्षों पूर्व महर्षि ने उक्त शब्दावली लिखकर संसार को बता दिया कि सुराज्य स्वराज्य का स्थानापन्न कदापि नहीं हो सकता। उस समय जब स्वदेशीय राज्य की बात कहना अपने को घोर संकट में डालने से किसी प्रकार कम न था, महर्षि दयानन्द ने बड़े ही निर्भीक भाव से उक्त बात कह डाली। तभी स्वामी वेदानन्द जी महाराज को भी उनके सम्बन्ध में लिखना पड़ा कि—"इस पवित्र वाक्य का गौरव तब और भी अधिक भासने लगता है, जब हमें यह ज्ञात होता है कि यह वाक्य उस समय लिखा गया था जब दुर्दान्त अंग्रेज शासकों के विरुद्ध बोलना मृत्यु को निमन्त्रण देना था। ग्रन्थकार (महर्षि दयानन्द) की निर्भीकता का आभास मिल जाता है। दयानन्द को जो लोग वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन का सूत्रपात करने वाला कहते हैं, वे निराधार नहीं कहते हैं।" (द्रष्टव्य सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव, पृष्ठ ७) स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का यथार्थ कथन है कि—"स्वामी दयानन्द जी महाराज ने स्वराज्य और स्वायत्त शासन के सार-मर्म के कुछ एक सूत्र और अति स्पष्ट सूत्र सत्यार्थ प्रकाश में उस समय लिखे थे जब यहां जातीय महासभा का जातकर्म भी नहीं हुआ था, शासन सुधारवादियों ने स्वराज्य शब्द का स्वप्न नहीं देखा था।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश)

अन्त में हम यही कहेंगे कि महर्षि दयानन्द स्वराज्य के मन्त्र-दाता ऋषि और भारतीय स्वाधीनता के अग्रदूत थे। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में श्रीमती ऐनी बीसेन्ट ने महर्षि की इसी भूमिका को देखते हुए उन्हें निम्न शब्दों मे श्रद्धाञ्जलि दी थी "जब स्वराज्य मन्दिर बनेगा तो उसमें बड़े-बड़े नेताओं की मूर्तियां होंगी और सबसे ऊंची मूर्ति दयानन्द की होगी।" (अन्तराष्ट्रीय स्मारिका, १९७२, पृष्ठ २८) वस्तुतः महर्षि दयानन्द भारतीय स्वतन्त्रता के अग्रदूत थे।

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज विलसाद गार्डन दिल्ली में श्री विश्वमित्र साहनी प्रधान, श्री रामचन्द्र मन्त्री, श्री कृष्णलाल आहूजा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली में श्री शिव भगवान लाहोटी प्रधान श्री सुरेन्द्र बृद्धिराजा मन्त्री, श्री जितेन्द्र खरबन्दा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर मे श्रीमती शारदा गुप्ता प्रधान, श्री कृष्णकुमार सोनी मन्त्री, श्री लक्ष्मी स्वरूप जारो कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली मे श्री मोहिन्द्र प्रताप प्रधान, श्री प्राणनाथ घई मन्त्री, श्री अर्जननाथ भल्ला कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज कलकत्ता मे श्री सीताराम आर्य प्रधान श्री श्रीराम आर्य मन्त्री, श्री विन्देश्वरीप्रसाद जायसवाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज नौरोजी नगर नई दिल्ली मे श्री स्वदेश कुमार प्रधान, श्री मनोहरलाल चौधरी मन्त्री श्री राजीव कपूर कोषाध्यक्ष चुने गए।

चूड़ा कर्म संस्कार

आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नै०) के सदस्य श्री जयन्तकुमार के सुपुत्र का चूडाकर्म संस्कार वैदिक रीति से श्रीकृष्ण आर्य, पुस्तकाध्यक्ष, आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी (नै) उपमन्त्री आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कुमाऊं एवं निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के पौरोहित्य में कराया गया।

—श्रीकृष्ण आर्य

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजीपुर मे श्री रामप्रसाद आर्य प्रधान, श्री राजनाथसिंह मन्त्री श्री नन्दकिशोर वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज ध्रुर्वा रांची में श्री रमेशचन्द्र नाग प्रधान, श्री सूर्यदेव चौधरी मन्त्री, श्री शिवदीपसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज केराकत जौनपुर मे श्री विश्वनाथप्रसाद आर्य प्रधान, श्री बैजनाथ प्रसाद आर्य मन्त्री, श्री रामनारायण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज ऋषिकेश में श्री भारतभूषण वालो प्रधान, श्री श्री राजेन्द्र शर्मा मन्त्री, श्री वीरेन्द्रकुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

सामवेद पारायण महायज्ञ

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार सभा एव वैदिक सत्सग समिति के संयुक्त तत्वावधान में १ अगस्त से ८ अगस्त तक सायंकाल ३ १० से ६-०० बजे तक यज्ञधाम H-२८ जंगपुरा विस्तार नई दिल्ली में सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन श्रीमती ऊषा शास्त्री के ब्रह्मत्व मे किया गया। इस अवसर पर महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय एवं वैवाहिक मिलान सम्बन्धी सहायता केन्द्र का उद्घाटन भी किया गया।

वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में चारों वेदों का पारायण

८ श्रीराम रोड सिविल लाइन्स दिल्ली मे वेद सप्ताह के उपलक्ष्य मे चारों वेदों का पारायण २३ अगस्त से १ सितम्बर तक स्वामी जीवनानन्द जी तथा श्री विद्याव्रत जी शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा : इस अवसर पर विद्वानों तथा विदुषी बहनो के भजन तथा प्रवचन साय ३ बजे से ५ बजे तक होगे। प्रतिदिन प्रात: ८ बजे से ५ बजे तक वेद-पाठ का कार्यक्रम रखा गया है। अधिक से अधिक संख्या में पहुच कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एस० ११०४९/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-८-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R. N. 626/27 Licansed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.SO.on 10;11-8-1995

वेदगोष्ठी का आयोजन

श्री वैद्य राम गोपाल शास्त्री स्मारक समिति एवं संस्कृत संगम, मिराण्डा हाउस आपको चौबीसवीं वेदगोष्ठी में सादर निमन्त्रित करते हैं। विषय—वेद भाष्यकारों में महर्षि दयानन्द का स्थान, वक्ता—डा० सत्यकाम वर्मा (पूर्वकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय), अध्यक्ष—डा० (श्रीमती) किरण दातार (प्रधानाचार्या, मिराण्डा हाउस), दिनांक-समय-मंगलवार, २२ अगस्त १९९५, अपरान्ह ३ बजे, स्थान—संगोष्ठी (सेमिनार) कक्ष, मिराण्डा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७। व्याख्यान के पश्चात शंका समाधान एव जल पान।

एक शिक्षित मुस्लिम युवती व युवक ने वैदिक धर्म अपनाया

कानपुर। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त २३ वर्षीय मुस्लिम युवती की उसकी इच्छानुसार शुद्धि करके वैदिक धर्म (हिन्दू-धर्म) में दीक्षित किया उसका नाम अफसाना से आशा रखा गया तथा उसका विवाह एक हिन्दू युवक हेमन्त कुमार से वैदिकरीति से कराया। इसी प्रकार श्री देवीदास आर्य ने एक २५ वर्षीय शिक्षित युवक को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। उसका नाम मो० अतीक से अशोक कुमार रखा गया।

प्रवेश प्रारम्भ

प्रिय आर्य बन्धुओ! आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि आपके प्रिय गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल मे नई शिक्षा नीति के अनुसार इस वर्ष एक जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। यह संस्था गंगा के सुरम्य तट पर स्थित है। जहा मा भागीरथी कल कल निनाद करती ऋषियो की वेदवाणी सुनाती हुई वह रही है। यहा की अपनी अलग विशेषताएं है।

अतएव भारतीय सस्कृति के अनुयायी महानुभावों से अपील की जाती है कि आप अपने बच्चो को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करें तथा इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठावें।

—प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल मुजफ्फरनगर

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

—आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली में वेद सप्ताह एव श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन १०-८-९५ से १८-८-९५ तक समारोह पूर्वक किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री ओमदत्त आर्य तथा पं० शोभाराम जी आर्य के उपदेश तथा भजन होंगे प्रतिदिन प्रात: ३ बजे से होने वाले यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री तथा यज्ञ अधिष्ठाता आचार्य सत्यवीर शर्मा जी होंगे।

—आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग नई दिल्ली में ७ अगस्त से १३ अगस्त तक उत्साह पूर्वक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर वैदिक ऋचाओ द्वारा यज्ञ प्रात: ९ बजे से ८ बजे तक प्रो० उत्तमचन्द जी शरर के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा तथा पं० सत्यपाल जी मधुर से मधुर भजन होंगे। रात्रि में प्रतिदिन प्रो० उत्तमचन्द जी शरर के वेद प्रवचन होंगे।

—आर्य समाज मधुरिया मो० बिहार में १०-८-९५ से १८-८-९५ तक वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया है इस अवसर पर श्री ओमानन्द सरस्वती योगतीर्थ अलीगढ़ के उपदेश तथा सत्यप्रकाश आर्य के मधुर भजन होंगे।

—आर्य समाज लोअर परेल बम्बई में १० अगस्त से १७ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया गया है। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा इस अवसर पर उपदेश तथा भजन होंगे। अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सीताराम केसरी

कानपुर। केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी ने अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर शोषित समाज को जो हिन्दू धर्म को छोड़ने का मशवरा दिया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उनके दिमाग का सन्तुलन बिगड़ गया है, ऐसा व्यक्ति हिन्दू समाज के लिए कलंक है। उनका हर स्थान पर बहिष्कार होना चाहिये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि सीताराम केसरी कांग्रेस के नेता हैं और स्वतन्त्रता के बाद आज तक देश में लगभग कांग्रेस का ही शासन रहा है, ऐसी स्थिति में यदि शोषितो का शोषण सरकार समाप्त नही कर पाई तो इसके लिये उत्तरदायी उनकी ही पार्टी है, हिन्दू धर्म नही।

वेद प्रचार एवं संस्कार हेतु सम्पर्क करें

'गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पुराने स्नातक सेवा निवृत्त हिन्दी सस्कृत प्राध्यापक अमृतपाल शास्त्री, एम. ए. (हिन्दी-सस्कृत) साहित्य रत्न ओ. टी. प्रभाकर. विद्याभास्कर अब अम्बाला आ. ब. से निम्नलिखित पते पर आ चुके हैं। अत. जो भी आर्य समाजें वैदिक सस्कारों, पारिवारिक सत्सगो, साप्ताहिक सत्सगों, उत्सवो एवं वेद सप्ताह जैसे शुभ अवसरों पर बुलाना चाहें तो समय से पूर्व लिखकर अपनी तिथि नियत करवालें।

पता—अमृतपाल शास्त्री एम. ए.
जे० ३४, सं० १४ नाग्रह, जिला गाजियाबाद (उ. प्र.)

आर्य जनता सावधान!!!

सभी आर्यजनो को यह सूचित किया जा रहा है कि कोई व्यक्ति वैदिक धर्म का दिन रात प्रचार व प्रसार करने वाले आर्य संन्यासी ब्रह्मचारी तथा पूर्ण जीवन देकर काम करने वाली ब्रह्मचारिणी व संयमी बहिनो के विरोध में प्रतिदिन विभिन्न पर्चे टाइप करवा कर बांट रहा है। जिनमे बहुत असभ्य व अश्लील भाषा मे असम्भव आक्षेप व कटाक्ष किए गए हैं। अनेक लोगो को मिल रहे पत्रों मे एक विद्वान को दूसरे के प्रति भडकाया जा रहा है। लगता है इस ब्रह्मद्वेषी व्यक्ति की योजना आर्य समाज के तेजस्वी ओजस्वी विद्वानो व साधक सन्यासियो को परस्पर लडाकर आर्य जनता में उनके प्रति घृणा पैदा करके आर्य समाज के कार्य को ठप्प करना है। मेरा आर्य समाज के विद्वान सन्यासियो ब्रह्मचारियो व कार्यकर्ताओ से अनुरोध है कि वे इस व्यक्ति के षडयन्त्र से सावधान रहकर परस्पर एक दूसरे पर संशय न करें और आर्यजनता से भी अनुरोध है कि ऐसी झूठी चरित्र व धन सम्बन्धी फैलाई जा रही अफवाओं को अनसुना करके आर्य विद्वानो व तपस्वी साधुओ के प्रति पूर्ण श्रद्धा बनाए रखे जिससे कि देवदयानन्द की वेदवाटिका सदा हरी भरी रहे और तेजस्वी ओजस्वी संन्यासी व ब्रह्मचारी प्रचारक सदा आगे बढते हुए ईश्वर के ध्यान वेद के ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठाम सस्कारी सतान व राष्ट्रहित बलिदान के पांच सूत्री कार्यक्रम से कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के नाद को सार्थक कर सके।

निवेदक—आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता
संस्थापक-उदगीथ साधना स्थली हिमांचल

प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष · ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक २७) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ भाद्रपद कृ० १० सं० २०५२ २० अगस्त १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रयास सफल

स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन समारोह मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना द्वारा श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता में सम्पन्न

दिल्ली १४ अगस्त। दिल्ली की भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा जी०टी० रोड श्यामलाल कालेज शहादरा से गाजीपुर ग्राम तक के मार्ग का नामकरण "स्वामी दयानन्द मार्ग" का उद्घाटन माननीय श्री मदनलाल जी खुराना मुख्यमन्त्री दिल्ली के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने की।

मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना का आगमन प्रातः १० बजे जी०टी० रोड पर हुआ। वहां पर सभा प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव सभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, चौ लक्ष्मीचन्द, श्री बैकुण्ठलाल शर्मा "प्रेम" (सांसद), स्वास्थ्य मन्त्री डा० हर्षवर्धन, आदि सरकारी स्टाफ के साथ उपस्थित थे। विशाल जन समूह के बीच उद्घाटन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त समीप ही विशाल जनसभा में मुख्यमन्त्री महोदय तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति पहुंचे। प्रमुख वक्ताओं में सभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, विधायक श्री मदनलाल बावा, सांसद श्री बैकुण्ठलाल शर्मा "प्रेम" दिल्ली के स्वास्थ्यमन्त्री श्री हर्षवर्धन, आदि ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए समारोह के अध्यक्ष पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो स्वर्णिम इतिहास की रचना की थी उसे यहां पर कहने की आवश्यकता नहीं है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता समस्त मानवमात्र के लिए समान कानून एवं समान नागरिक संहिता बनाये जाने की है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संविधान के जिस उज्ज्वल स्वरूप को प्रस्तुत किया था आज हमारे राजनेता उस पर आचरण न करके नई धाराओं के माध्यम से भारतीयों को विखण्डित करने का षड़यन्त्र रच रहे हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति, सभ्यता को विखण्डित करने के जो प्रयास चल रहे हैं उसकी पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।

श्री मुख्यमन्त्री जी ने इस अवसर पर कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती हमारे महापुरुषों की श्रेणी के सबसे उच्च महापुरुष हैं जिन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता तथा मानव समाज के लिए जो महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं उनको आप सब अच्छी तरह जानते हैं। इस मार्ग का नाम "स्वामी दयानन्द मार्ग" इसलिए रखा गया है कि आने वाली पीढ़ी अपने बुजुर्गों से इस नाम को पढ़कर उनके बारे में जानकर प्रेरणा लें। उन्होंने कहा कि वह जमाने लद गये जब सड़कों तथा सार्वजनिक स्थलों के नाम विदेशियों के नाम पर रखे जाते थे। अब दिल्ली की हर सड़क, अस्पताल तथा सार्वजनिक स्थलों के नाम हिन्दू महापुरुषों के नाम पर रखे जायेंगे। उन्होंने यमुना पार की जनता को आश्वासन दिया कि दिल्ली के विकास में इस क्षेत्र को प्रमुखता दी जायेगी उन्होंने कड़कड़डूमा चौक का नाम "महर्षि दयानन्द चौक" घोषित किया। तथा इस मार्ग को सुन्दर बनाने के लिए सम्बन्धित विभाग को आदेश जारी किये।

इस समारोह को सफल बनाने में दिल्ली की जनता ने अत्यधिक उत्साह दिखाया इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। तथा साथ ही दिल्ली प्रशासन के श्री इन्द्रमोहन सिंह श्री कृष्ण बिहारी, श्री राजोरिया जी, श्री जे० के० कपूर साहब तथा उनका समस्त स्टाफ भी बधाई का पात्र है, जिनके अनथक प्रयास से यह समारोह सम्पन्न हुआ। श्री चन्द्रमोहन जी चीफ इन्जीनियर ने समारोह की पूर्ण सफलता पर धन्यवाद प्रकट किया।

अन्त मे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्री कृष्ण जी आप्त पुरुष थे

"देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है । उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है । जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं ।—जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती ।" —महर्षि दयानन्द

मानवीय आदर्शों के प्रतीक योगिराज कृष्ण

भारत के इतिहास में अकेले कृष्ण ही एक ऐसे युग पुरुष के रूप मे अवतरित हुए जिनमे विभिन्न मानवीय आदर्शों ने परम विकास को प्राप्त किया था । लोक और परलोक, अध्यात्मिकता और सासारिकता, राजनीति और व्यावहारिकता इन सभी को समन्वय के सूत्र मे गूंथना कृष्ण का ही काम था ।

जिस युग मे उन्होने जन्म लिया था, उस समय देश विभिन्न राजनीतिक इकाइयों मे बंटा हुआ था । एक केन्द्रीय शासन के अभाव मे सर्वत्र अराजकता थी, ऐसे समय मे कृष्ण ने अपूर्व नीति का प्रदर्शन करते हुए पाण्डवो के माध्यम से सभी अनाचारी शासको का मूलोच्छेद किया तथा धर्मराज युधिष्ठिर के नेतृत्व मे आदर्श शासन सत्ता की स्थापना की ।

तत्कालीन सामाजिक समस्याओ के प्रति भी कृष्ण पूर्णतया जागरूक थे । उनका युग सामाजिक पतन तथा नैतिक मूल्यो के ह्रासका काल था । ब्राह्मण और क्षत्रियो मे उनके निर्धारित गुणो की कमी थी । भीष्मदेव जैसे मनस्वी दुर्योधन की सभा मे निर्वीर्य बन गए थे कर्ण को इसलिए अपमानित होना पडा क्योकि वह सूत-पुत्र था । एकलव्य को भील पुत्र होने से कितना तिरस्कार सहना पडा था ।

सामाजिक पतन के ऐसे युग मे जन्म लेकर कृष्ण ने जाति के अ कार को समाप्त करने की दिशा मे पहल की स्वय यादव राजकुल से उत्पन्न होने पर भी उन्होने सीधे सादे जीवन को वरीयता दी ।

वस्तुत कृष्ण का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा बहुआयामी है । यदि वे स्वय सुदर्शनचक्र धारण कर शिशुपाल जैसे अत्याचारी का प्राण हरण करने के लिए तत्पर दिखाई देते हैं तो महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ मे किसी भी पक्ष को ग्रहण करने मे अपनी तटस्थता प्रकाशित करने मे भी उन्हे कोई सकोच नही होता । पाण्डव पक्ष को उनका नैतिक एव बौद्धिक समर्थन ही मिला था । कृष्ण का नैतिक समर्थन पाण्डवो के लिए अधिक मूल्यवान सिद्ध हुआ । तभी तो युद्ध के आरम्भिक क्षणो मे ही अर्जुन के मोह को दूर करने मे उनके द्वारा प्रदत्त गीतोपदश ही सहायक सिद्ध हो सका ।

खेद है कि विगत कई शताब्दियो से हम कृष्ण के राजनीतिक, अध्यात्म मार्ग के पथिक, उपदेशक, समाज निर्माता तथा राष्ट्र के उद्धारक व्यक्तित्व को भुला बैठे हैं । हम उनके गोपीवल्लभ, राधारमण तथा मुरलीधर रूप को तो स्मृति पथ मे सुरक्षित रख सके परन्तु सुदर्शनचक्रधारी, गीतोपदेशक, योगिराज कृष्ण को हमने विस्मृत कर दिया । लोक मगल का विधान करने वाले कृष्ण का यह स्वरूप निश्चय ही आधुनिक युग मे हमारे लिए प्रेरणादायी सिद्ध हो सकता है ।

स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन

(पृष्ठ १ का शेष)

ने "महर्षि दयानन्द सरस्वती" को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना से कहा कि सत्ता तो आनी जानी हैं, आप जनता के लिए यदि अच्छे कार्य करेंगे तो जनता उन्हें सदा स्मरण करती रहेगी । उन्होने कहा कि स्वतन्त्रता की लड़ाई में ८० प्रतिशत आर्य समाजियों ने हिस्सा लिया था और हम आर्य समाजी आज भी अपने संकल्पों पर अडिग हैं ।

समारोह में उपस्थित विशिष्ट व्यक्तियों में प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा, मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी, गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य हरिदेव जी, श्री विश्वम्भर दयाल भाटिया आदि उपस्थित थे । इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सार्वदेशिक सभा के सदस्य तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता चौधरी लक्ष्मीचन्द का प्रयास सराहनीय है, जिनके प्रयास से यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

हे ! कृष्ण तुम्हें वन्दन है

भारत के प्रागण मे तुमने,
मानवता की ज्योति जलायी ।
द्वापर युग के अहे प्रणेता ।
तुमने दानव वृत्ति भगायी ।
मोह ग्रस्त अर्जुन को तुमने,
युद्ध हेतु कटिबद्ध किया ।
जन-जन को हे कृष्ण ! तुम्ही ने,
धर्म पन्थ प्रतिबद्ध किया ।
'कर्म करो, फल की आशा तज'
का मधु तुमने पाठ पढ़ाया ।
'कस' तथा 'शिशुपाल' सदृश का,
वधकर, भूमि पवित्र बनाया ।
तुमने दिया धरित्री को शुचि,
गीता का अमृत उपदेश ।
दिव्य तुम्हारे सत्कर्मों से,
गौरवमण्डित हुआ स्वदेश ।
अग्रदूत बन महाक्रान्ति के,
छोडा था भू पर अभियान ।
जिससे आए महिमण्डल पर,
सुख-समृद्धि का नवल विहान ।
भारत के हे भाग्य विधाता ।
जन्म दिवस पर अभिनन्दन है ।
दीन दलित के निर्भय त्राता ।
युग का आज तुम्हें वन्दन है ॥

सार्वदेशिक सभा के लेखाकार श्री दिनेश्वरनाथ त्रिपाठी दुर्घटनाग्रस्त

श्री दिनेश्वरनाथ त्रिपाठी जो कि सार्वदेशिक सभा के लेखाकार है पिछले दिनो कार्यालय से घर जाते समय उनका रिक्शा एक जीप से टकरा जाने के कारण वह गम्भीर रूप से घायल हो गए हैं, उनके दोनों पैरो की हड्डिया टूट गई हैं और अब वह घर पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं । परमात्मा से उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना है ।

कैसे हम भूल गए अगस्त क्रांति को

—महेश चन्द्र शर्मा—

फिर आ गया ९ अगस्त। जब भी आता है, तो ९ अगस्त १९४२ की याद आ जाती है, जिस दिन 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू हुआ था। उस आन्दोलन की याद आज भी उन दिलों मे ताजा है, जिन्होने या तो स्वाधीनता सग्राम मे हिस्सा लिया अथवा स्वाधीनता के अरुणोदय पर भारतवासियो के दिलों की उमगों को महसूसा या वे जो भारत के स्वाधीनता सग्राम के इतिहास से काफी प्रभावित रहे। लेकिन एक बात, जो मन को कचोटती है, वह यह है कि नई पीढ़ी इतनी जल्दी अपने इतिहास के उस स्वर्णिम अध्याय को कैसे भूल गई ? उसके लिए यह गर्व और सुकून की बात है कि उसने आजाद भारत मे जन्म लिया परन्तु स्वतन्त्रता सग्राम मे जिन देशभक्तों, सिपाहियो, वीर सपूतो और महापुरुषो ने भाग लिया और देश को आजाद कराया, उन सबको याद रखने और उनके द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करने मे युवा पीढ़ी कैसे और क्या चूक गई ?

अगस्त क्रांति के सन्दर्भ मे मन को जो बात सबसे ज्यादा कचोटती है, वह भावनात्मक स्तर पर है क्योंकि 'भारत छोड़ो' आदोलन एक भावनात्मक आदोलन था। जब अग्रेजों ने सभी बड़े नेताओं को जेल मे बन्द करके उस आदोलन को विफल करने और 'अग्रेजो—भारत छोड़ो' के नारे को दबाने की पूरी कोशिश की थी तो जनता ने इस आदोलन की बागडोर अपने हाथ मे ले ली थी और जी जान से इस आदोलन को सफल बनाने मे जुट गये।

आज हम १९४२ के आदोलन का जिक्र करते है तो सिर्फ इसलिए नही कि इस आदोलन ने अग्रेजो को देश से बाहर खदेड़ने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि इस आदोलन मे जो बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण रही, वह है उस समय की जनता, खासकर युवा वर्ग का चरित्र, उनका आत्मानुशासन और नेताओ के प्रति उनकी आस्था।

इस आदोलन मे यह बात भी खुलकर सामने आ गई कि तब नेताओ का, खासकर गाधी जी का, जनता मे कितना गहरा प्रभाव था कि वे सभी जेल में थे और उनके अनुयायियो और समर्थकों ने विना कोई निर्देश या सदेश प्राप्त किये अपने नेताओ के सिद्धातो के आधार पर ही आदोलन को आगे बढ़ाया। यह आदोलन पूरी तरह अहिंसक था। हालाकि थोड़ी-बहुत तोड़-फोड की घटनाए हुई, किन्तु फिर भी आम जनता का आदोलन अहिंसक ही था। यह एक विचित्र सयोग ही था कि एक तरफ जनता में स्वतन्त्रता की तीव्र तड़प थी और दूसरी तरफ इतना आत्मानुशासन था कि स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अपनाये गये सिद्धातो का कही उल्लघन भी नही हुआ।

लेकिन आज परिस्थितिया इतनी बदल चुकी है कि ये तमाम बातें किसी बीते युग सी लगती है। तो लगता है मानो मूल्य ही बदल गये। प्राथमिकताएं परिवर्तित हो गई। इन ५३ वर्षो मे हमने बहुत कुछ पाया है, किन्तु इन वर्षो मे हमने जो खोया है, वह पाने से अधिक मूल्यवान है। इस दौरान ही हम गाधीवाद को ही नही, बल्कि गाधी को भी भूलते जा रहे है।

आज देश भक्ति की भावना ही विलुप्त होती दिखाई दे रही है। आज पद, प्रतिष्ठा और पैसा इन सबका एक ऐसा माया जाल फैला है कि देशभक्ति का मतलब देश के लिए मर मिटना ही नहीं होता, बल्कि देश की तरक्की के बारे में सोचना, देश की एकता और अखण्डता को कायम रखना कानूनो का पालन करना, संकट मे देशवासियो की मदद करना आदि भी होता है, किन्तु आज भारत की जनता देशभक्ति के ये सभी मायने भुला बैठी है। इस लिए ५३ वर्षो के इस अन्तराल में दंगा फसाद, हड़तालें, भाषाई विवाद, जातिगत दंगो, हिंसा, हत्या, भ्रष्टाचार, कामचोरी, लालफीताशाही, रिश्वतखोरी आदि सभी ने समाज मे अपनी जड़ें इतनी गहरी जमा ली है कि इन सभी कुरीतियों को दूर करके देश को तरक्की की राह पर ले आना एक स्वप्न सा लगता है।

इसीलिए आज के दिन उन कारणो पर विचार करना जरूरी लगता है जिसके प्रभाव से इतना बड़ा बदलाव आया है। यह अध्ययन का एक विषय है कि जो कौम अपनी आजादी के लिए सिर पर कफन बाधकर घूम रही थी, आज वही कौम व्यापारिक और भौतिक युग की चमक-दमक से इतनी प्रभावित क्यों हो रही है। उसकी त्याग की भावना कहा चली गई ? क्यों आज की नई पीढ़ी भारत मे जन्म लेने और यहा रहने मे गौरव की बात नही मानती है, क्योकि उस पर विदेशी मुल्को की चमक-दमक हावी है ?

तो इसका सबसे बड़ा कारण हमारी आज की भ्रष्ट राजनीति है। जब तक राजनीति देशसेवा का एक माध्यम बनी रही, लोग त्याग-तपस्या की राजनीति करते रहे और राजनीति मे आदर्शों और सिद्धातो का बोलबाला रहा तब तक जनता भी सही राह पर चलती रही, लेकिन जैसे ही राजनीति का उद्देश्य बदला और राजनीति ने पेशे का रूप अख्तियार करने के साथ-साथ अपराध से नाता जोडा, वैसे ही जनता की प्रतिक्रिया मे भी बदलाव आया। आज जनता सही गलत का फैसला भी नही कर पा रही है हालाकि

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महाराष्ट्र में गोहत्या निषेध विधेयक पारित

बम्बई, ९ अगस्त। गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी महाराष्ट्र पशु संरक्षण (संशोधन) विधेयक कल आधी रात के बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष मे तीखी नोक झोक और नारे बाजी के बीच पारित कर दिया गया। यह विधेयक दो अगस्त को वापस ले लिया गया था और इसे सदन मे फिर से पेश किया गया।

विधान सभा अध्यक्ष दत्ता नलवड़े ने सदन मे व्यवस्था कायम होने मे मुश्किलो को देखते हुए बैठक तीन बार स्थगित की और जब चौथी बार बैठक शुरू हुई तो उन्होने हगामे के बीच जल्दबाजी मे विधेयक को पारित घोषित कर दिया।

इससे पहले गोहत्या (निषेध) विधेयक पर चर्चा के दौरान भारतीय जनता पार्टी के सदस्य राज पुरोहित के बयान के दौरान श्री आनन्द राव देवकाते की कथित अपमान जनक टिप्पणी के कारण हगामे की स्थिति पैदा हो गई। नारे बाजी के बीच अध्यक्ष को सदन की बैठक तीन बार स्थगित करनी पडी। श्री पुरोहित ने महात्मा गाधी का हवाला देते हुए गोहत्या के प्रखर विरोध का जिक्र किया था।

श्री देवकाते की टिप्पणी से क्षुब्ध भाजपा–शिवसेना के सदस्य अपनी सीट से खड़े हो गये और श्री देवकाते से माफी मागने को कहने लगे। जब श्री देवकाते ने माफी नही मागी तो सत्ता पक्ष के सदस्य उनके निष्कासन की माग करने लगे। सत्ता पक्ष के सदस्यो की माग न पूरी होने पर उन्होने नारेबाजी शुरू कर दी और सदन के बीचोबीच इकट्ठे हो गये। बाद में संवाददाताओ से बात चीत करते हुए मुख्यमन्त्री मनोहर जोशी ने कहा कि श्री देवकाते ने माफी नही मागी थी। इसलिए भाजपा–शिवसेना सदस्यों का विरोध दर्ज करना जायज था और इसमें कोई गलती नहीं थी।

श्री जोशी ने कहा कि इस विधेयक का पारित होना ऐतिहासिक अगस्त क्राति की वर्ष गाठ पर राज्य मे समान नागरिक संहिता लागू होने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

विधान सभा विधेयक संख्या २९ महाराष्ट्र पशु संरक्षण अधिनियम १९७६ में संशोधन करने के उद्देश्य से लाया गया था। यह अधिनियम राज्य में १५ अप्रैल १९७८ से लागू है।

हिन्दी दरबारी नहीं आम आदमी की भाषा

नई दिल्ली ९ अगस्त। वरिष्ठ पत्रकार एवं शिक्षाविद डा० विद्या निवास मिश्र ने कहा है कि हिन्दी राज दरबार की नहीं बल्कि जन साधारण की भाषा है। इसे पढ़ने, लिखने व बोलने में गौरव का अनुभव करना चाहिए।

डा० मिश्र ने यह उद्गार आज हिन्दी अकादमी दिल्ली के पुरस्कार वितरण समारोह में व्यक्त किए, समारोह में हिन्दी की श्रेष्ठ अव्यावसायिक पत्रिकाओं, गृह पत्रिकाओं स्मारिकाओं के सम्पादकों एवं महाविद्यालय और विद्यालयों से प्रकाशित पत्रिकाओं स्मारिकाओ में छात्र-छात्राओं की संकलित श्रेष्ठ रचनाओं के लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया।

समारोह को सांसद विजय कुमार मल्होत्रा, डा० रामलाल वर्मा, प्रो० महेन्द्र कुमार एवं पत्रकार डा० राजेन्द्र अवस्थी ने भी सम्बोधित किया। समारोह का सचालन हिन्दी अकादमी के सचिव डा० राम शरण गौड़ ने किया।

अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ भाषा कहने वालों को लताड़ते हुए डा० मिश्र ने कहा कि आज विश्व के लोग शुद्ध संप्रेषण के लिए संस्कृत का सहारा ले रहे हैं। ऐसे में अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ भाषा कहना बेमानी है। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में जो शब्द भडार है वे विश्व की किसी भी भाषा में नहीं है। उन्होंने विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की इस अवधारणा का जोरदार विरोध किया कि उच्च शिक्षा केवल अंग्रेजी में ही होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह भारतीय भाषाओं को न पनपने देने का षड़यन्त्र है। इससे सचेत रहना होगा।

उन्होंने कहा कि दूसरी भाषाओं का ज्ञान होना अच्छी बात है मगर पहले अपनी भाषा की अच्छी जानकारी जरूरी है। जो व्यक्ति अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं रखते वे दूसरों की संस्कृति और आवश्यकताओं को ठीक तरह समझ पाने में असमर्थ रहते हैं।

प्रो० मल्होत्रा ने कहा कि आज के टी०वी० वीडियो व केबल युग में पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है।

यही कारण है कि आज हिन्दी की अच्छी पत्रिकाएं बन्द होती जा रही हैं। उन्होने इसे चिन्ताजनक बताया तथा कहा कि हिन्दी भाषा को सरल बनाने के चक्कर में इसे विकृत किया जा रहा है। लोग हिन्दी मे बात तो करते हैं मगर एक वाक्य में अंग्रेजी के दस शब्द घुसेड़ देते हैं। उन्होने हिन्दी के मानकीकरण पर बल दिया :

डा० अवस्थी ने कहा कि हिन्दी की श्रेष्ठ पत्र पत्रिकाओं को एक षड़यन्त्र के तहत बन्द किया जा रहा है। दरअसल बड़े प्रतिष्ठान पत्रिकाओं के प्रकाशन में होने वाले घाटे से बचना चाहते हैं। उनकी दृष्टि सदैव लाभ पर रहती है। उन्होंने कहा कि समय के साथ-साथ सोच, चिन्तन, साहित्य सब कुछ बदलता है। इसलिए यदि आज भी हम आचार्य रामचन्द्र और मुंशी प्रेमचन्द को ही मापदण्ड मानते रहेंगे तो यह नई पीढ़ी के लेखकों, साहित्यकारों के साथ अन्याय होगा। समकालीन लोगों का भी मूल्यांकन करें।

डा० गौड़ ने कहा कि वह अकादमी के माध्यम से हिन्दी का निरन्तर विकास व प्रचार करना चाहते हैं। इस क्रम मे विद्यालयों में राम चरित मानस की सस्वर प्रतियोगिताएं, हिन्दी कविताओं की अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताए, आशुलिपि व टंकण केन्द्र, वाचनालयों की श्रृंखला जसी योजनाएं शुरू का गई। इसी क्रम में अब हिन्दी की श्रेष्ठ सेवा के लिए छात्र-छात्राओ और सम्पादकों को सम्मानित किया जा रहा है।

पुरस्कार वितरण प्रो० मल्होत्रा तथा डा० मिश्र ने किए। अव्यावसायिक पत्रिकाओं का प्रथम पुरस्कार 'अफ्रोका' के लिए उमाशकर झा को, द्वितीय पुरस्कार 'संट्रल वाणी' के लिए राज किशोर उपाध्याय को तृतीय पुरस्कार 'ऊर्जा दीप्ति' के लिए श्रवण कुमार उर्मिला को और पाँच पत्रिकाओं को विशिष्ट (सात्वना) पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्रेष्ठ रचनाओं के लिए सम्पादक व विद्यार्थी सम्मानित

डा० आशा जोशी पुरस्कृत

महाविद्यालयोय पत्रिकाओं का प्रथम पुरस्कार "जानकी" के लिए पुष्पा राही को, द्वितीय पुरस्कार "राजा" के लिए रमाशकर श्रीवास्तव को तृतीय पुरस्कार 'श्यामा' के लिए आशा जोशी को और विशिष्ट (सात्वना) पुरस्कार 'रश्मि' के लिए दिनेशप्रसाद नोटियाल को दिया गया।

विद्यालय की पत्रिकाओं का प्रथम पुरस्कार 'समर्थ सन्देश' के लिए धर्मेन्द्र गुप्ता को, द्वितीय पुरस्कार 'विवेकांजलि' के लिए खुशी राम को, तृतीय पुरस्कार 'नवचेतना' के लिए अलका मल्होत्रा को और विशिष्ट पुरस्कार 'साहित्यिक किरणें' के लिए श्रीमती प्रकाशी कुमारी को दिया गया। प्रथम पुरस्कार विजेता को ५१०० रुपये, द्वितीय को ४१०० रुपये, तृतीय को ३१०० रुपये विशिष्ट पुरस्कार विजेताओं को २१०० रुपये (प्रत्येक को) नकद दिए गए।

संस्कृत भारत की आत्मा : डा० कर्णसिंह

नई दिल्ली १ अगस्त। डा० कर्णसिंह ने क्षोभ प्रकट किया कि हमारी शिक्षा पद्धति में सस्कृत का धीरे धीरे लोप होता जा रहा है।

डा० सिंह संस्कृत दिवस समारोह में बोल रहे थे। इसका आयोजन मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, राष्ट्रीय सस्कृत संस्थान एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सस्कृत विद्यापीठ ने संयुक्त रूप से किया था कार्यक्रम का सयोजन पूर्णतया सस्कृत में हुआ।

अध्यक्षीय भाषण में डा० सिंह ने सस्कृत को भारत की आत्मा बताया। उन्होंने अनुरोध किया कि हजारों वर्षो से सस्कृत ने हमारी संस्कृति की रक्षा की, अब समय आ गया है कि हम संस्कृत की रक्षा करें।

डा० सिंह के अनुसार रक्षा बन्धन के अवसर पर यह दिवस

(शेष पृष्ठ १० पर)

धर्म और राजनीतिक के महान् प्रचारक श्रीकृष्ण

"विद्यावाचस्पति"

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी फिर आ रही है। अठारह अगस्त को समस्त भारत में श्रीकृष्ण का जन्मदिन धूमधाम से मनाया जायेगा। प्रायः देखा जाता है कि जब भी किसी महान् पुरुष का जन्मदिन मनाया जाता है तो उनके भक्त, अनुचर आदि अन्ध विश्वास से प्रेरित होकर उनके गुण गान करने लगते हैं। परन्तु यह समझने का प्रयास नहीं करते कि वे क्या थे? और हमे क्या दिया? क्या उपदेश दिया था? श्रीकृष्ण जी का हमारे इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगी कि श्री रामचन्द्र जी और श्री कृष्ण जी के इर्द-गिर्द में सारी संस्कृति घूमती है। जब हमने किसी विदेशी या दूसरे धर्म के लोगो से अपनी संस्कृति की बात करनी हो तो प्रायः इन दो महान् पुरुषों का उदाहरण ही हम दिया करते हैं। हम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को एक आदर्श के रूप में और श्रीकृष्ण को योगिराज के रूप में प्रस्तुत करते हैं। परन्तु इनका महत्व इसी के साथ समाप्त नहीं हो जाता, विशेषकर श्री कृष्ण जी का। वे एक ऐसे महान् पुरुष थे जिनमे अनेक गुण पाये जाते हैं।

श्री कृष्ण महाराज एक महान् योगी थे, तभी उन्होने इस योग के तत्व गीता के माध्यम से कहे हैं। वह महान् तपस्वी एव त्यागी थे अतः उनकी अपनी कोई इच्छा या कामना नही थी। उन्होंने जो कुछ किया दूसरो की भलाई के लिये किया। वे वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करना चाहते थे। इसलिये तो उन्होने गीता के माध्यम से धर्म को लोगों के सामने रखा। वे धर्म और अधर्म क्या है भली भांती जानते थे।

धर्म की दुहाई देने वालों को वे पांडवों के साथ हुए अत्याचार और अन्याय का वर्णन करके उन्हें शान्त करते थे। जहां उन्होंने कर्म, भक्ति, ज्ञान और धर्म के तत्वों का भी प्रचार एवं प्रसार भी किया। वे समस्त भारत को एक सूत्र में बांधना चाहते थे। उस समय भी भारत में छोटे-छोटे अनेकों राजा थे जो बार-बार परस्पर लड़ा करते थे। उन्होंने शक्तिशाली पाण्डवो के माध्यम से सभी राजाओं को एक बार अपनी नीति से एक सूत्र मे बांध दिया था, जरासन्ध जैसे शक्तिशाली राजा को अपनी नीति से खून का एक कतरा भी बहाये बिना ही मौत के घाट उतरवा दिया था। शिशु-पाल जैसे घमण्डी राजा का सर बड़ा नीति से स्वय उड़ा दिया था। वे युद्ध नही चाहते थे परन्तु दुर्योधन की राज्य प्राप्ति की लालसा ने उनके सारे किये कराये पर पानी फेर दिया। वे प्रसन्न थे कि पांडवों का राजसूययज्ञ सफल हो गया और भारत एक सूत्र में बन्ध गया, परन्तु उन्हे पता नही था कि धृतराष्ट्र और दुर्योधन स्वार्थ मे इतने अन्धे हो गये हैं, वे सभी कुछ मटियामेट करके रख देंगे।

अन्त मे कौरवों और पाण्डवो को युद्ध करने के लिये अपने सामने खड़ा पाते है और समझते हैं कि पाण्डवो के साथ अन्याय हो रहा है तब वे अपनी नीति से ही अर्जुन के सारथी बन जाते हैं और महान् योद्धा भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, महावीर कर्ण, जय-द्रथ, दुर्योधन आदि को मरवा देते है। सारे युद्ध मे श्रीकृष्ण की नीति ही दिखाई देती है। अन्त मे विजय धर्म की तो हुई परन्तु वह विजय बहुत ही महंगी पड़ी है। देश के बड़े-बड़े योद्धा महान् विद्वान, तपस्वी और ज्ञानी लोग भी इस युद्ध की आग से बच न सके। परन्तु इस युद्ध ने भारत को पीछे धकेल दिया।

इस प्रकार योगिराज श्रीकृष्ण का जीवन जो महाभारत में मिलता है वह बहुत ही प्रेरणादायक है: उनका जन्म आज से लग-भग पांच हजार से अधिक वर्ष पूर्व ही भाद्रपद- (श्रावण) मास की अष्टमी के दिन मथुरा की कारागृह में देवकी की कोख से हुआ। उनके जन्म पर उनके माता-पिता बन्धन विमुक्त हो गये थे, साथ-साथ जरासन्ध का भी विमुक्त हो गया था। कई अत्याचारी राजाओं को समाप्त करवा कर वहां की प्रजा को बचाया। उनका जन्मदिन कृष्णाष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है। जो भारतवर्ष में आज भी बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आओ इस बार भी १८ अगस्त को यह दिन मनाते हुए उस महान् तपस्वी के जीवन से कुछ प्रेरणाएं लेकर हम भी वर्तमान भारत की स्थिति सुधारने का प्रयास करें तो अच्छा होगा।

युग पुरुष श्रीकृष्ण

कहीं अवतार लेकर के न खुद परमात्मा आये।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आये॥

मिटाये कंस की अनुवृत्तियों का क्रूर अनुशासन।
करें निर्माण नवयुग का धरा पर धर्म संस्थापन॥
डसें जो कालिया बनकर जगत मे शान्ति की काया।
खड़े अणबम्ब के तट पर दिखायें आसुरी माया॥

घृणा-विद्वेष फैलायें न वे दुष्टात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्री कृष्ण जैसी आत्मा आयें॥

जगायें ग्वाल-बालों की कथायें बन्द वध शाला।
समूची सृष्टि पर भी दृष्टि में आये न मधुशाला॥
वही प्राचीन गुरुकुल की प्रणाली से परीक्षा हो।
रहे संकल्प कृतकारी न खाली आज दीक्षा हो॥

बनें फिर शिष्य शिष्टाचार की दिव्यात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्री कृष्ण जैसी आत्मा आयें॥

कहीं शिशुपाल के शिश गालियां बकते न मिल पायें।
दुःशासन द्रौपदी के चीर को तकते न मिल पायें॥
धरा से कूंच कर जाये सदा को कीचकों का दल।
रहें वे बन्द कारागार में शकुनी करें जो छल।

बनें जो भार भूतल का न वे पापात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आयें॥

कहीं अश्लीलता के राह पर पलने न वाले हों।
किसी का देखकर वैभव कहीं जलने न वाले हों।
उपेक्षित और उत्पीड़ित सुदामा हैं निरे जग में।
उठायें प्रेम से मिलकर सखा बनकर उन्हें जग में॥

सुदर्शन चक्र सेवा का गहें वीरात्मा आये।
धरा पर युग पुरुष श्री कृष्ण जैसी आत्मा आयें॥

हटायें मोह अर्जुन का दिखायें राष्ट्र की झांकी।
त्रिनश्वर स्वार्थ पद लिप्सा अमर यश कीर्ति है बांकी
पछाड़ें दुरित दुर्योधन सजायें सद्गुणों का रथ।
बजायें कर्म की वंशी कठिन कुरुक्षेत्र का है पथ॥

कहें फिर ज्ञान गीता की प्रबल प्रज्ञात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्री कृष्ण जैसी आत्मा आयें॥

रचयिता—सत्यव्रतसिंह चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुड़री, मैनपुरी (उ० प्र०)

विचारणीय लेख—

शाकाहार और अहिंसा सिद्धान्त कातत्वबोध

हरिजन सोमनाथ त्यागी, अमरोहा

तथ्यगत अर्थपूर्ण आधुनिक विज्ञान की इस रमणीक पृथ्वी पर शाकाहार का स्मरण कराने हेतु यह शाकाहार वर्ष है। क्योंकि लोग-बाग कदाचित भूल चले हैं कि शाकाहार पूर्णतः अहिंसात्मक है।

वनस्पति जगत को जीवयुक्त कहना तो भारतीयता की आदि वैदिक शाकाहारी संस्कृति को मांसाहारी मलेच्छतावाद के समतुल्य हिंसात्मक परिभाषित करने के प्रयास की दिशा में एक घिनौना सोमेटिक षड़यन्त्र है। वेद के अनुसार वृक्ष जीवयुक्त नहीं हैं, इस विषय में स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती से स्व० पं० गणपति शर्मा का अनिर्णयीत लम्बा शास्त्रार्थ उल्लेखनीय है।

किसी तथ्य को वैज्ञानिक प्रमाणित करने हेतु हमें जितने वैज्ञानिक प्रमाणों की अपरिहार्यता होती है, स्वर्गीय श्री जगदीशचन्द्र बसु का "वृक्षों में जीव है" जैसा शोध कार्य तो उनमें से कई महत्वपूर्ण शर्तों को पूरा ही नहीं करता है। फिर भी सोमेटिक मलेच्छतावाद ने उस शोध को नोबल पुरस्कार से सम्मानित कर दिया?

भोली जनता की लोकमान्यता में यह प्रतिपादित करना अनैयायिक एवं अनुचित है कि वृक्षों में जीव होता है। और वह सुषुप्ति अवस्था में होता है। इस प्रसग में वैदिक विद्वान स्वर्गीय श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय का यह तर्क प्रासंगिक है कि वृक्षादि की यह सतत-समग्र सुषुप्ति अवस्था क्यों, कैसी और किसकी? क्योंकि, कूटस्थ जीवात्मा को जागृति-निद्रा सुषुप्ति, शैशव-यौवन-जरा, इत्यादि, स्नायुविक अवस्थाओं से सर्वथा निरपेक्ष है। ये अवस्थायें तो जीवात्मा के बजाय जड़ शरीर वा चित्त को ही उपाधिस्थ हो सकती है। अतः जागृति-निद्रा-सुषुप्ति आदि, अवस्थाओं के प्रसंग से किसी भी स्थूल वृक्ष शरीर को सजीव समझ लेना अनैयायिक है। क्योंकि इन अवस्थाओं में "कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुं" का प्रमाण नहीं मिलता है।

वृक्ष को "चिर-सुषुप्त" जीव जीवनपर्यन्त सुषुप्ति वाला) कहना अनैयायिक एव विपर्ययबुद्धि है। क्योंकि निद्रा-सुषुप्ति तो दो जागृतियों के बीच की एक सापेक्ष चित्तवृत्ति होता है: वृक्षादि में जागृति उपलब्ध ही नहीं है तो वहां सुषुप्ति भी किस प्रकार अपेक्षित हो सकती है।

कहो, कि पूर्वजन्म की जागृति की थकानवश वर्तमान जन्मगत इन वृक्षादि की यह चिर-सुषुप्तिमय विश्रामावस्था है। लेकिन विश्राम कौन करता है वा थकता कौन है? शरीर अथवा शरीरस्थ जीव? पुनर्जन्म सिद्धान्त से, जिस जीवात्मा का पूर्व स्थूल शरीर कदाचित थक गया था, पुनर्जन्मगत शारीरिक मृत्यु से वह तो वहीं भस्मीभूत हो गया था। सो, भस्मीभूत हो चुके उस पूर्व शरीर की थकानवश, इस वर्तमान वृक्ष शरीर की सुषुप्तिगत विश्रांति का क्या न्याय? वर्तमान में विद्यमान जिस शरीर ने कभी कोई कार्य किया ही नहीं है, वह थककर निद्रा वा सुषुप्तिगत विश्राम भी क्यों करने लग जायेगा?

कहो, कि जीवात्मा के साथ सूक्ष्म शरीर जो है। लेकिन, वह सूक्ष्म शरीर तो स्नायुविहीन होता है। जब कि, निद्रा-विश्राम आदि कार्य स्नायुगत होते हैं।

सूक्ष्म शरीर में सम्मिलित चित्त में जो गत्वात्मक वा स्थिति-स्थापक संस्कार होना सम्भव है, उनसे थकान की स्नायुविक भावनात्मकता नहीं बनती है। क्योंकि, चित्त जड़ है। जड़ पदार्थ थकान जैसी भावनात्मकता एवं स्मरण शक्ति विहीन होते हैं।

वृक्षादि में जड़-विद्युत के प्रभाव से हसने-रोने जैसे जड़ तन्तुगत स्नायुविक चलन-आचलन कार्य की विशिष्टता का सम्पादित वा निष्पादित हो जाना भी जीवात्मा से वृक्ष की संयुक्तता प्रमाणित करने का कोई तर्कसम्मत वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। "गोल्डलाफ इलैक्ट्रोस्कोप" मे विद्युत-प्रवाह से चलन-अचलन रूपी हंसने-रोने का कार्य करने लग जाने वाली स्वर्ण-पत्रियां क्या चैतन्य जीवात्मा से संयुक्त होती हैं?

घटना-बढ़ना जैसा वृद्धिगत कार्य भी स्थूल जड़ शरीर का ही रासायिक परिणाम होता है। यथा, चावलों को या गोंद की डली को पानी में भिगोकर रख देने से, चावल या गोंद की डली शनैः-शनैः फूलकर एव सड़कर आकार-प्रकार में बढ़ जाते हैं। तथैव, जल-वायु-संगीत शब्द प्रकाश-मृत्तिका, इत्यादि के दृष्ट वा अदृष्ट प्रभाववश चावलों बीजों-अकुरों,पेड़-पौधों के जड़ शरीर वृद्धि एवं क्षय को प्राप्त होते ही रहते हैं। दिन एव रात्रि के तापमानों मौसमों इत्यादि के दृष्ट वा अदृष्ट रासायनिक आदि परिवर्तनों के भौतिक "प्रवाह" को जागृति निद्रा सुषुप्ति वा हंसना रोना निरूपित करना सर्वथा अनुचित है।

यहां हसना-रोना, जागृति-निद्रा-सुषुप्ति, इत्यादि, कार्य जड़-शरीर को सदंभित होते हैं। ऐसे में, इन कार्यों मात्र से जीवात्मा से वृक्ष शरीर की संयुक्ता के संयोग की वैज्ञानिक पुष्टि कहां होती है, जो शाकाहारी जीवनशैली को जीवहत्या का हिंसा-दोष लगाया जाये? वनस्पति को अन्यतम उपयोगिता वश वृक्षों की अर्चना कर लेना तो एक दूसरी बात है।

कृष्ण जन्माष्टमी

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

भादों मास अष्टमी आई, बृज में जन्मे कृष्ण मुरार।
मथुरा नगरी में जब थी कंसासुर की सरकार।
श्री वसुदेव देवकी को दे रक्खा कारागार ॥१॥
महामानव योगेश्वर का हुआ वहीं अवतार।
ले वसुदेव चले गोकुल को खोल अचानक द्वार ॥२॥
घुप्प अंधेरी रात पहुंच गये गोकुल यमुनापार।
कन्या लई उठाय सुला दिया कृष्णचन्द्र सकुमार ॥३॥
लौटे जब मथुपुरी कंस के जागे पहरेदार।
कन्या लई उठाय कंस ने शिला पर दई पछार ॥४॥
प्रातः काल ग्राम गोकुल में नन्द गोप के द्वार।
मात यशोदा ने ललना जायो है रही जै-जै कार ॥५॥
भादों मास अष्टमी आई बृज में जन्मे कृष्ण मुरार।

आर्यसमाज स्वतन्त्रता संग्राम का प्रेरणा-स्रोत

डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव साहित्याचार्य अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, धर्मवन्त कालेज, हैदराबाद-२३

आर्यसमाज को प्रायः समाज-सुधारक एव धार्मिक संस्था मात्र मान लिया जाता है। वैदिक धर्म और सस्कृति को पुनर्जीवित करना आर्यसमाज का एक मात्र ध्येय रहा है, समझ लिया जाता है, परन्तु बात ऐसी नहीं है। सच्चाई तो यह है कि भारत मे सर्वप्रथम राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करना आर्यसमाज का मुख्य लक्ष्य रहा है। समाज सुधार कार्यक्रम तो उस मुख्य लक्ष्य का साधन मात्र था लक्ष्य नहीं। समाज सुधार एव पुनर्जागरण राष्ट्रीयता रूपी एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं। "स्वराज्य सुराज्य का विकल्प नही है"—यह घोषणा सर्वप्रथम आर्यसमाज के मच से की गई थी। यह अत्यन्त गर्व का विषय है कि आर्यसमाज ने देश को जितने शहीद दिए उतने अन्य किसी समाज ने नहीं दिए। आर्यसमाज के जीवित शहीदों की गिनती करना कठिन है। आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय राष्ट्रीयता के जनक और अग्रदूत थे। उनके सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्यक्रमो के पीछे मुख्य भावना अग्रेजी शासन से देश को मुक्त कराना था। उनके सामाजिक सुधारो का आधार अग्रेजी शिक्षा के स्थान पर हमारे वेद और हमारे प्राचीन शास्त्र थे और इस प्रकार उनका दृष्टिकोण पूर्णरूप से स्वदेशी और राष्ट्रीय था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दो मे विदेशी राज्य का यह कहकर विरोध किया था—"विदेशी राज्य चाहे कितना भी माता-पिता के समान सुख देने वाला क्यो न हो, किन्तु वह स्वदेशी राज्य की बराबरी नही कर सकता।" यह घोषणा उन्होने सन् १८७५ मे की, जब भारत मे अग्रेजी राज्य मजबूती से जम चुका था, उसका विरोध करने की किसी मे हिम्मत नही थी और न कोई उसके पतन की कल्पना ही कर सकता था। यहा तक कि आर्यसमाज की स्थापना के दस वर्ष बाद स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने वार्षिक अधिवेशनो मे ब्रिटिश सम्राट के चिर-जीवन के लिए प्रार्थना और अग्रेजी राज्य के प्रति अपनी वफादारी की घोषणा करके अपना कार्यक्रम आरम्भ करती थी।

कांग्रेस की स्थापना से एक दशक पूर्व स्वामी दयानन्द जी द्वारा अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध व्यक्त की गई मान्यताए कितनी स्पष्ट और साहस पूर्ण थी, यह देखकर आश्चर्य होता है। सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ३३५ पर वे लिखते हैं—"कोई कितना ही कहे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।"

इस ऐतिहासिक घोषणा के बाद स्वामी दयानन्द जी उन कारणो का विश्लेषण करते हैं जिनके परिणाम-स्वरूप हमारे देश का पतन हुआ। वे कहते हैं कि जब तक भारतवासी वेद की शिक्षाओ पर नही चलेंगे तथा जिन सामाजिक और धार्मिक कुरीतियो के कारण देश परतन्त्र हुआ, उन्हे दूर नही करेंगे, तब तक देश स्वतन्त्रता प्राप्त नही कर सकेगा। इसीलिए उन्होंने 'वेदो की ओर लौटो' का नारा दिया था। उन्होने भारत और हिन्दू धर्म को नवजीवन प्रदान किया और युवा पीढ़ी मे राष्ट्रीय चेतना जागृत की। वे एक साथ ही सन्त, समाज, सुधारक, क्रान्तिदूत और सच्चे देशभक्त थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने भारत की खोई हुई आत्मा को ढूंढ निकाल लिया और उसे राष्ट्रीय जीवन की प्रमुख शक्ति बना दिया स्वामी जी ने यूरोपियन विचारो मे पागल बनी भारतीय जनता को अतीत का गौरव दिखाकर और हिन्दू धर्म को सर्वोत्तम बताकर उनमे अपूर्व आत्म विश्वास भर दिया। रोमा रोला के शब्दो मे—'दयानन्द इलियड अथवा गीता के प्रमुख नायक के समान थे। उनमें हरकुलिस की सी शक्ति थी। वस्तुत. शकराचार्य के बाद इतनी महान बुद्धि का सन्त दूसरा नही जन्मा।'

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास के लेखक श्री बी० पट्टाभिसीता रामय्या के अनुसार राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म से लगभग ५० वर्ष पूर्व से ही देश मे राष्ट्रीय चेतना प्रारम्भ हो चुकी थी। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने लिखा—"भारत स्वामी दयानन्द का सदा ऋणी रहेगा। वे एक प्रकाण्ड विद्वान और निर्भय नेता और समाज-सुधारक थे और उन्होने आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से देश की अमूल्य सेवा की। हर कसौटी से वे राष्ट्र पुरुष और एक दीर्घ दृष्टा नेता थे।……स्वामी दयानन्द ने एक राष्ट्रभाषा का प्रचार करके जिस दूरदर्शिता का परिचय दिया, वह आश्चर्य जनक था। हरिजनोद्धार, स्त्री-शिक्षा, हाथ के कते-बुने वस्त्रो का उपयोग और स्वदेशी वस्तुओ का व्यवहार, जिन्हे हम महात्मा गाधी के स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्धित करते हैं उन सब का प्रारम्भ ५० वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द ने किया था। जीवन भर दयानन्द देश की स्वाधीनता के स्वप्न देखते रहे।"

राजनैतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता को धार्मिक और सामाजिक पुनर्निर्माण से जोडकर गाधी जी द्वारा बाद मे जो स्वाधीनता आन्दोलन किया गया, उसकी वास्तविक नीव स्वामी जी ने रखी थी। एक विदेशी विद्वान सर वेलियण्टन सिरोल ने कहा—'स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ का मुख्य उद्देश्य वास्तव मे हिन्दू धर्म का सुधार करना उतना नही था, जितना विदेशी सत्ता और प्रभाव से देश को मुक्त कराना था। क्योकि वे इसे राष्ट्रीयता के विकास के लिए घातक समझते थे।'

हमे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि देश मे राष्ट्रीय भावना का उद्भव स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से हुआ था और इस राष्ट्रीयता के तेवर कही अधिक आक्रामक थे। आर्य समाज के आन्दोलन के फलस्वरूप देश मे एक सशक्त राष्ट्रीय चेतना और पौरुषत्व का जन्म हुआ। पजाब केसरी लाला लाजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। इसके अतिरिक्त इस आन्दोलन मे और यहा तक कि क्रान्तिकारियो तक मे बहुत बडी सख्या मे उनके अनुयाइयो ने उन्ही के विचारो मे प्रभावित होकर भाग लिया था।

इस सन्दर्भ मे यह उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द जी सन १८५७ के स्वातन्त्र्य सेनानियो के प्रेरक रहे हैं। आगे चलकर उनसे व आर्य समाज से प्रेरणा लेकर किस प्रकार क्रान्तिकारियो ने विदेशी-विधर्मी अग्रेजी साम्राज्य को ध्वस्त करने की योजना बनाई, हसते-हसते फासी के फदे चूमे यह सब इतिहास के पन्नो पर स्वर्णाक्षरो मे अकित है।

प्रसिद्ध आर्य समाजी तथा स्वामी दयानन्द जी के प्रमुख शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर मदनलाल ढीगरा आदि ने विदेशो मे जाकर वहा से भारत की स्वाधीनता के लिए सघर्ष प्रारम्भ किया तथा प्रवासी भारतीयो को अपनी आवाज बुलन्द करने के लिए प्रेरित किया। 'इतिहास मे गदर पार्टी के नाम से यह सघर्ष प्रसिद्ध है। इसके बाद सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह ने, जो आर्य समाजी थे, अपने पूरे परिवार को आजादी के राष्ट्रीय सघर्ष मे झोक दिया। सरदार भगत सिंह की वीरता एव त्याग व उनका बलिदान अविस्मरणीय है।

उत्तर प्रदेश के प्रायः सभी क्रान्तिकारी आर्य समाज से प्रेरणा लेकर ही इस मैदान मे कूद पड़े थे। इन क्रान्तिकारियो ने ब्रिटिश शासन की जडो को हिला दिया। काकोरी काड के मुख्य सेनानी श्री राम प्रसाद बिस्मिल ने आर्य समाज से ही प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया था। बिस्मिल ने अपने आत्म चरित्र मे गर्व के साथ यह लिखा है—"आर्य समाज के विचारो से प्रेरित होकर ही वे सशस्त्र क्रान्ति के मार्ग पर आगे बढे हैं।"

(क्रमश)

हिन्दू को साम्प्रदायिक किसने बनाया ? (२)

—डा० भवानी लाल भारतीय

किन्तु शुद्धि पर आक्षेप करने वालो को यह अवश्य ज्ञात होना चाहिए इस महान शुद्धि आन्दोलन मे केवल आर्य समाज ही शरीक नही था। उदार हिन्दू नेताओ ने इस कार्यक्रम को समर्थन दिया था। महामना मालवीय जी तथा गोस्वामी गणेशदत्त जैसे सनातन धर्मी नेताओ, जैन समाज के नेताओं तथा बौद्धाचार्यों का भी इसे समर्थन प्राप्त था। इस परिप्रेक्ष्य मे लेखक का यह कथन नितान्त भ्रामक है कि 'मुसलमान को हिन्दू बनाना ही शुद्धि आन्दोलन का मुख्य रूप रहा।' यदि उसने शुद्धि आन्दोलन का इतिहास पढ़ा होता तो उसे ज्ञात होता कि प्रारम्भ मे हिन्दू समाज के ही अगभूत उन जातियो के लोगो की शुद्धि की गई जो अपने अशुद्ध खान पान तथा दूषित आचार-व्यवहार अथवा अन्य कारणो से तथा-कथित सवर्ण जातियों द्वारा अस्पृश्य तथा घृणास्पद करार दिए गये थे। मुसलमानो की शुद्धि तो बाद की बात है। मलकाने मुसलमानो ने जब स्वयं को मलकाने राजपूत बताया तो अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की सह-मति से उनकी शुद्धि की गई।

हिन्दू का कोई देशवाची रूप भी था, या नही यह तो हमारे विचार के बाहर का विषय है किन्तु उसके लिए आर्यसमाज को दोषी ठहराना लेखक का अज्ञान ही है। वह पुनरुक्ति करता हुआ फिर लिखता है कि आर्यसमाज ने मुसलमान के मुकाबले मे हिन्दू को धर्म के रूप मे खडा किया अत: हिन्दू का देशवाची रूप गायब हो गया। ऐसा कहकर एक प्रकार से लेखक ने आर्य समाज को इतना ताकतवर तो मान ही लिया कि उसके कहने या न कहने से ही देश का नाम बदल हो जाता है। आगे के वाक्य तो और भी आपत्ति जनक हैं जब वह लिखता है—"चू कि आय समाज को मुसलमान से लड़ना था अत: उसने एकेश्वरवाद के नाम पर मूर्तिपूजा का खण्डन किया। मुसलमान भी बुतपरस्ती के खिलाफ थे। उनका निराकरण स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा का विरोध करके किया। इस दौर मे आर्य समाज और सनातन धर्म अलग अलग धड़ो मे बट गए आदि।

लेखक को यह इलहाम कैसे हो गया कि आर्य समाज को मुसलमानो से लडना था। जिस समाज का मुख्य उद्देश्य ही ससार का उपकार करना हो और जो सारे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने के लिए लालायित हो, भला मुसलमान उसका शत्रु कैसे हो जाएगा। लेखक ने यदि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित को ध्यान से पढा होता तो उसे सर सैयद अहमद खा, डा० रहीम खा, (लाहौर) मौलवी मुराद अली (अजमेर) आदि अनेक मुसलमानो की जानकारी होती जो स्वामी जी के भक्त और प्रशसक थे।

शुद्धि चक्र के प्रवर्त्तक स्वामी श्रद्धानन्द को जब एक आततायी ने गोली मार दी तो डा० अन्सारी ने ही सर्वप्रथम इस घृणित कार्य की निंदा की थी मुम्बई के आर्य समाज मन्दिर के निर्माण मे एक मुसलमान सज्जन का आर्थिक सहयोग मिला था। अत: हम लेखक के इस कथन की कठोरता से निंदा करते है जब वह कहता है कि आर्यसमाज को मुसलमान से लड़ना था। आर्य समाज की लडाई अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, धर्म के नाम पर प्रचलित दुराचार से तो है किसी हिन्दू, मुसलमान या ईसाई से उसका कोई झगडा नहीं हैं।

रही बात एकेश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा की। लेखक को यह किसने कह दिया कि स्वामी दयानन्द ने मुसलमानो के प्रतिकार के लिए मूर्तिपूजा का विरोध किया या एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया। स्वामी जी की तो यह ध्रुव धारणा थी कि आर्यो के धर्म के आदि मूल वेद हैं और उन वेदों में जिस एक परमात्मा की उपासना की बात कही गई है वही विद्वानो द्वारा अग्नि, इन्द्र, वायु, मित्र आदि भिन्न भिन्न नामो से पुकारा जाता है—एक सत विप्रा बहुधा वदन्ति। जहा तक मूर्तिपूजा का सम्बन्ध है वह तो बहुत बाद मे प्रचलित हुई है। पुरातन वैदिक सहिता, ब्राह्मण, उपनिषद, दर्शन वेदाग यहा तक कि रामायण और महाभारत जैसे आर्यो के पुरातन इति-हास ग्रन्थो के मौलिक अशो में भी मूर्तिपूजा का कही उल्लेख नही है। यह आक्षेप भी वैसा ही है जैसा प्राय. लोग कहतेहैं कि स्वामी दयानन्द ने एकेश्वर वाद का विचार इस्लाम से लिया तो वेद को एकमेव प्रमाण ग्रन्थ मानने का विचार भी सैमेटिक मजहबो मे पुस्तक विशेष को सर्वोपरि मानने की धारणा के अनुकरण पर स्वीकार किया। आर्य समाज और सनातनी दो धड़ो मे बट गए यह कथन भी पूर्ण सत्य नही है। तात्विक सिद्धातो में चाहे दोनो संगठनो मे मतभेद हो, किन्तु सामाजिक दृष्टि से आर्यसमाज बृहत्तर हिन्दू समाज का एक घटक ही है। उसने ब्रह्मसमाज की भाति हिन्दू समाज से अपने को बिछिन्न नही किया है। विचारशील सनातनी भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं।

तथापि इस लेख मे कुछ ऐसी भी बातें लिखीहै जिन्हे यदि सन्दर्भ की पह-चान किए बिना कोई उद्धृत करे तो पाठक यही समझेगा कि ये वाक्य ऋषि दयानन्द जैसे वेदभक्त तथा आर्यो की राष्ट्रीय अस्मिता के प्रबल उदघोषक की लेखनी से ही निकले है—यथा सभो सनातनी सम्प्रदाय वेद को आधार और प्रमाण मानते है। फिर भी जीव, जगत और ब्रह्म के विषय में परस्पर विरोधी मान्यताए रखते है। इसका एक ही कारण है कि सम्प्रदाय स्वयं भी वेदभिज्ञ नहीं रहे। वेदार्थ के लोप के कारण ही दार्शनिको मे यह अन्त-र्विरोध पैदा हुआ है। इस देश के सम्पूर्ण चिन्तन मनन और जीवन का मूल मन्त्र तो वेद ही है। सम्प्रदायो के फैलते हुए जाल मे इसका सर्वथा लोप हो गया है। वेद के प्रति केवल मौखिक सहानुभूति सभी सनातनी आचार्य प्रकट करते हैं परन्तु व्यवहार मे केवल अहम्मन्यता और सम्प्रदाय निष्ठा ही देखने मे आती है।'

उपर्युक्त शब्द निश्चय ही कुलिश जी के हैं किन्तु यदि आज स्वामी दयानन्द हमारे बीच होते तो वे भी यही कहते।

अन्त मे दो बातो की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक है। ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने मठाधीशो, तथाकथित जगद गुरुओ, महा-मण्डलेश्वरो अनन्त श्री विभूषितादि उपाधि धारियो के पाखण्डपूर्ण तथा धर्म एव देश विरोधी कृत्या का प्रबल भण्डाफोड किया। चाहे इसके बदले मे उन्हे कितनी ही निन्दास्पद बातें सुननी पड़ी। अत, लेखक को तो इसके लिए स्वामी दयानन्द का आभार मानना चाहिए। द्वितीय बात यह है कि स्वामी दयानन्द ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होने राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए एक भाव, एक विचार, एक भाषा तथा एक ही प्रकार की जीवन पद्धति की आवश्यकता बताई। उनकी चिन्तन पद्धति सर्वथा असाम्प्रदायिक तथा सार्वजनिक थी। अन्तिम बात यह कहना आवश्यक है कि सुधारकों के नाम पर स्वामी दयानन्द को ही आक्रोश का पात्र क्यों बनाया गया ? क्या स्वामी दयानन्द ने सुधारक के रूप में हिन्दू जाति या लेखक जिसे राष्ट्र कहता है उसका कोई अहित किया ? क्या कोई इतिहास-कार या विवेचक लेखक की इस स्थापना से सहमत होगा ? पुन: दयानन्द ही अकेले सुधारक नहीं थे। सुधारकों में तो राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द आदि की भी गणना होती है। उनके बारे में भी लेखक को अपने विचार बताना चाहिए।

८/४२३ नन्दन वन, जोधपुर

एक आवृत्त सत्य

—विवेकानन्द सरस्वती, प्रभात आश्रम, मेरठ

वेदों के महा विद्वान पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी का जन्मशती वर्ष चल रहा है। श्रावण शुक्ल एकादशी सम्वत् २०५२ को उनके जन्म के १०० वर्ष पूर्ण हो जायेंगे। इसी जन्मशती को अभिलक्ष्य कर प्रभात आश्रम मे १०, ११, १२ मार्च को उनका जन्मशती वर्ष मनाया गया। इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका समर्पण शती सौरभम् के नाम से प्रकाशित की गई। उसमें उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्मरण प्रकाशित हुए। समयाभाव के कारण प्रकाशन के पश्चात् ही मुझे भी वे प्रेरणादायक संस्मरण पढने को मिले। उसमे एक विषय जो असत्य है उसका सर्वत्र समान रूप से उल्लेख अनेक लेखको ने किया है। वह विषय है हैदराबाद के शास्त्रार्थ समारोह मे स्वामी दयानन्द के ऊपर जूता मारने का। श्री अमर स्वामीजी द्वारा लिखित पुस्तक "निर्णय के तट पर" मे भी इसका उल्लेख है। मैंने जीवन काल मे ही एक बार श्री स्वामी जी महाराज से ही इस विषय मे पूछा था। क्योंकि शास्त्रार्थ मच पर हो रहा था तो किसी भी धार्मिक सभ्य समाज के मच पर जूते के पास मे होने की सम्भावना नहीं। अत: मेरे मन मे यह शका थी कि जब जूता मच पर था ही नही तो इतना शीघ्र आया कहा से ? जिसको श्री स्वामी जी ने दे मारा और इसी आशका ने उनसे यह प्रश्न पूछने के लिए विवश कर दिया। श्री स्वामी जी ने जो उत्तर मुझे दिया था उसका उल्लेख उन्ही के शब्दों मे पाठको के समक्ष प्रस्तुत कर देने मे सत्य की जानकारी मे सहायक होगा ऐसा मैं मानता हू। उन्होने मुझसे कहा कि—

"शास्त्रार्थ के समय श्री माधवाचार्य जी ने एक पुस्तक निकाली जिसमे ऋषि दयानन्द का चित्र था। उन्होने उस चित्र को मेरे सामने करके कहा कि यदि आप दयानन्द के चित्र की पूजा नही करते तो इस पर पैर रखें। तब मैंने कहा कि यह चित्र मेरे गुरु का है। मैं इसका आदर एव सम्मान करता हूं किन्तु इसकी पूजा, अर्चना, वन्दना नही करता। इस प्रकार की बातें चलती रहीं। वहा शास्त्रार्थ मे प्रत्येक पक्ष के वक्ता को अपने पक्ष मे बोलने के लिए २०कला मिलते थे। उनकी पारी समाप्त होने पर मैं अपनी बारी मे २० कला तक पुस्तक सहित चित्र पर खडे होकर मूर्ति पूजा के विरुद्ध में अपना पक्ष प्रस्तुत करता रहा। निश्चित रूप से माधवाचार्य का वह ब्रह्मास्त्र विफल हो चुका था। एव आर्य समाज व मेरे पक्ष की विजय थी। किन्तु माधवाचार्य ने छलपूर्वक भोली आर्य जनता को वरगलाने के लिए प्रसार चित्र पर जूते के मारने का किया। व्यक्तिगत रूप से जो आर्य समाज के लोग मुझसे ईर्ष्या एव द्वेष रखते थे वे भी इसी को माध्यम बनाकर मेरे विरुद्ध अनर्गल प्रचार-प्रसार करने लगे और मुझको जानसे मारने तक की भी बातें कहने लगे। इस प्रकार वह विजयश्री और सत्य घटना दोनों ही छल एव द्वेष से आवृत्त हो गये। जिनमे आर्य समाज के कुछ तथाकथित नेताओं का विशेष योगदान रहा।"

यद्यपि मूर्ति पूजा के न मानने वाले आर्य समाजी के लिए चित्र पर पैर रखना अथवा जूता मारने मे कोई महत्वपूर्ण भेद नही तथापि सत्य घटना का स्वरूप तो यथार्थ ही रहना चाहिए। उसको विकृत करना अक्षम्य अपराध है। पडित गुरुदत्त जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के समय से ही आर्य समाज के नेताओ मे ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थपरता, अवसरवादिता के नग्न नृत्य के कारण आर्य समाज का अवदात्त स्वरूप धूमिल होता रहा। प० गुरुदत्त को पाखडी स्वामी श्रद्धानन्द को गुरुकुल या समाज का पैसा गमन करने वाला कहकर अपमानित एव लाछित कर गुरुकुल कागडी से निकालना, लाला लाजपत, राय, भाई परमानन्द को आर्य समाज से निकालना आदि कुत्सित कार्य आर्य समाज के जिन क्षुद्र लोगों के द्वारा किया गया उन लोगो ने उस समय उन व्यक्ति विशिष्टो को ही नही अपितु सम्पूर्ण आर्य समाज को कलकित एव अपमानित करने का जघन्य अपराध किया। जिसका परिणाम यह है कि समाज, राष्ट्र एव विश्व के हित के लिए सर्वाधिक कार्य एवं बलिदान करने वाले दयानन्द तथा आर्य समाज को कोई विशिष्ट स्थान नही मिला। ये झूठे नेता लोग कुर्सी की दौड़ मे आगे रहने के लिए इसका नाम मात्र लेते हैं और काम अपने क्षुद्र स्वार्थ पूर्ति का करते हैं। आज भी वही स्थिति है। अन्यथा एक बार महर्षि दयानन्द जी भी रेल की प्रतिक्षा मे वेद के बधे हुए बण्डल पर स्वय बैठे थे तथा अपने व्यक्तियो के द्वारा इसमे वेद है, यह बताने पर भी वे पूर्व की भाति बैठे रहे और इससे वेद का कोई अपमान नही होगा उन्होने अपने समर्थको को समझाया तथा इसमें वेद अपमान की नि:सार्थता को दर्शाया।

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त स्वामी समर्पणानन्द की जन्म शताब्दी के वर्ष मे अधिकार की दौड को छोडकर हम मिलकर चलें। इसी में हमारा हित निहित है एव विश्व का कल्याण सम्भव है। अन्यथा परस्पर की द्वेष जन्य एव स्वार्थ जन्य फूट हमारा सर्वनाश करके ही शान्त होगी।

कैसे हम भूल गए अगस्त क्रांति को

(पृष्ठ ३ का शेष)

पूरी जनता आज भी भ्रष्ट नहीं है, मगर गुमराह हो रही है या हर बात की अनदेखी कर रही है। यही उनकी सबसे बड़ी भ्रांति है।

यद्यपि उस समय के वामपंथी और दक्षिणपंथी नेता अगस्त क्रांति के पक्ष मे नहीं थे, मगर जनता ने किसी नेता की एक नही सुनी। उन्होंने पूरे आंदोलन को अपने कधो पर उठा लिया। आज भी कई पार्टियों के नेता जनता को बरगलाने और आपस मे लड़वाने की कोशिश करते हैं। यदि जनता उनकी न सुने, स्वविवेक से सही-गलत का फैसला करे और हर जगह फैल रही भ्रष्ट राजनीति और आपराधिक गतिविधियो को दूर करने का फैसला कर ले, तो न केवल देश की तरक्की होगी बल्कि भारत दुनिया के अग्रणी देशों मे होगा। आज की पीढ़ी यदि अगस्त क्रान्ति से प्रेरणा लेते हुए स्वयं को अनुशासित करने का प्रण ले तो यह भावना भविष्य में भारत की तरक्की में मील का पत्थर साबित होगी।

मन्दिर, मस्जिद में परमात्मा को सीमित नहीं किया जा सकता

देहरादून। हाथी बडकला एस्टेट शिवमन्दिर मे वेद-प्रवचन करते हुए वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के मन्त्री तथा 'पवमान' मासिक के सम्पादक प० देवदत्त बाली ने कहा कि यह समझ लेना कि मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या गिरजे मे ही परमेश्वर है, अपने अज्ञान को ही दर्शाना है। जो सर्वव्यापक नही वह सृष्टिकर्ता ईश्वर नही। उसको अपने दाए बाए, आगे-पीछे, ऊपर नीचे, यहा तक कि कण कण मे सर्वत्र व्यापक जो नही मानता वह परमात्मा को नही, किसी अन्य को ही मानता होगा।

ईश्वर के सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सत्, चित् आनन्द स्वरूप को जानकर मानकर ही मनुष्य अपना उत्थान कर सकता है अन्यथा वह कहने भर को आस्तिक है परन्तु कार्य ऐसे करता रहता है जैसे उसके पापो को देखने वाला कोई नहीं। इससे वह उत्थान की बजाय पतन के मार्ग पर फिसलता चला जाता है।

महर्षि दयानन्द की सूक्ति कि "जो भाड के समान ईश्वर का गुण-कीर्तन तो करता रहता है परन्तु अपने आचरण को नही देखता, उसका स्तुति प्रार्थना करना व्यर्थ है" की आपने विशद व्याख्या की।

एक घण्टे के प्रवचन को उपस्थित नर-नारियो ने श्रद्धापूर्वक श्रवण किया।

—पंजय कुमार

संस्कृत भारत की आत्मा

(पृष्ठ ४ का शेष)

इसलिए मनाया जाता है कि संस्कृत और आम आदमी के बीच अटूट सम्बन्ध कायम हो उन्होने बताया कि ससदीय संस्कृत परिषद का गठन १९९८ मे हुआ था। परिषद ने दो महत्वपूर्ण सुझाव रखे थे। संस्कृत दिवस मनाने के अलावा संस्कृत को आम आदमी से जोड़ने के लिए आकाशवाणी पर संस्कृत मे समाचारो का प्रसारण शामिल था। इस क्रम मे उन्होने दूरदर्शन पर भी संस्कृत मे वार्ता प्रारम्भ करने का अनुरोध किया। उन्होने बताया कि संस्कृत ज्ञान-विज्ञान का स्रोत है। यह सिर्फ दर्शन नही है। संस्कृत मे चिकित्सा नाट्य शास्त्र, योग सूत्र, काम सूत्र अर्थ आदि ज्ञान का भण्डार है।

उन्होने त्रिभाषा फार्मूले का समर्थन करते हुए कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्र मे विद्यार्थियो को हिन्दी व अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत अथवा उर्दू का व्यापक ज्ञान दिया जाना चाहिए। उन्होने कहा कि गैर हिन्दी भाषी राज्यो मे प्रान्तीय भाषा, एव अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी और संस्कृत का पाठ्यक्रम मे समावेश होना चाहिए इससे हिन्दी विरोधियो की नाराजगी भी समाप्त होगी।

संस्कृत को धर्म के दायरे मे सीमित न करने का अनुरोध करते हुए डा० सिंह ने कहा कि यह महज भाषा नही है बल्कि उदात्त विचारधारा है। इसमे नैतिक मूल्यो की स्थापना का सामर्थ्य है। आज सत्यमेव जयते मात्र चिह्न बनकर रह गया है हमे नैतिक मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए। इसमें केन्द्रीय एव राज्य सरकारों को भी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी, अन्यथा यह भाषा मात्र संस्कृत विश्वविद्यालयो तक सीमित रह जाएगी।

समारोह के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति रगनाथ मिश्र ने संस्कृत को सभी भाषाओ का मूल स्रोत बताया। हालाकि श्री मिश्र ने अंग्रेजी मे ही अपनी बाते रखी उन्होने कहा कि संस्कृत के पढाने व पढने मे तालमेल नही है। संस्कृत का पठन-पाठन मात्र परीक्षा में उत्तीर्णता के प्रयोजन से किया जाता है। संस्कृत और संस्कृति को अलग नही किया जा सकता है। संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है।

डा० सत्यव्रत शास्त्री ने संस्कृत मे व्याख्यान दिया और संस्कृत के सरलीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया विद्यापीठ के कुलपति व चसपति उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापन किया, उन्होने कहा कि संस्कृत मे राष्ट्रीय एकता का मूल मन्त्र है। इसका प्रचार प्रसार कार्य सिर्फ एक व्यक्ति का नही बल्कि हम सबको मिलकर करना होगा। डा० कमलाकान्त मिश्र एव योगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आर्य महिला समाज वेद मन्दिर हरदोई का—

२६ वां वेद प्रचार सप्ताह एवं योग चिकित्सा साधना शिविर

आर्य महिला समाज वेद मन्दिर हरदोई का २६ वा वेद प्रचार सप्ताह एव योग चिकित्सा शिविर १०-८-९५ से १७-८-९५ तक वेद मन्दिर अशरफ टोला हरदोई मे समरोह पूर्वक मनाया गया। योग शिविर का सचालन श्री ओ एस. वर्मा राजस्थान ने किया। इस अवसर पर श्री कुन्दनलाल जी वैद्य के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह में प० शिव कुमार शास्त्री हरदोई, श्रीमती रश्मि आचार्या श्री ओमलाल जी, श्री रमेश चन्द्र आचार्य तथा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के प्रवचन तथा भजन हुए।

रामबाबू सक्सेना एव सुधा वाचस्पति

इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय में विज्ञान, तकनीकी और कंप्यूटर की पढ़ाई हिन्दी में भी।

इन्दिरा गाधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय शीघ्र ही विज्ञान एवं तकनीकी पाठ्यक्रम भी हिन्दी में शुरू करेगा। यह जानकारी विश्वविद्यालय के समकुलपति प्रो० जनार्दन झा ने विश्वविद्यालय के प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए दी। उन्होने बताया कि विश्वविद्यालय की कप्यूटर और सूचना विज्ञान विद्यापीठ ने हिन्दी माध्यम मे अपने पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य आरम्भ कर दिया है।

अनुरोध है कि जिन-जिन विश्वविद्यालयो में तकनीकी और वैज्ञानिक विषयो मे जिस-जिस अश तक पढाई का माध्यम हिन्दी नहीं हुआ है उसको कराने के लिए उपरोक्त उदाहरण के आधार पर निरन्तर प्रयत्न किए जाते रहने चाहिए।

(नवभारत टाइम्स के २० जुलाई १९९५ के अक मे छपे एक समाचार के अनुसार)

—जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य.

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा का निधन ३ अगस्त को धुर्वा मे हृदय-गति रूकने से हो गया। उनका शव अन्तिम सस्कार के लिए उनके पैतृक शहर पटना ले जाया गया।

आप आर्य समाज धुर्वा और उसके द्वारा सचालित डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल धुर्वा के सस्थापक सदस्यो मे से एक थे। हैवी इ जीनिरिंग कारपोरेशन से सेवानिवृत्त होकर गत कुछ वर्षो से आर्य समाज के कार्य के लिए वे अहर्निश लगे हुए थे। सम्प्रति आप राची जिला आर्य सभा के प्रधान, आर्य समाज धुर्वा के उप प्रधान और छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची की कार्यकारिणि के सदस्य थे, डी ए वी. पब्लिक स्कूल धुर्वा ने उनके सम्मान मे एक शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना करके ४ अगस्त को स्कूल बन्द कर दिया। आर्य समाज धुर्वा, राची जिला आर्य सभा और छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा राची ने अपने अपने शोक प्रस्तावो में इसे आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति बतलाया है।

दयाराम पोद्दार
मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एस० ११०४१/६५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-८-६५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93/95 Post in N.D P.SO.on 17,18-8-1995

बुढलाडा (पंजाब) में आर्यवीर दल शिविर

आर्यसमाज बुढलाडा मे १६ से २४ जुलाई ६५ तक एक आर्यवीर दल चरित्र-निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे डी. ए. वी. माडल स्कूल के (३२) छात्रो ने भाग लिया। शिविर-सचालन तथा सर्वाङग सुन्दर व्यायाम, योगासन, जलनेति, दण्ड-बैठक, कराटे (नियुद्ध), लाठी तथा सैनिक शिक्षा आदि का प्रशिक्षण कार्य डा० सोमवेदालंकार जी उपाध्यक्ष—सार्वदेशिक आर्य वीरदल सेवा समिति (कुरुक्षेत्र वाले) ने किया। बौद्धिक शिक्षण कार्य डा० धर्मवीर जी शास्त्री (साधु आश्रम होशियारपुर) तथा प० महावीर प्रसाद शास्त्री ने किया।

शिविर का समापन २४ जुलाई को साय ५-०० से ७-३० बजे तक समारोह पूर्वक हुआ जिसमे नगर के प्रतिष्ठित जनो एव सामान्य जनता ने सैकडो की सख्या मे भाग लिया। समापन कार्यक्रम में आर्य वीरो ने व्यायाम प्रदर्शन किया। जिससे जनता बहुत प्रभावित हुई। डा० धर्मवीर शास्त्री, डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल श्री विनोद कौल व चेयरमैन डा० रमेशचन्द्र जैन तथा श्री जैनकुमार जैन प्रिंसिपल डी० ए० वी० माडल स्कूल और डा० सोमवेदालकार जी के सारगर्भित भाषण हुए। समारोह का सचालन श्री देसराज आर्य मन्त्री, आर्यसमाज ने किया।

समारोह के प्रारम्भ मे आर्यसमाज बुढलाडा के प्रधान श्री मेघराज गोयल ने विद्वानो तथा शिविर कार्यक्रम का परिचय कराया तथा आचार्य सोमवेदालकार जी के निर्देशन मे सभी आर्य वीरो को प्रमाण-पत्रो से सम्मानित किया गया। शिविर के पाच विद्यार्थियो को पुरस्कार प्रदान किये गये। प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार डा रमेशचन्द जैन चेयरमैन डी.ए.वी पब्लिक स्कूल बुढलाडा ने प्रदान किये।

आर्यसमाज बुढलाडा के नेतृत्व मे आर्यवीर दल का गठन किया गया जिसमे डा० पवन कुमार जी को आर्यवीर दल का अधिष्ठाता चुना गया। सचालक—सजीव कुमार, सहसचालक—नरेशकुमार, मन्त्री—विजय सिंगला उपमन्त्री—गुरिन्द्र सिंगला तथा कोषाध्यक्ष—राजेशकुमार गुप्ता को नियुक्त किया गया।

मन्त्री—आर्यसमाज बुढलाडा

२६वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव यज्ञ समारोह

आत्मशुद्धि आश्रम का २६वां स्थापना-दिवस—वार्षिकोत्सव-यज्ञ २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। इस शुभावसर पर ऋग्वेद मण्डल ४-५ बृहद् यज्ञ, गुफा मध्य अखण्ड गायत्री अनुष्ठान, ध्यान, प्राणायाम एवं आसनो के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था रहेगी।

योगसाधना निर्देशक —पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम।

यज्ञ ब्रह्मा —श्री विद्याव्रत जी शास्त्री स० यज्ञ योगज्योति, वैदिक धर्म साधनाश्रम, रोहतक

प्रमुख वक्ता —श्री आचार्य विश्वबन्धु जी तर्क शास्त्री, शास्त्रार्थ महारथी, बुडीना, (उ० प्र०)

वेद पाठ —आश्रम के ब्रह्मचारियो द्वारा।

भजन-संगीत श्री सत्यपाल जी मधुर श्री प० वेदव्यास जी एव विदुषी पूज्या माताजी की यज्ञ सत्सग मण्डलिया, आर्य स्त्री-समाजो की सदस्याओं के मधुर भजनों का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहेगा।

यजमान आसन पर सुशोभित होने के लिए भारतीय वेश-भूषा मे व्यसनो से रहित दम्पति परिवार सादर आमन्त्रित हैं। शीघ्र सम्पर्क करें।

आर्यसमाज जामनगर में डा. अविनाशभट्ट का सम्मान

गुजरात की महानगर पालिका के मेयर श्री अविनाशभाई भट्ट तारीख ११-७-१९९५ को आर्य सभा में पधारे, आर्यसमाज में उनका भव्य-स्वागत किया गया।

डा० अविनाश भट्ट स्व० डा० मगनभाई भट्ट के सुपुत्र हैं जिन्होने तन-मन-धन से इस समाज के कार्य को वेग दिया है और समाज के सदस्य से लेकर प्रधान पद तक कार्य किया है। धर्मवीर खन्ना, मानद मत्री

आर्यसमाज—जामनगर

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

(२ अक्तूबर यज्ञोपरान्त उद्घाटन)

हर वर्षों की भांति यज्ञ पूर्णाहुति के पश्चात् नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजन वैणुनेत्र सस्थान नई दिल्ली के सहयोग से सस्थान के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञो द्वारा नेत्र निरीक्षण एवं आप्रेशन किये जायेंगे। दूध भोजन आदि एवं एनकें नि:शुल्क दी जायेंगी। ऋतु अनुसार विस्तर बर्तन और सेवक अपने साथ लेकर आये नेत्र रोगियो को सूचना देकर पुण्य एव यश के भागी बनें।

आर्यवीर सम्मेलन

शबगा आर्यवीर बाल विद्यालय के सौजन्य से आर्य वीर सम्मेलन एव स्वतन्त्रता दिवस महोत्सव बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जो दिनाक १५-१६ एव १७ अगस्त तीनो दिन चलेगा।

जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक, सयासी एव विद्वान पधार रहे हैं। आप भी अधिकाधिक सख्या मे पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ायें। —सजीव आर्य, सचिव विद्यालय

सीख कृष्ण की मानो तुम

पं० नन्दलाल 'निर्भय'

यदुनन्दन श्रीकृष्ण चन्द्र को, करलो याद जवानो तुम।
ईश्वर भक्त बनों तुम सच्चे, सीख कृष्ण की मानो तुम॥
मान करो सत्पुरुषो का ये, श्री कृष्ण का नारा था।
सत्य, अहिंसा, सदाचार का, नियम उन्हें अति प्यारा था॥
कस और शिशुपाल दुष्ट को, युद्ध क्षेत्र मे मारा था।
वीर, ब्रह्मचारी, बलधारी, नही किसी से हारा था॥
उस गोभक्त, तपस्वी, त्यागी, योगी को पहचानो तुम।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, सीख कृष्ण की मानो तुम॥
पद का लालच देवदूत को, जीवन भर ना आया था।
मानवता की सेवा करना, उनके दिल को भाया था॥
दुखिया, दीन, अनाथ जनों को, अपने गले लगाया था।
दुर्योधन और जरासध का, जग से नाम मिटाया था॥
पढ़ो महाभारत को समझो वीरो की सन्तानो तुम।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, सीख कृष्ण की मानो तुम॥
दिन पर दिन प्यारे भारत में, पनप रहे उत्पाती हैं।
गऊए मारी जाती हैं, विधवाएं रुदन मचाती हैं॥
मद्य, मास की यहा दुकानें, प्रतिदिन खुलती जाती हैं।
तरुण लडकिया मिनिस्टरो को, अपना नाच दिखाती हैं॥
सभी तरह हो गई गिरावट, सोचो कुछ मर्दानो तुम।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, सीख कृष्ण की मानो तुम॥
दुष्टों का सहार करो ये, अर्जुन को उपदेश दिया।
पावन गीता ज्ञान भुलाया, हमने हैं अपराध किया॥
जीवन अपना नही सुधारा, चित्र पूजना सीख लिया।
दोष लगाया महापुरुष को, जो दुनिया के लिए जिया॥
निर्भय जीवन श्रेष्ठ बनाओ, युग नायक को जानो तुम।
ईश्वर भक्त बनो तुम सच्चे, सीख कृष्ण की मानो तुम॥

ग्राम व पो० बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक २८) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९६ भाद्रपद शु० १ सं० २०५२ २७ अगस्त १९९५

"कृष्ण की नीति ही वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्र को बचा सकती है" —वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

हिमाचल के राज्यपाल द्वारा महाराष्ट्र में पूसद आर्यसमाज भवन तथा विद्यालय का उद्घाटन

नागपुर १८ अगस्त। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव आज नागपुर हवाई अड्डे पर उतरे जहां उनकी अगुआई प्रसिद्ध आर्य नेता श्री हरिश्चन्द्र प्रसाद, श्री दूबे जी तथा आर्य शिक्षण-संस्था के प्रतिनिधियों ने की।

श्री वन्देमातरम् को सड़क मार्ग द्वारा नागपुर से लगभग १० किलो मीटर पूसद आर्य समाज ले जाया गया।

१९ अगस्त को प्रातःकाल यज्ञोपरान्त आर्य समाज भवन के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया था। इस समारोह मे आर्य समाज के विशिष्ट आर्य नेताओ ने अपने विचार व्यक्त किये। नगर पालिका के अध्यक्ष ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुये कहा कि इस आर्य समाज को भूमि लगभग २५ वर्ष पूर्व दान मे प्राप्त हुई थी परन्तु तबसे यह भूमि बेकार पड़ी थी और अवांछनीय तत्वों द्वारा इस पर अनधिकृत कब्जो के प्रयत्न हो रहे थे। अध्यक्ष जी ने अपने अधिकारो का प्रयोग करते हुए लगभग १५ लाख रुपये की लागत से एक विद्यालय का निर्माण कराया जिसमे प्राथमिक स्तर पर २०० बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

पूसद शहर तथा आर्य समाज की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालते हुये नगर पालिका अध्यक्ष ने कहा कि यह भवन १९३८-३९ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के लिये प्रमुख केन्द्र रहा है, सारे देश से सत्याग्रही यहीं एकत्रित होते थे। जहां से तत्कालीन हैदराबाद राज्य में प्रवेश करते थे। उस समय इस छोटे से शहर मे लगभग पांच हजार सत्याग्रहियों के रहन-सहन और खान-पान आदि की व्यवस्था चलती रहती थी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी ने अपने प्रवचन मे धर्म के मूल स्वरूप से लेकर आज की वर्तमान राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियो की अवस्था पर प्रकाश डाला। पण्डित जी ने कहा कि जिस प्रकार अग्नि एक पदार्थ है उसके विशिष्ट लक्षणो एवं गुणो को ही उसका धर्म कहा जाता है। यदि उसमे उन लक्षणो और गुणो का अभाव हो जाये तो यही कहा जायेगा कि अग्नि का धर्म समाप्त हो गया। इसी प्रकार सृष्टि के प्रारम्भ मे परमात्मा ने चार महान तपस्वी ऋषियो के हृदय मे मानवता के लक्षणो का ज्ञान दिया। इन मानवता के लक्षणो को ही मानव धर्म या वैदिक धर्म कहा गया जो कि निर्विवादित रूप से दुनिया का एक मात्र धर्म कई युगों तक स्थापित रहा और आज भी है, जब कि कुछ व्यक्तियो द्वारा समय-
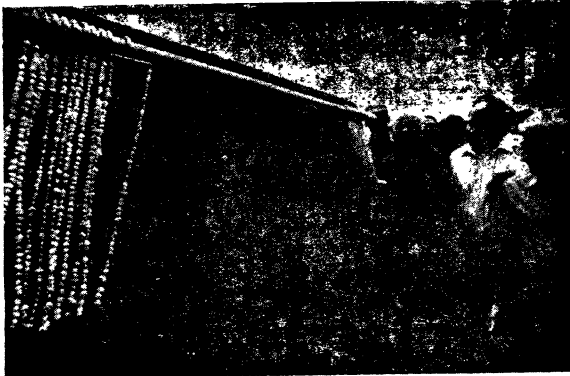
(शेष पृष्ठ २ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् सभा प्रधान की अध्यक्षता में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक आर्य समाज दीवानहाल मे २०-८ को सम्पन्न हुई। जिसमे विगत कार्यो का सिंहावलोकन तथा हैदराबाद के निर्वाचनके पश्चात की गतिविधियों पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया।

भारत के सभी प्रान्तो से आये प्रतिनिधियो ने बड़े उत्साह से इसमे भाग लिया। जटिल समस्याओ के निर्णय के लिये सभा-प्रधान जी को अधिकार दिया गया कि वे उन पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर निर्णय लें। बैठक चार घण्टे चली।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी दयानन्द मार्ग का उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्य मन्त्री श्री मदनलाल खुराना। ६ किलोमीटर लम्बा उक्त मार्ग जी.टी. रोड श्यामलाल कालेज से गाजीपुर गांव तक है।

स्वामी दयानन्द मार्ग के नामकरण के अवसर पर पधारे आर्य नर-नारियों के विशाल जनसमूह का विहंगम दृश्य।

कृष्ण की नीति

(पृष्ठ १ का शेष)

समय पर कुछ मजहबों की स्थापना की गई जिन्हें मत मतान्तर से अधिक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। यह मजहब या व्यवस्थायें उसी प्रकार थी जैसे पश्चिमी देशों की कल्याणकारी सामाजिक व्यवस्था, जर्मनी क्षेत्र की नाजी व्यवस्था, इटली क्षेत्र की फासिस्ट व्यवस्था और रूस का साम्यवाद।

भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू ने भी एक समाजवादी, सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात किया था। वर्तमान समय में यह सारी व्यवस्थायें तथा उन पर खड़े राज्यों के ढांचे पिसते हुये नजर आ रहे हैं। इनके मुकाबले प्राचीन वैदिक वर्ण-व्यवस्था आज भी हर प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान उपलब्ध कराने में समर्थ है। क्योंकि इस व्यवस्था में मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी मानते हुये तथा उसे समाज में अनुशासित सदस्य के रूप में रखने के लिये ही नियम बद्ध जीवन का उपदेश किया गया है।

श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि मनुष्य का धर्म है समाज में एकता, समता, समृद्धि और सुधार कार्यों के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहें। सुधारवाद से ही मनुष्य उन्नति को प्राप्त कर सकता है। श्री वन्देमातरम् जी ने इसी उन्नति की प्रक्रिया में भारतीय संविधान में से जहरीले और विघटनकारी प्रावधानों को हटाये जाने का सुधारने पर बल दिया।

जन्माष्टमी के अवसर पर उपस्थित आर्य जनता को योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन संकल्प से अवगत कराते हुये पण्डित जी ने कहा कि जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने उन परिस्थितियों में अच्छे और धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों को अपने साथ रखकर पाण्डवों की सहायता से जरासन्ध जैसे क्रूर प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के उद्देश्यों को निष्फल किया था उसी प्रकार आज भी श्रीकृष्ण के जीवन काल वाली परिस्थितियां भारतीय राजनीति में उत्पन्न हो चुकी हैं। जिन्हें श्रीकृष्ण के अनुयायी ही सुपथ पर ला सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश के वर्तमान राज्यपाल तथा महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री सुधाकर नाईक ने श्री वन्देमातरम् जी की बातों का समर्थन करते हुये कहा कि हम इन्हीं उपदेशों पर चलकर देश और समाज में एकता, समानता और समृद्धि लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। समारोह के अन्त में श्री सुधाकर नाईक ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् के सानिध्य में आर्य समाज भवन तथा विद्यालय का उद्घाटन किया।

समान नागरिक संहिता सर्वोच्च न्यायालय का महत्वपूर्ण निर्णय

—रामचन्द्र शर्मा

सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली, ने अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय (१०, मई १९९५) में केन्द्रीय सरकार को निर्देश दिया है कि देश के सभी नागरिको के लिए 'समान नागरिक सहिता' होनी चाहिए। भारत के स्वतन्त्र होने तथा २६ जनवरी १९५० से, जब से भारत का सविधान लागू हुआ है तभी से, ऐसा कानून लागू हो जाना चाहिए था किन्तु सर्वोच्च पद पर विराजे नेताओं ने विशुद्ध रूप से अपनी वोट लिप्सा के कारण अपनाई गई तुष्टीकरण की राष्ट्रघाती नीति के कारण ऐसा नही होने दिया। झूठी धर्म-निर्पेक्षता का लबादा ओढ़े घोर साम्प्रदायिकता के आधार पर हिन्दू तथा मुस्लिम नागरिको मे भेदभावपूर्ण कानून आज भी वर्तमान सरकार देश में लागू किए हुए है। सन १९५५-५६ मे केन्द्रीय सरकार ने 'हिन्दू कोड बिल' ससद से पारित कराकर लागू कराया जो आज तक देश मे लागू है। मुसलमानो को खुश रखने मे ही अपना अहोभाग्य समझने वाले नेताओ ने मुस्लिम पर्सनल कानून' को इससे दूर ही रखा। 'हिन्दू कोड बिल' के स्थान पर इसे 'भारतीय कोडबिल' नाम दिया जाना चाहिए था। यदि 'भारतीय' शब्द 'हिन्दू' के स्थान पर रखा जाता तथा सभी के लिए समान कानून लागू होता तभी यह सरकार 'धर्म निर्पेक्ष' कहलाए जाने के योग्य थी। मुस्लिम धर्म का खुला पक्षपात करने के कारण कांग्रेस सरकार 'मुस्लिम सापेक्ष' सरकार बन गई, किन्तु घोर लज्जा की बात यह है कि अभी भी अपने आप को 'धर्मनिर्पेक्ष' तथा अन्यो को साम्प्रदायिक' कहने मे सतत् उदघोषणायें करने में नही थक रही है।

इस महत्वपूर्ण निर्णय मे यह भी कहा गया है कि अब तक की सभी सरकारें सविधान के अनुच्छेद ४४ के तहत दिए गए निर्देशो को लागू करने का अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाई है। न्यायालय ने केन्द्र सरकार से, प्रधान मन्त्री के माध्यम से अनुरोध किया है कि वह सविधान के अनुच्छेद ४४ पर पुन: ध्यान दे और देश में सभी नागरिकों को समान सहिता उपलब्ध कराने का प्रयास करे। राष्ट्रहित की दृष्टि से यह निर्णय तथा निर्देश अभूतपूर्व है किन्तु शासन के उच्च पदो पर आसीन वर्तमान नेताओं पर इसका प्रभाव होना सदिग्ध है।

पुन न्यायालय ने इस बात पर खेद व्यक्त किया है कि पिछले ४१ वर्षों मे कई सरकारें आई और चली गई किन्तु किसी ने भी अनुच्छेद ४४ को प्रभावी बनाने मे रुचि नही दिखाई और यह अनुच्छेद १९४९ से ठण्डे बस्ते मे पड़ा है। किसी भी सरकार ने सभी भारतीय नागरिको के लिए एकरूप कानून बनाने का प्रयास नही किया।

इस निर्णय मे सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि सम्माननीय न्यायाधीशो ने यह भी सकेत दिया है कि सरकारो ने समान नागरिक सहिता क्यो नही बनाई इसका कारण बताने की आवश्यकता नही है क्योकि यह सभी जानते हैं कि ऐसा क्यो नही हो पा रहा है। ये पक्तिया स्पष्ट रूप से नेताओ की पक्षपातपूर्ण तुष्टीकरण नीति की ओर ही सकेत कर रही है जो झूठे धर्म-निर्पेक्षता का मुखड़ा लगाए हुए वास्तव मे, व्यवहारिक रूप से, साम्प्रदायिकता की भावनायें, विशेषकर हिन्दुओ मे, भड़का रही है। जब कोई हिन्दू या आर्य विद्वान सच्चाई एवं ईमानदारी से सरकार के इस झूठे मुखड़े के विषय में तथा मुसलमानो का पक्ष लेने तथा हिन्दुओ के साथ अन्याय करने के व्यवहारिक तथ्यों को जनता के सामने प्रस्तुत करता है तो उस विद्वान या विदुषी को शासन के नेता साम्प्रदायिक कहते है। तथा उस तथ्यपूर्ण एव सच्चाइयो से भरे भाषण को 'साम्प्रदायिकता भड़काने वाला भाषण' कहकर उसे बदनाम किया जाता है। इतना ही नहीं, उसके विरुद्ध बर्बर कानूनी कार्यवाही कर प्रताड़ित किया जाता है। इस प्रकार ये वोट की लिप्सा मे मदान्ध और अदूरदर्शी नेता देश में अराजकता एवं घोर असंतोष को जन्म दे रहे हैं जिसके परिणाम खतरनाक तथा राष्ट्रघाती हो सकते हैं।

न्यायालय ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि श्री जवाहर लाल नेहरू ने भी हिन्दू कोड बिल लाने का समर्थन करते हुए ससद मे १९५४ में कहा था कि मैं नही समझता कि अभी समान-नागरिकसंहिता लाने का समय आ गया है। विद्वान न्यायाधीशों का मन्तव्य प्रतीत होता है कि श्री जवाहरलाल नेहरू को ही चाहिए था कि 'हिन्दू' के स्थान पर'भारतीय'शब्द का प्रयोग करते तथा मुसलमानो का पक्ष न लेते हुए सभी के लिए समान नागरिक कानून लागू करते। सच्चाई यह है कि तुष्टीकरण की नीति नेहरू युग की ही देन है जिससे वर्तमान राजनेता देश की अनेकानेक हानियो के बाद भी मुक्त नहीं हो पाए हैं। इतना ही नही वोट प्राप्ति की लिप्सा ने इनके ज्ञान चक्षुओ पर अन्ध-परदा डाल दिया है जिससे कि वे आज भी देश की बहुविधि हानियो को नही देख पा रहे है। इसी कारण देश मे राष्ट्रघाती शक्तिया बढ रही है तथा वे भारत मे अराजकता उत्पन्न कर देश को गृह-युद्ध की ओर ढकेल रही है।

भारत मे जब से हिन्दू कोड बिल कानून बनकर लागू हुआ है (१९५५-५६ तब मे हिन्दुओ मे केवल एक ही विवाह बंध है जबकि मुस्लिम कानून मे चार पत्नियो के रखने की छूट है। एक ही देश मे इस प्रकार के पक्षपातपूर्ण एव भेदभावयुक्त दो कानून जहा मुस्लिम स्त्रियो के प्रति अन्याय तथा बहुविधि प्रताड़ना का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं, वही ये राष्ट्रीय हित की दृष्टि से भी अत्यन्त घातक हैं। भारत मे जनसख्या का जो विस्फोट हो रहा है उसका बडा कारण मुसलमानो को चार विवाह की छूट देना है। एक सामान्य हिन्दू यदि अपनी एक पत्नी से ५ सन्ताने उत्पन्न करता है तो एक मुसलमान अपनी ४ पत्नियो के द्वारा २० सन्तानें उत्पन्न करेगा यदि हम एक मुस्लिम पत्नी से ५ का ही औसत मान ले (किन्तु व्यवहार मे यह देखने मे आया है कि एक मुस्लिम पत्नी १० से १५ तक सन्तान उत्पन्न करती है) मुसलमानो को आमतौर से परिवार नियोजन मे विश्वास नही है। उनका अकीदा (विश्वास) है कि परिवार नियोजन कुफ्र है। अल्लाह जिन्हे पैदा करता है उनकी रोजी-रोटी का जुम्मा खुद लेता है। यही कारण है कि, अधिकाधिक ५ प्रतिशत को मुसलमानो छोड कर शेष ९५ प्रतिशत (पचानवे प्रतिशत), मुसलमान अपनी आबादी बढाने मे सलग्न है जिससे वे भारत मे अक्सरियत (बहुमत) मे आ सकें और इस देश मे वोट अथवा बुलट (जैसी भी स्थिति आवे) से इस्लामी राज्य स्थापित कर सकें। मुसलमानो के मुल्ला-मौलवी तथा 'जमायते तब्लीग' परिवार नियोजन न अपनाकर मुस्लिम आबादी बढाने का घन-घोर प्रचार कर रहे है। यह बात सभी आर्य विद्वानो तथा कुछ हिन्दू विद्वानो को भली-भाति पता है कि धर्मान्ध मुल्लाओ ने भारत को 'दारुलहरब' (गैर इस्लामी हकूमत वाला देश) घोषित कर रखा है, वे इसे 'दारुल् इस्लाम' (इस्लामी शासन वाला मुल्क) बनाना चाहते है। इसीलिए वे भारत मे पाकिस्तान तथा बगलादेश से मुसलमानो की घुसपैंठ भी [illegible] रहे हैं। हजारो मुसलमान घुसपैंठ करके भारत मे रह रहे हैं जिनको सरक्षण वोट भिक्षु राजनेता खुलेआम दे रहे हैं। यदि ये ही तथ्य कोई आर्य या हिन्दू विद्वान कहता है तो वह साम्प्रदायिक है और यदि कोई मुसलमानो के पक्ष में बोलता है तो वह सेक्यूलर (धर्म निर्पेक्ष) है।

इस निर्णय मे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देश विधि एव न्याय मन्त्रालय के माध्यम से केन्द्रीय सरकार को और दिया है कि आने वाले माह अगस्त मे सरकार का एक जिम्मेदार अधिकारी यह शपथ-पत्र न्यायालय में प्रस्तुत करे कि भारत के सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक सहिता उपलब्ध कराने की दिशा में निरन्तर कदम उठाये गए हैं और प्रयास किये जा रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने इतना स्पष्ट और सकोच रहित निर्देश केन्द्रीय सरकार को ४५ वर्षों में (२६ जनवरी १९५० जब से सविधान लागू हुआ) कभी नही दिया है अत यह एक गम्भीर के साथ-साथ राष्ट्र के हित मे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

क्षमा के दो व्यावहारिक पहलू

लेखक : रामनिवास लखोटिया

मनु स्मृति मे धर्म के १० मूल गुणो मे से क्षमा को भी सम्मिलित किया गया है जो क्षमा की महत्ता को दर्शाता है। मनु स्मृति के निम्न श्लोक मे धर्म के मूल लक्षण अर्थात् धैर्य, क्षमा आदि गुणो की महत्ता को इस प्रकार दर्शाया गया है :–

"धृति क्षमा दमोअस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह । धी विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् ।"

व्यावहारिक जगत् मे क्षमा के २ मुख्य पहलू हैं –

(१) क्षमा प्रदान करना, और (२) क्षमा याचना करना।

क्षमा के दोनो पहलुओं का पालन करने से हमारे जीवन मे कितनी शान्ति होती है, वह अवर्णनीय है।

अजमेर की अनेक संस्थाओं द्वारा आचार्य वाब्ले जी का भव्य स्वागत

आर्यसमाज, सान्ताक्रुज, बम्बई द्वारा शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र मे आर्य विद्वान को प्रतिवर्ष दिया जाने वाला "मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार' इस वर्ष ८ जुलाई, ९५ को दयानन्द कालेज, अजमेर के संस्थापक प्राचार्य तथा जाने-माने शिक्षा विद् प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले को दिया गया है। पुरस्कार मे २५ हजार रुपये की राशि तथा चांदी की एक सुन्दर वैजयन्ती उन्हें ४ जुलाई ९५ को आयोजित एक विशाल समारोह मे भेंट की गई।

अजमेर लौटने पर यहां के दयानन्द विश्वविद्यालय, दयानन्द महा-विद्यालय आदि शिक्षण सस्थाओ के अतिरिक्त रेडक्रास आदि अनेक सस्थाओं की ओर से जिनके वाब्ले जी अनेक वर्षों से अध्यक्ष रहे हैं भव्य स्वागत किया गया। सभा की अध्यक्षता सासद प्रा० रासासिह जी ने की। वाब्ले जी ने इस अवसर पर यह घोषणा की कि उन्हें पुरस्कार की जो राशि मिली है उसे वह आर्य शिक्षा मन्दिर, बम्बई को भेंट करते हैं इस ब्याज की आय से प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओ को आर्यसमाज के विद्वान प्रचारक स्वर्गीय श्री भद्रसेन जी की स्मृति मे छात्र वृत्तिया दी जाएंगी। सभा का सचालन समाज के मन्त्री श्री वेद रत्न आर्य द्वारा किया गया, उन्होने इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियो के सन्देश पढकर सुनाये जिनके द्वारा वाब्ले जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए शुभ–कामनायें व्यक्त की गई थी।

आचार्य गोविन्द सिह, सयुक्त मन्त्री,
आर्यसमाज अजमेर

क्षमा प्रदान :

क्षमा का प्रथम पहलू है–क्षमा प्रदान करना, अर्थात् शुद्ध हृदय से उस व्यक्ति को क्षमा करना जिसने हमे कष्ट दिया है। ऐसा करने से हमारे मन मे उस व्यक्ति के प्रति जो वैमनस्य की भावना होती है वह दूर हो जाती है और हमारा हृदय निर्मल हो जाता है। तभी तो कहा गया है–"क्षमा वीरस्य भूषणम"। यदि कोई कायर व्यक्ति कायरता के कारण किसी को क्षमा करता है तो वह वास्तविक अर्थो मे क्षमा नही कहलाती। बल्कि सामर्थ्यवान व्यक्ति जब अपने प्रति किए गए दुर्व्यवहार से उत्पन्न क्रोध को शान्त करके और कसूरवार व्यक्ति को क्षमा करता है, तभी वह असली अर्थ मे क्षमा होती है। क्षमा एक ऐसा अस्त्र है जो क्रोध के असर को निरर्थक ही नहीं करता बल्कि क्रोधी को भी नमित करा देता है। क्षमा वह सुगन्ध है जो आस-पास के वातावरण को महका देती है और धीरे-धीरे हर हृदय मे वह बैठ जाती है। अंग्रेजी मे भी एक कहावत है कि–"गलती करना तो मनुष्य का स्वभाव है लेकिन उसे क्षमा करना दैविक गुण है।" विभिन्न धर्मो के मुख्य लक्षणो मे से एक लक्षण क्षमा को गिना जाता है। हम बचपन से ही यह उक्ति भी बराबर सुनते आए है–"क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पाद" अर्थात् छोटे व्यक्ति अगर कसूर भी करें तो बड़े व्यक्तियो का यह कर्त्तव्य है कि वे क्षमा करके अपना बड़प्पन दिखाए। सन्त कबीर ने तो निम्न दोहे मे यहा तक कह दिया है कि जहा क्षमा है वहा ईश्वर है –

जहा दया तहं धर्म है, जहा लोभ तहं पाप।
जहा क्रोध तह काल है, जहा छिमा तह आप॥

इसी प्रकार भर्तृहरि ने नीतिशतकम् (५६ एव ७८) मे क्षमा महत्व को उजागर करते हुए लिखा है–"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा" अक्रोधस्तपस: क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता।"

क्षमा याचना

क्षमा का दूसरा पहलू है कि हम हमारे द्वारा की गई त्रुटियो और गल्तियो के लिए अपने मित्र, रिश्तेदार और अन्य मिलने वालों से क्षमा याचना करें। सबसे बड़ा जो लाभ क्षमा याचना का होता है वह आत्मा के बोझ का हल्का होना। क्षमा मागने से हृदय की मलिनता कम होती है, हृदय विशाल होता है और अन्तःकरण की शुद्धि होती है। अन्तःकरण की शुद्धि के कई उपायो मे एक उपाय है कि अपने द्वारा की गई गल्तियो के लिए शुद्ध हृदय से अपने अहकार को दूर करते हुए क्षमा याचना करना। इसमें अहकार कम होना है और मैत्रीभाव बढता है।

"मैं सभी से क्षमा याचना करता हू मुझे सभी क्षमा करें। मेरे सभी प्राणी मित्रवत हैं मेरा किसी से भी वैर नही है।" यह भावना व्यावहारिक जीवन मे यदि हम उतारें तो हमे फिर क्रोध और अहकार मिश्रित दूसरे के ऊपर जो दुर्भावना होती है और जिसके कारण हम घुटकर जीते हैं और दूसरों के द्वारा हमारे प्रति किए हुए दुर्व्यवहार के घाव को हरा रखती है, वह समाप्त हो जाती है। इसलिए यह परम आवश्यक है कि हम अहंकार को मिटाकर शुद्ध हृदय से आवश्यकतानुसार बार-बार ऐसी क्षमा याचना करें कि यह भावना हमारे हृदय मे सदैव बनी रहे। इससे हमारी मित्रता भी बढ़ेगी और विनम्रता का श्रेष्ठ गुण हममें विकसित होगा सच बात तो यह कि क्षमा मागने वाला स्वय कसूरवार से अधिक महान हो जाता है और इस गुण को व्यावहारिक जीवन मे प्रयोग करने से वैमनस्य दूर होता है। क्षमायाचना से जो सबसे बड़ा लाभ है वह है हृदय की पवित्रता का। और, जब तक हमारा हृदय पवित्र नहीं होगा हम सच्चे अर्थो में क्षमायाचना कर नहीं सकते, चाहे कितने ही कीमती क्षमापना के कार्ड हम भेज दें और कितने ही भाषण कर दें। जब तक हमारे हृदय में मलिनता और दूसरों के प्रति वैमनस्य और अहंकार आदि की भावना रहेगी, हमारा हृदय शुद्ध नहीं होगा। तब तक हम कितने ही बाहरी सुन्दर आवरण कर लें, क्षमा आदि के कार्ड भेज दें कोई लाभ नहीं होता। इसलिए हृदय की

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जम्मू-कश्मीर में तोड़े गए धर्मस्थानों की सुध सरकार कब लेगी

श्री विजय, सम्पादक पंजाब केसरी

पूज्य पिता लाला जगत नारायण जी ने २५ जनवरी १९७६ को एक लेख 'शेख साहब ! क्या निम्नलिखित परिस्थितियों को आप ठीक समझते हैं ?' के शीर्षक से जम्मू-कश्मीर में अनेक मन्दिरों, धर्म स्थानों और श्मशानों पर शरारती तत्वों या सरकारी कार्यकर्त्ताओं द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर लिए जाने या उन्हें नष्ट कर दिए जाने का ब्यौरा देते हुए लिखा था जिसमें तत्कालीन मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला से कुछ प्रश्न किए थे। इस लेख को हम ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं:—

मुझे एक कश्मीरी भाई ने एक पत्र भेजा है जिसमें जम्मू-कश्मीर में हिन्दू धर्म स्थानों पर जगह-जगह अवैध कब्जो का विवरण दिया गया है। पत्र के साथ एक पैम्फलेट भी भेजा गया है जिसमें बताया गया है कि कौन-कौन से हिन्दू धर्म स्थानों पर अब तक अधिकार कर लिया गया है और यह क्रम अभी जारी है। पैम्फलेट का विषय संक्षेप में निम्नलिखित है—

हिन्दू धर्म एक विशाल धर्म है, इसमें प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए सम्मान का दर्जा दिया गया है। इसमें साम्प्रदायिकता के लिए कोई जगह नहीं। ऐसे धर्म का कायम रहना सारे विश्व के लिए लाभदायक है। इससे आध्यात्मिक प्रकाश के अतिरिक्त शान्ति प्राप्त होती है। कश्मीर भारत के हिन्दू धर्म का ताज है और यदि यहां से हिन्दू धर्म मिट जाए तो हिन्दू धर्म के अस्तित्व के मिट जाने का खतरा है।

कश्मीर में हर जगह धार्मिक स्थान थे परन्तु धीरे-धीरे उनको समाप्त करने के प्रयत्न आरम्भ हो गए। मन्दिरों, धर्म स्थानों और श्मशानों पर शरारती तत्वों या सरकारी कार्यकर्त्ताओं ने अधिकार कर लिया। इस तरह प्रदेश में धर्म-निरपेक्षता की मिट्टी पलीद करके रख दी गई। श्रीनगर में काफी हिन्दू आबाद हैं परन्तु वहां भैरव की पूजा गुंडा तत्वों के अनुचित हस्तक्षेप से बन्द कर दी गई। आश्चर्य की बात है कि सरकार इसको कब्रिस्तान समझती है। यह स्थापन सैंकड़ों वर्षों का है और अदालत ने इसे हिन्दुओं का स्थान करार दिया है और हिन्दू ही इस पर काबिज हैं। जब अदालती फैसलों का ही सम्मान नहीं किया जाता तो ऐसी सरकार से न्याय की आशा करना व्यर्थ है। हरि पर्वत सारे का सारा हिन्दुओं का स्थान है और पहाड़ों के विभिन्न स्थानों पर शारिका देवी के मन्दिर हैं। अन्य धर्म उजागर होने पर इर्द-गिर्द इस जगह मकान हैं और कुछ कब्रिस्तान, दूसरी तरफ मखदूम साहब की जियारत कायम हुई। शंकराचार्य का पूरा का पूरा पहाड़ हिन्दुओं का था। इसके नीचे कुछ मकान और कब्रिस्तान बन गए। १९३ के बाद हरि पर्वत और शंकराचार्य के पर्वतों पर अवैध कब्जा होता रहा। अब दुर्गा मार्ग की अधिकृत जगह पर औकाफ की तरफ से शेख अब्दुल्ला के संरक्षण में होटल बनाया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त दशहरे का त्यौहार मनाने के लिए हजूरी बाग निर्धारित था परन्तु इस धार्मिक स्थान पर हाल ही में सरकारी मकान बना लिए गए हैं। एक पार्क भी बना दिया गया है। अब हिन्दू अल्प-संख्यक दशहरे का त्यौहार मनाएं तो कहां ?

यही पर बस नहीं, अधिकांश चश्मों में वाटर स्कीम के अन्तर्गत जाल बिछा दिया गया है और पूजा पाठ समाप्त करने के साधन किए जा रहे हैं। श्मशान भूमियों पर भी अवैध कब्जे किए गए हैं। विडम्बना यह है कि शेख अब्दुल्ला औकाफ के प्रधान के रूप में स्थापनों और मन्दिरों पर कब्जा करने के पक्ष में नहीं परन्तु दूसरी ओर वह मुख्यमन्त्री का पद सम्भाल कर इकतरफा वकालत करते हैं। इस स्थिति में उनको मुख्यमन्त्री के पद से हट जाना चाहिए।

यदि हिन्दू धर्म स्थानों पर अवैध कब्जे जारी रहे और दूसरी ओर सरकार उनके साथ भेदभाव का व्यवहार करती रही तो धीरे-धीरे अल्पसंख्यक यहां से समाप्त हो जायेंगे।

अवैध कब्जों की सूची नीचे दी गई है।

जिला श्रीनगर

१. क्षीर भवानी स्थापन तोलामोला गान्दरबल : कुछ भाग पर अवैध कब्जा करके पेड़-पौधे लगाए गए।

२. दुर्गानाग मन्दिर ट्रस्ट की जमीन : मुस्लिम औकाफ ने पटवारी और गिरदावर के साथ षड्यन्त्र करके एक गलत इन्दराज गिरदावरी में करा कर एक होटल बनाना आरम्भ किया हालांकि कलैक्टर ने मना किया था। हर ओर इसके इर्द-गिर्द ट्रस्ट का कब्जा है।

३. भैरव स्थापन छत्ताबल : छः साल से गुंडा तत्वों ने मन्दिर के इर्द-गिर्द और घाट पर कब्जा कर लिया है।

४ हरि पर्वत : विगत दस वर्षों से स्थापन के क्षेत्र पर अवैध कब्जा कर लिया है, कुछ भाग जंगलों में बदल दिया गया है।

५. रामलीला ग्राऊंड हजूरी बाग : इस जगह रामलीला होती रही। यहां झोंपड़ी भी थी। इस जगह बस स्टैंड और पार्क बनाए गए हैं।

६. टकी पुरा लाव : फूड एण्ड सप्लाईज विभाग ने इर्द-गिर्द दीवार बनवा कर अपने कब्जे में कर रखा है।

७. मन्दिर बसन्त बाग (गायक दल) इसे नष्ट करके गुंडों ने कब्जा कर लिया है।

८ राम बाग समाधि की जमीन पर अवैध कब्जा गुंडों ने किया है।

९. रूपा भवानी के पवित्र चश्मे पर वैटर्नरी विभाग ने कब्जा कर लिया है।

१०. श्री शीरी स्थापन (सरपरस्तान फतह कदल मुस्लिम औकाफ) ने स्थापन की दीवार नष्ट करके अपनी इच्छा से निर्माण करना आरम्भ किया है।

११. जुलेश्वर भैरव मन्दिर : स्थापन के कुछ भाग पर अवैध कब्जा किया गया है।

१२ मन्दिर बजरंग देव महाराज : मन्दिर का कहीं नामोनिशान नहीं छोड़ा गया है और जमीन पर अवैध कब्जा करके निर्माण खड़ा कर दिया गया है।

१३—पतापेश्वर मन्दिर (कहकन) मन्दिर के दोनों ओर से गुंडा तत्वों ने कब्जा कर लिया है।

१४. ठगा बाबा साहब दातल कदल : यह मन्दिर जेहलम नदी के किनारे पर था, इसको नष्ट कर दिया गया है।

१५ हाटकेश्वर स्थापन मल्लाखवाह : स्थापन की रक्षार्थ जो दीवार बनाई गई थी, वह नष्ट कर दी गई है।

१६. श्मशान भूमि राम बाग : घाट के ठेकेदारों ने मिट्टी उठा कर खदक बना दिए हैं और क्षेत्र पर कब्जा कर लिया है।

१७. श्मशान भूमि कर्मनगर : जमीन के कुछ भाग पर अवैध कब्जा कर लिया गया है। (क्रमशः)

मेधा

—प्रवेश सक्सेना

मनुष्य आहार, निद्रा, भय, मैथुन में पशु तुल्य है। पर बुद्धि के कारण वह सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इसीलिए उसे रेशनल एनिमल, अर्थात् बुद्धिमान् पशु कहा जाता है। बुद्धि के लिए मेधा, मति, धी प्रज्ञा, प्रतिभा आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। मनोविज्ञान की दृष्टि से, एक सामान्य बुद्धि होती है, एक सामान्य से ऊपर तथा एक, विशिष्ट प्रतिभा होती है जिसे जीनियस कहा जाता है। प्रतिभा को प्रज्ञा-नवोन्मेषशालिनी अर्थात् नवीन नवीन कल्पना की सृष्टि करने वाली बुद्धि माना जाता है। यों तो सांसारिक व्यवहार में प्रत्येक क्षेत्रों में बुद्धि की आवश्यकता होती है। बिना बुद्धि के कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। पर विशिष्ट क्षेत्र में श्रेष्ठता-लाभ के लिए विशिष्ट बुद्धि की आवश्यकता होती है। 'बुद्धिर यस्य बलं तस्य, जिसके पास बुद्धि होती है वही शक्तिशाली होता है।' बुद्धि-बल से बड़े बड़े असम्भव कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं।

वैदिक संहिताओं में विभिन्न देवों के लिए विभिन्न स्तुतियां मन्त्र-रूप में मिलती हैं। ऋषियों को मन्त्रद्रष्टा कहा जाता है। परम्परा वेदों को अपौरुषेय मानती है। तब भी स्तुतियों के रचना कर्म से ऋषियों को असम्बद्ध नहीं माना जा सकता। ऋषियों ने अपनी प्रतिभा से, मेधा से देवों के प्रति अपने विश्वास एवं सम्मान को सुन्दर छन्दोबद्ध मन्त्रों में अभिव्यक्त किया। काव्यरचना के लिए, देवस्तुति के लिए विशिष्ट मेधा की आवश्यकता होती है। हर कोई कवि, ऋषि नहीं हो सकता। मेधा सर्जन-कर्म में नितांत आवश्यक है। यही कारण है कि ऋग्वेद में (१.१६५. १४) प्रार्थना की गई है।

आ यद् दुवस्याद् दुवसे न कारुर, मस्माञ् चक्रे मान्यस्य मेधा।

अर्थात् "स्तोत्रों से स्तुति करने के लिए सम्मान के योग्य स्तोता की बुद्धि हमें प्राप्त हो।"

मान्य स्तोता की मेधा को प्राप्त कर तथा ऋत के पालक इन्द्र की मेधा को पाकर ऋषि सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है।

अहम् इद्द् हि पितुष् परि मेधाम् ऋतस्य जग्रभ।
अहं सूर्य-इवाजनि॥ ऋग्वेद ८.६.१०

अर्थात् 'यज्ञ के पालक इन्द्र की मेधा को मैंने पाया है। मैं सूर्य के समान तेजस्वी हो गया हूं।' ऋग्वेद के खिल सूक्तों मे मेधा को "देवी" (१०-१५१-६) तथा "ब्रह्मवती" (१०-१५१-२) कहा गया है। तैत्तिरीय आरण्यक में मेधा देवी का उल्लेख आता है। मेधा देवी जुषमाणा, न आगात् अर्थात् "सेवित होती हुई मेधा देवी हम तक आए", ऐसा कहा गया है। बुद्धि या मेधा ईश्वरप्रदत्त तो होती ही है, अभ्यास से उसे विकसित किया जा सकता है। ऋग्वेद (१-८८-३) मे ऋषि का कथन है।

मेधा वना न कृण्वन्त ऊर्ध्वा।

"वन के वृक्षों के समान तुम्हारे उपासक मेधा को ऊर्ध्वगमी बनाते हैं।" बुद्धि मनुष्य के पतन एवं उत्थान, दोनों का कारण हो सकती है। अतः इस मानसिक गुण को ऊर्ध्वगामी बनाएं। जैसे वृक्ष हमेशा ऊपर की ओर बढ़ते हैं वैसे ही मेधायुक्त मेधावी पुरुष ऊर्ध्वगामी हो, यह भाव स्पष्ट होता है।

मेधा का महत्त्व ऋग्वेद में स्पष्ट है। पर वहां "मेधा" देवी के रूप में उभर कर सामने नहीं आई है। वहां सरस्वती या वाक् को ही मेधा की वाचक देवी माना जा सकता है। वाक् तथा विद्या के बीच का अवकाश "मेधा" ही भरती है क्योंकि वाणी के लिए भी तथा ज्ञान या विद्या के लिए भी मेधा की, बुद्धि की आवश्यकता रहती ही है। मेधा के बिना वाणी तथा विद्या इच्छित फल की प्राप्ति कराने में समर्थ नहीं होतीं। इसी से "मेधा" शब्द बाद में सरस्वती का पर्याय भी हो गया। भावात्मक देवता के रूप में "मेधा देवी" की उद्भावना अथर्ववेद में है। "मेधा" के विभिन्न रूपों का आराधन तथा आवाहन अथर्ववेद के ६-१०८ सूक्त के पांच मन्त्रों में मिलता है। कौशिक सूत्र के अनुसार बुद्धिबल-प्राप्ति में इस सूक्त का विनियोग है।

"मेध" शब्द वैदिक-साहित्य में यज्ञ का पर्याय है, पर "मेधा" बुद्धि का। निरुक्त ३.१९ में यास्क ने मेधा मतौ धीयते, अर्थात् "बुद्धि को मस्तिष्क में सचित" माना है। ऋग्वेद के मन्त्रों में प्रयुक्त "विप्र" शब्द का अर्थ भी यास्क ने प्रायः 'मेधावी' किया है एक स्थान (निरुक्त १२-१३) पर यास्क कहते हैं, पूर्वाणि प्रज्ञानानि प्रतिमुंचते मेधावी समस्त देदीप्यमान ज्योतियों को धारण करता है। भारतीय संस्कृति में ज्ञान प्रकाश का तथा अज्ञान अन्धकार का प्रतीक रहा है। मेधावी पुरुष इसी लिए तेजस्वी होता है। निरुक्त में ही (३-१९) एक मन्त्र के संदर्भ में "प्रियमेधः" की व्याख्या प्रिया अस्य मेधा कहा गया है। "सुमेधः" और दुर्मेधः का इस आधार पर क्रमशः अर्थ होगा "अच्छी मेधा वाला" और "बुरी मेधा वाला" अथवा सुबुद्धि और दुर्बुद्धि।

अमरकोश के अनुसार धीर् धारणावती मेधा, धारणावती बुद्धि मेधा होती है। मेधा को मानसिक दक्षता (मैंटल पावर) तथा अन्तर्दृष्टि (इनसाइट) भी कहा जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार स्मृति को धारण करने की शक्ति मेधा (रिटेंण्टिव फेकल्टी) होती है। अतः मेधावी व्यक्ति वही होगा जिसकी मेधा-धारणावती बुद्धि या अन्तर्दृष्टि विकसित हो।

मेधासूक्त में शौनक ने मेधा को प्रथम स्थान में पूजनीया माना है। सांसारिक पदार्थों को वह दिलवाती है। श्रेष्ठ ज्ञान भी मेधा देवी के आशीष व कृपा से प्राप्त होता है। देवों की आराधना उनकी महिमा में मन्त्रगान करना भी मेधा द्वारा ही सम्भावनीय है। ऋभुगण को सर्जन शक्ति भी मेधा देवी के अधीन है। असुर (प्राण-विद्या के ज्ञाता अथ बलशाली व्यक्ति) भी मेधा को जानते हैं। ऋषियों की कल्याणिनी बुद्धि मनुष्य-मात्र में प्रविष्ट हो, ऐसी कामना करते हैं शौनक। मेधावियों की मेधा पदार्थों की रचना करे तथा मुझे, अर्थात् प्रार्थना करने वाले को मेधावी बनाए। प्रातः मध्याह्न तथा साय धारणावती बुद्धि हमें प्राप्त हो जिससे जीवन में हम सूर्य समान तेजस्वी हों, सबका कल्याण करें।

इस संदर्भ में बुद्धि, बौद्धिकता तथा बुद्धिमत्ता को भी जानना होगा। पुस्तकों को पढ़कर मनुष्य सिद्धान्तों तथा तथ्यों की जानकारी तो प्रायः ग्रहण कर लेता है। परन्तु दुःखों से लोहा लेने की शक्ति "समझ" (अण्डरस्टैण्डिंग) से ही आ सकती है। आत्मज्ञान से ही कल्याण की राह या शान्ति की चाह पूरी हो सकती है। आधुनिक शिक्षा बौद्धिक ज्ञान तो देती है पर यह दूरदर्शिता या समझ नहीं। यदि समझ से काम नहीं लिया, केवल बुद्धि से संचालित होते रहे तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। ज्ञान या सूचनाएं मात्र बुद्धि नहीं कही जा सकतीं। अन्य शब्दों में कहा जाए कि विवेक-शक्ति, विवेक-बुद्धि पुस्तकों में, शास्त्रों में नहीं मिलती। उसका विकास व्यावहारिक ज्ञान से हो सकता है। यही कारण है, मेधा-सूक्त में ऋभु, असुर तथा ऋषि, इन तीनों की मेधा का वर्णन किया गया है। तीनों की अपनी उपयोगिता भी है, परन्तु आत्मकल्याण के लिए ऋषियों की मेधा को अपने भीतर विकसित करने की बात कही गई है।

तीन तलाक : सबसे आसान तरीका

—अरुण शौरी—

> सशर्त तलाक की चर्चा कर रहे लेखक कह रहे है कि सशर्त तलाक के तरीके सिद्धांततः बीवी के हितमें बताए जाते है, लेकिन हकीकत यह हैं कि सशर्त तलाक शौहरों को हद से ज्यादा अधिकार प्रदान करता है पर विडम्बना यह है कि मुस्लिम महिलाएं शरीयत का समर्थन करने निकल पड़ी हैं।

सशर्त तलाक सिद्धान्त रूप में बहुत उदार और परोपकारी है। सिद्धान्ततः इन कठोर फैसलों और व्यवस्थाओं के दो उद्देश्य हैं और दोनों ही बीवी के हित में। इन फैसलों का मकसद, कहा जाता है, शौहरों को हतोत्साहित करना, बल्कि भयपूर्वक रोकना है ताकि वे ऐसी शर्तें निर्धारित न करें और दाम्पत्य के जारी रहने को बीवियों द्वारा इन शर्तों के पूरा करने से न जोड़ें : अपनी बीवियों से वंचित हो जाने के भय से कहा जाता है, शौहर इस तरह की चीजें कहने से गुरेज करेंगे। दूसरी ओर कहा जाता है, इसके बावजूद अगर वे ऐसी शर्तें और कसमें तय करते हैं तो अच्छा ही है कि बीवियों को उनसे निजात मिल जाये। क्रोध या नशे की हालत में तलाक बोलने की कीमत भी उन्हें अपनी बीवी के रूप में चुकानी पड़ेगी। इस नियम का अभिप्रेत भी कहा जाता है, उन्हें अपना आपा खोने से और शराब को हाथ लगाने से भयपूर्वक रोकना ही है। यह तर्क इस्लाम के कट्टर हिमायतियों के अलावा किसी को भी बेवकूफ नहीं बना सकता।

थोड़ी-सी देर के लिए मान लें कि चूंकि इस्लाम में शराब का निषेध है, लिहाजा उस आदमी को सजा देना जायज है जो न सिर्फ शराब पीता है, बल्कि इतनी ज्यादा पीता है कि पीकर होश खो देता है, लेकिन सजा के ऐसे तरीके ईजाद करना इन न्यायिकों की प्रतिभा और कल्पनाशीलता से परे नहीं होना चाहिए था जो तकलीफों का बोझ बीवी के सिर पर नहीं डालें। शराबी शौहर को शराब पीने की सजा के तौर पर अपनी बीवी से हाथ धो बैठना चाहिए। इस एक स्थापना के आधार पर कार्यवाही करके ये न्यायिक औरत के प्रति महज एक यांत्रिक नजरिया अपनाते हैं। उस पर क्या बीतेगी, यह उनकी चिन्ता और सरोकार नहीं है। समर्थकों की तर्कवादी व्याख्या यह है कि शराब मे डूबे शौहर से मुक्त घोषित हो जाना, औरत के लिए वास्तव मे एक वरदान है और न्यायिक जब फैसला देते हैं कि नशे की हालत में उच्चरित तलाक प्रभावशील होगा तब उनका अभिप्रेत उसे ऐसे शौहर की दासता से आजाद करना है। हालांकि खुद न्यायिक भी अपने नियम को इस रूप में व्याख्या नहीं करते, लेकिन मान लीजिए कि इस दलील के हिमायती सही हैं। मान लीजिए कि न्यायिकों का मकसद शौहर को न सिर्फ पीने की सजा देना है, बल्कि बीवी को ऐसे बेलगाम शौहर से आजाद करना भी है तब निश्चय ही तलाक के प्रभावशील होने का आदेश देने के साथ-साथ उन्हें यह फैसला भी देना चाहिए था कि जो हराम है उसे पीने की सजा के तौर पर, शौहर औरत को तलाक के बाद के गुजारे के लिए इतनी ऊंची, भारी-भरकम धनराशि देगा कि जिसे अदा करने में उसे पसीना आ जाये। इस तरह यह शौहर को शराब पीने के पाप की अच्छी सजा होती है। वह अपनी बीवी से हाथ धो बैठता और इसके अलावा उसके गुजारे की व्यवस्था के वास्तविक बोझ से भी दब जाता। बीवी भी दोगुनी धन्य हो जाती। वह शौहर से आजाद हो जाती फिर भी कंगाल होकर सड़क पर नहीं आ जाती, लेकिन न्यायिक इस किस्म का आदेश कभी नहीं देते। वे बीवी की कीमत पर शौहर को 'सजा" देते हैं। कारण साफ है। बीवी पर क्या गुजरेगी, यह उनकी बुद्धि और विवेक में कतई नहीं आता।

शरीयत का झुकाव

शरीयत का झुकाव किधर है, यह इस बात से अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि उलेमा किसके हितों की रखवाली करने के लिए झुकते और लचीले हो जाते हैं। वे एक के बाद एक तरकीब ईजाद करते हैं और निरपवाद रूप से ये तरकीबें शौहर का हित साधती हैं। शादी से पहले एक आदमी कहता है, "अगर मैं कभी कोई झूठ बोलूं तो जब कभी शादी करूं उस औरत का तलाक हो जाएगा।"। वह झूठ बोलता है। शादी करता है। क्या वह औरत तलाकशुदा है, जिज्ञासु पूछते हैं, क्या उसके साथ हम बिस्तर होना जायज या व्यभिचार होगा? हां, मुफ्ती किफायतुल्लाह फैसला देते हैं। निकाह के बाद वह औरत तलाकशुदा मानी जायेगी, लेकिन मुफ्ती उस आदमी को एक रास्ता सुझाते हैं जिसने कभी झूठ न बोलने की कसम ली थी। तलाक से बचने की तरकीब, मुफ्ती कहते हैं, यह है कि जैद (वह आदमी), को खुद निकाह नहीं करना चाहिए और न ही किसी को एजेंट बनाना चाहिए। उस औरत के साथ जैद के निकाह करने के प्रस्तावों को किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा सम्पादित किया जाना चाहिए। इस निकाह को जैद अपनी मंजूरी न दे, बल्कि इसके बजाय वह उस औरत के साथ सहवास करे। तब यह सहवास निकाह के लिए अनुमति बन जाएगा और जैद का निकाह भी तब हो सकेगा और तलाक भी नहीं होगा। (फतवा किफायत-उल-मुफ्ती, खण्ड छह, पेज २१६)। साफ तौर पर चालाकी और छल से परिपूर्ण तरकीब और तिस पर भी मुफ्ती किफायतुल्लाह सरीखे एक विवेकवान आलिम को भी आदमी की सुविधा के लिए ऐसी तरकीब निकालते हुये कोई खेद या पछतावा नहीं होता।

उसे डराने के लिए ताकि वह बच्चे को न पीटे और झगड़ा न करे" जिज्ञासु लिखता है,"मैंने कहा,"अगर तुम मेरे घर आयीं,तो तीन तलाक।' फिर मैंने सोचा, मैंने जो कहा वह मेरे दिल में नहीं था।" क्या औरत बहिष्कृत? क्या अपनी जुबान से फिरे बगैर उसे रखने का कोई रास्ता शौहर के लिए है? मुफ्ती किफायतुल्लाह प्रतिभा और प्रवीणता की साक्षात मिसाल हैं। अगर वह घर आती है, वह फैसला देते हैं, तो उसे तीन तलाक भुगतान ही होगा। यद्यपि तीन तलाक से इस प्रकार उबरा जा सकता है। उसके मना किये बगैर, दूसरे उसे एक डोली में बिठा दें और वह किसी और के कहने पर डोलीमें चढ़े और दूसरे वह डोली शौहर के घर के दरवाजे पर ले जायें और वहां उससे डोली से उतरने को कहें, तब वह तीन तलाक से बच जायेगी। (वही, पेज २६९-७०)। तर्क यह है कि शौहर ने कहा था, "अगर तुम मेरे घर आयीं..." जब कि इस तरह वह घर नहीं आयी है, दूसरों के द्वारा लायी गयी है। साफ तौर पर छल और चालबाजी. लेकिन तो भी एक गम्भीर और समझदार आलिम उस शौहर के लिए यह छलपूर्ण तरकीब ईजाद करने मे नही हिचकता जो अब कहता है कि उसकी वह मंशा नहीं थी जो उसके शब्दों से व्यक्त हुई थी। अगर शौहर ने उससे छुटकारा पाना चाहा होता, फिर बीवी की कितनी ही जबरदस्त विपरीत मंशा क्यों न होती, निकाह का जारी रहना उसके लिए कितना ही जरूरी क्यों न रहा होता, एक बार शौहर के बोल देने के बाद तीन बार तलाक से उबरने की कोई युक्ति न होती। (क्रमशः)

आर्यसमाज स्वतन्त्रता संग्राम का प्रेरणा-स्रोत (२)

डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव साहित्याचार्य अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, धर्मवन्त कालेज, हैदराबाद-२३

सर्वश्री ठाकुर रोशनसिंह, गेन्दालाल दीक्षित, पं. गयाप्रसाद शुक्ल, सोहनलाल पाठक, काशीराम आदि क्रान्तिकारियो ने उत्तर प्रदेश का नाम स्वाधीनता-संग्राम के स्वर्णिम पृष्ठो पर अमर कर दिया। ये सभी क्रान्तिकारी आर्यसमाजी विचारो से प्रभावित थे। यह उल्लेखनीय है कि उन दिनो आर्यसमाज मन्दिर और आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाए, क्रान्तिकारियो के अज्ञातवास का केन्द्र बनी हुई थीं। डी ए.वी कालेज व होटलो पर गुप्तचर पुलिस कड़ी निगरानी रखती थी। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर लार्ड मेस्टन ने तो गुरुकुल कागड़ी के फर्श को इसलिए तुड़वा कर देखा कि कही नीचे तहखाने में बम बनाने का कारखाना तो नही है।

निजामराज्य मे आर्यसमाज ने ही हुकूमत की जडो को हिला दिया था। हैदराबाद राज्य को मुक्त कराने मे आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हैदराबाद राज्य को मुक्त कराने का श्रेय आर्यसमाज को है। भारत के इतिहास में निजाम जैसे निरकुश मुसलमान शासन के चगुल से हैदराबाद को मुक्ति प्रदान करना स्वतन्त्र भारत के सग्राम के इतिहास का एक उज्जवल अध्याय है। इस प्रकार आर्यसमाज ने उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशो में ब्रिटिश शासन की जडो को हिला दिया था।

यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि स्वामी दयानन्द जी के गुरू स्वामी विरजानन्द जी महाराज सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, दूरदर्शी एव जागरूक विचारक थे। सन् १८५७ के स्वातत्र्य युद्ध में स्वामी विरजानन्द जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वास्तव मे वे उस प्रथम क्रान्ति के मूल प्रेरक थे। स्वामी विरजानन्द ने अपने योग्यतम परमशिष्य दयानन्द को मथुरा मे तीन वर्ष में सस्कृत का प्रकाण्ड पण्डित बना दिया था। प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध से एक वर्ष पूर्व सन् १८५६ में मथुरा के जगल मे पंचायत के नाम से चार दिवसीय क्रान्तिकारियो का एक गुप्त सम्मेलन हुआ था जिसमे हिन्दू और मुसलमान और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों ने भाग लिया था। नाना साहब पेशवा, अजीमुल्ला खान, रगूबापू और शहंशाह जफर का शाहजादा आदि प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता उपस्थित थे। इस पचायत मे स्वामी विरजानन्द जी महाराज को समापन दिवस पर अत्यन्त आदर एव श्रद्धा पूर्वक आमंत्रित किया गया था। स्वामी विरजानन्द जीका भाषण अत्यन्त उत्प्रेरक था। इस ऐतिहासिक भाषण का उर्दू अनुवाद बाद मे १९६९ मे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की पत्रिका "आर्य मर्यादा" मे प्रकाशित हुआ था, उसका कुछ अश इस प्रकार है :—

"मैं इस बाशिन्दगान हिन्द से इलतजा करता हूं कि जितना वह अपने मजहब से मुहब्बत करते है, उतना ही इस मुल्क से करें। इस मुल्क के हर इन्सान का फर्ज है कि वह वतन परस्त बने और मुल्क के हर बाशिन्दे को भाई-भाई जैसी मुहब्बत करे। जब तुम्हारे दिलो के अन्दर वतनपरस्ती आ जाएगी तो इस मुल्क की गुलामी यहाँ से खुद-ब-खुद जुदा हो जावेगी। हिन्द के रहने वाले सब आपस मे हिन्दू भाई है और बहादुरशाह हमारा शहशाह है।"

हमे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि स्वतन्त्रता संग्राम की पृष्ठ भूमि में आर्यसमाज की प्रबल प्रेरणा-शक्ति रही है। आर्यसमाज के अनेकों अनुयायियो ने सशस्त्र क्रान्ति मे भाग लेकर अपनी आहुति दी है। फलतः इस सशस्त्र क्रान्ति ने देश भर मे भूकम्प कर दिया। सशस्त्र क्रान्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि स्वाधीनता की प्राप्ति है। इस सम्बन्ध मे भारत के राष्ट्रपति डा शंकरदयाल जी शर्मा का अभिमत पठनीय है :—

"स्वतन्त्रता-सग्राम मे गाधीवादियो और क्रान्तिकारियो के योगदान को अलग-अलग करके आकना उचित नहीं है, क्योकि महात्मा गांधी सहित सभी क्रान्तिकारी थे। आजादी की लड़ाई मे क्रान्तिकारी और गाधीवादी एक दूसरे के पूरक रहे और उनमे कही टकराव नही था।

"अन्त मे,भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी के शब्दों को उद्धृत किया जाता है" भारत स्वामी दयानन्द का सदा ऋणी रहेगा। स्वामी जी ने आर्यसमाज के माध्यम से देश की अमूल्य सेवा की है।"

५-८-१०४, शीलम भवन, नामपल्ली, हैदराबाद

स्वास्थ्य चर्चा—

बहुगुण युक्त--बैंगन

परमात्मा ने मनुष्य के खाने के लिए पृथ्वी पर अनेक प्रकार के खाद्यान्न फल तथा सब्जिया पैदा की है। इनका उचित मात्रा मे प्रयोग करके हम सदा स्वस्थ्य तथा निरोगी रह सकते हैं। परन्तु इसके लिये हमें उनके गुणावगुण से परिचित होना बहुत आवश्यक है। फल सब्जियो में वे सभी पौष्टिक तत्व मौजूद हैं जो आम आदमी के स्वास्थ्य के लिए हितकर हैं। इसलिए इनका प्रयोग दैनिक भोजन मे करना तो आवश्यक है ही किन्तु समयानुसार इनका उपयोग औषधि के रूप मे भी किया जा सकता है।

सब्जियो में एक बहुत प्रचलित और अपेक्षाकृत सस्ती सब्जी है—बैंगन। इसकी फसल प्राय सारे भारतवर्ष में पैदा होती है। सस्ती और अधिक मात्रा में उपलब्ध होने के कारण कुछ लोग इसे मजाक मे 'बेगुन' अर्थात बिना गुण वाला कह देते हैं। सच्चाई इसके विपरीत हैं। बैंगन मे अनेक गुण हैं, अत इसे 'बहुगुण' कहना अधिक उपयुक्त होगा। इसमे विभिन्न तत्वो की मात्रा निम्न प्रकार है—

पानी — ९० प्रतिशत, खनिज — ०.५ प्रतिशत,
प्रोटीन — १.३ प्रतिशत, वसा — ०.३ प्रतिशत
फास्फोरस — ०.०६ प्रतिशत

इसके अतिरिक्त लोहा, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन बी-२, विटामिन सी भी पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार कई बीमारियां बैंगन के नियमित प्रयोग से ठीक हो सकती हैं। खासकर ऐसी बीमारियां जिनका सम्बन्ध यकृत तथा प्लीहा से होता है। प्लीहा के शोथ मे २-३ छोटे छोटे बैंगन प्रातःकाल उठने पर खाली पेट चबाकर खा लिए जाएं तो आराम आ जाता है। बैंगन का नियमित प्रयोग करने से गुर्दे मे पथरी बनना रूक जाता है।

बैंगन शक्तिदायक और स्वास्थ्यवर्धक सब्जी है। इसके प्रयोग से रक्त में लाल कण तथा 'हैमोग्लोबीन' की मात्रा बढने लगती है। अत रक्ताल्पता (एनीमिया) के मरीजो के लिए इसका सेवन बहुत लाभकारी है।

बैंगन का सेवन करने के लिए सदियो का मौसम अधिक उपयुक्त है, क्योकि बैंगन ऊर्जा पैदा करता है, इससे त्वचा का खुरदरा और रूखापन दूर हो जाता है। त्वचा पर, विशेषकर चेहरे पर चिकनाई आ जाती है।

बैंगन और टमाटर मिलाकर बनाई हुई सब्जी बहुत स्वादिष्ट होती है। इसका 'भुर्ता' बनाकर खाना अधिक लाभदायक है, क्योकि इसमे बैंगन के पौष्टिक तत्व अधिक नष्ट नहीं होते। अधिक तलकर या भून कर पकाने से इसके अधिकाश तत्व नष्ट हो जाते है।

कुछ लोगों का ख्याल है कि बैंगन खाने से पेट मे गर्मी और वायु पैदा होती है। यह ख्याल गलत है। इसके विपरीत बैंगन एक बहुत ही पौष्टिक सब्जी है। इसका नियमित प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

बैंगन के कुछ लाभदायक प्रयोग निम्न प्रकार है।

(१) एरण्ड के बीजों के तेल (Castor oil) मे २-३ छोटे छोटे गोल बैंगन तलकर, उसमें स्वाद-अनुसार नमक मिलकर भोजन के साथ कुछ दिन खाने से शियाटिका पैन (गृध्रसी), पीठ का दर्द दूर हो जाता है।

(२) कुछ लोगों का पानी पीने के बाद पेट फूलता हैं। ताजा, लम्बे, बैंगनी रंग के बैंगनों की भाजी जब तक मौसम रहे, तब तक खायें। एक ही मौसम में गैस की बीमारी साफ हो जाएगी।

(३) बच्चों की पसली चलने पर, बैंगन को भूनकर उसके गूदे में सज्जीखार मिलाकर पेट के ऊपर रखकर पट्टी बाध दें। आराम आ जाएगा।

(४) जिगर या तिल्ली बढ़ने पर लम्बे पतले बैंगन की भाजी प्रतिदिन खाने से आराम होता है।

बैंगन को 'बेगुन' न कहिए। यह तो बहुगुण हैं। —सुरेश चन्द्र पाठक

६२६, सैक्टर १२, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-२२

"विद्वान जागें और निष्क्रिय न रहें" —अथर्ववेद

देहरादून । आर्यसमाज धामावाला के रविवारीय सत्संग में प्रवचन करते हुए आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने अथर्ववेद १९-६३ १ मन्त्र की भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की।

आपने बताया कि इस मन्त्र में वेद-ज्ञान के रक्षक विद्वान् को निर्देश दिया गया है कि "विद्वानों को श्रेष्ठ कर्म के द्वारा तथा पूजा-भाव से जगाइए। श्रेष्ठ कर्म करने वाले को बढ़ाइए, उसके जीवन, बल, सन्तान, पशु (गो, अश्व आदि) तथा कीर्ति को बढ़ाइए।"

व्याख्याता ने आगे कहा कि विद्वान् व्यक्ति यदि सोया रहे और निष्क्रिय बना रहे तो उसकी विद्या निष्फल हो जाती है। अतः विद्वानों को समाजहित के कार्य में संलग्न होना चाहिए। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य की पहचान बताते हुए वेद में अन्यत्र कहा गया है "सकर्मा आर्यः" अर्थात् आर्य वही है जो कर्मशील है और शुभ कर्म करने वाला है।

श्रेष्ट कर्म करने वाले बढ़ेंगे, उन्नति करेंगे, सुखी होंगे, कीर्ति पायेंगे, उनका आदर सम्मान होगा तो समाज में अच्छे लोगों की संख्या बढ़ेगी और सामाजिक सुख की भी वृद्धि होगी। यदि उनके प्रति अवमानना और अवज्ञा का भाव समाज में रहा तो श्रेष्ठ कर्म करने वालों की वृद्धि रुक जायेगी। इससे समाज का अहित होगा।

अतः विवेकी जनों को चाहिए कि श्रेष्ठ कर्म करने वालों के प्रति आदर-भाव बनाए रखें और प्रत्येक शुभ कर्म में उनका सहयोग और उत्साहवर्धन किया करें।

—संजयकुमार

आर्यसमाजों के निर्वाचन

आर्य समाज कपूरथला में श्री सदानन्द जी सेठी प्रधान, श्री रोशनलाल जी मन्त्री, श्री हरिसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

आर्य समाज गाजीपुर में श्री अमरनाथ वर्मा प्रधान, श्री जयकृष्ण आर्य मन्त्री श्री संजयकुमार वर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज रोहिणी दिल्ली में श्री सुखदेव वर्मा प्रधान, श्री नरेशपाल आर्य मन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसाद तनेजा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य युवक परिषद शामली में अशोक आर्य प्रधान, श्री महेशचन्द्र आर्य मन्त्री, श्री गौरव शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मुजफ्फरपुर में श्री पन्नालाल आर्य प्रधान, श्री इन्द्रदेव साह मन्त्री श्री जगदीशप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

सत्कार समारोह एवं नोट-बुक वितरण समारोह

आर्य समाज लोअर परेल बम्बई की ओर से सत्कार समारोह एवं नोट बुक वितरण कार्यक्रम २३ जुलाई ९५ सायं ५ बजे से ८ बजे तक आर्य समाज लोअर परेल के सभागृह में आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओंकार नाथ जी आर्य की अध्यक्षता में धूम-धाम के साथ मनाया गया।

समाजसेवी श्री अशोक शिंदे तथा डा० प्रवीण शिर्के का शाल, नारियल और पुष्पहार से सत्कार किया गया। प्रमुख अतिथि गण में आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मन्त्री श्री मिठाईलाल सिंह, श्रीमती शिवराज वती आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रवक्ता श्री शिवबीर शास्त्री तथा श्री सावंत शर्मा एवं श्री दिलीप वेलाणी एवं नगरसेवक श्री महादेव देवले तथा नगरसेवक श्री वेडू आयरे उपस्थित थे।

आर्य समाज प्रीत विहार

आर्य समाज प्रीत विहार की कार्यकारिणी ने श्री कलाशचन्द्र भसीन को आर्य समाज का मन्त्री तथा वैदिक शिक्षा केन्द्र का प्रबन्धक १०-४-९५ को नियुक्त किया।

सुरेन्द्रकुमार रैली
प्रधान

विद्यार्थी वैदिक ज्ञानार्जन एवं आध्यात्मिक योग साधना शिविर

आर्य समाज (डी० ए० वी०) विकासपुरी के तत्वावधान मे पांच दिवसीय (पूर्ण आवासीय) दिनाक १ से ५ जुलाई १९९५ तक द्वितीय 'विद्यार्थी वैदिक ज्ञानार्जन शिविर एव आध्यात्मिक योग साधना शिविर' सोत्साह सम्पन्न हुआ । शिविर की अध्यक्षा--प्रिंसिपल श्रीमती चित्रा नाकरा जी, प्रधान आर्य समाज ने ओ३म् ध्वजारोहण कर १ जुलाई को प्रात ६ ३० बजे अत्यन्त उत्साह के साथ शिविर का उद्घाटन किया ।

शिविर के मुख्य आकर्षण

इस शिविर मे लगभग ८० छात्र-छात्राओ ने और विद्यालय के लगभग २०० अध्यापक अध्यापिकाओ ने भाग लिया । शिविर का मुख्य उद्देश्य था--प्राचीन वैदिक सस्कृति से परिचय, अपनी प्राचीन एव नवीन परम्पराओ का ज्ञान कराना, योगाभ्यास, देशाटन का महत्व, आर्य-सस्थाओं के दर्शन आर्य नेताओ से साक्षात्कार व उनसे प्रेरणा प्राप्त करना ताकि जीवन को उन्नत एवं आनन्दमय बनाने का प्रयास करना था ।

शिविर के दौरान आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो मे--श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती, प० राजपाल सिह शास्त्री, श्री प० सत्यपाल जी 'मधुर', श्रीमती उदेश आर्या, श्री पं० वेद व्यास जी शास्त्री इत्यादि भजनोपदेशक । प० काशी राम जी शास्त्री, पं० विनय कुमार जी विद्यालंकार, आचार्य भगवानदेव वेदालकार, प० ब्रजेश गौतम विद्यालंकार, आर्य युवा नेता एव सहमन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के श्री अजय सहगल के उद्बोधन, प्रवचन एव उपदेश होते रहे ।

शिविर के सम्पूर्ण कायक्रम में, विद्यालय के चेयरमैन एव डी०ए०वी० मैनेजिंग कमेटी के 'संगठन-सचिव' श्री बृजभूषण जी मक्खड़, प्रसिद्ध शिक्षाविद् एव शिक्षा परामर्शदाता-श्री खेमचन्द जी खेर एवं श्री कुलवीर कालिया जी का आशीर्वाद मिलता रहा ।

समापन समारोह श्री जी० पी० चोपडा जी. प्रधान डी०ए०वी० मैनेजिग कमेटी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । समापन-समारोह के विशिष्ट अतिथि थे । आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल । मुख्यवक्ता थे आर्य जगत् साप्ताहिक पत्र के सम्पादक, श्री अशोक कौशिक जी, शिविर के आयोजकों मे चेयरमैन श्री बृज भूषण जी मक्खड, प्रधान--श्रीमती चित्रा नाकरा जी, मन्त्री-श्रीमती रजनीवासुदेवा, सयोजक प० भगवानदेव वेदालकार एवं प० ब्रजेश गौतम विद्यालकार, व्यवस्थापको में श्रीमती नीलम श्रीवास्तवा, श्रीमती कीर्ति बजाज, श्रीमती मालती मजु जैन सभी उपप्रधान उपस्थित थे ।

शकरपुर दिल्ली में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली मे श्रावणी महापर्व वेद प्रचार सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का संयुक्त रूप से आयोजन दिनांक १७ से २०-८-९५ तक उत्साह पूर्वक किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन विशेष यज्ञ तथा विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा प्रवचना एव भजनो के माध्यम से वेद की महत्ता तथा आर्य समाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया। प्रमुख वक्ताओ मे प० नन्दलाल निर्भय, श्री जितेन्द्र शास्त्री तथा आर्य समाज शकरपुर के उपप्रधान श्री ओमप्रकाश सहित सम्मलित हैं। मुख्य कार्यक्रम १८-८-९५ को हुआ इस अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति प० भवानीदास शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुई। श्री पुष्किन अरोड़ा ने अपने मधुर भजनो से श्रोताओ का मन मोह लिया। आचार्य भवानीदास शास्त्री सहित अनेको वक्ताओ ने श्री कृष्ण के जीवन पर चर्चा करते हुए उनसे प्रेरणा लेने की अपील की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। इस आयोजन को सफल बनाने मे आर्य समाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता ने अथक परिश्रम किया तथा अपने सहयोगी साथियो श्री पतराम त्यागी श्री रामनिवास कश्यप मन्त्री, श्री नन्द कुमार वर्मा आदि के सराहनीय सहयोग पर धन्यवाद प्रकट किया।

—रामनिवास कश्यप, मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एस० ११०४१/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७-८-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N 626/27 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O.on 24,25-8-1995

स्वामी दयानन्द मार्ग के नामकरण के अवसर पर आयोजित जनसभा को सम्बोधित करने हेतु पधारे श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा, श्रीसोमनाथ मरवाह एडवोकेट, श्री सूर्यदेव जी, प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, श्री मदनलाल खुराना, श्री वी.एल शर्मा "प्रेम" डा हर्षवर्धन तथा श्री मदनलाल गावा।

समान नागरिक संहिता

(पृष्ठ ३ का शेष)

ऐतिहासिक निर्णय है। अब देखना यह है कि वोट, नोट तथा पद के मोह जाल में भ्रमित राजनेता और विशेष रूप से केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व किस सीमा तक इस बहुमूल्य निर्देश का पालन करता है अथवा कुछ क्षुद्र स्वार्थी बुद्धिजीवियों के परामर्श पर इस निर्देश को भी 'साम्प्रदायिक' की श्रेणी में रखकर एक ओर पटक देता है।

न्यायालय ने एक विशेष अनुमति याचिका पर यह अभूतपूर्व निर्णय दिया है। इस सम्बन्ध मे 'कल्याणी' नामक संस्था की अध्यक्षा श्रीमती सरला मुद्गल तथा अन्य ने एक याचिका दायर करके यह प्रकरण उठाया था कि क्या कोई हिन्दू पति जिसने हिन्दू कानून के अनुसार विवाह किया हो, इस्लाम धर्म स्वीकार कर दूसरी शादी कर सकता है और क्या दूसरा विवाह कानूनी दृष्टि से पहला विवाह तोड़े बगैर वैध हो सकता है जबकि पहली पत्नी हिन्दू ही रहे और क्या ऐसी स्थिति मे पति भारतीय दण्ड संहिता की धारा ४९४ के अन्तरगत अपराधी होगा? याचिका में उठाये गये प्रश्नो का उत्तर देते हुए न्याय मूर्ति कुलदीपसिंह ने अपने निर्णय मे कहा कि विवाह व्यवस्था सभ्य समाज की आधार शिला है। विवाह वह संस्था है जिसको सुरक्षित रखने मे समाज के सभी लोग अपना हित समझते है। विवाह से ही परिवार बनते है तथा परिवार के बिना समाज का अस्तित्व नही है। विद्वान न्यायाधीश ने आगे कहा कि जब तक हम सबके लिए समान संहिता का लक्ष्य प्राप्त नहीं करते तब तक एक हिन्दू पति जो अपनी पहली पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद कर दूसरा विवाह करना चाहता है, बडी आसानी से मुस्लिम बन कर दूसरा विवाह कर सकता है क्योंकि भारत मे हिन्दू विवाह कानून मे केवल एक विवाह वैध है जबकि मुस्लिम कानून मे चार पत्नियो को रखने की छूट है। न्याय मूर्ति कुलदीप सिंह के निर्णय का समर्थन न्याय मूर्ति एम० आर० सहाय ने भी अपने अलग से निर्णय मे किया है। न्याय मूर्ति सहाय ने भी अपने निर्णय मे कहा कि सताये लोगो की रक्षा और राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता इन दोनो बातो के लिए जरूरी है कि सबके लिए एक रूप संहिता बनायी जावे।

अब महर्षि दयानन्द के सैनिकों का यह महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है कि वे इस निर्णय का लाभ उठाते हुए समान नागरिक संहिता के लिए जन-जागरण ही नही, आन्दोलन आरम्भ कर दें।

पूर्व अधिष्ठाता (प्रान्तीय) आर्यवीर दल म०आ० क्षेत्र

क्षमा के दो व्यवहारिक पहलू

(पृष्ठ ४ का शेष)

पवित्रता की प्राप्ति के लिए हमे व्यावहारिक जीवन में क्षमायाचना धर्म जैसा गुण अवश्य अपनाना चाहिए।

सघन अपराध एव क्षमा की समस्या

कई बार यह प्रश्न उठता है कि कोई व्यक्ति अगर सघन अपराध जैसे बलात्कार, देशद्रोह आदि करे तो ऐसे व्यक्ति के प्रति क्षमा का क्या स्थान रहेगा। क्षमा का स्थान मूलत व्यक्तिगत, व्यावहारिक जीवन में है। देश के कानून के अन्तर्गत यदि उसे सजा दी जाती है तो वह भी एक क्षमा का दूसरा पहलू है जिसे हम उसके प्रारब्ध से जोड सकते हैं। जैसे न्यायाधीश मन मे बिना मलिनता के कसूरवार व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार सजा सुनाता है तो कभी यह नहीं कहा जा सकता कि वह व्यक्ति क्षमावान नही है। ईश्वरीय विधान के अनुसार न्याय करना प्रारब्ध के समुचित स्थान के महत्व को दर्शाता है क्षमा करने वाले के जीवन में आनन्द और प्रसन्नता होती है।

इस प्रकार हम देखते है कि क्षमायाचना करने से और क्षमा प्रदान करने से व्यावहारिक जीवन मे एक ओर जहा हमें सुख-शान्ति, आनन्द और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है वही हमारे अहंकार को कम करके यह हमारे मैत्रीभाव को बढ़ाती है और हमे श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने मे अग्रसर करती है। इसलिए क्षमा-धर्म को मानव-धर्म के मूलभूत धर्मों मे प्रारम्भ से ही गिना जाता रहा है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक २१)   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६   भाद्रपद शु० ९   सं० २०५२   ३ सितम्बर १९९५

अमरीकन पुलिस का भारतीय व्यवस्था में हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं होगा। —वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

आर्य समाजियों को पुनः स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए तैयार रहने का आह्वान

नई दिल्ली, २८ अगस्त। गत लगभग २ सप्ताह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने विभिन्न अवसरों पर आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित लगभग २ दर्जन से अधिक सभाओं व सम्मेलनों को दिए अपने भाषणों में वर्तमान केन्द्रीय सरकार की देशद्रोही नीतियों के प्रति आगाह किया है।

सार्वदेशिक सभा प्रधान को विश्वस्त सूत्रों से विशेष सूचना प्राप्त हुई है कि केन्द्र सरकार अपनी नई स्वतन्त्र आर्थिक नीतियों के तहत भारत में उद्योग स्थापित करने वाले विदेशियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए आम नागरिकों के अतिरिक्त विशेष प्रबन्ध करने जा रही है, इतना ही नहीं, इस विशेष प्रबन्ध के तहत भारतीय पुलिस तन्त्र को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से विदेशी सुरक्षा विशेषज्ञों को भारत में आमन्त्रित किया जाएगा। ये विदेशी अधिकारी भारतीय पुलिस तन्त्र के उच्चाधिकारियों से लेकर पुलिस स्टेशन स्तर तक के समस्त निम्न स्तरीय अधिकारियों तक को विशेष प्रशिक्षण देंगे। इस सारी योजना की रूप रेखा न्यूयार्क में ही बनाई गई है। इस का भविष्य में नियन्त्रण भी न्यूयार्क से ही होगा इसके लिए भी भारत का गृह मंत्रालय राजी है।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने इस नई योजना की तुलना लार्ड मैकाले द्वारा भारत में प्रारम्भ की गई शिक्षा पद्धति से की है जिसको हम आज तक भुगत रहे हैं। जिस प्रकार उस शिक्षा पद्धति ने आए एक शताब्दी के भीतर अपना रंग दिखाना प्रारम्भ कर दिया है उसी प्रकार भविष्य में पुलिस तन्त्र भी दिखने में भारतीय नागरिकों का लगेगा परन्तु उनके दिल अमरीका की प्रशासन नीति की तर्ज पर धड़केंगे।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि इस योजना के बाद अमरीका का हस्तक्षेप भारत की दैनिक व्यवस्था में भी व्यापक होगा इस बात के भी स्पष्ट संकेत हैं। ऐसे में [illegible] भारतीयों को [illegible] आन्दोलन [illegible] करना पड़ेगा।

१७ सितम्बर को 'हैदराबाद मुक्ति दिवस' मनाया जाएगा

आर्यसमाज के उग्र सत्याग्रह के बाद हैदराबाद की निजामशाही को अन्ततः भारतीय सरकार के समक्ष घुटने टेकने पड़े। १७ सितम्बर वैसे निजाम का जन्म-दिन था परन्तु १९४८ के वर्ष में इसी दिन निजाम ने सरदार पटेल के समक्ष समर्पण करके हैदराबाद का भारत में विलय स्वीकार किया था। इस समस्त आन्दोलन में जहाँ भारत भर से हजारों आर्यसमाजियों ने अपने जीवन का जोखिम उठाते हुए १९३८-३९ के सत्याग्रह में भाग लिया था वहीं वन्देमातरम् बन्धुओं ने निजाम की सेना के कई महत्त्वपूर्ण भेद सरदार पटेल तक पहुंचा कर १९४८ के पुलिस एक्शन को सफल बनाया था। स्वयं सरदार पटेल ने वन्देमातरम् बन्धुओं तथा समूचे आर्यसमाज को इस सफलता का श्रेय दिया था।

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १७ सितम्बर १९९५ को हर वर्ष की भांति "हैदराबाद मुक्ति दिवस" के रूप में मनाया जाएगा। यह जानकारी प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री क्रान्तिकुमार कोरटकर ने देते हुए बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव इस समारोह की अध्यक्षता करेंगे तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट इस समारोह में पधारेंगे।

श्री वन्देमातरम् के अनुसार प्रधानमन्त्री नरसिम्हाराव जाते-जाते भारत को पुनः गुलाम बनाने हेतु स्पष्टतः विदेशी सर्वोच्च ताकतों से साठ-गांठ कर रहे प्रतीत होते हैं।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने अपने विभिन्न सम्बोधनों में आर्य जनता को ऐसी योजना का विरोध उग्र आन्दोलनात्मक तरीके से करने के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

बंगलौर में वैदिक प्रचार का मूल्यांकन

विमल वधावन, एडवोकेट

गत माह एक निजी यात्रा पर बंगलौर शहर पहुंचा। १३ अगस्त रविवार को प्रात काल बंगलौर हवाई अड्डे से स्थानीय विश्राम स्थल पर लगभग १० बजकर ३० मिनट पर पहुंचा। सबसे पहले कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेश्वरम पुरम् आर्य समाज मे स्थित कार्यालय को सम्पर्क किया। सभा मन्त्री श्री सत्यव्रत से यह जानकारी ली कि यदि कोई साप्ताहिक कार्यक्रम चल रहा हो तो मैं भी उसमे भाग लू। परन्तु मालूम हुआ कि कुछ समय पहले ही सत्सग का कार्यक्रम समाप्त हुआ है। श्री सत्यव्रत ने सभा प्रधान श्री डा० राधाकृष्ण वर्मा जी के साथ साय काल मिलने का वचन दिया। दोनो महानुभाव सात बजे पधारे। उनके साथ रात्रि के लगभग १०-३० बजे तक वार्ता होती रही। कर्नाटक प्रान्त मे आर्य समाज की गतिविधियो की अत्यन्त रूचिपूर्वक जानकारी प्राप्त की।

अक्सर समाज मे समय समय पर एक तोता रटन्त सुनने का मिलती रहती है कि आर्य समाज कुछ नही कर रहा, यह एक सुप्त सस्था बन चुका है। मैं इन विचारो से पूर्णतया सहमत नही हू। मैंने अग्रेजी की वैदिक लाइट पत्रिका में आलोचना विषय पर एक विशेष लेख भी दिया है जिसका निचोड भी यही है कि आलोचना उस बात की हो सकती है जिस बात का वैकल्पिक और अधिक योग्य ज्ञान हमारे पास है इसी प्रकार आलोचना करने का अधिकार उसी व्यक्ति को है जो स्वय अधिक योग्यता से कोई कार्य कर रहा है। आर्य समाज के बारे मे कोई भी मत व्यक्त करने से पहले प्रत्येक व्यक्ति का यह अवश्य विचार लेना चाहिए कि वह स्वय आर्य समाज की कितनी सेवा कर रहा है। आर्य समाज का प्रचार आलोचक के अपने घरेलू और निजी जीवन मे कहा तक लागू है।

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० राधाकृष्ण वर्मा ने बताया कि हाल ही में उन्होंने 'शान्ति धाम' नामक एक कन्या गुरुकुल की स्थापना की है। विशेष बात यह है कि इसमे विद्याध्ययन पूर्णतय नि शुल्क है परन्तु कन्याओ का इस वैदिक शिक्षण सस्थान में प्रवेश पूर्णत योग्यता के आधार पर होता है। यह स्थान बैंगलौर शहर से लगभग ६० किलोमीटर की दूरी पर है। कावेरी नदी के एकदम किनारे पर स्थित यह स्थल अत्यन्त रमणीय बताया गया। मेरी कामना है कि यह स्थल भविष्य मे आर्य समाज के तीर्थ स्थल के रूप मे विकसित होकर प्रसिद्ध होवे। डा० राधा कृष्ण जी तथा सत्यव्रत जी का आग्रह था कि १५ अगस्त के दिन वहा पौधे लगाने के एक समारोह के अवसर पर मैं भी वहा उपस्थित रहू। मेरी १५ अगस्त प्रात काल की उड़ान द्वारा टिकटें पूर्व आरक्षित थी जिन्हें मैंने उन्ही की सहायता से एक दिन आगे बढवाने का प्रयत्न किया। परन्तु यह कार्य न हो सका। इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही समझता हू कि मै उस पवित्र स्थल को नहीं देख सका।

सभा मन्त्री श्री सत्यव्रत जी ने स्वय अपनी बच्ची को भी उसी गुरुकुल मे प्रविष्ट कराया है तथा स्वय अपनी निजी आजीविका को पूर्ण रूप से त्याग कर सभा के कार्यों मे सलग्न है। एक अन्य बच्ची जिसका नाम उन्होने अमृता-वर्षिणी बताया जो कि एक सरकारी उच्च अधिकारी की बेटी है। इस अधिकारी ने न केवल अपनी बच्ची को इस गुरुकुल मे प्रवेश कराया अपितु स्वय भी अपनी नौकरी त्याग कर अपनी पत्नी सहित गुरुकुल की सेवा मे अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह दम्पत्ति केवल सूती वस्त्र पहनकर पूर्णतय सादगी और तपस्या वाला जीवन व्यतीत करते हुए गुरुकुल की सेवा मे सलग्न है।

सभा द्वारा राजाजी नगर मे एक आर्यसेवाश्रम सस्था सफलता पूर्वक चलाई जा रही है। वैदिक साहित्य का कन्नड भाषा मे प्रकाशन जोरो पर है। इन सबके अतिरिक्त हाल मे ही वेद के कुछ चुने हुए मन्त्रो का सस्कृत भाषा में उच्चारण तथा अग्रेजी मे उसका भावार्थ कैसेट के रूप मे तैयार किया गया है। हजारो की सख्या मे यह कैसेट तैयार करायी गयी है जो कि विदेशों म विशेष रूप से प्रचार कार्य मे सहयोगी हो सकती है।

अगले दिन १४ अगस्त को मैं स्वय प्रात काल आर्य समाज भवन में गया तथा वहा की गतिविधियो की और भी जानकारी ली, सदस्यो और कर्मचारियों से साक्षात्कार किया। दोपहर बाद लगभग चार बजे पुन श्री सत्यव्रत जी का फोन आया कि वे एक बार फिर बातचीत की इच्छा रखते हैं। मैंने उन्हें तुरन्त आने के लिए कह दिया वे लगभग ६ बजे आये तथा इस बार उनके साथ एक अन्य महानुभाव थे जिनका नाम श्री किप्पू एस शेषाद्रि था। साधारण से दिखने वाले इन महानुभाव का जब परिचय प्राप्त हुआ तो पता चला कि वे पेशे से एक भवन निर्माण कला मे विशेषज्ञ (Architect) होने के साथ साथ लगभग ६ बडे बडे व्यापारिक घरानो के मालिक थे। श्री सत्यव्रत ने बताया कि लगभग ४५० व्यक्ति विभिन्न स्तरो पर इनके आधीन रोजगार मे है।

श्री शेषाद्रि से लगभग चार पाच घण्टे वार्तालाप हुआ। श्री शेषाद्रि पूर्णतय आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के रग में रगे हुए प्रतीत हुए। हालांकि उनको ऊपरी तौर पर आर्य समाज के सम्पर्क में आए छ माह से भी अधिक समय व्यतीत नही हुआ था। आर्य समाज के सपर्क में कैसे आए ? इस प्रश्न के उत्तर मे श्री सत्यव्रत ने बताया कि हमारी समाज मे एक अन्य ऐसे महानुभाव है जिनका नाम कृष्णमूर्ति हैं तथा वे सरकारी कर्मचारी हैं परन्तु प्रात तथा साय प्रतिदिन कुछ समय वैदिक प्रचार के लिए समर्पित करते हैं उनकी कार्य प्रणाली है कि वे एक झोला गले मे टाग कुछ कन्नड अग्रेजी और हिन्दी का वैदिक साहित्य उसमे रख कर बैंगलौर शहर की एक कालोनी से दूसरी कालोनी और एक द्वार से दूसरे द्वार को खटखटाना। इसी अभियान के दौरान सम्भवत श्री शेषाद्रि का परिचय आर्य समाज तथा उसके अधिकारियो से हुआ। श्री शेषाद्रि जो कि मूलत विज्ञान के रहस्यों तथा सिद्धातो की पूर्ण जानकारी रखते हैं, वैदिक सिद्धातो और परमात्मा जीव और प्रकृति आत्मा और परमात्मा की वैज्ञानिक कसौटी और पुनर्जन्म तथा वर्णाश्रम पद्धति आदि समस्त वैदिक सिद्धातो को विज्ञान की कसौटी पर जाच करके सत्य सिद्ध करने के लिए पूर्णतया सक्षम है। रात्रि तक हमारी चर्चा इन्ही सिद्धातो पर होती रही।

श्री शेषाद्रि ने बताया कि अगले दिन यानि १५ अगस्त को प्रात काल स्वतन्त्रता दिवस का व एक अनूठे तरीके से मनाने जा रहे हैं। १५ अगस्त का दिन एक राष्ट्रीय पर्व के रूप मे समझा जाना चाहिए इस भावना को ध्यान मे रखते हुए उन्होने प्रात काल ५-३० बजे एक ऐसी पदयात्रा का आयोजन रखा जिसमे लगभग १५० नर-नारी और बच्चे, आर्य समाजी तथा गैर आर्य समाजी शामिल थे। यह पदयात्रा लगभग २५ किलोमीटर की जिसका समापन ६-१६ बजे निर्धारित था क्योंकि यह समय सूर्य की प्रथम किरण की धरती पर आगमन का समय था। ६-१६ पर एक नन्हीं बालिका के हाथ से उधर ब गलौर की किसी एक कालोनी मे राष्ट्रीय ध्वज फहराया जा रहा था और इधर मैं बगलौर से ही दो छोटे छोटे राष्ट्रीय ध्वजो को खरीद कर उसी समय बगलौर से दिल्ली उडान की प्रतीक्षा में हवाई अड्डे के एक सोफे पर राष्ट्र की समृद्धि और खुशहाली के लिए वेद मन्त्रों द्वारा प्रार्थना कर रहा था।

वेद प्रचार के लिए सर्वोत्तम कैसेट

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रचारार्थ कुछ कैसेटों के निर्माण की योजना बनायी गयी है। इसके प्रथम चरण मे चारोंवेद के कुछ चुने हुए मन्त्रों का सस्कृत में सर्वोत्तम उच्चारण तथा अग्रेजी भाषा में उनके भावार्थ सहित एक कैसेट का निर्माण किया गया है जिसका मूल्य ४० रुपए हैं। एक अन्य कैसेट मे सध्या, यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण और प्रार्थना मन्त्रों के उच्चारण को भरा गया है। यह कैसेट भी दक्षिण भारत के एक ब्रह्मचारी के उत्तम स्वर से तैयार की गयी है। इन कैसेटो के स्वर जब मे अब सुनते हैं तो ऐसा लगता है कि जैसे किसी सस्कृत के किसी महान विद्वान ऋषि के आश्रम में बैठे हों। यह कैसेट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय आर्य समाज मन्दिर विश्वेश्वरम पुरम शकर राव सर्कल बैंग्लोर ५६०००४ से प्राप्त की जा सकती है।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है

डा० महेश विद्यालंकार

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" ऐसी धारणा और मान्यता किसी और विचारधारा वालों की नहीं है। ऋषि दयानन्द का जहां अनेक क्षेत्रों में स्मरणीय व वन्दनीय योगदान है। वहां वेदों के यथार्थ व वैज्ञानिक स्वरूप को ससार के सामने रखना अपने में उनका अभूतपूर्व कार्य था। उन्होंने वेदों के सत्यस्वरूप को जीवन व जगत के साथ जोड़ा। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद स्वतः प्रमाण हैं। वेद सबके हैं और सबके लिए हैं। इनमें सृष्टि और मानवता का चिन्तन है। सार्वभौमिक सार्वकालिक, सार्वजनिक एवं सार्वदेशिक चिन्तन की दृष्टि देते हैं। सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर ने प्राणी-मात्र के कल्याणार्थ वेदज्ञान दिया।

आर्यसमाज को वेदों के पठन-पाठन, रक्षण तथा परम्परा को जीवित रखने आदि की वसीयत मिली है। इसीलिए वेदों का प्रचार प्रसार, इसका मुख्य कार्य है। उसके अतीत का इतिहास गवाह है कि वेद परम्परा को जीवित रखने और आगे बढ़ाने के लिए न जाने कितने लोगों ने अपना तन, मन, धन न्योछावर कर दिया। उन्हीं तपस्वियों, त्यागियों, बलिदानियों आदि का पुण्य प्रताप है, जो वेद ज्ञान परम्परा हमें प्राप्त हुई है। इस वेद ज्योति के ज्ञान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए न जाने कितने विधर्मियों और आततायियों ने आक्रमण किए। फिर भी यह वेद ज्ञान हमें आलोकित कर रहा है। इस दृष्टि से हम लोग भाग्यशाली हैं।

दुःखद पीड़ा यह है कि आज का आर्य समाज, सभाएं, संगठन, संस्थाएं आदि मुख्य कार्य वेद प्रचार से विमुख हो रही हैं? यह हमारे पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वेद प्रचार घट रहा है। गौण, कार्य स्कूल, औषधालय, बरातघर, दुकानें, मैरिज ब्यूरो आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। इनसे समाज मन्दिरों की सात्विकता, धार्मिकता एवं पवित्रता नष्ट हो रही है। यह कार्य तो सभी कर रहे हैं? वेद प्रचार का कार्य कोई नहीं कर रहा है। इसकी जिम्मेदारी मात्र आर्यसमाज के ऊपर थी। वेद मन्दिर, वेद कथाएं, वेद सम्मेलन और वेदमन्त्रों द्वारा कर्मकाण्ड और कोई नहीं कराता है। वेद की ज्योति जलती रहे और कोई नारा नहीं लगाता है। वेद के आदेश, उपदेश और सन्देश को जनमानस तक पहुंचाने की और कोई जिम्मेदारी नहीं समझता है। ऋषि ने इसीलिए कहा है—"वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" आज हम सब लोग मिलकर इस परम धर्म का गला घोट रहे है जिन समाज मन्दिरों और संस्थाओं में वेदाध्ययन शालाएं होनी चाहिए थीं वहां दुकानें और स्कूल हैं। वहां सदस्यो, अधिकारियों, पुरोहितों व उपदेशकों में धार्मिकता, नैतिकता, आध्यात्मिकता होनी चाहिए थी, वहा नजदीक जाकर घृणा होने लगती है? वेद प्रचार का दर्द व बेचैनी किसे है? सब ऊपर से नीचे तक पद, स्वार्थ अहंकार कुर्सी धन व सुख सुविधाओं की दौड़ में लगे हैं। इसीलिए सर्वत्र विवाद, झगड़े, ईर्ष्या, द्वेष आदि फैल रहे हैं? क्या ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी व सन्यासी सभी दयानन्द और आर्य समाज को कैश करके अपना आश्रम, संस्था व फिक्स डिपाजिट बढ़ा रहे हैं। किसे फुर्सत है दयानन्द और आर्य समाज के दर्द को समझने की? यदि दयानन्द के दर्द को समझा होता तो दुनियां की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्य समाज अराजकता, अनुशासन हीनता, व भ्रष्टाचार की दुरव्यवस्था में न होता? सत्य यह है कि संगच्छध्वं, मित्रस्य चक्षुषा, समानो मन्त्रः, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जैसे आदर्श वेद ज्ञान की हम अवहेलना व खिल्ली उड़ा रहे हैं? वैसे और कोई नहीं? ऋषि दयानन्द की आत्मा हमारी करतूतों पर कलपती होगी, हमें धिक्कारती होगी? रोती होगी?

अरे! क्या ऋषि दयानन्द ने इसीलिए आर्यसमाज बनाया था? जो ऋषि ने हमें विचार सिद्धान्त, नियम, नैतिकता आदर्श आदि दिए थे। आज हम उनके विपरीत आचरण कर रहे हैं? हम मूल से हटते जा रहे हैं? हम इतने स्वार्थान्ध होते जा रहे हैं कि धार्मिक स्थानों सभा, संगठनों व संस्थाओं में पदों के लिए लड़ रहे हैं? इन्हीं बातों से हमारी विचारधारा में आस्था रखने वालों की संख्या बड़ी तेजी से घट रही है? युवा पीढ़ी हमसे अलग होती जा रही है? व्यक्ति के जाते ही उस परिवार से आर्य समाज का शान्ति पाठ हो जाता है? हमारी सन्तानें हमारे क्रिया कलापों से आर्य समाज की धारा से नहीं जुड़ पा रही है? एक खतरा और तेजी से फैलता जा रहा है। आर्य समाज के पास करोड़ो की सम्पत्ति सभा संगठनों संस्थाओं और समाज मन्दिरों के पास है, उस पर गैर आर्य समाजियों की गिद्ध दृष्टि बड़ी तेजी से पड़ने लगीं है। जो येन-केन प्रकारेण कब्जा व अधिकार करना चाहते हैं, कर भी रहे हैं और हो भी गए हैं। ये लोग छद्म वेश से प्रवेश पा लेते हैं। फिर पदों के लिए तिकड़म करते हैं। आर्य समाज के सगठन की लड़ाई में यह भी महत्त्वपूर्ण पक्ष है, जिसे आज हम नहीं समझ पा रहे हैं? इसके परिणाम दूरगामी होंगे: इन सब बातों तथा परिस्थितियों से आर्य समाज को निकाल कर मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार पर बल देना होगा।

वेद प्रचार की आज के जीवन व जगत को महती आवश्यकता है जिस वातावरण परिस्थितियों व हालात में ससार जी रहा है। चारों ओर अन्धेरा अर्थात् हिंसा, मारकाट, पशुता, दुःख, दैन्य, चिन्ता आदि फैल रहे हैं। हममें यदि कोई संजीवनी औषधि का कार्य कर सकता है, तो वह है वेद ज्ञान द्वारा दर्शित विचारधारा। वेद का चिन्तन हमें दुनियां में जीना सिखाता है। हम अपने जीवन जगत को कैसे सुखी, शान्त एवं आनन्दमय बनाएं। हम जो पाना चाहें पा सकते हैं। वेद प्रचार का दायित्व आर्यसमाज के ऊपर है। उसे अपना आत्म निरीक्षण व आत्मशोधन करना होगा। अपने स्वरूप व कर्त्तव्य को पहिचानना होगा। स्वार्थ, अहंकार तथा पद-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

भाषा आन्दोलन की सहायता हेतु अपील

भारत वर्ष से अंग्रेजी के वर्चस्व को तोड़ने एव हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओ को शिक्षा परीक्षा एव अन्य क्षेत्रो में लागू कराने तथा समान शिक्षा, समान स्कूल की माग को लेकर "अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन" (पजी) के बैनर तले बहुत सारे छात्र, वकील, डाक्टर एव अन्य उच्च शिक्षित युवक अपना घर आदि सर्वस्व त्याग कर पिछले दस वर्षो से आन्दोलनरत हैं। देश हित से जुड़े इस सवाल को राष्ट्रीय स्तर पर फैलाने एवं जन आन्दोलन खडा करने के लिए संगठन को प्रचुर मात्रा में साधनो की आवश्यकता है। सभी देशवासियों से हम अपील करते हैं कि व्यवस्था परिवर्तन के इस दूसरे संग्राम में हमारे भागीदार बनें। यह भागीदारी आदोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित होकर, यथाशक्ति, खाद्य एवं अन्य जीवनोपयोगी अनिवार्य सामग्री के रूप में की जा सकती है।

कार्यालय —१०, विकास मार्ग, सुराणा भवन, दिल्ली-९२

दूरभाष : २२०४६७६

जनसम्पर्कता :—धरना स्थल, मुख्य द्वार, सघ लोकसेवा आयोग भारतीय भाषा मार्ग, नई दिल्ली-११

राजकरण सिंह
महासचिव

पुष्पेन्द्र चौहान
सयोजक

राजस्थान का परम सौभाग्य एवं महा दुर्भाग्य

भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर

राजस्थान कितना गौरव मय एवं महान् सौभाग्यशाली है कि जहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपना सर्वाधिक समय ही नहीं अपितु प्राण भी समर्पित कर दिए, उन्होंने भारत के अनेक स्थानों में आर्यसमाज की स्थापना की, राजस्थान के अजमेर नगर में परोपकारिणी सभा एवं वदिक यंत्रालय की स्थापना की परन्तु वे इनके अधिकारी नही बने।

स्वामी दयानन्द द्वारा संसार के कल्याण हेतु वैदिक विचारो से परिपूर्ण धार्मिक, सामाजिक व राजनीति के महान् क्रान्तिकारी, विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना का सौभाग्य भी उदयपुर राजस्थान को ही प्राप्त हुआ है।

आर्य जगत् की सर्वोच्च संस्था—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के सर्व-सम्मति से वर्षों प्रधान महात्मा नारायण स्वामी रहे, जिन्होने आर्य जगत् का अटूट विश्वास व सम्मान प्राप्त किया, पदो एवं वोटों के लिए आर्यसमाज में अनार्यों की भर्ती, अवैध कार्य, संघर्ष तथा विभाजन के कार्य नहीं किए, केवल वैदिक धर्म-प्रचार के कार्य में अग्रसर रहे। समस्त आर्य जगत् के लिए यह परम सौभाग्य व गौरव की बात है।

परन्तु गत अनेक वर्षों से राजस्थान के लिए अत्यन्त दुख व दुर्भाग्य की बात है कि तीन निम्नलिखित नामधारी संन्यासियों ने पदों के लिए सन्यास धर्म की सब मान मर्यादाओ को त्याग कर अनेक कुत्सित कार्य किए हैं —

इन संन्यासियो मे से एक वेशधारी सुमेधानन्द को राजस्थान के भावुक आर्यजन ने प्रभावित होकर सभा का बहुमत से मन्त्री चुना। सभा के विधान के अनुसार अगले वर्ष जो निर्वाचन आवश्यक था, वह तीन वर्ष तक न हो सका, मुकदमे चले, न्यायालय के आदेशानुसार २ अक्टूबर ९४ को आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर में सभा का निर्वाचन हुआ, परन्तु इसके पश्चात् बोगस सदस्यों व प्रतिनिधियो के आधार पर १५ अक्टूबर ९४ को अजमेर में सुमेधानन्द सभा के पुन मन्त्री बने तथा सार्वदेशिक सभा के लिए नियम विरुद्ध मनमाने प्रतिनिधिगण भी चुने गए। दि. १ जनवरी, ९५ को आर्यसमाज आदर्श नगर जयपुर, उसकी शिक्षण संस्थाओं तथा करोड़ो की सम्पत्ति पर कब्जा करने का असफल प्रयास किया गया।

इसी प्रकार उक्त अवैध प्रतिनिधि आदि को लेकर हैदराबाद मे दिनांक २७ व २८ मई को सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन के अवसर पर एक पृथक सभा करके सुमेधानन्द ने स्वय को सार्वदेशिक सभा का मन्त्री घोषित करके श्री केशवदेव वर्मा आदि को साथ लेकर सार्वदेशिक सभा देहली के कार्यालय पर कब्जा करने का असफल प्रयास किया, इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र "सार्वदेशिक" के दि. ४ व ११ जून के अंक में सब कुछ प्रकाशित हो चुका है।

उपरोक्त विषय में आर्यसमाजों को भ्रमित करने के लिए श्री सुमेधानन्द ने १६ पृष्ठों का श्वेत पत्र भारी संख्या में, भारी व्यय कर के प्रकाशित किया है, इसमें सार्वदेशिक सभा से संघर्ष जारी रखने की घोषणा की है तथा अपनी पृथक सभा का कार्यालय आर्यसमाज नया बास देहली में खोला है। इस श्वेत पत्र की नितान्त असत्य बातों के निराकरण के लिए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री की ओर से दिनांक १३ अगस्त के सार्वदेशिक में—"सुमेधानन्द के भ्रामक प्रचार से सावधान तथा सुमेधानन्द एवं केशवदेव वर्मा आर्यसमाज से निष्कासित" शीर्षक से पत्र प्रकाशित हुआ है, इसे पृथक से प्रकाशित करा के आर्यसमाजों को भी भेजा जा चुका है। जिसमें सुमेधानन्द के अत्यन्त अनुचित, अवैध तथा संगठन विरोधी कार्यों के विषय में सप्रमाण बहुत कुछ प्रकाशित है।

सुमेधानन्द के इसी प्रकार के कार्यों के सम्बन्ध में मेरे द्वारा अनेक बार सप्रमाण प्रकाशित किया जा चुका है जिसका उत्तर वे आज तक नहीं दे सके हैं, पुन: सक्षेप में यह लिखा जा रहा है कि इन्होंने श्री विद्यासागर शास्त्री व अपने हस्ताक्षरों से आर्यसमाज अजमेर के लिए मिथ्या प्रस्ताव पास करके भेजे, बोगस आर्यसमाजें खोली, सदस्य व प्रतिनिधि बनाये, धन का दुरुपयोग किया, आर्यसमाजों पर अवैध कब्जे के प्रयास किये, इसके एक परम साथी ने चौड़ा रास्ता जयपुर के आर्यसमाज मन्दिर से उसका नाम मिटाकर उसे किराये पर दे दिया या बेच दिया, मेरे द्वारा सभा को लगभग ५००/-रुपये का एक भगोना दिया गया, ६ मास तक उसकी रसीद न मिलने पर, मेरी ओर से जब रसीद की माग की गई तो आवेश में आकर सुमेधानन्द ने भगोना वापिस करने को कहा और अन्तरंग से भी यह निश्चय करा डाला परन्तु एक वर्ष हो गया भगोना वापिस नहीं मिला, पता नहीं वह कहा है। इन्होंने आर्यसमाज आदर्श नगर की एक महिला पर असत्य आरोप लगाकर मुकदमा कर दिया। इस प्रकार इनके अनेक अनुचित कार्यों के इन पर गम्भीर आरोप हैं। श्री सत्यव्रत सामवेदी के अनुसार न्यायालय में इनके असत्य व्यवहार पर न्यायाधीश ने इन्हें कहा बताया कि यह भगवावस्त्र उतार कर सफेद वस्त्र धारण कर लो क्योकि इनका अधिकांश समय न्यायालय व वकीलो के पास व्यतीत होता है। पता नहीं संन्यास धर्म विरोधी इनके निकृष्ट कार्यो की जानकारी इनके दीक्षा गुरुओं को हैं अथवा नहीं।

एक और संन्यासी हैं देहली के श्री विद्यानन्द जी, जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनने के लिए दिनाक २७ व २८ मई को हैदराबाद गए वहां सुमेधानन्द ने इनको सार्वदेशिक सभा का प्रधान झूटमूट घोषित किया। तबा ये सुमेधानन्द के साथ कार्यों मे संलग्न रहे इनकेसम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह का दि. ११ जून के सार्वदेशिक के अन्तिम पृष्ठ पर निम्नलिखित बयान प्रकाशित है।

"अदालत में बहस के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने कहा कि विद्यानन्द नियमानुसार वोटर तो क्या संन्यासी भी नहीं है, क्योकि सन्यास की दीक्षा के बाद भी यह अपनी पत्नि के साथ घर पर रहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि विद्यानन्द माडल टाउन का स्थाई निवासी है, उसका राशन कार्ड भी उसी क्षेत्र का बना हुआ है। संन्यासी होते हुए भी वह परिवार के साथ रहता है। इसलिए विद्यानन्द को संन्यासी कहते हुए आर्यसमाजियों को शर्म आती है।"

मुझे सन् १९५४ से लगभग १५ वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री तथा सार्वदेशिक सभा का १० वर्ष तक अन्तरंग सभासद् व दो वर्ष तक उप मन्त्री रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इस अवधि में सार्वदेशिक सभा के अनेक निर्वाचन देखे, साधारण मतभेद भी देखे, परन्तु सार्वदेशिक सभा पर इस प्रकार कब्जा करने का प्रयास मुकदमे करने का कार्य उपरोक्त व्यक्तियों ने किया।

क्या ही अच्छा होता यदि यह लोग भगवा वस्त्रों की यह दुर्दशा व अपमान न करवाते तथा केवल वैदिक धर्मप्रचार के पुनीत कार्य में संलग्न रहना अपना परम धर्म समझते।

है महा खेद पद लोलुपता में ही सन्यास लुटा डाला।
निर्वाचन रूपी जुए में संन्यासी धर्म लुटा डाला॥
हे संन्यासीगण संन्यास धर्म यदि सचमुच पालन करना है।
तो निर्वाचन के मोह जाल में हरगिज भी न फंसना है॥
यदि वैदिक धर्म से प्रेम है तो इसके प्रचार में जुट जाओ।
जो वैदिक पथ से भटके हैं उनको वैदिक पथ पर लाओ॥
यही आप से विनती है और यही हार्दिक कामना है।
जगदीश्वर यह सब पूर्ण करें "भास्कर" की यही प्रार्थना है॥

१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर (राज.)

शिक्षक दिवस ५ सितम्बर पर विशेष

आचार्य देवो भव

'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी

भारतीय सस्कृति मे आचार्य को बहुत महत्व दिया गया है। वह ज्ञान का दाता है आचार का शिक्षक है और जीवन का निर्माता है। वह 'विद्यार्थी' को तपस्यारूपी अग्नि में डालकर लोहे को सोने के रूप मे परिवर्तित करता है। माता-पिता केवल भौतिक शरीर के जनक हैं, परन्तु आचार्य सूक्ष्म और दिव्य ज्ञानमय शरीर का जनक है। जिस प्रकार अग्नि में डाली हुई समिधा अग्नि तुल्य ही हो जाती है, उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि मे पडकर विद्यार्थी ज्ञानी तपस्वी और वर्चस्वी बन जाता है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार उच्च शिक्षा के लिए कठिन परीक्षा ली जाती थी, जो उस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होते थे उन्हें ही उच्च शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक था कि विद्यार्थी में ज्ञान पिपासा हो, जिज्ञासु वृत्ति हो और कठिन साधना की क्षमता हो। ये गुण आचार, संयम, तपस्या और लक्ष्यनिष्ठता से आते हैं। आचार्य इन गुणो कीसृष्टि करता था, अत. आचार-शिक्षक को आचार्य कहा गया है।

आचार्य यास्क का कथन है कि—

'आचार्यः कस्मात्, आचार्य आचार ग्राहयति

अर्थात जो आचार की शिक्षा देता है, जीवनोपयोगी विषयो का संकलन करता है और बुद्धि विकसित करता है उसे आचार्य कहते हैं।

अथर्ववेद का कथन है कि जो स्वयं सयमी जीवन बिताते हुए छात्रो को संयम की शिक्षा देता है वह आचार्य है।

'आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ।। अथर्व० ११-५-१७

अथर्ववेद काण्ड ११, सूक्त ५ मे आचार्य और विद्यार्थी के कर्तव्य का विस्तृत वर्णन किया गया है। विद्यार्थी भावी राष्ट्र का निर्माता है राष्ट्र के निर्माण और विकास का बहुत बडा उत्तरदायित्व उस पर होता है अत. वह जितनी कठोर तपस्या और साधना की अग्नि से निकला होगा, राष्ट्रीय विकास में उतना ही बड़ा योगदान दे सकेगा। अथर्ववेद का कथन है कि विद्यार्थी अपनी तपस्या से सारे लोकों को तृप्त करता है—

ब्रह्मचारी समिधा मेखलया लोकात तपसा पिपर्ति।

अथर्व० ११-५-४

गुरु के समीप रहकर ज्ञान विज्ञान, आचार विचार और सयम की शिक्षा प्राप्त करने के कारण विद्यार्थी अन्तवासी कहा जाता था। बृहस्पति स्मृति में व्यावहारिक प्रयोगात्मक और सगीत आदि से सम्बद्ध विषयो के अध्ययन के लिए गुरु के समीप रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य बताया गया है। मनु ने शिक्षक के तीन भेद दिए हैं—आचार्य, उपाध्याय और गुरु। वेदों के और शास्त्रो के शिक्षक को आचार्य कहते हैं। वेद और वेदांगों के किसी विशेष अग को पढ़ाने वाले को उपाध्याय कहते है। वह वैतनिक अध्यापक होता है। विविध संस्कारो के कराने वाले तथा विविध विषयों को पढ़ाने वाले को गुरु कहते थे। यह भेद बाद मे लुप्त हो गया और शिक्षक मात्र के लिए गुरु शब्द का प्रयोग होने लगा।

आचार्य को माता और पिता से उच्च स्थान इसलिए दिया गया है क्योंकि आचार्य ही ज्ञानदाता है, चरित्र निर्माता है और भावी जीवन का प्रकाशस्तम्भ है। महाभारत में कहा गया है कि—

गुरु र्गरीयान पितृतो, मातृतश्चेति मे मति. ।।

गुरु का स्थान माता पिता से उत्कृष्ट है पिता माता और शिक्षक ये तीनों देववत पूज्य हैं अतएव तत्तिरीय उपनिषद में कहा गया है कि—

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव।

तैत्ति० उप० १-११-२

मनुष्य को मनुष्यत्व की शिक्षा देने वाला, जीवन के लक्ष्य को बताने वाला कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराने वाला, शास्त्रीय और व्यावहारिक विषयों की शिक्षा देकर ब्रह्म तत्व का ज्ञान कराने वाला केवल गुरु है। वही अज्ञान के गर्त से मानव का उद्धार करता है, पापों से बचाता है, सत्कर्मो की शिक्षा देता है दुर्गुणों, दुर्विचारों से पृथक करके सदगुणो की ओर अग्रसर करता है, संसार को घोर अंधकार में ज्ञान का प्रकाश देता है और जीवन की भयकर समस्याओ से मुक्त करते हुए जीवन के चरम लक्ष्य अमरत्व की ओर पहुचाता है। अतएव आचार्य और गुरु के लिए सभी मनुष्यों ने अपनी प्रणामांजलि अर्पित की है—

मनुस्मृति मे शास्त्रीय भाषा में ज्ञानहीन को बालक कहा गया है और ज्ञानदाता को पिता। आचार्य वेदो का ज्ञान देता है, अतः उसे पिता कहा गया है।

पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी को तेजस्वी और यशस्वी बनाने का श्रेय बाल्मीकि ऋषि को है। गुरू कृपा से ही आरुणि ब्रह्मवेत्ता हुआ और एकलव्य महान धनुर्धर हुआ। गुरु विरजानन्द की कृपा से स्वामी दयानन्द सरस्वती परम सुधारक हुए। रामकृष्ण परमहस के आशीर्वाद से स्वामी विवेकानन्द कर्मयोगी और यशस्वी हुए देश और विदेश के सभी महात्माओ के प्रेरणास्रोत उनके गुरु रहे हैं। सभी कवि, संगीतज्ञ, राजनीतिज्ञ, विद्वान विचारक, अन्वेषक और तत्वज्ञ अपने गुरुओ की प्रेरणा से ही अपने क्षेत्रों में अपना नाम अमर कर गये हैं।

आचार्य की चारित्रिक पवित्रता ही उसे इतना ऊंचा स्थान प्रदान कर सकती है। दीक्षान्तोपदेश में आचार्य स्वयं कहता है कि—हमारे सदगुणों का ही तुम जीवन में आचरण करना, अन्यो का नहीं। जीवन मे शुभ गुणों को अपनाना दुर्गुणो को नही।

यह जीवन की पवित्रता छात्रो को प्रभावित करती थी। यह अनुशासन की शिक्षा आचार्य से प्राप्त होती थी। निष्काम भाव से विद्या का प्रसार, निःस्वार्थभाव से प्रेम, छात्रो को ज्ञानोन्नयन मे प्रसन्नता की अनुभूति और 'शिष्यादिच्छेत पराभवम्' शिष्य से पराभव की कामना जैसी विशुद्ध भावना उसे आचार्यत्व से देवत्व तक पहुचाती है। अनुशासित शिक्षको के शिष्यों ने ही ससार मे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्तियां की है। आचार्य के अनुशासन ने ही विश्व को देशभक्त, क्रान्तिकारी, समाजसेवी, आत्मबलिदानी व्यक्ति दिए है। आचार्य के महत्व के सम्बन्ध में जितना भी वर्णन किया जाए कम है। आचार्य क्रान्तदर्शी तत्वज्ञ विचारक और युगनिर्माता है, यह भावी पीढी का प्रेरणास्रोत है।

निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (भदोही)

जम्मू-कश्मीर में तोड़े गए धर्मस्थानों की सुध सरकार कब लेगी (२)

श्री विजय, सम्पादक पंजाब केसरी

जिला अनन्तनाग

१८. ज्वालामुखी स्थापन : कुछ भाग पर अवैध कब्जा है और मन्दिर की बुनियाद गुंडा तत्वों ने उखेड़ दी है।

१९. विजय भगवती बबहाड़ा : भगवती की मूर्तियों को कहीं फेंक कर जमीन पर अवैध कब्जा किया गया है।

२०. श्मशान भूमि बाबा मल्ला : जमीन के कुछ भाग पर अवैध कब्जा किया गया है।

२१. शिवा भगवती स्थापन इंकगाम : स्थापन को जमीन से सार्वजनिक मार्ग के बहाने कुछ हिस्सा हड़प लिया गया है।

२२ ज्मानवरी स्थापन बिजबरी : राजस्व विभाग के संकेत पर स्थापन के ग्राऊंड पर अवैध रूप से गुंडा तत्वों ने हस्तक्षेप आरम्भ किया है।

२३. गोसानी पड़ाव पहलगाम : स्थापन के कुछ भाग पर अवैध कब्जा किया गया है।

२४. कामलेश्वर मन्दिर पहलगाम : चश्मे को अवैध प्रयोग में लाकर धर्म का अपमान किया जा रहा है।

२५ नागबल का पवित्र चश्मा : (अनन्तनाग) : चश्मे के इर्द-गिर्द का कुछ भाग औरवाग कमेटी ने हड़प लिया है।

२६. गौतम नाग (अनन्तनाग) : स्थापन के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया है।

२७. श्मशान भूमि (अनन्तनाग) : १९७२-७३ में शरारत पसन्दों ने रास्ते को रोक दिया है।

२८. ओमोह मन्दिर (वैरी नाग) : मन्दिर के इर्द-गिर्द और चश्मे से सम्बद्ध जमीन पर अवैध कब्जा करके निर्माण खड़ा कर दिया है।

२९. पोलको स्थापन (वैरी नाग) : स्थापन की जमीन पर कब्जा कर लिया है।

३०. स्थापन वैरी नाग : वाटर वर्क्स विभाग ने स्थापन के क्षेत्र पर अवैध कब्जा करके क्वार्टर बना लिए हैं।

३१. नागाबल वैरी नाग : वाटर वर्क्स ने स्थापन की जमीन पर कब्जा करके क्वार्टर बना लिए हैं।

३२ गोदर स्थापन : (कोलाग्राम) : पवित्र चश्मे पर अवैध कब्जा करके उसका अनादर किया गया है।

इसी तरह बहुत से स्थानों पर अवैध कब्जा किया गया है।

जिला बारामूला

३३. खेरगुप्त गुफा बेरवा को नष्ट कर दिया गया है और उसकी जमीन पर कब्जा कर लिया गया है।

३४. पटन स्थापन : पवित्र चश्मे पर कब्जा करके बहुत-सी मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया है।

३५. गंगा स्थापन लालपुरा (कुपवाड़ा) : पवित्र चश्मे पर कब्जा करके वाटर वर्क्स ने इस पर जाल बिछाया है और पूजा-पाठ बन्द कर दिया।

३६ चण्डी स्थापन (कुपवाड़ा) : यहां की स्थिति भी उपरोक्त के अनुसार है।

जिला बारामूला में भी बहुत से पवित्र हिन्दू स्थापनों पर अवैध कब्जा कर लिया गया है।

मैं अपनी ओर से कोई टिप्पणी न करते हुए इतना अवश्य कहूंगा कि पैम्फलेट को पढ़कर मुझे काफी हैरानी और परेशानी हुई। यद्यपि निजी रूप से मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है और मैंने वही सूची दी है जिसकी चर्चा पैम्फलेट में है। मैं शेख साहब से जो जम्मू-कश्मीर के सर्वेसर्वा हैं और स्वयं को धर्म निरपेक्षता का अवतार समझते हैं, यही कहूंगा कि वह इन घटनाओं पर प्रकाश डालें।"

जो कुछ लालाजी के उपरोक्त लेख में छपा उसका शेख अब्दुल्ला की ओर से कोई प्रतिवाद नहीं किया गया। अब फिर प्रधानमन्त्री कार्यालय में राज्यमन्त्री श्री भुवनेश चतुर्वेदी ने ६ अगस्त को लोक-सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए यह बताया है कि जम्मू-कश्मीर मे उग्रवादियों ने पिछले तीन वर्षों में ६७ मन्दिरों को जलाया या नुकसान पहुंचाया है। इनमें से ५२ मन्दिर १९९२ में, ५ मन्दिर १९९३ में, ९ मन्दिर १९९४ में और ३१ मन्दिर इस वर्ष जनवरी से जुलाई तक जलाए गए या क्षतिग्रस्त किए गए।

इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय बात यह है कि जब इस वर्ष मई में मस्त गुल और उसके साथी भाड़े के सैनिकों ने चरार-ए-शरीफ को जला कर राख कर दिया तो सरकार ने तुरन्त चरार-ए-शरीफ के नव निर्माण के लिए एक करोड़ रुपया देने और पीड़ित परिवारों को एक-एक लाख रुपए की राहत देने की घोषणा कर दी। हम समझते हैं कि चरार-ए-शरीफ का फिर से बनाया जाना और पीड़ित परिवारों को राहत दिया जाना एक अच्छी बात है मगर इसके साथ ही सवाल पैदा होता है कि जिन मन्दिरों को प्रदेश में जलाया या क्षति-ग्रस्त किया गया है उन्हें ठीक कराने के लिए सरकार ने क्या किया है? पिछली सरकार की बात तो छोड़िए, अब की सरकार को तो कुछ करना चाहिए था।

श्रावणी पर्व पर वृक्षारोपण

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग की ओर से श्रावणी पर्व पर गुरुकुल के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित स्नातक डा० अनन्तानन्द आयुर्वेदालंकार के मुख्य आतिथ्य में आर्य नेता विद्वान डा० रामेश्वरदयाल आर्य की अध्यक्षता मे श्रावणी पर्व वृहद यज्ञ से शुभारम्भ हुआ।

इस अवसर पर वक्ताओं ने वैदिकता युक्त संस्कारों की रक्षा से मानवता की रक्षा सम्भव बताते हुए इस पर्व को सार्थक बनाने का आह्वान किया।

कुलपति डा० धर्मपाल जी ने गुरुकुलों को सुसंस्कार युक्त मानव निर्माण का केन्द्र बताते हुए आज के तनावयुक्त विश्व मानसिकता को मुक्त कराने का एक मात्र साधन बताया।

एक से आठ तक प्रत्येक कक्षा से सर्वाधिक अंक पाने वाले ब्रह्मचारियों तथा विद्यालय में सर्वाधिक अंक पाने वाले ब्रह्मचारी को मेहता बन्धु स्पोर्ट ज्वालापुर के सौजन्य से प्राप्त इनामों का वितरण कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी के करकमलों द्वारा हुआ।

इस अवसर पर गत वर्ष १५ बीघा आम लगाने की भांति इस वर्ष भी लगभग १२ बीघा खास जमीन में मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी द्वारा आम के वृक्ष लगाकर वृक्षारोपण समारोह का शुभारम्भ किया।

तीन तलाक : सबसे आसान तरीका (२)

शौरी—

बीवी ब्लैकमेल की शिकार

एक आदमी भारत में एक औरत से शादी करता है। फिर वह छोड़कर दूसरे देश में चला जाता है। छह महीने बाद वहां वह किसी और से शादी करना चाहता है। वहां वह कहता है कि उसकी बीवी और बच्चे की प्रसव के दौरान मृत्यु हो गई। खालिद को सचाई पता थी, वह उसका विरोध करता है और कोशिश करता है कि यह निकाह न हो। वह आदमी खालिद को लिखता है, "तुम बीच में मत पड़ो। मेरे लिये यह जिन्दगी और मौत का मामला है। इसके बावजूद अगर तुम दखल देते हो (यानी, इस पत्र के बावजूद अगर तुम मेरे नये निकाह में अड़ंगा डालना 'जारी रखते हो, तो भारत में मेरी बीवी को तलाक।" खालिद निकाह रुकवाने की कोशिश जारी रखता है। क्या भारत में बीवी का तलाक हो जाता है? हां, मुफ्ती किफायतुल्लाह फैसला सुनाते हैं। गौर कीजिए, वह बेचारी औरत भारत में सड़ रही है। खालिद की कोशिशों से उसका कुछ लेना-देना नहीं भी हो सकता है। वह बाहर हो जाती है। यही नहीं मुफ्ती मामले को और भी शौहर के हाथों में छोड़ देते हैं। वह कहते हैं कि यह तलाक" एक परिवर्तनीय तलाक" होगा, और शौहर इसे बीवी की इद्दत की अवधि के दौरान रद्द कर सकता है। शौहर को यह और भी गुंजाइश देने के पीछे उनका तर्क यह है कि उसने कहा था, "हम तलाक देते हैं," और यह नहीं कहा था, "उस पर तलाक"। (वही पेज २०९)। व्याकरण का यह अंश भी उस बेचारी औरत के लिए मददगार साबित नहीं होता। वह आदमी किन्हीं और शब्दों का प्रयोग भी कर सकता था, जिन्हें मुफ्ती अन्तिम और निर्णायक पाते, इसके विपरीत, बीवी अब ब्लैकमेल की शिकार होगी। शौहर से तलाक रद्द करवाने के लिए उसे स्वयं यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि खालिद अपनी कोशिशें रोक दें।

एक हनफी कहता है, "अगर मैं शादी करूं तो उस औरत पर तीन तलाक" जिज्ञासु लिखता है। क्या वह अपने आपको शफी घोषित करके शादी कर सकता है? अपने पाले में गिनती कम होने देने के प्रति अनिच्छुक कहीं हनफी शफी न हो जायें, सुन्नी शियाओं के पाले में न चले जायें, और निश्चय ही मुसलमान गैर-मुसलमान न हो जायें। मुफ्ती किफायतुल्लाह शफी घोषित कर देने वाली बात का जवाब ही नहीं देते, लेकिन अपनी खुद की एक तरकीब सुझाते हैं। अगर वह शादी करता है, तो तलाक तो प्रभावी होगा ही, मुफ्ती फैसला सुनाते हैं। रास्ता अलबत्ता यह है कि उस आदमी की इजाजत के बगैर कोई और निकाह फजूली (यानी, सांकेतिक या नाम मात्र का या झूठमूठ विवाह) कर ले। वह आदमी शपथ या शब्दों से इस निकाह को अनुमति न दे, बल्कि अपने आचरण से इस निकाह को अनुमति दे। मिसाल के लिए वह मेहर अदा कर दे या उस औरत के साथ सहवास आरम्भ कर दे। तब कोई तलाक नहीं होगा। (वही, पेज २०१-२, लेकिन आदमी की जबरदस्त, अकाट्य जरूरत एक हनफी के पन्थ बदल लेने के प्रति मुफ्ती की अनिच्छा पर भारी पड़ती है। जैद के पिता उसे बीवी को तलाक देने के लिए बाध्य करते हैं। वह तलाक दे देता है, यद्यपि वह ऐसा करना नहीं चाहता था। बीवी भी उसके पास लौट आना चाहती है। वह "हलालाह" की प्रक्रिया से नहीं गुजरना चाहती। क्या करना चाहिए? हनफी कानून में मुफ्ती लिखते हैं, दबाववश दिया गया तलाक प्रभावी होता है। तीन तलाक के बाद हलालाह के बगैर दोबारा निकाह नहीं किया जा सकता और सांकेतिक या नाम मात्र का हलालाह यानी बीवी को किसी दूसरे आदमी के साथ बगैर हम बिस्तर हुए शादी भी सम्पूर्ण और मान्य नहीं है, वह लिखते हैं, लेकिन अगर स्थिति इस हद तक पहुंच चुकी है (जैसा कि जिज्ञासु ने वर्णन किया है), तो शौहर को किसी ऐसे आलिम से फतवा हासिल करना चाहिए जो सोचता है कि इन परिस्थितियों में तलाक वैध नहीं है, तब कहीं वह दोबारा निकाह करे। (वही पेज २३६-३७)।

एक हनफी कहता है, "अगर मैं इस धरती पर किसी भी औरत से शादी करूं, तो उस पर तीन तलाक" लेकिन अब वह शादी करना चाहता है। क्या किया जाये? हनफी कानून के तहत, मुफ्ती किफायतुल्लाह फैसला देते हैं, अगर वह शादी करता है तो औरत तलाकशुदा मानी जायेगी। लेकिन जरूरत पड़ने पर वह शादी और सहवास कर सकता है, मुफ्ती कहते हैं। फिर औरत तलाक का दावा करे। फिर वे दोनों किसी शफी आलिम को मध्यस्थ बनायें और वह शफी नियमों के मुताबिक फैसला दे। तब तलाक नहीं होगा। (वही, पेज ३०९-१०)।

"अगर मैं तुम्हारी इजाजत के बगैर किसी दूसरी औरत से शादी करूं, "एक शौहर अपनी बीवी से कहता है, "तो उस पर तीन तलाक।" लेकिन फिर वह दूसरी बीवी भी प्राप्त करना चाहता है। क्या कर सकता है? अब फतवा-ए-रिजविया का फैसला यह है। अगर कोई फजूली कोई सांकेतिक, नाम मात्र का व्यक्ति इस दूसरी औरत के साथ उसका निकाह करता है, और वह आदमी शब्दों से इस निकाह का समर्थन या पुष्टि नहीं करता बल्कि अपने किसी कार्य से उसका समर्थन करता है। मिसाल के लिए, अगर यह दूसरा आदमी उसे इस दूसरे निकाह पर मुबारकबाद दे और वह खामोश रहे, या अगर वह उस (दूसरी) औरत को निर्धारित मेहर भेज दे। तब यह निकाह मुनासिब और उचित होगा, और तलाक नहीं होगा। (फतवा-ए-रिजविया, खण्ड पांच, पेज ८०४-५)।

अनगिनत उदाहरण

उदाहरण ऐसे अनगिनत दिये जा सकते हैं कि जिनसे इस तरह के दर्जनों लेख भर जायें। यद्यपि ये थोड़े से उदाहरण भी यह बताने के लिए काफी हैं कि पुरुष या आदमी की सुविधा पूर्ति के लिए उलेमा किस हद तक झुक जाते हैं। ये उद्यम कोई आकस्मिक या संयोगवश भी नहीं हैं। ये कुरान के उस बुनियादी दृष्टिकोण से पैदा होते हैं, जिसका वे अक्सर जिक्र करते हैं, कि "पुरुष ही मालिक है।" इन उदाहरणों से कई अन्य बातें भी सिद्ध होती हैं, जिनमें से हरेक अपने ढग से महत्वपूर्ण हैं। ऐसे फैसलों और व्यवस्थाओं के सामने, जिनकी बदौलत शौहर अपनी बीवी से किये गये वायदे से इतनी आसानी से मुकर जा सकता है। मसलन, इस वायदे से कि वह उसकी इजाजत के बगैर दूसरी बीवी कुबूल नहीं करेगा। ऐसे फैसलों के सामने उन सुधारवादियों के आशीर्वाद के लिए जगह भला कहां है जो मांग करते रहे हैं कि तीन बार तलाक और बहु-विवाह वगैरह सरीखे विशेषाधिकारों और शक्तियों को छोड़ने के बाबत निकाहनामे में ही शौहर की रजामन्दी हासिल करके इन चीजों से निजात पायी जा सकती है? हमसे अक्सर कहा जाता है कि इसलाम में उस आदमी का सबसे ज्यादा वजन और अहमियत है जो चाहे जो नतीजे भुगतना पड़े लेकिन अपनी वायदा की हुई बात से मुकरता नहीं है। इस दावे को इस तथ्य की रोशनी में देखना चाहिए कि जब एक आदमी अपनी बात से मुकरना चाहता है तो उलेमा इतने स्पष्ट रूप से बेईमान, कपटपूर्ण तरकीबें निकालकर उसकी मदद करने को सही और उचित समझते हैं। तीसरे हमसे कहा जाता है कि शरीयत अल्लाह की दी हुई चीज है, और इसलिए अपरिवर्तनीय है। यह भला किस किस्म की अपरिवर्तनीयता है कि एक आदमी जो हनफी है, थोड़ी देर के लिए अपने को शफी घोषित करके या जब सुविधाजनक हो तब एक शफी आलिम के पास जाकर उससे एक फतवा हासिल करके, सम्बन्धित प्रावधान से बच निकल सकता है?

(क्रमशः)

पुस्तक समीक्षा

महर्षि दयानन्द की राजनैतिक विचारधारा (अंग्रेजी)

लेखिका--श्रीमती शान्ता मल्होत्रा प्राचार्या

आर्य महिला कालिज अम्बाला

पृष्ठ—२०० लगभग मूल्य—१५० रुपये

प्रकाशन का नाम—श्री सरस्वती सदन ए १/३२,

सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली—२९

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन केवल धार्मिक ही न होकर समाज मे नव चेतना लाने मे राजनीति का सर्वप्रथम महत्व था। अत सत्यार्थ प्रकाश स रचना। मे षष्ठम् समुल्लास का विशेष महत्व है। आजादी के बाद महर्षि दयानन्द की पोषक विचारधारा पर भिन्न भिन्न विश्वविद्यालयो मे शोध कार्य किया गया है और हो रहा है।

स्वामी दयानन्द के राजनीति मे निहित विचारो को श्रीमती शान्ता मल्होत्रा प्राचार्या आर्य महिला कालेज अम्बाला ने अपने शोध प्रबन्ध मे भली प्रकार निखार दिया है। अभी तक राजनीति पर—शोध कार्य नही किया गया। प्रचार्या जी ने इस कमी का पूरा कर ग्रन्थ की सरचना करके अभाव की पूर्ति की है।

लेखिका ने महर्षि दयानन्द की राजनैतिक विचारधारा को प्रस्तुत पुस्तक मे समाहित करने का सफल प्रयास किया है। इस कार्य मे उन्होने महर्षि कृत ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया है और राजनीति के सम्बन्ध मे उनके विचारो को सार रूप में एकत्र किया है।

पुस्तक मे लगभग २०० पृष्ठ हैं और यह इतनी रोचक है कि पाठक एक बार पढना शुरू करके इसे समाप्त करके ही रहता है।

स्वामी दयानन्द को एक मौलिक विचारक के रूप मे प्रस्तुत किया है। उनके विचारो का स्रोत वेद तथा अन्य वैदिक ग्रन्थ रहे हैं। पुस्तक मे लेखिका ने निम्न विषयो पर स्वामी जी के विचार लिखे हैं।

राजनैतिक आदर्श राज्य के प्रशासनिक कार्य तथा शासन की विविध प्रणालिया, अर्थ नीति तथा सार्वजनिक प्रशासन।

लेखिका ने स्वामी जी के विचारो की उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला है। राज्य कार्य मे धर्म" अर्थात् सत्याचरण के ऊपर उन्होने अधिक बल दिया है। इस कार्य के लिए विधान सभायें गठित की जावें वे गण-तान्त्रिक प्रणाली के अनुसार कार्य करें। ऐसा स्वामी जी का मत रहा है।

लेखिका ने इस बात की ओर सकेत किया है कि स्वामी दयानन्द की विचारधारा के अनुसार राज्य का शासन तभी सुचारू रूप से चल सकता है जब कि उसके प्रत्येक कार्य का जन्म हो।

श्रीमती शान्ता जी ने अपने विषय की सम्पुष्टि हेतु सरक्षक भी ऐसा लिया—जिसका पूण जीवन भी इतिहास के पन्नो पर ही घूमा है।

गुरुकुल कागडी के स्नातक है और गम्भीर विचारक है जिनके निर्देशन मे इस ग्रन्थ को पूर्णता मिली है श्रीमती शान्ता जी का प्रयास तभी सफल होगा—जबकि पाठक वृन्द इसे लेकर मनन करेंगे।

रामचन्द्रराव वन्देमातरम्
प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री बटकृष्ण वर्मन द्वारा ३०-७-९५ को स्वामी धर्मानन्दको लिखा गया पत्र

श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उड़ीसा) ने आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री बटकृष्ण वर्मन को एक पत्र लिखा, जिसका आशय था कि बंगाल सभा की ओर से श्री वर्मन जी उनके द्वारा चलाये जा रहे सार्वदेशिक सभा तथा उसके अधिकारियों के विरुद्ध झूठे और असत्य प्रचार में उनका सहयोग देवें। उनके पत्र के उत्तर में वर्मन जी ने बंगाल सभा की ओर से उन्हें जो पत्र लिखा है उसको अविकल रूप से यहां प्रकाशित किया जा रहा है। —सम्पादक

आदरणीय स्वामी जी,

सादर नमस्ते।

आपका पत्र प्राप्त हुआ था। मैंने आपके कथन पर गम्भीरता से विचार किया। मेरा निश्चित दृष्टिकोण है कि हम आर्य समाजी हैं, हमें लोग श्रेष्ठ पुरुष की दृष्टि से देखतेहे अत: हमारा नैतिक दायित्वहै कि आर्यों काआचार-विचार व्यवहार उसके अनुरूप बनाएरखें। सस्था व सगठन व्यक्ति से उच्च होता है। व्यक्ति मे गुण दोष विद्यमान हैं अत: व्यक्ति विशेष को महत्व देना और सस्था की उपेक्षा करना जघन्य पाप है। प्रत्येक बुद्धिजीवी को संस्था जिसका वह अनुयायी है उसके प्रति निष्ठावान होना परम कर्तव्य है।

मैं, आपको कोई शिक्षा, उपदेश देने के योग्य नही, किन्तु सम्पूर्ण जीवन महर्षि के उच्चादर्शों पर चलते हुए आर्य समाज की सेवा मे अर्पित अनुभवों के आधार पर एकमात्र निश्चित मत है कि देश की वर्तमान परिस्थितियो के परिप्रेक्ष्य मे आर्य समाज की महती आवश्यकता है और उस भावना से हम सभी को सगठन के साथ रहना चाहिए और उसे हर सम्भव शक्ति प्रदान करना चाहिए। अपने विचार को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का सभी को अधिकार है और अपने विचार निर्भीकता से रखने भी चाहिए। विचार अभिव्यक्ति का भी तरीका है जिसे सभा अध्यक्ष की अनुमति से प्रस्तुतकिया जाना चाहिए। २७ मई ९५ को हैदराबाद में सार्वदेशिक सभा के साधारण अधिवेशन में, आपने तथा आपके इने गिने कुछ साथियो ने सभा की मर्यादा को निश्चित रूप से ठेस पहुंचाई है। आप और आप जैसे पदलोलुप संन्यासियों ने जो अभ्र लीला का प्रदर्शन २७ मई को सभागृह मे उपस्थित किया वह सम्पूर्ण आर्यजगत के लिए शर्मनाक घटना है। इस कुकृत्य से संन्यास धर्म को धक्का पहुंचा है और यदि ऐसा ही रहा तो लोगो की आस्था संन्यासियों और स्वामियो के प्रति उठ जायेगी। एक संन्यासी का उत्तरदायित्व एक साधारण पुरुष से कहीं अधिक है और उसका पालन करना प्रत्येक संन्यासी का कर्त्तव्य है। आप अपनी बुद्धि विवेक से विचार करें कि उक्त सभा में उपस्थित कुछ आर्य सन्यासियों ने क्या? सन्यासी के कर्तव्य, मर्यादा, निष्ठा, सहनशीलता का परिचय दिया है तो आप स्वयं पायेंगे कि कदापि नहीं।

आपके द्वारा प्रकाशित 'कुलभूमि' पत्रिका मे नई सार्वदेशिक सभा को सहयोग का भ्रामक प्रचार निन्दनीय है। आपने महर्षि कृत आर्यसमाज के नियम 'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उद्दत रहना चाहिए' का भी सर्वथा उल्लंघन किया है। स्वामी विद्यानन्द जी दिल्ली को सार्वदेशिक सभा के प्रधान के नाम से प्रचारित करना, जघन्य पाप है। और इस तरह आर्य प्रतिनिधियो की निष्ठा और अधिकार को चुनौती देना है। विद्यानन्द जी को स्वामी और सन्यासी कहना भी संन्यासी धर्म को अपमानित करना है। विद्यानन्द जी का सम्पर्क श्री रामनाथ सहगल जैसे भ्रष्ट व्यक्ति से भी उनके जीवन पर्यन्त बना रहा। अत: चिन्तन करें।

आपसे निवेदन है कि आप एक दृष्टि आर्य समाज के इतिहास पर डालें और उसका अवलोकन करें तो आपको स्वामी श्रद्धानन्द जैसे संन्यासी के त्यागमय और बलिदान के जीवन से संगठन के प्रति त्याग और निष्ठा की झलक मिलेगी। महात्मा हंसराज एवं प० प्रकाशवीर शास्त्री जैसे विद्वान, कार्यकर्ताओं के कृत्यो से भी प्रेरणा प्राप्त होगी जिन्होंने संगठन के लिए संस्था के हित में उसकी सर्वोच्चता को प्राथमिकता दी थी। आप उनका अनुसरण करें।

आपको कृतज्ञ होना चाहिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का जिन्होंने आपको प्रोत्साहित किया, आपके कार्यक्रमों में सहयोग दिया, किन्तु आज आप उनके तथा संस्था के विरुद्ध अनर्गल प्रचार में अपना अमूल्य समय गंवा रहे हैं और साथ ही आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मर्यादा को हानि पहुंचा रहे हैं।

आप अपनी अन्तरात्मा की आवाज का श्रवण करें तो पायेंगे कि आपके वर्तमान क्रियाकलाप आर्य समाज की नींव को डहाने मे लगे हैं। प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव हैदराबाद में उपस्थित प्रतिनिधियो के समक्ष २७ मई ९५ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली के सर्वमान्य प्रधान निर्वाचित हुए हैं। इस कटु सत्य को आपको तथा आपके भ्रमित साथियो को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

प० वन्देमातरम् एक कर्मठ कार्यकर्ता, बलिदानी, विद्वान, निष्ठावान और योग्य व्यक्ति है। उनके अनुभव और कार्यक्षमता पर आपको गर्व करना चाहिए। यह आर्यजगत का गौरव हैं कि एक दक्षिण का महापुरुष जिसने दक्षिण भारत में आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया है जहा लोग स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को जानते तक नही थे वहा आज आर्यसमाज को एक प्रतिष्ठा प्राप्त है। मीनाक्षीपुरम मे शुद्धि का कार्य क्या कम महत्त्वपूर्ण है। पडित जी दक्षिण भाषाओ के ज्ञाता होने के साथ हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के भी विद्वान हैं। वर्तमान मे उनका, हिन्दी के प्रति कार्य एवं योजना, भारतीय संविधान में संशोधन का कार्यक्रम, गोरक्षा और नशाबन्दी के कार्यक्रम महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है। उनके भावी कार्यक्रमों में दृष्टिपात डालें तो आपका भ्रम दूर हो जाएगा।

मैं एक पुराने आर्य समाज के सिपाही के नाते आपसे विनम्र निवेदन करना चाहता हू कि आप विश्वास एवं निष्ठा के साथ सगठन के साथ रहें, उसे शक्ति प्रदान करे, और रामलीला मैदान, नई दिल्ली महर्षि दयानन्द भवन में स्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जिसके सर्वमान्य प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव हैं उसकी व्यवस्था को मान्यता प्रदान करें और उसमें पूर्ण आस्था रखें तथा उसके हित मे निष्ठा से कार्य करें। आर्यसमाज के नियम और उपनियमों के अनुकूल आचरण करें इसमें ही हम सबकी भलाई है, आर्यसमाज की भलाई है। आशा है कि आप यथावत आचरण करेंगे। ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे।

आपका शुभेच्छु

बटकृष्ण वर्मन

प्रधान

श्रावणी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

श्रावणी महापर्व, वेद प्रचार सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समस्त आर्य समाजो में समारोह पूर्वक मनाए गए। इस अवसर पर विद्वानों ने अपने ओजस्वी प्रवचनो के द्वारा वेद के महत्त्व को दर्शाया। श्रावणी से कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह के रूप मे वेदो का प्रचार प्रसार किया गया। बहुत बड़ी सख्या मे वेद प्रचार सप्ताह मनाए जाने के समाचार प्राप्त हो रहे है। स्थानाभाव के कारण आर्य समाजो के नाम यहा प्रकाशित किए जा रहे हैं—

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज नागदा ज०, आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० एवं विदर्भ, आर्य समाज कीर्तिनगर दिल्ली, आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली, आर्य समाज साकेत नई दिल्ली आर्य समाज स्टेशन रोड मुरादाबाद, आर्य समाज बांकीपुर, पटना, आर्य समाज हल्द्वानी, आर्य समाज ब्रह्मपुरी, दिल्ली, आर्य समाज माडल टाउन दिल्ली, आर्य समाज मसूरी।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी (दिल्ली) में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज ब्रह्मपुरी (यमुनापार क्षेत्र) दिल्ली में तिथि १०-८-९५ श्रावणी पर्व से दिनांक २०-८-९५ तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया जिसका सफल संयोजन श्री कृष्ण आर्य मन्त्री आर्य समाज ने किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन भिन्न-भिन्न परिवारों मे देवयज्ञ किया गया। श्री पं० नन्दलाल निर्भय शास्त्री भजनोपदेशक बहीन (फरीदाबाद) तथा महाशय जनार्दन दिल्ली के भजनोपदेश होते रहे।

दिनाक १८-८-९५ जन्माष्टमी को आर्यसमाज मन्दिर मे श्रीकृष्ण चन्द्र का जन्म दिवस धूमधाम से मनाया गया।

इस कार्यक्रम की सर्वत्र प्रशसा की जा रही है। इस कार्यक्रम में श्री कमल कुमार गुप्ता, श्री सूर्य प्रकाश आर्य प्रधान का मुख्य सहयोग रहा।

आर्य समाज टाण्डा में वेद सप्ताह

आर्य समाज टाण्डा (फैजाबाद) द्वारा आयोजित वेद सप्ताह दिनाक १० से १८ अगस्त ९५ तक काशी के तपोनिष्ठ विद्वान पं० सत्यदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में प्रात यज्ञ तथा साय उपदेश एव मेंहदावल के बाबा अवध बिहारीदास के भजनो सहित हर्षोल्लास के साथ मनाया जिसका व्यापक रूप से प्रभाव पडा।

कृष्णकुमार आर्य, मन्त्री आर्यसमाज टाण्डा

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाण्डा (फैजाबाद) का १०४ वा वार्षिकोत्सव आगामी ३ से ७ नवम्बर ९५ तक मनाया जायेगा। महात्मा आर्य भिक्षु जी, प० नेत्रपाल शास्त्री, डा० प्रज्ञादेवी, डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, प० दीनानाथ शास्त्री, श्री नरेश निर्मल आर्य भजनोपदेशक, श्री आशाराम जी, श्री सत्यप्रकाश जी आर्य। भजनोपदेशक पधार रहे हैं। उक्त अवसर पर वेद सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कार्यकर्ता सम्मेलन आदि का भव्य आयोजन है, आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।—मन्त्री

लाला देवी दयाल आर्य दिवंगत

आर्य समाज चौंडा दिल्ली के संरक्षक लाला देवी दयाल आर्य का ९० वर्ष की लम्बी आयु में स्वर्गवास हो गया। श्री आर्य का जन्म महम जिला रोहतक में हुआ था जहा वे बीस वर्ष तक मन्त्री व प्रधान पद पर रहते हुए आर्य समाज का कार्य करते रहे। श्री देवीदयाल के सबसे बड़े पुत्र लाला लक्ष्मण दास आर्य, आर्य समाज चौंडा के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं। इनके अतिरिक्त लाला जी के दो अन्य पुत्र व सात पुत्रियां हैं।

आर्य समाज चौंडा में उनको एक शोकसभा मे श्रद्धांजलि दी गई तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

श्याम सुन्दर शर्मा, मन्त्री, आर्य समाज चौंडा, दिल्ली-५३

हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं होगा

(पृष्ठ १ का शेष)

लिए तैयार रहने को कहा है। आज फिर राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्य-समाज को ही स्वतन्त्रता आन्दोलन का सूत्र अपने हाथ में लेना होगा।

श्री वन्देमातरम् ने स्पष्ट घोषणा की है कि यदि अमरीकन पुलिस ने भारत की धरती पर पैर रखे तो उनके साथ घर मे घुसे चोरो और डाकुओ की तरह बर्ताव किया जाएगा। ऐसे हालात आर्यसमाज के सशस्त्र सैनिक पैदा करेंगे कि अमरीका पुलिस को स्वय अपनी सुरक्षा ही खतरे मे नजर आने लगेगी।

अपने समय में जान की बाजी लगाने वाले सेनानी श्री वन्देमातरम् ने आर्यसमाज की तरफ से भारतीय सरकार को चुनौती देते हुए कहा है कि जो पवित्र सगठन निजाम जैसे क्रूर शासको को झुका सकता है उसके लिए इस लोकतान्त्रिक सरकार को राष्ट्र रक्षा के लिए सीधी पटरी पर चलाना कठिन नहीं होगा।

वेद प्रचार दिवस

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान मे

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान मे आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-कैलाश कालोनी के सौजन्य से वेद प्रचार का आयोजन प्रातीय आर्य महिला सभा की वरिष्ठ उपाध्यक्षा एव दक्षिण दिल्ली मडल की अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या की अध्यक्षता मे निर्मल छाया परिसर के अन्तर्गत बालिका निरीक्षण गृह जेल रोड मे बड़े हर्ष और उल्लास से किया गया। निरीक्षण गृह की कन्याओ ने बडी श्रद्धा, निष्ठा और भक्ति भाव से यज्ञ किया।

इस अवसर पर अनेक कन्याओ को यज्ञोपवीत भी धारण कराया गया।

यज्ञ के अनन्तर मण्डल अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती कुसुमवती सूद, ने विचार प्रकट किए। इस वैदिक प्रचार के आयोजन मे बालिका निरीक्षण गृह के सभी कर्मचारियो ने भी उत्साह से भाग लिया। अन्त में सभी को यज्ञ शेष वितरित किया गया।

मन्त्रिणी
—सुशीला बुलाकी

शकरपुर दिल्ली में वेद प्रचार की धूम

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली मे श्रावणी महापर्व वेद प्रचार सप्ताह तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का सयुक्त रूप से आयोजन दिनाक १० से २०-८-९१ तक उत्साह पूर्वक किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन विशेष यज्ञ तथा विद्वानों एव भजनोपदेशको द्वारा प्रवचनो एव भजनो के माध्यम से वेद की महत्ता तथा आर्य समाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया। प्रमुख वक्ताओ में प० नन्दलाल निर्भय, श्री वियेन्द्र शास्त्री तथा आर्य समाज शकरपुर के उपप्रधान श्री ओमप्रकाश रुहिल सम्मलित हैं। मुख्य कार्यक्रम १५-८-९१ को हुआ इस अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति प० भवानीदास शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुई। श्री पुष्कित अरोडा ने अपने मधुर भजनों से श्रोताओं का मन मोह लिया। आचार्य भवानीदास शास्त्री सहित अनेको वक्ताओं ने श्री कृष्ण के जीवन पर चर्चा करते हुए उनसे प्रेरणा लेने की अपील की। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। इस आयोजन को सफल बनाने में आर्य समाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता ने अथक परिश्रम किया तथा अपने सहयोगी साथियों श्री भरतराम त्यागी श्री राम-निवास कश्यप मन्त्री, श्री नन्द कुमार वर्मा आदि के सराहनीय सहयोग पर धन्यवाद प्रकट किया।

—रामनिवास कश्यप, मन्त्री

कब तलक

—राधेश्याम पाण्डेय 'दीप'

हे नयन अभिराम, ब्रज के श्याम, करुणाधाम बोलो।
कब तलक हम जिन्दगी के बोझ को ढोते रहेंगे ?
जिन्दगी अब बन गयी हो क्लेश का पर्याय।
हर हृदय की धड़कनो मे हो भरा अन्याय।
जहा नभ मे स्वय ही प्यासे लगे घनश्याम।
सोचिए, उस धाम की कितनी रगीली शाम ?
हो घुटन, सत्रास कुण्ठा की जहा बरसात,
कब तलक दुर्भाग्य लेकर भाग्य पर रोते रहेंगे ?
कब तलक हम जिन्दगी के बोझ को ढोते रहेंगे ? ।।१।।
मारकर एक कस को तुम नाम तो अच्छा कमाये।
किन्तु हम तो कस के परिवार अब तक गिन न पाये।
लाज रखी द्रोपदी की, बहिन थी वह तो तुम्हारी।
आज पूछो द्रोपदी का ह्रास आकर के मुरारी।
देखती आवे पूछती है यही धानी बेचारी,
कब तलक हम बैल कोल्हू के बने जाते रहेंगे ?
कब तलक हम जिन्दगी के बोझ का ढोते रहेंगे ? ।।२।।
प्यार कब तक वासना के द्वार पर मरता रहेगा।
कब तलक इन्सान का लोहू अधिक सस्ता रहेगा।
मूक दर्शक ये प्रकृति कब तक जुल्म सहती रहेगी ?
झोंपडो को लूटकर महलें मजा करती रहेगी।
देख लो तुम 'दीप' बन्धु दीनता अपने जनो की
सुदर्शन चक्र सम्हाले कब तलक सोते रहोगे।
कब तलक हम जिन्दगी के बोझ को ढोते रहेंगे ।।३।।

—सण्डवा चण्डिका
प्रतापगढ (उ प्र)

वेद प्रचार सप्ताह

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज ग्रेटरकैलाश पार्ट-२, नई दिल्ली-४८ की ओर से वेद प्रचार सप्ताह सोमवार दिनाक २१ से २७ अगस्त १९९१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात सामवेद पारायण महायज्ञ आर्य भिक्षु जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रात एव रात्रि मे आर्य भिक्षु जी के प्रवचन तथा गुलाब सिंह राघव के भजन हुये। २७ अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा डा० महेश विद्यालंकार के वेदोपदेश हुये।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३-९-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९९/९५
R N 626/27 Licensed to post without prepayment Licence No U (C) 98/95 Post in N.D P.S.O.on 1-9-1995

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार है

(पृष्ठ ३ का शेष)

लिप्सा से ऊपर उठना होगा। "इद आर्य समाजाय इद न मम" के मूल मन्त्र को जीवन में उतारना होगा। पदों की दौड से पीछे हटकर सदा सहयोग और प्रेम की पंक्ति मे खड़ा होना होगा। कुछ काल के पश्चात स्वत पद को दूसरों को सौंपने की भावना लानी होगी। आर्यसमाज की आत्मा सुरक्षित रखते हुए प्रचार-प्रसार के आधुनिक साधनों को अपनाना होगा। प्रचार के लिए अपनी पत्र-पत्रिकाओं के स्तर, सामग्री व साज-सज्जा का ध्यान देना होगा। वेद-कथा तथा यज्ञ को मन्दिरों की चारदीवारी से निकाल कर मुहल्लों, घरों, पार्कों व चौराहों से जोड़ना होगा। इन कार्यक्रमों मे भक्ति भजन संगीत तथा आस्तिकता धार्मिकता एव प्रभुभक्ति के प्रवचनों को प्रधानता देनी होगी। यज्ञ व वेद-कथा के वातावरण में पवित्रता, सात्विकता, धार्मिकता लानी होगी। ऐसे कार्यक्रमों के अवसरों पर अधिकारी व सदस्यो को स्वदेशी वेष-भूषा अपनानी होगी। बड़ी श्रद्धा भक्ति आस्था से उपस्थित होकर दूसरो को अपने चरित्र, व्यवहार व स्वभाव से आकर्षित करना होगा।

अपने पुरोहितों, विद्वानों, सन्यासियों को आदर सम्मान पूर्वक उच्चासन पर बैठाना होगा। उन्हें जनता के बीच बड़े आदर, कायदे व भक्ति भावना से उतारना होगा। जिससे लोगों के मनों में उनको सुनने की उत्सुकता जिज्ञासा व आकांक्षा बढ़े। हम अपने विद्वानों को मच पर ढग से प्रस्तुत नही कर पाते हैं। सम्मानित पुरोहितों, विद्वानों, उपदेशकों और सन्यासियों को भी अपनी चारित्रिक गरिमा को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा। तभी प्रभाव स्थायी पड़ेगा।

आर्य समाज को जलसे जलूस, लगर व पिकनिकों से शक्ति तथा धन को हटाकर मुख्य कार्य वेद प्रचार पर ध्यान और बल देने की आवश्यकता है। हमारे पास दो ऐसे आधार हैं जिससे हम जनता से जुड सकते हैं जिनके बारे में किसी को आपत्ति नहीं है। पहला वेद, दूसरा यज्ञ। आज हमने जनता से सम्पर्क करना छोड़ दिया, इसलिए जनता हम से कट गई यह अपने में सुपरीक्षित है कि आर्यसमाज के पास ससार को देने के लिए अपार वैचारिक सम्पदा है, वैसी अन्य किसी विचारधारा वाले के पास नहीं है। इसका चिन्तन सीधा-सरल व सच्चा है। सम्प्र, गुरुडम, पाखण्ड, पुजापा, चढ़ावा प्रचलन आदि फैले हुए हैं। आज का व्यक्ति सत्य व यथार्थ को जानना चाहता है। यह चिन्तन आर्य विचारधारा के पास ही है।

सक्षेपत. आज जरूरत है। आर्यसमाज को अपने को सभालने की। पदों पर बैठे हुए अधिकारी गण आत्म मन्थन करें हम मिशन व ऋषि के लिए क्या कर रहे हैं? नहीं कर रहे, तो पद त्याग कर दूसरो को काम करने का अवसर दें तो बात बनेगी। जो सदस्य, विद्वान, उपदेशक आदि हैं, उन्हें भी आर्य समाज व वेद प्रचार की भावना को तीव्र करना चाहिए तभी वेद प्रचार आगे बढ़ेगा। इसी वेद प्रचार पर हमारा आर्य समाज खड़ा है? वेद प्रचार आगे बढ़ेगा तो आर्य समाज का प्रभाव, और उपयोगिता बढ़ेगी। हमारा परम कर्तव्य है कि हम वेद प्रचार को प्रमुखता देकर आगे बढ़ावें। वेद की विचारधारा जन जन तक पहुचाकर आर्य समाज के उद्देश्य कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को सफल बनाए। तभी हम ऋषि के अनुयायी व आर्य समाजी कहलाने के हकदार हैं।

आर्य ...

के तत्वावधान में शता...

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हिमाचल प्रदेश के अन्तर्गत राज्य स्तरीय शताब्दी समारोह हिमाचल प्रदेश की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजो, डी०ए०वी० शिक्षण सस्थाओं एव आर्य शिक्षण सस्थाओ की ओर से शनिवार रविवार २३ एव २४ सितम्बर १९९५ को शिमला मे आर्य समाज लिक्कड़ बाजार में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

शनिवार दिनाक २३-९-१९९५ को दोपहर १ बजे भव्य शोभा-यात्रा समारोह स्थल से आरम्भ होकर शिमला के मुख्य बाजारों से होती हुई समारोह स्थल पर समाप्त होगी तथा रविवार दिनाक २४-९-१९९५ को प्रात १० बजे से "आर्य विराट महा सम्मेलन" आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री जी०पी० चोपड़ा जी की अध्यक्षता में रवी पार्क की रोड, शिमला में आयोजित किया जायेगा।

आप से प्रार्थना है कि आप सपरिवार अपने इष्ट-मित्रों सहित उक्त कार्यक्रम मे पधारने की कृपा करें। सभी विद्यालयों से प्रार्थना है कि वे अपने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को बस द्वारा लेकर शोभायात्रा मे अपने विद्यालय के बैनर, लेजियम, बैण्ड एव सुसज्जित झांकियों सहित अवश्य पधारने की कृपा करें।

—मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा,
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का अभियान शुरू

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के प्रधान श्री रणबीर जी भाटिया ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया कि हमारी आर्य समाज वेद प्रचार में सदैव अग्रणी रही है। इस वर्ष और भी वेद प्रचार को अग्रसर करने के लिए तथा संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए सर्वहितकारी सामाजिक कार्यों को गतिशील बनाने के लिए एक विशेष योजना बनाई है, जिसमें दसवीं कक्षा ही एम०ए० संस्कृत तथा हिन्दी और बी०काम० बी० ए० आदि कक्षाओं के छात्रों को नि शुल्क संस्कृत का अध्यापन कराया जायेगा। इस योजना में शास्त्री और आचार्य कक्षा के छात्र भी भाग ले सकते हैं।

एक और योजना के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश की कक्षायें भी आरम्भ की जायेंगी, जिनमें सभी वर्ग के लोग भाग ले सकेंगे। श्री भाटिया जी ने कहा कि जो भी व्यक्ति इसमें अध्ययन करना चाहते हैं वे शीघ्र आर्य समाज में सायं ५ बजे से ६ बजे तक सम्पर्क करें।

—कुलदीप राय आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक ३०) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ आश्विन कृ० १ सं० २०५२ १० सितम्बर १९९५

महर्षि दयानन्द से श्री केशवचन्द्र सेन ने कहा था

आप यह जन कल्याणकारी उपदेश जन भाषा में दिया करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस बात को स्वीकार किया

अब महर्षि के अनुयायी १४ सितम्बर को राष्ट्रभाषा का महत्त्व जन-जन तक पहुंचायें।

सारी दुनिया जानती है कि राष्ट्र की एकता उस राष्ट्र की भाषा के माध्यम से ही सम्भव है, भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी है। लगभग ९० करोड़ जनसंख्या वाले इस देश में हिन्दी बोलने, लिखने और पढ़ने वाले ५० करोड़ और समझने वाले ८० करोड़ हैं। बड़े-बड़े मेलों, उत्सवों और महाकुम्भों में कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक के, सभी भाषाओं, वर्गों और मत-मतान्तरों के लोग हिन्दी के माध्यम से ही परस्पर मिलते-जुलते और अपना काम चलाते हैं, भाई-चारा निभाते हैं और राष्ट्रीय एकता की कल्पना साकार करते हैं। सन् १९८१ की जनगणना के अनुसार अंग्रेजी केवल आधे प्रतिशत भारतीयों की मातृ-भाषा है तो जिस भाषा को लोग समझ भी नहीं पाते वह उनमें एकता कैसे पैदा करेगी? फिर भी कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने जो रवैया अपनाया है वह नितान्त दुर्भाग्यपूर्ण है। वे समय-असमय यह राग अलापते रहते हैं, कि भारत से अंग्रेजी चली गई तो देश की एकता और अखण्डता खतरे में पड़ जाएगी। और विडम्बना यह है कि दिन के उजाले में भी जो आंख मूंदकर अंग्रेजी का डंका बजाते हैं। उन्हीं चन्द लोगों की तूती बोलती है और सुनी जाती है।

इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि देश की विधायिका और न्यायपालिका जैसी सर्व शक्ति-सम्पन्न सत्ताएं जब बार-बार आदेश देती हैं कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं हों, तब भी नौकरशाही उनके आदेशों की जान-बूझकर अवज्ञा करने में झिझकती नहीं बल्कि अपनी शान ही समझती है, संसद के दोनों सदनों में दो-दो बार संकल्प पारित हुआ, हाईकोर्ट और सुप्रीमकोर्ट ने भी निर्णय सुना दिया कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं हों, फिर भी विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग में बैठे कथित विशेषज्ञ यही रट लगाए रहते हैं कि इससे राष्ट्रीय एकता को खतरा है देश का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा?

सौ-डेढ़-सौ साल तक जी-जान से संघर्ष करके १९४७ में हम अंग्रेजों को यहां से भगा पाए थे। किन्तु वे मुट्ठी भर अंग्रेज जिस अंग्रेजी द्वारा अपने भक्त बनाए हुए नौकरशाहों के बल पर करोड़ों पर शासन करते रहे, उसे निकाल फेंकने में हम ढीले पड़ गए और गुलाम मानसिकता वाले नौकरशाहों को सहन करते रहे। गांधी जी ने तो १९०९ में ही 'हिन्दस्वराज' में यह लिखकर सचेत कर दिया था कि "हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग हैं, प्रजा की हाय अंग्रेजों पर नहीं बल्कि हम लोगों पर पड़ेगी"। किन्तु प्रजा की दयालुता के कारण, अंग्रेजी-भक्त नौकरशाह प्रजातन्त्र में भी प्रजा को गुलामी की बेड़ियों में धीरे-धीरे अधिकाधिक जकड़ते रहे। इस प्रकार वरद विदेशी हाथ के तले वे स्वयं फलते-फूलते रहे, आजादी अंग्रेजी भक्त जयचन्दों और मीर-जाफरों को ही मिली, देश तो भाषायी आजादी के बिना गुलाम का गुलाम हो रहा।

प्रजातन्त्र का संविधान अंग्रेजी में बना। हिन्दी राजभाषा तो बनी पर अंग्रेजी छोड़ने के लिए १५ वर्ष का समय दिया गया। इन

(शेष पृष्ठ १२ पर)

स्मृति दिवस

१५ अक्टूबर को श्री आनन्दबोध सरस्वती का स्मृति दिवस है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त स्मृति दिवस धूमधाम से मनाने का निश्चय। आर्य जन अपने प्रिय नेता को श्रद्धा पूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

\- सभा-मन्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज द्वारा तीन महान परिवर्तन किए गए

—सुरेशचन्द्र त्यागी, उस्मानपुर, दिल्ली

हिन्दू धर्म और आर्य समाज के आवश्यक मन्तव्यों एवं सिद्धांतों में धार्मिक वा दार्शनिक भेद नाममात्र का ही है परन्तु यदि आर्यसमाज न होता तो आज हिन्दू धर्म कहीं का न रहता। हिन्दुओं मे अब जो जागृति देख पड़ती है उसका प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष कारण स्वामी दयानन्द की शिक्षाएं ही हैं। हिन्दू धर्म आत्मा-विहीन ढांचा मात्र रह गया था। स्वामी दयानन्द ने उसमें आत्मा का प्रत्यारोपण किया। आज हिन्दू धर्म एक जीवित धर्म है। आर्य समाज ने इस पर असंगतियो, विकृतियो एवं अनावश्यक ऊल-जलूल बातों के रूप में पड़े कूड़े-कर्कट तथा गन्दगी को दूर करके इसे परिष्कृत किया। इसे इसकी अवांछनीय बेड़ियो को जिनसे वह जकड़ा हुआ था, काटकर इसे मुक्त किया। आर्य समाज ने ही इसमें जान-बूझकर इसे नव-जीवन प्रदान किया।

१—गुरुडम का विनाश

आर्य समाज ने हिन्दुओ के दृष्टिकोण मे तीन परिवर्तन किए है। हिन्दु धर्म शताब्दियो तक बिचौलियो का धर्म बना रहा। गुरुओ और अवतारो ने ईश्वरत्व को स्वय अपने मे ही विभाजित किए रखा था। आत्मा द्वारा परमात्मा की सीधे उपासना किए जाने की बात बिल्कुल भुला दी गई थी। राम और कृष्ण, रामानुज और शंकर, रामानन्द और कबीर सर्व-शक्तिमान परमात्मा के स्थानापन्न बना दिए गए। निर्माता की जगह निर्मित की पूजा-उपासना होने लगी थी। स्वामी दयानन्द ने इस प्रकार की बुराई को देखा और इसका सुधार करने की चेष्टा की। गुरु को जो कुछ मिलना चाहिए वह गुरु को और जो परमात्मा को मिलना चाहिए वह परमात्मा को देने की आर्य समाज व्यवस्था करता है। तुम्हारा गुरु कोई भी क्यो न हो, वह वहां तक ठीक है जहा तक तुम सीधे अपने सिरजन हार की झाकी अपने आत्मा में देख सको। गुरु उस ध्येय की सिद्धि मे तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकता है। परन्तु वह अपने में ध्येय नही हो सकता। उसे तो केवल परमात्मा के दर्शन करने की विधि बतानी चाहिए। उसे अपने चेले और परमात्मा के मध्य खड़ा नही होना चाहिए। हिन्दू धर्म के प्रायः सभी सम्प्रदायों का उद्भव ईश्वर के स्थान मे गुरु-विशेष की पूजा करने की बुराई से हुआ है। जब रोम के पोप ने अपने को इस ससार मे परमात्मा का प्रतिनिधि बताया और उसके नाम पर वे कार्य किए जो गुरु की महत्ता को गिराने वाले थे तब यूरोप में ईसाइयत की शिक्षाओ में वही खराबी व्याप्त हुई जो हिन्दू धर्म मे व्याप्त हुई थी। स्वामी दयानन्द की मान्यता थी कि हिन्दुओं का गुरुडम पोपडम का ही एकमात्र स्वरूप है। स्वामी दयानन्द ने बड़े-बड़े धर्म स्थानो को अपनी आंखो से देखा कि गुरु लोग अपने चेलों के लिए आध्यात्मिक मार्ग दर्शक होने के बजाय उन्हें वासनाओ की सतुष्टि का उपकरण बनाते थे। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे उन्होने इस प्रकार के गुरुओं की प्रायवेट करतूतो पर प्रकाश डाला है।

स्वामी दयानन्द स्वय उच्चकोटि के ऋषि सन्त और महात्मा थे परन्तु उन्होने अपने अनुयायियो को भेड़ो की तरह अन्धानुकरण करने का भी परामर्श नहीं दिया। उन्होने केवल वेदो की शिक्षाओ पर चलने का उपदेश दिया। आर्य समाज ने गुरुडम का नितान्त बहिष्कार कर दिया है। किसी भी आर्य समाजी ने अपने को परमात्मा का अवतार कभी नही बताया। यह है आध्यात्मिक स्वतन्त्रता जो स्वामी दयानन्द के उपदेशो के फलस्वरूप प्राप्त हुई है। यदि समस्त हिन्दू अपने को इस गुरुडम से मुक्त कर लें तो भले ही उनमे अन्य मतभेद हो उनके परस्पर मे मिलने में कोई कठिनाई न होगी। हिन्दुओं के विविध ग्रन्थो के मुख्य-मुख्य सिद्धांत इतने भिन्न नहीं है कि उनके कारण आपस मे मिलने मे कठिनाई हो। मुख्य बाधा वे गुरु ही हैं जिनका मुख्य स्वार्थ विषमताओं पर जोर देने और अपने चेलो के लिए संकुचित क्षेत्र बना देने मे निहित होता है।

२—विश्वबन्धुत्व

दूसरा परिवर्तन विश्वबन्धुत्व है। जन्म की उच्चता शताब्दियो तक हिन्दुओं का कोढ़ बनी रही। महान प्राचीन काल वाले देश में ऐसा होना स्वाभाविक है। व्यक्तियो की परम्परागत उच्चता का उनके परिवारों में और उनके वंशजो में व्याप्त होना सुगम होता है जो स्वयं एक वर्ग में परिणत हो जाते हैं। यदि एक बार ये वर्ग बन गए तो समय इनकी जड़ें गहरी कर देता है। जिसके फलस्वरूप जात-पात की प्रणाली में कट्टरपन आ जाता है। प्रारम्भ में हिन्दू ऋषि-मुनि और राजा लोग अपने गुणो एवं कर्मों के कारण ऊंचे उठे न कि जन्म के कारण। परन्तु उन्होंने जो विशिष्टता स्वत्व प्राप्त की थी उसी का दावा उनके वंशज करने लगे। जात-पात की प्रणाली का मूल यही है जो आजकल हिन्दू समाज को बर्बाद कर रही है। समस्त समझदार हिन्दू जात-पात की बेड़ियो को काटने के लिये इच्छुक है। परन्तु वे लक्ष्य पर निशाना नहीं लगा पाते। उनमें से अनेक यह सोचते हैं कि जात-पात को मिटाने के लिए धर्म का मिटाया जाना भी जरूरी है। उनकी धारणा है कि जात-पात हिन्दू धर्म का अपरिहार्य अंग है। स्वामी दयानन्द का कहना है कि वर्तमान मे प्रचलित जात-पात की प्रणाली वेदों की शिक्षाओ के नितान्त विरुद्ध है। अतः इसका विच्छेद होना ही चाहिए। इस प्रकार दयानन्द ने बुराई की जड पर कुठाराघात किया और इसके विरुद्ध चेतना जागृत की।

३—हिन्दू धर्म के द्वार खोले गए

तीसरा महान परिवर्तन यह हुआ कि हिन्दू धर्म के दरवाजे सभी के लिए खोल दिए गये। प्रत्येक व्यक्ति जो वैदिक धर्म में प्रविष्ट होना चाहता हो, जन्म, जाति, मजहब या राष्ट्रीयता के भेदभाव के बिना प्रविष्ट हो सकता है। शताब्दियो पर्यन्त हिन्दू धर्म सबको हजम करने की अपनी शक्ति से वंचित रहा। एक के बाद दूसरा पन्थ आया, एक के बाद दूसरा सुधारक आया। देशभक्तों और रक्षको का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु हिन्दू धर्म के इस स्वरूप मे कोई परिवर्तन न हुआ। यह चूहेदानी का रूप ही लिए रहा जिसका दरवाजा भीतर की ओर बन्द रहा। करोड़ो हिन्दू पुनरागमन की आशा छोड़कर इसे छोड़ गए। छोड़ने के लिए बाध्य किए गये स्वा. दयानन्द ही वह महानुभाव थे जिन्होंने समस्त हिन्दू धर्म पर जादू की छड़ी चलाई और समस्त दृश्य बदल दिया। शुद्धि का यह आन्दोलन हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है जो उस समय से लेकर जबकि प्राचीन वैदिक धर्म को नगण्य रूप प्राप्त हुआ था, अब तक प्राप्त न हुई थी। शुद्धि का यह आन्दोलन मुसलमानों, ईसाइयों, अमेरिकनो, यूरोपियनों आदि-आदि सभी को आमन्त्रित करता है।

निर्वाचन

—आर्य समाज संभरूर, श्रीमती ऊषारानी सिंहल प्रधान, श्रीमती पूनम देवी मन्त्रिणी, श्रीमती शान्ता रानी कोषाध्यक्षा।

—आर्य समाज बागपत मेरठ, श्री सुभाष चन्द्र त्यागी प्रधान, मा० सत्यप्रकाश गौड़ मन्त्री, श्री प्रकाशचन्द्र कोषाध्यक्ष।

—आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, श्रीमती डा० विमला महता प्रधाना, श्री बलबीर सिंह मलिक मन्त्री, श्री महेश चन्द्र गुप्ता कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज पानीपत, श्री मेघराज आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र सिंगला मन्त्री, श्री प्रेमचन्द्र आर्य पुस्तकाध्यक्ष।

—आर्य समाज मीरानपुर कटरा शाहजहापुर, श्री सत्यप्रकाश आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र कुमार मन्त्री, श्री अजय कुमार आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी, श्री रामगोपाल आर्य प्रधान, श्री विजय कुमार आर्य मन्त्री, श्री सत्यप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सोनीपत, श्री हरिश्चन्द्र जी प्रधान, श्री वेद प्रकाश आर्य मन्त्री, श्री मनोहर लाल सपड़ा कोषाध्यक्ष।

राष्ट्रघाती तुष्टीकरण से गोडसेवाद को प्रोत्साहन मिलेगा

लेखक-हर्षनारायण प्रसाद, एम. ए., बलिया

ग्रामीण क्षेत्रो में एक कहावत प्रचलित है कि हिन्दू का पुरनिया (वृद्ध) बउरा (पगला) जाता है।' यह कहावत केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री सीताराम केसरी के ऊपर शत-प्रतिशत लागू हो रहा रही है। यदि श्री केसरी पागल नहीं हो गये हैं तो सत्ता (वोट) तथा विदेशियों (इस्लाम पंथियों तथा ईसाइयों) के पैसों के लोभ में भारतीय राष्ट्र को तहस-नहस करने पर तुले हुए हैं। वे बार-बार राष्ट्र विरोधी वक्तव्य देते रहते हैं। बावजूद वे केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल मे बने हुए हैं। इससे सिद्ध होता है कि प्रधानमन्त्री नरसिंहा राव तथा कांग्रेस के उच्च श्रेणी के नेता भी उनके विचारों से सहमत हैं।

इस देश के कई छद्म धर्म निरपेक्षतावादी (सेकुलरवादी) नेता तथा पत्रकार हिन्दुत्व समर्थक संस्थाओ के विरोध में बोलकर या लिखकर अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम तथा ईसाई संगठनो से धन प्राप्त कर रहे हैं। अभी कुछ महीनों पहले प्रसिद्ध पाक्षिक पत्रिका "माया" में विदेशियों द्वारा अर्जुन सिंह को धन दिए जाने के आश्वासन की सूचना प्रकाशित हुई थी। अभी तक, मैंने उस सूचना का खण्डन पढ़ा हैं। यह तो सर्व विदित है कि पूर्व मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह ने जार्डन राजदूत से गुप्त वार्ता की थी और भारत सरकार को इसकी विधिवत सूचना नहीं दी थी। उन्होंने नियम कानून की अवहेलना करके रफसंजानी का शाही स्वागत किया था और हिन्दुत्व से लड़ने के लिए उनसे सहायता की याचना की थी। स्पष्ट है कि रफसंजानी फिलहाल अपनी सेना तो भारत में भेजेंगे नहीं, धन से ही मुलायमसिंह की सहायता करेंगे। सीताराम केसरी मुलायमसिंह के प्रमुख समर्थकों मे से एक हैं। ऐसा अनुमान करना अस्वाभाविक नही है कि भारत में राष्ट्रविरोधी राजनीतिज्ञों का एक गिरोह तैयार हो गया है जो हिन्दू समाज को विघटित करने की शर्त पर विदेशियों से धन उगाह रहा है।

गत २१ जुलाई को श्री सीताराम केसरी का एक भाषण समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने अनुसूचित जातियों को सलाह दी थी कि वे हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान या ईसाई बन जायें। जब सूरजकुण्ड मे कांग्रेस के कार्यकर्ताओं द्वारा इसी प्रश्न पर उनकी खिचाई हुई तो उन्होंने कहना शुरू किया कि मैंने ऐसा नही कहा है। भाजपा समर्थक अखबार वालों ने मेरी बात को तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित किया है। बहरहाल, सीताराम केसरी की रक्षा के लिए जनता दल के रामविलास पासवान सामने आ गए हैं और उन्होंने कहना शुरू किया कि सीताराम केसरी ने जो भी कहा है वह ठीक कहा है उनको अपने बयान से मुकरना नहीं चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि रामविलास पासवान भी इस विचार के समर्थक हैं कि बड़ी जातियों का विरोध करने के लिए दलित जातियों को मुसलमान या ईसाई बन जाना चाहिए।

सीताराम केसरी, रामविलास पासवान तथा अन्य सेकुलरवादी नेता प्राय महात्मा गांधी तथा डा० अम्बेडकर की प्रशंसा करके दलितों को रिझाने का प्रयास किया करते है क्या इन सेकुलरवादियों को यह नहीं मालूम है कि अंग्रेजों द्वारा अनुसूचित जातियों को हिन्दू समाज से अलग करने के षड्यन्त्र के विरुद्ध गांधी जी ने अनशन किया था और डा० अम्बेडकर ने भी गांधीजी की बात मानली थी। अपने पुत्र हरिलाल गांधी के मुसलमान बन जाने पर महात्मा गांधी की प्रतिक्रिया की जानकारी श्री केसरी एव पासवान को करनी चाहिए।

सेकुलरवादियों के विचार डा० अम्बेडकर के विचार एवं कर्म के भी सर्वथा प्रतिकूल हैं। डा० अम्बेडकर चाहते तो उन्हें मुसलमान तथा ईसाई बनने से कौन रोक सकता था? देशभक्त अम्बेडकर भली-भांति समझते थे कि मुसलमान तथा ईसाई बनना राष्ट्र की मुख्य धारा से अलग होना है। गुस्से और अपमान की स्थिति में भी उन्होंने राष्ट्रवाद का परित्याग नहीं किया। उन्होंने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया जिसका जन्म भारत की धरती पर हुआ था और जिसका प्रवर्तक एक भारतीय था - सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म की ही एक शाखा है। यदि उन्हें अनुमान होता कि कालान्तर में बौद्ध सम्प्रदाय की आड मे विदेशी शक्तिया भारतीय राष्ट्र को तोडने का प्रयास करेंगी तो उन्होने कदापि बौद्ध धर्म नहीं स्वीकार किया होता। डा० अम्बेडकर कांग्रेस की तुष्टीकरण नीति के घोर विरोधी थे। उन्होंने लखनऊ पैक्ट (जिसके आधार पर मुसलमानो को सीटों का आरक्षण दिया गया था) की निन्दा करते हुए १९ जनवरी, १९२९ को लिखा था "जिस योजना से हिन्दुओं का अहित होता हो वह योजना किस काम की।" मैं इस रपट का विरोध केवल इसलिए नहीं करता हूं कि वह अस्पृश्यो के अधिकारों का हनन करती है मेरे विरोध का कारण यह है कि सारा हिन्दुस्तान भविष्य में इससे मुसीबत में पड सकता है।" डा० अम्बेडकर इस्लाम धर्म तथा मुस्लिम मनोवृत्ति को भली-भांति समझते थे और यह भी समझते थे कि मुसलमान होने से न तो दलितों का कोई हित होगा और न राष्ट्र का।

सीताराम केसरी मुसलमानों के लिए १५ प्रतिशत आरक्षण की जोरदार वकालत करते हैं। रामविलास पासवान, वी. पी. सिंह तथा लगभग सभी छद्म सेकुलरवादी मुसलमानों को खुश करने के लिए इस प्रकार की राष्ट्रविरोधी बातें करते रहते हैं। सम्प्रदाय (पन्थ) के आधार पर आरक्षण की बात करना अप्रत्यक्ष रूप से द्विराष्ट्रवाद का समर्थन करना है जिसका विरोध (चाहे दिखावे के लिए ही सही) कांग्रेस करती रही है।

बाबा साहब अम्बेडकर धर्म के आधार पर आरक्षण के घोर विरोधी थे। यदि सीताराम केसरी अथवा रामविलास पासवान इस्लाम तथा मुसलमानों के सम्बन्ध में डा० अम्बेडकर के विचारो को जानना चाहते हैं तो उन्हें डा० अम्बेडकर के साहित्य विशेषतया उनकी कृतियों के आठवें खण्ड (थाट्स आन पाकिस्तान) पढ़ना चाहिए।

मैं जानता हूं कि श्री केसरी अथवा रामविलास पासवान, डा० अम्बेडकर अथवा गांधी जी के विचारो को पढ़ने या जानने की जहमत नहीं उठायेंगे क्योंकि उन्हें तो देशी तथा विदेशी मुसलमानों को खुश करने तथा उनके वोटो से मतलब है।

एक कहावत है कि 'बेहया के सिर पर पेड़ उगा और वह खुश हो गया कि उसको छाया मिलेगी।' ऐसा लगता है कि केसरी महोदय इसी प्रकार की बेशर्मी पर उतर आये हैं। कांग्रेस के ४८ वर्षों के शासन के बाद भी, यदि दलितों पर अत्याचार हो रहा है या वे गरीब हैं, अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकते तो क्या कांग्रेसियों को चुल्लू भर पानी में डूब नहीं मरना चाहिए? क्या मुसलमान या ईसाई हो जाने से दलितों की गरीबी दूर हो जाएगी? उनकी समस्यायें हल हो जायेंगी? केसरी के चहेते मुसलमान तो आज भी (आजादी मिलने के कुछ ही वर्षों के बाद कहना प्रारम्भ कर दिया था) चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि भारत मे उनके ऊपर अत्याचार हो रहा है, वे पिछड़े हुए हैं, गरीब हैं, उनकी हकतलफी हो रही है। सीताराम और पासवान बार-बार मुसलमानो को आरक्षण देने की बात कर रहे हैं तो फिर किस लाभ के लिए दलितो को मुसलमान बनाने की सलाह दी जा रही है।

(क्रमशः)

हिन्दुओं की जनसंख्या घट रही है

नरेन्द्र अवस्थी, पत्रकार

१९९१ की जनसंख्या रिपोर्ट पढ़कर लगता है यदि मुसलमानों की आबादी ऐसे ही बढ़ती रही तो ५० वर्ष के बाद हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएंगे, तो फिर कोई आश्चर्य नहीं होगा। इससे देश की राष्ट्रीयता बदलेगी–भारतीय स्वरूप बदलेगा। १९४७ में जब दो कौमों की बुनियाद पर देश का विभाजन हुआ, उसके जनूनी मुसलमान ये नारे लगाते थे।

लड़के लिया था पाकिस्तान, हंस के लेंगे हिन्दुस्तान।

और राजनीति वर्चस्व बढ़ाने के लिए मुसलमान सदैव प्रयत्नशील रहे। इसी अनुसार मुसलमानों की जन्मदर सदा हिन्दुओं से अधिक रही है। वर्ष १८८१ से वर्ष १९४१ तक हिन्दुस्तान में हिन्दू जनसंख्या ५.६३ प्रतिशत ७२.०९ से ५९.४६ प्रति. घटी और मुस्लिम जनसंख्या इन ६० वर्षों में ४.३१ प्रति. १९.९७ से २४.२८ प्रति. बढ़ी। अर्थात मुस्लिम जनसंख्या हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से ६.९४ प्रतिशत बढ़ गई। परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान के उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम के बहुत बड़े क्षेत्र में मुसलमानो की बहुसंख्या हो गई, जिस कारण मुस्लिम लीग की मांग पर वर्ष १९४७ में हिन्दू मुस्लिम बहुसंख्या क्षेत्रों के आधार पर देश का दुःखद विभाजन हो गया और इस प्राचीन हिन्दू देश की धरती पर पहले एक कट्टरपंथी मुस्लिम राज्य पाकिस्तान फिर १९७१ में उसका पूर्वी भाग पृथक् बांगलादेश स्थापित हो गया। वहां से लगभग सब हिन्दुओं को हिन्दू बहुसंख्या को हिन्दुस्तान में चले आना पड़ा। अंग्रेजों द्वारा स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओ ने इससे कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की और लगभग ३ करोड़ मुसलमानों को खण्डित भारत से जाने नहीं दिया गया। उन्होंने पुनः अपनी जनसंख्या बढ़ानी आरम्भ कर दी। कितने दुःख की बात है कि देश विभाजन से पूर्व कांग्रेसी नेता कहते थे कि हिन्दू और मुस्लिम मिला-जुला एक राष्ट्र है। देश विभाजन के पश्चात भी इस विचार को छोड़ा नहीं गया और खण्डित भारत का संविधान इस विचार के आधार पर निर्मित हुआ। खण्डित भारत के संविधान में मुसलमानों को हिन्दुओं में अधिक अधिकार दे दिए गए।

खण्डित भारत में पांच बार जनगणना हो चुकी है। वर्ष १९५१, १९६१ १९७१, १९८१ और १९९१ वर्ष में १९९१ की जनगणना के परिणाम थोड़े दिन पूर्व ८.७ प्रति. ९१ प्रति. की जनगणना आयोग ने पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए हैं। जनगणना आंकड़ों के अनुसार प्रत्येक जनगणना में मुसलमानों की वृद्धिदर हिन्दू बहुसंख्या के वृद्धिदर से सदा अधिक रही हैं। वर्ष १९५१ से १९९१ तक के ४० वर्षों में मुस्लिम जनसंख्या हिन्दू बहुसंख्या के पीछे से ५.१९ प्रतिशत आगे बढ़ गई है। वर्ष १९८१ से १९९१ तक के १० वर्षों में मुस्लिम जनसंख्या से बढ़ी है। वर्ष १९७१-१९८१ के १० वर्षों में मुसलमानों की वृद्धिदर ३०.८५ प्रतिशत रही थी जबकि यह १९८१-९१ के दशक में ३२.७६ प्रतिशत रही। केवल एक प्रदेश जम्मू और कश्मीर में मुसलमानों की बहुसंख्या है। जम्मू और कश्मीर में १९९१ की जनगणना नहीं हो सकी, क्योंकि कश्मीर घाटी में १९९० से एक प्रकार का विद्रोह चल रहा है। वर्ष १९८१ की जनगणना के आधार पर जम्मू और कश्मीर में मुसलमान जनसंख्या ६४.१९ प्रतिशत थी और हिन्दू जनसंख्या ३२.२४ प्रतिशत थी। इसके अति रिक्त पूरे भारत और ६ प्रांतों में मुस्लिम जन संख्या १० प्रतिशत से अधिक है।

हिन्दुओ की जनसंख्या सदैव घटती रही है। प्रत्येक १० वर्ष के पश्चात जनगणना होती है। उसका अध्ययन करने पर पता चलता है कि हिन्दुओं की जनसंख्या सदैव घटती रही है। प्रजातन्त्र में अधिक जनसंख्या का बहुत अधिक महत्व है। भारत की वर्तमान कठिनाईयों के लिए कांग्रेस की धर्मविरोधी नीति प्रमुख कारण है। सन १९९१ की जनगणना से राष्ट्रवाद तत्वों को सचेत होना है और सरकार से मांग करनी है कि मुसलमानों के लिए भी परिवार-नियोजन आवश्यक हो, परिवार-नियोजन बिना भेदभाव के समान रूप से सब पर लागू हो। बांगला देश से लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्ति घुस आए हैं उन्हें वापस भेजा जाए। देश में समान नागरिक संहिता लागू की जाए।

७१३८ नेहरू नगर, नई दिल्ली-६५

मेवात में गौ एवं हिंदुओं की दुर्दशा

दिनांक २०-८-९५ को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात आर्य समाज मन्दिर बौसलपुर में डा० सत्येन्द्र कुमार की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय था—"मेवात में गौ एवं हिन्दुओ की दुर्दशा"। गौ को भारतीयों ने उपयोगिता एवं उसकी वैज्ञानिकता के कारण ही माता कहा है। मां का वध कहां तक उचित है? यह विचार-णीय प्रश्न है। हरियाणा मेवात क्षेत्र में कसाइयों द्वारा वध हेतु ले जायी जा रही गायों का डा० आनन्द प्रकाश आर्य द्वारा विरोध करने पर कसाइयों का यह कहना कि हरामजादे इस क्षेत्र में गौ एवं हिन्दुओं को गाजर-मूली की तरह काटा जाता है।" डा० आर्य पर प्राण घातक हमला किया गया। इस सम्बन्ध में हरियाणा सरकार के पशुपालन मन्त्री चौ० अजमत खां द्वारा मुस्लिम भीड़ से यह कहना कि तुम रोज हजारों गायों को काटते हो तुमसे एक काफिर नहीं मारा गया एवं कसाइयों की रिपोर्ट दर्ज करवा दी ऐसे घोर साम्प्रदायिक एवं अराजकता पूर्ण कृत्य की यह सभा घोर निन्दा करती है। डा० आर्य को प्राण बचाकर भागना पड़ा है।

यह सभा भारत एवं हरियाणा सरकार से मांग करती है कि ऐसे मन्त्री को तत्काल मन्त्रि परिषद से हटाया जाय। डा० आनन्द प्रकाश आर्य को सुरक्षा दी जाय तथा भारत की रीढ़ गाय का वध तत्काल बन्द कराया जाय जिससे कृषि को बीमांस वासी खाद उपलब्ध हो सके, साथ ही उन कसाइयों को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया जाय।

मन्त्री आर्य समाज बीसलपुर (उ. प्र.)

स्त्री आर्यसमाज ने रजत जयन्ती मनायी

अलीगढ़, २१ अगस्त। स्त्री आर्यसमाज सिविल लाइन्स, अलीगढ़ ने आज अपनी स्थापना के २५ वर्ष पूरे कर लिए। सन् १९७० में आज ही के दिन "स्त्री आर्यसमाज, वैदिक आश्रम" की स्थापना की गयी थी।

इस अवसर पर वैदिक आश्रम रामघाट मार्ग, अलीगढ़ में १८ अगस्त से २१ अगस्त तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रतिदिन पं० उदयवीर शास्त्री चतुर्वेदाचार्य, पुरोहित के दिशा निर्देशन में "राष्ट्र कल्याण यज्ञ" कराया गया। साथ ही विशेष आमन्त्रित प्रख्यात तपोनिष्ठ वैदिक प्रवक्ता पं० अखिलेश्वर आचार्य, श्री रामस्वरूप आर्य भजनोपदेशक, सुश्री प्रतिभा वशिष्ठ भजनोपदेशक एवं अन्य मनीषी वक्ताओं के जीवन उत्कर्ष-कारी वेद-सन्देश उपस्थित जनसमूह को सुलभ हुए।

रजत जयन्ती समारोह का मुख्य कार्यक्रम २१ अगस्त को श्रीमती डा० उमेश कुमारी, अध्यक्ष जिला पंचायत अलीगढ़ की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम की संयोजिका थीं-श्रीमती राकेश कुमारी और मंच-संचालिका श्रीमती कुसुम सचदेव। कुमारी कमला स्नातिका, मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) मुख्य-अतिथि रहीं। यहीं की ब्रह्मचारिणी कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा वेद सम्वाद प्रस्तुत किया गया। संगीतिका के रूप में इन छात्राओं के अलावा कुमारी मेधा व सुश्री प्रतिभा का सराहनीय योगदान रहा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा 'पुष्पांजलि' स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया। समापन सन्देश श्री शिवस्वरूप शर्मा प्रधान एवं श्रीमती डा० जानकीदेवी 'वीर' संरक्षिका द्वारा दिया गया।

—मुकुट कुमार
४३ एम.आई.जी. ए.डी.ए. कालोनी
रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ. प्र.)

क्या समाज सुधार थोपा नहीं जाता ?

डा० भवानीलाल भारतीय

जबसे सर्वोच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीशों ने सरकार को समान आचार संहिता तैयार करने के बारे मे आगामी वर्ष के अगस्त मास तक अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए कहा है। तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दलों तथा साम्प्रदायिक तत्वो में हड़कम्प सा मच गया है। कांग्रेस के प्रवक्ता गाडगिल ने इसे अल्पसंख्यकों के अधिकारो मे हस्तक्षेप बताया तथा हिन्दुत्व का दायरा बढाने की साजिश कहा तो विधि मन्त्री भारद्वाज ने सविधान की दुहाई देते हुए वर्ग विशेष की सहमति के बिना ऐसी आचार संहिता बनाने से इन्कार किया। ऐसा कहते समय वे सविधान के उस निर्देश को भूल गए कि समान आचार सहिता तैयार करना सरकार का दायित्व होगा। ऐसे लोगो की एक दलील यह होती है कि समान कानून भी बनाए जायेंगे जब सभी वर्गों के लोग उसके लिए माग करेंगे। यह तो "न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी" वाली बात हुई।

तथ्य यह है कि समाज सुधार सदा ही शासन द्वारा थोपे जाते हैं। इसके लिए सरकार को खुद आगे आकर कानून बनानेपडते हैं। सती प्रथा को बन्द करने के लिए रूढ़िवादी हिन्दुओं ने सरकार से कभी कानून बनाने की माग नहीं की थी, अपितु उन्होंने तो लार्ड विलियम वैंटिक द्वारा बनाए गए सती निषेध कानून के खिलाफ लंदन की प्रिवि कौन्सिल में अपील तक की थी। किन्तु क्या इससे सरकार सती निवारण के अपने विचार से तिल भर भी विचलित हुई ? विधवा विवाह को वैध ठहराने के लिए रूढ़िवादियो के विरोध के बावजूद अंग्रेजी सरकार ने १८५० मे कानून बनाया। इसी प्रकार १९२९ में बाल विवाह पर रोक लगाने के लिए शारदा एक्ट पास किया गया। राजस्थान के कुछ क्षेत्रो के राजपूतों मे कन्या वध की बर्बर प्रथा प्रचलित थी, जिसे कानूनन बन्द कराया गया। अत: यह दलील सर्वथा लचर है कि समाज सुधार कभी थोपा नहीं जाता।

आश्चर्य है कि नारियों के अधिकारों की दुहाई देने वाले ये दल उस समान आचार संहिता का विरोध कर रहे हैं जो नारी उत्पीड़न की गारण्टी देने वाली होगी। ठीक ही है, जिनके हाथ तन्दूर काड जैसी वीभत्स घटनाओं में लिप्त हैं भला उन्हें नारियो के अधिकारो की चिन्ता क्यो होने लगी ? ध्यान देने की बात है कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशो ने भी नारी को अधिक सशक्त बनाने तथा उसे सुरक्षा देने की दृष्टि से ही समान आचार संहिता बनाने की बात कही है। धर्म परिवर्तन कर एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह कर लेने की शिकायतो के प्रसग में न्यायाधीशो को उपर्युक्त सलाह देनी पड़ी थी। जब शाहबानो प्रकरण मे साम्प्रदायिक तत्वो के समक्ष घुटने टेक कर सरकार ने कट्टरपथी लोगो की तुष्टि के लिए कानून मे सशोधन किया था, उस समय तत्कालीन गृहमन्त्री ने ससद मे कहा था कि ईसाइयो और हिन्दुओं मे तो एक पत्नी प्रथा का धार्मिक दृष्टि से पालन किया जाता है यदि अन्य अल्पसख्यक भी बहुविवाह को रोकने के बारे मे ऐसी ही राय जाहिर करें तो ऐसा कानून बनाया जा सकता है। मन्त्री जी को शायद यह पता नही था कि हिन्दू शास्त्रो मे बहुविवाह के निषेध का कोई स्पष्ट आदेश नही है। इसके विपरीत पौराणिक काल तथा मध्ययुग मे एकाधिक विवाहो के अनेक उदाहरण मिलते हैं, तथापि भारत सरकार ने हिन्दू कोडबिल पास कर बहुविवाह को अवैध घोषित किया यद्यपि करपात्री जी तथा रामराज्य परिषद ने इसे हिन्दू कानून के धर्म मे हस्तक्षेप बताया था। यदि आज हिन्दू कानून के अनुसार किसी हिन्दू को एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने की इजाजत नहीं है तो यह इस समाज की युग सापेक्ष तथा प्रगतिशील दृष्टि का ही परिचायक है जबकि सुपठित और विचारवान लोग भी शरीयत की दुहाई देकर बहुविवाह को जायज करार देते हैं।

क्रान्तिकारी सुधार तो शासन को अनिवार्यत करने ही पडते हैं। क्या शिक्षा को अनिवार्य करने, जातपात के भेद को समाप्त करने, अस्पृश्यता को दूर करने जैसे सामाजिक सुधारों के लिए अवश्य पालनीय कानून नहीं बनाए गए ? इस प्रसंग मे मुस्लिम सत्यशोधक मण्डल के कार्यकर्ता स्वर्गीय हमीद दलवई का यह कथन, जो उन्होने कई वर्ष पूर्व आर्य समाज अजमेर मे कहा था, बार बार स्मरण हो आता है कि मुसलमानो का यह दुर्भाग्य रहा कि उनमे राममोहन राय, दयानन्द और गांधी जैसे उदारवेत्ता समाज सुधारक उत्पन्न नही हुए और ये लोग कट्टरपन्थी मौलानाओ तथा शहाबुद्दीन के ही शिकार होते रहे जिन्हें इस वर्ग में व्याप्त अशिक्षा, दरिद्रता, सामाजिक असमानता, तगखयाली, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि के अभाव की कोई चिन्ता नही है।

८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर

ईश्वर की व्यवस्था को न मानने वाला नास्तिक है

मुरादाबाद। आर्यसमाज मण्डी बास मुरादाबाद के वेदकथा-आयोजन के दूसरे दिन आज श्री यशपाल आर्य बन्धु ने अपने प्रवचन मे बताया कि ईश्वर को न मानने वाला, उसके दिए ज्ञान के विपरीत आचरण करने वाला नास्तिक कहा गया है। इसी के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसकी व्यवस्था को न मानने वाला भी नास्तिक ही कहा जाएगा। जब उसकी व्यवस्था को मान लिया जाता है तो कर्मों के आधार पर फल-भोग करते हुए दुःख भी सहनीय हो जाता है।

'ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना किस लिए करनी चाहिए इस विषय का एक घण्टे तक प्रभावशाली ढंग से व्याख्यान करते हुए देहरादून से पधारे पं० देवदत्त बाली मत्री, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन ने वेदमंत्र के आधार पर बताया कि भक्त सन्मार्ग पर चलने के लिए जब परमात्मा को अपना पथप्रदर्शक मान लेता है तो उसे धनो की उपलब्धि तो होती ही है, कुटिलतायुक्त पाप रूप कर्म भी उससे छुट जाते है। जो भी प्राप्ति उसे होती है उसके किए कर्म के आधार पर ही ईश्वरीय व्यवस्था से होती है। ईश्वरोपासना से यह लाभ होता है कि बुरे कर्म से वह दूर हो जाता है।

आपने कहा कि मजहबों ने अपने-अपने प्रणेता या सन्देश-वाहक पर ईमान लाने वाले के पाप क्षमा कराने का ठेका लेकर या तथाकथित तीर्थों की कमाई खाने वालो ने न दी विशेष में स्नान से पाप मुक्ति की निराधार बात प्रचारित करके पापों में इतनी वृद्धि कर दी कि यद्यपि बहुमत उन्हीं लोगो का है जो स्वयं को ईश्वर भक्त या खुदा-परस्त कहते हैं, फिर भी पाप बढ़ता जा रहा है। यानि ईश्वर-भक्त के दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुष्ट-कर्म नही छूटते और उसमें शुभ गुणों का आधान नहीं होता तो उसे अपने अन्दर झाक कर देखना होगा कि उसकी भक्ति में कहां और क्या त्रुटि है।

इस कार्यक्रम में नगर के श्रोताओं की सख्या बढ़ती जा रही है और लोग इससे अत्यन्त प्रभावित देखे गए।

सभा की अध्यक्षता ओमप्रकाश आर्य ने की तथा सभा का संचालन संजय अग्रवाल ने किया।

ओमप्रकाश आर्य
प्रधान
आर्यसमाज मण्डी बास, मुरादाबाद

नैतिकता में मानवतावादी दृष्टिकोण

—डा० सुरेन्द्र वर्मा

ालीन नैतिकता का एक प्रमुख आयाम है। वस्तुत: बिना मानवी दृष्टि को अपनाये हम नैतिकता की कल्पना ही नहीं कर सकते।

मानवतावाद एक बड़ा व्यापक शब्द है जिसका प्रयोग न केवल नैतिक बल्कि सांस्कृतिक और साहित्यक क्षेत्र में भी होता है। एक दार्शनिक स्थिति के रूप में मानवतावाद कोई सुनिश्चित विचार तन्त्र प्रस्तुत नहीं करता, वस्तुत: मानवतावाद एक मिजाज है, जिसे हम कई क्षेत्रों मे कार्यरत पा सकते हैं।

मानवतावाद का अंग्रेजी पर्याय, ह्यूमैनिज्म, 'ह्यूमैनिटाज' से निकला है जिसका अर्थ मनुष्य की शिक्षा से है—मनुष्य की ऐसी शिक्षा जो उसे अन्य पशुओ से भिन्न बनाती है। वह उसके व्यवहार को इस प्रकार अनुशासित करती है कि मनुष्य पाशविक और बर्बर न रहने पाए। इस दृष्टि से मानवतावाद का प्रमुख आग्रह मनुष्य को उसकी बर्बरता से मुक्त कराना है। उसे कुछ इस प्रकार प्रशिक्षित करने पर ही वह पशुओ की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठता को अभिव्यक्ति दे सके। मानवतावाद प्रकृति और पद्धति—दोनो ही दृष्टियों से बर्बरता के विरुद्ध है।

असहिष्णुता और साम्प्रदायिकता में बर्बरता अभिव्यक्ति पाती है। यह असहिष्णुता चाहे धर्म के क्षेत्र मे हो या विचार के क्षेत्र मे। यही कारण है कि मानवतावादी विचार सभी प्रकार की साम्प्रदायिकता के विरुद्ध है। इसीलिए मानवतावाद धर्म के केवल उस पक्ष पर बल देता है जो सार्वभौम और सर्वमान्य है। सस्थागत धर्म-युद्ध इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि सभी धार्मिक सम्प्रदायों को जबरदस्ती एक ही सम्प्रदाय में परिणत नही किया जा सकता, अत: अच्छा तरीका यही है कि सहिष्णुता को अपनाया जाए। मानवतावादी सहिष्णुता का आधार विभिन्न धार्मिक विश्वासों में निहित मौलिक एकता है जो सर्वव्यापी और आवश्यक रूपसे नैतिक है धर्मों के यही सर्वव्यापी नैतिकता मानवतावादी सहिष्णुता को सम्भव बनाती है।

मानवतावाद केवल शास्त्रीय और पांडित्यपूर्ण दार्शनिक तन्त्रों के विरुद्ध ही नहीं है, बल्कि यह, वह नैतिक दृष्टि है जो आवश्यक रूप से मनुष्य के व्यावहारिक जगत् को असत्य और ओछा घोषित करता है, मानवतावादियों को रास नहीं आता। मानवतावाद मनुष्य के सामाजिकऔर राजनैतिक व्यापार को महत्वपूर्ण मानताहैऔर यही कारण है कि उसने सदैव विचार-प्रधान जीवन के बजाए सक्रिय अथवा गत्यात्मक जीवन का समर्थन किया है मानवतावाद भौतिक-शास्त्र और तत्वमीमासा पर बल न देकर, नैतिकता के लिए आग्रहशील है। दार्शनिक सूक्ष्मताएं और तकनीकी तथा पारिभाषिक वाग्जाल से उसे बर्बरता की गन्ध आती है। वितण्डापूर्ण पाण्डित्य में न केवल सौन्दर्य नष्ट हो जाता है और सुस्पष्टता-धूमिल पड़ जाती हैं प्रत्युत् वह जीवन और जगत् से भी कट जाता है। मानवतावाद के लिए यह असह्य है। यही कारण है कि मानवतावादियों का प्रमुख क्षेत्र नीति-दर्शन है जिसमे हम कभी मानवी परिप्रेक्ष्य से असम्पृक्त नहीं हो पाते। वे लोग जो नीति-दर्शन को छोड़कर भौतिक शास्त्र पर बल देते हैं, वे मानवतावादियो के लिए ऐसे राजनीतिज्ञों की तरह हैं जो गृह-नीति के प्रति उदासीन होकर विदेशी-मामलों में अपने को उलझाये रखते हैं। इसका यह अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि मानवतावादियों को भौतिक-शास्त्र की खोजों से और प्रकृति वैज्ञानिक रूप से समझने के प्रयत्नों से कोई विरक्ति है। वे तो केवल नैतिक और मानवीय पक्ष पर अपना आग्रह अंकित करना चाहते हैं जिसके प्रति वैज्ञानिक और तत्वमीमासक प्राय: उदासीन रह जाते हैं।

मानवतावाद को प्रकृति के प्रति असहिष्णु समझना एक बड़ी भूल होगी। यह दृष्टिकोण प्रकृति को वस्तुत: बहुत महत्व देता है। यह प्राकृतिक व्यवहार और मानवीय व्यवहार में अन्तर बनाये रखकर भी, तथा मनुष्य को प्रकृति को हेय समझकर उस पर विजय प्राप्त करने की भावना नहीं रखता। वह प्राकृतिक व्यापारों मे मनुष्य को भागीदार बनाने के लिए प्रेरित करता है। यहा ज्ञातव्य है कि विज्ञान की सफलताओं से उत्साहित होकर, उन्नीसवी शताब्दी में यूरोप का मानववादी दर्शन मनुष्य की श्रेष्ठता को लगभग पूरी तरह उसकी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से आंकता था, तथा मनुष्य का गौरव-गान केवल इसलिए करता था कि उसने प्रकृति को अपने वश में कर लिया है। किन्तु मानवतावाद की मौलिक भावना कदाचित् यह नहीं है। मानवतावाद प्रकृति को हेय न समझकर उसे मनुष्य का एक अभिन्न अंग मानता है। वह प्रकृति और मनुष्य के बीच भी देखी जा सकती है। मत्स्य न्याय मानवीय परिप्रेक्ष्य में निकम्मा है। मानवतावाद की सामाजिक और नैतिक दृष्टि मनुष्य-मात्र के प्रति सेवाभाव की है। इसके अनुसार व्यक्ति अपने सर्वोच्च शुभ को भी सभी के कल्याण में प्राप्त कर सकता है जिसमे बेशक, वह स्वयं और उसका परिवार भी सम्मिलित है। यह सोचना कि मनुष्य केवल स्वार्थ से प्रेरित होता है, वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दोनो ही दृष्टियो से गलत है। मानवतावाद मानवीय व्यापारो में वास्तविक परार्थ की भावना से ओत-प्रोत है। यह व्यक्ति के पाशविक अहभाव तथा वैयक्तिक स्वाग्रहिता को स्थान नहीं देता।

सक्षेप में मानवतावाद 'मनुष्य-निरपेक्ष दर्शन' के विरुद्ध है। बर्बरता, असहिष्णुता, साम्प्रदायिकता, शास्त्रीय पाडित्य, जीवन और जगत् के प्रति विरक्ति, तथा क्षुद्र स्वार्थ, आदि की भावनाएं मानवतावादी विद्रोह के प्रमुख लक्ष्य हैं, किन्तु मानवतावाद की शक्ति केवल विद्रोह में ही नहीं है, वह कदाचित स्वीकृति मे अधिक है। यही कारण है कि मानवतावाद विद्रोहात्मक होते हुए भी अतीतोन्मुख है। मानवतावादियो के अनुसार आज के मनुष्य ने प्राय: अपनी उन क्षमताओं और शक्तियों को भुला दिया है जिनसे प्राचीन-पुरुष धनी थे। उन्हें पुन: प्राप्त करना है। मानवतावाद इस प्रकार न केवल प्राचीनता की ओर लौट जाने के लिए आग्रहशील है, बल्कि वह मानवीय समताओ और शक्तियो का समर्थन भी है।

भारतीय नैतिकता न केवल मानवीय प्रतिष्ठा और मूल्यों पर बल देती है बल्कि उसका यह प्रमुख आग्रह भी है कि मनुष्य को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि वह अपने को पशुओं से भिन्न रख सके, बर्बरता की बजाए, मानवीय गुणों को अभिव्यक्ति दे सके। भारतीय मनीषा मनुष्य की आत्मा और उसकी स्वतन्त्रता का गुणगान करती है फिर भी वह मनुष्य को उसके भौतिक-शारीरिक पक्ष को घृणा-भाव से नहीं देखती। भारतीय नीतिशास्त्र कुल मिलाकर सक्रिय जीवन का समर्थन करते हुए नैतिक-मूल्यो के प्रति संवेदनशील हैं। किन्तु यहां यह जान लेना भी आवश्यक है कि भारतीय मानवतावाद, जहां मनुष्य को उसकी गरिमा लौटाता है, वहीं उसके अनुसार अन्तिम सत्ता मानवीय न होकर आध्यात्मिक है जिसकी सर्वोच्च अभिव्यक्ति स्वयं मनुष्य में हुई है।

पार्श्वनाथ शोध पीठ, बी० एच० यू०, वाराणसी—२२१००५

दो अध्यापकों की आवश्यकता

तीन तलाक : सबसे आसान तरीका (३)

—अरुण शौरी—

वही तरकीब

१७वीं शताब्दी के शास्त्रीय ग्रन्थ, दुर्रे ए मुख्तार,में शेख मुहम्मद अलाउद्दीन बताते हैं कि एक दिया गया तलाक "जब वह स्वामित्व के अस्तित्व आने पर प्रभावी होना हो" मिसाल के लिए यह कहकर दिया गया तलाक कि "मेरी शादियों के साथ ही तू तलाकशुदा है" शून्य या अमान्य है। (लेकिन शब्दों के जरा से हेर-फेर से, "तुमसे मेरे निकाह करने पर", यह प्रभावशील और मान्य है।) वह नोट करते हैं कि अबू हनीफ के शिष्य, इमाम मुहम्मद, शादी पर अवलम्बित तलाकोंको वैध या जायज नहीं मानते और यह कि यह नजरिया प्रतिद्वन्दी शाखा के संस्थापक, इमाम शफी, के दृष्टिकोण से मेल खाता है। इस तरह, एक शौहर ने अगर इस आशय की घोषणा की हो और वह उसके नतीजों से बचना चाहे, तो शेख बज्जाजियाह का हवाला देते हुये वही तरकीब सुझाते हैं जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं। "एक हनफी, इस मामले में, तलाक को रद्द करने वाले शफी जज के आदेश का पालन कर सकता है, वह बल्कि एक रैफरी के आदेश का, या किसी सच्चे मुसलमान के फतये का, पालन भी कर सकता है। वह दो मामलों में दो अलग-अलग फतवों के मुताबिक काम कर सकता है।" मुफ्ती किफायतुल्लाह न्यायमूर्ति अमीर अली और अन्य विद्वान भी प्रचलित व्यवस्थाओं में इसी किस्म के पैतरों और युक्तियों का जोरदार समर्थन करते हैं और तिस पर भी हठपूर्ण आक्रामक घोषणा कि "शरीयत अल्लाह प्रदत्त है। उससे विपथ नहीं हुआ जा सकता।"

आगे, गौर कीजिए कि इस सबसे शौहर को ही शक्ति और अधिकार मिलते, बल्कि उतनी ही शक्ति और अधिकार उलेमा को भी हासिल होते हैं, क्योंकि सिर्फ वही तसदीक कर सकता है कि इस मामले में तलाक विवशतावश दिया गया होने के बावजूद प्रभावी है, या कि चूंकि यह विवशतावश दिया गया है इसलिए प्रभावी नहीं होगा। सामान्य नियम मसलन यह है कि क्रोध में दिया गया तलाक किसी भी अन्य तलाक के जितना ही घातक रूप से प्रभावी होता है। फतवा-ए-रिजविया इस नियम को इतनी ही सख्ती से लागू करता है जितनी सख्ती से अन्य प्राधिकारी, लेकिन जिस पन्ने पर इस नियम के आधार पर दाम्पत्य समाप्त किए जाते हैं, ठीक उसी पन्ने पर पर हमें कहीं ज्यादा गुंजाइश देने वाले आदेशों के बारे में पढ़ने को मिलता है। "अगर क्रोध इतनी पराकाष्ठा पर है कि जहां कोई अपना विवेक खो दे" फतवा-ए-रिजविया फैसला देता है, "तो तलाक नहीं होगा"। क्रोध पराकाष्ठा पर है या नहीं, वह आदेश देता है, यह गवाहों से या शौहर के हलफिया बयान से, पता लगाया जाना चाहिए और यह सुविदित होना चाहिए कि इस हद तक आपा खो देना उसकी आदत ही है। इस आशय का महज दावा ही काफी नहीं है, वह कहता है, क्योंकि तब कोई भी यह दावा पेश कर देगा और क्रोध में दिया गया कोई भी तलाक जायज नहीं होगा। क्या गवाह भरोसे योग्य है? आदमी का पूर्व प्रभावी बयान स्वीकार करना है या नहीं? क्या इस हद तक आपा खोना उसकी आदत है? कौन यह तय करेगा? जाहिर है, उलेमा। (परस्पर विरोधी मामलों के लिए, देखें (फतवा-ए-रिजविया) खण्ड पांच, पेज ६२७-३०)।

तीन तलाक से दाम्पत्य निरपवाद रूप से समाप्त हो जाता है। फतवा-ए-रिजविया सहित सभी इस नियम को लागू करते हैं लेकिन निरपवाद का मतलब यह नहीं है कि हमेशा एक शौहर तलाक का तीन बार उच्चार करता है। क्या बीवी बहिष्कृत? अगर शौहर हलफिया कहता है कि तीन में से दो घोषणाओं में उसका इरादा तलाक देना नहीं था, फतवा-ए-रिजविय हुक्म देता है, तो उसका विश्वास किया जाएगा और तलाक घटित नहीं होगा। अगर वह शपथ नहीं लेता, तो तीन तलाक घटित समझे जायेंगे।

वही, पेज १३६)।

शौहर के अधिकार

अन्त में, गौर कीजिए कि सशर्त तलाक देने के शौहर के अधिकार के ऐसे परिणाम होते हैं जो उस दम्पति से भी आगे जाते हैं। तीन बार तलाक सार्वजनिक बहस का मुद्दा है। यहां तक कि पाकिस्तान और बांगला देश ने भी इस प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया है, जैसा कि कई अन्य इसलामी देशों ने भी किया है, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इसे हमारे संविधान और हमारे कानूनों का उल्लंघन करने वाला करार दिया है। यह निरापद रूप से माना जा सकता है कि मुस्लिम औरतें उस चरम असुरक्षा से निजात पाना चाहेंगी जिसे यह बढ़ावा देता है, जैसा कि गैर मुस्लिम औरतें भी चाहतीं अगर उनके पतियों को भी यही अधिकार दिया गया होता। सुधार के पक्ष में अगर मुस्लिम औरत की कोई इच्छा व विचार हो भी तो उसका शौहर उसे यह घोषणा करके दबा सकता है कि "अगर तुमने कभी तीन बार तलाक।" के नियम पर आपत्ति की, तो तुम्हें तीन बार तलाक।" वह और भी आगे जा सकता है और उससे खुद उसके दासता की जिन्दगी जीते रहने के पक्ष में प्रदर्शन करवा सकता है। वह कहता है "अगर तुम बरकरार तो तीन बार तलाक से जुड़े फैसले (या शाह बानो फैसले, या अन्य किसी भी फैसले) के विरोध में प्रदर्शन में शामिल नहीं हुई तो हम तुम पर तीन तलाक" और यदि वह शामिल नहीं होती तो वह बहिष्कृत-बगैर गुजारे भत्ते के, बगैर अधिकारों के, बगैर किसी प्राधिकार के जिससे वह मदद की गुहार कर सके।

और हमारे सम्पादकीय लेखक ताज्जुब करेंगे इस चमत्कार पर। कि इतनी समर्पित हैं ये औरतें शरीयत के प्रति कि वे प्रदर्शन करने निकल पड़ी हैं कि वे गुलामी और पराधीनता की जिंदगी जीते रहना चाहतीं हैं, बजाय इसके कि कोई शरीयत को हाथ भी लगाये।

आर्य वीर दल का

"गऊ रक्षा की ओर क्रान्तिकारी कदम"

जून १९९४ में सन्यासाश्रम गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में पूरे जनपद के मुख्य व्यक्तियों की आम सभा की गयी जिसमें बढ़ती हुई गऊ हत्या पर चिन्तन किया गया। तथा निर्णय लिया गया कि गऊ की रक्षा होनी चाहिए। इसीलिए एक गऊ रक्षिणी संघर्ष समिति का गठन करने का विचार हुआ।

तदोपरान्त समिति का सर्वसम्मति से चयन किया गया। जिसका अध्यक्ष स्वामी शिवानन्द सरस्वती (संरक्षक आर्य वीर दल उ०प्र०) तथा प्रधान सन्यासाश्रम गाजियाबाद को तथा महामन्त्री रूपचन्द नागर (मण्डलपति आर्य वीरदल यमुना हिण्डन मध्य क्षेत्र उ० प्र०) का एव कोषाध्यक्ष गौतम कुमार गुप्ता जी को चयनित किया गया तथा तय किया गया कि जनपद गाजियाबाद के आस-पास के प्रमुख संन्यासी वृन्द एवं जनपद के सभी प्रधान एव सम्मानित व्यक्ति पदेन सदस्य होंगे।

विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार ज्ञात हुआ कि फ्लोवल फूड के नाम से एक बूचड़ खाना दादरी कस्बे के पास घूम गांव में सरकार की अनुमति से खोला जा रहा था। उसे रोकने के लिए समस्त क्षेत्रवासी स्वामी शिवानन्द जी के नेतृत्व में कई बार जिला अधिकारी से मिले और ज्ञापन भी दिया लेकिन उसे रोकने की दिशा में अधिकारियों ने कोई कार्यवाही नहीं की गई। अतः २१ अगस्त ९४ को घूम गांव में हजारों की संख्या में एकत्रित लोगों ने उस बूचड़खाने को तोड़ने की शपथ ग्रहण की तथा पुनः सरकारी अधिकारियों की ओर से नकारात्मक कार्य रहा।

इसीलिए विवश होकर ६ सितम्बर ९४ की सायं ५ बजे लगभग ५००० लोगों ने उस बूचड़ खाने को ध्वस्त कर दिया जिसका नेतृत्व उस गांव के प्रधान महेन्द्रसिंह एवं रूपचन्द नागर मण्डलपति आर्य वीर दल यमुना हिण्डन मध्यक्षेत्र तथा स्वामी शिवानन्द सरस्वती संरक्षक आर्य वीर दल उ० प्र० आर्य महानुभाव कर रहे थे। तथा सभी क्षेत्र की जनता ने यज्ञोपरान्त यह व्रत लिया कि भविष्य में बूचड़ खाना नहीं बनने देंगे।

२९ जून १९९५ को नूरपर ग्राम दादरी से १६ कि०मी० आगे यासीन नामक एक मुस्लिम युवक ने अपने मकान पर एक गाय की हत्या की। इस घटना का उपरोक्त अधिकारियों को पता लगा तो वे तुरन्त घटना स्थल पर गये तथा गाय बरामद की तथा उसको जमीन में दबा दिया इस हादसे के देखते हुए तथा जनता के रोष को देखते हुए। ९ जुलाई को आम सभा की तथा सरकार को ज्ञापन दिया एवं १६ जुलाई तक का समय दिया कि अपराधी पकड़ा जाए एवं उसकी रिहाई नहीं होनी चाहिए तथा उसका मकान गिरा कर जिस जमीन में गाय को दबाया है उस पर गऊशाला का निर्माण किया जाय। लेकिन सरकारी तन्त्र की ओर से कोई कार्यवाही नहीं हुई।

अतः १६ जुलाई दोपहर २ बजे १०,००० आदमियों ने वह मकान गिरा दिया तथा उन्हीं ईंटों से गऊशाला की आधार शिला यज्ञोपरान्त स्वामी शिवानन्द सरस्वती संरक्षक आर्य वीर दल उ०प्र०) जी के करकमलों द्वारा किया गया।

इसी प्रकार १३ अगस्त ९५ को फरुखनगर लोनी में फयाज नामक एक युवक ने एक गाय का कत्ल किया यह सूचना जैसे नागर साहब एवं स्वामी जी को प्राप्त हुई तो वे सम्बन्धित स्थान पर गये। सारी जानकारी पूर्ण करके (आपने पुलिस को सूचित किया। तथा १५ अगस्त को एक आम बैठक की। जिसमें निर्णय लिया गया कि उस युवक को गांव में न रहने दिया जाय तथा समस्त अपराधियों की गिरफ्तारी की जाय एवं इनकी जमानत भी न ली जाय इसका समय २१ अगस्त रखा गया। इसी दौरान कुछ मुस्लिम युवकों ने स्वामी जी को अपशब्द कहे। जिससे एकत्रित जनता में रोष पैदा हुआ तथा आक्रोश में आकर गऊ हत्यारे के मकान को आग लगा दी गई इस कार्य में प्रशासन का कार्य सराहनीय रहा है अपराधियों को पकड़ लिया गया तथा वहां की जनता ने कहा फिर इसे गाँव में नहीं रहने देंगे। इसी प्रकार की प्रेरणा से यह धार्मिक कार्य समस्त देश में होने लगे तो आज जो गऊ की दुर्दशा है वह न होकर सभी प्राणियों की रक्षा की जा सकती है।

—हरिसिंह आर्य वीर दल

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश

प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के वृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों में छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ९०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक व्यय ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

स्वामी दयानन्द सरस्वती

घोर अन्ध-विश्वासों से जो घिरे हुए थे।
रूढ़िवाद के दल-दल में जो धंसे हुए थे॥
हिन्दू-धर्मी अज्ञानी भारतवासी, जो।
धर्म-धूर्तों के चंगुल में फसे हुए थे।
ज्ञान-ज्योति दे, कौन उन्हें लाए सत्-पथ पर।
वह थे स्वामी दयानन्द तपसी-योगेश्वर॥

विष पीकर भी जिसने अमृत-पान कराया।
सुप्त मूर्ति-पूजक समाज को सहज जगाया॥
करके धर्माचार्यों के छल-छद्म उजागर।
जिसने सबको सच्चा मानव-धर्म सिखाया॥
धर्म-सुधारक कौन, निडर विचरे जो दर-दर?
वह थे स्वामी दयानन्द तपसी-योगेश्वर॥

'स्वामी' से शास्त्रार्थ हेतु जो कोई आया।
मठाधीश हो भले, किन्तु वह जीत न पाया।
या तो भागा पराभूत होकर 'स्वामी' से।
या फिर उनका परम भक्त बन, शीष नवाया॥
तर्क-शास्त्र में, ब्रह्म ज्ञान में महा धुरन्धर।
वह थे स्वामी दयानन्द तपसी-योगेश्वर॥

उस महर्षि को, आओ श्रद्धा-सुमन चढ़ाएं।
मोक्ष-प्राप्ति का उनका अनुपम पथ अपनाएं॥
उनके पावन पद्-चिह्नों पर अविरल चलकर।
अपना दुर्लभ मानव-जीवन सफल बनाएं॥
प्रिय 'सत्यार्थप्रकाश' दिया जिसने अति हितकर।
वह थे स्वामी दयानन्द तपसी-योगेश्वर॥

—जगत्प्रकाश माथुर जोधपुर

लोकमान्य तिलक ने हिन्दू हितों की उपेक्षा नहीं की

कानपुर आर्यसमाज के तत्वाधान मे आर्यसमाज हाल गोविन्द नगर में श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्य तिथि पर एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें आर्यसमाज के नेता श्री देवीदास आर्य ने कहा कि तिलक जहा देश की स्वतन्त्रता के महान योद्धा थे, वहा उन्होंने हिन्दू संगठन पर बल दिया, और हिन्दू हितो की कभी उपेक्षा नहीं की। उनको मानने वाले आज के शासक हिन्दू हितो की उपेक्षा कर मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति का खेल, खेल रहे हैं।

श्री आर्य ने आगे कहा कि देश के प्रधानमन्त्री एक श्वास में अयोध्या में मन्दिर के लिए उच्चतम न्यायालय के निर्णय मानने की दुहाई देते हैं, और दूसरे श्वास में समान नागरिक संहिता बनाने के लिए उच्चतम न्यायालय के आदेशों को मानने से इन्कार करते हैं, क्योंकि इससे मुसलमान नाराज होते हैं। शासको को यह भेदभाव छोड़कर लोकमान्य तिलक के जीवन का अध्ययन कर देशहित के लिए केवल वोट की राजनीति छोड देनी चाहिए।

सभा में श्री देवीदास जी आर्य के अतिरिक्त सर्व श्री स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, मदनलाल चावला, जगन्नाथ शास्त्री, दीवानचन्द्र खन्ना, श्रीमती चन्द्रकांता गैरा, वीरा चोपडा, आदि वक्ताओं ने लोकमान्य तिलक के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

मन्त्री
बालगोविन्द आर्य

गुरुकुल-प्रभाताश्रम में शोध-गोष्ठी सम्पन्न

गुरुकुल प्रभाताश्रम भोला झाल में पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (पूर्व पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) के अष्ट लोकों की सार्थक योजना को क्रियान्वित करने हेतु स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा संस्थापित स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान की इक्कीसवीं शोध संगोष्ठी समर्पणानन्द जी के ही जन्म-दिवस श्रावण शुक्ल एकादशी को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस शोध संगोष्ठी का विषय "वैदिक वाङ्मय में ललित कलाएं" था। गोष्ठी में शोध-लेख प्रस्तुत करने वाले विद्वानो में श्री सत्यकाम जी (पूर्वकुलपति गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. एवं पूर्व विभाग अध्यक्ष-संस्कृत, दिल्ली वि०वि०) श्री श्रीनिवास मिश्र जी (आगरा वि. वि.) श्री दुर्गाप्रसाद जी (मेरठ वि.वि.) श्री जयदत्त उप्रेति जी (पूर्व विभागाध्यक्ष-संस्कृत, कुमायूं वि. वि.) श्री सुभाष वेदालंकार जी (जयपुर, वि. वि.) श्री सोमदेव शतांशु जी (विभागाध्यक्ष-संस्कृत विभाग गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) एवं श्री सुधाकराचार्य जी (विभागाध्यक्ष संस्कृत, मेरठ वि. वि.) थे।

गोष्ठी का प्रारम्भ वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना एवं सरस्वती वन्दना से हुआ। तत्पश्चात् पधारे हुए विद्वानों का सत्कार तिलक-माला-दक्षिणा के साथ शंखवादन व मन्त्रोच्चारण सहित किया गया। सभी विद्वानों शोध वाचकों ने सभी प्रकार की ललित कलाओं का आदिस्रोत (मूल) वेद को स्वीकार किया। श्रोतृवृन्द ने अपनी उद्भूत शंकाओं का समाधान भी पाया। इसी उपक्रम में अखिल भारतीय तीरंदाजी प्रतियोगिता में ५० मीटर व ७० मीटर से क्रमशः द्वितीय-तृतीय स्थान प्राप्त ब्रह्मचारी सत्यदेव एवं ब्रह्मचारी आदित्य का सम्मान आश्रम के प्रधान द्वारा किया गया। अन्त में गोष्ठी-अध्यक्ष श्री सत्यकाम जी के गवेषणापूर्ण उद्बोधन के पश्चात् संस्थान के निदेशक डा० निगम विद्यालंकार के निवेदन पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी [illegible] पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का आशीर्वचन हुआ एवं शान्ति पाठ के साथ गोष्ठी के समापन की घोषणा की गई।

गोष्ठी की विशेष उल्लेखनीय बात यह रही कि इस दिन पर्याप्त वृष्टि के साथ भी सभी उपस्थित श्रोता-गण पूर्ण मनोयोग पूर्वक शोध-लेखों का श्रवण करते रहे।

स्नातक परिषद्
गुरुकुल प्रभात आश्रम
भोला-झाल, मेरठ

आर्यवीरों का साहसिक कदम

जुलाई मास १९९५ को पांच आर्य वीर विनय आर्य, विजेन्द आर्य, वीरेन्द्र आर्य आदि ने दिल्ली से कराकोर की मोटर सायकिल यात्रा प्रारम्भ की जिनका दिल्ली के मुख्य मन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने हरी झण्डी दिखाकर नौजवानों का स्वागत किया एवं उत्साह बढ़ाकर विदा किया। ये पाचों आर्य वीर मोटर साईकिलों पर प्रथम बार सियाचीन ग्लेशियर आर्मी बेसकैम्प पहुंचे तथा यह पुगला पास दुनिया की सबसे ऊंची सड़क है। इस स्थान पर इनसे पहले स्कूटर या मोटर साईकिल सवार कोई नहीं गया ये सबसे पहले यात्री थे। इन्होंने यहा पहुंचकर सर्वप्रथम यज्ञ किया तथा वहां पर ओ३म्ध्वज स्थापन करके सफल यात्रा पूर्ण की।

—हरीसिंह आर्य

गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक महोत्सव

गुरुधाम गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक महोत्सव १८ सितम्बर से २४ सितम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अतिरिक्त वैदिक परीक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, गुरु विरजानन्द सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

॥ मानसिक बीमारियां क्यों होती हैं ॥

मानसिक बीमारियां पैदा होती हैं परिवार की उलझनों और झगड़ों से। कारोबार की उलझनों और झगड़ों से। हर व्यक्ति को कोई-न-कोई चिन्ता लगी हुई है। डाक्टरो के पास इसका कोई इलाज नहीं। इस चिन्ता को दूर करने के लिए डाक्टर लोग नींद की गोलियां देते हैं। ताकि रोगी कुछ देर के लिए अपनी चिन्ता को भूल जाये। यह रोग का इलाज नहीं है। परन्तु फिर भी हर रोज हर व्यक्ति दवाई खा रहा है। अब लोग मिठाई कम खाते हैं, दवाई ज्यादा खाते हैं। फिर भी मन को शान्ति नहीं मिलती। हर व्यक्ति को टेंनशन हो रही है भक्त कबीर के पास एक सेठ जी आये और उन्होंने भक्त कबीर के आगे नोटों का ढेर लगा दिया और कहा कि आपके पास शांति है। जितने नोट लेना चाहो ले लो और मुझे शान्ति दे दें। भक्त कबीर ने कहा कि नोटो के साथ शांति का कोई सम्बन्ध नहीं है। मैंने अगर नोटों के साथ शांति ली होती तो आपसे नोट लेकर आपको शान्ति दे देता। शान्ति तो सत्संग से मिलती है। किसी सन्त महात्मा के पास बैठने से मिलती है। परमात्मा का भजन करने से मिलती है। मन की शान्ति ही न हो तो मानसिक बीमारियां लग जाती हैं।

चिन्ता, भय, क्रोध आदि मानसिक बीमारिया हैं। जब ये अन्तःकरण में अपना सिक्का जमा लेती हैं तो हार्ट की बीमारी, ब्लैड प्रेशर की बीमारी, शूगर की बीमारी आदि के रूप में यह शरीर में प्रकट होती हैं।

मानसिक बीमारियों का इलाज

मौन मानसिक बीमारियों का महत्वपूर्ण उपाय है। आश्रम में पूज्यपाद महात्मा वशिष्ठ मुनि जी महाराज हैं। उन्होंने पिछले वर्ष भी १३ अप्रैल १९९३ से १३ अप्रैल १९९४ तक एक साल का मौन रखा था और अब भी १३ जनवरी १९९५ से १३ अप्रैल १९९७ तक मौनव्रत रखा है महात्मा जी ज्यादा समय ध्यान में लगाते हैं। महात्माजी ने जिज्ञासुओं के लिए मिलने का समय हर रोज तीन बजे से चार बजे तक रखा है। महात्मा जी आपके प्रश्नों का उत्तर लिखकर ही देंगे। आप पत्र व्यवहार करके भी अपने प्रश्नों का उत्तर ले सकते हैं।

मिलने का पता :—

महात्मा रलीाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम गुरुकुल
आनन्द धाम गढ़ी ऊधमपुर

संचालक :- गोपालभिक्षु, आचार्य अखिलेश्वर — मन्त्री :- देवव्रत खन्ना

आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा जं० में

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा ज० मे २३-८-९५ से २७-८-९५ तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान प० भक्तलाल शास्त्री ने अपनी भजन पार्टी के साथ पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया । विभिन्न परिवारो मे प्रतिदिन प्रात साय को होने वाले इस कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव पड़ा ।

आर्य समाज कोटद्वार में वेद-प्रचार महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज कोटद्वार मे दिनाक १५-८ ९५ से १८-८-९५ तक वेद प्रचार महोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर ज्वालापुर (हरिद्वार) से पधारे डा० सत्यदेव नियमालकार द्वारा वेदों पर ओजस्वी प्रवचन किये गये उन्होने बताया कि धर्म के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य सुख प्राप्त कर सकता है ।

नजीबाबाद से पधारे श्री विद्यारत्न आर्य जी के प्रभु भक्ति के गीतों ने लोगों के मनको मोह लिया वही आर्य जगत के बुजुर्ग भजनोपदेशक श्री इन्द्रसेन विश्व प्रेमी ने भी श्रोताओ का मार्ग दर्शन किया । १८-८-९५ को पूर्णाहुति के पश्चात ऋषि लगर का आयोजन किया गया जिसमें बहुत से स्त्री, पुरुष व बच्चो ने एक साथ भोजन किया ।

वैदिक व्याख्यान

डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति की ओर से डा० प्रह्लाद कुमार की पचासवीं जयन्ती पर ११ सितम्बर को वैदिक व्याख्यान का आयोजन किया गया है । कक्ष सख्या २२ कला सकाय दिल्ली विश्वविद्यालय में होने वाले इस आयोजन में डा० श्रीमती प्रवेश सक्सेना श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, आदि विद्वान पधार रहे हैं । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० पुष्पेन्द्र कुमार करेंगे :

आर्यसमाज बली का वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज बली मेरठ का तीसरा वार्षिक महोत्सव ९ से ११ सितम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है । इस अवसर पर यज्ञ भजन प्रवचन के अतिरिक्त समाज सुधार सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया इस समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक, पधार रहे हैं । अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाये ।

शोक समाचार

श्री जसवन्त राय साहो सुपुत्र श्री मोहनलाल साहो का स्वर्गवास २१-८ ९५ को हो गया । वे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे । उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु २ -९५ को कम्युनिटी हाल राणा प्रताप बाग दिल्ली मे एक शोकसभा का आयोजन किया गया अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने उनको अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये :

डा० दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा एक मासीय शिविर सम्पन्न

योगधाम आश्रम लगभग २०, २१ वर्षों से निरन्तर ध्यान योग के क्षेत्र में संलग्न है, स्वामी (डा०)दयानन्द सरस्वती के निर्देशन में। इसका कार्यक्षेत्र केवल योगधाम तक ही सीमित नहीं है। वरन् देश के अन्य प्रान्तों में भी ध्यान योग आसन-प्राणायाम का शिविरों द्वारा जन-जन को जागृत करते हुए आर्य जगत में अद्वितीय कार्यक्रम चला रहे हैं। यहां उल्लेखनीय है कि पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी भी आपके कार्यकलापों से प्रभावित हो रहे हैं. उसका कारण जहां आपका व्यक्तित्व तथा ध्यान योग में निपुणता हैं. वहीं आपकी उच्च शिक्षा का भी योगदान है।

आपकी 'योग दर्पण' नामक पुस्तक बहुत ही लोकप्रिय तथा लाभप्रद सिद्ध हुई तथा साधकों के विशेष आग्रह पर उसका अंग्रेजी अनुवाद भी शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। आप उच्च कोटि के वक्ता, लेखक, साधक एवं योगी हैं।

आपका कहना है कि—सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय अर्थात् योगविद्या का सम्बन्ध गरीबी या अमीरी से नहीं। यह विद्या सबके लिए है, आपका विश्वास है कि वद्ध व्यक्ति यदि लम्बे समय तक साधना में सफल न भी हो सकेंगे तो भी कम से कम उनके संस्कार तो बनेंगे, जो उनके लिए लाभकारी होंगे। यह शिविर एक सराहनीय कदम रहा। इस का आयोजन जून को तथा समापन जुलाई में हुआ। एक माह के समय में आपने विरक्तों को समाज के लिए किस प्रकार तैय्यार किया, वह अद्वितीय कार्यक्रम था। गृहस्थों तथा साधकों के लिये तो सभी कार्यक्रम होते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व एक सभा में जो स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में दीनानगर में हुई तथा यह निर्णय किया गया कि ऐसे संन्यासियों से भगवा कपड़े उतरवा लिये जायें जो पढ़े-लिखे नहीं हैं तथा समाज के काम नहीं आ रहे हैं। लगभग ६०,७० विरक्तों ने इसका पूर्ण या आंशिक लाभ प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आपने जो ज्ञान बांटा वह इस प्रकार था—

१—पातञ्जल योग दर्शन
२—आयुर्वेद द्वारा रोगों का निदान एवं इलाज
३—प्राकृतिक चिकित्सा तथा एक्यूप्रेशर द्वारा रोगों का इलाज करना। संक्षिप्त
४ -योगासन तथा प्राणायाम शिक्षा
५—संध्या तथा यज्ञ करना, कराना तथा शुद्ध उच्चारण करना
६ —प्रवचन कला का ज्ञान
७ —ध्यान योग लगाना (साधना)

इन विषयों का ज्ञान बहुत ही सूक्ष्म व स्थूल रूप से कराया गया। स्वामी दिव्यानन्द जी एक सफल अध्यापक हैं। योगदर्शन जैसे जटिल विषय को जो संस्कृत के सूत्रों के रूप में था, बहुत ही सहज ढंग से वास्तव में यह एक सफल कार्यक्रम रहा तथा यह निर्णय लिया गया कि ऐसे शिविर प्रतिवर्ष लगने चाहियें।

आपकी प्रतिभा व तत्परता का द्योतक है कि आपको दयानन्द योगधाम, फरीदाबाद का भी अध्यक्ष बनाया गया है, जो अभी नवजात है. तथा शीघ्र ही यहां की भी गतिविधियां हमारे सम्मुख आयेंगी।

माधुरी योगमती, अमृतसर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी०एल० ११०४९/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-९-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C)९३/९५
R N 626/27 Licensed to post without prepayment Licence No U (C) 93/95 Post in N D P S O on 7,8 9-1995

महर्षि दयानन्द सरस्वती से

(पृष्ठ १ का शेष

१५ वर्षों मे हिन्दी और भारतीय भाषाओ के प्रयोग पर कोई रोक नहीं थी और सविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार १५ वर्ष बाद अग्रेजी का प्रयोग ससद द्वारा निर्दिष्ट कुछ विषयो तक ही सीमित होना था। किन्तु निहित स्वार्थो के कारण इन प्रावधानो को कुछ इस तरह लिया गया कि स्थिति उलटी हो गई और हिन्दी के प्रयोग के लिए विषय निर्दिष्ट किए जाने लगे। सविधान का आशय था कि हिन्दी और भारतीय भाषाओ का प्रयोग बढाना है, अग्रेजी को घटाना है। किन्तु अग्रेजी का प्रयोग ज्यों का त्यों बना रहा, बल्कि कुछ क्षेत्रो मे बहुत बढ गया (जैसे प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक मे भी अग्रेजी का बोल-बाला हो गया) और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को विभिन्न परीक्षाओं का माध्यम बनाने के लिए बरसों से सत्याग्रह करने वालों को अग्रेजों की सी दमन नीति का शिकार होना पड रहा है। आखिर क्यों ?

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

भाद्रपद कृष्णपक्ष पञ्चमी मगलवार १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में ... ई बहालगढ मे आर्य वीर दल की ओर से यजुर्वेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य देवदत्त जी थे। गुरुकुल पाणिनि महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया। इस अवसर पर आचार्य देवदत्त जी श्री विपिन जी, श्री ... जी आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। ग्राम के अनेक गणमान्य प्रतिष्ठित लोगों ने यज्ञ मे भाग लिया। आर्य वीरों ने इस सुअवसर पर राष्ट्र का प्रतीक 'ओ३म्' ध्वजारोहण, सैनिक सचालन, राष्ट्रगान और प्रभात फेरी निकाली।

सुकृतानि स्मारिका का विमोचन

स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम का रजत जयन्ती समारोह बडी धूम धाम के साथ दिनांक २१ अगस्त १९९५ को यज्ञ शाला आर्य समाज सिविल लाइन्स मे मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती डा० उमेशकुमारी अध्यक्ष जिला पचायत अलीगढ द्वारा की गई। इस समारोह की मुख्य अतिथि कु० कमला स्नातिका मुख्याधिष्ठात्री कन्या गुरुकुल हाथरस तथा विशिष्ट अतिथि प० अखिलेश्वर आचार्य जम्मू वाले रहे। इस अवसर पर रजत जयन्ती स्मारिका सुकृतानि का विमोचन माननीय अध्यक्ष द्वारा किया गया। आर्य समाज का सरक्षक श्रीमती जानकी देवी धीर की प्रेरणा स्वरूप महिलाओ की उपस्थिति बहुत अधिक रही और पुरुषो ने भी रुचि से भाग लिया।

—मन्त्रिणी आर्य समाज
वैदिक आश्रम अलीगढ

शोक समाचार

श्रीमद् दयानन्द वैदिक मिशन (सस्थान) रायगढ के महामन्त्री श्री प० जैमिनी कुमार जी की माता श्रीमती गायत्री देवी का निधन दि० ११-८-९५ को प्रात ९ बजे उनके निवास स्थान मे हो गया। वे ८० वर्ष की एक विदुषी एव सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप मे चर्चित महिला थी। अत हम सभी समाज की ओर से दुखद निधन पर उनकी आत्मा शान्ति हेतु ईश्वर से नेक कामना करते है। —मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।
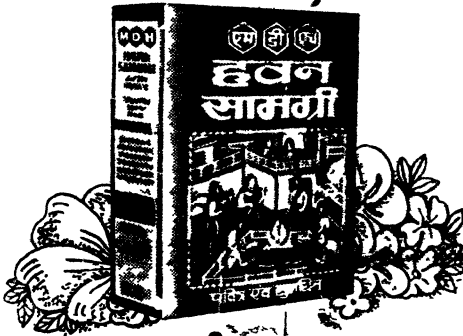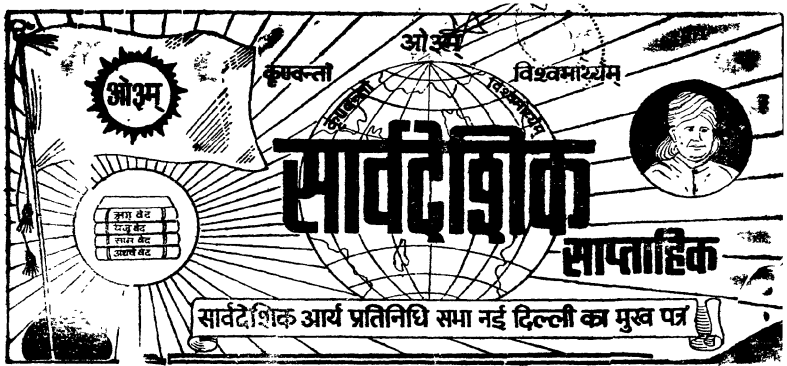
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक ३?) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ आश्विन कृ० १५ सं० २०४९ २४ सितम्बर १९९२

आज मेरे देश की रक्षा कैसे होगी ?

हैदराबाद मुक्ति दिवस पर श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का भाव-विह्ल तथा अश्रुपूर्ण उद्बोधन

हैदराबाद १७ सितम्बर । आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हैदराबाद मुक्ति दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ । इस सारे कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, मन्त्री श्री डा. सच्चिदानन्द शास्त्री तथा न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन शामिल हुए । सारे आन्ध्र प्रदेश से आर्य जनता प्रात. ९ बजे से ही हैदराबाद में विधान सभा भवन के समक्ष स्थापित सरदार पटेल की प्रतिमा लगे पार्क में एकत्र होना प्रारम्भ हो गई थी । वहां से १०-३० बजे जुलूस के रूप में समूची आर्य जनता सरदार पटेल जिन्दाबाद तथा भारत माता जिन्दाबाद सहित अन्य नारे लगाते हुए भारतीय विद्या भवन में पहुंचे जहां ११-३० बजे से एक जन सभा का आयोजन किया गया था । सभा के प्रारम्भ में कुछ समय तक विभिन्न प्रचारको और विद्वानों ने वेद मन्त्रों और वैदिक भजनों के द्वारा उपस्थित जन समुदाय को एकाग्रचित्त कर दिया ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हैदराबाद मुक्ति संग्राम के अपने संसमरणो को सुनाते हुए आर्य जनता से कहा कि हैदराबाद को निजाम से मुक्त कराने के पीछे हमारा लक्ष्य केवल हैदराबाद के हितो तक ही सीमित नहीं था अपितु इसके पीछे समूचे राष्ट्र की प्रतिष्ठा और रक्षा का भी प्रश्न था परन्तु आज सैंतालिस वर्ष बाद हम सारे राष्ट्र को उस से भी बुरी अवस्था में पाते हैं । उस समय विदेशी ताकतों के विरुद्ध खुला विद्रोह हमने किया था परन्तु आज दुर्भाग्य है कि विदेशी ताकतें आमने-सामने की लड़ाई न लड़ के हमारे ही साधनों से हमारे ही समाज को एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ाने के लिए तैयार कर रही है । श्री वन्देमातरम् ने कहा कि इस विघटन की प्रक्रिया में सबसे बड़ा साधन हमारे देश का संविधान भी है जोकि भारत की जनता को एकता के सूत्र में बांधने का कोई भी मार्ग उपलब्ध नहीं कराता । श्री वन्देमातरम् जी अपना उद्बोधन देते समय इतने भाव-विह्ल हो गए कि अश्रुपूर्ण नेत्रों से यह कहते हुए हुए उनका गला अवरुद्ध हो गया कि आज मेरे इस देश की रक्षा कैसे होगी ?

पुनः अपने उद्बोधन को जारी रखते हुए श्री वन्देमातरम् ने समूचे देश से करबद्ध निवेदन किया कि अपने गृहस्थ तथा अन्य सांसारिक कार्यों में से कुछ समय निकालकर देश और समाज की परिस्थितियों पर भी अवश्य विचार करें तथा कुछ समय और साधन इस देश की जनता को जागरूक करने के लिए अवश्य व्यय करें । राष्ट्र बचेगा तभी आपका जीवन सुखी रह सकेगा ।

सार्वदेशिक न्यायसभा के सयोजक श्री विमल वधावन ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस बहुमूल्य जीवन में क्या हमारी योग्यता है, हम कितने बड़े से बड़े काम या बलिदान कर सकते हैं और आज तक हमने क्या किया है । उन्होंने कहा कि जब निजाम जैसी क्रूर और ताकतवर सत्ता को आर्य समाज झुकने के लिए मजबूर कर सकता है तो वर्तमान समय में हमारे देश के अन्दर विघटन पैदा करने वाले अमरीकी सयंत्रों के विरोध में पहले जन जागृति के द्वारा और फिर जनशक्ति के द्वारा वातावरण बनाने का काम भी आर्यसमाज को ही करना होगा, इसके लिए आवश्यक है कि आर्य समाजी जनता एक अनुशासित सिपाही की तरह से आर्य समाज के सर्वोच्च अधिकारियो के आदेशों और निर्देशों का पालन करने के लिए सदैव तैयार एवं तत्पर रहें । श्री वधावन ने कहा कि यह आर्य समाज का परम सौभाग्य हैकि इसकी सर्वोच्च सस्था के प्रधान पद पर सदैव महान और प्रसिद्ध हस्तियां ही पदासीन रही हैं उसी श्रृंखला में आज महान स्वतन्त्रता सेनानी तथा जिन्दा शहीद श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी के नेतृत्व में हमें देश की सेवा करने का सौभाग्य मिला है ।

सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने संबोधन में कहा कि आर्य समाज परोपकार और राष्ट्र सेवा में लगा, गंगा के पवित्र धारा के समान है । परन्तु विदेशों से प्राप्त धन के बल पर अब लोग इसे भी तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं सार्वदेशिक सभा में भी ऐसे ही कुछ लोगों ने वेश धारियों के बल पर सगठन में दरार पैदा करने के कुछ प्रयत्न प्रारम्भ किए हैं परन्तु आर्य समाज की अनुशासित जनता इन्हें सफल नहीं होने देगी । शास्त्री जी ने आर्य जनता को हैदराबाद मुक्ति दिवस के अवसर पर यह संकल्प दिलाया कि वे उसी उत्साह से आर्य समाज और राष्ट्र के मजबूती के लिए काम करेंगे ।

इस सभा का संचालन आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री कृष्णाराव ने किया । सभा के अन्त में प्रधान श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर ने सभा के समक्ष श्री वन्देमातरम् जी की भावनाओं के अनुरूप राष्ट्र रक्षा संकल्प का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन सबने हाथ उठाकर किया ।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

प्राथमिक शिक्षा में मातृ भाषा का महत्व

—आनन्द स्वरूप गर्व

हम कौन थे, क्या हो गए है, और क्या होंगे अभी ।
आओ विचारें, आज मिलकर, ये समस्याएं सभी ।।

ये पंक्तिया राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित ग्रन्थ 'भारत भारती' मे आज से लगभग साठ वर्ष पूर्व लिखी गई थी। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, सेठ गोविन्द दास, आचार्य नरेन्द्र देव प्रभृति राष्ट्रपुरुषो ने कभी यह कल्पना स्वप्न मे भी नहीं की होगी कि उनके बाद उनके नाती-पोते जब विद्यालय मे पढने जायेंगे तो उन्हे पहला पाठ अ, आ, इ, ई के स्थान पर ए, बी, सी का पढना होगा। बच्चे की माता बिल्ली के स्थान पर कैट तथा चूहे के स्थान पर रैट बताएगी।

आज १९९५ मे आधा हिन्दुस्तान अनपढ है, तभी तो जोहरा सहगल प्रतिदिन कई कई बार दूरदर्शन पर चिल्ला कर कहती हैं "हम सब के एक साथ खड़े होने का वक्त आ गया है।" क्या अभी तक सोने का वक्त था? अभी कुछ दिन पूर्व हमारे प्रधान मन्त्री श्री नरसिंह राव जी "सबके लिए शिक्षा" विश्व सम्मेलन में कोपेनहागन गए हुए थे। वहा भी यही विषय विचारणीय था। दुनिया के दूसरे नम्बर पर आबादी मे सबसे बड़े देश भारत में कहीं अन्न की कमी है, कहीं चीनी की। गरीबी इतनी कि बहुत से भागो में तन ढकने को पर्याप्त वस्त्र भी नही हैं। किसी नेता ने नारा दे दिया "मैं दो रुपये किलो चावल दूंगा", लोगों ने लोकतन्त्र उसके चरणो में अर्पित कर दिया। अब वे निरीह आंखों से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब नेताजी के वचन पूरे होंगे।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४५ मे स्पष्ट उल्लेख है कि राज्य संविधान के आरम्भ से १० वर्ष की अवधि के भीतर १४ वर्ष की आयु पूरी करने तक सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रबन्ध करे। परन्तु आज संविधान लागू होने के ४६ वर्ष बाद भी अनिवार्य शिक्षा अप्रत्यक्ष रूप से उपेक्षित है। विश्व बैंक के दबाव मे अनुच्छेद ४५ के निर्देश को ताक पर रखकर अब सरकार केवल साक्षरता की बात करने लगी है तथा सन दो हजार तक साक्षरता की दौड़ शुरू हो गई हैं। जो अभिभावक अपने बच्चे को विद्यालय नहीं भेजते उनके लिए कुछ दण्ड का प्रावधान अवश्य कीजिए। अब बच्चों को क्या पढाए, किस माध्यम से पढ़ाएं यह बहस पिछले लगभग सौ बरस से चल रही है। अंग्रेजों को गए भी अडतालीस वर्ष होने वाले हैं। शिक्षा व्यवस्था को सुधारने हेतु कई आयोग बने, रपटें आई और जिल्दें बांधकर पुस्तकालयों में शोभा बढाने हेतु सजाकर रखदी गई। शिक्षकों के वेतनमान बढते गए, शिक्षा घटती गई। अभी ज्यादा दिन नहीं हुए प्रो० यशपाल समिति की रिपोर्ट भी आई थी। उसमें भी प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को ही बनाने का सुझाव था, किन्तु ये काले अंग्रेज (वर्तमान नौकरशाह) क्या कभी भारत की आत्मा को समझ पायेंगे।

८ दिसम्बर १९९३ को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के दो न्यायाधीशों की खण्डपीठ ने कर्नाटक प्रदेश मे अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रो के अभिभावको को रिट याचिका सं० ५३६/९१ को खारिज करते हुए कर्नाटक राज्य के प्राथमिक कक्षाओ में पढ़ने वाले छात्रों को अंग्रेजी माध्यम बन्द कराके केवल मातृभाषा मे ही शिक्षा देने के लिए कर्नाटक राज्य के आदेश को उचित ठहराया है। कर्नाटक सरकार ने अकन्नड़ भाषी छात्र यथा तेलगु मराठी, हिन्दी आदि भाषा-भाषी छात्रों की सुविधा हेतु कक्षा ३ तथा ४ में ऐच्छिक विषय के रूप मे कन्नड़ भाषा पढ़ाने की अनौपचारिक सुविधा प्रदान करने तथा परीक्षा न लिए जाने की भी घोषणा की है। वहां कक्षा ५ से सभी छात्रों को द्वितीय भाषा के रूप में अनिवार्य रूप से राज्य की भाषा (कन्नड़) पढ़नी पड़ेगी, किन्तु उसमें भी राज्य ने अकन्नड़ भाषियों को १५ अंकों तक की छूट दे रखी है।

उपरोक्त निर्णय के परिप्रेक्ष्य में सब राज्य सरकारों को स्वेच्छा से अपने अपने प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा कर देना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाए पढी जा सकती हैं। शिक्षा नीति पर बहुत विचार हो चुका। सभी छात्र विनोबा भावे, राहुल सांस्कृत्यायन अथवा प्रधानमन्त्री श्री नरसिंह राव जी के समान सात-आठ भाषाए नही सीख सकते।

हमारे देश में अंग्रेजो का राज्य था, तब अंग्रेजी की अनिवार्यता डण्डे के जोर से स्वीकार्य थी, परन्तु लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनने के बाद वह डण्डा और भी मोटा होता गया। केवल विवाह के समय पढ़े जाने वाले मन्त्रो को छोड़कर सर्वत्र अंग्रेजीमय वातावरण दिखाई देने लगा। राष्ट्रपिता गाधी जी ने १९४७ में विभाजन के उपरान्त बी. बी. सी. के एक रिपोर्टर को कहा था "अंग्रेजों से कह दो, गाधी अंग्रेजी नहीं जानता", क्योंकि गांधी जी ने भारत का मन पहचान लिया था। वह करोड़ों हिन्दुस्तानियों की धड़कन सुनने में समर्थ थे। पहले अंग्रेजी हटाने के लिए संविधान में १५ वर्ष का समय लोगों का ध्यान बंटाने के लिए दे दिया गया। तत्पश्चात कोई न कोई बहाना ढूंढ़ कर धीरे धीरे अंग्रेजी का विरोध शांत करने के लिए उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का आवरण पहनाकर लागू रखा।

४८ वर्ष बाद आज आधे से अधिक नर-नारी अंगूठा टेक हैं तथा साहबी ठाठ से अंग्रेजी बोलने समझने वालों का सत्तातन्त्र पर सर्वत्र प्रभुत्व स्थापित हो चुका है, देश के महानगरों में गली गली गली में आधुनिक नाम वाले अंग्रेजी माध्यम स्कूल कुकुरमुत्तों की तरह दिखाई दे रहे हैं और तो और महर्षि दयानन्द के नाम पर भी यह रोजगार तरक्की पर हैं, क्योंकि इन स्कूलों के द्वारा सैकड़ों लोग अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, तथा कह रहे हैं कि इनके बन्द करने से हजारों लोग भूखे मर जायेंगे। ठीक ऐसा ही उत्तर शराबबन्दी तथा लाटरी बन्द करने पर शराब तथा लाटरी विक्रेताओं ने दिया था।

मातृभाषा का प्रश्न हिन्दी लादने अथवा अंग्रेजी हटाने का प्रश्न नहीं

(शेष १३ पृष्ठ पर)

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस है

डा० आशा जोशी

हिन्दी भाषा बहुमत की भाषा है यह सभी जानते व मानते है अतः हमारे संविधान मे हिन्दी को ही राजभाषा और सम्पर्क भाषा की मान्यता दी है। किन्तु आज ४८ वर्षो के पश्चात् भी हमारे कार्य की प्रणाली ढाई प्रतिशत लोगों की भाषा आगल में ही चल रही हैं हमारी मानसिकता देखिये कि लोक सभा तक प्रश्न हिन्दी में उत्तर अंग्रेजी मे तथा अधिक कार्यवाही भी अंग्रेजी मे ही देखी जाती है।

देश की एकता हेतु एक उभयनिष्ठ भाषा की आवश्यकता है जिसे गुलामी के समय में समूचे देश में प्रयोग किया जाता था। उस समय पर भी सम्पर्क भाषा हिन्दी ही थी।

स्वाधीन भारत मे विदेश की एक ऐसी भाषा हमारे मन मस्तिष्क पर छाई हुई है जिसका देश की संस्कृति जन-जीवन के इतिहास व परम्परागत या व्यावहारिक बोलचाल से कोई सम्बन्ध न हो। यह मनः स्थिति भारत जैसे राष्ट्र के आत्म सम्मान व उसके अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के लिए अशोभनीय है।

आज हम स्वामी दयानन्द की उस इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए इच्छुक है उन्होने कहा था कि मेरी आखे उस दिन को देखने लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लग जायेंगे-अनुवाद तो विदेशियो के लिये हुआ करते हैं:

हमें अपनी मानसिता बदलनी है और हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा की रक्षा अपने व्यवहार से करनी है तभी आज के दिन का महत्व है।

नैतिकता—एक आन्तरिक क्रान्ति

—डा० जे. पी. जौहरी

आज का मानव आदिम युग के मानव से कही अधिक सुरक्षित है, सुविधाओं से सम्पन्न है, अपनी इच्छाओ और अभिलाषाओं की पूर्ति हेतु सक्षम है। सामान्य स्तर के परिवार मे एक अच्छा मकान, टी. वी., कूलर, वाहन आदि के साथ धन, पद प्रतिष्ठा भी उचित मात्रा में उपलब्ध है। परन्तु क्या उसे सुख और शान्ति मिली ? विश्व में आज भी अत्यन्त दुःख हैं, अत्यधिक त्रास हैं, अनाचार, भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। समस्त नैतिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं, समाज भ्रष्ट होता जा रहा है, भयंकर स्वार्थ और हिंसा अपना दामन फैलाते जा रहे हैं। हमारी सारी शिक्षा और समस्त धर्म अपना महत्त्व खोते जा रहे हैं और हिंसा, स्वार्थ तथा भावनाओं के शोषण के माध्यम होते जा रहे हैं। बाह्य क्षेत्र में हमने अत्यधिक प्रगति कर ली है, परन्तु आन्तरिक क्षेत्र मे हम आज भी उतने ही क्रूर, हिंसक तथा स्वार्थी हैं, जितने आदिम युग मे थे। हम सभ्य हो गये है, परन्तु नैतिक नही। नैतिकता संस्कृति का अंश है और बिना संस्कृति के सभ्यता (सिविलाइजेशन) विनाश की ओर ले जाती है।

हमारा जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याए हमे निगलने के लिए मुह बाए खडी हैं। हमारे नेता, गुरु और ग्रन्थ आदि कुछ मदद नही कर पा रहे हैं। धार्मिक भावनाए तथा धार्मिक कर्म बढ़ रहे हैं क्योकि मन्दिरो, गिरजाघरो, गुरुद्वारो मे भक्तो की भीड़ उमड़ पड़ती है, श्रद्धालुओ की भीड भरी शोभायात्राए निकलती रहती हैं, तीर्थयात्राएं, मक्के मदीने के हज होते रहते हैं, भजन-कीर्तन का मधुर संगीत और पूजा, पाठ, हवन सामग्री की सुगन्ध वातावरण में फैलती रहती है, लाखों की संख्या मे धर्म-ग्रन्थ छप रहे हैं और पढ़े जा रहे हैं, गुरुओं के प्रवचनो में अहिंसा नैतिकता आदि के पाठ प्रतिदिन पढ़ाए जा रहे हैं, परन्तु हमारा दैनिक जीवन बिना किसी परिवर्तन के यथावत चलता रहता है। कैसा विरोधाभास है ? धार्मिक कर्म और भावनाए भी बढ़ रहीं हैं, और हिंसा, स्वार्थ और भ्रष्टाचार भी बढ़ता जा रहा है। निश्चय ही हमारी जीवन-शैली मे कही त्रुटि है।

हमारी महत्त्वाकांक्षाओं ने, कुछ बनने की चाह ने, धन सम्पत्ति के लोभ ने, भौतिक सुखो के आकर्षणो ने और अन्धविश्वासो ने हमारे जीवन को विकृत कर दिया है। हम जीवन नही जी रहे हैं बस भाग दौड़ कर रहे हैं। कभी कुछ बनने के प्रयास में, कभी मान सम्मान, पद, प्रतिष्ठा के पीछे, कभी कुर्सी के लिए बस भागे जा रहे हैं। किसी न किसी प्रकार राष्ट्रपति पुरस्कार या अन्य पुरस्कार प्राप्त करना चाहते हैं और अजीब-अजीब करतब दिखाकर 'गीनिज बुक' मे अपना नाम लिखवाना चाहते हैं। कुछ बनने मे कोई दोष नहीं है। परन्तु इस बनने की प्रक्रिया मे, इस होड़ में हम क्या कर रहे हैं यह तो देखें। कामवृत्ति मनोरंजन का साधन बन गयी है। धार्मिक तथा सामाजिक सेवा-संस्थानों मे धन-संग्रह प्रमुख और सेवाएं गौण होती जा रही हैं। आश्रमो में सम्पत्ति तथा पद के लिए कचहरी के दरवाजे खटखटाए जाते हैं। राजनीति भ्रष्टाचार का माध्यम और अपराधियों का अखाड़ा बन गयी है और धर्म तथा नैतिकता बड़े-बड़े आसू बहा रहे हैं।

इस भाग दौड़ ने हमारी पाशविकता को जगा दिया है और हमारी मानसिकता को बदल दिया है। हमारा मन ही अनैतिक हो गया है और जब अन्दर का शैतान जागता है, तब कोई कुछ नहीं कर पाता। और प्रत्येक ने इस शैतान को जगाने में कभी न कभी, कुछ न कुछ योगदान दिया है। अतः हमें ही बदलना होगा, अपने मन में एक आमूल क्रान्ति लानी होगी। यह वही कर सकता है जो सच्चाई और ईमानदारी से अपने को इस स्थिति का जिम्मेदार समझे। किसी भी प्रकार का प्रचार, किसी प्रकार की नियमावली आन्तरिक क्रान्ति नही ला पायेगी। बाह्य क्रान्तियां आभ्यन्तर को नहीं बदल सकतीं।

अतः यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नैतिक मूल्य नष्ट हो रहे हैं अब वर्तमान मानसिकता तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, एक ऐसी नैतिकता की आवश्यकता है, जो सम्पूर्ण विश्व में मान्य हो, क्योंकि भिन्न-भिन्न

बाह्य क्षेत्र मे हम ने अत्यधिक प्रगति कर ली है, परन्तु आन्तरिक क्षेत्र में हम आज भी उतने ही क्रूर, हिंसक तथा स्वार्थी हैं, जितने आदिम युग में थे। हम सभ्य हो गये हैं, परन्तु नैतिक नहीं। नैतिकता संस्कृति का अंश है और बिना संस्कृति के सभ्यता (सिविलाइजेशन) विनाश की ओर ले जाती है।

समाज की भिन्न-भिन्न नैतिकताएं आपस में टकराव और संघर्ष उत्पन्न करती हैं। भिन्नता स्वय टकराव उत्पन्न नही करती, परन्तु जब एक समाज अपनी नैतिकता को श्रेष्ठ और दूसरे कोनिम्न कहता है, तभी टकराव प्रारम्भ होता है।

एक विश्वव्यापी नैतिकता के विकास के पूर्व हमे यह समझना होगा कि नैतिकता क्या है ? नैतिकता और नैतिक कार्य मे क्या सम्बन्ध है ? क्या नैतिकता अभ्यास से, कुछ नियमो के पालन से विकसित की जा सकती है अथवा अनैतिक कार्यों के नियन्त्रण से अर्जित की जा सकती है ? समस्त विश्व मे लोग नैतिक कार्यों से सन्तुष्ट हो जाते हैं। हमे सिखाया गया है कि दान करो, गरीबो की सहायता करो, सच्चाई और ईमानदारी से कार्य करो, सबका आदर करो, दया करो आदि। एक धनी व्यक्ति यह करता है। परन्तु उस धन से जो उसने शोषण द्वारा अथवा रिश्वत देकर कमाया है अथवा अपने निजी जीवन मे पत्नी, बच्चो आदि की उपेक्षा करता है और नौकरो से दुर्व्यवहार करता है परन्तु हम उसे नैतिक और भला आदमी कहते हैं। नैतिकता और नैतिक कार्य भिन्न हैं। नैतिक कार्य करने वाला अनैतिक हो सकता है, परन्तु नैतिक मानसिकता वाला व्यक्ति कभी कोई अनैतिक कार्य नही करेगा।

नैतिकता मन की अवस्था है, हमारी चेतना मे व्यवस्था (आर्डर) है अर्थात् सयमी चेतना है और अनैतिकता अव्यवस्थित (डिसओडर) चेतना है, चेतना मे गन्दगी है। अतः हमे गन्दगी को ही साफ करना होगा, अपने आभ्यन्तर से अनैतिकता को हटाना होगा। तब नैतिकता स्वत. आ जायेगी। नैतिकता हमारी चेतना में है क्योकि जब कभी हम कोई गलत कार्य करने का प्रयत्न करते हैं, तब अन्दर से कोई हमे रोकता है, परन्तु हमारे स्वार्थ, लोभ आदि इस अन्तरवाणी को दबा देते हैं। अत इस गन्दगी को ही साफ करना पड़ेगा, तब नैतिकता स्वत आ जायेगी। गन्दी नाली की गन्दगी साफ करनी पड़ती है, बाहर से पानी डालने से अनुपात मे गन्दगी कम हो जायेगी पर नाली साफ नही होगी।

नैतिकता हेतु चेतना को व्यवस्थित होना है और यह तभी होता है जब हम अपनी इच्छाओ और महत्त्वाकांक्षाओ के पीछे भागना बन्द कर देते हैं। यह सरल नहीं है क्योकि इनके अन्दर जन्म-जन्मान्तर की ऊर्जा है जो कार्य करने को विवश करती है। जब हम पूर्ण सजगता से चैतन्य होकर ध्यान से किसी को देखते हैं तब मन एकदम शान्त हो जाता है। जब हम किसी नये स्थान पर जाते हैं या कोई नई वस्तु को देखते हैं तब हम कितने सजग और सचेत रहते हैं और पूर्ण ध्यान से प्रत्येक वस्तु को देखते हैं और तभी मन भी शान्त हो जाता है। इसी प्रकार अपने दैनिक जीवन में आपसी सम्बन्धो में व्यवहार करते समय जब अनैतिक विचार या विकार अन्दर से उभर रहे हों तब सचेत तथा सजग होकर पूर्ण अवधान से बिना निन्दा किये, बिना न्यायोचित ठहराये तथा बिना तादात्म्य स्थापित किए बस उसका अवलोकन करने से मन शान्त हो जाता है इस मन के मौन में तथा सजगता और अवधान में वह विशुद्ध ऊर्जा होती है जो अनैतिक विचारों और विकारों की अशुद्ध ऊर्जा को न केवल कार्य करने से रोकती है वरन् उसकी तीव्रता को सदा के लिए नष्ट कर देती है और वह बिना कोई कार्य किये शरीर के बाहर प्रवाहित हो जाती है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

देवदासी बनाना प्रतिगामी

बारहवी शताब्दी के जगन्नाथ मन्दिर में देवदासी प्रथा को पुनर्जीवित किये जाने के प्रयास देशव्यापी विरोध और निंदा के विषय होने ही चाहिए। देवदासी प्रथा वस्तुत: वेश्यावृत्ति का ही दूसरा रूप है। फर्क यही है कि यहा देह व्यापार धर्म की आड़ में चलाया जाता है। कथित रूप से देवदासी भले ही देवता की पत्नी हो, वास्तविकता में वह गुलाम की तरह होती है और इस काम के लिए उसको जो वेतन मिलता है उससे वह दो जून का खाना तक नहीं खा सकती है और उसको गृहस्थ बनने की बजाय, मन्दिर व महंतों के साए में ही पूरी जिन्दगी काटने को विवश किया जाता है। महाराष्ट्र मे येलम्मा मन्दिर की देवदासियो की दुर्गति से सभी सुपरिचित है। अब सही सोच वाले लोग भगवान का धन्यवाद दे रहे थे कि चलो कोकिला नामक देवदासी द्वारा किसी लड़की को दत्तका न बनाए जाने से जगन्नाथपुरी मन्दिर से इस कुप्रथा का लोप हो जाय। उसी समय मन्दिर प्रशासको ने पाच युवतियो को साक्षात्कार के लिए बुलाने का निर्णय लेकर एक बार फिर उसे जीवित बनाए रखने की कुचेष्टा की है। इससे न केवल देश भर के महिला संगठन अपितु पूरा हिन्दू समाज ही शर्मसार और आहत हुआ है। यह सरासर महिला समाज के लिए, धर्म के लिए, हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के लिए कलंक है और किसी तरह सच्ची हिन्दू धार्मिक परम्परा का अंग नहीं माना जा सकता।

कुतर्क के लिए कहा जा सकता है कि देवदासियो के जीवन के बारे में जितनी भी बातें उड़ रही हैं वे केवल धार्मिकता को बदनाम करने की नीयत से फैलाई जा रही है, इन लड़कियों ने तो स्वेच्छा से स्वयं को प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया है। ये पढ़ी लिखी हैं और अपना भला-बुरा समझती हैं। पर अगर ऐसा ही होता, तो क्या फिर 'स्वेच्छा' के तर्क पर वेश्यावृत्ति या सती प्रथा को भी सही नही ठहराया जाने लगेगा? राजस्थान मे बीते सालों में सती प्रथा को लेकर इतना हंगामा क्यों हुआ था? क्यो बंगाल की अबलाओं की दु:स्थिति में सुधार हेतु राजा राम मोहन राय व अन्य समाज सुधारकों ने ब्रह्म समाज, आर्य समाज जैसी सस्थाओ ने आदोलन चलाए? महात्मा गांधी ने महिला उत्थान हेतु अलग से कांग्रेस मे एक बैठक की स्थापना क्यो की? दरअसल यह सभी समाज सुधारक देख सकते थे कि महिलाओं का यौन-शोषण, वह धर्म की ओट मे हो या राजनीति की एक बुराई है। सती-प्रथा मूलत: विधवा की सम्पत्ति हड़पने की नीयत से चलाई गई कुरीति थी और महिलाओं की गरीबीका नाजायज फायदा उठाने को वेश्यावृत्ति बनी। वेश्यावृत्ति विरोध कानून जिस देश में देह व्यापार का निषेध करता है वहा धर्म की आड़ में देवदासी प्रथा के पुनरुत्थान का भी उसी जोश के साथ तुरन्त विरोध होना ही चाहिए।

पुरी का जगन्नाथ मन्दिर और उसके मठाधीशों की ओर से अक्सर ऐसे बयान आए हैं, जो महिलाओ को पुरुषो की चेरी बनाकर रखने के पक्षधर रहे हैं। स्व० इन्दिरा गांधी को इस मन्दिर में पूजा अर्चना करने के अधिकार से तो वंचित किया ही था, महिलाओ के वेद-पाठ के अधिकार का भी इसी खेमे ने चंद साल पहले विरोध किया था। स्त्री को वेद-पाठ के अयोग्य घोषित करके देश मे देवदासी प्रथा को जीवित रखने की चेष्टा की जितनी निन्दा की जाए, कम है। जिला-प्रशासन लाख छिपाए कि सोमवार को देवदासी की भर्ती हेतु साक्षात्कार नहीं हुए और मन्दिर के अधिकारी सफाई देते रहे कि देवदासी बनने की शर्तो में अविवाहित रहना, शाकाहारी होना और शारीरिक सम्पर्क से परहेज करना शामिल हैं, लेकिन हकीकत क्या है, यह सभी को मालूम है। विडम्बना देखिए, एक ओर तो पेईचिंग में नारी मुक्ति के विविध आयामो पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बढ़ चढ़ कर भारत सरकार भाग ले रही है, और वहीं दूसरी तरफ उड़ीसा में जे. बी. पटनायक की सरकार पुरी मे इस नए देवदासी चयन पर खामोश तमाशबीन बनी हुई है। चयनित देवदासियां भले ही पारसमणि और शशिमणि की दत्तक पुत्रियां बनाकर मन्दिर मे रखी जाएं, लेकिन गारंटी क्या है कि इस बार उनका इस कुप्रथा के तहत शोषण नही होगा? सरकार को तत्काल देवदासी निषेध, विधेयक संसद में लाकर इसको अवैध घोषित करना चाहिए।

आवश्यक सूचना

आर्य समाज में पांच पीढ़ी का परिचय

श्री आनन्द प्रकाश जी आर्य समाज बहजोई मुरादाबाद द्वारा सम्मान योजना। आर्य समाज की स्थापना से जो आर्य जन अपनी आज की पाचवी पीढ़ी में हो। उनको सम्मानित किया जाएगा। इनमे जो सर्वोच्च अंक प्राप्त करेगा उन्हें प्रथम-द्वितीय-तृतीय प्राप्तांक पर पारितोषिक व सम्मान दिया जाएगा।

१. वह स्वयं, २. पिता, ३. पितामह, ४. पुत्र, ५. पौत्र, पाच पीढ़ी का तात्पर्य यह लिखा क्रम। सूचना देने पर उन्हें प्रोफोर्मा भेजा जाएगा। निर्णायक दल—

सार्वदेशिक सभा के प्रधान व मन्त्री द्वारा निर्णय लेकर पिता स्व० श्री द्वारिकाधीश आर्य की स्मृति २ अक्टूबर या आर्यसमाज बहजोईके वार्षिकोत्सव पर उन तीनों आर्यो का सम्मान किया जाएगा।

नोट—पुरस्कार हेतु १०० में से ८० अंक मिलने चाहिए।

(२) भारत के पुरस्कृतों को स्लीपर द्वितीय श्रेणी का मार्ग व्यय मिलेगा। पुरस्कृत महानुभावो को महामहिम राष्ट्रपति से राष्ट्रीय सम्मान दिलाने का भी प्रयास किया जाएगा।

प्रार्थी—

आनन्द प्रकाश आर्य

बहजोई-२०२४१० भारत

नैतिकता

(पृष्ट ३ का शेष)

नैतिकता के लिए हमें एक और क्रान्ति लानी होगी और वह है शिक्षा के क्षेत्र में। वर्तमान शिक्षा नैतिक नहीं बनाती। अत: ऐसी शिक्षा पद्धति का निर्माण करना होगा जो मन का समग्र विकास कर सके, क्योंकि ऐसा मन नैतिक और धार्मिक हो सकता है। समाज का भविष्य आज उन छात्रों पर निर्भर है जो सही शिक्षा के सपने संजोए स्कूलों में अपने श्रेष्ठ जीवन

स्व-ज्ञान ही वह साधन है जो मन को नैतिक और धार्मिक बनाता है। स्व-ज्ञान का अर्थ 'स्व' अथवा आत्म का ज्ञान नहीं है क्योंकि 'स्व' तो गतिशील है। स्व-ज्ञान का अर्थ है स्व की प्रक्रिया और प्रतिक्रियाओं को समझना, जो तभी सम्भव है जब दैनिक जीवन में व्यवहार करते समय 'स्व' की प्रक्रिया, प्रतिक्रिया, अपने विचारों, विकारों तथा भावनाओं का सजगता से पूर्ण सावधान से निष्पक्ष अवलोकन करें और यही मन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाता है।

—कोटा, राजस्थान

शरद पौर्णिमा पर दमा की औषध वितरण

लातूर। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दिनांक ७-१०-९५ शनिवार शरद पौर्णिमा पर आर्यसमाज लातूर द्वारा 'डागा चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से दमा की वानस्पति औषधि नि:शुल्क वितरित की गयी।

दमा, श्वास, पुरानी खांसी इत्यादि कफ विकारों पर इस औषधि का अच्छा लाभ होता देखा गया है, जो रुग्ण लातूर आने में असमर्थ हैं वे टिकट लगा लिफाफा नीचे लिखे पते पर भेजें उन्हें औषधी व जानकारी डाक से भेजी जायेगी? मन्त्री आर्यसमाज गांधी चौक-लातूर, महाराष्ट्र (२) डागा चैरिटेबल ट्रस्ट, कपड़ा बाजार लातूर, महाराष्ट्र।

इस अवसर का अधिक से अधिक रुग्ण लाभ लेवें, ऐसा आवाहन ओमप्रकाश, पाचाबर, मन्त्री, आर्य समाज, लातूर द्वारा किया गया।

विचार क्रान्ति और राजसत्ता

[illegible] सिंह

विचार क्रान्ति के लिए आज के युग मे धन और बल दोनो की आवश्यकता है। राज सत्ता से ये दोनो जुड़े रहते हैं। आर्य समाज मे वर्षों से यह विवाद चल रहा है कि आर्य समाज को राजनीति मे भाग लेना चाहिए या नहीं। कुछ का विचार है कि राजनीति मे भाग लेना चाहिए और कुछ का विचार है कि भाग नही लेना चाहिए।

इतिहास का अवलोकन करने से विदित होता है कि जहा विचार क्रान्ति ने राजाओं को प्रभावित किया वहीं राजाओ ने विचार क्रान्ति का वाहन बनकर उसका अधिक से अधिक विस्तार किया। जैन और बौद्ध मतों का विस्तार राजाओ के सहयोग से ही हो पाया। इन मतो की हानि भी शंकराचार्य द्वारा प्रभावित राजाओं द्वारा ही हुई। नारायणवर्ती मत (नकटो) का विनाश भी राजा द्वारा ही किया गया। (सत्यार्थ प्रकाश)

इस्लाम राजसत्ता के बल पर ही सारे ससार मे फैल गया। ईसाइयत का प्रचार भी राजाश्रय से ही ससार में हुआ। आज अनेक राजसत्तायें इन मतों का प्रचार करने के लिए निरन्तर धन पानी की तरह बहा रही है भारत के पूर्वी भाग में बहुत बड़ा क्षेत्र ईसाई बहुल बन चुका है। देश के अनेक क्षेत्र मुस्लिम बहुल बन चुके हैं। भारत के सत्ताधीश यह सब तमाशा चुपचाप देख रहे हैं। साथ ही उनके कार्यो में सहयोग दे रहे हैं। क्या इससे देश सगठित होगा ? कभी नहीं। ये तो विघटन होने के लक्षण हैं इतिहास इस बात का साक्षी है कि दूसरे देशो से जो मतावलम्बी इस देश में आए उन्होंने देश वासियों को खूब लूटा, कत्लेआम किए। यहा की सभ्यता और सस्कृति को नष्ट किया। बड़े बड़े पुस्तकालयों, मन्दिरों और भव्य भवनो को धराशायी किया। इतिहास को बदला, साहित्य मे मिलावट की। जो लोग इस देश की धरती पर जन्म लेकर इसका अन्न खाकर और पानी पीकर बड़े हुए और आज भी बढ रहे हैं। देश की धरती के प्रति कतई श्रद्धा न रखते हुए विदेशों के गीत गाते हैं और विदेश मे ही तीर्थ करने जाते हैं। क्या ऐसे लोगों से आशा की जा सकती है कि वे देश की सस्कृति से जुड़कर रहेंगे। हमारे ही देशवासी वोटो के लालच में ऐसे मतवादियो को प्रोत्साहन और सहयोग दे रहें हैं। किसी कवि के शब्दों मे—खुद माली के हाथो से गुलिस्ता की तबाही देखी तो नही जाती, मगर देख रहा हू।

समर्थ गुरु रामदास ने अपने शिष्य शिवाजी को सन्यासी न बनाकर राजा क्यो बनाया ? क्योंकि वे जो क्रान्ति लाना चाहते थे वह राजसत्ता के बिना सभव नहीं थी। महर्षि स्वामी दयानन्द भी इस तथ्य से अनभिज्ञ नही थे। इसीलिए उन्होंने जहा जन सामान्य मे वैदिक धर्म का प्रचार किया वहा अनेक राजाओं को भी प्रभावित किया। यदि उस समय देश में अग्रेजी शासन न होता तो वे राजाओं के माध्यम से बहुत कुछ कर जाते।

आज के राजनीतिज्ञ धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं लेकिन धर्म के बिना राजनीति तबाह हो जाती है। "धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भारतीय सस्कृति के चार पुरुषार्थ हैं। अर्थ का उपार्जन और उपभोग कैसे किया जाय। राज्य का मुख्य कर्त्तव्य यह है कि उपार्जन और उपभोग पर [illegible] रखे। धर्म दोनो के साथ जुड़ा हुआ है। धर्म पूर्वक अर्थोपार्जन और धर्म पूर्वक ही उसका उपभोग करना। धर्म भी राजसत्ता के साथ जुड़ा हुआ है। उसे अलग नहीं किया जा सकता। जो राजसत्ता उपार्जन और उपभोग पर नियंत्रण नहीं रखेगी तो समाज में आर्थिक असमानता पैदा हो जायेगी और आर्थिक असमानता से अशान्ति फैलेगी। यदि [illegible] [illegible] [illegible] ही शान्ति सुलभ है। अत राजसत्ता को [illegible] नहीं [illegible] चाहिए। आज देश के [illegible] [illegible] [illegible] को दिया रहे हैं। [illegible] [illegible] ही राजसत्ता का [illegible] नियन्त्रण [illegible]।

इन सभी तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए आर्य समाज की विचार धारा वालो को राजनीति मे अवश्य भाग लेना चाहिए। समान विचार के लोगो को एक नया राजनैतिक सगठन बनाकर राजसत्ता अपने नियन्त्रण मे लेना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही हम वैदिक विचार को देश और विदेश मे आसानी से फैला सकेंगे।

सिद्धान्त चर्चा—

धर्म का शाब्दिक नहीं, तात्विक अर्थ ?

(लेखक का अभिमत)

धर्म का (भाषागत) शाब्दिक उद्गम चाहे कुछ भी हो, लेकिन इस (तथ्यगत) जगत मे, कोई भी 'विषय-वस्तु' द्रव्य-गुण-कर्म आदि सत् पदार्थों से भिन्न नहीं है। अत विचारणीय है कि, यह 'धर्म कोई द्रव्य है या गुण है कर्मपदार्थ है ?

ज्ञातव्य है कि सत्य-बोलना आदि सत्यात्मक, स्थितिस्थापक या भावनात्मक कार्य कोई 'कर्म-पदार्थ नही हैं, अपितु सस्कार' नामक गुणवर्गीय पदार्थ अर्थात गुण हैं। द्रव्य, गुण, कर्म आदि, विषयक प्रमुख वैदिक शास्त्र वैशेषिक ने धर्म को सत-पदार्थ के गुणो के अन्तर्गत गिनाया है कि धर्म एक गुण है।

लेकिन कोई भी गुण किसी भी वस्तु या कार्य का निमित्त या उपादान या सामान्य कारण नही होता है। क्योंकि वस्तु या कार्य का कारण तो द्रव्य पदार्थ ही होते हैं। जड-द्रव्य उपादान कारण होते हैं और चैतन्य द्रव्य निमित्त कारण होते हैं।

और जिस प्रकार धर्म एक गुण है उसी प्रकार इच्छा, रागद्वेष, ज्ञान, सुखदुख प्रयास, सस्कार इत्यादि भी अन्य गुण है। लेकिन इनमे कोई भी गुण परस्पर पर्यायवाची या समानार्थी नही है। अन्यथा, शास्त्र मे इनकी प्रस्थापनायें पृथक-पृथक न की होती ?

अत बहुत से परम्परागत एवं प्रतिष्ठित धर्माचार्यो द्वारा अभ्युदय (विकास अर्थात प्रयास) या ज्ञान अथवा परमज्ञान, इत्यादि को 'धर्म' कह दिया जाना अवैशेषिक अनैयायिक एव अवैदिक है, विपर्ययवृत्ति है।

सत्य (अर्थात सत्यव्रत, सत्य बोलना) अहिंसा, शौच तप, स्वाध्याय, ईशस्तुति, इत्यादि, यमनियम कार्यरूपी विषय तो सस्कारात्मक गुण हैं, 'सस्कार' है, 'धर्म' नही है। अत इन यमनियमो (कमैंडमेंट्स) को भी धार्मिक कार्य या धर्म' कहना अवैशेषिक एव अवैदिक है। क्योंकि, ये तो सस्कारगुणजनित सास्कृतिक कार्य है, सुसस्कृति हैं। पुनश्च सस्कारगुण एव धर्म गुण परस्पर पर्यायवाची अथवा समानार्थी नही हैं।

चित्त की वृत्तियों के निरोधात्मक कार्यो का उल्लेख करने वाला सम्पूर्ण योगदर्शन ही, 'वास्तव मे सस्कार शास्त्र है, वह कोई धर्मशास्त्र नही है, ("योगश्चित्तवृत्ति निरोध," योगदर्शन १।२)।

धर्म का प्रत्यक्ष कर लेने वालो को यास्क ने ऋषि कहा है, 'साक्षात्कृत धर्माण ऋषय"। लेकिन, हम मानुषवर्गीय मनुष्यों को देवोक्त १४ योनियों में से देववर्गीय ऋषि-योनि का अर्थात ऋषि या ऋषियो का प्रत्यक्ष होना सम्भव नहीं है, (सांख्य कारिका, ५३-५४)। कहा जा सकता है कि धर्म को प्रत्यक्ष परिभाषित कर सकना हम (कैसे भी) मनुष्यो को सम्भव नहीं है। और जो ऋषि है वह हमें दृष्ट नहीं है।

—हरिजन सोमनाथ त्यागी

कोट बाजार, अमरोहा (उ० प्र०) २४४२२१

स्वास्थ्य चर्चा

कड़वा करेला/कई गुण भरेला

करेला विशेष रूप से वर्षाकालीन सब्जी है, अतः करेले का सेवन इसी मौसम में अधिक उपयुक्त और लाभकारी होता है।

आयुर्वेद के अनुसार भोजन में छः प्रमुख रस होते हैं। मीठा-खट्टा, नमकीन, कड़वा, तीखा, और चरपरा। इनमें से प्रत्येक रस का हमारे शरीर पर एक विशेष प्रभाव होता है। इसीलिए डाक्टर तथा वैद्य संतुलित मात्रा मे उन सभी खाद्य पदार्थों के सेवन की सलाह देते हैं, जिनके द्वारा यह (षट्रस) शरीर को प्राप्त हो सकें। अच्छे स्वास्थ्य के लिए यह सभी रस आवश्यक हैं। दुर्भाग्य से हमारी भोजन सम्बन्धी आदतें ऐसी बन गयी हैं, कि हम केवल मीठे, खट्टे, नमकीन और तीक्ष्ण पदार्थों का ही सेवन करते हैं। कड़वे तथा चरपरे पदार्थों को महत्व नहीं देते।

करेला कड़वा होता है, लेकिन स्वास्थ्य के लिए यह बहुत उपयोगी है। करेले के कटु रस मे जठराग्नि को प्रदीप्त करने का गुण है। तथा यह परम कफ नाशक भी होता है। अर्थात् वर्षा ऋतु में करेले के सेवन से सर्दी की ऋतु मे होने वाले जुखाम, खांसी आदि रोगों की उत्पत्ति नहीं होती। करेला रुचिकारक भूख बढ़ाने वाला पाचन करने वाला, रक्त शोधक, आंखों के लिए हितकारी तथा मेद गुल्म, यकृत, प्लीहा शूल नाशक है और पेट की वायु जलन को शान्त करता है। यह मूत्रल है, और कीटनाशक भी मलावरोध (कब्ज) से पीड़ित व्यक्तियों के लिए बहुत लाभकारी है। इसकी सब्जी गठिया, जोड़ो के दर्द तथा अन्य वात/रोग के मरीजों के लिए भी गुणकारी हैं।

करेले का विश्लेषण निम्न प्रकार है—:

जल ९४.२ प्रतिशत खनिज तत्व ०.८ प्रतिशत प्रोटीन १.६ प्रतिशत वसा ०.२ प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स ४.२ प्रतिशत कैल्सियम ०.०३ प्रतिशत स्फुरक (फास्फोरस) ०.०७ प्रतिशत प्रति १०० ग्राम करेले मे लोहा २२ मिलीग्राम विटामिन "ए" २१० इन्टरनेशनल यूनिट, विटामिन (बी) २४ इ. यू. तथा विटामिन (सी) ८८ मिलीग्राम होता है। मनुष्य शरीर की फास्फोरस की आवश्यकता एक बड़े करेले से पूरी हो सकती है। शरीर में चुस्ती लाने के लिए करेला बहुत उपयोगी है।

घरों में आमतौर पर करेले की सब्जी बनाने से पहले उसे छीलकर, काटकर तथा उसमे नमक मिलाकर कुछ देर रखने के बाद उसका रस निकालकर उसकी कड़ुवाहट कम करने का प्रयत्न किया जाता है किन्तु यह प्रयोग ठीक नही है। इससे तो करेले के सारे गुण उसके रस के साथ ही निकल जाते हैं। अतः बिना छीले तथा बिना रस निकाले ही उसकी सब्जी बनानी चाहिए। वही लाभकारी होती है।

आजकल के नवयुवक आलू, टमाटर, बैंगन, फूलगोभी आदि की सब्जियां खाने के शौकीन हो गये हैं। लेकिन करेला नहीं खाते इसलिए वे एक बहुत ही गुणकारी सब्जी के लाभ से वंचित रह जाते हैं, जो उनके यकृत् की रक्षा के लिए बहुत आवश्यक हैं।

करेले के कुछ औषधीय उपयोग नीचे दिए जाते हैं।

१—करेला रक्त शोधक होता है। चर्म रोगो मे करेला लाभकारी है। फोड, फुन्सी तथा अन्य चर्म-रोगों पर करेले का रस लगाने से लाभ होता है। प्रतिदिन सुबह-शाम आधा चम्मच करेले का रस बराबर मात्रा में शहद के साथ लेने से खून की खराबियां दूर हो जाती हैं। खून साफ हो जाता है। साथ ही सब तरह के रक्त विकार दूर हो जाते हैं।

२—पेट मे कीड़े होने पर करेले का रस ग्रहण करना चाहिए। (रामबाण) औषधि है।

३—कब्ज के रोगियों को चाहिए कि इसकी सब्जी का प्रयोग करें।

४—खूनी बवासीर में एक बड़ा चम्मच करेले का रस शक्कर मिलाकर सुबह-शाम कुछ दिनों तक लें।

५—कुछ स्त्री रोगों मे भी करेला बहुत अच्छा माना गया है। यदि रक्त अधिक आता हो, महावारी अनियमित तथा पीड़ा के साथ हो तो करेले का रस नियमित सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

६—मधुमेह के रोग मे करेला रामबाण औषधि है। नियमित प्रातः ताजा करेले का रस पीना चाहिए। यदि अत्यधिक कड़ुवा होने के कारण रस न पी सके तो करेलो के टुकड़े करके उन्हें छाया में सुखा लें। फिर पीसकर बारीक चूर्ण बना ल। इसे ३ से ६ ग्राम की मात्रा में (आयु तथा शरीर के डील डौल के अनुसार) ताजा पानी के साथ निगल लें। एक से तीन महीनों में आराम होगा।

७—पांडु (पीलिया) रोग में ताजा करेले को पानी में पीसकर प्रतिदिन दो बार दो-दो चम्मच पिलावें। दो चार बार दस्त आयेंगे। कुछ दिनों में पीलिया रोग दूर हो जायेगा। जब आंखों का पीलापन नष्ट हो जाये तब करेले का रस पीना बन्द कर देना चाहिए।

८—करेले का भुर्ता बनाकर प्रतिदिन रोटी के साथ खाने से अर्धांगवात (गठिया) रोग दूर हो जाता है।

९—मुंह में छाले होने पर करेले के रस से कुल्ला करने पर लाभ होता है।

आपने यदि अभी तक करेला कापीखाना सिखाइये, जिससे वे यकृत् के रोगो से बचे रहें और अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकें। जी हां ? हमारा उद्देश्य, करेले के गुणो को जन-जन तक पहुंचाना है न कि अपना नाम कमाना।

सुरेश चन्द्र पाठक
६२६/सैक्टर-१२, रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली-२२

पर्यावरण और धर्मशास्त्र विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य परिवार संस्था कोटा राजस्थान द्वारा आयोजित पर्यावरण और धर्म शास्त्र विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त से बढ़ाकर ३० सितम्बर कर दी गई है। निबन्ध लिखने के इच्छुक निबन्ध लिखने से पूर्व पत्र-व्यवहार द्वारा नियमादि की जानकारी प्राप्त कर लें। निबन्ध निम्न पते पर भेजें। डा० रामकृष्ण आर्य मन्त्री, ४ भ विज्ञान नगर कोटा (राज०)

बांग्लादेशी घुसपैठियों की बढ़ती संख्या एक गम्भीर समस्या

संसद के सत्र में गृहराज्य मन्त्री पी० एम० सईद ने लोकसभा सदस्य रामनाथ सोनकर शास्त्री के प्रश्न के उत्तर में पांच बातें स्वीकार कीं। १९८१ से १९९१ के दौरान भारत की आबादी २३.७९ प्रतिशत बढ़ी और मुसलमानों की आबादी ३२.७९ प्रतिशत बढ़ी।

—पश्चिम बंगाल और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशियों की घुसपैठ मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि के लिए उत्तरदायित्व कारणों में से एक है।

—भारत में बांग्लादेशी नागरिकों की निरन्तर घुसपैठ के लिए धार्मिक आर्थिक कारणों सहित अनेक कारण हैं।

—इस क्षेत्र में नए घुसपैठियों के आ जाने और स्थानीय व्यक्तियों के भीतरी भागों में चले जाने से सीमावर्ती क्षेत्रों की जनसंख्यात्मक संरचना में परिवर्तन हो गया है।

—भारत और बांग्लादेश में दोनों ओर ऐसी आबादी रह रही है जो जातीय, सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक रूप से एक समान है।

यह उत्तर गृह राज्यमन्त्री पी०एम० सईद ने अभी १७ अगस्त १९९५ को लोकसभा में दिया। भारत सरकार का प्रकाशन सेंसस आफ इण्डिया १९९१ भाग एक जो धर्म के अनुसार आबादी के संख्यात्मक ब्योरे विस्तार से देता है वह अभी १९९५ में प्रकाशित हुआ है। मुसलमानों की बढ़ोत्तरी दस साल में ३२.७९ प्रतिशत हुई। इसके मुकाबले हिन्दुओं की २२.७८ प्रतिशत। गृहराज्य मन्त्री पी० एम० सईद ने आंकड़े वहीं से लिए हैं। कुछ राज्यों में मुस्लिम आबादी की बढ़ोत्तरी दृष्टव्य है—राजस्थान-४१.४९ प्रतिशत। उड़ीसा-३९.६२ प्रतिशत। पश्चिम बंगाल-३६-८९ प्रतिशत। मेघालय-५८.३४ प्रतिशत। नागालैंड-७४.८४ प्रतिशत। मिजोरम-१०५.८० प्रतिशत। अरुणाचल प्रदेश-१३५.१ प्रतिशत।

पहले मुस्लिम आबादी के हिन्दुओं के मुकाबले डेढ़ गुना बढ़ने के बिन्दु पर विचार करें। ऐतिहासिक रूप से देखने पर इतिहासकार के०एस० लाल ने अपने कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। इस्लामिक स्रोतों के आधार पर लिखे गये अपने शोध प्रबन्ध इण्डियन मुस्लिम्स हू आर दे नामक अपने शोध प्रबन्ध में उन्होंने इस बात की मीमांसा की है। विस्तार से उन्होंने बताया है कि मुसलमानों की आबादी बढ़ते जाने के मूल कारणों में धर्मान्तरण, आव्रजन, बहु-विवाह और अधिक प्रजननशीलता है। भारत के आजाद होने के बाद से धर्मान्तरण विशेष रूप से मुस्लिम धर्मान्तरण की गति कुछ घटी है, लेकिन बन्द नहीं हुई है। अगर अरब देशों की तरह रोज धर्मान्तरित होते लोगों की संख्या और नाम रेडियो से प्रसारित हों तो भारत में भी धर्मान्तरण की मौजूदा गति चौंकाने वाली होगी। इतिहास में धर्मान्तरण किस तरह हुआ, प्रस्तुत आलेख की यह विषय वस्तु नहीं है। अलबत्ता आव्रजन की जगह बांग्लादेशी घुसपैठ ने ले ली है। यह कितनी विकराल समस्या है, सामान्यतया: इसका एहसास नहीं होता। गृहमन्त्रालय के गोपनीय दस्तावेजों के हिसाब से केवल ८० के दशक में एक करोड़ बीस लाख बांग्लादेशी घुसपैठिए देश में आए। पिछले पांच वर्षों में भी बांग्लादेशियों की घुसपैठ लगातार चलती रही है। एक अनुमान के अनुसार इस समय कम से कम पौने दो करोड़ घुसपैठिये देश के विभिन्न भागों में है। ९१ की जनगणना में हिन्दुओं के मुकाबले ड्योढ़ी वृद्धि का एक कारण घुसपैठ भी है।

केन्द्रीय गृहराज्य मन्त्री ने भारत बांग्लादेश सीमा पर आबादी के बदले हुए स्वरूप का जिक्र लोकसभा में किया था। इसमें यह भी संकेत था कि जनसंख्या के इस दबाव में दूसरी आबादी जिसका रूप अंदरूनी भाग में चली गई है। सच तो यह है कि पश्चिम बंगाल के ये जिले हैं—कैनिंग २४ परगना, उत्तर २४ परगना, नादिया, मुर्शिदाबाद, मालदा, पश्चिम दीनाजपुर अब मुस्लिम बहुल जिले हो गए हैं। यही हाल रहा तो कुछ और जिले भी जल्दी ही मुस्लिम बहुल हो जायेंगे। बिहार के चार जिलों-पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, अररिया की भी यही स्थिति है। असम के दस जिले मुस्लिम बहुल जिले हो गये हैं। यह जिले हैं—धुबड़ी, बारपेटा, बोंगाईगांव नलबारी, कोकराझार, लखीमपुर दारांग, नौगांव और कामरूप।

सीमावर्ती क्षेत्रों की जनसंख्यात्मक संरचना में हो रहे परिवर्तन का विस्तार से उल्लेख कर रहे दीनानाथ मिश्र का मानना है, वोटों के लालच में घुसपैठ समस्या की बिल्कुल अनदेखी कर दी गई है।

इतिहासकार के०एस० लाल ने अपनी उपरोक्त पुस्तक १८८१ से लेकर १९४१ तक लगातार बढ़ती मुस्लिम आबादी के आंकड़े दिए यह आंकड़े अविभाजित भारत के मुस्लिम आबादी के हैं।

जनगणना	मुस्लिम आबादी का प्रतिशत
१८८१	१९.९७
१८९१	२०.४१
१९०१	२१.८८
१९११	२२.३९
१९२१	२३.२३
१९३१	२३.४९
१९४१	२४.२८

जिस समय मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान की मांग रखी थी और द्विराष्ट्रवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, उस समय हिन्दू मुस्लिम आबादी का यह अनुपात था। आज सारे पूर्वी भारत में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत इससे कहीं अधिक हो गया है। इसमें बंगाल और आसाम मुख्य है। एक हद तक बिहार, त्रिपुरा और कुछ अन्य पूर्वोत्तर राज्य भी शामिल हैं।" डेमोग्राफिक अग्रेशन अगेन्स्ट इण्डिया" नामक अपने शोध पूर्ण ग्रन्थ में लेखक बलजीत राय ने भारत के खिलाफ जनसांख्यिक हमला पर ग्रन्थ लिखा है। लेखक पुलिस महानिदेशक के पद से अवकाश प्राप्त अधिकारी हैं। वह त्रिपुरा नागालैंड आदि में पुलिस अधिकारी रहे हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण सन् २००० तक भारत को पूर्वोत्तर से नये भारत विभाजन की मांग का सामना करना पड़ेगा। पूर्वोत्तर के राज्य पिछले एक दशक से अशांत रहे हैं। बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण असम में एक दशक तक आंदोलन हुआ है। यह अलग बात है कि वही आन्दोलनकारी जब सत्ता में आए तो कुछ नहीं कर सके। (क्रमशः)

आने वाली पीढ़ी को संस्कारित व अनुशासित करना हमारा ध्येय होना चाहिए

खण्डवा/प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति की ओर से आयोजित वैदिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ करते हुए विधायक श्री पूरणमलजी शर्मा ने कहा कि आज भारत वर्ष मे भिन्न-भिन्न सामाजिक धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से जनजागरण की मुहिम चलाई जा रही है, फिर भी एक प्रश्न उठता है कि वह आशातीत् परिणाम हमारे सामने क्यों नही आ रहे हैं। इस पर चिन्तन होना अति आवश्यकहै।

विशेष अतिथि—नगर के अग्रणी उद्योगपति समाजसेवी श्री प्रकाशचन्द वाहेती ने कहा कि तन को हम सब बहुत ही सवार रहे है। परन्तु मन एवं आत्मा को सवारने के लिए प्रयास कम हो रहे हैं। परन्तु आर्यसमाज बधाई का पात्र है कि वह यह अहम् भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है।

आर्य गुरुकुल होशगाबाद के अधिष्ठाता आचार्य श्री अमृतलाल जी ने बताया कि साम्प्रदायिकता के सकीर्ण क्षेत्र से उठकर व्यक्ति यदि धर्म के यर्थात स्वरूप को समझ लेवे तो लगभग सभी समस्याओ का समाधान सभव हो जावे। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने धर्म की परिभाषा दी है। जिसका त्रिकाल मे एक भी विरोधी न हो वही धर्म है। समस्त प्रकार की नैतिकता इसके अन्तर्गत आ जाती है संस्कारों को उभारने हेतु इस शिविर का आयोजन किया गया है।

वनस्थली विद्यापीठ आर्य कन्या गुरुकुल जयपुर के प्रमुख ट्रस्टी स्वामी शारदानन्द जी महाराज ने कहा कि सम्पूर्ण विश्व ही शिक्षालय है, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी अपने-अपने दृष्टिकोण से शिक्षा के अर्थ को समझते और समझाते है। वस्तुत: संसार के समस्त पदार्थों का ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान वेदवाणी मे सन्निहित है यदि उसके प्रकाश से प्रकाशित ज्ञान का दीप शिक्षालयों मे प्रदीप्त हो तो अज्ञान का अंधकार मिट जायेगा लोकशिक्षित होकर सुसस्कारित होकर अपने-अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए पर श्रेष्ठ नागरिक बनेंगे।

कार्यक्रम समारोह की अध्यक्षता करते हुए महापौर श्रीमती अणिमा उबेजा ने कहा कि आज दूरदर्शन ने समाज में कई प्रकार की विकृतिया एवं विसंगतियां पैदा कर दी है। ऐसे अवसर पर आयोजकगण बधाई के पात्र है। उन्होंने आने वाली पीढ़ी को संस्कारित व अनुशासित करने का जो प्रयास किया है वह सराहनीय है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ मे सम्माननीय अतिथियो का स्वागत किया गया तथा अन्त में आभार प्रदर्शन श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने किया। यह शिविर ३० जून तक चला।

—सोमानी

पुस्तक-समीक्षा

वीर बालक बनें

ले०—श्री जगतराम आर्य
पृष्ठ—१००—मूल्य २५ रुपये
प्रकाशक—हिमाचल पुस्तक भण्डार
सरस्वती भण्डार गांधी नगर दिल्ली-३१

"वीर-भोग्या-वसुन्धरा" इससे स्पष्ट है यह भूमि कायर नपुंसकों के लिए नहीं है वीरो के उपभोग के लिए है और यह वीरता के भाव जिस सांस्कृतिक चेतना द्वारा मा अपने मासूम बालकों को लोरिया देकर ऋषि मुनियो तथा वीर महारथियो की चर्चायें कथा कहानियों से कोमल बुद्धियों मे भरती हैं यही उम्र-वीर व कायर बनने की स्थिति है। अत भू-मण्डल पर भारत भूमि का चित्र वीरता पूर्ण ही रहा है।

सत्-श्री अकाल, वीर शिवाजी, दुर्गादास राठौर शखनाद तुम शेर हो, भेड नही, इस प्रकार से वीरोचित भावो से युक्त सच्चे वीरो के चरित्र जब कच्चे मिट्टी के बर्तन पर पड़े निशान की तरह पकने पर अमिट ही हो जाते हैं। उस दशा मे वीरता के आगे मार्ग मे पहाड हो, या कण्टकाकीर्ण हो बड़ी-बडी बाधायें हो, तभी वीरता की पहचान है असम्भव को सम्भव कर दिखाना।

हम भारत मा की वीर सन्तान है न हम डरेंगे, न हम भागेगें अत आगे ही बढ़ेंगे। श्री जगतराम आर्य स्वय वीर पुरुष थे आने वाली सन्तानो को भी अपने जैसा ही बनाकर देखना चाहते थे इसी से स्पष्ट है इस पुस्तक का क्या मूल्याकन हो सकता है पढोगे तभी समझोगे।

(२)

युवा संचेतना

ले०—डा० प्रेमवल्लभ शर्मा
पृष्ठ १३५ मूल्य ६० रु०
प्रकाशक—मेन बाजार गांधी नगर दिल्ली-३१

नयी पीढी मे नयी सचेतना जगे इसीलिए भक्तिमय वीरतापूर्ण सामाजिक चेतना की झंकार आपके मनसिज में भरती रहें। बाल काल से पाया हुआ जीवन ही निखरकर "युवा-सचेतना" का रूप लेता है

अत नयी पीढ़ी समय-समय की गतिविधियो का अध्ययन मनन-चिन्तन सदा करे युवा मे लगा जग कुण्ठित हो जाता है हारा हुआ इन्सान जुआ उतार कर बैठाने, बैल की भांति, "अर्जुन की तरह" नवतकर युध्दस्व कल मे बुद्धरत हो जा अतः अपनी आकाक्षाओ की पूर्णता के लिए सुकुमार युवा वर्ग पौरुष को जाने पता नही, बहते पानी की दो बूंद किस मस्तिष्क मे ठहर जाए और उसको नयी शक्ति दें। आत्मविश्वास, लक्ष्य, समय का सदुपयोग, अच्छा स्वास्थ्य, धर्म का स्वरूप संयम स्वावलम्बन, आत्मनिरीक्षण के क्षण, निर्भीकता विमल दृष्टि में आप क्या हैं इसकी अनुभूति मात्र ही युवा वर्ग मे यह इतिहास के पृष्ठ आपके जीवन में नयी सचेतना भर सकें।

ये विचार आपको-सम्भवत. आशावान बनाकर इच्छा शक्ति को बलवान बनाकर, सौभाग्यशाली बनिये तभी ऐसे लेखको का प्रयास सफल होगा फिर देखे थोड़े ही काल मे इन कथानकों का कैसा चमत्कारी प्रभाव होगा।

(३)

चले देश में देशी भाषा

ले०—श्री प्रीतपाल "बल"
प्रकाशक—अग्रेजी हटाओ समिति नकोदर पजाब
पृष्ठ-१६७ मू० २५ रुपये
पुस्तक का शीर्षक ही "अह राष्ट्री संगमनी वसूनाम्"
(ऋ. वाक्-सू-मंत्र ३)

राष्ट्र की अपनी भाषा ही उसे ऐश्वर्यो की प्राप्ति कराती है। इस शीर्षक से हिन्दी का पक्षधर बनकर अग्रेजी हटाओ का जन-आन्दोलन चलाया है। इसी निमित्त पुस्तक के तीन अध्याय जोड़े है। सार्वदेशिक सभा ने मान्य भाई श्री वेदप्रताप वैदिक की लेखमाला विगत वर्षों मे प्रसारित की थी उन्होने इन्दौर मे हिन्दी का विशेष आयोजन भी किया था और वह समय-समय पर हिन्दी की रक्षार्थ लेखनी द्वारा विचारों का प्रसार करते ही रहते हैं।

द्वितीय खण्ड मे प्रसिद्ध विचारक स्व. श्री राममनोहर लोहिया के तत्कालीन लेखो का सकलन भी किया है अन्य विद्वानो के विचार भी प्रस्तुत है।

राष्ट्रकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का लेख विदेशिनी दुलहिन तथा अंग्रेजी का यह दाग कब मिटेगा लेख हिन्दी भक्तों को पठनीय है।

तृतीय खण्ड मे महात्मा गांधी विनोबाभावे आदि के २३ विशेष लेख-इस पुस्तक में श्राद्ध के रूप मे व्यावहारिक तौर पर पढने के योग्य है। साथ ही यह वाक्य भी स्मरणीय है कि भारत के भारतीयजन अपने अग्रेजी के अज्ञान पर लजाये न और घमण्ड करें इस सामन्ती भाषा को उन्ही के लिए छोड़ दें। जिनके मा-बाप शरीर से नही तो मन से अंग्रेज रहे हो। श्री लोहिया के यह वाक्य आज हम सब पर घट रहे है कितना प्रचार करने पर हम राष्ट्रीयता हिन्दी से दूर ही हो रहे हैं।

अतः इस पुस्तक को पढें-लेखकों के परिश्रम को सफल बनाये और प्रकाशक को धन्यवाद दें। इस पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ावें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

शोक समाचार

आर्य समाज, शाखा के कर्मठ, कार्यकर्त्ता श्री रामप्रसाद आर्य जी का निधन चालक के रूप में रेल सेवा करते समय मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर आकाशीय विद्युत स्पर्शाघात से झुलस जाने के कारण दिनांक २४-८-९५ को सुबह १ बजे बनारस के एक चिकित्सालय मे हो गया।

उनकी असामयिक मृत्यु से आर्य समाज शाखा को अपार क्षति हुई है। वे विगत वर्षों से समाज की सेवा करते हुए इसे उन्नति के पथ पर अग्रसर किया हो था कि हमारे बीच से सदा के लिये चले गये।

परमपिता परमेश्वर उनके दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिजनों को यह आघात झेलने की शक्ति दें।

—राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता

श्री खुशवन्तसिंह के भाषा विषयक उद्गार

—डा० आशा जोशी

प्रसिद्ध पत्रकार श्री खुशवन्तसिंह को लगभग ५० वर्ष से ऊपर पत्रकारिता के क्षेत्र में लिखते-पढ़ते व अनुभव करते बीत चुके हैं उनकी यह अभिव्यक्ति 'हमारे यहां अग्रेजी के मुकाबले सभी भाषायें दरिद्र हैं।'

अपने देश की भाषा को दरिद्र कहने से पूर्व यदि लेखक भारतीय भाषाओं का इतिहास देखकर पढ़ लेते, अपनी समृद्ध भाषाओं को दरिद्र कहने की जरूरत नही पड़ती है। हमारी भाषायें दरिद्र नही, हमारी मानसिकता व सोचने की शक्ति ही कमजोर है। अंग्रेजी को विश्वभाषा बताना और वह हमे विरासत में मिली है सस्कृत हिन्दी में चन्द्रमा के बीसियो पर्यायवाची शब्द है और अंग्रेजी में मून, के कितने पर्याय हैं जिस मून के पर्याय मे एक शब्द हो वह समृद्ध है जिस चन्द्रमा के २० से अधिक शब्द हो वह दरिद्र है यह दरिद्रता मानसिकता की निशानी नही तो और क्या है।

हमारी भारतीय भाषाओं का एक समृद्ध इतिहास है जो हमे विरासत में मिला है। उसे उपेक्षा भाव से गलत बकालत करने का अपना अधिकार समझते हैं। उन्हें चाहिए अपनी मानसिकता को परिवर्तित कर भारतीय अस्मिता से जोड़े। जिससे हम अपने पन से जुड़ सके।

छोटी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अपने पन को छोटा पन देना उनका स्वभाव बन गया है। खुशवन्त सिंह जैसे व्यक्ति ही राष्ट्र की गरिमा को कैसे हानि पहुंचाते हैं इसकी कल्पना उनकी व्यर्थ की मनघड़न्त प्रलाप ही कहा जाएगा।

गरीब तथा उपेक्षित बस्तियों में युवा एकता यज्ञ

आर्य युवक परिषद शामली ने गरीब उपेक्षित तथा मलिन बस्तियों में युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने के उद्देश्य से युवा एकता यज्ञ के नाम से यज्ञ प्रारम्भ कर दिये हैं इसी शृंखला में युवक परिषद शामली ने प्रथम यज्ञ श्री बाल्मिकी मन्दिर मो० नन्दूप्रसाद शामली पर दिनांक ९-७-९५ को आयोजित किया गया। जिसमें उक्त समाज से कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने यजमान बनकर पूर्ण सहयोग प्रदान किया एवम् अनेकों व्यक्तियों ने वैदिक संस्कृति पर भव्य विचार व्यक्त किये।

इस युवा एकता यज्ञ में आर्य समाज शामली के प्रधान धर्मवीर वर्मा मन्त्री रामकुमार गुप्ता के साथ सम्पूर्ण पुरुष आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज तथा युवक परिषद शामली के प्रधान अशोक आर्य मन्त्री महेशचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष गौरव शर्मा एवं समस्त सदस्यों ने उपस्थित होकर यज्ञ का सफल आयोजन किया।

—महेशचन्द आर्य मन्त्री

आर्य वीर दल का शिविर सम्पन्न

६ जून से १३ जून ९५ तक सात दिवसीय आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर ब्रह्म आश्रम राजघाट (बुलन्दशहर) उ०प्र० में स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

शिविर के समापन समारोह पर जनपद-अलीगढ़ संचालक श्री रघुराजसिंह आर्य ने अध्यक्षीय भाषण में नौजवानों को चेतावनी देते हुए बताया कि राम और कृष्ण की संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है इसके लिए नवयुवक शक्ति को आगे आना पड़ेगा तभी अलीगढ़ क्षेत्र में खुल रहे बूचड़खाने को उखाड़ा जा सकता है नहीं तो इन कटने वाली गायों की दर्द भरी आहों से ये राष्ट्र जल जायेगा।

व्यायाम शिक्षक श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि आज गऊ माता तथा कटे अंगों वाली भारत माता रो-रोकर अपने पुत्रों की ओर निहार कर कह रही है कि "माता भूमि पुत्रोअहं पृथिव्या" का नारा लगाने वाले मेरे वीरों तुम्हें क्या हो गया है।

इस शिविर में सैकड़ों नौजवानों ने राष्ट्र रक्षा का दृढ़ सकल्प लिया तथा योगेशकुमार आर्य ने कहा हम बूचड़खाने को यहां खुलने नहीं देंगे, आचार्य चन्द्रदेव जी ने कहा "गोहत्या हो जाय बन्द जो आ जाये जोश जवानों में" संचालक ने आर्य वीरों को प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत किया।

संयोजक नरेन्द्रकुमार शास्त्री
संचालक सिकन्दराराऊ, अलीगढ़

रजत जयन्ती समारोह

आर्यसमाज शाखा फतेहपुर २५ वर्षों से अनवरत सामाजिक चेतना एवं धार्मिक जनजागरण में सतत प्रयत्नशील है। 'आर्यसमाज शाखा मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी के रूप में अपना रजत जयन्ती समारोह दिनांक ७, ८, ९ अक्तूबर सन् १९९५ में मना रहा है। इसमें मध्यान्चल आर्य महा सम्मेलन एवं मध्यान्चल आर्य युवा सम्मेलनों के माध्यम से अनेक कार्यक्रम होंगे। आर्य समाज की स्मारिका का प्रकाशन भी हो रहा है।

आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चित्रगुप्तगंज, लश्कर का ६९वां वार्षिकोत्सव एवं वेदकथा का आयोजन दिनांक १३ से १७ सितम्बर ९५ को प्रातः ७-३० से १०-३० यज्ञ, भजन एवं आध्यात्मिक प्रवचन, सायं ७ से ९ बजे तक भजन एवं राष्ट्र रक्षा, गोरक्षा, संविधान सुधार, धर्म क्या है, आर्यसमाज क्या है? इत्यादि देश की वर्तमान:ज्वलन्त समस्याओं पर ओजस्वी व्याख्यान सम्पन्न हुये।

इस आयोजन में आमन्त्रित आर्य जगत के सुप्रसिद्ध ओजस्वी वक्ता स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक नजीबाबाद, श्री दिवाकर जी पं० नरेशदत्त जी आर्य, भजनोपदेशक बिजनौर ने लाभान्वित किया।

आर्य समाजो के निर्वाचन

—आर्य समाज सुल्तानपुर में बाबूलाल आर्य प्रधान, श्री रामचन्द्रसिंह मन्त्री, श्री रामचन्द्र मिश्र कोषाध्यक्ष चुने गए।

—श्रीमद् दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र में श्री भवरलाल आर्य अध्यक्ष, पं० सत्यपाल शर्मा मन्त्री, श्री रामप्रसाद पारिख कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज मानपुर में श्री मथुराप्रसाद रक्षित प्रधान, श्री प्रेमचन्द्र आर्य मन्त्री, श्री धीरेन्द्रकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मेन बाजार बल्लभगढ़ में श्री महेन्द्र बोहरा प्रधान, प्रो सुशीलचन्द्र शास्त्री मन्त्री, श्री वेदप्रकाश गोयल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़ में श्री बुधराम आर्य प्रधान, श्री सोमदत्त शास्त्री मन्त्री, श्री सुभाष आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मन्दिर मोती बाग साउथ नई दिल्ली में श्री ज्ञानचन्द्र महाजन प्रधान, श्री पी०के० मलहोत्रा मन्त्री, श्री नरेन्द्र महाजन कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज कायमगंज में श्री जवाहरलाल जी आर्य प्रधान, श्री केशवचन्द्र मन्त्री, श्री रामानन्द कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव में श्री किशनचन्द्र चुटानी प्रधान, मा० सोमनाथ मन्त्री, श्री श्याम सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज बल्केश्वर कमलानगर आगरा में श्री ओमप्रकाश पालीवाल प्रधान, श्री एस०पी० कुमार मन्त्री, श्री रामजीदास गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मालवीय नगर नई दिल्ली में श्री धर्मवीर भसीन प्रधान, डा० डी०आर० जुनेजा मन्त्री, श्री एन०आर० मेहता कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज मीरानपुर कटरा शाहजहांपुर मे श्री सत्यप्रकाश आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य मन्त्री, श्री अजयकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

यान्त्रिक पशु वधशाला गजरौला का विरोध

आर्य समाज हसनपुर के साप्ताहिक सत्संग में आज दिनांक १०-७-९५ को सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि गजरौला में प्रस्तावित यान्त्रिक पशु वध शाला का निर्माण वैदिक सिद्धान्तों के पूर्णतः प्रतिकूल है आर्यसमाज हसनपुर इसके निर्माण का कड़ा विरोध करता है। यदि सरकार ने इस क्षेत्र की भावनाओं का आदर नहीं किया तो जन आन्दोलन के लिए बाध्य होंगे।

पं० विश्वम्भरदत्त शर्मा विद्यावाचस्पति को आर्य समाजें आमन्त्रित करें

आर्य समाज के पुराने उपदेशक व प्रचारक पं० विश्वम्भरदत्त शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के सफल प्रचारक हैं आप अब उ०प्र० सभा से पृथक प्रचार कार्य स्वतन्त्र रूप से कर रहे हैं। स्थायी पता रामनगर नैनीताल उ०प्र० है। आपकी विशेषता है कि यज्ञ संस्कार प्रवचन के साथ हारमोनियम" पर गायक के रूप में भी सफल प्रचारक हैं। अब उत्सवों का समय आ रहा है।

आर्य जन अपने उत्सवों, कथा, सत्संगों में अवश्य स्मरण करें।
पता—पं० विश्वम्भरदत्त शर्मा
मु० कस्बागेट, रामनगर, जिला नैनीताल (उ०प्र०)

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

निःशुल्क नेत्र आपरेशन शिविर

आपकी आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी मेरठ की ओर से नौवां निःशुल्क नेत्र आपरेशन शिविर आगामी दिनांक २६ सितम्बर मंगलवार १९९५ से २ अक्तूबर तक स्थानीय डी०ए०वी० इन्टर कालेज टटीरी में आयोजित किया जायेगा शिविर में गिन्नी देवी मोदी नेत्र चिकित्सालय के वरिष्ठ डा० राजेन्द्र विशाल (एम०एस०) एवं सहयोगी चिकित्सकों की टीम द्वारा सफेद मोतिया, काला मोतिया, पड़वाल, नाखूना एवं आंखों के अन्य रोगों का आपरेशन एवं इलाज मुफ्त किया जायेगा। मरीजों को भोजन दूध, फल, दवाई चश्मे मुफ्त दिये जावेंगे एवं आपरेशन उच्च तकनीकी एवं आधुनिकतम मशीनों द्वारा किये जावेंगे। मरीज अपना बिस्तर, थाली एवं गिलास अपने साथ लेकर आवें। धन्यवाद

निवेदक—अभिमन्युकुमार गुप्ता

संवेदना सन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के भूतपूर्व पदाधिकारी आर्य वीर दल राजस्थान के संचालक और आर्य समाज के मन्त्री श्री सुखदेव जी गोयल के असामयिक निधन पर हम सब हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं। आपने व्यवसाय में व्यस्त रहते हुए भी आर्य समाज और आर्य वीर दल की सेवा में रात-दिन एक कर दिया। आपने जोधपुर में स्व० श्री मदनसिंह जी आर्य के साथ ४० से अधिक आर्य वीर दल की शाखाओं का संचालन कर करिश्मा सा दिखाया। सार्वदेशिक सभा और प्रतिनिधि सभा से प्रयास कर साधन जुटायें और शाखाओं का सफल संचालन किया। आर्य समाज के प्रचार कार्य और विद्यालय संचालन में भी आपने अतुलनीय कार्य किया। परम-पिता परमात्मा स्वर्गीय आत्मा को शान्ति व शोक सन्तप्त परिवार को असह्य वेदना सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—रत्नलाल द्विवेदी

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ७३वां वार्षिकोत्सव सोमवार दिनांक १३ नवम्बर ९५ से रविवार, दिनांक १९ नवम्बर ९५ तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा।

अतः दिल्ली, नई दिल्ली की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों में अपनी आर्यसमाज में कोई पर्व का आयोजन न करके आर्यसमाज हनुमान रोड के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर एकता का परिचय दें।" —वीरेश बग्गा, मन्त्री

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम अस्पताल, खोजवां का चतुर्थ स्थापना दिवसोत्सव

आर्यसमाज भेलूपुर वार्ड, खोजवां वाराणसी द्वारा संचालित दातव्य अस्पताल अपने जीवन का तीन वर्ष पूर्ण कर चतुर्थ वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आप दानी महानुभावों की असीम कृपा से अस्पताल द्वारा प्रतिदिन २०० से २५० तक रोगियों को निःशुल्क एलोपैथिक एवं होमियोपैथिक की दवायें वितरित की जा रही हैं और भवन निर्माण का कार्य भी प्रगति पर है।

अस्तु! ४ अक्तूबर १९९५ के अवसर पर आयोजित समारोह में अपने इष्ट-मित्रों सहित पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेद कथा

आपको जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि वैदिक साधना आश्रम, वेद मन्दिर, निराला नगर, कानपुर, के तत्वावधान में २५ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक "चतुर्वेद पारायण महायज्ञ व वेद कथा" का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। अतः इस महोत्सव में आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

२५ सितम्बर से २ अक्तूबर तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेद कथा, ३ अक्तूबर भण्डारा प्रातः १०बजे से २ बजे तक

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/६५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-९-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licansed to post without prepayment Licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.SO.on 21,22-9-1995

प्राथमिक शिक्षा

(पृष्ठ २ का शेष)

है। यह शिक्षा का प्रश्न है, करोड़ों भूखे नंगों को साक्षर बनाकर उन्हें अज्ञान के अन्धेरे से बाहर निकालने का प्रश्न है, यह भारत और 'इण्डिया' की लड़ाई है। अब विचार का समय नहीं है आचरण का समय है। बहुत विचार हो चुका, अब यदि और देर लगाई तो जैसे कोका कोला, पैप्सी कोला बीस वर्ष बाद फिर से भारत की गरीबो को लुभावना पेय पिलाकर अत्याधुनिक बनाने को आ गए हैं, ऐसे ही अंग्रेजी के विद्वान भी बाहर से आकर फिर से नव धनाढ्यो के साहबजादो को ठेठ विदेशी लहजे की अंग्रेजी बोलना सिखाने के लिए बुलाने पड़ेंगे। वैसे केवल टी. वी. ने इस काम में काफी सहयोग देना शुरू कर ही दिया है।

आवश्यकता है शिक्षा नीति पर दृढ़ता के साथ काम करने की। सबको एक समान शिक्षा हो, सरल हो, सुगम हो, मातृभाषा मे हो। सर्वोच्च स्तर तक प्रत्येक बच्चे को मातृभाषा मे शिक्षा उपलब्ध हो। जर्मनी, जापान, फ्रास, चीन, रूस आदि किसी भी देश मे बिना अंग्रेजी जाने उच्च स्तर के वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं, तथा ये देश विश्व के अग्रणी देश हैं, कटोरा हाथ मे लेकर भीख मागने वाले नहीं।

प्राथमिक कक्षाओ में तो संस्कारो की नींव भरी जाती है, वहा हम्मटी डम्मटी पढ़ाकर हम कौन से संस्कार बच्चो को दे रहे हैं? अंग्रेजी की अनिवार्यता शिक्षा तथा रोजगार मे बनाए रखना देश की स्वतन्त्रता के नाम पर कलंक है, तथा इस कलक को जितना शीघ्र मिटा दिया जाय उतना ही अच्छा है। परिषद की दृष्टि मे सभी भाषाए सम्मान के योग्य हैं, किन्तु मातृभाषा सर्वोपरि है, मातृभूमि के समान वन्दनीय है। उसकी रक्षा करके हमें भारत को गौरव के उस शिखर तक पहुंचाना है जब विदेशो के छात्र यहा आकर शिक्षा ग्रहण करते थे।

महामन्त्री-मातृभाषा विकास परिषद
के-९, आनन्दपर्वत, दिल्ली-५

बढ़े वैदिक पथ पर संसार

करें सभी हम वेद अध्ययन,
वैदिक हो आचरण हमारा।
वेद भानु की प्रखर रश्मियो-
से आलोकित हो जग सारा।
[illegible] पर-
पाप [illegible] आर्य विचार।
बढ़े वैदिक पथ पर संसार।।

सामाजिक सब कार्य करें हम,
चारों वेदों के अनुकूल।
कोई कार्य करें न ऐसा,
जो हो वेदों के प्रतिकूल।
सुख समृद्धि सफलता छाए,
महिमण्डल पर अमित अपार।
बढ़े वैदिक पथ पर संसार।।

वर्ण व्यवस्था स्थापित हो,
भेदभाव नही हो किंचित।
अवसर मिले सभी को सम का,
कोई मानव रहे न वंचित।
जन जन के हित समरसता का-
खुले सफलता का नव द्वार।
बढ़े वैदिक पथ पर संसार।।

—राधेश्याम 'आर्य', सुल्तानपुर

परमदानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १११वां जन्मदिवस समारोह

परमदानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १११ वा जन्म दिवस समारोह २४ सितम्बर को प्रात ८ बजे आर्य समाज दीवानहाल में बाबू सोमनाथ मरवाह कार्यकारी प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर श्री राजेन्द्र गुप्त भू०पू० महानगर [illegible] दिल्ली राज्य, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री विश्वनाथ जी तथा श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आ. प्र. सभा सहित अनेकों विशिष्ट व्यक्ति सम्बोधित करेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

—बटेश्वर दयाल
प्रधान, आर्य स दीवानहाल

आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन

परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी के १११ वें जन्म दिवस समारोह के अवसर पर २४-९-९५ को अपराह्न ४ बजे आर्य समाज दीवान हाल में प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् प्रधान सार्व० सभा की अध्यक्षता में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया है। समारोह मे देश की वर्तमान स्थिति का सामाजिक व राजनैतिक परिपेक्ष में आर्य समाज का दायित्व व भावी कार्यक्रम पर विचार किया जाएगा। इस अवसर पर समस्त प्रचारक उपदेशक व अधिकारी सादर आमन्त्रित हैं। समारोह में डा० महेश विद्यालकार, डा० प्रेमचन्द श्रीधर, प० नेत्रपाल शास्त्री सहित अनेको विद्वान सम्बोधित करेंगे।

वार्षिकोत्सव

पिछले ४१ वर्षो से वेद प्रचार हेतु गांधीधाम में एक भव्य जलसा करवाया जाता है जिसमें विद्वानों के प्रवचन व भजनोंपदेश रखवाये जाते हैं।

पिछले वर्षों के अनुभव व सफलता के कारण हम प्रतिवर्ष इस जलसे को बड़ा स्वरूप देते रहे हैं। आपसे अनुरोध है कि आप इस वर्ष भी प्रवचनों से लाभ उठाकर हमारे आयोजन को सफल बनायें। यदि आप अब तक नहीं पधारें हैं तो आपसे इस बार अवश्य पधारने का विनम्र अनुरोध है।

२४ सितम्बर की कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधीधाम नगरपालिका के अध्यक्ष श्री परमानन्द कृपलानीजी करेंगे। स्मारिका विमोचन गुजरात जल आपूर्ति व गटर व्यवस्था बोर्ड के चेयरमैन आर्य श्रेष्ठी श्री लेखराज बचानीजी करेंगे सामाजिक क्षेत्र में विविध सेवा के उच्च पदों को पिछले वर्ष के दौरान सुशोभित करने वाले आर्य प्रवर श्रीमती प्रभाबेन पटेल मेयर-भुज (कच्छ), श्री शशिकान्त ना० पटेल (मन्त्री-कच्छ जिला विश्व हिन्दू परिषद) का सम्मान होगा। आर्य समाज गांधीधाम के वर्ष १९९५ के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री सुरेन्द्र वशिष्ठ जी का सम्मान भी होगा।

इस कार्यक्रम मे गांधीधाम नगर के कई अग्रगण्य महानुभाव एवं कच्छ व गुजरात के कई श्रेष्ठी अतिथि के रूप में मच की शोभा बढ़ायेंगे।
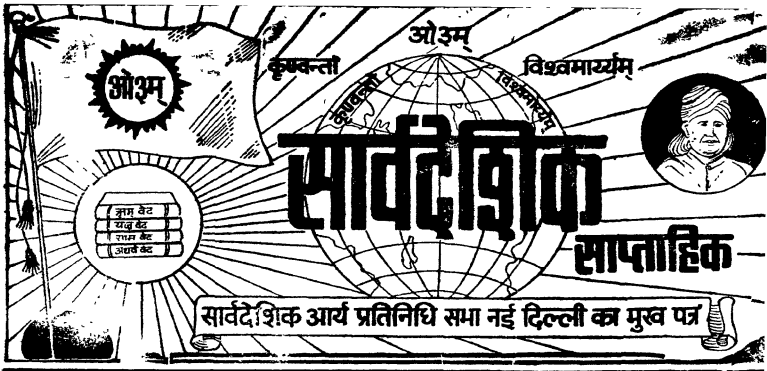
सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष ; ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपया
वर्ष ३४ अंक ३१) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ आश्विन शु० ७ सं० २०५२ १ अक्तूबर १९९५

तिरंगा ध्वज फैहराना प्रत्येक नागरिक का अधिकार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के अनुसार स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले तिरंगा झण्डा क्रान्ति, आन्दोलन तथा नारे बुलन्द करते समय एक विशेष प्रोत्साहन नागरिकों में पैदा करता था। यह ध्वज भारतवासियों में एकता और राष्ट्र के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करने का एक साधन था। देश भक्त लोग इस ध्वज की प्रतिष्ठा और रक्षा के लिए अपनी जान तक लुटाने को तैयार हो जाते थे। इस ध्वज को देखते ही मन में एक नया उत्साह, उमंग और स्फूर्ति उत्पन्न होती थी।

देश स्वतन्त्र हुआ और सत्ता राजनेताओं ने सम्भाल ली। स्वयं को एक विशेष श्रेणी का नागरिक सिद्ध करने का प्रयत्न इनके द्वारा किया जाना स्वाभाविक था। इस प्रक्रिया में एक राष्ट्रीय ध्वज नियमावली बनाई गयी जिसके तहत केवल कुछ विशेष उच्च हस्तियों को ही राष्ट्रीय ध्वज का प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त था। परन्तु दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक मामले में आज जारी किए महत्वपूर्ण आदेश में कहा है कि देश के प्रत्येक नागरिक को अपने निवास या व्यावसायिक स्थल पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का पूरा अधिकार है।

न्यायमूर्ति डी०पी० वधवा व न्यायमूर्ति डा० एम०के० शर्मा की खण्डपीठ ने आज उक्त निर्णय में केन्द्र सरकार को निर्देश जारी किया कि वह अपने घर पर भी झंडा फहराने से किसी को न रोकें क्योंकि राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान सरकार के अधिकार क्षेत्र में होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति को झंडा फहराने का पूरा हक है।

जिन्दल औद्योगिक समूह के संयुक्त प्रबन्ध निदेशक नवीन जिंदल ने उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर कर कहा था कि मध्य प्रदेश के रायगढ़ जिले में उन्हें फैक्ट्री में राष्ट्रीय झण्डे का ध्वजा रोहण करने से बिलासपुर जिला प्रशासन ने रोका। श्री जिंदल ने जिला प्रशासन के इस कृत्य को व्यक्ति के राष्ट्रीय मौलिक अधिकार का हनन बताया था।

उन्होंने याचिका में कहा कि प्रत्येक राष्ट्रवासी राष्ट्रीय ध्वज का पूरा सम्मान करता है अतः उसकी देश प्रेम की भावना को देखते हुए उसे अपने घर या व्यावसायिक कार्यालय में ध्वज फहराने का अधिकार होना चाहिए।

खण्डपीठ ने आज दिए निर्णय में कहा कि संविधान के ध्वज अधिनियम में किसी भी व्यक्ति को झण्डा फहराने से रोकने का किसी प्रशासनिक हस्ती को अधिकार नहीं है। खण्डपीठ ने कहा कि वादी ने इस बात के ठोस प्रमाण पेश किए हैं कि वह ध्वज को पूरे राष्ट्रीय सम्मान के साथ फहराना चाहता था। वादी की बात से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वह ध्वज अधिनियम का किसी भी तरह उल्लंघन नहीं कर रहा था।

निर्णय में कहा गया है कि राष्ट्रीय ध्वज पर प्रतिबन्ध संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों का उल्लंघन है। साथ ही निर्णय में अदालत ने सरकार से यह आशा व्यक्त की है कि वे नागरिकों को इस बात के लिए शिक्षित करें कि तिरंगे ध्वज को किस प्रकार सम्मान पूर्वक फहराया जाना चाहिए।

श्री वन्देमातरम् जी ने समूचे आर्य जगत की ओर से इस प्रशंसनीय निर्णय के लिए परम पिता परमात्मा से माननीय न्याया-

(शेष पृष्ठ २ पर)

आर्यसमाज द्वारा मन्दिरों में घटित पाखण्ड का खण्डन

माननीय श्री पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस पाखण्ड का खण्डन किया गया है कि जड़ मूर्ति शिव-गणेश सर्प आदि स्वतः दूध का पान कर रहे हैं, इस बढ़ते हुए पाखण्ड के खण्डन में आर्य समाज द्वारा बुद्धि जीवी वर्ग को चेतना प्रदान की है, कि जड़ वस्तु स्वतः कोई वस्तु ग्रहण नहीं कर सकती है। समय-समय पर मूर्खों द्वारा मानव को भ्रमित कर अपनी दुकान सजाने का कार्य चलता रहा है इस बार भी सारे देश के सभी मन्दिरों में शिव-गणेश-सर्प आदि दूध पी रहे हैं। मूर्ख बुद्धि पर जोर न देकर बहक रहा है। यह सब कार्य एक ही दिन में क्यों किया गया, आगे क्यों नहीं ?

आर्य समाज ऐसे पाखण्ड का घोर विरोध कर रहा है। और सदा ही करता रहा है। मानव सोचे और इस भ्रमजाल में न फंसे। वैज्ञानिकों ने भी इस भ्रम का घोर विरोध किया है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

लिखने के साथ-साथ हिन्दी में सोचना भी जरूरी

—डा० शंकर दयाल शर्मा

नई दिल्ली, १४ सितम्बर (भाषा)। राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने आज यहां महात्मा गांधी के इन शब्दों को दुहराया कि यदि स्वराज्य अंग्रेजी पढ़े भारतवासियों का है और केवल उनके लिए है तो सम्पर्क भाषा अवश्य अंग्रेजी होगी, लेकिन यदि वह करोड़ों भूखे लोगों, करोड़ों निरक्षर लोगों और सताये हुए अछूतों के लिए है, तो सम्पर्क भाषा केवल हिन्दी हो सकती है।

राष्ट्रपति आज हिन्दी दिवस के अवसर पर इन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड और पुरस्कारों का वितरण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हिन्दी के विकास का दायित्व देश के सभी लोगों का संवैधानिक दायित्व है और यह हमारे देश की राष्ट्रीयता का एक अंग है। इसलिए जरूरी है कि देश का प्रत्येक नागरिक हिन्दी के काम में अपना यथासम्भव योगदान करें।

राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे काम-काज की भाषा को इन्हीं करोड़ों लोगों की भाषा बनाना है और इसके लिए यदि अन्य भाषाओं से शब्द लेने पड़ें, तो उसके लिए परहेज नहीं किया जाना चाहिए। वैसे भी हमारे संविधान के अनुच्छेद-३५१ में हिन्दी भाषा के ऊपर यह दायित्व डाला गया है कि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। हिन्दी को राजभाषा के रूप में विकसित किये जाते समय इस संवैधानिक तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक ही नहीं होगा, बल्कि व्यावहारिक भी होगा।

राष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में विकसित करते समय इस संवैधानिक तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक होगा कि वह भारत की संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

उन्होंने कहा कि हिन्दी में लिखना ही जरूरी नहीं है बल्कि उससे कहीं अधिक हिन्दी में सोचना जरूरी है। जब हिन्दी में सोचा जाएगा और इसके बाद यदि कुछ लिखा जाएगा तो उससे जो हिन्दी बनेगी वह निश्चित रूप से मौलिक हिन्दी होगी।

राष्ट्रपति ने कहा कि जब कोई भाषा सिर्फ अनुवाद की भाषा बनकर रह जाती है तो धीरे-धीरे उसका मौलिक स्वरूप खत्म होने लगता है। यह बात राजभाषा पर भी लागू होती है।

यशस्वी तिलकराज गुप्त

आचार्य पद से मुक्त होकर अब आप डी. ए वी. प्रबन्ध समिति के सदस्य बने हैं और प्रबन्ध के कार्य में पूरा समय दे रहे है आप कुशल प्रशासक विद्यार्थी वर्ग के हितचिन्तक माने जाते हैं—हसराज कालिज पजाबी बाग के नव-निर्माण मे आपका पूर्ण योगदान है।

आप डी. ए वी. सस्थान मे प्रथम पक्ति में सदा स्मरण किये जायेंगे।

प्रभु आपको शक्ति दे स्वास्थ्य दीर्घायुष्य देकर चिरकाल तक आर्य समाज मे मार्ग दर्शक के रूप में देखे जायें।

नोट—विस्तृत विवरण १७ सितम्बर के सार्वदेशिक मे प्रकाशित हो चुका है।

सम्पादक

स्व. लाला इन्द्रनारायण जी (हाथी दांत वाले) की स्मृति में बृहद् शान्ति यज्ञ

आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली-६ तथा कई अन्य धार्मिक एव सामाजिक संस्थाओं के भूतपूर्व प्रधान व सरक्षक स्व. लाला इन्द्रनारायण जी (हाथी दांत वाले) की प्रथम पुण्य स्मृति (वर्षी) के अवसर पर उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु २६-९-९५ को प्रात १० बजे से दोपहर १२ बजे पर्यन्त आर्य समाज ग्रीन पार्क के निर्माणाधीन भवन में एक बृहद् शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया है।

अत आप से निवेदन है कि आप अधिक से अधिक संख्या में इस श्रद्धांजलि सभा मे पधार कर दानवीर स्व. लाला इन्द्रनारायण जी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

बलबीर सिंह सूद, मन्त्री

विश्व शान्ति यज्ञ

आर्यसमाज धूरी मे प्रदूषण निवारण के उद्देश्य से ४ से ८ अक्टूबर तक विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन प्रातः ७-०० से ९-३० बजे तक यज्ञ भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रम होंगे। इस अवसर पर डा. सोम जी वेदालकार पं. जगत वर्मा जी, श्री वासुदेव जी शास्त्री, श्री यशवीर जी शास्त्री, श्री कुलदीप जी शास्त्री आदि विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें।

ऋषि निर्वाणोत्सव

२३ अक्तूबर ९५, सोमवार प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली

में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आप सब सपरिवार एव इष्ट मित्रों सहित हजारों की सख्या मे पधारें।

—: निवेदक :—

महाशय धर्मपाल, प्रधान — डा० शिवकुमार शास्त्री, महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

तिरंगा ध्वज

(पृष्ठ १ का शेष)

फौजों की दीर्घ आयु, स्वास्थ्य एवं बल की कामनाएं व्यक्त की है।

यह निर्णय राष्ट्र में एकता मजबूत करने तथा राष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। हम देश की जनता से निवेदन करते हैं कि राष्ट्रीय तिरंगे के मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए इसे स्थान-स्थान पर फहराएं तथा देश-विदेश में भारतीयों को अपने निजी सम्मान से भी अधिक महत्वपूर्ण आदर इस तिरंगे ध्वज को अर्पित करना चाहिए। सभी धार्मिक संस्थाओं तथा राजनीतिक दलों को भी अशोक चक्र वाले तिरंगे को अपने-अपने अन्य ध्वजों के साथ ही फहराना चाहिए।

सम्पादकीय

क्या यह चमत्कार समाज को जीवन दे सकेंगे

सामूहिक आस्था और अन्ध विश्वास पर टिका मानवीय भ्रम केवल एक पाखण्ड एवं छल से युक्त है। देश के बड़े-बड़े बुद्धि जीवी वर्ग भी आज तक धर्म के जानकार इस प्रकार के घटना क्रम की शास्त्रीय दृष्टि की स्वीकृति के साथ चिन्तना तक नहीं करते है। विद्वत् जन के अनुसार वेद शास्त्र उपनिषद रामायण महाभारत जो भी शास्त्र ग्रन्थ आर्य (हिन्दू) विधि विधानो का निर्णय या नियामक है उनमे कही भी इस प्रकार की चर्चा तक नही है।

प्राचीन—अठारह पुराणो के अन्दर लोक मे कई प्रकार की चर्चाओ का समावेश मिलता है वहा पर भी कभी किसी काल मे इस प्रकार की अनहोनी बात का प्रस्तुतीकरण तक नहीं है। नाना चमत्कारो की चर्चा तो है वह भी विशेष स्थल पर हुआ है समूचे देश स्तर पर नही हुआ। आज समूचे देश व्यापी दुग्धपान के अभियान मे चमत्कार को किसी प्रकार से शास्त्रो का आधार नहीं माना जा सकता है।

नागपचमी जैसे त्यौहार नागो को दूध पिलाने के अतिरिक्त देवताओ तक को दूध पिलाने का विधान या प्रकरण नही मिल । देवताओ को पंचगव्यो (दूध-दही-घी आदि से स्नानादि कराने का प्रावधान तो मिलता है पर इस प्रकार के चमत्कार जो असम्भव को सम्भव बनाकर दिखायें। यह आश्चर्य प्रद बात है पर जिस कौम मे असम्भव की ही पूजा की जाए वही चमत्कारी महापुरुष कहलाता है।

भगवान राम जैसा महापुरुष हिरन को सोने का समझकर उसके पीछे-पीछे गए परिणाम क्या हुआ महारानी सीता का अपहरण हो गया।

जो जाति जड़वस्तु को भगवान मानकर उस कब्र की मनौती माने उस कौम की रक्षा कौन कर सकेगा। पढ़ा लिखा साइन्स का विद्वान् व्यक्ति प्रोफेसर अफसरों की दुर्दशा देखिये बुद्धि पर जोर न देकर विवेक भ्रष्ट हो रहे है।

"विवेक भ्रष्टाना भवति विनियात शतमुख" ऐसे समाज का पतन हजार-प्रकार से होता।

असम्भव हेय मृगस्य जन्म तथा विरामो लुलुभे मृगाय।
प्राय: समापन्न विपत्ति काले धियोऽपि पुन्सा मलिना भवन्ति।।

राम की भांति आज के साधारण इन्सान की गति कैसी होगी, विचारणीय विषय है।

वैज्ञानिकों की दृष्टि में इस मति भ्रम पर भी विचार करना आवश्यक है।

१. प्रसिद्ध वैज्ञानिक व दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बी. के. सभ्रवाल ने बताया कि जहा आज विज्ञान ने तीव्रगति से प्रगति की है वहीं अन्धविश्वास भी पीछे नहीं रहा। लेकिन हमारा यह दुर्भाग्य है कि अभी हमारा समाज अन्ध विश्वासों से ऊपर नही उठा है। उसने नही विचारा कि गणेशजी किस मन्दिर में सजीव हो जायेंगे और दूध पीने लगेंगे ऐसा सम्भव नहीं।

२. इण्डियन रेशनलिस्ट एसोशियेशन के सचिव सोनल एदामराकुल कई मन्दिरो में गये और पाया कि किस तरह लोग दृष्टि भ्रम का शिकार हो रहे हैं।

श्री सोनल ने श्रद्धालुओ को जब समझाने की कोशिश की कि दूध बाहर की ओर बहता हुआ चला जा रहा है तो उनकी बात तक सुनने को तैयार नहीं।

श्री सोनल ने फिर केले पर यही क्रिया करके दिखाई। केले पर दूध उड़ेल कर यही क्रिया दिखाई दूध चम्मच से खत्म हो गया और सतह पर बहता नहीं दिखाई दिया। हां दूध नीचे गिरते जरूर दिखाई दे रहा था।

इससे अच्छा प्रदर्शन युवा एम. एस. सी छात्र कु० सजयसिंह ने करके दिखाया। सजयसिंह ने हिन्दुस्तान कार्यालय में बीसियों उत्सुकों को संगमरमर की छोटी सी मूर्ति को चम्मच से दूध पिलाकर दिखाया।

चम्मच का दूध सचमुच खत्म होता जाता था और यह भ्रम पैदा होता जाता था कि मूर्ति सचमुच दूध पी रही हैं पर वह दूध बूंद-बूंद कर नीचे गिरता जा रहा था उससे लगता था कि दूध मूर्ति सुड़प रही हैं। प्रदर्शन करने के बाद वह स्पष्ट भी करते हैं। कि दूध पीने की यह क्रिया विज्ञान सम्मत हैं। इस क्रिया को "कैपिलरी" एक्शन कहते हैं यह एक्शन तब शुरू होता है जब पूरी कैपिलरी (पतली ट्यूब) मे कहीं से भी हवा का बुलबुला नही हो।

दूध की विस्कोसिटी पानी से ज्यादा होती है अत. वह पानी से और ज्यादा खिचती है यह भी जरूरी नही है कि पूरी मूर्ति में आर-पार छेद करके कैपिलरी बताई गई हो तो भी कैपिलरी ऐक्शन शुरू हो जाएगा और ऐसा दृष्टि भ्रम पैदा हो जाएगा कि मूर्ति दूध पी रही हैं। मुख्य बात यह है कि दूध पीने की क्रिया मे दूध खीचनें के लिए कोई न कोई बल जरूर चाहिए।

श्री एमराकराकुल ने भी अपना दृष्टिकोण बताकर कहा कि यह महज अन्ध विश्वास के अतिरिक्त कुछ नही राजधानी दिल्ली मे नहीं किन्तु देश विदेश मे भी भगवान शिव के परिवार द्वारा दुग्ध पान की इस घटना पर अपना मत व्यक्त करते हुए वैज्ञानिको ने कहा कि इस तरह के अन्ध विश्वासो एवं अफवाहें पूर्व भी फैलाई जाती रही हैं।

जाने-माने वैज्ञानिक इस तरह की बातो से सहमत नहीं हैं कि जड़ मूर्ति दूध पी सकती है या यह कोई चमत्कार है। उनका कहना है कि केवल अन्ध विश्वास है।

अनेक वैज्ञानिको ने इस घटना पर लोगो मे फैल रहे सहज विश्वास पर चिन्ता व्यक्त की। प्रो. गुप्ता ने बताया कि वास्तविकता यह है कि भौतिक विज्ञान के नियम इस तरह की अनुमति नहीं देते। साथ ही भगवान भी भौतिक विज्ञान के नियमो का उल्लंघन नही करते। कुछ चालाक ग्रुपो ने मूर्तियों मे ऐसी व्यवस्था कर दी कि दूध अन्दर जाकर फिर बाहर आ जाता है यह कोरा अन्ध विश्वास है।

वैज्ञानिक आलोक नेबताया कि मूर्तियां दूध नही पी रही, वह कैपिलरी एक्शन से भीतर जाकर बाहर जा रहा है। ऐसे चमत्कार ही भारतीयों की आत्मा को मार रहे हैं।

जो काम भगवान भी न कर सके वह मनुष्य करके दिखा दे वहीं तो चमत्कार है इन झूठे चमत्कारों पर दुनिया धोखे मे पड़कर लुट रही है।

वैज्ञानिकों ने देवताओं के दुग्ध पान को भौतिक शास्त्र के तीन आधार भूत सिद्धान्तो के आधार पर सामूहिक भ्रम का करार दिया—

उनके मुताबिक पृष्ठ तनाव, वेग के सिद्धान्त, और गुरुत्वाकर्षण के कारण ऐसा हो रहा है। जिसे चमत्कार मान लिया गया है कुछ वैज्ञानिकों ने अन्य कई कारण सुझाये हैं जिससे यह भ्रम पैदा हुआ।

राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी सचार परिषद और राष्ट्रीय भौतिक विज्ञान प्रयोग शाला के वैज्ञानिको ने भौतिक शास्त्रीय कारण गिनाते हुए केवल फरेब बताया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष डा. यशपाल का मन्तव्य है कि इस चमत्कार को समझने के लिए प्रतिमा का आकार-प्रकार इसके आधार भूत तत्व और चढ़ाये जा रहे दूध की मात्रा की जांच करनी होगी यह पृष्ठ तनाव का विषय है उनके विचार से दूध की धार पतली हो तो सफेद मूर्तियो पर एक पारदर्शी फिल्म की भाति होगी। इस मौसम मे नमी रहती है अत प्रतिमा के नीचे पहुंचते-पहुचते दूध की कुछ मात्रा भाप बनकर उड़ जाती हो।

तात्पर्य यह है कि इस घटना क्रम में साधारण अज्ञानी जनो के सामने पढ़ा लिखा इन्सान अधिक मूर्ख दिखाई दिया। सोये को जगाया जा सकता है पर जागते हुए को कौन जगायेगा।

विधायक एम. पी. प्रोफेसर मिनिस्टर कमिश्नर आफिसर कर्मचारी इस अवसर पर अच्छी श्रद्धा व अन्ध विश्वास मे सराबोर हो गया। इस तरह के अन्ध विश्वास यदा-कदा समाज में पैदा किये जाते रहे हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कब तक देवदासियां बनेंगी ?

पुरी के जगन्नाथ मन्दिर में देवदासी प्रथा को जारी रखने की इच्छा चाहे जिस दिमाग की उपज हो, उसकी भर्त्सना ही की जा सकती है। जब देश के कई राज्यों में इस प्रथा के विरुद्ध लगातार आन्दोलन होते रहे हों और इस कुरीति पर से पर्दा उठाने के लिए साहित्य रचा गया हो, फिल्मे बनाई गई हों और सप्रमाण यह बताया गया हो कि इस प्रथा के अन्तर्गत देवदासी कितने ही रूपों में अपमानित और शोषित होती हैं, तब इसे फिर से बहाल करने के प्रयत्न अचम्भे में ही डालते हैं। पुरी मंदिर की प्रबन्धन समिति इस बात पर तो खफा है कि देवदासी प्रथा को मीडिया में वेश्या-वृत्ति के समकक्ष क्यों रखा जा रहा है, पर उसे यह क्यो दिखाई नहीं पड़ रहा कि मन्दिर की ६५ वर्षीय पारसमनी और ७५ वर्षीय शशिमनी की हालत आज क्या है। वे देवदासिया वृद्धावस्था में ठीक से भोजन-पानी और वस्त्र भी प्राप्त नही कर पा रहीं। नही, उसे इनकी दुरवस्था तो दिखाई पड रही है, क्योंकि वह ठीक नाक के नीचे है, पर इनके नारकीय जीवन के लिए अपने को जिम्मेदार न मानकर प्रबन्धन समिति नए चेहरो की तलाश में लगी है। इतनी बड़ी विडंबना के आगे यह समिति भले सिर उठा कर चलना चाहे, शेष सभी के लिए यह लज्जा का ही विषय हो सकता है। इस विवाद मे न भी पड़ें कि प्रबंधन समिति द्वारा बाकायदा यह विज्ञापन दिया गया था या नहीं कि मंदिर को नई देवदासियों की जरूरत है, पर यह तो सच्चाई है कि साक्षात्कार देने के लिए कुछ स्त्रिया पहुंची और उनसे यह नहीं कहा गया कि वे झूठमूठ क्यों वहां आ पहुंची हैं। फिलहाल तो स्वय पारसमनी और शशिमनी ने ही उन्हें दत्तक बनाने से इनकार कर दिया है, ठीक ही यह कह कर कि वे अपने जैसे नारकीय जीवन मे भला किसी को क्यो उतारना चाहेंगी ? और साक्षात्कार के लिए पहुंची स्त्रियो के बारे मे क्या कहा जाए ? वे पढ़ी-लिखी है, देवदासी वाली चाकरी में ऐसा कोई बडा प्रलोभन भी नही है। फिर ? क्या उन्हें कोई अंध 'धार्मिक' वृत्ति वहा खीच लाई ? या किसी तरह का उन्माद ? मदिर की दासी बनने मे जीवन की कोई सार्थकता उन्हें दिखाई पडी ? या किसी ने उन्हें बरगलाया ? इस देश में तमाम सामाजिक सुधारो के बावजूद अभी भी ऐसी अवधारणाएं हैं कि इनमे से कोई चीज भी संभव हो सकती है। पर हम अंध-धाराओं के खिलाफ लड़ेंगे या उन्हें प्रोत्साहित करेंगे।

आखिरकार, सतीप्रथा, पर्दा, बाल विवाह आदि के समर्थकों और विधवा विवाह के विरोधियों की अंध प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ाई लडी गई या नहीं ? और अभी तक लड़ी जा रही है या नही ? देवदासी प्रथा के दोष अब बिल्कुल स्पष्ट हैं। किसी लड़की/स्त्री को मंदिर-मूर्ति के साथ जीवन भर के लिए विवाहित मान लिया जाता है। मन्दिर परिसर मे वे महंतो-पुजारियो के अधीन हो जाती हैं। जरूरी नही कि हर जगह उनका यौन शोषण हो ही, पर देवदासियो को लेकर किए गए सर्वेक्षण यही बताते हैं कि बहुधा प्रचुर मात्रा मे उनका यौन शोषण भी हुआ है। देवदासियों के जीवन पर जो साहित्य, फिल्में, वृत्तात आदि उपलब्ध हैं, वे कोई मनगढ़त कहानियां नहीं हैं। और वे प्रायः इस शोषण की पुष्टि करते है। पुरी मन्दिर की प्रबन्धन समिति अगर शीघ्र ही अपने यहां से देवदासी प्रथा समाप्त करने का निर्णय नहीं ले लेती, तो फिर उसे कानूनी और सरकारी निर्देश मिलने ही चाहिए कि वह इस प्रथा को अब किसी कीमत पर जारी नहीं रख सकती।

(नवभारत टाइम्स के सम्पादक के विचार)

आर्यसमाज मीरानपुर कटरा के हस्तक्षेप से हिन्दू युवती मुस्लिम होने से बची :

मीरानपुर कटरा (शाहजहांपुर) ११ जुलाई ६५। पति से बिछुड़कर पत्नी १२वें दिन सकुशल अपने पिता के साथ वापिस गयी।

पति-पत्नी जीवकोपार्जन हेतु लुधियाना जाने के लिए "सहारनपुर-लखनऊ" पैसेंजर से दिनाक २६-६-६५ को रात्रि में सवार हुए। गाड़ी मे उन्हें दो मुस्लिम दम्पत्ति भी मिले, जिन्होने सहयात्री बताकर अतरगंता कर ली। बताया गया कि शाहजहापुर रेलवे स्टेशन पर भगवानदीन को सह-योगी मे से एक ने नशीली जलेबी खिलादी व उसका ३५०० रुपये का सामान ले लिया। पति के बेहोश हो जानेपर अन्य सहयोगी पत्नी सुदेवी को बहला फुसलाकर मीरानपुर कटरा स्टेशन पर उत्तार कर स्थानीय सरकारी अस्पताल ले आये। वहा सुदेवी को ५००० रुपये में मुस्लिम युवक के हाथ बेंच दिया गया। लेकिन उक्त सुदेवी के विरोध के बीच आर्यसमाज मीरान पुर कटरा के मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य द्वारा भुक्त भोगी युवती को मुस्लिम युवक के चुगल सेछुड़ाकर व विधिवत्आर्यसमाजीय कार्यवाही कर थाना कटरा को सूचित कर सुदेवी के पति व पिता को रजिस्टर्ड डाक से सूचित किया गया। फलस्वरूप १२वे दिन युवती के पिता आदि अपनी लड़की सुदेवी को वीरेन्द्र कुमार आर्य के निवास से सकुशल लिवा ले गये।

भुक्त भोगी पति-पत्नी प्रदेश सरकार मे ससदीय कार्य मन्त्री हृदय नारायण दीक्षित के चुनाव क्षेत्र के निवासी हैं। पति भगवान दीन के होश मे आने पर उसने वस्तु स्थिति से मन्त्री जी को अवगत कराया जिन्होने पुलिस को इस गिरोह के विरुद्ध कठोर कार्यवाही के निर्देश दिए। जिस पर राजकीय रेलवे पुलिस शाहजहापुर के थानाध्यक्ष डी. लाल व उप-निरीक्षक श्री हरीशंकर तिवारी आदि द्वारा आवश्यक कार्यवाही हुई व उनसे ज्ञात हुआ कि तिलहर थाना क्षेत्र के मोहल्ला नजरपुर निवासी अकील मनिहार, फरनीता मनिहार, मजीदा व शकील ने तिलहर निवासी जगदीश धीमर के माध्यम से सुदेवी का पाच हजार रुपये मे सौदा कर दिया था।

वीरेन्द्र कुमार आर्य ने कहा कि भुक्त भोगी पत्नी जनपद के थाना मौरावा के ग्राम पूरा रसूलपुर की तथा पति ग्राम अकबरपुर खेड़ा के हैं। तथा यह भी कहा कि स्वयं सेवी सस्थाए तथा आर्यसमाजे सहयोग देवे तो सक्रियता से इस गिरोह के चुगल मे फसाई गई युवतियों को मुक्त करा उन्हें अपने-अपने घर वापिस भेजा जा सकता है।

वीरेन्द्र कुमार आर्य
आर्यसमाज मीरानपुर कटरा
शाहजहांपुर (उ. प्र)

हिन्दी को न हिन्द की भिखारन बनाइये

आर्य स्कूल धूरी ने हिन्दी दिवस मनाया

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर आर्यसमाज धूरी की तीनों सस्थाओ आर्य स्कूल, आर्य कालेज तथा आर्य माडल स्कूल ने स्कूल के विशाल सभागार मे विशाल सभा की जिसकी अध्यक्षता आर्यसमाज के मनीषी विद्वान् महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थ ने की एव सयोजन श्री वासुदेव शास्त्री(एम.ए.)नेकिया सर्वप्रथम कालेज की दो छात्राओ ने ईश भक्ति द्वारा इस सभा का प्रारम्भ किया सभा मे महात्मा प्रेमप्रकाश जी, कुलदीपसिंह दीपक तथा यशवीर शास्त्री सहित कालेज की छात्राएं तथा तीनों संस्थाओ के अध्यापक अध्यापिकाओं तथा प्राचार्य प्राचार्याओं द्वारा हिन्दी की स्तुति की गई। अन्त मे अध्यक्षीय व्याख्यान मे महात्मा जी ने कहा कि हमें हिन्दुस्तान तक ही इसको सीमित न रखना चाहिए अपितु सारे ससार में इसका प्रचार करना चाहिए तभी इसकी रक्षा हो सकेगी। हिन्दी हमारी आन-मान और शान है। इसके बाद सस्था के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द सिंगला ने सभा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिलना चाहिए शान्ति पाठ के बाद सभा विसर्जित हुई।

अगर तलाक बुरी बात है तो फिर यह अभी भी क्यों जारी है

—अरूण शौरी—

तीन बार तलाक की प्रथा जब भी सार्वजनिक बहस का मुद्दा बन जाती है, उसके हिमायती हर बार चीत्कार करते हुए दौड पड़ते हैं, 'पैगम्बर ने ही कहा है कि तलाक अल्लाह की निगाह मे सबसे घृणित चीज है।' वे कभी नही बताते कि जो अल्लाह के लिए इतनी घृणित है, उसे इस कदर आसान क्यो बना दिया गया है ऐसा क्यो है कि उसी अल्लाह ने मुस्लिम शौहरो को इसका अधिकार दे दिया है और वह भी सिर्फ वह एक शब्द बोलकर जिसे वह इतना वीभत्स समझता है ?

ये हिमायती कहते हैं, "तीन बार तलाक पूरी तरह गैर इस्लामी प्रथा है। यह कुरान के नियमो के सर्वथा प्रतिकूल है।" इससे एक नहीं, बल्कि दो प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं कि फिर ऐसा कैसे है कि यह विकृति १३५० सालो से उसी शरीअत के अभिन्न अंग के रूप मे लागू की जाती रही है जिस पर इतना गर्व किया जाता है ? दूसरे, ऐसा क्यो है कि ज्यों ही उस प्रथा को, जिसे आप कहते हैं शरीअत के सर्वथा प्रतिकूल है, अवैध घोषित करने का प्रयत्न किया जाता है, त्यो ही चीख-पुकार मच जाती है कि शरीअत खतरे मे है ?'

तब ये हिमायती अनुभव की बात करने लगते है तथा कहते है "व्यवहार मे इस अधिकार का मुश्किल से ही कभी प्रयोग किया जाता है।" लेकिन अगर यह अधिकार कुरान के सर्वथा प्रतिकूल है, और इसके अलावा मुश्किल से ही इसका इस्तेमाल होता है, तो इसे बिल्कुल ही खत्म कर देने मे दिक्कत क्या है ? यह साफ है कि यह दावा कि मुस्लिम शौहर अमूमन कभी इस क्रूर अधिकार का प्रयोग नही करते, अपने आप में कुछ ऐसी बात है, जो मौके पर उलझन से उबरने के लिए गढ ली जाती है।

जब यह मुद्दा लोगो की निगाह में नही होता और जब सच्चाई की चर्चा से परहेज का कोई कारण नहीं होता, तब खुद मुस्लिम न्यायविद और लेखक ही स्वीकार करते हैं कि तीन बार तलाक वास्तव मे बेचारी बीवियों को निकाल बाहर करने का सर्वाधिक बारम्बार प्रयुक्त होने वाला तरीका है। अस्सी साल पहले अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मुस्लिम ला मे न्यायमूर्ति फैज बदरुद्दीन तैयब जी ने लिखा था,'सुन्नी कानून के एक दुखद, किन्तु सम्भवत स्वाभाविक विकास क्रम मे, यह तलाक का चौथा और सर्वाधिक अनुचित या पापपूर्ण तरीका ही है (यानि, तीन बार तलाक) जो कि सर्वाधिक प्रचलित, और एक अर्थ में, कानून के द्वारा अनुमोदित भी, जान पडता है...।" चालीस साल पहले न्यायमूर्ति शाहमीरी ने 'अमदगिरि बनाम (मास्टर) बमहा मे टिप्पणी की थी कि चूंकि बीवी को निकाल फेंकने का यह तरीका "शौहर के लिए सबसे कम भारी पड़ता है. इसलिए यह भारत में पाया जाने वाला सबसे प्रचलित रूप है।' इस विषय के सर्वाधिक विशद अध्ययनो मे से एक, 'मुस्लिम ला आफ डाइवोर्स' मे के. एन अहमद ने पाकिस्तान की स्थिति के बारे में, उस स्थिति के बारे मे जो समूचे उपमहाद्वीप में ऐसी ही है, पैंतीस साल पहले लिखा था, "सुन्नी कानून के तहत तलाक अल विद्दा' के प्रयोग का सर्वाधिक प्रचलित रूप आजकल एक वक्त मे तीन तलाकों की उदघोषणा करना है ।' तीन साल पहले प्रोफेसर ताहिर महमूद ने 'द इस्लामिक एंड कम्परेटिव ला क्वार्टरली' में लिखा, 'आम मुसलमान सदियों से मानता आया है कि तथाकथित तीन बार तलाक, तलाक का एकमात्र 'इस्लामी रूप है ।' "इस देश (भारत) में एक मुसलमान के द्वारा तलाक का अमूमन हमेशा मतलब होता है 'तीन बार तलाक'—एक परिवर्तनीय तलाक की अवधारणा से लोग कम ही परिचित हैं।" लेकिन ज्यों ही तलाक पर बहस छिड़ती है तो यह हिमायती कहने लगते हैं, "व्यवहार में इस अधिकार का मुश्किल से ही प्रयोग होता है।"

इस्लाम में औरतों की कुल स्थिति के समूचे सवाल पर भी इसी किस्म की स्वतः स्फूर्त प्रतिक्रिया होती है, ऐसे ही असत्यों और अर्धसत्यों का सहारा लिया जाता है। ज्यो ही इस प्रश्न पर बहस छिड़ती है, हिमायती चीखने लगते हैं, "लेकिन किसी मजहब ने औरतो को इतना ऊंचा दर्जा नहीं दिया है जितना इस्लाम ने दिया है।' हाल ही के एक लेखक ने तो पैगम्बर को अभी तक का महानतम नारीवादी 'साबित' किया है। इन दावो के लिए दो किस्म के 'प्रमाण' रखे जाते हैं। पहले तो पूर्व-इस्लामी अरब में औरतो की दुर्दशा की भयावह तस्वीर पेश की जाती है—लडकियो को जिंदा दफना दिया जाता है और यह कहा जाता है कि औरतो को कोई हक हासिल नही थे। वे चल सम्पत्ति की तरह थी, इस्लाम ने आकर उन्हे व्यापक अधिकार दिये। यह तस्वीर सर्वथा इस्लामी स्रोतो के कहे के आधार पर पेश की जाती है। वैसे हर वक्त हमसे कहा जाता रहा है, और किसी और के बजाय नही बल्कि इस्लामी विद्वानो के द्वारा ही सर्वाधिक जोर देकर कहा जाता रहा है कि एक समाज का अध्ययन करते हुए हमे विजेताओ की बातें मानकर उनके हिसाब से नही चलना चाहिए। उस समाज पर अपने अधिकार से पहले के दौर को वे अनिवार्यतः खराब से खराब रंगो से चित्रित करके पेश करते है। इसी से उस समय को उनके द्वारा हड़प लेने का औचित्य प्रतिपादित होता है, इसी से वहा उनके सभ्यता के दूत बनकर जाने का दावा प्रमाणित होता है। 'ओरियन्टलिज्म' पर समूचे लेखन की टेक तथा उसका स्थायी स्वर ही यह है, लेकिन वही व्यक्ति जब इस्लाम से पहले के अरब की हालत की चर्चा करते है, तो उनके कथन और दावे पूरी तरह इस्लामी स्रोतो पर आधारित हो जाते हैं।

अगर औरतों की हालत कुल मिलाकर इतनी भयावह थी, राम स्वरूप अपनी छोटी सी पुस्तक, 'वूमैन इन इस्लाम' मे पूछते हैं, तो, फर्ज कीजिए, बीवी खदीजा की हैसियत के बारे मे आप क्या कहेंगे ? जैसा कि सुविदित है, वह एक खासे व्यापारिक प्रतिष्ठान की मालकिन और सर्वेसर्वा थी। उनके प्रतिष्ठान मे पैगम्बर ने लम्बे समय तक मेहनत से काम किया और फिर उनसे शादी कर ली।

इस किस्म के दावो को फिर एक या दो हदीस से, यानी पैगम्बर की उक्तियो से, पुष्ट करने की चेष्टा की जाती है। इनमे सबसे अच्छा वह है, पैगम्बर के कथन की याद दिलाई जाती है, जो अपनी बीवियों से सबसे अच्छा बरताव करता है। औरतो के साथ दयालुता से पेश आओ, श्रद्धालुओ को उनके उपदेश की याद दिलाई जाती है—किन्तु उस हदीस मे भी ठीक इसके आगे के शब्दों को छोड़ दिया जाता है . क्योंकि पूरी हदीस यह है, "औरतो के साथ दयालुता से पेश आओ, वे तुम्हारे हाथो में बन्दियों की तरह हैं। (तुम्हारा उन पर इसके अलावा कोई दावा नही है कि) यदि वे खुली अशोभनीयता की दोषी हैं तो तुम चाहो तो उन्हें उनके बिस्तरों मे अकेला छोड दो और उन्हें मामूली सजा दो। अगर वे तुम्हारे प्रति आज्ञाकारी है, तो उनके खिलाफ किसी और चीज की शरण मत लो। तुम्हारा अपनी बीवियो पर हक है और उनका तुम्हारे पर हक है। तुम्हारा हक यह है कि जिसे तुम नापसन्द करते हो उस किसी को वह तुम्हारे घर मे प्रवेश की इजाजत नही देगी, और उनका हक यह है कि खाने और कपड़े के मामले में तुम उनके साथ अच्छा बर्ताव करो।" सिर्फ यही नहीं कि ये मुश्किल से ही ऐसे विचार हैं जो किसी नारीवादी के होंगे—याद कीजिए, "अगर वे तुम्हारे प्रति आज्ञाकारी है, तो उनके खिलाफ किसी और चीज की शरण मत लो।" ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि कई और ऐसी चीजें हैं तो पैगम्बर ने कहा है कि औरतों के साथ किस तरह का सलूक करना चाहिए और खुद औरतों को किस तरह का बर्ताव करना चाहिए।

(क्रमशः)

आर्य शिक्षण संस्थायें और आर्यसमाज

बुद्धिप्रकाश आर्य एम०ए० (त्रय) अजमेर

प्रस्तुत लेख विचारणीय है लेखक का अपना अभिमत है। यदि हमारे अन्दर कोई कमी है या हम कोई भूलकर रहे हैं तो उसको जानकर उसमे सुधार करना अपेक्षित है।
—सम्पादक

आर्य समाज की स्थापना के साथ-साथ देश में गुरुकुलों, कन्या विद्यालयों एवं डी०ए०वी० संस्थाओं का तेजी से विकास हुआ महर्षि दयानन्द के भक्त स्वामी दर्शनानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलों की स्थापना पर बल दिया और आर्ष-शिक्षा व्यवस्था जुटाकर देश को अनन्य विद्वान प्रदान किये, जिनके योगदान से आज भी आर्य समाज अनुप्राणित हो रहा है। दूसरी तरफ लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज प्रभृति ऋषि भक्तों ने शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष को दृष्टिगत रखते हुये, देश में, डी ए वी स्कूलों का शुभारम्भ किया। प्रारम्भ में यह आन्दोलन काफी सफल रहा। लाहौर के डी.ए.वी. कालेज ने देश को कर्मठ देशभक्त और विद्वान प्रदान किये बीसवीं शताब्दी के मध्य दो दशकों में, स्वतन्त्रता सेनानियों की अग्रिम पंक्ति में आर्यसमाजी नेताओं का ही वर्चस्व रहा था। १९वीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में (१८८९ से १९०० तक) श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जिस राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया था उससे प्रभावित होने वाले आर्य नेताओं में अधिकांश आर्य नेता डी.ए.वी आन्दोलन की ही देन थे। रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद, लाला लाजपत राय व महात्मा हंसराज, दयानन्द द्वारा सम्मत राष्ट्रवादी शिक्षा से ही अनुप्राणित एवं प्रभावित थे।

डी.ए.वी संस्थाओं का विचलन—आर्यसमाज की विकास प्रक्रिया के साथ-साथ डी.ए.वी. संस्थाओं का विकास स्वाभाविक था। चेष्टा यह होने लगी कि प्रत्येक आर्य समाज के साथ एक डी ए वी. स्कूल जुड़ जाये। कुछ सम्पन्न आर्य समाजों ने तो अनेकों स्कूल खोलकर अपनी स्थिति को आर्थिक दृष्टि से सबल बनाने का उद्देश्य ही बना लिया। जनता ने भी भरपूर सहयोग दिया फलत. स्कूलों व कालेजों के भव्य भवन निर्मित हो गये, बड़ी-बड़ी जायदादें, जमीन आदि भी, उन्होंने, क्रय कर ली डी ए.वी. आदि आर्य शिक्षा संस्थाओं को सरकारी पाठ्यक्रम पढ़ाने की शर्त पर सरकारी अनुदान भी प्राप्त होने लगा। आय के स्रोत बढ़ जाने तथा स्कूलों के वैभव व प्रतिष्ठा लाभ के व्यामोह से इन संस्थाओं में ऐसे आस्था-विहीन एवं अवसरवादी व्यक्ति, आर्य समाज के सदस्य बनकर प्रवेश कर गये जिन्हें न तो सिद्धान्तों पर आस्था थी और न आर्य समाज से हार्दिक स्नेह या लगाव था। परिणाम स्वरूप आर्य समाज का ठोस और सिद्धान्तों के लिये जुझारू स्वरूप शिथिल हो गया। डी. ए.वी संस्थायें जिस लक्ष्य को लेकर स्थापित की गई थीं, उस लक्ष्य की ओर इन तथाकथित आर्य अधिकारियों की कोई रुचि नहीं रह गई केवल औपचारिकतायें पूरी करने के लिये प्रार्थना, धर्म शिक्षा तथा यदा-कदा प्रवचनों की व्यवस्था करके प्रशंसा अर्जित करना इनका धर्म बन गया। यहीं से इन संस्थाओं का विचलन शुरू होता है जिसका परिणाम यह देखने में आ रहा है कि सरकारी करण की चपेट में आकर ये संस्थायें आर्य समाज के हाथ से निकल गई हैं और निकल रहीं हैं।

अनुदान का व्यामोह

सरकारी धर्म निरपेक्ष पाठ्यक्रम, सरकारी अनुदान एव सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप ने इन संस्थाओं के उस उद्देश्य को ही समाप्त कर दिया जिसमें आर्य समाज का प्रचार-प्रसार शामिल था यहां तक कि संस्था प्रबन्धकों के लिए भी अनुदान प्राप्ति तथा उसके उपयोग की अनैतिक तिकड़मबाजी के लिये विवश कर दिया गया जिससे आर्य संस्थाओं और आर्य समाज की साख को भारी धक्का लगा फलत:राष्ट्रीय शिक्षा के सशक्त केन्द्र समझी जाने वाली ये संस्थायें पद, पैसा और प्रतिष्ठा प्राप्त करने के अखाड़े और व्यावसायिक केन्द्र समझे जाने लगे। यही कारण है कि कई प्रान्तों में सरकार ने इन संस्थाओं में नियुक्तियों व वेतन देने आदि के अधिकार छीनकर प्रबन्धकों को अधिकार हीन बना दिया है। सरकारी चयन प्रक्रिया से इन वैदिक संस्थानों में मुसलमान, ईसाई व पौराणिक प्रिंसिपल या संस्था प्रधान नियुक्त किये जा सकते हैं। यह भयावह स्थिति आर्य समाज के आसन्न अवसान का अल्टीमेटम है जिसके खिलाफ समस्त आर्य जगत के ऋषि भक्तों को धर्मयुद्ध छेड़ना होगा। इस अगति का कारण वे संस्थाधिकारी तथा छद्मवेशी घुसपैठिये तत्व हैं जिन्होंने पद, पैसा प्रतिष्ठा की वेदी पर महर्षि के स्वप्नों को बढ़ा कर विश्वासघात किया है।

डी.ए.वी. व आर्य संस्थाओं के साथ जुड़े अभिशाप

इन संस्थाओं के साथ जुड़े अभिशापों में कुछ ऐसे अभिशाप हैं जिन्हें सुधार की दृष्टि से जानकर सचेष्ट होने की आवश्यकता है जैसे (१) सरकारी पाठ्यक्रम, सरकारी अनुदान, सरकारी शर्तों व सरकारी हस्तक्षेप ने आर्य शिक्षण संस्थाओं में स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसंस्कृति व आर्ष वैदिकी शिक्षा के द्वार पूर्णत: बन्द कर दिये हैं। (२) संस्थाओं के उच्च पदों पर गैर आर्य समाजी तत्व अधिकांशत: हावी हो गये हैं जिन्होंने आर्यों की उपेक्षा करके और अनार्यों को नियुक्तियां देकर संस्थाओं का माहौल अनार्यत्व से युक्त बना दिया है (३) विद्वान, कर्मठ व सच्चे पक्के आर्य समाजी अपने को शक्ति व साधन विहीन मानकर तटस्थ एवं किंकर्तव्य विमूढ़ हो चुके हैं (४) इन संस्थाओं में सहशिक्षा की, दुर्भाग्यपूर्ण परम्परा चल पड़ी है जिसका महर्षि दयानन्द ने घोर विरोध किया था (५) दयानन्द के नाम पर चल रहा इन संस्थाओं में नेकटाई, गुडमार्निंग, अंग्रेजी बोलचाल की प्राथमिकता "नमस्ते" का बहिष्कार, सरस्वती वन्दना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इंगलिश डिस्को डांस, अंडों का स्वल्पाहार, आर्य समाज विरोधी अध्यापकों व अध्यापिकाओं की भरमार तथा यज्ञ, वैदिक पर्व, धर्म शिक्षकों का अभाव आदि विडम्बनायें बुरी तरह जुड़ चुकी हैं जिन्होंने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य को हास्यास्पद बनाकर रख दिया है(६) डी.ए.वी संस्थानों एवं संगठनों जैसे दिल्ली, कानपुर, अजमेर के कतिपय आर्य सक्षम अधिकारी यदि हृदय से यह चाहते भी हैं कि इन संस्थाओं में आर्य समाजी निष्ठा-वान शिक्षक नियुक्त किये जायें तो अधीनस्थ १०० प्रतिशत गैर आर्य समाजी कर्मचारी उन्हें अन्धकार में रखकर आर्य समाजी आवेदकों को अवसर मिलने से वंचित कर देते हैं। इसका परिणाम सामने है कि किन्हीं-किन्हीं आर्य स्कूलों में तो एक भी आर्य समाजी अध्यापक नहीं है और जहां इक्के दुक्के आर्य समाजी हैं भी वे कुण्ठित निराश होकर हां हजूरी करके अपना समय काट रहे हैं। (७) इन संस्थाओं में धर्म शिक्षा की दुर्दशा है गैर आर्य समाजी अध्यापकों की बहुलता वश धर्म शिक्षा या तो दी नहीं जाती है यदि उन्हें बाध्य भी किया जाता है तो वे भ्रष्ट शिक्षा देकर छात्रों में अनास्था व भ्रम उत्पन्न करते रहते हैं। आर्य धर्म शिक्षक की नियुक्तियों को भी प्राय: फिजूलखर्ची समझा जाता है। (८) इन संस्थाओं की स्वायत्तता छिनती जा रही है जिससे अधिकारियों में असन्तोष और गैर आर्य समाजी अध्यापकों आदि में प्रसन्नता की लहर देखी जा रही है इसे दुर्नीतियों का ही परिणाम कहा जा सकता

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बांग्लादेशी घुसपैठियों की बढ़ती संख्या एक गम्भीर समस्या (२)

दीनानाथ मिश्र

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि जहां-जहां से हिन्दू हटा है वहां-वहां से यह देश बंटा है। आज पाकिस्तान बांग्लादेश में जो भाग है वह वही भाग है जहां हिन्दू घट गये थे और तब विभाजन की मांग उठी। विभाजन को स्वीकार करना पड़ा और पाकिस्तान से हिन्दुओं का पूरी तरह निर्मूलन हो गया। करोड़ों लोग अपनी धरती छोड़कर जान बचाकर भारत आए। बीसियों लाख लोग मारे गये। पूर्वी पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी करीब-करीब वही हो रहा है लेकिन धीरे-धीरे। पूर्वी पाकिस्तान और बाद में बंगलादेश में हिन्दुओं की आबादी विभाजन के बाद किस तरह घटी है, इसके आंकड़े दृष्टव्य हैं:—

जनगणना	हिन्दुओं की आबादी का प्रतिशत
१९४१	२८.०
१९५१	२२.०
१९६१	१८.५
१९७१	१३.५
१९८१	१२.१
१९९१	१०.[illegible]

कहां गये यह बांग्लादेश के हिन्दू? बांग्लादेश में (पूर्वी पाकिस्तान) हिन्दुओं के उत्पीड़न का लम्बा इतिहास रहा है। हर दो चार साल बाद भयानक दंगे हुए हैं। कुछ तो विभाजन के पहले ही भारत आ गए। उसके बाद भी २२ प्रतिशत बचे थे। उत्पीड़न से पचास और साठ के दशक में बड़ी संख्या में हिन्दुओं को भारत आना पड़ा। इस्लामी गणराज्य में यही होना था। कुछ धर्मान्तरित हो गए। बांग्लादेश के बनने के बाद शेख मुजीब के शासन में इस देश ने धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार किया, लेकिन उनकी हत्या के बाद बांग्लादेश फिर इस्लामिक कट्टरता की ओर बढ़ने लग गया। हिन्दू उत्पीड़न का सिलसिला फिर चल पड़ा। निर्वासित बांग्लादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन का साहित्य बांग्लादेश में हिन्दुओं के उत्पीड़न की कुछ झांकियां प्रस्तुत करता है। इधर बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठ से दूसरी तरफ भी बहुमत में आकर हिन्दू आबादी का उत्पीड़न करने के नये तरीके निकाल लिये। गृहराज्य मन्त्री पी०एम० सईद ने आबादी के अन्दर स्थानांतरण का संकेत दिया है। कोई भी आबादी अपनी घर बस्ती को छोड़कर आसानी से दूसरे इलाकों में नहीं जाती। मजबूरी में ही जाती है।

बांग्लादेशी भी भारत में गरीबी के कारण आ रहे हैं, लेकिन उनको भारत भेजने के पीछे आर्थिक के अलावा राजनीतिक मंशा भी है। अनेक मुस्लिम देशों से उन्हें मदद भी प्राप्त है। घुसपैठ करने वाली हर गरीब टोली के साथ कुछ कट्टरपंथी इस्लामिक प्रबन्धकर्ता भी आते हैं, जो उनकी खोज खबर रखते हैं। जरूरत पड़ने पर मदद करते हैं। यहां तक कि जमीन जायदाद खरीदने का भी प्रबन्ध कर देते हैं। असल में वोट बैंक के आराधक राजनेताओं का वरदहस्त घुसपैठ को प्राप्त है। वोट बैंक के लिए उनके निहित स्वार्थ घुसपैठ में हैं। वह मतदाता सूची, राशन कार्ड आदि में तो मदद करते ही हैं। साथ ही घुसपैठ जैसे गम्भीर राष्ट्रीय हित के मामले में भ्रम फैलाने वाला वातावरण बनाते हैं। दुनिया के किसी देश में इतनी बड़ी मात्रा में इतने छोटे से काल में कभी घुसपैठ नहीं हुई। अभी कुछ महीने पहले सऊदी अरब से बीस हजार बांग्लादेशी निकाले गए। स्वयं बांग्लादेश ने बर्मा से घुस आए कुछ हजार लोगों को निकाल बाहर किया। घुसपैठ की समस्या अनेकों देशों में है। जैसे जापान में कोरियाई और फिलीपीनी हैं: अमेरिका में मैक्सिको के लोग हैं। जर्मनी में टर्की के लोग हैं। फ्रांस में उत्तरी अफ्रीका के लोग हैं। इंग्लैंड में भारतीय, पाकिस्तानी और बांग्ला देशी हैं, लेकिन इन सबकी संख्या नगण्य है। यह दशकों में लाख को नहीं छूते। एक-एक आदमी के जाने पर कड़ा प्रतिबन्ध है। नागरिकता के नियम सख्ती से लागू होते हैं। सभी तरह की सीमा पर सख्त निगरानी है, लेकिन भारत और बांग्लादेश के बीच की सीमा लगभग पूरी तरह खुली है। लोग लाखों में नहीं, करोड़ों में आ गए हैं और उनका आना जारी है। हमारे गृहराज्य मन्त्री पी०एम० सईद ने यह स्वीकार किया है कि इसका कारण केवल आर्थिक ही नहीं, धार्मिक भी है।

बांग्लादेश के शासक साफ तौर से इन्कार करते हैं कि कोई बांग्लादेशी घुसपैठिया भारत न आया है। पिछले साल जब बांग्लादेश की प्रधानमन्त्री भारत यात्रा पर आई थीं, उन्होंने इस सवाल पर साफ जवाब दिया था कि भारत में बांग्लादेशी नहीं हैं। उनके पास राशनकार्ड हैं। आपकी मतदाता सूची में उनके नाम हैं। आप कैसे कह सकते हैं कि वे बांग्लादेशी हैं, लेकिन यह तो सरकारी रुख है। बांग्लादेश के बहुत से विद्वान और पत्रकार अब लिख और बोलकर यह स्वीकार करते हैं और इसे जायज ठहराने की कोशिश करते हैं। फखरुद्दीन अली अहमद के जमाने से ही असम में बांग्लादेशी घुसपैठियों को प्रोत्साहित किया गया ताकि चुनाव में उनका वोट बैंक मजबूत हो। आज स्थिति यह है कि असम की १२६ विधानसभा सीटों में ४० सीटों पर बांग्लादेशी मुसलमानों का वर्चस्व हो गया है। पश्चिम बंगाल की २९४ विधान सभा सीटों में ६२ सीटें तो उनके प्रभाव क्षेत्र में है ही। इसके अलावा कोई पचास ऐसी सीटें हैं जहां उनका समर्थन निर्णायक होता है। १९७१ में पूर्वी पाकिस्तान में जब पाकिस्तान की फौज ने जब दमन चालू किया था तो एक करोड़ बांग्लादेशी भागकर भारत आ गए थे। बांग्लादेश बन जाने के बाद भी उनमें से बीस लाख नहीं लौटे।

भारत में इस समय एक ही राज्य है जहां मुस्लिम बहुमत है, जम्मू-कश्मीर। राज्य की मुस्लिम आबादी का चरित्र ही कश्मीर समस्या की जड़ है। पिछले ५ वर्षों से कश्मीर घाटी में एक हफ्ता भी शान्ति से नहीं गुजरा है। भारत का शायद ही कोई क्षेत्र हो वहां के सैनिक पाकिस्तान से प्रेरित आतंकवाद से जूझने में वहां शहीद न हुए हों। १९४७ में कश्मीर में ५२ प्रतिशत मुसलमान और ४८ प्रतिशत हिन्दू थे। आज मुसलमानों की आबादी ६२ प्रतिशत से भी ज्यादा हो गयी है। घाटी से तो अभी चार साल पहले तमाम कश्मीरी पण्डितों को उत्पीड़ित कर भगा दिया गया। आज उसमें से अनेकों दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं।

बहुमत बनाते जाना जेहादी तौर तरीके इस्तेमाल करते जाना, यह इस्लाम की रग-रग में है। इस समय दुनिया के कम से कम ९ क्षेत्रों में मुसलमान गृहयुद्ध में लगे हैं। दर्जनों ऐसे क्षेत्र हैं जहां अपनी सत्ता होने के बाद भी कट्टरतावाद के लिए लड़ाई जारी है। ऐसे में बांग्लादेशी घुसपैठ एक भीषण समस्या है। पूर्वोत्तर के आतंकवादियों का प्रशिक्षण बांग्लादेश में भी होता है। पाकिस्तान की गुप्तचर व्यवस्था आई. एस. आई. इसमें संलग्न है। बांग्लादेशी घुसपैठियों का एक यह भी आयाम है। हथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी से भी कहीं-कहीं इनकी चूलें मिली हुई नजर आती हैं, लेकिन वोट बैंक के आराधक इसमें से कुछ भी देखना सुनना पसन्द नहीं करते। उनके लिए अगले पन्द्रह दिन की राजनीति ही महत्वपूर्ण है और पांच साल की राजनीति पराकाष्ठा। वह वोट गिनते हैं, घुसपैठियों को नहीं।

मासूम बच्चों के भविष्य के साथ तस्करों द्वारा क्रूर खिलवाड़

बेतिया। बेतिया शहर मे नशीले पदार्थों--गाजा, अफीम, हेरोइन आदि की तस्करी नेपाल के रास्ते धड़ल्ले से हो रही है। पहले तस्कर इन पदार्थों को महानगरो में बिक्री के लिए चोरी छुपे ले जाते थे, परन्तु अब बेतिया मे ही इन नशीले पदार्थों की खपत का अनोखा उपाय इन असमाजिक तत्वो ने ढूंढ निकाला है। इसके लिए नगर मे कुछ अड्डे बनाए गए है, जहा विद्यालय जाने वाले छोटे छोटे अबोध बच्चों को फुसलाकर ले जाया जाता है और गाजा, अफीम तथा अन्य नशीले पदार्थों को पीने के लिए उकसाया जाता है। एक भी बच्चे के इनके चंगुल मे फसते ही उसी के माध्यम से अन्य बच्चों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित किया जाने लगता है। इस तरह से मुफ्त के नशा द्वारा अबोध बच्चो को नशे का आदी बना दिया जाता है। तत्पश्चात वे अभिभावको से झूठ बोलकर या घर से चोरी कर पैसे लाते है और इन तस्करो के एजेन्टो से नशीले पदार्थ खरीदने को बाध्य हो जाते हैं।

तस्करो के इस कृत्य से न केवल देश की आर्थिक क्षति हो रही है, अपितु देश के भविष्य इन नौनिहालो का मस्तिष्क ही विकृत होता जा रहा है। बचपन से हीं चरित्रहीन बनाकर देश के भावी नागरिको को भ्रष्ट किया जा रहा है। बेतिया मे आजकल पागल एव विकृत मस्तिष्क के बच्चो व किशोरो की संख्या मे अचानक वृद्धि देखने मे आ रही है तथा अचानक बाल अपराधियों की सख्या भी बढ़ गयी है। इसके पीछे भी बचपन से गांजा आदि नशीले पदार्थ पीने की आदत ही कारण है। दमा रोग व मस्तिष्क रोग का कारण भी यही है।

ज्ञातव्य है कि भिस्वा-सिकटा से नरकटियागंज-चनपटिया होते हुए सिकटा से रामनगर-लौरिया होते हुए बेतिया तथा सिकटा से मैनाटाड-भिवाघाट होते हुए बेतिया आने वाले मार्ग से यह अवैध कारोबार हो रहा है बेतिया में नशीले पदार्थों की बिक्री के अड्डे, जो इन तस्करो के जाल मे फंसे बच्चो से पूछताछ करने पर ज्ञात हुए हैं, वे इस प्रकार हैं--(१) छावनी चौक (सुप्रिया रोड) प्रसाद चाय की दुकान, यहा बिक्री के साथ पिलाने की भी व्यवस्था है। (२) छावनी चूरिया माई का स्थान, यहा नशा पीने-पिलाने का अड्डा है। (३) सत्यनारायण पेट्रोल टकी के पश्चिम पुल पर चाय की दुकान (४) उत्तरवारी पोखरा के पश्चिम रामजानकी मठिया। यहा साधु को धमकी देकर तस्कर अपना अड्डा बनाए हुए हैं। (५) काली बाग गड़-वान टोली मे कबाड़ी की दूकान के बगल में दो मंजली इमारत में।

आश्चर्य है कि बेतिया जिला मुख्यालय है और सारे बड़े-बड़े प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों के कार्यालय वहीं हैं। बड़े-बड़े अपराधियो की खोज में लगे इन अधिकारियो को यह ज्ञात नही है कि अपराधी बनाने के अड्डे तो पूरे शहर मे खुले हुए हैं, जहा छोटे-छोटे बच्चो को जबरन अपराधी बनाने की ट्रेनिंग दी जा रही है। यदि इसे शीघ्र रोका न गया तो पूरे बेतिया के भविष्य को अन्धकारमय होने से बचाया नही जा सकेगा।

मन्त्री आर्य समाज बेतिया

आर्य शिक्षण संस्थायें

(पृष्ठ ९ का शेष)

है। (९) सरकारी चयन प्रक्रिया के फल स्वरूप पौराणिक, विधर्मी तथा गैर आर्य प्रिंसिपल, प्रधान नियुक्त हो जाने से भी थोड़ी बहुत चल रही वैदिक गतिविधियों को समाप्त कर दिया जाता है। कई संस्थाओं में यह स्थिति बन चुकी है। (१०) इन सस्थाओं मे वह सब कुछ पढ़ाना पड़ता है जो इतिहास विरुद्ध ज्ञान है। (११) इन संस्थाओं को कुछ वादों ने भी न्यूनाधिक रूप में दुष्प्रभावित एवं लांछित कर रखा है जैसे जातिवाद, परिचयवाद, प्रान्तवाद, राजनीतिक, जैक-चैकवाद तथा चमचागीरीवाद आदि। इससे सच्चा आर्य कुंठित और निराश हो रहा है।

डी०ए०वी० (आर्य) संस्थाओं का भविष्य

इस विवेचना से यह स्पष्ट हो गया है कि संवैधानिक पूर्वाग्रहों, पाश्चात्य संस्कृति के व्यामोह, अनुदान प्राप्ति की ललक तथा आस्था विहीनों की घुसपैठ से ये संस्थायें आर्य समाज के प्रचार-प्रसार कार्य में पूर्णतः विफल सिद्ध हो रही हैं। आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर के निदेशक एवं प्रधान दत्तात्रेय आर्य द्वारा लिखित पुस्तक "आर्य शिक्षण संस्थाओं का भविष्य" प्रत्येक आर्य समाजी को पढ़नी चाहिये जिसमें श्री आर्य जी ने संविधान की पक्षपात पूर्ण धाराओं की निर्भीकता से आलोचना की है और उच्च न्यायालयों की उपेक्षा का उल्लेख किया है। ज्ञातव्य है कि संविधान में धर्म शिक्षा देने आदि की जो सुविधायें अल्पसंख्यकों की संस्थाओं को दे रखी हैं वे बहु-संख्यक वर्ग की शिक्षा संस्थाओं को नहीं दी हैं इन पक्षपात पूर्ण नीतियों से हमारी संस्थाओं का पवित्र उद्देश्य ही नष्ट हो गया है। श्री दत्तात्रेय आर्य ने अपने गहन एवं अनुभव सिद्ध चिन्तन के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात पुस्तक "Ihe Arya Samaj Hindu, wihout Hinduism" लिखी है जिसमें लाला लाजपतराय आदि के कथनों एवं सशक्त प्रमाण देकर आर्य समाज को हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय न मानकर अल्पसंख्यक वर्ग प्रमाणित किया है क्योंकि आर्यसमाज वेद विरुद्ध मान्यताओं का अनुसरण करने वाले हिन्दू समुदाय से कई दृष्टियों से भिन्न है जैसे मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध अवतारवाद, जातिवाद तथा तन्त्रवाद आदि।

ऐसे वेद विज्ञानानुयायी आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं को तथाकथित धर्म निरपेक्षता की कीचड़ में धकेल कर और उसके स्वरूप का अपहरण करके संवैधानिक पक्षपात का शिकार बनाना सरासर अन्याय है और आर्यत्व की शाश्वत अस्मिता के साथ खिलवाड़ करना है। यही विषय उक्त ग्रन्थ में प्रतिपादित है जो उन आर्य समाजियों के लिये पठनीय है जिनका झुकाव समझौता वाद और हिन्दूवाद की ओर है। यदि संविधान की तुष्टीकरण परक धाराओं में समता मूलक संशोधन नहीं किया जाता है तो हमारी शिक्षा संस्थाओं का सरकारी धर्म निरपेक्षता की दलदली धारा में विलयीकरण सुनिश्चित है जिसका क्रम हमारी संस्थाओं को आत्मसात कर भी चुका है महर्षि दयानन्द के विश्वकल्याणकारी चिंतन, त्याग व श्रम को निष्फल करने वाला तथा आर्ष ज्ञान के प्रचार-प्रसार पर सदा-सदा के लिये विराम लगा देने वाला यह दुर्निवार्य संकट प्रत्येक सच्चे आर्य को व्यथित बना रहा है। हमारे आस्तीन के सांपों की कुत्सित चेष्टायें भी आर्य समाज को विनाश के गर्त में धकेल रही हैं इनके विरुद्ध भी धर्म युद्ध छेड़ने की जरूरत है। बाह्य व हरी और आन्तरिक खतरों से निपटने के लिये हमें ऋषि व वेद भक्ति का व्रत लेकर समर्पित भाव से "उत्तिष्ठत, जागृत के मन्त्र को साकार करना पड़ेगा। वर्तमान शिक्षा संस्थाध्यक्षों को भी स्वार्थों से ऊपर उठकर सोचना होगा कि वे अपने कार्यों के प्रति कितने ईमानदार हैं अन्यथा परमपिता परमात्मा तथा इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा।

अतीत से कट कर भविष्य का निर्माण नहीं: चन्द्रशेखर

रानी दत्ता आर्य विद्यालय का उद्घाटन

नई दिल्ली, १६ सितम्बर। पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्र शेखर ने आज कहा कि हम अपनी परम्परा के श्रेष्ठ अंश से हट कर उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की कल्पना नहीं कर सकते। उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि भारत अपनी मौजूदा कठिनाइओ से उबरकर फिर विश्व का मार्ग दर्शन करने की शक्ति हासिल करेगा।

श्री चन्द्र शेखर यहा एक प्रभावशाली समारोह मे अनाथ बालक-बालिकाओ के लिए नव निर्मित 'रानी दत्ता आर्य विद्यालय" का उदघाटन करने के बाद उपस्थित जन समूह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि इस देश को जाने बिना इसे बनाने का प्रयत्न हो रहा है। हम अपने अतीत को भूल रहे है और भविष्य बनाने चले हैं।' 'इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी कि दो तीन सौ साल पुरानी सभ्यता वाले देश हमे राह दिखा रहे हैं।'

भारत के पाच हजार साल पुराने इतिहास का जिक्र करते हुए श्री चन्द्रशेखर ने कहा, हम अपनी जड से कभी कटे नही, इसलिए जिन्दा रहे। आधुनिक काल मे स्वामी दयानन्द ने भारतवासियो को नया आत्म विश्वास दिया और किसी के सामने घुटने ना टेकने की संकल्प शक्ति जगाई। उनका सदेश हमे नयी चुनौतियो से उबरने की प्रेरणा देगा।

श्री चन्द्र शेखर ने कहा, यह एक शर्मनाक स्थिति है कि आजादी के ४८ वर्ष बाद भी करोड़ो बच्चे स्कूल नही देख पाते और आबादी का विशाल तबका जीवन यापन की बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। परन्तु इस देश की अस्मिता और उसमे निहित सनातन शक्ति यह भरोसा दिलाती है कि आज का अंधेरा कल मिट जाने वाला है। उपस्थिति जनता ने हर्ष ध्वनि से उनके इस कथन से सहमति प्रकट की।

दिल्ली सरकार के शिक्षा एव विकास मन्त्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने अध्यक्षीय सम्बोधन मे अनाथ बच्चो के पालन पोषण को "ईश्वरीय कार्य" बताया। सामाजिक पुनरुत्थान मे स्वामी दयानन्द के योगदान का जिक्र करते हुए उन्होंने दुष्यन्त कुमार के इस काव्यांश को उद्धृत किया—

'सिर्फ हंगामा खडा करना मेरा मकसद नहीं।
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए॥"

श्री चन्द्र शेखर ने बताया कि उनकी शिक्षा-दीक्षा एक आर्य शिक्षण सस्थान में हुई थी . उन्होंने और श्री साहिब सिंह वर्मा ने दरियागज मे स्थापित आर्य अनाथालय की प्रबन्ध व्यवस्था पर सन्तोष प्रकट करते हुए इसे देश की आदर्श समाज सेवी संस्था माना।

श्री वीरेश प्रताप चौधरी ने जानकारी दी कि आर्य अनाथालय और इससे जुडी सस्थाओ मे ११०० ग्यारह सौ बालक-बालिकाओ के आवास एव शिक्षा का प्रबन्ध है।

रानी दत्ता आर्य विद्यालय का निर्माण होने से आर्य अनाथालय मे रह रहे ६५० बालक-बालिकाओ को उसी स्थान पर शिक्षा ऐने की भी व्यवस्था हो गई है। आर्य अनाथालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने १९१८ मे तब की थी जब महामारी फैलने से दिल्ली मे हजारों बच्चे माता पिता के संरक्षण से वंचित हो गए थे।

गाधीवादी विचारक यशपाल जैन, विधायक प्रो० पूर्ण कुमार चदला व डा० अशोक वालिया, आर्य समाजी नेता श्री सूर्यदेव, विवेकानन्द कालेज की प्राचार्या डा० (श्रीमती) राज वधवा और अनेक गणमान्य नागरिक इस अवसर पर उपस्थित थे।

रानी दत्ता आर्य विद्यालय का निर्माण होने से आर्य अनाथालय मे रह रहे ६५० बालक-बालिकाओ को उसी स्थान पर शिक्षा देने की व्यवस्था हो गई है।

हमीर सिंह रघुवंशी
अधिष्ठाता

काका हाथरसी नहीं रहे

हाथरस, १८ सितम्बर। जाने-माने हास्य कवि काका हाथरसी का आज तड़के यहा उनके निवास पर निधन हो गया। वह ८९ वर्ष के थे।

प्रभुलाल गर्ग उर्फ काका हाथरसी पिछले एक महीने से गंभीर रूप से बीमार थे और चार दिन पहले उन्हे आगरा के जी. जी मेडिकल इन्स्टीट्यूट से यहा लाया गया था। आज तड़के पौने तीन बजे उन्होने अन्तिम सास ली। सयोग से आज ही काका का जन्म दिन भी था।

हास्य सम्राट काका हाथरसी उस महान व्यक्तित्व का नाम है जो अपने समूचे जीवन काल में विश्व भर को हंसी जैसी दुर्लभ चीज बांटता रहा। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक जैसे कथित विषयों पर काका हाथरसी ने हमेशा हास्य-व्यंग्यो के माध्यम से प्रकाश डाला। काका ने मृत्यु से बहुत पहले ही अपने सम्बन्धियों और प्रशसको से अपनी मृत्यु पर हमेशा रोने से मना किया। उनका कहना था कि उनकी शवयात्रा पर लोग रोये नहीं बल्कि ठहाके लगाये यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। हास्य के प्रेमी ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के साथ कंधे से कधा मिलाकर साथ देने वाले कवि, समाज सेवी, प्रशसको और सम्बन्धियो ने उनकी मृत्यु पर कुछ विशेष प्रतिक्रियाएं व्यक्त की है।

काका हाथरसी ने करीब ७० वर्ष तक काव्य साधना की। वह ४५ वर्ष तक विभिन्न काव्य मंचों पर लोकप्रियता के शिखर पर रहे। 'कला रत्न' की उपाधि से अलंकृत काका हाथरसी को १९८५ में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।

उन्होंने हास्य व्यग्य के रचनात्मक साहित्य की ४२ पुस्तकें लिखी। काव्य के अलावा सगीत जगत भी काका को हमेशा याद रखेगा। उन्होंने १९३२ मे 'सगीत कार्यालय' की स्थापना की। इसके तहत सगीत पर करीब डेढ़ सौ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए। उन्होंने १९३५ मे 'सगीत' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जो ६० वर्ष से नियमित प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका हिन्दी की सबसे पुरानी मासिक पत्रिका के रूप मे प्रतिष्ठित है।

भक्त परमात्मा के दर्शन करने से अभय हो जाता है

आर्य समाज में वेद प्रवचन

देहरादून। आर्यसमाज धामावाला के रविवारीय सत्संग में प्रवचन करते हुए गुरुकुल अयोध्या के पूर्व कुलपति आचार्य ज्ञानेन्द्र भटनागर ने कहा कि अभय होने के लिए परमात्म-दर्शन करना होता है। सच्चे विद्वान सदा उसका दर्शन करते रहते हैं। सामान्य जनों को भी उसके दर्शन होते रहते हैं परन्तु वे उसे पहचानते नहीं क्योंकि उन्होंने उसके गुणों की अवहेलना करते हुए अपने से मिलते-जुलते किसी शरीर-धारी की कल्पित मूर्ति अपने मन-मस्तिष्क में बिठा रखी है।

सामान्य राह-भूले व्यक्ति को उसके गन्तव्य स्थान की ओर जाने वाला रास्ता यदि कोई बता दे तो उस रास्ता बताने वाले को वह 'भगवान्' मानने को तैयार हो जाता है परन्तु अगणित उपकार जिस परमेश्वर ने किए हैं; उसे वह भूला रहता है।

वेद के आधार पर आपने बताया कि ईश्वर इतना महान् है कि जिस सृष्टि का निर्माण करके उसके अणु-अणु में वह व्याप्त हो रहा हैं, उसी का ओर-छोर ढूंढ पाना मानव-बुद्धि और विज्ञान की क्षमता के बाहर हैं। वह सूक्ष्म इतना है कि सब भौतिक पदार्थों की अपेक्षा भी जो सूक्ष्मतर है, उस आत्मा में भी उसका प्रवेश है।

उपसंहार करते हुए आचार्य जी ने कहा—"स्वाध्याययोग-सम्पत्तया परमात्मा प्रकाशते"—अर्थात स्वाध्याय और योग दोनो की सम्पत्ति प्राप्त कर लेने पर ही उसके दर्शन होते है।

आर्य समाज के प्रशासक श्री देवदत्त बाली ने आचार्य जी को धन्यवाद दिया और बालिकाओ के लिए आर्य समाज के आने वाले कार्यक्रमों की सूचना दी।

—देवदत्त बाली

आर्य वीर महासम्मेलन व शिविर को विशाल स्तर पर करें

दिनाक ३-९-९५ को आर्य समाज आजमगढ़ में आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश के कार्यकारिणी तथा आजमगढ़ कमिश्नरी के समस्त जिले की समाजों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री सौदान आर्य (मेरठ) की अध्यक्षता में हुई। अपने उदबोधन में आर्य वीरो का आहवान किया कि अपने चरित्र को सुधारते हुए निःस्वार्थ तथा उत्साह के साथ सगठन के कार्यों में लगकर आर्य समाज की शक्ति को बढ़ायें। उन्होंने कहा कि लोगो को अपने से जोड़ने के लिए स्वय के सुआचरण की आवश्यकता है। मात्र भाषण या प्रवचन से हम लोगों को नहीं जोड़ सकते।

उन्होंने आर्य वीरो के स्वाध्याय पर अधिक बल दिया। आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र० द्वारा दिनांक २७ से ३१ दिसम्बर को आयोजित द्वितीय आर्य वीर महासम्मेलन तथा पदाधिकारी शिविर के प्रति हर्ष व्यक्त करते हुए उन्होंने इसे विशाल तथा भव्य रूप से आयोजित करने की प्रेरणा देते हुए (प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से) हर सम्भव सहयोग देने की घोषणा किया।

पुस्तक-समीक्षा

मानसरोवर के राजहंस

ले०—श्री बृजभूषण जी

पृष्ठ—२०८, मूल्य—७५) रुपए

प्रकाशक—किताबघर, गांधीनगर दिल्ली-३१

पुस्तक के नाम से ही यह आभास होता है कि जीवनीय क्षणो मे मानव के गुण, पक्षियो मे हंस या परमहंस कब बन पाते है। सरोवर मे हंस मोती चुगता है और यह मानव शुभकर्मो को प्राप्त कर मानस सरोवर का हंस या राजहंस बनता है।

मानव जीवन रथी-महारथी, सन्त-तपस्वी या ऋषि-महर्षि का जीवन बनाता है। इन्ही जीवनीय क्षणों में हंस अपने ज्ञान कर्म रूपी पखो के द्वारा जीवन यापन करता है।

लेखक महोदय ने इस प्रकार के उन महापुरुषों का चयन किया है जिनको तीन भागो मे विभाजित कर सकते हैं।

प्रथम वह है जो परमहंस हैं यथा—अगस्त्य, कणाद, महावीर स्वामी रामानुज, स्वामी दयानन्द आदि।

द्वितीय—हंस कोटि के है यथा—रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दर्शनानन्द ज्ञानदेव, भुजदेव, ब्रह्मदेव आदि।

तृतीय—राजहंस कोटि के महापुरुष है जैसे—आज के युग के नेता व राजारघु, राम, जयवर्धन, कौशलराज, प्रबुद्धदेव-वीरसिंह राजसिंह आदि के कथानक इतिहास के पृष्ठों से निकालकर इस मानसरोवर में हंसों को मुक्ता चुनने हेतु रखा है। ऐसे इतिहास प्रसिद्ध महापुरुषों के जीवन को यदि हम भावी पीढ़ी की जानकारी देंगे तो हमें विश्वास है कि यह मानव अवश्य ही हंस की किसी कोटि में तो स्थिर होगा ही।

लेखक ने धर्म दर्शन रीति नीति परक नई पीढ़ी को परिचय कराने का सफल प्रयास किया है। जन-जागृति की आवश्यकता को भी अनुभव करके राष्ट्र के गौरवमय अतीत को आज के दूषित वातावरण से सुखमय बनाने का जो प्रयास किया है वह स्तुत्य है।

(२)

सौरभ

ले०—दिनेश धर्मपाल

पृष्ठ—११६, मूल्य—४०) रुपए

प्रकाशक—हिमांचल पुस्तक भण्डार

सरस्वती भण्डार गांधीनगर दिल्ली-३१

मानव जीवन शुभ अशुभ कर्मो का एक पुंज है। इस जीवन रूपी बगिया में नाना पुष्पों की सुरभित अच्छी लगने वाली सुगन्ध है सौरभ का अर्थ है सुगन्धि। मानव जीवन भी एक सयोग है विचारों का पुतला है विचार नहीं मिटते हैं। अत मानव धर्म शुभ कर्मों से प्रेरित होकर व्यक्ति समष्टि की ओर प्रवृत होता है। मानव जीवन में सुरभित सुगन्धि शुभ विचारो की हो तो उपयुक्त है। अच्छे-बुरे विचार ही मानव की शृंखला है जो मानव को जिन्दा रखते हैं।

नैतिकता का आदर्श मानव जीवन की सबसे महान उपलब्धि है ऐसा व्यक्ति आगे चलता और अनगिनत जन उसके पीछे आते जाते हैं। यह जीवन पद्धति इस प्रकार के ही लोगों से बन रही है कुछ तत्व अपने आदर्शो का झूठा ढिंढोरा पिटवाते हैं महानता उधार या मोल लेते हैं।

अच्छे रत्नों में उन शाश्वत गुणो को खींच कर लाये जिनमें विश्पला की भांति नारीत्व, भरत की तरह भ्रातृत्व, सुग्रिव का उत्सर्ग भाव, गुरु नानकदेव द्वारा समत्वभाव, विदुर की सज्जनता, देवव्रत का संकल्प, कर्ण की मैत्री आदर्श, ये ऐसे सुरभित वाटिका के पुष्प है जिनके द्वारा विचारों की सुगन्धि फैले—

लेखक का प्रयास कथानकों का चयन स्वच्छ निर्मल है प्रकाशक धन्य-वाद है जो इस सुगन्ध को सदा फैलाने में पथ के भागीदार हैं।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक

मुस्लिम युवती व युवक हिन्दू बनें

कानपुर। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने २० वर्षीय मुस्लिम युवती सबीना सिद्दीकी को उसकी इच्छानुसार शुद्धि संस्कार करके वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। उसका नाम शान्ता रखा गया। इसके पश्चात उसका विवाह हिन्दू युवक रंजीत कुमार के साथ कराया गया।

इस प्रकार श्री आर्य ने खलासी लाईन निवासी २६ वर्षीय मुस्लिम दुकानदार श्री असलम को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म में प्रवेश कराया। उसका नाम अनूप कुमार रखा गया। शुद्धि समारोह में ग्वाल टोली बाजार के काफी दुकानदार भी सम्मिलित हुए: उपस्थित लोगो ने अनूप व शान्ता से प्रसाद ग्रहण कर स्वागत किया। —बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

क्या यह चमत्कार

(पृष्ठ १ का शेष)

एक बार की घटना है कि एक महात्मा जी बिना टिकट रेल में पकड़े गये पैसा न देने पर उनके बाल सिर मुंडवाया गया। बस महात्मा जी का ब्रह्म वाक्य हुआ कि मेरे यह बाल-रामायण के अन्दर मिलेंगे। जो रामायण खोले तो उसमें बाल दीख जाए। परिणामत महात्मा जी का बाल क्या हुआ वेतार का तार हो गया। चाहें अपने सिर का ही बाल झड़कर गिरा हो, देखने पर महात्मा जी का ही बाल है।

जिस परिवार में बच्चे न होते हो, या बच्चा बीमार हो, गण्डा तावीज ले लो या शुक्रवार की दोपहर की नुमाज पर मुल्लाओं से फूंक मरवा लो। क्या ढकोसला है गण्डा तावीज मुल्ला की फूंक दरगाह की मनौती हमारा कल्याण कर देगी।

सामाजिक संगठन की गन्ध—

इधर हिन्दू जमायतो ने इस घटना को समाज के संगठन के लिए भगवान की महिमा बताया है।

बदनाम—चन्द्रास्वामी ने कहा उन्होंने भगवान गणेश को कल इस चमत्कार के लिए जागृत किया था उनके ही कहने पर चमत्कार हो रहा है।

सीताराम केसरी का आरोप है कि संघ और विहिप ने लोगों की धार्मिक आस्था को भुनाने की साजिश की और सुनियोजित अफवाह को तरीके से दूर-दूर तक फैलाया। हिन्दू महासभा ने "देवमुक्तियज्ञ" के तहत परिणाम बताया तो चन्द्रा स्वामी ने इसे अभी चमत्कार की शुरूआत कहा है।

श्री ज्योति वसु ने कहा कि सोची-समझी साजिश पर क्या कहूं। कि आज कुछ भी कहना मुश्किल है।

न जाने कितनी घटनायें रोज होती है लोग तो यहा तक कहते हैं कि उन्होंने मदर मेरी की प्रतिमा को आंसू बहाते देखा है। चमत्कारों की भर-मार पर प्रतिक्रिया है कि चमत्कार मानव से नहीं किन्तु भगवान ही अपनी शक्ति से कुछ कर दें तो वही चमत्कार होगा।

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने इस लुटनी आर्य जाति को झूठे विश्वासों अन्ध श्रद्धाओं से हटाकर बुद्धिगम्य विचारो का बोध कराया। समझ मे तब आता जब गणेश जी दूध के बजाए लड्डू खाते जो उनका प्रिय भोजन था उनका दूध पीना आश्चर्य जनक है।

धर्म के जानकार यदि सही विवेचना कर समाज को दें तभी समाज का सुधार सम्भव हो सकेगा। अन्यथा—

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

पुरोहित की आवश्यकता

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-१०- [illegible] लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licansed to post without prepayment Licence No. U (C) [illegible] Post in N.D.P.S.O.on 28,29-9-1995

स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्मृति दिवस

१५ अक्टूबर १९९५ दिन रविवार

समय बीतते देर नहीं लगती है। 'आज पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अवसान को एक वर्ष व्यतीत हुआ। उनकी स्मृति में १५ अक्टूबर १९९५ को एक भव्य आयोजन लालकिला मैदान दिल्ली मे समय २ बजे से ५ बजे तक किया गया है।'

आप सभी आर्यजनों से प्रार्थना है कि अपने प्रिय आर्य नेता के आयोजन को सफल बनाने हेतु अधिक से अधिक संख्या में पधार कर सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करें और विद्वानो के भाषणो से लाभ उठायें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री प्रिंटर मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक ३४)   दयानन्दाब्द १७१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१   आश्विन शु० १५   सं० २०४८ ८ अक्तूबर १९९१

तमिलनाडु में मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा धर्मान्तरण की कोशिशें जोरों पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने युद्धस्तर पर मोर्चा सम्भाला

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव प्रान्त के दौरे पर रवाना

नई दिल्ली ३० सितम्बर। तमिलनाडु के रामानाथपुरम् तथा मदुरै आदि जिलों में मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्व हरिजन जनता को बहला फुसलाकर तथा दूसरे प्रलोभनों के द्वारा इस्लाम धर्म कुबूल करवाने के लिए एक बार फिर सक्रिय हो गये हैं। इन देशद्रोही तथा विधर्मियों की चालों को निष्फल करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने भी मोर्चा सम्भाल लिया है। श्री वन्देमातरम् जी गत सप्ताह ही मदुरै के लिये रवाना हो गये थे। वे इस समय लगातार तमिलनाडु के पांच दक्षिण जिलों के दौरे पर हैं। वहां एक तरफ दलित वर्ग के हिन्दुओं को वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर यह समझाया जा रहा है कि हिन्दू जाति में पैदा किया गया भेद-भाव स्वार्थी ब्राह्मणों का षड़यन्त्र तथा उनकी मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जनता को वर्णाश्रम व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप समझाकर कथित जातिवाद के बुरे परिणामों को रोकने का प्रयत्न किया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ सरकारों से सम्पर्क करके दबाव द्वारा भी भविष्य में सम्भावित बड़े पैमाने पर होने वाले धर्मान्तरण को रोकने की कोशिशें जारी हैं।

मीनाक्षीपुरम् की घटना से भी भयंकर षड़यन्त्र इस बार रचा गया है। गत जुलाई माह में रामनाथ पुरम् जिले के एक गांव में १८ परिवारों को धन तथा अरब देशों में नौकरी का लालच देकर मुसलमान बनाया गया। इसके बाद इन्हीं मुस्लिम शरारती तत्वों ने एक षड़यन्त्र के तहत कमजोर दलित वर्ग और स्वयं को सवर्ण कहने वाले हिन्दुओं में दंगे भड़का दिये यह सारा काम असामाजिक तत्वों को धन देकर करवाया गया। इस घटना पर सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि कुछ ही दिन बाद तमिलनाडु पुलिस ने दलितों के एक गांव पर सशस्त्र हमला कर दिया। कई गांवों में गोलियां भी चलाईं गयीं। इस घटना ने मुस्लिम सम्प्रदायिक तत्वों का मनोबल और भी ऊंचा कर दिया, उन्हें सार्वजनिक रूप से यह कहने का मौका दे दिया गया कि सवर्ण हिन्दुओं द्वारा दलित वर्ग पर सदैव अत्याचार किया जाता रहा है। जब कि इस्लाम में उन्हें समान दर्जा तथा अरब देशों में नौकरी की विशेष सुविधा प्राप्त होगी। इन घटनाओं के चलते दलितों के कई गांवों में यह आवाज मुखरित होने लगी कि हजारों की संख्या में दक्षिण तमिलनाडु के कई गांव

(शेष पृष्ठ २ पर)

धर्मान्तरण के विरोध हेतु
विशेष कानूनी उपसमिति गठित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने धर्मान्तरण की समस्या से निपटने के लिये श्री सोमनाथ मरवाह की अध्यक्षता में एक विशेष कानूनी उपसमिति गठित की है। श्री विमल वधावन एडवोकेट उपसमिति के संयोजक होंगे। अन्य सदस्यों में सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता न्याय मूर्ति महावीरसिंह जी, श्री कृष्ण मूर्ति, दिल्ली बार काउन्सिल के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर० के० आनन्द शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भी कई अन्य कानूनविदों से विचार विमर्श हेतु सम्पर्क किया जा रहा है।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

तमिलनाडु मे मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्व

(पृष्ठ १ का शेष)

के गांव इस्लाम धर्म अपना लेंगे। ऐसे दुःखद समय में तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी कार्य कर्ताओं ने गांव-गांव और घर-घर जाकर दलितों को वर्णाश्रम व्यवस्था का वास्तविक रूप तथा इसम आई विकृतियों का कारण बताते हुए धर्मान्तरण का मुकाबला करने के लिये युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ दिया है। स्वामी नारायण सरस्वती के स्थान-स्थान पर उपवास रखने से भी उसके अच्छे परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। श्री वन्देमातरम के नेतत्व में आशा है कि वैदिक धर्म की रक्षा का यह कार्य अवश्य ही सफल होगा।

कुछ वर्ष पूर्व उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ ने एक महत्वपूर्ण निर्णय के तहत यह स्पष्ट घोषणा की थी कि लालच या दबाव के द्वारा किया गया धर्मान्तरण अवैध कार्य है तथा किसी भी तरह से धर्म की स्वतन्त्रता के नाम पर यह का यैकरने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इसके आधार पर श्री सोमनाथ मरवाहा जी के निर्देशानुसार श्री विमल वधावन एडवोकेट ने दिल्ली उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दाखिल करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करदी है।

आओ! दानव वृत्ति भगाएं

बाढ़ अनय का, अन्यायों का,
बढ़ता है भू पर अति जाल।
मंडरा रहा मनुजता ऊपर
निर्भय होकर दानव काल॥
रक्षक बनकर मानवता के—
दानवता से हम टकराएं।
आओ! दानव वृत्ति भगाएं॥

भीषण पैदा हुई परिस्थिति—
बढ़ते जाते हैं अब रावण।
हाहाकार मचा है जग में—
आर्तनाद है करता कण-कण:
उठो! राम के पूतों अब तो—
मिलकर अरि से युद्ध रचाएं।
आओ! दानव वृत्ति भगाएं॥

रक्षक बन बैठे हैं भक्षक,
कांप रहा सम्पूर्ण चराचर।
बहती है उल्टी युग-धारा,
आग उगलता आज सुधाकर।
बढ़ो! कृष्ण के वंशज वीरों—
कंसों को फिर मार गिराएं।
आओ! दानव वृत्ति भगाएं॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

शान्ति-यज्ञ

"आर्य समाज के नेता बाल दिवाकर हंस, जी के देहावसान पर शान्ति यज्ञ दिनांक ८-१०-९५ दिन रविवार
समय १ बजे मध्याह्नोत्तर
स्थान—आर्य समाज दीवान हाल, चांद मोर सराय
रेलवे कालोनी आर्य समाज में सम्पन्न होगा।
आर्य जन अधिक से अधिक सख्या में पधार कर श्रद्धासुमन अर्पित करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

प्रभाकर एवं
समस्त पारिवारिक जन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पूर्व प्रधान संचालक

श्री बालदिवाकर हंस दिवंगत

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के पूर्व प्रधान सचालक, स्वतन्त्रता सेनानी श्री बालदिवाकर हस का २९-९-९५ को प्रात: ४ बजे अपने निवास स्थान ४४६, विकास नगर, लोनी स्टेशन लोनी गाजियाबाद, पर देहावसान हो गया। वे ७५ वर्ष के थे। उनके निधन से आर्य समाज और विशेष रूप से आर्य वीर दल को गहरी क्षति पहुची है। उन्होंने वर्षों आर्य वीर दल के माध्यम से आर्य युवाओं का मार्ग दर्शन किया।

श्री हस जी पिछले कई माह से गम्भीर रूप से अस्वस्थ चल रहे थे, उनका उपचार कई योग्य डाक्टरों के सरक्षण मे चल रहा था। अभी कुछ दिन से वे पूर्ण स्वस्थ लग रहे थे। लेकिन गत रात्रि में अचानक वे हम सब को छोडकर चले गए। उनके निधन का समाचार सुनकर सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तत्काल उनके घर पर पहुंच गए। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सायं ४ बजे हिन्डन श्मशान घाट गाजियाबाद में किया गया। इस अवसर पर डा० देवव्रत आचार्य-प्रधान सचालक आर्यवीर दल, हरि सिंह आर्य, रूपचन्द नागर, स्वामी शिवानन्द जी तथा चौ० लक्ष्मीचन्द के अतिरिक्त सैंकड़ों प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

कितनी खतरनाक होती हैं अफवाहें

—सुषमा वर्मा

सात चोरों का एक पुराना किस्सा है। एक बार वे कहीं चोरी करने गए। मालिक बहुत चतुर था। चोरों को कहीं कोई रास्ता न मिला तो उन्होंने संडास के जरिए घर में घुसने की कोशिश की। एक चोर ने अंदर मुंह घुसाया तो खट से तलवार से उसकी नाक कट गई। वह नाक पर हाथ रखकर चिल्लाकर भागा 'हूं... बहुत बदबू आ रही है' दूसरा घुसा तो वह भी नाक पर हाथ रखकर चिल्लाता हुआ भागा फिर तीसरा, चौथा....इसी तरह सातों चोर बारी-बारी से गए और अपनी-अपनी नाक कटवा कर आ गए। किसी ने दूसरे को यह नहीं बताया कि वहां मत जाओ वरना नाक कट जाएगी। क्यों बताते ? जब मेरी नाक कटी है तो तेरी साबुत कैसे रह जाए ?

सो यही हाल यहां भी है। जो भी मन्दिर में गया वह वहां से बाहर आकर यह कैसे कहे कि गणेश जी दूध नहीं पी रहे। जब मैंने पिलाया है तो तुम भी पिलाओ वाली स्थिति थी वहां।

मंदिरो में भगवान की प्रतिमाओ के दूध ग्रहण करने की खबरो ने राजधानी मे ही नहीं, पूरे देश में हलचल पैदा कर दी। जिसे देखो वही दूध लिए मंदिर की ओर दौड़ा जा रहा था। हर कोई गणेश जी को चम्मच से दूध पिलाकर पुण्य कमाना चाह रहा था परन्तु किसी ने भी यह नहीं सोचा कि ऐसा कैसे हो सकता है ? उस वक्त कोई यह मानने को तैयार नहीं था कि यह अफवाह है जो सुनियोजित ढंग से फैलाई गई है।

ऐसा पहली बार हुआ हो ऐसा भी नहीं है। इससे पहले भी स्टोव देवता के आने और रामायण मे बाल निकलने जैसी अफवाहें फैलाई जा चुकी हैं पर इस बार जो अफवाह फैलाई गई वह इतने बड़े पैमाने पर थी कि देश में ही नहीं, विदेश में भी लोग इसकी चपेट में आ गए। यहां तक कि दूध के दाम बढ़ गए और दूध की किल्लत हो गई।

हर कोई इस पर विश्वास कर रहा था। अगर किसी ने लोगो को कुछ समझाना चाहा, उनका भ्रम तोड़ना चाहा तो उसे नास्तिक, भगवान का अपमान करने वाला और न जाने क्या-क्या कहा गया।

रामजस कालेज में साइन्स के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री एम. एम. गुप्ता ने बताया कि वह सरस्वती विहार स्थित एक मंदिर में गए। उन्होंने चम्मच से गणेश जी को दूध पिलाया तो नीचे अपना दूसरा हाथ लगा लिया। बूंद-बूंद करके दूध उनके हथेली में एकत्रित हो गया। उन्होंने वहां मौजूद कुछ महिलाओ को ऐसा तीन-चार बार करके दिखाया। उन महिलाओ ने स्वीकार किया कि धर्म के नाम पर गलत प्रचार किया जा रहा है। फिर भी उनकी टिप्पणी थी कि चलो इस बहाने थोड़ा-सा दूध अगर हमने भगवान को पिला दिया तो हम कौन से गरीब हो गए।

पिलाने वाले तो गरीब नहीं हुए पर उन बेचारे बच्चों के बारे में किसी ने भी नहीं सोचा जिन्हें शाम को पीने के लिए दूध नसीब नहीं हुआ होगा। जहां गरीब बच्चो को पीने के लिए दूध नही मिलता वहां इतने बड़े पैमाने पर दूध का ऐसा 'इस्तेमाल' क्या उचित था ?

धीरे-धीरे यह हलचल बढ़ती गई। जो लोग मंदिर होकर आए वे वे दूसरों को भी यकीन दिलाने लगे कि यह सच है, चमत्कार है। कुछ लोगों ने इसे हंसी-मजाक का भी विषय बना दिया।

पर ज्यादातर वैज्ञानिकों ने इसे महज भ्रम बताया है। उनका दावा है कि कोई मूर्ति इस तरह दूध नहीं पी सकती। यह महज अंधविश्वास है और कुछ नहीं। इस तरह की अफवाहें पहले भी फैलाई जाती रही हैं। उनके अनुसार संगमरमर की सफेद मूर्ति पर दूध की पतली परत होने के कारण बहती हुई दिखाई नहीं देती। फर्श पर दूध दिखाई न दे इसलिए उसकी समय-समय पर सफाई कर दी जाती थी। एक व्यक्ति ने तो केले पर भी यही क्रिया करके दिखाई।

एम. एस. सी. छात्र कुंवर संजयसिंह ने तो संगमरमर की छोटी-सी मूर्ति को चम्मच से दूध पिलाकर दिखाया। देखने पर यह भ्रम होता था कि मूर्ति दूध पी रही है पर वास्तव मे ऐसा नहीं था। दूध बूंद-बूंद कर नीचे गिरता जा रहा था।

कुंवर संजयसिंह ने स्पष्ट किया कि दूध पीने की यह क्रिया विज्ञान सम्मत है। इसे 'कैपिलरी एक्शन' कहा जाता है। यह एक्शन तब शुरू होता है जब पूरी 'कैपिलरी' में कहीं भी हवा का बुलबुला न हो। यह जरूरी नहीं कि पूरी मूर्ति के आरपार छेद करके 'कैपिलरी' बनाई गई हो। मूर्ति की सतह पर अगर ऊपर से नीचे तक 'ग्रूव' बनाई जाए तब यह क्रिया शुरू हो जाएगी और दृष्टि भ्रम पैदा हो जाएगा कि मूर्ति दूध पी रही है। अत मूर्तियों का दूध पीना कोई चमत्कार नहीं बल्कि इसका इस तरह से प्रचार करना लोगो की धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंचाना है।

इस घटना से एक बात साबित हो गई कि जिस किसी ने भी यह प्रचार किया उसका प्रचार तन्त्र गजब का है। एक झूठ को सच साबित करने के लिए किस तरह अफवाहें फैलाई जा रही थी। सरकार अगर जनता तक कोई संदेश पहुंचाना चाहती है तो उसकी गति तो कछुए की चाल जैसी होती है पर ऐसी खबरें शहरो में ही नहीं, दूर-दराज के गांवो मे भी जंगल की आग की तरह फैल जाती है।

हिटलर के मित्र और प्रचार मन्त्री गोयबल्स को झूठ बोलने वालो का सरताज माना जाता है। उसका यह मानना था कि झूठ को अगर दस लोग, दस जगह पर एक साथ बोलें तो वह झूठ न रहकर सच हो जाता है। फासीवाद का यही सिद्धांत था कि जमकर झूठ का प्रचार करो। इस तरह की खबरें फैलाने वाले शायद इसी सिद्धांत का पालन कर रहे हैं और देश की धर्मभीरू जनता को भगवान के नाम पर मूर्ख बना रहे हैं।

वे लोग कौन हैं जो इस तरह की बातें प्रचारित कर रहे हैं, इस बारे मे स्पष्ट तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता कई लोगो ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, सी आई. ए. और चन्द्रास्वामी पर आरोप लगाए हैं।

समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी ने तो स्पष्ट रूप से इसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद द्वारा फैलाई अफवाह का नतीजा बताया है। उनका आरोप है कि संघ और विहिप ने लोगों की धार्मिक आस्था को भुनाने की साजिश की है। इसी साजिश के तहत यह अफवाह सुनियोजित तरीके से दूर-दूर तक फैलाई गई। श्री केसरी ने कहा कि ये दोनो संगठन उन्माद फैलाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। लोगों से इन अफवाहो पर ध्यान न देने की भी उन्होंने अपील की।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्मृति दिवस

१५ अक्तूबर १९९५ दिन रविवार

समय बीतते देर नहीं लगती हैं। 'आज पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के अवसान को एक वर्ष व्यतीत हुआ। उनकी स्मृति में १५ अक्टूबर १९९५ को एक भव्य आयोजन लाल-किला मैदान दिल्ली मे समय २ बजे से ५ बजे तक किया गया है।'

आप सभी आर्यजनों से प्रार्थना है कि अपने प्रिय आर्य नेता के आयोजन को सफल बनाने हेतु अधिक से अधिक संख्या में पधार कर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें और विद्वानो के भाषणो से लाभ उठायें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

धर्म बदलने वालों को आरक्षण दलित हित के विरुद्ध : वाजपेयी

कानपुर, २५ सितम्बर। लोकसभा में विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने आज कहा कि हिन्दू धर्म को त्याग चुके दलितों को आरक्षण का लाभ नहीं दिया जाना चाहिए और धर्म परिवर्तन की स्वतन्त्रता को संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों से अलग कर दिया जाना चाहिए।

श्री वाजपेयी ने यहां ऐतिहासिक फूलबाग मैदान में आयोजित दलित जागरण महासम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस वर्ग ने कथित समता के क्षेत्र में आने के लिए हिन्दू धर्म का परित्याग किया अब वहीं आरक्षण की मांग क्यों करने लगा है।

श्री वाजपेयी ने कहा कि आरक्षण का लाभ लेने के लिए इस वर्ग को हिन्दू समाज में वापस आना होगा।

श्री वाजपेयी ने कहा कि देश के संक्रमण काल में भी अपने धर्म का परित्याग न करने वाले ही वास्तव में सभी सुविधाओं के अधिकारी हैं।

श्री वाजपेयी ने कहा कि डा. भीमराव अम्बेडकर भी इस तथ्य को महसूस करते रहे कि यदि संविधान में धर्म परिवर्तन का अधिकार दिया गया तो धन बल पर कमजोर वर्ग को धर्म बदलने पर मजबूर किया जाएगा और संविधान परिषद की बैठक में कांग्रेस ने ईसाई समुदाय को विश्वास दिला दिया था कि धर्म परिवर्तन को संविधान के मौलिक अधिकारों में शामिल किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि आज आरक्षण की मांग धर्म परिवर्तित समाज के लोग नहीं बल्कि उनके नेता करते हैं।

श्री वाजपेयी बोले कि मुसलमानों व ईसाईयो को १५ प्रतिशत आरक्षण देने का मतलब दलित अधिकारों में कटौती करना होगा, क्योंकि न तो मुसलमानों के साथ सामाजिक भेदभाव हुआ और न ही ईसाई शैक्षणिक तौर पर पिछड़े हैं।

श्री वाजपेयी ने कहा कि कुछ लोग हिन्दू समाज को तोड़ना चाहते हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि हिन्दू समाज में काल के अनुसार स्मृति लिखी गयी थी। मौजूदा स्मृति संविधान है जिसमें बाबा साहब अम्बेडकर ने सभी को वोट का अधिकार दिया ताकि समय के अनुसार भारत के नागरिक व्यवस्था व सत्ता परिवर्तन कर सकें।

उक्त सम्मेलन में हजारो दलित कार्यकर्ता मौजूद थे जो बसपा तथा उसकी राम विरोधी नीति पर हमला होते ही जोर-जोर से जय श्रीराम कहते थे। सम्मेलन में भाजपा ने आर्थिक, शैक्षिक व सामाजिक विषय पर सात प्रस्ताव स्वीकार किये।

कौन सा रावण जलायें

जीत लें दस इन्द्रियां दुर्भावना मन में न लायें।
आ विजयदशमी गई अब कौन सा रावण जलायें।

हो चुके लाखों वर्ष जब जानकी रावण चुराई।
कर क्षमा अब तक न पाया लोक रावण की बुराई॥
आज तक पुतला बना प्रतिवर्ष उसको फूंकते हैं।
नाम पर लंकेश के धिक्कारते हैं थूकते हैं॥

पर न कितने मनुज मृग मारीच बन चालें चलाये:
आ विजय दशमी गई अब कौन सा रावण जलायें।

प्रेम करने को सिया से याचना करता रहा वह।
पर अनिच्छा को समझ मन में सदा डरता रहा वह॥
आज रावण से अधिक दुर्जन धरा पर घूमते हैं।
बल सहित कामान्ध बन जो वासना को चूमते हैं॥

शील हरने की अहो वे जानते कितनी कलायें।
आ विजयदशमी गयी अब कौन सा रावण जलायें॥

राम के हम भक्त फिर भी काम रावण से बुरे हैं।
रामलीला के हमारे राग कितने बेसुरे हैं॥
आर्य (हिन्दू) जाति अब किस ओर को तू जा रही है।
राम के पावन चरित्र पर कालिमा क्यों ला रही है।

आज अपने आपका हम पाप का रावण जलायें।
आ विजय दशमी गई दुर्भावना मन में न लायें॥

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री

धर्मान्तरण की समस्या

श्री नरेन्द्र मोहन, सम्पादक दैनिक जागरण

यह अच्छा ही हुआ कि लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने धर्म परिवर्तन के कारण देश के समक्ष उत्पन्न समस्याओं पर विशद चर्चा की। ईसाई मिशनरियों द्वारा देश के विभिन्न भागों मे जिस तरह सामूहिक धर्मान्तरण कराया जा रहा है। और इस सामूहिक धर्मान्तरण का जैसा राजनीतिकरण हुआ है उससे राष्ट्र के समक्ष अनेक नई समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं। चिंता की बात यह है कि इन समस्याओ के सन्दर्भ में सीताराम केसरी सरीखे केन्द्रीय मंत्री अपने उ.रदायित्व का पालन करने के स्थान पर सामूहिक धर्मान्तरण को खुलेआम प्रोत्साहन प्रदान कर रहे हैं। विगत दिवस कानपुर में अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा दी गई। यह जानकी निश्चित रूप से बिल्कुल सही है कि भारतीय संविधान का जब निर्माण हो रहा था तब ईसाई मिशनरियों के दबाव के कारण कांग्रेस ने धर्म परिवर्तन के सिद्धांत को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता देना स्वीकार कर लिया। संविधान का अनुच्छेद २५ 'अंतःकरण की ओर धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की स्वतन्त्रता' देता है, पर धर्म की स्वतन्त्रता के इस अधिकार का जैसा दुरुपयोग आज हो रहा है वह किसी से छिपा नहीं है। ऐसा नहीं है कि धर्म की स्वतन्त्रता मे संभावित सभा पंडित नेहरू के दबाव में आ गई। नेहरू जी ने अपने ईसाई मित्रों को यह आश्वस्त कर दिया था कि स्वतन्त्र भारत में ईसाई मिशनरियों को ईसाइयत का प्रचार करने की अबाध स्वतन्त्रता प्राप्त होती रहेगी, अत संविधान वैसा ही बना जैसा कि नेहरू जी चाहते थे। स्पष्ट है कि संविधान के अनुच्छेद २५, जिसमे धार्मिक स्वतन्त्रता की आड़ में सामूहिक धर्मान्तरण की बुराई को पोषित किया जा रहा है, पर नए सिरे से विचार किया जाए।

ईसाई मिशनरिया जिस तरह सामूहिक धर्मान्तरण करा रही है उस पर अविलम्ब रोक लगाने के लिए एक सशक्त कानून बनाया जाना चाहिए और इस मांग का विरोध होना चाहिए कि जिन लोगों ने हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाइयत या अन्य किसी मजहब को स्वीकार कर लिया है उन्हें भी आरक्षण प्रदान किया जाए। इस संदर्भ में अटलबिहारी वाजपेयी की यह बात भी सही है कि "यदि किसी भी व्यक्ति को संविधान प्रदत्त आरक्षण का लाभ लेना है तो उसे हिंदू धर्म में वापस आना होगा, क्योंकि संविधान में आरक्षण की जो व्यवस्था है वह विशेष रूप से उन दलितों के लिए की गई है जो दुर्भाग्यवश सैकड़ों वर्षों से सताए जा रहे थे और उपेक्षित थे।" जिन दलितों ने ईसाई मिशनरियों के प्रलोभन में आकर हिंदू धर्म का 'परित्याग' किया और दूसरे धर्म को अपनाकर अपना सामाजिक स्तर ऊंचा कर लिया, उन्हें भी आरक्षण का लाभ मिले, इस बात का कोई औचित्य नहीं। कुल मिलाकर यह चिंता की बात है कि अपने धनबल और छलबल का प्रयोग करके ईसाई मिशनरियां सामूहिक धर्मपरिवर्तन में लगी हुई हैं और उन पर आज तक कोई भी अंकुश नहीं लग सका है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

विजय की प्रेरणा का पर्व विजयदशमी

पंडिता राकेश रानी

विजयदशमी है अन्याय, अत्याचार और अनाचार का पर्याय बन गए रावण पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की महान विजय का स्मृति दिवस। सहस्त्रों वर्ष पूर्व सम्पन्न हुआ राम का वह विजयी अभियान आज भी समग्र हिन्दुस्तान ही नहीं अपितु जग-जग में जिन-जिन के हृदयों मे वेद के प्रति आस्था विद्यमान है, उन सभी के लिए विजयदशमी पर्व स्वर्णिम अतीत की प्रेरक स्मृति और उज्ज्वल भविष्य के प्रति अडिग आस्था की चिरन्तन प्रेरणा भी प्रदान करता है।

स्वदेश में व्याप्त अद्‌भुत सी अनिश्चितता—भारत भूमि के महिमा मंडित मुकुट कश्मीर की केसर क्यारियो में मजहबी उन्मादियों द्वारा बिखेरी जा रही साम्प्रदायिकता की आग, सत्ता की लालसा के कमडल से प्रकट मडल आयोग अपनो को दुत्कार परायों से प्यार के राष्ट्र रोग, तुष्टीकरण की चासनी में पगे पगों से देश की धरती पर खिंचती सी प्रतीत हो रही विभाजक लकीरें, देश के घटनाचक्र में रक्त का रंग भरती प्रतीत हो रहा हैं। हाल ही में पूर्व से पश्चिम तक देश की एकता के सफल सृजक श्रीकृष्ण के जन्म दिवस को जन्माष्टमी के रूप में स्वदेश ने मनाया है तो अब भारत की उत्तरी और दक्षिणी धुरी को मिलाने वाले श्री राम की विजय की प्रेरक स्मृति को सहेजे यह विजयदशमी पर्व आया है। किन्तु कृष्ण की पद रज से पावन असम की माटी, वहा की सरिताएं और घाटी स्वदेश को अखण्डता को चुनौती देने वालो की गतिविधियों से आक्रान्त है। जबकि कुछ लोग श्रीराम की पावन जन्मभूमि को एक वस्तु के रूप में चित्रित करने में भी सकोच नहो बरत रहे हैं। "आर्य सत्यानि के उद्‌घोषक गौतम बुद्ध के अनुयायी होने में गौरव बोध के दावेदारों में से कुछ ऐसे भी हैं जो क्षत्रिय कुलोत्पन्न युगद्रष्टा, शांति सौख्य की सुधा का समाज के सभी वर्गो को भेदभाव रहित होकर बांटने वाले महामानव का नाम लेकर हिन्दुत्व की पुनीत गगा के स्थान पर समाज के कुछ वर्गो में जाति, मत-मतान्तरों के आधार पर विष घोलने को आतुर हैं।

दूसरी ओर तथाकथित प्रगतिवाद के पुरोधा सोवियत संघ के खण्ड खण्डित और साम्यवाद के लोह दुर्ग के ध्वस्त और भस्मसात हो जाने के बावजूद अपने वैचारिक पूवजों का श्राद्ध करने के लिए इस देश में उपराष्ट्रीयता तथा विभिन्न संस्कृतियों तथा जातीय पहचान जैसे नारों को गुंजाने में सकोच नहीं कर रहे। तथाकथित साम्यवादियों ने ही मुस्लिम लीगियों के साथ मिलकर अखण्ड भारत को खण्डित कर पाकिस्तान की रचना के पाप में योगदान दिया था। आज वे कश्मीर और पजाब की समस्याओं का समाधान भी लेन-देन की डगर अपनाना ही बता रहे हैं। इस विभ्रान्त, उद्‌भ्रान्त, क्लान्त परिस्थिति में भी यह महान देश विजयादशमी का प्रेरक पर्व मना रहा है। इस पर्व का परिपालन निराशा में आशा की एक ज्योति भी जगाता है। क्योंकि इस पर्व में निश्चय ही कुछ न कुछ ऐसा अवश्य है जो हमे इसके परिपालन हेतु आकृष्ट करता है।

यह पावन पर्व इस तथ्य की पुनीत स्मृति हमें कराता है कि हिन्दुत्व किसी नदी का द्वीप नहीं एक सतत प्रवाहिनी अजस्त्र अमर जलधारा है। यह हमे इस तथ्य की अनुभूति कराता है, कि इस जलधारा में समय और परिस्थितियां भेद-विभेद के कितने ही भवर क्यों नहीं उठाते रहें, फिर भी इस राष्ट्र का अतीत साक्षी है। हमारी स्मृतियां सांझी हैं तो इस महान राष्ट्र का भविष्य भी सांझा है। न्याय, विवेक और वीरता के हमारे प्रतीक सांझे हैं। इन प्रतीकों पर इतिहास की गर्द ने चाहे जितनी भी परतें जमा दी हों यह प्रतीक ध्रुव तारे के समान प्रकाशमान रहे हैं और भविष्य में भी रहेंगे। पावन वैदिक संस्कृति और इस देश की महान संस्कृति का यही सर्वाधिक सशक्त बंधन है जो जाति, पंथ, वर्ण, मत मतान्तरों के घटाटोप में भी, भेद विभेद के बांधों को तोड़कर एक सूत्रता की मंदाकिनी बहाता है। असत्य के प्रतीक पर सत्य के प्रेरक की विजय हेतु समस्याओं के सागर पर अदम्य विश्वास के सेतुबन्ध का निर्माण कराता है। यह बन्धन ही तो क्षत्रिय राम द्वारा अन्याय के पथ पर बढ़े और स्वयं को ज्ञान-विज्ञान का आगार मानने वाले ब्राह्मण रावण के मान मर्दन पर बड़े से बड़े विप्रकुल अभिमानी को भी रावण के प्रतीक पुतलों के दहन पर हर्षित होने को प्रेरित करता है। साथ ही वनवासी हनुमान, सुग्रीव,अंगद और जाम्बवंत के बल वैभव और निषादराज की सेवाभावना के समक्ष क्षत्रिय कुल वतंश होने में गौरव की अनुभूति करने वाले पात्रों के समक्ष नतमस्तक होने की प्रेरणा देता है।

विजयादशमी के इस प्रेरक पर्व पर अगड़े पिछड़े ब्राह्मण, अब्राह्मण क्षत्रिय और तथाकथित दलित गिरिजन वनवासी सभी रामलीला मंचन में शबरी की राम भक्ति के दृश्य को निहारकर समान रूप से पुलकित होकर धन्य-धन्य कह उठते हैं।

इस दृश्य से हिन्दुत्व के सर्व समावेशक रूप का विश्व को साक्षात्कार हो जाता है।

विजयादशमी के महानायक राम की जयगाथा आदि कवि बाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से, सन्त तुलसी ने राम चरित मानस के रूप में स्तुति की थी तो दक्षिण में महाकवि कम्बन ने भी उनका यशगान मुक्तकंठ से गाया था। पड़ोसी हिन्दू राष्ट्र नेपाल में उन्हीं श्री राम की विजय गाथा को नेपाली के आदि कवि भानुभक्त ने राम प्रेमानुरक्त होकर अपनी लेखनी से अमर बनाया था। हिन्दुस्तान ही नहीं अपितु जहां-जहां भी कभी वैदिक संस्कृति का प्रचार हुआ राम की प्रेरक तथा जन-जन में रमी और रमी तथा सहस्त्रों वर्ष के कालखण्ड में उठे अनेक झंझावातों और आघातों को झेलकर आज भी जन-जन के मन में यशपूर्ण बसी हैं।

स्वदेश की स्वतन्त्रता के लिए विदेशी आक्रान्तों से जूझने वाले यशस्वी स्वातन्त्र्य सेनानियों के प्रेरक भी श्री राम ही बने थे और उन्हें प्रेरणा दी थी श्री राम के इस महान सन्देश ने "जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" इसी सूत्र को महामति ब्राह्मण चाणक्य ने तथाकथित शूद्र चन्द्रगुप्त को अपनी प्रखर शैली में समझाकर विदेशी यूनानी सत्ताधीशों से स्वराष्ट्र को मुक्त कराने के लिए प्रेरित किया था। शकारि विक्रमादित्य, महान विजेता समुद्रगुप्त, तुर्कों, मुगलों और अलशालियों से टक्कर लेने वाले महान राष्ट्र नायकों की प्रेरणा का स्रोत भी रामका स्वातन्त्र्य और राष्ट्र निर्माण पावन दर्शन ही था। प्रणवीर प्रताप सरजा शिवाजी, दशमेश पिता गुरु गोविन्दसिंह, महान बलिदानी बंदा वैरागी, छत्रसाल से लेकर अपना कोमल-कोमल तन स्वधर्म और स्वदेश की वेदी पर सहर्ष समर्पित करने वाले बालवीर हकीकत अजित और जुझार के प्रेरणा पुरुष भी श्री राम ही थे।

ब्रिटिश राज्यसत्ता के विरुद्ध क्रान्ति का रणनाद करने वाले क्रान्तिकारियों को लन्दन में भी विजयदशमी पर्व का परिपालन सतत स्मरण रहा तो महात्मा गांधी ने भी स्वदेश की स्वतन्त्रता के बाद भारत में राम राज्य आने की ही कल्पना की थी। राम को हर मनीषी, चिन्तक और विचारक ने अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार चित्रित भले ही किया हो, फिर भी अन्याय की प्रतिकार, मर्यादा का बोध और प्रबल पराक्रम इन सभी को मान्य ऐसे सांझे

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अगर तलाक बुरी बात है तो फिर यह अभी भी क्यों जारी है (२)

—अरुण शौरी—

यह पैगम्बर ही हैं जो कहते हैं, जिसके हाथों में मेरी रूह है उस (यानी अल्लाह) के मुताबिक अगर कोई औरत उसके शौहर के बिस्तर पर बुलाए जाने पर आने से इन्कार करती है तो वह जो आसमां मे है उससे नाखुश होता है जब तक कि शौहर उससे खुश नही हो जाता।" जब आदमी अपनी इच्छा पूरी करने के लिए अपनी बीबी को बुलाता है, तब उसे जाना ही चाहिए यहा तक कि अगर वह चूल्हे आदि के काम में लगी हो तो भी।" पैगम्बर यह भी कहते हैं, "अगर मैं किसी को किसी और के सामने दंडवत करने की आज्ञा दू, तो मैं औरतों को उनके शौहरों के आगे दंडवत करने की आज्ञा दूंगा, उनके ऊपर शौहरों को अल्लाह के द्वारा दिए गये विशेष अधिकार के कारण।'

पैगम्बर ने यह भी कहा है, 'औरत को पसली से बनाया गया है और वह किसी तरह तुम्हारे लिए सीधी नहीं होगी, इसलिए अगर तुम उसका आनन्द लोगे तो तभी तक लोगे जब तक कि टेढ़ापन उसमें रहेगा, लेकिन अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे तो तुम उसे तोड़ दोगे, उसे तोडना उसे तलाक देना है।" "आदमी से नहीं पूछा जाएगा कि वह अपनी बीवियों को क्यों पीटता है।" "अपने मालिक की पूजा करो और अपने भाइयो की इज्जत। अगर मैं किसी को किसी और के आगे दंडवत करने का हुक्म दू, तो मैं औरत को उसके शौहर के आगे दंडवत करने का हुक्म दूगा. और अगर वह उसे एक पीले पहाड़ तक, या एक काले पहाड़ से सफेद पहाड़ तक, पत्थर ढोने का हुक्म दे तो उसके लिए ऐसा करना लाजिमी होगा।' जब एक जवान आदमी बताता है कि उसकी बीवी "रोजा रखे रहती और मैं जवान हू जो कि सब्र नहीं कर सकता," तो पैगम्बर हुक्म देते हैं, 'औरत शौहर की इजाजत से ही रोजा रख सकती है।'

उपरोक्त हदीस और इसी आशय की दर्जन भर अन्य हदीस के लिए देखिए, 'मिश्कत अल-मसाबी' खड बारह, अध्याय ११, इसी प्रकार सुना अबु दाऊद, खड दो, पेज ५७४, सही अल-बुखारी, खड सात, पेज ९३, रियाद अल-सलीही, खड एक, पेज १९७-२०१, वही, खंड दो, पेज-४४९-५०१)।

यह पैगम्बर ही हैं जो ऐलान करते हैं, 'अपने पीछे आदमियो के लिए औरतो से ज्यादा नुकसानदायक आफत मैंने कोई और नहीं छोड़ी है।' (सही अलबुखारी, खड एक, पेज २९, खड तीन, पेज ९४-९६, सही मुस्लिम खड चार, पेज १४३१-३२) यह पैगम्बर ही हैं जो कहते है कि जन्नत और नरक का दौरा करने पर उन्होंने देखा कि औरतें ही हैं, नरक में जिनकी बहुसख्या है और ऐसा इसलिए नहीं कि वे आदमियों से कम मजहबी है बल्कि इसलिए कि वे अपने शौहरो के प्रति नाशुक्रगुजार होती है, "और मैंने उतना विकराल दृश्य उससे पहले कभी नहीं देखा था, 'वह बताते है, 'और मैंने देखा कि उसके बाशिंदो में औरतों की बहुतायत थी।" लोगो ने पूछा—"ओ अल्लाह के शिष्य! उसका क्या कारण है?" उससे पूछा गया, "क्या वे अल्लाह मे अविश्वास करती हैं (क्या वे अल्लाह के प्रति अहसान-फरामोश हैं)? उन्होंने जबाव दिया—'वे अपने शौहरो के प्रति अहसानमन्द नही है और उन पर किये गये अहसानों के लिए नाशुक्रगुजार हैं। अगर तुम जिन्दगी भर उनके लिए अच्छाई भी करो, अगर वह तुम्हें थोड़ी भी कठोरता बरतते देखती हैं (एक अन्य स्थान पर शब्द ये हैं, 'और तब वह तुममें कुछ ऐसा देखती है जो उसकी पसन्द का नहीं है") तो वह कहेगी, 'तुममें मैंने कभी कोई अच्छाई नहीं देखी (सही अल बुखारी, खड एक पेज २९ खड दो, पेज ९४-९६, सही मुस्लिम, खंड चार, पेज १४३१-३२)।

उत्तराधिकार मे तो औरतों को आदमियों का आधा गिना ही जाता है, इसके अलावा दो औरतो की गवाही को भी एक आदमी की गवाही के बराबर माना जाता है—'यह' इस गवाही वाली बात के सम्बन्ध में पैगम्बर कहते हैं, 'औरत की दिमागी कमी की वजह से है।"

(सही अल-बुखारी, खड तीन, पेज ५०२)

यह कोई अन्य आलिम नही है जो औरतो को अल्लाह के द्वारा आदमी के आनन्द के लिए बनाई गई चीज के रूप मे देखता है। यह पैगम्बर ही है जो घोषणा करते है—"यू तो पूरी दुनिया ही आनन्द के लिए है लेकिन दुनिया में सबसे बेहतरीन चीज एक अच्छी औरत है।"

(मिश्कत अल-मसाबी, खड एक पेज ६५८)।

औरते मोहकता से लुभाने वाली होती है, जिनसे अवश्य सावधान रहना चाहिए, और वासना के निस्तार का पात्र होती है, इसके अलावा उन्हें प्रजनन या उत्पत्ति के कुंड के रूप में भी देखा जाता है और वह भी पैगम्बर की महिमा और उसके उम्मा की मजबूती की खातिर। एक आदमी पैगम्बर के पास आता है और कहता है कि उसकी बीवी नेक और खूबसूरत है और वह उसे प्यार करता है, लेकिन वह बच्चे को जन्म नहीं देती। पैगम्बर उसे तत्काल तलाक दे देने के लिए कहते हैं, 'ऐसी औरतों से शादी करो जो स्नेही और बहुत उर्वर हो, क्योंकि मैं तुम्हारे द्वारा लोगो की गिनती में बढ़ोत्तरी करूंगा।" (वही, खड एक पेज ६६२)।

जब शौहर पर एक औरत के अधिकारों के बारे में पूछा जाता है तो पैगम्बर उन्हें संतुलित स्तर पर रखते हैं। अपनी जोती हुई जमीन पर जब या जैसे चाहो जाओ, वह अल्लाह के शब्दों को दोहराते हुए कहते हैं, लेकिन तुम खाना खाओ तो उसे भी खाना दो, तुम खुद कपड़ा पहनो तो उसे भी कपड़ा दो, उसे गाली मत दो, आगे के कथनों में कुछ फर्क है। कुछ हदीस इससे आगे कुछ नहीं कहती। कुछ में पैगम्बर को यह भी कहते बताया गया है, 'उसके चेहरे पर वार मत करो', जबकि कुछ और में उन्हें यह कहते बताया गया है, 'और उन्हें पीटो मत।"

लेकिन इस बाद वाले सस्करण के तत्काल बाद 'औरत को पीटने पर' हदीस हैं। यह मामला पैगम्बर के जीवन काल में उनके सामने लाया गया था लेकिन नतीजे से उन लोगो कों कम ही राहत मिल सकती है जो हमें विश्वास दिलाना चाहते हैं कि किसी और धर्म ने औरतों को उतने अधिकार नहीं दिये जितने इस्लाम ने दिये हैं। एक हदीस मे दर्ज है कि एक बार पैगम्बर ने कहा—"अल्लाह की दासियो को मत पीटो।" लेकिन जब हजरत उमर उनके पास आए और बोले—'अपने शौहरों के सामने औरतों की हिम्मत बहुत बढ़ गई है, 'तो पैगम्बर ने उन्हें पीटने की इजाजत दे दी। फिर, इस हदीस में दर्ज है, कई औरतें अपने शौहरों की शिकायत करती पैगम्बर के पास आई। 'तो अल्लाह के शिष्य (उसे शांति मिले) ने कहा—'हदीस अंत में कहती है, 'कई औरतें अपने शौहरों की शिकायत करती मोहम्मद के परिवार के आस पास गई हैं। वे तुममें सबसे उम्दा औरतें नहीं है। और इस हदीस के फौरन बाद वह एक हदीस है जो हमने ऊपर पढ़ी है, पैगम्बर घोषणा करते है कि, 'आदमी से नहीं पूछा जाएगा कि वह अपनी बीबी को क्यों पीटता है।" सुना अबु दाऊद, खंड दो, पेज ५७४-७५)।

अनेक प्रश्न उठते हैं—

– हिमायती पैग्म्बर के इन कथनो और आदेशों की कैसे व्याख्या करते हैं?

– यह और ऐसी ही कई और हदीस सर्वाधिक सम्मानित ग्रन्थों में संग्रहीत हैं। चूंकि वे उन्हीं ग्रन्थों में संग्रहीत हैं, जिनमें एक या दो वे हदीस भी हैं, जिनका वे हिमायती हवाला देते हैं, तो ऐसा

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आधुनिक राजनीति में गांधी की प्रासंगिकता

—डा० जयदेव वेदालंकार

गांधी जी विचारों के एक महासागर हैं। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है। जिसको अपने अध्ययन, मनन या प्रयोग से उन्होंने अछूता छोड़ा हो। फिर उनकी पकड़ में एक अतलस्पर्शी स्पर्श है, उनके चिन्तन में एक अद्भुत नवीनता है, उनके समाधान में क्रान्तिकारी दूर-दृष्टि है। गांधीजी का प्रत्येक क्षेत्र नैतिक मर्यादाओं से शासित है। आज जिसे हम कूटनीति कहते हैं। और जिसमें झूठ, छल, फरेब व सभी कुछ शामिल हैं, उसका गांधीजी की राजनीति में कोई स्थान नही है। जो कुछ प्रबुद्ध व्यक्ति की आत्मा को आहत करता है। वह सब त्याज्य है। व्यक्ति ही गांधी–राजनीति का मूल है। उसका परिष्कार करते हुए उनकी सामाजिक चेतना को उत्तरोत्तर जागृत करना और अन्तिम बिन्दु तक पहुंचाना ही उसका लक्ष्य है।

अपने राजनैतिक चिन्तन में गांधीजी वस्तुत: आदर्शवादी हैं। किसी भी प्रकार का शासन, राज्य या सरकार उनके राजनैतिक चिन्तन की दृष्टि से अपूर्ण है, और उसे केवल यात्रा की मंजिलो या पड़ाव के रूप में ही सहन किया जा सकता है। उनकी राजनीति का ध्येय है–शासन–मुक्त समाज की स्थापना। जो राज्य जितना ही कम शासन करता है और व्यक्तियो को नागरिको को अपने सहज–स्फूर्त कर्त्तव्यो के पालन के प्रति जितना ही जागरूक रख सकता है, वह उतना ही अच्छा राज्य है। इस विचार का यह कारण है कि राज्य वस्तुत हिंसक संगठन है, वह संघटित हिंसा का ही रूप है और गांधी जी के विचार से जहा भी हिंसा है, भय है वहां शोषण है ही। वह स्वयं कहते हैं। "राज्य घनीभूत एवम् सघटित रूप में हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति ही आत्मा होती है, किन्तु चूं कि राज्य एक आत्महीन यन्त्र है, उसे कभी हिंसा से पूर्णत. विरत नही किया जा सकता क्योंकि उसी के कारण उसका अस्तित्व है।

गांधीजी का आदर्शराज्य है रामराज्य। इसका अर्थ है धर्म का राज्य और प्रेम का राज्य। गांधीजी के शब्दों में उसे अहिंसक स्वराज्य कहना चाहिए अर्थात् ऐसा स्वराज्य जिसमें राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाए कि प्रत्येक व्यक्ति स्वय अपने पर नियन्त्रण रखे। यह एक सुसंस्कृत अराजकता की अवस्था होगी, जिसमे व्यक्ति अपना ही शासक होगा। वह स्वयं ही अपना नियमन इस प्रकार करेगा जिससे उसके पड़ोसी के हित मे बाधा न हो। इसीलिए आदर्श राज्य में कोई राजनीतिक शक्ति नहीं निहित होगी क्योंकि राज्य रहेगा ही नहीं।" केन्द्रीयकरण से हिंसा आती है और हिंसा से शोषण को बल मिलता है। इसलिए शोषण और अन्याय से मुक्ति के लिए केवल अहिंसक आचरण का सामाजिक गठन करना पड़ता है।

गांधीजी के स्वराज्य का आदर्श ऐसा नैतिक है जिसका प्रत्येक नागरिक उच्च नैतिक स्तर तक विकसित हो चुका है और उसका स्वयं ही अपने लोभ, स्वार्थ या आकांक्षाओ पर इतना नियन्त्रण है कि किसी भी पड़ोसी या सह–नागरिक के हित को उससे हानि पहुंचने का खतरा नही है। उसमें प्रत्येक नागरिक धर्म और कर्त्तव्य समझकर अपने ऊपर नियन्त्रण रखता है, किसी बाह्य शासन या अभिकरण के भय से उसे अपना आचरण नियन्त्रित करना नहीं पड़ता, न उसकी कोई आवश्यकता ही है। अर्थात् राज्य चाहे कैसा हो, उसमें दबाव एवं भय का अंश होता ही है, इसीलिए वह मानव के विकास की अपूर्णता का सूचक है।

जिस राज्य में शक्ति का जितना ही अधिक केन्द्रीकरण होगा, उसमें व्यक्ति या नागरिक के विकास की अवस्था उतनी ही अधिक रुद्ध होगी। लोकतन्त्र राजतन्त्र से एक कदम आगे तो है क्योंकि उसमें व्यक्ति के विकास और स्वतन्त्र आचरण को एक सीमा तक छूट है किन्तु कुछ दूर तक उनका मार्ग भी ठप्प हो जाता है।

लोकतन्त्र और हिंसा परस्पर विरोधी हैं। जब तक हिंसा है, सच्चा लोकतन्त्र नहीं हो सकता। गांधीजी की दृष्टि मे वही राज्य अच्छा है जो कम से कम शासन करता है और वह राज्य आदर्श है जो शासन करता ही नहीं, जिसमें सम्पूर्ण इकाइयां स्वयं ही अपना शासन कर लेती हैं। गांधीजी 'यंग इण्डिया' में लिखते हैं–'ऐसे राज्य में प्रत्येक व्यक्ति अपना शासक स्वयं होगा और वह अपना शासन इस प्रकार करेगा कि अपने पड़ोसी के लिए कभी बाधारूप न होगा। इसलिए आदर्श राज्य में कोई राजनैतिक सत्ता न होगी क्योंकि उसमे कोई राज्य होगा ही नही।"

गांधीजी ने राजनीति को तीन महान् दिशा बोध दिए हैं–

(१) राजनीति नीति युक्त होनी चाहिए। इसी से साध्य और साधन दोनो की शुद्धता और स्वच्छता का सिद्धात निकला है। अर्थात् सत्य-साध्य असत्य-साधनो से प्राप्त हो ही नहीं सकते।

(२) राजनीति को नीति के धरातल पर स्थापित करने के लिए, उसकी बुराइयो के उन्मूलन के लिए अहिंसक प्रतिकार अथवा सत्याग्रह की पद्धति और शास्त्र का निर्माण। युद्ध के स्थान पर मानवता के हाथ में एक नवीन अस्त्र देकर उन्होंने अमित सम्भावनाओ के द्वार खोल दिए हैं।

(३) समाज व्यवस्था अथवा राज्य व्यवस्था का आधारभूत सिद्धात बहुमत का निर्णय या हित नही होगा, वह सर्वजननिर्णय तथा सर्वलोक–हित होगा। इस दृष्टि से वह वर्तमान लोकतन्त्र–पद्धति के बहुत आगे जाने की महत्वाकांक्षा रखते हैं।

गांधीजी "यंग इण्डिया" (२६-३-१९३१) में लिखते हैं, "पूर्ण स्वराज्य की मेरी कल्पना का अर्थ यह नहीं है, कि हमारा देश सबसे अलग रहकर स्वतन्त्रता का उपयोग करें, बल्कि विश्व के राष्ट्र मण्डल में उसका एक दूसरे से स्वस्थ्य एवं सम्मानपूर्ण सहयोग रहे। हमारी स्वतन्त्रता किसी राष्ट्र के लिए खतरा नहीं बनेगी। जिस प्रकार हम अपना शोषण नहीं होने देंगे, ठीक उसी प्रकार हम किसी दूसरे का शोषण भी नही करेंगे। अत: हम अपने स्वराज्य के द्वारा सम्पूर्ण विश्व की सेवा करेंगे। "अंग्रेजी शासन से कठोर संघर्ष करते हुए भी कारावास–दण्ड आदि यातनाएं सहते हुए भी गांधीजी सेवा और त्याग के द्वारा सम्पूर्ण मानवता के साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर विश्व के क्रमिक आध्यात्मिक उन्नयन का स्वप्न देखते रहे। इसलिए उन्होंने "यंग इण्डिया" (१७-९-१९२५) में लिखा है–"मैं भारत को स्वतन्त्र एवं शक्तिशाली इसलिए देखना चाहता हूं कि यह विश्व कल्याण के निःस्वार्थ त्याग करने को उद्यत रहे। जिस प्रकार स्वतन्त्र व्यक्ति परिवार के हित के लिए अपना व्यक्तिगत हित बलिदान करता है, उसी प्रकार जनपद के लिए, जनपद सम्पूर्ण जिले के लिए जिला सम्पूर्ण प्रान्त के लिए तथा प्रान्त सम्पूर्ण देश के लिए तथा देश सम्पूर्ण विश्व के लिए अपना बलिदान करें।

इस प्रकार गांधीजी के लिए राजनीति ईश्वर, धर्म, आध्यात्म के समान पवित्र तथा चरित्र के समान महान् बन गई। राष्ट्रीयता विश्व प्रेम का साधन बन गयी। राजनीति मे नीति का समावेश कराकर गांधीजी ने सम्पूर्ण विश्व को एक नये मार्ग की ओर अग्रसारित किया। सम्पूर्ण विश्व राष्ट्रपिता का सदैव ऋणी रहेगा।

इस समय की राजनीति में गांधी की मूल्य प्रधान राजनीति का होना अत्यधिक आवश्यक है। हमारे राजनैतिक मूल्यों का ह्रास इतनी तीव्रता से हो रहा है कि मनुष्य एव समाज पशुता की ओर बढ रहा है, उसे गांधी के राजनैतिक चिन्तन से ही मानवता की ओर मोड़ा जा सकता है।

अगर तलाक बुरी बात है

(पृष्ठ ६ का शेष)

क्यों है कि इनमें से हरेक और सभी उनकी आखों से ओझल हो जाती है ?

– अगर पैगम्बर के कथन और उपदेश अपरिवर्तनीय, शाश्वत किस्म के माने जाएं जिन्होंने हमेशा के लिए नियम, कानून और मान्यताएं तय कर दी हैं, तो ऐसी एक विश्वदृष्टि के आधार पर सुधार कैसे किये जा सकते हैं ?

इन प्राथमिक प्रश्नों पर कोई थोड़ा-बहुत भी विचार करेगा तो वह इस किस्म के दावे करने से पहले चार बार सोचेगा, कि 'कोई और धर्म औरतों को इस्लाम की अपेक्षा ऊंचा दर्जा नहीं देता,' कि पैगम्बर दुनियां में अब तक हुए महानतम नारीवादी थे।" ये हदीस तो महज शुरूआत है, सुधारकों की राह में अभी और भी कई बाधाएं हैं।

विजय की प्रेरणा का पर्व विजयदशमी

(पृष्ठ ५ का शेष)

तत्त्व हैं जो राम को श्री राम ही रखते हैं। राम मात्र सद्वृत्ति का ही प्रतीक नहीं थे, सदगुणों की खान ही नहीं थे, वह तो एक ऐसे युग सृष्टा थे कि जो सद्गुण विकृति की प्रवृति से सर्वथा मुक्त परम-पराक्रम के साथ सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने वाले महान युग पुरुष थे।

उनका प्रेरक जीवनवृत्त हमें आज भी यह सन्देश दे रहा है कि मात्र अच्छाई को चाहना और स्वयं अच्छा बन जाना ही पर्याप्त नहीं है। यदि कोई बुरा है, असत्य पथगामी है, अन्याय का प्रेरक और प्रसारक है अथवा अपनी सीमा का अतिक्रमण करता है तो उसे राह पर लाना भी आवश्यक है। राम मात्र आर्य पुत्र ही नहीं अपितु 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के महान वैदिक आह्वान के प्रति मनसा-वाचा-कर्मणा आस्थावान भी थे।

उन्होंने इस सत्य को अपने जीवन वृत्त में साकार किया था कि अनेक कार्य परिस्थिति विशेष में 'सद' होते हैं तो परिवर्तित परिस्थितियों में 'असद्' बन जाते हैं। पराक्रम के स्वरूप में भी काल और स्थिति के अनुसार जनसाधारण के विचार प्रवाह में बदलाव आता रहता है। यद्यपि उसके मूल में निहित अदम्य मानवीय चेतना चिरन्तन और अक्षुण रहती है। इसे ही तो हम रामत्व कह सकते हैं, पौराणिक बन्धु जिसे 'देवत्व' की संज्ञा प्रदान करते आये हैं। यह रामत्व ही मानव जीवन का सहस्त्रों वर्षों से चिरन्तन आदर्श रहा है। गौतम बुद्ध, महावीर, नानक, गुरुगोविन्दसिंह सभी ने रामत्व का यही आदर्श अपने-अपने चिन्तन और मनन के अनुरूप वर्णित किया है। महर्षि दयानन्द ने राम की प्रतिमा का मान स्तवन भले ही नहीं किया, किन्तु उनकी दृष्टि में भी श्री राम एक आदर्श आर्य शासक का प्रेरक प्रतिमान थे। जैन, बौद्ध और सिख मतावलम्बियों ने तो अपनी गाथाओं और कथाओं में मर्यादा पुरुषोत्तम की विरुदावलि और महिमा गायी ही अब्दुल रहीम खानखाना भी जब राम भक्ति में अनुरक्त हुए तो उनके मधुरकंठ से गूंज उठा था "चित्रकूट में रम रहे रहिमन अवध नरेश"। सन्त कबीर के दोहों और साखियों में भी श्री राम यशोगान को नया आयाम मिला था। आज राम की जन्मभूमि को कतिपय मजहबी उन्मादी भले ही वाद-विवाद का विषय बना रहे हों, परन्तु जब भारत पर अंग्रेजी राज था तब नजीर जैसे अनेक मुस्लिम कवियों ने भी मुक्त कंठ से राम की महिमा के गान में एक क्रान्ति की चिंगारी दहकाने वाले अमर हुतात्मा मदन लाल धींगरा को भारत को परतन्त्रता में राम का अपमान दिखायी दिया था। राम को स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर और पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा ने क्रान्ति पथिकों को स्वातन्त्र्य समर में जूझने के लिए तैयार करने हेतु प्रेरणा का स्रोत बनाया था। तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना कर हिन्दू राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने का सपना संजोने वाले आद्य सरसंघचालक डा० केशवराव बलिराम ने भी अपने संगठन यज्ञ का सूत्रपात सन् १९२५ में नागपुर में विजयदशमी के पावन दिवस पर ही किया था।

विजयदशमी का यह पर्व हमे प्रेरणा दे रहा है कृत्रिम भेद-भाव, साम्प्रदायवाद, जातिवाद और क्षेत्रवाद की विभ्रान्तियों से मुक्त होकर इस महान देश को सबल और सुदृढ़ बनाने की। जो विश्वभर में अन्याय और शोषण की शक्तियों को चुनौती दे सके और हमें स्मृति दिला रहा है इस तथ्य की कि इस महान हिन्दू जाति ने अतीत में वीरों की अनन्त टोलियों को गोद में खिलाया है। यह राष्ट्र आज तक भी अपने उस गौरवपूर्ण युग की पावन स्मृति को अपने हृदय में संजोए हुए हैं कि उसने यूनान और रोम, फरोहा तथा इन्काओं जैसे राष्ट्रों को नष्ट कर देने वाली शक्तियों का भी मान मर्दन करने का बल विक्रम प्रदर्शित किया था। यह पर्व हमारे मन में आस्था जगाता है कि हमारा भविष्य निश्चय ही उज्जवल है। एक दिन अवश्य ही ऐसा आएगा जब मानव जाति इस राष्ट्र की महान शक्ति के दिव्य रूप का दर्शन करेगी। यह भी सुनिश्चित है कि जब कभी यह राष्ट्र उपरोक्त अवस्था को प्राप्त कर विजयादशमी का एक और पर्व मनाएगा और विश्व को उसके सन्देशों पर कान धरना होगा तो इस महान राष्ट्र का सन्देश यही होगा कि धरती के सब मनुष्यों और अन्य सर्व प्राणियों को परमपिता परमात्मा ने ही उत्पन्न किया है। परमात्मा ही हम सबका पिता और माता है अतएव हम सभी परस्पर भाई हैं। वेद का यही तो उद्घोष है कि यह भूमि हमारी माता है और हम सभी इसके पुत्र हैं।"

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२९/४ के बृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों में छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ९०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक व्यय ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आर्य समाज बिरलालाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-५,
के परिसर में

मानव-निर्माण-शिक्षण-केन्द्र

आर्य भद्रपुरुषों व माताओं! आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे बार-बार आग्रह करने पर आर्य जगत् के युवा विरक्त प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य भद्रकाम वर्णी ने संस्कृत, व्याकरण दर्शन, उपनिषदादि आर्ष ग्रन्थों का अध्यापन आरम्भ कर दिया है।

शिक्षण का समय : प्रात: ८.३० बजे से सायं ४.३० बजे तक।
सामुहिक शिक्षण : (१ प्रात: ८.३० बजे से ४.३० बजे तक।
(२) सायं ३.०० बजे से ४.३० बजे तक।

निर्माणात्मक इन कार्यक्रमों में भाग लेकर बौद्धिक, आत्मिक व सामाजिक उत्थानके लिए विद्योपार्जन करें,शिक्षण नि.शुल्कहै। विशेष जानकारी के लिए मिलें या सम्पर्क करें। —जयकृष्ण आर्य मन्त्री

श्रीमान पं० विद्याभूषण भोपले का देहान्त

हिवरखेड के प्रसिद्ध धन्वंतरी श्रीमान पं० विद्याभूषण जी भोपले सिद्धान्त प्रभाकर इनका दिनांक ३-९-९५ रविवार को सुबह ११ बजे वृद्धावस्था के कारण देहान्त हुआ। उनकी आयु ८१ वर्ष की थी।

डा० सत्यव्रत जी भोपले मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ उनके पिताश्री थे। उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज के लिए अर्पित किया। उनके पीछे दो पुत्र, एक कन्या तथा बहुत बड़ा भोपले परिवार है।

उनका अन्तिम संस्कार वैदिक पद्धति से मन्त्रोच्चार द्वारा किया गया। श्रीमान कृष्णाजी इंगले (विधायक जलगांव जामोद), श्रीमान प्राचार्य येनकर, गाडगे बाबा महाविद्यालय, मूर्तिजापुर, श्री पं० अमृतलाल शर्मा श्री सेवकराम जी आर्य, श्री उमेश आर्य एवं आर्य भाईयों ने मूक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

कितनी खतरनाक होती हैं अफवाहें

(पृष्ठ ३ का शेष)

दूसरी तरफ चन्द्रास्वामी देश और विदेश में इस 'चमत्कार' के लिए अपनी ही पीठ थपथपा रहे हैं। उनके आश्रम और कई मंदिरों में 'चन्द्रास्वामी का चमत्कार–गणेश पिए दूध की धार' नारा गूंजता सुना गया। इसे चन्द्रास्वामी का कमाल बताने की कोशिश की जाती रही। स्वयं चन्द्रास्वामी ने कहा कि बचपन से ही वह भगवान गणेश के उपासक हैं। उन्होंने ही भगवान गणेश को जाग्रत करके कुछ ऐसा ही 'चमत्कार' करने को कहा था। उन्होंने कहा कि यह तो अभी चमत्कारों की शुरुआत है।

वह ऐसे कितने चमत्कार दिखाएंगे, मालूम नहीं। संभवत: वह खुद पर लगाए गए आरोपों पर से देश की जनता का ध्यान हटाकर उन्हें ऐसे चमत्कारों में उलझाए रखना चाहते हैं।

और हमारे देश की जनता भेड़चाल में तो माहिर ही है। वैसे भी धर्म के नाम पर वह बिना सोचे-समझे कुछ भी करने को तैयार हो जाती है। भगवान को मानिए, उसमें आस्था रखिए, पर अंधविश्वास तो मत कीजिए।

बहरहाल इस तरह की अफवाहें जो कोई भी फैला रहा है, वह जनता और देश के हित में नहीं है। अपने स्वार्थ के लिए फैलाई गई इस तरह की 'खबरें' किसी दिन सर्वनाश भी कर सकती हैं। हो सकता है कि किसी दिन कोई ऐसी खबर फैला दी जाए कि जिससे देश में गृह युद्ध की स्थिति पैदा हो जाए। तब ? बाद में पछताने से कुछ नहीं होगा। समझदारी इसी में है कि सोचे-समझे और जाने-परखे बिना किसी भी बात पर एकाएक यकीन न किया जाए।

गैर हिन्दू होने पर दलितों को सुविधा देना एक षड़यन्त्र

कानपुर केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी की यह घोषणा की लोक सभा के अगले सत्र में ऐसा बिल लाया जायेगा जिसमें हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई और मुसलमान बनने पर दलितों को पूर्ववत सुविधायें प्राप्त होंगी। यह सब हिन्दू समाज को कमजोर करने का षड़यन्त्र है आर्य समाज इसका देश भर में विरोध करेगा।

यह विचार आर्य नेता केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्य समाज गोविन्दनगर में आर्य समाज द्वारा आयोजित एक समारोह की अध्यक्षता करते हुये व्यक्त किये।

श्री देवीदास आर्य ने आगे कहा कि राजनैतिक दल अपना वोट बैंक बनाने हेतु मुसलमान और ईसाइयों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये संविधान के विरुद्ध यह चालें चल रहे हैं। हर एक देश भक्त को इन चालों को विफल करना चाहिये क्योंकि देश के जिस क्षेत्र में हिन्दू कम हुआ है उस क्षेत्र की सुरक्षा संकट में पड़ रही है।

सभा का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया। सभा में प्रमुख रूप से सर्वश्री देवीदास आर्य, पं० श्याम-प्रकाश शास्त्री, स्वामी प्रज्ञानन्द, रामलाल सेवक, मदनलाल बावला वीरेन्द्रकुमार सेठी, बालगोविन्द आर्य, पं० जगन्नाथ शास्त्री श्रीमती कैलाश मौर्या आदि ने विचार व्यक्त किये।

धर्मान्तरण की समस्या

(पृष्ठ ४ का शेष)

विडम्बना यह है कि अनेक केन्द्रीय राजनैतिक दल सामूहिक धर्मान्तरण को मान्यता दिलवाने के लिए तुले हुए हैं और अब तो प्रयास यह हो रहा है कि हिंदू समाज मे जो धीरे-धीरे करके अपनी समस्याओं का समाधान खोज रहा है और एकतत्व की ओर बढ़ रहा है, कैसे फूट हो जाए और कैसे यह समाज और अधिक आगे न बढ़ पाए। वस्तुत धर्मान्तरण की समस्या पर शीघ्र ही राष्ट्रीय स्तर पर एक अच्छी-खासी बहस होनी चाहिए और इस प्रकरण पर संसद मे भी चर्चा होनी चाहिए, क्योंकि तभी समस्या का समाधान हो सकेगा।

वेदकथा एवं वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर बी एन पूर्वी शालीमार बाग नई दिल्ली मे ११ से १७ सितम्बर तक धर्मसामार्थ वेद कथा एव यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य सत्यानन्द वेद वागीश थे। इस अवसर पर १७ सितम्बर को श्री साहिबसिंह वर्मा के द्वारा दयानन्द द्वार का उद्घाटन किया गया। समारोह में आर्य जगत के विद्वान तथा नेताओं ने सभा को सम्बोधित किया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मीरानपुर कटरा (शाहजहांपुर) १८ अगस्त १९९५ आर्य समाज मीरानपुर कटरा के सत्संग भवन में चार दिवसीय कार्यक्रम के उपरान्त आर्य समाज का ५१वां वार्षिकोत्सव ख्याति प्राप्त आर्य विद्वानों की अमृतोमयी वाणी की मधुर वर्षा के साथ धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

स्थानीय आर्यसमाज के सत्संग भवन में आयोजित इस उत्सव में आगरा से पधारें आचार्य श्री विद्यादेव जी त्रिवेदी, श्री छेदा-सिंह आर्य, श्री कृपालसिंह आर्य, श्री सत्यदेव शर्मा, पं० भानुप्रकाश आर्य मधुर तिलहर आर्य समाज के प्रधान आचार्य श्री रामस्वरूप जी आर्य आदि द्वारा अपने-अपने वक्तव्य दिये गये।

स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य द्वारा अतिथि विद्वानों का आभार प्रकट कर उन्हें व श्रोतागणों का धन्य-वाद दिया तथा शान्तिपाठ व जयघोष के साथ वार्षिकोत्सव उत्सव के समापन की घोषणा की गई। —वीरेन्द्रकुमार आर्य

धार्मिक कथा का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर गांधी-नगर दिल्ली-३१ में सोमवार १८ से रविवार २४ सितम्बर १९९५ तक धार्मिक कथा का आयोजन किया गया। कथा में सामवेद पारायण यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री द्वारा प्रवचन दिये गये।

आर्य समाज टाण्डा द्वारा आयोजित

पूर्वांचल आर्य कार्यकर्ता गोष्ठी तथा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज टाण्डा का १०४ वां वार्षिकोत्सव आगामी ३ से ५ नवम्बर १९९५ तक मनाना निश्चित हुआ है। उक्त अवसर पर ६ और ७ नवम्बर को "पूर्वांचल आर्य कार्यकर्ता गोष्ठी" का आयोजन, माननीय पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव-प्रधान, सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा और आदेशानुसार किया गया है। प्रधान जी की स्वीकृति भी प्राप्त हो गई है। उक्त सम्मेलन का व्यापक प्रभाव पड़ेगा तथा सगठन को शक्ति प्राप्त होगी।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश बिहार बंगाल, उड़ीसा तथा नेपाल के आर्य कार्यकर्ता भारी सख्या मे सम्मिलित होगे।

वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम में समारोह

वैदिक वृद्ध सन्यास आश्रम, अशोक नगर रेलवे वर्कशाप रोड, यमुना नगर हरियाणा मे आर्य केन्द्रीय सभा यमुना नगर के तत्त्वावधान मे (५ से ८ अक्तूबर १९९५ तक बड़े धूम-धाम से अन्टम वेद प्रचार समारोह एव स्वामी विरजानन्द जी जयन्ती समारोह तथा ५०१ यज्ञो कुण्डो पर यज्ञ होगा। जिसमे उच्च कोटि के विद्वान मार्ग दर्शन करेगे। अत सब बहिन भाई अपने इष्ट मित्रो सहित सपरिवार समयानुसार पधार कर धर्म लाभ उठावें।

मन्त्री हरद्वारी लाल शर्मा

वेद प्रचार दिवस सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आयोजित 'वेदप्रचार दिवस' आर्य स्त्री समाज पजाबी बाग (पश्चिमी) मे श्रीमती सुशीलाजी आनन्द की अध्यक्षता मे सोत्साह मनाया गया। जिसमे सामवेद के मन्त्रो की अर्थ सहित प्रतियोगिता हुई। इसमे बहद् सख्या मे बहनो ने भाग लेकर अपनी वेद के प्रति श्रद्धा और निष्ठा का परिचय दिया। निर्णायक थी श्रीमती शकुन्तला आर्या एव प्रेमशील जी महिन्द्र। २ से ५ तक वद सम्मेलन श्रीमती शकुन्तला दीक्षित के सयोजन मे सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्व श्रीमती डा० शशी प्रभा, डा० उषा शास्त्री, डा० सुनीति शर्मा ने वैदिक वाग्मय के विषय मे अपने विद्वत्ता पूर्ण विचार प्रस्तुत किए। श्रीमती प्रकाश आर्या शान्ती जी मलिक, सरला जी महता कृष्णा चड्ढा आदि ने अपनी शुभ कामनाये दी। भारी सख्या मे बहनो ने सम्मेलन मे भाग लिया।

शिक्षक का सम्मान हर पल होना चाहिए

खण्डवा। श्री महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति की ओर से शिक्षक शिक्षिकाओ को सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए विधायक श्री पूरनमल शर्मा ने कहा कि राष्ट्र निर्माताओ का सम्मान सिर्फ ५ सितम्बर को ही नही वरन ३६५ दिन होना चाहिए। मुख्य अतिथि अतिरिक्त कलेक्टर एव सिटी मजिस्ट्रेट श्री एस० एस० दुबे ने कहा कि जो अज्ञान मे ज्ञान असत्य मे सत्य का बोध कराता है वह वन्दनीय है।

इस अवसर पर उद्योगपति श्री राजनारायण परवाल, लायन्स क्लब के सचिव श्री सूर्यप्रकाश मेहता, आर्य समाज के सचिव श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, पत्रकार श्री कैलाश पालीवाल, सुश्री सुषमा कनोजिया ने भी शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्ति किए, इस अवसर पर सर्वश्री वेदपाल जी. भगवानसहाय जोशी, विनोद कुमार वर्मा, रामचन्द्र खुट्टानी, योगेन्द्र कुमार चाडक, श्रीमती पदमा पहारा, श्रीमती किरण चौहान, श्रीमती सयोगिता बक्शी, श्रीमती करुणा मारकण्डेय, सुश्री ममता शर्मा का शिक्षण समिति की ओर से किया गया।

जापान के स्कूलों में वेद की शिक्षा

जापानी स्कूलो मे वेदो की शिक्षा। चौंकिए मत। वेदो के वैज्ञानिक चरित्र ने जापानी शिक्षाविदो को इतने गहरे तक प्रभावित किया है कि जापान की स्कूली शिक्षा मे वेदो के आसान अध्यायो को शामिल किया जा रहा है। प्रायोगिक तौर पर शुरू होने वाली यह स्कीम अगर अच्छे नतीजे सामने लाई तो कालेज स्तर पर भी वेदो का अध्ययन शुरू किया जाएगा याकोहामा यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर तासुआ नेती कहते हैं कि 'वेद तो जीवन की शिक्षा हैं जब तक जीवनहै तब तक आप इन्हे अनदेखा नही कर सकते। पता नही कसे ज्ञान के इस अथाह भडार की कीमत इनका जनक देश भारत ही नही जान पा रहा है।

(नवभारत टाइम्स के २०-८-९५ के अक से साभार)

ऋषि निर्वाणोत्सव

२३ अक्तूबर ९५, सोमवार प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली

मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। आप सब सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित हजारो की सख्या मे पधारे।

निवेदक –

महाशय धर्मपाल प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०४६/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-१०-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O.on 5, 6-10-1995

आर्यसमाज रोहिणी का वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव समारोह १५ से १६ नवम्बर ९५ तक बड़े हर्षोल्लास से मनाया जायेगा। प्रातः यज्ञ, रात्रि भजन व प्रवचन के अतिरिक्त बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं, महिला सम्मेलन आदि आयोजित किये जा रहे हैं। आपको विदित ही है कि आर्य समाज रोहिणी का भवन नहीं है और यह कार्यक्रम खुले स्थान पर शामियाने में सम्पन्न होगा। टैंट, यज्ञ तथा अन्तिम दिन देसी घी के लंगर पर हजारों रुपयों का व्यय होना है।

अपील

आपसे निवेदन है कि इस पवित्र कार्य में तन-मन-धन से लंगर हेतु आटा, घी, सूजी, चने आदि तथा नकद राशि अथवा चैक, ड्राफ्ट 'आर्य समाज रोहिणी' के नाम भेज भेजकर) सहयोग प्रदान करें। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित है।

कृपया इस यज्ञ कार्य में भाग लेने हेतु अपने-अपने कार्यक्रम अभी से निश्चित कर लें कार्यक्रम का पूर्ण विवरण-पत्र आपकी सेवा में शीघ्र भेजा जा रहा है।

नरेशपाल आर्य मन्त्री

10150—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
जि० हरिद्वार (उ० प्र०)

आर्य समाज का इतिहास

प्रथम व द्वितीय भाग छप गया

ले०—प० इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रथम भाग, पृष्ठ—३५० मूल्य—५०) रुपए
द्वितीय भाग, पृष्ठ—३७६ मूल्य—७५) रुपए

दोनो भाग छप कर सभा कार्यालय मे उपलब्ध हैं। दीपावली तक अग्रिम राशि भेजने पर उपरोक्त दोनो भाग केवल ८०) रु० में। डाक व्यय अलग।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता

(१) [illegible] आयुर्वेदिक स्टोर, १७७ चावड़ी बाजार, (२) मै० [illegible] स्टोर १०१७ [illegible] रोड, [illegible] नई दिल्ली (३) मै० [illegible] (४) मै० [illegible] आयुर्वेदिक [illegible] रोड, [illegible] (५) मै० [illegible] (६) मै० [illegible] (७) श्री वैद्य [illegible] (८) [illegible] (९) श्री वैद्य [illegible] दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—
६३, गली राजा केदार नाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली
फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

टेलीफोन : २६१४३८ 'प्रखर'—वैज्ञाल'२०४९

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३४ अंक ३५) दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९६ कार्तिक कृ० ६ सं० २०५२ १५ अक्तूबर १९९५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष

स्व० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का

स्मृति दिवस-समारोह

अध्यक्षता पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

१५ अक्टूबर १९९५ : समय २ बजे

समस्त-आर्य-हिन्दू जनता की ओर से स्व. स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का स्मृति दिवस लालकिला मैदान में १५ अक्टूबर ९५ रविवार २ बजे बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस समारोह की अध्यक्षता वीतराग स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे।

इस महामानव को हमारे मध्य से गए अब पूरा एक वर्ष हो रहा है आर्यसमाज का ज्योतिस्तम्भ, संघर्षशील जुझारू नेता की स्मृति में एक भव्य आयोजन किया जायेगा।

हे महामानव ! आपका अवसान हमारे लिए दुःखदायी बना। आपने इस संसार से विदा ली और दूसरी ओर दुष्प्रवृत्ति के पोषक अनार्य तत्वों ने आर्यसमाज को मूल से उखाड़ने का दुस्साहस किया ऐसे समय में आपका स्मरण होना नितान्त आवश्यक है। आपके जीवन से जहां शक्ति मिलती थी वहीं जोश भी मिलता था।

आपने २४ वर्ष तक निरन्तर सार्वदेशिक सभा अध्यक्ष पद को सर्वसम्मति से सुशोभित किया। आपकी विद्यमानता में सार्वदेशिक सभा की चहुंमुखी उन्नति हुई।

लाखों रुपयों के साहित्य का प्रकाशन, आर्थिक दृष्टि से सभा अपने पैरों पर खड़ी हो गई। विद्वानों का सम्मान हुआ, विद्यार्थी-अनाथ विधवाओं को आर्थिक सहयोग किया गया।

आर्य महासम्मेलनों की देश-विदेश में धूम मच गई। [illegible] (शुद्धि कार्य) स्वीकार कर हिन्दू समाज को पद दलित होने से बचाया। पंजाब-कश्मीर-असम के विघटन की समस्या पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती चिन्तित होकर उसकी रक्षार्थ संलग्न हो जाते थे।

आज उनका अभाव खटक रहा है समस्त आर्य जगत् की ओर से उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उन जैसे राष्ट्र भक्त बनें।

हे—[illegible] ! आप तो गये—आप स्वर्ग मुक्त हो गए—परन्तु आपका [illegible] आर्य जगत के लिए हानिकर सिद्ध हुआ। आपके विचारों का प्रसार [illegible] पुनः [illegible] में [illegible] करें।

स्व० पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का

स्मृति दिवस समारोह

१५ अक्टूबर १९९५ (रविवार) को
मध्यान्ह २ बजे से ५ बजे तक

स्थान—लाल किला मैदान, दिल्ली-६

अध्यक्षता—

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

मुख्य वक्ता : श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
श्री मदन लाल खुराना (मुख्यमन्त्री दिल्ली सरकार)
श्री बच्चनसिंह आर्य (मन्त्री हरियाणा सरकार)
श्री जत्थेदार रिछपाल सिंह
श्री एच. के. एल. भगत (पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भारत)
श्री ज्ञानप्रकाश चोपड़ा (अध्यक्ष डी. ए. वी. कमेटी)
जैन साध्वी साधना देवी
श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (प्रधान सार्वदेशिक सभा)
श्री सोमनाथ मरवाह (सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
श्री वेदप्रताप वैदिक (सम्पादक भाषा)
श्री रमाकान्त गोस्वामी (हिन्दुस्तान समाचार पत्र)
श्री वाचस्पति उपाध्याय (कुलपति लालबहादुर विद्यापीठ)
श्री प्रेमचन्द्र गुप्त (सनातन धर्म सभा दिल्ली)

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादकीय

एक विचारणीय प्रश्न–

यति मण्डल क्या है ?
और क्यों ?

पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का पत्र मिला कि शास्त्री जी आप भी यतिमंडल की बैठक मे आकर अपने विचार दो। मैं सकते मे आ गया कि कहा है यति मण्डल ? कैसा यतिमण्डल, प्रश्नो की झडी लग गई, समय आया, और मैं वहा पहुंचा भी। देखकर आश्चर्य हुआ पूज्यपाद सर्वानन्द जी महाराज २-३ भक्तो के मध्य चिन्तातुर है आर्यों के कार्यकलापो पर। मैं अभिवादन कर बैठ गया तो महाराज जी ने कहा बस तुम आ गए अब बताओ कैसे सुधार होगा, और जो समस्याए आर्य समाज मे उत्पन्न है उनका क्या समाधान है ?

बात को यह कहकर विराम दे दिया एकतरफा बात है सबसे मिलकर बात करो! किससे बात करे, मैंने कहा जो भी प्रमुख है या जिनसे बात करने से लाभ मिल सकता है ?

प्रश्न यह है कि कुछ सिर फिरे लोगो को जब कभी छेडखानी करने की याद आई तो स्वामी सर्वानन्द जी के पास दौडे आए और यतिमण्डल की बैठक बुला ली। एक बार मैं रोहतक की बैठक मे गया जब स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को हटाओ, आर्य समाज बचाओ का नारा दिया था उस बैठक मे।

५-७ सन्यासी, १० वानप्रस्थी, ७-८ गृहस्थी, ५-७ ब्रह्मचारी उपस्थित थे। बातें हो रही थी घर-बार और मठो को छोडकर बाहर निकलो।

उस दिन प० सुखदेव शास्त्री महोपदेशक हरियाणा ने जो खरी खरी उस सारे यतिमण्डल को सुनाई थी उस पर आज तक ध्यान नही दिया। उसके बाद यतिमण्डल की कई वर्षों बाद फिर नींद खुली। बात वही - आर्य समाज बचाओ। सस्था तो मरेगी नही–चाहे तुम कुछ भी कर लो।

मुझे आश्चर्य इस बात पर है कि क्या बात करनी है इन विचारो की सूची, समय पर दी जाए। पर किसे ध्यान है नियमो का, नियमावलि का। चर्चा है गृहस्थी तुम्हारी सेवा नही करते। गृहस्थी सबकी सेवा करते हैं पर आप कथनी-करनी पर विचार क्यो नही करते ?

अत पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कार्य करने के लिए व्यवस्था दीजिए–केवल आर्य समाज बचाओ, कहने से बात नही बनेगी।

आक्षेप नहीं–सुझाव है ? रोहतक से अब तक–क्या काम किया, यति मण्डल ने, विचारो ?

(१) बाढ़ का तूफान आया, महाराष्ट्र मे भूचाल आया, वीभत्स दृश्य था सैकडो आर्य वीरो ने काम किया। गृहस्थियों ने सामान व धन दिया। सार्वदेशिक सभा सबके साथ जूझ रही थी पर आप यतियों का कहीं पता तक नहीं है दो साल के मध्य यह सेवा का अवसर आया था।

(२) सारे भारत के गुरुकुलो की क्या स्थिति है क्या शिक्षा प्रणाली है सहशिक्षा पर गुरुकुल कागडी मे मार हुई, हुडद ग मचा उस समय या उसके बाद तक आपका पता नही चला आप है कहा ?

(३) सारे भारत के गुरुकुलो की रीति-नीति शिक्षा पटल पर आसू बहाते फिर कहते आर्य समाज बचाओ, अच्छा लगता। अभी-अभी एक पत्र थानेसर टाइम्स पढा 'आर्य समाज बरबादी के कगार पर" करोडो रुपए खा गए। कभी सोचा यतिमण्डल ने।

(४) गुरुकुल कागडी की सम्पत्ति पर पजाब, हरियाणा, दिल्ली पर परस्पर खुला लाछन है यति मण्डल कहा है उत्तर प्रदेश मे लाखो रुपया ४ वर्ष मे पानी की तरह बरबाद हो गया, यतिमण्डल कहा है ?

(५) गुरुकुल झज्जर की फार्मेसी का राना नाना समस्यायें हैं जिसमे कई वर्षो से आर्य समाज के रक्षको व भक्षको मे भीषण युद्ध चल रहा है जिसकी चर्चा भू पू उपायुक्त विजय कुमार ने स्वामी ओमानन्द जी से पत्राचार किया था।

शिक्षा पटल परीक्षा–यतियो आपको पता है विद्यालयो, कालिजो की नकल की बीमारी आज हमारे गुरुकुलो म भी आ गई है लडका पढना नही चाहता नकल करके या कोरी कापी देकर अच्छे नम्बर लेना चाहता है।

यति मण्डल को चाहिए कि समय समय पर कहा आग लग रही है उसे बुझाए।

कुरुक्षेत्र कन्या महाविद्यालय की सचालन समिति का गठन करती। कन्या गुरुकुल नरेला मे वहा की छात्राओ उनके अभिभावको से मिलकर उनके आसू पोंछते। पर औरो के ऊपर चुभाऊ बनने वाला यति स्वयं अनिश्चय की सीमा मे है।

हरियाणा पजाब आर्य समाज की रीढ है जितने गुरुकुल हैं उतने कही नही। परन्तु आज तक यतिमण्डल ने सोचा तक नहीं कि गुरुकुलो का भविष्य कैसा है ? परोपकारिणी सभा मे सत्यार्थ प्रकाश पर विवाद है, आपने क्या किया।

यतिमण्डल ने कितने नए व्यक्ति पैदा किए। जो वहा बैठा है वह वहीं जमा है।

विवादों के घेरे मे–

इकाई से लेकर दहाई सैकडा तक विवाद ही विवाद है यति मण्डल कहीं गया है–गोरक्षा का प्रश्न, मद्य निषेध, नारी उत्पीडन, अछूतोद्धार, मायावती काशीराम अनेक तोडो आन्दोलन जैसी समस्यायें मु ह फैलाये खडी है यति मण्डल ने कही भी कार्य किया हो, तो बताइए।

जिन्हें समझते थे सरपरस्त वही कातिल निकले! एक आई ए एस आफीसर विजय कुमार ने कुण्डली के काले कारनामो का चिट्ठा खोला है।

पानीपत के एक लाला प्रेमचन्द गुप्त ने इनके काले कारनामें छापे हैं क्या यति मण्डल ने इन कुत्सित कार्यों की ओर भी ध्यान दिया है।

आज मीनाक्षीपुरम् की तरह दक्षिण भारत में पुन ६० हजार हिन्दू मुसलमान बनने जा रहा है यतिमण्डल कहा है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् जी आज १५ दिनो से क्षेत्र में घूम घूम कर सगठनात्मक कार्य कर रहे हैं। सार्व० सभा से एक लाख रुपया भी भेजा जा चुका है।

पर यति मण्डल के सदस्यों का मठों-मन्दिरों आचार्यों के निर्माण व उनकी मलकियत पर ध्यान है–नारा आर्य समाज बचाओ।

हरियाणा में जम कर बाढ आई यति मण्डल ने क्या किया ?

विवाद देश की विशाल समस्याए, दूर की क्या कहें आपके घर में ही नरेला-झज्जर कुरुक्षेत्र इन्द्रप्रस्थ की समस्याओ को वहा के अहम् लोगों ने दबाव से या धन के बल दिया है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

प्रथम पुण्य तिथि पर विशेष :

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा-मन्त्री

आर्य जगत् के दिशा निर्देशक, कर्मठ, कर्त्तव्यपरायण, प्रबन्धपटु, कृतसकल्प, अहर्निश उत्सर्गमयी वीर भावना के प्रतीक, सिद्धातप्रिय, सत्य-निष्ठ, स्पष्टवादी, संवेदनशील, सहृदय, सगठन शक्ति और सुचारू व्यवस्था के लिए तन-मन-धन से समर्पित, आर्यसमाज और वेद के प्रति अगाध श्रद्धावान समाजवाद—मानवतावाद—समानता मे अडिग निष्ठा के कारण सभी के श्रद्धास्पद एवं स्नेह भाजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वोच्च प्रधान पद को अलंकृत करने वाले पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को राष्ट्र निर्माता, युगनिर्माता, के रूप मे सादा स्मरण किया जाएगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य अनुयायी, लोक सेवा के उद्यान को सुवासित करने वाले मनोरम मनोहारी पुष्प, निस्वार्थ नेतृत्व के लिए आर्यसमाज के साथ-साथ अन्य धर्मावलम्बियो द्वारा सम्मानित, अपनी सेवाओ से लोगो के हृदय में स्थान प्राप्त करने वाले उस महाधन के उच्च व्यक्तित्व, महान आदर्शों, कार्यों और परम्पराओं से आर्यसमाज की वर्तमान और भावी पीढ़ी आनन्द विभोर होकर कृतज्ञ भाव से चिरकाल पर्यन्त प्रकाश ग्रहण करेगी।

सार्वजनिक जीवन की विशुद्धता, सामाजिक कार्यों की धवलता आपके श्वेत—धवल व्यक्तित्व और कर्तव्य का प्रतिबिम्ब है। आर्यधर्म, आर्य-संस्कृति और आर्यसमाज पर आने वाली विपत्तियो के निराकरणार्थ हजारों—लाखो—करोड़ों आर्यजनों की दृष्टि सदैव आप पर ही केन्द्रित हुई है। आर्यसमाज उसके आदर्श, उसका हित और कार्य ही आपके मन, मस्तिष्क पर आच्छादित रहे हैं तथा आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अविभाज्य अंग बन गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आप १९४९ मे सदस्य के रूप में जुड़े और इस लम्बी जीवन यात्रा मे उसके उपमंत्री, मन्त्री और उपप्रधान पदों के सोपानों पर निरन्तर दृढ़ता से चढ़ते हुए, सर्वोच्च पद—प्रधान पद पर पहुंचे। इस गरिमामय प्रधान पद को आपने अनवरत २१ वर्ष तक समलकृत किया। जिस पौधे को महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने १९०८ में लगाया था, उसे पुष्पित पल्लवित करने मे आपने अपना सर्वस्व लगा दिया। सजग प्रहरी के रूप में उसकी प्राणपण से रक्षा, कार्य विस्तार, प्रभाव और गरिमा वृद्धि में आपका स्पृहणीय योगदान रहा। आज विशाल वटवृक्ष की छाया में सम्पूर्ण विश्व की आर्यसमाजें, आर्य प्रतिनिधि सभाए, गुरुकुल, डी. ए बी. स्कूल—कालेज तथा विश्वविद्यालय पुष्पित, पल्लवित हो रहे हैं। दिग्—दिगन्त तक आर्यसमाज का सिद्धात नाद गुंजायमान है।

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (पूर्व नाम लाला रामगोपाल शाल वाले, की पितृभूमि अमृतसर थी। उनके स्वर्गीय पिता लाल नन्दलाल जी निजी व्यवसाय के सिलसिले में काश्मीर चले गए थे। वहां ही श्रीनगर मे संवत् १९६४ वि० में आपका जन्म हुआ और प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं पर हुई। आपका परिवार कट्टर पौराणिक था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्ययन और आर्यजनों के संसर्ग से आप आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए। दिल्ली में आपका आगमन सन् १९२३ मे हुआ। यहीं मुख्यतः श्री स्व० प० व्यासदेवजी शास्त्री के विशेष सम्पर्क मे आने पर आप के ऊपर आर्यसमाज का रंग चढ़ा जो दिन—पर—दिन गाढ़ा होता चला गया। आपने अपने पुत्र और पुत्रियों के विवाह आर्यसमाज की भावनाओं के अनुकूल, गुण—कर्म और स्वभाव की समानता देखकर तथा जन्मना जाति का बन्धन तोड़कर किए। पूज्य स्वामीजी का जीवन और कर्तृत्व आर्य-समाज और देश के गौरव में विशिष्ट आभा लाने वाला है।

स्वामी जी महाराज का हृदय वज्र से भी कठोर और पुष्पो से भी मृदु था। वे धोखेबाज, बेईमान, कदाचारी के लिए वज्र सम कठोर थे तथा ईमानदार, सदाचारी, विद्वान् संस्कृतानुरागी ब्रह्मचारियो के लिए पुष्प समान कोमल थे। नीति शास्त्र का एक श्लोक उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का साक्षात् निदर्शन करता है—

> उत्साह सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञ व्यसनेष्वसक्तम्।
> शूर कृतज्ञं दृढ़सौहृद च लक्ष्मीः स्वयं गच्छति वासहेतोः॥

उत्साह, स्फूर्ति, क्रियाविधि का ज्ञान, व्यसनों में अनासक्ति, शूरता, कृतज्ञता, दृढ़सुहृदयता आदि गुण जिसमें होते है, लक्ष्मी स्वयं उसके पास चली आती है। इसमे कोई अतिशयोक्ति नही है कि स्वामी जी महाराज मे ये सभी गुण विद्यमान थे। इन्हीं गुणो के कारण आप आर्य युवक सभा की स्थापना से लेकर, आर्यसमाज दीवानहाल के वर्षों मन्त्री, वर्षों प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा के वर्षों प्रधान, अन्य कई सस्थाओ के पदाधिकारी, विश्व भर के अनेक न्यासों के प्रधान और सार्वदेशिक सभा के उपमत्री, मन्त्री, उपप्रधान और प्रधान पद तक पहुंचे। आपके गुणो के कारण ही यशोलक्ष्मी आपको प्राप्त हुई।

फव्वारा के निकट एक छोटे से आर्यसमाज के आप स्वयं ही सेवक भी थे और मन्त्री भी। इस आर्यसमाज ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धातो को जन-जन तक पहुचाने के लिए वह किया जो बड़ी-बड़ी आर्यसमाजें भी न कर सकी। उन दिनो आर्यसमाज दीवान-हाल के सर्वेसर्वा लाला नारायणदत्त जी थे। उन्होने युवक लाला राम-गोपाल शालवाले की कर्मठता और आर्यसमाज के प्रति निष्ठा को देखा और उन्हें आर्यसमाज की मुख्य धारा से जोड लिया। इसके बाद तो लालाजी का सार्वजनिक जीवन क्षेत्र विस्तृत होता चला गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में आप पहली बार १९४९ में प्रतिनिधि के रूप में आए और सभा के उपमन्त्री के रूप मे निर्वाचित हुए। उस समय सभा के प्रधान थे स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति, सभा मन्त्री थे प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय। ऐसे महान लोगों के साथ कर्मठ, कर्त्तव्यशील, शुद्ध चरित्र वाले लाला रामगोपाल शालवाले का व्यक्तित्व निरन्तर निरभ्र होता गया।

आपके हृदय की सवेदनशीलता के अनेक प्रमाण हैं। जब-जब किसी संस्कृतानुरागी युवा ब्रह्मचारी ने उनसे कुछ चाहा, उसे तुरन्त मिला। स्वामी जी सार्वजनिक शुद्धता का इतना ध्यान रखते थे कि उन्होंने कभी ऊची श्रेणी में यात्रा नहीं की, रिक्शे से अथवा पैदल कार्यालय आते रहे, साथ मे दो रोटी बाध लाया करते थे। ससद् सदस्य बनने पर भी उनका यही व्यवहार जारी रहा। आप सार्वजनिक धन का अपव्यय करने की बात कभी सोच भी न सकते थे। मृत्युपर्यन्त उन्होने सभा का एक भी पैसा अपने ऊपर व्यय न होने दिया। आपका अभिनन्दन ग्रन्थ छपने का निर्णय स्वीकार हुआ, तो आपने स्पष्ट कह दिया कि सभा का पैसा व्यय नही होगा। आपके लिए सभा की ओर से गाडी खरीदने की बात आई, आपने इसे भी स्वीकार न किया।

स्वामी जी महाराज की अपनी एक विशिष्ट शैली थी। एक बार आप एक सब—जज की अदालत मे आर्यसमाज के किसी मुकदमें में गवाही दे रहे थे। जज महोदय ने रीति के अनुसार आपसे यह शपथ लेने को कहा कि 'जो आप कहेंगे, वह आप सत्य कहेंगे।' इस पर आपने उन्हें सम्मान-पूर्वक कहा कि मैं जो कहूगा उसे धर्म से कहूंगा परन्तु इस शपथ लेने का मूल्य तो तब है, जबकि मेरे कहे को सत्य समझा जाएगा। यह सुनकर जज महोदय बहुत ही प्रभावित हुए और उनकी बात को सच्चे आर्य की बात माना और उनके कहे को सत्य मानकर, निर्णय सत्य के पक्ष में, आर्यसमाज के पक्ष मे दिया।

अनेक राष्ट्रीय नेता उस महाधन आर्यनेता से मिलने को तत्पर रहते थे। श्री मोरारजी देसाई, श्रीमती इन्दिरा गाधी, श्री राजीव गाधी उनसे अनेक राष्ट्रीय विषयों पर परामर्श किया करते थे। वे उनकी बात का आदर किया करते थे।

पूज्य स्वामी जी महाराज (पूर्व नाम लाला रामगोपाल शालवाले) ने चांदनी चौक दिल्ली क्षेत्र का १९६७-७१ में संसद् में प्रतिनिधित्व किया था। उनकी प्रतिद्वन्द्विता में एक साधन सम्पन्न उम्मीदवार भी थे। वे एक

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

(पृष्ठ ३ का शेष)

दिन चावड़ी बाजार से गुजर रहे थे। उन्होंने स्वयं एक दुकानदार सेठ को अपने बेटे से यह कहते सुना—रामू अपना वोट शालवाले को देना। वह सच्चा और ईमानदार जन-सेवक है, बाकी सब तो बाऊपीर है। प्रतिद्वन्दी ने यह बात निर्वाचित होने के बाद स्वामी जी के सम्मान में आयोजित अभिनन्दन समारोह मे कही थी। यह आपके जीवन की शुद्धता, जनसेवा और चरित्र का उच्चतम प्रमाणपत्र है।

स्वामी जी महाराज ७० वर्ष से भी अधिक समय तक समाज सेवा के कार्यों में सलग्न रहे। उन्होने आर्यसमाज, जनसेवा, हिन्दू हितों की रक्षा और सगठन कार्य में सर्वात्मना सलग्न रहकर आर्य जाति को नेतृत्व प्रदान किया। आपकी तन्मयता और आपके कार्य के सम्बन्ध मे यह धारणा बनी कि आप जैसे बहुत कम समाज सेवी होगे जिन्होने समाज की निष्काम भाव से इतने लम्बे समय तक सेवा की हो।

स्वामी जी महाराज ने समाज, देश, सस्कृति एव जाति की सेवा करते हुए बाइस बार जेल यात्राएं भी कीं। इनमे शिव मन्दिर आदोलन दिल्ली, हैदराबाद धर्मयुद्ध, काश्मीर आदोलन, सौन्दर्य प्रतियोगिता, हिन्दी आदोलन, गौरक्षा आदोलन की जेल यात्राएं उल्लेखनीय हैं। पजाब के हिन्दी रक्षा आदोलन को सार्वदेशिक स्तर पर लाने और उसको राष्ट्रीय स्वरूप देने का श्रेय स्वामी जी को ही दिया जाएगा। आपकी उग्रता, विशालता, सुसचालन और नियत्रित तथा अहिंसात्मक स्वरूप को देखकर देश के एक बड़े कर्णधार ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि आर्यसमाज की शक्ति का, उसके सगठन का और उसके नेतृत्व का एक बार पुन बढ़िया परिचय मिल गया है, अब यह आदोलन बन्द कर देना चाहिए। यह आदोलन सुदूरवर्ती परिणामो और प्रभाव की पृष्ठभूमि बनाने वाला सिद्ध हुआ था।

स्वामी जी महाराज ने पाकिस्तान से आए विस्थापित बन्धुओ की सहायता के लिए अनेक केन्द्र खोले। उनकी सेवा सहायता और सुरक्षा का सुव्यवस्थित एव प्रशसनीय कार्य किया। पिछले दिनो पजाब और काश्मीर मे उग्रवाद से सत्रस्त विस्थापितों के लिए अनेक केन्द्रो का संचालन किया। गढ़वाल, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रातों में आए भूकम्प पीड़ितों के लिए सहायता शिविरो का सचालन किया। राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश में सूखाग्रस्त क्षेत्रो का दौरा भी किया तथा सहायता शिविर लगाए। पूर्वी बगाल से आए पीड़ित बधुओ के लिए आवास, भोजन और सुरक्षा के लिए गढ़े, हुसैनाबाद, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में केन्द्र और शिविर स्थापित कराके बड़े पैमाने पर सहायता कार्य किया। उन्होंने विधवाओ और अनाथो की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। विधवा आश्रम और अनाथालयों की स्थापना और सचालन में उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

समय-समय पर अराष्ट्रीय तत्वों से देश की अखण्डता, शान्ति और सुरक्षा के लिए जो खतरा पैदा हुआ, उससे भी जनता और राज्याधिकारियो को वे मन्त्र दृष्टा ऋषि की भाति सदैव सचेत करते रहे. घटना चक्र ने उनके प्रयासो की सार्थकता तथा यथार्थता की जनता और प्रशासन दोनों पर छाप छोड़ी। ईसाई-मिशनरियों द्वारा की जा रही देश द्रोही गतिविधियों का उन्होने भण्डाफोड़ किया। काला हाण्डी के धर्मान्तरण को रोककर उन्होंने युग को नई चेतना दी। मीनाक्षीपुरम् और रामनाथपुरम में पैट्रो-डालर के बल पर धर्मान्तरण किए गावों को उन्होंने पुन. शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया और अपने इस आन्दोलन को राष्ट्रीय रक्षा महाभियान की सज्ञा दी। डिवाइन लाइट मिशन, आनन्द मार्ग, ब्रह्माकुमारी, आचार्य रजनीश, श्री सत्य साईं बाबा आदि मिशनों, मार्गो, स्वयंभू भगवानों, बाबाओ की दुकानो पर आपने सीधा आक्रमण किया और युग को पुण्य प्रशस्त पथ पर सचालित करने का अभिनन्दनीय कार्य किया। चीनी आक्रमण के समय आपने राष्ट्र रक्षा निधि की स्थापना की तथा भारतीय सेनाओ का मनोबल बढ़ाने वाले राष्ट्रीय नेता—भारत के प्रतिरक्षा मन्त्री श्री यशवन्त राव बलवन्त राव चह्वाण का दिल्ली के रामलीला मैदान में भव्य अभिनन्दन किया। पाकिस्तानी आक्रमण के समय पुन: तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री के समक्ष आर्यजनों को राष्ट्र के प्रति सदैव-सन्नद्ध रहने की शपथ दिलवाई।

स्वामी जी का नाम आर्य समाज के उन गणमान्य प्रौढ़ वक्ताओं की श्रेणी में स्मरण किया जाएगा जिनकी वाग्मिता सुप्रसिद्ध है और जो विशाल जन समूह को मन्त्र मुग्ध बनाए रखते थे। भाषण कला में आपका नैपुण्य था। आप अच्छे, चुटीले शब्दो का चयन करते थे। आपका स्वर गम्भीर और झकझोरने वाला था। आपके प्रत्येक जोशीले वाक्य पर एड़ियां उठ जाती थी और हाथों के सकेत यथासमय बहुत प्रभावोत्पादक होते थे। ऐसे क्षणों मे उपस्थित जनसमूह की तालिया बज उठती थी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा, परोपकारिणी सभा, आर्य अनाथालय पटौदी हाउस, सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड, श्रद्धानन्द ट्रस्ट, गुरुकुल कागड़ी, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा अन्य अनेक संस्थाओं मे स्वामी जी पदाधिकारी रहे।

पूज्य स्वामी जी महाराज के हृदय में स्वाभाविक जनसेवा की भावना थी, जनसेवा, धर्मसेवा, राष्ट्रसेवा आपका शौक नहीं व्यसन था, यह आपके जीवन का प्रिय कार्य था, जनसेवा, धर्मसेवा, देशसेवा से आपका हृदय प्रफुल्लित हो उठता था। यह आपका मानसिक भोजन था जिससे आपको आन्तरिक आनन्द की अनुभूति होती थी और इसी से सार्थक होता था आपका नाम 'आनन्दबोध'। आर्य जाति का इतिहास उदार है, निष्कलंक है, उसकी परम्पराएं सर्वलोकहितकारिणी है और उसी आर्य समुदाय को आजीवन संरक्षण दिया पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती महाराज ने। वे आज हमारे बीच नही है, परन्तु उनके आदर्श हमारे सम्मुख है जो हमें युगों-युगों तक प्रेरित एव प्रकाशित करते रहेंगे।

महाधन के महाप्रयाण (१८ अक्तूबर, १९९४) की प्रथम पुण्य तिथि पर हम सभी श्रद्धावनत है।

पूज्य स्वामी जी की स्मृति में हमारा शतशः नमन।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि

ले०—ओंकारनाथ शालवाले

श्रीनगर (कश्मीर) के अनन्तनाग मे श्री नन्दलाल जी के परिवार में एक बालक का जन्म हुआ जिनका नाम रामगोपाल रखा गया। इनकी माता का नाम श्रीमती निहाल देवी था। इनका पाच भाई और एक बहन से भरा-पूरा परिवार था। ईश्वर की महती कृपा से बाल्यकाल पूरी रईसी मे व्यतीत हुआ। जब श्री रामगोपाल जी की आयु मात्र तेरह वर्ष की थी उन दिनो इनके पूज्य पिताजी का देहान्त हो गया और सारे परिवार को श्रीनगर से अमृतसर आना पड़ा।

अमृतसर मे जिन दिनो यह रह रहे थे तब इनका सम्पर्क प० परशुराम शास्त्री, ज्ञानी पिण्डीदास जी पं० रुद्रदत्त शास्त्री से होने पर विचारो मे परिवर्तन होने लगा तब श्री रामगोपाल जी वैदिक धर्म के प्रति अटूट निष्ठा रखते हुए स्वामी दयानन्द जी के अनन्य भक्त बन गये। इस समय इनकी उम्र सतरह वर्ष की होगी जब वे दिल्ली आ गए। दिल्ली मे आकर प० रामचन्द्र जी देहलवी, प० व्यासदेव जी शास्त्री से वैदिक धर्म ग्रन्थो का अध्ययन किया। श्री चतुरसेन गुप्त, प्रो० रामसिंह जी, श्री चन्द्रगुप्त वेदालकार, डा० ज्ञानचन्द, श्री आर. एल. शर्मा श्री ताराचन्द घर्मा आदि से घनिष्ठ मित्रता हो गई। इन सबके साथ रहकर दिल्ली मे धार्मिक सामाजिक उत्सवो का आयोजन होने लगा। बहुत से शास्त्रार्थ (आपस मे धार्मिक विषयो पर वाद-विवाद चर्चाएं) का कार्यक्रम खुले स्थान पर होने लगा। इनसे आम जनता को आर्यसमाज की विचार धारा का ज्ञान होता है। दिल्ली चांदनी चौक मे शिवमन्दिर के विषय में सत्याग्रह चला जिसमें आर्यसमाज और सनातन धर्म के अनुयायियो ने सयुक्त रूप से भाग लिया। सब लोग जेल यात्रा करके विजयी होकर लौटे। इस आन्दोलन में श्री बिशनसरूप कोयले वाले (श्री सत्यनारायण बसल के पिताजी) श्री रामप्रसाद सर्राफ श्री माठूराम आदि सनातन धर्मी नेताओं के साथ आर्यसमाज के नेताओं ने सम्मिलित रूप से भाग लिया।

कुछ समय पश्चात हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ जिसका संचालन दिल्ली से हुआ। इसमें वैद्य मूलचन्द जी, प. बटेश्वर दयाल, वैद्य शिवनाथ, तथा ऊपर लिखित सब मित्रों ने श्री रामगोपाल जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर इस संघर्ष के सफर को तय किया। सम्पर्क सूत्र का विस्तार होने लगा गाजियाबाद के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमेन श्री हरशरण दास जी रईस, अजमेर के पं. जियालाल जी, श्री चादकरण जी शारदा आदि आर्य नेता श्री रामगोपाल जी के परम मित्रो में गिने जाने लगे। इनके अलावा श्री बी. जी. देशपाडे श्री बृजनारायण बृजेश प० नरेन्द्र जी हैदराबाद वाले प. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति उच्चतम न्यायालय के वकील श्री निर्मलचन्द्र चटर्जी आदि विख्यात नेता श्री रामगोपाल जी की ओर आकृष्ट होने लगे। इन सब के साथ मिलकर अनेक सामाजिक राजनैतिक आन्दोलनों का सूत्रपात हुआ।

देश स्वतन्त्र हुआ कुछ दिन बाद महात्मा गांधी की हत्या हो गई। इस हत्याकाड के सिलसिले में श्री रामगोपाल जी को भी अन्य नेताओ सहित सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। साढे चार महीने की नजरबन्दी के बाद इन्हें भी छोड दिया गया।

१९५२ में डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के कश्मीर आन्दोलन में बहुत से नेताओं के साथ श्री रामगोपाल जी को भी पुन नजरबन्द कर दिया गया।

१९५७ में पजाब के हिन्दी आदोलन का सचालन सफलता पूर्वक दिल्ली से श्री रामगोपाल जी ने ही किया। सत्याग्रह के जत्थों को ठहराना उन्हें सुरक्षित पंजाब के भिन्न-भिन्न शहरो में भेजना आदि सारी व्यवस्था की जिम्मेवारी इन पर ही थी। इनकी पूज्या माता जी और पत्नी ने भी अपनी गिरफ्तारी पजाब मे दी। इसी दौरान श्री प्रकाशवीर शास्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी श्री शिवकुमार शास्त्री श्री वाचस्पति शास्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री श्री सोमनाथ मरवाह आदि को आर्य जनता के सामने लाये। इनके अतिरिक्त असंख्यनवयुवको को आर्यसमाज की वेदी पर लाने का चुम्बकीय कार्य श्री रामगोपाल जी जीवन पर्यन्त करते रहे। इन्होने अपने व्यक्तित्व निजी प्रयास और सतत संघर्ष और समाज सेवा के आधार पर निरन्तर प्रगति की। लोक सभा के सदस्य निर्वाचित घोषित

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महान नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

उनका रहता है अमर, सकल विश्व मे नाम।
जो मानव ससार में, करते हैं शुभ काम॥

करते हैं शुभ काम, भाग्यशाली होते है।
सुख पाते हैं बीज, धर्म के जो बोते है॥
नर-नारी यश गान, सदा उनके गाते हैं।
देव पुरुष वे सुनो, मोक्ष का पद पाते हैं॥

स्वामी आनन्दबोध जी, छोड़ गए ससार।
उनके जीवन पर करो, मित्रो आप विचार॥

मित्रो आप विचार, निराले थे वे नेता॥
मानवता के पुज, बहादुर, वीर विजेता॥
आजादी के लिए, उन्होने लडी लडाई।
दानव दल से कभी, न घबराए बलदाई॥

साहस के सागर महा, ईश्वर भक्त महान।
स्वामी जी के दिव्य गुण, कैसे करू बखान॥

कैसे करू बखान, परोपकारी थे स्वामी।
अबला, दीन, अनाथ, जनो के रक्षक नामी॥
हिन्दी-सत्याग्रह, गऊ रक्षा आन्दोलन।
सबसे आगे रहे, बताते हैं विद्वत जन॥

निजाम हैदराबाद का भारी था खूंखार।
हिन्दुओ पर जुल्म जो, करता था मक्कार॥

करता था मक्कार, पाप वह अत्याचारी।
आतकित थी बहुत, दुष्टि से प्रजा सारी॥
हिन्दू जाति पर सभी, तरह की थी पाबन्दी।
महामूढ, शैतान, चाल चलता था गन्दी॥

स्वामी आनन्दबोध जी ने था किया कमाल।
आर्यो की वे फौज ले, पहुच गए तत्काल॥

पहुंच गए तत्काल, गजब का युद्ध मचाया।
आर्यों का रण देख, नीच-दानव घबराया॥
होकर के मजबूर, दुष्ट ने माफी मागी।
आर्यो की जय हुई, देश की प्रजा जागी॥

आर्यों की शिरोमणि सभा, के थे वे प्रधान।
काम किया था रात-दिन, सुनो सभी विद्वान।

सुनो सभी विद्वान, बहस वृथा की छोडो।
करो वेद प्रचार, धर्म से नाता जोड़ो॥
बिन वैदिक प्रचार, दुखी है दुनियां सारी।
हरो विश्व सन्ताप, बनो त्यागी-तप धारी॥

स्वामी आनन्दबोध जी, को रखना तुम याद।
करो परस्पर मेल सब, तज आलस्य प्रमाद॥

—पं नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री,
ग्राम पोस्ट बहीन जिला . फरीदाबाद (हरियाणा)

राम राज्य—एक विवेचन

—सरदार सिंह चौहान

आज से लाखों वर्ष पूर्व अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का अवतरण हुआ था तथा उन्होंने चौदह वर्षों के वनवास के पश्चात तीस वर्ष तक राज्य किया था। उनकी राज्य प्रणाली इतनी व्यवस्थित, निष्पक्ष व सुन्दर थी कि महर्षि बाल्मीकि व गोस्वामी तुलसीदास ने तो अपने ग्रन्थों में उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा ही की है, साथ ही अन्य अनेक कवियों, लेखकों व राजनेताओं ने भी राम राज्य को आदर्श राज्य माना है। यह अजीब विडम्बना है कि शासकीय कार्यालयों व संस्थाओं के कर्मचारियों के कार्य-कलापों को देख सुनकर कुछ लोग टिप्पणी करने लगते हैं कि 'सभी जगह रामराज्य' है। इस आलोचना को सुनकर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या राम राज्य में ऐसा ही होता था हम जाने-अनजाने कहीं राम-राज्य को बदनाम करने का कुत्सित कृत्य तो नहीं कर रहे हैं?

भगवान राम के पावन जीवन व उनके आदर्श राज्य का वर्णन महर्षि बाल्मीकि ने रामायण में तथा गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में किया है। अध्यात्म रामायण व जैन रामायण आदि ग्रन्थों में भी श्रीराम के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है किन्तु विद्वानों ने बाल्मीकि रामायण को अधिक प्रामाणिक माना है। बाल्मीकि रामायण के आधार पर भगवान राम ने वनवास से वापस आने पर लगभग ३० वर्ष राज्य किया। जिस प्रकार वे आदर्श पुत्र, भाई, पति, मित्र व पिता थे, उसी प्रकार वे आदर्श राजा भी सिद्ध हुए। उनका पावन व निष्कलंक चरित्र ही उनकी राज्य व्यवस्था में प्रतिबिम्बित हुआ जो आज तक आकाश सुमनवत ही रहा है।

रामचरित मानस में रामराज्य का जो वर्णन किया गया है, उसका दिग्दर्शन निम्न दोहा चौपाइयों में भली भाँति हो जाता है—

वरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग॥
····· सब गुनज्ञ पण्डित सब ज्ञानी, सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।

ऐसा था राम राज्य जिसे सभी ने सराहा और पुनः स्थापित करने का संकल्प भी लिया किन्तु एक बार आने के बाद वह दुबारा आ नहीं सका। राम राज्य के समाज व राष्ट्र की स्थिति की तुलना आज के वातावरण से नहीं की जा सकती है। किसी असत्य को बार-बार कहा जावे तो उसमें सत्य का आभास होने लगता है। इस उक्ति के आधार पर आशंका है कि आज की स्थिति को रामराज्य कहते-कहते कहीं यह प्रतीदिन होने लगे कि रामराज्य ऐसा ही होगा। यदि ऐसा हुआ तो एक ऐतिहासिक सत्य की हत्या तो होगी ही, साथ ही रामराज्य के पावन व आदर्श स्वरूप के स्थान पर हमारे दिमाग में एक विकृत चित्र उपस्थित हो जाएगा और हम एक आदर्श परिकल्पना से भी वंचित हो जायेंगे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने रामराज्य की इन्हीं विशेषताओं से मुग्ध होकर भारत मे रामराज्य लाने का स्वप्न देखा था किंतु उनके देहावसानके साथ ही वह स्वप्न भग हो गया उनके अनुयायी रामराज्य लाने का सकल्प तो लेते रहे किन्तु वे इस आदर्श प्रणाली को लाने में सफल नहीं हो सके। इसका एकमात्र कारण यही रहा कि उनके सकल्प केवल औपचारिक दिखावा ही रहे। यह राष्ट्र का दुर्भाग्य ही है कि आज हम कर्मचारियों की उपेक्षावृत्ति, अनुशासनहीनता व कर्तव्य विमुखता को रामराज्य कहकर उस पावन व आदर्श राज्य प्रणाली का मखौल उड़ा रहे हैं।

राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए राम राज्य लाने का जो स्वप्न आजादी के दीवानों ने देखा था, उसे पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम जन सामान्य को रामराज्य का सही अर्थ समझाने में विफल रहे हैं। रामराज्य लाने का संकल्प तो सभी राजनेता करते रहे किन्तु कभी यह समझाने का प्रयास नहीं किया कि राम राज्य क्या था व कैसा था? राम राज्य लाने के लिए सर्वप्रथम राम बनना आवश्यक है। क्या आज के नेता, राम बन सकेंगे। यह प्रश्न विचारणीय है। यदि नहीं तो रामराज्य सदा दिवा स्वप्न ही बना रहेगा। राज्य आ सकेगा या नहीं, यह एक पृथक प्रश्न है, विकृत होती जा रही मान्यता को समाप्त करने के लिए यदि हमने सही परिकल्पना को आत्मसात कर लिया तो यह भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी।

कुछ आलोचक रामराज्य की दो घटनाओं के आधार पर राम राज्य को सम्पूर्ण आदर्श राज्य नहीं मानते हैं। ये दो घटनाएं हैं—सीता वनवास व शम्बूक वध। प्रामाणिक माने जाने वाले दोनों ग्रन्थों—रामायण व रामचरित मानस में मूल रूप से इन दोनों घटनाओं का उल्लेख नहीं है। प्रक्षेप कर्त्ताओं ने बाद मे इन घटनाओं का समावेश किया है जो सन्देह की परिधि में आती है। कहा जाता है कि एक धोबी द्वारा अपनी पत्नी को उपालम्भ देने पर राम ने सीता को वनवास दे दिया था। यदि इस घटना को सत्य मान भी लिया जावे तो प्रजा की हर इच्छा को महत्व देने वाले श्रीराम के लिए सीता वनवास अनुचित भी नहीं था क्योंकि आदर्श राजा के लिए प्रजा सर्वोपरि होती है। इसके अलावा सीता की भी इच्छा थी कि कुछ समय ऋषियों के आश्रम में रहें तथा वहीं सन्तान को जन्म देकर उसका लालन-पालन आर्य पद्धति से करें। यह एक प्रकार से राष्ट्र के लिए भावी सन्तति के निर्माण का कार्य था।

दूसरी घटना इस प्रकार है—एक ब्राह्मण के युवा बालक की मृत्यु पर चारों ओर हाहाकार हो गया। ज्ञात हुआ कि राज्य की सीमा में एक शम्बूक नाम का शूद्र तप कर रहा है जिसकी वजह से यह अनहोनी घटना घटित हुई है श्रीराम ने वहां पहुंचकर धनुष-बाण से उस शूद्र को समाप्त कर दिया। इस घटना का उल्लेख मूल कृतियों में नहीं है, बल्कि यह प्रक्षिप्त रचना है जिसे सभवत किसी राम विरोधी कवि ने रचकर रामायण में शामिल कर दिया है। वनवास की अवधि में केवट जैसे व्यक्तियों से मैत्री स्थापित करना, सुग्रीव, हनुमान, जटायु व जाम्बवान जैसे वनवासियों से सम्बन्ध कायम करना व शबरी भीलनी के आश्रम पर जाकर जूठे बेर खाना आदि बातें यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि श्रीराम की समदर्शी दृष्टि में कोई भी छोटा-बड़ा नहीं था। वे शूद्र विरोधी नहीं थे। उनके कल्याणकारी कार्य सभी के लिए एक समान थे।

राम राज्य के विषय में जो गलत सोच हमारे मस्तिष्क में है, यदि उसका परिहार करने में हम सफल हुए तो राम राज्य के प्रथम सौपान पर पहुंचने का मार्ग प्रशस्त होगा और इसके पश्चात अ॰ ॰ सौपानो पर भी पहुंचना सुगम हो जाएगा। मानव कल्याण का विचार रखने वाले प्रत्येक नागरिक का इस ओर ध्यान आकर्षित करना आज की महती आवश्यकता है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

(पृष्ठ ५ का शेष)

हुए गोरक्षा आंदोलन मे जेल गये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लगातार कई वर्षों तक प्रधान चुने जाते रहे। सब पक्षों को अपने साथ लेकर चलने की नीति का अनुसरण करते हुए कार्य क्षेत्र मे अग्रसर होते रहे। स्वामी आनन्दबोध जी जिन्हें लोग अब उनकी अनुपस्थिति में स्मरण करते रहेंगे। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना असम्भव प्रतीत हो रहा है। इन्होने आर्य संस्थाओ को आर्थिक तौर पर स्वावलम्बी बनाया। इनके कोष की निरन्तर वृद्धि करने में लगे रहे। आर्य संस्था के पैसे की फिजूल खर्चो पर अंकुश रखा। अपने ऊपर संस्था के कोष से कभी खर्च नहीं होने दिया। अर्थ शुचि का उदाहरण संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। सदैव पाक दामन रहे। उनके गुणों को आज के नेतागण आचरण में लाने का यदि प्रयास करें तो अपना और समाज का उद्धार अवश्य कर सकेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है सब को सद्बुद्धि और शक्ति देव। स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा स्थापित दिल्ली गाजीपुर स्थित महर्षि दयानन्द गौशाला का संचालन सुचारु रूप से करने से उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाया जाना चाहिए

आर्य जगत् के प्रकाश स्तम्भ :

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

—सर्वेन्द्र शास्त्री पटना

सौभाग्य से कभी-कभी किसी देश समाज सगठन अथवा सस्था मे किसी ऐसे महापुरुष का प्रादुर्भाव होता है, जिसके प्रेरणाप्रद उपदेश सदेश कार्यकलाप तथा प्रकाश से जन-जीवन युगयुगान्तर तक प्रभावित होता रहता है। ऐसे ही महापुरुषो की प्रथम पक्ति मे सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का इतिहास के चिरस्थायी स्वर्णिम पृष्ठो मे नाम अकित रहेगा। पूर्वनाम श्री रामगोपाल शाल वाले अपनी युवावस्था से ही आर्यसमाज के अनन्य भक्त तथा कार्यकर्ता बनकर आर्यसमाज के विकास तथा विस्तार मे प्रत्यक प्रकार से प्रयत्न शील रहे। सन्यास की दीक्षा लेकर आपने आर्यसमाज के लिए सर्वस्व जीवन समर्पण कर दिया।

आर्यसमाज द्वारा सचालित पजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा हैदराबाद के अहिंसात्मक सत्याग्रह म आपकी सेवाए भुलाई नही जा सकती। आपकी लोकप्रियता कर्मठता तथा स्पष्ट निर्भीक वक्तृत्व का प्रभाव था कि १९६७ मे आप व्यापारी बहुल क्षेत्र चादनी चौक से लोक सभा म पहुचे, वहा पर आप अपनी ओजस्वी वाणी से भारत सरकार को सचेत करते रहे। सार्वदेशिक सभा मे आपने उपमत्री मत्री तथा प्रधान के विभिन्न पदोको अलकृत किया। अपनेकार्यक्रम मे आपप्रतिदिन सभा मेआकर देश विदेश के पत्रो का उत्तर देते रहे। १९७५ का आर्यसमाज शताब्दी समारोह आर्य जगत् की जागृति का परिचायक है। पहले यह समारोह बम्बई म सम्पन्न होने वाला था परन्तु कुछ परिस्थितिवश सहसा दिल्ली मे करना पडा। कम समय मे दिन-रात एक करके आपने धन सग्रह तथा आगन्तुको के आवास की समुचित व्यवस्था की। समारोह की विशाल शोभा यात्रा को देखकर दिल्ली वासियो को कहना पडा था कि ऐसी शोभायात्रा कभी देखने का सौभाग्य नहीमिला था देश विदेश के नर-नारी गुरुकुल के ब्रह्मचारी सम्वेत गाना गाते तथा नारा लगाते हुए चल रहे थे। कइ किलोमीटर म जन-समूह सडक पर उमड आया था।

१९७४ मे सन्यास की दीक्षा के पश्चात् आपका एक-एक क्षण आर्यसमाज की प्रगति के लिए व्यतीत हुआ। कुछ वर्षो पूर्व सभा मे जहा समुचित व्यय के लिए अर्थाभाव था वही आपने अपने कार्यकाल मे सभा की स्थिर निधि १ करोड से अधिक पहुचा दी। आज सभा प्रत्येक प्रकार से परिपुष्ट है। प्रचार के साधनो मे साहित्य का भी स्थायी प्रभाव होता है। इसके लिए आपके प्रयत्न से चारो वेदो का सरल अनुवाद प्रकाशित हुआ। जिससे स्वाध्याय में सुविधा हो। सत्यार्थ प्रकाश का मोटे अक्षरो मे प्रकाशन भी महत्व रखता है। मौलिक ग्रन्थो म स्वामी करपात्री जी के वेदार्थ पारिजात का प्रामाणिक उत्तर वैदिक कल्प द्रुम के नाम से प्रकाशित हुआ। वर्षों से अप्रकाशित 'सत्यार्थ प्रकाश का सस्कृत अनुवाद तथा सभा के वर्तमान प्रधान वन्देमातरम् रामचन्द्र राव का अग्रेजी अनुवाद का ग्रन्थ भी महत्वपूर्ण है। आर्यसमाज के कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ जो दुलभ हो गए थे उसके प्रकाशन का भार सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के ऊपर सौंपा जिससे वैदिक सम्पत्ति सस्कार चन्द्रिका तथा कुल्यात आर्य मुसाफिर प्रकाशित हुए जिसकी माग पर माग आ रही है।

सभा की ओर से समय-समय पर वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य विशिष्ट विद्वानो को विदेशो में साहित्य भेजा जाता रहा है। सभा की ओर से कुछविद्वान् कार्य कर रहे हैं जिन्हें दक्षिणा की व्यवस्था है। आर्यसमाज के भावी प्रचार में सलग्न होने वाले गुरुकुलो के छात्रो को छात्र-वृत्ति भी दी जाती है। जर्मनी में आयोजित वेद सम्मेलन मे स्वामी जी स्वय गये थे। वहा इनके भाषण की भूरि-भूरि प्रशसा की गयी थी। भारत का कोई ऐसा विशाल समारोह नही जहा स्वामी जी नही पहुचे हो। भारत के प्रमुख स्थानो मे जाकर आपने आर्यसमाज की ज्योति जगाई है।

गाय के साथ भारत का सास्कृतिक आर्थिक तथा राष्ट्रीय सम्बन्ध है। आर्यसमाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गो करुणा निधि लिखकर भारतीयो को उसकी महत्ता तथा उपयोगिता पर ध्यान आकृष्ट किया था। वायसराय के पास भी पत्रो द्वारा आवाज उठाई थी। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती गोरक्षा आन्दोलन मे भाग लेकर जेल भी गये। समय समय पर गोरक्षा के लिए भारत सरकार को सचेत करते रहे। गोरक्षा का मूर्त रूप दयानन्द गोसवर्धन दुग्ध केन्द्र स्वामी जी के प्रबल प्रयास का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यहा अभी सैकडो गायो को पाला जा रहा है। ऐसा महापुरुष सहसा हमारी आखो से ओझल हो गया। आज के अशान्त वातावरण मे पग-पग पर उनका अभाव खटकता रहेगा।

स्मृति उनकी प्रेरक रहे सदा

—धर्मवीर शास्त्री
बी ११५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

असहाय छोड़कर हाय ! हमे
स्वर्गस्थ हुए आनन्द बोध !
वैदिक सस्कृति का पोत किसे खोजेगा अपने त्राण हेतु।
किसको खोजेगी बेचारी सस्कृत अब नूतन प्राण हेतु॥
शासन के जन के बीच सजन करने पायेगा कौन सेतु।
किसके बल पर लहरायेगा अम्बर मे वैदिक धर्म केतु॥
आदर्शों पर आघात देख
जागेगा किसमें तीव्र क्रोध ?
देश अब बोलो कौन कान लायो की करुण पुकारो पर
किसको फुर्सत है सोचे जो हिन्दी पर हुए प्रहारों पर॥
मन्दिर की ईट हिली, कम्पन अकित सत्ता-मीनारो पर।
वह धीर-वीर जन-नायक था भारी था सब सरकारो पर॥
वह सभा शून्य मे गया हन्त।
भारत मा की कर शून्य गोद।
दहके अगार उगलता था जिस समय पच नद का पानी।
गू गी थीं दसो दिशाए जब सहमी सकुचायी रजधानी।
थे सिंह आज के मौन कि ज्यों स्वर्गीय हो गई हो नानी।
रे ! याद करो तब गूजी थी किसकी आह्वान भरी वाणी॥
यह वही आर्य-सरताज, किया—
अन्यायी का जिसने विरोध।
लघु देहयष्टि का स्वामी वह स्वामी जिसको ऋषि प्यारे थे।
ऋषिसम ही जिसने मन्त्री से निर्भय ये शब्द उचारे थे॥
'दिन मे सोने के अभ्यासी होते नृप नहीं हमारे थे।
वह प्यारा था सबसे उसके बैरी पर शर अनियारे थे॥
कैसी भी विपदा हो यति वह
गति का कर लेता मार्ग शोध।
जो आया है जायेगा ही सन्यासी हो या ससारी।
जाना भी क्या उसका जो हो सबके आदर का अधिकारी॥
हममे जीवित आनन्दबोध हम सब हैं उनके आभारी।
प्रभु उन्हे मुक्ति दे हमे शक्ति सहने की यह सकट भारी॥
स्मृति उनकी प्रेरक रहे सदा
पथ हो उन्नति का निर्विरोध।

❀

गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डा० धर्मपाल आर्य की होलैंड यात्रा

पिछले दिनो गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा० धर्मपाल आर्य, रेक्स यूनिवर्सिटी लंदन मे आयोजित त्रिदिवसीय रामायण-कान्फ्रेंस मे भाग लेने होलेंड पधारे। २८-८-९५ सोमवार को प्रात अमस्टर-डम के हवाई अड्डे पर आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैंड के प्रधान डा० महेन्द्रस्वरूप, सत्य सनातन वैदिक प्रकाश समाज के प० सुन्दरप्रसाद शुभ-धन तथा मैंने (ओमप्रकाश सामवेदी ने) कुलपति की आगवानी की। ३०-८-९५ को कान्फ्रेंस में कुलपति जी ने रामायण और लोकमगल विषयक अपना, वैदिक-शिक्षाओ से भरा सदेश क्रमश. हिन्दी व अंग्रेजी मे दिया। आपके भोजन निवासादि का प्रबन्ध विश्वविद्याल मे होते हुए भी कुलपति जी पडित शुभधन जी के निवास पर ठहरे। १-९-९५ को आप रोटरडम नगर मे मेरे निवास पर पधारे, भोजनोपरान्त आर्य समाज की गतिविधियो पर विचार-विमर्श हुआ। प्रचार-प्रसार मे प्रगति से आपको काफी अच्छा लगा। नगर के दर्शनीय स्थलों को देखकर व प० देवनारायण शुभधन जी से भी भेंट करके आपने उसी दिन अमस्टरडम लौट गए। और अमस्टरडम नगर के रेडियो द्वारा कुछ महत्त्वपूर्ण प्रवचन भी किये।

सर्वप्रथम दिनाक ३-९-९५ रविवार प्रात अमस्टरडम नगर के रेडियो स्टेशन से १० मिनट तक अपना सन्देश दिया। उसी दिन सत्य सनातन वैदिक समाज द्वारा आपका एक प्रवचन कराया। ईश्वर वेद-यज्ञ वर्णाश्रम आदि विषयों को स्पष्ट करते हुए आत्मा के गुणावगुणो की चर्चा अति मनो-रजक ढंग से प्रस्तुत की। आपकी तन्तुं तन्वन् रजसो—इत्यादि वेदमन्त्र की व्याख्या प्रभावशाली थी।

कार्यक्रम का संचालन स्वय मैं कर रहा था तथा पं० देवनारायण जी ने यज्ञ कराया था। कार्यक्रम के उपरान्त आप उसी दिन हमारे साथ रोटर-डम आ गये। सायंकाल वैदिक ज्योति सघटन समाज के प्रधान प० इन्द्र-जीत वक्तावर के घर भोजन की व्यवस्था थी। अगले दिन ही प्रात: रेडियो मिलन स्टेशन से १५ मिनट का वैदिक धर्म का उद्बोधन भरा संदेश प्रसा-रित हुआ। वहीं पर वैदिक सविता संस्थान के प्रधान प० विश्वेवर से भी भेंट हुई। तदुपरान्त आर्य सगीताचार्य प० बृजलाल वक्तावर के घर पहुंचे, भोजनोपरान्त प्रभाकर आर्य समाज के प्रधान प० जीवनगणेश ने आर्य-मन्दिर दिखाया, पुन घर पहुंचे। आज भी सायंकाल पं० इन्द्रजीत वक्ता-वर जी के यहां भोजन किया। अगले ही दिन प० जीवन गणेश के साथ आप मछलियों का प्रदर्शन देखने गये। आपको यह कार्यक्रम बड़ा अच्छा लगा था।

आज ४ बजे रेडियो द्वारा श्रीमान डी० छेदी (साई-मन्दिर) ने १ घटे का धर्म विषयक कार्यक्रम प्रसारित कराया जिसका प्रस्तुतीकरण मैंने संभाला हुआ था। इस कार्यक्रम का इतना प्रभाव हुआ कि स्वय रेडियो के संचालक श्री शिव बदलू ने पुन अगले दिन एक घंटे का समय निर्धारित कर जोर शोर से प्रचार करना शुरू कर दिया। रेडियो से आकर प० जीवन जी के घर भोजन किया। भोजनोपरान्त एक पार्क मे घूमने गये। वहां कुछ चित्र भी बनाये थे, तदुपरांत वहा से भारतीय कल्चरल सेन्टर के प्रधान श्रीमान दहिया जी के घर पहुचे। एक घटे पश्चात आर्यसभा मन्दिर में पंडिता चन्द्रकली बदलू के जन्मदिवस समारोह'में सम्मिलित हुए। वहां सूरीनाम से आये प्रसिद्ध पं० सूर्यपाल जी ने यज्ञ कराया, कुलपति जी का पुष्पमालाओं से विधिवत सम्मान करके आसन दिया गया। लगभग ३० मिनट के प्रवचन में कुलपति डा० धर्मपाल जी ने आशीर्वाद के कुछ शब्दो को लेकर अति ओजस्वी वाणी में उपदेश किया, आशीर्वाद दिया। पडित सूर्यपाल जी ने भी ईश्वर विषयक प्रवचन करके जनता को कहानियों से आनन्दित किया।

हमने इस अवसर पर डा० साहब को एक लघु पुस्तिका महर्षि दयानन्द हिन्दी भाषा और आर्यसमाज विषयक छपाई व उसे लोगों को वांटा। अगले ही दिन प्रात काल हम प० विश्वेश्वर जी के घर गये। प्रातराश व भोजन भी वहीं किया वार्तालाप भी हुआ। वहा से पं० देवानन्द जी अपने घर ले गये, उनके आग्रह से दूसरी बार भोजन करना पडा। भोजनोपरात रेडियो कृष्णा के कार्यालय पहुचे। १५ मिनट तक ईश्वर सम्बन्धी कुलपति जी का भाषण हुआ। कुछ प्रश्न भी आपसे पूछे गये थे जिनका समाधान आपने किया। वहा से निकलकर श्रीमान प्रेमवक्तावर के घर दस्तक दी। कुछ देर बाद ही आकाशवाणी के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम मे पहुच गये। लगा-तार १ घटे तक ईश्वर का स्वरूप तथा उसकी प्राप्ति के उपाय विषयक गम्भीर प्रवचन किया। आज शकासमाधान भी था परन्तु किसी ने कोई भी प्रश्न नही किया। आज भी इस कार्यक्रम को मैंने प्रस्तुत किया लोगों से प्रश्न करने के लिए १५ मिनट तक अपील की गई थी।

इन दो दिनों के दो आकाशवाणी कार्यक्रमो में रोटरडम मे आर्यसमाज का जबर्दस्त प्रचार हुआ है। आकाशवाणी से निकलकर प्रेम वक्तावर कुल पति जी को कुछ दुकानो मे ले गये जहा कुछ समान भी खरीदा। फिर वहीं से हम लोगो को प० शुभधन जी के घर पहुचा दिया गया। यहा अनाथ बच्चों के सहायक समाज द्वारा कुलपति जी के सम्मान मे विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

अमरस्टरडम से आये प० शुभधन जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया, कुछ मैंने भी उद्बोधन दिया, पडिता विश्वेरश्वर ने ईश्वर महिमा का सुन्दर भजन गाया था। आज के प्रवचन मे श्री कुलपति डा० धर्मपाल जी ने अश्मन्वती-रीयते—तथा उलूकयातुं शुशुलूकयातु—इत्यादि मन्त्रो का व्याख्यान किया। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की प्रगति हेतु भी लोगों को सगठित होने के लिये प्रेरित किया। साथ ही अपने आगमन का वृत्तान्त सुनाते हुए सबका धन्यवाद भी किया। यही रोटरडम का अन्तिम कार्यक्रम था। रात्रि को ही आप अमस्टरडम के लिए प्रस्थान कर गये।

अगले दिन पडिता यशोमति नयपाल के घर जाने का कार्यक्रम साथ ही दर्शनीय स्थलो का भ्रमण भी किया। शुक्रवार को प्रात लेलीस्टाद नामक महेशयोगी के आश्रम को देखते हुए लेवार्दन पहुचे, वहा आर्यसमाज वेदप्रकाश की प्रधाना श्रीमती आर्य कुमारी रमई का जन्मदिवस समारोह का यज्ञ हुआ जिसमें कुलपति जी ने भी अपनी शुभकामनाए उनको प्रदान की व आशीर्वाद दिया। यह आर्यसमाज वेदप्रकाश महिलाओं का एकमात्र आर्य समाज है। यहा मेरे अग्रज प० विजयप्रकाश शास्त्री द्वारा सस्कृत-हिन्दी की पढ़ाई भी कराई जाती है तथा इस समाज ने भारत मे एक वेद मन्दिर के निर्माण मे सर्वाधिक योगदान किया है :

. कुलपति जी की यह यात्रा काफी व्यस्त रही। मैंने यहीं से कुलपति जी को विदाई दी। रात्रि को वे सभा प्रधान-मन्त्री आदि के साथ अमस्टरडम वापस लौट गये क्योकि प्रात ही उन्हें भारत को प्रस्थान करना था। आर्य प्रतिनिधि सभाधिकारियों ने पूर्ण सम्मान के साथ गुरुकुल कागड़ी विश्व-विद्यालय के कुलपति श्री धर्मपाल जी को हवाई अड्डे पर इस यात्रा की पूर्ति के मैमय हार्दिक बधाईयो, शुभकामनाओ सहित विदाई दी।

द्वारा--ओमप्रकाश सामवेदी पौरोहित्याचार्य
रोटरडम, होलेण्ड

निराशा के कुहासे में आशा की किरण—आर्य वीर दल !

उत्तमचन्द शरर

आर्यसमाज का इतिहास प्राय सघर्ष का रहा है। अन्धकार से प्रकाश का युद्ध सृष्टि के आरम्भ से चला आया है। आधुनिक काल मे भी यह युद्ध जारी है। उन्नीसवी शती मे जब राजनीतिक, सामाजिक एव आध्यात्मिक क्षेत्र मे पूरा अन्धकार था, विदेशियो की दासता ने देश को स्वसस्कृति से परिचित भी नहीं रहने दिया गुरुडम ने भक्तो के हृदय से भगवान् को छोड गुरु का पूर्ण पाठ पढा दिया था। जब इतना अन्धकार था कि मनुष्य कुत्ते,बिल्लीको तो छू सकता था, परन्तु मनुष्य की छाया से भी भ्रष्ट हो जाता था ऐसे घोर अन्धकार के समय महर्षि सूर्य बनकर चमके, उन्होने हर क्षेत्र मे सत्य के प्रकाश से आलोक का प्रसार किया, अन्धकार ने भी अपने अस्तित्व के बचाव के लिए प्रकाश के केन्द्र से युद्ध की ठान ली। परन्तु विजय प्रकाश की रही ऋषि के जीवन मे वेद के प्रकाश से जन साधारण को भटकने से छुटकारा मिला, और प्रकाश अन्धकार का युद्ध जारी था, कि दीपावलि का स यकाल को भौतिक सूर्य का ही अस्त नहीं हुआ, अध्यात्म प्रकाश देने वाले सूर्य दयानन्द का भी अस्त हो गया। ऋषि अपने जीवन की नश्वरता से अनभिज्ञ नहीं थे, उन्हे यह भी ध्यान था कि अन्धकार से युद्ध तो चलता रहेगा अत उन्होने प्रकाश के वितरण के लिए आयसमाज का निर्माण कर दिया, ताकि उनके चले जाने के पश्चात भी प्रकाश का प्रसार होता रहे।

पाठक जानते हैं कि ऋषि के पश्चात् प० गुरुदत्त, प० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज और न जाने कितने ऋषि-भक्तो ने अपने जीवन की बाजी लगाकर भी अन्धकार से लोहा लिया, सत्य की सदा जीत रही विरोधी परास्त हुए और आय समाज फलता फूलता रहा।

युद्ध आज भी जारी है। इतना अवश्य है कि अन्धकार ने राज-नीति का कवच पहन अपना बचाव आरम्भ किया है। इधर आर्य समाज के कर्णधार दुर्भाग्य से पदो की लालसा के शिकार हो गए। प्रकाश के विस्तार की चिन्ता न करके आपस मे हो उलझ गए—
"रोशनी की किसी को फिक्र नहीं। जग यह है, दिया हमारा है।"
(रोशनी की किसी को चिन्ता नही, है यह तकरार दीप मेरा है)

आर्य जनता मे निराशा-सी फैल गई समाज का अनुशासन, सगठन काय की ललक अन्धकार से उलझने की तडप आपस की झडपो का शिकार हो गई।

अवश्य विचित्र है—'बिरत जो चन्द र ही कोई खास गम न था।
मुश्किल तो यह है काफला-सालार बिक गए॥

अन्धकार मे एक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। रात के घने अन्धकार से अपनी थोडी सी लौ मे जूझ रहा है। सूर्य कब उदय होगा इसका पता नहीं परन्तु दीपक का व्रत है कि रात्रि की समाप्ति तक यह स्वय को जला कर भी टिमटिमाएगा और इस नन्हें दीपक का नाम है आर्य वीर दल। सत्य तो यह है कि मानवता का त्राण आर्य समाज से ही सम्भव है और आर्य समाज का भविष्य है आर्य वीर दल।

मेरी सहृदय आर्यो से प्रार्थना है कि वे अन्धकार भरी निशा से निराश न हो, और जो कुछ हो सके इस दीपक मे अपने रक्त का तेल डाल कर ही इसे प्रदीप्त रखें यह दीपक भूले-भटके यात्रियों को मार्ग, और आशा का सम्बल तो बनेगा ही आर्य समाज का भविष्य भी उज्ज्वल करेगा। अन्धकार की आधी मे आओ। इस दीपक को सम्भाल कर चल समय आएगा जब आर्यो के बलिदान और कार्य कुशलता को देखकर विरोधी भी पुकारेंगे —

ये लोग जो आधी मे दिया ले के चले हैं।
तूफानो से वाकिफ हैं, ये आधी मे पले हैं।

योगीराज श्रीकृष्ण—प्रेरणा के स्तम्भ

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मडल की ४० आर्य समाजो एव आर्य समाज गुजराशाला टाऊन II दिल्ली ९ की ओर से तीन दिन की योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन पर कथा का आयोजन किया गया। डा० आचार्य प्रेमचन्द्र श्रीधर जी ने सुन्दर प्रवचन दिए व श्री नरेन्द्र आर्य ने मनोहर भजन प्रस्तुत किए। इस भव्य आयोजन में डा० सरोज दीक्षा व रामचन्द्र आर्य (सोनीपत) ने श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन का सरल भाषा मे विवेचन किया। उन्हें आदर्श आप्त पुरुष की सज्ञा दी गई। समापन समारोह मे श्री रामचन्द्रराव,प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के करकमलो से ९२वर्षीय श्री चमन-लाल एम ए० (आर्य समाज अशोक विहार) एव श्री महावीर वर्मा (आदर्श नगर) को "प्रतिष्ठित आर्य सभासद" का सम्मान प्रदान किया गया व प्रमाण पत्र, प्रतीक चिह्न चादी का मैडल व वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

समाज सेवी श्री बी०बी० तायल, अध्यक्ष)रामप्रकाश आलवालिया, (प्रबन्धक बिरला कन्या स्कूल युवा समाज सेवक अशोक खुराना व विनोद खुराना, हिन्दी कवि श्री बालकृष्ण चौधरी (मन्त्री आर्य समाज, मुखर्जी नगर को भी वैदिक साहित्य भेंट किया गया। श्री सोमनाथ मरवाह श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी अपने जीवन के अनुभव सुनाए और श्रीकृष्ण के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। —ओम सपरा महामन्त्री

मेधावी छात्र अभिनन्दन समारोह

आर्य युवक परिषद बामली द्वारा मेधावी छात्र अभिनन्दन समारोह में १२ छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री धर्मवीर वर्मा जी ने की। आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जयदेवसिंह जी प्रधानाचार्य किसान इण्टर कालेज बेड़ी में जिन्होंने छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये तथा अपने भाषण में उन्होने कहा कि आर्य युवक परिषद का यह एक श्रेष्ठ कार्य है आर्य समाज के उद्देश्यो को पूरा करने के लिये युवकों को आगे आकर कार्य करना चाहिये।

इस अवसर पर श्री धर्मवीर वर्मा श्री महेशचन्द्र आर्य तथा श्री अशोक आर्य ने अपने विचार व्यक्त किये। —मन्त्री

सरलादेवी शर्मा वैदिक छात्रवृत्ति

इस प्रोत्साहन छात्रवृत्ति के लिए निर्धन छात्र-छात्राए आचार्य आचार्या से प्रमाणित कराकर आवेदन करें। जिन छात्र-छात्राओं ने महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए आजीवन जीवन समर्पण का सकल्प लिया हो, उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी।

पता—वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री अध्यक्ष विश्ववेद परिवार सघ शास्त्री सदन ११/१०४ पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-११००५१

वैदिक विद्वान चन्द्रपाल शास्त्री नहीं रहे

आर्य समाज मल्लापुरा वाराणसी के साप्ताहिक अधिवेशन में श्री रामलखन जी आर्य की अध्यक्षता में स्व० प० चन्द्रपाल शास्त्री के निधन पर शोक सभा हुई। सस्कृत व्याकरण और वेदो के प्रकाण्ड विद्वान श्री शास्त्री जी के निधन से आर्य जगत की अपूर्णनीय क्षति हुई है। शास्त्री जी को वैदिक सोलहों सस्कार तथा यजर्वेद कण्ठस्थ (याद) था।

शास्त्री जी ९० वर्ष के थे। शोक सभा मे स्व० शास्त्री जी को श्री मेवालाल आर्य, श्री कमलाकान्त आर्य, श्री बुद्धदेव जी आर्य, श्री राजेन्द्रप्रसाद जी शास्त्री, प० अग्निदेव शास्त्री, श्री रविप्रकाश आर्य, श्री रामलखन आर्य तथा अनेक आर्यो ने शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला। सभी ने मौन रह कर दो मिनट तक स्व० शास्त्री जी के आत्मा की शान्ति के लिए एव शोक सन्तप्त परिवार के धैर्य धारण के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उक्त कार्यक्रम का सचालन मन्त्री विजयकुमार आर्य ने किया। अन्त मे शान्तिपाठ के बाद सभा समाप्त हुई। —विजयकुमार आर्य

वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आश्रम, बिठूर (कानपुर का ११वां वार्षिकोत्सव सदा की भांति कार्तिक पूर्णिमा ७ नवम्बर १९९५ से तीन दिन तक होगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से विद्यालंकार/वेदालंकार उत्तीर्ण वानप्रस्थी-सन्यासियों की स्मारिका प्रकाशित की जायेगी तथा गुरुकुल आश्रम में उनके आजीवन निःशुल्क भोजन आवास की व्यवस्था होगी। कृपया फोटो सहित अपना जीवनलेख अधिकतम २०० शब्दों मे १० अक्तूबर १९९५ तक स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कचहरी), आर्य समाज को भेजें।

चम्पारण जिला में वेदसप्ताह विभिन्न आर्यसमाजों मे सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे इस वर्ष वेद सप्ताह लगातार पांच दिन तक निम्नलिखित आर्यसमाजों, मझाही, बेतिया, चमधरिया में ० अगस्त से ३ सितम्बर तक सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित विद्वानों एवं भजनोपदेशकों प० व्यासनन्दन शास्त्री (भागलपुर) श्री रामचन्द्रसिंह "क्रान्तिकारी" (नेपाल) ठा० वीरेन्द्रसिंह आर्य भजनोपदेशक (गाजीपुर) श्री प्र_वी आर्य जिला प्रचारक, चम्पारण आदि जिला सभा के कार्यकर्ता गण भी उपस्थित थे। —बी०के० शास्त्री मन्त्री

वेद के आधार पर दीर्घायु-प्राप्ति के उपाय

आर्यसमाज धामावाला देहरादून साप्ताहिक सत्संग मे वेद-प्रवचन हुए आर्यसमाज के प्रशासक श्री देवदत्त बाली ने कहा कि वेद के विद्वान् प० दामोदर सातवलेकर जी तथा उनकी धर्मपत्नी ने सौ वर्ष से अधिक की स्वस्थ आयु प्राप्त की। पण्डित जी ने दीर्घायु प्राप्ति के जो साधन वेद के आधार पर बताए हैं उन पर मनन करके अवश्य लाभ उठाया जा सकता है।

अथर्ववेद के आधार पर बताया गया कि लम्बी आयु की इच्छा करने वाले को सबसे पहले जीवन के उद्देश्य को समझना चाहिए और वह है सुकृत अर्थात् शुभ कर्म। जीवन मे शुभ कर्म न किए जायें तो जीवन निरर्थक है दीर्घायु के लिए प्रथम उपाय है उपासना मे समय लगाना, दूसरा है दानशील बनना, तीसरा है पाप भावना से दूर रहना, चतुर्थ है सत्यज्ञान की प्राप्ति। पचम उपाय है यज्ञ छठा है मन को शात रखना। सातवा है प्राणायाम, आठवा है सूर्य-स्नान अर्थात् थोडी देर के लिए सूर्य की किरणो का शरीर की त्वचा स सम्पर्क कराना। जीवन के लिए शरीर की अग्नि को ठीक दशा मे रखना भी अत्यन्त आवश्यक है। चाद की चादनी का सेवन करने से मन को शान्ति प्राप्त होती है जो दीर्घायु मे सहायक होती है।

अगला उपाय स्वर्ण का सेवन अर्थात् स्वर्ण आदि धातुओ को शरीर के साथ सम्पर्क के लिए रखना और आयुर्वेद के अनुसार स्वर्ण का सेवन। अतिम उपाय जो दर्शाया गया वह है कि गर्भवती माता गो-दुग्ध का अधिक सेवन करे। इससे सन्तान हृष्ट-पुष्ट और दीर्घायु होती है।

—देवदत्त बाली
आर्यसमाज धामावाला देहरादून

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय सिराथू का १९वा वार्षिकोत्सव १० से १२ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर चतुर्वेद महापारायण यज्ञ, शिक्षा मानव निर्माण महा सम्मेलन-कवि सम्मेलन तथा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव सहित आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सबकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

वेदामृत (चुने हुए भजनों के आडियो कैसेट)

वेद और आर्यसमाज की मूल भावनाओं को ध्यान मे रखकर लिखे गये कुछ चुने हुए भजनो का "वेदामृत" नाम से एक आडियो कैसेट गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय द्वारा वेद विभाग के तत्वावधान मे तैयार कराया गया है। प्रसिद्ध कवि डा० विष्णुदत्त राकेश के वैदिक गीतो के अलावा "फैहराये विश्व भर मे ये ओम ध्वज" हमारा तथा "पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये" जैसे बहुचर्चित पारम्परिक गीतो को भी इस कैसेट मे साथ स्वर दिए गए हैं। इन श्रद्धा समर्पण के गीतो को स्वर दिया है डा० अम्बुज शर्मा ने तथा सगीतबद्ध किया है देश के जाने माने सगीतकार श्रीनिवास भारद्वाज ने कैसेट का मूल्य मात्र पच्चीस रुपए है। अधिक कैसेट क्रय करने पर विशेष छूट प्रदान की जाएगी।

यज्ञ-अनुष्ठान, साप्ताहिक सत्सग, पूजा-अर्चना, मागलिक समारोह तथा प्रेरणा के क्षणो मे आप इसकी अनिवार्यता अवश्य अनुभव करेंगे।

इस कैसेट का विमोचन करते हुए लोक सभा के अध्यक्ष माननीय श्री शिवराज पाटिल ने इसकी मुक्त कठ से प्रशसा की थी तथा कैसेट को प्रत्येक वैदिक मतावलम्बी के लिए सग्रहणीय बताया था।

कैसेट मिलने का पता—पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विशेष सूचना

वेद का पूर्ण सेट अथवा ५०० रुपये का साहित्य लेने वालों को महर्षि दयानन्द का एक रंगीन बडा चित्र अथवा १० चित्र छोटे निःशुल्क दिये जायेंगे।
वैदिक साहित्य के लिये सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली

यति मण्डल क्या है ?

(पृष्ठ २ का शेष)

गुरुकुल घरोडा आर्य समाज की सम्पत्ति है जनता के धन स बनाया है पर मुझे तो कुछ नही कहना है परन्तु यति मण्डल ने कभी वहा झाककर देखा है कि उत्पीडन घुटन जलन है।

समस्याओ पर ध्यान दो, सस्थाओ को सक्षम करो, अन्यायियो, आततायियो को दबाओ। पर यह तब ही होगा, जब यति भी शुद्ध पवित्र निश्छल होंगे। साथ ही दूसरो पर लाछन न लगाकर स्वय बेदाग होंगे। जो स्वय दागी है वह दूसरा का न्याय क्या करेंगे।

अच्छा हुआ आप आए, दर्शन हुए—परन्तु रामगोपाल जी शालवालो को हटाने के बाद आज यति मण्डल को पुन आर्यसमाज की चिन्ता हुई हैं। पजाब जल रहा है कश्मीर घाटी में 'त्राहि त्राहि मच रही है—आओ मैदान मे उतरो।

मठ-मन्दिरो का व्यामोह, बीवी बच्चो का प्रेम, धन दौलत सम्पत्ति के माया जाल से पहले मुक्त हो जाओ और फिर पदयात्रा करो—दूसरो पर लाछन लगाने की प्रवृत्ति छोडो।

यति मण्डल कुछ करे तो अवश्यमेव आपको सफलता मिलेगी केवल नारे लगाने उच्छृखल बनने से काम नही चलेगा।

यति मण्डल के सदस्यो की एक आचार सहिता भी होनी चाहिए। जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन्यास दीक्षा की सीमा रेखा खीची है। पहले यति मण्डल अपनी सीमा रेखा बनाए। सदाचार की परिभाषा आर्य सदस्य या आर्य सभासद् पर लगाई जाती है ऐसे ही बेदाग-बेलाग यति मण्डल का अधिकारी व सदस्य बने तब आपकी मान्यता भी होगी और न्याय सभा की भाति एक आधार भी होगा जिससे सभी को वह आदेश निर्देश मान्य होंगे।

केवल "अनाहूत प्रविशति अपृष्टो बहुभाषते" वाली स्थिति भी नही बनने देनी चाहिए। जो दूसरे पर आक्षेप करते हैं उन्हे अपनी ओर सर्व प्रथम देखना चाहिए।

नियन्त्रण नियमो का अपने अनुशासन का, माना जायेगा तब शासन तन्त्र भी सही रूप मे चलेगा सोचिये कि भविष्य मे यति मण्डल की स्थिति क्या होगी। प्रत्येक यति इस यति मण्डल की व्यवस्था स्थिति पर चिन्तन करे ?

नए आर्य समाज की स्थापना व निर्वाचन

जिला भीलवाडा के समीपस्थ गाव पालडी (मसूदा) मे आर्य समाज मन्दिर भीलवाडा के प्रचार मन्त्री प० राधेश्याम जागिड के आह्वान पर ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष श्री अम्बालाल शर्मा की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द के वैदिक मिशन "आर्य समाज" की स्थापना दि० ६-९-९५ भाद्रपद शुक्ला एकादशी को हुआ।

इस आर्य समाज का निर्वाचन प्रचारमन्त्री के सानिध्य में इस प्रकार हुआ—प्रधान श्री अम्बालाल शर्मा, मन्त्री श्री सत्यनारायण शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री भेरूलाल शर्मा।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एल० ११०७४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१२-१०-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licansed to post without prepayment Licenee No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.S.O.on 12, 13-10-1995

यमुनाबाई हिन्दी लेखक पुरस्कार से डा० शीलम् वेंकटेश्वरराव सम्मानित

हिन्दी दिवस समारोह के संदर्भ में विनायकराव विद्यालंकार राष्ट्रोत्थान साहित्य समिति के तत्वावधान में आयोजित सम्मान समारोह में साहित्याचार्य डा० शीलम् वेंकटेश्वरराव, सम्पादक विवरण-पत्रिका हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद को उनके काव्य संग्रह "बूंद की गरिमा" के लिए "यमुनाबाई हिन्दी लेखक पुरस्कार-९५" प्रदान किया गया। पुरस्कार मुख्यातिथि प्रो० रामकिशोर पाण्डेय पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्व विद्यालय ने हिन्दी महाविद्यालय विद्यानगर, हैदराबाद में विशेषरूप से आयोजित सम्मान-समारोह में प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता संस्थापक प्राचार्य महाविद्यालय हिन्दी महाविद्यालय के संस्थापक-परामर्शदाता श्री वण्डेराव जी कुलकर्णी ने संस्था का परिचय दिया। डा० शीलम् को पुरस्कार के रूप में नगद २५० रुपये, प्रशस्ति-पत्र, शाल और श्रीफल प्रदान किया गया।

महायज्ञ

चम्पारण जिला के तत्वावधान में आर्य समाज घोड़ासहन (पू० चम्पारण) २१ सितम्बर से २३ सितम्बर ९५ तक 'यजुर्वेद शतक महायज्ञ' धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के विद्वान पं० नवलकिशोर शास्त्री (समस्तीपुर) कमलेश दिव्यदर्शी (मुजफ्फरपुर) श्री रामचन्द्रसिंह "क्रान्तिकारी" (नेपाल ठा० वीरेन्द्रसिंह गाजीपुर श्री विद्यावती देवी (पटना) श्री ध्रुव जी आर्य, पारस प्रसाद, अमरदेव आदि महोपदेशक भजनोपदेशक, भजनोपदेशिका आदि साधु, वानप्रस्थी पधारे थे। जिनका उपदेश, भजनोपदेश लगातार तीन दिनों तक होते रहे। हजारों की संख्या में ग्रामीण जनता उपस्थित होकर यज्ञ में भाग लिए एवं विद्वानों के उपदेश से लाभान्वित हुए। —बी०के० शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र द भाष १२०४ ७१ वार्षिक मूल्य४०) एक प्रति१) रुपय
वष ३४ अक ४ दयानन्दाब्द १७१ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९६ पौष शु १० सं० २०५२ ३१ दिसम्बर १९९५

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

नई दिल्ली २५ दिसम्बर। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस राजधानी दिल्ली मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमे लाखो की सख्या मे आर्य नर नारियो एव स्कूली बच्चो ने भाग लिया। यह शोभा यात्रा प्रात ० बजे श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर खारी बावली नया बास लाल कुआ हौजकाजी चावडी बाजार नई सडक चादनी चौक होती हुई दोपहर २ ३- बजे लाल किला मैदान म पहुचकर एक जनसभ मे परिवर्तित हो गई।

इस जनसभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध पत्रकार डा० वेदप्रताप वैदिक ने की। इस अवसर पर प्रसिद्ध पत्रकार श्री रामचन्द्र शैदा को आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से स्व० मेजर अश्विनीकुमार कण्व पुरस्कार प्रदान किया गया इस पुरस्कार मे एक प्रशस्ति पत्र तथा सम्मान राशि प्रदान की गई।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

डबवाली अग्निकांड पर शोक संवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के नेतृत्व मे दिल्ली की सभी आर्य समाजो स्त्री आर्य समाजो डी ए वी स्कूलो तथा गुरुकुलो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित यह महती सभा डी ए वी स्कूल डबवाली मण्डी सिरसा हरियाणा मे हुई भयावह दुखद अग्नि दुर्घटना मे मृत ० बालक बालिकाओ अभिभावको अध्यापको तथा ग्रामवासियो के प्रति हार्दिक शोक सम्वेदना व्यक्त करती है तथा परमपिता परमात्मा से कामना करती कि दिवगत आत्माओ को सद्गति प्रदान करे तथा मृतको के परिवारो को इस दुखद आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करे

म गयभम न
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

"किल इण्डिया" पेन्टिग पर आर्य नेताओं का गुस्सा उतरा

अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी बन्द करनी पड़ी

२२ दिसम्बर ९५ के राष्ट्रीय दैनिक हिन्दुस्तान के प्रथम पृष्ठ मे प्रकाशितएक समाचार के अनुसार राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा मे आयोजित कला कृतियो की प्रदर्शिनीमे एक ऐसी पेन्टिग दर्शायी गई थी जिसमे मोटे मोटे अक्षरो मे किल इण्डिय अर्थात् भारत की हत्या करो को सजाकर लिखा गया था। यह पेन्टिग हालण्ड के एक पेन्टर रोबविरजा द्वारा बनाई हुई बताई जाती है।

इस पेन्टिग से देश की राष्ट्रवादी जनता और विशेष रूप से आर्य समाजियो की भावनायें आहत हुई था। आर्य समाज गत एक शताब्दी से अधिक समय से देश भक्तो की एक ताकतवर सस्था के रूप म जाना जाता है।

आर्यसमाज की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव सभा के कानूनी सलाहकार श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा दिल्ली राज्य के वरिष्ठ उपप्रधान श्री शिवकुमार शास्त्री के साथ विशेष रूप मे इस राष्ट्रद्रोही पेन्टिग को देखने कला दीर्घा मे गये।

यह पेन्टिग वास्तव मे असहनीय थी जिसे देखकर आर्यसमाज के इन नेताओ को ठेस पहुची। इसे देखते ही श्री विमल वधावन

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कुछ अनर्गल प्रलाप और उसका स्पष्टीकरण

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

चुनाव चक्कर का दुष्परिणाम यह है कि किसी पर भी बिना जाने-बूझें अनर्गल पागलो की भाति प्रलाप करना सिद्धात बना लिया है। प्रलाप करने वाले वह व्यक्ति है जो स्वय दागी हैं।

पत्र-पत्रिकाओं मे-विवादास्पद प्रश्न खड़े किए हैं जिनके न सिर हैं और न पैर ?

सार्वदेशिक सभा पर १ जून ९५ को सन्यासी विशिष्टों ने हमला किया जिन्होने देखा, उन्होने—स्वामी ओमानन्द जी व स्वामी विद्यानन्द जी के इस कृत्य पर दु ख प्रकट किया।

स्वामी ओमानन्द जी ने कहा—इसे (सच्चिदानन्द को) उठाकर नीचे फैंक दों ? बस हुकुम को देर थी। लुंगाडे दौड पड़े मारने, पुलिस वाले बीच में आ गये, अन्यथा क्या होता—तब मैंने कहा था, स्वामी जी अपना चरित्र नरेला में देखो, बिखरा पड़ा हैं मुझे क्या मारोगे।

जिस व्यक्ति को जानकारी लेनी हो, वह वहा से भली भाति ले सकता है मैंने किसी सन्यासी का अपमान नहीं किया है।

वह स्वय अपने दुष्कृत्यो से अपमानित होता फिरे, उसका क्या इलाज है।

दूसरा आक्षेप यह लगाया है कि—

मैं हैदराबाद सत्याग्रह में नही गया हूं स्वतन्त्रता सेनानी पेन्शन रेल पास मुझे सरकार ने दिया है क्यों ले रहा हूं। ५-६ वर्ष का ही था। व्यक्ति लिखने-बोलने में स्वतन्त्र हैं क्योकि अमर शहीद पं० लेखराम जी ने अधिकार जो दे दिया हैं कि—

तहरीर—व. तकरीर का काम बन्द नही होना चाहिये। फिर क्या है अधिकार का प्रयोग करों—वह किया जा रहा है।

आश्चर्य तब होता है जब कि बिना खोज व जानकारी के रिसर्च वर्क हो रहा है कोई कहता है मैं ५-६ वर्ष का था कोई कहता है कि मैं पैदा भी नहीं हुआ था। भले आदमियों!

मैं उस समय महाविद्यालय ज्वालापुर की चतुर्थ कक्षा का छात्र था १९३७ में गुरुकुल में प्रवेश लिया था, ६ वर्ष अपर प्राइमरी करके गुरुकुल गया था, ६-७ वर्ष का था तब पढने बैठा था।

१९३८-३९ में महाविद्यालय ज्वालापुर से तीन जत्थे हैदराबाद गये थे उनमें मेरे दो भाई ब्र० दयानन्द व आचार्य देव शर्मा भी सत्याग्रह मे गये थे ब्र० दयानन्द ने शहीद होकर शहादत मे नाम लिखाया था। पूज्य पिता जी १०८ सत्याग्रही लेकर हैदराबाद गये थे।

१९२१ से आजादी मिलने तक

८-१० व्यक्ति राष्ट्रीय आन्दोलन मे जेल यात्री रहे थे, घर-परिवार बरबाद था। काग्रेसी होकर भी हैदराबाद हिन्दी आन्दोलन गौरक्षा आदि सत्याग्रहों मे जेल गये।

मैं १४-१५ साल का था हैदराबाद आन्दोलन के समय—

वस्तु स्थिति क्या हैं—

आचार्य नरदेव शास्त्री सत्याग्रह में गए ब्रह्मचारियो की जानकारी लेने वहां गए जिनका पता नही था, मुझे आचार्य जी के साथ जाना पडा। वहां पर मुझे विद्यार्थी बना विशेष पत्र वाहक (गुप्त डाक हेतु) के रूप में प्रयोग किया गया।

जिन्हे यह ज्ञात है कि मुझसे विद्यार्थी के रूप में छिपाकर कार्य लिया गया। बीते युग की कहानी है किसे पता था कि जेल यात्रा का इनाम भी मिलेगा। फिर आर्य समाज के सत्याग्रह को राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप भी मिल जायेगा।

यह सार्वदेशिक सभा के उच्च व्यक्तियो का—तथ्य पूर्ण कार्य था—

स्वतन्त्रता की वेदी पर—

श्रीमती इन्दिराजी की विशेष कृपा पर आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी गई। साथ ही सात सदस्यों की समिति का भी गठन किया गया। इसमें पांच सदस्य सार्वदेशिक सभा की ओर से दो भारत सरकार व दो गृहमन्त्रालय की ओर से थे।

१. श्री लाला रामगोपाल शाल वाले, २. बाबू सोमनाथ मरवाह,
३. प० शिवकुमार शास्त्री, ४. प्रो० शेरसिंह जी,
५ प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी।

सरकार की ओर से—१. चौ० रणधीर सिंह, २. रामचन्द्रराव कल्याणी
दो व्यक्ति गृहमन्त्रालय से आते थे।

चार साल तक बैठकें होती रही और पूरी जाच के बाद पेन्शन स्वीकार की गई। सत्याग्रहियो की पहचान भी रखी गई।

१. फासी की सजा, २. जेल यात्रा ४ वर्ष, ३. बेंतो की सजा,
४. अन्डर ग्राउन्ड (छिपकर काम करना) ५. फरार-दशा पर।

इसी कोटि मे आते हैं स्वामी ओमानन्द जी १॥ मास की जेल २॥ माम अन्डर ग्राउन्ड, स्व० स्वामी रामेश्वरानन्द जी भी इसी कोटि में थे। बालवृद्ध जवान स्त्री- पुरुष आदि।

इस प्रकार मैं १४-१५ वर्ष का था जब हैदराबाद व उनकी महाराष्ट्र की गलियो के दर्शन किये थे। इस प्रकार मैं ७१ वर्ष का हूं, तब १४-१५ वर्ष का था। जिन्हें पता नही हैं मेरे घर में बच्चा-बच्चा विद्रोही था—

मेरे घर मे सन् ४२ मे लड़के विद्रोही थे।

आक्षेप भी वही कर रहे हैं जो स्वय दागी हैं मैं तो निर्लेप होकर आर्य समाज का २४ घण्टे का सेवक हूं न पैसा कमाता हूं न नौकरी करता हूं, घर-परिवार से भी मुक्त हूं। लाछन लगाओ जरा सोच समझकर। जिन्होंने शुरूआत की वह मु ह की खाकर घर बैठ गये हैं।

किसी के विरु लिखना बुरा नहीं, परन्तु पहले मालूम तो कर लो कि वस्तु स्थिति है क्या।

मैंने पहल नहीं की, यदि किसी ने गलत कलम चलाई तो उसे कड़वा उत्तर दिया जायेगा।

दूध का धुला कोई नहीं है जिसकी पूंछ उठाकर देखो वही मादी नजर आता है।

अतः निवेदन है कि धैर्य धर कर चलो। जल्दबाजी मत करो, मैं तो डूबूंगा नहीं पर तुम्हे अवश्य ले डूबूंगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा वैदिक विद्वानों का सम्मान

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर लालकिला में आयोजित विशाल जनसभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वानो का अभिनन्दन किया गया।

मेरठ से पधारे हुए स्वामी विवेकानन्द जी महाराज, उडीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, हापुड के स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डा० कपिल देव द्विवेदी, आचार्य धर्मवीर शास्त्री आदि विद्वानों को उनके द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु किये गए कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र तथा पत्र पुष्प राशि तथा एक एक शाल सम्मान स्वरूप भेंट कर सम्मानित किया गया। वाराणसी की प्रसिद्ध विदुषी डा० प्रज्ञादेवी जी को मरणोपरान्त उक्त सम्मान से सम्मानित किया गया।

सूर्य ग्रहण पर विशेष यज्ञ

आर्य समाज डहीना में २४-१०-९५ को सूर्यग्रहण के अवसर पर अमरसिंह आर्य के पौरोहित्य मे विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में साढ़े पाच किलो घृत से विशेष आहुतिया दी गयीं। इस अवसर पर बाबू अनिलकुमार, मा० राय सिंह, भोलेराम मा० अमरसिंह आर्य सत्यपाल बम्बर श्री बलवन्त सिंह प्रधान, तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उपस्थित होकर यज्ञ को सफल बनाया।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान एवं सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह द्वारा दिया गया—

श्वेतपत्र का उत्तर (६)

मैंने इस श्वेत पत्र के उत्तर के प्रारम्भ मे लिखा था कि यदि आवश्यकता पड़ी तो सुमेधानन्द के सन्यासी बनने से पहले के जीवन की जो जानकारी मुझे मिली है या मिलेगी उसका भी मै उल्लेख करूंगा, और जो कुछ उन्होने सन्यासी बनने के बाद किया है उसे भी विस्तार पूर्वक लिखा जायेगा।

इस विषय मे मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि आर्य जगत के वयोवृद्ध सन्यासी श्री स्वा. सर्वानन्दजी महाराज जिनको सुमेधानन्द अपना गुरु कहते हैं। स्वामी जी महाराज ने अपना एक पत्र जो कि श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को लिखा था, उसमे उन्होने मेरे विषय मे ऐसा लिखा जो कि उन्हें नही लिखना चाहिए था। इस पर मैंने उन्हें एक पत्र नोटिस के रूप मे लिखा कि उन्होने मेरा अपमान किया है इसके लिए उन्हें लिखित रूप मे क्षमा मागनी चाहिए। मैं यहा पर इतना ही लिखना उचित समझता हूं कि उन्होने लिखित रूप में क्षमा मागी।

मैं समझता था कि जिस चेले के गुरु ने अपनी गलती को मानने में कोई संकोच न किया हो, तो सुमेधानन्द भी अपनी गलतियों को मानकार जो चुनाव सार्वदेशिक सभा का हैदराबाद में हुआ, जिसकी लिस्ट २ जून ९५ को रजिस्ट्रार कार्यालय को सार्वदेशिक सभा की ओर से दी गई थी, उसको दुरुस्त मान लेगा, और झूठ बोलने और झूठा प्रचार करने के वास्ते वह खेद प्रकट करेगा। परन्तु अभी तक उनके द्वारा ऐसा न करने के कारण मुझे इस लेख में अब लिखना उचित ही है जो उसके विषय में एक अदालत ने कहा था जो कि लिखित रूप मे मेरे पास श्री नन्दकिशोर वैदिक, कार्यवाहक मंत्री आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर के हस्ताक्षरों से आया है जो कि निम्न प्रकार है—

महोदय,

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के गत चुनावो से पूर्व अधिकाश प्रतिनिधियो की धारण थी कि राजस्थान के दो-चार मठाधीशों ने राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा पर कब्जा किया हुआ है और इसे एक जेबी सस्था बनाया हुआ हैं और गत २० वर्षों से श्री छोटूसिंह इसके कर्ता-धर्ता बने हुए हैं, अत चुनावो द्वारा इसमे परिवर्तन लाना चाहिए, प्रतिनिधियो के आग्रह पर निष्पक्ष चुनाव हेतु मैंने न्यायालय मे मुकद्मा किया और निष्पक्ष चुनाव हेतु श्री सत्यव्रत सामवेदी को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया,

१ मैं इस कार्य के लिए अत्यन्त शर्मिन्दा हू और आर्य जगत से सार्वजनिक रूप से क्षमा चाहता हू, यह मेरी हिमालय जैसी भूल थी मुझ कल्पना भी नही थी चुनाव द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति निर्वाचित हो जायेगे जो छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष घृणा षडयन्त्र की राजनीति खेलेंगे।

२ हमने पिपाधा आर्यसमाज के प्रतिनिधि श्री सुमेधानन्द को मन्त्री बना दिया हमे मालूम नहीं कि इस नाम की कोई आर्य समाज है भी कि नहीं इस समाज मे कोई साप्ताहिक सत्सग भी होता है या नही परन्तु हमने यह सोच कर कि आर्य समाज एवं वेद प्रचार के लिए जो भी व्यक्ति समय देना चाहता है उसका स्वागत है। इस दृष्टि से श्री सुमेधानन्द को मन्त्री बना दिया मन्त्री बनने के बाद श्री सुमेधानन्द अपने असली स्वरूप में आ गये और बडी-बड़ी आर्यसमाजो पर हुकूमत करने की आकांक्षा से प्रेरित होकर कार्य करने लगे और गबन, वित्तीय अनियमितता के कारण सर्वसम्मति से निष्कासित व्यक्तियों के साथ सांठ-गांठ करके बडी-बड़ी समाजो मे अव्यवस्था उत्पन्न करने का षडयन्त्र करने लगे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के १०० वर्ष के इतिहास मे कभी भी किसी व्यक्ति ने आर्य समाज को इतना कलंकित नहीं किया जितना इस व्यक्ति ने। आर्य समाज सत्य की नींव पर टिका हुआ है और श्री सुमेधानन्द निर्भय होकर असत्य का ढोल पीट रहे हैं जिससे आर्य समाज की कितनी बदनामी हो रही है उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में केवल दो घटनाए आपके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूं जिससे आप इस व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे मे सही आकलन कर सकें।

३. आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर की सम्पत्ति को हड़पने का श्री सुमेधानन्द एव श्री केशवदेव ने षडयन्त्र किया और इस षडयन्त्र को विफल करने के लिए आर्य समाज, आदर्श नगर ने न्यायालय मे प्रतिनिधि सभा के प्रधान के विरुद्ध एक वाद प्रस्तुत किया कि वे आर्यसमाज आदर्श नगर के आन्तरिक मामलो में हस्तक्षेप न करे। प्रधान को पार्टी इसलिए बनाया गया कि वे सज्जन, निष्पक्ष एव ईमानदार आदमी है और वे गलत कार्य करने के लिए मुकद्मा नहीं लड़ेंगे और मामला वही पर खत्म हो जायेगा। हमने श्री सुमेधानन्द को पार्टी इसलिए नहीं बनाया ताकि ये अपने षडयन्त्रों को मूर्तरूप देने के लिए मुकद्मो में प्रतिनिधि सभा के हजारो रुपये बर्बाद न करें।

४. परन्तु यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस वाद मे श्री सुमेधानन्द एवं श्री केशवदेव वर्मा न्यायालय में पहुच गये जबकि इन्हें पार्टी नहीं बनाया गया था। इन दोनो व्यक्तियों ने न्यायालय में पहुचकर ऐसा घृणित कार्य किया जिससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। श्री सुमेधानन्द ने न्यायालय मे न्यायाधीश के सम्मुख एक झूठा शपथ-पत्र प्रस्तुत किया जिसमें यह लिखा कि श्री सत्यव्रत सामवेदी प्रात: ८ बजे अपने एक मित्र न्यायाधीश के पास चैम्बर में मैंने बैठे देखा और थोडी देर बाद वह न्यायाधीश श्री सत्यव्रत के साथ उस न्यायाधीश के चैम्बर मे गया जिसके सम्मुख प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध आर्य समाज का वाद था। श्री सुमेधानन्द ने शपथ पत्र मे यह भी लिखा कि मैंने चैम्बर के बाहर खिड़की के पास खड़े होकर श्री सत्यव्रत जी के मित्र न्यायाधीश को सिफारिश करते हुए सुना कि निषेधाज्ञा जारी कर दें।

५. इस शपथ पत्र को देखकर न्यायाधीश की आखे फटी रह गयी न्यायाधीश ने बहुत दुखी एव क्रुध होकर श्री स्वामी सुमेधानन्द से कहा—मुझे इस बात का दुख नहीं है कि तुमने झूठा पत्र दिया है। मुझे दुख इस बात का है कि जो आर्य समाज सत्य की नींव पर खड़ा है और जिस सत्य के लिए आर्य समाज के सैंकडो शहीदों ने अपनी कुर्बानी दी उस सस्था का मन्त्री और वह भी सन्यासी झूठा शपथ-पत्र लिखे इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है। न्यायाधीश ने अत्यन्त दुखी होकर कहा—तुम आर्य समाज की सेवा नही कर सकते तो मत करो परन्तु महर्षि दयानन्द एव आर्य समाज को बदनाम तो मत करो तुम इन भगवे कपड़ो का ही लिहाज रख लेते मैं अपने घर से कपडे मगवा देता हू उन्हें पहन लो और इन भगवे कपडो को उतार दो परन्तु श्री सुमेधानन्द को जरा भी लज्जा नही आयी और यह कहा कि मैंने जो किया सो ठीक किया।

६. आर्य समाज की सच्चाई की धाक थी और आर्य समाजियों के मुकद्मो मे न्यायालय किसी साक्षी की आवश्यकता नहीं मानते थे परन्तु अब हमारे पतन की कितनी पराकाष्ठा है यह सब कार्य श्री सुमेधानन्द ने श्री केशवदेव की प्रेरणा से किया कुसगति का परिणाम कितना घातक होता है यह इसका ज्वलन्त उदाहरण है। न्यायाधीश ने श्री सुमेधा-

(शेष पृष्ठ ४ पर)

श्वेतपत्र का उत्तर

(पृष्ठ ३ का शेष)

नन्द से यह भी कहा कि जब तुम पार्टी ही नहीं हो तो तुमने यह कैसे लगाई इसका साफ मतलब है कि तुम शरारत करने पर तुले हुए हो।

७. जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं श्री सत्यव्रत सामवेदी ने देश के अनेक नेताओं से परामर्श करके राष्ट्रोत्थान एवं सामाजिक क्रान्ति के लिए सार्वभौम आर्य संसद का गठन किया जिसका आर्य जगत में अभूतपूर्व स्वागत हुआ। इस संगठन की पहली बैठक मे राजस्थान मे शराबबन्दी आन्दोलन पर विचार हुआ इस सभा को राष्ट्रीय स्तर के सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराज चड्ढा, राजस्थान के महात्मा गांधी एवं पूर्व वित्तमन्त्री मास्टर आदित्येन्द्र जी एवं श्री त्रिलोक चन्द जैन ने सम्बोधित करते हुए अपना पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की दूरदर्शन द्वारा इस खबर को प्रमुख समाचार के रूप में प्रचारित किया गया एवं समाचार पत्रों ने इसे प्रमुख रूप से प्रकाशित किया।

८. परन्तु आर्य समाज के इस सम्मान को देखकर श्री सुमेधानन्द एवं श्री केशवदेव वर्मा जल-भुन गये और इस आन्दोलन को कुचलने का षडयन्त्र करने लगे इन्होने एक पत्र जारी कर सार्वभौम आर्य संसद से सम्बद्ध प्रतिनिधि सभा के सदस्य एवं पदाधिकारियो से जवाब तलब किया और सदस्यों को गुमराह करने के लिए पत्र मे यह भी लिखा कि श्री सत्यव्रत सामवेदी ने सार्वदेशिक एवं प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध मुकदमे किये हुए है। पहली बात तो यह कि सार्वभौम सगठन एवं इन मुकदमो का कोई सम्बन्ध ही नही है। दूसरा सन्यासी होकर झूठे तथ्यों द्वारा सदस्यो को गुमराह करना एक अक्षम्य अपराध है।

९. आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि श्री सत्यव्रत सामवेदी ने सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध या राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध एक भी मुकदमा नहीं किया है आर्य समाज की साधारण सभा द्वारा प्रस्ताव पास होने के बाद ही आर्य समाज आदर्श नगर के कार्यो में प्रतिनिधि सभा हस्तक्षेप न करे इसके लिए मुझे निर्देश दिया गया और मैंने ही यह मुकदमा किया था।

१०. इस मुकदमे के उत्तर मे जब नामांकित प्रधान श्री केशवदेव वर्मा ने यह दावा किया कि शिक्षण संस्थाओं में प्रतिनिधि सभा को हस्तक्षेप करने का अधिकार है तो विद्या समिति के मन्त्री श्री राजकुमार साहनी, जो स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य रह चुके है। हस्तक्षेप न करने हेतु प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध मुकदमा किया जो शिक्षण सस्थाओ को इनके षडयन्त्रो से बचाने के लिए अनिवार्य था।

११ मैं यह जानकारी देना भी आवश्यक समझता हू कि जयपुर स्थित राजस्थान के एक उत्कृष्ट विद्यालय में न जाने केशवदेव जो सदस्य बन गये उस पर मुकदमे पर मुकदमे करके उस विद्यालय को खत्म कर दिया। यही मनशा इनकी राजस्थान की समस्त आर्यसमाजी शिक्षण सस्थाओ को खत्म करने की थी। इसलिए श्री साहनी को इनके विरुद्ध मुकदमा करना पड़ा।

१२. इन दोनो व्यक्तियो का एक मात्र काय श्री सत्यव्रत जी के विरुद्ध जहर उगलना है जब कि श्री सत्यव्रत जी ने श्री सुमेधानन्द के विरुद्ध एक भी शब्द नही कहा और आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर की साधारण सभा एवं अन्तरंग सभा के विरोध के बावजूद आर्यसमाज, आदर्श नगर मे आयोजित सम्मेलनों में आदर पूर्वक बोलने के लिए आमन्त्रित किया। आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि राजस्थान के नामांकित प्रधान श्री केशवदेव वर्मा मोती कटला आर्यसमाज के प्रधान है जहा कभी साप्ताहिक सत्सग नहीं होता जिस आर्यसमाज मे केवल तीन ही सदस्य हैं और तीन ही प्रतिनिधि हैं ये अपना प्राइमरी स्कूल भी नही चला पाते और उस प्राइमरी स्कूल को मान्यता एवं अनुदान भी समाप्त कर बैठे। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के निदेशक श्री सत्यव्रत के मित्र थे उन्होने निदेशक महोदय से कहकर इनको पुन: मान्यता दिलाई इनको आर्थिक सहायता की और इन्हें फर्नीचर दिया मान्यता समाप्त होने पर दयानन्द पब्लिक स्कूल का बोर्ड लगाकर इन्हें हजारो मुसीबतो से बचाया और उसके बदले में श्री वर्मा जी उन सस्थाओं को तहस-नहस करने पर तुले हुए हैं जो श्री सत्यव्रत जी के नेतृत्व में दिन-रात उन्नति कर रही है। और जिनके कारण जयपुर में आर्य समाज का सम्मान है।

१३. राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के हित में मैं इस निर्णय पर पहुंचा हू कि अस्तित्वहीन एवं अज्ञात समाजो के प्रतिनिधियो को भूल कर भी प्रधान या मन्त्री नही बनाना चाहिए क्योंकि ऐसे लोगो का एक मात्र उद्देश्य यही होता है कि बडी समाजो और सस्थाओ को कैसे खत्म किया जाए। इन पदो के वे ही आर्यजन अधिकारी हैं जिनका नेतृत्व परखा हुआ है जिन्होने बड़ी-बड़ी विशाल समाजो एवं शिक्षण सस्थाओ का निर्माण किया है और जिनकी उपलब्धियो से समाज का गौरव बढ़ता है। श्री छोटू सिंह, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री जेठमल आर्य, श्री बुद्धबोध शर्मा, श्री सहमल, श्री रविन्द्र कुलश्रेष्ठ, श्री यशपाल, श्री प्रो० नेतीराम शर्मा, श्री ओमशरण विजय, श्री सत्यनारायण शाह, श्री कृष्णसाधक आदि गिने चुने व्यक्तियो पर ही भरोसा किया जा सकता है। नन्दकिशोर वैदिक

कार्यवाहक मन्त्री, आर्यसमाज आदर्श नगर, जयपुर

(क्रमशः)

एक मात्र वैदिक साहित्य के प्रकाशक हम हैं अच्छे सस्ते साहित्य के निर्माता तथा प्रचारक, आप भी हमारा सहयोग करें—

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

स्वामी वेदानन्द उपदेशक महाविद्यालय रोपड़

अपील

स्वामी वेदानन्द सरस्वती की तपोस्थली वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड रोपड मे आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षण मे एक उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ हो गया है। यहां उच्चकोटि के उपदेशक, गायनाचार्य, आदर्श पुरोहित, शास्त्रार्थ महारथी प्रखर वक्ता, धुरन्धर विद्वान, व्यायाम प्रशिक्षक समाज सुधारक, निष्ठावान योग साधक, तेजस्वी ब्रह्मचारी, धर्म रक्षक, आर्य सस्कृति के जागरूक प्रहरी तैयार किये जायेंगे। योगासन-प्राणायाम, व्यायाम, योग साधना, यज्ञ सन्ध्या के प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी। प्रतिदिन सत्संग होगा।

उपदेशक विद्यालय के साथ साथ यहा छात्रावास भी बनाया जा रहा है। भवन निर्माण के लिए दानियो से अपील है कि दिल खोल कर दान दें। ग्यारह सौ रु देने पर उनका नाम पटल पर अंकित होगा और वार्षिक सदस्य बनेगा। पांच हजार एक सौ देने पर आजीवन सदस्य कहलायेगा। कमरा बनाने अथवा इक्कीस हजार देने पर संरक्षक सदस्य कहलायेगा। भवनों के लिए ईंटे, सरया, सिमेंट व अन्य सामग्री प्रदान कर पुण्य लाभ उठायें। निर्धन छात्रों के लिए आवास भोजन नि:शुल्क रहेगा।

दानी महानुभाव निम्न पते पर धन भेजकर अनुगृहीत करें :

स्वामी आनन्द वेश प्रबन्धक—स्वामी वेदानन्द उपदेशक महाविद्यालय कुराली रोड रोपड़-१४०००१

निवेदक मण्डल :

स्वामी आनन्द वेश प्रबन्धक, हरबंश लाल शर्मा प्रधान, अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट महामन्त्री।

न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन

डा० हरिश्चन्द्र आत्रेय, रामपुर

मृत्यु वह सच्चाई है जिसे आज तक कोई झुठला नहीं पाया। मृत्यु ऐसा ढीट अतिथि है जिसका कहीं स्वागत नहीं होता पर फिर भी वह आता जरूर है। उसका एक परिचय और है कि यह सारा संसार, मृत्यु का चबेना है, मौत की चारागाह है। सच पूछो तो जीवन के वृक्ष का फल है मृत्यु। कानून की परिभाषा में मृत्यु सबसे बड़ा दण्ड है।

खिलाड़ियों की परिभाषा में मृत्यु कबड्डी का खेल है जो छुआ गया आउट हो गया गीता ने मृत्यु को कपड़े बदलने की प्रक्रिया बताया है। गुरुओं ने इसे नाटक में अभिनय समाप्त हो जाने की संज्ञा दी है। जबकि ज्ञानी, अज्ञान को ही मृत्यु मानते हैं।

आपको एक रहस्य की बात बता दू ? वह, यह कि जिस दिन मैं पैदा हुआ था, उसी दिन मेरी मृत्यु का भी जन्म हुआ था। हम दोनों ने साथ-साथ जीने मरने की कसमें खा रखी हैं। यानि जब तक मै जिन्दा रहूंगा, तभी तक मेरी मृत्यु भी जिन्दा रहेगी। मेरे बाद जिन्दा रहना मौत की संस्कृति और परम्परा के विरुद्ध है। वह तो मेरे साथ ही मेरी चिता पर जल जाने में सौभाग्य मानेगी। इसका मतलब यह हुआ कि मर कर मैं ही तो मौत की मौत बन जाऊंगा।

मृत्यु, संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है तोड़कर जोड़ना। तोड़े बिना जोड़ने की जरूरत नहीं होती इसलिये जोड़ने से पहले तोड़ना जरूरी हो जाता है। जिस जीव ने आज यहां जन्म लिया है, कहीं तो उसका किसी देह से वियोग हुआ होगा। यदि कहीं उसका वियोग न हुआ होता तो यहां संयोग या जन्म कैसे हो पाता। मृत्यु के तोड़-तोड़ के इस खेल को समझ जाने पर, ज्ञानी, मृत्यु को कोई दुःखदायी घटना नहीं मानते। उनकी दृष्टि में मृत्यु नदी नाव संयोग है नदी पार करने के लिये एक नाव में बैठे यात्री पार हो जाने पर अपने-अपने रास्ते चल पड़ते हैं—बिछुड़ जाते हैं।

एक बच्चा तन्मय होकर मां का दूध पी रहा है। पर दूसरे स्तन से दूध पिलाने के लिये, मा के द्वारा, पहले स्तन से बच्चे का मुंह हटाने पर, वह रोने लगता है, मचल जाता है। पर दूसरा स्तन मुंह में आते ही बच्चा शान्त हो जाता है। दूसरे स्तन से उसका मुंह हटाये जाने की बात उसे याद भी नहीं रहती। स्तन की इस अदला बदली का नाम ही तो मृत्यु है।

मृत्यु की अनिवार्यता को समझना और उसे निर्विकार रहकर स्वीकार करना, ज्ञान मार्ग की पहली सीढ़ी है। महाबली काल का घोड़ा इस संसार रूपी रथ को खींचे लिये चला जा रहा है। संसार के सब प्राणी उसके पहियों तले कुचले जा रहे हैं—रौंदे जा रहे हैं। पर ज्ञानी, तत्व ज्ञान की सहायता से, पहियों के नीचे आने से पहिले ही अपनी "मैं" को शरीर से अलग करके, उस रथ के ऊपर सवार हो जाता है और रौंदे जा रहे संसार का द्रष्टा बन जाता है — साक्षी बन जाता है। वह कभी उन मरने वालों का सहभागी नहीं बनता।

अनुभव बताता है कि इस संसार में सब मरने ही मरने वाले हैं। आप स्वयं निर्णय करके बता दीजिये कि हम सब मरने की ओर बढ़ रहे हैं या जीने की ओर ? सभी मौत तक पहुंचने के लिए दौड़ लगा रहे हैं, कोई पहले पहुंच रहा है कोई बाद में। यह भी कैसी विडम्बना है कि जीते रहने की कामना करते-करते भी लोग मरते आ रहे हैं। और साथ ही अभी तक मृत्यु के फंदे से बचे लोग, यह जानते हुए भी कि जो संसार में आया है एक दिन मृत्यु का ग्रास अवश्य बनेगा, खुद हमेशा जीते रहने का विश्वास पाले बैठे हैं।

हमें यह सच्चाई स्वीकार करनी पड़ेगी कि शरीर को अपना स्वरूप मान लेने पर ही हमें मृत्यु भय सताता है, क्योंकि मृत्यु की पहुंच तो केवल शरीर तक ही है। शरीरी यानि "मैं" उसके कब्जे में आने वाली चीज नहीं है। हमारा यह शरीर तो है ही मृत्यु की अमानत। हमें, यमराज को इसे लेने आने तक, अमानत की तरह संभाल कर रखना है और उनकी अमानत लौटाने में कोई हील हुज्जत नहीं करनी है। उस समय हमें यमराज के आगे यह गिड़ गिड़ाने की जरूरत न पड़े कि आज की मोहलत और दे दो, अभी कुछ अधूरे कार्य किये जाने बाकी है।

मृत्यु तो एक शिक्षक है—उससे हमें सीखना है कि हमारा असली स्वरूप क्या है ? मृत्यु को सामने खड़ा देखकर भी हम अप्रभावित रह सके, उसे एक मार्गदर्शक के रूप में ग्रहण कर सके यही मृत्यु का सदुपयोग होगा। अब तक हम समझते रहे कि "मैं" मर रहा हूं पर मौत को देखकर हमें निर्णय करना है "मैं" नहीं मर रहा हूं। मैं तो मृत्यु की पहुंच से दूर हूं, मैं अमर हूं, मैं वह आनन्दस्वरूप हूं जिसको मौत प्रभावित नहीं कर सकती क्योंकि वह मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

देखिये उधर एक महिला का शव पड़ा है अभी-अभी उसके प्राण पखेरू उड़े हैं। उसकी जिस छाती ने, सास के सहारे, ऊपर नीचे होना बन्द कर दिया है, उसने कितने लाडलों को दूध का अमृत पिलाकर जीवन दान दिया था। डरे सहमे बच्चे उस सीने से लिपट कर कितना निडर महसूस किया करते थे। वह जो घर भर का सहारा थी, आज उसे सहारा देने वाला कोई नहीं है। उसे जल्दी से जल्दी घर से निकाल देने के लिये हर कोई उतावला है। आज वह घर की अवांछनीय चीज बन गई है—अब तो उसके घर में रहते कोई यहां का पानी भी नहीं पियेगा। उसके कारण ही तो इतना अपवित्र हो गया है यह घर ? आज उसे उसी घर से निकालने को सब उतावले हैं जिस घर के जर्रे-जर्रे में उसके अरमान दफन हैं, उसकी कल्पनायें दफन हैं। अपने खून-पसीने से उसने यह मकान बनाया था। आज वही घर उसके लिए पराया हो गया है आज उसे हमेशा के लिए इस घर से दफा हो जाना है।

जरा गौर से देखिए उसके लिए बनाई जा रही अर्थी पर उसके सपने टूटे पड़े हैं। उसके कितने अरमान बेतरतीब होकर बिखर गये हैं। उसकी सारी ममता, आसक्ति, कल्पनायें उस अर्थी पर उससे पहले मौजूद हैं। जीवन भर बुने उसके रिश्तों नातों के ताने बाने टूटकर बिखर गए हैं आज। क्योंकि शरीर रूपी घर को छोड़ते ही वे सब बेमानी और पराये हो गये है। आज सब रिश्तों का अन्त हो गया है।

देखिये उसके पास कुछ नाते रिश्तेदार रो रहे हैं। कुछ को लग रहा है कि जाने वाला खुद तो कष्टों से मुक्त हो गया लेकिन बहुतों के कष्टों का कारण बन गया। जरा विचार कीजिये कि क्या यह सच नहीं है कि जो लोग बिलख रहे हैं—जाने वाले व्यक्ति के साथ उसके स्वार्थ जुड़े थे। वह सबके स्वार्थ साधन का माध्यम था। आप यह निश्चित समझ लीजिये कि परिवारजनों के दुःख का कारण केवल उनके स्वार्थ होते हैं। जिनके साथ हमारा स्वार्थ का सम्बन्ध नहीं होता उनके लिए हम कभी दुःखी नहीं होते, कभी रोते नहीं—बिलखते नहीं।

देखिये अब तक बड़े प्यार से पाला पोसा वह शरीर जिसको जरा सर्दी गरमी लगते ही सब सुख साधन फौरन जुटा लिये जाते थे—अब धरती पर पड़ा है—धराशायी है। उसको अग्नि की भेंट कर देने की तैयारी चल रही है। उसे नहलाकर नये वस्त्र पहनाये जा रहे हैं। उसका पूरा श्रृंगार किया जा रहा है। अभी-अभी आये कुछ और लोग अपने सम्बन्धों को याद करके रोते-रोते उसके गले लग रहे हैं। पर अब वह शरीर कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखा रहा है। क्योंकि प्रतिक्रिया की शक्ति देने वाला तो कभी का जा चुका है। यहां तो शरीर के रूप में उसके कपड़े—उसकी पौशाक या वर्दी भर पड़ी है। आप तो जा चुका है केवल केंचुली यहां बाकी है।

उधर देखिये चिता पर उसके स्वागत के लिए लकड़िया बड़ी तरतीब

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सावधान ! जागते रहो ! जागते रहो !

गोपाल आर्य, पौड़ी गढ़वाल (उ०प्र०)

आज हमारे समाज के लिए खेद का विषय है कि अविद्या, अधर्म, कु-शासन, अन्याय, अनाचार, ईर्ष्या-द्वेष, दुर्गुण-दुष्ट व्यसनों की बाढ़ से आर्यों की शक्ति क्षीण हो रही है। चहुं ओर विकट अन्धियारी के घने बादल दिखाई पड़ रहे हैं। शायद "विनाश काले विपरीत बुद्धि", अर्थात जब नाश का समय आता है तो बुद्धि भी उल्टी चलती है।

हमारे पास ईश्वर की वेद वाणी, मूल धर्म एवं विद्या के अथाह भण्डार तो हैं किन्तु कौन इस अखण्डनीय विद्या, धर्म पर आचरण करे। "नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्" अर्थात जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल-फूल की क्या आशा की जा सकती है? आज हमारी युवा पीढ़ी और हम अविद्या अधर्म के इस वातावरण में पल रहे हैं जिससे लगता है कि यह महाभारत के युद्ध से भी विकट युद्ध है तथा वह समय हमसे दूर नहीं जब वास्तविक देश सपूतों, वीरों, देश प्रेमियों, आचार्यों, विद्वानों, समाज सुधा-रकों, धर्म प्रचारकों, रखवालों से खाली हो जायेगा और चहुं ओर अधर्म, दुष्टता ही दुष्टता नजर आयेगी। जब सुधारकों, शासकों का ही पतन हो रहा हो तो कौन सुधार, रक्षा करेगा ?

निकट दर्शन हो चाहे दूरदर्शन हो केवल अनार्यों और अधर्म का ही बोलबाला अक्सर नजर आता है। क्या आर्य जाति उदासीन, गहरी नींद मे सोई नही है ? यह कहना भी विपरीत नहीं होगा कि शायद ज्यादातर नकली आर्य समाजियो ने देव दयानन्द समाज को क्षति पहुंचाई हुई हो, नहीं तो अधर्म का प्रचार-प्रसार कैसे और मूल धर्म, विद्या का क्यों नहीं ? अभी हाल में अनार्यों द्वारा यह मिथ्या संदेश आकाश छू गया कि मूर्ति आज दूध पीने लग गई है। क्या आर्यसैनिकों की संख्या नगण्य नहीं थी कब के लिए रखे थे ऋषि के प्रत्यक्ष प्रमाण, तर्क तराज, विद्या का इस्तेमाल ? यदि प्रत्येक सैनिक अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाता तो अनार्यो का सिक्का खोटा साबित हो जाता। आखिर हमें उदासीनता, खामोशी, घुटन क्यों ?

यदि हम असली ऋषि सैनिक हैं तो विद्यारूपी, धर्मरूपी बाण क्यों छुपाये बैठे हैं, क्यो इस लड़ाई को छड़ा जाता है ? क्या गौरव मान-मर्यादा हमारी होनी थी और हम कहां सोये हैं क्यों ? देव दयानन्द के उपदेशों का पालन होगा कि "अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं-कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो। उनकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उनका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें अर्थात जहा तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुख प्राप्त हों, चाहे प्राण भी भले ही जावे परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी भी न होंवे।'

धर्म संस्कृति, सभ्यता पर प्रहार के लिए अनेक मिथ्या जाल बिछाये जा रहे है। हमें समय चेतावनी दे रहा है कि उठो ! और अपनी रक्षा करो अब गहरी निद्रा का त्याग करो। धर्म के प्रचारक, देश के रक्षक समाज को क्षति पहुंचाने वालों की तादात बढ़ती ही जा रही है। यह भी खेद का विषय हमारे लिए है कि इतने बहुसंख्यक समाजों में से कुछ की संख्या भी सच्चे आर्य समाजियों की होती तो पूर्ण सफलता अवश्य हाथ में आती किन्तु शायद हमारी करनी और कथनी में कहीं अवश्य खोट हो सकता है जो हमें पूर्णतः सफलता नहीं मिल पा रही है। यह परम आवश्यक है कि ऋषि आर्य समाज रंग में रंगना प्रत्येक के बस की बात भी नहीं हो सकती क्योंकि आर्य रंग यदि किसी को चढ़ जाए तो वह पक्का रंग कभी नहीं उतरता। रंग में रंगने के लिए अविद्या, अधर्म एवं दुर-व्यसनों को त्यागकर आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना ही होगा और सावधान जागते रहना होगा अन्यथा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

हम वेद क्यों पढ़ें ?

सुरेन्द्र कुमार, हिन्डी

इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः ।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः ।।

ऋ० १० । ७१ । ९

अर्थ—(इमे) ये (ये) जो लोग (न) न तो (अर्वाङ्) इधर अर्थात इस लोक में (चरन्ति) चलते हैं, जो (न) न ही (परः) ब्रह्मज्ञानी बनते है और (न) न ही (सुतेकरासः) यज्ञशील-कर्मशील बनते हैं (ते) वे (एते) से (अप्रजज्ञयः) अज्ञानी लोग (वाचम्) इस वेदवाणी को (अभिपद्य) पाकर भी (पापया) पाप-युक्त रीति से (सिरीः) हल चलाने वाले, बनते हैं या (तन्त्र) कपड़ा (तन्वते) बुनते हैं।

इस मन्त्र में वेद पढ़ने का प्रयोजन स्पष्ट किया गया है। वेद पढ़ने के दो उद्देश्य हैं। एक इस लोक को बनाना--ऐहलौकिक उन्नति करना, और दूसरा परलोक को बनाना-पारलौकिक उन्नति करना। इसी अभिप्राय को दूसरे शब्दों में और अधिक स्पष्ट कर दिया गया है—कर्मशील और ब्रह्म-ज्ञानी बनना। जो लोग वेद के बताये कर्मयोग पर चलकर कर्मशील और ब्रह्मज्ञानी नहीं बनते हैं, उनका वेद-पाठ व्यर्थ ही जाता है। वे पाप का ही जीवन व्यतीत करते हैं और पाप पूर्ण रीति से जीवन बिताते हुए वे खेती और कपड़ा बुनने जैसे छोटे-मोटे काम भले ही करते चलें, उनका कोई विशेष इस और परलोक की उन्नति नहीं होती।

यहां खेती करने और कपड़ा बुनने के व्यवसाय की निन्दा नहीं है। दूसरे स्थलों पर वेद में खेती करने और कपड़ा बुनने के काम को उत्तम माना गया है और ये काम करने की स्पष्ट आज्ञा दी गई है—

कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्यमानः ।

ऋ० १० । ३४ । १३

इसलिए वेद के इस मन्त्र मे इन कामों की निन्दा नहीं हो सकती। यहा तो इस बात पर बल दिया गया है कि जो लोग वेद का स्वाध्याय करके कर्मशील और ब्रह्मज्ञानी नहीं बनते हैं उनके जीवन पवित्र नही बन सकते अतएव वे जो खेती और कपड़ा बुनना आदि काम करेंगे उसे पापयुक्त रीति से करेंगे। पाप के जीवन से बचने के लिए वेद पढ़ना चाहिए।

वेद मानव मात्र का धर्म ग्रन्थ है। वेद का प्रयोजन स्वयं वेद ने बता दिया कि इस लोक और परलोक की उन्नति करना है। अतः धर्म का आदर्श भी यही हुआ—अर्थात सासारिक उन्नति और ब्रह्मप्राप्ति। वैशेषिक दर्शनकार, ने इसीलिए धर्म का लक्षण यह किया है कि—

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः

अर्थात् जीवन बिताने के जिस ढंग से हमारी इस लोक में खूब उन्नति हो और हम ब्रह्मप्राप्ति के भी योग्य बनते जाय, उसका नाम धर्म है। अतः जो असूल इस कसौटी पर सही न उतरते हों उन्हें धर्म नहीं माना जा सकता।

मनुष्य, परमात्मा के परम पवित्र ज्ञान वेद को स्वीकार और उसके आधार पर इस लोक की पूर्ण उन्नति करता हुआ अन्त में आनन्द के महा-समुद्र भगवान के पास पहुंचने के योग्य अपने को बना, जिसे प्राप्त करके तेरे सारे दुःख और सारे बन्धन कट जायेंगे।

मनु से घबराहट क्यों ? (३)

डा० भवानीलाल भारतीय

शूद्रो की ही भाति स्त्रियो की हीन दशा तथा उन पर किये जाने वाले अत्याचारों के लिये भी प्राय: मनु को ही जवाबदार ठहराया जाता है। यह भी इस ग्रन्थ को गम्भीरता से न पढने के कारण ही हुआ है। नारी जाति के प्रति मनु के हृदय में अशेष सम्मान का भाव है। नारी के प्रति आदर भाव प्रकट करते हुए मनु स्पष्ट करते हैं कि जो पिता, भाई, पति, देवर आदि अपने कल्याण के इच्छुक हैं वे नारी की सर्व विध पूजा सम्मान करें। (३।५५) जहा नारियों का सम्मान सत्कार होता है वहा देवता प्रसन्न होते हैं, किन्तु जहां नारी का अपमान होता है वहा के लोगो के सारे कार्य निष्फल हो जाते हैं। (३।५६) वे कुल नष्ट हो जाते हैं जहां नारियां दुखी रहती हैं, किन्तु जहां वे प्रसन्न रहती हैं उन कुलो की सदा वृद्धि होती है (३।५७) जिस घर में बहिन, बेटी और पत्नी का अपमान होता है, उन घरो का विनाश निश्चित है। (३।५४) अत. ऐश्वर्य कामी लोगो को चाहिए कि वे नारियों का सदा सत्कार करते रहें। उत्सवो और मगल के अवसरों पर नारी जाति को वस्त्राभूषणो से सम्मानित करे। (३।५९) जिस कुल में पति पत्नी एक दूसरे से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहते है वहा का कल्याण निश्चित है। (३।६०) आदि अनेक श्लोक हैं जो नारी की प्रशंसा तथा उसकी गुरुता बखानते हैं। यह अवश्य है कि स्त्रियों तथा शुद्रो के सम्बन्ध में मनु के उदार दृष्टिकोण से विरोध रखने वाले श्लोक भी इस ग्रन्थ में अनेकत्र पाये जाते हैं किन्तु उन्हें वदतोव्याघात दोष से दूषित होने के कारण प्रामाण्य कोटि में नही रखा जा सकता।

स्त्रियों के सम्बन्ध में मनु के दृष्टिकोण को समझने मे सन्दर्भ को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। मनु कहते हैं—

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ।। ९। ३

नारी की रक्षा कन्यावस्था में पिता करता है, युवावस्था में पति उसकी रक्षा करता है और वृद्धावस्था आने पर पुत्र रक्षा करते हैं। इस प्रकार नारी को स्वतन्त्र रहना योग्य नहीं है।

उपयु'क्त श्लोक का सीधा सा अर्थ यही है कि शारीरिक दृष्टि से पुरुष की अपेक्षा निर्बल होने के कारण प्रत्येक परिस्थिति मे नारी को रक्षा की अपेक्षा रहती है और यह रक्षा उसे अपने परिजनों से ही मिल सकती है। मनु के इस निर्दोष कथन के अभिप्राय को न समझ कर पश्चिम की नारी स्वतन्त्रता को दृष्टिगत रखते हुए स्मृतिकार को कोसना निरर्थक है।

मनुस्मृति पर आक्षेप करने वाले दलित जातियो के शोषण के लिए इस शास्त्र में प्रतिपादित पूर्व जन्म (पुनर्जन्म) तथा कर्म के सिद्धात को भी दोषी ठहराते हैं। उनका कहना है कि मनु ने पूर्व जन्म तथा कर्मफल के दर्शन को शूद्रो पर लादा तथा उनमें यह भावना भर दी कि वे जो कुछ भोग रहे हैं वह उनके पूर्वकृत कर्मो का फल है अथवा पूर्वजन्म के पापो का परिणाम है। हमारे विचार से सामाजिक अवगति तथा अत्याचारों के लिए किसी दार्शनिक सिद्धान्त को उत्तरदायी ठहराना अनुचित है। फिर आक्षेप करने वाले यह क्यों भूल जाते हैं कि पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त की मान्यता अकेले मनु प्रोक्त ग्रन्थ में ही नहीं है। भारतीय मूल के बौद्ध तथा जैन दर्शन भी इन्हें स्वीकार करते हैं।

वस्तुत: मनुस्मृति के खिलाफ सर्वप्रथम विद्रोह का स्वर डा० भीमराव अम्बेडकर के लेखन और भाषणों में उभरा था। इसे मनु विरोधी 'एक शूद्र की चेतना का जागरण' कहते हैं क्योंकि डा० अम्बेडकर का जन्म महाराष्ट्र की एक कथित शूद्र जाति 'महार' में हुआ था। किन्तु डा० अम्बेडकर जैसे विचारशील सुपठित तथा प्रबुद्ध व्यक्ति को शूद्र कहना ही अनुचित है। भारतीय इतिहास में ऐसे सैंकड़ों उदाहरण हैं जहां तथाकथित निम्न कुलोत्पन्न व्यक्ति अपने गुण, चरित्र तथा योग्यता के बल पर समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सके। यह तो ठीक है कि भीमराव अम्बेडकर को अपनी छात्रावस्था में सवर्णो के द्वारा अनेक बार अपमानित होना पड़ा था किन्तु इसके लिए समाज की रुग्ण मानसिकता को ही दोष दिया जाना चाहिए। जो जन्म के आधार पर मनुष्य मनुष्य में अन्तर करती है। आज मनु के विरोधी लोग राममोहन राय, दयानन्द, विवेकानन्द आदि सुधारक वर्ग के द्वारा सामाजिक समानता के लिए किए गए प्रयत्नो की दबे स्वर से प्रशंसा तो करते हैं किन्तु वे यह कहने से भी नहीं चूकते कि मनुस्मृति पर आधारित वर्ण व्यवस्था को हिलाने में ये सुधारक असफल रहे हैं।

यहां विचार का बिन्दु इतना ही है कि क्या सचमुच दयानन्द और विवेकानन्द जैसे क्रान्तिकारी सुधारक सामाजिक बधनो की जकड़न को तोडने में नितान्त असफल रहे। शायद नहीं। दयानन्द ने गुण, कर्म और स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था की बात कही तो एक हद तक वे अछूतों तथा दलितों की स्थिति को सुधारने में कामयाब भी रहे। अस्पृश्यता की भावना को दूर करने मे इन सुधारको के योगदान को इतिहासकारो ने स्वीकार किया ही है। आर्य समाज द्वारा सचालित गुरुकुलो मे सवर्णों की ही भाति तथाकथित दलित जातियो के बालकों का भी निर्बाध प्रवेश होता था और वे स्नातक बन कर स्वयं को वेदालकार जैसी गौरवास्पद उपाधियो से विभूषित करते थे। स्थिति में परिवर्तन तो तब आया जब आरक्षण का प्रावधान हुआ और अनुसूचित जातियो के लिए सुरक्षित सीट पर चुनाव लड़ने के लिए दल विशेष के प्रत्याशी बनने पर 'नरदेव स्नातक' को अपने हस्ताक्षरो में 'नरदेव चमार' लिखना पडा। यहा तक कि सभी प्रकार के लौकिक बधनों से मुक्त स्वामी रामानन्द जैसा सन्यासी भी हरिजन बनकर ही संसद की सदस्यता ले पाया।

मनुवाद को कोसने के लिए आज बौद्ध धर्म के जय जयकार को भी जरूरी माना जाता है। मनु के एक विरोधी ने तो यहा तक कह दिया कि मनुवादियो ने ही बौद्ध धर्म को भारत से बाहर खदेड़ दिया था किन्तु बाबा साहेब अम्बेडकर के आह्वान पर वह पुन इस देश में लौट आया है। भारत मे पैदा हुए और फले फूले बौद्ध धर्म को इस देश से क्यों जाना पडा इसे जानने के लिए तो इतिहास के पृष्ठों को ही उलटना होगा। किन्तु एक बात कह देना आवश्यक है। हिन्दू धर्म इतना सर्वग्राही है कि उसने बुद्ध और उनके मत को भी निगलने में सकोच नही किया। इसलिए विष्णु के अवतार भगवान तथागत की पूजा भी आरम्भ की गई।

जैसे बिल्ली को स्व'प्न में भी मास खण्ड दिखाई देते हैं उसी प्रकार आज की अनेक अशोभनीय तथा विकृत मानसिकता से उत्पन्न परिस्थितियों और घटनाओ के लिए भी मनु और मनुवादी व्यवस्था को कोसना एक फैशन बन गया है। तभी तो अयोध्या के कथित ढाचे को तोडकर मन्दिर बनाने, आरक्षण के विरोध मे आत्मदाह करने, गायत्री पूजको द्वारा सहस्र-कुण्डी यज्ञ की रचना करने आदि (सन्दर्भ सत्यशोधक दि० १६ अक्तूबर मे प्रकाशित लेख सावधान, मनु महाशय फिर आ रहे हैं) मे मनु के विरोधियों को मनु का द्विरागमन दिखाई देता है। यह तो भेडिए और मेमने की कहानी की पुनरावृत्ति ही हुई। सभी दोषो का भाण्डा यदि फोड़ना ही है तो मनु को ही बलि का बकरा बनाओ। वे खुद आकर तो अपनी पैरवी करने से रहे।

जब राजस्थान हाईकोर्ट के जयपुर परिसर मे वकीलो ने ही एकमत होकर मानव जाति के लिए प्रथम विधान प्रस्तुत करने वाले स्मृतिकार मनु की प्रतिमा लगाने का निश्चय किया तो इस सर्वसम्मत फैसले को भी विवाद के घेरे में ले आया गया। परन्तु मजेदार बात तो यह हुई कि मनु की प्रतिमा की स्थापना का औचित्य भी अदालत में विचारार्थ चला गया और जब कथित मनुवादियों ने जिरह के लिए मनु के विरोधी वकील को आहूत किया तो उसने यह कहकर आगे पेशी डालने का प्रार्थना पत्र दे दिया कि उसने अब तक मनुस्मृति को पढ़ा ही नहीं है। यही स्थिति उन अवसरवादी राजनीतिज्ञों की भी है जो मनुस्मृति की भावना को समझे बिना ही मनुवादियो को कोसते रहते हैं। मनु की प्रतिमा तो आज भी हाईकोर्ट प्रागण में लगी है जबकि मनुविरोधियों को उसे हटाने के लिए कोई औचित्यपूर्ण मुद्दा अभी तक नहीं मिला है।

१/४२१ नन्दनवन, जोधपुर

न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन

(पृष्ठ ५ का शेष)

से सजाई जा रही हैं। कुछ फूल, घी, सामग्री, चन्दन, धूप आदि भी चिता पर उसका स्वागत करेंगे। वहां एकत्र लोगों में बातें हो रही हैं "क्या हार्ट अटैक हुआ था" ? "क्या कहा पेट में दर्द उठा था", "छाती में दर्द बताया था क्या" ? "कुछ भी तो नहीं पता चल पाया कि कैसे चली गई", "बहरहाल जाने का कोई बहाना तो बनाना ही था"। इस तरह मौत का कारण जानने की उत्सुकता दिखाकर इस गमी में अपना शामिल होना दर्ज करा रहे हैं लोग बाग। पर उन्हें नहीं मालूम कि ईश्वर ने उनके लिये भी कोई बहाना पहले से ही घड़ कर तैयार कर रखा है। एक दिन सबकी यही दशा होने वाली है आप निश्चित मान लें कि हर किसी के जन्म के आगमन भले ही अलग-अलग हो पर मौत का मरघट तो सबके लिये एक ही होता है।

देखिये अब शरीर अर्थी पर रख दिया गया है। उसे उठाने के साथ-साथ ही सब लोग बड़ा प्यारा नाम बोल उठते "राम नाम सत्य है"—"राम नाम सत्य है"। किन्तु यह भी आप देख लेना कि यह नाम श्मशान पहुंचने तक ही सब को याद रहेगा। पर दोस्तो यदि इस नाम को—इस नाम की सच्चाई को, तुम अपने मन में हमेशा के लिए बसालो तो इस मृत्यु दुःख से सदा के लिए छुटकारा मिल सकता है। आप खुद सोचकर देखिये कि जिसको वह "मैं" मान रही थी क्या वही मेरी है। वास्तविकता यह है कि वह तो सदा-सदा विदेह रही है। वह तो असंख्य बार इस तरह के नाटक का पात्र बन चुकी है। चौरासी लाख बार अर्थियों की साक्षी बन चुकी है—इन पर चढ़ चुकी है।

पर आप इस माहौल को देखकर डर मत जाना। गुरु ने हमें ऐसा मार्ग बताया है जिसमें मौत होती ही नहीं। यदि तुम अपने "मैं" और अहंकार को मार डालो, अपनी नासमझी को मृत्यु दंड दे दो—अपने अज्ञान को गुरु के हवाले कर दो तो तुम्हारी मौत होती ही नहीं। नासमझी से, अनजाने में तुम्हें मौत आ दबोचे, मैं चाहता हूं कि उससे पहले ही तुम मौत को समझ लो—उसका परिचय प्राप्त कर लो—तुम नकली मौत या दूसरो की मौत को अपनी मौत क्यों मान रहे हो।

यह जन्म मरण एक आवर्ती घटना है। यह खेल युगों से होता चला आ रहा है। जीवन की गेंद जब मृत्यु के पाले से लौटती है तो पुनर्जीवन ले लेती है और जब हमारे पाले से वापिस जाती है तो मृत्यु के रूप में बदल कर। मृत्यु और हम अनन्त काल से इस गेंद से खेलते चले आते हैं अबतक न हम थके हैं न मृत्यु ने हार मानी है।

इसलिये मृत्यु के इस खेल को मनोरंजन का साधन मानकर केवल इस खेल के दर्शक बने रहो, इस परिवर्तन को देख-देखकर आनन्दित होते रहो और वेद के शब्दों में पूर्ण विश्वास के साथ घोषणा कर दो "न मृत्युवे अवतस्थे कदाचन" मैं मृत्यु के लिये बनी ही नहीं हूं मैं तो अजन्मा हूं—अमर हूं मेरे भगवान जैसे तू नहीं मरेगा मैं भी नहीं मरूंगा क्योंकि मैं तेरा अंश ही तो हूं। किन्तु शरीर की अदला बदली का खेल तो ऐसे ही जारीरहेगा—ऐसे ही चलता रहेगा—ओम् शान्ति।

पुस्तक समीक्षा

रामायण

(भ्रान्तियां और समाधान)

लेखक—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मण्डल
गान्धी नगर, दिल्ली-३१

"रामायण" यह प्रसिद्ध ग्रन्थ हिन्दू समाज का जीवनाधार है। भगवान राम के नाम आचार-व्यवहार, राजनीति प्रजावत्सल, माता पिता की आज्ञा पालन, भ्रातृप्रेम और वैभव के व्यामोह का त्याग हमे आदर्श रूप में मिलते हैं। बाल्मीकि "रामायण" का आधार सभी ने लिया। जितने लेखक उतनी ही शैली रीति नीति परक आख्यानो को भी चर्चा पढ़ने को मिलती है परन्तु आश्चर्य इस बात पर है कि कहीं न कहीं पर हम आत्म विस्मृति के कगार पर अवश्य खड़े हुए हैं जिससे नाना प्रकार की राम के आदर्शों में भ्रान्तिया पैदा की गई है।

भ्रान्तिया और समाधान ही इस पुस्तक की उपयोगिता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम राज्य पाने के इच्छुक थे, न पिता के कहने से वन को नही गए? राम दीपावली के दिन नहीं बल्कि चैत्र शुक्ला ६ को अयोध्या वापस आए। सीता का स्वयम्वर नहीं हुआ था।

कौशल्या की दशा घर में दासियो से बदतर थी, राम ने सीता को धोबी के कहने से वनवास नही दिया था, उन्होने तपस्या करते हुए कथित शम्बूक शूद्र का वध नही किया था। हनुमान बन्दर नहीं बल्कि वेद, वेदांग आदि के विद्वान थे।

बालि की पत्नी विदुषी थी, अगद कूटनीतिज्ञ था। विज्ञान युग था, वायुयान थे, शबरी भीलनी नही तपोनिष्ठ देवी थी। आदि भावों से युक्त कथानक इस अद्भुत, रामायण की खोज पूर्ण विवेचना से मिलेगा। रामकथा की लोकप्रियता, उतना लेखकों को नही, जितना स्वयं राम को है, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है—

> राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
> कोई कवि बन जाए स्वय सम्भाव्य है।।

इस पुस्तक के लेखक है वैदिक विद्वान शिक्षाविद्, चिन्तक, वक्ता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती?

लेखक ने रामायण में प्रक्षेप, सीतावनवास, लवकुश, शम्बूक वध शबरी अहिल्या उद्धार, सीता की उत्पत्ति, जटायु सम्पाति। राम समय पर क्यों नहीं बोले? आदि भिन्न घटनाक्रमो को प्रमाण के साथ उद्धृत किया है।

पाठक वृन्द इस विवेचना पूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन मनन करेंगे तो ज्ञात होगा कि राम के आदर्शों मे कहा-कहां लोप पूर्ण किया है। ऐसी कतिपय भ्रातियो का निराकरण करने के लिए ही इस लघु रामायण की विवेचना पढ़ने को मिलेगी।

प्रकाशक व्यवसायी व्यक्ति है जिनका श्रम इस का ज्वार नए जीवन मे नवीनता मिले अत प्रकाशक भी बधाई के पात्र है।

मुस्लिम युवती ने हिन्दू पति व हिन्दू धर्म स्वीकार किया

कानपुर—आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक ० वर्षीय मुस्लिम युवती गुलाम बानू को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) ग्रहण कराया तथा उसका नाम सुनीता रखा।

श्री आर्य ने शुद्धि सस्कार के पश्चात सुनीता का विवाह एक २२ वर्षीय ठाकुर युवक शैलेन्द्र सिंह के साथ वैदिक रीति मे सम्पन्न कराया।

समारोह में उपस्थित स्त्री पुरुषों ने इस युगलजोडी का फूल मालाओं से हार्दिक स्वागत किया।

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ

मैं श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान उ० प्र० के आदेशानुसार उनके साथ प्रभात आश्रम, गया। नहर का सुरम्य तट, हरीतिमा से युक्त जवल मन को हरने वाला गुरुकुल का वातावरण भव्य लग रहा था। वहां पहुंचने पर देखा—

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज वट् वृक्ष के तले भूमि पर आसन लगाए विराजमान है उनके फक्कड़ पने को देखकर प्राचीन काल के ऋषियों की स्मृति हो आई।

एक समय था जब तीन विद्यार्थी आचार्य कृष्ण जी के साथ अध्ययनरत थे परन्तु आज वह स्थल छात्रों से युक्त, भव्य-भवन विशाल प्रांगण चारों ओर हरा भरा सुहावना सुरम्य स्थान है।

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती की शिष्य परम्परा के तपस्वी व्यक्ति है। प० बुद्धदेव विद्यालंकार के नाम के बाद जब सन्यासी बने तब आर्य परिव्राजक संघ की स्थापना की, आप उसके संरक्षक है।

ऐसे सज्जन व्यक्ति यदि सस्थाओ में बैठ जायं, तो गुरुकुलो का भला हो सकेगा।

कभी अवसर मिले तो प्रभात आश्रम तथा पूज्य स्वामी जी के दर्शन अवश्य करें। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आजमगढ़ में आर्य वीर महासम्मेलन

आजमगढ़ में दि० १०.१२.९५ को आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र० की उपसमिति की बैठक पूर्व संचालक श्री आर्यमुनि जी की अध्यक्षता मे हुई। जिसमें दिनांक २८ से ३१ तक आर्य वीर महासम्मेलन की तैयारी को अन्तिम रूप दिया गया। समस्त आर्यवीरो तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं एव पदाधिकारियो को आजमगढ़ के कार्यक्रम मे पहुचने का आह्वान किया गया तथा तन मन धन से सहयोग करने की अपील किया गया।

दिनांक ३० दिसम्बर को आर्यवीर महासम्मेलन तथा ३१ दिसम्बर को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन होगा। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा आर्यवीरों के आकर्षक व्यायाम, योग एवं शौर्य प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम एव प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य, ब्रह्मचारी आचार्य आर्य नरेश तथा स्वामी शिवानन्द सरस्वती का अभिनन्दन किया जायेगा। प्रमोद आर्य, उपसचालक

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोपाल गज (बिहार) का वार्षिकोत्सव दिनाक १७, १८ एवं १९ नवम्बर को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमे प्रथम दिन आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के उपमन्त्री एव आर्य समाज गोपाल गज के मन्त्री श्री जगदीश नारायण आर्य के नेतृत्व मे डी० ए० वी० सस्थान के छात्र-छात्राओं द्वारा शहर मे आकर्षक शोभा यात्रा निकाली गयी जिसमे बाहर से आये हुए भजनोपदेशक प० उमाकान्त आर्य एव प० दयानन्द सत्यार्थी का भजनोपदेश भी पूरे शहर मे हुआ।

सभा प्रधान प० भूपनारायण शास्त्री द्वारा स्व० रामस्वार्थ प्रसाद आर्य प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओ के बीच पुरस्कार मे 'सत्यार्थ प्रकाश' एव आर्य सत्सग गुटका का पारितोषिक वितरण किया गया। अत मे आर्य समाज गोपालगंज के कोषाध्यक्ष प्रकाश कुमार 'समय' द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद सभा समाप्त हुई।

आर्य महोत्सव

आर्य वीर दल जनपद फीरोजाबाद के जिला सचालक श्री ब्रजपाल सिंह आर्य एवं प्रोफेसर डा० राम प्रकाश वर्णी आचार्य के निर्देशन मे दि० २६, २७, २८ जनवरी १९९६ को आर्य समाज नगला जाट (फीरोजाबाद) तथा दिनाक २९, ३०, ३१ जनवरी सन १९९६ को जसराना (फीरोजाबाद) मे आर्य महोत्सव एवं योग शिविर सम्पन्न किया जायेगा। आप इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

—ब्रजपाल सिंह आर्य

वैदिक साधु आश्रम रोपड़ का उत्सव सम्पन्न

३ दिसम्बर को वैदिक साधु आश्रम रोपड़ का २६ वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर श्री जोगेन्द्र पाल जी सेठ कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री धर्मदेव जी कार्यालय अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, प्रो० डा० विक्रमकुमार विवेकी चण्डीगढ़, ब्रह्मचारी देवपाल जी महोपदेशक, अर्जुनदेव जी शास्त्री पधारे। श्री हरवंशलाल जी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने १६ हजार एक सौ रुपया का शुभ दान दिया। गुरुकुल शुकताल के शक्तिशाली ब्रह्मचारी शिवराज शास्त्री ने प्राणायाम के शक्ति प्रदर्शन किये। जनता पर विशेष प्रभाव रहा। इस शुभावसर पर एक उपदेशक विद्यालय भी प्रारम्भ किया गया। वेदों से महान यज्ञ किया गया। हजारों लोगों के लिए बड़ा भण्डारा किया गया। इस अवसर पर तलवाड़ा, चण्डीगढ़, पंचकूला, नंगलडेम, नवां शहर, बंगा, लुधियाना, खरड़, मोहाली आदि अनेक आर्य समाजों ने भाग लिया।

अतिशोक

यह हमारे लिए अत्यन्त गहरे दुःख का विषय है कि अपनी पूजनीया बहिन जी (पूज्या आचार्या सुश्री डा० प्रज्ञा देवी जी) का आकस्मिक दुःखद देहावसान विगत मार्गशीर्ष पूर्णिमा वि० सं० २०५२ (६ दिसम्बर १९९५) को रात्रि ८-२५ बजे शीत लगकर श्वासावरोध हो जाने से हो गया।

उनका प्रथम शान्ति यज्ञ आगामी पौष पूर्णिमा (५ जनवरी १९९६) को विशेष आहुतियों द्वारा सम्पन्न होगा। इसी प्रकार वर्ष भर तक प्रति पूर्णिमा को ही प्रयाण तिथि पर शान्ति यज्ञ होगा तथा रजत जयन्ती समारोह स्थगित करते हुए अब एक श्रद्धांजलि अंक प्रकाशित होगा जिसमें सभी श्रद्धालुजनों से मार्च १९९६ तक लेख प्रार्थित हैं।

विनीता-मेधा देवी
एवं शोकाकुल समस्त विद्यालय परिवार
पाणिनि कन्या महाविद्यालय तुलसीपुर
वाराणसी—२२१०१० (उ०प्र०)

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज डहीना में श्री बलवन्तसिंह प्रधान, मास्टर समरसिंह आर्य महामन्त्री पं० सुरजनसिंह कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज आरा में श्री कामताप्रसाद शर्मा प्रधान, डा० सुखलाल प्रसाद मन्त्री श्री रघुनाथप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

—महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय कोटा जं० में डा० रघुनाथ ओबेराय प्रधान, श्री राम जी लाल शर्मा मन्त्री, श्री राजेन्द्रकुमार आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली मे श्री रामकिशन जी अग्रवाल प्रधान, श्री अरुण गुप्ता जी मन्त्री, श्री बाबूराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज गरखा सारण मे श्री ठाकुर प्रसाद प्रधान, श्री शिवदत्त प्रसाद आर्य मन्त्री, श्री वीरेन्द्रप्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज आर० के० पुरम् सै० ३ दिल्ली मे श्री वी.पी. विन्दल प्रधान, श्री कुलभूषण बत्रा मन्त्री, श्री कुंवरपालसिंह उपप्रधान चुने गए।

—आर्यसमाज बिरला लाइन्स दिल्ली मे श्रीमती सुशीला सेठी प्रधाना, श्री जयकृष्ण आर्य मंत्री, श्री देवदत्त जी गौतम कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज सैजपुर बोघा मे श्री गोविन्दराम प्रधान, श्री हरीलाल मन्त्री श्री अम्बालाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

त्यागमूर्ति : स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी

—पं० नन्दलाल निर्भय

भारत भूमि त्यागी, तपस्वियों की कर्म भूमि है जहां गौतम, कपिल, कणाद, स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान् ऋषि-मुनियों ने जन्म लिया तथा सकल संसार को धर्म का सन्देश देकर कृतार्थ किया। ऐसे ही महापुरुषों मे से एक थे स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी।

—स्वामी श्रद्धानन्द का पहला नाम मुंशीराम था। ये पंडित मोतीलाल नेहरू के सहपाठी थे तथा भारत के प्रसिद्ध वकील थे। मुंशीराम पहले नास्तिक थे किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती के संसर्ग मे आने पर सच्चे ईश्वर विश्वासी बन गए।

भारत मे अंग्रेजों का राज्य था जो भारत की भोली-भाली अनपढ़ जनता को ईसाई बना रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द यह देखकर भारी परेशान थे। एक दिन उनकी पुत्री कुमारी, वेदकुमारी ईसाई स्कूल मे पहले दिन पढ़कर घर लौटी तथा "ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल" गीत गाने लगी। यह गीत सुनकर उन्हें बड़ा भारी दुःख हुआ। उसी दिन शाम को उनके पास लाला हरदेव जी आ गए। स्वामी जी ने अपने हृदय की पीड़ा उन्हें बता दी। दोनों महानुभावों ने मिलकर लाला हरदेव सहाय जी की जालन्धर वाली कोठी में वैदिक पाठशाला खोलदी तथा अध्यापक का वेतन १५ रुपये मासिक महात्मा मुंशीराम ने लगातार दिया। वह पाठशाला अब कालेज बन चुकी है।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने सोचा एक गुरुकुल वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर खोला जाए जहां देशभक्त, चरित्रवान नौजवानों का निर्माण हो सके। गणमान्य आर्य वीरों से सलाह करके आर्य गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर दी जो अब एक प्रसिद्ध विश्व विद्यालय बन चुका है जिसमें हजारों देशभक्त विद्वानों का निर्माण हो चुका है जो देश, विदेश में वैदिक धर्म की पताका फहरा रहे है।

अपने दोनों पुत्रों इन्द्र विद्यावाचस्पति तथा हरिश्चन्द्र शास्त्री को सर्व प्रथम उन्होंने इसी गुरुकुल में दाखिल किया तथा अपनी सारी सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दान कर दी। ऐसे महान दानी थे वे। आज ऐसे दानवीर नजर नही आते।

ईसाई मुसलमान भारत की भोली जनता को ईसाई बना रहे थे इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि चक्र चला दिया जिससे विधर्मी लोग घवरा गए। एक दिन एक व्यक्ति अब्दुल रशीद शुद्ध होने के बहाने उनके पास आया। स्वामी जी उस समय ज्वर से पीड़ित थे किन्तु उन्होंने उसे प्यार से बैठाकर शर्बत पिलाया किन्तु उस पापी ने मौका पाकर उनको पिस्तौल से गोली मार दी। स्वामी जी के प्रिय शिष्य वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने उसे कसकर पकड़ लिया जिसे लम्बे संघर्ष के पश्चात फासी दे दी गई।

स्वामी श्रद्धानन्द धर्म की रक्षा मे शहीद हो गए। उनका नाम भारत की जनता कभी नहीं भूल सकती। वे आज भी अमर हैं। आज ऐसे वीर, त्यागी, तपस्वी नेताओं की भारत को विशेष आवश्यकता है। परमात्मा कृपा करके भारत में ऐसे महान पुरुष ज्यादा से ज्यादा भेजे जिससे राम, कृष्ण का प्यारा भारत पुनः संसार का शिरोमणि बन सके, प्रभु से हमारी यही प्रार्थना है।

आर्य समाज डहीना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज डहीना का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के पुरोहित के पौरोहित्य में विशाल यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में सावित्री देवी महिला सरपंच पंचायत डहीना सहपति मा० रार्यसिंह आदि यज्ञ के यजमान बने। इस अवसर पर वैदिक विद्वानों के उपदेश तथा श्री चिरंजीलाल जी की भजन मण्डली ने भजनोपदेश के द्वारा श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। समारोह को सफल बनाने में आर्य समाज डहीना के प्रधान श्री बलवन्त सिंह ने सराहनीय योगदान प्रदान किया।

"किल इण्डिया"

(पृष्ठ १ का शेष)

एडवोकेट ने इसे दीवार से उतारकर फाड़ डाला। इस घटना मे गैलरी के कर्मचारियों ने रोष प्रकट किया तथा गुस्से में आकर श्री विमल वधावन एडवोकेट तथा वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के साथ हाथा-पाई करने लगे। श्री विमल वधावन एडवोकेट दिल्लोसे प्रकाशित हिन्दी मासिक कानूनी पत्रिका के मुख्य-सम्पादक भी है।

कला दीर्घा की डायरेक्टर सुश्री अंजलि सेन ने हस्तक्षेप किया और आर्य समाज के नेताओं के आग्रह पर उसने प्रदर्शिनी को बन्द करने का आदेश कर्मचारियों को दे दिया। और कहा कि इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शिनी को बन्द करने का परिणाम भुगतने को वे तैयार हैं।

सुश्री अंजलिसेन के आदेश पर प्रदर्शिनी का विशाल बोर्ड भी मेन गेट से उतरवा दिया गया। वैसे यह प्रदर्शिनी पूर्व घोषणा के अनुसार १ जनवरी १९९६ तक चलनी थी।

स्वामी श्रद्धानन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने देश के लिए जो कार्य किये हैं उनका वर्णन करना तो कठिन है, परन्तु उनके द्वारा किये हुए कार्य ही उनके नाम को संसार में अमर कर गये हैं। जब तक गुरुकुल कांगड़ी रहेगा तब तक उनका नाम अमर रहेगा। उन्होंने स्वामी जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन तथा अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता किये जाने को भी स्मरण कराया। उन्होंने कहा कि हम सब आज उनके शहीदी दिवस पर यह संकल्प लें कि स्वामी जी का शहीदी इतिहास हममे नया रक्त सचार करेगा।

डा० वेदप्रताप वैदिक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने ब्रिटिश सरकार के समय देश में जो अछूतोद्धार, शुद्धि आंदोलन एव शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किये हैं वे सभी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं और उन्ही कार्यो को हम आगे बढ़ाकर देश का पुर्ननिर्माण कर सकेंगे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने अपना आशीर्वाद देते हुये कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की महानता के विषय मे आप सभी लोग भली-भाति परिचित है इसलिये उनको हम सबकी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम लोग नियमवद्ध होकर कार्यक्रम बनाकर उनके द्वारा बताये हुये कार्यों को पूर्ण रूप से क्रियान्वित करने का संकल्प लें। पंडित जी ने देश की रक्षा के प्रति आर्यों का आह्वान करते हुए राष्ट्र को विघटन से बचाने का संकल्प लेने की प्रेरणा भी प्रदान की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वामी विवेकानन्द जी महाराज मेरठ, स्वामी ब्रह्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी हापुड़, डा० कपिलदेव द्विवेदी, आचार्य धर्मवीर शास्त्री आदि को प्रशस्ति-पत्र तथा कुछ पत्र पुष्प राशि प्रदान करके सम्मानित किया गया।

समारोह एवं शोभा यात्रा का कुशल संयोजन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी०एच० ११०२४/९५ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३१-१२-९५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३/९५
R N. 626/27 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93/95 Post in N.D.P.SO.on 28,29-12-1995

अभिनन्दन समारोह

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा नई दिल्ली के तत्वावधान में ११ दिस. ९५ को आर्य समाज डिफेन्स कालोनी में इस आर्य समाज के प्रधान कर्नल डी०आई०एस० साहनी व श्रीमती साहनी का उनके वैवाहिक स्वर्ण जयन्ती पर अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री कृष्णलाल जी सिक्का ने की। आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से श्री रामनाथ सहगल, डी. ए. वी. मैनेजिंग कमेटी की ओर से मन्त्री श्री शान्तिलाल सूरी, व दक्षिण दिल्ली सभा व आर्य समाज डिफेन्स कालोनी के अधिकारियों व अन्य आर्य समाजो के अधिकारियों ने फूल मालाओं द्वारा उनका स्वागत किया। और दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की ओर से उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। इस समारोह में डा० महेश विद्यालंकार, डा० प्रेमचन्द श्रीधर जी ने अपने विचार रखे और उन्हें शुभकामनायें दीं। श्रीमती सरला पाल प्रधाना आर्य स्त्री समाज ने बहुत सुन्दर अभिनन्दन कविता रखी। श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन हुए। साहनी परिवार की ओर से प्रीति भोज का आयोजन किया गया। कर्नल साहनी जी ने ५ हजार रुपए आर्यसमाज डिफेन्स कालोनी, ५ हजार रुपए दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा व १ हजार रुपए आर्य स्त्री समाज को दान दिए।

रोशनलाल गुप्ता, महामन्त्री

योग शिविर का समापन समारोह तथा सम्मान समारोह

दिनांक ३-१२-९५ से १२-१२-९५ तक सम्पन्न योग शिविर का समापन समारोह दिनांक १२-१२-९५ को आयोजित किया गया। इस अवसर पर कर्नाटक राज्य प्रशस्ति प्राप्त महानुभावों श्री मलंगलप्पाजी पाटिल तथा श्री विद्याधर गुरुजी का सम्मान किया गया इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री बलराज जी पाटिल (अध्यक्ष, हैदराबाद कर्नाटक चेंबर आफ कामर्स) व अध्यक्ष, श्री एस एम. पाटिल थे (स्यात उद्योगपति) आशिर्वचन : डा० [illegible]व्रत आचार्य (नई दिल्ली द्वारा हुआ) अतः आप सभी आमन्त्रित हैं। स्थल · हैदराबाद कर्नाटक चेंबर आफ कामर्स खोजी सभागृह, सुपर मार्केट, गुलबर्गा समय : १२-१२-१९९५ (मंगलवार) सायं ६ बजे।

स्पष्टीकरण

श्री सुखदेव शास्त्री का स्पष्टीकरण

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ३ दिसम्बर के अंक में मेरे ऊपर बाढ़पीड़ितों व बराब बन्दी के नाम पर रेवाड़ी क्षेत्र में हजारों रुपए चन्दे का जो इल्जाम लगाया गया है वह भ्रामक है मैं उस क्षेत्र के स्थान को जानता ही नहीं हूं बाढ़ के समय मैं घर पर स्वयं संकट में था।

रतनसिंह को मैं जानता तक नहीं और न कोई व्यक्ति मेरे घर पर ही आया है श्री केदार सिंह सभा कार्यालय रोहतक मे भी उनसे मिलने नहीं गया है। अत सार्वदेशिक पत्र ३ दिसम्बर के अंक में जो सूचना मेरे बारे में छपी है भ्रामक है इससे मेरे व्यक्तित्व पर आघात लगा है।

यह आरोप निराधार है। अब जिनको भी आपत्ति हो वह सीधे हरियाणा सभा या श्री सुखदेव शास्त्री से सम्पर्क करें।

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक
आश्रम, रोहतक

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित